095509
gyanmandir@kobatirth.org



श्रीयुत राय धनपतिसिंह बहादुर कृत आगमसङ्ग्रह के

॥ १५ पनरहवां भाग सूत्र ॥

# ॥ पंनवणा सूत्र चतुर्थोपाङ्ग प्रारम्भः ॥

लौंकागच्छीय श्री रामचन्द्र गणि कृत संस्कृतानुवाद युत

ऋषि नानकचन्दजी से संशोधित होके मुद्रित हुआ।

इस पुस्तक [illegible] रजिस्टरी हुई है [ बनारस जैन प्रभाकर प्रेस नानकचन्द्र जती ] संवत् १९८७

# भूमिका।

—o—

पन्नवणा, इसकी प्रकृति प्रज्ञापना है, प्राकृत शब्द संस्कृत शब्दको आदेश निर्देश करने से सिद्ध होताहै।

प्रज्ञापना शब्द का समुदायार्थ यह है कि (प्र) प्रकर्षसे (ज्ञा) जानिये (प) पदार्थ जिस्से सो प्रज्ञापना अर्थात्—समस्त दर्शनी जिसरीति से पदार्थ का निरूपण नही करसक्ते केवल तीर्थंकर ही यथावस्थित स्वरूप से पदार्थ निरूपण करशक्ते हैं तो, यथावस्थितस्वरूप निरूपण करके शिष्योंकी बुद्धि में आरोपण कियाजाय जीवाजीव आदिक पदार्थ जिस्से वह प्रज्ञापना कहाती है। यद्यपि अन्यदर्शनी भी जीवाजीवादि पदार्थोंको शिष्य की बुद्धि में आरोपण करते हैं परन्तु यथार्थ स्वरूप "जैसा २ जिस २ पदार्थ का स्वरूप है वैसाही ठीक ठीक स्वरूप,, निरूपण तीर्थंकर सर्वज्ञ ही करशक्ते हैं अन्यका सामर्थ्य नही और वह पदार्थ का यथावस्थित स्वरूप इस ग्रन्थ के द्वारा शिष्यों की बुद्धि के गोचर होता है इस्से इस का प्रज्ञापना यह नाम सार्थकहै।

समवायाङ्ग में कहे हुए पदार्थों का निरूपण इस्मे है इस्से समवायाङ्ग चतुर्थ अङ्ग का उपाङ्ग है ॥

कहे का फिरसे कहना निरर्थक है ऐसा नही, क्यों कि कहे पदार्थों को भी फिरसे विस्तार पूर्वक कहना

मन्दबुद्धि वाले शिष्य लोगों के अनुग्रह के लिये होता है इस्से सार्थक है निरर्थक नही। ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग भी सब जीव अजीव आदिक पदार्थों के ज्ञासन (कहने) से शास्त्र है और शास्त्र की आदि में बुद्धिमान् पुरुषों की प्रवृत्ति के लिये प्रयोजन आदि तीन और मङ्गल अवश्य कहना चाहिये नही तो वृथा कंटकशाखामर्दन की तरह कोई भी इस्में प्रवृत्त न होगा ॥

इहां प्रयोजन दो प्रकार है, येक पर और दूसरा अपर है, पर भी दो प्रकार और अपर भी कर्त्रागत प्रो तागत होने से दो प्रकार है, तहां द्रव्यास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम नित्य है और आगम के नित्य होजाने से कर्त्ता का अभाव ही है "जैसा के कहा है—यह द्वादशांगी कधी नही थी कधी नही है कधी न होगी ऐसा नही (किन्तु) ध्रुव है नित्य है शाश्वती है,, ॥

पर्यायास्तिकनय के मत से देखिये तो आगम अनित्य है अनित्य का सद्भाव अवश्य होगा, तत्वदृष्टिसे देखिये तो आगम सूत्र और अर्थ उभयरूप है इसलिए अर्थ की अपेक्षा से नित्य और सूत्र की अपेक्षा से अनित्य होने से कर्त्ता का अवश्य सद्भाव है ॥ ॥

ग्रन्थकर्त्ता का अनन्तर प्रयोजन सत्वानुग्रह और परम्पर प्रयोजन अपवर्गप्राप्ति है "कहाहै—के जो दुखी जीवों को सर्वज्ञ के कहे उपदेश का उपदेश देके कृपा करते हैं वो थोडेही काल में मुक्त हो जाते हैं,, अर्थ से कहनेवाले अरिहन्त को क्या प्रयोजन है क्यों के वह तो कृतकृत्य हैं और प्रयोजन विना अर्थरूप से कहने

का परिश्रम भी व्यर्थ है विनाप्रयोजन मूर्ख भी किसी कार्य में प्रवृत्त नही होता तो तीर्थंकर कैसे प्रवृत्त हुए कोई प्रयोजन इनको भी कहना चाहिये अैसा न कहो , कारण के अर्थरूप से कहने का परिश्रम तीर्थंकर नामकर्म के विपाक का उदय से होता है " कहा है के–तीर्थंकरनामकर्म अग्लान धर्मदेशना के देने ही से भोगाजाता है,, अर्थात्–तीर्थंकरनामकर्म आधीनता से धर्मदेशनाव्यापार होता है उसकर्म का वह भोगही है कोई प्रयोजन अष्मदादिवत् उनको नही है । ॥

श्रोता का अनन्तर प्रयोजन जो अध्ययन कहा जायगा उस्के अर्थ का ज्ञान है और परम्परप्रयोजन मोक्षप्राप्ति है, श्रोता विवक्षित अध्ययन को अर्थ से अच्छीतरह सुनकर संसार से विरक्त होते हैं, विरक्त होके संसार से निकलने की इच्छा से संयममार्ग मैं यथागम प्रवृत्त होते हैं , यथागम संयम मार्ग मैं प्रवृत्त होने से संयम का प्रकर्ष होता है उस्से सकल कर्मक्षय और उस्से मोक्षप्राप्ति होती है , लिखा है के–सम्यक् पदार्थ ज्ञान से जीव विरक्त होते हैं, विरक्त हो क्रिया मैं आशक्त और क्रिया में आशक्त होने से परमगति को पहुंचते हैं ॥ इस ग्रन्थ में अभिधेय जीव अजीव पदार्थ का स्वरूप है । ॥

सम्बन्ध दो प्रकार है उपायोपेय भावलक्षण दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण , तहां पहिला नैयायिक के–जैसे कि वचनरूपापन्न प्रकरण उपाय और उस प्रकरण का परिज्ञान उपेय है । दूसरा गुरुपर्वक्रमलक्षण केवल श्रद्धानुसारि के–जैसा के सूत्रकार आगे कहैंगे , जानना चाहिये ॥

यह प्रज्ञापना नामक उपाङ्ग सम्यग्ज्ञान का कारण है, इसी हेतु परंपरा से मुक्तिपद को देनेवाला है, इसीसे स्वयं श्रेयो भूत है तोभी विघ्न की शान्ति के लिये आदि मध्य और अन्त में मंगल कहाजाता है ॥

ग्रन्थ की आदि में मङ्गल निर्विघ्न शास्त्रपरिसमाप्ति के लिये है, मध्यमंगल अवगृहीतशास्त्र की स्थितिके लिये है, और अन्तमंगल शिष्य प्रशिष्यों के शास्त्र अव्यवच्छेद हो इसलिये है ॥

छत्तीस पदात्मक यह प्रज्ञापना सूत्र है इस्में जीव अजीव आश्रव बन्ध संवर निर्जरा और मोक्ष का प्ररूपण किया है तहां प्रज्ञापना बक्तव्यता विशेष चरमपरिणाम संज्ञक पांच पदमें जीव अजीव की प्रज्ञापना, प्रयोगपद और क्रियापद में आश्रव (काय वचन मन कर्मयोग) की प्रज्ञापना, कर्मप्रकृतिपदमें बन्ध प्रज्ञापना, समुद्घातपद में संवर निर्जरा बन्ध और मोक्ष की प्ररूपणा, बाकी स्थान आदि पदोंमें कहीं किसी कीसी प्रज्ञापना कीहै, ॥ ॥

अथवा इस्में द्रव्य क्षेत्र काल और भाव की प्रज्ञापना है क्योंके इन चारपदार्थों के सेवाय और कोई प्रज्ञापनीय पदार्थ नही है इन्ही पदार्थों के जानने से तत्वज्ञानरूप परमपुरुषार्थ सिद्ध होता है इस कारण इस्के पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये, परन्तु पढने का अधिकार उस्को है जोके मोक्षमार्ग का अभिलाषी और गुरूका आज्ञाकारी हो, और इस्के देने का अवसर भी वही है। इतिशम् ॥ ॥

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस नानकचंद यती ।

# ॥ विज्ञापनम् ॥

आसीद्भूमण्डलेऽजनिष्ट यदुवंशाः श्रीवीरदासान्वितस्तत्पुत्रोबुधसिंहऊर्जितबलस्तस्सूनुरस्तद्रीयोगुणीः । ख्यातःश्रीलप्रतापसिंहविजयी न्यायांतुरीयासती तस्यश्रीमहताबनामविदितस्तुकेस्तदीयादजूत् ॥ १ ॥ उद्यत्कीर्त्तिरुदारधर्मदृढधी र्लक्ष्मीपतेः सादरः श्रीमद्राघवबहादुरेधनपतिः सिंहेगुणग्रामणीः । श्रीजैनागमसद्गुरुंसमकरोल्लोकोपकारस्यैचिरम् टीकावार्त्तिकसंयुतसुसिपिनिःसंमुद्रयित्वाशुभम् ॥ २ ॥ कृत्वापञ्चशतस्यलेषुचपुनस्तावन्त्यहीपुस्तका गा रामेषुचपुस्तकानिसकलान्यस्थापयत्सादरम् । कुर्वन्त्वागमपाठनञ्चपठनं सत्साधवःश्रावकाः स्थित्यैश्रीजिनशासनस्यचपुनर्विज्ञानधर्मद्वये ॥ ३ ॥ प्रागःपञ्चदशशतस्यगुरुकःप्रज्ञापनाख्योधुना नानापुस्तकपाठभेदबहुलोलेखप्रमादादपि । दुर्वाच्यःखलुवृत्तिवार्त्तिकधृतंपाठन्तथाप्राक्तनं श्रीमत्पूर्जितरामचन्द्रगणिभिर्ज्ञातव्यबुध्वामया ॥ ४ ॥ संशोध्यातिपरिश्रमेणनितरां चार्वक्षरैर्मुद्रयते स्यात्तत्रापिचकिञ्चिदीक्षणगतोन्मादाद्भुवंयदि । क्षान्त्वा शोध्यमुदारबुद्धिविभवैर्विज्ञैःकृपादृष्टितो मिथ्यादुष्कृतमस्तुनश्चवचसासम्प्रार्थये सज्जनान् ॥ ५ ॥

बनारस
जैनप्रज्ञाकर
नानकचन्द यती

## नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधन पतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुनाहै आप की ऐसी इच्छाहै कि पैंतालिसों जैनागम की पुस्तकें मूल टीका और भाषाटीका सहित पांच २ सौ कापी छपैं और साधु श्रावकों के पटन पाठन के लिये पांचसौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित हों सो यह अति आनंदकी बातहै, परंतु जिन महाशयों को द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा हो उनलोगों के निमित्त भी यदि आप की आज्ञाहो तो बेचने के वास्ते पांचसौ कापी जैनबुकसुसाइटी की ओरसे भी छपवा ली जावें यह पुस्तकें मैं अजीमगंज से प्रकाश करूंगा अग्रे शुभम्, सम्वत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । ११

द० जैन बुक सुसाइटी

शहर मुरसीदाबाद — कार्यसम्पादक

अजीमगंज — सुबुद्धि सेठ

## नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैनबुकसुसाइटी कार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जोकि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओरसे पैंतालिसों जैनागम की पांचसौ पुस्तकें छपवा लेने की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करताहूं कि आप जैनबुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्येक पांच २ सौ पुस्तकें बेचने के वास्ते छपवा लेवें, परंतु पांचसौ से अधिक छपनेकी आज्ञा मैं नहीं देता, यदि और कोई छपवाना चाहै तो उचित है कि पहले मुज से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थोंपर रजस्टरी हुईहै, अग्रे शुभम् ।

सम्वत् । १९३३ । मि० । चै० । शु० । १३

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

शहर मुरसीदाबाद

अजीमगंज

॥ अथ श्रीपन्नवणा सूत्रानुक्रमणिका प्रारभ्यते ॥


| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| आदि मंगल "ववगय जरमरण नए,, यह गाथा | २ | प्रज्ञापना के जीव अजीव से दो भेद | ५ |
| शास्त्र प्रस्तावना गाथा ५ | ३ | रूपी अरूपी भेद से अजीव पन्नवणा दो प्र० | ६ |
| पन्नवणा ठाणाइं इत्यादि ३६ पद इसग्रंथमें हैं उन की संख्या और वक्तव्यताधिकार | ४ | अरूपी अजीव पन्नवणा धर्मास्ति अधर्मास्ति आकाशास्ति काय १ देश २ और प्रदेश ३ एवं १ अद्धा समय १ एवं १० भेद कहे | ७ |
| तहां ३६ पदों मैं पहला पद पन्नवणा नाम कहे उस्में कितनी वक्तव्यता है सो कहते है, पन्नवणा इस पद का अर्थ तो पहले हम कह चुके है इस्से नही कहा | | (अरूपी अजीव पन्नवणा गई) | |
| | | रूपी अजीव पन्नवणा स्कन्ध १ स्कन्ध देश २ स्कन्धप्रदेश ३ और परमाणु पुद्गल ४ एवं चार तरह | ७ |
| १ पद पन्नवणा नामक | | | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| परमाणु पुद्गल वर्ण गन्ध रस स्पर्श और संस्थान भेद से ५ प्रकार कहे | ८ |
| वर्ण परिणत पुद्गल पांच वर्ण से पांच तरह के | ८ |
| गंध परिणत पुद्गल गंध के दो तरह से दो प्रकार | ८ |
| रस परिणत पुद्गल रस के पांच भेद से पांच तरैं | ८ |
| स्पर्श परिणत पुद्गल आठ तरह है स्पर्श ८ है इससे | ८ |
| संस्थान परिणत पुद्गल पांच प्रकार है संस्थान ५ ही है | ८ |
| पुद्गलों के भांगे जेवसाइ काल व० ते गंधइ सुरभि गंध परिणयावि इत्यादि भांगे सर्व ५३० कहेहै | १० |
| (अजीव पन्नवणा कही) | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| जीव पन्नवणा संसार असंसार समापन्न जीव भेदसे दो प्रकार कही | १८ |
| असंसार समापन्न जीव पन्नवणा अनन्तर परम्पर सिद्ध असंसार समापन्न भेदसे दो प्रकार है | १८ |
| अनन्तर सिद्ध असंसार समापन्न जीवपन्नवणा १५ भेद है एवं पनरह भेद सिद्धों के है | १९ |
| परम्पर सिद्ध संसार समापन्न जीव पन्नवणा अनेक भेद | २१ |
| (असंसार समापन्न जीव पन्नवणा कही) | |
| संसार समापन्न जीव पन्नवणा पांच प्रकार एकेन्द्रियादि से कही | २२ |
| एकेन्द्रिय संसार समापन्न जीव पन्नवणा पृथ्वी कायादि भेद से पांच तरह है | २३ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| पृथ्वीकाय के भेद | २३ |
| अप्काय के भेद | २७ |
| तेजस्काय के भेद | २८ |
| वायुकाय के भेद { इत्यादि | २९ |
| वनस्पति काय के भेद गुच्छा गुल्म वल्ली | २९ |
| (एकेन्द्रिय संसार समापन्न जीव पन्नवणा कही) | |
| द्वीन्द्रिय संसार समापन्न जीव के अनेक भेद | ४३ |
| (द्वीन्द्रिय ससार समापन्न जीव पन्नवणा) | |
| त्रीन्द्रिय पन्नवणा के अनेक भेद उत्राइया इत्यादि | ४५ |
| (त्रीन्द्रिय संसार समापन्न जीव पन्नवणा कही) | |
| चौरिन्द्री पन्नवणा के अनेक भेद अंधय पोत्रि य इत्यादि | ४५ |
| (चतुरिन्द्रिय संसार समापन्न जीव पन्न०) | |
| पचेंद्रिय संसार समापन्न जीव पन्नवणा चार गति के भेद से चार प्रकार | ४६ |
| नारकी सात भेद | ४७ |
| तिर्यग्योनिक त्रिविध जल थल खचर, इनके भी भेद मच्छादिक, उनके भी भेद विस्तार से कहे | ४७ |
| (तिर्यग्योनिक पचेंद्रिय संसार समापन्न०) | |
| मनुष्य के भेद दो संमूर्च्छिम गर्भज, कहां वह पैदा होते है किस्तरह होते है इत्यादि एकोरुक आदि भेद, शक यवन आदि भेद, आर्य ४ इत्यादि | ४८ |
| ब्राह्मी लिपि में १८ तरह का लेख्य विधान है | ६२ |
| (मनुष्य पचेंद्रिय संसार समापन्न जीव प०) | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| देवता चारप्रकार कहे भवनपति जोतिषी वान व्यन्तर वैमानिक | ७३ |
| भवनपति १० प्रकार असुरकुमारादि | ७४ |
| वानव्यन्तर ८ भेदें किन्नर किं पुरुषादि | ७५ |
| जोतिषी ५ प्रकार चन्द्र सूर्यादि | ७६ |
| वैमानिक २ भेदें सौधर्मादि देवलोक गत और कल्पातीत, फिर इनके भेद कहे | ७६ |
| (पचेंद्रिय संसार समापन्न जीव पन्नवणा कही) | |
| ॥ जीव पन्नवणा कही ॥ | |
| ॥ पन्नवणा नाम प्रथम पद झाया ॥ | |
| ——०—— | |
| ॥ २ स्थान नामक पद का प्रारम्भ ॥ | |
| कहां बादर पृथ्वीकाय पर्याप्तक के स्थान कहे | ७७ |
| कहां बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्तक के स्थान कहे | ७८ |
| कहां सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान हैं | ७९ |
| बादर अप्काय पर्याप्तक के स्थान का प्रश्न | ८० |
| बादर अप्काय अपर्याप्तक के स्थान का प्र० | ८१ |
| बादर तेजस्काय पर्याप्तक के स्थान का अधि० | ८१ |
| बादर तेजस्काय अपर्याप्तक के स्थान का नि० | ८२ |
| सूक्ष्म तेजस्काय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान का प्र० | ८२ |
| बादर वायुकाय पर्याप्तक के स्थान का निर्णय | ८२ |
| बादर वायुकाय अपर्याप्तक के स्थान का निर्णय | ८३ |
| सूक्ष्म वायुकाय पर्याप्त अपर्याप्त केस्थान का प्र० | ८३ |
| बादर वनस्पतिकाय पर्याप्त के स्थान का अधि० | ८४ |
| बादर वनस्पतिकाय अपर्याप्त के स्थान का प्र० | ८४ |
| सूक्ष्म वनस्पति पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान का | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| प्रश्न | ८५ | धूमप्रभा के नारकी का प्रश्न | ९१ |
| कहां द्वीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे | ८५ | तमापृथिवी के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी का | ९२ |
| कहां त्रीन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहा | ८६ | तमतमा नारकी प० अप० स्थान का प्रश्न | ९२ |
| कहां चौरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे | ८६ | पर्याप्त अपर्याप्त पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के स्थान | ९३ |
| कहां नारकी पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान कहे | ८७ | मनुष्य पर्याप्त अपर्याप्त के स्थान प्रश्न, उपपात, | |
| कहां नारकी वसते हैं | ८७ | समुद्घात, स्वस्थान | ९४ |
| कहां रत्नप्रभापृथिवी के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी | | भवनवासि देव प० अप० स्थान का प्रश्न भवन | |
| वसें है और उनके स्थान कहे | ८८ | वासि के रहने का स्थान और बहुतसा वर्णन | |
| कहां शर्कराप्रभापृथिवी के पर्याप्त अपर्याप्त नार | | किया है | ९४ |
| की के स्थान कहे, कहां वह वसै है | ८९ | असुरकुमार स्थान प्रश्न कहां रहते हैं इत्यादि | |
| वालुकाप्रभाके पर्याप्त अपर्याप्त नारकी के स्थान | | असुरकुमारों का वर्णन लोकपाल अग्रमहिषी | |
| और वसने का | ८९ | पर्षदा अनीक आदिका वर्णन है | ९९ |
| पंकप्रभा के नारकी का प्रश्न | ९१ | दक्षिण दिशा के असुरकुमारों का अधिकार | १०२ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| उत्तर दिशा के असुरकुमारों का अधिकार | १०३ |
| नागकुमारों के स्थान रहने का स्थान | १०४ |
| दक्षिण के नागकुमारो का अधिकार | १०५ |
| उत्तर के नागकुमारों का अधिकार | १०६ |
| सुवर्णकुमारों के स्थान और रहना कहां है | १०७ |
| दक्षिणसुपर्णकुमाराधिकार | १०७ |
| उत्तरसुपर्णकुमाराधिकार | १०७ |
| चोवठि असुराणं इत्यादि गाथा ७, काला असुरकुमारा इत्यादि गाथा ४ कही है | १०८ |
| वानव्यन्तर देवों के स्थान और वसने का प्र० | १०९ |
| पिसाचदेवाधिकार, रहना उनका | ११२ |
| दक्षिणपिसाचाधिकार | ११३ |
| उत्तर पिसाचों में विशेष कथन | ११४ |
| एवं भूतो का भी अधिकार जानना यावत् गंधर्व पर्यन्त कहना इत्यादि | ११४ |
| अणपन्नी पणपन्नी देवतों के स्थान, रहना इत्यादि अधिकार विस्तार से कहा है | ११४ |
| जोतिषी देवताओं के स्थान, रहना इत्यादि नि० | ११५ |
| वैमानिको के स्थान, रहने का वर्णन विस्तार से | ११७ |
| सौधर्मदेव स्थान, कहां है इत्यादि वर्णन | ११९ |
| शक्रेंद्र का वर्णन विस्तार से | १२० |
| ईशानदेवस्थान कहां है इत्यादि अधिकार | १२१ |
| ईशानेन्द्राधिकार विस्तार से | १२२ |
| सनत्कुमार देवताओं का अधिकार | १२२ |
| सनत्कुमारेन्द्र का अधिकार | १२३ |
| माहेंद्र देवस्थानाधिकार | १२३ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ब्रह्मदेव स्थान का अधिकार | १२४ |
| लान्तक देव लोकाधिकार | १२४ |
| महा शुक्रदेव लोक स्थानाधिकार | १२५ |
| सहस्रार देवलोक का अधिकार | १२६ |
| आनत प्राणत देवलोक का प्रश्न | १२६ |
| आरण अच्युत देवलोकाधिकार | १२६ |
| अधस्तन ग्रैवेयक विमान का प्रश्न | १२८ |
| मध्यम ग्रैवेयक विमान के विषय का प्रश्न | १२९ |
| उपरिम ग्रैवेयक विमान का निर्णय | १२९ |
| अनुत्तरोपपातिक प० अप० देवस्थान और वह कहां बसे हैं | १३० |
| कहां सिद्धों के स्थान और कहां सिद्ध रहते है इत्यादि ईषत्प्राग्भाराधिकार तथा सिद्धों का | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| अधिकार | १३० |
| सिद्धों के वर्णन विषय की गाथा कई एक | १३२ |
| (स्थान नामक दूसरा पद पूर्ण) | १३७ |
| ——— | |
| ३ पद का प्रारम्भ किया है । | |
| दिसिगइइंदियकाए यह द्वार निरूपण गाथा २ | |
| प्रथम दिग्द्वार | |
| दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा पच्चच्छिमेणं इत्यादि | |
| सर्वस्तोक पृथिवीकाय दक्षिण में इत्यादि | १३८ |
| सर्वस्तोक अप्काय पश्चिम में | १३८ |
| सर्वस्तोक तेजस्काय दक्षिण उत्तर में | १३८ |
| सर्वस्तोक वायुकाय पूर्व में | १३८ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| सर्वस्तोक वनस्पतिकाय पश्चिम में | १३८ | सर्वस्तोक सनत्कुमार देव पूर्व पश्चिम | १४३ |
| सर्वस्तोक द्वीन्द्रिय पश्चिम दिशा में | १३९ | एवं माहेंद्र में, एवं सहस्त्रार आदि देवलोक प्र० | १४३ |
| सर्वस्तोक त्रींद्रिय पश्चिम दिशि में | १३९ | सर्व थोड़ा सिद्ध दक्षिण उत्तर दिशा में | १४५ |
| सर्वस्तोक चौरिन्द्री पश्चिम दिशि में | १३९ | ॥ पहला दिशा द्वार हुआ ॥ | |
| सर्व थोड़ा नारकी पूर्व पश्चिम में | १३९ | ॥ दूसरा गति द्वार चला है ॥ | |
| एवं सातो नरक के नारकी का प्रश्न | १३९ | एह नारकी तिर्यंच मनुष्य देव और सिद्धों में कौ | |
| सर्व थोड़ा पंचेंद्रिय तिर्यंच पश्चिम में | १४१ | न किस्से थोड़ा कौन किस्से बहुत कौन किस्से | |
| सर्व थोड़ा मनुष्य दक्षिण उत्तर में | १४२ | तुल्य और कौन किस्से विशेषाधिक है इत्यादि | १४५ |
| सर्व थोडा भवनवासी देव पूर्व पश्चिम | १४२ | एह नारकी तिर्यंच तिर्यंचणी मनुष्य मनुष्यणी दे | |
| सर्व थोड़ा वानव्यन्तर देव पूर्व पश्चिम | १४२ | वता देवी और सिद्ध इन आठों गति में कौन कि | |
| सर्व थोड़ा जोतिषी देव पूर्व पश्चिम | १४२ | स्से अल्प बहुत तुल्य और विशेषाधिक हैं | १४५ |
| सर्व थोड़ा सौधर्म में देव पूर्व पश्चिम | १४२ | ॥ दूसरा द्वार हुआ ॥ | |
| ईशान में सौधर्म की तरह है | १४३ | ॥ तिसरा द्वार प्रारम्भ ॥ | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| यह सइंद्रिय एकेंद्रिय द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेंद्रिय अनिंद्रिय इन में कौन किस्से अल्प अधिक तुल्य और विशेषाधिक होय | १४६ |
| सइंद्रिय एकेंद्रिय द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेंद्रिय अपर्याप्त कों में कौन किस्से अल्पादि | १४६ |
| एकेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त का अल्पादि<br>द्वींद्रिय पर्याप्त अपर्याप्तका अल्पबहुत्वादि<br>त्रींद्रिय पर्याप्त अपर्याप्तका अल्पबहुत्वादि<br>चौरिन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त का अल्पादि<br>पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्त का अल्पादि | १४७ |
| सइंद्रिय एकेंद्रिय द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरिन्द्रिय पंचेंद्रिय पर्याप्त अपर्याप्त में कौन किस्से अल्पादि प्रश्न | १४८ |
| ॥ तिसरा द्वार समाप्त हुआ ॥ | |
| ॥ चौथा कायद्वार कहते हैं ॥ | |
| सकाय पृथिवीकाय अप्काय तेजस्काय वायुकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय अकायिकों में अल्पादि | १४८ |
| सकाय पृथिवीकाय अप् तेज वायु वनस्पति और त्रसकाय अपर्याप्तक में अल्पादि प्रश्न | १४९ |
| सकाय पृथिवीकाय आदि यावत् पर्या०में अल्पादि | १४९ |
| सकाय पज्जत्त अपज्जत्त में अल्पादि<br>पृथिवीकाय पज्जत्त अपज्जत्त में अल्पादि<br>अप्काय पज्जत्त अपज्जत्त मे अल्पबहुत्वादि<br>तेजस्काय पज्जत्त अपज्जत्त में अल्पादि<br>वायुकाय पज्जत्त अपज्जत्त में अल्पादि<br>वनस्पतिकाय पज्जत्त अपज्जत्त में अल्पादि | १५० |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| त्रसकाय पर्याप्ता पर्याप्त में कौन किस्से थोड़ा इ० | १५१ |
| यह सकाय पृथिवीकाय अप्काय तेजस्काय वा युकाय वनस्पतिकाय और त्रसकाय पर्या० अ पर्याप्त कौन किस्से थोड़ा इत्यादि | १५१ |
| यह सूक्ष्म पृथिवीकाय अप् तेज वायु वनस्पति और निगोद इन में कौन किस्से थोडा इ० | १५१ |
| सूक्ष्म अपर्याप्त पृथिवी अप् तेज वायु वनस्पति और निगोद कौन किस्से थोडा बहुत इत्यादि | १५२ |
| सूक्ष्म पर्याप्त पृथिवीकाय आदि का प्रश्न | १५२ |
| (तिसरा द्वार पूर्ण) | |
| ॥ चौथा द्वार कहै है ॥ | |
| सूक्ष्म पर्याप्ता पर्याप्त में कौन किस्से थोड़ा | १५३ |
| सूक्ष्म पृथिवीकाय पर्याप्त अपर्याप्त कौन किस्से | १५३ |
| एवं अप्काय प्रश्न निर्णय | १५३ |
| सूक्ष्म तेजस्काय प्रश्न निर्णय | १५३ |
| एवं वायु वनस्पति निगोद प्रश्न निर्णय | १५३ |
| यह वादर पृथिवी अप् तेज वायु वनस्पति प्रत्येक शरीर वादर वनस्पति वादर निगोद और वादर त्रसकायिको मैं कौन किस्से थोडा इ० | १५४ |
| बादर पृथिवीकाय आदि अपर्याप्त प्रश्न निर्णय | १५४ |
| वादर पृथिवीकाय आदि पर्याप्त प्रश्न निर्णय | १५५ |
| वादर पृथिवीकाय आदि प० अप० प्रश्न | १५७ |
| सूक्ष्म पृथिवीकाय आदि यावत् वादर पृथिवीकाय आदि में कौन किस्से थोडा इत्यादि प्रश्न निर्णय | १६० |
| (चौथा द्वार पूर्ण) | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ॥ पंचम द्वार आरम्भ ॥ | |
| जीव सयोगी मनोयोगीवाग्योगी काययोगी और अयोगी इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इ० | १६७ |
| (पंचम द्वार पूर्ण) | |
| ॥ छठा द्वार कहै है ॥ | |
| जीव सवेद स्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद और अवेदक इनमें कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि प्रश्न | १६७ |
| (छठाद्वार पूर्ण हुआ) | |
| ॥ सातमा द्वार कहैं है ॥ | |
| यह जीव सलेश्य कृष्णलेशी नीललेशी कापोत लेशी तेजोलेशी पद्मलेशी शुक्ललेशी और अलेशी इनमें कौन किस्से थोडा और घणा इत्यादि | १६८ |
| (सातमा द्वार हुआ) | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ॥ आठवां द्वार कहते है ॥ | |
| यह जीव सम्यग्दृष्टी मिथ्यादृष्टी सम्यङ्मिथ्यादृष्टी इनमें कौन किस्से थोडा घणा इत्यादि | १६९ |
| (नवां द्वार हुआ) | |
| ॥ दशम द्वार कहै है ॥ | |
| यह जीव आभिनिबोधिकज्ञानी श्रुतज्ञानी अवधिज्ञानी मनपर्यवज्ञानी केवलज्ञानी इनमें कौन किसे थोडा इत्यादि | १६९ |
| एवं अज्ञान प्रश्न निर्णय | १७० |
| एवं ज्ञान ५ अज्ञान ४ प्रश्न समुदाय से | १७० |
| (१० द्वार हुआ) | |
| ॥ ११ द्वार कहै है ॥ | |
| यह जीव चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी अवधिदर्शनी | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| केवलदर्शनी इनमें कौन किस्से थोडा घणा है | १७० |
| ( ११ द्वार पूर्ण ऊथ्या ) | |
| ॥ १२ द्वार कहै है ॥ | |
| जीव संयत असंयत संयतासंयत नो संयत नो असंयत नो संयतासंयत इनमें कौन किस्से थोडा इत्यादि | १७० |
| ( १२ वां द्वार ऊथ्या ) | |
| ॥ १३ वां द्वार कहै है ॥ | |
| यह जीव साकारोपयोगी अनाकारोपयोगी में कौन किस्से थोडा घणा इत्यादि प्रश्न | १७१ |
| ( १३ वां द्वार पूर्ण ऊथ्या ) | |
| ॥ १४ वां द्वार कहते हैं ॥ | |
| जीव आहारक अनाहारक में कौन किस्से थोडा | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| इत्यादि | १७१ |
| ( १४ वां द्वार पूर्ण ऊथ्या ) | |
| ॥ १५ वां द्वार कहै है ॥ | |
| जीव नासक अनासक मैं कौन किस्से थोडा | १७१ |
| ( १५ वां द्वार कहा ) | |
| ॥ १६ वां द्वार कहते हैं ॥ | |
| जीव परित्त अपरित्त नो परित्त नो अपरित्त में कौन किस्से थोडा घणां | १७१ |
| ( १६ द्वार ऊथ्या ) | |
| ॥ १७ वां द्वार कहते हैं ॥ | |
| जीव पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त मैं कौन किस्से थोडे घणे हैं | १७२ |
| ( १७ द्वार ऊथ्या ) | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ॥ १८ द्वार कहते हैं ॥ | |
| यह सूक्ष्म बादर नोसूक्ष्म नोबादरों में कौन थोड़ा | १७२ |
| ( १८ द्वार हुआ ) | |
| ॥ १९ वां कहे है ॥ | |
| यह जीव संज्ञी असंज्ञी नो संज्ञी नो असंज्ञी में कौन किस्से थोड़ा इत्यादि | १७३ |
| ( १९ द्वार हुआ ) | |
| ॥ २० द्वार कहे हैं ॥ | |
| जीव भवसिद्धिक अभवसिद्धिक नो भवसिद्धिक नो अभवसिद्धिकों में कौन किस्से थोड़ा इ० | १७३ |
| ( २० द्वार हुआ ) | |
| ॥ २१ वां द्वार कहे हैं ॥ | |
| यह धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्ति काय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अद्धासमय में कौन किस्से द्रव्यार्थता से थोड़ा घणा इत्यादि | १७३ |
| एवं प्रदेशार्थतासे भी प्रश्न निर्णय | १७३ |
| धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ से प्रश्न | १७४ |
| ( २१ द्वार हुआ ) | |
| ॥ २२ वां द्वार कहे है ॥ | |
| जीव चरम अचरम में कौन किस्से थोडा घणा इत्यादि | १७७ |
| ( २२ वां द्वार हुआ ) | |
| ॥ २३ वां द्वार कहे है ॥ | |
| यह जीव पुद्गल अद्धासमय सर्वद्रव्य सर्वप्रदेश सर्व पर्याय में कौन किस्से थोडा इत्यादि नि० | १७८ |
| ( २३ द्वार पूर्ण हुआ ) | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ॥ २० वां द्वार कहै है ॥ | |
| क्षेत्रानुपातसे उर्द्धलोक आदि में जीवों की संख्या | १७८ |
| (२० वां द्वार हुआ) | |
| ॥ २५ वां कहते हैं ॥ | |
| जीव आयुकर्म के बंधक अबंधक अपर्याप्त पर्याप्त सुप्त जागर संमोहित असंमोहित सातावेदक असातावेदक इंद्रियोपयोगयुक्त नोइंद्रियोपयोगयुक्त साकारोपयोगयुक्त अनाकारोपयोगयुक्त में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि | १९१ |
| (२५ वां द्वार कहा) | |
| ॥ २६ वां द्वार कहै है ॥ | |
| क्षेत्रानुपात से पुद्गल का त्रैलोक्य में अल्पादि | १९३ |
| यह परमाणु पुद्गल संख्यातप्रदेशी असंख्यातप्रदेशी अनन्तप्रदेशी स्कन्ध इनमें द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्रदेशार्थसे कौन किस्से थोड़ा इत्यादि | १९३ |
| एक प्रदेशावगाढ संख्यात असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गलों में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थप्रदेशार्थसे कौन किस्से थोड़ा घणा | १९६ |
| एक समयस्थितिक संख्यात असंख्यात समयस्थितिक पुद्गल में द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ से तथैव | १९७ |
| एवं एकगुण काले का प्रश्न | १९८ |
| (२६ द्वार पूर्ण हुआ) | |
| सर्व जीव अल्प बहुत्व महा दंडक | १९८ |
| ॥ तीसरा पद पूर्ण हुआ ॥ | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ॥ चौथा पद आरम्भ ॥ | |
| नारकी की कितने काल की स्थिति | २०५ |
| पर्याप्त तथा अपर्याप्त नारकी की कितनी स्थिति | २०५ |
| रत्नप्रभादि सात नरक के पर्याप्त अपर्याप्त नारकी की स्थिति का प्रश्न | २०६ |
| देवता की कितने काल की स्थिति | २०८ |
| पर्याप्त अपर्याप्त देवता की कितनी स्थिति | २०९ |
| एवं भवनवासी आदि देवता देवी पर्याप्त अपर्याप्त की स्थिति का निर्णय | २०९ |
| पृथिवीकाय की कितने काल की स्थिति | २१२ |
| एवं पर्याप्त अपर्याप्त पृथिवीकाय की स्थिति का प्रश्न | २१२ |
| सूक्ष्म पृथिवीकाय की स्थिति का प्रश्न | २१२ |
| पर्या० अपर्या० सूक्ष्म पृथिवीकाय की स्थिति | २१२ |
| अप्काय स्थिति प्रश्न | २१३ |
| पर्या० अपर्या० अप्काय की स्थिति | २१३ |
| बादर अप्काय तथा पर्या० अपर्या० बादर अप्काय की स्थिति | २१४ |
| एवं वायुकाय वनस्पतिकाय पर्या० अपर्या० की सूक्ष्म बादर आदि की स्थिति का प्रश्न | २१४ |
| द्वीन्द्रिय तथा पर्या० अपर्या० की स्थिति | २१५ |
| एवं त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय पर्या० अपर्या० स्थिति | २१६ |
| पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक की स्थिति | २१६ |
| एवं पर्या० अपर्या० पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच की स्थिति | २१७ |
| संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच की तथा पर्या० अपर्या० संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच की स्थिति | २१७ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| गर्भव्युत्क्रान्तिक पचेंद्रिय तिर्यंच तथा पर्या० अ | |
| पर्या० गर्भव्युत्क्रान्तिक पचेंद्रिय की स्थिति | २१७ |
| एवं जलचर पर्या० अपर्या० पचेंद्रिय तिर्यंच | |
| स्थिति | २१७ |
| एवं संमूर्च्छिम पर्या० अपर्या० तथा गर्भव्युत्क्रा | |
| न्तिक पर्या० अपर्या० पचेंद्रिय जलचर स्थिति | २१७ |
| एवं सन्नेद स्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच स्थिति | २१८ |
| उरपरिसर्प स्थलचर पर्या० अपर्या० पचेंद्रिय | |
| स्थिति | २१९ |
| संमूर्च्छिम पर्या० अपर्या० स्थलचर उरपरिसर्प | |
| पंचेंद्रिय | २२० |
| एवं भुजपरि सर्प की स्थिति | २२० |
| एवं खचर पंचेंद्रिय तिर्यंच स्थिति | २२१ |
| एवं मनुष्य पज्जत्त अपज्जत्त समूर्च्छिम गर्भज | |
| मनुष्य स्थिति विषय | २२२ |
| वानव्यन्तर देवता देवी पर्या० अपर्या० स्थिति | २२२ |
| ज्योतिष्क देवता देवी पर्या० अपर्या० स्थिति | २२३ |
| चन्द्रविमान में देवता पर्या० अपर्या० स्थिति | २२४ |
| सूर्यविमान में देवता तथा देवी प० अप० स्थिति | २२४ |
| ग्रहविमान में देवता तथा देवी प० अप० स्थिति | २२५ |
| नक्षत्र विमान देव देवी प० अप० स्थिति | २२५ |
| तारा विमान देव देवी प० अप० स्थिति | २२६ |
| वैमानिक देव देवी प० अप० की स्थिति | २२६ |
| सौधर्म देव देवी पर्या० अप० परिगृहीत अप | |
| रिगृहीत पर्या० अप० एवं आलावा १२ में | |
| स्थिति | २२६ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| एवं ईशान देव देवी प० अप० आदि की स्थिति | २२७ |
| सनत्कुमार देवी देव प० अप० आदि स्थिति | २२८ |
| ब्रह्मदेव देवी से लेके अच्युत देवलोक के देव ताओं की स्थिति सविशेष | २२९ |
| नव ग्रैवेयक विमान देव प० अप० स्थिति | २३२ |
| विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित देव प० अप० स्थिति | २३५ |
| सर्वार्थसिद्ध देव प० अप० स्थिति | २३५ |
| (चौथा स्थिति पद पूर्ण हुआ) | |
| ॥ पांचमा पद आरम्भ ॥ | |
| कितने भेदें पर्यव है, जीव अजीवके पर्यव | २३५ |
| नारकी के अनन्ता पर्याय कहे | २३७ |
| असुरकुमार के अनन्त पर्याय कहे | २४२ |
| एवं जैसे नारकी तथा असुरकुमार के अनन्त पर्याय कहे तैसे नागकुमार यावत् स्तनितकुमार को कहना | २४४ |
| पृथिवीकाय के अनन्ता पर्याय कहे | २४४ |
| अप्काय के अनन्ता पर्याय कहे | २४४ |
| तेजस्काय के अनन्त पर्याय | २४५ |
| वायुकाय के अनन्त पर्याय | २४५ |
| वनस्पतिकाय के अनन्त पर्याय | २४५ |
| वेरिंद्री के अनन्त पर्याय | २४६ |
| तेरिंद्री चौरिंद्री तथा पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च के अनन्ता पर्याय | २४७ |
| मनुष्य के अनन्ता पर्याय | २४७ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| जघन्य उत्कृष्ट अजघन्यानुत्कृष्ट अवगाहना के नारकी के अनन्ता पर्याय | २४८ |
| जघन्य उत्कृष्ट मध्यम स्थिति के नारकी के अनन्त पर्याय कहे | २४९ |
| जघन्य उत्कृष्ट मध्यम गुण कालक नारकी के पर्यव वक्तव्यता | २५० |
| जघन्य उत्कृष्ट मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञानी नारकी की पर्यव वक्तव्यता | २५१ |
| एवं श्रुतज्ञानी तथा अवधिज्ञानी नारकी के पर्यव कहना अज्ञान भी कहना | २५१ |
| जघन्य उत्कृष्ट मध्यम चक्षुदर्शनी नारकी के अनन्ता पर्याय कहे | २५१ |
| एवं अचक्षुदर्शनी अवधिदर्शनी को कहना | २५२ |
| जघन्य उत्कृष्ट मध्यम अवगाहना के असुरकुमार को अनन्ता पर्याय कहे | २५२ |
| एवं स्तनितकुमार पर्यन्त कहना | २५२ |
| जघन्यावगाहना के पृथिवीकाय पर्यवाधिकार | २५२ |
| एवं उत्कृष्ट मध्यमावगाहना के पृथिवी पर्यव | २५३ |
| जघन्य मध्यम उत्कृष्ट स्थितिक पृथिवी पर्यव | २५३ |
| जैसे पहले कहे तैसे सर्व आलावा वनस्पतिकाय पर्यन्त सर्व वक्तव्यता कहनी | २५३ |
| जघन्यावगाहनादि द्वीन्द्रिय पर्याय वक्तव्यता | २५३ |
| एवं त्रीन्द्रिय चतुरिंद्रिय पर्यव वक्तव्यता धिकार | २५६ |
| जघन्यावगाहनक पञ्चेन्द्रिय तिर्यंच पर्यव वक्तव्यताधिकार | २५७ |
| जघन्य आदि स्थितिक पंचेंद्रिय तिर्यंच पर्यव | २५८ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| वक्तव्यताधिकार | २५८ | केवलज्ञानी मनुष्य के अनन्ता पर्यव कहे | २६५ |
| जघन्यगुण कालकादि पंचेंद्रिय तिर्यंच पर्यव | २५९ | अजीव पर्यव कितने भेदें | २६६ |
| जघन्यादि आभिनिबोधिकज्ञानी पंचें० तिर्यं० पर्यव | २५९ | अरूपी अजीव पर्यव दशभेदें कहे हैं | २६६ |
| | | रूपी अजीव पर्याय चार भेदें कहे | २६६ |
| जघन्यावधिज्ञानी पंचेंद्रिय तिर्यंच पर्यव | २६० | परमाणु पुद्गल पर्यव वक्तव्यताधिकार | २६७ |
| उत्कृष्टावधिज्ञानी इसीतरह से कहना | २६१ | द्विप्रदेशी आदि स्कन्ध पर्यव वक्तव्यताधिकार | २६७ |
| अवधिज्ञानी तथा विभंगज्ञानी कहना | २६१ | एक प्रदेशावगाढ पुद्गल पर्यव प्रश्न | २६९ |
| जघन्यावगाही मनुष्य के कितने पर्याय कहे | २६१ | एक समयस्थितिक पुद्गल पर्यव प्रश्नोत्तर | २७० |
| जघन्यस्थितिक मनुष्य के कितने पर्याय कहे | २६२ | एकगुण कालक पुद्गल पर्यव प्रश्न | २७१ |
| जघन्यगुणकालक मनुष्य के पर्याय | २६२ | जघन्यावगाह द्विप्रदेशी आदि स्कन्ध पर्यव | २७२ |
| जघन्याभिनिबोधिक ज्ञानी मनुष्य के पर्यव | २६३ | जघन्यस्थितिक परमाणुपुद्गल पर्यवाधिकार | २७५ |
| जघन्यावधिज्ञानी मनुष्य के पर्यव कितने है | २६४ | जघन्यगुणकाल आदि परमाणुपुद्गल पर्यवाधि० | २७५ |
| जैसे अवधिज्ञानी तैसे मन पर्यव ज्ञानी | २६४ | ८ स्पर्श की वक्तव्यता कहना | २७६ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ( पांचमा पद पूर्ण हुआ ) | |
| ॥ छठा पद आरम्भ ॥ | |
| नरक गति में कितने काल विरह है उपपातका | २८६ |
| तिर्यंच गति मे कितना विरह उपपात में | २८६ |
| मनुष्य गति, देवगति, और सिद्धिगति में उप जने का कितना विरह | २८६ |
| एवं उद्वर्त्तना भी चारों गति में कहना | २८७ |
| रत्नप्रभा आदि सात नरक पृथिवी मे उपपात विरह काल | २८७ |
| असुरकुमार आदि यावत्स्तनितकुमार पर्यन्त उपपात विरह काल | २८८ |
| पृथिवी काय उपपात विरहकालाधिकार | २८८ |
| एवं अप् तेज वायु वनस्पतिकाय उपपात विरहकाल | २८९ |
| द्वीन्द्रिय उपपात विरहकाल, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय उपपात विरह | २८९ |
| सम्मूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच उपपात विरहकाल | २८९ |
| गर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेंद्रिय तिर्यंच उपपात विरहकाल | २८९ |
| सम्मूर्च्छिम तथा गर्भज मनुष्य उत्पति विरहाकार | २८९ |
| सौधर्म आदि १२ देवलोक देवोत्पत्ति विरह कालाधिकार | २९० |
| ग्रैवेयक विमान देवोत्पत्ति विरह, तथा विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित देवलोक देवोपपात विरहकालाधिकार | २९१ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| सर्वार्थसिद्ध विमान देवोपपात विरहकालप्रमाण | २९१ |
| सिद्धोपपात विरहकालप्रमाण | २९१ |
| रत्नप्रभा आदि पृथिवी के नारकी का च्यवन काल विरहाधिकार एवं सिद्धों को क्रोड के अनुत्तर वि मान तक च्यवन काल विरहाधिकार | २९१ |
| (२ द्वार हुआ पूर्ण) | |
| नारकी सान्तर उपजै के निरन्तर उपजै, मनुष्य सान्तर उपजै के निरन्तर उपजै | २९१ |
| देव सान्तर उपजै के निरन्तर, रत्नप्रभा आदि ७ पृथिवी के नारकी सान्तर उपजै के निरन्तर, असुर कुमार सान्तर उपजै के निरन्तर, एवं स्त नितकुमार पर्यन्त कहा, पृथिवीकाय यावद्वन स्पतिकाय द्वींद्रिय यावत्पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| क्या सान्तर उपजै के निरन्तर | २९२ |
| सौधर्म आदि देवलोक यावत् सिद्ध सान्तर उप जै के निरन्तर, एवं उद्वर्त्तनाभी सिद्धो को छोड कर कहनी | २९३ |
| (३ द्वार हुआ पूर्ण) | |
| नारकी एक समय मैं कितने उपजै, एवं ७ नरक के नारकी कहे, असुरकुमार एक समय मैं कित ने उपजै, एवं स्तनितकुमार पर्यंत कहना | २९३ |
| पृथिवीकाय यावद्वनस्पतिकाय एक समय में कि तने उपजै | २९४ |
| बेरिंद्रिय एक समय मैं कितने उपजै, एवं त्रींद्रिय चतुरिंद्रिय संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच, गर्भव्यु त्क्रांतिक पंचेंद्रिय तिर्यंच, सम्मूर्च्छिम मनुष्य | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| वानव्यन्तर जोतिषी सौधर्म आदि यावत् अनुत्तर। विमान देव एक समय में कितने उपजै | २९४ |
| सिद्ध एक समय में कितने सीझै | २९५ |
| नारकी एकसमय में कितने चवै इत्यादि जैसे उपपात कहा तैसे चवन सिद्धों को छोड़ के कहना यावत् अनुत्तरोपपात के देव पर्यंत कहा | २९५ |
| (४ द्वार पूर्ण हुआ) | |
| नारकी कहां से उपजै, क्या नारकी से उपजै तिर्यंच से मनुष्य से देव से उपजै | २९५ |
| रत्नप्रभा का नारकी कहां से उपजै इत्यादि सात नरक के नारकी का अधिकार | ३०१ |
| असुरकुमार कहां से उपजै इत्यादि यावत् स्तनितकुमार पर्यंत | ३०४ |
| पृथिवीकाय कहां से उपजै इत्यादि वक्तव्यता | ३०४ |
| एवं अप् तेज वायु वनस्पति काय नो कहा | ३०७ |
| बेरिंद्री तेरिंद्री चौरिंद्री जैसे तेजो वायु कहे तैसे देव वर्ज जानना | ३०७ |
| पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक कहां से उपजै इत्यादि निर्णय | ३०७ |
| मनुष्य कहां से उपजै, | ३०८ |
| वानव्यन्तर देवता कहां से उपजै | ३०९ |
| एवं वैमानिक देव वक्तव्यताधिकार | ३०९ |
| ग्रैवेयक देव, अनुत्तर विमान देव एक समय में कितने उपजै | ३११ |
| (५ मा द्वार पूर्ण हुआ) | |
| नारकी अनन्तर निकल के कहां जाय कहां उपजै | ३१२ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| असुरकुमार अनन्तर निकल के कहां जाय कहां उपजै | ३१२ |
| पृथिवीकाय अनन्तर निकल के कहां जाय कहां उपजै | ३१३ |
| एवं अप् "तेज वायु, मनुष्य वर्ज,, वनस्पति बेरिंद्री तेरिंद्री चौरिंद्री जाणना | ३१३ |
| पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक अनन्तर निकल कहां जाय कहां उपजै | ३१३ |
| एवं जैसे जिनका उपपात कहा तैसे उद्वर्त्तना भी कहनी | ३१३ |
| (६ द्वार पूर्ण हुआ) | |
| नारकी कितना आयु शेष रहै तब पर भव का आयु बांधै एवं २४ दंडक | ३१५ |
| पृथिवीकाय कितना आयु शेषरहे पर भव आयु बांधै एवं यावत् चौरिंद्री | ३१५ |
| पंचेंद्रिय तिर्यंच कितना आयु शेष रहने से पर भव का आयु बांधै | ३१५ |
| एवं मनुष्य वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी कहा तैसे कहना | ३१७ |
| कितने प्रकार आयुबन्ध कहा, ८ प्रकार कहा | ३१७ |
| नारकी के ८ प्रकार आयु बन्ध कहा एवं २४ दंडक मे कहना | ३१७ |
| जीव जातिनाम निहत्तायु को कितने आकर्ष से करै | ३१७ |
| नारकी जातिनाम निहत्तायु को कितने आकर्ष से करै एवं २४ दंडक में | ३१८ |
| एवं गति स्थिति अवगाहन प्रदेश अनुभाव नाम | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| निहत्तायु भी कहना | ३१९ |
| जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्ट ८ आकर्षसे जाति नामनिहत्तायु आदि को करनेवाले जीवों में कौन किस्से थोडा घणा इत्यादि अधिकार | ३१९ |
| ॥ व्युत्क्रान्ति पद कहा पूर्ण हुआ ॥ | |
| ॥ सातवां पद का आरम्भ हुआ ॥ | |
| नारकी कितने कालसे आनप्राण स्वासोत्स्वास लेवै | ३२० |
| असुरकुमार कितने कालसे आनप्राण स्वासोत्स्वा —स लेवै | ३२० |
| एवं नागकुमार यावत्स्तनितकुमार कितने काल से आनप्राण सासोत्स्वास लेवै | ३२१ |
| पृथिवीकाय वेमात्रा से आनप्राण सास्वोत्स्वास लेवै | ३२१ |
| जोतिसी कितने कालसे एवं सौधर्म आदि देव कितने काल से लेवै | ३२१ |
| ग्रैवेयक देव यावत्पंचानुत्तर देव कितने कालसे आनप्राण सासोत्स्वास | ३२३ |
| सर्वार्थसिद्ध विमानवासी देव कितने काल से स्वाश्वोत्स्वासादि लेवै | ३२४ |
| (सातवां उत्स्वास पद हुआ) | |
| ॥ आठवां पद कहते हैं ॥ | |
| दश आहार आदि संज्ञा कही | ३२४ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| नारकी को १० संज्ञा होती है | ३२५ |
| असुरकुमार को १० संज्ञा होती है एवं स्तनितकुमार तक पृथिवीकाय आदि वैमानिक पर्यन्त कहा | ३२५ |
| नारकी क्या आहार संज्ञोपयुक्त के भयसंज्ञोपयुक्त इत्यादि प्रश्न | ३२६ |
| आहारसंज्ञोपयुक्त यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्त नारकी का अल्प बहुत्व | ३२६ |
| तिर्यंच क्या आहार यावत्परिग्रह संज्ञोपयुक्त | ३२६ |
| तिर्यंच आहार आदि संज्ञोपयुक्त का अल्पादि | ३२६ |
| मनुष्य क्या आहार सं० | ३२७ |
| आहारादि संज्ञोपयुक्त मनुष्याल्पबहुत्व | ३२७ |
| देवता क्या आहार संज्ञोपयुक्त है के यावत्परि ग्रह संज्ञोपयुक्त है | ३२७ |
| आहारादि१० संज्ञोपयुक्त देवाल्पबहुत्व वक्तव्यता | ३२८ |
| (आठवां पद समाप्त हुआ) | |
| ॥ नवां पद कहते हैं ॥ | |
| कितने प्रकार योनि कही, तीन प्रकार योनि कही | ३२८ |
| नारकी के क्या सीतयोनि उष्णयोनि शीतोष्णयोनि | ३२८ |
| असुरकुमार के कौन योनि कही एवं स्तनित-कुमार तक | ३२८ |
| पृथिवीकाय के कौन योनि, एवं अप् वायु वनस्पति द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय को योनि कहना | ३२९ |
| तेजस्काय के शीत योनि नही | ३२९ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक | विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| पंचेंद्रिय तिर्यंच योनि को कौनसी योनि | ३२९ | पृथिवीकाय को क्या सचित्त योनि अचित्तयोनि मिश्रयोनि | ३३१ |
| सम्मूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच, गर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेंद्रिय तिर्यंच योनि वक्तव्यताधिकार | ३३० | समूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच और मनुष्य योनि निर्णय | ३३१ |
| मनुष्य को कितने प्रकार योनि कही | ३३० | गर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य योनि निर्णय | ३३२ |
| वानव्यन्तर, जोतिषी, और वैमानिक योनि वक्तव्यता | ३३० | वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक को जैसे असुरकुमार को कहा | ३३२ |
| यह जीव शीतयोनि उष्णयोनि शीतोष्णयोनि अयोनियों में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि निर्णय | ३३१ | यह सचित्त अचित्त मिश्रयोनिक अयोनिको मैं कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि | ३३२ |
| सचित्त अचित्त मिश्र भेद से तीन प्रकार योनि कही | ३३१ | संवृत विवृत संवृतविवृत भेदसे तीन प्रकार योनि कही | ३३२ |
| नारकी के क्या सचित्त अचित्त और मिश्र योनि है | ३३१ | नारकी के संवृतयोनि कही, एवं यावद्वनस्पति | |
| असुरकुमार योनि प्रश्न एवं स्तनितकुमार पर्यन्त | ३३१ | | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| काय पर्यन्त बेइंद्रिय को विवृतयोनि कही, चौरिंद्री पर्यन्त, संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच और मनुष्य को विवृतयोनि कही, गर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेंद्रिय तिर्यंच और मनुष्य को संवृतविवृत योनि है | ३३३ |
| वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक को जैसे नारकी को कहा | ३३३ |
| यह संवृत विवृत संवृतविवृतयोनिक अयोनिक जीवों में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि | ३३३ |
| कूर्मोन्नत संखावर्त्त वंशीपत्र भेद से तीन प्रकार की योनि है कूर्मान्नता योनि उत्तम पुरुषोत्पत्ति स्थान, शंखावर्त्ता स्त्रीरत्न को, वंशीपत्रा सामान्य मनुष्यों को है | ३३४ |
| (नवां पद पूर्ण हुआ) | |
| ॥ १० वां पद कहते हैं ॥ | |
| रत्नप्रभादि यावत् ईषत्प्राग्भारा पर्यन्त आठ पृथिवी कही | ३३४ |
| यह रत्नप्रभा पृथिवी नही चरमा नही अचरमा नही चरमाइं नही अचरमाइं नही चरमान्त प्रदेशा नही अचरमान्तप्रदेशा इत्यादि यावत् नीचे सातमी पृथिवी, सौधर्म आदि यावत् अनुत्तर विमान एवं ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, एवं लोक, एवं अलोक नी कहना | ३३५ |
| परमाणु पुद्गल क्या चरम अचरम अवक्तव्य चरमाइं अचरमाइं इत्यादि भंगा २६ | ३४० |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| एवं २। ३। ४। ५। ६। ७। ८ प्रदेशी स्कन्धो की वक्तव्यता यावत् संख्यात असंख्यात अनन्त प्रदेशी खंध तक कहा | ३५० |
| परमाणुम्मियतइत्तं इत्यादि गाथा ६ | ३५१ |
| परिमंडल आदि पांच संस्थानो की वक्तव्यता, परिमंडल संस्थान क्या संख्यात असंख्यात अनन्त, एवं यावत् आयत कहना, परिमंडल संठाण क्या संख्यातप्रदेशी असंख्यातप्रदेशी अनन्त प्रदेशी एवं यावदायत, परिमंडल संठाण क्या संख्यातप्रदेशावगाढ असंख्यात प्रदेशावगाढ एवं आयत पर्यन्त, परिमंडल० असंख्यातप्रदेशी क्या असंख्यातप्रदेशावगाढ अनन्तप्रदेशावगाढ एवं आयत पर्यन्त | ३५२ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| जीव गति चरम से क्या चरम के अचरम एवं निरन्तर वैमानिक | ३५६ |
| नारकी गति चरम से क्या चरमा के अचरमा एवं वैमानिक पर्यन्त | ३५६ |
| नारकी स्थितिचरम से कदाचित् चरम कदाचित् अचरम एवं यावत् वैमानिक | ३५७ |
| नारकी भवचरम से कदाचित् चरम कदाचित् अचरम, एवं वैमानिक पर्यन्त, नारकी भाषा चरम से चरम अचरम भी एवं वैमानिक पर्यन्त, एवं एकेंद्रिय को छोड़ के वैमानिक पर्यंत कहना | ३५७ |
| नारकी आनप्राण चरम से चरम के अचरम, एवं याव द्वैमानिक | ३५८ |
| एवं आहार चरम, भाव चरम से कदाचित् चर | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| म और अचरम है | ३५८ |
| एवं वर्ण गन्ध रस स्पर्श चरम से कदाचित् चर म अचरम है | ३५९ |
| (१० चरम पद समाप्त हुआ) | |
| ॥ ११ पद कहते हैं ॥ | |
| अथ नूनं मन्ये अवधारिणीति भाषा इत्यादि प्रश्न निर्णय | ३६० |
| अवधारिणी भाषा क्या सत्य असत्य सत्यमृषा असत्यमृषा | ३६१ |
| गावो मृगाः पशवः पक्षिणः प्रज्ञापनी यह भाषा है मृषा नही | ३६२ |
| याच स्त्री पुरुष नपुंसकवाक् प्रज्ञापनी यह भाषा मृषा नही | ३६२ |
| अह जाय इत्थी पन्नवणी इत्यादि भाषा वक्तव्यताधिकार | ३६३ |
| अह भंते मन्दकुमारएवा मन्दकुमारियावा इत्यादि प्रश्न निर्णय | ३६६ |
| अह भंते उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए इत्यादि प्रश्न निर्णय | ३६६ |
| अह भंते मणुस्से महिसे आसे इत्यादि प्रश्न निर्णयाधिकार | ३६७ |
| अह भंते कंसं कंसोयं परिमंडलं इत्यादि प्रश्न नि० | ३६९ |
| अह भंते पुढवीति स्त्रीवाक् इत्यादि प्रश्न निर्णयाधिकार | ३७० |
| भाषा किमादि किं प्रवह किं पर्यवसित है | ३७१ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| भाषा कतिय पभवति इत्यादि गाथा २ | ३७१ |
| कितने प्रकार भाषा है, दो प्रकार भाषा के है | ३७२ |
| पर्याप्तिकी भासा सत्या मृषा से दो भेद है | ३७२ |
| सत्या पर्याप्तिकी भाषा कितने प्रकार है १० प्रकारें | ३७२ |
| मृषा भाषा भी दश प्रकारें कही है क्रोधनिश्रितादि भेद से | ३७३ |
| अपर्याप्तिकी भाषा सत्यामृषा असत्यामृषा भेद से दो प्रकार है | ३७३ |
| सत्यामृषा भाषा उत्पन्न मिश्रितादि भेद से दश भेदें है | ३७४ |
| असत्यामृषा अपर्याप्तिकी आमन्त्रणी आदिक भेदसे १२ भेद है | ३७४ |
| जीव भाषक है के अभाषक है इत्यादि | ३७५ |
| नारकी अपर्याप्त अभाषक पर्याप्त भाषक है | ६७५ |
| एवं एकेंद्रिय को छोडकर सर्वदंडक प्रश्नोत्तर कहना | ३७६ |
| चार भाषा की जाति कही | ३७६ |
| जीव क्या सत्य भाषा बोलै कि असत्या भाषा बोलै इत्यादि | ३७६ |
| नारकी सत्य भी बोलै असत्य भी बोलै एवं असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त, द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय नही सत्य नही असत्य नही सत्यासत्य असत्यामृषा बोलै, पंचेंद्रिय तिर्यंच असत्यामृषा भाषा बोलै, | ३७६ |
| जीव जिन द्रव्यों को भाषा पणें ग्रहै सो क्या स्थित ग्रहै के अस्थित | ३७७ |
| एवं द्रव्य क्षेत्र काल और भाव वक्तव्यता से | |

| विषय और प्रज्ञनादि | पत्रांक | विषय और प्रज्ञनादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| भाषा द्रव्य की | ३७७ | नारकी जिन द्रव्यों को भाषापणें ग्रहै सो स्थित | |
| पुठोगाढ अणंतर यह उक्तार्थ संग्रह गाथा | ३८२ | के अस्थित ग्रहै | ६८६ |
| जीव जिन द्रव्यों को भाषापणे ग्रहै सो क्या सा | | एवं एकेन्द्रिय को छोडकर वैमानिक पर्यन्त दं | |
| न्तर ग्रहै के निरन्तर | ३८२ | डक कहना अल्पबहुत्व तक | ३८६ |
| जीव जिनको भाषा पणे निकालै सो निरन्तर | | जीव जिन द्रव्यों को भाषा पणें ग्रहै सो स्थितके | |
| निकलै के सान्तर निकलै इत्यादि | ३८३ | अस्थित ग्रहै एवं पृथक्त्व से भी दंडक कहना | |
| जो द्रव्य भाषापणे निकलै गृहीत के अगृहीत, | | वैमानिक पर्यन्त | ३८७ |
| भिन्नके अभिन्न निकलै | ३८४ | जीव जिनद्रव्यों को सत्यभाषापणें ग्रहै इत्यादि | |
| इन भाषा द्रव्यों का खंड भेदादि पांचभेद कहे, | | औधिक गमाके ऐसे सर्व कहना फकत वेरिंद्री | |
| खंड भेदादि निरूपण | ३८५ | तेरिंद्री चौरिंद्री छोडदेना | ३८८ |
| खंडभेद प्रतरभेद चूर्णिकाभेद अनुतटिकाभेद से | | कितने प्रकार वचन, सोलह भेदें एकवचनादि | |
| उत्कटिका भेद से भिन्न भाषा द्रव्यों में कौन | | भेद से | ३८८ |
| किस्से थोडा घणा इत्यादि | ३८६ | कितने भाषाजात, चार कहे, इन चारों को | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| बोलता जीव आराधक है के विराधक है, सत्यभासी मृषाभाषी आदि भाषक अभाषकजी वों में कौन किस्से थोडा घणा इत्यादि वक्तव्यताधिकार | ३०९ |
| (११ भाषा पद पूर्ण हुआ) | |
| ॥ १२ वां पद कहते हैं ॥ | |
| पांच शरीर कहे औदारिक वैक्रिय आहारक तैजस कार्मण | ३१० |
| नारकी को वैक्रिय तैजस कार्मण यह तीन शरीर हैं | ३१० |
| एवं असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार पर्यन्त कहा | ३१० |
| पृथिवीकाय को औदारिक तैजस कार्मण तीन शरीर, वायुको छोड चौरिन्द्री पर्यन्त सबको | |
| यही तीन शरीर है, वायु को ४ शरीर औदारिक वैक्रिय तैजस कार्मण है, पंचेंद्रिय तिर्यंच को भी चारही शरीर है | ३११ |
| मनुष्य को पांचो शरीर होते हैं, वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक को जैसे नारकी को कहा ३ शरीर कहना, | ३११ |
| औदारिक शरीर बद्ध और मुक्त भेद से दो भेद है, इत्यादि निर्णय | ३११ |
| वैक्रिय भी बद्ध मुक्त भेद से दो तरह है, खेत्र काल से निर्णय | ३१२ |
| आहारक भी दो भेद है | ३१२ |
| तैजस भी दो भेदें है, क्षेत्र से अनंत लोक द्रव्य से सिद्धों से अनन्तगुण सर्व जीवों से अनन्त | |

| विषय और प्रज्ञनादि | पत्रांक |
|---|---|
| भागोन, इत्यादि वक्तव्यता | ३९५ |
| एवं कार्मण शरीर भी कहना | ३९५ |
| नारकी को दोनो औदारिक शरीर है वद्ध भी मुक्त भी है | ३६९ |
| एवं वैक्रिय भी, आहारक शरीर भी कहना | ३९७ |
| असुरकुमार शरीर वक्तव्यताधिकार, स्तनितकुमार पर्यंत | ३९८ |
| पृथिवीकाय को दो औदारिक शरीर, क्षेत्रकाल से निरूपण | ३९८ |
| पृथित्रीकाय को दो वैक्रिय शरीर, एवं शेष शरीर भी कहना, अप्काय तेजस्काय भी कहना, वायुको दो औदारिक शरीर, दो वैक्रिय, एवं शेष शरीर भी कहना, द्वीन्द्रिय को दो औदारिक, एवं चतुरिन्द्रिय पर्यंत कहा सर्व शरीर | ४०० |
| पंचेन्द्रिय तिर्यंच भी इसी तरह कहना वैक्रिय में विशेष है | ४०१ |
| मनुष्य को दो औदारिक शरीर है, इत्यादि | ४०१ |
| (१२ वां शरीर पद पूर्ण हुआ) | |
| कितने प्रकार परिणाम, दो भेद जीव परिणाम और अजीव परिणाम | ४०७ |
| जीव परिणाम, गति परिणाम आदि भेद से १० प्रकार है | ४०७ |
| गति परिणाम चार प्रकार है ४ गति भेद से, इंद्रिय परिणाम ५ भेद है, कषायपरिणाम ४ भेद, लेश्या परिणाम ६ भेद | ४०८ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| योगपरिणाम मन वचन काया से तीन भेद, उपयोगपरिणाम दो भेद है, ज्ञानपरिणाम पांच भेद है, अज्ञानपरिणाम ३ भेद, दर्शनपरिणाम तीन भेद, चारित्रपरिणाम ५ भेद, वेदपरिणाम तीन भेद है इत्यादि वक्तव्यताधिकार | ४०९ |
| असुरकुमार गतिपरिणामाधिकार | ४१० |
| पृथिवीकाय परिणाम वक्तव्यताधिकार | ४११ |
| अप् वनस्पतिकाय भी ऐसेही कहा, तेजो वायु मे लेश्यापरिणाम जैसे नारकी को कहा, द्वीन्द्रियगतिपरिणामाधिकार एवं चौरिन्द्रिय पर्यन्त | ४११ |
| पंचेंद्रिय तिर्यंच वक्तव्यताधिकार | ४१२ |
| मनुष्य गतिपरिणामाधिकार | ४१२ |
| वानव्यन्तर गतिपरिणामाधिकार जोतिषी भी ऐसेही कहा | ४१२ |
| अजीव परिणाम बन्धनपरिणाम आदि भेद से १० प्रकार कहा | ४१३ |
| बन्धन परिणाम दो भेद, दो गाथा | ४१३ |
| गतिपरिणाम दो भेद है, संस्थानपरिणाम पांच भेद है, | ४१४ |
| वर्ण परिणाम पांच भेद है, गन्धपरिणाम दो भेद है | ४१४ |
| रसपरिणाम ५ भेद, स्पर्शपरिणाम ८ भेद है, | |
| अगुरुलघुपरिणाम १ भेद, शब्दपरिणाम दो भेद | ४१५ |
| (गति परिणाम पद १३ पूर्ण) | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ॥ १४ पद कहते है ॥ | |
| क्रोधादि चार कषाय कहे एवं वैमानिक पर्यन्त कहा | ४१५ |
| कतिप्रतिष्ठित क्रोध है एवं नैरयिक यावद्वैमानिक पर्यन्त | ४१६ |
| कितने तरह से क्रोध होता है ४ तरह कहा वैमानिक पर्यन्त | ४१६ |
| अनन्तानुबन्धी आदि ४ प्रकार क्रोध कहा नार की यावद्वैमानिक पर्यन्त, एवं मान माया लोभ सेती चारो दंडक कहा | ४१७ |
| आभोग निर्वर्त्तित आदि चार भेदें क्रोध कहा एवं मानादिकी | ४१७ |
| जीव चार तरह से आठ कर्म चिणें इत्यादि अधिकार | ४१७ |
| एवं वैमानिक पर्यन्त जीव से लगाय १८ दंडक कहना | ४१९ |
| (१४ वां कषाय पद पूर्ण हुआ) | |
| ॥ १५ वां पद कहते हैं ॥ | |
| संठाणं बाहल्लं इत्यादि गाथा २ | ४१९ |
| पांच इन्द्रिय कही | ४२० |
| श्रोत्रेंद्रिय कलम्बुका संस्थान संस्थित है | ४२० |
| चक्षु मसूरचन्द्रसंस्थानसंस्थित है, नासिका अतिमुक्तक संस्थान संस्थित है, जिह्वा खुरे के संस्थान है, स्पर्शनेंद्रिय नानासंस्थान संस्थित है | ४२० |
| श्रोत्रेंद्रिय बाहल्य यावत् स्पर्शनेंद्रिय बाहल्य | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| अंगुलासंख्यातभाग | ४२१ |
| श्रोत्रेंद्रिय अंगुल के असंख्यात भाग पृथु है, चक्षु | |
| घ्राण भी ऐसे | ४२१ |
| जिह्वाअंगुलपृथक्क,स्पर्शनेन्द्रियशरीरप्रमाणमात्रहै | ४२१ |
| श्रोत्रेंद्रिय अनन्तप्रदेश, असंख्यात प्रदेशावगाढ | |
| एवं यावत्स्पर्श | ४२१ |
| इन श्रोत्र चक्षु घ्राण जिह्वा स्पर्शनेन्द्रिय में अ- | |
| वगाहनार्थतासे प्रदेशार्थतासे अवगाहनप्रदेशा | |
| र्थतासे कौन किस्से थोडा घणा इत्यादि | ४२१ |
| श्रोत्रेन्द्रिय में अनन्ता कर्कशगुरुगुण कहा, एवं | |
| यावत्स्पर्श, श्रोत्रेंद्रिय में अनन्ता मृदुलघुगुण | |
| कहा एवं यावत्स्पर्श | ४२२ |
| नारकी को पांच इंद्री है, नारकी का श्रोत्रेंद्रिय | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| कलंबुकासंस्थान है | ४२४ |
| नारकी का स्पर्शनेन्द्रिय कौन संख्यात इत्यादि नि० | ४२४ |
| असुरकुमार के कितने इंद्रिय जैसे औदारिक कहा | |
| अल्पबहुत्व २ विशेष | ४२५ |
| एवं स्तनितकुमार पर्यन्त कहना, पृथिवीकाय को | |
| १ स्पर्शनेन्द्रिय है और वह मसूरचंद्रसंस्थान है, | ४२५ |
| पृथिवीकाय का स्पर्शन अंगुल असंख्यात भाग | |
| बाहल्यपणें, पृथुपणें शरीरप्रमाण मात्र कहा, | |
| और वह अनन्तप्रदेशिक है, पृथिवीकाय स्पर्शन | |
| असंख्येयप्रदेशावगाढ है, | ४२५ |
| यह पृथिवीकायस्पर्शनेन्द्रिय अवगाहनार्थ प्रदे | |
| शार्थ से कौन किस्से अल्पादि | ४२५ |
| पृथिवीकायस्पर्शन के कितने कर्कशगुरुगुण है, | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| एवं मृदुलघुगुण भी अनन्त है, और इनका अ | |
| ल्पबहुत्वादि | ४२६ |
| एवं अप् यावत् वनस्पतिकाय विशेष यह के | |
| वुदवुदे ऐसा है, तेजस्काय शूचीकलापसंस्थान | |
| संस्थित है, वायु पताका संस्थान, वनस्पति | |
| नानासंस्थान संस्थित है | ४२६ |
| वेरिंद्रिय के दो इंद्रिय सर्व अधिकार पूर्ववत् कहा | ४२७ |
| त्रीन्द्रिय के घ्राण स्तोक है, चतुरिन्द्रिय के चक्षु | |
| स्तोक | ४२८ |
| पंचेंद्रिय तिर्यंच और मनुष्य के जैसे नारकी कहा | ४२८ |
| वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे असुरकु— | |
| मार कहा | ४२८ |
| स्पृष्ट शब्द सुणे अस्पृष्ट सुणै, स्पृष्ट रूप देखे | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| अस्पृष्ट रूप देखै, स्पृष्ट गन्ध लेवे अस्पृष्ट गन्ध | |
| लेवै, इत्यादि रस स्पर्श भी कहना जैसे पहले | |
| कहा तैसे कहना | ४२९ |
| एवं जैसे स्पृष्ट तैसे प्रविष्ट, श्रोत्रेंद्रिय का विषय | |
| अंगुल के असंख्यात भाग में उत्कृष्ट बारह यो | |
| जनसे छिन्न पुद्गल स्पृष्ट शब्द सुणे | ४३० |
| चक्षु इंद्रिय का विषय जघन्य अंगुल का संख्यात | |
| भाग उत्कृष्ट सातिरेक योजन सहस्र अच्छिन्न | |
| पुद्गल अस्पृष्ट अप्रविष्ट रूप देखै | ४३० |
| घ्राणेंद्रिय का जघन्य अंगुल असंख्यात भाग उ | |
| त्कृष्ट नव योजन से गन्ध ग्रहण करे, एवं जि | |
| ह्वाभी कहो, स्पर्शनेंद्रिय भी इसीतरह है, | ४३१ |
| अनगार भावितात्मा मारणांतिक समुद्घात से सम | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| वहत के जो चरम निर्जरा पुद्गल सो सूक्ष्म है इत्यादि निर्णय | ४३१ |
| छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों को अन्यत्व नानात्व को जाणे देखे नही, देवता भी कोई उन निर्जरा पुद्गलों के अन्यत्व नानात्व को न देखें न जाणै | ४३२ |
| यह सूक्ष्म निर्जरा पुद्गल सर्वलोक को अवगाह के रहते हैं, नारकी उन पुद्गलों को न जाणै न देखै एवं पचेंद्रिय तिर्यंच पर्यन्त कहना, मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलो को कोई जाणे देखै कोई न जाणै न देखै इत्यादि अधिकार | ४३३ |
| वानव्यन्तर जोतिषी जैसे नारकी को कहा, वैमानिक जैसे मनुष्य को कहा, वैमानिक दो भेदें इत्यादि | ४३४ |
| आदर्श (सीसे) को देखता मनुष्य क्या आदर्श को देखै के अपने को देखै प्रतिभाग (छाया) को देखे इत्यादि निर्णय | ४३५ |
| एवं असि मणी आदि का भी आलावा कहा | ४३६ |
| खूब गाढा लपेटा हुआ कम्बल जितने आकाश को रोक के रहै फैलाया हुआ भी उतने ही आकाश को रोकै | ४३६ |
| एवं स्थूणा सूत्र भी कहा, आकाशथिग्गल काहे से व्याप्त है कितने काय से स्पृष्ट है, पृथिवी काय यावत् त्रसकाय काल से स्पृष्ट है ? धर्मास्ति काय से स्पृष्ट है परं इसके देश और प्रदेशसे नही है एवं अधर्मास्तिकाय से स्पृष्ट है परं | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| उस्के देश प्रदेश से नही है आकाशास्तिकाय से स्पृष्ट नही है इस्के देश और प्रदेश से स्पर्श किये है, त्रसकाय से कदाचित् स्पृष्ट अस्पृष्ट है, काल के देश से स्पर्श किए है | ४३७ |
| जम्बूद्वीप नही धर्मास्तिकाय से इस्के देश प्रदेश से स्पृष्ट एवं अधर्म और आकाशास्तिकाय से नी कहा, पृथिवी से यावत् वनस्पति से स्पर्श किये है, त्रस काय से कदाचित् है | ४३८ |
| एवं लवण समुद्र, धातकी खंड आदि नी कहा सो गाथा है | ४३८ |
| लोक किस्से व्याप्त है इत्यादि जैसे आकाशथिग्गल कहा, अलोक नही धर्म अधर्म और आकाशास्ति काय से किन्तु आकाशास्तिकाय के | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| देश प्रदेश से स्पृष्ट है, पृथिवी से स्पृष्ट नही काल से स्पृष्ट एक अजीव प्रदेश अगुरुलघु अनन्त अगुरुलघुगुणसंयुक्त सर्वाकाश से अनन्त नागो न है | ४४० |
| ॥ १५ वां पद का १ उद्देशा पूर्ण ॥ | |
| इंद्रिय उपचय इत्यादि अर्थ संग्रह गाथा २ | ४४० |
| कितने प्रकार इंद्रियोपचय कहा, ५ तरह का इंद्रिय नेद से | ४४० |
| नारकी को पांचो इंद्रिय का उपचय कहा, एवं वैमानिक पर्यन्त सर्व दंडक में कहना नेद यही के जिस्को जितनी इंद्रिय उतनाही का उपचय कहना, एवं इंद्रिय की निर्वर्त्तना नी पांच तरह की कही है, नारकी से वैमानिक पर्यन्त | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| जिस्को जितनी इंद्रिय है उतने को निर्वर्त्तना नी कहना, श्रोत्रेंद्रिय निर्वर्त्तना का काल अ संख्यात समय अन्तर्मुहूर्त्त नी कहा, एवं स्प र्शन तक, एवं नारकी से वैमानिक पर्यन्त नि र्वर्त्तना काल कहा, पांच नेदें इंद्रिय लब्धि क ही, एवं२४दंडक में जिस्को जितनी हो कहना, इंद्रियोपयोग काल नी पांच प्रकार है नारकी से वैमानिक पर्यन्त यथोचित कहना | ४४१ |
| इन श्रोत्र आदि पांचो इंद्रियों के उपयोग ३ जघन्य उत्कृष्ट अजघन्योत्कृष्ट में परस्पर कौन किस्से थोडा घणा इत्यादि | ४४२ |
| इंद्रियावगाहना पांच प्रकार नारकी से वैमानिक पर्यंत जिस्को जितनो इंद्रिय हो उन्ही की अ | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| वगाहना कहनी, पांच प्रकार का अपाय २४ दंडक में यथोचित कहा, ईहा पांच प्रकार की चौवीस दंडक में यथोचित कहना, | ४४३ |
| अवग्रह व्यंजन और अर्थ के नेद से दो प्रकार है, व्यंजनावग्रह श्रोत्र घ्राण जिह्वा स्पर्शन्द्रि चार नेद है, अर्थावग्रह पांच इंद्रियों का पांच और मन से ६ प्रकार होता है उनमें से नार की को २ व्यंजन और अर्थ का अवग्रह है एवं वैमानिक पर्यंत कहा | ४४४ |
| पृथिवीकाय को दो प्रकार अवग्रह, व्यञ्जनाव ग्रह स्पर्शनेंद्रिय का एक ही है, अर्थावग्रह भी एक स्पर्शनेंद्रिय का है, एवं वनस्पति पर्यंत कहा, एवं द्वीन्द्रिय को, नेद यह के व्यञ्जनाव | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ग्रह दो है, एवं तेइंदीय चौरिंदीय में इंद्रिय बढाय के कहना, चौरिंदीय को व्यञ्जनावग्रह तीन अर्थावग्रह चार है, शेष जैसे नारकी को कहा तैसे वैमानिक तक | ४४५ |
| द्रव्य और भाव भेद से दो तरह की इंद्रिय है, आठ दव्येंद्रिय २ कान २ नेत्र २ नाक जीभ स्पर्श ८, नारकी को आठों है, एवं असुर यावत् वैमानिक स्तनितकुमार तक। पृथिवी काय द्रव्यें १ स्पर्ज्ञ यावद्वनस्पति पर्यंत। द्वीन्द्रिय को द्रव्यें स्पर्ज्ञ १ जिह्वा २ दो है, तेरिंद्री को दो नाक जीभ और स्पर्ज्ञ ए ५ हैं। चौरिंद्री को द्रव्यें दो नेत्र दो नाक जीभ ५ स्पर्श ए ६ हैं। शेष को जैसे नारकी को कहा | ४४६ |
| एकेक नारकी के अनंता द्रव्येंद्रिय अतीत है। बद्ध आठ है। पुरस्कृत ८। १६। १७। संख्यात असंख्यात और अनंत भी होते हैं | ४४७ |
| एकेक असुरकुमार के कितने द्रव्येंद्रिय अतीत अनंत। बद्ध ८। पुरस्कृत ८। १। संख्यात असंख्यात अनंत। एवं स्तनितकुमार तक | ४४७ |
| एवं पृथिवीकाय अप्काय कहा, वनस्पतिकाय को बद्ध एक स्पर्ज्ञ द्रव्येंद्रिय है, तेजो वायु भी ऐसे ही है भेद यह के पुरस्कृत १। १० है, एवं द्वीन्द्रिय भी भेद यह के बद्ध दो है, त्रीन्द्रिय को बद्ध चार, चौरिन्द्री को बद्ध ६ है, पंचेन्द्रिय तिर्यंच मनुष्य वानव्यन्तर जोतिषी सौधर्म ईसान देव जैसे असुरकुमार, भेद | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| इतनाही के मनुष्य को पुरस्कृत है भी नही भी है, सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म लान्तक शुक्र सहस्त्रार आनतप्राणत आरण अच्युत ग्रैवेयक देव को जैसे नारकी को, पंचानुत्तर देव को अतीत अनन्त बहु ८। १६। २४। संख्यात, सर्वार्थसिद्धदेव को अतीत अनन्त बहु ८। पुरस्कृत ८, नारकी को द्रव्येन्द्रय अनन्त अतीत बहु असंख्यात पुरस्कृत अनन्त एवं ग्रैवेयक देव पर्यंत मनुष्य को बहु कदाचित् संख्यात असंख्यात भी है, पंचानुत्तर देव को अतीत अनन्त बहु और पुरस्कृत असंख्य है, सर्वार्थसिद्धदेव को अतीत अनन्त बहु पुरस्कृत संख्यात है, एकेक नारकी के नारकी पणें में | ४४८ |
| कितने द्रव्येंद्रिय अतीत, एवं नारकी के असुरपणें में अतीत बहु पुरस्कृत द्रव्येंद्रिय कहे | ४४९ |
| एकेक नारकी का एकेन्द्रिय पने में कितने अतीत बहु पुरस्कृत हैं, द्वीन्द्रियपने में कितने हैं, त्रींदीय पने में कितने है इत्यादि निर्णय | ४५० |
| एवं चौरिन्द्रिय भी परं पुरस्कृत ६। १२। १८ संख्यात असंख्यात अनन्त है, पंचेंदीय तिर्यंचपने में जैसे असुरकुमार पने में कहा, एवं मनुष्यपनें में भी पर पुरस्कृत ८। १६। २४। संख्यात असंख्यात अनन्त है, वानव्यन्तर जोतिषी सौधर्म देव ग्रैवेयकदेवपने में अतीत अनन्त बहु नही पुरस्कृत कदाचित्, एकेक नारकी को पंचानुत्तर देवपने में अतीत नही | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| वद्धु नहीं पुरस्कृत कदाचित् , एवं सर्वार्थसिद्धु देवत्व में भी कहा, | ४५१ |
| एकेक मनुष्य के नारकीपनें में , यावत्पंचेंद्रिय तिर्यंच पने में मनुष्यपने में, वानव्यन्तर जो तिष्क यावत् ग्रैवेयक देवपने में, विजयवैजयन्तादि देवपने में, सर्वार्थसिद्धदेवपने कितने द्रव्येंद्रिय अतीत वद्ध पुरस्कृत इत्यादि | ४५२ |
| वानव्यन्तर जोतिषी जैसे नारकी, सौधर्मदेवभी जैसे नारकी सौधर्म देव को पंचानुत्तर देवपनें में, सर्वार्थसिद्धुदेवत्वमें अतीतादि कहा, अनुत्तरदेवको नारकीपने में अतीतादि | ४५३ |
| अनुत्तरदेव को सर्वार्थसिद्धुदेवत्व में। सर्वार्थसिद्धु देव को नारकीपने में एवं मनुष्यवर्ज सर्व में | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| अतीतादि | ४५४ |
| नारकी के नारकी पने में कितने द्रव्येंद्रिय इत्यादि | ४५४ |
| (द्वार पूर्ण हुआ) | |
| नारकी को कितने भावेंद्रिय, पांच है, एवं वैमानिक पर्यन्त यथोचित कहना, एकेक नार—की के कितने अतीत वद्धु पुरस्कृत इत्यादि वक्तव्यता | ४५७ |
| एकेक नारकी के नारकीपने में कितने भावेंद्रिय अतीत | ४५८ |
| (१५ पद समाप्त हुआ) | |
| ॥ १६ वां पद कहते है ॥ | |
| पनरह प्रकार प्रयोग कहा । | ४५९ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| जीवको पनरह प्रकार उपयोग है । नारकी को ग्यारह भेदें है। एवं असुरकुमार पर्यन्त कहना पृथिवीकाय को तीन उपयोग। एवं वनस्पति पर्यन्त कहा | ४६१ |
| वायुकाय को ५ उपयोग । वेरिन्द्री को चार प्रकार एवं चौरिंद्री पर्यन्त पंचेंद्रियतिर्यंच को तेरह प्रकार है | ४६२ |
| मनुष्य को पनरह उपयोग । वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक को जैसे नारकी को कहा । जीव क्या सत्यमनप्रयोगी यावत्क्या कार्मण शरीर कायप्रयोगी इत्यादि भांगे ८ कहे | ४६३ |
| नारकी क्या सत्यमनप्रयोगी इत्यादि । एवं असुरकुमार यावत्स्तनितकुमार पर्यन्त कहा । पृथिवीकाय क्या औदारिकशरीरकायप्रयोगी—औदारिकमिश्रशरीरकायप्रयोगी के कार्मणशरीरकायप्रयोगी एवं वनस्पतिकाय पर्यन्त प्रश्नोत्तर कहा । वायुको वैक्रियमिश्रशरीरकाय—प्रयोग है | ४६४ |
| द्वीन्द्रिय क्या औदारिकशरीरकायप्रयोगी यावत् क्या कार्मणशरीरकायप्रयोगी है । एवं चौरिंद्रिय पर्यन्त कहा | ४६५ |
| पंचेंद्रिय तिर्यंच जैसे नारकी भेद यह के औदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकमिश्रशरीरकाय प्रयोग भी है । मनुष्य को कायप्रयोग निर्णय भंग २४ त्रिकयोगें ३२ चतुः संयोगी १६ सर्व ८० वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे असुरकुमार | ४६५ |

| विषय और प्रज्ञनादि | पत्रांक |
|---|---|
| कहा। पांच प्रकारें गतिप्रपात कहा प्रयोगगति आदि के भेद से। प्रयोगगति १५ भेदें जैसे प्रयोग कहा तैसे यह भी कहनी। जीवों को प्रयोगगति पनरह भेदें है। नारकी का ११ प्रकार है एवं वैमानिक पर्यन्त | ४७४ |
| जीवों को क्या सत्यमनप्रयोगगति यावत् क्या कार्मणशरीरकायप्रयोगगति है यावद्वैमानिक पर्यन्त कहा। एवं गति भेद वक्तव्यता (१६ वां प्रयोग पद कहा) | ४७५ |
| ॥ १७ वां पद कहते हैं ॥ | |
| आहारसमसरीरा यह अर्थ संग्रह गाथा | ४८४ |
| नारकी सर्व समाहार समशरीर समुत्स्वासनिश्वास हैं इत्यादि | ४८५ |
| नारकी सर्व समकर्म हैं इति वक्तव्यता। नारकी सर्व समोपपन्नक हैं | ४८६ |
| नारकी सर्व समवर्णहै इत्यादि जैसे वर्णकहा तैसे लेश्या, वेदना, समक्रिय है | ४८७ |
| नारकी सर्व समायु समोपपन्नकहै इत्यादि निर्णय असुरकुमारतक | ४८८ |
| असुरकुमार सर्व समकर्म इत्यादि एवं स्तनित कुमार पर्यन्त कहा | ४८९ |
| पृथिवीकाय आहार वर्ण कर्म और लेश्यासे जैसे नारकी कहा | ४९१ |
| एवं चौरिंद्रिय, पंचेंद्रिय तिर्यंच जैसे नारकी | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| फर्क क्रियामें है | ४१२ |
| मनुष्य सर्व समाहार है इत्यादि जैसे नारकी, | |
| भेद क्रियासे तीन भेदहै | ४१३ |
| वानव्यन्तर जैसे असुरकुमार | ४१४ |
| एवं जोतिषी वैमानिक भी भेद यह के वेदना से | |
| द्विविध है | ४१५ |
| जैसे औधिक गमा कहा तेसे सलेश्य का गमा | |
| कहना वैमानिक पर्यन्त | ४१६ |
| पृथिवी अप् वनस्पति पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य जैसे | |
| औधिक गमा कहा भेद मनुष्य को क्रिया में | |
| प्रमत्त अप्रमत्त कहा | ४१७ |
| ( १ उद्देशा पूर्ण हुआ ) | |
| कितनी लेश्या छ कही, नारकी को कितनी ले | |
| श्या, तिर्यंच योनिक को छ लेश्या, एकेंद्रिय | |
| को चार लेश्या, | ४१८ |
| पृथिवीकाय को चार लेश्या, अप् वनस्पति भी | |
| ऐसाही है, तेजो वायु द्वीद्रिय त्रीद्रिय चतुरिं | |
| द्रिय जैसे नारकी, पंचेंद्रिय तिर्यंच को छ, संमू | |
| र्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच जैसे नारकी, गर्भज पंचें | |
| द्रिय तिर्यंच को छ एवं लेश्या वक्तव्यताधिकार | ४१९ |
| गर्भजमनुष्य को छ, देव को छ, देवियों को चार, | |
| एवं भवनवासि देव देवी वानव्यन्तर देव देवी | |
| वैमानिक देव देवी लेश्याधिकार | ५०० |
| यह जीव सलेशी कृष्णलेशी यावत् शुक्ललेशी में | |
| कौन किससे थोडा घणा इत्यादि अल्प बहुत्व | |
| वक्तव्यता उद्देश समाप्ति तक | ५०१ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| (२ उद्देशा पूर्ण झाझा) | |
| नारकी नारकी में उपजै के अनारकी नारकी में उपजै एवं वैमानिक पर्यंत कहा, नारकी नारकी से निकले के अनारकी से, एवं वैमानिक पर्यंत जोतिषी वैमानिक में चयन्ति ऐसा कहना | ५१३ |
| कृष्णलेशी नारकी कृष्णलेशी नारकी में उपजै इत्यादि निर्णय यावत् शुक्कलेशी शुक्कलेशी में उपजै एवं २४ दंडक में यथोचित कहना | ५१४ |
| (३ उद्देशा पूर्ण झाझा) | |
| परिणाम गंध इत्यादि गाथा | ५२१ |
| ७ लेश्या कही | ५२२ |
| कृष्णलेश्या नीललेश्या को पाके तद्वर्ण तद्रूप तद्गन्धादि पणें परिणमें | ५२२ |
| एवं अनिलापें नीललेश्या कापोतलेश्या को पाके कापोत तेजोलेश्या को पाके तेजोलेश्या पद्मलेश्या को पाके पद्मलेश्या शुक्कलेश्या को पाके तद्रूपादिपणें परिणमें इत्यादि सदृष्टान्त | ५२३ |
| कृष्णलेश्या कैसी वर्ण से, जीमूत अंजन खंजन कज्जलादि सदृश है | ५२५ |
| नीललेश्या वर्ण निरूपण, कापोत लेश्यादि वर्ण निरूपण | ५२६ |
| एवं आस्वाद निरूपण ७ लेश्या का | ५३३ |
| तीन लेश्या दुरभिगन्ध और तीन सुरभि गन्ध है, एवं शुद्धाशुद्ध, एवं प्रशस्ता प्रशस्त, संक्लिष्टासंक्लिष्ट, और स्पर्श, सुगति दुर्गतिगामी कही है। कृष्णलेश्या ३। १। २७। ८१। ४२। | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ७ परिणामें परिणमैं | ५३४ |
| कृष्णलेश्या अनन्तप्रादेशिकी एवं यावत् शुक्ललेश्या, कृष्णलेश्या असंख्येयप्रदेशावगाढ एवं यावत् शुक्ललेश्या, कृष्णलेश्या की कितनी अवगाहना एवं शुक्ललेश्यावगाहना, स्थान असंख्यात | ५३५ |
| लेश्यास्थानों का, अल्पबहुत्व द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ द्रव्यार्थप्रदेशार्थ से | ५३६ |
| (चौथा उद्देशा पूर्ण हुआ) | |
| कृ लेश्या कही, कृष्णलेश्या नीललेश्या को पाके जैसे चौथे उद्देशे में कहा वैडूर्य मणि दृष्टान्त पर्यन्त कहना इत्यादि वक्तव्यता | ५४० |
| (पांचवां उद्देशा पूर्ण हुआ) | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| कृ लेश्या कही, मनुष्य को कितनी लेश्या इत्यादि निर्णयाधिकार | ५४२ |
| (लेश्या पद १७ वां पूर्ण) | |
| ॥ १८ वां पद कहते हैं ॥ | |
| जीवगइंदिय काए यह संग्रह गाथा २ | ५४५ |
| जीव जीवपनें कालसे कबतक रहै, सर्वकाल | ५४५ |
| नारकी नारकीपनें काल से कितने काल रहै, एवं तिर्यंच क्षेत्र से काल से कहा, तिर्यंचणी, मनुष्य मनुष्यणी देव देवीइनका प्रश्नोत्तर | ५४६ |
| नारकी अपर्याप्त नारकी पणे कालसे कब तक एवं यावद्देवी पर्यन्त | ५४८ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| नारकी पर्याप्त नारकी पणें कितने काल तक रहै इत्यादि अधिकार | ५४९ |
| सइंद्रिय सइंद्रियपणें कालसे कबतक होय इत्यादि | ५४९ |
| एवं पर्याप्त अपर्याप्त का आलावा कहा | ५५० |
| सकाय सकायपणें, पृथिवीकाय पृथिवीकायपणें, एवं अग्नेजवायु | ५५१ |
| वनस्पतिकाय प्रश्न, त्रसकाय त्रसकायपणें, अ काय अकायपणें, एवं त्रसकाय पर्याप्त अपर्याप्त तक कहा | ५५२ |
| सूक्ष्म पृथिवी अपूतेज वायु वनस्पति, एवं वा दर नी | ५५४ |
| वादर निगोद प्रश्न, | ५५५ |
| सयोगी सयोगीपणें काल से कितने काल होय, एवं मन बचनकाय योगी | ५५६ |
| अयोगी अयोगीपणें, सवेदक सवेदकपणें इत्यादि निर्णय | ५५७ |
| एवं स्त्री पुरुषवेद नपुंसकवेद प्रश्न, अवेद प्रश्न, सकषाई प्रश्न, एवं क्रोध माया मान लोन कषायी अकषायी निर्णय | ५५९ |
| सलेशी का प्रश्न एवं ल ले० ओंका आलावा क हना अलेशी नी | ५६० |
| सम्यग्दृष्टि सम्यग्दृष्टिपनें इत्यादि निर्णय | ५६१ |
| ज्ञानी ज्ञानीपनें कालसे कबतक इत्यादि प्रश्नोत्तर | ५६२ |
| विभंग ज्ञानी चक्षुदर्शनी अचक्षुदर्शनी अवधिद र्शनी का प्रश्न | ५६३ |
| संयत असयत संयतासंयत प्रश्न | ५६५ |
| | ५६६ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| साकारोपयुक्त अनाकारोपयुक्त नी इसीतरह | ५६७ |
| छद्मस्थ आहारक प्रश्न, केवलि आहारक तथा अनाहारक काल | ५६८ |
| भाषक अभाषक प्रश्न, काय परित्त अपरित्त काल निर्णय | ५६९ |
| पर्याप्त अपर्याप्त नो पर्याप्त नो अपर्याप्त सूक्ष्म बादर संज्ञी असंज्ञी | ५७१ |
| भवसिद्धिक अभवसिद्धिक चरम अचरम काल निर्णय | ५७२ |
| (१८ वां पद समाप्त हुआ) | |
| ॥ १९ कहते हैं ॥ | |
| जीव सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि सम्यङ्मिथ्यादृष्टि है, | ५७३ |
| एवं नारकी असुरकुमार याव त्स्तनितकुमार पर्यन्त, पृथिवीकाय मिथ्यादृष्टि ही है, एवं वनस्पतिकाय पर्यन्त कहना, द्वीन्द्रिय मिश्रदृष्टि नही है एवं चौरिन्द्रिय पर्यन्त कहा, पंचेंन्द्रिय तिर्यंच जोतिषी मनुष्य वानव्यन्तर वैमानिक तीनों है, सिद्ध सम्यग्दृष्टि हैं | ५७३ |
| (१९ वां सम्यक्त पद कहा) | |
| ॥ २० वां पद कहते हैं ॥ | |
| नेरइय अंतकिरिया यह द्वार गाथा—जीव अंत क्रिया करै एवं नारकी यावद्वैमानिक, नारकी नारकी में अन्तक्रिया करै नही | ५७५ |
| नारकी असुरकुमार में अन्तक्रिया करै एवं याव | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| द्वैमानिक भेद मनुष्य अन्तक्रियाकरै एवं अ | |
| सुरकुमार यावद्वैमानिक एवं२४ दंडक, नारकी | |
| अनन्तरागत अन्तक्रिया करै परम्परागत | |
| अन्तक्रिया करै | ५७५ |
| तेज वायु द्वीन्द्रिय त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय अन्त | |
| क्रिया प्रश्न अनन्तरागत नारकी एकसमय मै | |
| जघन्य एक दो तीन उत्कृष्ट दश अन्तक्रिया | |
| करै रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी तथा अनंतरा | |
| गत पङ्कप्रभादि पृथिवी का नारकी अन्तक्रिया | |
| एवं असुरकुमार कुमारी प्रश्न | ५७५ |
| अनन्तरागत पृथिवीकायिक जघन्य एक दो तीन | |
| उत्कृष्ट चार एवं अप्कायिक भी वनस्पति का | |
| यिक छ पंचेंद्रिय तीर्यञ्च दश तीर्यञ्चणी दश | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| मनुष्य दश मनुष्यणी बीश वानव्यंतर दश | |
| व्यंतरी पांच जोतिषी वीस इत्यादि | ५७६ |
| नारकी नरक से निकल नरक मैं उपजै नही ना | |
| रकी नरक से निकल असुरकुमार में उपजै नही | |
| यावत् चउरींद्रिय | ५७६ |
| नारकी नरक से निकल पञ्चेंद्रिय तिर्यञ्च मैं | |
| उपजै इत्यादि | ५७७ |
| नारकी नरक से निकल व्यंतर जोतिषी वैमानि | |
| क मैं उपजै नही असुरकुमार असुरकुमार से | |
| निकल नारकी में उपजै नही असुरकुमार मर | |
| कै असुरकुमार मैं उपजै नही एवं यावत् | |
| स्तनितकुमार | ५७९ |
| असुरकुमार मरके पृथिवीकाय मैं उपजै कदाचित् | |

| विषय और प्रज्ञनादि | पत्रांक | विषय और प्रज्ञनादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| एवं अप् वनस्पति में भी असुरकुमार मरके तेज वायु द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरींद्रिय में न उपजै शेष पांच में उपजै इत्यादि | ५८० | असुरकुमारचवके तीर्थंकर पणा पावे नही, एवं यावत् अप्, तेजस्काय तेजस्काय से निकल तीर्थंकर होय नहीं धर्मसुने एवं वायु भी, व नस्पतिकाय अंतक्रिया करै तीर्थंकर न हो, पञ्चेंद्रिय तिर्यञ्च मनुष्य वानव्यंतर जोतिषी अंतक्रिया ही करै | ५८५ |
| जैसे पृथिवीकाय कहा तैसे अप् वनस्पति भी कहना, तेजसकाय से निकल तेजसकाय में उपजै यावत् स्तनितकुमार | ५८१ | सौधर्म देव चवके तीर्थंकर होय कोई एक जैसे रत्नप्रभा नारकी एवं यावत्सर्वार्थसिद्ध का देव | ५८५ |
| जैसे तेज तेसे वायु, वेरींद्री वेरींद्री से निकल नारकी में उपजै इत्यादि पञ्चेंद्रिय तिर्यंच पं चेंद्री तिर्यंच से निकल नारकी में उपजै इहां तक | ५८२ | रत्नप्रभा का नारकी चक्रवर्त्त होय, शर्कराप्रभा का न होय एवं यावत्सातमी का नारकी, ति र्यंच मनुष्य भी नही, भवनपति व्यंतर जोतिषी वैमानिक से होय, एवं वलदेव भेद यह के | |
| रत्नप्रभा पृथिवी का नारकी निकल तीर्थंकर होय, कोई एक, एवं यावत् वालुकाप्रभा पंकप्रभा पृथिवी का नारकी निकल तीर्थंकर न होय | | शर्कारापृथिवीका नारकी भी होय, एवं वासु | |
| धूमप्रभा तमा यावत् सप्तमी | ५८४ | | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| देव भी भेद यह दो पृथिवी से वैमानिक से होय शेष नही होय | ५८६ |
| मंडलीक सातमी से तेज वायु से नही, सेनापति आदि भी एवं | ५८६ |
| अश्वरत्न हस्तिरत्न रत्नप्रभा से निकल यावत् सहस्रारदेव हो, चक्ररत्न चर्म दंड छत्र मणि असि काकिणिरत्न असुरकुमार से ईशान तक हो, शेष नही, असंयत भविकद्रव्य देव अविराधितसंयम विराधित संयमा संयम में विराधित संयमा संयम असंज्ञी तापस कांदर्पिक चरणपरिव्राजक किल्विषिक तिरश्चीन आजीविक आभियोगिक सलिंगी दर्शनव्यापन्नक यह देव लोक में उपजै तो कहां कौन किस देवलोक में जाय उपजै एह निर्णय | ५८८ |
| चार प्रकार असंज्ञि आयु कहा, असंज्ञी जीव क्या नैरयिकायु करै कि देवायु करै एवं मनुष्यायु देवायु जैसे नारकायु, एह नारकी असंज्ञिआयु यावत् देव असंज्ञि आयु में कौन किस्से थोडा घणा है एवं अल्पबहुत्व | ५९० |
| (२० वां अंतक्रिया पद पूर्ण) | |
| ॥ २१ वां कहते हैं ॥ | |
| विहिसंठाणपमाणं यह द्वार गाथा | ५९१ |
| पांच औदारिकादि शरीर कहे | ५९१ |
| एकेंद्रियादि ५ भेदसे औदारिक पांच भेदहै | ५९२ |
| पृथिवीकायादि ५ भेदसे एकेंद्रिय औदारिक श | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| रीर पांच प्रकार है | ५९२ |
| पृथिवीकाय एकेंद्रिय औदारिक शरीर सूक्ष्म बा दर नेदसे दो नेद, सूक्ष्म तथा बादरनी पर्याप्त | |
| अपर्याप्त नेदसे प्रत्येक दो दो नेदहै | ५९२ |
| एव वनस्पतिकाय एकेंद्रिय औदारिकनी कहा | ५९३ |
| द्वित्रिचतुरिंद्रिय औदारिकशरीर पर्या० अपर्या० | |
| नेदसे द्विविध कहाहै | ५९३ |
| पंचेंद्रिय औदारिक शरीर तिर्यंच मनुष्यसे दो नेद है, तिर्यंच औदारिक तीन नेदहै एवं जल | |
| स्थल खचरादि नेदनिर्णय | ५९३ |
| मनुष्य पंचेंद्रियौदारिक शरीर दो नेद इत्यादि | ५९५ |
| औदारिक शरीर नानासंस्थान संस्थित हैं, एकें द्रिय का औदारिक नानासंस्थानहै, पृथिवी | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| काय मसूरचंद्र संस्थान संस्थित, एवं सूक्ष्म पृ | |
| थिवीका बादर कानी कहा | ५९६ |
| अप्काय स्तिवुकविंदु संस्थान, सूक्ष्म बादरपर्या | |
| प्ता पर्या० नी, तेज सूचीकलाप संस्थित एवं | |
| सूक्ष्मबादर पर्या० पर्या० नी, वायु पताका | |
| संस्थान संस्थित है, एवं सूक्ष्मादि नीहै, वन | |
| स्पति नानासंस्थान संस्थितहै, एवं सूक्ष्मादि | |
| नीहै, द्वींद्रियौदारिक शरीर झुंझसंस्थान है, | |
| एवं तेरिंद्री चउरिंद्री नी, पंचेंद्रिय तिर्यंचको | |
| कु संस्थान है पर्या० अपर्या० कोनी | ५९६ |
| पर्या० अपर्या० सम्मूर्च्छिम पंचें० तिर्यंच झुंझहै, | |
| प० अ० गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यंच नाना है, | |
| एवं तिर्यंच के ९ अलावे हैं, जलचर में ६ | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| संस्था० सम्मूर्च्छिम मे सर्वत्र जघन्यही है, मनुष्य मे ६ संस्थान सम्मू० में जघन्यही है, औदारिक शरीर की कितनी बड़ी अवगाहना है इत्यादि | ५९८ |
| पृथिवीकाय एकेंद्रिय औदारिक शरीरावगाहना उत्कृष्ट जघन्य अंगुल असंख्यात भाग एवं अपर्याप्त पर्याप्त, एवं सूक्ष्म पर्याप्ता पर्याप्त, बादर पर्याप्ता पर्याप्त भी, एवं अप्काय भी तेजस्काय वायुकाय भी ऐसे ही कही, वनस्पति में जघन्य अंगुल असंख्यात भाग उत्कृष्ट सातिरेक हजार योजन एवं पर्या० अंगुल असंख्यात भाग, पर्याप्त पूर्व कहा तैसे है | ५९९ |
| द्वीन्द्रिय जघन्य अंगुल असंख्यात भाग उत्कृष्ट बारह योजन इत्यादि, त्रीन्द्रि तीन कोस, चौरिंद्री चारकोस, पचेंद्रिय १००० योजन इत्यादि | ६०० |
| जोयणसहस्सकुगा यह संग्रहणि गाथा २ मनुष्यौदारिक शरीरावगाहनाधिकार | ६०१ |
| वैक्रिय शरीर द्विभेद व्यक्तव्यताधिकार | ६०२ |
| वैक्रिय शरीर संस्थान वक्तव्यताधिकार | ६०३ |
| नारकी आदि दंडक में वैक्रियशरीर संस्थान | ६०८ |
| वैक्रिय शरीरावगाहना वक्तव्यताधिकार | ६०८ |
| आहारक शरीर वक्तव्यताधिकार | ६१० |
| आहारकशरीर संस्थान वक्तव्यताधिकार | ६१६ |
| तैजसशरीर वक्तव्यता | ६१९ |
| तैजसशरीर संस्थान निर्णय २४ दंडक में | ६२० |
| | ६२१ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| मारणांतिक समुद्घात समवहत जीव के तैजस शरीर की कितनी अवगाहना औघिक सूत्र, एवं एकेंद्रिय द्वीन्द्रियादि समवहत के तैजस की अवगाहना कही | ६२३ |
| एवं मरणसमुद्घात समवहत नारकी के तैजस की, पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य असुरकुमारादि समवहत तैजसावगाहनाधिकार | ६२४ |
| कार्मण शरीर पांच प्रकार एकेंद्रियादि भेद से, तैजस शरीर समान वक्तव्यता सर्व कहना अनुत्तरोपपातिकदेव पर्यंत | ६२७ |
| औदारिक शरीर पुद्गल कितनी दिशि से चिणें इत्यादि निर्णय, वैक्रिय पुद्गलादि भी कहा | ६२८ |
| एवं यावत्कार्मण शरीर पुद्गल भी, उपचिणे अ | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| पचिणें, जिस्को औदारिकशरीर तिस्को वैक्रिय जिस्को वैक्रिय तिस्को औदारिक शरीर इत्यादि वक्तव्यता | ६२९ |
| यह औदारिक वैक्रिय आहारक तैजस कार्मण शरीरों में द्रव्यार्थ से प्रदेशार्थ से द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ से कौन किस्से थोडा घणा है इत्यादि निर्णय | ६३० |
| यह औदारिक वैक्रिय आहारक तैजस कार्मण शरीरों में जघन्यावगाहना उत्कृष्टावगाहना मध्यमावगाहना में कौन किस्से अल्पबहुत्व | ६३१ |
| (२१ वां पद कहा) | |
| ॥ २२ वां कहते हैं ॥ | |
| कितनी क्रिया कही कायिकी आदि पांच क्रिया | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| कही, कायिकी २ जेदें, अधिकरणकी २ जेदें, प्राद्वेषिकी ३ जेदें, पारितापनिकी ३ जेदें एवं क्रिया निरूपणाधिकार | ६३४ |
| जीव सक्रिय है के अक्रिय है इत्यादि औधिक | ७३५ |
| जीव प्राणातिपात क्रिया करै, काहे से करै, एवं नारकी आदि दंडको में जी कहा वैमानिक पर्यंत | ६३६ |
| एवं मृषावाद अदत्तादान मैथुन परिग्रह सूत्र जी कहे | ६३७ |
| एवं क्रोध मान माया लोज प्रेम द्वेष कलह अभ्याख्यान पैसून्य परनिंदा अरतिरति मायामृषा मिथ्यादर्शनशल्य जी सर्व नारकी आदि वैमानिक पर्यन्त में जैसे पूर्व कहा कहना | ६३८ |
| जीव प्राणातिपात से सप्तविध अष्टविध बंधक होय एवं यावद्वैमानिक पर्यन्त कहना, एवं नारकी आदि के बंध का निर्णय | ६३८ |
| जीव ज्ञानावरणी कर्म बांधता कृश्या कति क्रिया है एकवचन बहुवचनें वैमानिक तक | ६३९ |
| एवं आठ कर्म के एकवचन बहुवचन से १६ दंडक कहना | ६४० |
| जीव को जीवों से कितनी क्रिया, कदाचित् ३। ४। ५। और कदाचित् अक्रिय, जीव को नारकिओं से कितनी पूर्ववत्, स्तनितकुमार से पृथिवी से अप् तेज वायु वनस्पति द्वित्रिचतुरिंद्रिय पंचेंद्रिय मनुष्य से जैसे जीवो से, वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक से जैसे नारकी से | |
| एकेक जीव पद मे चार २ दंडक | ६४१ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| कायिकी आदि पांच क्रिया कही, नारकी को पांचो क्रिया है, एव वैमानिक पर्यन्त, जिस जीव को कायिकी क्रिया है उस्को अधिकरण की है जिस्को अधिकरण की तिस्को कायिकी है इत्यादि | ६४५ |
| जिस समय में जीव को कायिकी क्रिया है उस समय में अधिकरण की जिस समय अधिकरण की तिस समय कायिकी एवं पांचो क्रिया के सूत्र कहे | ६४६ |
| जिस देश में जीव को कायिकी तिस देश में अधिकरण की जिस्मे अधिकरण की तिस्मे कायिकी इत्यादि, प्रदेश में भी एवं कहा, ५ क्रिया आयोजिक कही २४ दंडक में ए अधिकार | ६४७ |
| जीव जिस समय कायिकी आधिकरणकी प्राद्वेषिकी क्रिया से स्पृष्ट उस समय प्राणातिपात से भी स्पृष्ट, इत्यादि पूर्ववत् १ वचन बहुवचन से कहना | ६४८ |
| पांच क्रिया कही, आरंभिकी पारिग्रही माया प्रत्यया अप्रत्याख्यान मिथ्यादर्शनप्रत्यया, आरम्भिकी आदि किस्को है, प्रमत्त संयत को, संयतासंयत अप्रमत्तसंयत अप्रत्याख्यानी मिथ्यादृष्टी को क्रम से है | ६४९ |
| नारकी को पांच क्रिया यावद्वैमानिक पर्यन्त, जिस्को आरम्भिकी तिस्को पारिग्रहिकी इत्यादि निर्णय | ६५० |
| है जीव को प्राणातिपात विरमण, काहे से जीव | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| प्राणातिपात विरमण करै इत्यादि अधिकार प्रतिपादन | ६५२ |
| प्राणातिपातविरत जीव कितनी कर्म प्रकृति वांधै इत्यादि २७ भंग निरूपण | ६५३ |
| एवं प्राणातिपातविरत जीव के २७ भांगे एवं मृषावादविरत यावत् मायामृषाविरत जीव मनुष्य को कहा, मिथ्यादर्शनशल्यविरत का निरूपण, २७ भांगे कहे एवं क्रिया निर्णय | ६५६ |
| पांचो क्रियाओं का अल्पबहुत्व निरूपण | ६५९ |
| (२२ क्रिया पद समाप्त) | |
| ॥ ३२ वां पद कहते हैं ॥ | |
| कतिपगडी कहि बंधइ इत्यादि द्वार गाथा | ६६० |
| ज्ञानावरणी आदि ८ कर्मप्रकृति कही | ६६० |
| नारकी को कितनी कर्मप्रकृति, एवं यावद्वैमानिक, कैसे जीव आठ कर्मप्रकृति वांधै एवं वैमानिक पर्यन्त | ६६१ |
| ज्ञानावरणी कर्म जीव कैसे वांधै इत्यादि १६ दंडक अधिकार | ६६२ |
| जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदै, नारकी ज्ञानावरणी कर्म वेदै एवं वैमानिक पर्यन्त एवं शेष कर्म प्रकृति दंडक भी कहना | ६६३ |
| ज्ञानावरणी कर्म जीवने वांधा स्पृष्ट बद्धस्पृष्ट संच्या चिणा यावत् गति को पाक स्थिति को पाके पुद्गलपरिणाम को पाके कितने प्रकार अनुभाग कहा इत्यादि | ६६५ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| एवं सातवेदनी का ८ अनुभाग कहा, असातका भी ८ ही कहा | ६६८ |
| मोहनीका अनुभाग ४ तरह, आयुका ४ एवं सर्व कर्मका | ६६९ |
| ( १ उद्देशा पूरा हुआ ) | |
| आठ कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी ५ भेद, दर्शनावरणी निद्रा ५ दर्शन ४ एवं नव, वेदनी १६ प्रकार साता ८ तरे असाता ८ तरह, मोहनी दो भेदें दर्शनमोहनी तीन चारित्रमोहनी दो भेदें, कषाय वेदनी १६ भेदें है | ६७५ |
| नो कषायवेदनी ९ प्रकार, आयु ४, नाम ४२ भेदें है | ६७६ |
| गति नाम ४ भेदें, जातिनाम ५, शरीर नाम ५, | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| अंगोपांग ३, शरीरबंधन ५, शरीरसंघात ५, नाम ७ भेदें संस्थान नाम ६, वर्ण ५, गंध २, रस ५, स्पर्श ८, अगुरुलघु १, उपघात १, पराघात १, आनुपूर्वी ४, उत्स्वास १, शेष सर्व १, एक है यावत्तीर्थंकर है, विहायोगति २ भेदें, गोत्र २ भेदें उच्चैः ८, नीचैः ८, अन्तराय ५ भेदें, | ६७७ |
| ज्ञानावरणी आदि ८ कर्मस्थिति निरूपणाधिकार | ६८२ |
| एकेंद्रिय जीव ज्ञानावरणी को क्या बांधै एवं ८ कर्म कहना | ६९५ |
| एवं द्वित्रि चतुरिंद्रिय को भी कहना | ६९९ |
| एवं पंचेंद्रिय ज्ञानावरणी का क्या बांधै इत्यादि निरूपण | ७०० |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ज्ञानावरणी कर्म का जघन्य स्थिति वन्धक कौन, मोहनीय का जघन्यस्थिति वन्धक कौन; आयु का जघन्य स्थिति बन्धक कौन इत्यादि | ७०४ |
| उत्कृष्टस्थितिक ज्ञानावरणी कर्म क्या नारकी बांधै कि तिर्यंच इत्यादि, कैसा नारकी उत्कृष्टस्थितिक ज्ञानावरणी कर्म बांधै इत्यादि निरूपण | ७०५ |
| एवं आयु को छोड़ सातों कर्म के आलावे कहना, उत्कृष्टस्थितिक आयुकर्म क्या नारकी बांधै इत्यादि कैसा तिर्यंच उत्कृष्टस्थितिक आयु कर्म बांधै | ७०६ |
| कैसा मनुष्य तथा मानुषी उत्कृष्टस्थितिक आयु बांधै | ७०७ |
| (२३ वां पद पूर्ण हुआ) | |
| ॥ २४ वां पद कहते हैं ॥ | |
| आठ कर्म प्रकृति कही, नारकी को यावद्वैमानिक को, जीव ज्ञानावरणी (आदि) कर्म बांधता हुआ कितनी कर्म प्रकृति बांधै इत्यादि निर्णय | ७०८ |
| (२४ वां पद पूर्ण हुआ) | |
| ॥ २५ कहते हैं ॥ | |
| आठ कर्म प्रकृति कही, ज्ञानावरणी कर्म वांधतो जीव कितनी प्रकृति वेदै, एवं नारकी यावद्वैमानिक, एवं पृथक्क सेत्री, यावत् अंतराय तक कहना, जीव वेदनी कर्म बांधता कितनी | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| कर्म प्रकृति वेदै, एवं एकत्व पृथक्त्व से आठों कर्म वेदै यावद्वैमानिक | ७१२ |
| (२५ वां पद पूर्ण कहा) | |
| ॥ २६ कहते हैं ॥ | |
| आठ कर्म कहे नारकी को यावद्वैमानिक को, जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्रकृति बांधै, इत्यादि निर्णय | ७१३ |
| (२६ वां पद कहा पूर्ण) | |
| आठ कर्म प्रकृति कही, नारकी को यावद्वैमानिक को, जीव ज्ञानावरणी कर्म वेदता कितनी कर्म प्रकृति वेदै एवं सर्व एकत्व पृथक्त्व से कहना | ८ |
| कर्मों के आलावे समाप्ति पर्यन्त | ७१७ |
| (२७ वां पद कहा पूर्ण) | |
| सञ्ज्ञिनाहारठी यह द्वार गाथा २, | ७१८ |
| नारकी सचित्ताहार के अचित्ताहार मिश्राहार एवं असुरकुमार यावद्वैमानिक, नारकी आहार का अर्थी है, कितने कालसे आहार की इच्छा होय इत्यादि | ७१९ |
| नारकी क्या आहार करै इत्यादि निरूपणाधिकार | ७२० |
| असुरकुमार आहार का अर्थी है, एवं जैसे नार की यावत् भूयोभूयः परिणमें | ७२५ |
| पृथिवीकाय आहार का अर्थी है, निरंतर आहारेच्छा होती है, क्या आहारै है जैसे नारकी | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| को कहा तैसे इहां भी कहना सर्व वनस्पति काय पर्यन्त एवमेव | ७२६ |
| द्वीन्द्रिय आहारार्थी है, एवं पूर्ववत् सर्व कहना यावत् अल्पबहुत्व पर्यन्त | ७२८ |
| एवं त्रिचतुरिन्द्रियाहारार्थ, आहार कालादि निरूपणाधिकार | ७२९ |
| मनुष्य आहारादि निर्णयाधिकार यावत् सर्वार्थसिद्ध देव तक कहा | ७३० |
| नारकी क्या एकेंद्रियशरीर आहारे के यावत्पंचेंद्रियशरीर आहारे, एवं स्तनितकुमारपर्यन्त पृथिवीकाय प्रश्न, द्वीन्द्रिय एवं यावच्चतुरिन्द्रिय इत्यादि जिसके जितनी इंद्रियशरीर उसको उतनेही का आहार, नारकी लोमाहार | |
| है प्रक्षेपाहारी नही एवं एकेंद्रिय भी | ७३४ |
| सर्व देव भी पूर्ववत् वैमानिक पर्यन्त, द्वीन्द्रिय से मनुष्य तक दोनुं है, नारकी ओजाहारी है मनभक्षी नही, एवं सर्व देव यावद्वैमानिक दोनूं है इत्यादि निरूपणाधिकार | ७३५ |
| (१ उद्देशा पूर्ण हुआ) | |
| आहार भविय सन्नी यह गाथा, जीव आहारक भी है अनाहारक भी है | ७३६ |
| एवं नारकी यावत् असुरकुमार यावद्वैमानिक सिद्ध अनाहारी है, एवं बहुवचन से भी आलावा कहना | ७३७ |
| भवसिद्धिक आहारक अनाहारक भी है, एवं वैमानिक पर्यन्त एवं अभवसिद्धिक नोभवसिद्धिक | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| नो अभवसिद्धिक आहार अनाहार निर्णय (द्वार १) | ७३८ |
| संज्ञी जीव आहारक अनाहारक भी है एवं वैमानिक पर्यन्त एकेंद्रिय विकलेंद्रिय न पूछना | ७३९ |
| एवं असन्नी भी कहना स्तनितकुमार तक | ७४० |
| एवं मनुष्य भी, सिद्ध अनाहारक, सलेशी जीव का प्रश्न एकत्वपृथक्त्व से | ७४२ |
| सम्यग्दृष्टि जीव आहारक प्रश्न, द्वित्रिचतुरिन्द्रिय छ भंगा | ७४४ |
| संयत आहारकानाहारक निर्णय, एकत्व पृथक्त्व से सकषायी प्रश्न | ७४५ |
| (२८ वां आहार पद कहा) | |
| ॥ २९ वां कहते है ॥ | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| दो प्रकार उपयोग कहा, | ७५० |
| साकारोपयोग आठ भेद, अनाकारोपयोग चार भेदें | ७५१ |
| नारकी को कितने प्रकार उपयोग, साकारोपयोग ६, अनाकारोपयोग तीन प्रकार एवं स्तनित कुमार पर्यन्त कहना | ७५२ |
| पृथिवीकाय उपयोग प्रश्न यावद्वनस्पतिकाय, द्वीन्द्रिय प्रश्न | ७५३ |
| पंचेंद्रिय तिर्यंच जैसे नारकी, मनुष्य जैसे औधिक उपयोग इत्यादि | ७५३ |
| (२९ वां पद समाप्त हुआ) | |
| ॥ ३० कहते हैं ॥ | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| कितने प्रकार पश्यत्ता कही २, साकार पश्यत्ता ६ प्रकार, अनाकार पश्यत्ता तीन प्रकार है एवं जीव को कहना | ७५६ |
| नारकी को २ पश्यत्ता, साकार पश्यत्ता ४ अना कार २ एवं स्तनितकुमार पर्यन्त | ७५७ |
| पृथिवीकाय को १ साकारपश्यत्ता एवं वनस्प ति पर्यन्त | ७५७ |
| द्वीन्द्रिय को १ साकार पश्यत्ता सो २ तरहकीहै एवं त्रीन्द्रिय नी चक्षुरिन्द्रिय को २ साकार पश्यत्ता जैसे द्वीन्द्रिय को अनाकारपश्यत्ता १ कही, मनुष्य को जैसे जीवो को शेष जैसे नारकी यावद्वैमानिक | ७५८ |
| जीव साकारपश्यी है के अनाकार इत्यादि प्ररूपणाधिकार | ७५८ |
| केवली इस रत्नप्रभापृथिवी को आकार हेतु उ पमा दृष्टान्त वर्ण संस्थान प्रमाण से जिससमय जाणै उससमय देखै इत्यादि प्रश्न | ७६० |
| (३० पद समाप्त हुआ) | |
| ॥ ३१ कहते हैं ॥ | |
| जीव संज्ञी असंज्ञी के नो संज्ञी नो असंज्ञी इत्यादि प्रश्न निर्णय | ७६२ |
| पृथिवी काय प्रश्न, एवं यावच्चतुरिन्द्री मनुष्य जैसे जीव, पंचेंद्रिय तिर्यंच वानव्यन्तर जैसे नारकी जोतिषी वैमानिक संज्ञी, | ७६३ |
| (३१ वां पद कहा) | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| ॥ ३२ कहते हैं ॥ | |
| जीव संयत के असंयत के संयतासंयत, एवं नारकी प्रश्न, यावच्चतुरिन्द्रिय, पंचेंद्रिय तिर्यंच मनुष्य प्रश्न एवं सिद्धतक (३२ वां पद कहा) | ७६४ |
| ॥ ३३ कहते हैं ॥ | |
| भेद विषय संठाणे यह गाथा | ७६५ |
| दो प्रकार अवधि कही भवप्रत्यय क्षायोपशमिक भेद से, देव नारकी को भवप्रत्यय, मनुष्य तिर्यंच को क्षायोपशमिक | ७६७ |
| नारकी जघन्य अर्द्ध क्रोश उत्कृष्ट चार जाणें अवधि से, रत्नप्रभा का नारकी अढाई जघन्य | |
| उत्कृष्ट चार जाणें, शर्करा का जघन्य तीन उत्कृष्ट सार्द्ध, वालुका नारकी जघन्य डेढ— उत्कृष्ट तीन, पंकप्रभा नारकी जघन्य दो उत्कृष्ट अढाई, धूमप्रभा नारकी जघन्य डेढ उ० दो | ७६८ |
| तमा का नारकी क्रोश जघन्य उत्कृष्ट डेढ, नीचे सातमी का जघन्य अर्द्ध क्रोश उत्कृष्ट क्रोश। असुरकुमार जघन्य २५ योजन उत्कृष्ट असंख्यात द्वीपसमुद्र, नाग जघन्य २५ उत्कृष्टवही, एवं स्तनितकुमार पर्यन्त, पंचेंद्रिय तिर्यंच जघन्य अंगुल असंख्यात भाग उ० असंख्यात द्वीपसमुद्र, मनुष्य अंगुल असंख्यातभाग जघन्य उत्कृष्ट असंख्यात अलोक में लोक प्रमाण खंड, वानव्यन्तर जैसे नाग, जोतिषी जघन्य उत्कृष्ट | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| असंख्यात द्वीप | ७६९ |
| सौधर्म देव जघन्य अंगुल असंख्यातभाग उ०— नीचे रत्नप्रभा का नीचे का चरमान्त तिरछा असंख्य द्वीपसमुद्र, ऊपर अपना विमान। एवं ईशानदेवभी, सनत्कुमार भी ऐसे नीचे शर्करा का नीचला चरमान्त, एवं माहेन्द्रदेव भी, ब्रह्म लान्तकदेव सिर्फ नीचे तीसरी का नीचेका चरमान्त, महाशुक्र सहस्रार चौथीके नीचे का चरमान्त, आनतप्राणत आरण अच्युत देव नीचे पांचमी धूमप्रभा के नीचे का चरमान्त, नीचे मध्यम ग्रैवेयकदेव नीचे छठी के नीचे का चरमान्त, उपरिमग्रैवेयक देव ज० अंगुल असंख्यात भाग उ० सातमी के | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| नीचे का चरमान्त, तिरछा असंख्य द्वीपसमुद्र, ऊपर स्वविमान | ७७० |
| अनुत्तरोपपातिक देव संभिन्नलोक नाडी जाणें, नारकी का अवधि क्षुरप्राकार, असुरकुमार यावत् स्तनितकुमार का पल्यंक के आकार, पंचेंद्रिय तिर्यंच का नानाकार है, मनुष्य का भी एवं, वानव्यन्तर का पटहाकार, जोतिषी का झालराकार। सौधर्म देव का ऊर्द्धमृदंगाकार, एवं अच्युतदेव पर्यन्त है, ग्रैवेयकदेव का पुष्प चंगेरीसमान, अनुत्तरदेव का जवकी नाली के आकार | ७७१ |
| नारकी यावत् स्तनितकुमार अवधि के भीतर है के बाहिर, भीतर है, पंचेंद्रिय तिर्यंच वा | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| हिर, मनुष्य दोनूं है, व्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी, नारकी देशावधि है, एवं स्तनितकुमार पर्यन्त, पंचेंद्रिय तिर्यंच भी एवं, मनुष्य दोनूं। व्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी। नारकी का अवधि आनुगामिक अप्रतिपाती अवस्थित है। एवं स्तनितकुमार पर्यन्त। | ७७२ |
| पंचेंद्रिय तिर्यंच का आनुगामी भी यावत् अवस्थित भी है, एवं मनुष्य भी, वानव्यन्तर जोतिषी वैमानिक जैसे नारकी | ७७३ |
| (३३ वां पद पूर्ण हुआ) | |
| ॥ ३४ वां पद कहते हैं ॥ | |
| अणंतरागयाहारे इह गाथा २ | ७७३ |
| नारकी अणंतराहार है इत्यादि वक्तव्यता यावत् २४ दंडक में | ७७४ |
| नारकी का आहार आभोगनिर्वर्त्तित है के अनाभोगनिर्वर्त्तित इत्यादि वक्तव्यता | ७७५ |
| नारकी जिन पुद्गलों को आहारपणें ले उनको जाणें देखें इत्यादि निर्णय | ७७६ |
| नारकी को असंख्यात अध्यवसान, प्रशस्त भी अप्रशस्त भी वैमानिक कोभीहै | ७७७ |
| नारकी सम्यक्त्वाभिगमी मिथ्यात्वाभिगमी सम्यङ्मिथ्यात्वाभिगमी भी है, एवं वैमानिक पर्यन्त एकेंद्रिय विकलेंद्रिय मिथ्यात्वाभिगमी ही है देवता सदेवीक सपरिचार है इत्यादि ४ भंग | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| प्रश्न निर्णय | ७७८ |
| भवनपति व्यन्तर जोतिषी सौधर्म ईशान के देव सदेवीक सपरिचार, सनत्कुमार से अच्युत तक अदेवीक सपरिचार हैं, ग्रैवेयकानुत्तर देव अदेवीक अपरिचार हैं | ७७९ |
| परिचारणा पांच प्रकार है कायादि भेदसे उस्से भवनपति आदि ईशानान्त कल्प में कायपरिचारणा है, शनत्कुमार माहेंद्र में स्पर्शपरिचारणा है, ब्रह्मलांतक में रूपपरिचारणा है, शुक्र सहस्त्रार में शब्दपरिचारणा है, अच्युतान्त ४ में मनपरिचारणा है, ग्रैवेयकानुत्तर में परिचारणा नहीं है। | ७८० |
| इच्छामन समुत्पन्न होने का अधिकार | ७८० |
| यह कायपरिचारक यावत् मनपरिचारक देवों में कौन किस्से अल्पबहुत्व है | ७८१ |
| (३४ वां पद पूर्ण हुआ) | |
| ॥ ३५ वां कहते हैं ॥ | |
| सीयायदहुसारीर यह संग्रह गाथा | ७८६ |
| शीत उष्ण मिश्र एवं तीन प्रकार वेदना कही, नारकी को कौन वेदना | ७८७ |
| द्रव्य क्षेत्र काल भाव से चारप्रकार वेदना, नारकी कौन वेदना वेदै एवं वैमानिक पर्यन्त शारीर मानसी शारीरी मानसी शारीरमानसी भेदसे तीनप्रकार वेदना, नारकी कौन वेदना वेदै एवं यावद्वैमानिक पर्यन्त | ७८८ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| एकेन्द्रिय द्वीन्द्रिय शारीरी वेदना वेदै और नही, साता असाता सातासात एवं तीन प्रकार वेद नाहै, नारकी को कौन वेदना है एवं सर्व जीव यावद्वैमानिक पर्यन्त | ७८९ |
| दुख सुख मिश्र एवं तीन प्रकार वेदना है, नारकी को कौन वेदना यावद्वैमानिक पर्यन्त | ७९० |
| अभ्युपगमिकी औपक्रमिकी एवं २ प्रकार वेदना है नारकी से चौरिन्द्री तक औपक्रमिकी है, तिर्यंच मनुष्य में दो, व्यन्तर जोतिषी वैमानिक को जैसे नारकी को कही तैसे कहा | ७९० |
| निदा अनिदा भेद से दो वेदना, नारकी को कौन वेदना है इत्यादि निर्णय, एवं स्तनितकुमार पर्यन्त, पृथिवीकाय प्रश्न, एवं चौरिन्द्री, ति | |
| यंच मनुष्य व्यन्तर जैसे नारकी कहा | ७९१ |
| ज्योतिषी का प्रश्न, | ७९२ |
| (३५ वां पद कहा) | |
| ॥ ३६ कहते हैं ॥ | |
| वेदन कषाय मरणे इह गाथा संग्रहणी, कितने समुद्घात कहे | ७९३ |
| वेदना समुद्घात असंख्यात सामयिक आन्तर्मुहूर्त्तिक, एवं आहारक तक, केवलिसमुद्घात आठ सामयिक, नारकी को चार समुद्घात, असुरकुमार को पांच समुद्घात, एवं स्तनित कुमार तक, पृथिवीकाय को तीन समु०, एवं चौरिन्द्री पर्यंत, वायुकाय को चार समु० | ७९५ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| पंचेंद्रिय तिर्यंच यावत् वैमानिक को पांच समु० मनुष्य को सात, एकेक नारकी को कितने स मु० अतीत अनंत पुरस्कृत इत्यादि | ७१६ |
| एवं असुरकुमार को भी वैमानिक पर्यंत, एवं चौवीस दंडक कहा, एकेक नारकी को कितने समु० अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यंत | ७१७ |
| एकेक नारकी को कितने केवलिसमु० अतीत इत्यादि | ७१८ |
| एवं वैमानिक यावन्मनुष्य पर्यन्त, नारकी को कितने वेदना समु० अतीत इत्यादि, एवं वै मानिक तक, एवं तैजस भी एवं पांच २४ दं डक नारकी को कितने आहारक समु० अतीत | ७१९ |
| एवं वैमानिक तक विशेष वनस्पतिकाय मनुष्य में | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| है, एवं वैमानिक नेद वनस्पतिकाय मनुष्य में एकेक नारकी को नारकी पणें कितने वेदना स० अतीत इत्यादि | ८०० |
| एवं असुरकुमार से वैमानिक पर्यन्त, एकेक असु रकुमार को नारकीपणें कितने वेदनासमु० अतीत इत्यादि, एकेक असुरकुमार को असुर कुमार पणें कितने वेदना सं० अतीत एवं वै मानिक | ८०१ |
| एवं वैमानिक पर्यंत २४ चौवीस दंडक होय, ना रकी के नारकीपणें कितने कषायसमु० अतीत इत्यादि एवं एकेक नारकी के असुरकुमार पणें कितना अतीत एवं स्तनितकुमार तक | ८०२ |
| मारणांतिक समु० स्वस्थान में एकोत्तरिका से जहां | ८०४ |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| तक वैमानिक को वैमानिकपणें में, एवं २४। २४ दंडक, वैक्रिय जैसे कषाय, तैजस जैसे मारणांतिक | ८०७ |
| एकेक नारकी के नारकीपनें कितने आहारक अतीत इत्यादि | ८०८ |
| एकेक नारकी के नारकीपणें कितने केवलि स० अतीत इत्यादि वैमानिक पर्यन्त मनुष्य में भेद है, एवं तैजससमु० पर्यन्त कहा | ८०९ |
| यह वेदनादि समु० यावत्केवलि समु० समवहत असमवहत जीवों में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि अधिकार | ८१२ |
| यह नारकी वेदना कषाय मरण वैक्रिय समवहत इत्यादि निर्णय | ८१३ |
| यह असुरकुमार वेदन कषाय मरण वैक्रिय तैजस सम० निर्णय | ८१४ |
| पृथिवीकायादि निरूपण द्वीन्द्रिय यावत्पंचेंद्रिय वेदनादि यावत् असमवहतो में कौन किस्से थोड़ा घणा इत्यादि अधिकार | ८१६ |
| मनुष्य वेदनादि यावत्केवलिसमु० समवहता समवहतो में कौन किस्से | ८१७ |
| कषायसमु० चारप्रकार क्रोधादि के चार भेदसे, नारकी को ४ कषाय समु० एवं यावद्वैमानिक एकेक नारकी को कितने क्रोधसमु० एवं यावत् अतीत इत्यादि | ८१८ |
| एवं लोभसमु० पर्यन्त ४ दंडक एकत्व पृथक्त्व से ४ दंडक, एकेक नारकी के नारकीपने कितने | |

| विषय और प्रश्नादि | पत्रांक |
|---|---|
| क्रोधस० अतीत इत्यादि अधिकार | ८१९ |
| यह क्रोधसमु० यावल्लोभसमु० समवहतासमवहत में कौन किस्से | ८२३ |
| कितने क्षाद्मस्थिक समु० ६ कहे वेदना याव दाहारक | ८२५ |
| नारकी को ४ क्षाद्मस्थिक, असुर को ५, एकें द्रिय को तीन। वायुको चार। तिर्यंच पंचें— द्रिय को पांच। मनुष्य को ६ | ८२६ |
| वेदनी समवहत जीव जिन पुद्गलोको क्षोडै उनसे कितना क्षेत्र पूर्ण, कितना स्पृष्ट इत्यादि नि रूपणाधिकार | ८२७ |
| केवलिसमु० समवहत अनगार भावितात्मा जो चरम निर्जरापुद्गल सो सूक्ष्म है, सर्वलोक को | |
| फरस के रहैं इत्यादि अर्थनिरूपण | ८३५ |
| छद्मस्थ मनुष्य उन निर्जरा पुद्गलों के वर्ण गन्धा दि जाणे नही | ८३६ |
| काहे से केवली समु० को करै ४ कर्म क्षीण न होने से करै | ८३७ |
| कोई केवली समुद्घात करै कोई नही भी करै, इहां २ गाथा है, | ८४० |
| आवर्जन कितने समय में होता है, केवलिसमु० कितने समय में होता है ८ में इत्यादि | ८४१ |
| तथा समु० गत जीव मनोयोगादि तीन योगमे से कौनसा योग करै | ८४२ |
| तथा समु० गत जीव सीझे बूझे मुक्त होय इत्यादि | ८४३ |
| समु० प्रतिनिर्वर्त्तित जीव कौनसा योग करै | ८४४ |

| विषय और प्रज्ञनादि | पत्रांक | विषय और प्रज्ञनादि | पत्रांक |
|---|---|---|---|
| योग निरोध समय निरूपणाधिकार | ८४५ | | |
| शैलेशिकालनिरूपणाधिकार | ८४६ | | |
| चार कर्मप्रकृति युगपत् खपाय औदारिक तैजस कार्मण त्यजे ऋजुश्रेणि पाके अस्पृशद्गति हो के मुक्त होय सिद्ध होय | ८४७ | | |
| अशरीर जीवघन इत्यादि सिद्ध लक्षणनिरूपण | ८४७ | | |
| निच्छिन्नसन्नदुरका सिद्धत्व निरूपण लक्षण गाथा | ८४८ | | |
| (समुद्घात पद ३६ पूर्ण कहा) | | | |
| ॥ चतुर्थ उपांग प्रज्ञापना सूत्रानुक्रमणिका ॥ | | | |
| ॥ समाप्त भई ॥ | | | |

ववगयजरमरणभए सिद्धेअभिवंदिऊणतिविहेणं । वंदामिजिणवरिंदं तेलोक्कगुरुंमहावीरं ॥ १ ॥
सुयरयणनिहाणंजिण वरेणभवियजणणिव्वुइकरेण । उवदंसियाभगवया पन्नवणासव्वभावाणं ॥ २ ॥
वायगवरवंसाओ तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीणं ॥ ३ ॥ सुयसागराविए
ऊण जेणसुयरयणमुत्तमंदिन्नं । सीसगणस्सभगवओ तस्सणमोअज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्झयणमिणंचित्तं सुय
रयणंदिट्ठिवायणीसंदं । जहवक्खियंभगवया अहमवितहवक्खइस्सामि ॥ ५ ॥ पन्नवणा १ ठाणाइं २, बक्कंव
तिइं ३ ठिई ४ विसेसाय ५ । वक्कंती ६ उस्सास, ७ सन्ना ८ जोणीय ९ चरिमाइं १० ॥ १ ॥ भासा ११ सरीर १२
परिणा, म १३ कसाय १४ इंदिय १५ प्पओगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अंतकिरियाय २०
॥ २ ॥ ओगाहणसंठाणा २१, किरिया २२ कम्मेय २३ कम्मस्स । बंधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सबंधए २६
वेयवेयए २७ ॥ ३ ॥ आहारे २८ उवओगे २९, पासणया ३० सन्नि ३१ संजमे ३२ चेव । ओही ३३ पवियारण ३४

---

व्यपगतजरामरणभयान् सिद्धानभिवन्द्यत्रिविधेन । वन्देजिनवरेन्द्रं त्रैलोक्यगुरुंमहावीरम् ॥ १ ॥ श्रुतरत्ननिधानाज्जिन-वरेणभव्यजननिर्वृतिकरे
ण । उपदर्शितानभगवता प्रज्ञापनासर्वभावानाम् ॥ २ ॥ वाचकवरवंशेत्र-योविंशतितमेनधीरपुरुषेण । दुर्धरधरेणमुनिना पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धिना ३ ॥
श्रुतसागरादुद्धृत्य येनश्रुतरत्नमुत्तमंदत्तं । शिष्यगणायभगवते तस्मैनमआर्यश्यामाय ॥ ४ ॥ अध्ययनमिदंचित्रं श्रुतरत्नंदृष्टिवादनिस्पन्दं । यथा
वर्णितंभगवता हमपितथावर्णयिष्यामि ॥ ५ ॥ प्रज्ञापनास्थानानिबहुवक्तव्यान्यस्तिविशेषश्च । व्युत्क्रान्तिश्चोच्छ्वासः सञ्ज्ञायोनिश्चचरमाणि ॥ ६ ॥
भाषाशरीरंपरिणामः कषायेन्द्रियेप्रयोगश्च । लेश्याकायस्थितिर्वा सम्यक्त्वमथान्तक्रियाचैव ॥ ७ ॥ अवगाहनास्थानं क्रियाकर्मार्थकर्मणः । बन्धको
वेदकश्चैव वेदबन्धकएव च ॥ ८ ॥ वेदवेदकआहार श्चोपयोगोथ दर्शनम् । संज्ञाचसंयमश्चैव अवधिश्चप्रविचारणा ॥ ९ ॥ वेदनाथ समुद्घातः षट्त्रिं

वे, यणा ३५ यतत्तोसमुग्घाए ३६ ॥ ४ ॥ से किं तं पन्नवणा ? पन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—जीवपन्नवणाय अजीवपन्नवणाय। सेकिंतं अजीवपन्नवणा २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—रूविअजीवपन्नवणा अरूविअजीवपन्नवणाय। सेकिंतं अरूविअजीवपन्नवणा ? अरूविअजीवपन्नवणा दसविहा पन्नत्ता तंजहा—धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा, अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थिकायस्सपएसा आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सप्पदेसा अद्धासमए १० सेत्तंअरूविअजीवपन्नवणा॥ सेकिंतं रूविअजीवपन्नवणा रूविअजीवपन्नवणा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा—खंधा खंधदेसा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला ४। तेसमासतो पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—वन्नपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया। जेवन्नपरिणया ते समासतो पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—कालवन्न

---

त्सांमितम्पदम्। अथ प्रज्ञापना कास्यात्, द्विधाप्रज्ञापनामता ॥ १० ॥ तद्यथा-जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना च। सा कतिविधा अजीवप्रज्ञापना, द्विविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा रूप्यजीवप्रज्ञापना अरूप्यजीवप्रज्ञापना च अथ कतिविधा अरूप्यजीवप्रज्ञापना, अरूप्यजीवप्रज्ञापना दशविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा धर्मास्तिकायः धर्मास्तिकायस्य देशः धर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः, अधर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकायस्य देशो ऽधर्मास्तिकायस्य प्रदेशाः, आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायस्य देश आकाशास्तिकायस्य प्रदशाः, अद्धासमयः। समाप्ता ऽरूप्यजीवप्रज्ञापना ॥ अथ का सा रूप्यजीवप्रज्ञापना रूप्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-स्कन्धाः स्कन्यदेशाः स्कन्यप्रदेशाः परमाणुपुद्गलाः ; ते समासतः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-वर्णपरिणता गन्धपरिणता रसपरिणताः स्पर्शपरिणताः संस्थानपरिणताः। ये वर्णपरिणता स्ते समासतः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-कालवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणताः शुक्लवर्णपरिणताः। ये गन्धपरिणता स्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ता

परिणया नीलवण्णपरिणया लोहियवण्णपरिणया हालिद्दवण्णपरिणया सुक्किल्लवण्णपरिणया। जे गंधपरिणया ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया। जेरसपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंजहा तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया महुररसपरिणया। जेफासपरिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तंजहा—कक्खडफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लहुयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्खफासपरिणया। जेसंठाणपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—परिमंडलसंठाणपरिणया वट्टसंठाणपरिणया तंससंठाणपरिणया चउरंससंठाणपरिणया आयतसंठाणपरिणया॥ जे वण्णतो कालवण्णपरिणया ते गंधतो सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भिगंधपरिणयावि, रसतो तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरितावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहु

---

स्तद्यथा-सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणताः। ये रसपरिणता स्ते पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-तिक्तरसपरिणताः कटुकरसपरिणताः कषायरसपरिणता आम्लरसपरिणता मधुररसपरिणताः। ये स्पर्शपरिणता स्ते ऽष्टविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-कर्कशस्पर्शपरिणता मृदुस्पर्शपरिणता गुरुकस्पर्शपरिणता लघुकस्पर्शपरिणताः शीतस्पर्शपरिणता उष्णस्पर्शपरिणताः स्निग्धस्पर्शपरिणता रूक्षस्पर्शपरिणताः। ये संस्थानपरिणता स्ते पञ्चविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-परिमण्डलसंस्थानपरिणता वृत्तसंस्थानपरिणता त्र्यस्रसंस्थानपरिणता चतुरस्रसंस्थानपरिणता आयतसंस्थानपरिणताः। ये वर्णतः कालवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत स्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता मृदुकस्पर्शपरिणता

यफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि । जे वण्णतो नीलवण्णपरिणता ते गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे वण्णतो लोहियवण्णपरिणता ते गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरस

---

अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्श परिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये वर्णतो लोहितवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसत स्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि आम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि' संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये वर्णतो हारिद्रवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिग

॥ मूल ॥

परिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्कडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जेवऽण्णे हालिद्दवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणयावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जेवऽण्णे सुक्किल्लवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंध

॥ अ० ॥

न्यपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयत संस्थानपरिणता अपि। ये वर्णतः शुक्लवर्णपरिणता स्ते गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणताः कटुकरसपरिणताः कषायरसपरिणता अम्लरसपरिणता मधुररसपरिणता अपि। स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्ण

परिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणयावि लहुयफासपरिणतावि सीयफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे गंधओ सुब्भिगंधपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणयावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि

---

स्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रुक्षस्पर्शपरिणता अपि' संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता

चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे गंधओ दुब्भिगंधपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, रसओ तित्तरस परिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्कडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरि० उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसओ तित्तरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहियवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्ण परिणतावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्कडफासप



अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये गन्धतो दुरभिगन्धपरिणता स्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरस परिणता अपि मधुररसपरिणता अपि' स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतस्तिक्तरसपरि णतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्ध तः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि

रिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण फासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसतो कडुयरसपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासतो कक्खडफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसतो कसायरसपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालि



लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतः कटुकरसपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतः कषायरसपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारि

दव्वसपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासतो कक्कडफास परि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणप० चउरससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि। जे सरतो अंबिलरसपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितव ण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि। संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसतो मधुररसपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्ण०

॥ अ०

द्रव्यवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदु स्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अ पि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थान परिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये रसतोऽम्लरसपरिणता स्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरि णता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शप रिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्नि ग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता

लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासतो कक्कडफासपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्ख

---

अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये रसतो मधुररसपरिणता स्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, गुरुलघुशीतोष्ण स्निग्धरूक्षस्पर्शपरिणताअपि संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणा अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरि

फासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासतो मउयफासपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्ण परि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्त रसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परि मंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाण० चउरंससंठाण० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासतो गरुयफासपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लव ण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरस



णता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतो मृदुस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्ण परिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिण ता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आय तसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतो गुरुकस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हा रिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटु

परि० अंबिलरसपरि० मधुररसपरिणतावि, फासओ कक्कडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय फासपरिणतावि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ लहुयफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किलवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ सीतफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नी

---

करसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतो लघुकस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता

॥ मूल ॥

लवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मधुररसपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासतो उसिणफासपरि० ते वन्नतो कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहियवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मधुररसपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि० मउयफा

॥ प० ॥

अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः शीतस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि' गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि' स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतः उष्णस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः

सपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाण परि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासतो णिद्ध फासपरिणया ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णप रिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसप० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुय फासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंस संठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासतो लुक्खफासपरिणता ते वण्णतो काल वण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णप० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधप०



कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि। ये स्पर्शतः स्निग्धस्पर्शपरिणतास्ते कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि' गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि' रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि' स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये स्पर्शतो

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिण तावि, फासओ कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण फासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणप० । जे संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहित वण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, र सओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्कड फासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास परि० लुक्कफासपरिणतावि । जेसंठाणओ वट्टसंठाणपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहि

---

रूक्षस्पर्शपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुक स्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि, संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता अपि वृत्तसंस्थानपरिणता अपि त्र्यस्रसंस्थानपरिणता अपि चतुरस्रसंस्थानपरिणता अपि आयतसंस्थानपरिणता अपि । ये संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्ण वर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरि णता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतः तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि म

तवस्सपरि० हालिद्दवस्सप० सुक्किल्लवस्सपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधप० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मधुररसपरिणतावि, फासतो कक्कडफासप० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसंठाणतो तंससंठाणपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मधुररसपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि०

---

धुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये संस्थानतो वृत्तसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता नीलवर्णपरिणता लोहितवर्णपरिणता हारिद्रवर्णपरिणता शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि' स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि। ये संस्थानतः त्र्यस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि

॥ मूल ॥

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणतो चउरंससंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसप० कडुयरसप० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० । जे संठाणतो आयतसंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णप० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि०

---

स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानतश्चतुरस्रसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कालवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि । ये संस्थानत आयतसंस्थानपरिणतास्ते वर्णतः कृष्णवर्णपरिणता अपि नीलवर्णपरिणता अपि लोहितवर्णपरिणता अपि हारिद्रवर्णपरिणता अपि शुक्लवर्णपरिणता अपि, गन्धतः सुरभिगन्धपरिणता अपि दुरभिगन्धपरिणता अपि, रसतस्तिक्तरसपरिणता अपि कटुकरसपरिणता अपि कषायरसपरिणता अपि अम्लरसपरिणता अपि मधुररसपरिणता अपि, स्पर्शतः कर्कशस्पर्श

॥ अ० ॥

मउयफासप० गुरुयफासपरि० लहुयफासप० सीतफासप० उसिणफासप० णिद्धफासप० लुक्कफासपरि णतावि ॥ सेत्तं रूविअजीवपन्नवणा ॥ सेत्तं अजीवपन्नवणा ॥ से किंतं जीवपन्नवणा ? जीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—संसारसमावन्नजीवपन्नवणाय असंसारसमावन्नजीवपन्नवणाय । से किंतं असंसारसमा वन्नजीवपन्नवणा ? असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—अणंतरसिद्धअसंसारसमाव न्नजीवपन्नवणा परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किंतं अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्न वणा ? अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पन्नरसविहा पन्नत्ता, तंजहा—तित्थसिद्धा १ अतित्थ सिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयंबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७ इत्थीलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ नपुंसकलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अन्नलिंगसिद्धा १२

---

परिणता अपि मृदुकस्पर्शपरिणता अपि गुरुकस्पर्शपरिणता अपि लघुकस्पर्शपरिणता अपि शीतस्पर्शपरिणता अपि उष्णस्पर्शपरिणता अपि स्निग्धस्पर्शपरिणता अपि रूक्षस्पर्शपरिणता अपि ॥ सैषा रूप्यजीव प्रज्ञापना ॥ सैषा ऽजीव प्रज्ञापना ॥ अथ कतिविधा जीवप्रज्ञापना । ? जीव प्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा-संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना च । अथ कतिविधा असंसारसमापन्न जीवप्रज्ञापना ? । असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता । अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, परंपरसिद्धासंसारसमापन्नजी वप्रज्ञापना च । अथ कतिविधानन्तरसंसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । ? अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता । तद्यथा तीर्थसिद्धाः १ अतीर्थसिद्धाः, २ तीर्थंकरसिद्धा, ३ अतीर्थंकरसिद्धाः, ४ स्वयंबुद्धसिद्धाः' ५ प्रत्येकबुद्धसिद्धाः, ६ बुद्धबोधितसिद्धाः, ७ स्त्रीलिङ्गसिद्धाः, ८ पुरुषलिङ्गसिद्धाः, ९ नपुंसकलिङ्गसिद्धाः, १० स्वलिङ्गसिद्धाः, ११ अन्यलिङ्गसिद्धाः, १२ गृहिलिङ्गसिद्धाः, १३ एकलिङ्गसिद्धाः' १४

गिहिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५। सेत्तं अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से तं परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा प० तंजहा—अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्ज समयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, सेत्तं परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। सेत्तं असंसारसमावन्नजी वपन्नवणा। से किंतं संसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? संसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नव णा चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किंतं एगिंदियसंसार समावन्नजीवपन्नवणा ? एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुढविकाइया

---

अनेकसिद्धाः, १५। सैषा ऽनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा परंपरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ?। परंपर सिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा अप्रथमसमयसिद्धा, द्विसमयसिद्धा, त्रिसमयसिद्धा' चतुःसमयसिद्धा, यावत् सङ्ख्येयसमयसिद्धा, असंख्येयसमयसिद्धा, अनन्तसमयसिद्धा, सैषा परपरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। सैषा ऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञा पना। अथ कतिविधा संसारसमापन्न जीवप्रज्ञापना ?। संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्यथा-एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीव प्रज्ञापना, द्वीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना' त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, पञ्चेन्द्रियसंसार समापन्नजीवप्रज्ञापना। अथ कतिविधा एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ?। एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता। तद्य था-पृथिवीकायिकाः, अप्कायिकाः, तेजः कायिकाः' वायुकायिकाः, वनस्पतिकायिकाः। अथ कतिविधाः पृथिवीकायिकाः ?। पृथ्वीकायिकाः

आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया। से किंतं पुढविकाइया पुढविकाइया दुविहा प०, तंजहा—सुहुमपुढविकाइया बादरपुढविकाइया। से किंतं सुहुमपुढविकाइया सुहुमपुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय, सेत्तंसुहुमपुढविकाइया। से किंतं बादरपुढविकाइया बादरपुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सण्हबादरपुढविकाइयाय खरबादर पुढविकाइयाय। से किंतं सण्हबादरपुढविकाइया२ सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा—किण्हमत्तिया नीलमत्तिया लोहियमत्तिया हालिद्दमत्तिया सुक्किल्लमत्तिया पंडुमत्तिया पणगमत्तिया। सेत्तं सण्हबादरपुढविकाइया। से किंतं खरबादरपुढविकाइया ? खरबादरपुढविकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—पुढवीयसक्करावालुयाय उवलेसिलायलोणूसे। अयतंबतउयसीसरुप्पसुवण्णेयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासा



द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः, बादरपृथिवीकायिकाः। अथ कतिविधाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः ?। सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः। तदेताः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः। अथ कतिविधा बादर पृथिवीकायिकाः ?। बादरपृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः खरबादरपृथिवीकायिकाश्च। अथ कति विधाः श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः ?। श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-कृष्णमृत्तिकाः, नीलमृत्तिकाः, लोहितमृत्तिकाः हारिद्रमृत्तिकाः, शुक्लमृत्तिकाः पाण्डुमृत्तिकाः, पनकमृत्तिकाः। तदेताः श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः। अथ कतिविधाः खरबादरपृथिवीकायिकाः ?। खरबादरपृथिवीकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पृथिवीशर्करावालुकाः उपलाः शिला लवणमूषम्। अयस्ताम्रत्रपुसीसकरूप्यसुवर्णानि प्रतीतानि ॥ १ ॥ हरितालकाहिङ्गुलके मनःशिलाः सीसकमञ्जनप्रवालम्। अभ्रपटलाभ्रबालुकाः बादरपृथिवीकायेत्वमीभेदाः ॥ २ ॥ गोमेधकश्च

गंजणपवाले। अभ्भपडलभ्भवालुय बादरकाएमणिविहाणा ॥२॥ गोमेज्जएयरुयए अंकेफालिहेयलोहियक्केय। मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइंदनीलेय ॥ ३ ॥ चंदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे। चंदप्पभवेरुलिए जलकंतेसूरकंतेय ॥ ४ ॥ जेयावण्णेयतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता तत्थणं जेते पज्जत्तगा एतेसिं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा। सेत्तं खरबादरपुढविकाइया। सेत्तंबादरपुढविकाइया॥ सेत्तंपुढविकाइया ॥ से किंतं आउकाइया ? आउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुहुमआउकाइयाय बादर आउकाइयाय। से किंतं सुहुमआउकाइया ? सुहुमआउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तसुहुम



रुचकोऽङ्कः स्फटिकलोहिताक्षइति ॥ मरकतमसारगल्लौ भुजमोचकेन्द्रनीलौ च ॥ ३ ॥ चन्दनगैरिकहंसाः पुलकसौगन्धिकेचबोद्धव्ये ॥ चन्द्रप्रभवैडूर्यौ जलकान्तःसूर्यकान्तश्च ॥ ४ ॥ ये चान्ये तथा प्रकारास्ते समासतस्त्रिधा प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तकाश्च, तत्र ये एते ऽपर्याप्तकास्ते असंप्राप्ताः। तत्र ये एते पर्याप्तका एते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानाति संख्येयानि। योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति, यत्रैकस्तत्र नियमा असंख्येयाः। त एते खरबादरपृथिवीकायिकाः। त एते बादरपृथिवीकायिकाः। त एते पृथिवीकायिकाः॥ अथ कतिविधाः अप्कायिकाः?। अप्कायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सूक्ष्माप्कायिकाः' बादराप्कायिकाः। अथ कतिविधाः सूक्ष्माप्कायिका, ?। सूक्ष्माप्कायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पर्याप्त सूक्ष्माप्कायिकाः, अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिकाः। एते सूक्ष्माप्कायिकाः॥ अथ कतिविधा बादराप्कायिकाः?। बादराप्कायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-अवश्याय, हिमं' महिकं, करको,

आउकाइयाय अपज्जत्तसुहुमआउकाइयाय ॥ सेत्तं सुहुमआउकाइया ॥ से किंतं बादरआउकाइया ? बादर आउकाइया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा ओसाहिमए महिया करए हरतणूए सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए खोदोदए रसोदए जेयावण्णतहप्पगारा तेसमा सन्न दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय, अत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्ता एएसिणंवण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमु हसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, तत्थ एगो तत्थनियमा असंखेज्जा । सेत्तं बादर आउकाइया ॥ सेत्तं आउकाइया ॥ से किंतं तेउकाइया ? तेउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सुहुमतेउ काइयाय बादरतेउकाइयाय, से किंतं सुहुमतेउकाइया सुहुमतेउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्त

॥ मन्न ॥

---

हरतनुः शुद्धोदकं, ओसोदकं, उत्सोदकं, क्षारोदकं, ईषदम्लोदकम्, अम्लोदकं, लवणोदकं, वारुणोदकं, क्षीरोदकं, क्षोदोदकं, रसोदकं, ये चाऽन्ये तथा प्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च, तत्र ये ते अपर्याप्तकास्ते ऽसंप्राप्ताः । तत्र ये ते पर्याप्तास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्रागशो विधानानि संख्येयानि । योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तनिश्रया अप र्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैकस्तत्र नियमा असंख्येयाः । तएते बादराप्कायिकाः । तएते अप्कायिकाः ॥ अथ कतिविधास्तेजः कायिकाः ?। तेजः कायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-सूक्ष्मतेज कायिका, बादरतेज कायिकाश्च । अथ कतिविधाः सूक्ष्मतेज कायिका ? । सूक्ष्मतेज कायिकाः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तकाश्च । तदेताः सूक्ष्मतेजःकायिकाः । अथ कतिविधा बादरतेज कायिकाः । बादरतेजःकायिका अ नेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-अङ्गारं, ज्वालो, मुर्मुरः, अर्चिः, अलातं शुद्धाग्निः, उल्का, विद्युत्, अशनिः, निर्घातः, संघर्षसमुत्थितः, सूर्य

॥ ५० ॥

॥ मूल ॥

गाय अपज्जत्तगाय । सेत्तं सुहुमतेउकाइया । से किंतं बादरतेउकाइया २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा इंगाले जाला मुंमुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए संघरिससमुट्ठिए सूरकंतमणिणिस्सिए, जेयावण्णे तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्तगा एएसिं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसाएसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा ॥ सेत्तं बादरतेउकाइया ॥ सेत्तं तेउकाइया ॥ से किंतं वाउकाइया ? वाउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सुहुमवाउकाइयाय बादरवाउकाइयाय, से किंतं सुहुमवाउकाइया ? सुहुमवाउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय अपज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय । सेत्तं सुहुमवाउकाइया । से किंतं बादरवाउकाइया ? बादरवा० अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा पाईणवाए पडीणवाए दाहि

॥ अ० ॥

---

कान्तमणिप्रसूतः, ये वाप्यन्ये तथा प्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-पर्याप्तका, अपर्याप्तकाश्च । तत्र ये एत अपर्याप्तकास्ते असंप्राप्ताः । तत्र ये पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्येयानि । योनि प्रमुखाणि शतसहस्राणि पर्याप्तकनिःश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति । यत्रैकस्तत्र नियमा असंख्येयाः । एते बादरतेजःकायिकाः । एते तेजःकायिकाः ॥ अथ कतिविधा वायुकायिकाः ? । वायुकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--सूक्ष्मवायुकायिका बादरवायुकायिकाश्च । अथ कतिविधाः सूक्ष्मवायुकायिकाः ? । सूक्ष्मवायुकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिकाः अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिकाश्च । एते सूक्ष्मवायुकायिकाः । अथ कतिविधा बादरवायुकायिकाः । बादरवायुकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-प्राचीनवायुः, प्रतीचीनवायुः, दक्षिणवायुः, उदीचीनवायुः, ऊ

णवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउज्भामेवा उक्कलिया वायमंडलिया उक्कलियावाए मंडलियावाए गुंजावाए झंझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए, जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्तगा एएसिणं वन्नादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा ॥ सेत्तं बादरवाउकाइया ॥ सेत्तं वाउकाइया ॥ से किंतं वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०, तंजहा सुहुमवणस्सइकाइयाय बादरवणस्सइकाइयाय, से किंतं सुहुमवणस्सइकाइया२ दुविहा पन्नत्ता, तं० पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय अपज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय। सेत्तं सुहुमवणस्सइकाइया। से किंतं

---

र्ध्ववायुः, अधोवायुः, तिर्यक्वायुः, विदिक्वायुः, वातोद्भामः, वातोत्कलिकाः, वातमण्डली' उत्कलिकावातो, मण्डलिकावातो; गुञ्जावातो, सञ्जावातो, संवृष्टिवातो, घनवाततनुवातः' शुद्धवातः ये वान्ये तथा प्रकारास्ते सर्वे द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पर्याप्तका' अपर्याप्तकाश्च। तत्र य एते अपर्याप्तकास्ते असंप्राप्ताः। तत्र य एते पर्याप्तकास्ते वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि संख्यातानि। योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि पर्याप्तकनिःश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति। यत्रैक स्तत्र नियमा असंख्येयाः। तएत बादरवायुकायिकाः। तएते वायुकायिकाः ॥ अथ कतिविधा वनस्पतिकायिकाः ?। वनस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा--सूक्ष्मवनस्पतिकायिका, बादरवनस्पतिकायिकाः। अथ कतिविधाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः ?। सूक्ष्मवनस्पतिकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा--पर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः, तएते सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः। अथ कतिविधा बादरवनस्पतिकायिकाः ? बादरवनस्पतिकायिकाः द्विविधाः

बादरवणस्सइकाइया २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाय साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइयाय, से किंतं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया २ दुवालसविहा पन्नत्ता, तंजहा रुक्खागुच्छा गुम्मा लतायवल्लीयपव्वगाचेव । तणवलयहरियओसहि जलरुहकुहणायबोधव्वा ॥ १ ॥ से किंतं रुक्खा२ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा एगट्ठियाय बहुबीयगाय, से किंतं एगट्ठिया२ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा निंब जंबुकोसंबवसालअंकोल्लपेलुसेलूया । सल्लइमोयइमालुय वउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ पुत्तंजीवअरिट्ठे विभेल एहरिडएयन्नग्गोहे । उंबेभरियाखीरिणि बोधव्वेधायइपियाले ॥ २ ॥ पूईयनिंबकरए सरहातहसीसवायअसणेय । पुन्नागनागरुक्खे सिरिवसीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एएसिणंमूलाविअसंखिज्जजीविया कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्तापत्तेयजीविया, पुप्फा अणेगजीवा, फला एगट्ठिया ॥

---

प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः, साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः ? । प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका द्वादशविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--वृक्षा गुच्छा गुल्मालता वल्लयः पर्वगाश्चैव ॥ तृणवलयहरितौषधिजलरुहकुहणाश्च बोद्धव्याः ॥ १ ॥ अथ कतिविधा वृक्षाः ? । वृक्षा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--एकास्थिका बहुबीजकाश्च । अथ कतिविधाः एकास्थिकाः ? । एकास्थिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--निम्बाम्रजम्बुकोशम्ब शालाङ्कोठपीलुशेलवाख्याः ॥ शल्लकमोचकमालकबकुल पलाशकरञ्जेदात् ॥ १ ॥ पुत्रंजीवकारिष्ठाः विभीतकहरीतकभल्लाताः ॥ उम्बेभरिकाक्षीरणी बोद्धव्यौधातकीप्रियालौ ॥ २ ॥ पूतिकनिम्बकरञ्जाः श्लक्ष्णस्तथाशिंशपाशानभेदात् ॥ पुन्नागनागवृक्षौ श्रीपर्णीचतथाशोकः ॥ ३ ॥ येपि चान्ये तथाप्रकारा एतेषां मूलानि असंख्येयजीवकानि । कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वचोपि शाखा अपि प्रवाला अपि, पत्राणि प्रत्येकजीवकानि । पुष्पाण्यनेकजीवकानि । फलान्येकास्थिकानि । उक्तो एकास्थिकाः ।

॥ मूल ॥

सेत्तं एगट्ठिया ॥ से किंतं बहुबीयगा२ अणेगविहा प०, तं० अत्थियतेंदुकविठे अंबाडगमाउलिंगबिल्लेय आमलगफणसदालिम आसोत्थेउंबरवण्णेय ॥ १ ॥ णग्गोहणंदिरुक्के पिप्पलिसयरीपिलुकरुक्केय । काउंबरि कुत्थुंभरि बोधव्वादेवदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउएच्छुतो हसिरीसेसत्तवण्णदहिवन्ने । लोद्धवचंदणज्जुण णीमेकु डएकयंबेय ॥३॥ जेयावण्णे तहप्पगारा एएसिणं मूलावि असंखिज्जजीविया, कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फायअणेगजीविया, फला बहुबीया, सेत्तं बहुबीयगा ॥ सेत्तं रुक्खा ॥ से किंतं गुच्छा२ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—वाइंगिणिवल्लइपुणु ईयतहकच्छुरीयजासुमणा। रूवीआढइणीली तुलसीतहमाउलिंगाय ॥ १ ॥ कुत्थुंभरिपिप्पलिया अतसीविल्लीयकायमाईय । चुण्णपलोलाकंदलि वाउल्लावत्थुलेवदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयबोधव्वे । णिग्गुंडिअक्कतूवरि आढईचेवतलत

---

अथ कतिविधा बहुबीजकाः ? । बहुबीजका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--अस्थिकतिन्दुककपित्था आम्राटकमातुलिङ्गबिल्वाश्च ॥ आमलकपनसदाडिम अश्वत्थोदुम्बरवटाश्च ॥ १ ॥ न्यग्रोधनन्दिवृक्षौ पिप्पलीशतावरीप्लक्षाः ॥ काटुम्बरिकुसुम्भरी बोद्व्योदेवदारुश्च ॥ २ ॥ तिलकालावुकच्छत्राः ओघशिरीषसप्तपर्णदधिपर्णाः ॥ लोध्रधवचन्दनार्जुन नीपकुटजकदम्बाश्च ॥ ३ ॥ येचान्ये तथाप्रकारा एतेषां मूलानि असंख्येयजीवकानि । कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वचोपि शाखा अपि प्रवाला अपि, पत्राण्यपि प्रत्येकजीवकानि, पुष्पाण्यप्यनेकजीवकानि फलान्यपि बहुबीजानि । उक्तो बहुबीजकाः । उक्ता वृक्षाः ॥ अथ कतिविधा गुच्छाः ? । गुच्छा अप्यनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-वृन्ताकसल्लकीवा एवं नुकाच्छनारिजकुसुम्भ
रूपी आढि कनीली तुलसीतथाविजोराख्यः ॥ १ ॥ कुस्तुम्भरिपिप्पलिकाः अतसीविलीयकास्यामादि ॥ चूर्णदपेलोकन्दलिका वाउलिकाबदरवृक्षो ॥
२ ॥ पत्रवृक्षोरस्युरजाः नवतितथायवासश्च ॥ निर्गुण्डाकंतूवारिकाः आठकिश्चैवतलोडा ॥ ३ ॥ शृणपानकाश्मदंका ग्राठकसिन्दुवाराख्याः ॥ करम

॥ अ० ॥

झा ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्दग अग्घाझगसामसिंदुवारेय । करमद्दअट्टरूसग करीरएरावणमहत्थे ॥ ४ ॥ जाउलतमालपिरिली गयमारिणकुब्बकारियानेंझी । जावइकेयइतहगं जपाझलादासिअंकोल्ले ॥ ५ ॥ जेया वस्से तहप्पगारा सेत्तं गुच्छा ॥ से किंतं गुम्मा२ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा सेरियएणोमालिय कोरिटय वत्थुजीवगमणोज्जे । पीईयपाणकणइर कुज्जयतहसिंदुवारेय ॥१॥ जाईमोग्गरतहजू हियायतहमल्लियायवायुं ती । वत्थुलकच्छुलसेवा लगंठिमगदंतियाचेव ॥२॥ चपगजाईणवणी इयायकुंदेतहामहाजाई । एवमणेगागारा हवंतिगुम्मामुणेयव्वा ॥ ३ ॥ सेत्तं गुम्मा ॥ से किंतं लयाउ लयाउ अणेगविहाउ पन्नत्ताउ, तंजहा—पउमल यानागलया असोगचंपयलयायचूतलता । वणलतवासंतिलता अइमुत्तयकुंदसामलता ॥ १ ॥ जेयावस्मेत हप्पगारा सेत्तं लयाउ ॥ से किंतं वल्ली२ अणेगविहाउ पन्नत्ताउ, तंजहा—पूसफलीकालिंगी तुंवीतपुसीय

---

र्दाडूसाख्याः करवीररावणमहाख्याः ॥ ४ ॥ जाउलतमापिरलीगज मारणकुब्जकारिकाजिण्डी ॥ यावककेतकिवृक्षौ गणपालोप्यथाङ्कोलः ॥ ५ ॥ ये वान्ये तथाप्रकारास्ते गुच्छाः । अथ कतिविधा गुल्माः ?। गुल्मा अप्यनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-सरिसनामानवमालिका कोरण्टकबन्धुजीवकमनो जाः ॥ प्रीतिकरप्राणतरौ करवीरकुब्जकौनिर्गुण्डी ॥ १ ॥ जातीमुद्गरयूथ्यो मल्लिकाचतथावासन्ती ॥ वर्तुलकक्कोलगुल्मौ शैवालगण्ठिमगदन्तिकगा श्च ॥ २ ॥ चम्पकजातीनारङ्गाः मुचुकुन्दस्तथामहाकायः ॥ एवमनेकाकारा भवन्तिगुल्माअनेकविधाः ॥ ३ ॥ तएते गुल्माः ॥ अथ कास्ता लताः ' ल ता अनेकविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-पद्मलतानागलता अशोकचम्पकलताश्चूतलताः । वनवासन्तीलतेस्तः अतिमुक्तककुन्दश्यामलताः ॥ १ ॥ याश्चान्या स्तथाप्रकारास्ता लताः । अथ कास्ता वल्लयः , वल्लयोनेकविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-पुंसकलीकालिङ्गी तुम्बीत्रपुसीतथैलवालुङ्की । घोषातकीपटोली पज्जाङ्गुलिकातृणालीच ॥ १ ॥ कङ्गूलताचकुटुकी कर्कोटकीकारियल्लकीसुभगा । कुथवाचवल्गुलीस्था त्रापावल्लीचदेवदार्वीकाः ॥ २ ॥ आस्फोटाचा

एलवालुंकी । घोसातईपडोला पंचंगुलिअायणालीय ॥ १ ॥ कंगूलयाकदुइया कक्कोडइकारियल्लईसुन्नगा । कुंथवायवागलीपा वावल्लीतहदेवदालीय ॥ २ ॥ अप्फोआअइमुत्तय नागलयाकरहसूरवल्लीय संघट्टसुमिण सावित्रय जासुमणकुविंदवल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियअंबावल्ली वीरविरालीजियंतिगोवाली । पाणीसामावल्ली गुंजा वल्लीयवत्थाणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकण्णइमालुयायअंजणई । दहफुल्लयकोगलिमा गलीयतह अक्कबोंदीया ॥ ५ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्तं वल्लीओ ॥ से किंतं पव्वगा २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा इक्कूयाइक्कुवरुये वीरुणातहइक्कडियमासेय । सुंठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वंसेवेलूकणए कंका वंसेयतववंसेय । उदएकुडएविमए कण्हावेलूयकल्लाणे ॥ २ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्तं पव्वगा ॥ से किंतं तणा ? तणा अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—सेडियगंतियहोत्तिय दब्भकुसेपव्वएयपोडइला । अज्जुणअसाढए

---

तिमुक्तक नागलतेक्ष्वसूरवल्ल्यौ च । संघर्षसुमनसोपिच जातसुमनाःकुविन्दवल्लीकाः ॥ ३ ॥ मुद्रिकाम्बावल्लयौ वीरविरालीजयन्तीगोपाली । पाणी इयामावल्ली गुञ्जावल्लीचवत्थाणी ॥ ४ ॥ शेषवतीचद्विगोत्रा फुरसीगिरिकर्णिभालुकाञ्जनकी । द्विपुष्पकागणिमोगरौ तथैवचान्याकुबोंदीकाः ॥ ५ ॥ या चान्यास्तथा प्रकारास्ता वल्लयः । अथ के ते पर्वगाः पर्वगा अनेकविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-इक्षूयाइक्षुवाटिका वीरुणीतथाइकामासश्च ॥ शुगठी सरेयवेत्रा तिमिरासतपोरगपालाश्च ॥ १ ॥ वंशोवेलूकणकाः कंकावंशस्तथैवयववंशः ॥ उदककुठकविमुकाः कण्ठावेलश्चकल्याणी ॥ २ ॥ येचान्ये तथाप्रकास्ते पर्वगाः ॥ अथ कानि तृणानि तृणानि अनेकविधानि प्रज्ञप्तानि । तद्यथा-एरण्डः कुरुविन्दः करकचसुगठौतथाविल्वश्च ॥ मधुरतृणकुरकशष्प न्नेदात्बोध्यंचशुक्लतृणम् ॥ १ ॥ यानिचान्यानि तथा प्रकाराणि तानि तृणानि । अथ कतिविधा वलयाः ? । वलया अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-तालस्तमालतक्कली तरकालितसारिकासारकल्याणाः ॥ सरलजावित्रीकेतकी कदल्यस्तथापद्मवृक्षश्च ॥ १ ॥ नूतवृक्षोहिङ्गुवृक्षो लवङ्गवृक्षश्चभव

रो हियंसिसुयवेयखीरनुसे ॥ १ ॥ एरंडेकुरुविंदे करकरसुंठेतहाविभंगूय । मज्झरतणतुरयसिप्पिय बोधव्वे सुंकलितणेय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं तणा ॥ से किंतं वलया२ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—ताले तमालेतक्कलि, तेयालीसालिसारकल्लाणे । सरलेजावतिकेयइ, कंदलितहपउमरुकेय ॥ १ ॥ नुयरुरुकहिं गुरुरुके, लवंगरुरुकेयहोइबोधव्वे । पूयफलीखज्जूरी, बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं वलया । से किंतं हरिया ? हरिया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—अज्जोरुहवोदाणो, हरितगतहतंदुलेज्ज गतणेय । वत्थुलपोरगमज्जा, रपोइवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेवमंडुक्की । मूलगसरिसवअंबिल, साएयजियंतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकरहनराले फणज्जुएअज्जएयनूयणए । चोरगदमण गमरुयग सतपुप्फिंदीवरेयतहा ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं हरिया । से किंतं नसहीन ? नसहीन अणेगविहान पन्नत्तान, तंजहा—सालीवीहीगोज्झम जवकलमसूरतिलमुग्गा । मासणिप्फावकुलत्थ अलिसिं दसतीणएलिंघा ॥ १ ॥ अयसीकुसुंनकोद्दव कंगूरालगवरट्टकोद्दूसा । सणसरिसमूलवीया जेयावन्ने तहप्प

॥ मूल ॥

तिबोद्धव्यः ॥ पूगफलंखर्जूरः बोद्धव्योनारिकेलश्च ॥ २ ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते वलयाः ॥ अथ कतिविधा हरितकाः । हरितका अप्यनेक विधाः । तद्यथा-अध्यारूढोवोढा हरिततन्दुलोजलगतानेकः ॥ वत्थुलपौरगसज्जार पोंडवल्लीचपालकिका ॥ दकपीपलिकादर्वी स्वस्तिकाशाकस्तथैवमण्डूकी ॥ १ ॥ मूलकसरसवाम्बिल शाकश्चजयन्तकश्चैव ॥ तुलसीकरम्भोरालौ अर्जुनसूर्चभेदेन ॥ चोरदकमनकरुचक शतपुष्पीन्दीवरंचतथा ॥ येचान्ये तथाप्रकारास्ते हरिताः ॥ अथ कास्ता औषधयः । औषधयो ऽनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । शालीव्रीहीगोधूमा यवकलममसूरतिलमुद्गाः ॥ मास निष्पावकुलत्थाः अलसीदशतीणकालिङ्गाः ॥ १ ॥ अयसीकुसुम्भकोद्रव कङ्गूरालवाशकोद्रवकाः ॥ शणसरिसवमूलबीजाः येचान्ये तथाप्रकारास्ताश्चौ

॥ अ० ॥

गारा सेत्तं नसहीन । से किंतं जलरुहा २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उदए अवए पणए सेवाले कलंहढे कसेरूया कच्छभाणी उप्पले पउमे कुमुदे णलिणे सुभए सोगंधिए पोंडरीए महापोंडरीए सयवत्ते सहस्सवत्ते कल्हारे कोकणदे अरविंदे तामरसे बिसे बिसमुणाले पोक्कले पोक्कलच्छिभए जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं जलरुहा । से किंतं कुहणा ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—आए काए कुहणे कुणक्के दव्वहलिया अफाए सप्पाए सत्ताए वंसीणहिया कुरए १ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं कुहणा । णाणाविहसंठाणा रुक्खाणंएगजीवियापत्ता । खंधोविएगजीवो तालसरलनालिएरीणं ॥ १ ॥ जहसगलसरिसवाणं सिलेसमिस्साणवट्टियावट्टा । पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपप्पडिया बहुएहिंतिलेहिं सहतासंती । पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया ॥ ३ ॥ सेत्तं पत्तेयसरीरबादरवणप्फइकाइया । से किंतं

॥ मूल ॥

---

षधयः ॥ अथ कतिविधा जलरुहाः ? । जलरुहा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—उदके अवके पनके शैवाले कलम्बुके हेढे ॥ कसेरुककच्छभाणिकाः उत्पलपद्मकुमुदानि ॥ १ ॥ नलिनसुभगसौगन्धिकपुण्डरीक शतपत्र सहस्रपत्रकल्हारकोकनदारविन्दनामरस बिसबिसमृणाल पुष्कल पुष्कलशालि नेदात् । येचान्ये तथाप्रकारास्ते जलरुहाः । अथ कतिविधाः कुहणाः । कुहणा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-आय काय, कुणह, कुणक' द्रव्यहलिका, अफाक, सप्रत्न, सत्राक, छत्राक, वंसीणहित' कुहकरनेदात् । येचान्ये तथाप्रकारास्ते कुहणाः । नानाविधसंस्थाना वृक्षा एकजीविकापत्राः । स्कन्धोपि चैकजीवोत्पलसरलनारिकेलीनाम् ॥ १ ॥ यथासकलसर्षपाणा श्लेष्ममिश्राणां वर्तिकावृत्तम् । प्रत्येकशरीराणां तथाभवन्तिशरीरसंघाताः ॥ २ ॥ यथावातिलपर्पटिका बहुभिस्तिलैस्सहतासती । प्रत्येकशरीराणां तथाज्ञवान्तिशरीरसंघाताः ॥ ३ ॥ उक्ताः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः । अथ कतिविधाः साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः ।

॥ अ० ॥

साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—अवए पणए सेवाले लोहिणी निहू
त्थिन्नगा अस्सकण्णी सिंहकण्णी सिउंढातत्तोमुसंढीय ॥ १ ॥ रुरुकुरुहरियाजारु, छीरविरालीतहेवकिट्टीया
हलिद्दासिंगवेरेय, आलुग्गमूलएइ यकंदूय कण्णकरूतमक्कडोगलईतहेव मक्कडसिंगी विरुहा सप्पसुगंधा छि
न्नरुहा चेव वायरुहा पाढामियबालुंकी मक्कररसा चेव रायवल्ली य पउमा य माढरी दंति वंझिकिंहाति
यावरा मासपण्णी मुग्गपण्णि जीवियरिसिके य रेणुया चेव कानली खीरकानली तया नंगीणहाईयाकिमिरा
सिन्नहमुत्थाणंगलईपेलुगाईय किण्हे पउले य हढेहरतणुया चेव लोयाणी करहकंदेवज्जे सूरणकं तहेव
खल्लूरे एए अणंतजीवा जेयावन्ने तहाविहा ॥ तणमूलकंदमूलो वंसीमूलित्तियावरे । संखेज्ज मसंखेज्जा वोध
व्वाअणंतजीवाय ॥१॥ सिंघाडगस्सुगुच्छो अणेगजीवोउ होंति णायव्वो। पत्ता पत्तेयजिया दोण्हियजीवाउ फले

॥ मूल ।

---

तद्यथा-अनक, पनक' सेवाल, लोही, णीहू, स्तिजका । अश्वकर्णी सिंहकर्णी सउण्ढि ततो, मुसुण्ढीः ॥ १ ॥ तरुकन्दकुन्दरिजिरुवीरविराली त
थाचोक्ता । हारिद्रशृङ्गवेर आलूमूनीकम्बु कृष्णकन्दमधुपोलेव ॥ २ ॥ मधुशृङ्गीविरुठी सर्वसुगन्धिश्छिन्नरूढा । अश्मरुहावाताली मधुररसाचराज
लता ॥ ३ पद्मागान्धारिदात्यौ चण्डीकिंघातिकावरामासपर्णी । मुद्गपर्णीजीवरसिका रेणुकाकाकोलीक्षीरकाकोली ॥४॥ शृङ्गाकमराशिमाथाः गु
ह्यागुलेयबालुका च । कृष्णपोलहरडकन्दौ तथाहरतन्तुलोपाणी ॥ ५ ॥ कृष्णकन्दवज्रकन्दौ सूरणकन्दःखल्लूकः । एते अनन्तजीवा ये वाप्यन्ये तथा
भूताः ॥ ६ ॥ तृणमूलःकन्दमूला वंशीमूलास्तथाचपरे । सख्येया असंख्येया बोद्धव्याश्चतथापरे ॥ १ ॥ शृङ्गाटकस्तुगुच्छोप्य नेकजीवोज्ञवतिविज्ञेयः ।
पत्राः प्रत्येकजीवा द्वौद्वौजीवौफलेविज्ञेयौ ॥ २ ॥ यस्यमूलस्यभग्नस्य समोभङ्गस्तुदृश्यते ॥ अनन्तजीवास्तन्मूले येवाप्यन्येतथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य
कन्दस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्त न्मूले येवाप्यन्ये तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवा

॥ अ० ॥

न्नणिया ॥२॥ जस्समूलस्सन्नग्गस्स समोन्नंगोयदीसए। अणंतजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा ॥१॥ जस्सकंदस्स न्नग्गस्स समोन्नंगोयदीसई । अणंतजीवेउसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सन्नग्गस्स समोन्नंगोय दीसई । अणंतजीवेउसेखंधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएन्नग्गाए समोन्नंगोयदीसई । अणंतजीवा तयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सन्नग्गस्स समोन्नंगोपदीसई अणंतजीवेउसेसाले जेयावन्ने तहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सन्नग्गस्स समोन्नंगोपदीसई । अणंतजीवेपवालेसे जेयावन्नातहाविहा ६ ॥ जस्सपत्तस्सन्नग्गस्स समोन्नंगोपदीसई। अणंतजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७॥ जस्सपुप्फस्सन्नग्गस्स समोन्नंगोपदीसई । अणंतजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सन्नग्गस्स समोन्नंगोपदीसई । अणंतजीवेफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सन्नग्गस्स समोन्नंगोपदीसई । अणंतजीवेउसेबीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सन्नग्गस्स हीरोन्नंगोपदीसई । परित्त जीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा १ जस्सकंदस्सन्नग्गस्स हीरोन्नंगोपदीसई । परित्तजीवेउसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सन्नग्गस्स



स्तन्मूले येवाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य शाखा प्रज्ञप्ता च समो भङ्गोहि दृश्यते ॥ अनन्तजीवास्तच्छाखा येवाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य त्वच स्तुज्ञप्तायाः समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तत्त्वतु येवाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ५ ॥ यत्प्रवालस्य ज्ञप्तस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रवालेनन्तजीवाः स्यु र्येवाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य ज्ञप्तस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तत्पत्रे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य ज्ञ प्तस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तत्पुष्पे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ८ ॥ यत्फलस्य च ज्ञप्तस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्त जीवास्तु फले ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य ज्ञप्तस्य समो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ अनन्तजीवा स्तद्बीजे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य मूलस्य ज्ञप्त

हीरोऽनंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेखंधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सत्तयाएऽनग्गाए हीरोऽनंगेपदीसई । परित्तजीवातयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सऽनग्गस्स हीरोऽनंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेसाले जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सऽनग्गस्स हीरोऽनंगेपदीसई । परित्तजीवेपवालेउ जेयावन्नेतहाविहा ६ ॥ जस्सपत्तस्सऽनग्गस्स हीरोऽनंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सऽनग्गस्स हीरोऽनंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सऽनग्गस्स हीरोऽनंगेपदीसई । परित्तजीवेफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सऽनग्गस्स हीरोऽनंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेबीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठाऽऽ छल्लीवहलतरीऽनवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायाव

---

स्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तन्मूले ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य स्कन्दस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्स्कन्दे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त स्कन्धे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य त्वचस्तु भग्नाया हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ४ ॥ यस्य शालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्त च्छाले येवाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ५ ॥ यत्प्रवालस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येक जीवास्तत्र स्यु र्ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ६ ॥ यस्य पत्रस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येक जीवा स्तत्पत्रे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ७ ॥ यस्य पुष्पस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवा स्तत्पुष्पे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ८ ॥ यत्फलस्य तु भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तु फले ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ ९ ॥ यस्य बीजस्य भग्नस्य हीरो भङ्गस्तु दृश्यते ॥ प्रत्येकजीवास्तद्बीजे ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ १० ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेन्योत्तस्त्वक् बहुला भवेत् ॥ अनन्तजीवास्त त्वचि या वाप्यन्या स्तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेन्यो निस्त्वक् बहुला भवेत् ॥ अनन्त जीवास्तत्त्वचि ये वाप्यन्ये तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य शा

सातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाउं वल्लीवहलतरीउवे । अणंतजीवाउसावल्ली जायावसातहाविहा २ ॥ जस्सखंधस्सकठाउं वल्लीवहलतरीउवे । अणंतजीवाउसावल्ली जायावसातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइक ठाउं वल्लीवहलतरीउवे अणंतजीवाउसावल्ली जायावसातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठाउं वल्लीतणु यरीउवे । परित्तजीवाउसावल्ली जायावसातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाउं वल्लीतणुयरीउवे । परित्त जीवाउसावल्ली जायावसातहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सकठाउं वल्लीतणुयरीउवे । परित्तजीवाउसावल्ली जायावसातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइकठाउं वल्लीतणुयरीउवे । परित्तजीवाउसावल्ली जायावसातहावि हा ॥ ४ ॥ चक्कागंउजमाणस्स गंठीचुसघणोउवे । पुढवीसरिसेणभेदेण अणंतजीवंवियाणाहि ॥ १ ॥ गूढसिरागंपत्तं सच्छीरंजंचहोइनिच्छीरं । जंपियपणठसंधिं अणंतजीवंवियाणाणि ॥ २ ॥ पुप्फाजलयाथलया

॥ मूल ॥

---

लस्य काष्ठेन्य श्छल्लीतु बहुलः भवेत् ॥ अनन्तजीवास्तत्त्वपि या वाप्यन्या स्तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्य मूलस्य काष्ठेन्यो न्तस्त्वक् तनुतरीमता ॥ प्रत्येक जीवास्त्वचि तु या वाप्यन्या स्तथाविधाः ॥ १ ॥ यस्य कन्दस्य काष्ठेन्यो न्तस्त्वक् तनुतरीमता ॥ प्रत्येकजीवास्त्वचितु यावाप्यन्यास्तथाविधाः ॥ २ ॥ यस्य स्कन्धस्य काष्ठेन्यो न्तस्त्वक् तनुतरी मता ॥ प्रत्येकजीवास्तु त्वचि या वाप्यन्या स्तथाविधाः ॥ ३ ॥ यस्यशालस्य काष्ठेन्यो न्तस्त्वक्तनुतरी म ता ॥ प्रत्येक जीवास्तु त्वचि या वाप्यन्या स्तथाविधाः ॥ ४ ॥ चक्राङ्गंनज्यमानस्य ग्रन्थिश्चूर्णोकृताभवेत् ॥ पृथिवी सदृश भेदेना नन्त जीवं विजा नीयात् ॥ गूढ शिराकं पत्रं सक्षीरं यच्च निःक्षीरम् ॥ यदपि प्रनष्टसन्धि अनन्तजीवं विजानीयात् ॥ पुष्पंजलजंस्थलजं वृन्तबद्धञ्चनालबद्धञ्च । सङ्ख्येय मसङ्ख्येयं बोद्धव्यमनन्तजीवञ्च ॥ ३ ॥ येकेचिन्नालबद्धाः पुष्पाःसंख्येयजीविकाश्चस्युः । ज्ञातव्याह्यनन्तजीवा येचाप्यन्येतथाविधाश्चस्युः ॥ ४ ॥ पद्मन्यु त्पलिकन्दा वन्तरकन्दस्तथैवऊझिल्ली च । एतेह्यनन्तजीवा एकोजीवोबिषमृणाले ॥ ५ ॥ पलाशफूलसुनकन्दो कन्दुककुस्तुम्बकौचबोद्धव्यो । एतेप्रत्येक

॥ अ० ॥

बिंठबट्ठासणालिबट्ठाय । संखिज्जमसंखेज्जा बोधव्वाणंतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेइनालियाबद्धा पुप्फासंखेज्जजीविया । णिक्खयाअणंतजीवा जेयावन्नेतहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलिणीकंदे अंतरकंदेतहेवऊल्ली य । एते अणंतजीवा एगोजीवोनिसमुणाले ॥ ५ ॥ पलंडूलहसुणकंदेय कंदलीयकुहुंबए । एएपरित्तजीवा जेयावन्नेत हाविहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणलिणाणं सुभगसोगंधियाणय । अरविंदकुंकणाणं सतवत्तसहस्सपत्ताणं ॥ ७ ॥ बिंटबाहिरपत्ता यकेसियाचेवएजीवस्स । अब्भिंतरगपत्ता पत्तेयंकेसरंमिंजा ॥ ८ ॥ वेणुनलइक्खुवाडिय समासइक्कूयइक्कडेरंडे । करकरसुंठिविहंगु तणाणतहपव्वगाणंच ॥ ९ ॥ अच्छिपव्वंपलिमो डनयएगस्सहोंतिजीवस्स । पत्तेयंपत्ताइं पुप्फाइंअणेगजीवाइं ॥ १० ॥ पुस्सफलंकालिंगं तुंबंतउसेलुवालुंकं । घोसालयं पडोलं तिंदूयचेवतिंदूसं ॥ ११ ॥ बेटंमंसकडाहं एयाइंहवंतिएगजीवस्स । पत्तेयंपत्ताइं सकेसरमकेसरंमिंजा १२ ॥ सप्फाएसज्जाए उव्वेहलियायकुहणकुंदुक्के । एएअणंतजीवा कुंदुक्केहोइनयणाउं ॥ १३ ॥ जोणिभूएवीए

॥ मूत्र ॥

---

जीवा येचाप्यन्येतथाप्रकाराःस्युः ॥ ६ ॥ पद्मोत्पलनलिनानां शुभगसौगन्धिकानां च बोद्धव्यम् । अरविन्दकोकनदानां शतपत्रसहस्रपत्राणाम् ॥७॥ वृन्तंचबाह्यपत्रंकर्णिका चैकजीवानि । आभ्यन्तरंचपत्रं केसरंचैवमिञ्जाच ॥ ८ ॥ वेणुनडेक्षुवाटिकसमासेक्षुडक्कडेरगडाः । करकरसुण्ठिविहङ्गू स्तृणानिचपर्वगानिस्युः ॥ ९ ॥ अस्थिपर्ववलिमो डकश्चैतएकजीवानि । पत्राणिचैकजीवान्य नेकजीवानिपुष्पाणि ॥ १० ॥ पुष्पफलंकालिङ्गं तुम्बं त्रपुषमेलचिर्भटंचैव । घोषातकंपटोलं तिन्दूकंचैवतिन्दूसम् ॥ ११ ॥ वृन्तंसमांसकटाह मेतानिभवन्तिचैकजीवस्य । प्रत्येकंपत्राणि सकेसराकेसरा मिञ्जा ॥ १२ ॥ सप्फाएसज्जाए उव्वेहलियाचकुहनकुंदुक्के । एतेह्यनन्तजीवा कुन्दुक्केभवतिभजना च ॥ १३ ॥ बीजेयोनिभूते जीवोव्युत्क्रामतिस चान्यो वा । योपिचमूलेजीवः सोपिहिपत्रेप्रथमतयेति ॥ १४ ॥ सर्वोपिकिसलयःखलु प्रोद्गच्छन्ननन्तकोभणितः । सएववर्द्धमानः प्रत्येकमनन्तजीवो

॥ अ० ॥

जीवोवक्कमइसोवऋसोवा । जोविऋमूलेजीवो सोविऋपत्तेपढमयाए ॥ १४ ॥ सव्वोविकिसलयंखलु उग्गम माणोऋणंतजंणाणि । सोचेवविबद्धंतो होइपरित्तोऋणंतोवा ॥ १५ ॥ समयंवक्कंताणं समयंतेसिंसरीरणि ब्वत्ती । समयंऋाणग्गहणं समयउस्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एक्कस्सउजंगहणं बहूणसाहारणाणतंचेव । जंबऊ याणंगहणं समासजंतंपिएगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणंच । साहारणजीवाणं सा हारणलक्कणंएयं ॥ १८ ॥ जहऋयगोलोधंतो जाजंततत्ततविणजसंकासो । सव्वोऋगणिपरिणजं णिजयजीवे तहाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदोण्हतिण्हव संखेजाणवपासिउंसक्का । दीसंतिसरीराइं णिजयजीवाणणंताणं २० लोगागासपएसे णिजयजीवंठवेहिएक्केक्कं । एवंमविजमाणा हवंतिलोयाऋणंताजं ॥ २१ ॥ लोगागासपदेसे परित्तजीवंठविजुएक्केक्कं । एवंमविजमाणा हवंतिलोगाऋसंखेजा ॥ २२ ॥ पत्तेयापजत्ता पयरस्सऋसंख जागमित्ताजं । लोगाऋसंखाऋपजत्तयाणसाहारणमणंता ॥ २३ ॥ एएहिंसरीरेहिं पजत्तकंतेपरूवियाजीवा

॥ मूल ॥

वा ॥ १५ ॥ समकंव्युत्क्रान्तानां समकंतेषांशरीरनिर्वृत्तिः । समकंप्राणापान ग्रहणंचोच्छ्वासनिःश्वासौ ॥ १६ ॥ एकस्यचयद्ग्रहणं तद्बहूनांसाधारणा नांच । यद्बहूनांग्रहणं समासतस्तदपिचैकस्य ॥ १७ ॥ साधारणमाहारः प्राणापानादिकंभवेत् सर्वम् साधारणजीवानां साधारणलक्षणंचैतत् ॥ १८ ॥ यथायोगोलोष्मातो जातस्तप्ततपनीयसङ्काशः । सर्वोग्निपरिणतःखलु जानीहिनिगोदजीवान्त्वम् ॥ १९ ॥ एकस्यद्वयोस्त्रयाणां संख्येयानांनवोपल ब्धानि । गात्राण्यथदृश्यन्ते ऽनन्तानांनिगोदजीवानाम् ॥ २० ॥ लोकाकाशप्रदेशे निगोदजीवंस्थापयैकैकम् । एवंगुणीयमाना भवन्तिलोकाऋनन्ता स्तु ॥ २१ ॥ लोकाकाशप्रदेशे प्रत्येकजीवंस्थापयैकैकम् । एवन्तुमीयमाना भवन्तिलोकाऋसंख्याताः ॥ २२ ॥ पर्याप्तप्रत्येकजीवाः प्रतरस्यासङ्खभागमि ताः । ऋसंख्यलोकाऋपर्याप्ताः साधारणाऋनन्ताः ॥ २३ ॥ एभिःखलुशरीरैः प्रत्यक्षंतेप्ररूपिताजीवाः । सूक्ष्माऋाज्ञाग्राह्या श्चक्षुस्पर्शंनतेयान्ति ॥ २४ ॥

॥ ऋ० ॥

सुक्कमाऽणागिज्झा चक्खुप्फासंननेइंति ॥ २१ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासउं दुविहा पन्नत्ता, तं० पज्जत्तगा य अपज्जत्तगाय, तत्थणं जे ते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्तगा तेसिणं वन्नादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमति, जत्थ एगो तत्थ सिय संखिज्जा सिय असंखिज्जा सियअणंता एएसिणं इमाउ गाहाउ अणुगंतव्वाउ तंजहा–कंदायकंदमूलाय रुक्खमूलाइयावरे। गुच्छायगुम्मवल्लीय वेलुयाणितणाणिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिंघाडे हढेयतवालकिण्हएपणए। अवएयकच्छभाणी कंदुक्कोकूणवीसइमे ॥ २ ॥ तयपत्तिपवालेसुय पत्तपुप्फफलेसुय । मूलग्गमज्झवीएसु जोणीकस्सइकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्तं साहारणसरीर बादरवणस्सइकाइया । सेत्तंबादरवणस्सइकाइया ॥ सेत्तं एगिंदिया ॥ से किंतं बेइंदिया ? बेइंदिया अणेग विहा पन्नत्ता, तंजहा–पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गंडूयलगा गोलोमा णेउरा सोमंगलगा वंसीमुहा सू

॥ मूल ॥

येपिचान्ये तथाप्रकारास्ते समासतोद्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा–पर्याप्तकाश्चापर्याप्तकाश्च, तत्र यत्रपर्याप्तकास्ते ऽसम्प्राप्ताः, तत्र ये पर्याप्तका स्तेषां वर्णादेशेन गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशो विधानानि (भेदाः) संख्येयानि योनिप्रमुखशतसहस्राणि पर्याप्तकनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रमन्ते, यत्रैकस्तत्र स्यात्संख्येयाः स्यादसंख्येयाः स्यादनन्ताः । एतेषामिमा गाथा अनुगन्तव्या स्तद्यथा–कन्दाश्चकन्दमूलानि वृक्षमूलानिचापरे । गुच्छागुल्माश्चवल्लयश्च वेणुकानितृणानिच ॥ १ ॥ पद्मोत्पलशृङ्गाटकानि हढसेवालकल्हारनकाश्च । अवनकाश्चकच्छभाणिः कन्दुकएकोनविंशतिकः ॥ २ ॥ त्वक्छल्लिप्रवालेषु पत्रपुष्पफलेषुच । मूलाग्रमध्यबीजेषु योनिःकस्यापिकापिच ॥ ३ ॥ उक्ताः साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः । उक्ता बादरवनस्पतिकायिकाः । समाप्तानि एकेन्द्रियाणि । अथ के ते द्वीन्द्रियाः द्वीन्द्रिया अनेकविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा पूति कृमिकाः कुक्षिकृमि

॥ अ० ॥

ईमुहा गोजलोया जलोया जालाउया संखा संखणगा घुल्ला खुल्ला खंधा वराडा सोत्तिया मोत्तिया कलुया वासा एगतोवत्ता दुहतोवत्ता णंदियावत्ता संबुक्का माइवाहा सिप्पि सपुडा चंदणा समुद्दलिक्खा, जेयावण्णे तहप्पगारा सव्वे ते संमुच्छिमा नपुंसगा ते समासतो दुविहा प०, तं०—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय एएसिणं एवमादियाणं बेइंदियाणं पज्जत्त पज्जत्ताणं सत्तजाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं ॥ सेत्तं बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ॥ से किंतं तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उवाइया रोहिणिया कुंथू पिपीलिया उद्देसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पाया उप्पडा तण हारा कठहारा पत्तहारा मालुया तणबिंटिया पत्तबिंटिया पुप्फबिंटिया फलबिंटिया बीयबिंटिया तेपुरु णमिंजिया तउसमिंजिया कप्पासट्ठिमिंजिया हिल्लिया झिल्लिया झिंगिरा किंगिरिडा बाहुया लहुया सु

॥ मूल ॥

---

काः कण्डूयगा गोलोमा तकुला अमङ्गलगा वंशीमुखाः सूचीमुखा गोजलौकाः जलौकाः जलजूकाः शेखा शंखनका गुल्लाः खुल्लाः खडाः कडाः सौक्तिकं मौक्तिकं कुलापवासाः एकोपयुक्ता, द्विधोपयुक्ताः नन्द्यावर्ताः शंबुकाः मड्वोहाः शुक्तिकाः चन्दनाः समुद्रलीक्षाः येवाप्यन्ये तथाप्रकाराः सर्वे ते समूर्च्छिमा नपुंसकास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च । एतेषामेवमादीनां द्वीन्द्रियग्राह्याणां पर्याप्तापर्याप्तकादीनां सर्वजातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि भवन्ति इतिआख्यातम् । तएते द्वीन्द्रियसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः ॥ अथ कतिविधा स्त्रीन्द्रियसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः । त्रीन्द्रियसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-उत्पातिका रौहिणिका कन्थुकाः पिपीलिकाः उद्देशाः उद्देहा उत्कलिता पत्यत्ता उत्पडाः तृणाहाराः काष्ठाहाराः मूलाहाराः पत्राहाराः तृणवेंटी पुत्रवेंटी पुष्पवेंटी फलवेंटी बीजवेंटी सूरणसमज्जिताः तेजःसमज्जिताः कर्पासाः अस्थिमिञ्जी हल्लिका झल्लिका झिंगिरिया किंगिरिया बाहुका लघुकाः सुभगाः सौवस्तिकाः सुखविटाः इन्द्रकेति

॥ अ० ॥

॥ मूल ॥

नगा सोवत्थिया सुयबेंटा इंदकाइया इंदगोवया तुरतुंबगा कोत्थलवाहगा जूया हालाहला पिसुया सतवाइया गोम्ही हत्थिसोंडा जेयावन्ने त० सम्मे ते समूच्छिमनपुंसगा ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। एएसिणं एवमाइयाणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अट्ठजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीति मक्खायं। सेत्तं तेइंदियसंसा०। से किंतं चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—अंधिय पोत्तिय मच्छिय, मगसिरकीडे तहा पयंगे य। ढंकण कुक्कुड कुक्कुह, नंदावत्तेय सिंगिरिडे। किण्हपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हालिद्दपत्ता सुक्किल्लपत्ता चित्तपक्खा विचित्तपक्खा उहंजलिया जलचारिया गंभीरा णीणिया तंतवा अत्थिरोडा अत्थिवेहा सारंगा नेउरा दोला भमरा भरिली जरुला तोमा विच्चुया पत्तविच्चुया छाणविच्चुया जलविच्चुया पिंगला कणगा गोमयकीडा जेयावन्ने तहप्पगारा सम्मे ते संमुच्छिमा नपुंसगा ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अप

॥ अ० ॥

का: इन्द्रगोपाः तुरुतुम्बगाः कुलत्थवाहगा यूका हालाहलाः पिशुकाः सत्ववायकाः कर्णशिला हस्तिशुण्डाः ये वाप्यन्ये तथाविधास्ते सर्वे समूर्छिमा नपुंसकलिङ्गाः ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पर्याप्तकाअपर्याप्तकाश्च। एतेषामेवमादिकानां त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानामष्ट जातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्ति इत्याख्यातम्॥ तदेते त्रीन्द्रियग्राह्याः॥ अथ कतिविधाश्चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः ?। चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-अधिकपुत्तिकमार्गिक, मशककीटास्तथापतङ्गाश्च॥ मत्कुणकुक्कुटकुक्कुहनन्द्यावर्ताश्चशृङ्गिरकाश्च॥ १॥ कृष्णपक्षा नीलपक्षा लोहितपक्षा हारिद्रपक्षाः शुक्लपक्षाश्चित्रपक्षा विचित्रपक्षा उपजलिकाः जलचारिणो गंभीरा नियतास्तन्तवोऽस्थिरोडा अस्थिवेधाः सारङ्गा नकुला दोला भ्रमरा भ्रमर्यो जलरुहाः तोहाः वृश्चिकाः पत्रवृश्चिकाः गोमयवृश्चिकाः जलवृश्चिकाः

॥ मूल ॥

जत्तगाय । एएसिणं एवमाइयाणं चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं नवजाइकुलकोडि जोणिप्पमुहसयसह स्साइं भवंतीति मक्खायं । सेत्तं चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किंतं पंचिंदियसंसारसमावन्न जीवपन्नवणा ? पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा चउविहा पन्नत्ता, तंजहा—नेरइयपंचिंदियसंसारस मावन्नजीवपन्नवणा तिरिक्खजोणियपंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा मणुस्सपंचिंदियसंसारसमावन्न जीवपन्नवणा देवपंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किंतं नेरइया २ ? सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा रयणप्पभा पुढवीनेरइया सक्करप्पभापुढविनेरइया वालुयप्पभापुढविणेरइया धूमप्पभापुढविणेरइया तम प्पभापुढविणेरइया तमतमप्पभापुढविणेरइया । ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा अपज्जत्त गाय । सेत्तं णेरइया । से किंतं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? तिविहा पन्नत्ता, तंजहा—जलयरपंचिंदि

॥ अ० ॥

प्रियंगलाः कणगाः गोमयकीटाः ये वाप्यन्ये तथाप्रकारास्ते समूर्छिमा नपुंसकास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः ॥ पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च ॥ एते षामेवमादीनां चतुरिन्द्रियग्राह्याणां पर्याप्तापर्याप्तानां नवलक्षकुलकोटिशतसहस्राणि भवन्ति इति आख्यातम् ॥ तएते चतुरिन्द्रियसमापन्न जी वप्रज्ञापनाः ॥ अथ कतिविधाः पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः ? । पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः ॥ तद्यथा-ने रयिकपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः तिर्यक्योनिकपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः मनुष्यपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः दे वपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः । ते कतिविधा नैरयिकाः ? नैरयिकाः सप्तविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-रत्नप्रज्ञा पृथिवी नैरयिका शर्कर प्रज्ञा पृथिवीनैरयिका वालुकप्रज्ञापृथिवी नैरयिका धूमप्रज्ञापृथिवीनैरयिका तमःप्रज्ञा पृथिवीनैरयिका तमस्तमः प्रभा पृथिवी नैरयिका ते समा सोत द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्ता अपर्याप्ताश्च । तएते नैरयिकाः । अथ कतिविधाः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? । पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका

यतिरिक्तजोणिया थलयरपंचिंदियतिरिक्तजोणिया खहयरपंचिंदियतिरिक्तजोणिया । से किंतं जलयरपंचिंदियतिरिक्तजोणिया २ ? पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा मच्छा कच्छहा गाहा नगरा सुंसुमारा । से किं तं मच्छा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा सहमच्छा खवल्लमच्छा जुंगमच्छा विज्झिडियमच्छा हलिद्दमच्छा मग्गरिमच्छा रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वड्ढा वड्ढगरा तिमा तिमिंगिला णक्का तंदुलमच्छा कणिक्कामच्छा सालिसच्छियामच्छा लंभणमच्छा पडागा पडागाइपडागा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं मच्छा । से किंतं कच्छना २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा अठिकच्छना य मंसकच्छना य । सेत्तं कच्छना । से किंतं गाहा २ ? पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा दिलीवेढगा मुद्दया पुलगा सीमागारा । सेत्तं गाहा ॥ से किंतं मगरा २ ? दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सोंडमगरा मच्छमगराय । सेत्तं मगरा । से किंतं सुंसुमारा २

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-चलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः । अथ कतिविधा जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ? । चलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा–मत्स्याः कच्छपाः ग्राहाः मकराः शिशुमाराः । अथ कतिविधाः मत्स्याः ? । मत्स्या अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सहमत्स्याः खवलमत्स्याः युगमत्स्याः विज्झडमत्स्याः हारिद्रमत्स्याः मकरमत्स्याः रोहितमत्स्याः हलीमत्स्याः सागरमत्स्याः गगरमत्स्याः वृहन्मत्स्याः वडगरमत्स्याः तिमिमत्स्याः तिमिङ्गिलमत्स्याः नक्रमत्स्याः तन्दुलमत्स्याः कनकमत्स्याः शालिमत्स्याः माक्षिकमत्स्याः लम्भनमत्स्याः पताकमत्स्याः पताकपताकमत्स्याः ये वाप्यन्ये तथाप्रकारास्ते मत्स्याः । अथ कतिविधाः कच्छपाः ? । कच्छपा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-अस्थिकच्छपा मांसकच्छपाश्च । तएते कच्छपाः । अथ कतिविधाः ग्रहाः ? । ग्राहाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः दिलुयाः वडगा मृदुलाः पुलकाः सीमाकाराः तएते ग्राहाः । अथ कतिविधा मकराः ? । मकरहा द्विविधाः प्रज्ञप्ताः शु

एगागारा प०, सेत्तं सुंसुमारा । जेयावन्ते तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य तत्थणं जे ते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुंसका, तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा प०, तंजहा इत्थी पुरिसा नपुंसगा । एतेसिणं एवमाइयाणं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अट्ठतेरसजाइकुलकोडिजोणीप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं । सेत्तं जलयरपंचिंदिय० । से किंतं थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पन्नत्ता, तंजहा चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किंतं चउप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? चउव्विहा पन्नत्ता, तंजहा एगखुरा दुखुरा गंडीपया सणप्फया । से किंतं एगखुरा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तं० अस्सा अस्सतरा घोडगा गद्दभा गोरक्खरा कंदलगा सिरिकंदलगा आवत्ता । जेयावन्ते तहप्पगारा । सेत्तं

---

रडामकराः मत्स्यमकराश्च । तएते मकराः । अथ कतिविधाः सिंशुमाराः ? । सिंशुमारा एकाकाराः प्रज्ञप्तास्तएते सिंशुमाराः । ये वाप्यन्ये तथाप्रकारास्ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । संमूर्च्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र यएते संमूर्च्छिमास्ते समासत सर्वे नपुंसकाः । तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः । स्त्रियः पुरुषाः नपुंसकः । एतादृशानामेवमादीनां जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानामर्धत्रयोदशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम् ॥ तएते चलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः । अथ कतिविधाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ? । स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः । परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः । अथ कतिविधाश्चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ? । चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा–एकखुरा द्विखुरा गण्डीपदाः सनखपदाश्च । अथ कतिविधाः एकखुराः ? । एकखुरा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-अश्वा अश्वतर.

एगखुरा । से किंतं दुखुरा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा–उट्टा गोणा गवया रोज्झा समया महिसा संवरा वराहा अया एलगा रुरु सरभ चमर कुरंग गोकण्णमाई सेत्तं दुखुरा । से किंतं गंडीपया २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा हत्थी हत्थीयणा मंकुणहत्थी खग्गा गंडा । जेयावण्णे तहप्पगारा । सेत्तं गंडीपया । से किंतं सणप्फया २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा सीहा वग्घा दीविया अच्छा तरच्छा परस्परा सिया ला सुणगा कोलवणगा (ग्रंथा ५००) कोकतिया ससगा चित्तंगा विल्लगा । जेयावण्णे तहप्पगारा । सेत्तं सणप्फया । तेसमासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा संमुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय । तत्थणं जे ते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा पन्नत्ता, तंजहा इत्थी पुरिसा नपुंसगा । एएसिणं एवमादियाणं थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं दसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुह



---

घोटका गर्दभा गौरखराः कन्दलकाः श्रीकन्दलकाः आवर्ताश्च । ये वाप्यन्ये तथाप्रकाराः । तएते एकखुराः । अथ कतिविधाः द्विखुराः ? । द्विखुरा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-उष्ट्राः गोणा गवया रोहाः शशका महिषाः शम्बरा वराहा अजा एलका रुरवः शरभाश्चमराः कुरङ्गाः गोकर्णादिका स्तएते उक्ता द्विखुराः । अथ कतिविधा गण्डीपदाः ? । गण्डीपदा अप्यनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-हस्ती गण्डकः मुकनहस्ती खड्गाः गण्डाः येचाप्यन्ये तथाप्रकाराः उक्ता गण्डीपदाः । अथ कतिविधाः सनखपदाः ? । सनखपदा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सिंहा व्याघ्रा द्वीपिनो ऋक्षा नरक्षवः परःशराः श्वयालाः विरालाः श्वानः कोलाः कोकतयः सशकाः चित्रकाः बिडालाः येचाप्यन्ये तथाप्रकारास्सर्वे सनखाः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-समूर्च्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र ये समूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः । तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाः । एतेषामेवमादीनां स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां दशजातिकुलकोटियोनिप्रमु

सयसहस्सा हवंतीति मक्खायं । सेत्तं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंतं परिसप्पथलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पन्नत्ता, तंजहा उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया भुय परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किंतं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? च उव्विहा पन्नत्ता, तंजहा अही अयगरा आसालिया महोरगा । से किंतं अही २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा दव्वीकरा य मउलिणो य । से किंतं दव्वीकरा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा आसीविसा दिट्ठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उस्सासविसा णिस्सासविसा कण्हसप्पा सेढसप्पा कउदरा दब्भ पुप्फा कोलाहा मेलिमिंदा सेसिंदा जेयावण्णे तहप्पगारा । सेत्तं दव्वीकरा । से किंतं मउलिणो २ ? अणेग विहा पन्नत्ता, तंजहा दिव्वागा गोणसा कसाहीया वडला चित्तणिणो मंडलिणो अही अहिसिलागा वाय

॥ मूल

---

खशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातमुक्तंचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः । अथ कतिविधाः परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ? । परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-उर.परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः भुजपरिसर्पस्थल चरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाश्च । अथ कतिविधाउरः परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ? । उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनि काश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-अहयः अजगराः आसालिगाः महोरगाः । अथ कतिविधा अहयः ? । अहयो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-दर्वीकराश्च मुकुलिनश्च । अथ कतिविधा दर्वीकराः ? । दर्वीकरा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-आशीविषाः दंष्ट्राविषाः उग्रविषाः भोगविषाः त्वग्विषाः लालाविषाः उच्छ्वासविषाः निःश्वासविषाः कृष्णसर्पाः श्वेतसर्पाः काकुदुम्बराः दर्भपुष्पाः कोलाहाः मेलिमदाः शेषेन्द्राः ये चान्ये तथाप्रकारा स्तएते दर्वीकराः । अथ कतिविधा मुकुलिनः ? । मुकुलिनो ऽनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-दिव्याः गोनसाः कसाहीकाः बहुलाः चित्रालिनः मण्ड

॥ अ० ।

णगा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं यडलिया । सेत्तं अही । से किंतं अयगरा ? एगागारा पन्नत्ता, सेत्तं अयगरा । से किंतं आसालिया ? कहिणं भंते ! आसालिया समुच्छंति ? गोयमा ! अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवेसु णिव्वाघाएणं पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघातं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु चक्कवट्टीखंधावारेसु वासुदेवखंधावारेसु बलदेवखंधावारेसु मंडलियखंधावारेसु महामंडलियखंधावारेसु गामनिवेसेसु नगरनिवेसेसु निगमनिवेसेसु खेडनिवेसेसु कब्बडनिवेसेसु मडंबनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आगरनिवेसेसु आसमनिवेसेसु संवाहनिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एएसिणं चेव विणासेसु । एत्थणं आसालिया समुच्छंति । जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागमित्तीए उगाहणाए, उक्कोसेणं बारसजोयणाइं । तहाणुरूवं च णं विक्कंभबाहल्लेणं भूमिंदालित्ताणं समुट्ठेति । असन्नी मिच्छादिट्ठी अन्नाणी अंतोमुहुत्तद्धाउया

---

लिनः अहयः अहिश्मशानाः वायुकुडागाः । येचाप्यन्ये तथाप्रकाराः । तएते मुकुलिनः । उक्ता अहयः । अथ कतिविधा अजगराः ? । अजगरा एकाकाराः प्रज्ञप्ताः तएते अजगराः । अथ कत्यासालिगाः ? । कथं भदन्त ! आसालिगा समूर्च्छन्ति । गौतम ! अन्तर्मनुष्यक्षेत्रस्यार्द्धतृतीयेषु द्वीपेषु निर्व्याघातं पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पुनश्च पञ्चसु महाविदेहेषु चक्रवर्त्तिस्कन्धावारेषु वासुदेवस्कन्धावारेषु बलदेवस्कन्धावारेषु माण्डलिकस्कन्धावारेषु महामाण्डलिकस्कन्धावारेषु ग्रामनिवेशेषु नगरनिवेशेषु निगमनिवेशेषु खेटनिवेशेषु कर्बटनिवेशेषु मडम्बनिवेशेषु द्रोणमुखनिवेशेषु पत्तननिवेशेषु आकरनिवेशेषु आश्रमनिवेशेषु संबाधनिवेशेषु राजधानीनिवेशेषु तदन्येषु विनाशेषु । तेषु आसालिकाः संमूर्च्छन्ति । जघन्यनावकुलस्य संख्येयभागमात्रया अवगाहनया । उत्कर्षतो द्वादशयोजनानि तथानुरूपं च विष्कम्भबाहल्याभ्यां (विस्तारस्थूलत्वाभ्यां) भूमिं दलयित्वा समुत्तिष्ठते । असंज्ञिमिथ्यादृष्टिः अज्ञानी अन्तर्मुहूर्तायुरेव कालं करोति । तएते आसालिकाः । अथ कतिविधा महोरगाः ? । महोरगा अनेक

चेव कालं करेइ । सेत्तं आसालिया । से किंतं महोरगा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता , तंजहा अत्थेगइया अंगुलं पि अंगुलपुहत्तिया वि वियच्छिंवि वियच्छिपुहत्तं पि रयणिं पि रयणीपुहत्तिया पि कुच्छिंपि कुच्छि पुहत्तिया वि धणुं पि धणुपुहत्तिया वि गाउयं पि गाउयपुहत्तिया वि जोयणं पि जोयणपुहत्तिया वि जोयणसयं पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्सं पि तेण थले जाता जले विचरंति थले विचरंति ते णत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं महोरगा । ते समासतो दुविहा प० , तं०—सम्मुच्छिमाय गब्भवक्कंतिया य । तत्थणं जेते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा , तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा प० , तं०—इत्थी पुरिसा नपुंसगा , एएसिणं एवमाइयाणं वज्जत्ता २ णं उरपरिसप्पाणं दसजाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंती ति मक्खायं । सेत्तं उरपरिसप्पा । से किंतं भुयपरिसप्पा २ अणेग

॥ मूल ॥

---

विधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-सन्त्येके केचन अङ्गुलमपि अङ्गुलपृथक्त्वमपि वितस्तिमपि वितस्तिपृथक्त्वमपि अरत्निमपि अरत्निपृथक्त्वमपि कुक्षिमपि कुक्षिपृथक्त्वं धनुरपि धनुःपृथक्त्वं गव्यूतिमपि गव्यूतिपृथक्त्वं योजनमपि योजनपृथक्त्वं योजनशतमपि योजनशतपृथक्त्वं योजनसहस्रमपि तेन स्थलेजाता जलेविचरन्ति तनेह बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति ये वाप्यन्ये तथाप्रकाराः । तएते महोरगाः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-संमूर्च्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च । तत्र ये संमूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः । तत्र ये गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः तद्यथा स्त्री पुरुषा नपुंसकलिङ्गाः । एतेषामेवमादीनां पर्याप्तापर्याप्तानामुरःपरिसर्पाणां दशजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातं । उक्ता उरःपरिसर्पाः । अथ कतिविधा भुजपरिसर्पाः १ भुजपरिसर्पा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-नकुला सेहाः सरटाः सल्लाः सरंठाः साराः खराः घरोइलाः विस्सम्भराः मूषाः मङ्गूसाः पइला इलाः चीरविरायिलाः जाहाः चतुष्पादिकाः ये वाप्यन्ये तथाप्रकाराः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । सं

॥ प० ॥

॥ मूल ॥

विहा पण्णत्ता, तंजहा—णउला सेहा सरठा सल्ला सरंठा सारा खारा घरोइला विस्संभरा मूसा मंगुसा पड लाइया त्थीरविरालिया जाहा चउप्पाइया जे यावन्ने तहप्पगारा। ते समासतो दुविहा प०, तं०—संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतियाय, तत्थणं जेते संमुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा, तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिय तेणं तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्ता २ णं थलयपरिसप्पाणं नवजाइकुल कोडिजोणिप्पमुहसयसहस्साइं हवंतीति मक्खायं। सेत्तं थलयपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्कजोणिया। सेत्तं परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणिया। से किंतं खहयरपंचिंदियतिरिक्कजोणिया २ चउविहा पण्णत्ता, तंजहा—चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी वियतपक्खी। से किंतं चम्मपक्खी २ अणेगविहा प०, तं० वग्गुली जलोया अडिल्ला भारंडपक्खी जीवंजीवा समुद्दवायसा कम्मत्तिया पक्खिवेराली जेयावन्ने तहप्पगारा ॥ सेत्तं चम्मपक्खी ॥ से किंतं लोमपक्खी २ अणेगविहा प०, तं० ढंका कंका कुरला वायसा चक्का

॥ अ० ॥

मूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र ये संमूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः। तत्र ये गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाः। एतेषामेवमादीनां पर्याप्तापर्याप्तानां भुजपरिसर्पाणां नवजातिकुलकोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातं। उक्ता भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक् योनिकाः। उक्ताः परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः। अथ कतिविधाः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ?। खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-चर्मपक्षी लोमपक्षी समुद्गकपक्षी विततपक्षी। अथ कतिविधाश्चर्मपक्षिणः, चर्मपक्षिणो नेकविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-बकुला जलौकाः अडिल्लाः भारण्डपक्षी जीवजीवाः समुद्रवायसाः कर्मकरियाः पक्षिविराली ये वाप्यन्ये तथाप्रकाराः। तएते चर्मपक्षिणः ॥ अथ कतिविधा लोमपक्षिणः ?। लोमपक्षिणोनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-ढङ्काः कङ्काः कुरला वायसाः चक्राङ्गाः हंसाः कल

गा हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडा सेडीबगा बलागा पारिप्पवा कुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ रा सतवच्छा गहरा पोंडरीया कागा कामियुगा वंजुलगा तित्तिरा वट्टमा लावगा कवोया कविंजला पारे वया चिडगा चासा कुक्कुडा सुगा वरहिणा मदणसला कोकिला सेरहा वरेल्लगमादी । सेत्तं लोमपक्खी। से किंतं समुग्गपक्खी २ एगागारा प०, तेणं नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति। सेत्तं समुग्गपक्खी। से किंतं विततपक्खी २ एगागारा प०, तेणं नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति। सेत्तं विततपक्खी। तेस मासनं दुविहा प०, तं० संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य। तत्थणं जेते समुच्छिमा तेसन्हे नपुंसगा तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा प०, तं० इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एएसिणं एवमाइयाणं खहयरपंचिंदि यतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं वारसजाईकुलकोणिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं, सत्तठ

---

हंसाः राजहंसाः अडाः सेडीबगाः बकुलाः पारिप्लवाः कुञ्चाः सारसाः मेसराः मसूराः मयूराः शतवत्साः गहराः पौण्डरीकाः कागाः कामियु गाः वञ्जुलकाः तित्तिराः वर्तकाः लावकाः कपोताः कपिञ्जलाः परिवकाः चटकाः चाशाः कुक्कुटाः शुकाः बर्हिणः मदनशलाः कोकिलाः सरहाः वरेल्लगाः एवमादयः तएते लोमपक्षिणः। अथ कतिविधाः समुद्गपक्षिणः?। समुद्गपक्षिण एकाकाराः प्रज्ञप्ताः। तेनु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति। त एते समुद्गपक्षिणः। अथ कतिविधा वियतपक्षिणः?। वियतपक्षिण एकाकाराः प्रज्ञप्ताः। तेनु बाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु भवन्ति। तएते विततपक्षि णः। ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः संमूर्छिमाश्च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च। तत्र यएते संमूर्छिमास्ते सर्वे नपुंसकाः। तत्र यएते गर्भव्युत्क्रान्तिकास्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-स्त्रियः पुरुषाः नपुंसकाश्च। एतेषामेवमादीनां खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकानांपर्याप्तापर्याप्तानां द्वादशजातिकुल कोटियोनिप्रमुखशतसहस्राणि भवन्तीति आख्यातम्॥ सप्तजाति कुलकोटयो भवन्ति नवार्धत्रयोदशानि चैव॥ दशदश च भवन्ति नवकास्तथा द्वा

जाइकुलकोडिजोणिनवअद्धतेरसाइंच। दसदसयहोंतिणवगा तहवारसचेवबोधव्वा ॥१॥ सेत्तं खहयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ॥ सेत्तं तिरिक्खजोणिया ॥ से किंतं मणुस्सा २ दुविहा प०, तं० संमूच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य । से किंतं संमुच्छिममणुस्सा, कहिणं भंते ! संमूच्छिम मणुस्सा संमुच्छंति ? गोयमा ! अंतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साण चेव उच्चारसु वा पासवणेसु वा खेलेसु वा सिंघाणएसु वा वंतेसुवा पित्तेसु वा पूएसुवा सुक्केसुवा सुक्कपोग्गलपरिसाडेसु वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपूरिससंजोएसु वा नगरनिद्धमणेसु वा सव्वेसु चेव असुइएसु ठाणेसु एत्थणं संमु च्छिममणुस्सा संमुच्छंति, अंगुलस्स असंखिज्जभागमित्तीए ओगाहणाए असन्नी मिच्छदिट्ठी अन्नाणी सव्वाहि पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव काल करंति । से किंतं गब्भवक्कंतियमणुस्सा २

---

दश चैव बोद्धव्याः ॥ १ ॥ तत्र ते खचरपंचेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः । तत्र ते पंचेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः ॥ तत्र ते तिर्यक्योनिकाः ॥ अथ कतिविधा मनुष्याः ? । मनुष्या अप्यनेकविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-संमूर्छिममनुष्याः गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः । अथ कतिविधाः संमूर्छिममनुष्याः । कस्मिन् भदन्त ! संमूर्छिममनुष्याः संमूर्छन्ति । गौतमान्तर्मनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशत्तम योजनशतसहस्रेषु सार्धद्वीपेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मभूमिषु तथैवाकर्मभूमिषु षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपेषु गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां चैव उच्चतरेषु वा समीपेषु वा श्लेष्मसु वा शिंघाणकेषु (नासामलेषु) वा वान्तेषु पित्तेषु वा पूयेषु वा शुक्रेषु वा शुष्कपुद्गलपरिशाटेषु वा विगतकलेवरेषु वा स्त्रीपुरुषसंयोगेषु वा नगरनिर्द्धमनेषु वा सर्वेषु चैवाशुचिषु स्थानेषु एतेषु संमूर्छिममनुष्याः संमूर्छन्ति । अङ्गुलस्य असंख्येयभागमात्रया अवगाहनया असन्मिथ्यादृष्टिरज्ञानी सर्वाभिः पर्याप्तमपर्याप्तका अन्त

तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा। से किंतं अंतरदीवया? अंतरदीवया अट्ठावीसतिविहा पण्णत्ता, तंजहा एगोरुया आहासिया वेसाणिया णंगोली १ हयकन्ना गयकन्ना गोकन्ना सक्कुलिकन्ना २ आयंसमुहा मेंढमुहा अयमुहा गोमुहा ३ अस्समुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा ४ आसकन्ना सीहकन्ना अकन्ना कण्णपाउरणा ५ उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जादंता ६ घणदंता लट्ठदंता गूढदंता सुद्धदंता ७। सेत्तं अंतरदीवगा। से किंतं अकम्मभूमिगा? २ तीसतिविहा पण्णत्ता, तं० पंचहिं हेमवएहिं पंचहिं हेरण्णवएहिं पंचहिं हरिवासेहिं पंचहिं रम्मगवासेहिं पंचहिं देवकुरुएहिं पंचहिं उत्तरकुरुएहिं सेत्तं अकम्मभूमिगा। से किंतं कम्मभूमगा? २ पण्णरसविहा पण्णत्ता, तंजहा पंचहिं भरहेहिं पंचहिं एरवएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं। ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तंजहा आरिया य मिलक्खू य। से

॥ मूत्र ॥

॥ प० ॥

---

मुहूर्तकाश्चैव कालं कुर्वन्ति। अथ कतिविधाः गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याः?। गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या त्रिविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-कर्मभूमिगा अकर्मभूमिगा अन्तरद्वीपगाश्च। अथ कतिविधा अन्तरद्वीपकाः?। अन्तरद्वीपकाः अष्टाविंशतिविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-एकोरुका आभासिका वैषाणिकाः नुन्दालिकाः हयकर्णा गजकर्णा गोकर्णा शष्कुलकर्णा आदर्शमुखा गोमुखा अश्वमुखा हस्तिमुखा सिंहमुखा व्याघ्रमुखा अश्वकर्णाः सिंहकर्णा अकर्णाः कर्णप्रावरणा उल्कामुखा मेघमुखा विद्युन्मुखा विद्युद्दन्ता घनदन्ता लोष्टदन्ता गूढदन्ताः शुद्धदन्ताः। तएते अन्तरद्वीपगाः। अथ कतिविधा अकर्मभूमिगाः?। अकर्मभूमिगास्त्रिंशद्विधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-पञ्चहिमवति पञ्चहिरण्यवति पञ्चहरिवर्षे पञ्चरम्यकवर्षे पञ्चदेवकुरुषु पञ्चउत्तरकुरुषु तएते अकर्मभूमिगाः। अथ कतिविधाः कर्मभूमिगाः? कर्मभूमिगाः पञ्चदशविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पञ्चभिर्भरतैः पञ्चैरावतैः पञ्चमहाविदेहैः ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-आर्यमनुष्या म्लेच्छमनुष्याः। अथ कतिविधा म्लेच्छमनुष्याः म्लेच्छमनुष्या अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-श

किंतं मिलक्खू ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा सगा जवण चिलाय सबर बब्बर काय मुरुंडोद्द भडग णिण्णग पक्कुल णीय कुलक्ख गोरहा सीहला पारस गोधअंध दमिल चिल्लल पुलिंद हारोस दोवबोक्काण गंध हारग वहलिय अज्जल रोम पास वउसा मलयाय बंधुयाय सूयलि कुंकुणगमेअ पण्हव मालव मग्गर आभासिय कण वीरण रहासीस खसखासिय नेटूर मढ डोविलग लउस खउस क्कोक्कवा अरबागा हूण रोमग भमरु विलाय वासीय एवमादी ॥ सेत्तंमिलक्खू से किंतं आयरिया ? आयरिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा इड्ढिपत्तारिया य अणड्ढिपत्तारिया य । से किंतं इड्ढिपत्तारिया ? २ छविहा पण्णत्ता, तंजहा— अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा ॥ सेतं इड्ढिपत्तारिया ॥ से किंतं अणिड्ढिपत्तारिया ? २ नवविहा पण्णत्ता, तंजहा खेत्तारिया जातिआरिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया भासारिया णाणारिया दंसणारिया चरित्तारिया । से किंतं खेत्तारिया ? २ अट्ठवीसतिविहा पण्णत्ता, तंजहा राय

---

काः यवनाः चिलाताः शबराः बर्बराः कायाः भुरुण्डा भडगाः तीर्णगाः पक्कणाः नीपाः कुलक्षाः गोरहाः सीहलाः पारसाः गोधअन्ध्राः द्रमिलाः चिल्लगाः पुलिन्द्राः हारोसाः दोववकाणाः गन्धहारकाः वहलियाः आर्यलाः रोमाः पासाः वउसाः मलवायाः बन्धुवायाः लउसाः खउसाः कैकयाः अरबागाः हूणाः रोमगाः भमरुकाः विलायाः वासीयाः एवमादयः । तएते म्लेच्छाः । अथ कतिविधाः आर्याः आर्यका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । ऋद्धिमन्तः अनृद्धिमन्तश्च । अथ कतिविधा ऋद्धिमन्तः ऋद्धिमन्तः षट्विधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-आर्हंता चक्रावर्त्ताः बलदेवाः वासुदेवाः चारणाः विद्याधराः तएते ऋद्धिमन्तः । अथ कतिविधा अनृद्धिमन्तः ? । अनृद्धिमन्तो नवविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-क्षेत्रार्याः जात्यार्याः कुलार्याः कर्मार्याः शिल्पार्याः भाषार्या नानार्या दर्शनार्याः चरित्रार्याः । अथ कतिविधाः क्षेत्रार्याः क्षेत्रार्याः सार्द्धपञ्चविंशतिविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-राजगृहनगरचम्पाअङ्गामहता

गिहमगहचंपा अंगामहतामलित्तिबंगा य । कंचणपुरंकलिंगा वाणारसि चेव कासीय ॥ १ ॥ साएयकोस लागय पुरंचकुरुसोरियंकुसट्टा य । कंपिल्लं पंचाला अहिछत्ताजंगलाचेव ॥ २ ॥ दारवतीयसुरठा मिहिलविदेहायवच्छकोसंवी । नंदिपुरंसकिल्ला नद्दिलपुरमेवमलया य ॥ ३ ॥ वइराहवच्छवरणा अच्छातहमत्तियाव इदससा । सोत्तियमइयाचेदी वीइभयसिंधुसोवीरा ॥ ४ ॥ मझुरायसूरसेणा पावाभंगीयमासपुरिवट्टा । सावत्थीयकुलाणा कोडीवरिसंचलाढाय ॥ ५ ॥ सेयंवियावियनगरी केयइअद्धचअारियंभणिय । एत्युप्प त्तिजिणाणं चक्कीणंरामकण्हाणं ॥ ६ ॥ सेत्तखेत्तारिया ॥ से किंतं जाइअायरिया ? २ अट्ठिहा पण्णत्ता, तंजहा—अंबठायकलिंदा विदेहावेदगाइय । हरियाचुंचुणाचेव कुएयाइअजाइउ ॥ ७ ॥ सेत्तं जाइअारि याय ॥ से किंतं कुलारिया ? २ अट्ठिहा पण्णत्ता, तंजहा—उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा नाता कोरव्वा ।

---

वलिप्तिवङ्गाश्च । काञ्चनपुरकलिङ्गा वाराणसीचैवकाशीच ॥ १ ॥ साकेतःकोसलकाःपुरंचकुरुः, सौरिककुशावर्तः । काम्पिल्यंपाञ्चालाः अहिछत्राजाङ्गलाश्चैव ॥ २ ॥ द्वारावतीचसुराष्ट्राः मिथिलाविदेहावत्सकौशाम्ब्यौ ॥ नन्दीपुरंशाण्डिल्ये नद्दिलपुरमेवमल्लयाश्च ॥ ३ ॥ वैराटमत्स्यवरणा अच्छा तथामृत्तिकादशार्णा ॥ शौक्तिकावतीचचेदी वीतभयासिन्धुसौवीराः ॥ ४ ॥ मथुराचसूरसेना पापाभङ्गीचमासपुरवट्टा ॥ श्रावस्तीचकुलाला कोटीव र्षाचलाटाच ॥ ५ ॥ श्वेताम्बिकाचनगरी केकयस्यार्द्धमार्यभणितम् ॥ यस्मादेतेषुजिनानां चक्राणांरामकृष्णानाम् ॥ ६ ॥ ते एते क्षेत्रार्याः ॥ अथ कति विधा जात्यार्याः । जात्यार्याः षट्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-आम्बष्ठाः कलिन्दाः वैदेहाः वेदङ्गाः हरिताः चुंचुणाः षष्ठता इभ्यजातयः । एतते जात्या र्याः । अथ कतिविधाः कुलार्याः । कुलार्याः षट्विधाः प्रज्ञप्ताः । उग्रा भोगा राजानः इक्ष्वाकवः ज्ञाताः कौरवाः । एतते कुलार्याः । अथ कतिवि धाः कर्मार्याः ? । कर्मार्या अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-दोषिकाः सौत्रिकाः कार्पासिकाः सूत्रवैयालियाः भण्डवैयालियाः कोलालिया नरवाहणि

सेत्तं कुलारिया ॥ से किंतं कम्मारिया ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—दोस्सिया सुत्तिया कप्पासिया सुत्तवेया जीया भंडवेयालिया कोलालिया नरवाहणिया जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं कम्मारिया ॥ से किंतं सिप्पारिया ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—तुन्नागा तंतुवाया पट्टागारा देयडा वरुडा कट्ठपाउयारा मुंजपाउयारा छत्तारा बंभारा पब्भारा पोत्थारा लेप्पारा चित्तारा संखारा दंतारा भंडारा जिब्भगारा सेल्ला रा कोट्टिगारा जेयावन्ने तहप्पगारा ॥ सेत्तं सिप्पारिया ॥ से किंतं भासारिया २ जेणं अद्धमागहाए भा साए भासंति, जत्थवियणं बंभीलिवी पवत्तइ बंभीएणं लिवीए अट्ठारसविहे लेक्खविहाणे पन्नत्ते, तंजहा बंभीजवणाणिया दासापुरिसा खरुट्ठी पुक्करसारिया भोगवइया पहराइया अंतरक्खिया अक्खरपुट्ठिया वेणइया निण्हइया अंकलिवी गणियलिवी गंधव्वलिवी आयासलिवी माहेसरी दोमिली पोलिंदी ॥१८॥ सेत्तं भासारिया ॥ से किंतं नाणारिया ? २ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—आभिणिबोहियनाणारिया सुयना



याः ये वाप्यन्ये तथाप्रकाराः । अथ कतिविधाः शिल्पार्याः । तुन्नागाः तन्तुवायाः पट्टकाराः देवडाः वरुटाः काष्टपादुकाकराः मुञ्जपादुकाकराः छत्रकाराः बंभाकराः प्रभाकराः पोत्थाराः लेप्याराः चित्रकराः शंखकराः दन्तकराः भण्डाराः जिह्मकारा (कटकराः) सेल्लाराः कोटिकराः । ये वाप्यन्ये तथाप्रकाराः । तएते शिल्पार्याः । अथ कतिविधाः भाषार्याः ? । भाषार्या ये अर्द्धमागधीभाषां भाषन्ते यत्रेयं ब्राह्मणीलिपिः प्रवर्तते तस्यां ब्राह्मण्यां लिप्यामष्टादशविधे लेख्यविधाने प्रवर्तते । तद्यथा-ब्राह्मी यवनानी दासपुरुषीया खरुष्टी पुष्करसारिका भोगवती अन्तरिक्षका अक्षरपृष्टिका वैणकीया निह्नविका अङ्कलिपिः गणितलिपिः गन्धर्वलिपिः आदर्शलिपिः माहेश्वरी दोमिलीलिपिः पौलिन्दीलिपिः तएते भाषार्याः । अथ कतिविधाः ज्ञानार्याः ? । ज्ञानार्याः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-आभिनिबोधज्ञानार्याः श्रुतज्ञानार्याः अवधिज्ञानार्याः मनःपर्यन्तज्ञानार्याः

णारिया नोहिनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया ॥ सेत्तं नाणारिया ॥ से किंतं दंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सरागदंसणारिया य वीयरागदंसणा० । से किंतं सरागदंसणारिया य ? २ दस विहा पन्नत्ता, तंजहा—निस्सग्गुवदेसरुई आणारुइसुत्तबीयरुइचेव । अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवधम्मरुई ॥१॥ भूयत्थेणाइधिगया जीवाजीवायपुन्नपावंच । सहस्संमुइयासवसं वरोयवेयइएसणिस्सग्गो २ ॥ जोजिणदिठेभावे चउव्विहेसद्दहाइसयमेव । एमेवणन्नहत्ति य णिसग्गरुइत्तिणाइव्वो ॥ ३ ॥ एएचेव उभावे, उवदिठेजोपरेणसद्दहइ । छउमत्थेणजिणेणव उवएसरुइत्तिणायव्वो ॥४॥ जोहेउमयाणंतो आणाएरोयएपवयणंतु । एमेवणन्नहत्ति य एसोआणारुईनामा ॥ ५ ॥ जोसुत्तमहिज्जंतो सुएणउगाहईउसम्मत्तं । अंगेणवा हिरेणव सोसुत्तरुइत्तिनायव्वो ॥ ६ ॥ एगपएणेगाइं पदाइंजोपसरईउसम्मत्तं । उदइव्वतिलबिंदू सोबीयरुइत्तिनायव्वो ॥७॥ सोहोइअभिगमरुई सुयनाणंजस्स । अत्थओदिठं एक्कारसअंगाइं पइन्नगादिठिवाओय ॥८॥

केवलज्ञानार्याश्च । तएते ज्ञानार्याः । अथ कतिविधा दर्शनार्याः दर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-सरागदर्शनार्या वीतरागदर्शनार्याश्च । अथ कतिविधाः सरागदर्शनार्याः ? सरागदर्शनार्या दशविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-निसर्गोपदेशरुचिराज्ञारुचिसूत्ररुचिबीजरुचयश्च ॥ अभिगमरुचि विचाररुचि क्रियासंक्षेपधर्मरुचयः ॥ १ ॥ भूतार्थेनाधिगता जीवाजीवाश्चपुण्यपापं च ॥ सहसंमत्याश्रवसंवरा एतेनिसर्गोविज्ञेयाः ॥ २ ॥ योजिनदृष्टान् भावान् चतुर्विधान् श्रद्दधातिस्वयमेव ॥ एवमेवंनचान्यथाएष निसर्गरुचिरितिज्ञातम् ॥ ३ ॥ एतानेवचभावान् उपदिष्टान्यःपरेणसंदिग्धे ॥ छद्मस्थेनजिनेन उपदिष्टमतिस्सज्ञातव्यः ॥ ४ ॥ योहेतुमजानन्नाज्ञया रोचयतेप्रवचनंतु ॥ एवमेवंनचान्यथाएष आज्ञारुचिर्नाम ॥ ५ ॥ योसूत्रमधीयानः श्रुतेनवावगाहतेसम्यक्त्वम् ॥ अङ्गेनचसवाङ्गेन-सूत्ररुचिस्तुविज्ञेयः ॥ ६ ॥ एकपदेऽनेकानिपदानि यःप्रसरतिसम्यक्त्वम् । उदकेइवतिलबिन्दुः सबीज

दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिंजस्सउवलद्धा । सव्वाहिंणयविहीहिं वित्थाररुइत्तिनायव्वो ॥ ९ ॥ दसणनाणचरित्ते तवविणएसव्वसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुईसो खलुकिरियारुईनामा ॥ १० ॥ अणभिग्गहियकुदिट्ठी संखेवरुइत्तिहोइनायव्वो । अविसारयपवयणे अणभिग्गहियंयसेसेसु ॥ ११ ॥ जोअत्थिकायकम्मं सुयधम्मखलु चरित्तधम्मंच सद्दहइजिणाभिहियं सोधम्मरुइत्तिनायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्थसंथवोवा सुदिठपरमत्थसेवणावा वि । वावन्नकुदंसणवज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥ १३ ॥ निसंकियनिक्कंखिय णिव्वितिगिच्छाअमूढदिठीय उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअठ ॥ १४ ॥ सेत्तं सरागदंसणारिया । से किंतं वीयरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता , तंजहा उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया खीणकसायवीतरागदंसणारियाय । से किंतं उवसंतकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारि



रुचिरितिज्ञातव्यः ॥ ७ ॥ समवत्यङ्गिनमरुचिः श्रुतज्ञानंजवतियस्य । अर्थतोदृष्टमेकादशाङ्गानि प्रकीर्णकादिदृष्टिवादश्च ॥ ८ ॥ द्रव्याणां, सर्वभावाः सर्वप्रमाणैर्यस्योपलब्धाः ॥ सर्वैर्नयविधिभिः विस्ताररुचिस्सविज्ञेयः ॥ ९ ॥ दर्शनज्ञानचरित्रे तपोविनयेसर्वसमितिगुप्तिषुच ॥ यःकुर्यात्भाव रुचिः सखलुक्रियारुचिर्नामा ॥ १० ॥ अनभिगृहीतकुदृष्टिः संक्षेपरुचिर्नवतिज्ञातव्यः ॥ अभिसारप्रवचने अनभिगृहीतश्चशेषेषु ॥ ११ ॥ योस्तिकायक र्म श्रुतधर्मंचचरित्रधर्मंच ॥ श्रद्दधातिजिनाभिहितं सधर्मरुचिर्ज्ञातव्यः ॥ १२ ॥ परमार्थसंस्तवोवा सुदृष्टपरमार्थसेवनोवापि ॥ व्यापन्नकुदर्शनवर्ज नाः चसम्यक्त्वदर्शनाश्च ॥ १३ ॥ तएते सरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधा वीतरागदर्शनार्याः ? वीतरागदर्शनार्यो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-उपशान्त कषायवीतरागदर्शनार्याः क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधा उपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः ? । उपशान्तकषायवीतरागदर्श नार्यो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्यो अप्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथवा चरमसम

या अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयउवसंतकसायवीयरागदंसणारिया य अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया य। से किंतं खीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य। से किंतं छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसाय वीतरागदंसणारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से किंतं सयंबुद्धछउमत्थखीणक सायवीयरागदंसणारिया सयंबुद्धछउमत्थखीण० दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणक सायवीतरागदंसणारियाय अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमय सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणा० अचरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया

---

योपशान्तकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमसमयोपशान्त कषायवीतरागदर्शनार्याः। अथ कतिविधा क्षीण कषायवीतरागदर्शनार्याः ?। क्षीणकषा यवीतरागदर्शनार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः केवलक्षीणकाषायवीतरागदर्शनार्याश्च। अथ कतिविधाः छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः ?। छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः। अथ कतिविधाः स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः प्रज्ञप्ताः ?। स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीण कषायवीतरागदर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-प्रथमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अप्रथमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषा यवीतरागदर्शनार्याश्च। अथवा चरमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्या अचरमस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च। त एते स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः। अथ कतिविधा बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः। बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीण

य । सेत्तं सयंबुद्धउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं बुद्धबोहियउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयबुद्धबोहियउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयबुद्धबोहियउमत्थखीणयसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं बुद्धबोहियउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं उमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । से किंतं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया २ २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अप

---

कषायवीतरागदर्शनार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा प्रथमसमयबुद्धबोधितोद्भवस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः अप्रथमसमयबुद्धबोधितोद्भवस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथवा चरम समयबुद्धबोधितोद्भवस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः अचरमसमयबुद्धबोधितोद्भवस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । तदेते उद्भवस्थक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधाः केवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः ? । केवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा—सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथ कतिविधाः सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा—प्रथमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः अप्रथमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । अथवा चरमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः अचरमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथ कतिविधा अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः ? । अयोगिकेवलक्षीणकषाय

ढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अचरिमसमयजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय। सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य । सेत्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं खीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं वीतरागदंसणारिया। सेत्तं दंसणारिया । से किंतं चरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारिया । से किंतं सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय बाय

॥ मूल ॥

---

वीतरागदर्शनार्यो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-प्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्यो अप्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । अथवा चरमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्यो अचरमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याश्च । तएते अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । तएते केवलक्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः । तएते क्षीणकषायवीतरागदर्शनार्याः तएते वीतरागदर्शनार्याः । अथ कतिविधाश्चरित्रार्याः ? चरित्रार्यो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्याः बादरसंपरायसरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधाः सूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्याः सूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्यो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-प्रथमसमयसूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्याः अप्रथमसमयसूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्याश्च । अथवा सूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्यो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-संक्लिश्यमानार्यो विशुद्ध्यमानार्याः । तएते

॥ अ० ॥

रसंपरायसरागचरित्तारियाय । से किंतं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय। अहवा सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संकिलिस्समाणाय विसुज्झमाणाय सेत्तं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया । से किंतं बायरसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा बायरसंपरायसरागचरित्तारिया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पडिवाई य अपडिवाई य सेत्तं बायरसंपरायचरित्तारिया सेत्तं सरागचरित्तारिया। से किंतं वीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंतं उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प० , तंजहा

॥ मूत्र ।

---

सूक्ष्मसंपरायसरागचरित्रार्यः । अथ कतिविधा बादरसंपरायसरागचरित्रार्यः बादरसंपरायसरागचरित्रार्यो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा प्रथमसमयबादरसंपरायसरागचरित्रार्यः अप्रथमसमयबादरसंपरायसरागचरित्रार्यश्च । अथवा चरमसमयबादरसंपरायसरागचरित्रार्यः अचरमसमयबादरसंपरायसरागचरित्रार्यश्च । अथवा बादरसंपरायसरागचरित्रार्यो द्विविधः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-प्रतिपातिका अप्रतिपातिकाश्च । तदेते बादरसंपरायसरागचरित्रार्यः तदेते सरागचरित्रार्यः । अथ कतिविधा वीतरागचरित्रार्यः ? । वीतरागचरित्रार्यो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-उपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्यः क्षीणकषायवीतरागचरित्रार्यः । अथ कतिविधा उपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्यः ? । उपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्यो

॥ अ० ॥

पढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्ताया य अहवा चरिम समयउवसतकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्तं उवसंतक सायवीतरागचरित्तारिया। से किंतं खीणकसायवीतरागचरित्तारिया २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा छउमत्थ खीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंतं छउमत्थखीणकसायवी तरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया बुद्धबो हियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्ताया य से किंतं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा पढमसमयसयंबुद्धखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखी णकसायवीतरागचरिया य, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिम समयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्ता

---

द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-प्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्या अप्रथमसमयोपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्याश्च। अथवा चरमसमयोप शान्तकषायवीतरागचरित्रार्या अचरमसमयोपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्याश्च। तयते उपशान्तकषायवीतरागचरित्रार्याः। अथ कतिविधाः क्षीण कषायवीतरागचरित्रार्याः ?। क्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः। तद्यथा-छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः केवलक्षीणकषायवीत रागचरित्रार्याश्च। अथ कतिविधाः छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः छद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-स्वयंबुद्धछद्म स्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचारित्रार्याः अथ कतिविताः स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-प्रथमसमयस्वयंबुद्धक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः अप्रथमसमयस्वयंबुद्धक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च। अथवा चरमसमय

रिया । से किंतं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया । से किंतं केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य । से किंतं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—

---

स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या अचरमसमयस्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतचरित्रार्याश्च । तएते स्वयंबुद्धछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधा बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः ? बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा प्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः अप्रथमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । अथवा चरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । अचरमसमयबुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । तएते बुद्धबोधितछद्मस्थक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधाः केवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः ? । केवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधाः । तद्यथा--सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च । अथ कतिविधाः सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः ? । सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--प्रथमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः अप्रथमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । अथवा चरमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्या अचरमसमयसयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याश्च ।

पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग चरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसजो गिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किंतं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयअजोगिकेवलि खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीत रागचरित्तारिया य सेत्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेत्तं केवलिखीणकसायवीतराग चरित्तारिया। सेत्तं खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्तं वीतरागचरित्तारिया। अहवा चरित्तारिया पंचवि हा पण्णत्ता, तंजहा—सामाइयचरित्तारिया छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुहुम संपरायचरित्तारिया अहक्खायचरित्तारिया य। से किंतं सामाइयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा

---

तयते सयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । अथ कतिविधा अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः अयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्यो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--प्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्यो अप्रथमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्यश्च । अथवा चरमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्यो अचरमसमयायोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्यश्च । तयते ऽयोगिकेवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । तयते केवलक्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । तयते क्षीणकषायवीतरागचरित्रार्याः । तयते वीतरागचरित्रार्याः । अथवा चरित्रार्याः पञ्चविधा प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सामयिकचरित्रार्याः छेदोपस्थानीयचरित्रार्याः परिहारविशुद्धिचरित्रार्याः सूक्ष्मसंपरायचरित्रार्याः अनाख्यातचरित्रार्याश्च ।

इत्तरियसामाइयचरित्तारिया आवकहियसामाइयचरित्तारिया य । सेत्तं सामाइयचरित्तारिया । से किंतं छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—साइयारा छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया निरइयारा छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया । सेत्तं छेदोवट्ठावणीयचरित्तारिया । से किंतं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—निव्विस्समाणपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया निव्विट्ठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्तारियाय । सेत्तं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया । से किंतं सुहुमसंपरायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संकिलिस्समाणसुहुमसंपरायचरित्तारिया विसुज्झमाणसुहुमसंपरायचरित्तारियाय सत्तं सुहुमसंपरायचरित्तारिया । से किंतं अहक्खायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थ अहक्खायचरित्तारिया केवलिअहक्खायचरित्तारियाय सेत्तं अहक्खायचरित्तारिया सेत्तं चरित्तारिया सेत्तं णोणहिपत्तारिया सेत्तं

॥ मूल ।

॥ ५० ॥

---

अथ कतिविधाः सामयिकचरित्रार्याः सामायिकचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-इत्वरसामयिकचरित्रार्याः यावत्कथितसामयिकचरित्रार्याश्च । तत एते सामयिकचारित्रार्याः । अथ कतिविधाश्छेदोपस्थानीयचरित्रार्याः ? छेदोपस्थानीयचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-सातिचाराश्छेदोपस्थानीयचरित्रार्या निरतिचाराश्छेदोपस्थानीयचरित्रार्याः । तत एते छेदोपस्थानीयचरित्रार्याः । अथ कतिविधाः परिहारविशुद्धिकचरित्रार्याः ? परिहारविशुद्धिकचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-निर्विशद्यमानपरिहारविशुद्धिकचरित्रार्या निर्विष्टकायकपरिहारविशुद्धिकचरित्रार्याश्च । तत एते परिहारविशुद्धिकचरित्रार्याः । अथ कतिविधाः सूक्ष्मसंपरायचरित्रार्याः सूक्ष्मसंपरायचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-उपशाम्यमानसूक्ष्मसंपरायचरित्रार्या विशुद्ध्यमानसूक्ष्मसंपरायचरित्रार्याश्च । तत एते सूक्ष्मसंपरायचरित्रार्याः । अथ कतिविधा यथाख्यातचरित्रार्याः ? यथाख्यातचरित्रार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-छद्मस्थयथाख्यातचरित्रार्याः केवलचरित्रार्याश्च । तत एते यथाख्यातचरित्रार्याः । तत एते चरित्रार्याः तत एते अनृद्धिप्राप्तार्याः तत एते आर्याः ।

आयरिया सेत्तं कम्मभूमिगा सेत्तं गब्भवक्कंतिया सेत्तं मणुस्सा से किंतं देवा २ चउव्विहा प०, तंजहा भवणवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया से किंतं भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पन्नत्ता, तंजहा असुरकुमारा नागकुमारा सुवन्नकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउकुमारा थणियकुमारा तेसमासओदुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं भवणवासी से किंतं वाणमंतरा२ अट्ठविहा प०, तंजहा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा जक्खा रक्खासा भूया पिसाया ते समासओदुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं वाणमंतरा। से किंतं जोइसिया २ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा चंदासूरागहनक्खत्तातारा तेसमासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। से किंत जोइसिया से किंतं वेमाणिया२ दुविहा पन्नत्ता, तजहा कप्पोवगाकप्पाईयाय से किंतं

---

तएते कर्मभूमिगाः तएते गर्भव्युत्क्रान्तिकाः । तएते मनुष्याः ॥ अथ कतिविधा देवाः ? देवाश्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-भवनवासिनः वानव्यन्तराः ज्योतिषिकाः वैमानिकाः । अथ कतिविधा भवनवासिनः ? भवनवासिनो दशविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-असुरकुमारा नागकुमारा सुवर्णकुमारा विद्युत्कुमारा अग्निकुमारा द्वीपकुमाराः उदधिकुमाराः दिशाकुमाराः वायुकुमाराः स्तनितकुमाराः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः पर्याप्तगाश्चापर्याप्तगाश्च । तएते भवनवासिनः । अथ कतिविधा वानव्यन्तराः ? वानव्यन्तरा अष्टविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--किंनराः किंपुरुषाः महोरगाः गन्धर्वाः यक्षाः रक्षाः भूताः पिशाचाः तएते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा--पर्याप्तगाश्च अपर्याप्तगाश्च । तएते वानव्यन्तराः । अथ कतिविधा ज्यौतिषिकाः ज्यौतिषिका पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा--चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रतारारः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-पर्याप्तगाश्चापर्याप्तगाश्च । तएते ज्यौतिषिकाः । अथ कतिविधा वैमानिकाः ? वैमानिका द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा--कल्पोपगाः कल्पातीताश्च । अथ कतिविधाः क

कप्पोवगा२ बारसविहा पण्णत्ता, तंजहा सोहम्मा ईसाणा सणंकुमारा माहिंदा बंभलोया लंतया महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया तेसमासतं दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं कप्पोवगा से किंतं कप्पाईया २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा गेविज्जगाय अणुत्तरोववाइयाय से किंतं गेविज्जगा २ नवविहा पण्णत्ता, तंजहा हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जगा हिट्ठिममज्झिमगेविज्जगा हिट्ठिमउवरिम गेविज्जगा मज्झिमहिट्ठिमगेविज्जगा मज्झिम२ गेविज्जगा मज्झिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिट्ठिमगेविज्ज गा उवरिममज्झिमगेविज्जगा उवरिम२ गेविज्जगा तेसमासतं दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्ज त्तगाय सेत्तं गेविज्जगा । से किंतं अणुत्तरोववाइया२ पचविहा पण्णत्ता, तंजहा विजया वेजयंता जयंता अपराजिया सव्वट्ठसिद्धा तेसमासतं दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं अणुत्तरोववा

---

ल्पोपगाः ? कल्पोपगा द्वादशविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा--सौधर्मा ईशानाः सनत्कुमारा माहेन्द्राः ब्रह्मलोकाः लातकाः महाशुक्राः सहस्राराः आनताः प्राणताः आरणाः अच्युताः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा--पर्याप्तगाश्चापर्याप्तगाश्च । तएते कल्पोपगाः । अथ कतिविधाः कल्पातीताः ? कल्पातीताः द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा--ग्रैवेयकाः अनुत्तरवैमानिका श्च । अथ कतिविधा ग्रैवेयकाः ग्रैवेयका नवविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-अधाधोग्रैवेयकाः, अधोमध्यमग्रैवेयकाः, अधउपरितनग्रैवेयकाः, मध्यमाधो ग्रैवेयकाः, मध्यममध्यमग्रैवेयकाः मध्यमोपरितनग्रैवेयकाः, उपरितनाधोग्रैवेयकाः उपरितनमध्यमग्रैवेयकाः उपरितनोपरितनग्रैवेयकाः ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः पर्याप्ताश्चापर्याप्ता श्च । तएते ग्रैवेयकाः । अथ कतिविधा अनुत्तरवैमानिकाः ? अनुत्तरवैमानिकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः । तद्यथा-विजयाः वैजयन्ताः जयन्ताः अपराजिताः सर्वार्थसिद्धाः । ते समासतो द्विविधाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा--पर्याप्ताश्चापर्याप्ता श्च । तएते अनुत्तरवैमानिकाः । तएते कल्पोपपन्नाः । तएते वैमानिकाः । तएते देवाः ।

इया सेत्तं कप्पाईया सेत्तं वेमाणिया सेत्तं देवा सेत्तं पंचिंदिया सेत्तं संसारसमावन्नजीवपन्नवणा सेत्तं जीव पन्नवणा सेत्तं पन्नवणा ॥ पन्नवणाए पढमं पयं समत्तं ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! बादरपुढवि काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सठाणेणं अट्ठसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्प भाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए अहेसत्तमाए ईसिप्पभाराए अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु वि माणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजएसु वक्खरेसु वासेसु वासहरपव्वएसु वा वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थणं बादरपुढवीकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जः सठाणेणं



तएते पञ्चेन्द्रियाः । तएते संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाः । तएते जीवप्रज्ञापनाः तएते प्रज्ञापनाः ॥ इति श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्र गणि शिष्य नानकचन्द्र विरचिते जीवप्रज्ञापना ख्यप्रथमपदानुवादः ॥ छ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

कस्मिन् भदन्त ! बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ? स्वस्थानेनाष्टासु पृथिवीषु तद्यथा--रत्नप्रभायां शर्करप्रभा यां वालुकप्रभायां पङ्कप्रभायां धूमप्रभायां तमःप्रभायां तमस्तमः प्रभायामहसप्तमायामीषत्प्राग्भारायामधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु नरकेषु नरकावलिकासु निरयप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यक्लोके टङ्केषु कूटेषु शैलेषु प्राग्भारेषु विजयेषु वक्षारेषु वर्षेषु वासहरपर्वतेषु वा वेलासु वेदिकासु द्वारेषु तोरणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु एतेषु बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थाना नि पर्याप्तानि । तथैव बादरपृथिवीकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि पर्याप्तानि । उपपातेनापि सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके संस्थानेन लोकस्था

लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, तत्थेव बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते ! सुहुम पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणयठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जेपज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ! कहिणं भंते ! बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सठाणेणं सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घणोदधिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु सरेसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु विलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु जलनूमिआसु एत्थणं बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं

---

संख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि , गौतम सूक्ष्मपृथिवीकायिकाये पर्याप्तगा ये अपर्याप्तगास्ते सर्वे एकविधाः अविशेषा अनाज्ञाताः सर्वलोकपर्यापन्नगाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् कस्मिन् भदन्त बादराप्कायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु घनोदधिषु सप्तसु घनोदधिवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु सरस्सु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःसरःपंक्तिषु विलपंक्तिषु निर्झरेषु वित्वरेषु पल्वलेषु वप्रेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु बादराप्कायिकानां

ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते ! बायरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेणं लोयस्स असंखिज्जइभागे। कहिणं सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमआउकाइया जेय पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावन्नगा प०, समणाउसो ! कहिणं भंते ! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सठाणेणं अंतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाए पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघायं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु एत्थणं बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते ! बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा प०,

---

पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे। कस्मिन् भदन्त बादराप्कायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभाग। कस्मिन् भ० सूक्ष्माप्कायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि गौतम सूक्ष्माप्कायिका ये च पर्याप्तगा ये अपर्याप्तगास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनाज्ञाताः सर्वलोके पर्यापन्नगा प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् कस्मिन् भदन्त। बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तगानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम। स्वस्थानेन अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे अर्द्धतृतीयेषु द्वीपसमुद्रेषु निर्व्याघाते पञ्चदशसु कर्मभूमिषु व्याघात प्रतीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु एतेषु बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे

उववाएणं लोयस्स दोसु उद्धकवाडेसु तिरियलोयतट्टेसमुग्घाएणं सट्ठलोए सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइ भागे। कहिणं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमतेउ काइयाणं जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ! कहिणं भंते ! बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सठाणेणं सत्तसु घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणुवाएसु सत्तसु तणुवायवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवनपत्थडेसु भवणविट्टेसु भवणनिक्कुडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु निरयविट्टेसु निरयनि क्कुडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु विमाणविट्टेसु विमाणनिक्कुडेसु तिरि यलोएसु पाईणदाहिणउदीणसव्वेसु चेव लोगागासविट्टेसु लोगनिक्कुडेसुय एत्थणं बादरवाउकाइयाणं प ज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता , उववाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जभागेसु



समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! यत्रैव बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि तत्रैव बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके संस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त । सूक्ष्माप्कायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौ० । सूक्ष्माप्कायिका ये च पर्याप्ता ये चापर्याप्तास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनाज्ञाताः सर्वलोके पर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् कस्मिन् भदन्त । बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, गौतम ! स्वस्थानेन अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे अर्द्धतृतीयेषु द्वीपसमुद्रेषु निर्व्याघाते प ञ्चदशसु कर्मभूमिषु व्याघातं प्रतीत्य पञ्चसु महाविदेहेषु बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभा

सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहिणं भंते ! अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं तत्थेव बादरवाउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए । सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु । कहिणं भंते ! सुहुम वाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमवाउकाइयाणं जे पज्जत्तापज्जत्ताणं ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो ! कहिणं भंते बादरवण स्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प० ? गोयमा ! सठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहो लोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरिय लोए अगडेसु तलागेसु नदीसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरसरपंतियासु सरपं तियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलास एसु जलठाणेसु एत्थणं बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं सव्वलोए, समुग्घा

---

गे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! यत्रैव बादरतेजःकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि तत्रैव बादरतेजःकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्य द्वयोरूर्ध्वकपाटयोः तिर्यक्लोकतदेकसमुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! सूक्ष्मतेजः कायिकानां पर्याप्तकानाम पर्याप्तकानां च स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम सूक्ष्मतेजःकायिकानां ये पर्याप्तका अपर्याप्तकास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनाज्ञातास्सर्वलोके पर्याप्तगाः प्रज्ञप्ताः श्रमण आयुष्मन् । कस्मिन् भ० । बादरवायुकायिकानां पर्याप्तगानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौ० सप्तसु घनवातेषु सप्तसु घन

एणं सव्वलोए सठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेणं लोयस्स असंखेज्ज



वातवलयेषु सप्तसु घनवातेषु सप्तसु घनवातवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनप्रस्तटेषु भवनछिद्रेषु भवननिष्कुटेषु निरयेषु निरयावलिकासु निरयप्रस्तटेषु निरयछिद्रेषु निरयनिष्कुटेषु ऊर्ध्वलोककल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तटेषु विमानछिद्रेषु विमाननिष्कुटेषु तिर्यक्लोकेषु प्राचीनदक्षिणोदीचीनेषु, सर्वेषु चैव लोकाकाशछिद्रेषु लोकनिष्कुटेषु च एतादृशबादरवायुकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयेषुभागेषु स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयेषु भागेषु । कस्मिन्नु भदन्त ! अपर्याप्तबादरवायुकायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ! यत्रैव बादरवायुकायिकानां पर्याप्तगानां तत्रैव बादरवायुकायिकानामपर्याप्तगानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके समुद्घातेन सर्वलोके । स्वस्थानेन लोकस्या संख्येयेषु भागेषु । कस्मिन्नु भदन्त ! सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्तापर्याप्ताः येऽपते सर्वे एकविधा अविशेषा अनाज्ञाताः सर्वलोकपर्यापन्नाः प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । कस्मिन् भदन्त बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तगानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु घनोदधिषु सप्तसुघनोदधिवलयेषु अधोलोके पातालेषु भवनेषु भवनप्रस्तरेषु ऊर्ध्वलोके कल्पेषु विमानेषु विमानावलिकासु विमानप्रस्तरेषु तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरः पङ्क्तिकेषु सरः पङ्क्तिकेषु विलपङ्क्तिकेषु उत्प्ररेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके, समुद्घातेन सर्वलोके संस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन्नु भदन्त ! बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ।

इन्नागे । कहिणं नंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० ! सुहुमवण स्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता, समाणाउसो ! कहिणं नंते ! बेइंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसन्नागे, अहोलोए तदेकदेसन्नागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्करणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु स मुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थणं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइन्नागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइन्नागे सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइन्नागे । कहिणं नंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसन्नाए अहोलोए तदेक

---

गौतम ! बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तकानां स्थानानि तत्रैव बादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन सर्वलोके स मुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त ! पर्याप्तकानामपर्याप्तकानां च स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! सूक्ष्मवनस्पति कायिका ये पर्याप्तगा ये अपर्याप्तगास्ते सर्वे एकविधा अविशेषा अनाज्ञाताः सर्वलोकपर्यापन्नगाः प्रज्ञप्ताः श्रमण युष्मन् । कस्मिन् भदन्त द्वीन्द्रि याणां पर्याप्तापर्याप्तकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके, अवटेषु तडागेषु नदीषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु उत्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्पिणेषु द्वीपेषु स मुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ऊर्ध्वलोके

देसन्नागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्करणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु विलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसन्नाए, अहोलोए तदेकदेसन्नागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु णिज्झरेसु उज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०



तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरस्सरःपङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उत्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्ललेषु वप्पिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त । चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम । ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरस्सरःपङ्क्तिकासु निर्झरेषु उत्झरेषु चिल्ललेषु पल्ललेषु वप्पिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां चतुरिन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्या

? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु विलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता , उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे , समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभाग । कहिणं भंते ! नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहिणं भंते ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सठाणेणं सत्तसु पुढवीसु तंजहा–रयणप्पभाए सक्करप्पभाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए एत्थणं नेरइयाणं चउरासिं निरयावास सयहस्साइ भवंतीति अक्खायं, तेणं णरगा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयार



संख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन्नु भदन्त । पञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोके अवटेषु तडागेषु नदीषु-ह्रदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु बिलपङ्क्तिकासु उत्झरेषु निर्झरेषु चिल्वलेषु पल्वलेषु वप्रिणेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषां पञ्चेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन्नु भदन्त । नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । कस्मिन्नु भदन्त । नैरयिकाः परिवसन्ति ? । गौतम स्वस्थानेन सप्तसु पृथिवीषु । तद्यथा-रत्नप्रभायां शर्करप्रभायां वालुकप्रभायां पङ्कप्रभायां धूमप्रभायां तमःप्रभायां तमस्तमःप्रभायाम् एतेषां नैरयिकाणां चतुरशीतिनरकावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः

॥ मूल ॥

तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्खल्लित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परम दुब्भिगंधा काऊयगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थणं नेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थणं बहवे नेरइया परिवसंति काला कालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेणं पन्नत्ता, तेणं तत्थ णिच्चं भीया णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुभसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं भंते! रयणप्पभा पुढवीनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प० ? कहिणं भंते! रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता

॥ अ० ॥

क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदवसापूयरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुभा विस्रा (आमगन्धिकाः) परमदुरभिगन्धाः कपोताग्निवर्णाभाः (लोहेध्मायमाने यादृशोग्नेः कृष्णोवर्णस्तद्वदाभा येषामेवं भूताः) कर्कशस्पर्शाः दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभाश्च नरके वेदनाः। एतेषु नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्य असंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे, एतेषु बहवो नैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालाभासाः गम्भीरलोमहर्षा उत्त्रासनगाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः। तेन तत्र नित्यंभीता नित्यंत्रस्ता नित्यंत्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यंपरमाशुभसंबद्धनरकभयं प्रत्यनुभूयमाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। कस्मिन् भदन्त रत्नप्रभापृथिवी नैरयिकाः परिवसन्ति ?। गौतम। एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरशतयोजनशतसहस्रबाहुल्यतोपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्याधश्चैकं योज

हेठाचेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं तीसं निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं, तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूइयपडलरुहिरमंसचिक्खल्लिताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काउअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ एत्थणं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। तत्थणं बहवे रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति। काला कालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता, समणाउसो ! तेणं णिच्चं भीया निच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्ध



नवसहस्रं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनशतसहस्रे एतेषु रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां त्रिंशन्निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तेन नरका अन्तर्वृत्ता बाह्ये चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुभा विस्राः परमदुरभिगन्धाः कपोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका नरकेषु वेदनाश्च। एतेषां रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। तत्रेमे बहवो रत्नप्रभाःपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति। कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमण आयुष्मन्। तेन नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्धनरकभयं प्रत्यनुभूयमाना विहरन्ति। कस्मिन्नु खलु भदन्त शर्करप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। कस्मिन्नु खलु भदन्त शर्करप्रभा

नरगनयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहिणं भंते ! सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते , सक्करप्पभापुढविणेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सक्करप्पभापुढविए बत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए , उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थणं सक्करप्पभापुढवीणेरइयाणं पणवीसं निरयावाससहस्सा हवंतीतिमक्खायम् तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्ख त्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणि वण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थणं सक्करप्पभापुढविणेरइ याणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखे ज्जइभागे सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थणं बहवे सक्करप्पभापुढविनेरइया परिवसंति । काला

---

पृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति ? गौतम शर्कराप्रभापृथिव्यां द्वात्रिंशदुत्तरयोजनशतसहस्रबलायामुपरितनं योजनसहस्रमुद्ग्राह्याध एकं योजन सहस्रं वर्जयित्वा मध्ये त्रिंशदुत्तरयोजनशतसहस्रे एतेषु शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पञ्चविंशति निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्र ज्योतिषप्रभा मेदवसापूयपटलरुधिर मांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुना विस्राः परमदुरभिगन्धाः कापोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदना श्च । एतेषु शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तस्मिन् बहवः शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । कालाः कालभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः

कालाऽऽसा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता। समणाउसो! तेणं णिच्चं भीता णिच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा णिच्चं परममसुभसंबद्धं णरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं भंते! वालुयप्पभापुढवीणेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! वालुयप्पभापुढवीए अट्ठावीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थणं वालुयप्पभापुढविणेरइयाणं पण्णरसनिरयावासयसहस्सा भवतीति मक्खायं। तेणं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा असुभा णरएसु वेयणा एत्थणं वालुयप्पभापुढवीणेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। समुग्घाएणं लोयस्स अ

---

परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्! तेन नित्यंभीता नित्यंत्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्धनरकभयं पर्यनुभूयमाना विहरन्ति। अस्मिन् भदन्त! वालुकप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। गौतम वालुकप्रभपृथिव्यामष्टाविंशत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि एकं योजनसहस्रमुद्गाह्याधश्चैकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये षड्विंशत्युत्तरयोजनशतसहस्रे एतेषु वालुकप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पञ्चदशनिरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तत नरका अन्तर्वृत्ता बाह्ये चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्कप्रकाशा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुभा विस्राः परमदुरभिगन्धाः कापोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा दुरध्यासाः अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः। एतेषु वालुकप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्ता

॥ मूल ॥

संखेज्जइभागे । सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थणं बहवे वालुयप्पभापुढवीणेरइया परिवसंति काला कालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं प० समणाउसो । तेणं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं णरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं भंते ! पंकप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंकप्पभापुढवीए वीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठारसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं पंकप्पभापुढविनेरइयाणं दस निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं । तेणं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरुप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगह चंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्लाणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा

॥ अ० ॥

नां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे, समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तस्मिन् बहवः वालुकप्रभपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । कालाः कालाभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । तेन नित्यंभीता नित्यंत्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्ध नरकभयं प्रत्यनुभवमाना विहरन्ति । कस्मिन् भदन्त । पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? । गौतम । पङ्कप्रभपृथिव्यां विंशत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्याध एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये अष्टादशोत्तरे योजनशतसहस्रे एतेषु पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकाणां दश निरयावास शतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रकाशा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुना विस्राः परमदुरभिगन्धाः कापोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा दुरत्यया अशुभा नरका अशु

काऊयगणिवसन्ना कक्कऊफासा दुरहियासा असुन्ना नरगा असुन्ना नरगेसुवेयणान्नु एत्थणं पंकप्पन्नापुढवि णेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पसत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे पंकप्पन्नापुढविणेरइया परिवसंति, काला कालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो। तेणं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुवभमाणा विहरंति। कहि णं भंते ! धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! धूमप्पभाएपुढवीए अट्ठा रसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एग जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे सोलसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं धूमप्पभापुढवीणेरइयाणं तिण्णि निरयावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्कायं तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरुप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्ख



भा नरकेषु वेदना एतेषु पङ्कप्रभा पृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्या संख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्यभागे। तत्रेमे बहवः पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति। काला: कालाभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उ त्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। तेन नित्यं भीता नित्यत्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्धनरकभ य पर्यनुभूयमानाः विहरन्ति। कास्मन्नु भदन्त। धूमप्रभपृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ?। गौतम। धूमप्रभायां पृथि व्यामष्टादशोत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि एकं योजनसहस्रमुद्गृह्य एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये षोडशोत्तरे योजनशतसहस्रे ए तेषु धूमप्रभपृथिवीनैरयिकाणां त्रीणि निरयावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तत नरकास्ववृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थि

तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्कलित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणि वण्णाभा कक्कडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थणं घूमप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे , समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे , सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे घूमप्पभापुढविणेरइया परिवसंति काला कालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो। तेणं णिच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहिणं भंते ! तमा पुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तमापुढवीए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे चोद्दसुत्तरे जोयणसहस्से

---

ता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदवसापूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुभा विस्राः परमदुरभिगन्धाः कापोताग्निवर्णाभाः कर्कशस्पर्शा अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाश्च । एतेषु धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे संस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे। तत्रबहवो धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति । कालाः कालावभासाः गंभीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन् । तेन नित्यभीता नित्यत्रस्ता नित्यं त्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यपरमाशुभसबद्धनरकभयं प्रत्यनुभवन्तो विहरन्ति । कस्मिन् भदन्त ! तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । गौतम ! तमःपृथिव्यां षोडशोत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपरि एकं योजनसहस्रमवगाह्य एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये चतुर्दशोत्तरे योजनसहस्रे एतेषु तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाणामेकस्मिन्प्रक्षेपे नरकावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन नरका अन्त

एत्थणं तमप्पभापुढविणेरइयाणं एगं पंचूणे नरगावाससयसहस्से हवंतीति मक्खायं, तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूय पडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा कक्कडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणा एत्थणं तमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे तमप्पभापुढीणेरइया परिवसंति काला कालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पन्नत्ता समणाउसो। तेणं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं भंते! तमतमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०, ? गोयमा! तमतमापुढवीए अट्ठुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि अट्ठतेवण्णजोयणसहस्साइं उग्गाहित्ता

---

वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदवसा पूयपटलरुधिरमांसकर्दमलिप्ता नुलेपनतला अशुभा विस्राः परमदुरभिगन्धाः कर्कशस्पर्शा दुरत्यया अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाः एतेषु तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्रबहवस्तमःप्रभापृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालावभासाः गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णा वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्। तेन नित्यंभीता नित्यंत्रस्ता नित्यंत्रसिता नित्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्धं नरकभयं पर्यनुभूयमाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त। तमस्तमः पृथिवी नैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि?। गौतम। तमस्तमः पृथिव्यामष्टोत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्यायामुपरि अष्टत्रिपञ्चाशद्योजन

हेठावि अट्ठतेवण्णजोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तिण्णिजोयणसहस्सेसु एत्थणं तमतमापुढवीणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पण्णत्ता, तंजहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे, तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयपूयवसारुहिरमंसपडलचिक्कलित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा कक्कडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदनाओ एत्थणं तमतमापुढविनेरइयाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभाए समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभाए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभाए तत्थणं बहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो! तेणं निच्चं भीया णिच्चं तत्था निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नगरभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति ॥ असीतंवत्तीसं अट्ठावीसंचहोइवीसंच । अट्ठारससो

सहस्राण्युद्गृह्यात्वाधोपि अर्द्धत्रिपञ्चाशद्योजनसहस्राणि वर्जयित्वा मध्ये त्रियोजनसहस्रेषु एतेषु तमस्तमः पृथिवीनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां पञ्चदशपञ्चानुत्तरा महामहालया महानिरयाः प्रज्ञप्ताः तद्यथा-काले महाकाले रौरवे महारौरवे अप्रतिष्ठाने' तेन नरका अन्तर्वृत्ता बहिश्चतुरस्रा अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता नित्यान्धकारतमसा व्यपगतग्रहचन्द्रसूर्यनक्षत्रज्योतिषप्रभा मेदपूयवसारुधिरमांसपटलकर्दमलिप्तानुलेपनतला अशुभा विस्राः परमदुरभिगन्धाः कर्कशस्पर्शा दुरत्यया अशुभा नरका अशुभा नरकेषु वेदनाश्च, एतेषु तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाणां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे संस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्रेमे बहवस्तमस्तमःपृथिवीनैरयिकाः परिवसन्ति कालाः कालावभासा गम्भीरलोमहर्षा भीमा उत्त्रासनकाः परमकृष्णाः वर्णेन प्रज्ञप्ताः श्रमणायुष्मन्! तेन नित्यं भीता नित्यं त्रस्ता नि

लसगं अट्ठुत्तरमेवहेट्ठिमया ॥ १ ॥ अट्ठुत्तरंचवत्तीसं बत्तीसंचेवसयसहस्संतु अट्ठारससोलसगं चोद्दससहियं तुबट्ठीए । अट्ठतेवन्नसहस्सा उवरिमहोवज्जिऊतोन्नणियं । मज्झेउतिसुसहस्से सुहोंतिनरगातमतमाए । तीसा यपन्नवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं । तिन्नियपंचूणेगं पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० ? गो० ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए अहोलोए तदेकदेसभाए तिरियलोएसु अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० । उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे । समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे ।

---

त्यमुद्विग्ना नित्यं परमाशुभसंबद्धं नरकभयं पर्यनुभूयमाना विहरन्ति । अशीतिर्द्वात्रिंशत् अष्टाविंशतिर्विंशतीच । अष्टादश षोडशकमष्टोत्तरमेवा बोधिमया ॥ १ ॥ अष्टोत्तरं द्वात्रिंशत् षड्विंशतिश्चशतसहस्रंतु ॥ अष्टादश षोडशकं चतुर्दशसहितं तु षट्त्रिंशत् । अड्ढैत्रिपञ्चाशत्सहस्र मुपरि महोवज्जि उतो भणितम् । मध्येतुत्रिषुसहस्रेषुनवन्तिनरकास्तमस्तमसः ॥ त्रिंशत्चपञ्चविंशत् पञ्चदशैवशतसहस्राणि । त्रीणिचपञ्चोनैकं पञ्चैवानुत्तरानरकाः ॥ ४ ॥ कस्मिन् भदन्त ! पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! ऊर्ध्वलोके तदेकदेशभागे अधोलोके तदेकदेशभागे तिर्यक्लोकेषु अवटेषु तडागेषु नदीषु ह्रदेषु वापीषु पुष्करणीषु दीर्घिकासु गुञ्जालिकासु सरस्सु सरःपङ्क्तिकासु सरःसरःपङ्क्तिकासु बिलपंक्तिकासु उत्झरेषु निर्झरेषु चिल्ललेषु पल्ललेषु द्वीपेषु समुद्रेषु सर्वेषु चैव जलाशयेषु जलस्थानेषु एतेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे संस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे ।

॥ मूल ॥

कहिणं भंते ! मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० । गोयमा ! अंतो मणुस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाईजेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवेसु एत्थणं मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० ? कहिणं भवणवासीदेवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा चेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठत्तरिजोयणसयसहस्सं एत्थणं भवणवासीदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्तभवणकोडीओ बावत्तरिं च भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो समचउरंसा अहे पुक्करकण्णियासंठाणसंठिया उक्किण्णंतरविउलगं

॥ अ० ॥

कस्मिन् भदन्त ! मनुष्याणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । अन्तर्मनुष्यक्षेत्रे पञ्चचत्वारिंशत्तमेषु योजनशतसहस्रेषु साईद्वयेषु द्वीपसमुद्रेषु पञ्चदशसु कर्मभूमिषु त्रिंशदकर्मभूमिषु षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपेषु एतेषु मनुष्याणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । कस्मिन् भदन्त । भवनवासिनां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि कस्मिन् भदन्त ! भवनवासिनो देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! एतस्यां रत्नप्रभापृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपर्येकं योजनसहस्रमुद्गृह्यात्यधस्तादेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्तति योजनशतसहस्रमेतेषु भवनवासिदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां सप्तभवनकोट्यां द्विसप्ततिभवनवासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन भवनानि बाह्यतो वृत्तानि अन्तः समचतुरस्राणि अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातपरिखानि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागानि यन्त्रशतघ्नीमुशुण्ढीपरिवारितानि आयोध्यानि सदामानि तानि

नीरखातफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसंठिपरिवारिया अउज्झा सयाज
या सया अजेया सदा गुत्ता अदयालकोट्ठरइया अदयालकवयणमाला खेमा सिवा किंकरा मरडंडोवरक्कि
या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदनदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो
रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावापंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवया
रकलिया (गं १४००) कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुताभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधव
ट्टीभूया अच्छरगणसंघसंकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपन्नादित्ता सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा
णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरू
वा पडिरूवा एत्थणं भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइ



---

सदाजेयानि सदा गुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि अष्टचत्वारिंशद्वलयमालानि क्षेमाणि शिवानि किङ्करामरदण्डकृतोपरक्षितानि लाउ
ल्लोइय ( सेटिकागोमयादिभिरुल्लेपनसंमृष्टीकरण ) महितानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि उपचितचन्दनकलशानि चन्दनघ
टसुकततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रालम्बित ( प्रलम्बित ) माल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारक
लितानि कालागुरुप्रवरकुन्दरुष्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धूताभिरामाणि सुगन्धवरगन्धगन्धितानि गन्धवर्तिभूतानि अप्सरोगणसंघसंकीर्णानि
दिव्यत्रुटितशब्दसम्प्रणादितानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निष्कंपानि निष्कण्टकच्छायानि सप्रभाणि समरीची
नि सोद्योतानि प्रसादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि एतेषु भवनवासिनां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उप
वातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोकस्यासंख्येयभागे संस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे तत्रेमे बहवो भवनवासिदेवाः परिवसन्ति । तद्यथा-

नागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे भवणवासीदेवा परिवसंति तं-असुरानागसुवन्ना विज्जूअग्गीयदीवउदहीय । दिसिपवणथणियणामा दसहाएएभवणवासी ॥ चूडामणिमउडरयणभूसणा फणिगरुलवइरपुण्णकलसंकिउप्फेसा सीहमगरमयंकअस्सवरवद्धमाणनिजुत्तचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महावला महाणुभावा महासोक्खा हारविराइयवक्खा कडगतुडियथंभियभुया अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा

असुरनागसुपर्णा विद्युदग्निद्वीपोदधयश्च । दिशापवनस्तनिदाख्या दशैतेभवनवासिनोज्ञेयाः ॥ १ ॥ चूडामणिमुकुटरत्नभूषणा फणागरुडवज्रपूर्ण कलशाङ्कितमुकुटाः । सिंहाश्वगजवरमाणिक्य वर्द्धमाननियुक्ताश्चित्रचक्रधराः ॥ २ ॥ सुरूपामहर्धिका महाद्युतिका महायशाः महाबला महानुभावा महेश्वरा हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा अङ्गदकुण्डलसृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रमालामौलिमण्डलाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधराः भासुरबोन्द (शरीर) यो प्रलम्बनमालाधराः दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येनसंहननेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया दृष्ट्या दिव्यया युक्त्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्यया द्युत्या दिव्येन तेजसा दिव्यया लेइयया (देहवर्णसुन्दरतया) दशदिशासूद्योतमानाः प्रकाशमानाः तेन तत्र साणं २ (वाक्यालङ्कारे) भवनवासिशतसहस्राणां साणं २ सामानिकसहस्राणां साणं २ त्रयस्त्रिंशतां साणं २ लोकपालानां साणं २ अग्रमहिषीणां साणं परिषदां साणं अधिकारिणां अधिकारियतीनां साणं आयरक्षदेवसहस्राणा मन्ये

पन्नासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ नवगवाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहीसीणं साणं २ परियाणं साणं २ अणीयाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं नवणवासीणं देवाणंय देवीणंय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडिय घणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति । कहिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहिणं भंते ! असुरकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से बाहल्लाए एत्थणं असुरकुमाराणं देवाणं चोवट्ठि भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं बट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्करकण्णियासंठाणसंठिया किन्नतरविउलगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुस



षां च बहूनां भवनवासिनां देवानां देवीनामाधिपत्यं स्वामित्वं भृर्तृत्वं महत्तराङ्गत्वमाज्ञेश्वरसेनापत्यं कारयमाणाः पालयमानाः महताहतनृत्त गीतवादित्रतंत्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादित रवेणदिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जमाना विहरन्ति । कस्मिन् भदन्त ! असुरकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? कस्मिन् भदन्त ! असुकुमारादेवाः परिवसन्ति गौतम ! एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपर्येकंयोजनसहस्रमुद्गृहीत्वा ऽधस्तादेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रबहुलायाम् एतेषु असुरकुमाराणां देवानां चतुर्विंशतिभवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तेन भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि मध्ये पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थिता

॥ मूल ॥

लमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सदा सया वलया सदा गुत्ता अहयाला कोठगरइया अहयालकयवन्तमाला खेमा सिवा किंकरामरदण्डोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुताभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपन्नादिया सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे त

॥ अ० ॥

नि उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातफलिकानि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागानि यन्त्रशतघ्नीमुसलभुसुण्ढिपरिवारितानि आयोधनानि सदाजेयानि सदावलयानि सदागुप्तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि अष्टचत्वारिंशद्वनमालानि शिवानि किङ्करामरदण्डोपरक्षितानि लाज उल्लोडय महितानि गोशीर्षसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलानि उपचितचन्दनकलशानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रार्घा तिममाल्यदामकलापानि पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि कालागुरुप्रवरकुन्दरुष्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धूताभिरामाणि सुगन्धवरगन्धगन्धितानि गन्धवर्तिभूतानि अप्सरोगणसंघसंकीर्णानि दिव्यत्रुटितशब्दसंप्रणादितानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निष्पङ्कानि निष्कण्टकच्छायानि सप्रभाणि समरीचीनि सोद्योतानि प्रसादनीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि एतेषु असुरकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । उपपातेन लोकस्यासंख्येयभागे समुद्घातेन लोक

त्थणं वहवे असुरकुमारादेवा परिवसंति काला लोहितका बिंबोट्ठा धवलपुप्फदंता असियकेसा वामेयकुं डलधरा अट्टचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलट्ठाइं सुज्झमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता विइयं च असंपत्ता मज्झे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियवरभूसणनिम्मलनिर यमणिरयणमंडियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुइया म मायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवक्खा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंड यलकन्नपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवर मल्लाणुलेवणधरा भासरबोंदी पलंबवनमालधरा दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघय णेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २

---

स्यासंख्येयभागे संस्थानेन लोकस्यासंख्येयभागे । तत्रेमे बहवः असुरकुमारा देवाः परिवसन्ति । काला लोहिताक्षा बिम्बोष्ठा धवलपुष्पदन्ता अ सितकेशा वामेय ( एकवर्णावसक्त ) कुण्डलधरा अष्टचन्दनानुलिप्तगात्रा ईषच्छिलिंध्रपुष्पप्रकाशानि असंक्लिष्टानि सूक्ष्माणि वस्त्राणि प्रवरपरिधाना वयश्च प्रथमं समतिक्रान्ता द्वितीयं चासंप्राप्ता मध्ये यौवने वर्त्तमाना तलभङ्गत्रुटितवरभूषणा निर्मलमणिरत्नमण्डितभुजाः दशमुद्रामण्डिताग्रहस्ताः चूडामणिविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिकाः महद्युद्वाः महायसा महाबलाः महानुभावाः महासुखा हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभु जा अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा विचित्रमालामौलिमुकुलाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमा ल्यानुलेपनधरा भासुरबोदयः ( भासुरशरीराः ) प्रलम्बवनमालाधराः दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संघयणेन दिव्येन सं

सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तावत्तीसाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति, चमरबलिणो इत्थ दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमारराया णो परिवसंति काला महानीलसरिसा नीलगुलियगवलयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तनिम्मलसीसियरत्ततंबनयणा गरुलायय उज्जुतुंग नासा उवचियसिलप्पवालबिंबफलसन्निहाहरोठा पंडुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसंखगोखीरकुंदगरयमुणालिया धवलदंतसेढी हुयवहणिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा अंजणघणकसिणरुयगरमणिज्जनिद्धकेसा वामेयकुंडलधरा आइचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं असंकिलिठाइं सुज्झमाइं व

---

स्थानेन दिव्यया ऋध्या दिव्यया युक्त्या दिव्यया प्रभया दिव्यया छायया दिव्येन अर्चिषा एतेन दिव्येन लेश्येन दशदिशासूद्योतमाना प्रभासयमानः तेन तत्र स्वेषां २ भवनावासशतसहस्राणां सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशतां लोकपालानां अग्रमहिषीणां परिषदामधिकारिणां अधिकारियतीनामात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां देवानां देवीनामाधिपत्यं पौरपत्यं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञैश्वरसेनापत्यंच कारयमाणा पालयमाना महताऽऽहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालतुडियघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहरन्ति । चमरबलिनौअत्रोन्ने असुरकुमारेन्द्रौ असुरकुमारराजानौ परिवसतः काला महानीलश्यामा नीलगुटिका गवलातसीकुसुमप्रकाशाः विकसितशतपत्रनिर्मलशीतरक्ताम्रनयना गरुडायतऋजूत्तुङ्गनासा उपचितशिलाप्रवालबिम्बसन्निभाधरोष्ठाः पाण्डुरशशिसकलविमलनिर्मलदधिघनशंखगोक्षीरकुन्दो

त्थाइं पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता विइयं च असंपत्ता जुव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियथंभियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवक्खा कडयतुडियथंभियभुया अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा आसुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए आसाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए पहाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं२ भवणावाससयसहस्साणं साणं२ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तावत्तीसाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २

---



दकरजसृणालिकाधवलदन्तश्रेणयो हुतवहनिर्धौतधौततप्ततपनीयरक्ततलतालुजिह्वा अञ्जनघनकृष्णरुचिकरमणिस्निग्धकेशाः वामेयकुण्डलधराः अर्द्धचन्दनलिप्तगात्राः ईषदीषच्छीलन्ध्रपुष्पप्रकाशानि असंक्लिष्टानि सूक्ष्माणि वस्त्राणि प्रवरपरिहिता वयश्च प्रथमं समतिक्रान्ता द्वितीयं चासंप्राप्ता जद्रेयौवने वर्त्तमाना तलभङ्गयतुडियवरभूषणनिर्मलमणिरत्नमण्डितभुजाः दशमुद्रामण्डिताग्रहस्ताः चूडामणिविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्धिका महद्युद्वा महायसा महाबला महानुभावा महासुखा हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजाः अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणाः विचित्रमालामौलिमुकुटाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनाः आसुरबोन्दयः प्रलम्बवनमालाधराः दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋध्या दिव्यया द्युत्या दिव्यया आसा दिव्यया छायया दिव्यया प्रभया दिव्येनार्चिषा दिव्येन तेजसा दिव्यया लेश्यया दशदिशोद्योतमानाः प्रकाशयमाना तेन तत्र साणं२ (स्थाने २) भवनावासशतसहस्राणां साणं २

परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजेमाणा विहरंति। कहिणं भंते! दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहिणं भंते! दाहिणिल्लाणं असुरकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीणय चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सोचेव वण्णओ जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स

---

सामानिकसहस्राणां सानं २ त्रयस्त्रिंशत्कानां सानं २ लोकपालानां सानं २ अग्रमहिषीणां सानं २ परिषदां सानं २ अधिकारिणां सानं २ अधिकारिणतीनामात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां भवनवासिनां देवानां देवीनां च आधिपत्यं पुरपतित्वं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरसेनापत्यं च कारयमानाः पालयमाना महताहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जाना विहरन्ति। कस्मिन् भदन्त! दक्षिणदिशासुरकुमाराणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, कस्मिन् भदन्त! दक्षिणदिशासुरकुमारादेवाः परिवसन्ति। गौतम! जम्बूद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेनैतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यामशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबहुलायामुपर्येकं योजनसहस्रमुद्गृह्यावगाह्य तदेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे एतेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च चतुस्त्रिंशद्भवनावासशतसह

असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला असुरकुमारदेवा देवीनु परिवसंति काला लोहितक्खा तहेव जाव भुंजेमाणे विहरंति, एवं सद्दत्थ भाणियव्वं भवणवासीणं, चमरे इत्थ असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ काले महानीलसरिसे जाव पहासेमाणे सेणं तत्थ चउत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं च चउसट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति । कहिणं भंते ! उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! उत्तरिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर

---

स्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि सोचेव वर्णतो यावत्प्रतिरूपा एतेषु दाक्षिणात्यानामसुरकुमारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्रनु बहवो दाक्षिणात्या असुरकुमारदेवा देव्यश्च परिवसन्ति काला लोहितक्षा तथैव यावद्भुञ्जमाना विहरन्ति । एवं सर्वत्र भावनीयं भवनवासिनां चमरो ऽत्र असुरकुमारेन्द्रो असुरकुमारराजा परिवसति काले महानीलसदृशो यावत्प्रकाशमानः तत्र चतुस्त्रिंशत्भवनावासशतसहस्राणां चतुःषष्ठितमे सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशे त्रयस्त्रिंशद्गानां चतुर्णां लोकपालानां पञ्चानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्णां च चतुःषष्ठिकानामात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां देवानां देवीनां चाधिपत्यं पौरपत्यं यावद्विहरन्ति । कस्मिन्नु भदन्त । औत्तराणामसुरकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । कस्मिन्नु भदन्त । औत्तरा असुरकुमारा देवाः परिवसन्ति ? गौतम । जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य

जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीणय तीसं भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति, बली इत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसइ, काले महानीलसरिसे जाव पन्नासेमाणे सेणं तत्थ तीसाए भवणा वाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरंति । कहिणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिणं

---

पर्वतस्य उत्तरेण एतस्या रत्नप्रभाया पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्या । उपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्याधश्चैकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र औत्तराणामसुरकुमाराणां देवानां देवीनां च त्रिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि तेषु यथा दाक्षिणात्यवद्विहरन्ति । बली अत्र वैरोचनेन्द्रो वैरोचनराजा परिवसति कालो महानील सदृशो यावत्प्रकाशमान स्तत्र त्रिंशत् भवनावासशतसहस्राणि षष्टिसंख्याकसामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत्या त्रायस्त्रिंशत्कानां चतुर्णां लोकपालानां पञ्चानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतु षष्टिकात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूना औत्तरिकाणामसुरकुमाराणां देवानां च देवीना चाधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं यावत्कुर्वाणा विहरन्ति । क्व भदन्त ! नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! नागकुमारा देवाः परिवसन्ति । गौतम ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशत

॥ मूल ॥

नंते ! नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं वज्जिऊण मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं चुलसीइभवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, सेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा जाव पडिरूवा तत्थणं नागकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे नागकुमारा देवा परिवसंति, महिड्ढिया महज्जुइया सेसं जहा नेहियाणं जाव विहरंति धरणभूयाणंदा एत्थ दुवे नागकुमाररायाणो परिवसंति महिड्ढिया सेसं जहा नेहियाणं जाव विहरंति । कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणंनागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! दाहिणिल्ला नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं व

---

सहस्रं बाहल्यायाउपरि एकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा पुनर्मध्ये अष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां चतुरशीतिभवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्, तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि अन्तश्चतुरस्राणि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र नागकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे तत्र बहवो नागकुमारदेवाः परिवसन्ति, महर्द्धिका महाद्युतिकाः शेषं यथौधिकानां यावद्विहरन्ति । धरणभूतानेन्द्रा अत्र द्वौ नागकुमारराजानौ परिवसतिः महर्धिकौ शेषं यथौधिकानां यावद्विहरन्ति । क्व भदन्त । दाक्षिणात्य नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त । दाक्षिणात्यनागकुमारदेवाः परिवसन्ति । गौतम । जम्बूद्वीपेद्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणेन इतस्या रत्नप्रभापृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्र बाहल्याया उपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्या धस्तादेकं योजनसहस्रं

॥ ५० ॥

॥ मूल ॥

जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं चोयालीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे एत्थणं बहवे दाहिणिल्लाणं नागकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया जाव विहरंति। धरणे एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसति महिड्ढिए जाव पन्नासेमाणे सेणं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साणं छण्हं सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरंति। कहिणं भंते! उत्तरिल्लाणं नागकुमाराणं दे

॥ प० ॥

वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र दाक्षिणात्यानां नागकुमाराणां देवानां चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्र दाक्षिणात्यानां नागकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे, अत्र बहवो दाक्षिणात्या नागकुमारदेवाः परिवसन्ति महर्धिका यावद्विहरन्ति। धरण अत्र नागकुमारेन्द्रो नागकुमारराजा परिवसति महर्द्धिको यावत्प्रकाशमान तत्र चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणां षण्णां सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत् त्रायस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोकपालानां षण्णामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां परिषदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्विंशत्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां दाक्षिणात्यानां नागकुमाराणां देवानां देवीनां च आधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं यावत्कुर्वाणा विहरन्ति। क्व भदन्त! औत्तरिकाणां नागकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। क्व भदन्त! नागकुमारा औत्तरिका देवाः परिवसन्ति? गौतम! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वत

वाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, कहिणं भंते ! उत्तरिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्सं एत्थणं उत्तरिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति, भूयाणंदे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ महिड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साणं आहेवच्चं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं बावत्तरिभवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा तत्थणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता

---

स्य उत्तरेण एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या अशीत्युत्तरयोजनशतसहस्रबाहल्याया उपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्या धस्तादेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्रे अत्र औत्तरिकानां नागकुमाराणां देवानां चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि शेषं यथा दाक्षिणात्यानां यावद्विहरन्ति । भूयानन्दोत्र नागकुमारेन्द्रो नागकुमारराजा परिवसति । महर्द्धिको यावत् प्रकाशमान स तत्र चतुश्चत्वारिंशद्भवनावासशतसहस्राणां यावद्विहरन्ति । क्व भदन्त सुपर्णकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! सुपर्णकुमारा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या यावदत्र सुपर्णकुमाराणां देवानां द्विसप्तति भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लो

पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया सेसं जहा नहियाणं जाव विहरंति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्थ दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवन्नकुमार रायाणो परिवसंति महिड्ढिया जाव विहरंति। कहिणं भंते! दाहिणिल्लाणं सुवन्नकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ता णं ठाणा पण्णत्ता। कहिणं भंते! दाहिणिल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति? गोयमा! इमीसे जाव मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं अट्ठत्तीसं भवणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं बट्टा जाव पडिरूवा, तत्थणं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, एत्थणं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति। वेणुदेवे इत्थ सुवन्निंदे सुवण्णकुमाररायाा परिवसति सेसं जहा नागकुमाराणं। कहिणं भंते! उत्तरिल्लाणं सुवन्नकु माराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। कहिणं भंते! उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारा परिवसंति? गोय

---

कस्यासंख्येयभागमत्र बहवः सुपर्णकुमारा देवाः परिवसन्ति महर्धिकाः शेषं यथौधिकानां यावद्विहरन्ति वेणुदेवो वेणुदालीच अत्र द्वौ सुपर्णकुमारेन्द्रौ सुवर्णकुमारराजानौ यावत्परिवसत महर्द्धिकौ यावद्विहरति। क्व भदन्त! दाक्षिणात्यानां सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि। क्व भदन्त! दाक्षिणात्याः सुपर्णकुमारदेवाः परिवसन्ति? गौतम! एतस्या यावन्मध्ये ऽष्टसप्ततियोजनशतसहस्र मत्र दाक्षिणात्यानां सुपर्णकुमाराणामष्टत्रिंशद्भवनावाससहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। तानि भवनानि बहिर्वृत्तानि यावत्प्रतिरूपाणि तत्र दाक्षिणात्यानां सुपर्णकुमाराणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे अत्र बहवः सुपर्णकुमारादेवाः परिवसन्ति। वेणुदेवोत्र सुपर्णेन्द्रो सुपर्णकुमारराजा परिवसति। शेषं यथा नागकुमाराणाम्। क्व भदन्त! औत्तरिकाणां सुपर्णकुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञ

भा ! इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थणं उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं वत्तव्वया भाणिया तहा सेसाणवि चोद्स्रहं इंदाणं भाणियव्वा नवरं भवणनाणत्तं इंदाणनाणत्तं वण्णगं नाणत्तं परिहाणनाणत्तं च इमाहिं गाहाहिं अणुगंतव्वं—चोवट्ठीअसुराणं चुलसीतीचेवहोइनागाणं । बावत्तरिसुवण्णे वाउकुमाराणछण्णउई ॥ १ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं । छण्हंपिजुवलयाणं छावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ चोत्ती साचोयाला अट्ठत्तीसंचहोइसयसहस्साइं । पण्णाचत्तालीसा दाहिणतहोंतिभवणाइं ॥ ३ ॥ तीसाचत्तालीसा चोत्तीसंचेवसयसहस्साइं । छायालछत्तीसा उत्तरतहोंतिभवणाइं ॥ ४ ॥ चउसट्ठीसट्ठीखलु छच्चसहस्सातु असुरवज्जाणं । सामाणियाउएए चउग्गुणाआयरक्कातु ॥ ५ ॥ चमरेधरणंतहवे णुदेवहरिकंतअग्गिसीहेय । पुण्णेजलकंतेय अमियवेलंबेयघोसेय ॥ ६ ॥ वलिभूयाणंदवे णुदालीहरिस्सहेअग्गिमाणवविसिट्ठे । जलप्प

---

प्रभानि, क्व प्रभदन्त ! औत्तरिकाः सुपर्णकुमाराः परिवसन्ति ? गौतम ! एतस्या रत्नप्रभाया यावत् अत्र औत्तरिकाणां सुपर्णकुमाराणां वक्तव्यता भणिता तथा शेषाणामपि चतुर्दशानामिन्द्राणामपि भणितव्या नवरं भवननानात्वमिन्द्राणां नानात्वं वर्णनानात्वं परिधाननानात्वं चैताभिर्गाथाभिरनुगन्तव्यम् । चतुःषष्ठिरसुराणां चतुरशीतिरेव भवतिनागानाम् । द्विसप्ततिःसुपर्णे वायुकुमारेषु षण्णवतिः ॥ १ ॥ द्वीपदिगुदधीनां विद्युत्कुमारेन्द्र स्तनितमग्निनाम् षण्णामपियुगलकानां षट्सप्ततिमशतसहस्रम् ॥ २ ॥ चतुस्त्रिंशच्चतुश्चत्वारिंशत् अष्टत्रिंशच्चभवतिशतसहस्रम् । पंचाशच्चतुश्चत्वारिंशत् दक्षिणतोभवन्तिभवनानि ॥ ३ ॥ त्रिंशच्चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशच्चशतसहस्राणि । षट्चत्वारिंशत्षट्त्रिंश दुत्तरतोभवन्तिभवनानि ॥ ४ ॥ चतुःषष्टिःषष्टिःखलुषट् सहस्राण्यसुरवर्जानाम् । सामानिकास्तुएते चतुर्गुणाआत्मरक्षास्तु ॥ ५ ॥ चमरधरणौतथा वेणुदेवहरिकान्ताग्निशिखाः । पूर्णोजलकान्तोवा मितवेलाम्बकघोषाश्च ॥ ६ ॥ वलिभूतानन्देवेणुदालि हरिसहेऽग्निमाणवविशिष्टे ॥ जलप्रभोऽमितवाहनः प्रभञ्जनश्चमहाघोष ॥ ७ ॥ औत्त

नेऋमियवाहणे पन्नंजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिल्लाणं जाव विहरंति, कालाऋसुरकुमारा नागाउदहीयपं फुरादोवि । वरकणगणिहसगोरा होंतिसुवस्सादिसाथणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ना विज्जूऋग्गीयहोंति दीवाय । सामापियंगुवस्सा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ २ ॥ ऋसुरेसुहोंतिरत्ता सिलिंधुपुप्फप्पन्नातहाउदही । ऋा सासयवसणधरा होंतिसुवस्सादिसाथणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जूऋग्गीयहोंतिदीवायं । संज्झाणु रागवसणा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ ४ ॥ कहिणं भंते ! वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिणं भंते ! वाणमंतरा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावि एगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे ऋट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जाइं नोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं नोमेज्जा णगरा बाहिं बट्टा ऋंतो चउरंसा ऋहे पुक्करकन्नियासंठाणसंठिया उक्किन्नंतरवि



रिका यावद्विहरन्ति । कालाश्चासुरकुमाराः नागोदधीपाण्डुरौद्वौस्तः । वरकनकनिकषगौराः भवन्तिसुपर्णादिक्स्तनिताः ॥ १ ॥ उत्तप्तकनकवर्णा विद्युदग्नीचभवन्तिद्वीपाश्च ॥ इयामाःप्रियङ्गुवर्णाः वायुकुमाराश्चज्ञातव्याः ॥ २ ॥ असुराभवन्तिरक्ताः शिलीन्ध्रपुष्पप्रभास्तथोदधयः ॥ आशाशतवसन धराः भवन्तिसुपर्णादिक्स्तनिताः ॥ ३ ॥ नीलानुरागवसना विद्युदग्नीचभवन्तिद्वीपाश्च ॥ सन्ध्यानुरागवसना वायुकुमाराअनुमातव्याः ॥ ४ ॥ क्व भदन्त ! वानव्यन्तराणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ? क्व भदन्त ! वानव्यन्तरा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! एतस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमय स्य काण्डस्य योजनशतसहस्रबाहल्यस्य उपर्येकं योजनसहस्रमवगाह्या ऽधस्तादेकं योजनसहस्रं वर्जयित्वा मध्ये ऽष्टसु योजनसहस्रेषु अत्र वानव्य न्तराणां देवानां तिर्यगसंख्ययानि भौमेयनगरावाससहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम् । ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता अन्तश्चतुरस्रा अधः पुष्करकर्णिका

उलगंनीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलसंकुलसंढिपरिवारिया अउज्झा सया जया सया गुत्ता अडयालकुट्ठरइयअडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघविकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपनादिया पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असं

---

संस्थानसंस्थिता उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीरखातफलिकाः प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभागाः यंत्रशतघ्निमुसलभुशुण्डिपरिवारिता अयोध्याः सदाजयाः सदागुप्ताः अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचिताष्टचत्वारिंशत्कृतवनमालाः क्षेमाः शिवाः किङ्करामरदण्डोपरक्षिताः लाउल्लोइयमहिताः गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितला उपचितचन्दनकलशाः चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागा आसक्तोत्सक्तविपुलवृत्तवग्घारितमाल्यदामकलापाः पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलिताः कालागुरुप्रवरकुन्दरुष्कतुरुष्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धुताभिरामाः सुगन्धवरगन्धिताः गन्धवर्तिभूता अप्सरोगणसङ्घविकीर्णा दिव्यत्रुटितनिनादसम्यगन्दिताः पताकमालाकुलाभिरामाः सर्वरत्नमया अच्छाः श्लक्ष्णा लष्टा घृष्टा मृष्टा नीरजसो निर्मला निष्पङ्का निष्कण्टकच्छायाः सप्रभाः सश्रीकाः सोद्योताः प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपाः प्रतिरूपा अत्र वानव्यन्तराणां देवानां पर्याप्ता पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि (स्थानेषु) लोकस्यासङ्ख्येयभागे तत्र बहवो वानव्यन्तरा देवाः परिवसन्ति तद्यथा-पिशाचा भूता यक्षा

॥ मूल ॥

खेजाइन्नागे तत्थणं बहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति तंजहा—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा भुयगवतिणोय महाकाया गंधव्वगणा य निउणगंधव्वगीतरइणो अणवन्नियपणवन्नियइसिवाइयभूयवाइय कंदीय महाकंदीय कोहंडपयंगदेवा ॥१॥ चवलचंचलचित्तकीलणदवप्पिया गहिरहसियपिया गीयणिच्चरती वणमालामेलमउलकुंडलसच्छंदविउव्वियाभरणचारुभूसणधरा सव्वोयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंतकंतवियसितचित्तवन्नमालरइयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवत्थलल्लंतचित्तचिल्लगणिवसणा विविहदेसीणेवत्थगहियवेसा समुइयकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासबोलबहुला असिमोग्गरसत्तिकुंतहत्था अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तविचित्तचिंधगयासुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडजुयलकयकण्णपीठधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिकल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणध

---

राक्षसाः किन्नराः किम्पुरुषा भुजगपतयश्च महाकाया गन्धर्वगणाश्च निपुणगन्धर्वगीतरतयः, अणपन्नीपणपन्नी ऋषिवादीचैवभूतवादी च। कन्दीच महाकन्दी कोहण्डीचैवपतकश्च ॥ १ ॥ एतेष्टौ देवविशेषाः, चलचपलचित्तक्रीडनदृढप्रियाः गम्भीरहसितप्रियाः गीतनृत्यरतयो वनमालापीडमुकुटकुण्डलस्वच्छन्दविकुर्विताभरणचारुभूषणधराः सर्वर्तुकसुरभिकुसुमसुरचितप्रलम्बशोभमानकान्तविकसितचित्रवनमालारचितवक्षसः कामकामाः कामरूपदेहधरा नानाविधवर्णरागवरवस्त्रचित्रचिल्लक (देदीप्यमान इत्यर्थः) वसना विविधदेशीनेपथ्यगृहीतवेषाः समुदितकन्दर्पकलहकेलिकोलाहलप्रिया हासबोलबहुला असिमुद्गरशक्तिकुन्तहस्ता अनेकमणिरत्नविविधनियुक्तविचित्रचिह्नगताः सुरूपा महर्द्धिका महाद्युतिका महद्यशसो महाबला महानुभावा महेशाख्या हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजाः अङ्गदकुण्डलसृष्टगण्डयुगलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा

॥ सू० ॥

रा ग्रासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणंसंठाणेणं दिव्वाए इ
ड्ढीए दिव्वाए जूईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए एच्छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं एएणं दिव्वाए लेस्साए दसदि
सात्रो उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं२ भोमेज्जाणगरावाससयसहस्साणं असंखिज्जाणं साणं २
सामाणियसाहस्सीणं साणं२ अग्गमहिसीणं साणं२ सपरिवाराणं साणं२ अणियाणं साणं२ अणियाहिव
ईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं
सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलताल
तुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति। कहिणं भंते! पिसायाणं देवाणं
पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०। कहिणं भंते! पिसायादेवा परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए



विचित्रमालामुकुटाः कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधरा ग्रासुरबोन्दयः प्रलम्बवनमालधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेण दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्धया दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया च्छायया दिव्येनार्चिषा दिव्येनतेन दिव्यया लेश्यया दश दिश उद्योतयन्तः प्रभासयन्तस्ते तत्र स्वेषां २ भौमेयनगरावासशतसहस्राणां असंख्येयानां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ अनीकानां स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषाञ्च बहूनां बानव्यन्तराणां देवानां देवीनाञ्चाधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं स्वामित्वं भर्त्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञेश्वरत्वं सेनापतित्वं कुर्वन्तः पालयन्तो महदाहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यानि भोगभोगानि भुञ्जानो विहरन्ति। क्व भदन्त! पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त! पिशाचा देवाः परिवसन्ति? गौतम! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपर्येकं योजनशतमवगाह्या

॥ मूल ॥

रयणामयस्स कंस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं तेणं भोमेज्जा नगरा बाहिं वट्टा जहा जंहिउ भवणवण्णउ तहा भाणियव्वो जाव पडिरूवा, एत्थणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे पिसाया परिवसंति महिड्ढिया जहा जंहिया जाव विहरंति, काला महाकाला इत्थ दुवे पिसाय इंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महिड्ढिया महज्जुइया जाव विहरंति। कहिणं भंते! दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं ठाणा पण्णत्ता। कहिणं भंते! दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति? गो० जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं दाहिणिल्लाणं

॥ प० ॥

---

धस्त्रैकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेष्वत्र पिशाचानां देवानां तिर्यगसङ्ख्येयानि भौमेयकनगरावाससतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातम्। ते भौमेया नगरा बहिर्वृत्ता यथौधिको भवनवर्णक स्तथा भणितव्यो यावत्प्रतिरूपाः, अत्र पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि' त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभागे, तत्र बहवः पिशाचाः परिवसन्ति महर्द्धिका यथौधिका यावद्विहरन्ति, कालमहाकालौ चात्र द्वौ पिशाचेन्द्रौ पिशाचराजानौ परिवसतः, महर्द्धिकौ महाद्युतिकौ यावद्विहरतः। क्व भदन्त! दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त! दाक्षिणात्याः पिशाचा देवाः परिवसन्ति? गौतम! जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपर्यूपरि योजनशतमवगाह्य धस्त्रैकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्येऽष्टसु योजनशतेष्वत्र दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां

पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा जहा उहिउ भवणवत्तव्वउ तहेव भाणियव्वो जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा उहिया जाव विहरंति काले जत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसंति महिड्ढिए जाव पन्नासेमाणे सेणं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भोमेज्जा णगरावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति। उत्तरिल्लाणं पुच्छा गो०! जहेव दाहिणिल्लाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणंपि नवरं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं महाकाले जत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसति जाव विहरति एवं जहा पिसायाणं तहा भूयाणंपि

॥ अ० ॥

तिर्यगसंख्येयानि भौमेयकनगरावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्। ते भौमेया (इत्यादि) यथौधिको भवनवर्णक स्तथैव भणितव्यो यावत्प्रतिरूपा अत्र दाक्षिणात्यानां पिशाचानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयभाग स्तत्र बहवो दाक्षिणात्याः पिशाचा देवाः परिवसन्ति, महर्द्धिका यावत्प्रज्ञासयन्त स्ते तत्र तिर्यगसंख्येयानां भौमेयनगरावासशतसहस्राणां चतसृणां सामानिकसाहस्रीणां चतुर्णामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षकदेवसाहस्रीणामन्येषाञ्च बहूनां दाक्षिणात्यानां वानव्यन्तराणां देवानां देवीनां चाधिपत्यं यावद्विहरन्ति। औत्तरिकाणां पृच्छा, गौतम! यथैव दाक्षिणात्यानां वक्तव्यता तथैवोत्तरिकाणा मपि नवरं मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरतो महाकालोत्र पिशाचेन्द्रः पिशाचराजा परिवसति यावद्विहरति, एवं यथा पिशा

॥ मूल ॥

जाव गंधव्वाणं नवरं इंदेसु नाणत्तं नाणियव्वं इमेणंपि विहिणा नूयाणं सुरूवपडिरूवा जक्खाणं पुण्णभद्द माणिभद्दं रक्खसाणं भीममहाभीमा किन्नराणं किन्नरकिंपुरुसा किंपुरिसाणं सप्पुरिसमहापुरिसा महोर गाणं अइकायमहाकाया गंधव्वाणं गीतरईगीतजसा जावगीयजसे विहरंति—कालेयमहाकाले सुरूवपडि रूवपुण्णभद्दे य । अमरवइमाणिभद्दे भीमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहामहा पुरिसे । अइकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥ २ ॥ विहरति कहिणं भंते! अणवन्नियाणं देवाणं ठा णा प०, कहिणं भंते ! अणवन्निया देवा परिवसंति गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि हिट्ठायएगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु अत्थ णं अणवन्नियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भवणा वाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं जाव पडिरूवा

॥ अ० ॥

नानां तथा भूतानामपि यावद्गन्धर्वाणां नवरमिन्द्रेषु नानात्वं ज्ञातव्यमनेन विधिना नूतानां सुरूपप्रतिरूपौ, यक्षाणां पूर्णभद्रमाणिभद्रौ, रक्ष सां भीममहाभीमौ, किन्नराणां किन्नरकिम्पुरुषौ, किम्पुरुषाणां सत्पुरुषमहापुरुषौ, महोरगाणामतिकायमहाकायौ, गन्धर्वाणां गीतरतिगीतय शाश्च, यावद्विहरतः । कालश्चमहाकालः सुरूपप्रतिरूपपूर्णभद्राश्च । अमरपतिमाणिभद्रो भीमश्चतथामहाभीमः ॥१॥ किन्नरकिम्पुरुषौखलु सत्पुरुषः खलुतथामहापुरुषः । अतिकायमहाकायौ गीतरतिश्चैवगीतयशाः ॥ २ ॥ विहरंति । क्व भदन्त ! अणपन्निकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त । अणपन्निका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या रत्नमयस्य काण्डस्य योजनसहस्रबाहल्यस्योपरि अधश्चैकं योजनशतं वर्जयित्वा मध्येष्टसु योजनशतेष्वत्राणपन्निकानां देवानां तिर्यगसङ्ख्येयानि भवनावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् । ते च यावत्प्रतिरूपाः अत्राणपन्निकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्राणपन्निका देवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यथा पिशाचा यावद्विह

॥ मूत्र ॥

एत्थणं ज्ञणवन्तिया देवाणं ठाणा प०, उववाएणं० समुग्घाएणं० सठाणेणंणो० तत्थणं ज्ञणवन्तिया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति सन्निहियसामाणा इत्थ दुवे ज्ञणवन्निंदा ज्ञणवन्ति यकुमाररायाणो परिवसंति महिड्ढिया जहा कालमहाकाला एवं जहा कालमहाकालाणं दोण्हंपि दाहिणि ल्लाणं उत्तरिल्लाणय ज्ञणिया तहा सन्निहियसामाणाणंपि ज्ञाणियव्वा संगहणि गाहा—ज्ञणवन्तियपणवन्तिय इसिवाइयज्ञूयवाइएचेव । कंदियमहाकंदिय कुहण्डयपयंगदेवाय इमे इंदा—संनिहियासामाणा धाइविधाएय इसीयइसिबाले ईस्सरमहेस्सरेविय हवइसुवत्थविसालेय ॥१॥ हासेहासरईविय सेएयज्ञवेतहामहासेए पयगेप यगपएविय नेयव्वाज्ञाणुपुव्वीए ॥२॥ कहिणं ज्ञंते! जोइसियाणं देवाणं पज्जत्ताणं२ ठाणा प० ? कहिणं ज्ञंते! जोइसिया देवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पज्ञाए पुढवीए बज्झसमरमणिज्जाज्ञ ज्ञूमिज्ञागाज्ञ सत्तणउ इ जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता दसुत्तरं जोयणसयं बाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोइसविसए एत्थणं जोइसियाणं

॥ प० ॥

रन्ति, सन्निहितसमानौ चात्र द्वावणपन्निकेन्द्रावणपन्निकराजानौ परिवसतो महर्द्धिकौ यथा कालमहाकालौ एवं यथा कालमहाकालयोर्द्वयो र्दा क्षिणात्ययो रौत्तरिकाणाञ्च (वक्तव्यता) भणिता तथा सन्निहितसामानिकयोरपि ज्ञणितव्या सङ्ग्रहणिगाथा-ज्ञणपन्निकपणपन्निका वृषिवादी चै वज्ञूतवादी च । कन्दीयमहाकन्दी कोहण्डीचैवपतकञ्च ॥ १ ॥ इमे इन्द्राः सन्निहित सामानो धातृविधात्रर्षयश्चार्षपालः । ईश्वरमहेश्वरौखलु ज्ञवति सुवस्त्रोविशालश्च ॥ २ ॥ हास्योहास्यरतिःखलु श्वेतश्चज्ञवस्तथा महाश्वेतः पतक पतकपदोपिच ज्ञातव्या आनुपूर्व्याच ॥ २ ॥ क्व भदन्त ! ज्योतिष्काणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि' क्व ज्ञदन्त ! ज्योतिष्का देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्यां रत्नप्रज्ञायाः पृथिव्या बहुसमर मणीयाद् ज्ञूमिज्ञागा त्सप्तनवतियोजनशतमूर्द्धं मुत्पत्य दशोत्तरं योजनशतं बाहल्यं तिर्यगसंख्येयं ज्योतिष्कविषयमत्र ज्योतिष्काणां देवानां तिर्यग

देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्कायं तेणं विमाणा अद्धकविट्ठग संठाणसंठिया सव्वफालियामया अइरुगयमुसियपहसियाइव विविहमणिकणगरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुत विजयवेजयंतीपडागाच्छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगनतलमहिलंघमाणसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मीलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयपत्तपोंडरीया तिलगरयणद्धचंदचित्ता नानामणिमयदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जरुइलवालुयापत्थडा सुहफासा ससिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं जोइसियाणं पजत्ताऽपजत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे जोइसिया देवा परिवसंति तंजहा—बहस्सईचंदासूरासुक्कासणिच्छरराहुधूमकेतुबुधाअंगारगा तत्ततवणिज्जकणगवन्ना जेगहा जोइसंमि चारं चरंति केतूयगतिरइया अट्ठावीसइविहाय नक्खत्ता देवयगणा नाणासंठाणसंठियाउय पंचवन्नाउ तारयाउ अविय लेस्साचारिणो अविस्साममंडलगई पत्तेयं णामंकपगडि

॥ मू० ॥

संख्येयानि भवनावाससतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि अर्द्धकपित्थकसंस्थानसंस्थितानि सर्वस्फटिकमयानि अभ्युद्गतोत्सृतप्रहसितानि विविधमणिकनकरत्नभक्तिचित्राणि वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकच्छत्रातिच्छत्रकलितानि तुङ्गानि गगनतलानुलिखच्छिखराणि जालान्तररत्नपञ्जरोन्मीलितमिव मणिकनकस्तूपिकानि विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्राणि नानामणिमयदामालङ्कृतानि अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णानि तपनीयरुचिरवालुकाप्रस्तटानि शुभस्पर्शानि सश्रीकरूपाणि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि अत्र ज्योतिष्काणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्र बहवो ज्योतिष्कदेवाः परिवसन्ति तद्यथा-बृहस्पतय इन्द्राः सूर्याः शुक्राः शनैश्चरा राहवः केतवो बुधा अङ्गारकास्तप्ततपनीयकनकवर्णा ये ग्रहा ज्योतिश्चक्रे चारं चरन्ति केतवो गतिरतिका अष्टाविंशतिविधा

यचिंधमउन्ना महिड्ढिया जाव पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं२ विमाणावाससयसहस्साणं साणं२ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं२ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं जोइसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति चंदिमसूरियाय एत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ जोइसियविमाणावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जोइसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति । कहिणं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ता२ णं ठाणा प० ? कहिणं भंते ! वेमाणिया देवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरम



(अष्टाविंशतिसंख्याका अश्विजिनाद्या लोकप्रसिद्धाः) नक्षत्रा देवगणा नानासंस्थानसंस्थिताश्च पञ्चवर्णास्तारका (ताराएतेसर्वेपि) अवस्थितलेश्या चारिणो ऽविश्राममण्डलगतिकाः प्रत्येकं नामाङ्कप्रकटितचिह्नमुकुटा महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्त स्ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ पर्षदां स्वेषां २ अनीकानां स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषाञ्च बहूनां ज्योतिष्काणां देवानां देवीनाञ्चाधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं यावद्विहरन्ति, सूर्याचन्द्रमसौ चात्र द्वौ ज्योतिष्केन्द्रौ ज्योतिष्कराजानौ परिवसतः, महर्द्धिकौ यावत्प्रभासयन्तौ तौ तत्र स्वेषां २ ज्योतिष्कविमानावासशतसहस्राणां चतुर्णां सामानिकसहस्राणां चतुर्णामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां त्रयाणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां षोडशानामात्मरक्षकदेवसहस्राणां ज्योतिष्काणामन्येषां बहूनां देवानां देवीनाञ्चाधिपत्यं यावद्विहरतः । क्व भदन्त । वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि' क्व उदक्त । वैमानिका

णिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूगाओ जोयणकोडीओ बहूगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेविज्जाणुत्तरेसु तत्थ एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं चउरासीइविमाणसयसहस्सा सत्ताणउईभवेसहस्साओ तेवीसं विमाणा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लट्ठा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तं०—सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेवेज्जगाणुत्तरोववाइया देवा तेणं भियमहिसवराहसीहछगलदद्दुरहयगयवइभुयगखग्गउसभंकविडिमपागडियचिंधमउडा पसिढिल

देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्द्ध चन्द्रसूर्यग्रहनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि बहवो योजनकोट्यो बहवो योजनकोटीकोट्य ऊर्द्ध दूरमुत्पत्यात्र सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारानतप्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरेषु तत्रैतेषां वैमानिकानां देवानां चतुरशीतिविमानशतसहस्राणि सप्तनवतिसहस्राणि त्रयोविंशतिर्विमानानि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि लष्टानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पङ्कानि निष्कण्टकच्छायानि सप्रभाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि अत्र वैमानिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्र बहवो वैमानिका देवाः परिवसन्ति तद्यथा-सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारान

॥ मूल ॥

वरमउऊतिरीऊधारिणो वरकुंऊलुज्जोइयाणणा मउऊदित्तसिरया रत्ताना पउमप्पहगोरा न्नासेया सुहवसुगंधफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्थगंधमल्लाणुलेवणधरा महिड्ढिया महज्जुइया महायसा महब्बला महाणुन्नागा महासोक्खा हारविराइयवत्था कऊगतुऊियथंभियभुया अंगदकुंऊलमट्ठगंऊतलकसपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिकल्लाणपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा न्नासुरुत्तोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए च्छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तावत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं

---

तप्राणतारणाच्युतग्रैवेयकानुत्तरोपपातिका देवा स्तेच मृगमहिषवराहसिंहछगलदर्दुरहयगजपतिभुजगखड्गवृषभाङ्कविडिमचिह्नमुकुटाः प्रज्ञिथिलवरमुकुटकिरीटधारिणो वरकुण्डलोद्योतिताननाः मुकुटदीप्तशिरसो रक्ताभाः पद्मप्रभगौरा भास्वराः शुभवर्णगन्धस्पर्शा उत्तमवैक्रुर्विकाः प्रवरवस्त्रगन्धमाल्यानुलपनधरा महर्द्धिका महाद्युतिका महायशस महाबला महानुभावा महेशाख्या हारविराजितवक्षसः कटकत्रुटितस्तम्भितभुजा अङ्गदकुण्डलसृष्टगण्डतलकर्णपीठधारिणो विचित्रहस्ताभरणा विचित्रमालामौलिकल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपना भासुरबोन्दयः प्रलम्बवनमालधरा दिव्येन वर्णेन दिव्येन गन्धेन दिव्येन स्पर्शेन दिव्येन संघयणेन दिव्येन संस्थानेन दिव्यया ऋद्धया दिव्यया द्युत्या दिव्यया प्रभया दिव्यया च्छायया दिव्येनार्चिषा दिव्येनतेन दिव्यया लेश्यया दश दिश उद्योतयन्तः प्रभासयन्त स्ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतसहस्राणां स्वेषां २ सामानिकसहस्राणां स्वेषां २ त्रायस्त्रिंशकानां स्वेषां २ लोकपालानां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वेषां २ पर्षदां स्वेषां २

॥ अ० ॥

२ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरंति । कहिणं भंते ! सोहम्मगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताण ठाणा प० कहिणं भंते ! सोहम्मगदेवा परिवसंति ? गो० ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूणि जोयणसयाइं बहूणि जोयणसहस्साइं बहूणि जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मे नामं कप्पे पन्नत्ते, पाचीणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने अद्धचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालिभासरासिवन्ने

---

अनीकानां स्वेषां २ अनीकाधिपतीनां स्वेषां २ आत्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां वैमानिकानां देवानां च देवीनां चाधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं स्वामित्वं भर्तृत्वं महत्तरकत्वमाज्ञैश्वरसेनापतित्वं कुर्वन्तः पालयन्तो विहरन्ति महताहतनृत्यगीतवादित्रतन्त्रीतलतालत्रुटितघनमृदङ्गपटुप्रवादितरवेण दिव्यान् भोगभोगान् भुञ्जानो विहरन्ति । क्व भदन्त ! सौधर्मकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! सौधर्मकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! जम्बूद्वीपे २ मन्दरस्य पर्वतस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागाद्ऊर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपेभ्यो बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि बहूनि योजनशतसहस्राणि बह्व्यो योजनकोट्यो बह्व्यो योजनकोटीकोट्य ऊर्ध्वं दूरमुत्पत्यात्र सौधर्मं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतमुदीचीनदक्षिणविस्तीर्णं अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थितमर्चिर्मालाभासाराशिवर्णाभं असंख्यया योजनकोट्योऽसंख्येया योजनकोटीकोट्य आयामविष्कम्भाभ्यामसंख्यया योजनकोटीकोट्यः परिक्षेपेण सर्वरत्नमय मच्छं यावत्प्रतिरूपं तत्र

ने असंखेज्जाइं जोयणकोडीइं असंखेज्जाइं जोयणकोडाकोडीइं आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयण कोडाकोडीइं परिक्खेवेणं सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे तत्थणं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसं विमाणावास सयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणमया अच्छा जाव पडिरूवा तेसिणं विमाणाणं बहु मज्झदेसभाए पंचवडंसए पण्णत्ता, तं०—असोगवडंसए सत्तवन्नवडंसए चंपगवडंसए चूयवडंसए मज्झे तत्थ सोहम्मवडंसए तेणं वडंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थणं सोहम्मगदेवाणं पज्जत्ता२ णं ठाणा प०, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभा सेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सामाणियसाहस्सी णं एवं जहेव ठहियाणं तहेव एतेसिंपि भाणियव्वं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोह म्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरति । सक्के इत्थ देविंदे देव

---

सौधर्मकदेवानां द्वात्रिंशद्विमानावाससतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि यावत्प्रतिरूपाणि तेषां वि मानानां बहुमध्यदेशभागे पंचावतंसकाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-अशोकावतंसकः सप्तपर्णावतंसकश्चम्पकावतंसकश्चूतावतंसको मध्ये तत्र सौधर्मावतंसकस्ते चावतंसकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपाः, अत्र सौधर्मकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्र बहवः सौधर्मकदेवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्त स्ते तत्र स्वेषां २ विमानावाससतसहस्राणां स्वेषां २ अग्रमहिषीणां स्वेषां २ सामा निकसहस्राणामेवं यथैवौधिकानां तथैवैतेषामपि भणितव्यं यावदात्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां सौधर्मकल्पवासिनां देवानां देवीनां चाधिपत्यं यावद्विहरन्ति । शक्रोत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति वज्रपाणिः पुरंदरः शतक्रतुः सहस्राक्षोमघवा पाकशासनो दक्षिणार्द्धलोकाधि

राया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघवं पागसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमा णावाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंबरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल कुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साणं चउरा सीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरि वाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाह स्सीणं अन्नेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरंति। कहिणं भंते! ईसाणगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०? कहिणं भंते! ईसाणगदेवा परिव संति? गो०! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भू मिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं जाव

---

पति द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राधिपति रैरावणवाहनः सुरेन्द्रोऽरजोम्बरवस्त्रधर आलगितमालमुकुटो नवहेमचारुचित्तचञ्चलकुण्डलविलिख्य मानगण्डो महर्द्धिको यावत्प्रभासयन्स तत्र द्वात्रिंशद्विमानावासशतसहस्राणां चतुरशीत्याः सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत्संख्याकानां त्रायस्त्रिंश कदेवानां चतुर्णां लोकपालानां अष्टानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्णां चतुरशी त्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां अन्येषां च बहूनां सौधर्मकल्पवासिदेवानां देवीनां चाधिपत्यं कुर्वन् पालयन् यावद्विहरति। क्व भदन्त! ईशानदेवानां प र्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त! ईशानदेवाः परिवसन्ति? गौतम! जम्बूद्वीपे द्वीपे मन्दरस्य पर्वतस्योत्तरतोस्याः रत्नप्रभायाः पृ थिव्या बहुसमरमणीयाद्भूमिभागाद्ऊर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि यावदुत्पत्याबाधेन

उप्पइत्ता एत्थणं ईसाणे नामं कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जाव पडिसुरूवे तत्थणं ईसाणगदेवाणं अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्कायं तेणं विमाणा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा, तेसिणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडिंसगा पन्नत्ता, असोकवडिंसए फलिहवडिंसए रयणवडिंसए जाव सरूववडिंसए मज्झे इत्थ ईसाणवडिंसए, तेणं वडिंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा एत्थणं ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे सेसं जहा सोहम्मगदेवाणं जाव विहरंति, ईसाणं इत्थ देविंदे देवराया परिवसति सूलपाणी उसभवाहणे उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासेमाणे तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणि

---

नाम कल्पं प्रज्ञप्तं, प्राचीनप्रतीचीनायत मुत्तरदक्षिणविस्तीर्णमेवं यथा सौधर्मो यावत्प्रतिरूपं तत्रेशानकानां देवानां अष्टाविंशति र्विमानावास शतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यात' तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि, तेषां बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतंसकाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-अङ्का वतंसकः स्फटिकावतंसको यावत्सुरूपावतंसको मध्ये त्रशानावतंसक स्तेचावतंसकाः सर्वरत्नमया यावत्प्रतिरूपा अत्रेशानानां देवानां पर्याप्तापर्याप्ताना स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकासंख्येयभागः शेषं यथा सौधर्मकदेवानां यावद्विहरन्ति। ईशानश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति शूल पाणिर्वृषभवाहन उत्तरार्द्धलोकाधिपति रष्टाविंशतिविमानावासशतसहस्राधिपतिः अरजोम्बरवस्त्रधरः शेषं यथा शक्रस्य (वक्तव्यतोक्ता तथा त्रा पि) यावत्प्रभासयन्तष्टाविंशतिविमानावासशतसहस्राणा मशीतिः सामानिकसहस्राणां त्रयस्त्रिंशत् त्रायस्त्रिंशकानां चतुर्णां लोकपालानां अ

याहिवईणं चउण्हं असीतीणं आयरक्कदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरइ, कहिणं भंते ! सणंकुमारदेवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! सणंकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाउं जोयणकोडीउं बहुगाउं जोयणकोडाकोडीउं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सणंकुमारे नामं कप्पे पण्णत्ते । पाईण पडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मे कप्पे जाव पडिरूवे, एत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं बारस विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभागे पंच वडिंसगा पण्णत्ता, तंजहा—असोगवडिंसए सत्तवण्णवडिंसए चंपगवडिंसए चूयवडिं

---

स्थानामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां तिसृणां पर्षदां सप्तानामनीकानां सप्तानामनीकाधिपतीनां चतुर्णां चतुरशीतिसामानिकसहस्राणां अन्येषां च बहूनां सौधर्मकल्पवासिदेवानां देवीनां आधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं कुर्वन्यावद्विहरति । क्व भदन्त ! सनत्कुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! सनत्कुमारदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! सौधर्मस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि बहुषु योजनकोटिषु बहुषु योजनकोटीकोट्यूर्द्धं दूरमुत्पत्यात्र सनत्कुमार नाम कल्पः प्रज्ञप्तः, प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा सौधर्मः कल्पो यावत्प्रतिरूपः, तत्र सनत्कुमाराणां देवानां द्वादशविमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि यावत्प्रतिरूपाणि तेषां विमानानां मध्ये बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतंसकाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-अशोकावतंसकः सप्तपर्णावतंसकश्चम्पकावतंसक श्चूतावतंसको मध्ये तत्र सनत्कुमारावतंसक स्तेषावतंसकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपा सत्रसन

सए मज्झे तत्थ सणंकुमारवडिंसए तेणं वडिंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा तत्थणं सणंकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे सणंकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा विहरंति नवरं अग्गमहिसीओ णत्थि , सणंकुमारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स सेणं तत्थ बारसण्हं विमाणावाससयसहस्साणं बावत्तरीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा सक्कस्स अग्गमहिसीवज्जं नवरं चउण्हं बावत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! माहिंदाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! माहिंदगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहुइं जोयणाइं जाव बहूओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता तत्थणं माहिंदे नामं कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायए जाव एवं जहेव सणंकुमारे, नवरं अट्ठ विमाणावाससयसहस्सा बडिंसया जहा ईसाणे नवरं मज्झे तत्थ माहिं

---

त्कुमाराणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्र बहवः सनत्कुमाराः देवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यावद्विहरन्ति नवरमग्रमहिष्यो न सन्ति, सनत्कुमारश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति अरजोम्बरवस्त्रधरः शेषं यथा शक्रस्य स तत्र द्वादशानां विमानावासशतसहस्राणां द्विसप्ततिः सामानिकसहस्राणां शेषं यथा शक्रस्याग्रमहिषीवर्जं नवरं चतुर्णां द्विसप्तत्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! माहेन्द्राणां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ' क्व भदन्त । माहेन्द्रका देवाः परिवसन्ति ? गौतम । ईशानस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावद्बह्व्यो योजनकोटीकोट्य ऊर्द्धं दूरं सुत्पत्य तत्र माहेन्द्रं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीना यतं यावदेवं यथैव सनत्कुमारं नवरमष्टौ विमानावासशतसहस्राणि अवतंसका यथा ईशाने नवरं मध्ये तत्र माहेन्द्रावतंसक एवं शेषं यथा स

॥ मूल ॥

दवडंसए एवं सेसं जहा सणंकुमारदेवाणं जाव विहरंति माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंवर वत्थधरे एवं जहा सणंकुमारे जाव विहरइ नवरं अट्ठण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सत्तरीए सामाणिय साहस्सीणं चउण्हं सत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! बंभलोगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! बंभलोगा देवा परिवसंति ? गो० ! सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव उप्पइत्ता एत्थणं बंभलोए नाम कप्पे पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालीभासरासिप्पभे अवसेसं जहा सणंकुमाराणं नवरं चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा बडंसगा जहा सोहम्मस्स बडंसया नवरं मज्झे इत्थ बंभलोयवडंसए एत्थणं बंभलोगाणं देवाणं ठाणा प० , सेसं तहेव जाव विहरंति। बंभे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबरवत्थधरे एवं जहा सणंकुमारे जाव विहरति नवरं चउण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सट्ठीए

॥ अ० ॥

नत्कुमारे कल्पे यावद्विहरंति नवरमष्टानां विमानावासशतसहस्राणां सप्ततिः सामानिकसहस्राणां चतुर्णां ( चतुर्गुणानां ) सप्तत्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां ( अशीत्यधिकशतद्वयात्मरक्षकदेवसहस्राणामित्यर्थः ) यावद्विहरति । क्व भदन्त ! ब्रह्मलोकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! ब्रह्मलोका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! सनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पयोरुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनानि यावदुत्पत्यात्र ब्रह्मलोकं नाम कल्पः प्रज्ञप्तः प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं प्रतिपूर्णचन्द्रसंस्थानसंस्थितं अर्चिर्मालाप्तभाराशिप्रभं अवशेषं यथा सनत्कुमाराणां नवरं चत्वारि विमानावासशतसहस्राणि अवतंसका यथा सौधर्मस्यावतंसका नवरं मध्येत्र ब्रह्मलोकावतंसकोत्र ब्रह्मलोकानां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि शेषं तथैव यावद्विहरन्ति' ब्रह्मात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति अरजोम्बरवस्त्रधर एवं यथा सनत्कुमारे यावद्विहरति नवरं चतुर्णां वि

सामाणियसाहस्सीणं चउण्हयसट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! लंतगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिणं भंते ! लंतगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! बंभलोगस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणसयाइं जाव बहुईओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं लंतए नामं कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवरं पन्नासाविमाणा वाससहस्सा हवंतीतिमक्खायं, वडंसगा जहा ईसाणवडंसगा नवरं मज्झे इत्थ लंतगवडंसए देवा तहेव जाव विहरंति, लंतए इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकुमारे नवरं पन्नासाए विमाणावाससह स्साणं पन्नासाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं पन्नासाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिंच बहूणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! महासुक्काणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! महासुक्कादे

---

मानावासशतसहस्राणां सप्ततिः सामानिकसहस्राणां चतुर्णां (चतुर्गुणानां) षष्ट्यात्मरक्षकदेवसहस्राणां (चत्वारिंशदधिकशतद्वयदेवसहस्राणां) अन्येषाञ्च बहूनां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! लान्तकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! लान्तकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! ब्रह्मलोकस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् बहूनि योजनशतानि यावदूरमुत्पत्यात्र लान्तकं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतं यथा ब्रह्मलोके नवरं पञ्चाशद्विमानावाससहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम्, अवतंसका यथा ईशानावतंसका नवरं मध्येत्र लान्तकावतंसको देवा स्तथैव यावद्विहरन्ति, लान्तकेत्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति यथा सनत्कुमारं नवरं पञ्चाशद्विमानावाससहस्राणां पञ्चाशत्सामानिकसहस्रा णां चतुर्णां (चतुर्गुणानां) पञ्चाशदात्मरक्षकदेवसहस्राणां (लक्षद्वयात्मरक्षकदेवसहस्राणां) अन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! महा शुक्राणां देवानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि' क्व भदन्त ! महाशुक्रा देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! लान्तकस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्प

॥ मूल ॥

वा परिवसंति ? गोयमा ! लंतस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं महासुक्के नामं कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा बंभलोए नवरं चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं, बह्मंसगा जहा सोहम्मवडंसगा नवरं मज्झे तत्थ महासुक्कवडंसए जाव विहरइ महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणंकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरति । कहिणं भंते ! सहस्सारदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० । कहिणं भंते ! सहस्सारा देवा परिवसंति ? गो० ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं सहस्सारे नामं कप्पे प० , पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवरं छविमाणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं देवा तहेव बह्मंसगा जहा ईसाणस्स वडंसगा नवरं मज्झे इत्थ सहस्सारवडंसए जाव विहरंति, सहस्सारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकु

॥ अ० ॥

त्यात्र महाशुक्रं नाम कल्पं प्रज्ञप्तम् प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवरं चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्राणि भवन्ती ति मयाख्यातमवतंसका यथा सौधर्मावतंसका नवरं मध्ये तत्र महाशुक्रावतंसको यावद्विहरति, महाशुक्रोत्र देवेन्द्रो देवराजो यथा सनत्कुमारो नवरं चत्वारिंशद्विमानावासशतसहस्राणां चत्वारिंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां चत्वारिंशदात्मरक्षकदेवसहस्राणां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! सहस्रारदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! सहस्रारदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! महाशुक्रस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रति दिक् यावदुत्पत्यात्र सहस्रारं नाम कल्पं प्रज्ञप्तं प्राचीनप्रतीचीनायतमुत्तरदक्षिणविस्तीर्णं यथा ब्रह्मलोको नवरं षड्विमानावासशतसहस्राणि भ वन्तीति मयाख्यातं देवास्तथैवावतंसका यथा ईशानस्यावतंसका नवरं मध्ये यत्र सहस्रारावतंसको यावद्विहरन्ति । सहस्रारोत्र देवेन्द्रो देवरा

मारे नवरं अरहं विमाणावाससहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हय तीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव आहेवच्चं कारेमाणे विहरंति । कहिणं भंते ! आणयपाणयदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा प० कहिणं भंते ! आणयपाणयदेवा परिवसंति ? गोयमा ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं आणयपाणयनामेणं दुवे कप्पा पन्नत्ता, पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिप्पभा सेसं जहा सणंकुमारे जाव पडिरूवा तत्थणं आणयपाणयदेवाणं चत्तारि विमाणावाससया हवंतीति मक्खायं जाव पडिरूवा, वट्टंसगा जहा सोहम्मे नवरं मज्झे पाणयवडंसए तेणं वट्टंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थणं आणयपाणयदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसंति

---

जः परिवसति यथा सनत्कुमारो नवरं षण्णां विमानावासशतसहस्राणां त्रिंशत्सामानिकसहस्राणां चतुर्णां त्रिंशदात्मरक्षदेवसहस्राणां यावदाधिपत्यं कुर्वन्विहरति । क्व भदन्त ! आनतप्राणतदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! आनतप्राणतदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! सहस्रारस्य कल्पस्योपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्यात्रानतप्राणतनामानौ द्वौ कल्पौ प्रज्ञप्तौ प्राचीनप्रतीचीनायतौ उत्तरदक्षिणविस्तीर्णौ अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थितौ अर्चिर्मालाभारराशिसप्रभौ शेषं यथा सनत्कुमारो यावत्प्रतिरूपौ तत्रानतप्राणतदेवानां चत्वारि विमानावासशतसहस्राणि भवन्तीति मयाख्यातम् यावत्प्रतिरूपौ, अवतंसका यथा सौधर्मे नवरं मध्ये प्राणतावतंसक स्तेचावतंसकाः सर्वरत्नमया अच्छा यावत्प्रतिरूपा अत्रानतप्राणतदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्र बहव आनतप्राणतदेवाः परिवसन्ति महर्द्धिका यावत्प्रभासयन्त स्ते तत्र स्वेषां २ विमानावासशतानां यावद्विहरन्ति, प्राणतश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति, यथा सनत्कुमारो नवरं चतुर्णां वि

महिड्ढिया जाव पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं२ विमाणावाससयाणं जाव विहरंति पाणए इत्थ देविंदे देवरा या परिवसति जहा सणंकुमारे णवरं चउण्हं विमाणावाससयाणं वीसाए सामाणियसाहस्सीणं असीतीए आयरक्कदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरति । कहिणं भंते ! आरणच्चुयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! आरणच्चुया देवा परिवसंति ? गोयमा ! आणयपाणयाणं कप्पाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं एत्थणं आरणाच्चुयानाम दुवे कप्पा पण्णत्ता पाईणपडीणायगा उदीणदाहिणवित्थिन्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिवन्नाभा असंखिज्जाइं जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला णिप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं आरणच्चुयाणं देवाणं तिन्नि विमाणावाससया हवंतीति मक्खायं, तेणं विमाणा सव्वरयणाम

---

मानावासशतानां विंशतिः सामानिकसहस्राणां अशीति आत्मरक्षकदेवसहस्राणामन्येषां च बहूनां यावद्विहरति । क्व भदन्त ! आरणच्युतानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! आरणाच्युतका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! आनतप्राणतयोः कल्पयोरुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् अत्रानतप्राणतनामानौ द्वौ कल्पौ प्रज्ञप्तौ प्राचीनप्रतीचीनायतावुत्तरदक्षिणविस्तीर्णौ अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थितौ अर्चिर्मालाभाराशिसप्रभौ असंख्येया योजनकोटीकोट्य आयामविष्कम्भाभ्यां असंख्येया योजनकोटीकोट्यः परिक्षेपेण सर्वरत्नमयौ अच्छौ श्लक्ष्णौ लष्टौ घृष्टौ मृष्टौ नीरजसौ निर्मलौ निष्पङ्कौ निष्कण्टकच्छायौ सप्रभौ सश्रीकौ सोद्योतौ प्रासादीयौ दर्शनीयौ अभिरूपौ प्रतिरूपौ अत्रारणाच्युतानां देवानां त्रीणि विमानावाससतानि भवन्तीति मयाख्यातं । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि श्लक्ष्णानि लष्टानि घृष्टानि मृष्टानि नीरजांसि निर्मलानि निष्पंका

या अच्छा सण्हा लठ्ठा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडंसया पण्णत्ता, तंजहा असोयवडंसए सत्तवण्णवडंसए चंपगवडंसए चूयवडंसए मज्झे इत्थ अच्चुयवडंसए, तेणं वडंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा, एत्थणं आरणच्चुयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे आरणच्चुया देवा जाव विहरंति, अच्चुए तत्थ देविंदे देवराया परिवसइ। जहा पाणए जाव विहरति नवरं तिण्हं विमाणावाससयाणं दसण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं आहेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरति, वत्तीसट्ठावीसा बारसाठचउरोसयसहस्सा पन्नाचत्तालीसा बत्तसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिण्णि । सत्तविमाणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसंगहणीगाहा—चउरासीइअसीति बावत्तरिसत्तरीयसट्ठीए ।

---

नि निष्कण्टकच्छायानि सप्रभाणि सश्रीकाणि सोद्योतानि प्रासादीयानि दर्शनीयानि अभिरूपाणि प्रतिरूपाणि तेषां विमानानां बहुमध्यदेशभागे पञ्चावतंसकाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-अंकावतंसकः स्फटिकावतंसको रत्नावतंसको यावद्रूपावतंसको मध्ये तत्राच्युतावतंसक स्ते चावतंसकाः सर्वरत्नमया यावत्प्रतिरूपा अत्रारणाच्युतानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि' त्रिष्वपि लोकासंख्येयभागं तत्र बहव आरणाच्युता देवाः परिवसन्ति यावद्विहरन्ति अच्युतश्चात्र देवेन्द्रो देवराजः परिवसति यथा प्राणतो यावद्विहरति नवरं त्रयाणां विमानावासशतानां दशानां सामानिकसहस्राणां चत्वारिंशदात्मरक्षदेवसहस्राणां आधिपत्यं पुरोवर्त्तित्वं यावत्कुर्वन् विहरति, द्वात्रिंशदष्टाविंशति द्वादशाष्टौ चतुःशतसहस्राणि। पञ्चाशच्चत्वारिंशत् षट्चसहस्राणिसहस्रारे ॥ १ ॥ आनतप्राणतकल्पे चत्वारिंशतान्यारणाच्युतेत्रीणि । सप्तविमानसहस्राणि चतुर्ष्वप्येतेषुकल्पेषु ॥

पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ ३ ॥ एएचेव आयरक्खा चउगुणा । कहिणं भंते ! हिट्ठिमगेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! आरणच्चुयाणं कप्पाणं उप्पिं जाव उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं ततो गेवेज्जविमाणपत्थडा पन्नत्ता, पाईणपडीणायगा उदीणदाहिणविच्छिन्ना पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिवन्नाभा सेसं जहा बंभलोगे जाव पडिरूवा, तत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं एक्कारसुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा , एत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति सव्वे सममहिड्ढीया सव्वे समजुतीया सव्वे समजसा सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अणिंदा अपेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा नामं ते देवगणा पण्णत्ता समणाउसो ! कहिणं भंते ! मज्झिमगाणं

---

२ ॥ सामानिकसंग्रहणिगाथा-चतुरशीतिरशीति र्द्विसप्ततिः सप्ततिश्चषष्टिश्च । पंचाशच्चत्वारिंशत् त्रिंशद्विंशद्दशसहस्राणि ॥ १ ॥ एते चैव चतुर्गुणा न्यात्मरक्षाः । क्व भदन्त ! अधस्तनग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि, क्व भदन्त ! अधस्तनग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम ! आरणाच्युतकल्पयोरुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदूर्ध्वमुत्पत्यात्रा धस्तनग्रैवेयकानां देवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि उत्तरदक्षिणविस्तीर्णानि प्रतिपूर्णचन्द्रसंस्थानसंस्थितानि अर्चिर्मालाभाराशिवर्णाभानि शेषं यथा ब्रह्मलोके यावत्प्रतिरूपाणि, तत्राधस्तनग्रैवेयकदेवानां एकादशोत्तरं विमानावाससतं भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि सर्वरत्नमयानि यावत्प्रतिरूपाणि' अत्राधस्तनग्रैवेयकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्र बहवो धस्तनग्रैवेयका देवाः परिवसन्ति सर्वे सममहर्द्धिकाः सर्वे सम

॥ मूल ॥

गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिमगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं ततोगेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता पाईणपडीणायता जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खाए, तेणं विमाणा जाव पडिरूवा एत्थणं मज्झिमगेवेज्जाणं देवाणं जाव तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नामं देवगणा पन्नत्ता । समणाउसो ! कहिणं भंते ! उवरिमगेवेज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! उवरिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाणं उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थणं उवरिमगेवेज्जगाणं देवाणं तत्थ गेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता पाईणपडीणाय सेसं जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं नवरं

---

॥ अ० ॥

द्युतिकाः सर्वे समयशसः सर्वे समबलाः सर्वे महानुभावा महेशाख्या अनिन्द्रा अप्रेष्या अपुरोहिता अहमिन्द्रा नामत स्ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण । आयुष्मन् ! क्व भदन्त । मध्यमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि । क्व भदन्त । मध्यमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम । अधस्तनग्रैवेयकदेवानामुपरि सपक्षं सप्रतिदिक् यावदुत्पत्यात्र मध्यमग्रैवेयकदेवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतान्युत्तरदक्षिण विस्तीर्णानि यथा धस्तनग्रैवेयकानां नवरं सप्तोत्तरं विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम् । तानि विमानानि यावत्प्रतिरूपाणि अत्रमध्यमग्रैवेयकानां देवानां स्थानानि यावत्त्रिष्वपि लोकस्यासंख्येयं भागं तत्र बहवो मध्यमग्रैवेयका देवाः परिवसन्ति यावदहमिन्द्रा नाम ते देवाः प्रज्ञप्ताः श्रमण । आयुष्मन् । क्व भदन्त । उपरिमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्ता० स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त । उपरिमग्रैवेयकदेवाः परिवसन्ति ? गौतम । मध्यमग्रैवेयकदेवानामुपरि यावदुत्पत्य तत्रोपरिमग्रैवेयकानां देवानां ग्रैवेयकप्रस्तटानि प्रज्ञप्तानि प्राचीनप्रतीचीनायतानि शेषं यथाधस्तनग्रैवेयका

एगे विमाणावाससए हवंतीति मक्काए, सेसं तहेव नाणियव्वं जाव अहमिंदा नामं ते देवगणा पन्नत्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरहे हिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए । सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता ? कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाउ जोयणकोडीउ बहुगाउ जोयणकोडाकोडीउ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयकप्पा तिन्नियअट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए विती वइत्ता तेयं परं दूरं गंता णीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महा विमाणा पन्नत्ता, तंजहा—विजये वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । तेणं विमाणा सव्वरयणामया

---

नां नवरं एकं विमानावासशतं भवतीति मयाख्यातम्, शेषं तथैव भणितव्यं यावदहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् । एकादशोत्तरमध-स्तनेषु सप्तोत्तरंतुमाध्यमिके । शतमेकमौपरिमिके पञ्चैवानुत्तरविमानाः ॥ १ ॥ क्व भदन्त ! अनुत्तरोपपातिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्र० क्व भदन्त ! अनुत्तरोपपातिका देवाः परिवसन्ति ? गौतम ! अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्याः बहुसमरमणीयाद्भूमिभागादूर्ध्वं चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणां बहूनि योजनानि बहूनि योजनशतानि बहूनि योजनसहस्राणि यावदूर्ध्वं दूरमुत्पत्यात्र सौधर्मेशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलान्तकशुक्रसहस्रारानतप्राणतारणाच्युतकल्पा त्रीणि चाष्टादशोत्तराणि ग्रैवेयकविमानावासशतानि व्यतिव्रज्य (उल्लंघ्य) तेभ्योपि परं दूरं गता नीरजसो निर्मला वितिमिरा विशुद्धाः पञ्चसु दिक्षु पञ्चानुत्तरा महातिमहालया महाविमानाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-विजयोवैजयन्तोजयन्तो

॥ मूल ॥

अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया णिम्मला णिप्पंका णिक्कंकडच्छाया सप्पभा सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति सव्वे समहड्ढिया सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अणिंदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा ते देवगणा पण्णत्ता । स मणाउसो । कहिणं भंते ! सिद्धाणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! सिद्धा परिवसंति ? गोयमा ! सव्वट्ठस्स महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थूभियग्गाओ दुवालसजोयणे उड्ढं अबाहाए एत्थणं इसीपब्भारा नामं पुढवी प० , पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं एगंजोयणकोडीओ बायालीसं च सयसहस्साइं तीसं सहस्साइं दोन्नि य अउणापन्ने जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पण्णत्ता । इसीपब्भाराएणं पुढवीए

॥ अ०

पराजितः सर्वार्थसिद्धः । ते विमानाः सर्वरत्नमया अच्छा श्लक्ष्णा घृष्टा मृष्टा नीरजसो निर्मला निष्पङ्का निष्कण्टकच्छायाः सप्रभाः सश्रीकाः सोद्योताः प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपाः प्रतिरूपा अत्रानुत्तरोपपातिकानां देवानां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि , त्रिष्वपि ( आलापकेषु ) लोकस्यासंख्येयं भाग तत्र बहवोनुत्तरोपपातिका देवाः परिवसन्ति सर्वे समर्द्धिकाः सर्वे समबलाः सर्वे समानुभावा महेशाख्या अनिन्द्रा अपुरोहिता अप्रेष्या अहमिन्द्रा नाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः श्रमण ! आयुष्मन् ! क्व भदन्त ! सिद्धानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि क्व भदन्त ! सिद्धाः परिवसन्ति ? गौतम ! सर्वार्थस्य महाविमानस्योपरिमायाः स्तूपिकाया द्वादशयोजनान्यूर्द्ध अबाधया ईषत्प्राग्भारा नाम पृथिवी प्रज्ञप्ता, पंचचत्वारिंशद्योजनशतसहस्राणि आयामविष्कम्भाभ्यां मेकायोजनकोटी द्विचत्वारिंशच्छतसहस्राणि त्रिंशत्सहस्राणि द्वे एकोनपंचाशद्योजनशते किंचिद्विशेषाधिकानि परिक्षेपेण प्रज्ञप्ता, ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्या बहुमध्यदेशभागे ऽष्टयोजनिकं क्षेत्रं अष्टौ योजनानि बाहल्यन प्रज्ञप्तं ततोनन्तरं मात्रया २ प्रदे

बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठजोयणाइं बाहल्लेणं पन्नत्ते, ततो अणंतरं चणं माताए २ पए सपरिहाणीए२ परिहायमाणी२ सव्वेसु चरिमंतेसु मच्छियपत्तातो तणुयरी अंगुलस्स संखेज्जइभागे बाहल्लेणं पन्नत्ता, इसीपब्भाराएणं पुढवीए दुवालसनामधेज्जा पन्नत्ता, इसीतिवा इसीपब्भाराइवा तणूतिवा तणुयरीतिवा सिद्धीतिवा सिद्धालएतिवा मुत्तीइवा मुत्तालएइवा लोयग्गेतिवा लोयग्गथूभियातिवा लोय पडिबुज्झणाइवा सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहा बइवा। इसीपब्भाराणं पुढवी सेता संखदलविमलसोक्खिय मुणालदगरयतुसारगोक्खीरहारवन्ना उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिया सव्वज्जुणसुवमई अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इसीपब्भाराएणं नीसाए जोयणंमि लोगंतो तस्सणं जोयणस्स जे से उवरिल्ले गाउए तस्सणं गाउयस्स जे से उवरिल्ले छब्भागे एत्थणं सिद्धा भगवंतो सादिया अपज्जवसिया अणेगजातिजरामरणजो



शप्रहान्या परिहीयमाना सर्वेषु चरिमान्तेषु मक्षिकापत्रतोप्यतितन्वी अंगुलासंख्येयभागं बाहल्येन प्रज्ञप्ता, ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्या द्वादश नामधेयानि भवन्तीति तद्यथा-ईषदिति वा ईषत्प्राग्भारेति वा तन्वीति वा तनुतरीति वा सिद्धिरिति वा सिद्धालय इति वा मुक्तिरिति वा मुक्तालय इति वा लोकाग्र इति वा लोकाग्रस्तूपिकेति वा लोकाग्रप्रतिवाहिनीति वा सर्वप्राणभूतजीवसत्वसुखावहा इति वा सार्वेषत्प्राग्भारा पृथिवी श्वेता शङ्खदलविमलसौक्तिकमृणालदकरजस्तुषारगोक्षीरहारधवला उत्तानकछत्रसंस्थानसंस्थिता सर्वार्जुनस्वर्णमयी अच्छा श्लक्ष्णा लष्टा घृष्टा मृष्टा नीरजा निर्मला निष्पङ्का निष्कण्टकच्छाया सप्रभा सश्रीका सोद्योता प्रासादीया दर्शनीया अभिरूपा प्रतिरूपा ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्या निःश्रेयसगत्या योजने लोकान्त खस्य च योजनस्य यदुपरितनं गव्यूतं तस्य गव्यूतस्य यदुपरितनं षड्भागं यत्र सिद्धा भगवन्तः सादिका अपर्यवसिता अनेकजा

निसंसारकलंकलीभावपुणब्भवगब्भवासवसही एवंते समइक्कंता सासयमणागयद्धं कालं चिट्ठंति, तत्थवियते अवेदा अवेयणाणिम्ममा असंगायसंसारविप्पमुक्का । पदेसनिव्वत्तिसंठाणा ॥ १ ॥ कहिंपडिहयासिद्धा कहिं सिद्धापडिठिया । कहिंबोंदीचइत्ताणं कहंगंतूणसिज्झइ ॥ १ ॥ अलोएपडिहयासिद्धा लोयग्गेयपइठिया । इहबोंदीचइत्ताणं तत्थगंतूणसिज्झइ ॥ २ ॥ दीहंवाहस्संवा जंचरिमभवेहविज्जसंठाणं । तत्तोतिभागहीणा सिद्धाणोगाहणाभणिया ॥ ३ ॥ संठाणंतुइहं भवंचयंतस्सचरमसमयम्मि । आसीयपदेसघणं तंसंठाणंतहिं तस्स ॥ ४ ॥ तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोयहोइनायव्वो । एसाखलुसिद्धाणं उक्कोसोगाहणाभणिया ॥ ५ ॥ चत्तारिरयणीउ रयणितिभागूणियायबीधव्वा । एसाखलुसिद्धाणं मज्झिमोगाहणाभणिया ॥ ६ ॥ एगाय होइरयणी अठेवयअंगुलाइसाहियाईया । एसाखलुसिद्धाणं जहन्नोगाहणाभणिया ॥ ७ ॥ ओगाहणाएसिद्धा भवतिभागेणहोइपरिहीणा । संठाणमणित्थंत्थ जंजरामरणविप्पमुक्काणं ॥ ८ ॥ जत्थयएगोसिद्धो तत्थअणं

---

तिजरामरणयोनिसंसारकलंकलीभावपुनर्भवगर्भवसति रेवं च समतिक्रान्ताः शाश्वतमनागताद्धां कालं तिष्ठन्ति, तत्रापि च ते अवेदा अवेदना निर्ममा असङ्गाश्च । संसारविप्रमुक्ताः प्रदेशनिर्वृत्तसंस्थानाः ॥१॥ केनप्रतिहताःसिद्धाः केनासिद्धाः प्रतिष्ठिताः । क्वचबोंदिंतथात्यक्त्वा गत्वासिध्यन्तिक्वाथते ॥१॥ अलोकेप्रतिहताःसिद्धा लोकाग्रेचप्रतिष्ठिताः । इहैवबोंदिंत्यक्त्वाते गत्वासिध्यन्तितत्रतु ॥ २ ॥ दीर्घंवाह्रस्वंवा यच्चरमभवे भवेत्तुसंस्थानं । ततस्त्रि भागहीनाः सिद्धानामवगाहनाभणिता ॥ ३ ॥ यत्संस्थानमिह भवंचत्यजतश्चरमसमयेच । आसीत्प्रदेशघनं तत्संस्थानं तत्रतस्यैव ॥ ४ ॥ त्रीणिशतानि त्रयस्त्रिं-शद्धनुस्त्रिभागो भवतित्वातव्यः, एषाखलुसिद्धाना मुत्कृष्टावगाहनाभणिता ॥ ५ ॥ चतस्रोरत्नयः रत्निश्चत्रिभागोनाबोद्धव्या । एषाखलुसि द्धानां मध्यमावगाहनाभणिता ॥ ६ ॥ एकाचभवतिरत्नि रष्टावयचाङ्गुलानिसाधिकानिस्युः । एषाखलु सिद्धानां जघन्यावगाहना भणिता ॥ ७ ॥

॥ मूल ॥

तानवरकयविमुक्का । अन्नोन्नसमोगाढा पुट्ठासव्वेविलोयंते ॥ ९ ॥ फुसइअणंतेसिद्धे सव्वपएसेहिंनियमसो सिद्धा । तेविअसंखेज्जगुणा देसपदेसेहिंजेपुट्ठा ॥ १० ॥ असरीराजीवघणा उवउत्तादंसणेयनाणेय । सागा रमणागारं लक्कणमेयंतुसिद्धाणं ॥ ११ ॥ केवलणाणुवउत्ता जाणंतीसव्वभावगुणभावे । पासंतिसव्वओखलु केवलदिट्ठीहिंणंताहिं ॥१२॥ नविअत्थिमानुसाणं तंसोक्खंनत्थिसव्वदेवाणं । जंसिद्धाणंसुक्खं अव्वाबाहंउवग याणं ॥ १३ ॥ सुरगणसुहंसमत्तं सव्वद्धापिंडियंअणंतगुणं । नविपावइमुत्तिसुहं णंताहिंवग्गवग्गूहिं ॥ १४ ॥ सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिंडिएजइहविज्जा । सोनंतवग्गभइउ सव्वागासेणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामको इमिच्छो नगरगुणंबहुविहंविजाणंतो । णवएइपरिकहेउं उवमाएतहिंअसंतीए ॥१६॥ इयसिद्धाणंसोक्खं अ णोवमंनत्थितस्सतंवम्मं । किंचिविसेसेणिंतो सारिक्कमिणंसुणहवोत्थं ॥ १७ ॥ जहसव्वकामगुणियं पुरिसो

---

अवगाहनयासिद्धाः भवत्रिभागेन भवन्तिपरिहीणाः । संस्थानमनित्थंस्थं यज्जरामरणविप्रमुक्तानाम् ॥ ८ ॥ यत्रैकःसिद्ध स्तत्रानन्ताभवक्षयविमुक्ताः । अन्योन्यसमवगाढाः स्पृष्टाः (लग्नाः) सर्वेपिलोकान्ते ॥ ९ ॥ स्पृशत्यनन्तान्सिद्धान् सर्वप्रदेशैर्नियमशःसिद्धाः । तेप्यसंख्येयगुणा देशप्रदेशैश्चयेस्पृ ष्टाः ॥ १० ॥ अशरीराजीवघना उपयुक्तादर्शने तथाज्ञाने । साकारानाकारं लक्षणमेतत्तुसिद्धानाम् ॥ ११ ॥ केवलज्ञानोपयुक्ता जानन्तिचसर्वभावगु णभावान् । पश्यन्तिसर्वतःखलु केवलदृष्टिभिरनन्ताभिः ॥ १२ ॥ नैवास्तिमनुष्याणां तत्सौख्यंनास्तिसर्वदेवानां । यत्सिद्धानां सौख्यमव्याबाधामुपग तानाम् ॥ १३ ॥ सुरगणसुखंसमस्तं सर्वाद्धापिण्डितमनन्तगुणम् । नप्राप्नोतिमुक्तिसुखं अनन्तैर्वर्गै श्चवर्गितंसदपि ॥ १४ ॥ सिद्धस्यसुखराशिः सर्वा द्धापिण्डितोयदि भवेत् । सोनन्तवर्गभक्तः सर्वाकाशेनोमातितत्सौख्यम् ॥ १५ ॥ म्लेच्छःकश्चित्प्राप्य यथाहिविजानन्बहून्नगरगुणान् । परिकथयितुंन क्रो त्युपमायास्तत्रचाभावात् ॥ १६ ॥ इतिसिद्धानांसौख्य मनुपमंनास्तितस्यचोपम्यम् । किञ्चिद्विशेषणतोस्य सादृश्यं शृणुतवक्ष्यमाणमिदम् ॥ १७ ॥

॥ अ० ॥

नोत्तूणनोयणंकोइ । तण्हाछुहाविमुक्को अच्छिज्जजहाअमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्वकालतित्ता अउलंनिव्वाणमुवगयासिद्धा । सासयमव्वाबाहं चिठंतिसुहीसुहंपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धतियबुद्धतिय पारगतत्तियपरंपरगतत्ति । उम्मुक्ककम्मकवया अजराअमराअसंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नसव्वदुक्खा जातिजरामरणबंधणविमुक्का । अव्वाबाहंसुक्खं अणुहोंतीसासयंसिद्धा ॥ २० ॥ बितियं पदं समत्तं ॥ २ ॥

दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदंसण संजयउवउगआहारे ॥ १ ॥ भासगपरित्तपज्ज त्तसुहुमसण्णीयभवत्थिसेचरिमे । जीवयखेत्तंबंधे पुग्गलमहदंडएचेव ॥ २ ॥ दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया दाहिणेणं उत्तरेणं विसेसाहिया पुरच्छिमेणं विसेसाहिया पच्चच्छिमेणं विसेसा

---

यथासर्वकामगुणितं पुरुषोभुक्त्वाभोजनं कोपि । तृषयाक्षुधाविमुक्त स्तिष्ठतिसोथाह्यमृततृप्तः ॥ १८ ॥ इतिसर्वकालतृप्ता ह्यतुलंनिर्वाणमुपगताःसिद्धाः । शाश्वतमव्याबाधं तिष्ठन्तिसुखिनःसुखंप्राप्ताः ॥ १९ ॥ सिद्धाइतिबुद्धाइति पारगताइतिपरम्परगता श्च । उन्मुक्तकर्मकवचा अजराअमराअसंगाश्च ॥ २० ॥ निस्तीर्णसर्वदुःखा जातिजरामरणबन्धनविमुक्ताः । अव्याबाधंसौख्य मनुभवन्तिशाश्वतंसिद्धाः ॥ २१ ॥ इति श्री रामचन्द्रगणि शिष्यनानकचन्द्रर्षि विरचिते प्रज्ञापनानुवादे द्वितीयं पदं समाप्तम् ॥ २ ॥ * ॥ * ॥

दिक्चगतीन्द्रियकाया योगोवेदःकषायलेश्यश्च । सम्यक्त्वज्ञानदर्शन संयतोपयोगौतथाहारः ॥ १ ॥ भाषकपरीतपर्याप्तसूक्ष्मसञ्ज्ञीभवास्तिचरमाणि । जीवःक्षेत्रंबन्धः पुद्गलंमहादण्डकश्चस्युः ॥ २ ॥ दिगनुपातेन ( दिशोधिकृत्येत्यर्थः ) सर्वस्तोका जीवाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पृथिवीकायिका दक्षिणेनोत्तरेण च विशेषाधिकाः पूर्वेण विशेषाधिकाः पश्चिमेन

हिया दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिणुत्तरेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया । दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया, एवं चउरिंदियावि, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्ज गुणा, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा रयणप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं दाहिणेणं असंखे

---

विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका अप्कायिकाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका स्तेजस्कायिका दक्षिणेन पूर्वेण विशेषाधिकाः पश्चिमेन विशेषाधिकाः' दिगनुपातेन सर्वस्तोका वायुकायिकाः पूर्वेण पश्चिमेन विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः । दिगनुपातेन सर्वस्तोका वनस्पतिकायिकाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन द्वीन्द्रियाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रियाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिका दक्षिणेनोत्तरेण च विशेषाधिकाः' एवं चतुरिन्द्रिया अपि । दिगनुपातेन सर्वस्तोका नैरयिकाः पूर्वेण पश्चिमेनोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमेनोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपा

जागुणा , दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असं खेज्जगुणा । दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा णेरइया वालुयप्पभापुढविपुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असं खिज्जगुणा । दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा पंकप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखे ज्जगुणा । दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा धूमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्ज गुणा । दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा अहे सत्तमापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेहिंतो अहे सत्तमापुढ विनेरइएहिंतो छठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असं खेज्जगुणा, दाहिणिल्लेहिंतो तमापुढविनेरइएहिंतो पंचमाधूमप्पभाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिम

---

तेन सर्वस्तोकाः शर्कराप्रभपृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका नैरयिका वालुकप्रज्ञापृथिवीनैरयिका पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेना संख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पङ्कप्रज्ञपृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका धूमप्रज्ञपृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेना संख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका स्तमःप्रज्ञपृथिवीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरे ण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका अधःसप्तमापृथ्वीनैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेण दाक्षिणात्येभ्यो धःसप्तमापृथिवीनैरयिकेभ्यः षष्ठ्या स्तमायाः पृथिव्या नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यस्तमापृथिवीनैरयिकेभ्यः पञ्चमाया धूमप्रज्ञा याः पृथिव्या नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यो धूमप्रज्ञापृथिवीनैरयिकेभ्य श्चतुर्थ्याः पङ्कप्रज्ञायाः पृ थिव्या नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यः पङ्कप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्य स्तृतीयाया वालुकाप्रज्ञपृथिवी

उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढविणेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो पंकप्पभापुढविनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पभाए पुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढविणेरइएहिंतो वीयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो सक्करप्पभापुढविणेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणिल्लेणं असंखेज्जगुणा, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा मनुस्सा दाहिणउत्तरेणं पुरच्छिमेणं संखेज्जगुणा । पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया । दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासी देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा

---

नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यो वालुकाप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्योद्वितीयायाः शर्कराप्रभपृथिव्या नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दाक्षिणात्येभ्यः शर्कराप्रभपृथिवीनैरयिकेभ्यस्तृतीयायाः पृथिव्या नैरयिकाः पूर्वपश्चिमोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेना संख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाः पश्चिमेन पूर्वेण विशेषाधिकाः, दक्षिणेन विशेषाधिकाः, उत्तरेण विशेषाधिकाः । दिगनुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिणोत्तरेण संख्येयगुणाः पूर्वेण पश्चिमेन विशेषाधिकाः । दिगनुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवाः पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन वानव्यन्तरा देवाः पूर्वपश्चिमेन विशेषाधि

वाणमंतरादेवा पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया, दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं विसेसाहिया, दिसानुवाणं सव्वत्थोवा देवा सणंकुमारेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणं, उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया। दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसानुवाएणं लंतए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसानुवाएणं सव्वत्थोवा देवा महासुक्के कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असं

---

काः उत्तरेण विशेषाधिका दक्षिणेन विशेषाधिकाः। दिगनुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिका देवाः पूर्वपश्चिमेन दक्षिणेन विशेषाधिका उत्तरेण विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवाः सौधर्मे कल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा ईशाने कल्पे पूर्वपश्चिमेनोत्तरेणा संख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवाः सनत्कुमारे कल्पे पूर्वपश्चिमेणोत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा माहेन्द्रे कल्पे पूर्वपश्चिमत उत्तरेणासंख्येयगुणा दक्षिणेन विशेषाधिकाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका ब्रह्मदेवलोके देवाः पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा लान्तके कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासं

खेज्जगुणा दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखे० तेण परं बहुसमोववन्नगा समणाउसो! दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणं पुरच्छिमेणं संखेज्जगुणा, पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया दारं १। एएसिणं भंते! नेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाणय पंचगइसमासेणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सा नेरइया असंखेज्जगुणा देवा असंखेज्जगुणा सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अनंतगुणा। एएसिणं भंते! णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं मणुस्साणं मणुस्सीणं देवाणं सिद्धाणय अट्ठगतिसमासेणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवा मणुस्सीओ मणुस्सा असंखेज्जगुणा। णेरइया असंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणा

---



ख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवा महाशुक्रे कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, दिगनुपातेन सर्वस्तोका देवाः सहस्रारे कल्पे पूर्वपश्चिमोत्तरेण दक्षिणेनासंख्येयगुणाः, तेन परं बहुसमोपपन्नकाः श्रमणायुष्मन्! दिगनुपातेन सर्वस्तोकाः सिद्धा दक्षिणोत्तरेण पूर्वेण संख्येयगुणाः पश्चिमेन विशेषाधिकाः, द्वारम्। १। एतेषां भदन्त! नैरयिकाणां तिर्यग्योनिकानां मनुष्याणां देवानां सिद्धानाञ्च पञ्चगतिसमासेन कतरे कतरेभ्योल्पा वा बहुका वा तुल्यावा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोका मनुष्या नैरयिका असंख्येयगुणा देवा असंख्येयगुणाः सिद्धा अनन्तगुणाः तिर्यग्योनिका अनन्तगुणाः। एतेषां भदन्त! नैरयिकाणां तिर्यग्योनिकानां तिर्यग्योनिकीनां मनुष्याणां मानुषीणां देवानां सिद्धानां चाष्टगतिसमासेन कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोका मानुष्यो मनुष्या असंख्येयगुणाः नैरयिका असंख्येयगुणा स्तिर्यग्योनिक्योऽसंख्येयगुणा देवा असंख्येयगुणा देव्यः संख्येयगुणाः सिद्धा अनन्तगुणा स्तिर्यग्योनिका अनन्तगुणाः। द्वारम्। २॥ ए

नं । देवा असंखेज्जगुणा । देवीउ संखेज्जगुणाउ सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा दारं २ । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अणिंदियाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदिया विसेसाहिया बेइंदिया विसेसाहिया अणिंदिया अणंतगुणा एगिंदिया अ० सइंदिया वि० । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे

---

तेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पञ्चेन्द्रियाणामनिंद्रियाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रिया चतुरिन्द्रिया विशेषाधिका त्रीन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया विशेषाधिका अनिन्द्रिया अनन्तगुणा एकेन्द्रिया अनन्तगुणाः सेन्द्रिया विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पंचेंद्रियाणामपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तका चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका त्रीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणाः सेन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणामेकेन्द्रियाणां द्वीन्द्रियाणां त्रीन्द्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पंचेंद्रियाणां पर्या

॥ मूल ॥

कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पज्जत्तगा चउरिंदिया पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! सइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्ता पज्जत्तगा सइंदिया संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! एगिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया पज्जत्तगा एगिंदिया अपज्जत्तगा असं०। एएसिणं भंते ! बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्ता बेइंदिया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा तेइंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते !

॥ प० ॥

प्रकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्याप्तकाश्चतुरिन्द्रियाः पञ्चेंद्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका स्त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका एकेन्द्रियाः पर्याप्तका अनन्तगुणाः सेन्द्रियाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः। एतेषां भदन्त ! सेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सेन्द्रिया अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः सेन्द्रियाः संख्येयगुणाः। एतेषां भदन्त ! एकेन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ गौतम ! सर्वस्तोका एकेन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः। एतेषां भदन्त ! द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः, एतेषां भदन्त ! त्रीन्द्रियाणां पर्याप्तकापर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ सर्वस्तो

चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा चउरिंदिया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! पंचेंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्तगा पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया विसेसाहिया दारं ३ । एएसिणं भंते ! सकाइ

---

कास्त्रीन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! चतुरिन्द्रियाणां पर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ गौतम ! सर्वस्तोका श्चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! पंचेंद्रियाणां पर्याप्तकापर्या० कतरे० ऽल्पा वा ४ गौतम ! सर्वस्तोकाः पंचेंद्रियाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सेंद्रियाणामेकेंद्रियाणां द्वींद्रियाणां त्रींद्रियाणां चतुरिन्द्रियाणां पंचेंद्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे० अल्पा वा ४ गौतम ! सर्वस्तोका श्चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तकाः पचेंद्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिका द्वींद्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिकाः त्रींद्रियाः पर्याप्तका विशेषाधिकाः पंचेंद्रिया अपर्याप्तका असंख्येयगुणा श्चतुरिन्द्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका स्त्रींद्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका द्वींद्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेंद्रिया अपर्याप्तका अनन्तगुणाः सेंद्रिया अपर्याप्तका विशेषाधिका एकेंद्रियाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः सेंद्रियाः

याणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं अकाइयाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया अकाइया अणंतगुणा, वणस्सइकाइया अणंतगुणा, सकाइया विसेसाहियावा । एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणय अपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा । सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया



पर्याप्तका विशेषाधिकाः । द्वारम् । ३ । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पृथिवीकायिकानां अप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायिकानामकायिकानां कतरे कतरेभ्यो ऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकास्त्रसकायिका स्तेजस्कायिका असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिका विशेषाधिका अकायिका अनन्तगुणा वनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः सकायिका विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सकायिकानां पृथिवीकायिकानां अप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायिकानामपर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोकास्त्रसकायिका अपर्याप्तका स्तेजस्कायिका अप० असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका अ० विशेषाधिका अप्कायिका अ० विशेषाधिका वायुकायिका अप० विशेषाधिका वनस्पतिकायिका अप० अनन्तगुणाः सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त । सकायिकानां पृथिवीकायिकानां अप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायि

॥ मूल ॥

एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणय पज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता अणंतगुणा, सकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! आउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आउकाइया अप

॥ अ० ॥

कानां च पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका त्रसकायिकाः पर्याप्तका स्तेजस्कायिकाः पर्या० असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका विशेषाधिका अप्कायिका विशेषाधिका वायुकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका वनस्पतिकायिकाः पर्याप्तका अनन्तगुणाः सकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिकाः। एतेषां भदन्त ! सकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः। एतेषां भदन्त ! पृथिवीकायिकानां पर्याप्तकापर्याप्तकानां कतरे २ भ्यो अल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पृथिवीकायिका अपर्या० पर्या० संख्येयगुणाः। एतेषां भदन्त ! पर्या० अपर्या० अप्कायिकानां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका अप्कायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः। एतेषां भदन्त ! तेजस्कायिकानां पर्या० अपर्या० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका स्तेजस्का

जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! तेउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा एएसिणं भंते ! वाउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! वणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! तसकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जा० । एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गो० ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अ

---

यिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! वायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका वायुकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! वनस्पतिकायिकानां पर्या० २ नां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! त्रसकायिकानां पर्याप्ता २ नां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकास्त्रसकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सकायिकानां पृथिवीकायिकानामप्कायिकानां तेजस्कायिकानां वायुकायिकानां वनस्पतिकायिकानां त्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुकावा तुल्या वा विशेषाधिका वा ?

पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, आप्पकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अपज्जत्तगा वण० अनन्त० पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा सकाइया विसेसाहिया। एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमणिगोयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया सुहुमआउकाइया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया। एएसिणं भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुमवाउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुम

---

गौतम ! सर्वस्तोकास्त्रसकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणा स्तेजस्कायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः पृथिवीकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका अप्कायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका वायुकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिका स्तेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पृथिवीकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका अप्कायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका वायुकायिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका अपर्याप्तका वनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः सकायिका अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः

वणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुमनिगोदाणं अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुक्ष्मपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुक्ष्मआउका० अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुक्ष्मवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुक्ष्मनिगोदा अपज्जत्तगा अ संखेज्जगुणा, सुक्ष्मवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुक्ष्मा अपज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिणं भंते ! सुक्ष्मपज्जत्तगाणं सुक्ष्मपुढविकाइयपज्जत्तगाणं सुक्ष्मआउकाइयपज्जत्तगाणं सुक्ष्मतेउकाइयपज्ज त्तगाणं सुक्ष्मवाउकाइयापज्जत्तगाणं सुक्ष्मवणस्सइकाइयापज्जत्ताणं सुक्ष्मनिगोदपज्जत्तगाणय कयरे कय रेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुक्ष्मतेउकाइया पज्जत्तगा, सुक्ष्मपुढविकाइयापज्जत्तगा वि सेसाहिया, सुक्ष्मआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुक्ष्मवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुक्ष्म मनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुक्ष्मवस्सइकाइयापज्जत्तंया अणंतगुणा, सुहुमापज्जत्ता विसेसा हिया दारं ३ । एएसिणं भंते ! सुहुमाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? सव्वत्थोवा सुहुमा

---

सूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः सूक्ष्मा विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मापर्याप्तकानां सूक्ष्मपृथिवीकायिका पर्याप्तकानां सूक्ष्माप्कायिकापर्याप्तानां सूक्ष्मतेजस्कायापर्याप्तकानां सूक्ष्मापर्याप्तवायुकायिकानां सूक्ष्मापर्याप्तवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मापर्या प्तनिगोदानां कतरे २ भ्योऽल्पावा ? गौतम । सर्वस्तोकाः सूक्ष्मापर्याप्ता स्तेजस्कायिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अ० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका अ० विशेषाधिकाः सूक्ष्मनिगोदा अ० असंख्यगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अ० अनन्तगुणाः सूक्ष्मा अप० विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मपर्याप्तकानां सूक्ष्मपृथिवीकायपर्याप्तानां सूक्ष्माप्कायिकपर्या०कानां सूक्ष्मतेजस्कायिकपर्या०कानां सू

अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया , सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमवाउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे२ हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा

---

दमवायुकायिकपर्या०कानां सूक्ष्मवनस्पतिकायपर्या०कानां सूक्ष्मनिगोदप०कानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः प० सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः प० विशेषाधिकाः सूक्ष्मनिगोदाः प० असंख्यगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः प० अनन्तगुणाः सूक्ष्माः पर्या०काः विशेषाधिकाः । द्वारम् । ४ ॥ एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां पर्या०पर्याप्तानां कतरे कतरेभ्यो ऽल्पावा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्या०काः सूक्ष्माः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्या०काः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्या०काः संख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माप्कायानामपर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अप्कायिका अप० पर्या०काः संख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मतेजस्कायपर्या०अप०कानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका अप० पर्या०काः संख्युगुणाः । एतेषां सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मापर्या०का वायुकायिकाः पर्याप्ताः

संखेज्ज० । एएसिणं भंते! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुक्ष्मवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुक्ष्मवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमनिगोदाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुक्ष्मनिगोदा अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुक्ष्माणं सुक्ष्मपुढविकाइयाणं सुहुम आउकाइयाणं सुक्ष्मतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा सुक्ष्मतेउकाइया अपज्जत्तया, सुक्ष्मपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुक्ष्मवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुक्ष्मआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुक्ष्मनिगोदा अणंतगु

---

संख्येयगुणाः । एतेषां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्तकाः पर्या०काः संख्येयगुणाः, एतेषां सूक्ष्मनिगोदानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मनिगोदा अपर्या० काः पर्या०काः संख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्म वनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानाञ्च पर्या०पर्या०कानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेधस्कायिका अपर्याप्ताः सूक्ष्म पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिका अप० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिका अप० विशेषाधिकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्या० काः संख्यगुणाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्माप्कायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्या० विशेषाधिकाः सूक्ष्म

णा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुक्ष्मा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुक्ष्मा पज्जत्तगा विसेसाहिया । एएसिणं भंते ! बादरगाणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा बायरनिगोया असंखेज्जगुणा , बादरपुढविकाइया असंखिज्जगुणा , बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया, एएसिणं भंते ! बादरापज्जत्तगाणं बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगाणं बादरआउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरतेउकाइयाअपज्जत्तगाणं बादरवाउकाइया अपज्जत्तणाणं बादरवणस्सइया अपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं बादरनि

---

निगोदा अप० असंख्यगुणाः सूक्ष्मनिगोदाः पर्या० सङ्ख्येयगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अप०का अनन्तगुणाः सूक्ष्मा अपर्या०का विशेषाधिकाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्या० संख्यगुणाः सूक्ष्माः पर्या०का विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त । बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका बादरतेजस्कायिका असंख्यगुणाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा बादरनिगोदा असंख्यगुणा बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा बादराप्कायिका असंख्यगुणा बादरवायुकायिका असंख्यगुणा बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा बादरा विशेषाधिकाः । एतेषां भदन्त । बादरपर्या०कानां बादरापर्या०पृथिवीकायिकानां बादरापर्या० अप्कायिकानां

॥ मूल ॥

गोदा अपज्जत्तगाणं बादरतसकाइयाअपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरअपज्जत्तगा विसेसाहिया २ । एएसिणं भंते ! बादरपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तयाणं, बादरआउकाइयाणं पज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयापज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयापज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया प

॥ अ० ॥

वादरापर्या० तेजस्कायिकानां वादरापर्या० वायुकायिकानां वादरापर्याप्तवनस्पतिकायिकानां वादरापर्या० प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिकानां वादरनिगोदानामपर्या०कानां वादरापर्या० त्रसकायिकानां कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका वादरत्रसकायिका अपर्या०का वादरतेजस्कायिका अप० असंख्येयगुणाः प्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका अप० असंख्येयगुणा वादरनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणा वादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्यगुणा वादराप्कायिका अप० असंख्यगुणा वादरवायुकायिका अप० असंख्यगुणा वादरवनस्पतिकायिका अपर्या० अनन्तगुणा वादरापर्या०का विशेषाधिकाः । २ । एतेषां अप० । वादरपर्या०कानां वादरपृथिवीकायपर्याप्तकानां पर्याप्तवादराप्कायानां पर्या० वादरतेजस्कायिकानां पर्याप्तवादरवायुकायानां पर्याप्तवादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तवादरनिगोदानां पर्याप्तवादरत्रस

जत्तया , बादरतसकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादर आउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइ या पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरा पज्जत्तगा विसेसाहिया ३ । एएसिणं भंते ! बादराणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुगावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तगा । बा दरा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा १ । बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा अ संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! बादरआउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तगा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते !

---

कायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्याप्तबादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तबादरत्रसकायिका असंख्यगुणाः पर्याप्तप्रत्येक शरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः पर्याप्तबादरनिगोदाः असंख्यगुणाः पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणाः पर्याप्तबादराप्कायिका अ संख्यगुणाः पर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्यगुणाः पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा बादराः पर्याप्तका विशेषाधिकाः । ३ । एतेषां भद न्त । बादराणां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम ! सर्वस्तोका बादराः पर्याप्तका अपर्या० असंख्यगुणाः । एतेषां भद० । बा दरपृथिवीकायिकानां पर्या०पर्या०कानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्तकाः १ बादरपृथिवीका यिका अपर्याप्तका असंख्यगुणाः । एतेषां भदन्त । बादराप्कायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका बादराप्का

बादरतेउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! बादरवाउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा । बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! बादरनिगोदाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तगा । बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ।

---

यिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरतेजस्कायानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरवायुकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरवायुकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तकानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरनिगो

एएसिणं भंते ! बादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया पज्जत्तगा । बादरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा४ । एएसिणं भंते ! बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा २ । बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३ । बादरपत्तेयवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ४ । बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्ज० ५ । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ६ । बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्ज

---

दानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरनिगोदाः पर्याप्तका अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! बादरत्रसकायानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तका बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः । ४ । एतेषां भदन्त ! बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः १, बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तका असंख्यगुणाः २ । बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ३ । पर्याप्तबादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ४ । पर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणाः ५ । पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः ६ । पर्याप्तबादराप्कायिका असंख्यगुणाः ७ । पर्याप्तबादरवायुकायिका असंख्यगुणाः ८ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः ९ ।

त्तगा असंखेज्जगुणा ८ । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १० । बादरनिगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ११ । बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १२ । बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १३ । बादरवाउकाइया अप० असंखेज्जगुणा १४ । बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५ । बादरपज्जत्तगा विसेसाहिया १६ । बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १७ । बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९ । बादरा विसेसाहिया २० । एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणरसइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवण

---

अपर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १० । अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणाः ११ । अपर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणाः १२ । अपर्या०बादराप्कायिका असंख्यगुणाः १३ । अपर्या०बादरवायुकायिका असंख्यगुणाः १४ । पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १५ । पर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः १६ । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १७ । अपर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः १८ । बादरा विशेषाधिकाः १९ । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायिकानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका बादरत्रसकायिकाः १ । बादरतेजस्कायिका असंख्यगुणाः २ । प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः ३ । बादरनिगोदा असंख्यगुणाः ४ । बाद

स्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा१ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया १ । बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा असंखिज्जगुणा । बादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा ५ । बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा । सुक्ष्मतेउकाइया असंखेज्जगुणा । सुक्ष्मपुढविकाइया विसेसाहिया । सुक्ष्मआउकाइया विसेसाहिया । सुक्ष्मवाउकाइया विसेसाहिया । सुक्ष्मनिगोदा असंखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया । सुक्ष्मवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा १५ । सुक्ष्माविसेसाहिया १ । एएसिणं भंते ! सुक्ष्मअपज्जयाणं सुक्ष्मपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुक्ष्म आउकाइया अपज्जत्तयाणं सुक्ष्मतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुक्ष्मवाउकाया अपज्जत्तयाणं सुक्ष्मवण स्सइकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुक्ष्मनिगोदा अपज्जत्तयाणं बादरा अपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइया अप

---

रपृथिवीकायिका असंख्यगुणाः ५ । बादराप्कायिका असंख्यगुणाः ६ । बादरवायुकायिका असंख्यगुणाः ७ । सूक्ष्मतेजःकायिका असंख्यगुणाः ८ । सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः ९ । सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः १० । सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः ११ । सूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणाः १२ । बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः १३ । बादरा विशेषाधिकाः १४ । सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १५ । सूक्ष्मा विशेषाधिकाः १६ । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मापर्याप्तकानां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां अपर्याप्तकानां सूक्ष्माप्कायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मवा युकायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानां सूक्ष्मनिगोदानामपर्याप्तानां बादरापर्याप्तकानामपर्या०बादरपृथिवीकायिकानामपर्या प्तबादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानामपर्याप्तकानामपर्याप्तबादरवायुकायिकानामपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानामपर्याप्तप्रत्येकशरीर बादर

जत्तयाणं बादरआउकाइयअपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयाअपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयअपज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयअपज्जत्तयाणं बादरनिगोदा अपज्जत्तयाणं बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ३ । बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखे० ६ । बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुक्ष्मतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । सुक्ष्मपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ९ सुक्ष्मआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १० । सुक्ष्मवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुक्ष्म निगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरा अपज्जत्तगा

---

वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तबादरनिगोदाना मपर्याप्तबादरत्रसकायिकानाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका अपर्याप्तबादरत्रसकायिकाः १ । अपर्याप्तबादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः २ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः ३ । अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणाः ४ । अपर्याप्तबादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणाः ५ । अपर्याप्तबादराप्कायिका असंख्यगुणाः ६ । बादरवायुकायिका अपर्याप्तका असंख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्यगुणाः अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः ९ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः १० । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः ११ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणा अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणा बादरा अपर्याप्तका विशेषाधिका अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणा अपर्याप्तकाः सूक्ष्मा विशेषाधिकाः २ । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मपर्याप्तकानां

विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया २। एएसिणं भंते! सुहुमपज्जत्तयाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमनिगोयपज्जत्तयाणं बादरपज्जत्तगाणं बादरपुढविकाइयपज्जत्तयाणं बादरआउकाइयपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तगा। बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तया असं० बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। सुहुमतेउकाइ

---

सूक्ष्मपृथिवीकायिकपर्या०कानां पर्याप्तसूक्ष्माप्कायिकानां पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिकानां पर्या०सूक्ष्मवायुकायिकानां पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां पर्या०सूक्ष्मनिगोदानां बादरपर्या०कानां पर्या०बादरपृथिवीकायिकानां पर्या०बादराप्कायिकानां पर्या०बादरतेजस्कायिकानां पर्या०बादरवायुकायिकानां पर्या०बादरवनस्पतिकायिकानां पर्या०प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां पर्या०बादरनिगोदानां पर्या०बादरत्रसकायिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोकाः पर्या०बादरतेजस्कायिकाः पर्या०बादरत्रसकायिका असंख्यगुणाः पर्या०प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः पर्या०बादरनिगोदा असंख्यगुणाः पर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणाः पर्या०बादराप्कायिका असंख्यगुणाः पर्या०बादरवायुकायिका असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः पर्या०सूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः पर्या०सूक्ष्म

या पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। सुहुमनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा, बादरपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखगुणा। सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया ३। एएसिणं भंते! सुहुमाणंबादराणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तया, बादरा अपज्जत्तगा असंखगुणा सुहुमा अपज्जत्तगा असंखगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा संखगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमपुढविकाइयाणं बादरपुढविकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तया बादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमआउकाइयाणं बादरआउ

---

वायुकायिका विशेषाधिकाः पर्या०सूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणाः पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः पर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः सूक्ष्माः पर्या०का विशेषाधिकाः ३। एतेषां भदन्त! सूक्ष्माणां बादराणाञ्च पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोका बादराः पर्या०का अपर्या०का बादरा असंख्यगुणाः सूक्ष्मा अपर्या०का असंख्यगुणाः सूक्ष्माः पर्या०काः संख्यगुणाः। एतेषां भदन्त! सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां बादरपृथिवीकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोकाः पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका अपर्या०बादरपृथिवीकायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिका असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः संख्यगुणाः। एतेषां भदन्त! सूक्ष्माप्कायिकानां बादराप्कायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम! सर्वस्तोकाः पर्या०बादराप्का

काइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तया बादरआउकाइय अपज्जत्तया असंखगुणा, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया असंखगुणा, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया, बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखगुणा, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमवाउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पाबा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्जत्तया बादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखगुणा । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया असंखे० । सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया असंखगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा !

---

यिका अपर्या०बादराप्कायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्माप्कायिका असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्माप्कायिकाः संख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मतेजस्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्या०बादरतेजस्कायिका अपर्या०बादरतेजस्कायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्मतेजस्कायिकाः संख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मवायुकायिकानां बादरवायुकायिकानां च पर्या०प० कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्या०बादरवायुकायिका अपर्या०बादरवायुकायिका असंख्यगुणा अपर्या०सूक्ष्मवायुकायिका असंख्येयगुणाः पर्या०सूक्ष्मवायुकायिका असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां पर्या०पर्या०नां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः पर्या०बादरवनस्पतिकायिका अपर्या०बादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा

सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा। सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमनिगोदाणं बादरनिगोदाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तया, बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे०, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा ४। एएसिणं भंते! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतस्सकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १। बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखगुणा २

---

अपर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः पर्या०सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः सङ्ख्येयगुणाः। एतेषां भदन्त। सूक्ष्मनिगोदानां बादरनिगोदानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम। सर्वस्तोकाः पर्या०का बादरनिगोदा अपर्याप्तबादरनिगोदा असंख्यगुणा अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणाः पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदाः संख्यगुणाः। एतेषां भदन्त। सूक्ष्माणां सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां सूक्ष्माप्कायानां सूक्ष्मतेजस्कायिकानां सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानां सूक्ष्मवायुकायिकानां सूक्ष्मनिगोदानां बादराणां बादरपृथिवीकायिकानां बादराप्कायिकानां बादरतेजस्कायिकानां बादरवायुकायिकानां बादरवनस्पतिकायिकानां प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकानां बादरनिगोदानां बादरत्रसकायिकानां पर्याप्तापर्याप्तानां कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४? गौतम। सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः १। पर्याप्तबादरत्रसकायिका असंख्येयगुणाः २। अपर्याप्तबादरत्रसकायिका

बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३ । पत्तेयसरीबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखिज्ज गुणा ४ । बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ५ । बायरपुढविकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगेणा ६ । बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ८ । बादरतेउ काइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीवादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्ज० १० । बादनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० ११ । बादरबाउकाइया अपज्जत्ता असंखे० १२ । बादरआउका इया अपज्जत्तया असंखे० १३ । बादरबाउकाइया अपज्जत्ता असंखे० १४ । सुक्ष्मतेउकाइया अपज्जा त्तया असंखेज्जगुणा १५ । सुक्ष्मपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १६ । सुक्ष्मआउकाइया अप ज्जत्तगा विसेसाहिया १७ । सुक्ष्मवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया १८ । सुक्ष्मतेउकाइया पज्जत्तया संखि०१९ । सुक्ष्मपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २० । सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया २१ सुक्ष्मवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२ । सुक्ष्मनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० २३ । सुहुमनिगो

असंख्येयगुणाः ३ । पर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः ४ । पर्याप्तवादरनिगोदा असंख्यगुणाः ५ । पर्याप्तवादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः ६ । पर्याप्तवादराप्कायिका असंख्येयगुणाः ७ । पर्याप्तवादरवायुकायिका असंख्यगुणाः ८ । अपर्याप्तवादरतेजस्कायिका असंख्यगु णाः ९ । अपर्याप्तप्रत्येकशरीरवादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः १० । अपर्याप्तवादरनिगोदा असंख्यगुणाः ११ । अपर्याप्तवादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः १२ । अपर्याप्तवादराप्कायिका असंख्यगुणाः १३ । अपर्याप्तवादरवायुकायिका असंख्यगुणाः १४ । अपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्य गुणाः १५ । अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः १६ । अपर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः १७ । अपर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधि

दा पज्जत्तया संखि० २४ । बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा २५ । बादरपज्जत्ता विसेसाहिया २६ बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा २७ । बादरअपज्जत्तया विसेसाहिया २८ । बादरा विसेसाहिया २९ । सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखि० ३० । सुहुमअपज्जत्तगा विसेसाहिया ३१ सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखे० ३२ । सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया ३३ । सुहुमा विसेसाहिया ३४ दारं ४ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सजोगीणं मणजोगीणं वयजोगीणं कायजोगीणं अजोगीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणजोगी वयजोगी असंखेज्जगुणा अजोगीअणंतगुणा कायजोगी अणंतगुणा सजोगी विसेसाहिया, दारं ५ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सवेदगाणं इत्थीवेदगाणं पुरिसवेदगाणं नपुंसगवेदगाणं अवेदगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४

---

काः १८ । पर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकाः संख्येयगुणाः १९ । पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः २० । पर्याप्तसूक्ष्माप्कायिका विशेषाधिकाः २१ पर्याप्तसूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः २२ । अपर्याप्तसूक्ष्मनिगोदा असंख्यगुणाः २३ । पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदाः संख्यगुणाः २४ । पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः २५ । पर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः २६ । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः २७ । अपर्याप्ता बादरा विशेषाधिकाः २८ । बादरा विशेषाधिकाः २९ । अपर्याप्तसूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्यगुणाः ३० । सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ३१ । पर्याप्ताः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः संख्यगुणाः ३२ । पर्याप्ताः सूक्ष्मा विशेषाधिकाः ३३ । सूक्ष्मा विशेषाधिकाः ३४ द्वारम् । ४ । एतेषां भदन्त ! जीवानां सयोगिनां मनोयोगिनां वाग्योगिनां काययोगिनां अयोगिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा मनोयोगिनो वाग्योगिनोऽसंख्येयगुणा अयोगिनोऽनन्तगुणाः काययोगिनो अनन्तगुणाः सयोगिनो विशेषाधिकाः । द्वारम् । ५ । एतेषां भदन्त ! जीवानां सवेदकानां स्त्रीवेदकानां

? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा इत्थीवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा नपुंसगवेदगा अणंतगुणा सवेयगा विसेसाहिया, दारं ६ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सकसाईणं कोहकसाईणं माणकसाईणं मायाकसाईणं लोभकसाईणं अकसाईणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अकसाई माणकसाई अणंतगुणा, कोहकसाई विसेसाहिया, मायाकसाई विसेसाहिया, लोभकसाई विसेसाहिया, सकसाई विसेसाहिया, दारं ७ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सलेसाणं किण्हलेसाणं नीललेसाणं काउलेसाणं तेउलेसाणं पम्हलेसाणं सुक्कलेसाणं अलेसाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेसा पम्हलेसा संखिज्जगुणा तेउलेसा संखिज्ज० अलेसा अणंतगुणा काउलेसा अणंतगुणा नीललेसा विसेसाहिया किण्हलेसा विसेसाहिया, दारं ८ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सम्मदिट्ठीणं मिच्छादिट्ठीणं

---

पुरुषवेदकानां नपुंसकवेदकानामवेदकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः जीवाः पुरुषवेदकाः स्त्रीवेदकाः संख्यगुणा अवेदका अनन्तगुणा नपुंसकवेदका अनन्तगुणाः सवेदका विशेषाधिकाः द्वारं ६ । एतेषां भदन्त ! जीवानां सकषायिनां क्रोधकषायिनां मानकषायिनां मायाकषायिनां लोभकषायिनां अकषायिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः जीवा अकषायिनो मानकषायिनो अनन्तगुणाः क्रोधकषायिनो विशेषाधिका मायाकषायिनो विशेषाधिका लोभकषायिनो विशेषाधिकाः सकषायिनो विशेषाधिकाः द्वारम् । ७ । एतेषां भदन्त ! जीवानां सलेश्यानां कृष्णलेश्यानां नीललेश्यानां कापोतलेश्यानां तेजोलेश्यानां पद्मलेश्यानां शुक्ललेश्यानां अलेश्यानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः शुक्ललेश्याः पद्मलेश्याः संख्यगुणा स्तेजोलेश्याः संख्यगुणा अलेश्या अनन्तगुणाः कापोतलेश्या अनन्तगुणा नीललेश्या विशेषाधिकाः कृष्णलेश्या विशेषाधिकाः । द्वारम् । ८ । एतेषां भदन्त ! सम्यग्दृष्टिनां मिथ्यादृष्टिनां सम्यङ्मिथ्यादृष्टिनां च कतरे कतरे

सम्मामिच्छदिट्ठीणं च कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छदिट्ठी, सम्मदिट्ठी असंखेज्जगुणा मिच्छदिट्ठी अणंतगुणा, दारं ९ । एएसिणं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं सुयणाणीणं ओहिणाणीणं मणपज्जवणाणीणं केवलणाणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणपज्जवणाणी ओहिनाणी असं० आभिणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केवलनाणी अणं० । एएसिणं भंते ! जीवाणं मइअन्नाणीणं सुयअन्नाणीणं विभंगनाणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणंतगुणा । एएसिणं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियनाणीणं सुयनाणीणं ओहिनाणीणं मणपज्जवनाणीणं केवलनाणीणं मतिअन्नाणीणं सुयअन्नाणीणं विभंगनाणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा

---

ल्पो ऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवाः सम्यग्मिथ्यादृष्टिनः सम्यग्दृष्टिनोनन्तगुणा मिथ्यादृष्टिनोनन्तगुणाः, द्वारम् । ९ । एतेषां भदन्त । जीवानामाभिनिबोधिकज्ञानिनां श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिनां मनःपर्यवज्ञानिनां केवलज्ञानिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका मनःपर्ययज्ञानिनो ऽवधिज्ञानिनोऽसंख्यगुणा आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ विशेषाधिकौ केवलज्ञानिनोऽनन्तगुणाः । एतेषां भदन्त । मत्यज्ञानिनां जीवानां श्रुताज्ञानिनां विभङ्गज्ञानिना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा विभङ्गज्ञानिनो मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनश्च द्वावपि तुल्यौ अनन्तगुणौ । एतेषां भदन्त । जीवानां आभिनिबोधिकज्ञानिनां श्रुतज्ञानिनामवधिज्ञानिनां मनःपर्ययज्ञानिनां केवलज्ञानिनां मत्यज्ञानिनां श्रुताज्ञानिनां विभङ्गज्ञानिनाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम । सर्वस्तोका जीवा मनःपर्ययज्ञानिनोऽवधिज्ञानिनोऽसंख्यगुणाः आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च द्वौ अपि तुल्यौ विशेषाधिकौ, विभङ्गज्ञानिनो ऽसंख्येयगुणाः केवलज्ञानिनोऽनन्त

जीवा मणपज्जवनाणी नोहिनाणी असंखिज्जगुणा, आभिणिबोहियनाणी सुयनाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहिया विभंगनाणी असंखेज्ज० केवलनाणी अणंतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला विसेसाहिया, विभंगनाणी असंखेज्ज०, केवलनाणी अणंतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला अणंतगुणा, दारं १० । एएसिणं भंते ! जीवाणं चक्खुदंसणीणं अचक्खुदंसणीणं ओहिदंसणीणं केवलदंसणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा ओहिदंसणी चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंसणी अणंतगुणा अचक्खुदंसणी अणंतगुणा, दारं ११ । एएसिणं भंते ! जीवाणं संजयाणं असंजयाणं संजयासंजयाणं नोसंजयाणं नोअसंजयाणं नोसंजया२ णय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा संजयासंजया असंजया असंखेज्जगुणा, नोसंजता नोअसंजता नोसंजतासंजता अणंतगुणा, असंजता अणंतगुणा, दारं १२ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो

---

गुणा मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो द्वावपि तुल्यावनन्तगुणौ । द्वारम् । १० । एतेषां भदन्त ! जीवानां चक्षुर्दर्शनिनामचक्षुर्दर्शनिनामवधिदर्शनिनां केवलदर्शनिनां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अवधिदर्शनिनश्चक्षुर्दर्शनिनोऽसंख्यगुणाः केवलदर्शनिनोऽनन्तगुणा अचक्षुर्दर्शनिनोऽनन्तगुणाः । द्वारम् । ११ । एतेषां भदन्त ! जीवानां संयतानां असंयतानां संयतसंयतानां नोसंयतानां नोअसंयतानां नोसंयतासंयतानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः संयताः संयतासंयता असंख्यगुणाः, नो संयता नो असंयता नो संयतासंयता अनन्तगुणाः, असंयता अनन्तगुणाः । द्वारम् । १२ । एतेषां भदन्त ! जीवानां साकारोपयोगयुक्तानामनाकारोपयोगयुक्तानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अनाकारोपयोगयुक्ताः साकारोपयोगयुक्ताः संख्येयगुणाः । द्वारम् । १३ । एतेषां भदन्त ! जीवानामाहार

अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, दारं १३ । एएसिणं भंते ! जीवाणं आहारगाणं अणाहारगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणाहारगा आहारगा असंखिज्जगुणा, दारं १४ । एएसिणं भंते ! जीवाणं भासगाणं अभासगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा भासगा अभासगा अणंतगुणा, दारं १५ । एएसिणं भंते ! जीवाणं परित्ताणं अपरित्ताणं नोपरित्ता नोअपरित्ताणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा परित्ता नोपरित्ता नोअपरित्ता अणंतगुणा अपरित्ता अणंतगुणा, दारं १६ । एएसिणं भंते ! जीवाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं नोपज्जत्ता नोअपज्जत्ताणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोपज्जत्तगानोअपज्जत्तगा अपज्जत्तगा अणंतगुणा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमाणं बादराणं नोसुहुमाणं नोबादराणय कयरे२

---

कानामनाहारकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अनाहारका आहारका असंख्यगुणाः । द्वारम् । १४ । एतेषां भदन्त ! जीवानां भाषकानामभाषकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा भाषका अभाषका अनन्तगुणाः । द्वारम् । १५ । एतेषां भदन्त ! जीवानां परीतानामपरीतानां नो परीतानां नो अपरीतानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः परीता नोपरीता नो अपरीता अनन्तगुणा अपरीता अनन्तगुणाः । द्वारम् । १६ । एतेषां भदन्त ! जीवानां पर्याप्तानामपर्याप्तानां नोपर्याप्तानां नोअपर्याप्तानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा नोपर्याप्तका नो अपर्याप्तका अपर्याप्तका अनन्तगुणाः पर्याप्तकाः संख्यगुणाः । एतेषां भदन्त ! सूक्ष्माणां बादराणां नोसूक्ष्माणां नो बादराणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा

हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोसुक्कमा नोबादरा, बादरा अणंतगुणा सुक्कमा असंखेज्जगुणा, दारं १८। एएसिणं भंते ! जीवाणं सन्नीणं असन्नीणं नोसन्नीणंनोअसन्नीणय कयरे कयरे हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सन्नी नोसन्नी नोअसन्नी अणंतगुणा, असन्नी अणंतगुणा। दारं १९। एएसिणं भंते ! जीवाणं भवसिद्धियाणं अभवसिद्धियाणं नोभवसिद्धियनोअभवसिद्धियाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया, नोअभवसिद्धिया अणंतगुणा भवसिद्धिया अणंतगुणा, दारं २०। एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए तिन्निवि तुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्व

---

नो सूक्ष्मा नो बादराः, बादरा अनन्तगुणाः सूक्ष्मा असंख्यगुणाः। द्वारम्। १८। एतेषां भदन्त ! जीवानां संज्ञिनां असंज्ञिनां नो संज्ञिनां नो असंज्ञिनाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः संज्ञिनो नोसंज्ञिनो नो असंज्ञिनो नन्तगुणाः, असंज्ञिनोऽनन्तगुणाः। द्वारम्। १९। एतेषां भदन्त। जीवानां भवसिद्धिकानामभवसिद्धिकानां नो भवसिद्धिकनोअभवसिद्धिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम। सर्वस्तोका अभवसिद्धिका नोभवसिद्धिका नो अभवसिद्धिका अनन्तगुणा भवसिद्धिका अनन्तगुणाः। द्वारम् २०। एतेषां भदन्त। धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकाया काशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां द्रव्यार्थतया कतरे कतरेभ्यो ऽल्पा वा ४ ? गौतम। धर्मास्तिकायोधर्मास्तिकाय आकाशा स्तिकाय एते त्रय स्तुल्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तोका, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयानन्तगुणः पुद्गलास्तिकायोद्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणोऽद्धासमयो द्रव्यार्थतया ऽनन्तगुणः। एतेषां भदन्त। धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां प्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्यो

ठयाए अणन्तगुणेपुग्गलत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे अद्धासमए दव्वठयाए अणंतगुणे । एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकायअधम्मत्थिकायआगासत्थिकायजीवत्थिकायपोग्गलत्थिकायअद्धासमयाणं पदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिणं दोवि तुल्ला पदेसठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए पदेसठयाए अणंतगुणे पोग्गलत्थिकाए पदेसठयाए अणंतगुणे अद्धासमए पदेसठयाए अणंतगुणा आगासत्थिकाए पदेसठाए अणंतगुणा । एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकायस्स दव्वठयाए पदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगे धम्मत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! अधम्मत्थिकायस्स दव्वठयपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे अधम्मत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणे । एतस्सणं भंते ! आगासत्थिकायस्स दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे आगासत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए अनंतगुणा , एतस्सणं भंते !

॥ सू ४

---

ऽल्पा वा ? गौतम ! धर्मास्तिकायाधर्मास्तिकायौ द्वावप्येतौ तुल्यौ प्रदेशार्थतया सर्वस्तोकौ जीवास्तिकायः प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः पुद्गलास्तिकायःप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणो ऽद्धासमयः प्रदेशार्थतयानन्तगुण आकाशास्तिकायः प्रदेशार्थतयानन्तगुणः । अस्य भदन्त । धर्मास्तिकायस्य च द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोक एको धर्मास्तिकायः प्रदेशार्थतया स एवानन्तगुणः । अस्य भदन्त ! अधर्मास्तिकायस्य द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोक एकोऽधर्मास्तिकायो द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुणः । एतस्य भदन्त ! आकाशास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोक एक आकाशास्तिकायो

॥ प०

जीवत्थिकायस्स दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पदेसट्ठयाए असंखिज्जगुणा, एतस्सणं भंते ! पुग्गलत्थिकायस्स दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पदेसट्ठयाए असंखिज्जगुणा अ ट्ठासमए ण पुच्छिज्जइ पदसाभावा । एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीव त्थिकाय पोग्गलत्थिकाय अट्ठासमयाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाएय एएणं तिन्निवि तुल्ला, दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाएय एएणं दोण्हवितुल्ला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे सो चेव पदेसट्ठयाए असंखिज्जगुणे पोग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे सोचेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणे

---

द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । एतस्य भदन्त ! जीवास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? सर्वस्तोको जीवा स्तिकाय एको द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुणः । एतस्य भदन्त ! पुद्गलास्तिकायस्य द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकः पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया सएव प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुणः । अद्धासमयो नपृच्छ्यते प्रदेशाभावात् । एतेषां भदन्त ! धर्मा स्तिकायाधर्मास्तिकायकाशास्तिकायजीवास्तिकायपुद्गलास्तिकायाद्धासमयानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे २ भ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! ध र्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्रयस्तुल्या द्रव्यार्थतया सर्वस्तोकाः धर्मास्तिकायोधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि तुल्यौ प्रदेशार्थ तया ऽसंख्येयगुणौ, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतयानन्तगुणः स एव प्रदेशार्थतयाऽसंख्यगुणः । पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतयाऽनन्तगुणः स एव प्रदेशा र्थतया ऽसंख्यगुणः । अद्धासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । आकाशास्तिकायः प्रदेशार्थतयाऽनन्तगुणः । द्वारम् २१ । एतेषां भदन्त ! जीवा

॥ मू

अट्ठासमए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पदेसट्ठयाए अणंतगुणा दारं २१। एएसिणं भंते! जीवाणं चरिमाणं अचरिमाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा चरिमा अणंतगुणा दारं २२। एएसिणं भंते ! जीवाणं पोग्गलाणं अट्ठासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपएसाणं सव्वपज्जवायण कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणंतगुणा अट्ठासमया अणंतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपदेसा अणंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा दारं २३। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखिज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा नेरइया तेलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असंखेज्ज० अहोलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा

---

नां चरमाणामचरमाणां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा अचरमाश्चरमा अनन्तगुणाः। द्वारम् २२। एतेषां भदन्त ! जीवानां पुद्गलानामद्धासमयानां सर्वद्रव्याणां सर्वप्रदेशानां सर्वपर्यवानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः पुद्गला अनन्तगुणा अद्धासमया अनन्तगुणाः सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि सर्वप्रदेशा अनन्तगुणाः सर्वपर्यवा अनन्तगुणाः। द्वारम् २३। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका जीवा ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा त्रैलोक्यऽसंख्यगुणा ऊर्ध्वलोकेऽसंख्यगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः, क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका नैरयिकास्त्रैलोक्ये अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके असंख्यगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तिर्यग्योनिका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोकेऽसंख्यगुणा त्रैलोक्ये ऽसंख्यगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्तिर्यग्योनिका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके असंख्यगुणा त्रैलोक्ये ऽसंख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्ये

तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोगतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, ते लुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्ज० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिणीउ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज०, तेलुक्के असंखेज्ज० अहोलोयतिरिलोए संखिज्जगुणाउ अहोलोए संखेज्जगुणाउ तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाउ मणुस्सीउ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाउ उड्ढलोए संखेज्जगुणाउ अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असंखेज्ज०

---

यगुणा अधोलोके संख्यगुणा स्तिर्यग्लोके संख्यगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मनुष्या खेलोक्ये ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्यगुणा स्तिर्यग्लोके संख्यगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका मानुष्य खेलोक्ये ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके संख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्यगुणा ऊर्द्धलोके संख्यगुणा अधोलोके संख्यगुणा स्तिर्यग्लोक संख्यगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देवा ऊर्द्धलोके उर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा खेलोक्ये ऽसंख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके संख्यगुणा स्तिर्यग्लोके संख्यगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका देवा ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा खेलोक्ये संख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्यगुणा अधोलोके संख्यगुणास्तिर्यग्लोके संख्यगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिदेवा ऊर्द्धलोक ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकेऽसंख्यगुणा खेलोक्ये संख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा स्तिर्यग्लोक ऽसंख्यगुणाः अधोलोके ऽसंख्यगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका भवनवासिन्योदेव्य ऊर्द्धलोके तिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा खेलोक्ये संख्यगुणा

अहोलोए संखिज्जगुणाइं तिरियलोए संखिज्जगुणाइं खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं देवीइं उड्ढलोय उड्ढलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणाइं तेलुक्के संखेज्जगुणाइं अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाइं अहोलोए संखेज्जगुणाइं तिरियलोए संखिज्जगुणाइं खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाइं तेलुक्के संखिज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए असंखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासिणीइं देवीइं उड्ढलोए तिरियलोए असंखि०, तेलुक्के संखेज्जगुणाइं अहोलोए तिरियलोए असंखेज्ज०, तिरियलोए असंखिज्ज० अहोलोए असंखिज्ज० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरादेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्ज० अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखिज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थो

---

अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणास्तिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके असंख्यगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वानव्यन्तरा देवा ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा स्त्रैलोक्ये ऽसंख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके संख्यगुणा स्तिर्यग्लोके संख्यगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वानव्यन्तर्यो देव्य ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके असंख्यगुणा स्त्रैलोक्ये संख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके असंख्यगुणा अधोलोके सख्यगुणा स्तिर्यग्लोके संख्यगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिष्का देवा ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऽसख्यगुणास्त्रैलोक्ये संख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके संख्येयगुणा स्तिर्यग्लोके असंख्यगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका ज्योतिकदेव्य ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोक ऽसंख्यगुणा स्त्रैलोक्ये संख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्यगुणा अधोलोके संख्यगुणा स्तिर्यग्लोके असंख्यगुणा । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका वैमानिका देवा ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके त्रैलोक्ये संख्ययगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्यगुणा अधोलोके संख्यगुणा स्तिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्द्धलोके ऽसंख्यगुणाः । क्षेत्रानु

वाउ वाणमंतरीउ देवीउ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणाउ तेलुक्के संखिज्जगुणाउ अहोलोए तिरियलोए असंखिज्ज० अहोलोए संखिज्ज० तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोएअसंखिज्ज० तेलुक्के संखेज्जगुणा अहोलोएतिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए असंखज्जगुणा खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिणीउ देवीउ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाउ तेलुक्के संखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज०, अहोलोए संखि० तिरियलोए असंखे० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा २००० उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्ज० अहोलोयतिरियलोए सखिज्ज० अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्ज० उड्ढलोए असंखिज्ज० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाउ वेमाणिणीउ देवीउ उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए संखिज्ज० अहोलोयसखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज० उड्ढलोए असंखि० खेत्ताणुवाएणं

---

पातेन सर्वस्तोका वैमानिक्यो देव्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके त्रैलोक्ये संख्ययगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्यगुणा अधोलोके संख्यगुणा स्तिर्यग्लोके संख्यगुणा ऊर्द्धलोके ऽसंख्यगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका एकेन्द्रिया जीवा ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका स्तिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा स्त्रैलोक्ये ऽसंख्यगुणा ऊर्द्धलोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका एकेन्द्रिया जीवा अपर्याप्तका ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकास्तिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा स्त्रैलोक्ये ऽसंख्यगुणा ऊर्द्धलोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका एकेन्द्रिया जीवाः पर्याप्तका ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका स्तियग्लोके ऽसंख्यगुणा स्त्रैलोक्ये ऽसंख्यगुणा ऊर्द्धलोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा स्त्रैलोक्ये ऽसं

सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्ढलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंया जीवा अपज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंया जीवा पज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्तया उड्ढलोए। उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखे०, तिरियलोए संखे०। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलो



ख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके संख्यगुणा स्तिर्यग्लोके संख्यगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रिया अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके संख्यगुणास्त्रैलोक्ये ऽसंख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके संख्यगुणा स्तिर्यग्लोकेसंख्यगुणाः। क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोका द्वीन्द्रियाः पर्याप्तका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा त्रैलोक्यऽसंख्यगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा अधोलोके संख्य

ए असं० । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अधोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेताणुवाएणं स
व्वत्थोवा तेइंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अ
होलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व
त्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, अहोलो
ए तिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व
त्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलो
यतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा
चउरिंदिया जीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अ
होलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व

---

गुणा स्तिर्यग्लोके संख्यगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोकास्त्रीन्द्रिया ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्यगुणा स्त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणाः तिर्यक्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमास्त्रीन्द्रिया अपर्याप्तगा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः, त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः तिर्यक्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमास्त्रीन्द्रियाः पर्याप्तगा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्यगुणा स्त्रैलोक्ये असंख्यगुणा अधोलोके तिर्यक्लोके असंख्यगुणा स्तिर्यक्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमाः चतुरिन्द्रिया जीवा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्यगुणाः त्रैलोक्ये असंख्यगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा स्तिर्यक्लोके संख्येयगुणाः । क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमाश्चतुरिन्द्रिया जीवा अपर्याप्तगा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्यगुणा स्त्रैलोक्ये असंख्यगुणा अ

थोवा चउरिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखे०। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया अपज्जत्तया, तेलोक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखिज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्ता उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असं०, तेलुक्के असं०, अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज० अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए असंखेज्ज०। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए

---

धोलोकतिर्यक्लोके असंख्यगुणा अधोलोके संख्येयगुणा स्तिर्यक्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमाश्चतुरिन्द्रिया जीवाः पर्याप्तगा ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्यगुणा त्रैलोक्ये असंख्यगुणाः अधोलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः अधोलोकेसंख्येयगुणाः तिर्यक्लोकेसंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमाः पञ्चेन्द्रिया त्रैलोक्ये ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः अधोलोकतिर्यक्लोके संख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके संख्येयगुणाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमाः पञ्चेन्द्रियाः अपर्याप्तगा त्रैलोक्ये ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके संख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणाः तिर्यक्लोके संख्येयगुणाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्ता ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः अधोलोकतिर्यक्लोक असंख्येयगुणाः अधोलोके संख्येयगुणाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमाः पृथिवीकायिकाः ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः, तिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये

विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोए तिरियलोए तिरियलोयअहोलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

---

असंख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमाः पृथिवीकायिकाः अपर्याप्ता ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमाः पृथिवीकायिकाः पर्याप्तया ऊर्द्धलोके तिर्यकलोके तिर्यकलोकाधोलोक विशेषाधिकाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा अप्कायिकाः ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा अप्कायिकाः अपर्याप्तया ऊर्द्धलोकातिर्यक्लोके अधोलोकातिर्यकलोक विशेषाधिकाः तियक्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणाः अधोलोक विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा अप्कायिकाः पर्याप्तया ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः अधोलोकतिर्यक्

सेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्ज०, उड्ढलोए असंखिज्ज०, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि

---

लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा स्त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवादेन सर्वस्तोमास्तेजःकायिकाः ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवादेन सर्वस्तोमा स्तेजःकायिकाः अपर्याप्तया ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोक असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणाः अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवादेन सर्वस्तोमास्तेजःकायिकाः पर्याप्तया ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणाः त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवादेन सर्वस्तोमा वायुकायिकाः ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा स्त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवादेन सर्वस्तोमा वायुकायिकाः अपर्याप्तया

यलोए असंखेजगुणा, तेलुक्के असंखेजगुणा, उड्ढलोए असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलुक्के असंखिजगुणा उड्ढलोए असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया अपजत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलुक्के असंखेजगुणा, उड्ढलोए असंखिजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पजत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए असंखेजगुणा, तेलुक्के असंखेजगुणा, उड्ढलोए असंखेजगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तेलुक्के असंखेजगुणा

---

ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा स्त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा वायुकायिकाः पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा स्त्रैलोक्ये असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोक विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिका ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिका स्त्रैलोक्य असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिका अपर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा स्त्रैलोक्ये असंख्येयगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमा वनस्पतिकायिकाः पर्याप्तया ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः तिर्यक्लोक असंख्येयगुणाः त्रैलोक्य असंख्येयगुणाः ऊर्ध्वलोक असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमास्त्रस

उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तस्सकाइया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तस्सकाइया अपज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगु

---

कायिकाः त्रैलोक्ये ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके संख्येयगुणा ऊर्द्धलोके संख्येयगुणा अधोलोके सङ्ख्येयगुणास्तिर्यक्लोके ऽसङ्ख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमात्रसकायिका अपर्याप्तया त्रैलोक्ये ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके असङ्ख्येयगुणा ऊर्द्धलोके सङ्ख्येयगुणा अधोलोके सङ्ख्येयगुणास्तिर्यक्लोके असङ्ख्येयगुणाः । क्षेत्रानुपातेन सर्वस्तोमात्रसकायिका पर्याप्तका स्त्रैलोक्ये ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोक असंख्येयगुणा अधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा ऊर्द्धलोके संख्येयगुणा अधोलोके संख्येयगुणा स्तिर्यग्लोके ऽसंख्ययगुणाः । द्वारम् २४ । एतेषां प्रदन्त । जीवानामायुष्यकर्मबन्धकाबन्धकानामपर्याप्तानां पर्याप्तानां सुप्तानां जाग्रतां समवहतानामसमवहतानां सातावेदकानामसातावेदकानामिन्द्रियोपयुक्तानां नो इन्द्रियो

णा । दारं २४ । एएसिणं भंते ! जीवाणं आउस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणं सुत्ताणं जागराणं समोहयाणं असमोहयाणं सातावेदगाणं असातावेदगाणं इंदियउवउत्ताणं णोइंदियउवउत्ताणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउस्स कम्मस्स बंधगा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा, सुत्ता संखिज्जगुणा, संमोहया संखिज्जगुणा, सातावेदगा संखिज्जगुणा, इंदियउवउत्ता संखिज्जगुणा, अणागारोवउत्ता संखेज्जगुणा, सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, नोइंदियउवउत्ता विसेसाहिया, असातावेदगा विसेसाहिया, असंमोहिया विसेसाहिया, जागरा विसेसाहिया, पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउस्स कम्मस्स अबंधगा विसेसाहिया, दारं २५ । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणा अहो

---

पयुक्तानां साकारोपयुक्तानामनाकारोपयुक्तानां कतरे २ अल्पावा बहुला वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? । गौतम ! सर्वस्तोमा जीवा आयुषः कर्मणो बन्धका अपर्याप्तकाः संख्येयगुणाः सुप्ताः संख्येयगुणा जाग्रतः संख्येयगुणाः समवहताः संख्येयगुणाः सातावेदकाः संख्येयगुणाः इन्द्रियोपयुक्ताः संख्येयगुणाः अनाकारोपयुक्ताः संख्येयगुणाः साकारोपयुक्ताः संख्येयगुणाः नो इन्द्रियोपयुक्ताः संख्येयगुणाः विशेषाधिकाः । असातवेदकाः विशेषाधिकाः असंमोहिता विशेषाधिकाः जाग्रतो विशेषाधिकाः पर्याप्तका विशेषाधिका आयुषः कर्मणः अबन्धका विशेषाधिकाः । द्वारम् २५ ॥ क्षेत्रानुवादेन सर्वस्तोमा पुद्गला त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अनन्तगुणा अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाधिकाः, तिर्यक्लोके असंख्येयगुणा अधोलोके विशेषाधिकाः । दिशानुवादेन सर्वस्तोमाः पुद्गलाः ऊर्ध्वदिशायामधोदिशायां विशेषाधिकाः उत्तरपूर्वस्यां दक्षिण पश्चिमायां च द्वयोरपि तुल्या असंख्येयगुणाः । दक्षिण पूर्वस्यामुत्तरपश्चिमायां च द्वयोरपि तुल्या विशेषाधिका पूर्वस्या असंख्येयगुणाः पश्चिमायां विशेषाधिका दक्षिणेन

लोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए अहोदिसाए विसेसाहिया उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपच्छिमेणय दोवि तुल्ला असंखेज्जगुणा। दाहिणपुरच्छिमेणं उत्तरपच्छिमेणय दोवि तुल्ला विसेसाहिया पुरच्छिमेणं असंखेज्जगुणा पच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा दव्वाइं तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंतगुणाइं अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइं उड्ढलोए असंखेज्ज० अहोलोए असंतगुणाइं तिरियलोए संखिज्जगुणाइं दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा दव्वाइं अहेदिसाए उड्ढदिसाए असंतगुणाइं उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपच्छिमेणं दोवि तुल्लाइं असंखेज्जगुणाइं दाहिणपुरच्छिमेणं उत्तरपच्छिमेणय दोवि तुल्लाइं विसेसाहियाइं पुरच्छिमेणं असंखेज्जगुणाइं पच्छिमेणं विसेसाहियाइं दाहिणेणं विसेसाहियाइं उत्तरेणं विसेसाहियाइं। एएसिणं भंते! परमाणुपोग्गलाणं संखेज्जप



विशेषाहिताः उत्तरेण विशेषाहिताः। क्षेत्रानुवातेन सर्वस्तोमानि द्रव्याणि त्रैलोक्ये ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अनन्तगुणानि अधोलोकतिर्यक्लोके विशेषाहितानि ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणानि अधोलोके अनन्तगुणानि तिर्यक्लोके असंख्येयगुणानि दिशानुवातेन सर्वस्तोमानि द्रव्यानि अधोदिशायामूर्ध्वदिशायामनन्तगुणानि उत्तरपूर्वस्यां दक्षिण पश्चिमायां द्वयोरपि तुल्यान्यसंख्येयगुणानि दक्षिण पूर्वस्यामुत्तरपश्चिमायां द्वयोरपि तुल्यानि विशेषाहितानि। एतेषां भदन्त! परमाणु पुद्गलानां संख्येयप्रादेशिकानामसंख्येयप्रादेशिकानामनन्तप्रादेशिकानां च स्कन्धानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे० ?। गौतम! सर्वस्तोमा अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धा द्रव्यार्थतया परमाणु पुद्गला द्रव्यार्थतया ऽनन्तगुणाः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा असंख्यप्रदेशिकाः स्कन्धाः द्रव्यार्थतयाः ऽसंख्येयगुणाः प्रदेशार्थतया सर्वस्तोमा अनन्तप्रदेशिकाः स्क

देसियाणं असंखिज्जपदेसियाणं अणंतपदेसियाणय खंधाणं दव्वठयाए पएसठयाए दव्वठ पदेसठयाए कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गो० ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वठयाए परमाणुपोग्गला दव्वठयाए अ णंतगुणा संखेज्जपदेसिया खंधा दव्वठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपदेसिया खंधा दव्वठयाए असंखेज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा पदेसठयाए परमाणुपोग्गला अणंतगुणा संखेज्जपदेसिया खंधा पदेसठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा पदेसठयाए असंखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्व त्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वठयाए तेचेव पदेसठयाए अणंतगुणा परमाणुपोग्गला दव्वठपदेसठयाए अणंतगुणा संखिज्जपदेसिया खंधा दव्वठयाए संखिज्जगुणा तेचेवय पदेसठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्ज पएसिया खंधा दव्वठयाए असंखिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगपदेसो गाढाणं संखेज्जपदेसोगाढाणं असंखिज्जपदेसोगाढाणय पोग्गलाणं दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए

---

न्याः प्रदेशार्थतया परमाणुपुद्गला अनन्तगुणाः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः प्रदेशार्थतया असं ख्येयगुणाः द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोमा अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धाः द्रव्यार्थतया ते चैव प्रदेशार्थतया अनन्तगुणाः परमाणुपुद्गला द्रव्यार्थप्रदेशार्थ तया अनन्तगुणा संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा द्रव्यार्थतया संख्येयगुणाः तत्रैव च प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धाः द्रव्यार्थतया अ संख्येयगुणा स्तत्रैव प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! एकप्रदेशावगाढानां संख्येयप्रदेशावगाढानामसंख्येय प्रदेशावगाढानां च पुद्ग लानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यप्रदेशार्थतया च कतरे ० ? । गौतम ! सर्वस्तोमा एकप्रदेशावगाढाः पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयप्रदेशावगा ढाः पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणाः प्रदेशार्थतया सर्वस्तोमा एकप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः

कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोवगाढा पुग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जपएसोवगाढा पुग्गला दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए संखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा दव्वट्ठपदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयपदेसट्ठयाए संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा तेचेव पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखिज्जपएसोगाढो पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा तेचेव पएसट्ठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगसमयठितीयाणं संखिज्जसमयठितीयाणं असंखिज्जसमयठितीयाणंय पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए

---

प्रदेशार्थतया संख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येय प्रदेशावगाढाः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा द्रव्यप्रदेशार्थतया सर्वस्तोमा एकप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया संख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गला द्रव्यद्वयप्रदेशार्थतया संख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया संख्येयगुणाः ते चैव प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणास्ते चैव प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त ! एकसमयस्थितिकानां संख्येयसमयस्थितिकानामसंख्येयसमयस्थितिकानां पुद्गलानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे० ? । गौतम ! सर्वस्तोमा एकसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया संख्येय समयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणाः प्रदेशार्थतया सर्वस्तोमा एकसमयस्थितिकाः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया संख्येयसमयस्थिति

असंखिज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला पदेसठयाए संखेज्जसमयठिईया पोग्गला पएसठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला पदेसठयाए असंखिज्जगुणा दव्वठयपदेसठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पुग्गला दव्वठपएसठयाए संखेज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए संखेज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए संखेज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वठयाए असंखिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगगुणकालगाणं संखिज्जगुणकालगाणं असंखेज्जगुणकालगाणं अणंतगुणकालगाणंच पोग्गलाणं दव्वठयाए पदेसठयाए दव्वठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! जहा परमाणुपोग्गला तहा भाणियव्वा, एवं संखेज्जगुणकालयाणवि, एवं सेसाणवि वण्णरस गंधा भाणियव्वा, फासाण कक्कडमउयगरुयलहुयाणं जहा एगपदेसोगाढाणं भणियं तहा भाणियव्वं अव सेसा फासा जहा वण्णा भणिया तहा भाणियव्वा दारं २६ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ मूल

---

काः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयसमयस्थितिकाः पुद्गलाः प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणा द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोमा एकसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया संख्येयसमयस्थितिकाः पुद्गलाः द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा तएव प्रदेशार्थतया संख्येयगुणा असंख्येयसमयस्थितिकाः पुद्गला द्रव्यार्थतया असंख्येयगुणास्तएव प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणाः । एतेषां भदन्त । एकगुणकालकानां संख्येयगुणकालकानामसंख्येयगुणकालकानामनन्तगुणकालकानां च पुद्गलानां द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थ प्रदेशार्थतया कतरे ० ? । गौतम । यथा परमाणु पुद्गलास्तथा भणितव्याः एवं संख्ययगुणकालका अपि, एवं शेषा अपि वर्णरसगन्धा भणितव्याः । एवं स्पर्शानां कर्कश मृदुकगुरुकलघुकाणां यथैकप्रदेशावगाढानां भणितं तथा भणितव्या अवशिष्टाः स्पर्शाः । यथा वर्णा भणिता स्तथा भणितव्या द्वारम् । २६ ॥ ॥ ॥

॥ अ०

॥ मूल ॥

अह भंते ! सव्वजीवप्पबहुं महादंडयं वत्तइस्सामि सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियमणुस्सा मणुस्सीओ संखेज्जगुणाओ बादरतेउकाइयापज्जत्तया असंखिज्जगुणा अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्जगुणा उवरिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा मज्झिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा अच्चुए कप्पे देवा संखेज्जगुणा आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा आणएकप्पे देवा संखिज्जगुणा अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया असं० सहस्सारे कप्पे देवा असंखिज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवा असंखिज्जगुणा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा माहिंदे देवा असंखिज्जगुणा सणंकुमारे कप्पे

॥ सू० ॥

---

अथ भदन्त ! सर्वजीवाल्पबहुत्वं महादण्डकं वर्तयिष्यामि सर्वस्तोका गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या मानुष्यः संख्यातगुणा बादरतेजःकायिकाः पर्याप्ततया असंख्येयगुणा अनुत्तरोपपातिनो देवा असंख्येयगुणा उपरितनग्रैवेयका देवाः संख्येयगुणा मध्यमग्रैवेयका देवाः संख्येयगुणाः अधस्तनग्रैवेयका देवाः संख्येयगुणा अच्युते कल्पे देवाः संख्येयगुणाः आरण्ये कल्पे देवाः संख्येयगुणाः पानये कल्पे देवाः संख्येयगुणाः आनते कल्पे देवाः संख्येयगुणाः अधः सप्तमायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः षष्ठतमायां पृथिव्यां नैरयिका असं० सहस्रारे कल्पे देवा असंख्येयगुणाः महाशुक्रे कल्पे देवा असंख्येयगुणाः पञ्चमायां धूमप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः लान्तके कल्पे देवा असंख्येयगुणाः चतुर्थ्यां पङ्कप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः ब्रह्मलोके कल्पे देवा असंख्येयगुणाः तृतीयस्यां वालुकप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणा माहेन्द्रे देवा असंख्येयगुणाः सनत्कुमारे कल्पे देवा असंख्येयगुणाः द्वितीयस्यां शर्कराप्रभायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः संमूर्छिममनुष्या असंख्येयगुणाः ईशाने कल्पे देवा

॥ भ० ॥

देवा असंखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० संमुच्छिममणुस्सा असंखेज्ज० ईसाणे कप्पे देवा असं० ईसाणे कप्पे देवीओ संखे०, सोहम्मे कप्पे देवा संखेज्ज० सोहम्मे कप्पे देवीओ संखेज्ज गुणाओ भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा भवणवासिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखिज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ संखिज्जगुणाओ जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा जलयरपंचिंदियतिरिक्खिणीओ संखिज्जगुणाओ वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा वाणमंतरीओ देवीओ संखेज्ज० जोइसिया देवा संखेज्जगुणा जोइसिणीओ देवीओ संखिज्जगुणाओ खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखिज्ज० थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्ज० जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसया संखेज्ज० चउ

असं० ईशाने कल्पे देव्यः संख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देवाः संख्येयगुणाः सौधर्मे कल्पे देव्यः संख्येयगुणा भवनवासि देवा असंख्येयगुणा भवनवासि देव्यः संख्येयगुणाः । एतस्यां रत्नप्रभायां पृथिव्यां नैरयिकाः असंख्येयगुणाः खचरपञ्चेन्द्रिय तिर्यक्योनिकाः पुरुषाः असंख्येयगुणाः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकाः (स्त्रियः) संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषा असंख्येयगुणाः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः (स्त्रियः) संख्ये० जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः संख्येयगुणाः थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः (स्त्रियः) संख्ये० वानमन्तरादेवाःसंख्येयगुणाः वानमन्तर्यो देव्यः संख्येयगुणाः ज्यौतिषिका देवाः संख्ये० ज्यौतिषिका देव्यः संख्ये० खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः नपुंसकाः संख्ये० स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः नपुंसकाः संख्येयगुणाः थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः नपुंसकाः संख्ये० चतुरिन्द्रियाः पर्याप्तया संख्येयगुणाः पञ्चेन्द्रियाः पर्याप्तगाः

रिंदिया पज्जत्तया संखेज्ज० पंदिया पज्जत्ताविसेसाहिया वेइंदिया पज्जत्ता विसेसा । पंचिंदिया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया बेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरनिगोदा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बादरताउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुक्ष्मतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुक्ष्मपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसे

---



विशेषाहिताः द्वीन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषा० । पञ्चेन्द्रिया अपर्याप्तगा असंख्येयगुणाः चतुरिन्द्रिया अपर्याप्ततया विशेषाहिताः । त्रीन्द्रिया अपर्याप्ततया विशेषाहिता द्वीन्द्रिया अपर्याप्ततया विशेषाहिताः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तगा असंख्येयगुणा बादरनिगोदाः पर्याप्तगा असंख्येयगुणाः बादरपृथिवीकायिकाः अपर्याप्तगा असंख्ये० बादराप्कायिकाः पर्याप्तगा असं० बादरवायुकायिकाः पर्याप्तगा असं० बादरतेजःकायिकाः अपर्याप्तगा असं० प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः अपर्याप्तगा असं० बादरनिगोदा अपर्याप्ताः संख्ये० बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तगा असं० बादराप्कायिका अपर्याप्तगा असं० बादरवायुकायिका अपर्याप्तगा असंख्ये० सूक्ष्मतेजःकायिकाः अपर्याप्तगा असं० सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्तगा विशेषाहिताः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्तगा विशे० सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्तगा विशेषा० सूक्ष्मतेजः कायिका अपर्याप्तगा असं० सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्याप्तगा विशे० सूक्ष्माप्कायिकाः पर्याप्तगा विशेषा० सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्तगा विशे० सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तगा असं० सूक्ष्म

साहिया सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्ज० सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया पज्जत्त गा विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमणिगोदा अपज्जत्ता असंखे० सुहुमणि गोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा अनवसिट्ठिया अणंतगुणा पडिवत्तिय सम्मदिट्ठी अणंतगुणा सिद्धा अणंत गुणा वादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा वादरपज्जत्ता विसेसाहिया वादरवणस्सइकाइया अप ज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरपज्जत्तया विसेसाहिया वादरा विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया अपज्ज त्तया असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुहुम पज्जत्तया विसेसाहिया सुहुमा विसेसाहिया अनवसिट्ठिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वण स्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिट्ठी विसेसाहिया अविरया विसेसाहिया छउमत्था विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया संसारत्था विसेसाहिया सव्वजीवा वि सेसाहिया ॥ पन्नवणाए भगवईए वक्कंतिपयं समत्तं ॥ ३ ॥ ॥ ॥

निगोदाः पर्याप्तगाः संख्ये० अनवसिद्धिकाः अनन्तगुणाः प्रतिपत्तिसमदृष्टिका अनन्त० सिद्धा अनं० बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तगा अनं० बाद रपर्याप्ता विशेषाधिकाः बादरा विशेषाधिकाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्तगा असं० सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशे० सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ताः संख्ये० सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्मा विशेषा० अनवसिद्धिका विशेषाधिका निगोदा जीवा विशे० वनस्पति जीवा विशे० एकेन्द्रिया विशे० ति र्यग्योनिका विशे० मिथ्यादृष्टयो विशेषा० अविरतयो विशे० छद्मस्था विशेषा० सयोगयो विशे० संसारस्था विशे० सर्वे जीवा विशेषाधिकाः ॥ प्रज्ञापनायां भगवत्यां श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रगणि शिष्य ऋषि नानकचन्द्र विरचितो बहुवक्तव्यपदानुवादोऽकार्षीत् ॥ ॥

॥ श्रीजिनायनमः ॥ जयतिनमदमरमुकुट प्रतिबिम्बच्छद्मविहितबहुरूपः । उद्धर्त्तुमिवसमस्तं विश्वम्भवपङ्कतोवीरः ॥ १ ॥ जिनवचनामृतजलधिं वन्देयद्विन्दुमात्रमादाय अभवन्नूनंसत्वा जन्मजराव्याधिपरिहीणाः ॥ २ ॥ प्रणमतगुरुपदपङ्कज मधरीकृतकामधेनुकल्पलतं । यदुपास्तिवशान्निरुपम मश्नुवतेब्रह्मतनुभाजः ॥ ३ ॥ जडमतिरपिगुरुचरणो पास्तिसमुद्भूतविपुलमतिविभवः । समयानुसारतोऽहं विदधेप्रज्ञापनाविवृतिम् ॥ ४ ॥ अथ प्रज्ञापनेति कः शब्दार्थः ? उच्यते प्रकर्षेण निःशेषकुतीर्थितीर्थंकरासाध्येन यथावस्थितस्वरूपनिरूपणलक्षणेन ज्ञाप्यन्ते शिष्यबुद्धा वारोप्यन्ते जीवाजीवादयः पदार्था अनयेति प्रज्ञापना ॥ इयञ्च समवायाख्यस्य चतुर्थाङ्गस्यो पाङ्गं, तदुक्तार्थप्रतिपादनार्थं उक्तप्रतिपादन मनर्थक मितिचे न्न उक्तानामपि विस्तरेणा भिधानस्य मन्दमतिविनेयजनानुग्रहार्थतया सार्थकत्वात् ' इयञ्चो पाङ्गमपि प्रायःसकलजीवाजीवादिपदार्थज्ञासनात् ज्ञात्रं ज्ञास्त्रस्यचादौ प्रेक्षावतां प्रवृत्त्यर्थं मवश्यं प्रयोजनादित्रितयं मङ्गलञ्च वक्तव्यं, उक्तंच-प्रेक्षावतांप्रवृत्त्यर्थं फलादित्रितयंस्फुटं मङ्गलंचैवशास्त्रादौ वाच्यमिष्टार्थसिद्धये

---

इति ॥ १ ॥ तत्र प्रयोजनं द्विधा पर मपरंच पुन रेकैकं द्विधा कर्तृगतंश्रोतृगतंच तत्र द्रव्यास्तिकनयमतपर्यालोचनाया मागमस्य नित्यत्वा त्कर्त्तुरभाव एव तथाचोक्तं-एषाद्वादशाङ्गी नकदाचि न्नासी न्नकाचि न्नभवति नकदाचि न्नभविष्यति ध्रुवा नित्या शास्वतीत्यादिपर्यायास्तिकनयमतपर्यालोचनायां चा नित्यत्वा दवश्यंभावी तत्सद्भाव, स्तत्त्वपर्यालोचनायां तु सूत्रार्थोभयरूपत्वा दाऽगमस्या ऽर्थापेक्षया नित्यत्वात् सूत्रापेक्षया चा नित्यत्वा त्कर्तृसिद्धिः, तत्र सूत्रकर्त्तु रनन्तरं प्रयोजनं सत्त्वानुग्रहः, परम्परं त्वपवर्गप्राप्ति रुक्तञ्च-सर्वज्ञोक्तोपदेशेन यःसत्त्वानामनुग्रहं करोतिदुःखतप्तानां सप्राप्नोत्यचिराच्छिवं ॥ २ ॥ तदर्थप्रतिपादकस्या र्हतः किंप्रयोजन मितिचेत् ? न किंचित् कृतकृत्यत्वात्, प्रयोजनमन्तरेणा र्थप्रतिपादनप्रयासो निरर्थक इतिचे ? न्न तस्य तीर्थंकरनामकर्मविपाकोदयप्रभवत्वा दुक्तञ्च - तंचकहंवेज्जाइ अगिलाएधम्मदेसणाएउ इति, श्रोतृणा मनन्तरं प्रयोजनं विवक्षिताध्ययनार्थं परिज्ञानं, परम्परन्तु निश्रेयसावाप्तिः, तेहि विवक्षित मध्ययन मर्थतः सम्यगवगम्य संसारा द्विरज्यंते विरक्ताश्च संतः संसारा

॥ टीका ॥

द्विनिर्जिगमिषवः संयमाध्वनि यथागमं सम्यक् प्रवृत्ति मातन्वते प्रवृत्तानांच संयमप्रकर्षवशत उपजायते सकलकर्मक्षया न्निश्रेयसावाप्ति रिति उक्तं च–सम्यग्भावपरिज्ञाना द्विरक्ताश्रवतोजनाः । क्रियासक्ताह्यविघ्नेन गच्छन्तिपरमांगतिमिति ॥ १ ॥ अभिधेयं जीवाजीवस्वरूपं तच्च प्राक्प्रदर्शितना मव्युत्पत्तिसामर्थ्यमात्रा दवगतं सम्बन्धो द्विधा उपायोपेयभावलक्षणो गुरुपर्वक्रमलक्षणश्च तत्राद्य स्तर्कानुसारिणः प्रति तद्यथा–वचनरूपापन्नं प्रकरणमुपाय स्तत्परिज्ञानं चोपेयं, गुरुपर्वक्रमलक्षणः केवलश्रद्धानुसारिणःप्रति तद्यथे स्वयमेव सूत्रकृ दभिधास्यति इदञ्च प्रज्ञापनाख्य मुपाङ्गं सम्यग् ज्ञानहेतुत्वा दतएव परम्परया मुक्तिपदप्रापकत्वात् श्रेयोभूत मतो भाभू दत्र विघ्न इति विघ्नविनायकोपशान्ताय शिष्याणां मङ्गलबुद्धिपरिग्रहाय स्वतो मङ्गलभूतस्या प्यस्यादिमध्यावसानेषु मङ्गलमभिधातव्य मादिमङ्गलं ह्यविघ्नेन शास्त्रपारगमनार्थं मध्यमङ्गल मवगृहीतशास्त्रस्थिरीकरणार्थं मन्तमङ्गलं शिष्यप्रशिष्यपरम्परया शास्त्रस्या ऽव्यवच्छेदनार्थं मुक्तञ्च–तंमंगलमाईए मज्झेपज्जंतएयसत्थस्स । पढमंसत्थत्थाविग्घ पारंगमणायनिद्दिठं ॥१॥ तस्सेवयथिज्जत्थं मज्झिमयमंतिमंघितस्सेव अत्थोच्छित्तिनिमित्तं सिस्सपसिस्साइवंसस्स ॥२॥ तत्र प्रथमपदगतेन ॥ ववगयजरमरणभये त्यादि

---

॥ भाषा ॥

प्रणाम्यग्रोमहावीरं नताशेषसुरेश्वरम् प्रज्ञापनाख्यसूत्रस्य वक्ष्येर्थंश्लोकभाषया ॥ १ ॥ संतिसूरिकृतटीका दर्थाग्रंथामनोहरा स्तथास्वपरशिष्याना विनोदार्थंकरोम्यहम् ॥ २ ॥ सद्गुरुंबहिदंनत्वा विनयादिमलाभिधम् स्वपरस्यात्मबोधाय स्तवकोलिख्यतेमया ॥ ३ ॥ अरिहंत १ असरीर २ आचार्य ३ उपाध्याय ४ मुनि ५ एहना आदि अक्षरा पांचा ओंकार नोपजे तिके पचूंहीने नमस्कारकरीजेछै सास्वतापद त्रिकाले । णमोअरिहंताणं । अरिहंताभणी नमस्कार हुओ माहरो श्वेतवर्णे १२ गुण सहितरह्या गुणें विधसहित । णमोसिद्धाणं । सिद्धाभणी नमस्कार हुवो गुणे ८ रक्तवर्णमुखेजपे विधसहित । णमोआयरियाणं । नमस्कारहुवो आचार्यांभणी सौवर्णवर्णे ३६ गुणें गलामांहि ध्यानकरै विधिसहित । णमोउवज्झायाणं । नमस्कारहुवो उपाध्यायांभणी नीलवर्णे हियामाहि ध्यानकरै जिणांरो २५ गुणेसहित । णमोलोएसव्वसाहूणं । नमस्कारहुवो सर्वगुणसहित साधुछै जिकाभणी स्यामवर्ण २७ गुणस

ना ॥ दिमंगल मिष्टदेवतास्तवस्य परममङ्गलत्वात्, उपयोगपदगतेन कइविहेणंभंते ! उवायोगे पन्नत्ते? इत्यादिना मध्यमङ्गल मुपयोगस्य ज्ञानरूप त्वात् ज्ञानस्य कर्मक्षयंप्रति प्रधानकारणतया मङ्गलत्वात् नच कर्मक्षयंप्रति प्रधानकारणता तस्य नप्रसिद्धा तस्याः साक्षादागमे ऽभिधाना त्तथाचाग मः जंअन्नाणीकम्मं खवेइबहुयाहिंवासकोडीहिं ॥ तंनाणीतिहिंगुत्तो खवेइऊसासमित्तेण ॥ १ ॥ तथासमुद्घातपदगतेन केवलिसमुद्घातपरिसमाप्त्यन्तरकालभाविना सिद्धाधिकारप्रतिबद्धेन निच्छिन्नसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का सासयनिव्वाणं चिठंतिसुहीसुहंपत्ता ॥ १ ॥ इत्यादिना ऽवसानमङ्गल मधुना दिमङ्गलसूत्रं व्याख्यायते ॥ ववगयइत्यादि ॥ सितं बद्ध मष्टप्रकारं कर्मेंधनं ध्मातं दग्धं जाज्वल्यमानशुक्लध्यानानलेन यैस्ते निरुक्तविधिना सिद्धा, अथवा; षिधूगतौ सेधंतिस्म अपुनरावृत्त्या निर्वृतिपुरी मगच्छन्, यदिवा; षिधसंराद्धौ सिध्यन्ति स्म निष्टितार्था भवन्ति स्म यद्वा; षिधूशास्त्रे माङ्गल्येच सेधंतेस्म शासितारो ऽभवन् मङ्गल्यरूपतां वानुभवन्तिस्मेति सिद्धाः' अथवा; सिद्धा नित्याअपर्यवसानस्थिति कत्वात् प्रख्यातावाज्ञव्यै रुपलब्धगुणसन्दोहत्वात् उक्तंच – ध्मातंसितंयेनपुराणकर्म योवागतोनिर्वृतिसौधमूर्द्धि ख्यातोऽनुशास्तापरिनिष्टितार्थो यः सोऽस्तुसिद्धःकृतमङ्गलोमे ॥ १ ॥ सिद्धाश्च नामादिभेदतो नेकधा ततो यथोक्तसिद्धप्रतिपत्त्यर्थं विशेषण माह–व्यपगतजरामरणभयान्, जरावयोहा निलक्षणा मरणंप्राणत्यागरूपं भयमिह लोकादिभेदा त्सप्तप्रकार मुक्तञ्च–इहपरलोगादाण मकम्हाआजीवमरणमसिलोए ॥ इति विशेषतो ऽपुनर्भावत्यागरूपतया अपगतानि भ्रष्टानि जरामरणभयानि येभ्यस्ते तथा तान् त्रिविधेन मनसा वाचा कायेन अनेन योगत्रयव्यापारविकलं द्रव्यवन्द न मित्याह अभिवन्द्य अभिमुखं वन्दित्वा प्रणम्येत्यर्थः, अनेन समानकर्तृकतया पूर्वकाले क्त्वाप्रत्ययविधानात् नित्यानित्यैकान्तपक्षव्यवच्छेद

---



ववगयजरमरणभए सिद्धेअभिवंदिऊणतिविहेणं । वंदामिजिणवरिंदं तेलोक्कगुरुंमहावीरं ॥ १ ॥

---



चारित्रगुण रह्याछै जिके तीनयोगे विधसहित पांचपदने नमूं, हिवे ववगयजरमरणभए सिद्धेअभिवंदिऊणतिविहेणं । वंदामिजिणवरिंदे तिलोक्कगुरुं महावीर ॥ १ ॥ चरम तीर्थंकर शासन वर्त्तमान तेहभणी नमस्कारकरीजेछै व्यपगत क्षयगयाछै जरामरण ८ कर्मरूपबैरी ते आठकर्मखपावी सिद्ध

॥ टीका ॥

माह एकान्तनित्यानित्यपक्षे क्त्वाप्रत्ययस्या सम्भवात् तथा ह्य प्रच्युतानुत्पन्नस्थिरैकस्वभावं नित्यं तस्य कथं भिन्नकालक्रियाद्वयकर्तृत्वोपपत्ति राकाल मेकस्वभावत्वे नै कस्याएव कस्याश्चित् क्रियायाः सदाभावप्रसङ्गात् अनित्य मपि प्रकृत्यैकलक्षणास्थितिधर्मकं तत स्तस्यापि भिन्नकालक्रिया द्वयकर्तृत्वायोगो वस्थानाभावा दित्यलं विस्तरेणा न्यत्र सुचर्चितत्वात्, क्त्वाप्रत्ययस्यो त्तरक्रिया सापेक्षत्वा दुत्तरां क्रिया माह-वंदामिजिणवरिं दमित्यादि ॥ सूरवीरविक्रान्तो वीरयतिस्म कषायादिशत्रून् प्रति विक्रामतिस्मेति वीरः महांश्चासौ वीरश्च महावीर इदञ्च महावीर इतिनाम नयादृच्छिकं किंतु यथावस्थित मनन्यसाधारणं परीषहोपसर्गादिविषयं वीरत्वमपेत्य सुरासुरकृत मुक्तञ्च-अयलेजयजेरवाणं खंतिखमेपरीस होवसग्गाणं देवेहिं कए महावीरे इति, अनेना पायापगमातिशयो ध्वन्यते तंकथंभूत मित्याह जिनवरेन्द्रं जयन्ति रागादिशत्रू नभिभवन्ति जिना स्तेच चतुर्विधा स्तद्यथा श्रुतजिना अवधिजिनाः मनःपर्यायजिनाः केवलिजिना स्तत्र केवलिजिनत्वप्रतिपत्तये वरग्रहणं जिनानां वरा उ त्तमा भूतभवद्भाविज्ञानस्वभावावभासिकेवलज्ञानकलितत्वात्, जिनवरा स्तेचा तीर्थंकरा अपि संतः सामान्यकेवलिनो भवन्ति तत स्तीर्थङ्करत्वप्र तिपत्त्यर्थं मिन्द्रग्रहणं जिनवराणा मिन्द्रो जिनवरेन्द्रः प्रकृष्टपुण्यस्कन्धरूपतीर्थंकरनामकर्मोदया त्तीर्थंकर इत्यर्थः' अनेन ज्ञानातिशयं पूजातिशयं चाह ज्ञानातिशयमन्तरेण जिनेषु मध्ये उत्तमत्वस्य पूजातिशयमन्तरेण जिनवराणामपि मध्ये इन्द्रत्वस्या योगात् तंपुनः किंभूत मित्याह-त्रैलो क्यगुरुं' गृणाति यथावस्थितं प्रवचनार्थमिति गुरुः त्रैलोक्यस्य गुरु स्त्रैलोक्यगुरु स्तथाच भगवान् अधोलोकनिवासिभवनपतिदेवेभ्य स्तिर्यग्लो कनिवासिव्यन्तरनरपशुविद्याधरज्योतिष्केभ्य ऊर्ध्वलोकनिवासिवैमानिकदेवेभ्यश्च धर्मं दिदेश तं अनेन वागतिशय माह एतेचा पायापगमातिशयादय श्चत्वारोप्यतिशया देहसौगन्ध्यादीना मतिशयाना मुपलक्षणं तानन्तरेणै तेषामसम्भवा त्तत श्चतुस्त्रिंश दतिशयोपेतं भगवन्तं महावीरं वन्दे इत्युक्तं

---

हुआ तेहभणी साहमा थई वांदीने मन वचन कायायेंकरी सिद्धाने वांदूछु सामान्यकेवलीमांहि प्रधान इन्द्रसमान ते जिणेंद्र अरिहंत केहवोछै वीर

॥ भाषा ॥

द्रष्टव्य माह ननुऋषभादीन् व्युदस्य किमर्थं भगवतो महावीरस्य वंदनं ? उच्यते वर्त्तमानतीर्थाधिपतित्वेना सन्नोपकारित्वं दर्शयति ॥ सुयरय णेत्यादि ॥ अत्र प्रज्ञापनेति विशेष्यं, शेषं सामानाधिकरण्येन वैय्यधिकरण्येनच विशेषणं ॥ जिनवरेणंति ॥ जिनाः सामान्यकेवलिन स्तेषामपि वर उत्तम स्तीर्थंकृत्त्वात् जिनवरस्तेन सामर्थ्यान् महावीरेणा न्यस्य वर्त्तमानतीर्थाधिपतित्वाभावात्' इह ऊर्ध्वस्थक्षीणमोहजिनापेक्षया सामान्यकेवलि नोपि जिनवरा उच्यंते तत स्तत्कल्पमाशासी द्विनेयजन इति तीर्थकृत्त्वप्रतिपत्तये विशेषणान्तर माह भगवता भगःसमग्रैश्वर्यादिरूप उक्तंच–ऐश्व र्यस्यसमग्रस्य रूपस्ययशसःश्रियः ॥ धर्मस्यार्थप्रयत्नस्य षण्णांभग इतीङ्गना ॥ १ ॥ भगो स्यास्तीति भगवान्, अतिशयने वतुप्रत्ययो ऽतिशायीच भगो वर्द्धमानस्वामिनः शेषप्राणिगणापेक्षया त्रैलोक्याधिपतित्वात् तेन भगवता परमार्हत्यमहिमोपेतेने त्यर्थः' पुनः कथंभूतेने त्याह–भव्यजननिर्वृतिकरे ण भव्य स्तथाविधानादिपरिणामिकभावात् सिद्धिगमनयोग्यः सचासौ जनश्च भव्यजनः, निर्वृतिर्निर्वाणं सकलकर्ममलापगमनेन स्वस्वरूपलाभतः परमस्वास्थ्यं तद्धेतुः सम्यक्दर्शनाद्यपि कारणेकार्योपचारा न्निर्वृति स्तत्करणशीलो निर्वृतिकरः भव्यजनस्य निर्वृतिकरो भव्यजननिर्वृतिकर स्तेन आह भव्यग्रहण मभव्यव्यवच्छेदार्थं मन्यथा तस्य नैरर्थक्यप्रसङ्गात् तत इद मापतितं भव्यानामेव सम्यग्दर्शनादिकं करोति नाभव्यानां नचैत दुप पन्नं भगवतो वीतरागत्वेन पक्षपातासम्भवात् नैतत्सारं सम्यग्वस्तुतत्वापरिज्ञानात्, भगवान्हि सवितेव प्रकाश मविशेषेण प्रवचनार्थं मातनोति केवल मभव्यानां तथास्वाभाव्या देव तामसखगकुलानामिव सूर्यप्रकाशो नप्रवचनार्थं उपदिश्यमानोपि उपकाराय प्रभवति तथाचाह वादिमुख्यः–सद्धर्मबीजवपनानर्थकौशलस्य यल्लोकबान्धवतयापिखिलान्यजूवन् ॥ तन्नाद्भुतंखगकुलेषुहितामलेषु सूर्यांशवोमधुकरीचरणावदाताः ॥१॥ ततो भव्या

## सुयरयणनिहाणंजिण वरेणभवियजणणिव्वुइकरेण ।





वर्द्धमान तीन लोकनो गुरुछै ते महावीरस्वामी प्रति श्रासनाधीस प्रति ॥ १ ॥ सुयरयणनिहाण जिणवरेणभवियजणणिव्वुइकरेणं । उवदंसियाभगवया पन्नवणासव्वभावाणं ॥ २ ॥ सिद्धांतरत्न तेहनो निधान घरछै ते भगवंत श्रीवीतरागे भविकजीवने मोक्ष सुखनोदेणहार कह्या भगवंते अरिहंते प्रज्ञा

॥ टीका ॥

नामेव भगवद्वचना दुपकारो जायते इति भव्यजननिर्वृतिकरेणे त्युक्तं किमित्याह ॥ उवदंसियत्ति ॥ उपसामीप्येन यथाश्रोतृणां झटिति यथावस्थित वस्तुतत्वावबोधो भवति तथा स्फुटवचनै रित्यर्थः, दर्शिता श्रवणगोचरंनीता उपदिष्टा इत्यर्थः, का सौ प्रज्ञापना ? प्रज्ञाप्यन्ते जीवादयो भावा अनया शब्दसंहत्या इतिप्रज्ञापना, किंविशिष्टे त्यत आह–श्रुतरत्ननिधानं ' इह रत्नानि द्विविधानि भवन्ति तद्यथा द्रव्यरत्नानि भावरत्नानि तत्र द्रव्यरत्नानि वैडूर्यमरकतेन्द्रनीलादीनि भावरत्नानि श्रुतव्रतादीनि तत्र द्रव्यरत्नानि नतात्विकानीति भावरत्नै रिहाधिकार स्तत एवंसमासः श्रुतान्येवरत्नानि श्रुतरत्नानि ननु श्रुतानिचरत्नानिच नापि श्रुतानि रत्नानीवेति कुत इतिचे ? दुच्यते प्रथमपक्षे श्रुतव्यतिरिक्तै र्द्रव्यरत्नै रिहाधिकाराभावात् ' द्वितीयप क्षेतु श्रुतानामेव तात्विकरत्नत्वात् शेषरत्नै रुपमाया अयोगा न्निधानमिव निधानं श्रुतरत्नानां निधानं श्रुतरत्ननिधानं कथं प्रज्ञापने त्यत आह सर्वभावानां सर्वैच ते भावाश्च सर्वभावा जीवाजीवाश्रवबन्धसंवरनिर्जरामोक्षाः, तथा ह्यस्यां प्रज्ञापनायां षट्त्रिंश त्पदानि तत्र प्रज्ञापनाबहुवक्तव्य विशेषचरमपरिणामसञ्ज्ञेषु पंचसु पदेषु जीवाजीवानां प्रज्ञापना, प्रयोगपदे क्रियापदेचाश्रवस्य कायवाङ्मनःकर्मयोग आश्रव इतिवचनात् कर्मप्रकृ तिपदे बन्धस्यप्ररूपणा, समुद्घातपदकेवलिसमुद्घातप्ररूपणायां संवरनिर्जरामोक्षाणां त्रयाणां शेषेषुतु स्थानादिषु पदेषु क्वचि त्कस्यचिदिति अथवा सर्वभावाना मिति द्रव्यक्षेत्रकालभावाना मेतद्व्यतिरेकेणा न्यस्य प्रज्ञापनीयस्या भावात् ' तत्र प्रज्ञापनापदे जीवाजीवद्रव्याणां प्रज्ञापना, स्थानपदे जीवाधारस्य क्षेत्रस्य, स्थितिपदे नारकादिस्थितिनिरूपणात् कालस्य, शेषपदेषु संख्याज्ञानादिपर्यायव्युत्क्रांत्युच्छ्वासादीनां भावाना मिति, अस्याश्च गाथाया अक्षरयोजनामिर्णचित्तमित्यनया सहाभिसम्बन्धः केवलं येनेयं सत्वानुग्रहाय श्रुतसागरादुद्धृता असाव प्यासन्नतरोपकारित्वा दस्मद्विधानां नमस्का राई इति तन्नमस्कारविषय मिदमपान्तरालएवा न्यकर्तृकं गाथाद्वयं–वायगवरवंसाओ इत्यादि ॥ वाचकाः पूर्वविदोः वाचकाश्च तेवराश्च वाचकवराः

॥ मूल ॥

## उवदंसियाभगवया पन्नवणासद्दभावाणं ॥ २ ॥

॥ भाषा ॥

पना जणावणा सर्वभाव जीवा जीवादिपदार्थ ॥ २ ॥ वायगवरवंसाओ ते वीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीणं ॥ ३ ॥ वाच

॥ टीका ॥

वाचकप्रधाना स्तेषां वंशः प्रवाहो वाचकवरवंश स्तस्मिन्' सूत्रेच पंचमीनिर्देशः प्राकृतत्वात्, प्राकृतेहि सर्वासुविभक्तिषु सर्वाअपि विभक्तयो यथा योगं प्रवर्त्तन्ते, तथाचाह पाणिनिः स्वप्राकृतव्याकरणे-व्यत्ययोप्यासामिति, त्रयोविंशतितमेन तथाच सुधर्मस्वामिन आरभ्य भगवानार्यश्याम स्त्रयो विंशतितमएव, किंभूतेन धीरपुरुषेण, धीर्बुद्धि स्तया राजत इतिधीरः धीरश्चासौ पुरुषश्च धीरपुरुष स्तेन, तथा दुर्द्धराणि प्राणातिपातादिनिवृत्ति लक्षणानि पञ्चमहाव्रतानि धारयतीति दुर्द्धरधर स्तेन' तथा मन्यते जगतस्त्रिकालावस्था मिति मुनि स्तेन विशिष्टसंवित् समन्वितेनेत्यर्थः' पुनः कथंभूतेनेत्याह-पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धिना, पूर्वाणिच तत्श्रुतंच पूर्वश्रुतं तेन समृद्धा वृद्धिमुपागता बुद्धि र्यस्य सः पूर्वश्रुतसमृद्धबुद्धि स्तेन, आह यो वा चकवरवंशान्तर्गतः स पूर्वश्रुतसमृद्धिबुद्धिरेव भवति ततः किमनेन विशेषणेन? सत्यमेतत् किन्तु पूर्वविदोपि षट्स्थानकपतिता भवन्ति, तथाच च तुर्दशपूर्वविदामप्य धिकृत्य षट्स्थानकं वक्ष्यति तत आधिक्यप्रदर्शनार्थ मिदं विशेषण मित्यदोषः, समिद्धबुद्धीणेत्यत्र णाशब्दस्य ह्रस्वत्वं द्विश ब्दस्यच दीर्घता आर्षत्वात्, तथा श्रुतमनर्वाक्पारत्वा त्सुन्नाषितरत्नयुक्तत्वाच्च सागरइव श्रुतसागरः, व्याघ्रादिज्ञि गौणि स्तद्गुणानुक्ताविति समा सः' तस्मात् ॥ विएऊणति ॥ देशीवचनमेतत् साम्प्रतकालीनपुरुषयोग्यं वीनयित्वाइत्यर्थः येनेदं प्रज्ञापनारूपं श्रुतरत्न मुत्तमं प्रधानं, प्राधान्यंच न शेषश्रुतरत्नापेक्षया किंतु स्वरूपतो, दत्तं शिष्यगणाय तस्मै भगवते ज्ञानैश्वर्यधर्मादिवते' आरात् सर्वहेयधर्मेभ्यो यातः प्राप्तो गुणै रित्यार्यः सचासौ श्यामश्च आर्यश्याम स्तस्मै, सूत्रेचषष्ठी चतुर्थ्यर्थे द्रष्टव्या ॥ छठिविभत्तीएभन्नइचउत्थीतिवचनात्, अधुनोक्तसंबधैवेयं गाथा ॥ अज्जयणमित्यादि ॥

॥ मूल ॥

वायगवरवंसाउ तेवीसइमेणधीरपुरिसेण । दुद्धरधरेणमुणिणा पुव्वसुयसमिद्धबुद्धीणं ॥ ३ ॥ सुयसागराविएऊण जेणसुयरयणमुत्तमंदिन्नं । सीसगणस्सभगवओ तस्सणमोअज्जसामस्स ॥ ४ ॥ अज्जयणमिणंचित्तं सुय

॥ भाषा ॥

क प्रधान वंशानुक्रमे सुधर्मास्वामी आरभ्य तेवीसमा धीर पुरुष स्यामाचार्य दुर्द्धर महाव्रतना धरणहार मुनि तिणें पूर्वरूप श्रुत तिणें सहितछै बुद्धिजि णांरी ॥ ३ ॥ सुयसागरांविणेऊण जेणसुयरयणमुत्तमंदिन्नं । सीसगणस्सभगवओ तस्सनमोअज्जसामस्स ॥४॥ श्रुत सागरमांहिथी वीणने काढ्यो जिणें ए

॥ टीका ॥

अध्ययनमिदं प्रज्ञापनाख्यं, ननु यदीयमध्ययनं किमित्यस्यादावनुयोगादिद्वारोपन्यासो नक्रियते ? उच्यते नायंनियमो यदवश्यं मध्ययनादावुपक्रमाद्युपन्यासः क्रियत इति, अनियमोपि कुतोवसीयत इतिचेत् ? उच्यते नन्द्यध्ययनादि षदर्शनात्, तथा चित्रार्थाधिकारयुक्तत्वा च्चित्रं श्रुतमेव रत्नं श्रुतरत्नं दृष्टिवादस्य द्वादशस्याङ्गस्य निस्यन्दइव दृष्टिवादनिस्यन्दः ' सूत्रेनपुंसकतानिर्देशः प्राकृतत्वात्, यथावर्णितं भगवता श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिना इन्द्रभूतिप्रभृतीना मध्ययनार्थस्य वर्णितत्वात्, अध्ययनं वर्णितमित्युक्तं अहमपि तथा वर्णयिष्यामि आह-कथमस्य तत्प्रस्थस्य तथावर्णयितुं शक्ति ? नैषदोषः सामान्येना भिधेयपदार्थवर्णनमात्र मधिकृत्यैव मभिधानात्, तथाच अहमपि तथावर्णयिष्यामीति किमुक्तंभवति तदनुसारेण वर्णयिष्यामि नस्वमनीषिकयेति, अस्यांच प्रज्ञापनायां षट्त्रिंशत्पदानि भवन्ति पदं प्रकरण मर्थाधिकारइति पर्याया, स्तानिच पदान्यमूनि॥ पन्नवणेत्यादि गाथाचतुष्टये ॥ तत्र प्रथमम्पदं प्रज्ञापनाविषयं प्रश्नमधिकृत्य प्रवृत्तत्वा त्प्रज्ञापना । १ । एवं द्वितीयं स्थानानि । २ । तृतीयं बहुवक्तव्यं । ३ । चतुर्थं स्थितिः । ४ । पञ्चमं विशेषः । ५ । षष्ठं व्युत्क्रान्तिः व्युत्क्रान्तिलक्षणाधिकारयुक्तत्वात् । ६ । सप्तम मुच्छ्वासः । ७ । अष्टमं सज्ञाः । ८ ।

॥ मूल ॥

रयणंदिट्ठिवायणीसंदं । जहवत्तियंभगवया अहमवितहवमाइस्सामि ॥ ५ ॥ पन्नवणा १ ठाणाइं २, बक्कंत्तिइं ३ ठिई ४ विसेसाय ५, वक्कंती ६ उस्सास, ७ सन्ना ८ जोणीय ९ चरिमाइं १० ॥ १ ॥ भासा ११ सरीर १२

॥ भाषा ॥

हवा श्रुतसागर मांहिथी श्रुतरत्न उत्तमदोधो गिथ समूहने भगवंत तिम आर्य स्यामाचार्यने नमस्कार करुंछु ॥ ॥ ४ ॥ अज्झयणमिणंचित्तं सुयरयणं दिट्ठिवायणीसदं । जहवत्तियंभगवया अहमवितहवमाइस्सामि ॥ ५ ॥ अध्ययन प्रज्ञापनानामे अनेकाधिकार युक्त श्रुतरत्न दृष्टिवाद बारहं अंगनो रहस्य रसभूत जिम वर्णव्यो भगवन्ते वीतरागें हूं निश्चे तेहने अनुसारे तिम वर्णवसुं ॥ ५ ॥ पन्नवणाठाणाइं बक्कंत्तिइंठिइंविसेसाय । वक्कंतीउस्सासोसन्नीजोणीयचरमाइं ॥६॥ जीवादि प्रज्ञापनापद १ तेहनो ठामनो बीजोपद २ अल्पबहुत्व ३ कहणो, तेहनो स्थितिपद ४ तेहनो विशेषपद प्ररूपणा ५ व्युत्क्रान्ति लक्षणाधिकारपद ६ उश्वासपद ७ संज्ञाद्वारपद ८ योनिपद ९ चरमउद्देशेने प्रवर्त्तवो १० ॥ ६ ॥ भासासरीरपरिणा मकसाएइंदिएसन्नीमेय । लेसा

॥ टीका ॥

नवमं योनिः । ९ । दशमं चरमाणि चरमाणीति प्रश्नमुद्दिश्य प्रवृत्तत्वात् । १० । एकादशं भाषा । ११ । द्वादशं शरीरं । १२ । त्रयोदशं परिणामः । १३ । चतुर्दशं कषायं । १४ । पञ्चदश मिन्द्रियं । १५ । षोडशं प्रयोगः । १६ । सप्तदशं लेश्या । १७ । अष्टादशं कायस्थितिः । १८ । एकोनविंशतितमं सम्यक्त्वम् । १९ । विंशतितम मन्तक्रिया । २० । एकविंशतितम मवगाहनास्थानं । २१ । द्वाविंशतितमं क्रिया । २२ । त्रयोविंशतितमं कर्म । २३ । चतुर्विंशतितमं कर्मणो बन्धकः ' तस्मिन् हि यथाजीवः कर्मणो बन्धको भवति तथा प्ररूप्यत इति तथानाम । २४ । एवं पञ्चविंशतितमं कर्मवेदकः । २५ । षड्विंशतितमं वेदस्य बन्धकइति वेदयते ऽनुभवतीति वेद स्तस्य बन्धएव बन्धकः ' किमुक्तम्भवति कति प्रकृती र्वेदयमानस्य कतिप्रकृतीनां बन्धो भवतीति तत्र निरूप्यते तत स्तद्वेदस्य बन्ध इति नाम । २६ । एवं कां प्रकृतिं वेदयमानः कतिप्रकृती र्वेदयत इत्यर्थप्रतिपादकं वेदवेदकनाम सप्तविंशतितमं । २७ । अष्टाविंशतितम माहारप्रतिपादकत्वा दाहारः । २८ । एव मेकोनत्रिंशत्तम मुपयोगः ।

॥ मूल ॥

**परिणा, म १३ कसाय १४ इंदिय १५ प्पनोगेय १६ । लेसा १७ कायठिइया १८, सम्मत्ते १९ अंतकिरियाय २० ॥ २ ॥ नोगाहणसंठाणा २१, किरिया २२ कम्मेय २३ कम्मस्स । बंधए २४ कम्मवेयए २५, वेयस्सबंधए २६ वेयवेयए २७ ॥ ३ ॥ आहारे २८ उवनोगे २९, पासणया ३० सन्नि ३१ संजमे ३२ चेव । ओही ३३ पवियारण ३४**

॥ भाषा ॥

कायठ्ठिइया सम्मत्तअंतकिरियाय ॥ ७ ॥ तेहनो भाषापद ११ शरीरकारणपद १२ परिणामपदाधिकार १३ कषायपद १४ इन्द्रियपद १५ प्रयोगद्वारपद १६ लेश्यापद १७ कायस्थितिपदद्वार १८ सम्यक्त्वनामपद १९ अंतक्रियाधिकारपद २० ॥ ७ ॥ उगाहणसंठाणे किरियाकम्मेइयावरेकम्म । म्मबंधएकम्मस्सवेयए वेयस्मबंधए वेयवेयए ॥ ८ ॥ अवगाहनास्थानपद २१ क्रियापद २२ कर्मपद २३ कमरे जीवरे बंधकिमथाय जीव कर्मने किमवांधे २४ कर्मनो वेदवो भोगवो २५ वेदवमक कंतलीप्रकृतिबांधे २६ वेदनो केतलो बंधकरे कर्मप्रकृतिकरे, वेदने बांधीनेवेदेकिम २७ ॥ ८ ॥ आहारेउवओगे पासणयासन्निसंजमेचेव । ओही पवियारणवेयणायत्तीसमुग्घाए ॥ ९ ॥ आहारपद २८ उपयोगपद २९ पश्यत्ता जीवो ३० संज्ञापद ३१ संयमपद ३२ निश्चे अवधिज्ञानपद ३३ प्रविचारणापद ३४

। २९ । त्रिंशत्तमं पासणयत्ति दर्शनता । ३० । एकत्रिंशत्तमं सञ्ज्ञा । ३१ । द्वात्रिंशत्तमं संयमः । ३२ । त्रयस्त्रिंशत्तम मवधिः । ३३ । चतुस्त्रिंशत्तमं प्रविचारणा । ३४ । पञ्चत्रिंशत्तमं वेदना । ३५ । षट्त्रिंशत्तमं समुद्घातः । ३६ । तदेव मुपन्यस्तानि पदानि ॥ साम्प्रतं यथाक्रमं पदगतानि सूत्राणि वक्तव्यानि तत्र प्रथमपदगत मिद मादिमं सूत्रं–सेकिंतं पन्नवणा इति ॥ अथास्य सूत्रस्य कः प्रस्ताव ? उच्यते प्रश्नसूत्रमिदमेतच्चादा वुपन्यस्त मिदं ज्ञापयति पृच्छतो मध्यस्थबुद्धिमतो र्घिनो ज्ञगवदर्हदुपदिष्टतत्वप्ररूपणाकार्या ज्ञशेषस्य तथा चोक्तं–मध्यस्थोबुद्धिमानर्थी श्रोतापात्रमितिस्मृतः । तत्र सेशब्दो मागधदेशीप्रसिद्धनिपात स्तत्र ज्ञब्दार्थे अथवा अथज्ञब्दार्थे सच वाक्योपन्यासार्थः, किमितिपरप्रश्ने, तन्ति तावदितिद्रष्टव्यं' तच्च क्रमो द्योतने, तत एषः समुदायार्थः, तिष्ठन्तु स्थानादीनि पदानि प्रष्टव्यानि वाचःक्रमवर्त्तित्वात् प्रज्ञापनानन्तरञ्च तेषा मुपन्यस्तत्वात्, तत्र तावदे तावत् पृच्छामि किम्प्रज्ञापनेति ? अथवा प्राकृतशैल्या अभिधेयवल्लिङ्गवचनानि योजनीयानीति न्याया देवन्द्रष्टव्यं । तत्र कातावत्प्रज्ञापनेति ? एवं सामान्येन केनचित्प्रश्ने कृतेसति ज्ञगवान् गुरुः शिष्यवचनानुरोधेना दरार्थं किञ्चि च्छिष्योक्तं प्रत्युच्चार्याह–पन्नवणादुविहा पन्नत्ताइति ॥ अने नचागृहीतशिष्याभिधानेन निर्वचनसूत्रेणैतदाचष्टेन सर्वमेवसूत्रं गणधरप्रश्नतीर्थकरनिर्वचनरूपं किन्तु किञ्चिदन्यथापि बाहुल्येनतु तथारूपं यत उक्तं–अत्थंज्ञासइअरहा सुत्तंगंथंतिगणहरानिउणा मित्यादि ॥ तत्र प्रज्ञापनेति पूर्ववत् द्विविधा द्विप्रकारा प्रज्ञप्ता प्ररूपिता यदा तीर्थकराएव निर्वक्तार स्तदा यमर्थो वसेयो ऽन्यैरपि तीर्थकरै र्यदा पुन रन्यः कश्चि दाचार्य स्तन्मतानुसारी तदा तीर्थकरगणधरै रिति, द्वैविध्यमेवो पदर्शयति तंजहा जीवपन्नवणाय अजीवपन्नवणाय ॥ तद्यथेति वक्ष्यमाणभेदकथनप्रकाशनार्थः, जीवन्ति प्राणान् धारयन्तीति जीवाः, प्राणाश्च द्विधा द्रव्यप्राणा

वे, यणा ३५ यतत्तोसमुग्घाए ३६ ॥ ४ ॥ से किं तं पन्नवणा ? पन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–जीवपन्नव





वेदनापद ३५ तिवारेपछी समुद्घातपद । ३६ । सकितपन्नवणा २ दुविहापन्नत्ता तंजहा । ते कुण ते ३६ द्वारप्रज्ञापना उत्कृष्ट जितावणा जांणपणारामेद दोयप्र कारे कह्या तेकिम । जीवपन्नवणा अजीवपन्नवणा । जीवरो जाणपणो ते जीवप्रज्ञापना, वली अजीवनो ज्ञातपणो प्रकाशवो ते अजीवप्रज्ञापना । सेकिंतं अ

॥ टीका ॥

जावप्राणाश्च, तत्र द्रव्यप्राणाइन्द्रियादयो, भावप्राणा ज्ञानादीनि' द्रव्यप्राणैरपि प्राणिनः संसारसमापन्नानारकादयः, केवलभावप्राणैः प्राणिनो व्यपगतसमस्तकर्मसङ्गाः सिद्धाः, जीवानां प्रज्ञापना जीवप्रज्ञापना, नजीवा अजीवा जीवविपरीतस्वरूपा स्तेच धर्माधर्माकाशपुद्गलास्तिकायाद्धासमयरूपा स्तेषां प्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापना' चकारौ द्वयोरपि प्राधान्यख्यापनार्थौ, नखल्विहान्यतरस्याः प्रज्ञापनायाः गुणभाव एवं सर्वत्राप्यन्तरगमनिका कार्या, तदेवं सामान्येन प्रज्ञापनाद्वय मुपन्यस्य सम्प्रति विशेषस्वरूपावगमार्थं मादावल्पवक्तव्यत्वा दजीवप्रज्ञापना प्रतिपिपादयिषु स्तद्विषयं प्रश्नसूत्रमाह–सेकिंतं अजीवपन्नवणा ? अथ किमेतत् अजीवप्रज्ञापनेति अथवा ; कासा अजीवप्रज्ञापना–सूरिराह ? अजीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता तंजहा इत्यादि ॥ अजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा रूप्यजीवप्रज्ञापनाच अरूप्यजीवप्रज्ञापनाच, रूपमेषा मस्तीतिरूपिणः रूपग्रहणं गन्धादीना मुपलक्षणं तद्व्यतिरेकेण तस्यासम्भवात् तथाहि प्रतिपरमाणुरूपरसगन्धस्पर्शाः उक्तञ्च–कारणमेवतदन्त्यं सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणुः । एकरसगन्धवर्णौ द्विस्पर्शीकार्यलिङ्गञ्च ॥ १ ॥ तस्मा दव्यतिरेकः परस्परं रूपादीनामिति अथवा रूपं नाम स्पर्शरूपादिसम्मूर्च्छनात्मिकामूर्त्ति स्तदेषा मस्तीति रूपिणः' रूपिणश्च ते अजीवाश्च रूप्यजीवा स्तेषां प्रज्ञापना रूप्यजीवप्रज्ञापना पुद्गलस्वरूपा जीवप्रज्ञापनेति यावत्, पुद्गलाना मेव रूपादिमत्त्वात्, रूपिव्यतिरेकेणा रूपिणो धर्मास्तिकायादय स्तेचते अजीवाश्च अरूप्यजीवा स्तेषां प्रज्ञापना ऽरूप्यजीवप्रज्ञापना चशब्दौ प्राग्वत्, तत्राल्पवक्तव्यत्वात् प्रथमतो ऽरूप्यजीवप्रज्ञापनाचिकीर्षु रिदमाह–सेकिंतमित्यादि ॥ सेशब्दो ऽथशब्दार्थः, अथ कासा अरूप्यजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–

॥ मूल ॥

णाय अजीवपन्नवणाय । सेकिंतं अजीवपन्नवणा २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–रूविअजीवपन्नवणा अरूविअजीवपन्नवणाय । सेकिंतं अरूविअजीवपन्नवणा ? अरूविअजीवपन्नवणा दसविहा पन्नत्ता तंजहा–

॥ भाषा ॥

जीवपन्नवणा २ दुविहा पन्नत्ता तंजहा। तेकुण अजीव प्रज्ञापना शिष्यपूछे तवगुरु कहै अजीवप्रज्ञापनाना दोयभेद ते कहेछै—तेजिम रूविअजीवपन्नवणा अरूविअजीवपन्नवणाय । रूपी अजीव प्रज्ञापना रूप ग्रहण गन्धादि लक्षणकहिये, अरूपी अजीव परमाणु प्रज्ञापना परमाणु सूक्ष्मअरूपी एक द्विप्रदेशी उ

॥ टीका ॥

अरूप्यजीवप्रज्ञापना दशविधा दशप्रकारा प्रज्ञप्ता अरूप्यजीवानां दशविधत्वात् तत्प्ररूपणादिदशविधोक्ता, तदेव दशविधत्वं दर्शयति-तंजहेत्यादि ॥ तद्यथेति वक्ष्यमाणनिर्देशकथनोद्द्योतनार्थः, तत् दशविधत्वं यदिवा तदिति त्यक्तयं सर्वलिङ्गवचनेषु, सा दशविधा अरूप्यजीवप्रज्ञापना यथानुपूर्वति तथादर्श्यते ॥ धम्मत्थिकायइति ॥ जीवानां पुद्गलानाञ्च स्वभावतएव गतिपरिणामपरिणतानां तत्स्वभावधरणात् तत्स्वभावपोषणा द्धर्म अस्तयश्चेह प्रदेशा स्तेषां कायः सङ्घातः, गणकाएयनिकाये खंधेवग्गेतहेवरासीय इतिवचनात् ॥ अस्तिकायः प्रदेशसङ्घात इत्यर्थः' धर्मश्चासौ अस्तिकायश्च धर्मास्तिकायः, अनेनच सकलमेव धर्मास्तिकायरूप मवयविद्रव्यमाह, अवयवीनाम अवयवानां तथारूपसङ्घातपरिणामविशेषएव नयुन रवयव द्रव्येभ्यः पृथगर्थान्तरद्रव्यं तथानुपलम्भात् तन्तव एवहि आतानवितानरूपं सङ्घातपरिणामविशेषमापन्ना लोके पटव्यपदेशभाज उपलभ्यन्ते न तदतिरिक्तं पटाख्यंताम उक्तञ्चान्यैरपि-तन्त्वादिव्यतिरेकेण नपटाद्युपलम्भनं तन्त्वादयोविशिष्टाहि पटादिव्यपदेशिनः ॥ १ ॥ कृतं प्रसङ्गेना न्यत्र चिन्तितत्वा देतद्वादस्य, तथाधर्मास्तिकायस्य देशइति तस्यैव धर्मास्तिकायस्य बुद्धिविकल्पितो द्वादिप्रदेशात्मको विभागः ॥ धम्मत्थिकायस्सपदेसा इति ॥ धर्मास्तिकायस्य प्रदेशा इति प्रकृष्टा देशा प्रदेशा निर्विभागागागा इतिभाव' स्तेचा सङ्ख्येया लोकाकाशप्रमाणत्वा त्तेषां, अतएवब हुवचनं' धर्मास्तिकायप्रतिपन्नतो ऽधर्मास्तिकायः किमुक्तं भवति जीवपुद्गलानां स्थितिपरिणामपरिणतानां तत्परिणामोपष्टम्भको मूर्त्तोऽसङ्घात प्रदेशसङ्घातात्मको ऽधर्मास्तिकायः, अधर्मास्तिकायस्य देश इत्यादि पूर्ववत्, तथा आङिति मर्यादया स्वस्वभावाऽपरित्यागरूपया काशन्ते स्व

॥ मूल ॥

**धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा, अधम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकायस्सदेसे अधम्मत्थि**

॥ भाषा ॥

क्ष्य—कारणमेवतदंत्य सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणु। एकरसगन्धवर्णो द्विस्पर्शोकार्यलिंगश्च ॥१॥ सेकिंतंअरूपिअजीवपन्नवणा२ दसविहापण्णत्ता तंजहा। तेकण अजीवप्रज्ञापना अरूपीना दशभेद कह्याछे, ते जिम शिष्यने गुरु कहैछे—धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्सदेसे धम्मत्थिकायस्सपएसा।३। धर्मास्तिकाय पद लादिमध्ये गमनकरतां साहाय्यदे ते धर्मास्तिकाय, देशसमय सर्वदेशनो जेकोई विभाग ते देशकहिये, तिवे प्रदेश धर्मास्तिकायनो प्रदेश निर्विभाग सूक्ष्म

॥ टीका ॥

रूपेण प्रतिनासन्ते स्मिन् व्यवस्थिताः पदार्थाः इत्याकाशं, यदात्वभिविधावाङ् तदा आङिति सर्वज्ञावाभिव्याप्त्या काशते इत्याकाशं, अस्त यः प्रदेशा स्तेषां कायो स्तिकाय, आकाशञ्च तत् अस्तिकाया श्चाकाशास्तिकाय, आकाशास्तिकायस्य इत्यादि पूर्ववन्नवरं प्रदेशा अनन्ता द्रष्टव्या, अलोकस्या नन्तत्वात् ॥ अद्धेति ॥ कालस्याख्या, अद्धाचासौ समयश्च अद्धासमयः, अथवा; अद्धायाः समयो निर्विभागोभागः, अयञ्च एकएव वर्त्त मानः परमार्थतः सन्ना तीतानागताः समया स्तेषां यथाक्रमं विनष्टानुत्पन्नत्वेना सत्वात् ततः कायत्वाभावइतिदेशप्रदेशकल्पनाविरहः, आवलि कादयस्तु पूर्वसमयविरोधेनैवोत्तरसमयसद्भावइति, ततः समुदयसमित्याद्यसम्भवेन व्यवहारार्थमेव कल्पिता इति द्रष्टव्यं, तथा मीषा मित्थं क्रमोपन्या से किंप्रयोजन ? मुच्यते इह धर्मास्तिकाय इतिपदं मङ्गलभूत मादौ धर्मशब्दान्वितत्वात्, पदार्थप्ररूपणाच सम्प्रतिप्रथमत उल्लिखा वर्त्तते ततो मङ्गलार्थं मादौ धर्मास्तिकायस्यो पादानं, धर्मास्तिकायप्रतिपक्षभूतश्चा धर्मास्तिकाय स्तदनन्तर मधर्मास्तिकायस्य' द्वयोरपि चानयो राधारभूत माकाशमिति तदनन्तर माकाशास्तिकायस्य, ततः पुन रजीवसाधर्म्या दद्धा समयस्य, अथवा; इह धर्माधर्मास्तिकायौ विभू नभवत स्तद्विभूत्वे तत्सामर्थ्यतो जीवपुद्गलाना मस्खलितप्रचारप्रवृत्तौ लोकालोकव्यवस्थानुपपत्ते, रस्तिच लोकालोकव्यवस्था तत्र २ प्रदेशे सूत्रे साक्षाद्दर्शनात्, ततो यावतिक्षेत्र ऽवगाढौ तावत्प्रमाणोलोकः शेषस्त्वलोक इति सिद्ध मुक्तंच–धर्माधर्मविभुत्वात् सर्वत्रचजीवपुद्गलविचारात्। नालोकःकश्चित्स्या न्नच सम्मतमेतदार्याणाम् ॥ १ ॥ तस्माद्धर्माधर्मा ववगाढौव्याप्यलोकखंसर्वं ॥ एवंहिपरिच्छिन्नः सिध्यतिलोकस्तदविभुत्वात् ॥ २ ॥ ततएव लोकालोकव्यवस्था

॥ मूल ॥

**कायस्सपएसा णागासत्थिकाए णागासत्थिकायस्सदेसे णागासत्थिकायस्सप्पदेसा अद्धासमए१० सेत्तंअरूवि**

॥ भाषा ॥

प्रदेश कहीये। अधर्मास्तिकाए अधर्मास्तिकायस्सदेसे अधर्मास्तिकायस्सपएसा ६। धर्मास्तिकायनो प्रतिपक्षी ते अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायनोदेश इम अधर्मास्तिकायनोप्रदेश असंख्यात लोकाकाशप्रमाण प्रदेशकहिये। आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्सदेसे आगासत्थिकायस्सपएसा ४। आकाशास्ति काय स्वभावें शोभे ते इमहीज ते आकाशास्तिकायनोदेश इमहीज आकाशास्तिकायनो प्रदेश। अद्धासमए १०। कालसमय ॥१०॥ सेत्त अरूविअजीव

॥ टीका ॥

हेतू धर्माधर्मास्तिकाया वित्यनयो रादावुपादान, त्रापि माङ्गलिकत्वात् प्रथमतो धर्मास्तिकायस्य तत्प्रतिपक्षत्वा त्ततो ऽधर्मास्तिकायस्य, ततो लोकालोकव्यापित्वा दाकाशास्तिकायस्य, तदनन्तरं लोके समयासमयक्षेत्रव्यवस्थाकारित्वा द्धा समयस्य, एव मागमानुसारेणा न्यदपि युक्त्यनुपा ति वक्तव्य मित्यल प्रसङ्गेन' प्रकृतोपसंहारमाह-सेत्तंअरूविअजीवपन्नवणा ॥ सैषा अरूप्यजीवप्रज्ञापना' पुन राह विनेयः-सेकिंतमित्यादि ॥ अथकासा रूप्यजीवप्रज्ञापना ? सूरि राह-रूप्यजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-स्कन्धाः स्कन्दन्ति शुष्यन्ति धीयन्तेच पुष्यन्ते पुद्गलानां विचटनेन चटनेनवेति स्कन्धाः पृषोदरादय इतिरूपनिष्पत्तिः, अत्रबहुवचनं पुद्गलस्कन्धाना मानन्त्य ख्यापनार्थं च, न चा नन्त्यमनुपपन्न मागमे भिधाना, तथा च वक्ष्यन्ति-दव्वतोणंपुग्गलत्थिकायणंतादव्वाइत्यादि ॥ स्कन्यदेशाः स्कन्धानामेव स्कन्धत्वपरिणाममजहन्तो बुद्धिपरिकल्पिता द्यादि प्रदेशात्मका विभागाः, अत्रापि बहुवचन मनन्तप्रादेशिकेषु तथाविधेषु स्कन्धेषु प्रदेशानन्तत्वसम्भावनार्थं स्कन्धानां स्कन्धत्वपरिणामपरिणतानां बुद्धिपरिकल्पिताः प्रकृष्टादेशा निर्विभागाभागाः परमाणव इत्यर्थः, स्कन्धप्रदेशाः अत्रापि बहुवचनं प्रदेशानन्तत्वसम्भावनार्थं, परमाणुपुद्गला इति परमाश्चते अणवश्च परमाणवो निर्विभागद्रव्यरूपा स्ते च ते पुद्गलाश्च परमाणुपुद्गलाः, स्कन्धत्वपरिणामरहिताः केवलाः परमाणव इत्यर्थः, तेस

॥ मूल ॥

**अजीवपन्नवणा ॥ सेकिंतं रूविअजीवपन्नवणा रूविअजीवपन्नवणा चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा-खंधा खंधदे सा खंधप्पएसा परमाणुपोग्गला ४। तेसमासतो पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा-वन्नपरिणया गंधपरिणया रस**

॥ भाषा ॥

पन्नवणा। ते जिम अरूपी अजीव प्रज्ञापना जाणवी। सेकिं तं रूवीअजीवपन्नवणा २ चउव्विहा पन्नत्ता तंजहा। ते शिष्यकहै कुण रूपी जिम अजीवप्रज्ञा पना जदि गुरुकहै, अजीव प्रज्ञापनारा चारभेद कह्या ते जिम कहुंछूं। खंधा खंधदेशा खंधप्पएसा परमाणुपुग्गला ४। खंध ते समस्तवस्तु, देश ते को ईएक विभाग, प्रदेश ते कहिये निर्विभाग सूक्ष्मते प्रदेश, परमाणु ते निर्विभागरूप अनन्तप्रदेशे निष्पन्न ते परमाणुपुद्गल कहिये। ते समासओ पंचविहा प न्नत्ता तंजहा। ते परमाणुपुद्गल पांचेप्रकारेकह्या ते पांचप्रकार जिम कहैछे-वन्नपरिणया गंधपरिणया रसपरिणया फासपरिणया संठाणपरिणया ५।

मासनइत्यादि ॥ तेस्कन्धादयो यथासम्भवं समासतः सङ्क्षेपेण पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–वर्णपरिणता वर्णतःपरिणता वर्णभाज इत्यर्थः, एवं गन्धपरिणताः, रसपरिणताः, स्पर्शपरिणताः, संस्थानपरिणताः, परिणता इति अतीतकालनिर्देशो वर्त्तमानानागतकालोपलक्षणं, वर्त्तमानानागतत्वमन्तरेणा तीतत्वस्या सम्भवात्, तथाहि–योवर्त्तमानत्व मतिक्रान्तः सोतीतो भवति' वर्त्तमानत्व च्च सो नुज्झति योनागतत्व मतिक्रान्तवा नुक्तञ्च–ज्झतिसनामातीतो यःप्राप्तोनामवर्त्तमानत्वं ॥ एष्यश्चनामसज्झति यःप्राप्स्यतिवर्त्तमानत्वम् ॥ १ ॥ ततो वर्णपरिणता इति वर्णरूपतया परिणताः परिणमन्तीति परिणमिष्यन्तीति द्रष्टव्य' मेवं गन्धरसपरिणता इत्याद्यपि परिज्ञावनीयं ॥ जेवस्सपरिणया इत्यादि ॥ येवर्णपरिणता स्ते पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता, स्तद्यथा–कृष्णवर्णपरिणताः कज्जलादिवत्, नीलवर्णपरिणता नील्यादिवत्, लोहितवर्णपरिणता हिङ्गुलकादिवत्, हारिद्रव र्णपरिणता हरिद्रादिवत्, शुक्लवर्णपरिणताः शङ्खादिवत्, येगन्धपरिणता स्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–सुरभिगन्धपरिणताश्च दुरभिगन्धपरिणताश्च चशब्दौ परिणामभवनं प्रति विशेषाजावख्यापनार्थौ तथाहि–यथाकथंचिदवस्थिताः सामग्रीवशतः सुरभिगन्धपरिणामं भजन्ते तथा कथञ्चिदवस्थि

टीका ॥

**परिणया फासपरिणया संठाणपरिणया । जेवस्सपरिणया ते समासतो पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा–कालवस्स परिणया नीलवस्सपरिणया लोहियवस्सपरिणया हालिद्दवस्सपरिणया सुक्किलवस्सपरिणया । जे गंधपरिणया**

॥ मूल ॥

वर्णपरिणया वर्णपरिणाम भाज इत्यर्थ, स्कन्धास्कन्दतिशुथति १ गन्धपरिणत २ रसपरिणत ३ स्पर्शपरिणत ४ संस्थानपरिणत ५ । जेवस्सपरिणया तेपंचविहा पन्नत्ता तंजहा । हिवे जे वर्णपरिणतछै तिके पांचप्रकारना कह्या ते जिम कहैछै—कालवस्सपरिणया नीलवस्सपरिणया लोहियवस्सपरिणया हालिद्दवस्सपरिणया सुक्किलवस्सपरिणया ५ । कृष्णवर्णपरिणत ते काजलनीपरे स्यामवर्ण परिणम्यो, नीलवर्ण परिणत जंगालनीपरे, रक्तवर्णपरिणत हिंगलू नीपरे, पीतवर्ण परिणत हलद नीपरे, स्वेतवर्ण परिणत शंख नीपरे । जेगंधपरिणया ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा । जिके गन्धपरिणत तेहना दोयभेदकह्या ते कहैछै –सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया । सुगन्ध परिणत श्रीखंडनीपरे, दुर्गन्धपरिणत लसुननीपरे । जेरसपरिणया ते पंचविहा पन्नत्ता तंज

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

ता एव सामग्रीवशतो दुरभिगन्धपरिणाम मयीति, सुरभिगन्धपरिणता श्च यथाश्रीखण्डादयः, दुरभिगन्धपरिणता लशुनादिवत्, येरसपरिणता स्ते पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—तिक्तरसपरिणताः कोशातक्यादिवत्' कटुकरसपरिणताः शुण्ठ्यादिवत्' कषायरसपरिणता अपक्वकपित्थादिवत्, आम्लरसपरिणता आम्लवेतसादिवत्' मधुररसपरिणताः शर्करादिवत्॥ ये स्पर्शपरिणता स्ते अष्टविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—कर्कशस्पर्शपरिणताः पाषाणादिवत्' मृदुस्पर्शपरिणता हंसरुतादिवत्' गुरुकस्पर्शपरिणता वज्रादिवत्, लघुकस्पर्शपरिणता अर्कतूलादिवत्, शीतस्पर्शपरिणता मृणालादिवत्, उष्णस्पर्शपरिणता वह्न्यादिवत्, स्निग्धस्पर्शपरिणता घृतादिवत्, रूक्षस्पर्शपरिणता भस्मादिवत्॥ ये संस्थानपरिणता,

॥ मूल ॥

ते दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सुब्भिगंधपरिणया दुब्भिगंधपरिणया। जेरसपरिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंजहा तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अंबिलरसपरिणया मधुररसपरिणया। जेफासपरिणया ते अट्ठविहा पण्णत्ता, तंजहा—कक्कडफासपरिणया मउयफासपरिणया गरुयफासपरिणया लहुयफासपरिणया सीयफासपरिणया उसिणफासपरिणया णिद्धफासपरिणया लुक्खफासपरिणया। जेसंठाणपरि

॥ भाषा ॥

हा। जे रस परिणतछै तेहना पांच प्रकारकह्या तेहीज कहैछै—तित्तरसपरिणया कडुयरसपरिणया कसायरसपरिणया अबिलरसपरिणया महुररस परिणया। तीखोरस परिणतछै कोसातकीपरे कुलिंजण ज्युं कोसात ते कुलिजन, कटुकरस परिणत सूंठनीपरे, कसायरस परिणत कांची कोख नीपरे, अंबिलरस परिणत आंबलबेतनीपरे, मधुररस साकरनीपरे। जेफासपरिणया तेअट्ठविहा पण्णत्ता तंजहा। जिके फरसथकी परिणम्याछै तेहना ८ भेदकह्या ते जिम कहैछै—कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास परिणया। कर्कश स्पर्श पाषाणनीपरे, मृदु कोमल स्पर्श हंस नीपरे, गुरुस्पर्श परिणत वज्रनीपरे, तिम लघुस्पर्श परिणत अर्कतूलनीपरे। सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणया। शीत स्पर्श परिणत मृणालनीपरे, उष्णस्पर्श परिणत अग्निनीपरे, स्निग्ध सचिक्कणस्पर्श परिणत घृतनीपरे, रूक्षस्पर्श परिणत भस्मनीपरे। जे संठाण प

॥ टीका ॥

स्ते पञ्चविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-परिमण्डलसंस्थानपरिणता वलयवत्, वृत्तसंस्थानपरिणताः कुलालचक्रादिवत्' त्र्यस्रसंस्थानपरिणताः शृङ्गाटकादिवत्, चतुरस्रसंस्थानपरिणताः कुम्भिकादिवत्' आयतसंस्थानपरिणता दण्डादिवत्, एतानिच परिमण्डलादीनि संस्थानानि घनप्रतरभेदेन द्विविधानि भवन्ति, पुनः परिमण्डल मपहाय शेषाणि ओजःप्रदेशजनितानि युग्मप्रदेशजनितानि इतिद्विधा, तत्रोत्कृष्टं परिमण्डलादि सर्वमनन्ताणु निष्पन्न मसङ्ख्येयप्रदेशावगाढं चेति प्रतीतमेव, जघन्यं तु प्रतिनियतसङ्ख्यपरमाणवात्मक मतो नानिर्दिष्टं ज्ञातुं शक्यते इतिविनेयजनानुग्रहाय तदुपदर्श्यते-तत्रौ जःप्रदेशप्रतरवृत्तं पञ्चपरमाणुनिष्पन्नं पञ्चाकाशप्रदेशावगाढञ्च तद्यथा-एकःपरमाणुर्मध्ये स्थाप्यते चत्वारः क्रमेण पूर्वादिषु तचसृषु दिक्षु, युग्मप्रदेशप्रतरवृत्तं द्वादशपरमाणवात्मकं द्वादशप्रदेशागाढञ्च तत्र निरन्तरं चत्वारः परमाणव श्चतुर्थाकाशप्रदेशेषु रुच काकारेण व्यवस्थाप्यन्ते तत स्तत्परिक्षेपेण शेषा अष्टौ ॥ ओजःप्रदेशघनवृत्तं सप्तपरमाणवात्मकं सप्तप्रदेशावगाढञ्च तच्चैवं-तत्रैव पञ्चप्रदेश प्रतरवृत्तमध्य स्थितस्य परमाणो रुपरिष्टा दधस्ता च्च एकैकोणु रवस्थाप्यते तत एवं सप्तप्रदेशं भवति ॥ युग्मप्रदेशं घनवृत्तंद्वात्रिंशत्प्रदेशं द्वात्रिंशत्प्रदेशावगाढञ्च तच्चैवं-पूर्वोक्तद्वादशप्रदेशात्मकस्य प्रतरवृत्तस्योपरि द्वादश ततउपरिष्टा दधश्चा न्येचत्वारश्चत्वारः परमाणव इति ॥ ओजःप्रदेशं प्रतरत्र्यस्रं त्रिप्रदेशं त्रिप्रदेशावगाढञ्च तच्चैवं-पूर्वं तिर्यगणुद्वयं न्यस्यते तत आद्यस्या ध एकोणुः ॥ युग्मप्रदेशप्रतरत्र्यस्रं षट्परमाणुनिष्पन्नं षट्प्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्निरन्तरं त्रयः परमाणवः स्थाप्यन्ते तत आद्यस्या ध उपर्यधोभावेना णुद्वयं द्वितीयस्याधः एकोणुः स्थापना ॥ ओजःप्रदेशं घनत्र्यस्रं पञ्चत्रिं

॥ मूल ॥

णया ते पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—परिमंडलसंठाणपरिणया वट्टसंठाणपरिणया तंससंठाणपरिणया चउरं

॥ भाषा ॥

रिणया ते पंचविहा पण्णत्ता तंजहा। जिके संस्थान परिणत तेहना पांचप्रकार कह्या तेहीज कहैछै—परिमडलसंठाण प० वट्टसंठाण प० तससंठाण प० चउरससठाण प० आययसंठाण परिणया। परिमण्डलसंस्थान परिणत वलयनीपरे, वृत्तसंस्थान परिणत कुलालचक्रनीपरे, त्र्यंश त्रिखूणा संस्थानपरिणत संघाडानीपरे, चतुरस्र चौखूणा संस्थानपरिणत कुभीपरे, आयतसंस्थानपरिणत दण्डनीपरे, पञ्चपरमाणु निष्पन्न पचाकाशप्रदेशावगाढ इम सर्व

शत्परमाणुनिष्पन्नं पञ्चत्रिंशत्प्रदेशावगाढञ्च तच्चैवं – तिर्यग् निरन्तराः पञ्चपरमाणवः स्थाप्यन्ते तेषां चाधोधः क्रमेण तिर्यगेव चत्वार स्त्रयो द्वावेकश्चेति पञ्चदशात्मकः प्रतरोजातः स्थापना ॥ अस्यैवच प्रतरस्योपरि सर्वपङ्क्तिषु अन्त्यान्त्यपरित्यागेन दश ॥ १ ॥ तथैव तदुपर्युपरि षट् त्रय एकश्चेति क्रमणा णवः स्थाप्यन्ते स्थापना एतेमीलिताः पञ्चत्रिंश द्भवन्ति ॥ युग्मप्रदेशं घनत्र्यस्रं चतुःपरमाणवात्मकं चतुःप्रदेशावगाढ ञ्च तत्र प्रतरत्र्यस्रस्यैव त्रिप्रदेशात्मकस्य सम्बन्धिन एकस्याणो रुपर्यंकोणुः स्थाप्यते ततो मीलिता श्चत्वारो भवन्ति ॥ ओजःप्रदेशं प्रतरचतुरस्रंनवपरमाणवात्मकं नवप्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्निरन्तरं त्रिप्रदेशा स्तिस्रः पङ्क्तयः स्थाप्यन्ते युग्मप्रदेशं प्रतरचतुरस्रं चतुःपरमाणवात्मकं चतुःप्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्प्रदेशे द्वेपङ्क्ती स्थाप्येते, ओजःप्रदेशं घनचतुरस्रं सप्तविंशतिपरमाणवात्मकं सप्तविंशतिप्रदेशावगाढञ्च तत्र नवप्रदेशात्मकस्यैव पूर्वोक्तस्य प्रतरस्या धउपरिच नवप्रदेशाः स्थाप्यन्ते ततः सप्तविंशतिपरमाणवात्मक मोजःप्रदेशं घनचतुरस्रं भवति स्थापनासैव, युग्मप्रदेशं घनचतुरस्र मष्टपरमा

---

णवात्मक मष्टप्रदेशावगाढञ्च तच्चैवं–चतुःप्रदेशात्मकस्य पूर्वोक्तस्य प्रतरस्योपरि चत्वारोन्ये परमाणवः स्थाप्यन्त इति ॥ ओजःप्रदेशं आयतं त्रिपरमाणु त्रिप्रदेशावगाढञ्च तत्र तिर्यग्निरन्तरं त्रयः स्थाप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेशंश्रेण्यायतं द्विपरमाणु द्विप्रदेशावगाढञ्च तथैवा णुद्वयं स्थाप्यते ॥ ओजःप्रदेशं प्रतरायतं पञ्चदशपरमाणवात्मकं पञ्चदशप्रदेशावगाढञ्च तत्र पञ्चदशप्रदेशात्मिका स्तिस्रः पङ्क्तय स्तिर्यक्स्थाप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेशं प्रतरायतं षट्प्रदेशात्मकं षट्प्रदेशावगाढञ्च तत्र त्रिप्रदेशं पङ्क्तिद्वयं स्थाप्यते स्थापना, ओजःप्रदेशं घनायतं पञ्चचत्वारिंशत्परमाणवात्मकं तावत्प्रदेशावगाढञ्च तत्र पूर्वोक्तस्यैव प्रतरायतस्य पञ्चदशप्रदेशात्मकस्याधउपरि तथैव पञ्चदशपरमाणवः स्थाप्यन्ते ॥ युग्मप्रदेशं घनायतं द्वादशपरमाणवात्मकं द्वादशप्रदेशावगाढञ्च तत्र प्रागुक्तस्य षट्प्रदेशस्य प्रतरायतस्योपरि तथैव तावन्तः परमाणवः स्थाप्यन्ते ॥ प्रतरपरिमण्डलं विंशतिपरमाणवात्मकं विंशतिप्रदेशावगाढञ्च तच्चैवं–प्राच्यादिषु चतसृषु दिक्षु प्रत्येकं चत्वारश्चत्वारो णवः स्थाप्यन्ते विदिक्षुच प्रत्येक मेकैकोणुः स्थाप्यते ॥ घनप

॥ टीका ॥

रिमण्डलं चत्वारिंशत्प्रदेशावगाढं चत्वारिंशत्परमाणवात्मकंच तत्र तस्या एव विंशते रुपरितना तथैवान्याविंशति रवस्याप्यते इत्यंचैषां प्रदेशतोऽपि मितोपि न्यूनप्रदेशतायां यथोक्तसंस्थानाभावात्, एतत्सङ्ग्राहिका श्चेमा उत्तराध्ययननिर्युक्तिगाथाः-परिमंडले य वट्टे, तंसे चउरंसआयए चेव ॥ घणपयर पढमवज्जं, जुजपएसे य जुम्मेय ॥ १ ॥ पंचगबारसगंखलु, सत्तगबत्तीसगंच वट्टंमि ॥ तियछक्क पंचतीसा, चत्तारियहोंति तंसंमि ॥ २ ॥ नव चेवतहाचउरो, सत्तावीसाय अट्ठ चउरंसे ॥ तिगदुग पन्नरसेवय, छच्चेवय आयएहोंति ॥ ३ ॥ पणयाला बारसगं, तह चेवय आययंमि संठाणे ॥ वीसाचत्तालीसा परिमंडलएयसंठाणे ॥ ४ ॥ इति ॥ संप्रत्येतेषा मेव वर्णादीनां परस्परसम्बेधमाह-जेवन्नतोइत्यादि ॥ येस्कन्धादयो वर्णतो वर्णमाश्रित्य कालवर्णपरिणताअपि भवन्ति ते सुरभिगन्धपरिणताअपि भवन्ति दुरभिगन्धपरिणताअपि॥ किमुक्तं भवति ? गन्धमधिकृत्य ते भाज्याः केचित्सुरभिगन्धपरिणता भवन्ति केचिद्दुरभिगन्धपरिणता, नतु प्रतिनियतैकगन्धपरिणामपरिणताइति, एवञ्चरसतः स्प

॥ मूल ॥

**ससंठाणपरिणया आयतसंठाणपरिणया ॥ जे वन्नओ कालवन्नपरिणया ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणयावि दुब्भिगंधपरिणयावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्कडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि**

॥ भाषा ॥

स्थापनार्थं२५ कह्या, हिवे परस्पर वर्णादि संबंधभाङ्गा कहैछै—जे कालवन्नपरिणया । जे वर्णथी कालवर्ण परिणतहुवे तथा । तेगंधओ । ते गन्धथकी। सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। सुगन्ध तथा दुर्गन्धगन्धे परिणतहुवे। रसओ। रसथकी। तित्तरस प० कडुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० महुररसपरिणयावि। तिक्तरसपरिणतहुवे कोई कटुकरस परिणतहुवे कोई कषायरस परिणतहुवे कोई अम्बिलरस परिणतहुवे कोई मधुरस परिणतहुवे। फासओ कक्खडफासप० मउयफास प० गुरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणया। स्पर्शथकी कर्कश परिणतहुवे

॥ टीका ॥

शीतः संस्थानतश्च वाच्याः, तत्र द्वौ गन्धौ, पञ्चरसाः, अष्टौस्पर्शाः, पञ्चसंस्थानानि, एतेच मीलिता विंशतिरिति ॥ कृष्णवर्णपरिणता एतावन्तो भङ्गान्लभन्ते २०, एवं नीलवर्णपरिणताअपि २०' लोहितवर्णपरिणता अपि २०' हारिद्रवर्णपरिणता अपि २०, शुक्लवर्णपरिणता अपि २०, एवं

॥ मूल ॥

संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि । जेवण्णओ नीलवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणयावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्कडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडल

॥ भाषा ॥

अशुभपदेशो माटे, कोई मृदुस्पर्श परिणतहुवे गुरुस्पर्श परिणत कोई लघुस्पर्श परिणतहुवे शीतस्पर्श परिणत उष्णस्पर्श परिणतहुवे स्निग्धपरिणत कोई रूक्षस्पर्श परिणतहुवे । संठाणओपरिमंडलसंठाणपरिणया । संस्थानथकी कोई परिमण्डल संस्थान परिणतहुवे । वट्टसंठाण प० तंससंठाण प० चउरंससंठाण प० आयतसंठाणपरिणया । कोई वृत्तसंस्थानपरिणतहुवे त्र्यंशसंस्थान परिणतहुवे कोई चतुरस्रसंस्थाने परिणतहुवे आयतसंस्थान परिणतहुवे । जेवण्णओनीलवण्णपरिणया । जिकेवर्णथकी नीलवर्ण परिणतहुवे । तेगंधओ सुब्भिगंध प० दुब्भिगंध परिणयावि । ते गन्धथकी सुगन्ध परिणतहुवेदुर्गन्ध परिणतहुवे । रसओ । रसथकी । तित्तरस प० कडुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० महुररसपरिणया । तिक्तरस परिणत हुवे कटुकरस परिणतहुवे कषायरस परिणतहुवे आंबिलरस परिणतहुवे मीठोरस परिणतहुवे । फासओ । स्पर्शथकी । कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । कर्कशस्पर्श परिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्पर्श परिणतहुवे लघुस्पर्शपरिणतहुवे शीतस्पर्शपरिणत हुवे उष्णस्पर्शपरिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहुवे रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे । संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि

॥ मूल ॥

संठाणपरिणताविवट्टसंठाणपरिणताविंससंठाणपरिणताविचउरंससंठाणपरिणताविआयतसंठाणपरिणताविजेवण्णओलोहियवण्णपरिणतातेगंधओसुब्भिगंधपरिणताविदुब्भिगंधपरिणताविरसओतित्तरसपरिणताविकडुयरसपरिणताविकसायरसपरिणताविअंबिलरसपरिणताविमहुररसपरिणताविफासओकक्खडफासपरिणताविमउयफासपरिणयाविगरुयफासपरिणताविलहुयफासपरिणताविसीतफासपरिणताविउसिणफासपरिणताविणिद्धफासपरिणताविलुक्खफासपरिणताविसंठाणओपरिमंडलसंठाणपरिणताविवट्टसंठाणपरिणताविंससंठाणपरिणताविचउरंससंठाणपरिणताविआयतसंठाणपरिणताविजेवण्णओहालिद्दवण्णपरिणयातेगंधओसुब्भिगंधपरिणताविदुब्भिगंधपरिणताविरसओतित्तरसपरिणताविकडुयरसपरिणताविकसायरसपरिणताविअंबिलरसपरिणताविमहुररसपरिणताविफासओकक्खडफासपरिणताविमउयफासपरिणताविगरुयफासपरिणताविलहुयफासपरिणताविसीतफासपरिणताविउसिणफासपरिणताविणिद्धफासपरिणताविलुक्खफासपरिणताविसंठाणओपरिमंडलसंठाणपरिणताविवट्टसंठाणपरिणताविंससंठाणपरिणताविचउरंससंठाणपरिणताविआयतसंठाणपरिणताविजेवण्णओहारिद्दवण्णपरिणयातेगंधओसुब्भिगंधपरिणताविदुब्भिगंधपरिणताविरसओतित्तरसपरिणताविकडुयरसपरिणताविकसायरसपरिणताविअंबिलरसपरिणताविमहुररसपरिणताविफासओकक्खडफासपरिणताविमउयफासपरिणताविगरुयफासपरिणताविलहुयफासपरिणताविसीतफासपरिणताविउसिणफासपरिणताविणिद्धफासपरिणताविलुक्खफासपरिणताविसंठाणओपरिमंडलसंठाणपरिणताविवट्टसंठाणपरिणताविंससंठाणपरिणताविचउरंससंठाणपरिणताविआयतसंठाणपरिणताविजेवण्णओसुक्किलवण्णपरिणयातेगंधओसुब्भिगंधपरिणताविदुब्भिगंधपरिणताविरसओतित्तरसपरिणताविकडुयरसपरिणताविकसायरसपरिणताविअंबिलरसपरिणताविमहुररसपरिणताविफासओकक्खडफासपरिणताविमउयफासपरिणताविगरुयफासपरिणताविलहुयफासपरिणताविसीतफासपरिणताविउसिणफासपरिणताविणिद्धफासपरिणताविलुक्खफासपरिणताविसंठाणओपरिमंडलसंठाणपरिणताविवट्टसंठाणपरिणताविंससंठाणपरिणताविचउरंससंठाणपरिणताविआयतसंठाणपरिणताविं।

॥ भाषा ॥

यया। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणतहुवै। वट्टसंठाण प० तंससंठाण प० चउरंससंठाण प० आययसंठाणपरिणयावि। इत्त संस्थानपरिणतहुवे कोई त्र्यंशसंस्थानपरिणतहुवे कोई चतुरस्रसंस्थानपरिणतहुवे आयतसंस्थानपरिणतहुवे॥ जेवर्णओ लोहियवर्णपरिणया। जेवर्णथकी लोहितवर्ण परिणतहुवे। ते गंधओ। ते गन्धथकी। सुब्भिगंध प० दुब्भिगंध परिणयावि। सुगन्ध परिणत पिणहुवे दुर्गन्धपरिणत पणिहुवे। रसओ। रसथकी। तिक्तरस प० कडुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० महुररसपरिणयावि। तिक्तरसपरिणतहुवे कटुकरसपरिणतहुवे कषायरसपरिणतहुवे आंबिलरसपरिणतहुवे मधुररसपरिणत हुवे। फासओ। स्पर्शथकी। कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफासप० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफासप० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि। कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतपिणहुवे गुरुस्पर्शपरिणतहुवे लघुस्पर्शपरिणतहुवे शीतस्पर्शपरिणतहुवे उष्णस्पर्शपरिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहुवे रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। संठाणओ। संस्थानथकी। परिमंडलसंठाणपरिणया। परिमंडलसंस्थान परिणत हुवे। वट्टसंठाण प० तंससंठाण प० चउरंसआययसंठाण परिणयावि। कोई इत्तसंस्थान परिणतहुवे कोई त्र्यंशसंस्थानपरिणतहुवे कोई चतुरस्रआयतसंस्थानते परिणत हुवे॥ जेवण्णओ। जे वर्णथकी। हालिद्दवण्णपरिणया। हारिद्रवर्ण पीतवर्ण परिणत हुवे। ते गंधओ। ते गन्धथकी। सुब्भिगंध दुब्भि

॥ मूल ॥

सपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणनं परिमंडलसंठाण परिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि जेगंधनं सुब्भिगंधपरिणता ते वन्ननं कालवन्नपरिणतावि नीलवन्नपरिणतावि लोहितवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणयावि सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, रसनं तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि मधुररसपरिणतावि, फासनं कक्कडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणनं परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि च उरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जेगंधनं दुब्भिगंधपरिणता ते वन्ननं कालवन्नपरिणतावि

॥ भाषा ॥

यावत् जिहांलगे रूक्षस्पर्श परिणतहुवे इमहीज आठबार कहवो । संठाणओपरिमंडलसंठाणपरिणया । संस्थानथकी परिमडलसंस्थान परिणत हुवे । जावआयतसंठाणपरिणयावि । यावत् जिहांलगे आयतसंस्थानपरिणतहुवे ॥ जे गंधओ सुब्भिगंध परिणया । जे गंधथकी सुगन्ध परिणतहुवे । ते वन्नओ कालवन्नपरिणयावि नीलवन्न प० लोहियवन्न प० हालिद्दवन्न प० सुक्किल्लवन्नपरिणयावि । ते वर्णथकी कोई कालेवर्ण परिणतहुवे कोई नीलवर्ण परिणतहुवे रातेवर्ण परिणतहुवे पीलेवर्ण परिणतहुवे कोई श्वेतवर्ण परिणतहुवे । रसओ तित्तरस प० जावमहुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस परिणत हुवे यावत् पंचम मधुररस परिणतहुवे । फासओ कक्खडफास प०जावलुक्खफास परिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणतहुवे यावत् जिहांलगे कोई रूक्षस्पर्श परिणतहुवे । संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जाव आयतसंठाणपरिणयावि । संस्थानथकी कोई परिमंडलसंस्थान परिणतहुवे इम यावत् पचम आयतसंस्थानलगे परिणत पिणहुवे ॥ जे गंधओ दुब्भिगंध प० । जे गंधथकी दुरगन्ध परिणतहुवे । ते वन्नओ कालवन्न प०जावसुक्किल्लवन्नपरिण

॥ मूल ॥

जेवण्णओ हालिद्दवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जेवण्णओ सुक्किल्लवण्णपरिणता ते गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणयावि गरुयफासपरिणयावि लहुयफासपरिणतावि सीयफा

॥ भाषा ॥

गंध परिणया। सुगन्ध दुरगन्ध परिणतहुवे। रसओ। रसथकी। तित्तरस प० कडुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० महुररसपरिणयावि। तिक्तरस परिणत हुवे कटुकरस परिणतहुवे कषायरस परिणतहुवे अंबिलरस परिणतहुवे मधुररस परिणतहुवे। फासओ कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प० मृदुस्पर्श प० गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श प० स्निग्धस्पर्श रूक्षस्पर्श परिणत हुवे। संठाणओ परिमंडल सं० वट्ट सं० तंस सं० चउरंस सं० आयतसंठाण परिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणतहुवे कोई वृत्तसंस्थान परिणतहुवे कोई त्र्यस्र संस्थान प० कोई चतुरस्रसंस्थान प० कोई आयत संस्थान परिणतहुवे॥ जे वण्णओ सुक्किल्लवण्णपरिणया। जे वर्णथकी शुक्लवर्ण परिणतहुवे। ते गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणया। ते गंधथकी सुगंध दुरगन्ध परिणतहुवे। रसओ तित्तरस प० कडुयरस प० कसायरस प० अंबिलरस प० महुररसपरिणया। रसथकी तिक्तरस प० कटुकरस प० कषायरस प० आंबिलरस प० मधुररस परिणत हुवे। फाससो कक्खडफास परिणयावि। स्पर्शथकी, कोई कर्कशस्पर्शपरिणत हुवे। जावलुक्खफास प०

नीलवण्णपरिणतावि लोहितवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरिणतावि कडुयरसपरिणतावि कसायरसपरिणतावि अंबिलरसपरिणतावि महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिणफासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जे रसओ तित्तरसपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरिणतावि नीलवण्णपरिणतावि लोहियवण्णपरिणतावि हालिद्दवण्णपरिणतावि सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि गरुयफासपरिणतावि लहुयफासपरिणतावि सीतफासपरिणतावि उसिण

यावि। ते वर्णथको कोई कृष्णवर्ण परिणतहुवे इम यावत् कोई शुक्लवर्ण परिणतहुवे। रसओ तिक्तरस प० जाव मधुररसपरिणयावि। रसथको तिक्तरस परिणतहुवे इम यावत् कोईक मधुररसपरिणतहुवे। फासओ कर्कशस्पर्श प० जावलुक्षफासपरिणयावि। स्पर्शथको कर्कशस्पर्श परिणतहुवे यावत् रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जाव आययसंठाणपरिणयावि। संस्थानथको परिमंडलसंस्थान परिणतहुवे यावत् आयतसंस्थान परिणतहुवे॥ जे रसओ तिक्तरसपरिणया। जे रसथको तिक्तरस परिणतहुवे। तेवण्णओ कालवण्ण जावसुक्किल्लवण्णपरिणया। ते वर्णथको कालवर्ण परिणतहुवे इम यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। गंधथको सुगंध दुरगन्ध परिणतहुवे। फासओ कक्खडफास जावलुक्ख फास परिणयावि। कर्कशस्पर्श परिणतहुवे इम यावत् रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जावआययसंठाणपरिणयावि। संस्थानथ

॥ टीका ॥

अपि नीलवर्णपरिणताअपि लोहितवर्णपरिणताअपि हारिद्रवर्णपरिणताअपि शुक्लवर्णपरिणताअपि ८ एवं रसतः ५ स्पर्शतः ८ संस्थानतः ५ एतेच मीलिता स्त्रयोविंशति रिति सुरभिगन्धपरिणता स्त्रयोविंशति भङ्गान्लभन्ते, एवं दुरभिगन्धपरिणताअपि २३' ततो गन्धपदेन लब्धा भङ्गानां षट्च त्वारिंशत्, रसमधिकृत्याह–ये रसतो रसमधिकृत्य तिक्तरसपरिणता स्ते वर्णतः ५ गन्धतः २ स्पर्शतः ८ संस्थानतः ५ एते सर्वेपि एकत्र मीलिता विंशतिरिति॥ तिक्तरसपरिणता विंशतिभङ्गां लभन्ते २०, एवं कटुकरसपरिणताः २०, कषायरसपरिणताः २०, अम्लरसपरिणताः २०, मधुररसप

॥ मूल ॥

फासपरिणतावि णिद्धफासपरिणतावि लुक्खफासपरिणतावि, संठाणउ परिमंडलसंठाणपरिणतावि वट्टसंठाणपरिणतावि तंससंठाणपरिणतावि चउरंससंठाणपरिणतावि आयतसंठाणपरिणतावि। जेरसउ कडुयरसपरिणता ते वन्नउ कालवन्नपरिणतावि नीलवन्नपरिणतावि लोहितवन्नपरिणतावि हालिद्दवन्नपरिणतावि सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधउ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासउ कक्खडफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासप० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणउ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणप० आयतसंठाणप

॥ भाषा ॥

को परिमण्डलसंस्थानपरिणतहुवे इम यावत् आयतसंस्थान परिणतहुवे॥ जे रसओ कडुयरसपरिणया। जिके रसथकी कटुकरस परिणतहुव। तेवन्नओ कालवन्नपरिणयावि। ते वर्णथकी कोई कालेवर्ण परिणतहुवे। जावसुक्किल्लवन्नपरिणयावि। यावत् कोई शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधओ सुब्भिगंध प० दुब्भिगंध परिणयावि। गन्धथकी सुगन्ध गन्ध परिणत हुवे दुर्गन्ध परिणत हुवे। फासओ कक्खडफास प० जावलुक्खफास परिणयावि। स्पर्शथकी कर्कश स्पर्शपरिणत हुवे इम यावत् रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जाव आयतसंठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणत पिणहुवे यावत् शब्दे जिहांलगे आयतसंस्थान परिणत संस्थान हुवे॥ जे रसओ कसायरस अंबिल्ल महुररस परिणया। जे रसथकी कषायरस अं

॥ मूल ॥

रिणतावि । जे रसतो कसायरसपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि , गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि , फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणप० चउरससंठाणप० आयतसंठाणपरिणतावि । जे रसतो अंबिलरसपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे रसतो मधुररसपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णप० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि , गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि , फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिण

---

॥ भाषा ॥

विलरस मधुररस परिणतहुवे। ते वर्णथकी कालवर्ण प० जाव सुक्किल्लवर्णपरिणयावि । ते वर्णथकी कालेवर्ण परिणत पिणहुवे यावत् शुक्लवर्ण परिणत हुवे । गंधथी सुब्भिगंध प० दुब्भिगधपरिणयावि । ते गन्धथकी सुगन्धपरिणत पिणहुवे दुर्गन्धपरिणत पिणहुवे। फासथी कक्खडफास प० जाव लुक्खफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणत पिणहुवे यावत् रूक्षस्पर्श परिणत पिणहुवे । संठाणथी परिमंडलसंठाण प० जाव

रिणताः २०, एवं रसपञ्चकसंयोगे लब्धं जङ्घकानां शतं १००, स्पर्शमधिकृत्याह-ये फासतोकक्खडफासपरिणयाइत्यादि ॥ ये स्पर्शतः कर्कशस्पर्शपरि

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

फासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि ॥ जे फासतो कक्खडफासपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासतो मउयफासपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्ण

आयतसंठाणपरिणयावि । परिमंडलसंस्थानथको परिणत पिणहुवे यावत् आयतसंस्थानपरिणत पिणहुवे ॥ जे फासओ कक्खडफास प० ते वण्णओ कालवण्ण प० । जे स्पर्शथको कर्कश परिणतहुवे ते वर्णथको कालेवर्ण परिणत पिणहुवे । जावसुक्किल्लवण्णपरिणयावि । यावत् शुक्लवर्ण परिणत हुवे । गंधओ सुब्भिगंध प० दुब्भिगंध परिणयावि । गन्धथको सुरभिगंध परिणतहुवे दुरभिगंध परिणतहुवे । रसओ तित्तरस प० जावमहुररस परिणयावि । रसथको तिक्तरस परिणतहुवे यावत् मधुररस परिणत हुवे । फासओ गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणयावि । स्पर्शथको गुरुस्पर्श परिणतहुवे लघुस्पर्श परिणत हुवे शीतस्पर्श परिणत हुवे उष्णस्पर्श परिणतहुवे स्निग्धस्पर्श परिणतहुवे रूक्षस्पर्श परिणतहुवे । संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जाव आयतसंठाणपरिणयावि । संस्थानथको परिमंडलसंस्थानपरिणत पिण हुवे यावत् आयतसंस्थानपरिणतहुवे । जेफासओ मउयफास प० । जे स्पर्शथको मृदुस्पर्श परिणतहुवे । ते वर्णओ कालवर्ण प० जाव सुक्किल्लवर्ण परिणयावि । ते वर्णथको कालेवर्ण परिण

॥ भाषा ॥

कृष्णास्ते वर्णतः ५ गन्धतः २ रसतः ५ स्पर्शतः ६ प्रतिपक्षस्पर्शयोगान्नानात्वात्, संस्थानतः ५ एते सर्वेऽपि एकत्रमीलिता खल्वेविंशतिः, एतावन्तो भङ्गा लभ्यन्ते

परि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्त रसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणओ परि मंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाण० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासओ गरुयफासपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लव ण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरस परि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरिणतावि मउयफासपरिणतावि सीय

त हुवे। यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधओ सुब्भिगंध प० दुब्भिगंधपरिणयावि। गंधथकी सुरभिगंध परिणतहुवे दुरभिगंध परिणतहुवे। रसओ तिक्तर स प० जावमधुररस परिणयावि। रसथकी तिक्तरस परिणतहुवे यावत् मधुररस परिणतहुवे। फासओ गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि। स्पर्शथकी गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० कोई उष्णस्पर्श प० कोई स्निग्धस्पर्श प० कोई रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जावआयतसंठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणतहुवे यावत् आयतसं स्थान परिणतहुवे। जेफासओ गरुयफास प० ते वण्णओ कालवण्ण प० जाव सुक्किल्लवण्णपरिणयावि। जेस्पर्शथकी गुरुस्पर्श प० ते वर्णथकी कालवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। गंधथकी सुगन्ध दुर्गन्ध परिणत हुवे। रसओ तित्तरस प० जाव मधुररस परि णयावि। रसथकी तिक्तरस प० यावत् मधुररस परिणतहुवे। फासओ कक्खडफास प० मउयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प०

ते कर्कशस्पर्शपरिणताः२३एतावन्तएवमृदुस्पर्शपरिणताः२३,गुरुस्पर्शपरिणताः२३,लघुस्पर्शपरिणताः२३,शीतस्पर्शपरिणताः२३,उष्णस्पर्शपरिणताः २३,

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

फासपरिणतावि उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, संठाणनं परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जेफासनंलक्षयफासपरिणता ते वन्नन कालवन्नपरि० नीलवन्नपरि० लोहितवन्नपरि० हालिद्दवन्नपरि० सुक्किल्लवन्नपरिणतावि, गंधनं सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसनं तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासनं कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्कफासपरिणतावि, संठाणनं परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासनं सीतफासपरिणता ते वन्नन कालवन्नपरि० नी

॥ भाषा ॥

लुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प० मृदुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श प० कोई स्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्श परिणतहुवे। संठाणओ परिमंडलसठाण प० जाव आयतसंठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसस्थान प० यावत् आयतसस्थानपरिणतपिणहुवे॥ जेफासओ लहुफास प० ते वन्नओ कालवन्न प० जावसुक्किल्लवन्नपरिणयावि। जे स्पर्शथकी लघुस्पर्श परिणतहुवे। ते वर्णथकी कालवर्ण प० यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे। गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। गंधथकीसुरभिगन्ध दुरभिगन्ध परिणतहुवे। रसओ तित्तरस प० जाव महुररसपरिणयावि। रसथकी तिक्तरस प० यावत् मधुररस परिणतहुवे। फासओ कक्खडफास प० मउयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प० मृदुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श प० कोई स्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जावआययसंठाणपरिणयावि। संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान प० यावत् आयतसंस्थान परिणतपिणहुवे॥ जेफासओ सीयफास प० ते वन्नओ कालवर्ण प० जावसुक्किल्लव

॥ मूल ॥

लवस्सपरि० लोहितवस्सपरि० हालिद्दवस्सपरि० सुक्किल्लवस्सपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मधुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि। जे फासतो उसिणफासपरि० ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णप० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० मधुररसपरिणतावि, फासतो कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाण

॥ भाषा ॥

स्सपरिणयावि। जे रसपज्जवा सीतरसपरिणत ते वर्णपज्जवा कालवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि। गंधपज्जवा सुगंध दुर्गन्ध परिणतहुवे। रसओ तित्तरसपरिणया जाव मधुररसपरिणयावि। रसपज्जवा तिक्तरस प० यावत् मधुररसपरिणतहुवे। फासओ कर्कश फास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणयावि। स्पर्शपज्जवा कर्कशस्पर्श प० मृदुस्पर्श प० गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० स्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे। संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जाव आयतसंठाणपरिणयावि। संस्थानपज्जवा परिमंडलसंस्थान प० यावत् आयतसंस्थान परिणतहुवे॥ जे फासओ उसिणफास प० ते वण्णओ कालवर्ण प० जाव सुक्किल्लवर्णपरिणयावि। जे स्पर्शपज्जवा उष्णस्पर्श प० ते वर्णपज्जवा कालवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परिणतहुवे। गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंध परिणयावि। गंधपज्जवा सुगंध दुर्गन्धपरिणतहुवे। रसओ तित्तरस प० जाव मधुररस परिणयावि। रसपज्जवा तिक्तरस प० यावत् मधुररस परिणतहुवे। फासओ कर्कशफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुय

॥ मूल ॥

परि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासतो णिद्ध फासपरिणया ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णप रिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसप० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुय फासपरि० सीयफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, संठाणतो परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंस संठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठाणपरिणतावि । जे फासतो लुक्कफासपरिणता ते वण्णतो काल वण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधप०

॥ भाषा ॥

फास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शहुवे मृदुस्पर्श प० गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० स्निग्धस्पर्श प० रूक्षस्पर्श परिणत हुवे, संठाणथी परिमंडलसंठाण प० जाव आयतसंठाणपरिणयावि । संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान यावत् आयतसंस्थानपरिणतहुवे ॥ जेफासथी णिद्धफा स प० ते वण्णथी कालवण्ण प० जावसुक्किल्लवण्णपरिणयावि । अथवा जे स्पर्शथकी स्निग्धस्पर्श परिणतहुवे ते वर्णथकी कालेवर्ण प० यावत् शुक्लवर्ण परि णतहुवे । गंधथी सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गंधथकी सुगंध दुर्गन्धपरिणतहुवे । रसथी तित्तरस प० जाव महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्त रस प० यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासथी कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्पर्श प० लघुस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श परिणतहुवे । संठाणथी परिमंडलसंठाण प० जा व आयतसंठाणपरिणयावि । संस्थानथकी परिमंडलसंस्थान परिणतहुवे यावत् आयतसंस्थानपरिणतहुवे ॥ जेफासथी लुक्खफास प० ते वण्णथी काल वण्ण प० जावसुक्किल्लवण्णपरिणयावि । जे स्पर्शथकी रूक्षस्पर्श परिणतहुवे ते वर्णथकी कालेवर्ण परिणतहुवे यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे । गंधथी सुब्भि

॥ टीका ॥

स्निग्धस्पर्शपरिणताः २३' रूक्षस्पर्शपरिणताः २३' एतेषा मेकत्रमीलने जातं नङ्कानां चतुरशीत्यधिकं शतं १८४, संस्थानमधिकृत्याह-जेसंठाणपरिमण्डलसंठाणपरिणयाइत्यादि ॥ ये संस्थानतः परिमण्डलसंस्थानपरिणता स्ते वर्णतः ५ गन्धतः २ रसतः ५ स्पर्शतः ८ एते सर्वेप्येकत्र मीलिता

॥ मूल ॥

दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरिणतावि, संठाणओ परिमंडलसंठाणपरि० वट्टसंठाणपरि० तंससंठाणपरि० चउरंससंठाणपरि० आयतसंठापरि० । जे संठाणओ परिमंडलसंठाणपरिणता ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्खडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफास

॥ भाषा ॥

गंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गन्धयको सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतहुवे । रसओ तित्तरस प० जावमहुररस परिणयावि । रसथको तिक्तरसपरिणतहुव यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासओ कक्खडफास प० मउयफास प० गुरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास परिणयावि । स्पर्शथको कर्कश स्पर्श प० गुरुस्पर्श प० लघस्पर्श प० शीतस्पर्श प० उष्णस्पर्श परिणतहुवे । संठाणओ परिमंडलसंठाण प० जाव आयंयसंठाणपरिणयावि । संस्थानथको परिमंडलसंस्थानपरिणतहुवे यावत् आयतसंस्थानपरिणतहुवे ॥ जे संठाणओ परिमंडलसंठाण प० ते वणओ कालवण प० जाव सुक्किलवण परिणयावि । ते वर्णथको कालेवर्णपरिणतहुवे यावत् श्वेतवर्ण परिणतहुवे । गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गंधथको सुगंध दुर्गंधपरिणतहुवे । रसओ तित्तरस प० यावत् महुररसपरिणयावि । रसथको तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासओ कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहु

॥ टीका ॥

विंशति २० यतावन्तो जङ्घान् परिमण्डलसंस्थानपरिणता लभन्ते, एवं वृत्तसंस्थानपरिणताः २० ॥ त्र्यस्रसंस्थानपरिणताः २०, चतुरस्रसंस्थान परिणताः २०, आयतसंस्थानपरिणताः २० ॥ अमीषां चैकत्रमीलनेन लब्धं जङ्घकानां शतं, एषांच वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानानां सकलजङ्घसङ्कलने

॥ मूल ॥

परि० लुक्खफासपरिणतावि । जेसंठाणओ वट्टसंठाणपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तरसपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्कडफासप० मउयफासपरि० गरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्ख फासपरिणतावि । जेसंठाणओ तंससंठाणपरि० ते वण्णओ कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधओ सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसओ तित्तर सपरि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासओ कक्कडफासपरि०

॥ भाषा ॥

यफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफास परिणयावि । स्पर्शथको कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्पर्शपरिण तहुवे लघुस्पर्शपरिणतहुवे शीतस्पर्शपरिणतहुवे उष्णस्पर्शपरिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहुवे रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे ॥ जे संठाणओ वट्टसंठाणपरिणयावि जे संस्थानथकी वृत्तसंस्थानपरिणत ते पिण तेवर्णओ कालवर्णप० जावसुक्किल्लवर्णपरिणयावि । ते वर्णथकी कालेवर्णपरिणतहुवे यावत् शुक्लवर्णपरिणत हुवे । गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गंधथकी सुगंध दुर्गन्धपरिणतहुवे । रसओ तित्तरस जाव मधुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस याव त् मधुररसपरिणतहुवे । फासओ कर्कशडफास प० जाव लघुफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे यावत् रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे ॥ जेसंठाण ओ तंससंठाण प० ते वर्णओकालवर्ण प० जाव सुक्किल्लवर्णपरिणयावि । जे संस्थानथकी त्र्यंशसंस्थानपरिणतहुवे ते वर्णथकी कालेवर्णपरिणतहुवे यावत्

॥ टीका ॥

जातानि त्रिंशदधिकानि पञ्चशतानि, इह यद्यपि बादरेषु स्कन्धेषु पञ्चापि वर्णा द्वावपिगन्धौ पञ्चापिरसाः प्राप्यन्ते ततोवधीकृतवर्णादिव्यतिरेकेण शेषवर्णादिभिरपि भङ्गाःसम्भवन्ति तथापि तेष्वेव बादरेषुस्कन्धेषु व्यवहारतः केवलकृष्णवर्णाद्युपेता अपान्तरालस्कन्धा यथादेहस्कन्धएव लोचनस्कन्धः कृष्ण स्तदन्तर्गतएव कश्चिल्लोहितोऽन्य स्तदन्तर्गतएव शुक्लइत्यादि ते इहविवक्ष्यन्ते तेषाञ्चा न्यद्वर्णान्तरादि नसम्भवति, स्पर्शचिन्तायां

॥ मूल ॥

मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरिणतावि । जे संठाणतो चउरंससंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहियवण्णपरि० हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरि० दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरसप० कडुयरसप० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० । जे संठाणतो आयतसंठाणपरिणता ते वण्णतो कालवण्णपरि० नीलवण्णपरि० लोहितवण्णप०

॥ भाषा ॥

खेतवर्णपरिणतहुवे । गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गधथकी सुगन्ध दुर्गन्धपरिणतहुवे । रसओ तित्तरस जाव महुररसपरिणयावि । रस थकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासओ कक्खडफास प० जाव लुक्खफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श प० रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे । जे संठाणओ चउरंससंठाणपरिणयावि । जे संस्थानथकी चउरंशसंस्थानपरिणतहुवे । ते वण्णओकालवण्णपरिणया जाव सुक्किल्लवण्णपरिणयावि । ते वर्ण थकी कालेवर्णपरिणत यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे । गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । रसथकी सुगंधदुर्गन्धपरिणतहुवे । रसओ तित्तरस प० जाव महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासओ कक्खडफास जाव लुक्खफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्श परिणतहुवे यावत् रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे । जे संठाणओ आयतसंठाणपरिणया । जे संस्थानथकी आयतसंस्थानपरिणतहुवे । ते वण्णओ कालवण्ण प०

॥ टीका ॥

त्वबधीकृतस्पर्शास्मृति प्रतिपत्तव्यतिरेकेणान्ये स्पर्शालोकेप्यविरोधिनो दृश्यन्ते, ततो यथोक्तैव नङ्गसङ्ख्या' सापि च परिस्थूरन्यायमङ्गीकृत्या भिहिता ऽन्यथा प्रत्येक मप्येषां तारतम्येन नन्तत्वात् अनन्तभङ्गाःसम्भवन्ति, एषाञ्च वर्णादिपरिणामानां जघन्यतो वस्थान मेकं समय मुत्कर्षतो सङ्ख्येयं कालं, सम्प्रत्युपसंहारमाह–सेतंरूविअजीवपन्नवणा ॥ सेतंअजीवपन्नवणा सैषा रूप्यजीवप्रज्ञापना ॥ सैषा ऽजीवप्रज्ञापना ॥ साम्प्रत ज्जीवप्रज्ञापना मभिधित्सु स्तद्विषयं प्रश्नसूत्रं चाह–सेकिंतमित्यादि ॥ अथ का सा जीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–जीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा–संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच, तत्र संसरणं संसारो नारकतिर्यग्नरामरभवानुभवलक्षण स्तं समयगेकीभावेनापन्नाः, संसारवर्त्तिन इत्य

॥ मूल ॥

हालिद्दवण्णपरि० सुक्किल्लवण्णपरिणतावि, गंधतो सुब्भिगंधपरिणतावि दुब्भिगंधपरिणतावि, रसतो तित्तरस परि० कडुयरसपरि० कसायरसपरि० अंबिलरसपरि० महुररसपरिणतावि, फासतो कक्कडफासपरि० मउयफासपरि० गुरुयफासपरि० लहुयफासपरि० सीतफासपरि० उसिणफासपरि० णिद्धफासपरि० लुक्खफासपरि० ॥ सेत्तं रूविअजीवपण्णवणा ॥ सेत्तं अजीवपण्णवणा ॥ से किंतं जीवपण्णवणा ? जीवपण्णवणा दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–संसारसमावण्णजीवपण्णवणाय असंसारसमावण्णजीवपण्णवणाय । से किंतं असंसार

॥ भाषा ॥

जावसुक्किल्लवण्णपरिणयावि । ते वर्णथकी कालेवर्ण यावत् शुक्लवर्णपरिणतहुवे । गंधओ सुब्भिगंध दुब्भिगंधपरिणयावि । गन्धथकी सुगन्धदुर्गन्धपरिणतहुवे । रसओ तित्तरस जाव महुररसपरिणयावि । रसथकी तिक्तरस यावत् मधुररसपरिणतहुवे । फासओ कक्खडफास प० मउयफास प० गरुयफास प० लहुयफास प० सीयफास प० उसिणफास प० णिद्धफास प० लुक्खफासपरिणयावि । स्पर्शथकी कर्कशस्पर्शपरिणतहुवे मृदुस्पर्शपरिणतहुवे गुरुस्पर्शपरिणतहुवे लघुस्पर्शपरिणतहुवे शीतस्पर्शपरिणतहुवे उष्णस्पर्शपरिणतहुवे स्निग्धस्पर्शपरिणतहुवे रूक्षस्पर्शपरिणतहुवे ॥ सेत्तंरूवीअजीवपण्णवणा सेत्तंअजीवपण्णवणा । ते जिम सर्व रूपी अजीवप्रज्ञापनाकही एतले रूपीका भाव अरूपीका भावभेद प्रकाश्या तेजिम इति पांचसौतीस ५३० भेदे

॥ टीका ॥

र्थः, तेचते जीवाश्च तेषां प्रज्ञापना संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना' नसंसारो ऽसंसारो मोक्ष स्तं समापन्ना असंसारसमापन्ना, मुक्ताइत्यर्थः, तेचते जीवाश्च तेषां प्रज्ञापना असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना' चशब्दौ प्राग्वत् तत्राल्पवक्तव्यत्वा त्प्रथमतो ऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना मभिधित्सु स्त द्विषयं प्रश्नसूत्रमाह–सेकिंतमित्यादि ॥ अथ कासा असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना द्विविधा प्रज्ञप्ता त द्यथा–अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच परम्परसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाच, तत्र नविद्यते ऽन्तरं व्यवधान मर्था त्समयेन ये षांते ऽनन्तरा स्तेचते सिद्धा श्चानन्तरसिद्धाः, सिद्धत्वप्रथमसमये वर्त्तमाना इत्यर्थः, स्तेचते असंसारसमापन्नजीवाश्च अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्न जीवा स्तेषां प्रज्ञापना अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, चशब्दः स्वगतानेकभेदसूचक, स्तथा विवक्षिते प्रथमेसमये यःसिद्ध स्तस्य यो द्वितीयसमयसिद्धः सपर स्तस्यापि यस्तृतीयसमयसिद्धः सपरएव मन्येपिवाच्याः, परेचपरेचेति वीप्सायां, वृषोदरादय इति परम्परशब्दनिष्पत्तिः,

॥ मूल ॥

**समावन्नजीवपन्नवणा असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से किंतं अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्न**

॥ भाषा ॥

अजीवप्रज्ञापना जाणपणे कही ॥ १ ॥ सेकिंतंजीवपन्नवणा जीवपन्नवणा दुविहा पन्नत्ता तंजहा । हिवे अठा आगे अजीवराभेदकह्या पछे जीवरो जाणपणो शिष्यपूछेछे जीवप्रज्ञापनानाभेद गुरुकहैछे—ते जीवप्रज्ञापना दोयप्रकारे तेजिम । संसारसमावन्नजीवपन्नवणा । संसारप्राप्त ते संसारीजीव संसारमांहिरहैछै ते जीवप्रज्ञापना । असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । असंसारप्राप्त असंसारीजीव ते सिद्धका जीव कर्मरहित ते असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सेकिंतंअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ दुविहा पन्नत्ता तंजहा । ते जिमछे तिम असंसार सम्प्राप्त जीवप्रज्ञापनाना दोयभेदकह्या तेहीजकहैछै—संसारसमावन्नजीवपन्नवणा । ते संसारस्थ जीवप्रज्ञापना । असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । असंसारस्थ जीवप्रज्ञापना सेकिंतंअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । ते कुण असंसारसंप्राप्त जीवप्रज्ञापना । असंसारसमावन्नजीवपन्नवणादुविहा प० तंजहा । असंसार सम्प्राप्त

॥ टीका ॥

परम्पराश्च तेसिद्धाश्च परम्परसिद्धाः, विवक्षितसिद्धस्य प्रथमसमयात्प्राक् द्वितीयादिसमये व्यतीताद्धां यावद्वर्त्तमाना इतिभाव, स्तेच ते असंसारसमापन्ना श्च परम्परसिद्धासंसारसमापन्ना' स्तेषते जीवा श्च तेषां प्रज्ञापना परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, अत्रा पि च शब्दः स्वगतानेक भेदसंसूचकः ॥ सेकिंत मित्यादि ॥ अथ का सा अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरि राह–अनन्तरसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चदशविधा प्रज्ञप्ता अनन्तरसिद्धाना मुपाधिभेदतः पञ्चदशविधत्वात्, तदेव पञ्चदशविधत्वंतेषामाह–तंजहेत्यादि ॥ तद्यथेति। पञ्चदशभेदो पदर्शनसूचकं, तीर्थसिद्धाः, तीर्यते संसारसागरो ऽनेनेति तीर्थं यथावस्थितसकलजीवाजीवादिपदार्थसार्थप्ररूपकं परमगुरुप्रणीतं प्रवचनं, तच्चनिराधारं नभवती तिसंघः' प्रथमगणधरोवा वेदितव्यः, उक्तंच–तित्थंभंतेतित्थं तित्थंकरेतित्थं गो ? अरिहातावं तित्थकरे तित्थं पुण चाउवन्नो समणसंघो पढमगणहरो वा इति, तस्मि न्नुत्पन्ने ये सिद्धा स्ते तीर्थसिद्धाः।१। तथा तीर्थस्या भावो ऽतीर्थं, तीर्थस्या भावश्चा नुत्पादो ऽपान्तराले व्यवच्छेदो वा; तस्मिन् ये सिद्धा स्ते ऽतीर्थसिद्धा स्तत्र तीर्थस्या नुत्पादे सिद्धा मरुदेवीप्रभृतयः, नहि मरुदेव्यादिसिद्धिगमनकाले तीर्थ मुत्पन्न मासीत्, तथा तीर्थस्य व्यवच्छेदः सुविधस्वाम्याद्यपान्तरालेषु तत्र ये जातिस्मरणादिना ऽपवर्गमार्गमवाप्य सिद्धा स्तेतीर्थव्यवच्छेदसिद्धाः। २। तथा तीर्थ

॥ मूल ॥

वणा ? अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पन्नत्ता, तंजहा–तित्थसिद्धा १ अतित्थ

॥ भाषा ॥

जीवप्रज्ञापना बे प्रकारनी कही तेकहे छे–अनंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। अनंतर कहिये समय मात्रन अंतर नथी ते लगताछवे तेने अनंतर असंसार संप्राप्त जीवप्रज्ञापना एतले प्रथमसमयवर्तमानसिध्धकहिये, परंपरसिध्ध तेएकसमयने अनंतर बीजेसमय त्रीजेसमय इम परंपरायें मुक्तिपहुंता ते परंपर असंसार संप्राप्त जीवप्रज्ञापना कहिये। सेकिंतंअनंतरसिध्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। शिष्यगुरुप्रतेपूछेछे—ते कुण अनंतरसिध्धअसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना। अनंतरसिध्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पन्नरसविहा पन्नत्ता। गुरुकहेछे — अनंतरसिद्धअसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनानापंदरहभेद कह्या ते कहेछे —तित्थसिद्धा, अतित्थसिद्धा, तित्थयरसिद्धा, अतित्थयरसि

॥ टीका ॥

करा: सन्तो ये सिद्धा स्ते तीर्थंकरसिद्धा: । ३ । सामान्यकेवलिनः संतो ये सिद्धा स्ते ऽतीर्थंकरसिद्धाः । ४ । स्वयम्बुद्धाःसंतो ये सिद्धा स्तेस्वयम्बुद्धसिद्धाः । ५ । प्रत्येकबुद्धाःसंतो ये सिद्धा स्ते प्रत्येकबुद्धसिद्धाः, अथ स्वयम्बुद्धप्रत्येकबुद्धानां कः प्रतिविशेषः ? उच्यते बोध्युपधिश्रुतलिङ्गकृतोविशेषः, तथाहि-स्वयम्बुद्धा बाह्यप्रत्यय मन्तरेणैव निजजातिस्मरणादिना बुद्धाः स्वयम्बुद्धा इति व्युत्पत्तेः, ते च द्विधा तीर्थंकरा स्तीर्थंकरव्यतिरिक्ताश्च इहतीर्थंकरव्यतिरिक्ते रधिकार आहच नन्द्यध्ययनचूर्णिकृत्-दुविहा सयंबुद्धा तित्थयरा तित्थयरवइरित्ता य इह वइरित्ते हि अहिगारो इति, प्रत्येकबुद्धा स्तु बाह्यप्रत्यय मपेक्ष्य प्रत्येकं बाह्यं वृषभादिकं कारण मभिसमीक्ष्य बुद्धाः प्रत्येकबुद्धा इतिव्युत्पत्तेः, तथाच श्रूयते बाह्यप्रत्ययसापेक्षा करकंडवादीनां बोधिः' बहिःप्रत्यय मपेक्ष्य च तेबुद्धाः संतो नियमतः प्रत्येक मेव विहरन्ति न गच्छवासिनइव संहताः' आहच नन्द्यध्ययनचूर्णिकृत्-पत्तेयं बाह्यं वृषभादिकं कारण मभिसमीक्ष्य बुद्धाः बहिःप्रत्ययप्रतिबुद्धानां पत्तेयं नियमा विहारो जम्हातम्हा य ते च पत्तेयबुद्धा इति, तथा स्वयम्बुद्धाना मुपधि र्द्वादशविधएव पात्रादिकः' प्रत्येकबुद्धानांतु द्विधा जघन्यत स्तथो त्कर्षतश्च, तत्र जघन्यतो द्विविधः, उत्कर्षतो नवविधः प्रावरणवर्ज, उक्तंच-पत्तेयबुद्धाणं जहन्नेणं दुविहो उक्कोसेणं नवविहो नियमा पाउरणवज्जो नवइ त्ति, तथा स्वयम्बुद्धानां पूर्वाधीतं श्रुतं भवति वानवा यदिभवति ततो लिङ्गं देवतावा प्रयच्छति गुरुसन्निधौवा गत्वा प्रतिपद्यते, यदिचै काकी विचरणसमर्थ इच्छावा तस्य तथारूपा जा

॥ मूल ॥

सिद्धा २ तित्थगरसिद्धा ३ अतित्थगरसिद्धा ४ सयंबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियसिद्धा ७

॥ भाषा ॥

द्धा, स्वयंबुद्धसिद्धा, पत्तेयबुद्धसिद्धा, बुद्धबोहियसिद्धा, इत्थीलिंगसिद्धा, पुरिसलिंगसिद्धा, नपुंसकलिंगसिद्धा, सलिंगसिद्धा, अन्नलिंगसिद्धा, गिहिलिंगसिद्धा, एगसिद्धा, अणेगसिद्धा । तीर्थविद्यमानथकासिद्धवे ते १ तीर्थअविद्यमानथकाजेसिद्धवे सरदेवोनोधरे तथा जातिस्मरणना योगथी ते अतीर्थसिद्ध २ तीर्थंकरनी पदवी पामीने सिद्धथया ते तीर्थंकरसिद्ध ३ आदिनाथतिर्थथवच्छेदे सुविधिनाथस्वामीने वारेजेसीधा ते अतीर्थंकरसिद्ध ४ गुरुपदेश विना पूर्वभवसंबंधथी मुक्तथया ते स्वयंबुद्धसिद्ध ५ एक पदार्थ सचेतन तथा अचेतनदेखी जातिस्मरण ज्ञानना योगथी मुक्तथया करकंडादिक

॥ टीका ॥

यते तत एकाकी विहरति, अन्यथा गच्छवासे ऽवतिष्ठते' अथ पूर्वाधीतं श्रुतं तस्य नश्यति तर्हि नियमा द्गुरुसंनिधौ गत्वा लिङ्गंप्रतिपद्यते गच्छ च्चा वश्यं नमुच्चति' तथाचोक्तं-पुव्वाहीयं सुयं से हवइ वानवा जइ से नत्थि तो लिंगं नियमा गुरुसन्निहि पडिवज्जिय गच्छेय विहरइत्ति' अह पुव्वाधीयसुयसंभवो अत्थि तो सेलिंगं देवया पडिच्छइ गुरुसन्निहेवा पडिवज्जइ जइ य एगविहारविहरणसमत्थो इच्छावा से तो एक्को चेव विहरइ अन्नहा गच्छे विहरइत्ति । प्रत्येकबुद्धानांतु पूर्वाधीतं श्रुतं नियमतो भवति, तच्च जघन्यत एकादशाङ्गान्यु त्कर्षतः किञ्चिन्न्यूनानि दशपूर्वाणि, तथा लिङ्गं तस्मै देवता प्रयच्छति, लिङ्गरहितोवा कदाचि द्भवति तथाचोक्तं-पत्तेयबुद्धाणं पुव्वाहीयं सुयं नियमा हवइ जहन्नेणं एक्का रसअंगा उक्कोसेणं निन्नदसपुव्वी लिंगंच से देवया पयच्छइ लिंगवज्जिनं वा भवइ जनं भणियं रूप्पं पत्तेयबुद्धा इति ।६। तथा बुद्धा आचार्या स्तै र्बोधिताः संतो ये सिद्धा स्ते बुद्धबोधितसिद्धाः ।७। एतेच सर्वेपि केचि त्स्त्रीलिङ्गंसिद्धाः स्त्रियालिङ्गं स्त्रीलिङ्गं स्त्रीत्वस्यो पलक्षणमित्यर्थः' तच्च त्रिधा वेदः शरीरनिर्वृत्तिः नेपथ्यंच, तत इह शरीरनिर्वृत्त्या प्रयोजनं न वेदनेपथ्याभ्यां वेदेसति सिद्धत्वाभावात्, नेपथ्यस्य चा प्रमाणत्वात्, आहच-नन्द्यध्ययनचूर्णिकृत्-इत्थीए लिंगं इत्थिलिगं इत्थीए उवलक्खणंति वुत्तं भवइ, तं च तिविहं वेदो सरीरनिव्वत्तीए नेवत्थेच इह सरीरनिव्वत्तीए अहिगारो न वेयनेवत्थेहिंति । तत स्तस्मिन् लिङ्गेवर्त्तमानाःसंतो ये सिद्धा स्ते स्त्रीलिङ्गसिद्धाः, एतेन यदाहु राशाम्बराः-नस्त्रीणांनिर्वाणमिति तद् पास्तं द्रष्टव्यं, स्त्रीनिर्वाणस्य साक्षा दनेन सूत्रेणा भिधानात्' त त्प्रतिषेधस्य युक्त्यनुपपन्नत्वा त्तथाहि-मुक्तिपथो ज्ञानदर्शनचारित्राणि, स म्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्ग इतिवचनात्, सम्यग्दर्शनादीनि पुरुषाणामिव स्त्रीणा म प्यविकलानि दृश्यन्ते तथाहि-दृश्यन्ते स्त्रियोपि सक

॥ मूल ॥

इत्थीलिंगसिद्धा ८ पुरिसलिंगसिद्धा ९ नपुंसकलिंगसिद्धा १० सलिंगसिद्धा ११ अन्नलिंगसिद्धा १२

॥ भाषा ॥

मोपरे ते प्रत्येकबुध्व ६ एकपदार्थरूप सचेतन तथा अचेतनदेखो जातिस्मरण ज्ञानथीकरकंडूनमिअनगार बुद्धबोधितसिद्ध ७ आचार्यैगणधरैप्रतिबोध्या उपदेशदेवैकरी जाणवत् । इत्थीलिंगसिद्धा ८ । स्त्रीलिंगेनिवर्त्त्यांगशरीर तेस्त्रीसिद्ध । पुरिसलिंगसिद्धा ९ । पुरुषचिह्नसिद्धहुवा गणधरसाधुउपाध्याय । नपुंसक

लमपि प्रवचनार्थं मभिरोचयमानाः जानते च षड़ावश्यककालिकोत्कालिकादिभेदभिन्नं श्रुतं परिपालयन्ति सप्तदशप्रकार मकलङ्कं संयमं धारय न्ति च देवासुराणामपि दुर्द्धरं ब्रह्मचर्यं तप्यंते च तपांसि मासक्षपणादीनि ततः कथ मिव न तासां मोक्षसंभवः ? (नग्नःप्राह) स्या देतद स्ति स्त्रीणां सम्यग् दर्शनं ज्ञानं वा न पुनश्चारित्रं संयमाभावात्, तथाहि–स्त्रीणा मवश्यं वस्त्रपरिभोगेन भवितव्य मन्यथा विवृतांग्य स्ता स्तिर्यक्स्त्रियइव पुरुषाणा मभिभवनीया भवेयुः, लोकेच गर्हा पजायते ततो वश्यं ताभि र्वस्त्रं परिभोक्तव्यं, वस्त्रपरिभोगे च सपरिग्रहता, सपरिग्रहत्वे च संयमाभाव इति (सैद्धान्तिकः) तदसमीचीनं सम्यक् सिद्धान्तापरिज्ञानात्, परिग्रहो हि परमार्थतो मूर्च्छा भिधीयते, मुच्छा परिग्गहो वुत्तो इतिवचनात्, तथा हि–मूर्च्छारहितो भरत श्चक्रवर्त्ती सान्तःपुरो प्या दर्शकगृहे वर्तिष्ठमानो निष्परिग्रहो गीयते, अन्यथाकेवलोत्पादो न संभवेत्' अपिच–यदिमूर्च्छाया अभावेपि वस्त्रसंसर्गमात्रं परिग्रहो भवे त्ततोजिनकल्पप्रतिपन्नस्य कस्यचित्साधो स्तुषारकणानुषक्ते प्रपतति शीते केना प्यविषह्यो पनिपात मद्य

---

शीत मिति विज्ञाय्य धर्मार्थिना शिरसि वस्त्रे प्रक्षिप्ते तस्य सपरिग्रहता भवेत् नचै तदिष्टं तस्मा न्न वस्त्रसंसर्गमात्रं परिग्रहः' किं तु मूर्च्छा सा च स्त्रीणां वस्त्रादिषु न विद्यते धर्मोपकरणमात्रतया तस्यो पादानात्, न खलु ता वस्त्र मंतरेणा त्मानं रक्षयितु मीशते नापि शीतकालादिषु वाग्दशायां स्वाध्यायादिकं कर्त्तुं, ततो दीर्घतरसंयमपरिपालनाय यतनया वस्त्रं परिभुञ्जाना न ताः परिग्रहवत्यः, अथो च्येत संभवति नाम स्त्री णा मपि सम्यग्दर्शनादिकंरत्नत्रयं परं न तत्संभवमात्रेण मुक्तिपदप्रापकं भवति, किं तु प्रकर्षप्राप्त मन्यथादीक्षानंतर मेव सर्वेषा मप्य विशेषेण मुक्तिपदप्राप्तिप्रसक्तिः, सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयप्रकर्ष श्च स्त्रीणा मसम्भवी ततो न निर्वाण मिति' तद प्य युक्तं' स्त्रीपुरुषत्रयप्रकर्ष स्सम्भवति, स म्भवग्राहकं प्रमाणं विजृम्भते देशकालविप्रकृष्टेषु प्रत्यक्षस्याप्रवृत्ते, स्तद प्रवृत्तौचा नुमानस्या प्य सम्भवात्, नापि तासु रत्नत्रयप्रकर्षासम्भवप्रति पादकःको प्यागमो विद्यते' प्रत्युतसम्भवप्रतिपादकः स्थाने २ स्ति यथा इद मेव प्रस्तुतं सूत्रं, ततो न तासां रत्नत्रयप्रकर्षासम्भवो, ऽथ मन्येथाः स्वभाव

तएवा तपेनेव च्छाया विरुध्यते स्त्रीत्वेन सह रत्नत्रयप्रकर्ष, स्तत स्तदसंभवो नुमीयते, तदयुक्त मुक्तं युक्तिविरोधात्, तथाहि–रत्नत्रयप्रकर्षः स उच्यते ततो नन्तरं मुक्तिपदप्राप्तिः, स चा योग्यवस्था चरमसमयभावी अयोग्यवस्था चा स्मादृग प्रत्यक्षा ततः कथं विरोधगतिः ? नहि अदृष्टेन सह विरोधः प्रतिपत्तुं शक्यते, मा प्रापत् पुरुषेष्वपि प्रसङ्गः (नग्नः) ननु जगति सर्वोत्कृष्टपदप्राप्तिः सर्वोत्कृष्टेनाध्यवसायेना वाप्यते ना न्यथा, एत च्चो न्नयो रप्यावयो रागमप्रामाण्यबलतःसिद्धं सर्वोत्कृष्टदुःखस्थानं सर्वोत्कृष्टसुखस्थानं च, तत्रसर्वोत्कृष्टदुःखस्थानं सप्तमनरकपृथ्वी अतःपरं परमदुःखस्थानस्था ज्ञावात्, सर्वोत्कृष्टसुखस्थानं तु निःश्रेयसं, तत्रस्त्रीणांसप्तमनरकपृथिवीगमन मागमे निषिद्धं, निषेधस्य च कारणं, तद्गमनयोग्यतथाविधसर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य ज्ञाव, स्ततः सप्तमपृथिवीगमनवत्वाज्ज्ञावात् संमूर्च्छिमादिवत्, अपि च यासां वादलब्धौ विकुर्वणत्वादिलब्धौ पूर्वगतश्रुताधिगतौ च न सामर्थ्यगति स्तासां मोक्षगमनसामर्थ्य मित्य तिदुःश्रद्धेयं (सैद्धान्तिकः) तदेतदयुक्तं, यतो यदि नाम स्त्रीणां सप्तमनरकपृथिवीगमनंप्रति सर्वो

---

त्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्यज्ञाव, स्तत एतावता कथ मवसीयते निःश्रेयसम पि प्रति तासां सर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्य ज्ञावो ? नहि यो ऊर्ध्वमिकर्षणादिकं कर्मकर्तुं न शक्नोति स शास्त्राण्यप्यवगाढं न शक्नोती ति प्रत्येतुं शक्यं प्रत्यक्षविरोधात्, अथ संमूर्च्छिमादिषू ज्ञयत्रा पि सर्वोत्कृष्टमनोवीर्यपरिणत्यज्ञावोदृष्ट स्ततो त्रा वसीयते, ननु यदि तत्र दृष्ट स्तर्हि कथ मत्रावसीयते, न खलु बहि र्व्याप्तिमात्रेण हेतु र्गमको ज्ञवति किं त्वन्तर्व्याप्त्या, ऽन्त र्व्याप्ति श्च प्रतिबन्धबलेन, न चा त्र प्रतिबन्धो विद्यते, न खलु सप्तमपृथिवीगमनं निर्वाणगमनस्यकारणं, ना पि सप्तमपृथिवीगमनाविनाज्ञावि निर्वाणगमनं चरमशरीरिणां सप्तमपृथिवीगमन मन्तरेणै व निर्वाणगमनाज्ञावात्' नच प्रतिबन्ध मन्तरेण एकस्या भावे न्यस्या वश्य मज्ञावो मा प्रापत् यस्य तस्य वा कस्यचिदज्ञावे सर्वस्या ज्ञावप्रसङ्गः, यद्ये वं तर्हि कथं संमूर्च्छिमादिषु निर्वाणगमनाज्ञाव इति ? उच्यते–तथाज्ञवस्वाज्ञाव्यात्, तथाहि–संमूर्च्छिमादयो ज्ञवस्वज्ञावतएव न सम्यग्दर्शनादिकं यथाव त्प्रतिपत्तुं शक्यन्ते, ततो न तेषां निर्वाणसंज्ञवः' स्त्रिय स्तु प्रागुक्तप्रकारेण य

थाव त्सम्यग्दर्शनादिरत्नत्रयसम्पद्योग्या स्तत स्तासां न निर्वाणगमनाभावः, अपि च भुजपरिसर्प्पा द्वितीया मेव पृथिवीं याव द्गच्छन्ति न परतः परपृथिवीगमनहेतुस्तथारूपमनोवीर्यपरिणत्यभावात्, तृतीयांयावत्पक्षिणः चतुर्थीं चतुष्पदाः, पञ्चमी मुरगाः, अथ च सर्वे प्यू र्द्वं मुत्कर्षतः सहस्रारं याव द्गच्छन्ति तत्रा धोगतिविषयं मनोवीर्यपरिणतिवैषम्यदर्शना दूर्द्वगतावपि च न त द्वैषम्यं आहच – विषमगतयोप्यधस्ता दुपरिष्टा तुल्यमासहस्रारं। गच्छन्तिचतिर्यञ्च स्तदधोगत्यूनताहेतुः ॥ १ ॥ तथाचसति सिद्धं, स्त्रीपुंसा मधोगतिवैषम्ये पि निर्वाणं समं, यद प्यु क्त मपि च यासां वादलब्धा वित्यादि' तद प्यश्लीलं, वादविकुर्वणात्वादिलब्धिविरहे पि विशिष्टपूर्वगतश्रुताभावे पि मानुषादीनां निःश्रेयसपदाधिगमश्रवणा' दाहच–वादविकुर्वणात्वादिलब्धिविरहे श्रुते कनीयसि च जिनकल्पमनःपर्यवविरहे पि न सिद्धिविरहो स्ति अपि च यदि वादादिलब्धिभावत् निःश्रेयसाभावो पि स्त्रीणा मभविष्यत् तत स्तथैव सिद्धांते प्रत्यपादयिष्यत्, यथा जंबुयुगो दारात् केवलज्ञानाभावो न च प्रतिपाद्यते, तस्मा दु पपद्यते स्त्रीणां निर्वाण मिति कृतं प्रसङ्गेन ॥ तथा पुल्लिङ्गे शरीरनिर्वृतिरूपे व्यवस्थिताः सन्तो ये सिद्धा स्ते पुल्लिङ्गसिद्धाः, एवं नपुंसकलिङ्गसि द्धाः ॥ १० ॥ तथा स्त्रलिङ्गे रजोहरणादिरूपे व्यवस्थिताःसंतो ये सिद्धा स्ते स्त्रलिङ्गसिद्धाः ॥ ११ ॥ तथा ऽन्यलिङ्गे परिव्राजकादिसम्बधिनि वल्क लकाषायादिरूपे द्रव्यलिङ्गेव्यवस्थिताःसंतो ये सिद्धा स्ते ऽन्यलिङ्गसिद्धाः ॥ १२ ॥ गृहिलिङ्गेसिद्धाः गृहिलिङ्गसिद्धाः मरुदेवीप्रभृतयः, तथा एकस्मिन् स मये एकाएवसन्तः सिद्धा एकसिद्धाः ॥ अणेगसिद्धा इति ॥ एकस्मिन् समये ऽनेके सिद्धा अनेकसिद्धाः, अनेके च एकस्मिन् समये सिध्यन्त उत्क र्षतो ऽष्टोत्तरशतसङ्ख्या वेदितव्या, यस्मा दुक्तं–बत्तीसा अडयाला, सट्ठी बावत्तरीय बोधव्वा ॥ चुलसीइ छन्नउई, दुरहियमहुत्तरसयं च ॥ १ ॥ अ



गिहिलिंगसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगसिद्धा १५। सेत्तं अणंतरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। से



लिंगसिद्धा १०। कृत्रिम कौपोडानपुंसक तेसिद्धहवा। सलिंगसिद्धा ११। स्वलिंगीसिद्धपामेते। अण्यलिंगसिद्धा १२। अन्यवेषैकरीसीधा। गिहिलिंगसिद्धा १३। गृहस्थलिंगसिद्ध प्रथमजिनमातामरुदेवीपरे। एगसिद्धा १४। एकेसमेसिद्धहवा ते एकसिद्ध। अणेगसिद्धा १५। अनेकसिद्ध एकेसमेंसिद्ध ते। सेत्तंअणंतरसि

स्या विनेयजनानुग्रहाय व्याख्या–अष्टौ समयान् याव न्निरन्तर मेकादयो द्वात्रिंशत्पर्यन्ताः सिध्यन्तः प्राप्यन्ते, कि मुक्तं भवति ? प्रथमे समये जघन्यत एको द्वौ वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत्सिध्यन्तः प्राप्यंते, द्वितीये पि समये जघन्यत एको द्वौ वा उत्कर्षतो द्वात्रिंशत्, एवं यावदष्टमे पि समये एको द्वा वुत्कर्षतो द्वात्रिंशत्, ततः पर मवश्य मन्तरं, तथा त्रयस्त्रिंशदादयो ष्टचत्वारिंशत्पर्यंन्ता निरन्तरं सिध्यन्तः सप्तसमयान् याव त्प्राप्यन्ते परतो नियमा दन्तरं' तथा एकोनपञ्चाशदादयः षष्टिपर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्तः षट्समयान् यावद वाप्यन्ते परतो ऽवश्य मन्तरं' तथा एकषष्ट्यादयो द्वि सप्ततिपर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्त उत्कर्षतः पञ्चसमयान् याव दवाप्यन्ते ततः पर मन्तरं, त्रिसप्तत्यादय श्चतुरशीतिपर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्त उत्कर्षत श्चतुरःसमयान् याव त्तत ऊर्द्ध मन्तरं, तथा पञ्चाशीत्यादयः षण्णवतिपर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्त उत्कर्षत स्त्रीन् समयान् याव त्परतो नियमा दन्त रं, तथा सप्तनवत्यादयो द्युत्तरशतपर्यन्ता निरन्तरं सिध्यन्त उत्कर्षतो द्वौ समयौ परतो वश्यमन्तरं, तथा त्र्युत्तरशतादयो ऽष्टोत्तरशतपर्यन्ताः सिध्यन्तो नियमा देकमेवसमयं यावदवाप्यन्ते न द्वित्र्यादिसमयान्, तदे व मेकस्मिन् समये उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतसङ्ख्याः सिध्यन्तः प्राप्यन्ते इत्य नेकसिद्धाः, उत्कर्षतो ऽष्टोत्तरशतप्रमाणा वेदितव्याः, आह–तीर्थसिद्धातीर्थसिद्धरूपभेददय एव शेषभेदा अन्त र्भवन्ति, त त्किमर्थं शेषभेदोपा दानं ? अन्तर्भवन्ति परं न तीर्थसिद्धाऽतीर्थसिद्धभेददयोपादानमात्रा च्छेषभेदपरिज्ञानं भवति, विशेषपरिज्ञानार्थंच एष शास्त्रारम्भप्रयास इति शेष भेदोपादानं, उपसंहारमाह– सेत्त मित्यादि ॥ सै षा अनन्तरसिद्धाऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ॥ सेकिंतमित्यादि । अथ का सा परम्परसिद्धा

॥ टीका ॥

---

तं परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा अणेगविहा प० तंजहा–अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्ज

॥ मूल ॥

---

द्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा, तेतिकांहोज जिम अनंतरसिद्धअसंसारप्रापजीवप्रज्ञापनाकही ॥ सेकिं तं । शिष्यपूछै कुणतेकहो तिकांहोजदरसावेछै । परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ । परंपरसिद्धअसंसारसंप्रापजीवप्रज्ञापना । अणेगविहापंत० । ते अनेकप्रकारेकहीतेकहैछै । अपढमस

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

ऽसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–परम्परसिद्धासंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता, परम्परसिद्धाना मनेकविधत्वा, त्त देवा नेकविधत्व माह–तंजहे त्यादि ॥ तद्यथे त्यनेकविधत्वोपदर्शने' अप्रथमसमयसिद्धाइति, न प्रथमसमयसिद्धा अप्रथमसमयसिद्धाः परम्परसिद्धविशेष णाप्रथमसमयवर्त्तिनः सिद्धत्वसमया द्वितीयसमयवर्त्तिन इत्यर्थः' त्यादिषुतुसमयेषु द्वितीयसमयसिद्धादय उच्यंते–यद्वा सामान्यतः प्रथम समयसिद्धा इत्युक्तं, तत एत द्विशेषतो व्याचष्टे, द्विसमयसिद्धा, स्त्रिसमयसिद्धा, श्चतुःसमयसिद्धाइत्यादि, यावच्चष्टकरणात् पञ्चसमयसिद्धादयः परिगृह्यन्ते सेत्तमित्यादिनिगमनद्वयंसुगमं, तदेव मुक्ता असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सम्प्रतिसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनामभिधित्सु स्तद्विषयं प्रश्नसूत्र माह सेकिंतमित्यादि । अथ कासा संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह–संसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता' तद्यथा–एकेन्द्रियसंसार समापन्नजीवप्रज्ञापना इत्यादि' तत्रै कं स्पर्शनलक्षणमिन्द्रियं येषान्ते एकेन्द्रियाः, पृथिव्यम्बुतेजोवायुवनस्पतयो वक्ष्यमाणस्वरूपा स्ते चते संसारस

॥ मूल ॥

समयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा , सेत्तं परंपरसिद्धअसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । सेत्तं असंसारसमावन्नजी वपन्नवणा । से किंतं संसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? संसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता तंजहा एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नव

॥ भाषा ॥

मयसिद्धा। अप्रथमसमयसिद्ध मध्यमसमयथो आगैसमये सोधाते अप्रथमसमयसिद्ध । दुसमयसिद्धा। इमबीजासमयनासिद्ध । तिसमयसिद्धा। तीजासमयना सिद्ध । चउसमयसिद्धा। इमचोथासमयनासिद्ध । जावसंखिज्जसमयसिद्धा। इमयावत् संख्यातसमयनासिद्ध । अणंतरअसंखिज्जसमयसिद्धा। इमअनंतरसमय नासिद्ध असंख्यातसमयनासिद्धकहिये। सेत्तपरंपरसिद्ध असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । तजिमकहेयुं परंपरायेसिद्ध असंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनाकही॥ से त्त असंसारसमावन्नजीवपन्नवणा। तेतिमएतलेअसंसारसंप्राप्तजीवप्रज्ञापनाकहीइतिसंपूर्णा॥ सेकिंतसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा२ पंचविहापंत०। हिवेअठा आगैगिय कहै कुण तिमसंसारसंप्राप्तजीवप्रज्ञापनार पंचोकारैकही तेतिम। एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । एकेंद्रियससारसंप्राप्तजीवप्रज्ञापनाएक

मापन्नजीवाश्च तेषांप्रज्ञापना एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, एवं सर्वपदे घटनरघटना कार्या, नवरं, द्वेस्पर्शनरसनालक्षणे इन्द्रिये येषां ते द्वीन्द्रियाः शंखशुक्तिकादयः, त्रीणि स्पर्शनरसनाघ्राणलक्षणानि इन्द्रियाणि येषां ते त्रीन्द्रियायूकामत्कुणादय, श्चत्वारि स्पर्शनरसनाघ्राणचक्षुर्लक्षणानि इन्द्रियाणि येषां ते चतुरिन्द्रियाः दंशमशकादयः, पञ्च स्पर्शनरसनघ्राणचक्षुःश्रोत्रलक्षणानि इन्द्रियाणि येषां ते पञ्चेन्द्रियाः मत्स्यमकरमनुजादयः, अमीषाञ्चै कादि सङ्ख्याना मिन्द्रियाणां स्पर्शादीना मसंव्यवहारराशे रारभ्य प्रायोनेनैव क्रमेण लाभ इति सम्प्रत्ययार्थं मित्थं क्रमेणैकेन्द्रियाद्युपन्यासः' इन्द्रियाणिचद्विधा–द्रव्येन्द्रियाणि भावेन्द्रियाणि च, तत्र द्रव्येन्द्रियाणि निर्वृत्त्युपकरणरूपाणि तानि च सविस्तरं नन्द्यध्ययनटीकायां व्याख्यातानीति नभूयो व्याख्यायंते' भावेन्द्रियाणि क्षयोपशमोपयोगरूपाणि तानि चा नियतानि, एकेन्द्रियाणामपि क्षयोपशमोपयोगरूपं भावेन्द्रियपञ्चकसम्भवः केषाञ्चित्तत्फलदर्शनात्, तथाहि–बकुलादयो मत्तकामिनीगीतध्वनिश्रवणसविलासकटाक्षनिरीक्षणमुखासिप्रसुरागगण्डूषगन्धाघ्राणरसास्वादपदाद्यवयवस्पर्शनतः प्रमोदभावेनकालक्षेप मुपलभ्यन्ते पुष्पफलानिप्रयच्छन्ते उक्तञ्च–जंकिरबउलाईणं दीसइसेसंदिनुवलंभोवि तेणत्थितदावरणं क्खनुवसमसंभवोतेसिं ॥ १ ॥ ततो नभावेन्द्रियाणि लौकिकव्यवहारपथावतीर्णैकेन्द्रियादिव्यपदेशनिबन्धनं किन्तु द्रव्येन्द्रियाणि, तथाहि–येषामेकं बाह्यं द्रव्येन्द्रियंस्पर्शनलक्षणमस्ति ते एकेन्द्रियाः' येषां द्वे तेद्वीन्द्रिया एवं यावत् येषां पञ्च तेपञ्चेन्द्रियाः, आहच–पंचिंदिनुवि



णा चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किंतं एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ? एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा – पुढविकाइया



दोभेद १ । बेइंदियसंसारसमावन्नजीव० । बेंद्रियसमारसंपाप्तजीवप्रज्ञापनादोय २ । तेइंदियसमारसमावन्नजीव० । तेंद्रियसंसारसंप्राप्तजीवप्रज्ञापनाजाणवी ३ । चउरिंद्रियसंसार० पंचेंदियसंसा० । चतुरिंद्रियपंचेंद्रियसंसारसंप्राप्तजीवप्रज्ञापना ४ । सेकिंतं ५ । एगिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ पंचविहापंत० । तेणियपूछे स्वामीजीतिमकुण कहो ते एकेन्द्रियसंसारसंप्राप्त जीवप्रज्ञापनाना केतला भेद गुरुकहै तेहपांचप्रकारनो कही तेतिमहीज । पुढ

वउलो नरोवमसवविसयोवलंभाउ तहविनन्नइपंचें दिउतिबज्झिंदियाउावा ॥ सेकिंतमित्यादि ॥ अथ कासा एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? सूरिराह-एकेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना पञ्चविधा प्रज्ञप्ता, एकेन्द्रियाणां पञ्चविधत्वात्, तदेवपञ्चविधत्वमाह ॥ तंजहेत्यादि ॥ पृथिवी काठिन्यादिलक्षणा प्रतीता सैव कायः शरीरं येषांते पृथिवीकायाः पृथिवीकाया एव पृथिवीकायिकाः, स्वार्थेइकप्रत्ययः' अपो द्रवा स्ताश्च प्रतीता एव ताः कायः शरीरंयेषान्तेअप्कायाः अप्काया एव अप्कायिकाः' तेजो वह्नि स्तदेवकायः शरीरंयेषां ते तेजस्कायाः तेजस्काया एव तेजस्कायिकाः, वायुः पवनः सएव कायो येषान्ते वायुकायाः वायुकायाएव वायुकायिकाः, वनस्पतिर्लतादिरूपः सएव कायः शरीरं येषान्ते वनस्पतिकायाः व नस्पतिकायाएववनस्पतिकायिकाः, इहसर्वजन्तूनाधारत्वात् पृथिवीकायिकानां प्रथममुपादानं' तदनन्तरं तत्प्रतिष्ठितत्वा दप्कायिकानां' अप्कायि काश्च तेजःप्रतिपक्षभूता स्तदनन्तरं तेजस्कायिकाना मुपादानं, तेजश्च वायुसम्पर्कतः प्रवृद्धिमुपयाति, तत एतदनन्तरं वायुकायिकग्रहणं' वायुश्च दूर स्थितो वृक्षशाखादिकम्पनतो लक्ष्यते, तत स्तदनन्तरं वनस्पतिकायिकोपादानं, सम्प्रतिपृथिवीकायिक मनवबुध्यमान स्तद्विषयं शिष्यः प्रश्नं करो ति-सेकिंतमित्याह-अथ के ते पृथिवीकायिकाः? सूरिराह-पृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता, तद्यथा-सूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायि



**आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया वणस्सइकाइया। से किंतं पुढविकाइया पुढविकाइया दुविहा प०, तंजहा—सुहुमपुढविकाइया बादरपुढविकाइया। से किंतं सुहुमपुढविकाइया सुहुमपुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय, सेत्तंसुहुमपुढविकाइया। से**



विकाइया आउकाइया तेउका० वाउवणस्स०। पृथ्वीकाइयाजीव १ अप्कायनाजीव २ तेऊकाइयाजीव ३ व।उकाइयाजीव वनस्पतिकाइया ५। सेकिंतंपुढवि काइया २। तेग्गिध दूकेपृथ्वीकायनाभेदकेतलेप्रकार। दुविहा।पतं०। गुरुकहैदोयप्रकारे। सुहुमपुढविकाइया। सूक्ष्मपृथ्वीकाय। बायरपुढविकाइया। बादरपृथ्व वीकाय २॥ सेकिंतमुहुमपुढविकाइया २। त ग्गिध दूकं सूक्ष्मनाभेद कैसा तिम गुरुकहै। दुविहा पंणत्ता तंजहा। दोयप्रकारना ते कहैछै पज्जत्तसुहुमपुढवि

काश्च, सूक्ष्मनामकर्मोदयात्सूक्ष्माः बादरनामकर्मोदयाद्बादराः' कर्मोदयजनितं खल्वेतं सूक्ष्मबादरत्वं ना पेक्षके बदरामलकयो रिव, सूक्ष्माश्च ते पृथिवीकायिका श्च सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः, चशब्दः स्वगतपर्याप्ताऽपर्याप्तभेदसूचकः, बादरा श्च ते पृथिवीकायिकाश्च बादरपृथिवीकायिकाः' अत्रापिचशब्दः स्वगतशर्करावालुकादिभेदसंसूचकः, तत्रसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः समुद्गकपर्याप्तप्रक्षिप्तगन्धावयववत् सकललोकव्यापिनो, बादराः प्रतिनियतदेशचारिण स्तत्रप्रतिनियतदेशचारित्वं द्वितीयपदेप्रकटयिष्यन्ते, तत्र सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां स्वरूपं जिज्ञासु रिदमाह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ केतेसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः ? सूरिराह-सूक्ष्मपृथिवीकायिका द्विविधा प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका श्चा पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च तत्रपर्याप्तिनाम, आहारादिपुद्गलग्रहणपरिणमनहेतु रात्मनः शक्तिर्विशेषः, स च पुद्गलोपचया दुपजायते, किमुक्तं भवति-उत्पत्तिदेशमागतेन प्रथमसमये ये गृहीताः पुद्गला स्तेषां तथा न्येषा म पि प्रतिसमयं गृह्यमाणानां त त्सम्पर्कत स्तद्रूपतया जातानां यः शक्तिर्विशेष आहारादिपु

---

द्गलखलरसरूपतापादनहेतु र्यो दरान्तर्गतानां पुद्गलविशेषाणा माहारपुद्गलखलरसरूपतापरिणमनहेतुः सा च पर्याप्तिः षोढा-आहारपर्याप्तिः, शरीरपर्याप्ति, रिंद्रियपर्याप्तिः, प्राणापानपर्याप्ति' र्भाषापर्याप्ति, र्मनःपर्याप्ति श्च, तत्र यथा बाह्यमाहारमादाय खलरसरूपतया परिणमयति साहारपर्याप्तिः, यया रसीभूतमाहारं रसासृग्मांसमेदास्थिमज्जशुक्रलक्षणसप्तधातुरूपतया परिणमयति साशरीरपर्याप्तिः, यया धातुरूपतया परिणमित माहार मिंद्रियरूपतया परिणमयति सा इन्द्रियपर्याप्तिः, अपज्जत्तसुहुमपुढविकाइयाय' तथा चा यमर्थो ऽन्यत्रा पि ग्रंथांतरेणो क्तः, पञ्चाना मिन्द्रियाणां प्रायोग्यान् पुद्गलान् गृहीत्वा ऽनाभोगनिर्वर्तितेन वीर्येण तद्भावनयनशक्ति रिंद्रियपर्याप्ति रिति' यया पुन रुच्छ्वासप्रायोग्यान् पुद्गलाना दायो च्छ्वासरूपतया परिणमय्या लंब्य च मुञ्चति सा उच्छ्वासपर्याप्तिः, यया तु भाषाप्रायोग्यान् पुद्गला नादाय भाषात्वेन परिणमय्या लंब्य च मुंचति सा भाषापर्याप्तिः, यया पुन र्मनःप्रायोग्यान् पुद्गलानादाय मनस्त्वेन परिणमय्या लंब्य च मुञ्चति सा मनःपर्याप्तिः, एता श्च

॥ टीका ॥

यथाक्रम मेकेन्द्रियाणां सञ्ज्ञिवर्जानां द्वीन्द्रियादीनां सञ्ज्ञिनां चतुःपञ्च षट् सङ्ख्या भवन्ति, उक्तञ्च प्रज्ञापनामूलटीकाकृता-एकेन्द्रियाणां चतस्रो विकलेन्द्रियाणां पञ्च सञ्ज्ञिनां षडिति' उत्पत्तिप्रथमसमयएव ता यथातथंसर्वाअपियुगपन्निष्पादयितु मारभ्यन्ते, क्रमेण च निष्ठामु पयान्ति, तद्यथा-प्रथम माहारपर्याप्ति स्ततः शरीरपर्याप्ति स्तत, इन्द्रियपर्याप्ति रित्यादि, आहारपर्याप्ति श्च प्रथमसमयमेव निष्पत्ति मुपपद्यते' शेषा स्तु प्रत्येक मन्तर्मुहूर्त्तेन कालेन, अथाहारपर्याप्तिः प्रथमसमय एव निष्पद्यते इति कथ मवसीयते ? उच्यते-यत आहारपदे द्वितीयोद्देशके सूत्र मिदं, आहारपज्जत्तीए अपज्जत्तएणं भंते किं आहारए अणाहारए गो० नोआहारए अणाहारए इति, तत आहारपर्याप्त्या अपर्याप्तोविग्रहगता वर्वो पपद्यते नो पपातक्षेत्र मागतो पि, उपपातक्षेत्र मागतस्य प्रथमसमय एवा हारकत्वात् तत एकसामायिकी आहारपर्याप्तिर्निर्वृत्तिः, यदि पुन रुपपात क्षेत्रमागतो पि आहारपर्याप्त्या पर्याप्तःस्या त्तत एवं सति व्याकरणसूत्र मित्थं भवेत् "सियआहारएसियअणाहारए, यथा शरीरादिपर्याप्तिषु सियआहारएसियअणाहारए इति, सर्वासाम पि च पर्याप्तीनां परिसमाप्तिकालो ऽन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणः, पर्याप्तयो विद्यन्ते येषान्ते पर्याप्ता अभ्रादिभ्य इति मत्वर्थीयो ऽप्रत्ययः' पर्याप्तका श्च तेसूक्ष्मपृथिवीकायिकाश्च पर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकाः, च शब्दो लब्धिपर्याप्तकरणपर्याप्तरूपस्वगतभेदद्वयसूचको, ये पुनः स्वयोग्यपर्याप्तिपरिसमाप्तिविकला स्ते ऽपर्याप्ता अपर्याप्ता श्च ते सूक्ष्मपृथिवीकायिका श्च अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिका, श्च शब्दः करण लब्धिनिबंधनस्वगतभेदद्वयसूचकः, तथा हि-द्विविधाः सूक्ष्मपृथिवीकायिका अपर्याप्ता, स्त द्यथा-लब्ध्या करणै श्च, तत्र ये अपर्याप्तका एव संतो मृ

॥ मूल ॥

**किंतं बादरपुढविकाइया बादरपुढविकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-सण्हबादरपुढविकाइयाय खरबादर पुढविकाइयाय । से किंतं सण्हबादरपुढविकाइया २ सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा-किण्हमत्तिया नीलमत्तिया**

॥ भाषा ॥

काइया अपज्जत्तसुहुम० २। एकेंद्रियपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवीकाय अपर्याप्त सूक्ष्म पृथिवीकाय २। सेत्तसुहुमपुढविकाइया ते तिमहीज सूक्ष्मपृथिवीकायना दोयभेद कह्या तिम, हिवबादरना। सेकिंतंबायरपुढविकाइया २ दुविहा पंणत्ता। हिवेते शिष्यपूछे गुरुप्रतेकुण ते बादरते,बादर पृथिवीकायना दोयभेदकह्या ते

॥ टीका ॥

यंते ते लब्ध्यऽपर्याप्तकाः ये पुनः करणानि शरीरेन्द्रियादीनि न तावन्निर्वर्तयंति अथ चावश्यं निर्वर्तयिष्यंति ते करणाऽपर्याप्ता, उपसंहार माह-सेत्त मित्यादि ॥ त एते सूक्ष्मपृथिवीकायिका स्तदेवं सूक्ष्मपृथिवीकायिकानभिधाय संप्रति बादरपृथिवीकायिका नभिधित्सु स्तद्विषयं प्रश्नसूत्र माह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथके ते बादरपृथिवीकायिकाः ? सूरिराह-बादरपृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिका श्च खरबादरपृथिवीकायिका श्च, तत्रश्लक्ष्णा नाम चूर्णितलोष्टकल्पा मृदुपृथिवी तदात्मका जीवा अ प्युपचारतः श्लक्ष्णा स्ते च ते बादरपृथिवीकायि काश्च श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः, अथवा श्लक्ष्णाचसाबादरपृथिवीचसाकायः शरीरयेषांते श्लक्ष्णबादरपृथिवीकाया स्तएव स्वार्थिके क प्रत्यय विधा नात् श्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिका श्च शष्ठो वक्ष्यमाणस्वगतानेकभेदसूचकः' खरा नाम पृथिवीसङ्घातविशेषष्ठाठिन्यविशेष ष्ठा पन्ना तदात्मकाजीवा अपि खरा स्ते च ते बादरपृथिवीकायिका श्च खरबादरपृथिवीकायिकां अथवा पूर्ववत् प्रकारान्तरेण समास श्च शष्ठः स्वगतवक्ष्यमाणचत्वारिंशद्भे दसूचकः ॥ सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के तेश्लक्ष्णबादरपृथिवीकायिकाः ? सूरिराह-श्लक्ष्णाबादरपृथिवीकायिकाः, सप्तविधाः प्रज्ञप्ता स्तदेवसप्तविधत्वं त द्यथेत्यादिनो पदर्शयति-कृष्णमृत्तिका कृष्णमृत्तिकारूपा एवंनीलमृत्तिका लोहितमृत्तिका हारिद्रमृत्तिका शुक्लमृत्तिका, इत्थंवर्णभेदेनपञ्चविधत्वमु क्तम्, पाण्डुमृत्तिकानाम देशविशेषेयाधूलीरूपासतीपाण्डूइतिप्रसिद्धा तदात्मकाजीवा अप्यभेदोपचारात् पाण्डुमृत्तिके त्युक्ता॥ पणगमट्टियत्ति॥ नद्यादि

॥ मूल ॥

**लोहियमत्तिया हालिद्दमत्तिया सुक्किल्लमत्तिया पंडुमत्तिया पणगमत्तिया । सेत्तं सण्हबादरपुढविकाइया ।**

॥ भाषा ॥

गुरुकहैछे, सण्हबायरपुढविकाइयाय खरबायरपुढविकाइयाय । सूक्ष्मनामकर्मोदयथी सुकमालबादर पृथिवीकाय पृथिवीकाय कठिननामकर्मोदयथीबादर तेखरबादरपृथिवीकाय। सेकिंतंसण्हबायरपुढविकाइया२ सत्तविहा पं तंजहा । बादरपृथिवी कायनाभेद केतलेप्रकारे गुरुकहै ते सातप्रकारेकहवा तेकहैछे, किण्हमट्टिया णीलम० लोहियम० हालिद्दम० सुक्किल्लम० पंडुम० पणगमट्टिया । कालोमट्टी १ नीलोमट्टी २ रातोमट्टी ३ पीलोमट्टी ४धौलीमट्टी ५ श्वेतरक्त देश विशेषमाटीधूल ६ पनकमाटी ७। सेत्तंसण्ह बायरपुढविकाइया। ते तिमहौज कोमलबादरकायनाभेदकह्या। सेकिंतंखरबायरपुढविकाइया २ अणेगविहा

॥ टीका ॥

पूरप्लावितदेशे नद्यादिपूरेऽपगते यो भूमौ श्लक्ष्णमृदुरूपो जलमलापरपर्यायः पङ्कः सापनकमृत्तिका तदात्मकाजीवा अप्यौपचारात् पनकमृत्तिका, निगमनमाह–सेत्तंसण्हबायरपुढविकाइया॥ सुगमं' सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते खरबादरपृथिवीकायिकाः? सूरिराह–खरबादरपृथिवीकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता श्चत्वारिंशद्भेदा मुख्यतः प्रज्ञप्ता इत्यर्थः, तानेवचत्वारिंशद्भेदाना ह–तज्जहा पुढवीय इत्यादिगाथाचतुष्टयं, पृथिवी ति नामा सत्यन्नामावत् शुद्धपृथिवी नदीतटाभित्यादिरूपा चशब्दउत्तरभेदापेक्षया समुच्चये शर्करा लघूपलशकलरूपाः । २ । वालुकाः सिकताः । ३ । उपल टङ्ककाद्युपकरणपरिकर्मणायोग्यः पाषाणाः । ४ । शिला घटनयोग्या देवकुलपीठाद्युपयोगी महान्पाषाणविशेषः । ५ । लवणंसामुद्रादि । ६ । ऊषोयद्दशादूषरंक्षेत्रं । ७ । अयस्ताम्रत्रपुसीसकरूप्यसुवर्णानिप्रतीतानि । १३ । वज्रोहीरकः । १४ । हरितालहिङ्गुलकमनःशिलाःप्रतीताः, सीसगं पारदजः । १८ । अञ्जनं सौवीराञ्जनादि । १९ । प्रवालं विद्रुमं । २० । अभ्रपटल भ्रसिद्धं । २१ । अभ्रवालुका अभ्रपटलमिश्रावालुका । २२ । बायरका ये इति॥ बादरपृथिवीकाये अमी भेदा इति शेषः, मणिविहाणा इति च शब्दस्य गम्यमानत्वात् मणिविधानानिचमणिभेदाश्च बादरपृथिवीकायभेद

॥ मूल ॥

से किंतं खरबादरपुढविकाइया ? खरबादरपुढविकाइया अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा–पुढवीयसक्करावालुयायउवलेसिलायलोणूसे । अयतंबतउयसीसे रुप्पसुवण्णेयवइरेय ॥ १ ॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासासगंजणपवाले । अब्भपडलब्भवालुय बादरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ गोमेज्जएयरुयए अंकेफलिहेयलोहियक्केय

॥ भाषा ॥

पं तं । ते हिवे कुण ते कहैछै, खरपृथिवीकठिनबादर पृथिवी ते किम, खर कठिनबादर पृथिवीकायना अनेकभेदकह्या ते कहैछै, पुढवीयसक्करावा लुयायउवलसिलायलोणूसे । अयतंबतउयसीसे रुप्पसुवण्णेयवइरेय॥१॥ पृथिवी काकरासहित १ वालू २ उपल टांकवायोग्य ३ शिलाघडवायोग्य ४ लेण ते मोटापाषाण विशेष ५ अयलोहजाति ६ तांबो ७ तरयो ८ सीसो ९ रूपो १० सोनो ११ वज्र ते हीरा १२॥१॥ हरियालेहिंगुलुए मणोसिलासासगंजणपवाले । अब्भपडलब्भवालुय बादरकाएमणिविहाणा ॥ २ ॥ हरिताल १३ हींगलू १४ मणसिल १५ पवालो अभ्रक नाम भोडल पटल अभ्रबेलू ए बादर पृथिवीकायकही २॥

॥ टीका ॥

त्वेन ज्ञातव्याः, तान्येव मणिविधानानि दर्शयति-गोमज्जए इत्यादि॥ गोमेद्यकः २३ च: समुच्चये रुचकः २४ अंकः २५ स्फटिकः २६ च:पूर्ववत्, लोहि ताक्षः २७ मरकतः २८ मसारगल्लः २९ भुजमोचकः ३० इंद्रनीलश्च ३१ चन्दनो ३२ गैरिको ३३ हंसगर्भः ३४ पुलकः ३५ सौगंधिकश्च ३६ चन्द्रप्रभो ३७ वै डूर्यो ३८ जलकान्तः ३९ सूर्यकान्तश्च ४० तदेव माद्यगाथया पृथिव्यादयउक्ता श्चतुर्दशभेदा, द्वितीयगाथया ऽष्टौ हरितालादय' स्तृतीयगाथया गो मेद्यकादयो नव, तुर्ययागाथया नवे तिसङ्ख्या श्चत्वारिंशत्, जेयावन्नेतहप्पगाराइति॥ ये पि चा न्ये तथा प्रकारा मणिभेदाः पद्मरागादय स्ते पि खरबादरपृथिवीकायत्वेन वेदितव्याः॥ तेसमासउइत्यादि॥ तेसामान्यतो बादरपृथिवीकायिकाः समासतः सङ्क्षेपेण द्विविधाः प्रज्ञप्ता, स्तद्यथा-पर्याप्त का अपर्याप्तका श्च, तत्र ये ऽपर्याप्तका स्ते स्वयोग्याः पर्याप्तीःसाकल्येना सम्प्राप्ता इति, अथवा ऽसम्प्राप्ता इति विशिष्टान् वर्णादीन् अनुपगता स्तथाहि-वर्णादिभेदविवक्षाया मेते न शक्यन्ते कृष्णादिवर्णभेदेन व्यपदेष्टुं, किंकारणमि ति चेत्? उच्यते इहशरीरादिपर्याप्तिषु परिपूर्णासु सतीषु बादराणां वर्णादिविभागः प्रकटो भवति नापरिपूर्णासु, ते चा पर्याप्ता उच्छ्वासपर्याप्त्याऽपर्याप्ता एव म्रियन्ते ततो न स्पष्टतरवर्णादिविभाग इत्य

॥ मूल ॥

**मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइंदनीलेय ॥ ३ ॥ चंदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे । चंदप्पभवेरुलिए जलकंतेसूरकंतेय ॥ ४ ॥ जेयावन्नेयतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्त**

॥ भाषा ॥

हिवे मणिनाम भेद कहैछै—गोमेज्जएयरुयए अंकेफलिहेयलोहियक्खेय । मरगयमसारगल्ले भुयमोयगइंदणीलेय ॥ ३ ॥ गोमेदमणि १ रुचकमणि २ अं कमणि ३ फटिकमणि ४ लोहिताक्षमणि ५ मरकतमणि ६ मसारगल्ल ७ भुजमोचकरत्न ८ इन्द्रनीलरत्न ९ ॥ ९ ॥ चंदणगेरुयहंसे पुलएसोगंधिएयबोधव्वे। चंद प्पभवेरुलिए जलकंते सूरकंतेय ॥ ४ ॥ चन्दनरत्न १० गैरिकरत्न ११ पुलकरत्न १२ सौगन्धिकरत्न १३ एहवैनामे जाणवा चन्द्रप्रभरत्न वैडूर्य जलकान्तरत्न सूर्यकान्तरत्न ॥ ४ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा तेसमासओ दुविहा पन्नत्ता तंजहा। जेहवा अनेराही तथा प्रकारना ते संक्षेपथकी दोयभेदे कह्या ते कहैछै। पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता तत्थणं जेते पज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता तथा तिहां जो पर्याप्ता एतलाभेद नथी

॥ टीका ॥

सम्प्राप्ता इत्युक्तं, ननु कस्मा दुच्छ्वासपर्याप्त्यै वा ऽपर्याप्ता म्रियन्ते नो वाक् शरीरेन्द्रियपर्याप्तिभ्या मपर्याप्ता अपि? उच्यते तस्मा दागामिभवा यु र्बद्ध्वा म्रियन्ते सर्व एव देहिनो ना बध्वा, तच्च शरीरेन्द्रियपर्याप्तिभ्यां पर्याप्तानां बन्धमा यान्ति ना न्यथा इति, अन्ये तु व्याचक्षन्ते सामा न्यतो वर्णादी नसम्प्राप्ताइति' त च्च न युक्तं यतः शरीरमात्रभाविनो वर्णादयः, शरीर च्च शरीरपर्याप्त्या सञ्जात इति ॥ तत्थ णं जे ते पज्जत्त गा इत्यादि ॥ तत्र ये ते पर्याप्तकाः परिसमाप्तस्वयोग्यसमस्तपर्याप्तय एतेषां वर्णादेशेन वर्णभेदविवक्षया एवं गन्धादेशेन रसादेशेन स्पर्शादेशेन सहस्राग्रशः सहस्रसङ्ख्याविधानानि भेदा, स्तद्यथा–वर्णाः कृष्णादिभेदात्पञ्च, गन्धौ सुरभीतरभेदा द्वौ, रसा स्तिक्तादयः पञ्च, स्पर्शा मृदुकर्कशा दयो ऽष्टौ, एकैकस्मिं श्च वर्णादौ तारतम्यभेदेना नेके वांतरभेदा स्तथाहि–भ्रमरकोकिलकज्जलादिषु तरतमभावा दित्यादिरूपतया ऽनेके कृष्ण भेदा' एवंनीलादिष्व प्या योज्यं, तथा गन्धरसस्पर्शेष्व पि तथा परस्परं वर्णानां संयोगतो धूसरकर्बुरत्वादयो नेके सङ्कीर्णभेदा' एवं गंधादीनाम पि परस्परं गंधादिभिः समायोगा दतो ऽनन्ता वर्णाद्यादेशैः सहस्राग्रशो भेदाः ॥ संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं इति ॥ सङ्ख्येयानि योनिप्रमु खानि योनिद्वाराणि शतसहस्राणि तथाहि–एकैकस्मिन् वर्णे गन्धे रसे स्पर्शे च संवृतायोनिः पृथिवीकायिकानां, सा पुन स्त्रिधा, सचित्ता अचित्ता

॥ मूल ॥

**गाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता तत्थणं जेते पज्जत्तगा एतेसिं वण्णादेसेणं गंधादेसेणं रसादे सेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगाव**

॥ भाषा ॥

पाम्या विशिष्ट वर्ण गंध रस स्पर्श ए पर्याप्त पूरी थयाविना न प्रगटे। तेसिणं वण्णाएसेणं। तिणांमाहि वर्णादेशेकरी। गंधाएसेणं रसाएसेणं। गंधा देशेकरी रसादेशेंकरी। फासाएसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं। स्पर्शादेशेंकरी वर्णा देशेंकरी सहस्रशो भेदहुवे वर्णादि २५ भेदना वर्णादि तर तमभेदे अनेकभेदहुवे ते किम श्यामवर्णहुवे भ्रमर कोकिल तेहथकी कज्जल द्रुम श्याम सघलेभेदे बधता २ कहिवाने संख्याते भेदेहुवे। जोणिप्पमुहस यसहस्साइं पज्जतगईसाए अपज्जत्तगावक्कमंति। लाख योनि शतसहस्रकहतां लाखगमेंहुवे पर्याप्तानां निश्राये अपर्याप्ताउपजे ते फेरआगामुं कहैछे।

॥ टीका ॥

मिश्रा च, पुन रेकैकात्रिधा, शीता उष्णा शीतोष्णा, शीतादीना मपि प्रत्येकं तारतम्यभेदा दनेकभेदत्वं' केवल मेव विशिष्टवर्णादियुक्ताः संख्याऽतीता अपि स्वस्थाने व्यक्तिभेदेन योनयो जातिमधिकृत्यै कैव योनि र्गण्यते, ततः सङ्ख्यानि सप्तपृथिवीकायिकानां योनिशतसहस्राणि भवन्ति तानि च सूक्ष्मबादरगतसर्वसङ्ख्या सप्त॥ पज्जत्तगनिस्साए इत्यादि॥ पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तका व्युत्क्रामन्ति उत्पद्यन्ते' कियन्त इत्या ह–यत्रै कः पर्याप्तस्तत्र नियमा त्तन्निश्रया असङ्ख्याः सङ्ख्यातीता अपर्याप्तकाः, उपसंहारमाह–सेत्त मित्यादि॥ निगमनत्रयं सुगमं' तदे व मुक्ताः पृथिवीकायिकाः' सम्प्रत्य प्कायिकप्रतिपादनार्थमाह–से किं त मित्यादि सुगमं' नवरं इत्य वश्यायः त्रेहः' हिमं स्त्यानोदकं, महिका गर्भमासेषु सूक्ष्मवर्षं' करको घ

॥ मूल ॥

क्कमंति, जत्थ एगो तत्थ णियमा असंखेज्जा। सेत्तंखरबादरपुढविकाइया। सेत्तंबादरपुढविकाइया॥ सेत्तंपुढविकाइया॥ से किंतं आउकाइया? आउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–सुहुमआउकाइयाय बादर आउकाइयाय। से किंतं सुहुमआउकाइया? सुहुमआउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–पज्जत्तसुहुम आउकाइयाय अपज्जत्तसुहुमआउकाइयाय॥ सेत्तं सुहुमआउकाइया॥ से किंतं बादरआउकाइया? बादर

॥ भाषा ॥

जत्थएगोतत्थणियमा असखेज्जा। जिहां एकजीवपर्याप्ता उपजे तिहां निश्चै असंख्याता अपर्याप्ता उपजे। सेत्तंखरबायरपुढविकाइया। तेकहैछै। कठिनबादर पृथिवीकाय। सेत्तंबादरपुढविकाइया। एतले बादर पृथिवीकायनाभेद कह्या॥ सेत्तंपुढविकाइया॥ एतले सर्वपृथिवीकायना भेदकह्या हिवे। अप्कायकहछै। सेकिंतंअप्पकाइया २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा। ते शिष्य पूछे कुण अप्काय गुरु कहैछै–हेमहानुभाव! अप्काय दोयभेदकहो ते कहेछै—सहसआउकाइया बायर आउ०। सूक्ष्म अप्काय १ बादरअप्काय २ हिवे। सेकिंतं सुहुमआउकाइया २ दुविहा पंतं। ते कुण ते कहो स्वामीजी सूक्ष्मअप्काय तिहां गुरुकहैछै—हेदेवानुप्रिय! महानुभाव दोयप्रकारे कह्या ते कहेछ—पज्जत्तसुहुमआउकाइया। पर्याप्ता सूक्ष्मअप्काय १। अपज्जत्तसुहुमआउकाइया। अपर्याप्ता सूक्ष्मअप्काय। ते हिवे। सेत्तंसुहुमआउकाइया। तेह सूक्ष्मअप्काय कह्या॥ अठा आगे बादरकहछै—सेकिंतं बायरआउका

॥ टीका ॥

नोपलः, हरतनु र्यो नुव मुद्भिद्य गोधूमाङ्कुरतृणाग्रादिषु बहो बिन्दु रुपजायते, शुद्धोदक मन्तरिक्षसमुद्भवं नद्यादिगतं च, त च स्पर्शरसादिभेदा दनेकभेदं, त देवा नेकभेदत्वंदर्शयति-शीतोदकं नदीतडागावटवापीपुष्करिण्यादिषु शीतपरिणामं' उष्णोदकं स्वभावत एव क्वचि न्निर्झरादा वुष्णपरिणामं, क्षारोदक मीषल्लवणस्वभावं, यथा लाटदेशादौ केषुचिदवटेषु, खट्टोदक मीषदम्लपरिणामं, अम्लोदक मतीवस्वभावत एवा म्लपरि णामं काञ्जिकवत्, लवणोदकं लवणसमुद्रे, वारुणं वारुणसमुद्रे' क्षीरोदकं क्षीरसमुद्रे, घोदोदक मिक्षुसमुद्रे, रसोदकं पुष्करवरसमुद्रादिषु' ये पि चा न्ये तथा प्रकारा रसस्पर्शादिभेदभिन्ना घृतोदकादयो बादराप्कायिका स्ते सर्वे बादराप्कायिकतया प्रतिपत्तव्या' स्ते समासतो इत्यादि

॥ मूल ॥

आउकाइया अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उसाहिमए महिया करए हरतणूए सुद्धोदए सीतोदए उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबिलोदए लवणोदए वारुणोदए खीरोदए खोदोदए रसोदए जेयावन्नेतहप्पगारा तेसमा सन्न दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय', तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्ता एतेसिणंवन्नादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमु

॥ भाषा ॥

इया २ अणेगविहा पन्नत्ता । ते किवे कुण बादरअप्काय अनेकप्रकारकहेछै—तिकोही दरसावेछै । उस्साहिमणमिहिया । ठार मध्येहे १ हिम २ धूंहर ३ करग हरतणुए सुद्धोदए सीउदए । गडानोपाणी ४ हरीनेअणीये जलविन्दु बरसातनो ५ शुद्धपांणी ६ शीतजल ७ । उसिणोदए खारोदए खट्टोदए अंबि लोदए लवणोदए वरुणोदए खीरोदए घओदए इक्खोदए रसोदए । उष्णजल ८ क्षारजल ९ खाटो १० आंबिलरसपाणी ११ लूण जेहवो १२ वारुणीसम द्रनो पाणी डाढ जेहवो १३ दूधसरीखोपाणी १४ घृतसरीखोपाणी १५ इक्षुरस सेलडीरस १६ रस षटरस तेहवोपाणी १७ । जेयावन्नेतहप्पगारा ते स मासओदुविहा पन्नत्ता । जे एहवा अनेरा तथा प्रकारना तेह सर्व संक्षेपथी दोयप्रकारे कह्या तेकहे छे—पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ । तत्थणंजेतेअपज्जत्तगा । जेते अपर्याप्ता । तेणंअसंपत्ता । तेणे नहीपाम्या वर्णादिनथी कह्या तें । तत्थणंजेतेपज्जत्तगा । तिहां जेते पर्याप्ता । एएसिणंवन्ना

॥ टीका ॥

प्राग्वत् नवरं, सङ्ख्येयानि योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणी त्यत्रा पि सम्प्रवेदितव्यानि, उक्ता अप्कायिकाः, संप्रति तेजस्कायिकान् प्रतिपिपादयिषु राह-सेकिंतमित्यादि ॥ सुगमं, नवरं, मङ्गारो विगतधूमः, ज्वालो जाज्वल्यमानः, खादिरादिज्वालानलसम्बद्धादीपशिखे त्य न्ये' मुर्मुरः फुम्फुका

॥ मूल ॥

हसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थनियमा असंखेज्जा । सेत्तं बादर आउकाइया ॥ सेत्तं आउकाइया ॥ से किंतं तेउकाइया ? तेउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सुहुमतेउकाइयाय बादरतेउकाइयाय, से किंतं सुहुमतेउकाइया सुहुमतेउकाइया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । सेत्तं सुहुमतेउकाइया । से किंत बादरतेउकाइया २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा इंगाले जाला मुम्मुरे अच्ची अलाए सुद्धागणी उक्का विज्जू असणी णिग्घाए संघरिससमुट्ठिए सूरकंतमणिणि

॥ भाषा ॥

०सेणं गंधाएसेणं रसाएसेणं फासाएसेणं । इणारा वर्णादेशेकरी गंधादेशेकरी रसादेशेकरी फरसादेशेकरी । सहस्सग्गसोविहाणाइं । सहस्साय एतले लाख एहवेनामे । संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं । संख्याता सतसहस्रयोनिप्रमुखहुवे । पज्जत्तगणीसाए । पर्याप्तानी निश्राये । अपज्जत्तगावक्कमंति अपर्याप्ता आवी उपजे । जत्थएगोतत्थणियमाअसंखेज्जा । जिहां एकजीवतिहां निश्राये असंख्याताजीव कहवा । सेत्तंबायरआउकाइया । ते बादर अप्कायना भेदकह्या । सेत्तंआउकाइया । एतले ते सूक्ष्मबादर सर्वअप्काय कह्या ॥ हिवे सेकिंत तेउकाइया २ दुविहा पं तं । तेजकाय पूछेशिष्य कुण ते तद् गुरु कहै दोयप्रकारे कह्या तेकहैछे—सुहुमतेउकाइया बायरते० । सूक्ष्मतेउकाय १ बायरतेउकाय २ । सेकिंतंसुहुमतेउकाइया २ दुविहा पं तं । हिवे शिष्यकहै कुण तेगुरुकहै सूक्ष्म तेउकाय तेहना दोयभेदकह्या तेगुरुकहैछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता १ अपर्याप्ता २ । सेत्तंसुहुमतेउकाइया । ते तिन सूक्ष्मतेउकाय ॥ सेकिंतंबायरतेउकाइया २ अणेगविहा पं तं । शिष्यपूछे कुणबादरतेउकाय गुरुकहै अनेकप्रकारेकह्या तेकहैछे—इंगाले जालसुम्मुरे । अंगारा वभूतरहित १ ज्वाला दीपसिखा अग्नि प्रतिबद्ध २ वभूतमिश्रा अग्निकण । अच्चीअलाएसुद्धागणी । अप्रतिबद्धज्वाला सुद्धाग्नि । उक्का बिज्जू । उल्का

॥ टीका ॥

दौ भस्ममिश्रिताग्निकणरूपः, अर्चिरनलाप्रतिबद्धाज्वाला, आलातमुल्मुकं, शुद्धाग्निरयःपिण्डादौ' उल्का चुहुली, विद्युत्प्रतीता' अशनि राकाशे पतदग्निमयः कणः, निर्घातो वैक्रियाग्निप्रपातः, सङ्घर्षसमुपस्थितो ऽरण्यादिकाष्ठनिर्मथनसमुद्भूतः, सूर्यकान्तमणिनिसृतः सूर्यखरकिरणसम्पर्के सूर्यकान्तमणे र्यःसमुपजायते ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा इति ॥ ये पि चा न्ये तथाप्रकारा एवम्प्रकारा स्तेजस्कायिका स्ते पि बादरस्तेजस्कायिकतया वे दितव्या, स्तेसमासतो इत्यादिप्राग्वत्, नवर मत्रापि सङ्ख्येयानि योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि सम्प्रवेदितव्यानि, उक्ता स्तेजस्कायिकाः, सम्प्रतिवायु

॥ मूल ॥

रिसए, जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्तगा एएसिं वन्नादेसेणं गंधादेसेणं रसाएसेणं फासादेसेणं सह स्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थएगो तत्थणियमा असंखेज्जा ॥ सेत्तं बादरतेउकाइया ॥ सेत्तं तेउकाइया ॥ से किंतं वाउकाइया ? वाउकाइया दुवि

॥ भाषा ॥

पात वीजली। असिणीणिग्घाए। आकाशे अग्निमयो कण वैक्रियअग्नि। संघरिससमुट्ठिए। अरणीयादिकथकी ऊपनो। सूरिकांतमणिनिस्सिए। सूर्यने तापेकरी ऊपजे मणिथी ऊपजे ते अग्नि। जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पं तं। जे वली एहवा अनेरा तथा प्रकारनाभेद तेसर्व स क्षेपथी दोयप्रकारेकह्या ते कहेछै—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। तत्थणंजेतेअपज्जत्तगा तेणंअसंपत्ता। तिहांजेते अपर्याप्ता वर्णादि केनथी पाम्या पूरा। तत्थणंजेतेपज्जत्तगा। तिहां जेते पर्याप्ता। एसिणं वन्नाएसेणं गंधाएसेणं रसाएसेणं फासाएसेणं। इणारा वर्णादेशेकरी गन्धादेशे करी रसादेशेकरी स्पर्शादेशेकरी। सहस्सग्गसोविहाणाइं। सहस्राग्र एतले सातलाख भेदेकरी। संखिज्जाइंजोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणीसाए संख्याता सतसहस्रयोनि प्रमुख ऊपजे पर्याप्तानीनिश्रायें। अपज्जत्तगावक्कमंति। अपर्याप्ता उपजे। जत्थएगोतत्थणियमा। जिहां एकजीव तिहां नि श्चै। असंखिज्जा। असंख्यातजीव उपजै। सेत्तंबायरतेउकाइया। एतले बादर तेउकाय। सेत्तंतेउकाइया। ते सर्व तेउकायकह्या ॥ सेकिंतंवाउकाइया २ दु

॥ टीका ॥

कायिकप्रतिपादनार्थं माह-सेकिंतमित्यादि॥ प्रतीतं, नवरं॥ पाईणवाए इति॥ यः प्राच्यादिग्भः समागच्छति वातः सप्राचीनवात, एवं प्रतीचीनवातो दक्षिणवात उदीचीनवात श्च वक्तव्य, ऊर्द्धमुच्छन् यो वाति वात स्स ऊर्द्धवात, एव मधोवात तिर्यग् वातावपि परिज्ञावनीयो, विदिग्वातोयो विदिग्भ्यो वाति, वातो भ्रामो ऽनवस्थितो वातो वातोत्कलिकाः समुद्रस्ये व वातोत्कलिकाः, वातमंडली वातोली, उत्कलिकावातउत्कलिकाभिः प्रचुरतराभिः सम्मिश्रितो यो वातो मंडलिकावातो, मंडलिकाभि र्मूलत आरभ्य प्रचुरतराभिः समुत्थोयो वात, गुञ्जावातो यो गुञ्जनशब्दं कुर्वन्

॥ मूल ॥

हा पण्णत्ता, तंजहा—सुहुमवाउकाइयाय बादरवाउकाइयाय, से किंतं सुहुमवाउकाइया? सुहुमवाउकाइया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय अपज्जत्तगसुहुमवाउकाइयाय। सेत्तं सुहुमवाउकाइया। से किंतं बादरवाउकाइया? बादरवा० अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—पाईणवाए पडीणवाए दाहिणवाए उदीणवाए उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसीवाए वाउब्भामेवा उक्कालिया वायमंडलिया उ

॥ भाषा ॥

विहा पं तं। शिष्यपूछे कुणगुरुकहै वाउकायना दोयभेदकह्या ते कहेछै—सुहुमवाउकाइया। सूक्ष्मवाउकाय। वायरवाउकाइया। बादरवाउकाय। सेकिंतंसुहुमवाउकाइया २ दविहा पं तं। हिवे कुण सूक्ष्मवाउकाय तेहना दोयभेद कह्या ते कहेछै—पज्जत्तसुहुमवाउकाइया अपज्जत्तसुहुम वा०। पर्याप्ता सूक्ष्मवाउकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मवाउकाय। सेत्तंसुहुमवाउकाइया। एतले सूक्ष्मवायुकायना भेदकह्या॥ सेकिंतंवायरवाउकाइया २ अणेगविहा पं० तं०। हिवे बादर वाउकायना भेदेंकरी भेदकहैछै—अनेकप्रकारे कह्या वाउकायबादरना ते कहैछै—पाईणवाए पडीणवाए दाहिणवाए उदीण वाए। पूर्वदिग्भिनो उपनो पश्चिमदिग्भिनो उपनो दक्षिणदिग्भिनो उपनो वायु उत्तरदिग्भिनो उपनो वायु। उड्ढवाए अहोवाए तिरियवाए विदिसिवा ए वाउब्भाए। ऊंचोदिग्भिनोउपज्यो नीचोदिग्भिनो वायु तिरछोदिग्भिनो विदिग्भिवायु ऊंचोभमतोवायु। वाउक्कलिया वायमंडलिया। उत्कलवायु समु द्रनो मण्डलिकावायु गोल। उक्कलियवाए मंडलियवाए। बेलू उत्कलीपाडे मण्डलावर्त्तवायु। गुंजावाए झंझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए।

॥ टीका ॥

वाति, झंझावातः सवृष्टि, रशुभनिष्ठुर इत्य न्ये' सम्वर्त्तकवात स्तृणादिसंवर्त्तनस्वभावः, घनवातो घनपरिणामो रत्नप्रभापृथिव्याद्य धोवर्ती, तनुवा तो विरलपरिणामो घनवातस्या धःस्थायी शुद्धवातो मंदस्तिमितो, वस्ते दृत्यादिगत इत्य न्ये॥ ते समासतो इत्यादि प्राग्वत्, अत्रा पि सङ्ख्येयानि योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि सम्प्रा वसेयानि, उक्ता वायुकायिकाः' सम्प्रति वनस्पतिकायिकप्रतिपादनार्थं माह-सेकिंतमित्यादि॥ सुगमं, यावत् से

॥ मूल ॥

क्कलियावाए मंडलियावाए गुंजावाए झंझावाए संवट्टवाए घणवाए तणुवाए सुद्धवाए, जेयावन्ने तहप्पगा रा ते समासन्न दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय, तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं असंप त्ता, तत्थणं जेते पज्जत्तगा एतेसिणं वन्नादेसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ नियमाअसं खेज्जा॥ सेत्तं बादरवाउकाइया॥ सेत्तं वाउकाइया॥ से किंतं वणस्सइकाइया वणस्सइकाइया दुविहा प०,

॥ भाषा ॥

गुंजारव बोलतो अशुभ अनिष्टवायु संवर्त्तवायु तृणउडावे ते वायु घनवात तनुवायु पछे रत्नप्रभा हेठे शुद्धवायु । जेयावन्नेतहप्पगारातेसमासओ दुविहा पं० तं० । जे एहवा अनेरा तथा प्रकारनावायु ते संक्षेपथकी दोयप्रकारेकह्या ते कहेछै—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । तत्थणंजेतेअप ज्जत्तगा तेणंअसंपत्ता । तिहां जेते अपर्याप्ता ते वर्णादिकने अणपामवैकरी । तत्थणंजेते पज्जत्तगा एएसिणं । तिहांजेते पर्याप्ता इणारा । वन्नाएसेणं गंधाएसेणं फासाएसेणं । वर्णादेशें गन्धादेशें स्पर्शादेशें । सहस्सग्गसोविहाणाइं । सतसहस्र एतले सातलाख योनिने भेदेकरी । संखेज्जाइं जोणिप्पमुहस यसहस्साइं । सातेलाखे संख्याताजोनिविषै । पज्जत्तगनीसाए । पर्याप्तानी निश्राये । अपज्जत्तगावक्कमंति । अपर्याप्ता उपजे । जत्थएगोतत्थणियमाअसं खेज्जा । जिहां एकजीव तिहां निश्चे असंख्याता । सेत्तंबायरवाउकाइया । ते तिमकह्यो जिम वाउकाय । सेत्तंवाउकाइया । एतले सर्व सूक्ष्मबादर वायु भेदेकरी कह्या॥ से किंतं वणस्सइकाइया २ दुविहा पं० तं० । हिवे वनस्पतिकायना भेदकहैछै, गुरु शिष्यप्रतें कहैछै, हेशिष्य! दोयप्रकारे कहेछै, तेकिम।

॥ टीका ॥

स्तं सुहुमवणस्सइकाइया ॥ सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते बादरवनस्पतिकायिका २ द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्त द्यथा—प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका श्च साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका श्च, तत्रै क मेकं जीव म्प्रतिगत म्प्रत्येकं शरीरं येषान्ते प्रत्येकशरीरा, स्ते च ते बादरवनस्पतिकायिका श्च प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका, श्च शब्दः स्वगतानेकभेदसूचकः' समान न्तुल्यं प्राणापानाद्युपभोगं यथान्नवति' एवं आसमन्ता देकीभावेना न न्तानां जन्तूनां साधारणं सङ्ग्रहणं येन त त्साधारणं' साधारणं शरीरं येषां ते साधारणशरीरा स्ते च ते बादरवनस्पतिकायिका श्च साधारणबा दरवनस्पतिकायिकाः, च शब्दो त्रा पि स्वगतानेकभेदसूचकः ॥ सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः ? सूरि राह—प्रत्ये

॥ मूल ॥

तंजहा—सुहुमवणस्सइकाइयाय बादरवणस्सइकाइयाय, से किंतं सुहुमवणस्सइकाइया २ दुविहा पन्नत्ता, तं०—पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय अपज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइयाय । सेत्तं सुहुमवणस्सइकाइया । से किंतं बादरवणस्सइकाइया २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाय साहारणसरीरबादरव

॥ भाषा ॥

सुहुमवणस्सइकाइया । सूक्ष्मवनस्पतिकाय । वायरवणस्सइकाइया १। बादरवनस्पतिकाय २। सेकिंतंसुहुमवणस्सइकाइया २ दुविहा पं० तं०। हिवे ते शि ष्यप्रतें गुरू समझावेछे सूक्ष्मवनस्पतिकायना दोयप्रकार कह्या ते कहेछे—पज्जत्तसुहुमवणस्सइकाइया । पर्याप्ता सूक्ष्मवनस्पतिकाय । अपज्जत्तसुहुम वणस्सइकाइया । अपर्याप्ता सूक्ष्मवनस्पतिकाय । सेत्तंसुहुमवणस्सइकाइया। एतले सूक्ष्मवनस्पतिकाय कह्या । सेकिंतंवायरवणस्सइकाइया २ दुविहा प तं० । ते शिष्यकहै कण बादरवनस्पति कहो स्वामीजी तदगुरु कहेछे—हेशिष्य ! दोयप्रकारेकह्या ते कहेछे—पत्तेयसरीरवायरवणस्सइकाइया । प्रत्येक शरीर बादरवनस्पतिकाय पहिलो । साहारणसरीरवायरवणस्सइकाइया । दूजो साधारणशरीर बादरवनस्पतिकाय । सेकिंतं पत्तेयसरीरवायरवणस्स इकाइया २ दुवालसविहा पं० तं०। शिष्य तेगुरुप्रतिं कहै कुण तेप्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकाय शिष्यातें गुरुकहेछे—प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतिकायना १२ बारै भेदकह्या ते कहुंछुं । रुक्खागुच्छागुम्मा लयावल्लीयपव्वयचेव । तणवल्लयहरियोसहि जलरुहकुहणायवोधव्वा ॥ १ ॥ वृक्ष आम्रादि १ गुच्छावृन्ता

॥ टीका ॥

कशरीरबादरवनस्पतिकायिका द्वादशविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–रुक्खेत्यादि ॥ वृक्षा शूतादयः, गुच्छा वृंताकीप्रभृतयः, गुल्मानि नवमालिकाप्रभृतीनि लता चंपकलतादयः, इह येषां स्कन्धप्रदेशे विवक्षितोर्द्ध्वगतैकशाखाव्यतिरेकेणा न्यत् शाखान्तरं परिस्थूरं न निर्गच्छति ते लता विज्ञेया, स्ते च चम्पकादय इति, वल्ल्यः कूष्मांडीत्रपुषीप्रभृतयः, पर्वगा इक्ष्वादयः, तृणानि कुशजुंजुकार्जुनादीनि, वलयानि केतकीकदल्यादीनि, तेषांहि त्वचावलयाकारेण व्यवस्थिते ति, हरितानि तन्दुलीयकवस्तुलप्रभृतीनि' नुषध्यः फलपाकान्ता, स्ते च शाल्यादयः, जले रुहन्तीति जलरुहा, उदकावकपनकादयः, कुहुणा भूमिस्फोटा त्रिधाना स्ते चा यकायप्रभृतयः, तत्र यथोद्देशं निर्देश इति न्यायात् प्रथमतो वृक्षप्रतिपादनार्थमाह–से किं त मित्यादि ॥ अथ के ते वृक्षाः ? सूरि राह–वृक्षा द्विविधाः प्रज्ञप्ता' स्तद्यथा–एकास्थिका श्च बहुबीजका श्च, तत्र फलं २ प्रतिएक मस्थि येषान्ते एकास्थिका' श्च शब्दो वक्ष्यमाणस्वगतानेकभेदसूचकः, तथा प्रायो स्थिबन्ध मन्तरेणै व फलान्तर्वर्त्तीनि बहूनि बीजानि येषान्ते बहुबीजकाः, शेषाद्वे ति कः प्रत्ययः, अत्रा पि च शब्दो वक्ष्यमाणस्वगतानेकभेदसूचकः, तत्रै कास्थिकप्रतिपादनार्थमाह–से किं त मित्यादि ॥ अथ के त एकास्थिका अ

॥ मूल ॥

णस्सइकाइयाय, से किंतं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया २ दुवालसविहा पन्नत्ता, तंजहा–रुक्खागुच्छा गुम्मा लतायवल्लीयपव्वगाचेव । तणवलयहरियओसहि जलरुहकुहणायबोधव्वा ॥ १ ॥ से किंतं रुक्खा २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा–एगट्ठियाय बहुबीयगाय, से किंतं एगट्ठिया २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा निंबं

॥ भाषा ॥

कादि २ नवमालिकादि ३ लता चंपकवृक्ष ४ नागरबेल ५ सेलडी ६ तृणडाल ७ वल्लयकेतकी ८ हरिसाल ९ औषधि १० पाणीमांहिजगे ११ भूंफोड १२ जाणिवा । सेकिंतंरुक्खा २ दुविहा पं० तं० । शिष्य कुणसा भेदकह्या इचना गुरुकहै हे शिष्य ! दोयभेद कह्या ते कहेछै—एगट्ठियाय बहुबीयाय । एकस्थिता एकबीज अने बहुबीजा २ । सेकिंतंएगट्ठिया २ अणेगविहा पं तं । ते हिवै एकबीजवालाना अनेकभेदकह्या ते कहेछै—णिंबजंबुकोसंब सालअंकोल्लपीलुमेलूय । सल्लइमोयइमालुय बउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ नीब १ आंब २ जंबू ३ कोसंब ४ सालइवृक्ष ५ अंकोठ ६ पीलू ७ लिसोडा ८ साल

नेकविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा–निंबंबे इत्यादि ॥ गाथा त्रयं, तत्र निंबाम्रजम्बूकोशम्बाः प्रतीताः, शालः सर्जः ॥ अंकोल्लत्ति ॥ अङ्कोठः प्राकृतत्वात्सूत्रे च ठकारस्य लादेशः, अङ्कोठेल्ल इति वचनात्' पीलुः प्रतीतः, शैलुः श्लेष्मान्तकः, शल्लकी गजप्रिया' मोचिकीमालकौ देशविशेषप्रतीतौ, बकुलः केसरः, पलाशः किंशुकः, करजो नक्तमालः' पुत्रजीवको देशविशेषप्रतिबद्धः, अरिष्टः पिचुमन्दः, विभीतकोक्षः, हरीतकःकोङ्कणदेशप्रसिद्धः कषायबहुलः, भल्लातको यस्य निर्भातकाभिधानानि फलानि लोकप्रसिद्धानि, उम्बेभरिकाक्षीरणीधातकीप्रियालपूतिकरंजश्लक्ष्णशिंशपाशनपुन्नागनागश्रीपर्ण्यशोकालोकप्रतीताः, जे या वन्ने तहप्पगारा इति ॥ ये पि चान्ये तथाप्रकारा एव प्रकारा स्तत्तद्देशविशेषभाविन स्ते सर्वे प्ये कास्थिका वेदितव्या, एतेषा मेकास्थिकानां मूलान्य प्य सङ्ख्येयजीवकानि, असङ्ख्येयप्रत्येकशरीरजीवात्मकानि ॥ एवं कन्दा अपि स्कन्धा अपि त्वचो पि शाखा अपि प्रवाला

॥ टीका

वजंबुकोसंबसालअंकोल्लपेलुसेलूया । सल्लइमोयइमालुय बउलपलासेकरंजेय ॥ १ ॥ पुत्तंजीवअरिट्ठे बिभेल एहरिडएयभल्लाए । उंबेभरियाखीरिणि बोधव्वेधायइपियाले ॥ २ ॥ पूईयनिंबकरए सरहातहसीसवायअसणाय । पुन्नागनागरुक्खे सिरिवसीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा एतेसिणंमूलावि असंखिज्जजीविया कंदावि खंधावि तयावि सालावि पवालावि, पत्तापत्तेयजीविया, पुप्फा अणेगजीवा, फला एगट्ठिया ॥ सेत्तं

॥ मूल ।

र ६ मोचको १० मालक ११ केसर १२ पलास कुसुभ १३ करंज च ॥१॥ पुत्तंजीवअरिट्ठे बिभेलएहरिडएयभल्लाए । उंबेभरियाखीरणि बोधव्वेधायइपियाले ॥ २ ॥ जीवार्थातो देशीभाषा अगरी यो कोठानोबोली आरोठो बहेडा हरडे भिलामा उंबेभरिका क्षीरणी जाणिवा धातकी प्रियाल ॥ २ ॥ पूईयनिंबकरंजे सरहातहसीसवायअसणाय । पुन्नागनागरुक्खे सिरिवसीतहअसोगेय ॥ ३ ॥ पूतिका नींब करंज सेल्हा मगधदेश प्रसिद्ध तिम शीशम टींबरू पुन्नागवृक्ष नागवृक्ष श्रीपर्णी तिम अशोकवृक्ष ॥ ३ ॥ जेयावन्नेतहप्पगारा । जे एहवा अनेरा तथाप्रकारना । एएसिणंमूलावि असंखिज्ज जीविया । एह ना मूलनेविषे असंख्याता आडखानाजीवहुवे । कंदावि खंधावि तयावि सालावि । मूलसंधि हेठलो उपरिलो कंद स्कन्धनेथुड त्वचा सालप्रमुख । पवाला

॥ भाषा

॥ टीका ॥

अपि प्रत्येक मसङ्ख्येयप्रत्येकशरीरजीवकाः, तत्र मूलानियानिकन्दस्था धस्ता द्भूमे रन्तः प्रसरन्ति तेवा मुपरि कन्दा स्ते च लोकप्रतीताः' स्कन्धाः स्थुडाः, त्वचः छल्ल्यः' शाखाः शाखाः, प्रवालाः पल्लवाङ्कुराः॥ पत्तापत्तेयजीवयंति॥ पत्राणि प्रत्येकजीवकानि, एकैकं पत्र मेकैकेन जीवेना धिष्ठित मिति भावः, पुष्पाण्य नेकजीवानि प्रायः प्रतिपुष्पपत्रं जीवभावा, त्फलान्ये कास्थिकानि, उपसंहारमाह–से त्तं एगट्ठिया ॥ सुगमं, बहुबीजकप्रतिपादनार्थमाह–सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते बहुबीजकाः ? सूरि राह–बहुबीजका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता स्त द्यथा–अत्थिजेत्यादिगाथात्रयं॥ एते च अस्थिकतिन्दुककपित्थाम्बाडकमातुलिङ्गबिल्वामलकपनसदाडिमाश्वत्थोदुम्बरवटन्यग्रो धपिप्पलीशतावरीप्लक्षकादुम्बरिकुसुम्भरिदेवदालितिलकालबकच्छत्रौषधशरीषसप्तपर्णदधिपर्णलोध्रधवचन्दनार्जुननीपकुटजकदम्बकानां मध्ये केचिदतिप्रसिद्धाः केचि देशविशेषतो वेदितव्याः, नवर मिहा

॥ मूल ॥

एगट्ठिया ॥ से किंतं बहुबीयगा २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा–अत्थियतेंदुकविठे अंबाडगमाउलिंगबिल्लेय आमलगफणसदालिम आसोत्थेउंबरवडेय ॥ १ ॥ णग्गोहणंदिरुक्खे पिप्परिसयरीपिलुक्करुक्केय। काउंबरि कुत्थुंभरि बोधव्वादेवदालीय ॥ २ ॥ तिलएलउएच्छत्तो हसिरीसेसत्तवण्णदहिवन्ने। लोद्धधवचंदणज्जुण णीमेकु

॥ भाषा ॥

वि पतापत्तेयजीविया पुप्फाअणेगजीवा फलाएगट्ठिया। प्रवाल प्रमुख अंकुरा पत्रप्रमुख प्रत्येकजीवहुवे एकेकपत्रे एकेकजीव हुवे एकफले एकजीवहुवे फूलविषे अनेकजीवहुवे। सेत्तंएगट्ठिया। एतले एकास्थिता जीव कह्या। सेकिंतंबहुबीयगा २ अणेगविहा पं० तं०। हिवे शिष्यकहे गुरुप्रतें कुण बहुबीज तद गुरुकहे बहुबीजना अनेकभेदछे ते कह्या तिम। अत्थियतिंदुकविठे। अस्तिकनामाइच १ तिंदुकवृक्ष२ कोठ। अंबाडगमाउलिंगबिल्वे। अंबाडगबीजोरा बिल्व। आमलगफणसदाडिम आसोत्थेउंबरवडेय ॥ १ ॥ आमला फागस दाडिम अश्वत्थ पीपर वट। निग्गोह नंदिरुक्खे पिप्परिसयरीपिलुक्खरुक्खेय। काउंबरि कुत्थुंभरि बांधव्वा देवदालीय ॥ १ ॥ न्यग्रोध नंदिवृक्ष पीपर सतावर प्लक्षवृक्ष कादुंबरी धणिया जाणिवा देवदारू ॥ १ ॥ तिलएलउएच्छत्तो हसिरीसेसत्तिवण्णदहिवन्ने। लोद्धधवचंदणज्जुण निंबे कुडए कयंबेय। तिलकंटी आलावुक छत्र सरीस सप्तपर्णनामाइच्छ दधिपर्ण लोधवृक्ष धव चन्दन।

मलकादयो न लोके प्रसिद्धाः प्रतिपत्तव्या स्तेषा मेकास्थिकत्वात्, किन्तु देशविशेषप्रसिद्धा बहुबीजका एव केचन ॥ जे या वन्ने तहप्प गारत्ति ॥ ये चा न्ये तथाप्रकारा एव प्रकारा स्त पि बहुबीजका मन्तव्या, एतेषा मपि मूलकन्दस्कन्धत्वक्शाखाः प्रवालाः प्रत्येक मसङ्ख्येयं प्रत्येकशरीरजीवकाः, पत्राणि प्रत्येकजीवकानि, पुष्पाण्य नेकजीवकानि, फलानि बहुबीजकानि' उपसंहारमाह-से त्त मित्यादि ॥ निगमनद्व

॥ टीका

झएकयंवेय ॥ ३ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा एतेसिणंमूलावि असंखिज्जजीविया, कंदावि खंधावि तयाविसालावि पवालावि, पत्ता पत्तेयजीविया, पुप्फायअणेगजीविया, फलाबहुबीया, सेत्तं बहुबीयगा ॥ सेत्तं रुक्खा ॥ से किंतं गुच्छा २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—वाइंगिणिवल्लइपुणु ईयतहकच्छुरीयजासुमणा । रूवीआढइणीली तुलसीतहमाउलिंगाय ॥ १ ॥ कुत्थुंभरिपिप्पलिया अतसीवल्लीयकायमाईय । चुन्नपडोलाकंदलि वाउह्यावत्थुलेवदरे ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयबोधव्वे । णिग्गुंडिअक्कतूवरि आढईचेवतलए

॥ मूल

अर्जुन नोब कुटज कदबवृत्त । जेयावन्नेतहप्पगाराएएसिणंमूलाविअसंखिज्जजीविया । जे वली अनेरा तथाप्रकारना एहना मूलपिण असंख्यातजीवसहित हवे कोईवृक्षनोमूल अनन्तजीवहवे । कंदावि खंदावि तयावि सालावि पवालावि । कदनेविषै स्कन्धनेविषै त्वचानेविषै शाखानेविषै प्रवाल पल्लवनेविषै । पत्ता पत्तेयजीविया फला बहुबीया । पत्रनेविषै प्रत्येकजीवहवे फलमें बहुबीजहवे तेहनाभेदकह्या । सेत्तंबहुबीयगा । एतले बहुबीजनाभेद कह्या । सेत्तंरुक्खा । ते तिम वृक्ष ॥ सेकिंतंगुच्छा २ अणेगविहा पन्नत्ता । हिवे, गुच्छानाभेद शिष्यपूछेछे गुरुकहेछे—गुच्छानाभेद अनेक प्रकारे कह्या ते कहैछे—वाइंगिणिवल्लपुण ईयतहकच्छुरीयजासुमणा । रूवीआढइणीली तुलसीतहमाउलिंगोय ॥ १ ॥ वैगण रीङ्गणी सल्लकी तिम कछुरीना गुच्छा जाणिवा रूपी आटी नीलफडो तुलसी तिम बीजोरा मनोरम ॥ १ ॥ कुत्थुंभरिपिप्पलिया अयसीवल्लीयकायमाईया । चुन्नपडोलाकंदलियावाउंयावत्थुलेवयरे ॥ २ ॥ कटुंबरी पीपरण अलसी वलीयकाइयामादि चूर्ण पटोल कंदलिका वाउलिका वायलो बदरवृक्ष ॥ २ ॥ पत्तउरसीयउरए हवइतहजवासएयबोधव्वे ।

॥ भाषा

॥ टीका ॥

यं सुगमं, सम्प्रति गुच्छप्रतिपादनार्थमाह–सेकिं त मित्यादि ॥ एते गुल्मादिभेदाः प्रायः स्वरूपत एव प्रतीताः, केचि द्देशविशेषा दवगन्त व्याः, अत्र वृक्षादिषु यस्यै कस्य नाम गृहीत्वा परत्रा पि त न्नाम गृहीतं तत्रा न्यो ऽपिजातीयः सदृग् नामा प्रतिपत्तव्यः, अथवा; एकोपि क

॥ मूल ॥

ऊ ॥ ३ ॥ सणपाणकासमद्दग अग्घाऊगसामसिंदुवारेय । करमद्दअट्टरूसग करीरएरावणमहत्थे ॥ ४ ॥ जाउलतमालपिरिली गयमारिणिकुव्वकारियाभेंडी । जावइकेयइतहगं जपाऊलादासिअंकोल्ले ॥ ५ ॥ जेयावऽन्ने तहप्पगारा सेत्तं गुच्छा ॥ से किंतं गुम्मा २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा–सेरियएणोमालिय कोरिंटय वत्थुजीवगमणोज्जे । पीईयपाणकणइर कुज्जयतहसिंदुवारेय ॥ १ ॥ जाईमोग्गरतहजू हियायतहमल्लियायवा ती । वत्थुलकच्छुलसेवा लगंठिमगदंतियाचेव ॥२॥ चंपगजाईणवणी इयायकुंदतहामहाजाई । एवमणेगागारा

॥ भाषा

णिग्गुडिअकटूवरि आढइचेवतलआंडा ॥ ३ ॥ पत्रवृक्ष उरसो उरज हुवे तिम जवास जाणिवा निर्गुंडो अर्क आढ तूवरकौनिम्बै तेलोडावृक्ष ॥ ३ ॥ सण पाणकासमद्दग अग्घाडगसामसिंदुवारेय । करमद्दअट्टरूसग करीरएरावणमहत्थे ॥ ४ ॥ सण पान कासमर्दवृक्ष आघाडौ स्याम सिंदुवार कर अडू सा कैर कटालो रावण ॥ ४ ॥ जाउलतमालपरिलो गयमारिणिकुव्वकारिया भेंडो । जावइकेयइतहगं जपाडलादासिअंकोले ॥ ५ ॥ जाउल तमाल परि लो गजमारणो कुब्जकारिका भौंडो यावत् केतकौ तिम गंडपाडल एहवा अंकोल ॥ ५ ॥ जेयावऽन्नेतहप्पगारा । जे अनेरा तथाप्रकारना । सेत्तं गुच्छा । ते तिम गुच्छाकह्या ॥ सेकिंतं गुम्मा २ अणेगविहा पं तं । ते कुण गुल्म गुरुकहै ते अनेकप्रकारे कह्या ते कहैछै—सेरियए णामालिय कोरंटबंधुजीवगमणोज्जे । पीईयपाणकणइर कुज्जयतहसिंधुवारेय ॥ १ ॥ सेरीयनामा नवमालिका कोरंटक बंधुजीवक विषहुरिया फूल मनोजनामा गुल्म प्रीतिकर प्राणतर प्रसिद्ध कणयर कुब्जकनामा तिम निर्गुंडो ॥१॥ जाईमुग्गरतहजू हियायतहमल्लियायवासंती । वत्थुलकच्छुल सेवा लगंठिमगदंतियाचेव ॥२॥ जायनाफूल मोगरो तिम जूही तिम मालतीगुल्म वासंती वत्थुल कच्छोलगुल्म सेवालगुल्म गंठिमगनामे दंतिमग ॥२॥

॥ मूल

हवंतिगुम्मामुणेयव्वा ॥ ३ ॥ सेत्तं गुम्मा ॥ से किंतं लयाउ लयाउ अणेगविहाउ पण्णत्ताउ, तंजहा—पउमल यानागलया असोगचंपयलयायचूतलता । वणलतवासंतिलता अइमुत्तयकुंदसामलता ॥ १ ॥ जेयावण्णेत हप्पगारा सेत्तं लयाउ ॥ से किंतं वल्लीउ २ अणेगविहाउ पण्णत्ताउ, तंजहा—पूसफलीकालिंगी तुंबीतपुसीय एलवालुंकी । घोसालईपप्फोला पंचंगुलिअायणालीय ॥ १ ॥ कंगूलयाकदुइया कक्कोडइकारियल्लईसुनगा । कुयवायबागलीपा वावल्लीतहदेवदालीय ॥ २ ॥ अप्फोआअइमुत्तय नागलयाकण्हसूरवल्लीय संघट्टसुमिण सावि जायसुमणकुविंदवल्लीया ॥ ३ ॥ मुद्दियअंवावल्ली बीरत्तिरालीजियंतिगोवाली । पाणीसामावल्ली गुंजा

॥ भाषा

चपगजाईणवणो यायकुंदातहामहाजाई । एवइणेगागारा हवंतिगुम्मासुणेयव्वा ॥ ३ ॥ चपक जातो नवरंगी मचकुन्द तिम महाकाय इम अनेकभेद आकारछे गुल्मजातिजाणिवा ॥ ३ ॥ सेत्तंगुम्मा सेकिंतं लयाः अणेगविहा पं तंजहा । ते तिम गुल्म ॥ ते हिवे शिष्य लताजातिपूछे गुरू कहै हेमहानुभाव! लताजाति अनेक प्रकारनो कहो तेकहैछे—पउमलयानागलया असोगचंपयलयायभूयलया । वनलयवासंतिलया अइमुत्तयकुंदसामलया ॥ १ ॥ पद्मलता नागलता अशोकलता चंपकलता भूतलता वनलता वासंतीलता अतिमुक्तकलता कुंदलता श्यामलता ॥ १ ॥ जयावण्णेतहप्पगारा । जे पणि और तथा प्रकारना ते लता कहिये । सेत्तंलताओ । लता वनस्पति कही ॥ सेकिंतं वल्लीओ वल्लीओ अणेगविहाओ पं० तं० । हिवेशिष्यपूछे कृपा ते वल्ली वल्ली अनेक प्रकारनो कहो तेकहैछे—पूमफलीकालिंगी तुंबीतउसीयएलबालुंकी । घोसाडइपडोला पंचगुलियायनालीय ॥ १ ॥ कंगूयाकडुइया कंकोलाकरियल्लइसु भगा । कुयहायवगलिपावे वल्लीतहदेवदालीय ॥ २ ॥ अप्पोयाअइमुत्तय नागलताकण्हसूरवल्लीय । संघट्टसुमिणसाविय जासुवणकुविंदवल्लीय ॥ ३ ॥ मु द्दियअंबावल्ली बेरालीएजयंतिगोवाली । वाणीमासावल्ली गुंजावल्लीयवत्थाणी ॥ ४ ॥ सेसिविदुगोत्तफ्सिया गिरिकण्हइमालुयायअंजणई । दहफुल्लयको रलिना गलीयतहअक्कबोंदीया ॥ ५ ॥ पूसफलीका लिंगी तुंबी तींउसी एलची चौभडी घोसातकी पटोल पंचागुली नालिका ॥१॥ कंगू कटुकी कंकोडा,

वल्लीयवत्थाणी ॥ ४ ॥ ससविदुगोत्तफुसिया गिरिकण्णइमालुयायञ्जणई । दहफुल्लयकंगलिमा गलीयसह अक्कबोंदीया ॥ ५ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्तं वल्लीओ॥ से किंतं पव्वगा २ अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा— इक्खूयाइक्खुवरुये वीरणातहइक्कडरुयमासेय । सुंठेसरेयवेत्ते तिमिरेसतपोरगणले ॥ १ ॥ वंसेवेलूकणए कंका वंसेयववंसेय । उदएकुरुणविमए कंडावेलूयकल्लाणे ॥ २ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्तं पव्वगा ॥ से किंतं तणा ? तणा अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—सेडियगंतियहोत्तिय दब्भकुसेपव्वएयपोरइला । अज्जुणअसाढए रो हियंसिसुयवेयखीरनुसे ॥ १ ॥ एरंडेकुरुविंदे करकरसुंठेतहाविभंगूय । मधुरतणछुरयसिप्पिय वोधव्वे सुक्कलितणेय ॥ २ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्तं तणा ॥ से किंतवलया २ अणेगविहा पण्णत्ता , तंजहा—ताले



करेला सुभगा कुबधा वागला पवको तिमज दवदाली ॥ २ ॥ अपोक अतिमुक्ता नागरवल कृष्णवल्ली सघषे समनसा जासुपर्ण कुविंदवल्ली ॥ ३ ॥ मुद्रि का अंबा विराली जयती गोपाली वाणी मामावल्ली गुंजावल्ली वत्थाणी ॥ ४ ॥ सेसवती दुर्गावा फरसी गिरिकर्णी मालुका अंजना दृही फोलिका कां गणी मोगरी तिम अक्काबोंदी ॥ ५ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्तंवल्लीओ । जे अन्य पिण तथा प्रकारना तेवल्लीकहिये एतलेवल्लीकही ॥ सेकिंतं पव्वगा २ अणेगविहा प० तं०—तेकुण पर्वग पर्वग अनेक प्रकारनाकह्या तेकहैछे—सेलडी इक्षुवाटिका वीरणी इकड मासी सूंठ तमरिस पोरगण वांस सेच्छक णा ककावंसी वाववंसी उदक कुठक विभुक वांठवेल कल्याणी ॥ १ ॥ जेया० । जेएहवा अनेरा पिण तें पर्वग कहिये । सेत्तं पव्वगा । एतले पर्वग कह्या ॥ सेकिंतं तणा तणा अणेगविहा प० तं० । तेकुण तृण तृण अनेकप्रकारना कह्या ते कहैछे । सेठियगंति ॥ सेटित भृतिका होतिक डाभ कुश पर्वग पोटल अर्जुन आषाढ रोहिस सुयबक खीरभुस ॥ १ ॥ एरड कुरुविंद करकच सूंठ विभंगू मधुरतृण छुरक शिप्पव मुक्कतृण ॥ २ ॥ जेया० । अन्यपिण एहवा ते

मानं न विरुध्यते, साम्प्रतमुक्तानुक्तार्थसङ्ग्रहार्थमिदमाह-नाणाविहेत्यादि ॥ नानाविधं नानाप्रकारं संस्थानं आकृतिर्येषां तानि नानाविधसं



तमालेतक्कलि, तेयालीसालिसारकल्लाणे । सरलेजावतिकेयइ, कंदलितहपउमरुक्खेय ॥ १ ॥ भुयरुक्खहिं गुरुक्के, लवंगरुक्खेयहोइबोधव्वे । पूयफलीखज्जूरी, बोधव्वानालिएरीय ॥ २ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्तं वलया । से किंतं हरिया ? हरिया अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—अज्जोरुहवोडाणो, हरितगतहतंदुलेज्ज गतणेय । वत्थुलपोरगमज्जा, रपोइवल्लीयपालक्का ॥ १ ॥ दगपिप्पलीयदव्वी सोत्थियसाएतहेवमंडुक्की । मूलगसरिसवअंबिल, साएयजियंतएचेव ॥ २ ॥ तुलसीकण्हउराले फणज्जुएअज्जुणए । चोरगदमण



जे एहवा अनेरा तथाप्रकारना वलणकहिवा देशीभाषायें । सेत्तंवणा । ते तिम वलण कहवा । सेकिंतं वलया २ अणेगविहा पं० तं० । तेशिष्य पूछे कुण व लय भेद, तद गुरु वलयनाभेद अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछै—तांत तमालेतक्कलि तेयलिसालेयसारकल्लाणे सरलेजावइकेयइ कंदलतहधम्मरुक्खेय । १ । तालवृच्च तमालवृच्च तक्कालित सालिका सारकल्याण सरले जावत्ती केतकी कदली तथा धर्मवृच्च । भुयरुक्खेहिंगुरुक्खे लवंगरुक्खेयहोइबोधव्वे पूयफली खज्जूरीबोधव्वा नालिएरीय । २ । भूतवृच्च हींगवृच्च लवङ्गवृच्च एहवेनामे ते जाणिवा पूंगीफल खिज्जूरी जाणिवी नालिकेर । २ । जेयावण्णेतहप्पगारा । एहवा वर्णा तथाप्रकारे अनेरा । सेतंवलया २ सेकिंतं हरिया अणेगविहा पं० तं० । एतले वनस्पतीना वलयानाभेद कह्या ते हिवे हरितनाभेद पूछे शिष्य तद गुरुकहे हरितभेद तिम हेशिष्य हरितभेद अनेकप्रकारे कह्या तेकहेछै—अज्जोरुहवोडाणे हरियंमतहतंदुलिज्जगतणेय वत्थुलपोरगमज्जार पोयव ल्लीयपालयका । १ । अध्योरुह वोडाण हरित तथा तंदुल वृणवच्छत्र पौर मार्जार पोयवल्ली पालंकी । २ । दगपिप्पलिवादव्वी सोत्थीयसएयतहेवमडुकी मूलगसरिसवआंबिले सोयवजियंतिहचेव । १ । दगपीपल दर्वी स्वस्तिका तिमहींज मंडूकी मूलग सरसव आंबिल सोयत जयंती निसे । तुलसीकण्हउ राले फाणिज्जएअज्जुणयभूवणए चोरदगमणगमरुअग सयपुप्फोदेवरेयतहा । २ । तुलसी कृष्ण उदार फाणिज अर्जुन भूर्चन चोरदग मनक रुचक सय

स्थानानि वृक्षाणामिति, वृक्षग्रहणमुपलक्षणं तेन गुच्छगुल्मादीनामपि द्रष्टव्यं, पत्राणि एकजीवका न्येकजीवाधिष्ठितानि वेदितव्यानि, स्कन्धोपि

गमरुयग सतपुप्फिंदीवरेयतहा ॥ ३ ॥ जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्तं हरिया । से किंतं जलरुहा ? जलरुहा अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—सालीवीहीगोधूम जवाकलमसूरतिलमुग्गा । मासणिप्फावकुलत्थ अलिसंदसतीणएलिंघा ॥ १ ॥ अयसीकुसुंभकोद्दव कंगूरालगवरट्टकोद्दूसा । सणसरिसवमूलगबीया जेयावण्णे तहप्पगारा सेत्तं जलरुहा । से किंतं जलरुहा २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा—उदए अवए पणए सेवाले कलंबुया हढे कसेरुया कत्थभाणी उप्पले पउमे कुमुदे णलिणे सुभए सुगंधिए पोंडरीए महापोंडरीए सयवत्ते सह

पुष्फो देवर तिम । जेयावण्णेतहप्पगारा सेतं हरिया । जिके अनेरा तथाप्रकारे ते तिमछै जिम हरितकायभेद कह्या । सेकिंतं ओसहो २ अणेगविहा पं० तं० । ते गिण्य औषधिभेद मूंछै गुरु औषधीभेद अनेकप्रकारे कह्या तिम—सालीवीहीगोहू मज्जवकलमसूरतिलमुग मासनिपावकुलत्था अलीसंदस तीणमलिमंथा । १ । अयसीकुसंभकद्दव कंगूरालगमासकोद्दूसा सणसरिसवबीयातहाचेव । २ । साली व्रीही गोधूम जव कलय मसूर तिमज ति ल मूग उडद झालर कुलत्थ अलसी दयतीण मलिमंथक असालीयो कुसुम्भो कोद्रव कांग राल मास कोद्रव सामण सरिसव मूलाबीज तिमहीज निश्चै । जेयावण्णेतहप्पगारा सेतं ओसहो । जे अनेरा तथा प्रकारै ते औषधीनाम कह्या । सेकिंतं जलरुहा २ अणेगविहा पं० तं० । हिवे ते कुण जलरुहभेद पूछै छै गुरु जलरुहनाभेद अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछै—उदएअवएपणए सेवालेकलम्बुयाहढे सेरुयाकत्थभाणी उप्पलेपउमेकुमुए । १ । उदक मध्य पाण से वाल कलंबुक हेठक सेरुक कच्छभाणी उत्पल पद्म कुमुद । निलिणेसुभएसोगधिए पुंडरीएमहापुंडरीए सयवत्तेसहस्सवत्ते कल्हारेकोकणए । १ । नलिण सुभग सौगंधिक पुण्डरीक महापुण्डरीक शतपत्र सहस्रपत्र कल्हार कोकनद । अरविंदेतामरिसे तिसेतिसमुणालेपुक्खलेपुक्खलच्छिभए । अरविंद ताम रस तिसेतिस मुणाल पुष्कल पुष्कलस्तिभ । १ । जेयावण्णेतहप्पगारा सेतंजलरुहा । जे अनेरा तथाप्रकारे ते सर्व जलरुहनाभेद कह्या ते गिण्य कहै ।

॥ टीका ॥

एकजीव एकजीवाधिष्ठितः किं सर्वेषा मपि ने त्याह-तालसरलनालिकेरीणां तालसरलनालिकेरीग्रहणमुपलक्षणं तेना न्येषा मपि यथागम मेक जीवाधिष्ठितत्वं स्कन्धस्य प्रतिपत्तव्यं, अन्येषां तु स्कन्धाः प्रत्येक मनेकप्रत्येकशरीरजीवात्मका इति सामर्थ्या दवसेयं ॥ खन्धाविअणेगजीविया इति पूर्वमभिधानात्' अथ यदि प्रत्येकमनेकशरीरजीवाधिष्ठिता स्ततः कथ मेकखण्डशरीराकारा उपलभ्यन्ते इति, तदऽवस्थानस्वरूपमाह-जहसगले त्यादि ॥ यथा सकलसर्षपाणां श्लेष्ममिश्राणां श्लेष्मद्रव्यविमिश्रितानां वलितावर्त्तिरेकरूपा भवति, अथ ते सकलसर्षपाः परिपूर्णशरीराः सन्तः पृथक् स्वस्वावगाहनया तिष्ठन्ति तथा नया एवो पमया प्रत्येकशरीरिणां जीवानां शरीरसङ्घाताः पृथक् स्वस्वावगाहना भवन्ति, इति इह जीवा

॥ मूल ॥

रसवत्ते कलहारे कोकणदे अरविंदे तामरसे निमे निसमुणालो पोक्कले पोक्कलच्छिल्लए जेयावन्ने तहप्प गारा सेत्तं जलरुहा। से किंतं कुहणा ? कुहणा अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—आए काए कुहणे कुणक्के दद्दहलिया अफाए सज्जाए छत्तोए वंसीणहिया कुरए १ जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं कुहणा। णाणाविहसं ठाणा रुक्खाणंएगजीवियापन्ना। खंधोविएगजीवो तालसरलनालिएरीणं ॥ १ ॥ जहसगलसरिसवाणं सिलेस

॥ भाषा ॥

सेकिंतं कुणहा २ अणेगविहा पं० तं०। कुण गुरुकहे ते अनेकप्रकारे कहेछे, कुणहानामा वनस्पतीनाभेदछेतिके गुरु भिन्न कहेछे जुदो। आएकाएकुहणे क कणक्केदद्दहलिया सपभाएसेत्ताए छत्तोएवंसीणहियाकुहरए। आय काय कुहण कुणक द्रद्यहलिका सप्रभ सेत्ताक छत्रोक वंसीणहित कुहरकनामा। जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्तं कुणहा। जे अनेरा तथाप्रकारे सर्व कुहण कहिये। णाणाविहसठाणारुक्खाणं एगजीविया पन्नत्ता। नानाप्रकारे संस्थान अ नेकआकारे वृक्षादिकना सर्वपत्रादि एकजीवछे तेकह्या—खंधोविएगजीवो तालसरलनालिएरीणं जहसगलसरिसवाणं सिलेसमिस्साएवट्टियावट्टी। ख न्ध पिण एकजीवछे ताल खजूरी नालेरी सदेहटालवा गाथा कहेछे, जिम सकल सरसव श्लेष्म द्रव्य चीकणोद्रव्य तेणे मिश्रकीधा एकठाथाय जिम। परेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया जहवातिलपप्पडिया बहुएहिंतिलेहिंसंघयामंती। प्रत्येक शरीरप्रतें तिमहुवे शरीरसंघात एकठाछे जिम तिलपा

॥ टीका ॥

धिकारे श्लेष्मद्रव्यस्थानीये रागद्वेषोपचितं तथाविधं कर्म सकलसर्षपस्थानीयाः प्रत्येकशरीराः सकलसर्षपग्रहणं सर्षपवैविक्त्यप्रतिपत्त्या पृथक् स्व स्वावगाहकप्रत्येकशरीरवैविक्त्यप्रतिपत्त्यर्थं, अत्रैव दृष्टान्तान्तर माह-जहवेत्यादि ॥ वाशब्दो दृष्टान्तान्तरसूचने यथा तिलशष्कुलिका तिलप्रधाना पिष्टमयी अपूपिका बहुषु स्तिलेषु मिश्रिता सती यथा पृथक् २ स्वस्वावगाहतिलात्मिका भवति, कथञ्चिदेकरूपा च, तथा अनयैवोपमया प्रत्येकशरीरिणां जीवानां शरीरसङ्घाताः कथञ्चिदेकरूपाः पृथक् स्वस्वावगाहना श्च भवन्ति, उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ युग्मं ॥ स प्रकृतः साधारणवनस्पतिकायिकप्रतिपादनायेमाह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते साधारणशरीरबादरवनस्पतिकायिका अनेकविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-अव एत्यादि ॥ एतेच केचिदतिप्रसिद्धत्वा त्केचि द्देशविशेषतः स्वय मेव ज्ञातव्याः ॥ जेयावन्नेतहाविहाइति ॥ ये पि चा न्ये उक्तव्यतिरिक्ता स्तथा प्रका

मिस्साणवट्टियावट्टा । पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया ॥ २ ॥ जहवातिलपप्पडिया बहुएहिंतिलेहिं संहतासंती । पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया ॥ ३ ॥ सेत्तं पत्तेयसरीरबादरवणप्फइकाइया । से किंतं साहारणसरीरबादरवणस्सइकाइया ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा-अवए पणए सेवाले लोहिणी निहू त्थिन्नगा अस्सकण्णी सिंहकण्णी सिउंढातत्तोमुसंढीय ॥ १ ॥ रुरुकुरुहरियाजारु, ठीरविरालीतहेवकिट्टीया ।

॥ मूल ॥

पडी बहुततिला एकठयाये थाकेहवे । पत्तेयसरीराणं तहहोंतिसरीरसंघाया सेत्तपत्तेअसरीर बायरवणस्सइकाई । प्रत्येकशरीर तिमहुवे शरीरसंघात भेलो एतले तिम प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकायना भेदकह्या । सेकिंतं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया २ अणेगविहा पं० तं० । ते हिवे साधारण शरीर वनस्पतीनाभेद केतला, तद गुरुकहे साधारणशरीर बादरवनस्पतीना अनेकभेद कह्या ते कहेछे—अवएपणएसेवाले लोहिणीमिहूणीहच्छिभंगा असोकण्णिसीहकण्णी सिउंढितत्तोमुसंढीय रुरुकुडरिया । अवक पनक सेवाल लोहिणी मिथुनी हच्छिभंगाअश्वकर्णी सिंहकर्णी सजाढितमूकन्द मुसंढ रु रुकन्द कुन्दरी । जीरुवीरविरालो तहेवकिट्टीयवहालिद्दसिंगबेरे आउलउयामूलएकंदू कसुकंदमूमहुआपावल्लईएतहेव । जीरो वीरविरालो तिमहोज को

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

हलिद्दासिंगवेरेय, आलुग्गमूलएइ यकंदूय कणकंदूमज्जपोगलईतहेव मज्जसिंगी विरुहा सप्पसुगंधा छिन्नरुहा चेव बायरुहा पाढामिंयबालुंकी मज्जररसा चेव रायवल्ली य पउमा य माढरी दंति वंढिकिंहाति यावरामासपर्णी मुग्गपर्णि जीवियरिसके य रेणुया चेव काउली खीरकाउली तया नंगीणहाईयाकिमिरा सिन्नद्दमुत्थाणंगलईपेलुगाईय किरहे पउले य हढेहरतणुया चेव लोयाणी करहकंदेवज्जे सूरणकंदे तहेव खल्लूडे एए अणंतजीवा जेयावन्ने तहाविहा॥ तणमूलकंदमूलो बंसीमूलित्तियावरे। संखेज्ज मसंखिज्जा बोध व्वाअणंतजीवाय॥१॥ सिंघाडगस्सगुच्छो अणेगजीवोउ होंति णायव्वो। पत्ता पत्तेयजिया दोणियजीवाउ फले

॥ भाषा ॥

टी० हालिद्र शृङ्गबेर आलू रक्तालू मूलो कंबू कृष्णकन्द मधुश्रृंगो पोलेव तिमहोज। सुहसिंगोविरुहा सप्पसुगंधाछिन्नरुहाचेव वीयरुहापाढामिय वालूकोम इररसंचेव। मधुसिंगी विरुढी सर्पनीखन्यो छिन्नरुहा निश्चै बीजरुहा पाढारुहा मितबालुका मधुररस निश्चै। रायवल्लीयपउमाव माढदंताचडोकि ढिक्तियेवराए मासपर्णिमुग्गपर्णी जीविवरसहेवरेणुयाचेव। रायबेल पद्मा नाढरी दांती चण्डी किट्टिभक्तिभरा माषपर्णी मुद्गपर्णी जीविकरसभ रेणुका निश्चै। काओलिखीरकाउली तहभंगीचेवनिहीएय किमरासिभद्दमुच्छाण गुलईएगिलोयपिलगए। काउली खीरकाउली तह तिम भंग निश्चै क्रमरा शि भद्रमोथ गुली गिलोय वलुका। किसेपउलेहडे हरतचुयाचेवलोयहणीकण्हे कंदेवज्जिसूरण कंदेतहेवखल्लूरे। कृष्णपटोल हडकन्द हरतंतु निश्चै लोया णी कृष्णकन्द वज्रकन्द सूरणकन्द तिमहोज खिलोडा। ए अणंतजीवा जेयावन्नेतहाविहाणं। इणां कन्दामांहि अनन्तजीवछे जे एहवा अनेराहोज तथा प्रकारना। तणमूलकंदमूले बंसीमूलेत्तियावरे संखिज्जामसंखिज्जा बोधव्वाणंतजीवाय। तृणमूल कन्दमूल वंशीमूल इणामांहि संख्याता असंख्याता जांणिवा अनन्ताजीव। सिंघाडगस्सगुच्छो अणेगजीवोउहोइणायव्वो पत्तापत्तेयजिवा दोणियजीवाफलेभणिया। सिंघोडानो जे गुच्छहुवे तेहमांहि अनेक जीव जांणिवा हुवे पातडे २ प्रत्येके बेबे जीवहुवे फलमांहि कह्या। जस्समूलस्सभंगस्स समोभंगोयदीसई अणंतजीवेउसेमूले जेवावन्नेतहाविहा १॥

रा उक्तप्रकारा स्तेप्य नन्तजीवा ज्ञातव्याः ॥ तणेत्यादि ॥ तृणमूलं कन्दमूलंच ज्ञा परं वंशीमूलं एतेषां मध्ये क्वचि ज्जातिभेदतो देशभेदतो वासङ्ख्या ता जीवाः क्वचिदसङ्ख्याताः क्वचि दनन्ता श्च ज्ञातव्याः ॥ सिंघाडगस्सेत्यादि ॥ शृङ्गाटकस्य यो गुच्छः सो ऽनेकजीवो भवति ज्ञातव्यः' त्वक्शाखादी नामनेकजीवात्मकत्वात् केवलं तत्रापि यानि पत्राणि तानि प्रत्येकजीवानि फले पुनः प्रत्येकमेकैकस्मिन् द्वौ २ जीवौ भणितौ ॥ जस्समूलस्सेत्यादि ॥ यस्यमूलस्य भग्नस्य सतः समएकान्तरूप श्चक्राकारो भङ्गः प्रकर्षेण दृश्यते तन्मूलमनन्तजीवमवसेयं ॥ जेयावन्नेतहाइति ॥ यान्य ऽपि चान्यानि



भणिया ॥२॥ जस्समूलस्सभग्गस्स समोभंगोयदीसए । अणंतजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा ॥१॥ जस्सकंदस्स भग्गस्स समोभंगोयदीसई । अणंतजीवेउसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सभग्गस्स समोभंगोय दीसई । अणंतजीवेउसेखंधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएभग्गाए समोभंगोयदीसई । अणंतजीवा तयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सभग्गस्स समोभंगोपदीसई अणंतजीवेउससाले जेयावन्ने तहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सभग्गस्स समोभंगोपदीसई । अणंतजीवेपवालेसे जेयावन्नातहाविहा ६ ॥



हिवे साधारण प्रत्येकरो लक्षण हुवे जिणमूलभागे थके समोभंग दीसे ते मूल अनन्तजीव ते जांणिवो जे वली अनेरा तथाप्रकारे इम १० । जस्सकंदस्स मूलस्स समोभंगोयदीसइ अणंतजीवेसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ११ । जिण कन्दमूल समोभंग चक्राकार दीसे ते कन्दमें अनन्तजीव हुवे ते कन्दनेविषे जे अनेरा तथाप्रकारना तेकन्द जांणिवा । जस्सखधस्सभंगस्ससमोभं० अणंतजीवेसेखधे जेयावन्नेतहाविहा । जिण स्कन्धभागे थके समोभाजतो भंगदीसे ते स्कन्ध अनन्तजीव मिश्रहुवे इम स्कन्ध जिके अनेराप्रकारना जांणिवा । जोसेतइयाएभागाएसमोभं० अणंतजीवतयासाओ जेयावन्नेतहाविहा । जिण नो त्वचा भागेथके भाजता समोभंग दीसे ते त्वचा अनन्तजीवने हुवे एहवी अनेरीत्वचा जांणिवी तथाप्रकारे । जस्ससालस्सभंगस्स समोभं० अणंतजीवेउ सेसाले जेयावन्नेतहाविहा । जेह प्रवालटीसी भागेथकै समोभंग दीसे ते प्रवाल अनन्तजीव दीसै जे एहवा अनेरा तथाप्रकारे । जस्सपवालस्सभंगस्स स

॥ टीका ॥

अभग्नानि तथाप्रकाराणि अधिकृतमूलभग्नसमप्रकाराणि तान्यप्यनन्तजीवानि ज्ञातव्यानि, एवं कन्दस्कन्धत्वक्शाखाप्रवालपत्रपुष्पफलबीजविषया अपि नव व्याख्येयाः । सम्प्रति प्रत्येकशरीरलक्षणाभिधानार्थं गाथादशकमाह-जस्सेत्यादि॥ यस्य मूलस्याभग्नस्य सतो जङ्घे जङ्घाप्रदेशे हीरो

॥ मूल ॥

जस्सपत्तस्सभग्गस्स समोभंगोपदीसई । अणंतजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७॥ जस्सपुप्फस्सभग्गस्स समोभंगोपदीसई । अणंतजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सभग्गस्स समोभंगोपदीसई। अणंतजीवेफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९॥ जस्सबीयस्सभग्गस्स समोभंगोपदीसई । अणंतजीवेउसेबीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सभग्गस्स हीरोभंगोपदीसई । परित्तजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा १ जस्सकंदस्सभग्गस्स हीरोभंगोपदीसई । परित्तजीवेउसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सभग्गस्स

॥ भाषा ॥

भंभगा० अणतजीवपवालेसे जेयावण्णेतहाविहा । जे सालभागेथके समोभंग दीसै तेसाल अनन्तजीवमे हुवे जे एहवा अनेरा तथाप्रकारे । जस्सपत्तस्स भंगस्स समोभं० अणंतजीवेसेपत्त जेयावण्णेतहाविहा । जिण पातडै भांगतांथका समोभंग दीसै ते पत्र अनन्तजीव हुवे जे अनेरा पिण तिणप्रकारे जांणिवा । जस्सपुप्फस्सभंगस्स समोभंगोयदीसई अणंतजीवेउसेपुप्फे जेयावण्णेतहाविहा । जिण फूललागेथके समोभंगहुवे दीसै ते अनन्तजीव हुवे फूल जे अनेरा तथाप्रकारे । जस्सफलस्सभंगस्स समोभं० अणंतजीवेउफलेसेण जेयावण्णेतहाविहा । जिणफल भांगतेथके समोभंग दीसै ते फल अनन्तजीवमे हुवे जे एहवा तथाप्रकारे । जस्सबीयस्सभंगस्स समोभं० अणंतजीवेउसेबीए जेयावण्णेतहाविहा । जे बीज भागेथके समोभंग दीसै ते अनन्तजीव बीज अनेराप्रकारे तथाविधे हुवे । जस्समूलस्सभगस्स हीरोभगोउदीसए परित्तजीवेउसेमूले जेयावण्णेतहाविहा । जेमूल भागेथके विषमभंग दीसै तेमूल प्रत्येक जीवसहित कहिये जे अनेरा तथाप्रकारे । जस्सकंदस्सभंगस्स हीरोभंगोउदीसए परित्तजीवेउसेकंदे जेयावण्णेतहाविहा । जे कन्दभागेथके विषमभंग दीसै ते कन्दमांहि प्रत्येक जीवमांहि हुवे जे अनेरा तथाप्रकारे । जस्सकंदस्सभंगस्स हीरोभं० परित्तजीवेउसेखंधे जेयावण्णेतहाविहा । जे

॥ टीका ॥

विषमच्छेदमुद्दन्तरं वा प्रदृश्यते प्रकर्षेण स्पष्टरूपतया लक्ष्यते ततो मूलं परित्तजीवं प्रत्येकशरीरजीवात्मकं ज्ञातव्यं ॥ जेयावन्नेतहाविहाहति ॥ या न्य पि चा न्यानि अग्रग्नानि तथाप्रकाराणि अधिकृतसहीरभग्नमूलसदृशानि मूलानि ता न्यपि प्रत्येकशरीरजीवात्मकानि मन्तव्यानि एवं कन्दा दिविषया अपि नव गाथा भावनीयाः, यत्र कुत्रापि लिङ्गव्यत्ययः स प्राकृतलक्षणाद ऽवसेयः, अधुना मूलादिगतानां वल्कलरूपाणां छल्लीनामन न्तजीवत्वपरिज्ञानार्थंलक्षण माह-जस्समूलस्सेत्यादिगाथाचतुष्टयं ॥ यस्य मूलस्य काष्ठात् मध्यसारात् छल्लीवल्कलरूपा बहलतरा भवति सा अनन्त जीवा ज्ञातव्या ॥ जेयावन्नहत्ति ॥ यापि चा न्या अधिकृतया अनन्तजीवत्वेन निश्चितया समानरूपा छल्ली सापि तथाविधा अनन्तजीवात्मका ज्ञात

॥ मूल ॥

हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीउसेखंधे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ३ ॥ जस्सतयाएभग्गाए हीरोभंगेपदीसई । परि त्तजीवातयासाउ जेयावन्नातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्ससालस्सभग्गस्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेसाले जेयावन्नेतहाविहा ॥ ५ ॥ जस्सपवालस्सभग्गस्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेपवालेऊ जेयावन्तेतहाविहा ६ ॥ जस्सपत्तस्सभग्गस्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा ॥ ७ ॥ जस्सपुप्फस्सभग्ग

॥ भाषा ॥

खबभाजेथके विषमभंग दीसै ते खन्ध प्रत्येकशरीरे कहिये एहवा जे अनेरा तथाप्रकारे ते पिण जांणिवा। जीसेतइयाएभंगाए हीरोभंगो॰ परित्तजीवी तयासाओ जेयावन्नेतहाविहा । जेहनी त्वचा भाजतांथका विषमभंगदीसै त्वचा प्रत्येकजीवमें कहिये एहवा जे अनेरा ते पिण इम जांणवा । जस्ससा लस्सभंगस्स हीरोभंगो॰ परित्तजीवेउसेसाले जेयावन्नेतहाविहा । जे सालभाजेथके विषमभंग दीसै ते साल प्रत्येक जीवमें हुवे जे एहवा अनेरा पिण इ महीज जांणिवा तिणप्रकारे । जस्ससालस्सभंगस्स हीरोभंगो॰ परित्तजीवेपवालेसे जेयावन्नेतहाविहा । जे साल भांगेथके विषमभंग दीसै तेसाल प्रत्येक जीवमें हुवे एहवा ज अनेरा ते पिण इमहीज जांणवा । जस्सपत्तस्सभंगस्स समोभंगोयदीसई अणंतजीवेसेपत्ते जेयावन्नेतहाविहा । जेपत्र भांगतांथकां समोभंग दीसै तेपत्र अनन्तजीवमें हुवे जे अनेरापिण इमहीज जांणिवा । जस्सपुप्फस्सभंगस्स समोभंगोयदीसई अणंतजीवेउसेपुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ।

॥ टीका ॥

व्या, एवं कन्दस्कन्धशाखाविषया अपि तिस्रो गाथाः परिभावनीयाः' अधुना तासामेव वल्लीनां प्रत्येकजीवत्वपरिज्ञानाय लक्षणमाह-जस्समू लस्सेत्यादि ॥ गाथाचतुष्टयं यस्य मूलस्य काष्ठात् मध्यसारात् वल्ली वल्कलरूपा तनुतरात्रवति सा परित्तजीवा प्रत्येकशरीरजीवात्मिका द्रष्टव्या, जेयावन्नेतहाइति ॥ या पि चान्या अधिकृतया प्रत्येकशरीरजीवात्मकत्वेन निश्चितया वल्ल्या समानरूपा वल्ली सा पि तथाविधा प्रत्येकशरीर जीवात्मिका अवगन्तव्या, एवं कन्दादिविषया अपि तिस्रो गाथा भावनीयाः, यदुक्तं-जस्समूलस्सजङ्गस्ससमोजङ्गोपदीसई ॥ इत्यादि तदेव लक्षणं

॥ मूल ॥

रुस हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसेवुप्फे जेयावन्नेतहाविहा ॥ ८ ॥ जस्सफलस्सभंगस्स हीरोभंगेपदीस ई । परित्तजीवेफलेसेउ जेयावन्नेतहाविहा ॥ ९ ॥ जस्सबीयस्सभंगस्स हीरोभंगेपदीसई । परित्तजीवेउसे बीए जेयावन्नेतहाविहा ॥ १० ॥ जस्समूलस्सकठाउ वल्लीवहलतरीभवे । अणंतजीवाउसावल्ली जायाव न्नातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाउ वल्लीवहलतरीभवे । अणंतजीवाउसावल्ली जायावन्नातहाविहा २ ॥

॥ भाषा ॥

जे फूल भांगताथका समोभंगदीसै ते फूल अनन्तजीवमय हुवे ते अनेरा नानाप्रकारे ते पिण जांणिवा । जस्सफलस्सभंगस्स समोभंगोयदीसइ अणंतजीवे उमूलेसे जेयावन्नेतहाविहा । जे फल भांजतेथके समोभंगदीसै ते फल अनन्तजीवमें हुवे जे एहवा अनेरा तथा नानाप्रकारे इम जांणिवा । जस्सबीयस्स भंगस्स समोभंगोयदीसइ अणंतजीवेउसेबीए जेयावन्नेतहाविहा । जे बीजभांगताथका समोभंग दीसै तेबीज अनेरा नानाप्रकारना तेपिण इमहीज जांणिवा । जस्समूलस्सभंगस्स हीरोभंगोउदीसए परित्तजीवेउसेमूले जेयावन्नेतहाविहा । हिवे मूलभांगेथका विषमभंग दीसै ते मूल प्रत्येकजीव सहि त कहिये अनेरा तथाप्रकारना तेपिण इम जांणिवा । जस्सकंदस्सभगस्स हीरोभंगोउदीसए परित्तजीवेउसेकंदे जेयावन्नेतहाविहा । जे कन्दभांजेथके विषमभंग दीसै तेकन्दमांहि प्रत्येकजीव हुवे जे अनेरा तथाप्रकारना ते पिण इम जांणिवा । जस्सखंधस्सभंगस्स हीरोभंगो० परित्तजीवेउसेखंधे जेया वन्नेतहाविहा । जे खन्धभाजेथकं विषमभंगदीसै ते स्कन्ध प्रत्येकशरीर कहिये एहवा अनेरा तथाप्रकारना ते पिण इम जांणिवा । जीसेतइयाएभंगाए

स्पष्टं प्रतिपिपादयिषुरिदमाह-चक्कागमित्यादि ॥ चक्रकं चक्राकारमेकान्तेन समं भङ्गस्थानं यस्य भज्यमानस्य मूलकन्दस्कन्धत्वक्शाखापत्रपुष्पादे र्भवति तत् मूलादिकम नन्तजीवं विजानीहि इति सम्बन्धः, तथागंठीचुण्णघणोभवेइतिग्रथिः' पर्वसामान्यतो भङ्गस्थानं वा स यस्य भज्यमानस्य चूर्णेन रजसा घनो व्याप्तो भवति अथवा यस्य पत्रादे र्भज्यमानस्य चक्राकारं भङ्ग रजसा ग्रन्थिस्थाने व्याप्तं च विना पृथिवीसदृशेन भेदेन भङ्गस्था

जस्सखंधस्सकठाउं छल्लीबहलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायावण्णातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइक ठाउं छल्लीबहलतरीभवे । अणंतजीवाउसाछल्ली जायावण्णातहाविहा ॥ ४ ॥ जस्समूलस्सकठाउं छल्लीतणु यरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायावण्णातहाविहा ॥ १ ॥ जस्सकंदस्सकठाउं छल्लीतणुयरीभवे । परित्त

दोरो० परित्तजीवोतयासाओ जेयावण्णेतहाविहा । जेहनो त्वचाभांगता विषमभंगदोसै त्वचा प्रत्येकजीवमें कहिये एहवा जे अनेरा पिण इमहीज जांणिवा । जस्ससालस्सभंगस्स दोरोभं० परित्तजीवेउसेसाले जेयावण्णेतहाविहा । जेसाल भांजेथके विषमभंग दोसै ते साल प्रत्येकजीवमे हुवे जे एह वा अनेरा तेपिण इमहीज जांणवा । जस्सपवालस्सभंगस्स दोरोभं० परित्तजीवेपवालेसे जेयावण्णेतहाविहा । जे प्रवालभागेथके विषमभंग दोसै ते प्रवाल प्रत्येकजीवमें कहिये जे अनेरा तथाप्रकारे इमहीज जांणिवा । जस्सपत्तस्सभंगस्स दोरोभंगोयदोसई परित्तजीवेउसेपत्तेजेयावण्णेतहाविहा । जे प च भांगेथके विषमभंग दोसै ते पच प्रत्येकजीवमें हुवे एहवा जे अनेरा ते पिण इमहीज जांणिवा । जस्स पुप्फस्सभंगस्स दोरोभं० परित्तजीवेउसेपुप्फे जे यावण्णेतहाविहा । जे फूल भांगेथके विषमभंग दोसै ते फल प्रत्येकशरीरमे कहिये जे एहवा पिण तिमहीज जांणिवा । जस्सफलस्सभंगस्स दोरोभंगो० परित्तजीवफलेसेउ जेयावण्णेतहाविहा । जे फल भांगताथका विषमभंग दोसै प्रत्येकफल कहीजे जे अनेरा पिण तथाप्रकारे जांणिवा इमहीज । जस्स बीयस्सभंगस्स दोरोभं० परित्तजीवेउसेबीए जेयावण्णेतहाविहा । जेबीज भांगताथकां विषमभंग दोसै ते बीज प्रत्येकशरीरमें कहीजे एहवा अनेरा पिण तथाप्रकारे जांणवा । जस्समूलकठाओ छल्लीबहलतरीभवे अणंतजीवाउसाछल्ली जेयावण्णेतहाविहा । जे मूलनो काठनोमांहिलो गर्भदल थोडो अने बा

॥ मूल ॥

जीवाउसाछल्ली जायावसातहाविहा ॥ २ ॥ जस्सखंधस्सकठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायावसातहाविहा ॥ ३ ॥ जस्ससालाइकठाउ छल्लीतणुयरीभवे । परित्तजीवाउसाछल्ली जायावसातहाविहा ॥ ४ ॥ चक्कागंभज्जमाणस्स गंठीचुसघणोभवे । पुढवीसरिसएणभेदेण अणंतजीवंवियाणाहि ॥ १ ॥

॥ भाषा ॥

हिरलो छाल जाडोहुवे ते छालिमांहि अनन्ताजीव छाल बहुतजाडोहुवे अनन्तजीवमें हुवे इम अनेरा तथाप्रकारे पिण कहवा। जस्सकंदस्सकठाओ छल्लीबहलतरीभवे अणंतजीवाउसाछल्ली जेयावसंतहाविहा। जेकन्दनो काष्टनोछ ल जांडोहुवे तेहने अनन्तजीव हुवे जेवलो अनेरा तथाप्रकारे तेपिण इमहीज कहवा। जस्सकंदस्सकठाओ छल्लीबहलतरीभवे अणंतजीवाउसाछल्ली जेयावसंतहाविहा। जे कन्द काष्टछालजाडो हुवे ते छालमें अनन्ता जीवहुवे जे छली अनेरा तथाप्रकारे इमहीज जांणिवा। जिसेसालाएकठाओ छल्लीबहलतरीभवे अणंतजीवाउसाछल्ली जेयावसंतहाविहा। जे सालना काष्टनो छाल जाडोहुवे बांकुलारूप हुवे ते छाला अनन्यजीवमें कहिये तथाप्रकारे। जोसेसालाएकठाओ छल्लीबहलतरीभवे अणंतजीवाउसाछल्ली जेया वसंतहाविहा। जेसालकाष्टमें छालजाडोहुवे तेसालमें अनन्ताजीव कहिये एहवा अनेरा पिण इमहीज जांणिवा। जस्समूलस्सकठाओ छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाछल्ली जेयाव०। जेमूलना काष्टनोदल घणों हुवे बाहिरलो छाल पातलो हुवे ते प्रत्येकरूप जांणिवो जे एहवा अनेरा पिण इमहीज जांणिवा। जस्सकंदस्सकठाओ छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाछल्ली जेयाव०। जेकन्दना काष्टनोछाल पातलोहुवे ते छाल प्रत्येकशरीरमें कहिये ए हना अनेरा पिण इमहीज। जस्सखंधस्सकठाओ छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाछल्ली जेयावसंतहाविहा। जे स्कन्ध काष्टनोछाल प्रत्येकशरीरमें क हिये एहवा अनेरा पिण इमहीज। जिसेसालाएकठाओ छल्लीतणुयरीभवे परित्तजीवाउसाछल्ली जेयाव०। जे सालना काष्टनोछाल पातलोहुवे तेछा ल प्रत्येकजीवमें कहिये एहवा जे अनेरा पिण इमहीज। चक्कागंभज्जमाणस्स गंठीचुसघणोभवे पुढवीसरिसेणभेएण अणंतजीवंवियाणाहि। जे भांजनेथ के चक्राकार हुवे समोकंदस्थानकमूल कन्दादिक हुवे जे गांठभांजते चूर्णघित हुवे पृथिवीनोपरे पंच वर्णभेदे रंगहुवे ते पिण्ड अनन्तजीवमें हुवे ते फूल

॥ टीका ॥

नं भवति सूर्यकरनिकरप्रतप्तकेदारतरिकाप्रतरखंडस्य व समो भङ्गो भवतीति भावस्तमनन्तकायं विजानीहि ॥ पुनरपि लक्षणान्तरमाह-गूढसि रागमित्यादि ॥ यत्पत्रं सक्षीरं निःक्षीरम्वा गूढसिराकमलक्ष्यमाणशिराविशेषं यदपि च प्रनष्टसन्धिः सर्वथा मुपलक्ष्यमाणपत्रार्द्धद्वयसंधि तदऽनन्त जीवं विजानीहि, सम्प्रतिपुष्पादिगतं विशेषमभिधित्सु राह-पुष्पानि चतुर्विधानि तद्यथा-जलजानि सहस्रपत्रादीनि स्थलजानि कोरण्टकादीनि एतान्यपिच प्रत्येकं द्विधा तद्यथा-कानिचित् वृन्तबद्धानि अतिमुक्तकप्रभृतीनि कानिचिन्नालबद्धानि जातिपुष्पप्रभृतीनि अत्रै तेषां मध्ये कानिचि

॥ मूल ॥

गूढसिरागंपत्तं सच्छीरंजंचहोइनिच्छीरं। जंपियपणट्ठसंधिं अणंतजीवंवियाणाहि ॥ २ ॥ पुप्फाजलयाथलया बिंटबद्धायणालिबद्धाय। संखिज्जमसंखेज्जा बोधव्वाणंतजीवाय ॥ ३ ॥ जेकेइनालियाबद्धा पुप्फासंखेज्जजी विया। पिंकुयाअणंतजीवा जेयावन्नेतहाविहा ॥ ४ ॥ पउमुप्पलिणीकंदे अंतरकंदेतहेवजिल्ली य। एते

॥ भाषा ॥

फल पत्रनो। गूढसिरागंपत्तं सच्छीरंजंचहोयनिच्छीरं जंपियपणट्ठसंधि अणंतजीवंवियाणाहिं। गूढ सिरगंधि दीसेनही क्षीरसहित हुवे जे क्षीरविना हुवे जेहनी प्रतिष्टा गुप्तसंधिहुवे ए लक्षणेकरी अनन्तकायना जीव जांणिवा, हिवे फूल फलनीसंख्यालक्षण कहेछे—पुप्फाजलयाथलया बिंटबद्धाय णालबद्धाय संखिज्जामसंखिज्जा बोधव्वाणंतजीवाय। फूल चारभेदहुवे जल कमलादि थलज चंपकादिक एहवा बेभेद हुवे बौटबद्ध चंपकादिक नालब जाईजूई आदिक एहनेविषे संख्याताजीव पिण हुवे असंख्याता पिण हुवे अनन्तजीव पिण जांणिवा। जेकेइनालियाबद्धा पुप्फासंखिज्जजीवियाभणियाड निद्दुयाअणंतजीवा जेयावन्नेतहाविहा। जे केई नालबद्ध जाई जूई आदिक ते फूल संख्यात जीवांतक कह्या वीतरागे स्निग्ध फूलमे अनन्तजीव हुवे ए हवा अनेरा पिण एहवे लक्षणे सर्व जांणिवा। पउमुप्पलिणीकंदे अंतरकंदेतहेवजिल्लि य एएअणंतजीवा एगंजीवंसिसमुणाले। पद्मनीनामकंद उत्पल नामकंद अन्तरकंद जलवनस्पती तिमहीज जाणकार वनस्पती सर्वजीव अनन्ता जांणिवा पद्मनीनेविषे मृणालनेविषे एगजीव। पलंडलहसणकंदेय कंद लोयकुंडए एएपत्तेजीवा जेयावन्नेतहाविहा। पलांडकंद लहसनकंद वनस्पती कुंडवनस्पती निर्विशेष एसर्व प्रत्येकजीवात्मक जांणिवा अनेरा पिण

॥ टीका ॥

त्पत्रादिगतजीवापेक्षया सङ्ख्येयजीवानि कतिचिद सङ्ख्येयजीवानि कानिचिदनन्तजीवानि यथागमं बोद्धव्यानि, अत्रैवकिञ्चिद्विशेषमाह-जेकेइत्यादि ॥ यानि कानिचित् नालिकाबद्धानि पुष्पाणि जात्यादिगतानि तानि सर्वाण्यपि सङ्घातजीवकानि ज्ञातानि तीर्थंकरगणधरैः, स्निहू स्निहूपुष्पं पुनरनन्तजीवं यान्यपिचा न्यानि स्निहूपुष्पकल्पानि तान्य पि तथाविधानि अनन्तजीवात्मकानि ज्ञातव्यानि ॥ पउमुप्पलिनीकंदेत्यादि ॥ पद्मिनी कन्द उत्पलिनीकन्दः अन्तरकन्देजलजवनस्पतिविशेषः कन्दः जिल्लिका वनस्पतिविशेषरूपा, एते सर्वेप्यनन्तजीवा नवरं पद्मिन्यादीनां विशे मृणाले चएकजीवात्मके विसमृणाले इतिभावः ॥ पलंडूइत्यादि ॥ पलण्डुकन्दो लसुनकन्दः कन्दुको वनस्पतिविशेषः, कुस्तुम्बको प्येवमेव एते सर्वे पि परित्तजीवाः प्रत्येकशरीरजीवात्मकाः प्रतिपत्तव्याः, ये पि चा न्ये एवं प्रकारा अनन्तजीवात्मकलक्षणविरहिता स्ते पि तथाविधाः प्रत्येकशरीरजीवात्मका वेदितव्याः, पउमुप्पलेत्यादिगाथाद्वयं ॥ पद्मानां मुत्पलानां नलिनानां सुभगानां सौगन्धिकानां अरविन्दानां कोकनदानां शतपत्राणां सहस्रपत्राणां प्रत्येकं यदुक्तं प्रसवबन्धनं यानि च बाह्यपत्राणि प्रायो हरितरूपाणि पत्रकर्णिका पत्राधारभूता एतानि त्रीण्य प्येकजीवात्मकानि या

॥ मूल ॥

अणंतजीवा एगोजीवोन्निसमुणाले ॥ ५ ॥ पलंडूलहसुणकंदेय कंदलीयकुहुंबए । एएपरित्तजीवा जेयावन्नेतहाविहा ॥ ६ ॥ पउमुप्पलणलिणाणं सुभगसोगंधियाणय । अरविंदकुंकणाणं सतवत्तसहस्सपत्ताणं ॥ ७ ॥ बिंटंबाहिरपत्ता यकम्मियाचेवएगजीवस्स अब्भिंतरगपत्ता पत्तेयंकेसरंमिंजा ॥ ८ ॥ वेणुनलइक्खुवाडिय

॥ भाषा ॥

तथाप्रकारे प्रश्न जाणिवा । पउमउप्पलनलिण सुभगसौगंधियाणय अरविंदकोकणाण सयवत्तसहस्सवत्ताणं । पद्म उत्पल नलिन सुभग सौगंधिक अरविंद कोकण वनस्पतिविशेष शतपत्र सहस्रपत्र । बिटंबाहिरपत्ता यकम्मियाचेवएगजीवस्स अभिंतरगापत्ता पत्तेयंकेसरामिंजा । एहना छत्त वा बाह्यपत्र प्राये रूपसहित कर्णिका ए त्रिणनविषे एकजीवछवे बाह्यपत्र कर्णिकाविषे एकजीव जाणिवो मांहिलोपत्र पांखडी केसरामिजो एतीने प्रत्येकजीवछवे । वेणुनडइक्खुवाडिय मरुमासइक्खुइक्कंडरडे करकचमंठविहिगू वणाणतणपव्वगाणच । वेणुवंश इक्षुवाटिकादि तरु वनस्पती एरंडत्यादि चक्राका

नि पुनरन्यन्तराणि पत्राणि यानि च केसराणि या शमिञ्जफलानि एतानि प्रत्येकमेकैक जीवाधिष्ठितानि ॥ वेणुनलइत्यादिगाथाद्वयं ॥ वेणु वंशो नडः तृणविशेषः इक्षु वाटिप्रादयो लोकतः प्रत्येतव्याः; तृणानि दूर्वादीनि यानि च पर्वगानि पर्वोपेतानि एतेषां यदन्तरं यच्च पर्व यच्च बलिमोडउक्तिपर्वपरिवेष्टनं चक्राकारं एतानि एकजीवस्य सम्बधीनि भवन्ति एकजीवात्मकानि भवन्तीति भावः, पत्राणि एतेषा मेकजीवाधिष्ठानानि पुष्पास्य नेकजीवात्मकानि ॥ पूसफलमित्यादि ॥ पुष्पफलं एवं कालिंगं तुंब त्रपुषं ॥ एलवालुत्ति ॥ चिर्भटविशेषरूपं वालुकं चिर्भटं तथा घोषातकं पटोलं तन्दुकं तिदूस च य त्फलं एतेषु प्रत्येकं वृन्तं समं ॥ संकटाहंति ॥ समासं सगिरं तथा कटाह एतानि त्रीण्येकस्य जीवस्य भवन्ति एकजीवात्मकान्येतानि त्रीणि भवन्तीत्यर्थः, तथा एतेषा मेव पुष्पफलादीनां तन्दुकपर्यन्तानां पत्राणि पृथक् प्रत्येकमिति प्रत्येकशरीराधिष्ठितान्येकैकजीवाधिष्टि

॥ टीका ॥

समासइक्कूयइक्कफेरंडे । करकरसुंठिविहंगु तणाणतहपल्लगाणंच ॥ ९ ॥ अच्छिपत्तंपलिमो हवेयएगस्सहोंतिजीवस्स । पत्तेयंपत्ताइं पुप्फाइंअणेगजीवाइं ॥ १० ॥ पुस्सफलंकालिंगं तुंबंतउसेलुवालुकं । घोसालयं पटोलं तिंदूयंचेवतिंदूसं ॥ ११ ॥ वेंटमंसकडाहं एयाइंहवंतिएगजीवस्स । पत्तेयंपत्ताइं सकेसरमकेसरंमिंजा

॥ मूल ॥

र हुवे ते सर्वजीव एसर्वथा एक जाणिवा । इम हुए तथा पर्वकरी सहित । अच्छि पत्र पलिमो हुअथएगस्सहोंतिजीवस्स पत्तेयपत्ताइं पुप्फयमणेगजीवाइं । अक्षिपत्रं चक्राकार हुवे एहने एकजीव हुवे प्रत्येकपत्र एकजीवाधिष्ठित फूल अनेकजीवाधिष्ठित हुवे । पूसफलंकालिंगं तुंबंतउसेलवालबालुंकं घोसाडयंपटोलं तिंदूयंचेवतेंदूसं । फूलफल कोहलो कालिंगडो तूंबो चिर्भट घोषातक फलविशेष पटोल तिंदुक टिंडसो । विंटमंसकडाहं एयाइंहव तिएगजीवस्स पत्तेयंपत्ताइं सकेसरमकेसरंमिज्जा । सम समास गिरं कटाहं पत्र मिले एकजीवहुवे केशरा अकेशरा एकै जीवादिहुत । सप्फासेसजुत्ताए उव्वेहलियायकुहणकंदुके एएअणंतजीवा कंदुकेहोइभयणाए । संख्यात सज्जातको उव्वेहलिका कुहण कंदुक वनस्पती अनन्तजीवात्मक कंदुकहुवे भजनायें वनस्पतीविशेष एसर्व अनन्तकाय । जोणिभूएबीए जीवोवक्कमइसोविअणोवा जीवियमूलेजीवो सोवियपत्तेयपढमाए । जिवारे जीवयोनि अव

॥ भाषा ॥

तानीत्यर्थः, तथा ऽकेसरा स्सकेसरा वा मिञ्जाबीजानि प्रत्येक मेकैकजीवाधिष्ठितानि ॥ सप्फाएत्यादि ॥ एते कुहनादिवनस्पतिविशेषा लोकतः प्रत्येतव्याः, एते चा नन्तजीवात्मका नवरं कन्दुक्के ऽनेका स हि को पि देशविशेषा दनन्तोऽनंतजीवो भवति को प्य सङ्ख्येयजीवात्मक इति आह-किं बीजजीव एव मूलादिजीवो ऽवति उता ऽन्य स्तस्मि न्ऽपक्रान्ते उत्पद्यते इतिपरप्रश्नमाशंक्याह-बीएजोणिब्भूएइत्यादि ॥ बीजे योनि भूते योन्यवस्थां प्राप्ते योनिपरिणाम मुज्जहती ति भावः, बीजस्य हि द्विविधा ऽवस्था तद्यथा-योन्यवस्था अयोन्यवस्था च तत्र यदा बीजं योन्यवस्थानं जहाति अथचो झितं जन्तुना तदा तत् योनिभूत मित्यभिधीयते, उझित व्व जन्तुना निश्चयतो ना वगन्तुं शक्यते ततो ऽनतिशायिना सम्प्रति सचेतन मचेतनं वा अविध्वस्तयोनि योनिभूत मिति व्यवह्रियते विध्वस्तयोनि तु नियमा दचेतनत्वा दयोनिभूत मिति, अथ योनिरिति किम भिधीयते? उच्यते-जजन्तोरुत्पत्तिस्थान मविध्वस्तशक्तिकं तत्रस्थजीवपरिणमनशक्तिसम्पन्न मितिभावः, तस्मिन् बीजे योनिभूते जीवो व्युत्क्रमति उद्यते स एव पूर्वको बीजजीवो ऽन्यो वा; आगत्य तत्रो त्पद्यते कि मुक्त भवति तदा बीजनिवर्तकेन जीवेन स्वायुषःक्षयात् बीजपरित्यागः कृतो भवति तस्य च बीजस्य पुन रम्बुकालाऽवनिसयोगरूपसामग्रीसम्भव स्तदा कदाचि त्स एव प्राक्तनो बीजजीवो मूलादिनामगोत्र निबध्य तत्रा गत्य परिणमति कदाचि दन्यः पृथिवीकायिकादिजीवः यो पि च मूले जीव इति य एव मूलतया परिणमते जीवः सो पि पत्रे प्रथमतये ति ॥ स एव प्रथमपत्रतया पि च परिणमते इत्येकजीवकर्तृकेमूलप्रथमपत्रे इति आह-यद्येवं ॥ सव्वोविकिसलओखलु उग्गममाणोअणंतजीवोभणिओ ॥

॥ टीका ॥

---

१२ ॥ सप्फाएसज्झाए उच्छेहलियायकुहणकुंदुक्के । एएअणंतजीवा कुंदुक्केहोइनयणाउ ॥ १३ ॥ जोणिब्भूएबीए जीवोवक्कमइसोवअसोवा । जोविअमूलजीवो सोविअपत्तेपढमयाए ॥ १४ ॥ सव्वोविकिसलओखलु उग्गम

॥ मूल ॥

---

स्थितछाडी तिहां तें पूर्वजीव साधारण जीव चवीने अनेजीवसां आवीओ तेपत्रें मूलसाधारण हुवे पछे एकजीव । सव्वोविकिसलओखलु उग्गममाणो अणंतओभणिओ सोचेवविवड्ढंतो होइपरित्तोअणंतोवा । सर्व किसलय निश्चे जगता अनन्ताकाय कहिये तेहीज बढतेथके पछे अन्तर्मुहूर्त्त पछी प्रत्येक

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

इत्यादि वक्ष्यमाणं कथं न विरुध्यते ? उच्यते-इहबीजजीवो ऽन्यो वा बीजमूलत्वेनो त्पद्य तदुत्सूनावस्था क्रुरोति तत स्त ऽदनन्तरं भाविनी किसलयावस्थां नियमतो ऽनन्ताजीवाः कुर्वन्ति पुन श्च तेषु स्थितिक्षया त्परिणतेषु असा वेव मूलजीवो ऽनन्तजीवतनुं स्वशरीरतया परिणमय्य तावद्वृद्धते याव त्प्रथमपत्रमिति न विरोधः' अन्ये तु व्याचख्यन्ते-प्रथमपत्रमि ह या सौ बीजस्य सम्मूर्च्छनावस्था तेन एकजीवकर्तृके मूलप्रथमपत्रे इति किं मुक्तं भवति-मूलसमुच्छूनावस्थे एकजीवकर्तृके एत च्च नियमप्रदर्शनार्थं मुक्तं मूलसमुच्छूनावस्थे एकजीवपरिणामिते एव शेषं तु किशलयादिना ऽवश्यं मूलजीवपरिणामावि र्भावितमिति ततः ॥ सव्वो ऽवि किसलयो खलु उग्गममाणो अणंतजं भणिउ ॥ इत्यादि वक्ष्यमाणमविरुद्धं, मूलसमुच्छूनावस्थानिर्वर्त्तनारम्भकाले किसलयत्वाज्जावा दिति आह-प्रत्येकशरीरवनस्पतिकायिकानां सर्वकालशरीरावस्थामधिकृत्य किं प्रत्येकशरीरत्वमुत कस्मिञ्चदवस्थाविशेषे ऽनन्तजीवत्वमपि सम्भवति, तथा साधारणवनस्पतिकायिकानामपि किं सर्वकालमनन्तजीवत्वमुत कदाचि त्प्रत्येकशरीरत्वमपि भवति ततः आह-सव्वोवि किसलउइत्यादि ॥ इह सर्वशब्दो परिशेषवाची सर्वोपि वनस्पतिकायः प्रत्येकशरीरः साधारण एव किसलयावस्थामुपगतःसन् अनन्तकाय स्तीर्थंकरगणधरै र्भणितः स एव किसलयरूपः अनन्तकायिकः प्रवृद्धिं गच्छन् अनंतो वा भवति परित्तोवा कथं ? उच्यते-यदि साधारणं शरीरं निर्वर्त्त्यते तदसाधारण एव भवति, अथ प्रत्येकशरीरं ततः प्रत्येक इति, कियतः काला दूर्द्धं प्रत्येको भवति ? इति चे दुच्यते-अन्तर्मुहूर्त्तं स्तथाहि निगोदाना मुत्कर्षतो ऽप्यन्तर्मुहूर्त्तं कालं यावत् स्थिति रुक्ता ततो न्तर्मुहूर्त्तं त्परतो विवर्त्तमानः प्रत्येको भवतीति सम्प्रति साधारणलक्षणमाह-समयमित्यादिगाथाद्वयं ॥ समयं युगपद्युत्क्रान्ताना मुत्पन्नानां सतां तेषां साधारणजीवानां समकमेककालं शरीर

॥ मूल ॥

माणोऽणंतजं भणिउ । सोचेवविबद्धंतो होइपरित्तोऽणंतोवा ॥ १५ ॥ समयंवक्कंताणं समयंतेसिंसरीरणि

॥ भाषा ॥

प्रत्येक हुवे साधारण ते साधारण हुवे साधारणजीव तेसमें समकाल जपनैथके । समयंवक्कंताणं समयंतेसिंसरीरनिव्वत्ती समयंआणुग्गहणं समयंऊसास णीसासे । साथयकी तेहना शरीरनी निष्पत्तिहुवे समयकाले सासोच्छास ग्रहण करे समकाले ऊसास नीसास मूकवो करे । इक्कस्सओजेगहणं बहूणि

॥ टीका ॥

निर्वृत्ति र्भवति समकं च प्राणापानग्रहणं प्राणापानयोग्यं पुद्गलोपादानं ततः समक मेककालं तदुत्तरकालभाविना वुच्छ्वासनिश्वासौ तथा एकस्य यदाहारादिपुद्गलानां ग्रहणं तदेव बहूना मपि साधारणजीवाना मवसेयं' किमुक्त भवति यदाहारादिक मेको गृह्णाति शेषा अपि तच्छरीरा श्रिता बहवो पि तदेव गृह्णन्ति तथा च यद्बहूनां ग्रहणं तत्सङ्केपा देकत्रशरीरे समावेशात् एकस्यापि ग्रहणं, सम्प्रत्युक्तार्थोपसंहारमाह-साहार णेत्यादि॥ सर्वेषामप्येकशरीराश्रितानां जीवानामुक्तप्रकारेण यत्साधारणं साधारणसूत्रे नपुंसकतानिर्देशः आर्षत्वा दाहारआहारयोग्यपुद्गलोपादानं यच्च साधारण मानापानयोग्यपुद्गलोपादानं उपलक्षण मेतत् यौ साधारणउच्छ्वासनिश्वासौ या व साधारणशरीरनिर्वृत्ति रेत त्साधारणजीवानां लक्षणं, सम्प्रतियथै कस्मिन् निगोदशरीरे अनन्ता जीवाः परिणताः प्रतीति पथ मवतरन्ति तथा प्रतिपादय नाह-जहअयगोलोइत्यादि॥ यथा-अयोगोलो ध्मातः सन् स तप्ततपनीयसङ्काशं सर्वाग्निपरिणतो भवति तथा निगोदजीवान् जानीहि निगोदरूपे ष्वे कैकस्मिन् शरीरे तच्छरीरात्म

॥ मूल ॥

हुत्ती । समयंआणग्गहणं समयंउस्सासनीसासो ॥ १६ ॥ एक्कस्सउजंगहणं बहूणसाहारणाणतंचेव । जंबहु याणंगहणं समासतंतंपिएगस्स ॥ १७ ॥ साहारणमाहारो साहारणमाणपाणगहणंच । साहारणजीवाणं सा हारणलक्खणंएयं ॥ १८ ॥ जहअयगोलोधंतो जातत्ततवणिज्जसंकासो । सव्वोअगणिपरिणत णिगोयजीवे

॥ भाषा ॥

साहारणाणितंचेव जबहुयाणगहणं समासओतंपिएकस्स । इकलो आजाहार प्रतिग्रहण करै समकालथकै घणां साधारणनो तिमहीज निपजावो घा य व्यो तेहनो घणां आहारादिकग्रहण ते निगोदीयाजीव ते समास एकठो रहिवो किमहुवे सूत्रावनस्पतीने तेहने अनन्तशरीर एककायायें किम र हेछे तिहां जहा अयगोलोधतो एगाथा सुंअर्थ करिवो। साहारणमाणपाणगहणंच साहारणजीवाणं साहारणलक्खणंएयं जहअयगोलोधतो। आहार आश्रयीनो साधारणआहार सर्वजीवमेंछे साधारणछे अनुपान सासोस्वासनो लेवो सर्वजीव साधारण एकठाछे ए साधारणनो लक्षणकह्यो हिवे दृष्टांत कहेछे—जिम लोहनो गोलो धम्योथको थाय तप्त तपनीय रातासोनासरीखो ते सर्व अग्निकरी परिणतहुवे। जाओतत्ततवणिज्जसंकासो सव्वोअग

॥ टीका ॥

कतया अनन्तान् जीवान् जानीहि एव व्यवसति ॥ एगस्सेत्यादि ॥ एकस्य द्वयो त्रयाणां याव त्संख्येयानां वा असंख्यादसंख्येयानां वा निगोदजीवानां शरीराणि द्रष्टुं न शक्यानि कुत इति चे दुच्यते-अजावा नव्ये कादिजीवगृहीतानि अनन्तवनस्पतिशरीराणि सन्ति अनन्तजीवपिण्डात्मकत्वात्तेषां कथं तर्ह्यु पलब्ध्यानीत्यऽत आह-दीसंतीत्यादि ॥ दृश्यन्ते शरीराणि निगोदजीवानां बादरनिगोदजीवानां अनन्तानां ननु सूक्ष्मनिगोदजीवानां तेषां शरीराणा मनन्तजीवसङ्घातात्मकत्वे ऽप्य नुपलब्ध्यस्वभावत्वात्, तथा सूक्ष्मपरिणामपरिणतत्वात्, अथ कथमे तदवसीयते निगोदरूपशरीरं नियमा दनन्तजीवपरिणामाविर्भावितं भवतीति उच्यते ? जिनवचना त्तच्चेद ॥ गोयलाअसंखेज्जा होंतिनिगोया असंखयागोले । एक्केको य निगोउ, अणतजीवो मुणेयव्वो ॥ १ ॥ सम्प्रत्ये तेषा मेव निगोदजीवानां प्रमाणमभिधित्सु राह-लोगागासेत्यादि ॥ एकैकस्मिन् लोकाकाशप्रदेशे एकैकं निगोदजीवं स्थापय एव मेकैकस्मिन् आकाशप्रदेशे एकैकजीवरचनया मीयमाना अनन्तलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा निगोदजीवा भवन्ति सम्प्रति प्रत्येकवनस्पतिजीवप्रमाणमाह-लोगागासपएसेइत्यादि ॥ एकैकस्मिन् लोकाकाशप्रदेशे एकैकं प्रत्येकवनस्पतिजीवं स्थापय एव मुक्तप्रकारेण मीय

---

तहाजाण ॥ १९ ॥ एगस्सदोण्हतिण्हव संखेज्जाणवपासिउंसक्का । दीसंतिसरीराइं णिनयजीवाणणंताणं २० लोगागासपएसे णिनयजीवंठवेहिएक्केक्कं । एवंमविज्जमाणा हवंतिलोयाअणंताउ ॥ २१ ॥ लोगागासपदेसे परित्तजीवंठवित्तुएक्केक्कं । एवंमविज्जमाणा हवंतिलोगाअसंखेज्जा ॥ २२ ॥ पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सअसंख

॥ मूल ॥

---

णिपरिणवो निगोयजीवोतहाजाण । तरतम भेदेकरी व्याप्तिहुवे तिणे दृष्टांते हेगिथ निगोदजीव जांणवा । एगस्सदोण्हतिण्हव संखिज्जाणविपासिओ सक्का दीसंतिसरीराइं निगोयजीवाणणंताणं । एक बे त्रिण संख्याता जीवना शरीरना देखीनकी बादरनिगोदना पिण्डथी दीसता, एहथी निगोदना जीव सूक्ष्म अनन्ताप्रमाण कहेछे—लोगागासपएसे निगोयजीवंठवेहिंइक्किक्कं एवमविज्जमाणा हवंतिलोयाअसंखिज्जा । एकेके लोकाकाशप्रदेशे एकेके निगोदनोजीव थापिये इम थापताथका हुवे अनंतलोकाकाशप्रदेश सरीखा । पत्तेयापज्जत्ता पयरस्सअसंखभागमित्ताओ लोगासखअपज्जत्ति यावसा

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

मानाः प्रत्येकतरुजीवा असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा भवन्ति, सम्प्रतिपर्याप्ताऽपर्याप्तभेदेन प्रत्येकसाधारणवनस्पतिजीवानां प्रमाणमाह-पत्तेयापज्जत्ताइत्यादि॥ पर्याप्ताः प्रत्येकवनस्पतिजीवाः घनीकृतस्य लोकस्य सम्बन्धिनः प्रतरस्य असङ्ख्यतमे भागे यावंत आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणा भवन्ति अपर्याप्तानां पुनः प्रत्येकतरुजीवाना मसङ्ख्येया लोकाः परिमाणं पर्याप्तापर्याप्तानां च साधारणजीवानामनन्तलोकाः, किमुक्तं भवति असङ्ख्येयलोकाकाशप्रमाणा अपर्याप्ताः प्रत्येकतरवो ऽनन्तलोकाकाशप्रमाणाः पर्याप्ता अपर्याप्ता श्च साधारणजीवा इति॥ जेयावन्नेतहत्ति॥ येपि चान्ये ऽनुक्तरूपा स्तथाप्रकाराः प्रत्येकतरुरूपा श्च ते पि वनस्पतिकायत्वेन प्रतिपत्तव्याः, तेसमासतइत्यादि प्राग्वत्' नवरं यत्रैको बादरपर्याप्त स्तत्र तन्निश्रया अपर्याप्ताः कदाचित्सङ्ख्येयाः कदाचिद सङ्ख्येयाः कदाचिद नन्ताः। प्रत्येकतरवः सङ्ख्या असङ्ख्या वा, साधारणा स्तु नियमा दनन्ता इतिभावः,

॥ मूल ॥

नागमिन्नाइं। लोगाऽसंखाऽपज्जत्तयाणसाहारणमणंता ॥ २३ ॥ एएहिंसरीरेहिं पच्चक्खंतेपरूवियाजीवा सुहुमाऽणागिज्झा चक्खुप्फासंनतेइंति ॥ २४ ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तं० पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य, तत्थणं जे ते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता, तत्थणं जेते पज्जत्तगा तेसिणं वन्ना

॥ भाषा ॥

हारणमणंता। पर्याप्त अपर्याप्त साधारणजीव हुवे एकेके लोकाकाशप्रदेशे प्रत्येकजीव एकेक थापिये तथापि ये प्रतरना असंख्यातभागनी मात्रावें इम थापताथका असंख्यात लोकाकाशप्रदेशें थाय असंख्याता लोकाकाश हुवे पर्याप्त प्रत्येकजीव वनस्पतीनाये नाम्यतलोक प्रतरने असंख्यातमेभाग जेतला आकाश प्रदेशमान अपर्याप्ता प्रत्येक तरु अनन्ताकाश प्रदेशप्रमाण पर्याप्ताअपर्याप्ता साधारणजीवेत्ति, लोकाकाश असंख्याता अपर्याप्तमांहे साधारणे अनन्तजीव। एएहिसरीरेहिं पच्चखते परूवियाजीवा सुहमाअणायगिज्झा चक्खुफासनतेइंति। एहवे अनन्तशरीरे करी एहवा प्रत्येकजीव प्ररूप्या छे सूक्ष्म एहवा अनागिज्झथका चक्षु ते ग्राह्य नजाय नेचे दीसैनहीं। जेयावन्नेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पं० तं०। जे एहवा अनेरा तथाप्रकारे ते संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। तत्थणंजेते अपज्जत्तगा तेणं असंपत्ता। तिहां जे अपर्या

॥ टीका ॥

एएसिणमित्यादि ॥ एतेषां साधारणप्रत्येकतरुरूपाणां वनस्पतिविशेषाणां वक्ष्यमाणानामिमा विशेषप्रतिपादिकवक्ष्यमाणा गाथा अनुगन्तव्याः प्रतिपत्तव्या स्ता एवाह-तंजहा-कंदायेत्यादि ॥ गाथात्रयं, कन्दाः सूरणकन्दादयः कन्दमूलानि वृक्षमूलानि वनस्पतिविशेषः गुच्छा गुल्मा वल्लय श्च प्रतीता वेणुका वंशा स्तृणा न्यर्जुनादीनि पद्मोत्पलशृङ्गाटकानि प्रतीतानि, हढो जलजवनस्पतिविशेषः सेवालः प्रसिद्धः कत्रक पनक अवनक कच्छनाणि कन्दुकाः साधारणवनस्पतिविशेषाः एतेषा मेकोनविंशतिसङ्ख्यानां त्वगादिषु मध्ये कस्यापि कापि योनिः' किमुक्त भवति-कस्यापि त्वक् योनिः कस्यापि वल्ली याव त्कस्यापि मूलं कस्या प्यग्रं कस्यापि मध्यं कस्यापि बीज मिति, सेत्तमित्यादिनिगमनचतुष्टयं सुगमं ॥ तदेव मु

॥ मूल ॥

देसेणं गंधादेसेणं रसादेसेणं फासादेसेणं सहस्सग्गसो विहाणाइं संखेज्जाइं जोणिप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तगणिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमंति, जत्थ एगो तत्थ सिय संखिज्जा सिय असंखिज्जा सियअणंता एएसिणं इमाओ गाहाओ अणुगंतव्वाओ तंजहा—कंदायकंदमूलाय रुक्खमूलाइयावरे। गुच्छायगुम्मवल्लीय वेलुयाणितणाणिय ॥ १ ॥ पउमुप्पलसिंघाडे हढेयसेवालकिण्हएपणए। अवएयकच्छुनाणी कंदुक्केकूणवीसइमे ॥ २ ॥

॥ भाषा ॥

पता ए नथी पामा वर्णादिक। तत्थणं जेते पज्जत्तगा तेणंवण्णाएसेणं गंधाएसेणं रसाएसेणं फासाएसेणं सहस्सग्गसोविहाणाइं संखिज्जाइं। तिहां जे पर्याप्ता वर्णादेशे गन्धादेशे रसादेशे स्पर्शादेशे शतसहस्र प्रमुख एतले नाम। जोयणप्पमुहसयसहस्साइं पज्जत्तनीसाए अपज्जत्तगावक्कमंति। प्रत्येक वनस्पती दशलाखयोनि साधारण १४ लाख पर्याप्तानिश्रायें अपजे अपर्याप्त। जत्थएगो तत्थ सियसंखिज्जा सियअसंखिज्जा सिय अणंता एएसिणं माओ गाहाओ अणुगतव्वाओ। जिहां एकजीव तिहां हुवे संख्याता किवारे असंख्याता किवारे अनन्ता हुवे हिवे साधारण वनस्पती ओलखवाकाजे कहेछे तेकिम तेजिम। कंदायकंदमूलाय रुक्खमूलाइयावरे गुच्छायगुम्मवल्लीय वेणुयाणितणाणिय। कंद सूरणकंद कंदमूल वृक्षमूल एहवा बीज गुच्छा गुल्म वेलडी वेणुका वंशा। पउमुप्पलसंघाडे हढेयसेवालकिण्हएपणए अवएअकत्थभाणी कंदुक्केकूणवीसइमे। पद्म उत्पल संघाडा हढ सेवाल क

॥ टीका ॥

क्ता एकेन्द्रियाः सम्प्रतिद्वीन्द्रियप्रतिपादनार्थं माह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते द्वीन्द्रियाः ? सूरिराह-द्वीन्द्रिया अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा पुलाकिमियाइत्यादि ॥ पुलाकिमियानाम पायुप्रदेशोत्पन्नाः कृमयः कुक्षिप्रदेशोत्पन्नाः शङ्खाः समुद्रोद्भवाः प्रतीताः शङ्खनखा स्त एव लघवः घुल्ला घुल्लिकाः खुल्ला लघवः शङ्खाः सामुद्रशङ्खाकाराः वराटाः कपर्दकाः ॥ सिप्पिसपुडुत्ति ॥ सम्पुटरूपाः शुक्तयः चन्दनका अन्ये शेषा स्तु यथासम्प्रदायं वाच्याः ॥ जेयावन्नेतहाप्पगाराइति ॥ ये पि चा न्ये तथा प्रकारा एवं प्रकारा मृतकप्रवरसम्मूतकृम्यादयः ते सर्वे द्वीन्द्रिया ज्ञातव्याः तेसम्मूर्च्छं

॥ मूल ॥

तयतल्लिपवालेसुय पत्तपुप्फफलेसुय । मूलग्गमज्झबीएसु जोणीकस्सइकेत्तिया ॥ ३ ॥ सेत्तं साहारणसरीर बादरवणस्सइकाइया । सेत्तंबादरवणस्सइकाइया ॥ सेत्तं एगिंदिया ॥ से किंतं बेइंदिया ? बेइंदिया अणेग विहा पन्नत्ता, तंजहा—पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गंडूयलगा गोलोमा णेउरा सोमंगलगा वंसीमुहा सू ईमुहा गोजलोया जलोया जालाउया संखा संखणगा घुल्ला खुल्ला खंधा वराडा सोत्तिया मोत्तिया कलुया वासा एगतोवत्ता दुहतोवत्ता णंदियावत्ता संबुक्का माइवाहा सिप्पि संपुडा चंदणा समुद्दलिक्का, जेयावन्ने

॥ भाषा ॥

ष्णका पनक पंचवर्ण फूलण अवय कत्थभाणी २ एहमें कटुका ए १६ । तयकल्लिपवालेसु पत्तपुप्फफलेसय मूलग्गमज्झबीएसु जोणिकस्सविकित्तिया । त्वचा छाल कोंद्रतीप्रवाल पान फूल फल मूलाग्र कोंद्रनोमध्य बीज योनिकंहनी कह्या । सेतं साहारणसरीरबायरवणस्सइकाइया । ते एहवो साधारणवनस्प तो फेर बादरवनस्पति पिण कहो । सेत्त बायरवण० सेत्तं वण० सेत्तं एगिंदिया ॥ सेकिंतं बेइंदिया २ अणेगविहा पं०तं० । ते एतले दोय वनस्पतीनाभेद साधारण बादरनाभेद अधिकार कह्यो पांचो एकेंद्रियजाति कुथिव्यादि कह्या, हिवे शिष्य बेइन्द्रियको विवरो पूछेछे, ते बेंद्रियना अनेकभेदछे ते कहेछे गुरु । पुलाकिमिया कुच्छिकिमिया गडूयलगा गोलोमा णेउरोसो मंगलगा वंसीमुहा । पुलाकृमिका कुक्षिकृमिका गंडूग गोलोमा निउरास मंगल वंशी मुख । सूईमुहा गोजलोया जलोया जूजलाओ असंखा संखणगा । सूचीमुख गोजलोक जलोका जलजू शंख संखनक । घुल्ला खुल्ला कंधा वरडा सोत्ति

॥ टीका ॥

मा: सम्मूर्च्छिमत्वा देवच नपुंसकाः सम्मूर्च्छिमानाम ऽवश्यं नपुंसकत्वात्, नारकसम्मूर्च्छिमा नपुंसका इतिवचनात् ॥ तेसमासओ इत्यादि ॥ ते द्वीन्द्रियाः समासतः सङ्क्षेपेण द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-पर्याप्तका श्चापर्याप्तका श्चशब्दौ योनिकुलभेदेन स्वगतानेकभेदसूचकौ, एतेषां द्वीन्द्रियाणा मेवमादीनां पुलकृम्यादीनां द्वीन्द्रियाणां पर्याप्तापर्याप्तादीनां सर्वसङ्ख्या सर्वजातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखानि योनिप्रवाहानि योनिशतसहस्राणि भवन्ति सप्तजातिकुलकोटिलक्षा भवन्तीतिभावः, इत्याख्यातं तीर्थकृद्भि र्मकारो लाक्षणिकः, इयमत्र भावना इह-जातिकुलयोनीनां परिज्ञानार्थ मिदं परिस्थूर मुदाहरणं पूर्वाचार्यै रुपदर्शितं तद्यथा-जातिरिति किल तिर्यग् गतिः तस्याः कुलानि कृमिकीटवृश्चिकादीनि इमानि च कुला नि योनिप्रमुखानि तथा ह्येकस्या मेव योनौ अनेकानि कुलानि भवन्ति यथा छगणयोनौ कृमिकुलं कीटकुलं वृश्चिककुल मित्यादि अथवा जाति कुल मित्येकं पदं जातिकुलयोन्यो श्च परस्परं विशेषः एकस्या मपि योनौ अनेकजातिकुलसम्भवात् यथा एकस्या मेव योनौ कृमिजातिकुलं कीट जातिकुलं वृश्चिकजातिकुल मित्यादि एवं च एकस्यामेव योनाववान्तरजातिभेदभावाद ऽनेकानि योनिप्रवाहाणि जातिकुलानि सम्भवन्तीत्यु पप

॥ मूल ॥

तहप्पगारा सव्वे ते संमुच्छिमा नपुंसगा ते समासओ दुविहा प०, तं०—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य एएसिणं एवमादियाणं बेइंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं सत्तजाइकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं ॥

॥ भाषा ॥

या मुत्तिया कलुयावासा। घुल्ला खुल्ला खुडा कुडा सोतिक मौक्तिक कलुयावासा। एगओवत्ता दुहओवत्ता नंदियावत्ता। एगोपयुक्ता द्विधोपयुक्ता नन्द्यावर्त्ता। संबुक्का माइवाहा सिप्पिसंपुडा चंदणा समुद्दलिक्खा। शंबुका मातृवाहा सीप चंदना समुद्रलीख। जेयावन्नेतहप्पगारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा ते समासओ दुविहा पं० तं०। जे अनेरा तथाप्रकारना सर्व ते समूर्च्छिम नपुंसकलिंगी ते संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता। अपर्याप्ता। एएसिण एवमाईणं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्तजायकुलकोडी। इणांश इणतरे आदिदेई बेइन्द्रियजीव पर्याप्ता अपर्याप्ता सातलाख कुलकोडी। जोणियमुहसयसहस्सा भवंतीत्ति मक्खाय। बेलाख योनि एहनी उत्पत्तिस्थानक हवे जिम छाणांना अनेक

॥ टीका ॥

द्यन्ते द्वीन्द्रियाणां सप्तजातिकुलकोटीनां शतसहस्राणा मुपसंहार माह-सेत्तमित्यादि॥ सैषा द्वीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, सम्प्रति त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापनार्थं माह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ का सा त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना? भगवानाह-त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना अनेकविधा प्रज्ञप्ता। तानेव तद्भेदेत्यादिनो पदर्शयति-एते च औपचयिकप्रभृतय स्त्रीन्द्रिया देशविशेषतो लोकत श्चावगन्तव्याः' नवरं॥ गोम्हीकसंखियालिया जेयावन्नेतहप्पगारा॥ ये पि चा न्ये तथा प्रकारा स्ते सर्वे त्रीन्द्रिया ज्ञातव्या इति शेषः ॥ तेसव्वेसमुच्छिमनपुंसकाइत्यादि ॥

॥ मूल ॥

सेत्तं बेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा ॥ से किंतं तेइंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उवाइया रोहिणिया कुंथू पिपीलिया उद्दंसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पाया उप्पड़ा तण हारा कठहारा पत्तहारा मालुया तणबिंटिया पत्तबिंटिया पुप्फबिंटिया फलबिंटिया बीयबिंटिया तेपुरु णमिंजिया तउसिमिंजिया कप्पासट्ठिमिंजिया हिल्लिया झिल्लिया झिंगिरा किंगिरिड़ा बाकुया लकुया सु न्नगा सोवत्थिया सुयबेंटा इंदकाइया इंदगोवया तुरतुंबगा कोत्थलवाहगा जूया हालाहला पिसुया सत

॥ भाषा ॥

कुलकोडि हुवे तिम जाणिये ते एतले। सेत्त बेइंदियसंसारसमावन्नजीव पन्नवणा। बेंन्द्रिय संसार संप्राप्तजीव प्रज्ञापना। सेकिंतं तेइंदियसंसारसमावन्नजीव पन्नवणा २ अणेगविहा पं० तं०। हिवे तेंद्रियनाभेद पूछे कुण गुरुकहे तेंद्रिय संसार संप्राप्तजीव प्रज्ञापना ते अनेकप्रकारे कह्या तेकहेछे। उवाइया रोहिणीया कुंथु पिप्पिलियाओ उद्दंसगा उद्देहिया उक्कलिया उप्पया ओप्पडा। उत्पातिका रोहिणीया कुन्थुवा पिप्पीलिया उद्दंसा उद्देही उत्कलिता उत्पत्ता उत्पडानाम। तणाहारा काष्ठाहारा मूलाहारा पत्ताहारा। तृणाहार काष्टाहार मूलाहार पत्राहार। तणबेंटिया पत्तबेंटिया पुप्फबेंटिया फलबेंटिया बीजबेंटिया ते सुरणमिंजिया। तृणबेंटी पुत्रबेंटी पुष्पबेंटी फलबेंटी बीजबेंटी बीजबेंटी सूरणामिंज्झा। तउसिमिंजिया कप्पासट्ठिमिंजिया। तेत्रोसमिंजिता कर्पास अस्थिमिंज्झी। हिल्लिया झिल्लिया झिंगरिया किंगरिडा। हिल्लिका झिल्लिका झिंगरिया किंगरिया। बहुया लहुया

पूर्ववत् ॥ एतेसिणमित्यादि ॥ एतेषां त्रीन्द्रियाणा मेवमादिकानामौपचयिकप्रकृतीनां पर्याप्ताऽपर्याप्तानां सर्वसङ्ख्या अष्टौ जातिकुलकोटीनां योनि प्रमुखानि योनिप्रवाहाणि शतसहस्राणि भवन्ति अष्टौ कुलकोटिलक्षा भवन्तीति भावः, इत्याख्यातं तीर्थकृद्भिः, उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ तदेव मुक्ता त्रीन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ॥ सम्प्रतिचतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना माह-सेकिंतमित्यादि ॥ एते पि चतुरिन्द्रिया लोकतः प्रत्येतव्याः एतेषां च पर्याप्ताऽपर्याप्तानां सर्वसङ्ख्या जातिकुलकोटीनां नवलक्षा भवंति, शेषाद्वारगमनिका प्राग्वत्' उपसंहारमाह-सेत्त



वाइया गोम्ही हत्थिसोंडा जेयावन्ने त० सव्वे ते संमूच्छिमनपुंसगा ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । एएसिणं एवमाइयाणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अट्ठजाइकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीति मक्खायं । सेत्तं तेइंदियसंसा० । से किंतं चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नव णा२ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—अंधिय पोत्तिय मेच्छिय, मगसिरकीडे तहा पयंगे य । ढंकण कु



सुभगा सोवत्थिया सुयवेटा इंदकइया इंदगोवया । बाहुया लहुया सुभग सौवस्तिक सुखविट इन्द्रकेतिका इन्द्रगोपा । तुरतुंबगा कुलत्थबाहगा जूया हालाहला पिसुया सयवाइया गोम्ही हत्थिसोंडा । तुरतुंबग कुलत्थबाहग जूका हालाहल पिशुक शतवायक कानसिलाइ हस्तिसोंड । जेयावन्नेतहप्प गारा सव्वे ते समुच्छिमा नपुंसगा । जे अनेरा तथाप्रकारे सर्व ते सम्मूर्च्छिम नपुंसक जाणिवा । ते समासओ दुविहा पं० तं० । ते संक्षेपथकी दोप्रकार कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । एएसिणं एवमाइयाणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं । इणां ने इत्यादि तेंद्रियकुल कोडि पर्याप्ता अपर्याप्ता । अठजाइकुलकोडि जोणिप्पमुहसयसहस्सा भवंतित्तिमक्खायं । आठलाख कुलकोडि हुवे बेलाख योनि उत्पत्तिस्थान हुवे । से तेइंदिय संसारसमावन्नजीव पन्नवणा । एतले तेंद्रियसंसार संप्राप्तजीव प्रज्ञापना कही । सेकिं तं चउरिंदिय संसारसमावन्नजीव पन्नवणा २ अणेगविहा पं० तं० । ते चउरिंद्रिय भेदपूछे शिष्य, गुरु इमकहे चउरिंद्रिय संप्राप्तजीव प्रज्ञापना अनेकप्रकारे कह्या तेकहेछे—अधियपुच्छियच्छिय महगाको

॥ टीका ॥

मित्यादि ॥ उक्ताश्चतुरिन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना । सम्प्रति पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना माह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ का सा पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना ? सूरिराह-पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना चतुर्विधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-नैरयिकेत्यादि ॥ अयमि ष्टफलं कर्म निर्गतमयं येभ्य स्ते निरया नरकावासा स्तेषुभवानैरयिका स्तेचतेपंचेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा श्च नैरयिकाः पंचेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा

॥ मूल ॥

कुरु कुक्कुह, नंदावत्ते य सिंगिरिडे। किण्हपत्ता नीलपत्ता लोहियपत्ता हलिद्दपत्ता सुक्किल्लपत्ता चित्तपक्खा विचित्तपक्खा उहंजलिया जलचारिया गंभीरा णीणिया तंतवा अच्छिरोढा अच्छिवेहा सारंगा नेउरा दोला भमरा भरिली जरुला तोट्टा विच्छुया पत्तविच्छुया छाणविच्छुया जलविच्छुया पिग्गला कणगा गोमयकीडा जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वे ते संमुच्छिमा नपुंसगा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य। एएसिणं एवमाइयाणं चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं नवजाइकुलकोडि जोणिप्पमुहसयसह

॥ भाषा ॥

डेतहापयंगेय ढंढणकुक्कडकुक्कह नंदावत्तेयसिंगिरिडे। अधिय पुच्छिय माखो मसा कोडा तिम पतङ्ग ढढण कुक्कड कुक्कह नन्द्यावर्त्त सिंगरडा। किण्ह पत्ता नीलपत्ता लोहितपत्ता हालिद्दपत्ता सुक्किलपत्ता चित्तपक्खा विचित्तपक्खा। कृष्णपांखा नीलपांखा रातीपांखा पीलीपांखा धवलीपांखा चित्रपां खा विचित्रपांखा। उहंजलिया जलचारिया गंभीरा णीणिया तंतवा अच्छबेहा सारंगा नेउरा होला भमरा भमरी भमरिली। उर्धजलिक जलचारी गंभीरनियत तंतव अक्षिवेध सारंग नेउरा होला भमरा भमरी भमरिली। जलरुहा तोट्टा विच्छुया पत्तविच्छुया छाणविच्छुया जलविच्छुया पियंग ला कणगा गोमयकीडा। जलरुह तोटा विच्छुका पत्रविच्छुका छाणविच्छु जलविच्छु पियंगल कनक गोबरनाकीडा। जेयावन्तेतहप्पगारा सव्वे ते स मुच्छिमा नपुंसगा। एहवा जे अनेरा तथाप्रकारना ते सर्व समूर्च्छिम नपुंसक। ते समासओ दुविहा पं० तं०। तेसंक्षेपथकी दोयभेद कहवा तेकहेछे। पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय एएसिणं एवमाइणं। पर्याप्ता अपर्याप्ता ए आदिदेई। चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं नवजाइकुलकोडी जोणिप्पमुहसयसह

॥ टीका ॥

स्तेषां प्रज्ञापना तथाच-ऋज्वगतौ तिरोञ्च तीति तिर्यञ्चः, तिरसः तिर्यादेशः तेषां योनिरुत्पत्तिस्थानं तिर्यग्योनि स्तत्र भवास्तिर्यग्योनिकाः तेच पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा श्च तेषां प्रज्ञापना स्तिर्यग्योनिकपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना तथा मनुष्यशब्दो मनुजवाची यथा राजश ब्दो राजन्यान्निधायिकं, मनोर ऽपत्यानि मनुष्याः मनोर्यांणौषश्चेति यः प्रत्ययः षकारश्चा ऽगमः श्चायं च यः प्रत्ययो जाता विति मनुष्यशब्दो जाति वाची राजन्यशब्दवत्, ते च ते पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा श्च तेषां प्रज्ञापना मनुष्यपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, तथा दीव्यन्ति खेच्छ या क्रीडन्ति इतिदेवाः भवनपत्यादयः, ते च ते पञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवा श्च तेषां प्रज्ञापना देवपञ्चेन्द्रियसंसारसमापन्नजीवप्रज्ञापना, तत्र

॥ मूल ॥

रसाइं भवंतीति मक्खायं सेत्तं चउरिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किंतं पंचिंदियसंसारसमावन्न जीवपन्नवणा ? पंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा चउविहा पन्नत्ता, तंजहा—नेरइयपंचिंदियसंसारस मावन्नजीवपन्नवणा तिरिक्खजोणियपंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा मणुस्सपंचिंदियसंसारसमावन्न जीवपन्नवणा देवपंचिंदियसंसारसमावन्नजीवपन्नवणा । से किंतं नेरइया२ ? सत्तविहा पन्नत्ता, तंजहा

॥ भाषा ॥

स्याद् भवंतित्ति मक्खायं । चौरिंद्रियजीव पर्याप्ता अपर्याप्ता भवलाखकुलकोडि योनिप्रमुख शतसहस्र हवे एहवो तीर्थंकरे कह्यो । सेत्तं चउरिंदिय सं सारसमावन्नगजीव पन्नवणा । एतले चउरिंद्रिय संसारी संप्राप्तजीव प्रज्ञापना, हिवे पंचेंद्रिय पूछेछे तद गुरुबोल्या । सेकिंतं पंचेंदिय संसारसमावन्न जीव पन्नवणा २ चउव्विहा पं० तं० । पंचेंद्रियसंसार संप्राप्तजीव प्रज्ञापना चारप्रकारे कह्या ते कहेछे—णेरइय पंचेंदिय संसारसमावन्नजीवपन्नव णा । नारकीपंचेंद्रिय संसारसंप्राप्तजीव प्रज्ञापनाना । तिरिक्ख पंचेंदियसंसारसमावन्नजीव० मणुस्सपंचेंदिय सं० देवपंचेंदिय सं० । तिर्यंच पंचेंद्रिय सं सारसंप्राप्तजीव प्रज्ञापना २ मनुष्य पंचेंद्रिय संसार संप्राप्तजीव० ३ देव पंचेंद्रिय सं० ४ । सेकिंतं णेरइया २ सत्तविहा पं० तं० । हिवे नारकी प्रश्न पूछेछे, नारकी सातप्रकारे कह्या तेकहेछे—रयणप्पभपुढविणेरइया सक्करप्पभपु० वालुयप्पभ० पंकप्पभपु० धूमप्पभपु० तमप्पभपु० तम २ पभपु० । र

॥ टीका ॥

नैरयिकप्रतिपादनार्थं प्रश्ननिर्वचनसूत्रे आह-सेकिंतमित्यादि ॥ सप्तविधत्वं नैरयिकाणां पृथिवीभेदेना ऽन्यथा प्रज्ञप्तभेदत्वमपि घटते ततः पृथिवीभेदत एव सप्तविधत्वं तद्यथे त्यादि नोपदर्शयति-रत्नानि वज्रवैडूर्यादीनि प्रज्ञाशब्दो त्र सर्वत्रा ऽपि स्वभाववाची रत्नानि प्रज्ञा स्वरूपं यस्या सा रत्नबहुला रत्नमयी तिभावार्थः,सा चा ऽसौ पृथिवी च तस्य नैरयिका रत्नप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाः, एवं सक्करप्पभा पुढविनेरइयाइत्यादि ॥ नामनी यमुपसंहारमाह। सेत्तं नेरइया ॥ अधुनो देशक्रमप्रमाण्यानुसरणत स्तिर्यक्पंचेंद्रियान् प्रति पादयिषु राह ॥ सेकिंतमित्यादि ॥ अथकेतेपंचेंद्रियतिर्यग् योनिकाः ? सूरिराह-पंचेंद्रियतिर्यग्योनिका स्त्रिविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा ॥ जलयरे त्यादि ॥ जलेचरंति यर्यटंतीति जलचरा आधारादिलिटप्रत्यये। तेच तेपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका श्च जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, स्थलेचरन्तीति स्थलचराः, खं आकाशे चरन्ती ति खचराः प्राकृतत्वादा र्षत्वा

॥ मूल ॥

रयणप्पभा पुढविनेरइया सक्करप्पभापुढविनेरइया वालुयप्पभापुढविणेरइया धूमप्पभापुढविणेरइया तमप्पभापुढविणेरइया तमतमप्पभापुढविणेरइया । ते समासतो दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगा य अपज्जत्तगा य । सेत्तं णेरइया । से किंतं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया२ ? तिविहा पन्नत्ता, तंजहा—जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंतं जलयरपं

॥ भाषा ॥

त्नप्रभापृथिवी नारकी १ शर्करप्रभापृथिवी २ वालुप्रभ ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमप्रभा ६ तमतमप्रभा ७। ते समासओ दुविहा पं० तं०। ते संक्षेपथ की दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे। पज्जत्तगा अपज्जत्तगाय। पर्याप्ता अपर्याप्ता। सेत्त णेरइया सेकिंतं पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया २ तिविहा पं० तं०। एतले सातेप्रकारे नारकीकह्या हिवे तिर्यंच पूछे पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया तेहना तीनभेद कह्या तेकहेछे ते हिवे। जलयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया २ थलयर पं० खहयर पं०। जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया पंचेंद्रिय तिर्यंच थलचर खचर पंचेंद्रिय तिर्यंच ३ पूछे शिष्य जलचरभेद गुरुकहे। सेकिंत जलयरपंचेंदिय तिर्यंनरा पंचप्रकार कह्या ते कहेछे। मच्छा कच्छा गाहा मगरा सुंसमारा। मच्छ कच्छ ग्राह मगर सुंसमार ५। सेकिंतं मच्छा

॥ टीका ॥

घ खहचरा इति सूत्रे पाठः, तत उन्न यत्रापि पञ्चेन्द्रियतिर्यक्योनिकशब्देन सह विशेषणसमासः ' सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते जलचरपंचेंन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? सूरि राह-जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पञ्चविधाः प्रज्ञप्ताः तदेवपञ्चविधत्वं तद्यथेत्यादिनो पदर्शयति मत्स्याः कच्छपाः सूत्रे पकारस्य नकारः प्राकृतत्वात् ग्राहाः ३ मकराः ' शिशुमाराः ५ प्राकृतत्वात्सूत्रेसुंसुमारा इतिपाठः' मत्स्यादीनां च विशेषा लोकतो वेदितव्याः नवरम ऽस्थिकच्छपा मान्सकच्छपा इति, येऽस्थिबहुलाः कच्छपा स्ते ऽस्थिकच्छपाः, येमांसबहुला स्ते मांसकच्छपा ॥ ते समासउ इत्यादि ॥ तेः

॥ मूल ॥

चिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा मच्छा कच्छहा गाहा नगरा सुंसुमारा । सेकिं तं मच्छा२ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा सहमच्छा खवल्लमच्छा जुंगमच्छा विज्झिडियमच्छा हलिद्दमच्छा मग्गरिमच्छा रोहियमच्छा हलीसागरा गागरा वडा वडगरा तिमा तिमिंगिला णक्का तंदुलमच्छा क णिक्का मच्छा सालिसच्छियामच्छा लंभणमंच्छा पडागा पडागाइपडागा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेतं मच्छा । से किंतं कच्छना २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा अठिकच्छना य मंसकच्छना य । सेतं कच्छना ।

॥ भाषा ॥

अणेगविहा पं० तं० । हिवे मच्छना अनेकभेद कहेछै, तेमच्छ अनेकभेदे कह्या तेकहेछै। सहमच्छा खत्तलमच्छा युगमच्छा चिम्भिडियमच्छा हालिद्र मच्छा मगरमच्छा रोहियमच्छा । सल्हमच्छ खत्तलमच्छ युगमच्छ चिम्भडमच्छ हालिद्रमच्छ मगरमच्छ रोहितमच्छ । हलो सागरा गागरा चडा व डगरा गब्भया उसगारा तिमितिमिंगला । हलोमच्छ सागरमच्छ गागरमच्छ वडामच्छ वठगरा गर्भजारि ऊसगारा तिमितिमंगला १५ । नक्का तंदुल मच्छा कणिका सालि मच्छिया लंभणमच्छा पयग पडागाई । नक्क तन्दुलमच्छ कनकमच्छ सालि मच्छिक लंभन पतक पताकानामे २३ । जेयावखेत हप्पगारा सेत्तकच्छा । एहवा जे अनेराहोज तथाप्रकारे ते कह्या । सेकित कच्छा दुविहा पं० तं० । हिवे ते कच्छना दोयभेद कह्या ते कहेछै । अठिक च्छया मासकच्छया । अस्तिकच्छभ हाडघणांने मांसकच्छभो मांसघणीने । सेत्तं कच्छया सेकिंतं गाहा पंचविहा पं०तं० । ते कच्छप कह्या, हिवे ग्राह

॥ टीका ॥

जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः समासतः सङ्क्षेपेण द्विविधाः प्रज्ञप्ताः-सम्मूर्च्छिमा च गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च मूर्च्छा मोहसमुच्छाययोः अस्मा त्सम्पूर्वा त्सम्मूर्च्छनं संमूर्च्छा ऽकर्तरीति भावे घञ् प्रत्ययः, गर्भोपपातव्यतिरेकेण एवमेव प्राणिना मुत्पाद इतिभाव स्तेन निर्वृत्ता सम्मूर्च्छिमाभावा दिम इति इमप्रत्ययः, गर्भे व्युत्क्रान्ति रुत्पत्ति र्येषां, व्युत्क्रान्तिशब्दो ऽत्रो त्पत्तिवाची तथा पूर्वाचार्यप्रसिद्धे र्यदि वा गर्भा द्गर्भावासात् व्युत्क्रान्ति र्निःक्रमणं येषान्ते गर्भव्युत्क्रान्तिकाः, शेषाद्वि ति कच् समासान्तः चशब्दौ प्रत्येकं स्वगतानेकभेदसूचकौ, तत्र ये ते सम्मूर्च्छिमा स्ते सर्वे नपुंसकाः सम्मूर्च्छिमभावस्य नपुंसकत्वा ऽविना भावितत्वात्, ये तु गर्भव्युत्क्रान्तिका स्ते त्रिविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-स्त्रियः पुरुषा नपुंसकाः' एतेषां चो भयेषा मपि शरीरावगाहनादिषु य श्चिन्तनं य श्च गर्भव्युत्क्रान्तिकानां स्त्रीपुंनपुंसकानां परस्पर मल्पबहुत्वचिन्तनं त ज्जीवाभिगमटीकायां कृत

॥ मूल ॥

से किंतं गाहा २ ? पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा देलीवेढगा मुहुया पुलगा सीमागारा। सेत्तं गाहा ॥ से किंतं मगरा २ ? दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—सोंडमगरा मच्छमगराय। सेत्तं मगरा। से किंतं सुंसुमारा २ एगागारा प०, सेत्तं सुंसुमारा। जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य तत्थणं जे ते सम्मुच्छिमा ते सव्वे नपुंसका, तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा प०,

॥ भाषा ॥

कना पांचभेद कह्या ते कहेछे। दिल्ली बेढगा मुहया पुलया सीमागारा। दिल्ली बाटला मुह पुलका सीमागारा। सेत्तंगाहा सेकिंतं मगरा २ दुविह पं० तं०। एतले ग्राहक कह्या, हिवे मगरना ते मगरना दोयभेद कह्या ते कहेछे। सोंडमगरा मट्टमगरा। सोण्डमगर मट्टमगरा। सेत्तं मगरा सेकिंतं सुंसमारा २ एगागारा पं० तं०। एतले मगर कह्या, हिवे सुंसमारनो एकभेद कह्यो तेकिम। सुसमारा सेत्तसुंसमारा। सुंसम रा एतले सुसमार कह्या। जेआवन्तेतहप्पगारा ते समासओ दुविहा पं० तंजहा। जे अनेरा तथाप्रकारे ते संक्षेपथी दोयप्रकारे ते। समुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय। समूर्च्छिम गर्भ ऊपजे गर्भज पिण। तत्थणं जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा। तिहां जेते समूर्च्छिम तेसर्व नपुंसक। तत्थणं जेते गब्भवक्कंतियाय ते तिविहा पं० तं०।

॥ टीका ॥

मिति ततो ऽवधार्यं ॥ एएसिणमित्यादि ॥ एतेषा मेव मादिकाना मुपदर्शितप्रकारादीनां जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्याप्ताऽपर्याप्तानां सर्वसङ्ख्या ऽर्द्धत्रयोदशजातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखानि योनिप्रवाहाणि शतसहस्राणि भवन्तीत्याख्यातं भगवद्भि स्तीर्थंकरैः, उपसंहारमाह-सेत्त मित्यादि ॥ तदेव मुक्ता जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः सम्प्रतिस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानभिधित्सुराह-सेकिंतमित्यादि ॥ चत्वारि पदा नि येषा न्ते चतुःपदाः, अश्वादय स्ते च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका श्च चतुष्पदपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, उरसा भुजाभ्यांवा परिसर्पंतीति उरःपरिसर्पाः, भुजपरिसर्पाः अहिनकुलादय, स्ततः पूर्ववत् स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकपदेन सह विशेषसमासः, चशब्दौ प्रत्येकं स्वगतानेक

॥ मूल ॥

तंजहा इत्थी पुरिसा नपुंसगा। एतेसिणं एवमाइयाणं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं अट्ठतेरसजाइकुलकोडिजोणीप्पमुहसयसहस्सा भवंतीति मक्खायं। सेत्तं जलयरपंचिंदिय०। से किंतं थल यरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २? दुविहा पन्नत्ता, तंजहा चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया परि सप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य। से किंतं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २? चउव्विहा

॥ भाषा ॥

तिहां जेते गर्भज तेहना ३ भेद कह्या ते कहेछै—इत्थी पुरिसा नपुंसगा। स्त्री पुरुष नपुंसक। एएसिणं एवमाइयाणं। एहना इयतरे आदिदेई। जल यर पंचेंद्रिय तिरिक्खजोणियाणं। जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया। पज्जत्ता अपज्जत्ताणं। पर्याप्ता अपर्याप्ता। अट्ठतेरसजाति कुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा भवंतित्तिमक्खाय। साढेबारैलाख कुलकोडिप्रमुख शतसहस्र हुवे। इम तीर्थंकरे कह्यो। सेत्त जलयरे पचेंदितिरिक्खजोणिया। एतले जल चर पंचेंद्रिय कह्या तिर्यंचयोनिया। सेकिंतं थलचर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया २ दुविहा पं० तं०। दोय थलचर ते थलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक दोयप्रकारे कह्या ते कहेछै—चउपयथलयर पंचेंदियतिरिक्खजोणिया परिसप्प थलयर पचेंदिय ति०। चउपद थलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक उरपर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिना। सेकिंतं चउप्पय थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउव्विहा पं० त०। दोय चौपदथलचर पंचेंद्रियतिर्यंचयोनिना चारभेद

॥ टीका ॥

कत्वेदसूचकौ । तदेवानेकत्वेदत्वं क्रमेण प्रतिपिपादयिषुराह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः सूरिराह-चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-एगखुरा इत्यादि ॥ तत्र प्रतिपद मेकः खुरः शफो येषां ते एकखुराः अश्वादयः' द्वौ २ खुरौ प्रतिपदं येषान्ते द्विखुराः उष्ट्रादय स्तथा च-एकैकस्मिन् पदे द्वौ द्वौ शफौ दृश्येते गण्डी च सुवर्णकाराधिकरणिस्थान मिव पदं

॥ मूल ॥

पन्नत्ता, तंजहा एगखुरा दुखुरा गंडीपया सणप्फया । से किंतं एगखुरा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तं० अस्सा अस्सतरा घोडगा गद्दहा गोरक्करा कंदलगा सिरिकंदलगा आवत्ता । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं एगखुरा । से किंतं दुखुरा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—उट्टा गोणा गवया रोज्झा ससया महिसा संवरा वराहा अया एलगा रुरु सरभ चमर कुरंग गोकन्नमाई सेत्तं दुखुरा । से किंतं गंडीपया २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा हत्थी हत्थीयणा मंकुणहत्थी खग्गा गंडा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं गंडीपया

॥ भाषा ॥

कह्या ते कहेछे । एगखुरा दुखुरा गंडीपया सणप्फया । एकखुरा अश्वादि द्विखुरा ओष्ट्र दय गण्डीपद गजादि सनखपद व्याघ्रादि ४ । सेकिंतं एगखुरा २ अणेगविहा पं० तं० । हिवे एकखुरानां अनेकभेद कह्याछे ते सुणो- अस्सा अस्सतरा घोडगा गद्दहा गोरखरा कदलगा सिरिकंदलगा आवत्ता । घोडा अश्वतर घोटक गर्दभ गोखुर कन्दलग श्रीकन्दल आवर्त्त । जेयावन्नतहप्पगारा सेत्तं एगखुरा । एहवा जे अनेरा तथाप्रकारे ते एकखुरा कह्या । सेकिंतं दुखुरा २ अणेगविहा पं० तं० । हिवे ते दुयखुरा कहेछे ते अनेकप्रकारे कह्या ते सुणो । उट्टा गोणा गवया रोझा ससया महिसा सवरा वराहा अया एलगा रुरु सरभ चरम कुरंग गोकन्नमाई । ऊंट गोण गवय रोझ अज महिष सवर वराह छागो गाडर चमरीगाय मृग गोकर्ण । सेत्तं दुखुरा सेकिंतं गंडीपया २ अणेगविहा पं० तं० । एतले बेखुरानाभेद कह्या, हिवे गंडीपदना अनेकभेद कह्या ते कहेछे—हत्थी पूयणया मंकुणहत्थी खगा । हाथी गेण्डा मुकनहाथी खग्गा । जेयावन्नतहप्पगारा सेत्तगंडीपया । ज अनेरा तथाप्रकारना गण्डीपद जाणिवा । सेकिंतं सणप्फया २ अणेगविहा पं० तं० ।

येषान्ते गण्डीपदा हस्त्यादय स्तथा सनखानि दीर्घनखपरिकलितानि पदानि येषान्ते सनखपदाः श्वादयः, प्राकृतत्वाच्चसमासकयाऽतिसूत्रेनिर्देशः, अधुनाग्रतानेव एकखुरादीन् क्रमेण प्रतिपिपादयिषु रिदमाह-सेकिंतमित्यादि ॥ सुगमं, नवरं ये केचि ज्जीवजनेदा अप्रतीता स्ते लोकतो वेदितव्याः ॥ तेसमासतं दुविहा पं इत्यादि सूत्रं ॥ प्राग्वद्भावनीयं, नवरमत्र जातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखाणि शतसहस्राणि दश भवन्तीति वेदितव्य मत्रापि च सम्मूर्च्छिमानां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां च प्रत्येकं य च्छरीरादिषु द्वारेषु चिन्तनं य च स्त्रीपुंनपुंसकानां परस्पर मल्पबहुत्वं तज्जीवा

॥ टीका ॥

से किंतं सणप्फया ? सणप्फया दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सीहा वग्घा दीविया अच्छा तरच्छा परस्सरा सिया ला सुणगा कोलसुणगा ( ग्रथा ५०० ) कोकतिया ससगा चित्तंगा विल्लगा । जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं सणप्फया । तेसमासतं दुविहा पण्णत्ता, तंजहा संमुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय । तत्थणं जे ते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थणं जे ते गब्भवक्कंतिया ते तिविहा पण्णत्ता, तंजहा इत्थी पुरिसा नपुंसगा ।

॥ मूल ॥

हिवे संज्ञीपद भेद कह्या ते भेद अनेकप्रकारना कहेछे—सीहा वग्घा दीविला अच्छा अरच्छा परस्सरा सियाला विराला सुणगा कोलसुणा कोकिंतिया सल्लगा चित्तगा । सिंह व घ चीता अच्छा अरछा परासर स्याल विराल स्यान कोल कोकति सगला चित्रक । जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्तं सणप्पया ते समासओ दुविहा पं० तं० जे अनेरा तथाप्रकारे ते सन्नीपद कहिये ते संज्ञेपयकी दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे । समुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय । समूर्च्छिम गर्भज । तत्थणं जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा । तिहां जेते समूर्च्छिम तिके सर्व नपुंसक । तत्थणं जेते गब्भवक्कंतियाय ते तिविहा पं० तं० । तिहां जे गर्भजका तीनभेद कह्या ते कहेछे—इत्थी पुरिसा नपुंसगा एणसिणं एवमाइणं । स्त्री पुरुष नपुंसक इणं इणतरे आदिदेई । थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं । थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया थलचरपंचेंद्रिया । पज्जत्तअपज्जत्ताणं । पर्याप्ता अपर्याप्ता । दसजातिकुलकोडि जोणिपमुहसय सहस्सा भवंतीतिमक्खायं । दशलाख कुलकोडि योनि शतसहस्र इवे तीर्थंकर कह्यो । सेत्तं चउप्पय थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया । एतले चउप

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

जिगमटीकातो वेदितव्यं ॥ सेत्तंचउप्पयइत्यादि ॥ सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियाः ? तैर्यग्योनिकाः प्रज्ञप्ताः ? सूरिराह-परिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधा द्विप्रकाराः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-उरपरिसर्पेत्यादि ॥ उरसा परिसर्पन्तीति उरःपरिसर्पा स्ते च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका श्च उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, भुजाभ्यां परिसर्पन्ति भुजपरिसर्पाः ते च ते स्थलचरपञ्चेन्द्रिय तैर्यग्योनिका श्च भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, चशब्दौ प्रत्येकं स्वगतानेकभेदसूचकौ । तत्रो रःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग् योनिकभेदान् प्रदिदर्शयिषु रिद माह-सेकिंतउरपरिसप्पेत्यादि ॥ अथ के ते उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः ? सूरिराह-उरःपरिस र्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका श्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-अहयो ऽजगरा आसालिगा महोरगा एतेषा मेव भेदाना मवगमाय प्रश्ननिर्वचनसू

॥ मूल ॥

एएसिणं एवमादियाणं थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं दसजाइकुलकोडिजोणिप्पमुह सयसहस्सा हवंतीति मक्खायं । सेत्तं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंतं परिसप्पथलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? दुविहा पण्णत्ता, तंजहा उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया भुय परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया य । से किंतं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ ? च उव्विहा पण्णत्ता, तंजहा अही अयगरा आसालिया महोरगा । से किंतं अही२ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा

॥ भाषा ॥

द थलचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया कह्या । सेकिंतं परिसरप थलयर पचेंदिय तिरिक्खजोणिया २ दुविहा पं० तं० । हिवे उरपरिसर्प थलचर पञ्चेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक एहना दोयभेद कह्या । उरपरिसरप थलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया भुजपरिसरपथलयर० । उरपरसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक भुजपरिसर्प थलचर भुजाबांचाले ते । सेकिंतं उरपरिसरप थलयर पंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउव्विहा पं०तं० । हिवे उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनियाना ४ भेद कह्या ते कहेछे—अहो अयगरा अलसिया महोरगा । सर्प अजगर अलसीया महोरग । सेकिंतं अहो दुविहा पं० तं० । हिवे

॥ टीका ॥

त्राण्याह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते अहयो गुरुराह-अहयो द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-दर्वीकरा श्च मुकुलिनश्च । तत्र दर्वीवदर्वाफणातत्करणशीला दर्वीकराः, मुकुलं फणा विरहयोग्या शरीरावयवविशेषाकृतिः सा विद्यते येषान्ते मुकुलिनः, फणाकरणशक्तिविकला इत्यर्थः अत्रापि च शब्दौ स्वगतानेकभेदसूचकौ । तत्र दर्वीकरभेदान भिधित्सु राह-सेकिंतमित्यादि ॥ आश्यो दंष्ट्रा स्तासु विषं येषान्ते आशीविषाः, उक्तं च-आसीदाढा तग्गयमहाविसा आसीविसा मुणेयव्वा इति, दृष्टौ विषं येषान्ते दृष्टिविषाः; उग्रं विषं येषा न्ते उग्रविषाः, भोगः शरीरं तत्र विषं येषा न्ते भोगविषाः, त्वचि विषं येषा न्ते त्वग्विषाः, प्राकृतत्वा च्च तयाविसाइतिपाठः लाला मुखास्रावः तत्र विषं येषा न्ते लालाविषाः, निःश्वासे विषं येषान्ते निःश्वासविषाः, कृष्णसर्पादयो जातिभेदा लोकतः प्रतिपत्तव्याः, उपसंहारमाह-सेतं दर्वीकरा । मुकुलिनःप्रतिपिपादयिषुराह-सेकिंतमित्यादि ॥ एतेपि लोकतो वसेयाः, अजगराणामवान्तरजातिभेदा न विद्यन्ते तत उक्तमेकाकारा अजगराः प्रज्ञप्ताः ॥ आशालिगाम भिधित्सु राह-सेकिंतं आसालिगा ॥ अथ का आसालिगा ? एवं शेष्येण प्रश्ने कृते सति भगवान् आर्यश्यामो यदेव ग्रन्थांतरेषु आशालिगाप्रतिपादिकं

॥ मूल ॥

दव्वीकरा य मउलिणो य । से किंतं दव्वीकरा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा आसीविसा दिट्ठीविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा उस्सासविसा णिस्सासविसा कण्हसप्पा सेट्ठसप्पा कउदरा दब्भपुप्फा कोलाहा मेलिमिंदा सेसिंदा जेयावन्ने तहप्पगारा । सेत्तं दव्वीकरा । से किंतं मउलिणो २ ? अणेग

॥ भाषा ॥

सर्पना दोयभेद कह्या ते कहेछे—दर्वीकराय मउलिणोय । दर्वीकरा मुकुलफणां । सेकिंतं दर्वीकरा अणेगविहा पं० तं० । हिवे दर्वीफणांना अनेकभेद कह्या ते कहेछे । आसीविसा दिट्ठिविसा उग्गविसा भोगविसा तयाविसा लालाविसा ऊसासविसा नीसासविसा । आसीविष दाढेविष नेत्रेविष दृष्टिविष उग्रविष आकरविष भोगविष त्वचाविष लालाविष उच्छ्वासविष नीश्वासविष । कण्हसप्पाइं सेडसप्पा काउंबरा दर्भपुप्फा कोलाहा मेलिमंदा । कृष्णसर्प श्वेतसर्प कादुंबरा दर्भपुष्प कोलाह मौलिमद । जयावन्नेतहप्पगारा सेत्त दर्वीकरा । जे एहवा अनेकभेदे ते दर्वीकर भेदकह्या । सेकिंतं मउ

॥ टीका ॥

गौतमप्रश्नं भगवन्निर्वचनरूपं सूत्रमस्ति-तदेवागमबहुमानतः पठति? कहिणं भंते! इत्यादि॥ कथं णमिति वाक्यालङ्कारे भदन्त! परमकल्याणयोगिन् आशालिका संमूर्च्छति? एषा हि गर्भजा न भवति किंतु सम्मूर्च्छिमैव; तत उक्तं सम्मूर्च्छंति भगवानाह-गोयमेत्यादि॥ गौतम! अन्तर्मध्ये मनुष्यक्षेत्रस्य बहिरेतावता मनुष्यक्षेत्रा द्बहिरस्या उत्पादो न भवतीति प्रतिपादितं तत्रापि मनुष्यक्षेत्रे सर्वत्र न भवति किंत्व द्धृतृतीयेषु द्वीपेषु अर्द्धं तृतीयं येषान्ते ऽर्द्धतृतीया अवयवेन विग्रहः समुदायः समासार्थ स्तेषु, एतावता लवणसमुद्रे कालोदे समुद्रे वा न भवतीत्या वेदितं, निर्व्याघातेन व्याघातस्या भावो निर्व्याघातं तेन यदि पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु सुषमसुषमादिरूपदुःखमादिरूप श्च कालो व्याघातहेतुत्वात् व्याघातो न भवति तदा

॥ मूल ॥

विहा पण्णत्ता, तंजहा दिब्बागा गोणसा कसाहीया वउला चित्तलिणो मंडलिणो अही अहिसिलागा वाय फ्फागा। जेयावण्णे तहप्पगारा। सेत्तं मउलिया। सेत्तं अही। से किंतं अयगरा २? एगागारा पण्णत्ता, सेत्तं अयगरा। से किंतं आसालिया? कहिणं भंते! आसालिया संमुच्छंति? गोयमा! अंतोमणुस्सखेत्ते अट्ठाइज्जेसु दीवेसु णिव्वाघाएणं पण्णरससु कम्मभूमीसु वाघातं पडुच्च पंचसुमहाविदेहेसु चक्कवट्टीखंधावा

॥ भाषा ॥

लिणो २ अणेगविहा पं० तं०। हिवे मुकुलफणांना अनेकभेद कह्या ते कहेछे—दिब्बागा गोणसा कसाहिया वइउला चित्तलिणो मउलिणो मालिणाअही अहिसलगा वायडग। दिव्य गोणस कसाहारक बइउल चित्रलीमाउलिन मालणीसपे सलाकसर्प। जेयावण्णेतहप्पगारा सेत्तं मउलिणो सेत्तं अही। जे अनेरा तथाप्रकारे ते एतले मकुलनाभेद कह्या। सेकिंतं अयगरा २ एगागारा पं० तं०। हिवे ते अजगरनो एकभेदकहे—सेत्तं अयगरा सेकिंत आलसीया। एतले अजगर हिवे ते अलसियानो एकभेद। कहणंभंते अलसीया समुच्छति। किम ऊपजे हेभगवन् आलसीया गौतम पूछेछे उ०—गो यमा अंतोमणुस्सखेत्ते अढाइज्जेसु दीवेसु णिव्वाघाएणं पण्णरससुकम्मभूमिसु बाघायं पडुच्च। हेगौतम मनुष्यक्षेत्रमांहि अढाईद्वीपनेविषे निर्व्याघात पनरै भूमि कर्मभूमिनेविषे व्याघात न ऊपजे। पंचसु महाविदेहेसु चक्रवट्टिखंधावारेसु वासुदेवखंधावारेसुवा। पंच महाविदेहक्षेत्रनेविषे चक्रवर्त्तीरा खंधा

॥ टीका ॥

पञ्चदशसुकर्मभूमिषु संमूर्च्छंति' व्याघातं प्रतीत्य किं मुक्तं भवति ? यदि पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरवतेषु यथोक्तरूपो व्याघातो भवति ततःपञ्चसु महाविदेहेषु सम्मूर्च्छंति, एतावता त्रिंशत्य प्य कर्मभूमिषु नो पजायते इति प्रतिपादितं' पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पञ्चसु वामहाविदेहेषु न सर्वत्र सम्मूर्च्छंति किन्तु चक्रवर्त्तिस्कन्धावारेषु वा शब्दः सर्वत्रापि विकल्पार्थो द्रष्टव्यः, बलदेवस्कन्धावारेषु, मांडलिकः सामान्यराजा, अल्पर्द्धिको हमामा ण्डलिकः स एवा नेकदेशाधिपतिः ततःस्कन्धावारेषु ग्रामनिवेशेषु इत्यादिः, ग्रसति बुध्यादीन् गुणानिति ग्रामः यदि च गम्यः शास्त्रप्रसिद्धानाम ष्टादशानां कराणा मिति ग्रामः' निगमः प्रभूततरवणिग्वर्गावासः, प्रांशुप्राकारनिबद्धं खेटं' क्षुल्लप्राकारवेष्टितंकर्बटं, अर्द्धतृतीयगव्यूतान्तर्ग्रामान्त ररहितं मडंबं॥ पट्टणंति ॥ पट्टनं पत्तनं वा उभयत्रापि प्राकृतत्वेन निर्देशस्य समानत्वात्, तत्र य नौभि रेव गम्यं त त्पट्टनं, य त्पुनः शकटै र्घो टकै र्नौभि र्वा गम्यं तत्पत्तनं, तथा भृगुकच्छं, उक्तं च-पत्तनं शकटै र्गम्यं घोटकै र्नौभि रेव च। नौभि रेव तु यद्गम्य पट्टनं तत्प्रचक्ष्यते॥१॥ द्रोण

॥ मूल ॥

रेसु वासुदेवखंधावारेसु बलदेवखंधावारेसु मंडलियखंधावारेसु महामंडलियखंधावारेसु गामनिवेसेसु नगर निवेसेसु निगमनिवेसेसु खेडनिवेसेसु कब्बडनिवेसेसु मडंबनिवेसेसु दोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आग रनिवेसेसु आसमनिवेसेसु संवाहनिवेसेसु रायहाणिनिवेसेसु एएसिणं चेव विणासेसु । एत्थणं आसालिया

॥ भाषा ॥

वार कहिजे कटक वासुदेवना कटकनेविषै । बलदेवखंधावारेसुवा मंडलियखधावारेसुवा महामंडलियखधावारेसुवा । बलभद्रना कटकनेविषै महाम ण्डलीकना कटकनेविषै । गामनिवेसेसु नगरनिवेसेसु निगमनिवेसेसु । ग्रामनिवेसनेविषै करविना नगर ते नगरनिवेसनेविषै । खेडनिवेसेसु कब्बडनिवे सेसु मडबनिवेसेसु । धूलगढ ते खेडनिवेसनेविषै कब्बडनेविषै मडबनेविषै । द्रोणमुहनिवेसेसु पट्टणनिवेसेसु आयरनिवेसेसु आसमनिवेसेसु । द्रोणमुख ज लपत्य ते निवेसनेविषै धातुआगर ते निवेशनेविषै आश्रमनिवेसनेविषै । संबाहनिवेसेसु रयहाणिनिवेसेसु । संबाध साधारांस्थाननेविषै राजधानीनेविषै । एतेसिणं चेव विणासेसु एत्थणं अलसिया समुच्छंति । इण स्थानके विनाशपणे इहां अलसियाजीव उपजै । जहणेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागमित्तीए उ

॥ टीका ॥

मुखं बाहुल्येन जलनिर्गमप्रवेशं ॥ आकरो हिरण्याकरादिः, आश्रम स्तापसावसथोपलक्षितः, आश्रयः संबाधो यात्रासमागतप्रभूतजननिवेशः, राजधानी राजाधिष्ठान नगरं ॥ एएसिणमित्यादि ॥ एतेषां चक्रवर्त्तिस्कन्धावारादीना मेव विनाशेषु प्रस्तावेषु ॥ एत्थणंति ॥ एतेषु चक्रवर्त्तिस्कन्धावारादिषु स्थानेषु आशालिका संमूर्च्छति, सा च जघन्यतो द्विलासङ्ख्येयभागमात्रया अवगाहनया समुत्तिष्ठतीति योगः, एतच्चोत्पादप्रथमसमयो वेदितव्यं, उत्कर्षतो द्वादशयोजनानि, तदनुरूपं द्वादशयोजनप्रमाणदैर्घ्यानुरूपं ॥ विक्खंभबाहल्लेणंति ॥ विष्कंभ च बाहल्य च विष्कंभबाहल्य समाहारो द्वंद्व स्तेन विष्कंभो विस्तारो बाहल्य स्थूलता ॥ भूमिदालित्ताणंति ॥ विदार्य उपतिष्ठति, स चक्रवर्त्तिस्कन्धावारादीना मधस्ता द्भूमे रत रुत्पद्यते इतिभावः, सा चा सज्ञिनी अमनस्कासंमूर्च्छिमत्वात्, मिथ्यादृष्टिः सास्वादनसम्यक्त्वस्यापि तस्या असंभवात् अत एवा ऽज्ञानिनी अंतर्मुहूर्त्तायु रेव कालं करोति, तदेवग्रंथांतरगतं सूत्र पठित्वा सूत्रकृत्संप्रत्यु पसहारमाह-सेत्तआसालिया ॥ संप्रतिमहोरगाननिधित्सुराह । सेकिंत

॥ मूल ॥

समुच्छंति । जहन्नेणं अंगुलस्स असंखिज्जइभागमित्तीए नगाहणाए, उक्कोसेणं बारसजोयणाइं । तहाणुरूवं च णं विक्खंभबाहल्लेणं भूमिदालित्ताणं समुट्ठेति । असन्नी मिच्छदिट्ठी अन्नाणी अंतोमुहुत्तद्धाउया चेव कालं करेइ । सेत्तं आसालिया । से किंतं महोरगा २ ? अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा अत्थेगइया अंगुलं पि अंगुलपुहत्तिया वि वियच्छिंपि वियच्छिपुहत्तं पि रयणिं पि रयणीपुहत्तिया पि कुच्छिंपि कुच्छि

॥ भाषा ॥

गाहणाए । जघन्यकी अवगाहना अंगुलने असंख्यातमेंभागे प्रमाणे । उक्कोसेणं बारसजोयणाइं तणारूवंचण । उत्कृष्टे १२ योजन अवगाहना पातलोशरीर घणोंरूप । विक्खंभबाहल्लेणं भूमिदालित्ताण समुट्ठेइ । विष्कंभ लांबपणे १२ योजन भूमिविदारी खधावारनो हेठलीभूमिथी उपजे मनविना उपजे । असण्णीमिच्छदिट्ठी अन्नाणी अंतोमुहुत्तेडाउयचेव कालंकरेइ । असंज्ञी मनरहित मिथ्य दृष्टी अज्ञानी अंतर्मुहूर्त्त आऊखाकाल निये कालकरे । सेत्तं असंसिया । एतले असंसियो कह्यो । सेकिंतं महोरगा २ अणेगविहा प० तं० । हिवे ते गिथ पूछे कुण महोरग तदगुरु महोरगनाभेद अनेकप्रकारे

॥ टीका ॥

मित्यादि ॥ युगमं । नवरं वितस्ति र्द्वादशाङ्गुलप्रमाणा रत्नि र्हस्तः कुक्षि र्द्विहस्तमानो धनु श्चतुर्हस्तं गव्यूतं द्विधनुः सहस्रप्रमाणं । चत्वारिगव्यूतानि योजनं इद च्च वितस्त्यादि उच्छ्रेयांगुलापेक्षया द्रष्टव्यं शरीरप्रमाणस्य परिचिन्त्यमानत्वात् । तथा-अस्तीति निपातो त्र बहुत्वाभिधायी प्रतिपद च्च संबध्यते ततो यमर्थः सन्त्य के केचन महोरगा ये अङ्गुलमपि शरीरावगाहनया भवन्ति तथा सन्त्ये के केचन ये अङ्गुलपृथक्त्विका अपि अङ्गुलपृथक्त्व विद्यते येषान्ते अङ्गुलपृथक्त्विका अतो नेकस्वरादि ती क प्रत्ययः ते पि शरीरावगाहनया भवन्ति अङ्गुलपृथक्त्वमानशरीरावगाहना अपि भवन्तीतिभावः, एवं शेषसूत्राण्यपि भावनीयानि, तेण मित्यादि ॥ ते अनन्तरोदितस्वरूपा महोरगाः स्थलचरविशेषत्वात् स्थलेजायन्ते स्थलेचजाता सन्तो जलेपि स्थलइव चरन्ति तथा भावस्वाभाव्यात्, यद्येवं किं नस्मा दिह नदृश्यन्ते इत्याशंकायामाह-तेनत्थिइहमित्यादि ॥ ते यथोक्तस्वरू

॥ मूल ॥

पुहत्तिया वि धणुं पि धणुपुहत्तिया वि गाउयं पि गाउयपुहत्तिया वि जोयणं पि जोयणपुहत्तिया वि जोयणसयं पि जोयणसयपुहत्तिया वि जोयणसहस्सं पि तेणं थले जाता जले विचरंति थले विचरंति ते णत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति जेयावन्ते तहप्पगारा। सेत्तं महोरगा। ते समासन्न दुविहा प०,

॥ भाषा ॥

कह्या ते कहेछै—अथवाहत्था अंगुलपि अंगुलपृहत्तियापि विहत्थपि विहत्थपहुत्तियापि। केतलाएक महोरग अंगुलनी अवगाहना केतलाएक अंगुल पृथक्त्वनी कहवली केतलाएक वेहतनी अवगाहना हुवे केतलाएक विहत पृथक्त्वनी अवगाहना। रयणंपिरयणपहुत्तियापि। केई हाथनी केई हाथ पृथक्त्वनी अवगाहना। कत्थंपि कत्थपहुत्तियापि धणुंपिधणुपहुत्तियापि। केई बेहाथनी केई बेहाथ पृथक्त्वनी केई धनुषनी केई धनुषपृथक्त्वनी। गाउयंपि गाउयपहुत्तियापि। केई गाऊनी केई गाऊपृथक्त्वनी। जोयणपि जोयणपहुत्तियापि। केई योजननी केई योजनपृथक्त्वनी। जोयण सयंपि जोयणसयपहुत्तिया। केई योजन सयनी केई योजन सयपृथक्त्वनी। बिजोयण सहस्संपि जोयणसहस्संपहुत्तियापि। केई बेयोजनसहस्रनी केई सहस्रयोजन पृथक्त्वनी। तेण थलेजाया थले विचरंति जलेजाया जले विचरंति। तिहां थलमें जपना थलमें विचरै जलमें जन्मै जल

॥ टीका ॥

पा महोरगा इह मानुषक्षेत्रे न स्थितिनसन्तिकिन्तुबाह्येषु द्वीपसमुद्रेषु सम्भवन्ति समुद्रेष्वपि च पर्वतदेवनगर्यादिषु स्थलेषू त्पद्यन्ते । न जलेषु स्थलचरत्वात्, तत इह न दृश्यन्ते जंयावन्नेतहप्पगारा इति ये पि चा न्ये अङ्गुलदशकादि शरीरावगाहनमाना स्तथा प्रकाराः सन्ति ते पि म होरगा ज्ञातव्या, उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ तेसमासउइत्यादिप्राग्वद्भावनीय, एतया मपि दशजातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखानि शतसहस्रा णि एतेषा मपि च य च्छरीरादिषु द्वारेषु चिन्तन य च स्त्रीपुन्नपुंसकाना मल्पबहुत्वं तज्जीवाभिगमटीकातो भावनीयं, उरःपरिसर्पवक्तव्यतोपसं हारमाह-सेतंउरःपरिसर्पाः, अधुना भुजपरिसर्पाना मभिधित्सुराह-सेकिंतमित्यादि ॥ सुगमं नवर यं भुजपरिविशेषा अप्रतीता स्ते लोकतो वसे

॥ मूल ॥

तं०—सम्मुच्छिमाय गब्भवक्कंतिया य । तत्थणं जेते संमुच्छिमा ते सव्वे णपुंसगा, तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा प०, तं०—इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्ता२ णं उरपरिसप्पाणं दसजा इकुलकोडीजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंती ति मक्खायं । सेत्तं उरपरिसप्पा । से किंतं भुयपरिसप्पा २ अणेग

॥ भाषा ॥

में विचरे। ते तत्थिःहंबाहिरिएसु दीवसमुद्देसुहवंति । इण मनुष्यक्षेत्रमें नही बाहिरला द्वीपसमुद्रमांहि हुवेछै । जेयावन्ने तहप्पगारा सेत्तं महोरगा ते समासओ दुविहा प० तं० । जे अनेरा तथाप्रकारे कह्या ते एतला महोरगा ते संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या ते कहेछै—समुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय । समूर्च्छिम गर्भज । तत्थण जेते समुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा । तिहां जे समूर्च्छिम ते सर्व नपुंसकलिंगी हुवे । तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा पं० तं० । तिहां ज गर्भज ते तीनप्रकारे कह्या ते कहेछै, इत्थी पुरिसा नपुंसगा । स्त्री पुरुष नपुंसक । एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्त अपज्जत्ताणं उरपरिसप्पा णं दसजाति कुलकोडि जोणिपमुहसयसहस्सा हवंतीति मक्खायं । एहने इणतरे आदिदेई पर्याप्ता अपर्याप्ता उरपरिसर्प दशलाख कुलकोडियोनिप्रमुख शतसहस्र दशलाख बीतरागे कह्या । सेत्तं उरपरिसप्पा । एतले उरपरसर्प कह्या । सेकिंतं भुयपरिसप्पा २ अणेगविहा पं० तं० । ते छिवे भुजपरसर्प तेह ना अनेकभेद कह्या ते कहेछै—गोल सेहा सरडा सल्ला सरंता सारावारा घरोइला विसंभरा मूसा दुगंसा पयलाइया छीरविरालिया जोहा चउपद

॥ टीका ॥

याः, अमीषां च नवजातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखानि शतसहस्राणि भवन्ति, ये पुनः शरीरादिषु चिन्तनं स्त्रीपुन्नपुंसकाना मल्पबहुत्वं तज्जीवाभिगमटीकातो वेदितव्यं ॥ सेत्तमित्यादि ॥ सम्प्रतिखचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका नभिधित्सुराह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते खचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिकाः सूरिराह-खचरपञ्चेन्द्रियतैर्यग्योनिका चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता-स्तद्यथा-चर्मपक्षीइत्यादि ॥ चर्मात्मकौ पक्षौ चर्मपक्षौतौ विद्येते येषान्ते चर्मपक्षिणः लोमात्मकौ पक्षौ लोमपक्षौ तद्वन्तो लोमपक्षिणः तथा गच्छता मपि समुद्गकवत् स्थितौपक्षौसमुद्गकपक्षौतद्वन्तः समुद्गकपक्षिणः वितौ नित्य मनाकुञ्चितौ येषां विततपक्षौ पक्षौ तद्वन्तौ विततपक्षिण स्ते सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते चर्मपक्षिणः चर्मपक्षिणो नेकविधाः तद्यथा-वल्गु

॥ मूल ॥

विहा पण्णत्ता, तंजहा—णउला सेहा सरडा सल्ला सरंठा सारा खारा घरोइला विस्संभरा मूसा मंगुसा पइलाइया त्थीरविरालिया जाहा चउप्पाइया जेयावन्नेतहप्पगारा । तेसमासतो दुविहा प०, तं०—संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतियाय, तत्थणं जेते संमुच्छिमा ते सव्वे नपुंसगा, तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा पण्णत्ता, तंजहा—इत्थी पुरिसा नपुंसगा, एएसिणं एवमाइयाणं पज्जत्ता२ णं चउपरिसप्पाणं नवजाइकुल

॥ भाषा ॥

या । नौल सेहला सरट सल्ल सरन्त सारखार घरोएला विसंभर मूसा दुगंस प्रचलादि क्षीरविरालो जोधा चउपद देशविशेष । जेयावन्ने तहप्पगारा ते समासओ दुविहा पं० तं० । एहवा जे अनेरा तथाप्रकारे ते सन्क्षेपथकी बेयप्रकार कह्या ते कहेछे—समुच्छिमाय गब्भवक्कंतियाय । समूर्च्छिम गर्भज । तत्थणं जेते समुच्छिमा तेसन्वे नपुंसगा । तिहां समूर्च्छिम सर्व सदा नपुंसकलिंगी । तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा पं० तंजहा । तिहां जे गर्भज तेहना तीनभेद कहे । इत्थी पुरिसा नपुंसगा । स्त्री पुरुष नपुंसक । एएसिणं एवमाईयाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताणं भुयपरिसप्पाणं नवजाइकुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा हवंतीतिमक्खाय । एहने इणतरे आदिदेई पर्याप्ता अपर्याप्ता भुजपरसर्प नवजाति कुलकोडि योनिप्रमुख शतसहस्र हुवे वीतरागे कह्यो । सेत्तं भुयपरिसप्पथलयर पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया । ते एतले भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच कह्या । सेत्तं परिसप्पथलयर पंचिंदिय

लीत्यादि-एते च भेदा लोकतो वक्तव्या, जेयावन्नेतहप्पगाराइति ॥ ये पि चान्ये तथा प्रकारा एवं रूपा स्ते चर्मपक्षिणो द्रष्टव्याः, उपसंहारमाह-सेत्तंचम्मपक्खी । लोमपक्षिप्रतिपादनार्थमाह-सेकिंतमित्यादि ॥ एते च लोमपक्षिभेदा लोकतो वेदितव्याः, समुद्गपक्षिप्रतिपादनार्थमाह-सेकिंत मित्यादिपाठसिद्धं ॥ एवं विततपक्षिसूत्र मपि ते समासतो इत्यादि प्राग्वद्भावनीयम्, एतेषां द्वादशजातिकुलकोटीनां योनिप्रमुखानि शतसह

॥ टीका ॥

कोडिजोणिप्पमुहसयसहस्साइं हवंती तिमक्खायं । सेत्तं थलयरपरिसप्पथलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया । सेत्तं परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया । से किंतं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया २ चउविहा पन्नत्ता, तंजहा—चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी वियतपक्खी । से किंतं चम्मपक्खी २ अणेगविहा प० , तं० वग्गुली जलोया अडिल्ला भारंडपक्खी जीवंजीवा समुद्दवायसा कन्नत्तिया पक्खिवेराली जेयावन्नेतहप्पगा रा ॥ सेत्तं चम्मपक्खी ॥ से किंतं लोमपक्खी २ अणेगविहा प० , तं० ढंका कंका कुरला वायसा चक्का

॥ मूल ॥

ति० । एतले उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय कह्या । सेकिंतं खहयर पंचेंदिय तिरिक्खजोणिया २ चउव्विहा प० तं० । हिवे खहचरपंखी पंचेंद्री तिर्यंचयोनि तेहना ४ भेदकह्या ते कहेछे—चम्मपक्खी लोमपक्खी समुग्गपक्खी वियतपक्खी । चर्मपंखी लोमपंखी समुद्गकपंखी वितनपंखी विस्तरीपांख । सेकिंत चम्मपक्खी अणगविहा पं० तं० । हिवे चर्मपंखी, ते चर्मपंखी अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—वग्गुली जलोया अंडला भारंडपक्खी जीवंजीवा समुद्दवायसा । वागुल जलोका अंडिल भारण्डपंखी जीवजीवा समुद्रवायस । कन्नत्तिया पक्खविरालीया । कन्नत्तिया पक्षविराली । जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्तं चम्मपक्खी । जे एहवा अनेराहोज तथाप्रकारे जाणिवा हिवे ते चर्मपंखी कह्या । सेकिंतं लोमपक्खी २ अणेगविहा पं० तं० । हिवे लोमपंखीनामेद अनेकप्रकारे कह्या ते कहेछे—ढंका कंका कुराला वायसा चक्कवागा हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडडासेडी वग्गा बलागा । ढङ्कपंखी काक कराला कागली चकवा हंस कलहंस पादहंस राजहंस अडासेडी बग बालग । पारिप्लवा कुंवासारसा मेसरा मयूरी मयूरा सयवत्या गहरा पोंडरीया कागा कामिंज

॥ भाषा ॥

स्वामि अमीषा मपि शरीरादिषु द्वारेषु चिन्तनं स्त्रीपुन्नपुंसकाना मल्पबहुत्व च्च जीवाभिगमटीकातः प्रतिपत्तव्य मिहतु ग्रंथगौरवभया न्न लिख्यते' अधुना विनेयजनानुग्रहाय द्वीन्द्रियप्रकृतिजातिकुलकोटिशतसहस्रसङ्ख्याप्रतिपादिकां सङ्ग्रहणिगाथा माह-सत्तठजाइकुलको डिलक्खअट्ठनवतेरसा इच । दससयहोंतिनवगा तहबारसचेवबोधव्वा ॥ १ ॥ अत्र द्वीन्द्रियेभ्यः यथासङ्ख्येन सङ्ख्यापदयोजना, सा चैवं-द्वीन्द्रियाणां सप्तजातिकुलकोटिलक्षा

॥ टीका ॥

गा हंसा कलहंसा पायहंसा रायहंसा अडा सेडीबगा बलागा पारिप्पवा कुंचा सारसा मेसरा मसूरा मऊ रा सतवच्छा गहरा पोंडरीया कागा कामियुगा वंजुलगा तित्तिरा वट्टमा लावगा कवोया कविंजला पारे वया चिडगा चासा कुकुडा सुगा बरहिणा मदणसला कोकिला सेरहा वरेल्लग मादी। सेत्तं लोमपक्खी। से किंतं समुग्गपक्खी२ एगागारा प०, तेणं नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु भवंति। सेत्तं समुग्गपक्खी। से किंतं विततपक्खी२ एगागारा प०, तेणं नत्थि इहं बाहिरएसु दीवसमुद्देसु हवंति। सेत्तं विततपक्खी। तेस

॥ मूल ॥

गा विल्लगा । पारिपावा क्रौंच सारस मेसर मसूरो मयूर शतवच्छ गहर पोण्डरक काग कामजुगा विल्लगा । तित्तिरा वट्टगा लावगा कवोयाक विंजला पारेवया चिडगा चासा कुक्कुडा सुगा बग्गाहरिणा । तीतर वट्टक लावक कपोत कवेल्लल वारेवा चिटक नीलचास कूकडा सूवा बगला । मय णसिलागा कोइला सेहा चरिल्लगमाई । मयणपक्खी सलाक कोइल सेही चोलग इत्यादि । सेत्तं लोमपक्खी सेकिंतं समुग्गपक्खी २ एगागारा प० तं० । अनेरा लोमपक्खी तथाप्रकारे छिवे समुद्गकपक्षीनो एकहोज भेदछे पक्षी लोममानथी । तेणं नत्थि इहं बाहिरिएसु दीवसमुद्देसु हवंति । इण द्वीपामांहि नहीछै बाहिरला द्वीपसमुद्रामांहि हुवेछै। सेत्तं समुग्गपक्खी सेकिंतं वियतपक्खी २ एगागारा प० तं० । एतले समुद्गकपक्षी कह्या छिवे ते विततपक्षी ते विततपक्षीनो एकहोज भेदछै । तेणं नत्थि इहं बाहिरिएसु दीवसमुद्देसु हवंति । ते इणां अढाईद्वीप ते जंबूद्वीप धातकी पुष्करार्द्ध नही बाहिरिला द्वीपसमुद्रमांहि हुवे । सेत्तं वियतपक्खी ते समासओ दुविहा प०तं० । एतले विततपक्षी ते संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या तेकहेछै—समुच्छिमाय गब्भवक्कं

॥ भाषा ॥

णि, त्रीन्द्रियाणां सप्त, चतुरिन्द्रियाणां नव, जलचरपञ्चेन्द्रियाणां सार्द्धत्रयोदशानि, चतुःपदस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणां दश, उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणां दश, भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियाणांनव, खचरपञ्चेन्द्रियाणां द्वादशेति, उपसंहारमाह-सेत्तमित्यादि ॥ तदेवं मुक्ताः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः, सम्प्रतिमनुष्यान निर्दिदिक्षुराह-सेकिंतमित्यादि ॥ अत्रापि सम्मूर्च्छिममनुष्यविषये प्रवचनबहुमानतः शिष्याणामपि च साक्षाद्भग

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

मासन्न दुविहा प०, तं० संमुच्छिमा य गब्भवक्कंतिया य । तत्थणं जेते समुच्छिमा तेसब्बे नपुंसगा तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेणं तिविहा प०, तं० इत्थी पुरिसा नपुंसगा । एएसिणं एवमाइयाणं खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं बारसजाईकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं, सत्तठ जाइकुलकोडिलक्खनवअडतेरसाइंच । दसदसयहोंतिणवगा तहबारसचेववोधव्वा ॥१॥ सेत्तं खहयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया ॥ सेत्तं पंचिंदियतिरिक्खजोणिया ॥ सेत्तं तिरिक्खजोणिया ॥ से किंतं मणुस्सा२ दुविहा प०,

॥ भाषा ॥

तियाय । समूर्च्छिम गर्भज । तत्थणं जेते समुच्छिमा ते नपुंसगा । तिहां जे समूर्च्छिम ते सर्व नपुंसक । तत्थणं जेते गब्भवक्कंतिया तेण तिविहा प० तं० । तिहां जे गर्भज ते तीनभेदे कह्या ते कहेछै—इत्थी पुरिसा नपुंसगा । स्त्री पुरुष नपुंसक । एएसिणं एवमाइयाणं खहयरपंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं बारसजाईकुलकोडिजोणिप्पमुहसयसहस्सा हवंतीतिमक्खाय । खचरपंचो पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक पर्याप्ता अपर्याप्ता बारलाख कुल कोडि योनिप्रमुख बारलाख हुवे कह्या वीतराग- सत्तहजाइकुलकोडि लक्खनवअडतेरसाइव दसदसयहुंतिनवगा तहबारसचेववोधव्वा ॥ बेंद्रियने सात लाखकुलकोडी तेंद्रिय आठलाख चौरिन्द्रिय नवलाख जलचर पंचेंद्रिय १२ ॥ लाख चौपद थलचर पचेंद्रिय १० लाख उरपरसर्प थलचरपंचेंद्रिय दशला ख कुलकोडि भुजपरसर्प ९ लाख खचर १२ लाख । सेत्तं खहयर पंचि दयतिरिक्खजोणिया । एतले खचर पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक जाणवा । सेत्त तिरि क्खजोणिया सेकिंतं मणुस्सा २ दुविहा पं०तं० । हिवे तिर्यंचयोनिया कह्या ते हिवे मनुष्यनाभेद पूछेछै, ते मनुष्यना दोयभेद कह्या तेकहेछै—समुच्छि

॥ टीका ॥

वते द मुक्त मिति बहुमानोत्पादनार्थमन्तर्गत मालापकं पठंति-कहिणं भंते इत्यादि ॥ सुगमं नवरं ॥ सव्वेसु चेव असुइठाणेसुत्ति ॥ अन्यान्यपि या निकानिचित् मनुष्यसंसर्गवशादशुचिभूतानि स्थानानि तेषु सर्वेष्विति उक्ताः सम्मूर्च्छिममनुष्याः, अधुनागर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यप्रतिपादनार्थमाह-सेकिं तमित्यादि ॥ कम्मभूमिगा इति ॥ कर्म कृषिवाणिज्यादि मोक्षानुष्ठानं वा कर्म प्रधाना भूमि र्येषांते कर्मभूमा आर्षत्वात्समासान्तोऽप्रत्ययः कर्मभूमा एव कर्मभूमिका, एव मकर्मा यथोक्तकर्मविकला भूमि र्येषान्ते अकर्मभूमा स्ते एवा कर्मभूमिका, अन्तरशब्दो मध्यवाची अन्तरे लवणसमुद्रस्य मध्ये द्वीपाः अंतरद्वीपाः तद्वता अन्तरद्वीपगाः अस्ति पश्चानुपूर्वीतिन्यायख्यापनार्थं प्रथमतोन्तरद्वीपगान् प्रतिपादयति ॥ सेकिंतमित्यादि ॥ सुगमं नव र मष्टाविंशतिविधा इति यादृशा एव यावत्प्रमाणा यावदपान्तराला यन्नामानो हिमवत्पर्वतपूर्वापरदिग्व्यवस्थिता अष्टाविंशतिविधाः अन्तर

॥ मूल ॥

तं० संमूच्छिममणुस्सा य गब्भवक्कंतियमणुस्सा य । से किंतं संमुच्छिममणुस्सा , कहिणं भंते ! संमूच्छिम मणुस्सा संमुच्छंति ? गोयमा ! अंतो मणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवएसु गब्भवक्कंतियमणुस्साणं चेव उच्चारेसु वा पासवणेसु वा खेलेसु वा सिंघाणएसु वा वंतेसुवा पित्तेसुवा पूएसुवा सुक्केसुवा सुक्कपोग्गलपरिसाडेसु

॥ भाषा ॥

ममणुस्साय गब्भवक्कंतिय मणुस्साव । ते समूर्च्छममनुष्य गर्भजमनुष्य । सेकिंते समूर्च्छममणुस्सा । हिवे समूर्च्छिम मनुष्य कहेछै—कहणं भंते समूर्च्छिम मणुस्सा समुच्छंति । किम हेस्वामिन् ! समूर्च्छममनुष्य ऊपजै । अंतोमणुस्सखेत्ते पणयालीसाए जोयणसहस्सेसु । ४५ लाख योजन मनुष्यक्षेत्रमांहि । अ ढाइद्वीपसमुद्दसु पन्नरससुकम्मभूमीसु तीसाएअकम्मभूमीसु छपन्नाएअंतरदीवेसु ॥ अढाईद्वीप समुद्रमांहि १५ कर्मभूमिमांहि ३० अकर्मभूमिने वि षै ५६ अन्तरद्वीपनेविषै । गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु चेव । गर्भजमनुष्यना शरीरथी ऊपजै निसै । उच्चारेसुवा पासवणेसुवा खेलेसुवा सिंघाणेसुवा विएसुवा । वडीनीतिने विषै लघुनीतिने विषै श्लेष्मै नाकनामलमांहि वमनमांहि । पित्तेसुवा पूएसुवा सोणिएसुवा सुक्केसुवा सुक्कपुग्गलपरिसाडेसुवा । पित्तमांहि

॥ टीका ॥

द्वीपा स्तादृशा एव तावत्प्रमाणा स्तावदन्तराला स्तन्नामान एवं शिखरिपर्वतपूर्वापरदिग्व्यवस्थिता अपि ततो त्यन्तसदृशतया व्यक्तिभेद मनपेक्ष्य अन्तरद्वीपा अष्टाविंशतिविधा एव विवक्षिता इति तज्जाता मनुष्या अपि अष्टाविंशतिविधा उक्ता स्तानेव नामग्राहमु पदर्शयति-तंजहा एगोरुया इत्यादि ॥ एते सप्तचतुष्का अष्टाविंशतिसङ्ख्यत्वात् एते च प्रत्येकं हिमवति शिखरिणि तत्र हिमवद्गततयातावद्व्याख्यन्ते इह जम्बूद्वीपे भरतस्य हैमवतस्य च क्षेत्रस्य सीमाकारी भूमिनिमग्नपञ्चविंशतियोजनयोजनशतोच्छ्रयपरिमाणो भरतक्षेत्रापेक्षयाद्विगुणविष्कंभो हेमवय श्चीनपट्टवर्णोनानावर्ण

॥ मूल ॥

वा विगयकलेवरेसु वा इत्थीपुरिससंजोएसु वा नगरनिद्धमणेसु वा सव्वेसुचेव असुइएसु ठाणेसु एत्थणं संमुच्छिममणुस्सा संमुच्छंति, अंगुलस्स असंखिज्जइभागमित्तीए ओगाहणाए असन्नी मिच्छद्दिट्ठी अन्नाणी सव्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउया चेव कालं करंति । से किंतं गब्भवक्कंतियमणुस्सा २ तिविहा पन्नत्ता, तंजहा—कम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा अंतरदीवगा से किंतं अंतरदीवया ? अंतरदीवया अट्ठावीसतिविहा पन्नत्ता, तंजहा एगोरुया आभासिया वेसाणिया णंगोली १ हयकन्ना गयकन्ना गोक

॥ भाषा ॥

राधविषे सोणित रक्तमांहि शुक्रमांहि सूकापुद्गलनो नाखवो तेहनेविषे जीवविना कलेवरमांहि । थी परिससंजोएसुवा नगरनिद्धमणेसुवा गामनिद्धमणे सुवा सव्वेसुचेव असुइएसुठाणेसु । स्त्री पुरुष संयोगमांहि नगर खालमांहि ग्राम खालमांहि सगली अशुचि अपवित्र स्थानकमांहि । इत्थणं समुच्छिमा मणुस्सा समुच्छंति । इहां समूर्च्छिम मनुष्य उपजे । अंगुलस्स असंखिज्जइभागमित्तीए ओगाहणाए । प्रथमसमै अंगुलने असंख्यातभागे अवगाहना । असन्नी मिच्छादिट्ठी अन्नाणी सर्वाहिं पज्जत्तीहिं अपज्जत्तगा अंतोमुहुत्ताउयाचेव कालंकरंति । असन्नी मिथ्यादृष्टी अज्ञानी सर्वपर्याप्ति अपर्याप्ति अन्तर्मुहूर्त्त आउखो निश्चै कालकरे । सेत्तं समुच्छिममणुस्सा । ते समूर्च्छिममनुष्य कहिये । सेकिंतं गब्भवक्कंतियमणुस्सा २ तिविहा पं० तं० । हिवे ते गर्भजमनुष्य पूछै शिष्य गुरुकहै, ते गर्भजमनुष्यना तीनभेद कह्या तेकहेछै—कम्मभूमिगा १५ अकम्मभूमिगा ३० अन्तरदीवगा २ अट्ठावीसविहा पं० तं० । कर्मभू

॥ टीका ॥

विशिष्टद्युतिमणिनिकरपरिमण्डितोभयपार्श्वः सर्वत्र तुल्यविस्तारो गगनमण्डलोऽल्लेखि रत्नमयै कादशकूटोपशोभितो वज्रमयतलविविधमणिकनकमं डिततटनागदशयोजनावगाढपूर्वपश्चिमयोजनसहस्रायामदक्षिणोत्तरपञ्चयोजनशतविस्तारः पद्मद्रहशोभितशिरोमध्यभागः सर्वतः कल्पपादपश्रेणिर मणीयः पूर्वापरपर्यन्तात्र्यां लवणोदार्णवजलसंस्पर्शी हिमवन्नामपर्वत स्तस्य लवणोदार्णवजलसंस्पर्शादारभ्य पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि प्रत्येकं द्वे द्वे गजदंताकारे दन्ष्ट्रे विनिर्गते तत्र ऐशान्यांदिशि या विनिर्गता दंष्ट्रा तस्यां हिमवतः पर्यन्तादारभ्य त्रीणि योजनशतानि लवणमवगाह्या ऽत्रान्त रे योजनशतत्रयायामविष्कम्भः । किंञ्चिन्न्यूनैकोनपञ्चाशदधिकनवयोजनशतपरिरय एकोरुकनामाद्वीपोवर्त्तते-अयञ्च पञ्चधनुःशतप्रमाणविष्कंभया

॥ मूल ॥

न्ना सक्कुलिकन्ना २ आयंसमुहा मेंढमुहा अयमुहा गोमुहा ३ आसमुहा हत्थिमुहा सीहमुहा वग्घमुहा ४ आसकन्ना सीहकन्ना अकन्ना कण्णपाउरणा ५ उक्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा विज्जादंता ६ घणदंता लट्ठ दंता गूढदंता सुद्धदंता ७ । सेत्तं अंतरदीवगा । से किंतं अकम्मभूमिगा ? २ तीसतिविहा पण्णत्ता, तं० पंचहिं हेमवएहिं पंचहिं हेरण्णवएहिं पंचहिं हरिवासेहिं पंचहिं रम्मगवासेहिं पंचहिं देवकुरुएहिं पंचहिं

॥ भाषा ॥

मिना १५ अकर्मभूमिना ३० ५६ अन्तरद्वीपमांहि मनुष्य २८ भेदे कह्या ते कहेछै—एगरुया आभासिया वेसाणिया लंगोली ४ । एकोरुक आभासिक वेसा णी लांगोली । हयकण्णा गयकण्णा गोकण्णा मकुलिकण्णा ८ । हयकर्ण गजकर्ण गोकर्ण मकुलकर्ण । आयंसमुहा मेंढमुहा अयमुहा गोमुहा आसमुहा ह त्थिमुहा सीहमुहा वाघमुहा १६ । आदंशमुखा मेषमुखा अयमुखा गोमुख अश्वमुख हस्तिमुख सिंहमुख व्याघ्रमुख । अश्वकर्णा सीहकर्णा अकर्णा कर्णप्रा वरणा २० । अश्वकर्ण सिंहकर्ण अकर्ण कर्णप्रावर्ण । उल्कामुहा मेहमुहा विज्जुमुहा २३ । उल्कामुख मेघमुख विद्युन्मुख । विज्जुदंता घणदंता लट्ठदंता गू ढदंता सुद्धदंता चित्तादया २८ । विद्युद्दन्ता घनदंता लष्टदंता गूढदंता शुद्धदन्ता चित्तआदि ए २८ ते । सेत्तं अंतरदीवगा । अन्तरद्वीप २८ शिखरीपर्वत पश्चिमें २८ जीवाभिगम टीकामांहि विस्तरपणें । सेकिंतं अकम्मभूमिगा २ तीसइविहा पं०तं० । हिवे अकर्मभूमिना तीसभेदछै तेकहेछै—पंचहिं हेमवए

द्विगव्यूतोच्छ्रितया पद्मवरवेदिकया सर्वतः परिमण्डितः तस्या श्च पद्मवरवेदिकाया वर्णको जीवाभिगमटीकाया मिव वेदितव्यः, सा पि च पद्म वरवेदिका सर्वतः समन्तत्येन वनखण्डपरिक्षिप्ता वना श्च वनखण्डस्या ऽयं विशेषः, प्रायो बहूनां समानजातीयाना मुत्तमानां महीरुहाणां समुदायो वनं यथा ऽशोकवनं चम्पकवनमिति, अनेकजातीयाना मुत्तमानां महीरुहाणां समूहो नवखण्डः, उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायां-एगजाइएहिं रुक्खेहिं वण अणेगजाइएहिं उत्तमेहिं वणसंडे इति। तस्य च वनखण्डस्य चक्रवालतया विष्कम्भो देशोने द्वे योजने परिक्षेपः पद्मवरवेदिकाप्रमाणः अस्य च वनखण्डस्यवर्णकः प्रतिपादितोस्ति स चा तीवगरीयानिति नो पदर्शितः॥ केवलं जीवाभिगमटीकातो वसेयः, तस्यैव हिमवतः पर्वतस्य पर्यन्तादारभ्य दक्षिणपूर्वस्यां दिशि त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्र मवगाह्य द्वितीयदन्त्राया उपरि एकोरुकद्वीपप्रमाण आभासिकनामद्वीपो वर्त्तते' तथा तस्यैव हिमवतः पश्चिमायां दिशि पर्यंता दारभ्य दक्षिणपश्चिमायां नैऋतकोण इत्यर्थः, त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्र मवगाह्य

---

दन्त्राया उपरि यथोक्तप्रमाणो वैषाणिकनामा द्वीपः, तथा तस्यैव हिमवतः पश्चिमायां दिशि पर्यन्ता दारभ्य पश्चिमोत्तरस्यां दिशि वायव्यकोणे इत्यर्थः' त्रीणि योजनशतानि लवणसमुद्रमध्ये दन्त्रामतिक्रम्या ऽन्तरे पूर्वोक्तप्रमाणो नांगोलिकनामा द्वीपः एव मेते चत्वारो द्वीपा हिमवत श्चत सृष्वपि विदिक्षु तुल्यप्रमाणा अवतिष्ठंते, उक्तं च-चुल्लहिमवंतपुव्वा वरेणविदिसासुसागरन्तिसए। गंतूणंतरदीवा तिण्णिसए हुंति विच्छिन्ना ॥ १ ॥ अउणापन्ननवसए किंचूणपरिहि तेसि मे नामा एगोरुय आभासिय वेसाणिय चेव नंगूली ॥२॥ तत एषा मेकोरुकादीनां चतुर्णां द्वीपानां परतो यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येकं चत्वारि २ योजनशतान्य तिक्रम्य चतुर्योजनशताबामविष्कम्भाःकिंचिन्न्यूनपंचषष्टिसहितद्वादशयोजनशतपरि क्षेपा यथोक्तपद्मवरवेदिकावनखण्डमंडितपरिसरा जम्बूद्वीपवेदिकात श्चतुर्योजनशतप्रमाणान्तरा हयकर्णगजकर्णगोकर्णशष्कुलीकर्णनामानश्चत्वारो द्वीपा स्तद्यथा-एकोरुकस्य परतो हयकर्णः' आभासिकपरतो गजकर्णः, वैषाणिकस्य परतो गोकर्णः, नांगोलिकस्य परतः शष्कुलीकर्णइति, तत

एतेषा मपि हयकर्णादीनां परतः पुन रपि यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येकं पञ्च २ योजनशतानि व्यतिक्रम्य पञ्चयोजनशतायामविष्कंभा एका शीत्यधिकपञ्चदशयोजनशतपरिक्षेपाः पूर्वोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डमण्डितबाह्यप्रदेशाः जम्बूद्वीपवेदिकातः पञ्चयोजनशतप्रमाणान्तरा आ दर्शमुख १ मेंढमुख २ अयोमुख ३ गोमुख ४ नामानश्चत्वारोद्वीपा स्तद्यथा-हयकर्णस्य परत आदर्शमुखो गजकर्णस्य पुरतो मेण्ढमुखः गोकर्णस्य परतो ऽयोमुखः शष्कुलीकर्णस्य पुरतो गोमुख इति' एव मग्रेपि भावना कार्या, एतेषा मप्या दर्शमुखादीनां चतुर्णां द्वीपानां परतो भूयो पि यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येकं षट्षट्योजनशतान्य तिक्रम्य षट्योजनशतायामविष्कंभाः सप्तनवत्यधिकाष्टादशयोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमा णपद्मवरवेदिकावनखण्डमण्डितपरिसरा जम्बूद्वीपवेदिकातः षट्योजनशतप्रमाणांतरा अश्वमुखहस्तिमुखसिंहमुखव्याघ्रमुखनामान श्चत्वारो द्वीपाः, एतेषा मप्य ऽश्वमुखादीनां चतुर्णां द्वीपानां परतो यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येकं सप्तयोजनशतान्य तिक्रम्य सप्तसप्तयोजनशतायामविष्कंभा

---

स्त्रयोदशाधिकद्वाविंशतियोजनशतपरिरयाः पूर्वोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डसमवगूढा जम्बूद्वीपवेदिकातः सप्तयोजनशतप्रमाणान्तरा अश्वकर्ण हरिकर्णअकर्णकर्णप्रावरणनामान श्चत्वारो द्वीपा स्तत एतेषा मश्वकर्णादीनां चतुर्णां द्वीपानां परतो यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येक मष्टा वष्टौ योजनशतान्य तिक्रम्याष्टयोजनशतायामविष्कंभा एकोनत्रिंशदधिकपञ्चविंशतियोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डमण्डितपरि सरा जम्बूद्वीपवेदिकातोऽष्टयोजनशतप्रमाणान्तरा उल्कामुखमेघमुखविद्युन्मुखविद्युद्दन्तानिधाना श्चत्वारो द्वीपास्ततो ऽमीषा मप्युल्कामुखादीनां चतुर्णां द्वीपानां परतो यथाक्रमं पूर्वोत्तरादिविदिक्षु प्रत्येकं नवनवयोजनशतानि व्यतिक्रम्य नवनवयोजनशतायामविष्कंभाः पञ्चचत्वारिंशदधिका ष्टाविंशतियोजनशतपरिक्षेपा यथोक्तप्रमाणपद्मवरवेदिकावनखण्डसमवगूढा जम्बूद्वीपवेदिकातोनवयोजनशतप्रमाणान्तरा घनदन्तलष्टदन्तगूढदन्त शुद्धदन्तनामान श्चत्वारो द्वीपा एव मेते हिमवति पर्वते चतसृषु विदिक्षु व्यवस्थिताः सर्वसंख्यया अष्टाविंशतिः, एवं हिमवत्तुल्यवर्णप्रमाणे पद्म

॥ टीका ॥

द्रहप्रमाणायामविष्कंभावगाढपुण्डरीकद्रहोपशोभिते शिखरिण्यपि पर्वते लवणोदार्णवजलसंस्पर्शादारभ्य यथोक्तप्रमाणान्तरासु चतसृषु विदिक्षु व्यवस्थिता एकोरुकादिनामानो क्षुण्णान्तरालायामविष्कम्भा अष्टाविंशतिसङ्ख्या द्वीपा वक्तव्याः सर्वसङ्ख्या षट्पञ्चाशदन्तरद्वीपाः, एतद्गता मनुष्या अप्ये तन्नामान उपचारा द्रवन्ति चतात्स्थ्यात्तद्व्यपदेशो यथा पञ्चालदेशनिवासिनः पुरुषाः पञ्चाला इति, तेचमनुष्या वज्रर्षभनाराचसंहननिनः ककुक्षिपरिणामाः अनुलोमवायुवेगाः समचतुरस्रसंस्थाना स्तद्यथा-सुप्रतिष्ठितकूर्मचारुचरणाः सुकुमालश्लक्ष्णप्रविरलरोमकुरुविन्दवृत्तजङ्घा युगलाः निगूढसुबद्धसन्धिजानुप्रदेशाः करिकरसमवृत्तोरवः कण्ठीरवसदृशकटीप्रदेशा शक्रायुधसममध्यभागाः प्रदक्षिणावर्त्तनाभिमण्डलाः श्रीवत्सलाञ्छित विशालमांसलवक्षस्थलाः पुरपरिघानुकारिदीर्घबाहवः सुश्लिष्टसन्धिबन्धा रक्तोत्पलपत्रानुकारिशोणिमपाणिपादतलाः चतुरङ्गुलप्रमाणसमवृत्तकम्बुग्री वाः शारदशशांकसोमवदनाः च्छत्राकारशिरसो ऽस्फुटितस्निग्धकान्तिश्लक्ष्णमूर्द्धजाः कमण्डलुकलशसूपस्तूपवापीध्वजपताकास्वस्तिकयवमत्स्य मक रकूर्मरथवरस्थालशुक्तिपादांकुशसुप्रतिष्ठमयूरश्रीदामाभिषेकतोरणमेदिनीजलधिवरभवनादर्शपर्वतगजवृषभसिंहचामररूपप्रशस्तोत्तमद्वात्रिंशल्लक्षण

---

॥ मूल ॥

ऊत्तरकुरुएहिं सेत्तं अकम्मभूमगा। से किंतं कम्मभूमगा ? २ पण्णरसविहा पण्णत्ता, तंजहा पंचहिं भरहेहिं पंचहिं एरवएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं ते समासतो दुविहा पण्णत्ता, तंजहा आयरिया य मिलक्खू य। से

---

॥ भाषा ॥

हि पंचहिरण्णवएहिं पंचहि हिरण्णवासेहिं पंचहि रम्मगवासेहिं पंचहिं देवकुराहिं पंचहिं उत्तरकुराहिं। पांच हेमवन्त क्षेत्रकरी पांच हिरण्यपर्वत क्षेत्रक री पांच हिरण्यवर्ष क्षेत्रकरी पांच रम्यकक्षेत्रकरी पांच देवकुरु क्षेत्रकरी पांच उत्तरकुरु क्षेत्रकरी। सेत्त अकर्मभूमिगा सेकित कर्मभूमिगा २ पण्णरस विहा पं० तं०। ते अकर्मभूमि कहिये हिवे कर्मभूमि पूछे गुरुकहे १५ प्रकार कह्या ते कहेछे—पंचहिं भरहेहिं पंचहिं ऐरवएहिं पंचहिं महाविदेहेहिं एते समासओ दुविहा पं०तं०। पांच भरतेकरी ५ ऐरवते करी ५ महाविदेहेकरी ए संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे—आयरियाय मिलिक्खू य। आर्यमनुष्य दूजा म्लेच्छमनुष्य। सेकितं मिलक्खू २ अणेगविहा प० तंजहा। हिवे म्लेच्छमनुष्य ते अनेकप्रकारे कहे। जवना चिलाया सबरा बब्ब

॥ टीका ॥

धराः, स्त्रियोऽपि सुजातसर्वाङ्गसुन्दर्यः समस्तमहिलागुणसमन्विताः संहतांगुलिपल्लवत् सुकुमारकूर्मसंस्थानमनोहारिचरणाः रोमरहितप्रशस्तल क्षणोपेतजङ्घायुगला विगूढमांसलजानुप्रदेशाः कदलीस्तम्भनिभसंहतसुकुमारपीवरोरुकाः वदनायामप्रमाणत्रिगुणमांसलविशालजघनधारिण्यः स्निग्ध कान्तिसुविभक्तश्लक्ष्णरोमराजयः प्रदक्षिणावर्त्ततरंगभंगुरनाभिमण्डलाः प्रशस्तलक्षणोपेतकुक्षयः सङ्गतपार्श्वाः कनककलशोपसंहतात्युन्नतवृत्ताकृतिपीवर पयोधराः सुकुमारबाहुलतिकाः सौवस्तिकशङ्खचक्राद्याकृतिलेखालङ्कृतपाणिपादतला वदनत्रिभागोच्छ्रितमांसलकम्बुग्रीवा प्रशस्तलक्षणोपेतमांसल हनुविभागा दाडिमीपुष्पानुकारिशोणिमाधरोष्ठाः रक्तोत्पलतालुजिह्वा विकसितकुवलयपत्रायतकान्तलोचना आरोपितचापपृष्ठाकृतिसुसङ्गतभ्रूलता काः प्रमाणोपपन्नललाटफलकाः सुस्निग्धकान्तश्लक्ष्णशिरोरुहाः पुरुषेभ्यः किंचिद् नोच्छ्रायाः स्वभावतउदारशृङ्गारचारुवेषाः प्रकृत्यैव हसितभणित विलासविषयपरमनैपुण्योपेता, स्तथा मनुष्या मानुष्य श्च स्वभावत एव सुरभिवदनाः प्रतनुक्रोधमानमायालोभाः सन्तोषिणो निरुद्धबचा मार्दवार्जवसम्पन्नाः सत्यपि मनोहारिणि मणिकनकमैरक्तिकादौ ममत्वकारणे ममत्वाभिनिवेशरहिताः सर्वथाऽपगतवैरानुबंधा हस्त्यश्वकरभूगोमहिष्यादिसद्भावेऽपि तत्परिभोगे पराङ्मुखाः पादविहारिणो ज्वरादिरोगयक्षभूतपिशाचादिग्रहमारिव्यसनोपनिपातविकलाः परस्परप्रेष्यप्रेषकभावर

---

किंतं मिलक्खू ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा सग जवण चिलाय सबर बब्बर काय मुरुंडोड्ड भडग णिण्णग पक्कण णीय कुलक्ख गोरह सीहला पारस गोधजुंध दमिल चिल्लल पुलिंद हारोस दोवयोक्काण गंध

॥ मूल ॥

---

रा काय मुरंडो डभडग तिण्णग पक्कणि । यवनदेशना चिलातदेशना सबरदेशना बब्बरदेशना कायदेशना मुरुडदेशना डभडगदेशना तीर्णगदेशना पक्कण शना । कुलक्खदेशना गौंड सीहल पारस कौंच अरबड दमिल चिल्लण पुलिंद हारोस द्रोव वक्काण गंधहारग बहलिय अज्जल रोमा पासा बउसा मल याय बंधयाय । कुलखदेशना गौंडना सिंहलना पार्श्वना कौंचना अरबडना दमिलना चिल्लण पुलिंदना हारोसना द्रोवना वक्काणना गन्धाहारना बह लना अर्ज्जलना रोमना पार्श्वना पद्मना मलयना बधुना । मूयलि कोकणग मेयएहवा मालव मगर अभासिया कण्णवीर लहासीय खुरा खासिय नेउर

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

हित्वा दऽङ्गमिंद्राः, तेषां पृष्टकरण्डकानि चतुःषष्टिसङ्काकानि चतुर्थातिक्रमेण चा हारग्रहणं आहारो पि न शाल्यादिधान्यनिष्पन्नः किंतु पृथिवीमृत्तिका कल्पद्रुमाणां पुष्पफलानि च, तथा हि जायन्ते खलु तत्रापि विश्रसा त एव शालिगोधूममाषमुद्गादीनि धान्यानि परं न तानि मनुष्याणा मुपभोग गच्छन्ति या तु पृथिवी सा शर्करातो ऽप्यनतगुणमाधुर्या य च कल्पद्रुमपुष्पफलाना मास्वादः स चक्रवर्त्तिभोजना दप्य धिकगुणः, तथा चोक्तं-तेसिणं भंते पुप्फफलाणं केरिसे आसाए पन्नत्ते गो० ? से जहा नाम ए रन्नो चाउरंतस्सचक्कवट्टिस्स कल्लाणे जोयणजाए सयस्ससहस्सनिप्पन्ने वन्नोववेएगधोववेएरसोववेएफासोववेए आसायणिज्जदप्पणिज्जे मयणिज्जे विहणिज्जे सव्विंदियगायपल्हायणिज्जआसाएणं पन्नत्ते एत्तो इट्ठतराए चेव पन्नत्ते ततः पृथिवीकल्पद्रुमपुष्पफलानि च तेषा माहारः तथाभूत माहार माहार्य प्रासादादिसस्थाना ये गृहाकाराः कल्पद्रुमास्तेषु यथासुखम वतिष्ठन्ते, न च तत्र क्षेत्रे दशमशकयूकामत्कुणमक्षिकादयः शरीरोपद्रवकारिणो जन्तव उपजायन्ते ये ऽपि जायन्ते भुजगव्याघ्रसिंहादयः ते पि मनुष्याणां न बाधायै प्रभवंति नापि ते परस्परं हिंस्यहिंसकभावे वर्त्तन्ते क्षेत्रानुभावतो रौद्रानुभावरहितत्वात्, मनुष्ययुगलानि च पर्यवसानसमये युगलं प्रसवंते तच्च युगलमेकोनाशीतिरहोरात्राणि पालयन्ति तेषां शरीरोच्छ्रयो ऽष्टौ धनुःशतानि पल्योपमा सङ्ख्येयभागप्रमाणा मायु रुक्तंच अतरदीवेसु नरो धणुसयमट्ठुस्सिया सया मुइया। पालंति हुणधम्मं पल्लस्सऽसंखभागाऊ ॥ १ ॥ चउसट्ठीपिट्ठकरंडयाणि मणुयाण तेसि माहारो। भत्तस्सचउत्थस्सय गुणसीइदिणाणि पालणया ॥ २ ॥ स्तोककषायतयास्तोकप्रेमानुबन्धतयात्वं ऽते मृत्वा दिव मुपसर्पंति मरणं च तेषां

॥ मूल ॥

हारग वहलिय झुज्जल रोम पास वउसा मलयाय बंधुयाय सूयलि कुंकुणगमेझ पराहव मालव मग्गर झाभासिय कण वीरण रहासीय खसखासिय नेदूर मढ ढोंबिलग लउस खउस क्कोंकुया झुरचागा कुरु ग

॥ भाषा ॥

मढ ढोंबिल गल उसल बउस कर्कोत अरबा गहण रोम गहण रोमग मरु मरुय चिलाय विसयवासीय एवमाई। सूयलना कोंकणना कनकना मेदना मालवना मगरना अभासिकना कणवीरना रहासिना खडना खासिय नेदरना मढना ढोंबिलना गलमा उसलना बउसना कर्कोतना अर्बना गौष

॥ टीका ॥

जृंजकाकाशशुतादिमात्रव्यापारपुरस्सरं भवति न शरीरपोषारम्भपुरस्सर मिति, तदेव मुक्ता यन्तरद्वीपगाः सम्प्रति अकर्मभूमिकप्रतिपादनार्थं माह-सेकिंत मित्यादि ॥ अथ के ते अकर्मभूमिकाः ? सूरिराह-अकर्मभूमिकास्त्रिंशद्विधाःप्रज्ञप्ताः-तत्त्रिंशद्विधत्वंक्षेत्रभेदात्-तथा चाह-तंजहा पंचहिहेमवतएहिंइत्यादि ॥ पञ्चभिर्हैमवतैः पञ्चभिर्हैरण्यवतैः पञ्चभिर्हरिवर्षैःपञ्चभि.रम्यकवर्षैः पञ्चभि र्देवकुरुभिः पञ्चभि रुत्तरकुरुभि र्निद्य माना स्त्रिंशद्विधा भवन्ति षणां पञ्चानां त्रिंशत्सङ्ख्यात्मकत्वात्, तत्र पञ्चसु हैमवतेषु मनुष्या गव्यूतप्रमाणशरीरोच्छ्रयाः पल्योपमायुषो वज्रर्षभ नाराचसंहननिनः समचतुरस्रसंस्थानाः चतुःषष्टिपृष्टकरण्डका श्चतुर्थातिक्रमभोजिनः एकोनाशीतिदिनान्यपत्यपालका उक्तंच-गाउयमुच्चा पलिउं व माउणो वज्जरिसहसघयणा । हेमवएरन्नवए अहमिंदनरा मिहुणवासी ॥ १ ॥ चउसट्ठीपिट्ठकरंडया गमणुयाण तेसिं आहारो । भत्तस्सचउत्थस्सय गुणसिइमिणवच्चपालणया ॥ २ ॥ पञ्चसुहरिवर्षेषु पञ्चसुरम्यकेषुद्विपल्योपमायुषो द्विगव्यूतप्रमाणशरीरोच्छ्रया वज्रर्षभनाराचसंहनिनाः समचतुर स्रसंस्थानाः षष्ठभक्तातिक्रमाहारग्राहिणो ऽष्टाविंशत्यधिकशतसङ्ख्यपृष्टकरण्डका श्चतुःषष्टिदिनान्य पत्यपालका, आह च-हरिवासरम्यएसु आउप माणं सरीरमुस्सेहो । पलिउवमाणि दोन्निय दोन्नियकोसुस्सिया भणिया ॥ १ ॥ छट्ठस्सय आहारो चउसट्ठिदिणाणि पालणा तेसिं । पिट्ठकरंडा

॥ मूल ॥

रोमग भमरु विलाय वासीय एवमादी ॥ सेत्तंमिलक्खू ॥ से किंतं अायरिया ? अायरिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा इड्ढिपत्तारिया य अणिड्ढिपत्तारिया य । से किंतं इड्ढिपत्तारिया ? २ छव्विहा पन्नत्ता, तंजहा—

॥ भाषा ॥

ना रोमना गौणना रोमना मरुना मरुजना चिलातना इणां देशाबाशी इणतर आदिदई । सेत्तं मिलक्खू । म्लेच्छदेश कहिये । सेकिंतं आयरिया दु विहा पंणत्ता त० । हिवे आर्यदेश केतलाप्रकारे दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे—इड्ढिपत्तायरिया अणिड्ढपत्तायरिया । ऋद्धिवन्त आर्यमनुष्य ऋद्धिविना आर्यविना मनुष्य । सेकिंतं इड्ढपत्तायरिया २ छव्विहा पंणत्ता त० । हिवे ऋद्धिवंत आर्यमनुष्य छप्रकारे कह्या ते कहेछे—अरिहंता चक्कवट्टी वलदेवा वासुदेवा चारणा विद्याहरा । अर्हन्त चक्रवर्त्त वलदेव वासुदेव चारण विद्याधर श्रमण । सेत्तं इड्ढिपत्तायरिया । एतलेभेदे ऋद्धिवन्त कह्या आर्य ।

॥ टीका ॥

णसयं अठावीसं मुणेयव्वं ॥ २ ॥ पंचसुदेवकुरुसु पंचस्वुत्तरकुरुसु त्रिपल्योपमायुषो गव्यूतत्रयप्रमाणशरीरोच्छ्रयाः समचतुरस्रसंस्थान वज्रर्षभनाराचसं हननिः, षष्टपचाशदधिकशतद्वयप्रमाणपृष्टकरण्डका अष्टमभक्तातिक्रमाहारिण एकोनपंचाशद्दिनान्यपत्यपालकाः, तथोक्तंच-दासुविकुरूसुमणुया तिपल्लपरमाउणोतिकोसुच्चा । पिट्ठकरण्डसयाइं दोछप्पन्नाइंमणुयाणं ॥ १ ॥ सुसमसुसमाणुभावं अणुभवमाणाणवच्चगोवणया । अउणापन्नदिणाइं अट्ठमभत्तस्स आहारो ॥ २ ॥ एतेषु सर्वेष्वपिक्षेत्रेष्वन्तरद्वीपेष्विव मनुष्याणा मुपयोगाः कल्पद्रुमसम्पादिताः नवर मन्तरद्वीपापेक्षया पञ्चसु हैरण्यव तेषुमनुष्याणा मुत्थानबलवीर्यादिकं कल्पपादपफलानामास्वादोऽनुभवोमार्धुर्यमित्येवमादिकाभावाः पर्याया नधिकृत्या नन्तगुणा द्रष्टव्याः, तेभ्यो ऽपि पञ्चसुहरिवर्षेषु एच्चसु रम्यकवर्षेषु अनन्तगुणा स्तेभ्यो ऽपि पञ्चसु देवकुरुषु पञ्चसू त्तरकुरुषु नन्तगुणाः, तदेव मुक्ता अकर्मभूमिकाः सम्प्रतिक र्मभूमिकप्रतिपादनार्थमाह-सेकिन्तमित्यादि अथ के ते कर्मभूमिकाः सूरिराह-कर्मभूमिकाः पञ्चदशविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्य पञ्चदशविधत्वंक्षेत्रभेदात् तथा चाह-पचहिं भरतेहिं इत्यादि । पञ्चभिर्भरतैः पञ्चभिरैरावतैःपञ्चभिर्महाविदेहैर्निद्यमानाः पञ्चदशविधा भवन्ति, ते च पञ्चदशविधाः

॥ मूल ॥

अरहंता चक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा चारणा विज्जाहरा ॥ सेत्तं इड्ढिपत्तारिया ॥ से किंतं अणिड्ढिपत्तारिया ? २ नवविहा पन्नत्ता, तंजहा खेत्तारिया जातिअारिया कुलारिया कम्मारिया सिप्पारिया भासारिया

॥ भाषा ॥

सेकिंतं अणिड्ढपत्तायरिया २ नवविहा पं० तं० । हिवे कुण अनऋद्धि, आर्य नवप्रकारे कह्या तेकहेछे—खित्तआर्यरिया जातिआर्यरिया कुलआर्यरि या कम्मआर्यरिया सिप्पआर्यरिया भासारिया नाणयरिया दंसणअरिया चरित्ताअरिया । क्षेत्रार्य तीर्थंकर ऊपजे ते तीर्थंकरक्षेत्र जातिआर्य जेहनो जातिप्रसिद्ध कुलउत्तम ऊपना कुलार्य कर्मविज्ञानविषे डाहा शिल्पविषे आर्य भाषाआर्य बोलवेआर्य ज्ञानेआर्य दर्शनेकरीआर्य चारित्रेकरीआर्य । सेकिं तं खित्तायरिया २ अडछव्वीस तिविहा पं० तं० । हिवे क्षेत्रार्यना २५॥ साढापचवीस भेदकह्या तेकहेछे—रायगिहमगहचंपा अंगतहातामलित्तिबगा य कंचलपुरंकलिंग वाणारसिचेवकासीया । राजगृही नगरी मगधदेश चम्पानगरी अंगदेश तिम तामलिसानगरी बंगदेश कञ्चनपुरी कलिंगदेश बा

॥ टीका ॥

समासतोद्विधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-आर्या म्लेच्छा श्च तत्रारात् हेयधर्मेभ्यो याताः प्राप्ता उपादेयधर्मैरित्यार्याः पृषोदरादय इति रूपनिष्पत्तिः म्लेच्छा अव्यक्तभाषासमाचारा म्लेच्छाव्यक्तायां वाचि इति वचनात् भाषाग्रहणं चोपलक्षणं तेन शिष्टा, संमत सकलव्यवहारा म्लेच्छा इति प्रतिपत्तव्यं, तत्रा ल्पवक्तव्यत्वात् प्रथमतो म्लेच्छवक्तव्यतामाह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते म्लेच्छा मिलक्खू ? इतिनिर्देशः प्राकृतत्वा दार्षत्वा च सूरिराह-म्लेच्छा अनेकविधाः प्रज्ञप्ताः तद्या नेकविधत्वं शकयवनचिलातशबरबर्बरादिदेशभेदात्-तथाचाह तंजहा सगेत्यादि शकदेशनिवासिनः शकाः यवनदेशनिवासिनोयवना एवं सर्वत्र नवरं ममी नानादेशालोकतो विज्ञेयाः। आर्यप्रतिपादनार्थमाह-सेकिंतमित्यादि॥ सुगमं नवरं रायगिहेत्यादि ॥ राजगृहं नगरं मगधाजनपदः एवं सर्वत्राप्युत्तरसंस्कारोविधेयः प्रावार्थस्त्वय मगधेषुजनपदेषु राजगृहं नगर १ अंगेषुचंपा २ बंगेषुतामलित्ती ३ कलिंगेषुकांचनपुरं ४ काशीषु वाणारसी ५ कोसलासु साकेतं ६ कुरुषु गजपुरं ७ कुसावर्त्तेषु सौरिकं ८ पञ्चालेषु काम्पिल्यं ९ जङ्गलेषु अहिच्छत्ता १० सुराष्ट्रेषु द्वारावती ११ विदेहेषु मिथिला १२ वत्सेषु कौशाम्बी १३ शाण्डिल्येषु नन्दिपुरं १४ मलयेषु भद्दिलपुरं १५ वत्सेषु वैराट

॥ मूल ॥

णाणारिया दंसणारिया चरित्तारिया । से किंतं खेत्तारिया ? २ अट्ठवीसतिविहा पण्णत्ता, तंजहा रायगिहमगहचंपा अंगामहतामलित्तिबंगा य । कंचणपुरंकलिंगा वाणारसि चेव कासीय ॥ १ ॥ साएयकोस

॥ भाषा ॥

राणसीनगरी निवै काशी। साएयकोसलागाय पुरंचकरसोरियकुसट्टाय कांपिल्लपंचाले अहिछत्ताजंगलाचेव। साकेतनगर कोशलदेश गजपुर कुरु सौरी नगर कुश कांपिलनगर पञ्चालदेश अहिछत्रानगरी आंयसा जङ्गलदेश निवै। दारवइयसुरट्ठा मिहिलविदेहायवत्थकोसबी नंदीपरसंडिल्ला भद्दिलपुरचेवमलयाय। द्वारिकानगरी सोरठदेश मिथिलानगरी विदेहदेश कोसंबी नगरी वच्छदेश नन्दिपुर सांडिलदेश भद्दलपुर निवै मलयदेश। वइराडिच्छवरणा अच्छातहमित्तियाविदसन्ना सोत्तियमइयादेवी बीतभयसिंधुसोबीरा। वैराटदेश मच्छनगर वरणदेश वच्छापुरी मृत्तिकावतीनगरी दशार्णदेश सोक्तिकावतीनगरी विदेहदेश बीतभयनगर सिंधुदेश सोवीरदेश। महुरायसूरसेणा पावाभंगीयमासपुरवट्टा सावत्थीयकुणाला कोडिवरिसावलाटाय।

॥ टीका ।

पुरं १६ वरणेषु अच्छापुरी १७ दशार्णेषु मृत्तिकावती १८ चेदिषु शौक्तिकावती १९ वीतभयं सिन्धुषु २० सौवीरेषु मथुरा २१ शूरसेनेषु पापा २२ भङ्गेषु मासपुरिवट्टा २३ कुणालेषु श्रावस्ती २४ लाटासु कोटीवर्षं २५ श्वेताम्बिका नगरी केकयजनपदस्यार्द्धं एतावद् द्वैषद्विंशतिजनपदात्मकं क्षेत्र मार्यं ज्ञापितं, कुत इत्याह-जत्थुप्पत्तिइत्यादि ॥ यस्मा दत्र एतेषु अर्द्धषड्विंशतिसङ्ख्येषु जनपदेषु उत्पत्ति र्जिनानां तीर्थंकराणां चक्रवर्त्तिनां रामाणां बलदेवानां कृष्णानां वासुदेवानां तत आर्यं एते न क्षेत्रार्यानार्यव्यवस्थिता दर्शिता, यत्र तीर्थंकरादीना मुत्पत्ति स्तदार्यं शेषमनार्यमिति, उक्ताः क्षेत्रार्याः सम्प्रतिजात्यार्यप्रतिपादनार्थं माह-सेकिंतमित्यादि सुगमं ॥ नवरं यद्यपि शास्त्रान्तरेष्व नेकजातय उपवर्ण्यन्ते तथापि लोके एता एव अम्ब ष्ठकलिन्दवैदेहवेदङ्गहरितचुञ्चुणरूपा इभ्यजातयो भ्यर्चनीया जातयः प्रसिद्धा स्तत एताभि जातिभि रुपपेता जात्यार्या न शेषजातिभिः ॥ तुन्नागा इत्यादि ॥ तुण्णाकासूच्याजीविनः तन्तुवायाः कुविन्दाः पट्टकाराः पट्टकूलकुविन्दाः देयडा हृतिकारा वरुडा विच्छिका जल्लिका कटादिकाराः ॥ कठपाउ

॥ मूल ॥

लागय पुरंचकुरुसोरियंकुसट्टा य । कंपिल्लंपंचाला अहिछत्ताजंगलाचेव ॥ २ ॥ दारवतीयसुरट्ठा मिहिलविदेहायवच्चकोसंबी । नंदिपुरंसंडिल्ला भद्दिलपुरमेवमलया य ॥ ३ ॥ वइराडवच्चवरणा अच्छातहमत्तियावइदससण्णा । सोत्तियमइयावेदी वीइभयंसिंधुसोवीरा ॥ ४ ॥ मक्कायसूरसेणा पावाभंगीयमासपुरिवट्टा । सावत्थीयकुलाणा कोडीवरिसंचलाढाय ॥ ५ ॥ सेयंवियाविणयनगरी केयइअद्धचउरारियंजणियं । एत्थुप्प

॥ भाषा ॥

मथुरानगरी सूरसेनदेश पावानगरी भङ्गदेश मासपुर साक्ष्योनगरी कुणालदेश कोटिवर्षनगरी लाटदेश । सेयंवियाविणयरी केइअद्धचउहोइआयरियं इ त्थुप्पत्तिजिणाण चक्कीणरामकण्हाण । खेताम्बिकानगरी विनीता केई अद्धदेश केइक अद्धछवे आर्य इणां देशांतरोत्पत्ति जिन चक्री बलदेव कृष्ण । सेसं खेत्तारिया । तेम टे क्षेत्रआर्यदेश । सेकिंतं जातिआरिया २ छव्विहा प० त० । छिवे जातिआर्य कहेछे—ते जातिआर्य छप्रकारे कह्या तेकहेछे । अं बट्ठायकलिंदा विदेहायवेदगाइय हरियाचुंचुणाचेव छप्पियाइभजाइओ । अम्बष्ठानाम कलिंदानामे विदेहनामे चंदगाइयनामे हरिननामे चम्चुणनामे ए

॥ टीका ॥

यारा ॥ काष्टपादुकाकारा एवं ॥ मुंजपाउयारा छत्तारा ॥ छत्राकारा एवं शेषाण्यपिपदानि भावनीयानि, बंभीजवणाणियाइत्यादि ॥ ब्राह्मी यवनानी त्यादयो लिपिभेदा स्तु सम्प्रदाया दवसेयाः, उक्ता भाषार्याः सम्प्रतिज्ञानार्यानाह-सेकिंतमित्यादि सुगमं ॥ अथ के ते दर्शनार्याः सूरिराह-दर्शनार्या द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-सरागदर्शनार्या वीतरागदर्शनार्या श्च तत्रसराग सकषायं सद्दर्शन तेनार्याः सरागदर्शनार्याः, वीतराग मुपशान्तकषायक्षीणक षायं वा य दर्शनं तेनार्या वीतरागदर्शनार्याः, तत्र सरागदर्शनार्यप्रतिपादनार्थं माह-सेकिंतमित्यादि ॥ अथ के ते सरागदर्शनार्याः सूरिराह-सरागदर्शनार्या दशविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-निसग्गुवएसित्यादि ॥ अथ रुचिशब्दः प्रत्येकम भिसम्बध्यते ततो निसर्गरुचि रिति द्रष्टव्यं, तत्र निस र्गः स्वभाव स्तेन रुचि र्जिनप्रणीततत्त्वाभिलाषरूपा यस्य स निसर्गरुचिः, उपदेशो गुर्वादिना वस्तुतत्त्वकथनं तेनरुचि रुक्तस्वरूपा यस्य स उपदे शरुचिः, आज्ञा सर्वज्ञवचनात्मिका तस्यां रुचिरो ऽभिलाषो यस्य स आज्ञारुचिः, जिनाज्ञैव मेतत्वं न शेषं युक्तिजातमिति यो निमन्यते स आ

॥ मूल ॥

त्तिजिणाणं चक्कीणंरामकण्हाणं ॥ ६ ॥ सेत्तंखेत्तारिया ॥ से किंतं जाइआयरिया ? २ अट्ठिहा पण्णत्ता, तंजहा-अंबट्ठायकलिंदा विदेहावेदगाइय । हरियाचुंचुणाचेव तहएयाइअट्ठजाइउ ॥ ७ ॥ सेत्तं जाइआरि याय ॥ से किंतं कुलारिया ? २ अट्ठिहा पण्णत्ता, तंजहा-उग्गा भोगा राइण्णा इक्खागा नाता कोरव्वा । सेत्तं कुलारिया ॥ से किंतं कम्मारिया ? २ अणेगविहा पण्णत्ता, तंजहा-दोसिया सुत्तिया कप्पासिया

॥ भाषा ॥

छजाति आर्य कहिये । सेत्तंजाति आयरिया । ए जाति आर्य कह्या । सेकिंतं कुलआयरिया २ छविहा पं० तं० । हिवे कुलआर्य कहेछे, ते कुलआर्य छ प्रकारे कह्या ते कहेछे—उग्गाभोगारायण्या इक्खागाताया कोरव्वा । उग्रकुल भोगकुल राजकुल इक्ष्वाकुकुल ज्ञातिकुल कौरवकुल ६ । सेत्तंकुलआयरिया ए छभेद आर्यकुल । सेकिंतं कम्मायरिया २ अणेगविहा प० तं० । इति, हिवे कर्मआर्य कहेछे, ते अनेकप्रकारे कह्या तेकहेछे—दोसिया सुत्तिया कप्पा सीया मुत्तिवेयालिया भंडवेयालिया कोलालिया नरवाहणिया । दोसिका जातिविशेष सौत्तिका कर्पासियामुत्तिवेतालिका भण्डवेतु ना जातिविशेष

ज्ञारुचि रिति ज्ञावार्थः, सुत्तबीयरुयमेयत्ति ॥ अत्रापि रुचिशब्दः प्रत्येकम ज्निसंबध्यते सूत्रमा चाराङ्गाद्यङ्गप्रविष्टं अङ्गबाह्यं आवश्यकदशवैका लिकादि तेन रुचि र्यस्य स तथा सूत्रमा चारादिक मङ्गप्रविष्टं अङ्गबाह्यवा आवश्यकादिक मज्निधीयमानो यः सम्यक्त्व मवगाहते प्रसन्न २ तराध्य वसाय श्च ज्नवति स सूत्ररुचि रिति भावार्थः, बीज मिव बीजं य देक मप्यनेकार्थप्रबोधोत्पादक वच स्तेन रुचि र्यस्य स बीजरुचिः अनयो श्च पद योः समाहारो द्वन्द्वः तेन नपुंसकनिर्देशः इतिसमुच्चये, अहिगमवित्थाररुइत्ति ॥ अत्रापि रुचिशब्दस्य प्रत्येक मज्निसम्बन्धो धिगमरुचिर्विस्ताररुचि श्च तत्रा धिगमो विशिष्टं परिज्ञानं तेनरुचि र्यस्या सा वधिगमरुचि र्विस्तारो व्यासः सकलद्वादशांगस्य नयैः पर्यालोचन मितिज्ञावः तेनो, पबृंहि ता रुचिर्यस्य स विस्तारुचिः, किरियासंखेवधम्मरुइत्ति॥ रुचिशब्दस्या ऽत्रापि प्रत्येकसम्बधात् क्रियारुचिः सङ्क्षेपरुचि र्धर्मरुचि रिति द्रष्टव्यं-तत्र

॥ टीका ॥

मुत्तावेया जीया नंऊवेयालिया कोलालिया नरवाहणिया जेयावन्ने तहप्पगारा। सेत्तं कम्मारिया॥ से किंतं सिप्पारिया ? २ अणेगविहा पन्नत्ता, तंजहा—तुन्नागा तंतुवाया पट्टागारा देयडा वरुडा कट्ठपाउयारा मुंजपाउयारा छत्तारा बंनारा पणारा पोत्थारा लेप्पारा चित्तारा संखारा दंतारा नंऊारा जिन्नगारा सेल्ला रा कोडिगारा जेयावन्ने तहप्पगारा ॥ सेत्तं सिप्पारिया ॥ से किंतं नासारिया २ जेणं अद्धमागहाए ना

॥ मूल ॥

कोलादिक नरवाहनिका। जेयावन्नेतहप्पगारा। जे अनेरा तथाप्रकारे। सेत्त कम्मार्यरिया। ते कर्मार्य कह्या। सेकिंत सिप्पायरिया २ अणेगविहा पं० त०। हिवे शिल्पार्य विज्ञाननाआर्य तेहना पिण अनकभेदे कह्या ते कहेछे—तुन्नागा ततुवाया पट्टागारा देवडा वरुट्टाणा कट्ठपाउणरा मुंजपाउणरा छत्तारा वज्झ रा पुच्छ रा लेप्पारा चित्तारा संखारा दंतारा भंडारा जंझगारा सेल्लारा कोडिगारा। तुन्नारा वणकर पट्टाकारा देपड कोई दिग्गाविशेष लिप्यारा चित्रकारा शंखारा दन्तारा। जेयावन्नेतहप्पगारा सेत्त सिप्पायरिया। जे अनेरा एहवा तथाप्रकारना ते शिल्पार्य कह्या। सेकिंत भासायरिया २ अणेगविहा पं० त। हिवे भाषार्यनाभेद कहेछे—तेहना अनेकभेद जाणिवा। जणं अद्धमागहाए भासंति। जे अर्द्धमागधीभाषा बोलै। जत्थ

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

क्रिया सम्यक् संयमानुष्ठानं तत्र रुचि र्यस्य स क्रियारुचि संक्षेपः संग्रहः तत्र रुचि र्यस्य विस्तारार्थापरिज्ञाना त्संक्षेपरुचिःधर्मे अस्तिकाये धर्मे श्रुतधर्मादौ वा रुचि र्यस्य स धर्मरुचि रिति गाथा सङ्क्षेपार्थं तु सूत्रकृदेव स्वत आह भूयत्थेण इति । भावप्रधानो निर्देश स्ततो य मर्थः-भूतार्थ त्वेन समुद्भूता अमी पदार्था इत्येवं रूपेण यस्या धिगता परिज्ञाता जीवा जीवा पुण्यपाप माश्रवसम्बर श्च शब्दा द्बन्धादय श्च कथ मधिगता इत्याह सहसम्मुइया इति ॥ आर्षत्वा द्विभक्तिलोपाच्चसहसम्मत्यासहात्मना या सङ्गता मतिः सा सहसम्मति स्तया कि मुक्तं भवति परोपदेशनिरपेक्षया जातिस्मरणप्रतिभादिरूपया मत्या न केवल मधिगता किन्तु तान् जीवादीन् पदार्थान् वेदयते नुरोचयति-च तत्वरूपतया आत्मसा त्करिणा । मयति चेति भावः, एष निसर्गो निसर्गरुचि विज्ञेय इति शेषः, अमु मेवा र्थंस्पष्टतर मभिधित्सु राह-जो जिणदिट्ठे भावे इत्यादि ॥ यो जिनदृष्टान् भावान् द्रव्यक्षेत्रकालभावभेदतो नामादिभेदतो वा चतुर्विधान् स्वय मेवो पदेशनिरपेक्षं श्रद्दधाति केनो ल्लेखेन श्रद्दधाति तत आह-एव मेव एत ज्जीवादि यथा जिनै र्दृष्टं ना न्यथेति च समुच्चये एष निसर्गरुचि रिति ज्ञातव्यं, उपदेशरुचि माह-एए चेव इत्यादि ॥ एतानेव जीवादीन् भावान् यः परेण छद्मस्थेन जिनेन वा उपदिष्टान् श्रद्दधाति एष उपदेशरुचि ज्ञातव्याः, आज्ञारुचि माह-जो हेउ मयाणंतो इत्यादि॥ यो हेतु वि

॥ मूल ॥

साए भासंति, जत्थवि य णं बंभीलिवी पवत्तइ बंभीएणं लिवीए अट्ठारसविहे लेखविहाणे पण्णत्ते, तंजहा बंभीजवणाणिया दासापुरिसा खरुट्ठी पुक्करसारिया भोगवइया पहराइया अंतक्खरिया अक्खरपुट्ठिया वेणइया निण्हइया अंकलिवी गणियलिवी गंधव्वलिवी आयासलिवी माहेसरी दोमिली पोलिंदी ॥१८॥

॥ भाषा

वियणं बंभीलिवी पवत्तइ । जिहां ए ब्राह्मीलिपि प्रवर्त्तछे । बंभीएणं लिवीए अट्ठारसविहे लिपिविहाणे पं० तं० । ते ब्राह्मीलिपी तेहनविषे एहवी १८ प्रकारे लिपिविधान कह्या ते कहेछे—बभी जवना लिया दोसा पुरिया खरोष्टी पुक्खरसारिय भोगवइयाइय अंतरिक्खिया अक्खरपुट्ठिया वेणइया निन्हइ या अंकलिवी गणियालिवी गंधव्वलिपी आयंसलिवी माहेसरी दामली पोलिंदी १८ । ब्रह्मीलिपि यवनीलिपि लिल्यलिपि दोषा पुरिका खरोटी पुष्कर

धत्तितार्थगमक मजानानः प्रवचन मात्रयैव तु शब्द एवकारार्थः, केवलारोचते कथमि त्याह-एव मेतत् प्रवचनोक्त मर्थजात ना न्यथेति एष आज्ञा रुचि र्नाम, सूत्ररुचिमाह-जोसुत्त मित्यादि ॥ यः सूत्र मङ्गप्रविष्ट मङ्गबाह्य वा अधीयान स्तेन श्रुतेनाङ्गप्रविष्टेना ङ्गबाह्येन वा सम्यक्क्रम वगाहते स सूत्ररुचि रिति ज्ञातव्यः, बीजरुचि माह-एगपएणेगाइं इत्यादि ॥ एकेन पदेन प्रक्रमात् जीवादिना अनेकानि पदानि प्राकृतत्वेन विभक्तिव्य त्ययाद नेकेषु जीवादिषु पदेषु यःसम्यक्क मिति धर्मधर्मिणो रभेदोपचारात् सम्यक्त्ववान् आत्मा प्रसरति तु शब्दो वधारणार्थः प्रसरत्येव कथमि



सेत्तं नासारिया ॥ से किंतं नाणारिया ? २ पंचविहा पन्नत्ता, तंजहा—आभिणिबोहियनाणारिया सुयना णारिया ओहिनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया ॥ सेत्तं नाणारिया ॥ से किंतं दंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सरागदंसणारिया य वीयरागदंसणा० । से किंतं सरागदंसणारिया य ? २ दस विहा पन्नत्ता, तंजहा निस्सग्गुवदेसरुई आणारुइसुत्तबीयरुइचेव । अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवध



सारिका भोगवती अक्षरपृष्टिका वेणकोया निन्हिका अंकलिपि गणितलिपि गन्धर्वलिपि आदर्शलिपी महेश्वरीलिपी दामलीलिपि पुलि न्दी १८। सेत्तं भासारिया। ते एतले भाषार्या। सेकिंतं नाणयरिया २ पंचविहा पं० तं०। हिवे ज्ञानार्य कहेछे, ते ज्ञानार्य पंचप्रकारे कह्या ते कहे छे। आभिणिबोहियनाणारिया सुयनाणारिया ओहियनाणारिया मणपज्जवनाणारिया केवलनाणारिया। मतिज्ञानार्या श्रुतज्ञानार्या अव धिज्ञानार्या मनपर्यवज्ञानार्या केवलज्ञानार्या। सेत्तं नाणारिया। एतले ज्ञानार्य कह्या। सेकिंतं दंसणारिया २ दुविहा पं० तं०। हिवे दर्शनार्य ते द र्शनार्यनाभेद दोयप्रकारे कहे। सरागदंसणारिया बीयरागदंसणारिया। सरागदर्शनार्य बीतरागदर्शनार्य। सेकिंतं सरागदंसणारिया २ दसविहा पं० तं०। एतले सरागदर्शनार्यनाभेद तेहना १० प्रकार कहेछे—निस्सग्गुवएसरुई आणारुइसुत्तबीयरुइचेव अभिगमवित्थाररुई किरियासंखेवधम्मरु ई। १। निसर्गरुचि उपदेशरुचि आज्ञारुचि सूत्ररुचि बीजरुचि अभिगमरुचि शास्त्रविचाररुचि क्रिया संक्षेपरुचि धर्मरुचि। भूयत्थेणाहिगया जीवाजी

॥ टीका ॥

त्याह उदक इव तैलबिन्दुः किमुक्तं भवति यथा उदकैकदेशगतो ऽपि तैलबिन्दुः समस्त मुदक माक्रामति तथैकदेशोत्पन्नरुचि रप्यात्मा तथावि धक्षयोपशमभावा दशेषेषु तत्वेषु रुचिमान् भवति स एवंविधो बीजरुचि रिति ज्ञातव्यः। अधिगमरुचि माह-सो होइ इत्यादि ॥ यस्य श्रुतज्ञान

॥ मूल ॥

म्मरुई ॥१॥ भूयत्थेणाऽधिगया जीवाजीवायपुण्णपावंच । सहस्संमुइयासवसं वरोयवेयइएणिस्सग्गो २ ॥ जोजिणदिठेभावे चउव्विहेसद्दहासयमेव । एमेवणण्णहत्तिय णिसग्गरुइत्तिणाइव्वो ॥ ३ ॥ एएचेव उभावे, उवदिठेजोपरेणसद्दहइ । छउमत्थेणजिणेणव उवएसरुइत्तिणायव्वो ॥ ४ ॥ जोहेउमयाणंतो आणाएरोयएपव यणंतु । एमेवणण्णहत्तिय एसोआणारुईनामा ॥ ५ ॥ जोसुत्तमहिज्जंतो सुएणउगाहईउसम्मत्तं । अंगेणबा हिरेणव सोसुत्तरुइत्तिनायव्वो ॥ ६ ॥ एगपएणेगाइं पदाइंजोपसरईउसम्मत्तं उदइव्वतिल्लबिंदू सोवीयरुइ त्तिनायव्वो ॥ ७ ॥ सोहोइआभिगमरुई सुयनाणंजस्स अत्थउदिठं एकारसअंगाइं पइण्णगादिठिवाउय ॥८॥

॥ भाषा ॥

वेयपुण्णपावंच सहस्समइआसवसं बरेयहोइआसंखिसग्गो । २ । भूतार्थपणांरा भवकरिके उठीछै बुद्धि जे पदार्थोरो जांण्यां जीवाजीव पुण्य पाप सहस्र मति आश्रव सम्वर तेहने निसर्ग कहिये । जोजिणदिठेभावे चउव्विहेसद्दहाइसयमेव एमेवणवहत्तय निसग्गोरुइत्तिणायव्वो । ३ । जे जिन दीठाछै भा व द्रव्यभावेंकरी ते सद्दहै खरोकरी माने पातेनी निसूगेपणें सद्दहै ते निसर्गकहिये तत्र निसर्ग सुभावस्तेनरुचि जिनप्रणीततत्त्वाभिलाषरूपीयस्यसमि । एएचेवउभावे उवइट्ठजोपरेणसद्दहइ छउमत्थेणजिणेणव उवएसरुइत्तिणायव्वो । ४ । हिवे उपदेशरुचि कहेछै, ते जीव अजीवादिनाभाव जे उपदिष्ट प रने कहैथकै सांचो सर्व छद्मस्थेकह्यो ते तथाभावन्तै कह्यानी परमाण ते उपदेशरुचि कहेछै, हिवे अज्ञानरुचिकोभेद कहेछै —जोहेउमयाणंतो अणाए रादएपवयणंतु एमेवणन्तहत्तिए एसोअणारुईनामाए ५ । जे हेतु सिद्धान्तना कह्या अर्थछै ते अणजांणतोथको प्रवचननी आज्ञा तेरुचि मनसूं घणीं शुभ वस्तुनोपरे. वल्लभलागे एजे सिद्धांतमांहि कह्या ते अन्यथा हुवे नहो एहवैभावे प्रवर्त्ते ते आज्ञारुचि कहिये । जोसुत्तमहिज्जंतो सुएणउगाहमइसम्मत्तं अंगे

॥ टीका ॥

मर्थतो दृष्ट मेकादशाङ्गानि प्रकीर्णक मित्यत्र जाता वेकवचनं-ततो यमर्थः प्रकीर्णानि उत्तराध्ययनादीनि दृष्टिवादं श्च शब्दादुपाङ्गानि च स भव त्यधिगमरुचिः, विस्ताररुचि माह-दव्वाणं त्यादि ॥ द्रव्याणां धर्मास्तिकायादीना मशेषाणा मपि सर्वे भावाः पर्याया यथायोगं सर्वप्रमाणैः प्रत्य क्षादिभिः सर्वैश्च नयविधिभि र्नैगमादिनयप्रकारैः उपलब्धा स्स विस्ताररुचि रिति ज्ञातव्यः ॥ सर्ववस्तुपर्यायप्रपंचावगमेन तस्याः रुचे रतिवि मलरूपतया ज्ञावात् ॥ क्रियारुचिमाह-दंसणेत्यादि ॥ दर्शनं च ज्ञानं च चारित्रं च दर्शनज्ञानचारित्रं समाहारो द्वंद्व स्तस्मिन् तथा तपसि विन यं च तथा सर्वासु समितिषु ईर्यासमित्यादिषु सर्वासु च गुप्तिषु मनोगुप्तिप्रभृतिषु या क्रियाज्ञावा रुचिः कि मुक्त ज्ञवति यस्य ज्ञावतोदर्शनाद्या चारानुष्ठाने रुचि रस्ति सखलु क्रियारुचिर्नाम, सङ्क्षेपरुचिमाह-अणभिग्गयिएत्यादिना ॥ अभिगृहीता कुत्सिता दृष्टि र्येन सो ऽनभिगृहीतकुदृष्टि रवि

॥ मूल ॥

दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणेहिजस्सउवलद्धा सद्दहिंणयविहीहिं वित्थाररुइत्तिनायव्वो ॥ ९ ॥ दंसणनाणच रित्ते तवविणएसच्चसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुईसो खलुकिरियारुईनामा ॥ १० ॥ अणभिग्गहियकुदिट्ठी

॥ भाषा ॥

णवाहिरेणवा सोसुत्तरुइत्तिनायव्वो ६ । जे सूत्र सिद्धान्त भणतोथको श्रुतने अंगबाही सम्यक्करीने भणे अंगप्रविष्ट आचारांगादि अंगबाह्य उत्तराध्ययना दि तेहने सूत्र रुचि कहिये । एगपएणेगाइं पयाइं जोपसरईयसम्मत्तं उदयव्वतिल्लबिंदू सोबीयरुवेत्तनायव्वो ७ । एक पदेकरी अनेक पदनाभाव अनुक्रमे पसरे विस्तरे एक जीवादिक पदार्थे सम्यक्त्वादि अनेकपावेजिम पांणीऊपर तेलबिन्दुवा विस्तारपामे तेहने बीजरुचि कहिये । सोहोइअभिगमरुई सुय नाणंजस्सअत्थोदिट्ठो इक्कारसअंगाइं पइण्णगदिट्ठवाओय ८ । जिणें श्रुतज्ञानेअर्थे करी दीधा अर्थ जेणें अर्थकरी ११ अंगना प्रकीर्ण उत्तराध्ययनादिक दृष्टि वाद उपांगादि तेहनाअर्थ समभ्या छे ते अभिगमरुचि कहिये । दव्वाणसव्वभावा सव्वपमाणहिजस्सलद्धा सद्दहइंनयविहीहिं वित्थाररुइत्तिनायव्वो ९ हिवे विस्ताररुचि कहेछे—द्रव्यादि धर्मास्तकायादि ६ बीजा थाकता अनेक सर्व भावपर्याय यथायोग्यप्रमाण प्रत्यक्ष सर्वप्रकार उपलब्ध पाम्याछे सव नेगमादिक नयनाविधेकरी समभ्या छे तेविस्त रुचि कहिये । दंसणणाणचरित्ते तवविणएसच्चसमिइगुत्तीसु जोकिरियाभावरुइसोखलुकिरियारुइनामा १० ।

॥ टीका ॥

शारदः प्रवचने जिनप्रणीते शेषेषु च कपिलादिप्रणीतेषु प्रवचनेषु अनभिगृहीतो न विद्यते आभिमुख्येन उपादेयतया गृहीतुं ग्रहणमस्येत्यनभिगृहीतः पूर्वं मनभिगृहीतकुदृष्टि रित्यनेन परदर्शनान्तरपरिग्रहः प्रतिषिद्धो नेन परदर्शनपरिज्ञानमात्र मपि निषिद्ध मिति विशेषः' स इत्थंभूतः संक्षेपरुचि रिति ज्ञातव्यः, धर्मरुचिमाह ॥ जोअत्थिकायेत्यादि ॥ यः खलु जीवो स्तिकायानां धर्मास्तिकायादीनां धर्मं गत्युपष्टम्भकत्वादिस्वभावं श्रुतधर्मं चारित्रधर्मं च जिनाभिहितं श्रद्दधाति सधर्मरुचि र्ज्ञातव्यः, तदेवं निसर्गाद्युपाधिभेदा द्दशधा रुचिरूपं दर्शनमुक्तं-सम्प्रति यै र्लिङ्गै रिद मुत्पन्न मस्तीति निश्चीयते तानि लिङ्गान्यु पदर्शयन्नाह-परमत्थसंथवो इत्यादि ॥ परमा श्च तात्त्विका श्च ते ऽर्था श्च जीवादय स्ते परमार्थास्तेषु संस्तवः परिचयः तात्पर्येण बहुमानपुरस्सरं जीवादिपदार्थावगमायाभ्यास इति यावत् वा शब्दःसमुच्चये सुष्ठु सम्यग्रीत्या दृष्टाः परमार्था जीवादयो यै स्ते सुदृष्टिपरमार्थास्तेषां सेवनं पर्युपास्तिः सुदृष्टिपरमार्थसेवनं स्त्रीत्वं प्राकृतत्वा द्वा शब्दो नुक्तसमुच्चये यथाशक्ति त द्वैयावृत्त्य प्रवृत्ति श्च अपि समुच्चये तथा ॥ वावन्नकुदंसणत्ति ॥ दर्शनशब्दः प्रत्येक मभिसम्बध्यते व्यापन्न विनष्ट दर्शनं येषान्ते व्यापन्नदर्शना निह्नवादयः, तथा कुत्सितं दर्शनं येषांते कुदर्शनाः शाक्यादय स्तेषां वर्जनं व्यापन्नकुदर्शनवर्जनम् अत्रापि स्त्रीत्वं प्राकृतत्वात् ॥ सम्मत्तसद्दहणा इति ॥ सम्यक्त्वश्रद्धा

॥ मूल ॥

संखेवरुइत्तिहोइनायव्वो पवित्थारुपवयणे अणभिग्गहियसेसु ॥ ११ ॥ जोअत्थिकायकम्मं सुयधम्मंखलु चरित्तधम्मंच सद्दहइजिणाभिहियं सोधम्मरुइत्तिनायव्वो ॥ १२ ॥ परमत्थसंथवोवा सुदिठपरमत्थसेवणावा

॥ भाषा ॥

दर्शन ज्ञान चरित्र तप विनय सत्य समिति गुप्ति ८ जेहनो क्रियानविषे भावरुचे ते भावरुचि कहिये निश्चै क्रियारुचि कहियछै—अणभिग्गहीयकुदिट्ठी संखेवरुइत्तिहोइनायव्वो अविसारओपवयणे अणभिग्गहियसेसेसु ११। अभिग्रहीता कुत्सितादृष्टी, नग्रही जेणे माठीदृष्टि कापिलादि प्रणीत प्रवचन ते संक्षेपिये ते दृष्टिने संक्षेपरुचि कहिये संक्षेपसंग्रह तत्त्वरुचिर्यस्य सविस्तार्थं परिज्ञाना संक्षेपरुचि अविसार प्रवचनविषे अप्रत्यक्ष अपरदर्शन परज्ञानविषे ते संक्षेपरुचि कहिये। जोअत्थिकायधम्मं सुयधम्मंखलुचरित्तधम्मंच सद्दहइजिणाभिहियं सोधम्मरुइत्तिनायव्वो १२। जे जीव अस्तिकाये धर्मा

नं एतैः परमार्थसंस्तवादिभिः सम्यक्त्व मस्तीति श्रद्धीयते इत्यर्थः, अस्य च दर्शनस्या चारा अष्टौ ते सम्यक् परिपालनीयाः तदतिक्रमे दर्शनस्या ऽप्यतिक्रमभावात् अत स्तानुपदर्शयितु माह-निस्संकिय इत्यादि ॥ शंकनं शङ्कितं देशशङ्का सर्वशङ्का चे त्यर्थः, निर्गतं शङ्कितं यस्मा दसौ निः शङ्कितो देशसर्वशङ्कारहित इति भावार्थः, तत्र देशशंका समाने जीवत्वे कथ मेको भव्यो ऽपरस्त्व भव्य इति सर्वशङ्का प्राकृतनिबंधत्वा त्सकल मेवेदं प्रवचनं परिकल्पितं भविष्यतीति न चैयं देशशङ्का सर्वशङ्का वा युक्ता यत इह द्विविधा भावा स्त द्यथा-हेतुग्राह्या अहेतुग्राह्या जीवा स्त त्वादय स्तत्साधकप्रमाणसद्भावात् अहेतुग्राह्या अभव्यत्वादय अस्मदाद्यपेक्षया तत्साधकहेतूना मसम्भवात् प्रकृष्टज्ञानगोचरत्वा त्तद्धेतूना मिति प्रा कृतो ऽपि च निबन्धः प्रवचनस्य बालाद्यनुग्रहार्थं उक्तञ्च-बालस्त्री मूढमूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्क्षिणां ॥ अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतः स्मृतः ॥ १ ॥ अपि च प्राकृतो पि निबन्धः प्रवचनस्य दृष्टेष्टाविरोधी ततः कथ मवान्तरपरिकल्पना शङ्का सर्वज्ञम न्तरेणान्यस्य दृष्टेष्टाविरोधवच नासम्भवात् निःशङ्कित इति जीव एवा हेच्छासनप्रतिपन्नो दर्शनाचरणा त्तत् प्राधान्यविवक्षायां दर्शनाचार उच्यते-एतेन दर्शनदर्शनिनोः कथचि द्भेद माह-एकान्तभेदे त्व दर्शनिन इव तत्फला योगतो मोक्षाभावप्रसङ्गः एव मुत्तरेष्वपि त्रिषु पदेषु भावनाकार्या, तथा निःकाङ्क्षित इति कांक्षणं काङ्क्षितं



वि । वावन्नकुदंसणवज्जणाय सम्मत्तसद्दहणा ॥१३॥ निसंकियनिक्कंखिय णिव्वितिगिच्छाऽमूढदिट्ठीय उववू हथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेऽट्ठ ॥ १४ ॥ सेत्तं सरागदंसणारिया । से किंतं वीयरागदंसणारिया ? २ दु



स्तिकायादिक स्वरूप स्वभाव श्रुतधर्मने विषे भगवन्तना जेधर्म सांभोकरी श्रद्धे ते धर्मरुचि कहिय, ए निसर्ग दर्शभेदे रुचिरूप दर्शनकह्यो, हिवे जिण लिंगे ए ऊपनाछे ते लिंग उपदिशाछे देशकांक्षा दिगम्बरादिदर्शनानि प्रार्थितानि इति । परमत्थसंथवोवा सुदिट्ठपरमत्थसेवणावावि वावन्नकुदंसणवज्ज णायसम्मत्तसद्दहणा १३ । परमतत्त्वनाअर्थ जीवादिक तेपरमार्थ तेहनो संस्तवन पदचोवखाण रूडोरीति परमार्थं जीवादिकरूडो दीठां जेहनो सेवता सुदृष्टि परमार्थनो सेवनाकरे विषेषं २ कुदर्शित येपांते कुदर्शना ते जीव सम्यक्तनो श्रद्धणा करवी, हिवे सम्यक्तना ८ अतीचार कहेछे—प्रवचननी देश

॥ टीका ॥

निर्गतं काङ्क्षितं यस्मा दसौ निःकाङ्क्षितो देशः सर्वकाङ्क्षारहित इत्यर्थः, तत्र देशकाङ्क्षा एकं दिगंबरादिदर्शन मन्निकाङ्क्षिते सर्वकाङ्क्षा सर्वान्ये व दर्शनानि शोभनानि इत्येव मनुचिंतनं इयं च द्विधा प्ययुक्ता शेषदर्शनेषु षट्जीवनिकायपीडाया असत्प्ररूपणाया श्च भावात्, तथा विचिकित्सा मतिविभ्रमः फलप्रति संशय इति यावत्, निर्गता विचित्सा यस्मा दसौ निर्विचिकित्सः' साध्वे व जिनशासन कि तु प्रवृत्तस्य सतो ममा स्मा त्फल भविष्यति न वा क्रियायाः कृषीबलादिषु उभयथा ऽप्यु पलब्धे रिति विकल्परहितः न ह्य विकल्प उपायउपेयवस्तुप्रापको न भवतीति स जातनिश्चयो निर्विचिकित्स इतिभावः, एतावतांशेन निःशङ्किता द्विनः, यद्वा निर्विदुगुंच्छो इति ॥ निर्विद्वज्जुगुप्सः साधुजुगुप्सा रहित इत्यर्थः उदाहरणं च विद्वज्जुगुप्सायां श्रावकदुहिता तथा ॥ अमूढदिठीयति ॥ बालतपस्वितपोविद्यातिशयदर्शनै नं मूढा स्वभावा च्चलिता दृष्टिः सम्यग्द र्शनरूपा यस्या सा वमूढदृष्टिः, अत्रोदाहरणं सुलसाश्राविका सा ह्य ब्रह्मपरिव्राजकसमृद्धी रुपलभ्यापि न संमोहं गता तदेवं गुणिप्रधान आचार

॥ मूल ॥

विहा पन्नत्ता, तंजहा—उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया खीणकसायवीतरागदंसणारियाय। से किंतं उवसंतकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयउवसंतकसायवीयरागदंसणारिया

॥ भाषा ॥

शंका सर्वशंका काचा देशकांचा सर्वकांक्षारहित। निस्संकियनिक्कंखिय निव्वतिगिच्छाअमूढदिट्ठीय उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणेअट्ठ १४। साधु नी जगुप्सायेरहित प्रवर्त्ते कुदर्शननी महिमाथी मोटी दृष्टिकरवी जिम सुलसाश्राविकाये अम्बडपरिव्राजकने कह्यो संदेह नपामी कुलिंगीसाथे परि चय नकरवो पधर्मविषे थिरताभाव सांहमीनो प्रससाकरवो सांहमीने उपगारकरवो वली धर्मनी प्रभावनाकरवी। सेत्तंसरागदंसणारिया। ए सराग दर्शनार्या कहिये। सेकिंतं वीयरागदंसणारिया २ दुविहा पं० तं०। हिवे वीतरागदर्शनआर्याना दोयभेद कह्याछे ते कहेछे—उवसंतकसायवीयराग दंसणारिया। उपशांतकषाय वीतराग दर्शनार्यभेद ए। खीणकसायवी० सेकिंतं उवसंतकसायवीयरागदंसणारिया २ दुविहा पं० तं०। क्षीणकसाय

॥ टीका

उक्तः सम्प्रतिगुणप्रधान माह-उववूहेत्यादि ॥ उपवृंहणं च स्थिरीकरणं च उपवृंहणास्थिरीकरणे तत्रो पवृंहणं नाम समानधार्मिकाणां सद्गुणप्रशंसनेन तद्वृद्धिकरण धर्माद्विषीदतां तत्रैव स्थापनं, वाच्छल्य च प्रज्ञावना च वाच्छल्यप्रज्ञावने तत्र वाच्छल्यंसमानधार्मिकाणां प्रीत्या उपकारकरणं प्रज्ञा वना धर्मकथादिज्ञि स्तीर्थप्रख्यापना अयं च गुणप्रधानो निर्देशो गुणगुणिनोः कथंचि द्भेदख्यापनार्थं अन्यथा एकान्ता भेदे गुणनिवृत्तौ गुणिनोपि निवृत्तेः शून्यतापत्तिः एते ऽष्टौ दर्शनाचारा स्त देव मुक्ताः सरागदर्शनभेदा स्तदभिधानाच्च भिहिताःसरागदर्शनार्यभेदाः, सम्प्रति वीतरागद नार्यादिभेदानाह-सेकिंतमित्यादि सुगमा यावत् अहवा चरित्तारिया पंचविहा पं० तं० सामाइयचरित्तारिया इत्यादि ॥ नवरं पढमसमय अपढ

॥ मूल ॥

य अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागदंसणारिया य। से किंतं खीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दु विहा पन्नत्ता, तंजहा छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य। से किंतं छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसाय वीतरागदंसणारिया बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया। से किंतं सयंबुद्धछउमत्थखीणक

॥ भाषा ॥

वीतरागदर्शनार्यांना दोयभेद कह्या ते कहेछे—पढमसमयउवसंतकसाय वीयरागदंसणारिया। प्रथमसमय वर्त्तता उपशान्तकषाय वीतराग दर्शना र्यरिया। अपढमसमय उवसंतकसाय वी०। द्वितीयादिकसमय वर्त्तता उपशांन्तकषाय वीतराग दर्शनार्यांना बेभेद कह्या। अहवा चरमसमयउवसंत कसाय वी०। अथवा ते उपशान्तकषायने अन्तसमय वीतराग दर्शनार्य कहिये। अचरमसमयउवसंतकसाय वी०। दूजे त्रीजेसमय वर्त्तता सामायिक चरित्रादिके वर्त्तता ते उपशांतकषाय दर्शनार्य कहे। सेकिंत खीणकसाय वीयरागदंसणारिया २ दुविहा पं० तं०। हिवे क्षीणकषाय वीतराग दर्श न.र्यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—छउमत्थखीणकसाय वी०। छद्मस्थ क्षीणकसाय वीतराग दर्शनार्य। केवलखीणकसायवी०। केवल क्षीणकषाय वीतर.ग दर्शनार्य कहिये। से किंतं छउमत्थ खीणकसाय वीयराग दंसणारिया २ दुविहा पं० तं०। हिवे क्षीणकषाय वीतराग द

समयइति ये तेषा मेवो पशान्तकषायत्वादीनां विशेषाणां प्रथमसमये वर्त्तते ते प्रथमसमया स्ततो द्वितीयादिषु समयेषु वर्त्तमाना अप्रथमसमयाः तथा चरमसमय अचरमसमय इति ये तेषा मेवोपशान्तकषायत्वादीनां विशेषाणां अंत्यसमये वर्त्तन्ते तेचरमसमया ये ततो ऽर्वाक् द्विचरमसमयत्रि चरमादिषु समयेषु वर्त्तन्ते ते ऽचरमाः सामायिकादीनां च चारित्राणां स्वरूपमिदं-समो रागद्वेषरहितत्वा दयंगमनं समाय एषवा न्यासामपि साधुक्रियाणा मुपलक्षणं सर्वासा मपि साधुक्रियाणां रागद्वेषरहितत्वात्, समायेन निर्वृतं समाये भवं वा सामायिकं यद्वा समानां ज्ञानदर्शनचारित्राणा मायो लाभः समायः सा ॥ माय एव सामायिकं विनयादे राकृतिगणतया विनयादिन्य इत्यनेन स्वार्थिक इकण् तच्च सर्वसावद्य विरति



सायवीयरागदंसणारिया सयंबुद्धछउमत्थखीण० दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणक सायवीतरागदंसणारियाय ॥पढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया, ॥अहवा चरिमसमय सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया ॥चरिमसमयसयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया य । सेत्तं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीत



र्शनार्यना केतलाभेदछे उ० हेगौतम दोयभेद कह्या ते कहेछे—सयंबुद्धछउमत्थ खीणकसायबी०। स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शना दोयभेद कह्या। बुद्धिबोहिय खीणकसायबी०। प्रतिबोधकरी बूझ्या छद्मस्थ वीतराग दर्शनार्य। सेकिंतं छउमत्थ खीणकसाय वीयराग दंसणायरिया २ दुविहा प० तं०। हिवे स्वयंबुद्ध छद्मस्थपणें वीतराग दर्शनार्य ते किम गौतम दोयभेद कह्या ते कहेछे—पढमसमय सयंबुद्ध छउमत्थखीणकसायबी०। प्रथमसम ब वर्त्तता स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ए प्रथमभेद। अपढमसमयसयंबुद्ध छउमत्थ खीणकसायबी०। दूजे तोजेसमय वर्त्तता स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य ए २ भेद। अहवा चरमसमयसयबुद्ध छउमत्थखीणकसाय बी०। अथवा चरमसमय वर्त्तता छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य। अचरमसमय सयबुद्ध छउमत्थ खीणकसायबी०। अचरमसमय दूजे त्रीजेसमय क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य। सेत्तं सयंबुद्ध छउमत्थ खी

॥ मूल ॥

रागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किं तं केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग दंसणारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । से किंतं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग

॥ भाषा ॥

णकषायबो० । एतले स्वयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय बीतराग दर्शनार्य । सेकिंत बुद्धबोधित छद्मस्थ खीणकषाय बीयराग दसणार्यरिया २ दुविहा प० त० । तंकिम हेगीतम तेहना दोयभेदछे ते कहेछ—पढममसयबुद्धबोधित छद्मस्थ खीणकषाय बीतराग । पहिलाममयना बुद्धबोधना छद्मस्थ क्षीणकषाय बीतराग दर्शनार्य ए प्रथमभेद । अपढमसमयबुद्धबोधित छद्मस्थ खीणकषायबो० । दूजे चौजेमसय प्रवर्त्तता बुद्धबोधि बूझ्या छद्मस्थ क्षीणकषाय बीतराग दर्शनार्य ए दूजोभेद । अहवा चरमसमयबुद्धबोधित छद्मस्थखीणकषाय बी० । अथवा चरमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय बीतराग दर्शनार्य । अचरमसमयबुद्धबोधित छद्मस्थ खीणकषाय बी० । अचरिमसमयना बुद्धबोधित छद्मस्थ क्षीणकषाय बीतराग दर्शनार्य । सेत्त छद्मस्थ खीणकषाय बी० । हिवे छद्मस्थ क्षीणकषाय बीतराग दर्शनार्य । सेकितं केवल खीणकषाय बीयरागदसणार्यरिया दुविहा प०त० । हिव केवल क्षीणकषाय दर्शनार्यना बेभेद कह्या । ते कहेछे – सजोगीकेवली खीणकषाय बी० । सयोगी गुणठाणे वर्त्तता केवली क्षीणकषाय बीतराग दर्शनार्य ए प्रथमभेद । अयोगी केवली खीणकषाय बी० । अयोगीगुणठाणे वर्त्तता केवली क्षीणकषाय बीतराग दर्शनार्य । सेकितं सयोगीकेवली खीणकषाय बीयरागदसणार्यरिया २ दुविहा प० त० । हिवे सयोगी केवली क्षीणकषाय बीतराग दर्शनार्य तेहना दोयभेद कह्या तेकहेछे— पढमसमय सयोगीकेवली खीणकषाय बी० ।

दंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय । सेत्त सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । से किंतं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता तंजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारियाय, अहवा चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया अचरिमसमयअजो



पहिलेसमय संयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अपढमसमय संयोगी केवली खीणकसाय वी० । अप्रथमसमय संयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अहवा चरमसमय संयोगी केवली खीणकसाय वी० । अथवा चरमसमय संयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अचरमसमयसंयोगी केवली खीणकसाय वी० । अचरमसमय संयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । सेत्तंसंयोगी केवली खीणकसाय वी० । एतले संयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग कह्या तेकहेछे—सेकिंतं अयोगी केवली खीणकसाय २ दुविहा प० तं० । हिवे अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यना दोयभेद कह्या तेकहेछे—पढमसमय अयोगी केवली खीणकसाय वी० । पहिलेसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अपढमसमय अजोगीकेवली खीणकसाय वी० । बीजे चौथेसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अहवा चरमसमय अयोगी केवली खीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । अचरमसमय अयोगी केवली खीणकसाय वी० । अचरमसमय अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य । सेत्त अयोगी केवली खीणकसाय वी० । एतले अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्यभेद कह्या, एतले क्षीणकषाय दर्शनार्य कह्या । सेत्त केवलि खीणकषाय वी० । सेत्त खीणकसाय वी० सेत्तं वी० सेत्तं दंसणारिया । एतले केवली क्षीणकषाय वीतराग दर्शनार्य कह्या दर्शनार्यनो अधिकार कह्यो । सेकिं

॥ मूल ॥

गिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया य । सेत्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं केवलिखीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं खीणकसायवीतरागदंसणारिया । सेत्तं वीतरागदंसणारिया । सेत्तं दंसणारिया । से किंतं चरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सरागचरित्तारिया वीतरागचरित्तारिया । से किंतं सरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय बायरसंपरायसरागचरित्तारियाय । से किंतं सुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा— पढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारिया अचरिमसमयसुहुमसंपरायसरागचरित्तारियाय अहवा सुहुमसंपरा

॥ भाषा ॥

ते चरित्तायरिया २ दुविहा प०तं० । हिवे चरित्तार्य कहेछे तेहना दोयभेद कह्या ते कहेछे । सरागचरित्तायरिया बीयरागचरित्तायरिया । सरागि चरित्र यैभेद बीतराग चरित्र यै २ । सेकिंत सरागचरित्तायरिया २ दुविहा प०तं० । हिवे सरागचरित्र यैना दोयप्रकारे कह्या ते कहेछे—सुहुमसंपराय सरागचरित्तायरिया बायरसंपराग च० । सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्रार्य बादरसंपराय सरागचरित्रार्य । सेकिंतं सुहुमसंपराय सरागचरित्तायरिया २ दुविहा प०तं० । हिवे सूक्ष्मसंपराय सरागचरित्र यैना दोयभेद कह्या तेकहेछे—पढमसमयसुहुमसंपराय चरित्तायरिया अपढमसमयसुहुमसंपराग चरित्ता । प्रथमसमय सूक्ष्मसंपराय सरागचरित्र यै अप्रथमसमय सूक्ष्मसंपराय सरागचरित्र यै । अहवाचरमसमय सुहुमसंपराय सरागच० । अथवा चरमसमय सूक्ष्मसराग चरित्रार्य । अचरमसमय सुहुमसंपराय सराग च० । अचरमसमय सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्रार्य । अहवा सुहुमसंपराय सराग चरित्तायरिया दुविहा प० तं० । अथवा सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—संकिलिस्समाणाय विसुद्धमाणाय । संक्लिश्यमान संपरार्य चरित्र यै विशुद्धमान सूक्ष्मसंपराय सराग चरित्रार्य । सेत्तं सुहुमसंपराय सरागचरित्ता । एतले सूक्ष्मसंपराय चरित्रार्य कह्या । सेकिंतं बादर संपराय सराग

यसरागचरित्तारिया दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—संकिलिस्समाणाय विसुज्झमाणाय सेत्तं सुहुमसंपरायसरा गचरित्तारिया से किंतं बायरसंपरायसरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पढमसमयबायर संपरायसरागचरित्तारिया अपढमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा चरिमसमयबायरसंपरा यसरागचरित्तारिया अचरिमसमयबायरसंपरायसरागचरित्तारिया य अहवा बायरसंपरायसरागचरित्तारि या दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पडिवाई य अपडिवाई य सेत्तं बायरसंपरायचरित्तारिया सेत्तं सरागचरि त्तारिया से किंतं वीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया खीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंतं उवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा प०, तंजहा



व० । एतल हिवे बादरसपराय चरित्तायें दोयभेद कह्या छै । सेकिंत बायरसपराय सरागचरित्तायरिया २ दुविहा पं० तं० । हिवे बादरसंपराय चरि त्तना दोयभेद कह्या तेकहेछै—पढमसमयबायरसंपराय सराग च० । प्रथमसमय बादरसंपराय सराग चरित्तार्य । अपढमसमय बायरसंपराय सराग चरित्ता । अप्रथमसमय बादरसपराय सरान चरित्तार्य । अहवा चरमसमय बादरसपराय सराग च० । अथवा चरमसमय बादरसंपराय सराग चरि त्तार्य । अचरमसमयबायरसपराय सराग च० । अचरमसमय सरागबादर चरित्तार्य । अहवा बादरसपराय सरागचरित्तायरिया दुविहा प० तं० । अ थवा बादरसंपराय सराग चरित्तार्यना दोयभेद कह्या ते कहेछै—पडिवाइया अपडिवाइया । प्रतिपातिक अप्रतिपातिक । सेत्तं बायरसंपराय बाय सपराय रसराग च० । एतले बादरसपराय चरित्तार्य कह्या । सेत्तं सराग चरित्ता । हिवे वीतराग चरित्त यंना । सेकिंतं वीयराग चरित्तायरिया दुवि हा पं० तं० । हिवे वीतराग चरित्तार्यना दोयभेद कह्या तेकहेछै—पढमसमयउवसंतकसायवीयराग च० । प्रथमसमय उपशान्तकषाय वीतराग दर्शना र्य । अपढमसमय उवसतकसाय वी० । अप्रथमसमय उपशान्तकषाय वीतराग चरित्तार्य । अहवा चरमसमय उवसंतकषाय वी० । अथवा चरमसमय

॥ मूल ॥

पढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयउवसंतकसायवीतरागचरिया य अहवा चरिम समयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयउवसंतकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्तं उवसंतक सायवीतरागचरित्तारिया से किंतं खीणकसायवीतरागचारित्तारिया २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थ खीणकसायवीतरागचरित्तारिया केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य से किंतं छउमत्थखीणकसायवी तरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया बुद्धबो हियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरिया य से किंतं सयंबुद्धछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—पढमसमंयसंबुद्धखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसयंबुद्धछउमत्थखी

॥ भाषा ॥

उपशान्तकषाय बीतराग चरित्रार्य । अचरमसमय उवसंतकसाय बीतराग चारित्तायरिया । अचरिमसमय उपशांतकषाय बीतराग चरित्रार्य । सेत्त उवसंतकसाय बीतराग चरित्तायरिया । एतले उपशान्तकषाय बीतराग चरित्रार्य कह्या । सेकिंतं खीणकसाय बीयराग चरित्तायरिया २ दुविहा पं० तं० । हिवे खीणकषाय बीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—छउमत्थ खीणकसाय बीयराग च० । छद्मस्थ खीणकषाय बीतराग चरित्रार्य । केवली खीणकसाय बी० च० । केवल खीणकषाय बीतराग चरित्रार्य । सेकिंतं छउमत्थ खीणकसाय बी० च० दु० पं० त० । हिवे छद्मस्थ खीणकषाय बीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या तेकहेछे—सयंबुद्धछउमत्थ खीणकसाय बी० च० । सयंबुद्ध छद्मस्थ खीणकषाय बीतराग चरित्रार्य । बुद्धिबोहिय छउमत्थ खीणकसाय बी० च० । बुद्धबोध छद्मस्थ खीणकषाय बीतराग चरित्रार्य । सेकिंतं सयंबुद्ध छउमत्थ खीणकसाय बी० च० दु० प० त० । हिवे स्वयंबुद्ध छद्मस्थ खीणकषाय बीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या तेकहेछे—पढमसमय सयंबुद्ध खीणकसाय बीयराग च० । प्रथमसमय स्वयंबुद्ध खीणकषाय बीतराग चरित्रार्य । अपढमसमय सयंबुद्ध खीणकसाय बीतराग च० । अप्रथमसमय सयंबुद्ध खीणकसाय बी० च० । अप्रथमसमय स्वयंबुद्ध छद्मस्थ

णकसायवीतरागचरिया य, अहवा चरिमसमयसयंबुद्धउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिम समयसयंबुद्धउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं सयंबुद्धउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्ता रिया। से किंतं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढम समयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरा गचरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयबुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अचरिमसमयबु द्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। सेत्तं बुद्धबोहियछउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्ता रिया सेत्तं छउमत्थखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। से किंतं केवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २



क्षीणकषाय चरित्रार्य। अहवा चरमसमय मयबुद्ध खीणकसाय बी० च०। अथवा चरमसमय स्वयंबुद्ध क्षीणकषाय वीतराग चरित्र र्य। अचरमसमयस यंबुद्ध खीणकसाय बी० च०। अचरिमसमय स्वयबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्रार्य। सत्त छउमत्थ खीणकषाय बी०। एतले स्वयंबुद्ध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्रार्य। सेकिंतं बुद्धिबोहिय खीणकषाय बी० च० दुविहा पण्णता तंजहा। हिवे बुद्धिबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—पढमसमय बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय बी० चरित्तायरिया। प्रथमसमय बुद्धबोध जद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अपढमस मय बुद्धिबोहिय छउमत्थ खीणकसाय बीयराय। अप्रथमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अहवा चरमसमयबुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकसाय बीयराग। अथवा चरमसमय बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय चरित्रार्य। अचरमसमय बुद्धबोहिय छउमत्थ खीणकषाय वीतराग चरित्र र्य। सेत्तं बुद्धिबोहिय छउमत्थ खीणकसाय बीयराग चरित्तायरिया। एतले बुद्धबोध छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य कह्या। सेत्तं छउमत्थखीणकसा य बीयराग चरित्तायरिया। हिवे छद्मस्थ क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। सेकिंतं केवली खीणकसाय बीयराग चरित्तायरिया २ दुविहा पण्णत्ता तं

॥ टीका ॥

रूपं, यद्यपि च सर्वमपि चारित्रमविशेषतः सामायिकं तथापि छेदादिविशेषैर्विशेष्यमाणमर्थतः शब्दान्तरतश्च नानात्वं भजते प्रथमं पुनरविशेषणात् सामान्यशब्द एवावतिष्ठते, सामायिकामिति तच्च द्विधा इत्वरं यावत्कथिकं च तत्रेत्वरं भरतैरावतेषु प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थेषु नारोपितमहाव्रतस्य शैक्षकस्य विज्ञेयं यावत्कथितं प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालादारभ्योत्प्राणोपरमात् तच्च भरतैरावतजाविमध्यद्वाविंशति तीर्थकरतीर्थान्तरगतानां च विदेहतीर्थकरतीर्थान्तरगतानां च साधूना मवसेयं तेषा मुपस्थापनाया अभावात् उक्तंच सव्व मिणं सामइय छेयाइविसेसियं पुण विन्नि । अविसेसइसामइय चियमि ह सामन्नसन्नाए ॥ १ ॥ सावज्जजोगविरइत्ति तत्थ सामाइयं दुहा तं च इत्तरमावकहतिय पढमपढमतिय मजिणाणं तित्थंसु अणारोविअ वयस्स सेहस्सथोवकालीय ॥ १ ॥ सेसाणमावकहियं तित्थंसु विदेहयाण च। ननु चेत्वरमपि सामायिकं करोमि न दंत सामायिकं यावज्जीव मित्येव यावदायु रागृहीत तत उत्थापनाकाल तत्परित्यज्यतः कथ न प्रतिज्ञाभंग उच्यते ननु प्रागेवोक्त सर्वमेवद् चा

॥ मूल ॥

दुविहा पण्णत्ता, तंजहा सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य। से किंतं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा— पढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया अपढमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतराग

॥ भाषा ॥

जहा। हिवे केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—सयोगी केवली खीणकसायवीयराग चरित्तायरिया अयोगी केवली खीणकस य वीयराग चरित्तायरिया। हिवे सयोगी केवली क्षाणकषाय वीतराग चरित्रार्य अयोगी केवली क्षाणकषाय वीतराग चरित्रार्य। सकिंतं स सयोगीकेवली खीणकसाय वीयराग चरित्तायरिया २ दुविहा पण्णत्ता तजहा। हिवे सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कह्या ते कहेछे—पढमसमयसयोगी केवली खीणकसाय वीयराग चरित्तायरिया। प्रथमसमय सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अपढमसमयसयोगीकेवली खीणकसाय वीतरागचरित्तायरिया। अप्रथमसमये सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य। अहवा चरमसमय सयोगीकेवली खीण

रित्रमविशेषतः सामायिकं सर्वत्रापि सावद्ययोगविरतिसद्भावात् केवलच्छेदादिविशुद्धिविशेषे विशेष्यमाणा मर्यतः शाब्दान्तरतश्च नानात्वं भजते ततो यथा यावत्कथिकं सामायिकं च्छेदोपस्थानं वा परमविशुद्धिविशेषरूपसूक्ष्मसपरायादिचारित्रावाप्तौ न भङ्गं मास्कन्दति तथा त्वरमपि सामायिकं विशुद्धिविशेषरूपच्छेदोपस्थापनावाप्तौ । यदि हि प्रव्रज्यापरित्यज्यते तर्हितद्भङ्गं आपद्यते न तस्यैव विशुद्धिविशेषावाप्त्यै उक्तंच-उन्निक्ख मतोऽगो जोपुणतत्थियकरेइ। सुदुयर सन्नामेत्तविसिट्ठं सुहुमंपिवतस्सकोऽभङ्गो ॥१॥ तथा च्छेदः पूर्वपर्यायस्य उपस्थापना च महाव्रतेषु यस्मिन् चारित्रे तत् च्छेदोपस्थापनं तच्च द्विधा सातिचारं निरतिचारं च तत्र निरतिचारं च यत् इत्वरसामायिकवतः शैक्षकस्यारोप्यते तीर्थान्तरसंक्रान्तौ वा यथा

॥ टीका ॥

---

॥ मूल ॥

चरित्तारिया य, अहवा चरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयसजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारियाय । सेत्तं सजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया । से किंतं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अपढमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य, अहवा

---

॥ भाषा ॥

कषाय वीयरागचरित्तार्यरिया । अथवा चरमसमय सयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । अचरमसमयसयोगी केवली खीणकषाय वीतराग चरित्तार्यरिया । अचरमसमय सयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । सेत्त सयोगी केवली खीणकसाय वीयराग चरित्तार्यरिया । एतले सयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । सेकिंतं अयोगीकेवली खीणकसाय वीयराग चरित्तार्यरिया २ दुविहा पंणत्ता तंजहा । हिवे अयोगी केवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्यना दोयभेद कहेछे—पढमसमय अयोगीकेवली खीणकसाय वीयराग चरित्तार्यरिया । प्रथमसमय अयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । अपढमसमय अयोगीकेवली खीणकसाय वीयराग चरित्तार्यरिया । अप्रथमसमय अयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । अहवा चरमसमय अयोगीकेवली खीणकसाय वीयराग चरित्तार्यरिया । अथवा चरमसमय अयोगीकेवली क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य । अचरिमस

॥ टीका ॥

पार्श्वनाथतीर्था हुईमानतीर्थसंक्रामतः पंचयामप्रतिपत्तौ सातिचारं यन्मूलगुणघातिनः पुनर्व्रतोच्चारणं उक्तं च-सेहस्स निरइयारस्स तित्थंतरसंकमे व तं होज्जा। मूलगुणघाइणोसा इयारमुन्नय च ठियकप्पो॥१॥ उन्नय चेतिसातिचार निरतिचार च स्थितकल्पे इति प्रथमपश्चिमतीर्थंकरतीर्थकाले तथा परिहारः तपोविशेषःतेन विशुद्धिर्यस्मिन् चारित्रे तत्परिहारविशुद्धिकं तच्चद्विधा निर्विशमानकं निर्विष्टकायिक च तत्र निर्विशमानका विवक्षितचारित्रासेवकाः निर्विष्टकायका आसेवितचारित्रकाः तद व्यतिरेकाच्चारित्र मप्येव मुच्यते इह नवको गण श्चत्वारोनिर्विशमानका श्चत्वार श्चानुचारिणः एकः कल्पस्थितो वाचनाचार्यो यद्यपि च सर्वेपि श्रुतातिशयसम्पन्नाः तथापि कल्पत्वात् तथा मेकः कश्चि त्कल्पस्थितो वस्थाप्यते निर्विशमानकानाच्चायं परिहारः, परिहारियाणउ तवो जहन्नमज्झो तहेव उक्कोसो। सीउण्हवासकाले जहिणउं धीरेहि पत्तेय ॥१॥ जत्थ जहन्नो गिम्हे चउत्थछठ तु होइमज्झिमउं। अट्ठमभिहउक्कोसो एत्तोसिसिरे पवक्खामि ॥२॥ सिसिरे उजहन्नाइं छट्ठाइं दसमचरिमगो होई। वासासु अट्ठमाइं बारसपज्जंतगोनेउं ॥३॥ पारणगेआयामं पचसु अगहो दोसु अभिग्गहो जिक्खे। कप्पठियापडिदिण करित एमेवआयामं ॥४॥ एवछम्मासतवं चरिउपरिहारगाअणुचरंति। अणुचरगे परिहारिय पडिठिए जाव छम्मासा ॥५॥ कप्पठिएविएव छम्मासतवं करइ सेसाउं। अणुपरिहारिगभावं चयंति कप्पट्ठिगत्त च ॥६॥ एवसोअट्ठार समासपमाणो उवखिउं कप्पो। सखेवउं विसेसो विससुत्ताउं नायव्वो ॥७॥ कप्पसमत्तीए तयं जिणकप्पं वा उविंति गच्छं वा। पडिवज्जमाणगा पुण जिणस्सगासे पवज्जंति ॥८॥ तित्थयरसमीवासे वगस्सपासे वनोउअन्नस्स। एएसिं

॥ मूल ॥

चरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य अचरिमसमयअजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया य सेत्तं अजोगिकेवलिखीणकसायवीतरागचरित्तारिया। सेत्तं केवलिखीणकसायवीतराग

॥ भाषा ॥

मय अयोगीकेवली खीणकसाय वीयराग चरित्तार्यरिया। अचरिनसमय अयोगीकेवली खीणकषाय वीतराग चरित्तार्य। सेत्त अयोगीकेवली खीणकसाय वीयराग चरित्तार्यरिया। एतले अयोगी केवली खीणकषाय वीतराग चरित्तार्यरिया। सेत्तं केवलिखीणकसाय वीयराग चरित्तार्य। सेत्त खीणकसाय

जं चरणं परिहारविसुद्धियं तं तु ॥ ६ ॥ अथैते परिहारविशुद्धिकाः कस्मिन् क्षेत्रे काले वा भवंति ? उच्यते-इह क्षेत्रादिनिरूपणार्थं विंशतिद्वाराणि तद्यथा-क्षेत्रद्वारं १ कालद्वारं २ चारित्रद्वारं ३ तीर्थद्वारं ४ पर्यायद्वारं ५ आगमद्वारं ६ वेदद्वारं ७ कल्पद्वारं ८ लिंगद्वारं ९ लेश्याद्वारं १० ध्यानद्वारं ११ गणद्वारं १२ अभिग्रहद्वारं १३ प्रव्रज्याद्वारं १४ मुंडापनाद्वारं १५ प्रायश्चित्तविधिद्वारं १६ कारणद्वारं १७ निःप्रतिकर्मताद्वारं १८ भिक्षाद्वार १९ बंधद्वारं २० । तत्र क्षेत्रे द्विधा मार्गणा जन्मतः सद्भावतश्च, यत्र क्षेत्रे जातस्तत्र जन्मतो मार्गणा, यत्र च कल्पे स्थितो वर्त्तते तत्र सद्भावतः । उक्तंच-खेत्तेदुहेहमग्गण जम्मणतंचेवसतिन्नावेय । जम्मणतंजहिजातो सतीन्नावोजहिंकप्पो ॥ १ ॥ तत्र जन्मतः सद्भावतश्च पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु न तु महाविदेहेषु न चैतेषां संहरणं मस्ति येन जिनकल्पिका इव संहरणतः सर्वासु कर्मभूमिष्वकर्मभूमिषु वा प्राप्येरन्, उक्तं च-खित्तेनरहेरवए सुहोंतिसंहरणवज्जियानियमा । कालद्वारे-अवसर्पिण्यां तृतीये चतुर्थे वारके जन्मसद्भावः, पञ्चस्वपि उत्सर्पिण्यां द्वितीये तृतीये चतुर्थे वा जन्मसद्भावः, पुनस्तृतीये चतुर्थेवा उक्तंच-उस्सप्पिणीएदोसु जम्मणतोसुसंति भावेण । उस्सप्पिणिविवरीउ जम्मणतंसतिन्नावेय ॥ १ ॥



रित्तारिया । सेत्तं खीणकसायवीतरागचरित्तारिया सेत्तं वीतरागचरित्तारिया । अहवा चरित्तारिया पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा—सामाइयचरित्तारिया छेओवट्ठावणियचरित्तारिया परिहारविसुद्धिचरित्तारिया सुहुमसंपरायचरित्तारिया अहक्खायचरित्तारिया य । सेकिंत सामाइयचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा



सेत्तं वीयराग चरित्तायरिया । एतले क्षीणकषाय वीतराग चरित्रार्य कह्या एतले वीतराग चरित्रार्य कह्या । अहवा चरित्तायरिया पंचविहा पंण्णत्ता तंजहा । अथवा चरित्रार्य पांचभेदे कह्या ते कहेछे—सामाइयचरित्तायरिया छेओवट्ठावणियं च परिहारविसुद्धि च सूहमसंपराय च अहक्खाय चरित्तायरिया । सामायिक चरित्रार्य छेदोपस्थापनीय चारित्र परिहारविशुद्ध चारित्र सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्य सूक्ष्म लोभनो उदयनथयाख्यात चारित्रा वे निष्कर्ष । से किंतं सामाइय चरित्तायरिया २ दुविहा पण्णत्ता तंजहा । ए चारित्रार्य कहिये, हिवे सामायिक चारित्रार्य तेहना दोयभेद कह्या ते

॥ टीका ॥

उत्सर्पिण्यवसर्पिणीरूपे तु चतुर्थारकप्रतिभागकाले न सम्भवति महाविदेहक्षेत्रे तेषा मसम्भवात्, चारित्रद्वारे-संयमस्थानद्वारेण मार्गणा तत्र सामायिकस्य च्छेदोपस्थापनस्य च चारित्रस्य यानि जघन्यानि संयमस्थानानि तानि परस्परतुल्यानि समानपरिणामत्वात् ततो ऽसङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि संयमस्थानान्य तिक्रम्योर्द्धं यानि संयमस्थानानि तानि परिहारविशुद्धिकयोग्यानि तान्यपि च केवलिप्रज्ञया परिज्ञाय्यमानानि असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणानि, तानि प्रथमद्वितीयचारित्राविरोधीनि तेष्वपि सम्भवात्, तत ऊर्द्धं यानि संख्यातीतानि संयमस्थानानि तानि सूक्ष्मसम्परायययाख्यायचारित्रयोग्यानि उक्तंच-तुल्ला जहन्नठाणे संयमठाणेणपढमबिइयाण । तत्तो असंखलोए गतुं परिहारियठाणा ॥ १ ॥

॥ मूल ॥

-इत्तरियसामाइयचरित्तारिया आवकहियसामाइयचरित्तारिया य । सेत्तं सामाइयचरित्तारिया । से किंतं छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-साइयारा छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया निरइयारा छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया । सेत्तं छेओवट्ठावणीयचरित्तारिया । से किंतं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया ? २ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा-निव्विस्समाणपरिहारविसुद्धियचरित्तारिया निव्विठ्ठकाइयपरिहारविसुद्धियचरित्ता

॥ भाषा ॥

कहेछे-इत्तरियसामाइय चरित्तारिया आवकहियसामाइय चरित्तारिया । तिहां जे कल्पसमीपंते गच्छनेविषे पहुचे इतर सामायिकचरित्र कह्यो जे दुत्तरचारित्रप्रतें उपसर्ग नकपजे अवकथिक ते कल्पसमाप्ते जिनकल्प पडिवजे उपसर्गादि खमे एतले सामायिक चरित्रार्य । सेकिंत छेओवट्ठावणिय चरित्तारिया २ दुविहा पं० तं० । हिवे छेदोपस्थापनीय चरित्र वेना दोयभेद कह्या ते कहेछे - साइयार छेओवट्ठावणिय च० निरइयार छेओवट्ठावणिय च० । अतीचार कोइलागो हवे सातीचार छेदोपस्थापनीय चरित्रार्य निरतिचार लिगार अतीचारलगान हुवे छेदोपस्थापनीय चारित्रार्य । सेत्तछेओवट्ठावणिय च० । एतले छेदोपस्थापनीय कह्या । सेकिंत परिहारविसुद्धि च० दुविहा पं० तं० । हिवे परिहारविशुद्धिकना दोयभेद कह्या तेकहेछे -- निव्विस्समाण परिहारविसुद्धिय च० निविठ्ठकाइय परिहारविसुद्धिय च० । निर्विसमानकं निर्विष्टकायक एहवो परिहारविशुद्ध चउत्थ अहम जघन्य मध्य

ते वि असंखालोगा अविरुद्धा चेव पढमबिइयाणं उवरिंवितीओऽसंखा संयमठाणाउदोण्हंपि ॥ २ ॥ तत्र परिहारविशुद्धिककल्पप्रतिपत्तिः स्वकीयेष्वेव संयमस्थानेषु वर्त्तमानस्य भवति न शेषेषु' यदा त्वतीतनय मधिकृत्य पूर्वप्रतिपन्नो विवक्ष्यते तदा शेषेष्वपि संयमस्थानेषु भवति परिहारविशुद्धिकल्पसमाप्त्यनन्तर मन्येष्वपि चारित्रेषु सम्भवात्, तेष्वपि च वर्त्तमानस्या तीतनय मपेक्ष्य पूर्वप्रतिपन्नत्वाविरोधात्, उक्तंच-सठाणे वहिवत्ती

रियाय। सेत्तं परिहारविसुद्धियचरित्तारिया। से किंतं सुहुमसंपरायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—संकिलिस्समाण सुहुमसंपरायचरित्तारिया विसुज्झमाण सुहुमसंपरायचरित्तारियाय सेत्तं सुहुमसंपरायचरित्तारिया से किंतं अहक्खायचरित्तारिया ? २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा छउमत्थ अहक्खायचरित्तारिया केवलिअहक्खायचरित्तारियाय सेत्तं अहक्खायचरित्तारिया सेत्तं चरित्तारिया सेत्तं अणाइपत्तारिया सेत्तं आयरिया सेत्तं कम्मभूमिगा सेत्तं गब्भवक्कंतिया सेत्तं मणुस्सा से किंतं देवा २ चउव्विहा पण्णत्ता, तंजहा भव

म उत्कृष्ट तपकरे निर्विष्टकायक परिहारविशुद्ध चारित्रार्य। सेत्त परिहारविसुद्धिय च०। एतले परिहारविशुद्धिक चारित्रार्य कह्या। सेकिंतं सुहुमसंपराय चरित्तायरिया दुविहा प० तं०। हिवे सूक्ष्मसंपराय ते स्यं सूक्ष्म लोभांशचीण अंश धोवाछै तेह दोयभेदछै। संकिलिस्समाण सुहुमसंपराय च०। संक्लेशमान सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्य ते उपशमश्रेणि चपितश्रेणिथकी पडित हुवे। विसुद्धमाणसुहुमसपराय च०। विशुद्धमान सूक्ष्मसपराय चरित्रार्य ते उपशमश्रेणि चपकश्रेणिथकी पडित हुवे। सेत्त सुहुमसंपराय च०। एतले सूक्ष्मसंपराय चारित्रार्य कह्या। सेकिंतं अहक्खायचरित्तायरिया दुविहा प० तं०। हिवे यथाख्यात चारित्रार्यना दोयभेद कह्या तेकहेछै—छद्मस्थ अहक्खाय च० केवलीअहक्खाय च०। छद्मस्थ यथाख्यात चारित्रार्य ते उपशांतमो हगुणठाणे चीणमोहगुणठाणे हुवे केवलीयथाख्यात चारित्रार्य ते सयोग अयोगगुणठाणे हुवे। सेत्त अहक्खाय सेत्त चरित्तायं० सेत्त अणिड्ढपत्तायरिया सेत्त आयरिया। एतले यथाख्यात चारित्रार्य कह्या एतले अनऋद्धिप्राप्त आर्यार्य कह्या एतले सर्व आर्य कह्या। सेत्त कम्मभूमगा सेत्त गब्भवक्कंतिया से

॥ टीका ॥

अन्नेसुवि होज्ज पुव्वपडिवन्नो । तेसु वि वट्टंतो सो तीतनयं पप्प पुव्वतीउ ॥ ३ ॥ तीर्थद्वारे-परिहारविशुद्धिको नियमत स्तीर्थप्रवर्त्तमान एव सति भवति न लच्छंदो नानुत्पत्त्यां वा तदभावे जातिस्मरणादिना, उक्तंच-तित्थम्मि नियमतोऽसइ होइ सतित्थंमि तदभावे । विगएणुप्पन्नेवा जाई सरणाइएहिंतु ॥ १ ॥ पर्यायद्वारे-पर्यायो द्विधा गृहस्थपर्यायो यतिपर्यायश्च, एकैकोपि द्विधा जघन्यत उत्कृष्टत श्च, तत्र गृहस्थपर्यायो जघन्यतः एकोनत्रिंशद्वर्षाणि यतिपर्यायो विंशति द्वावपि चोत्कर्षतो देशोनपूर्वकोटीप्रमाणौ उक्त च-एगस्सयसत्तेउ गिहिपरियागंजहन्नगुणतीसा । जइपरि यागुवीसा दोसुविउक्कोसदेसूणो ॥ १ ॥ आगमद्वारे-अपूर्वं मागमं स नाधीते यस्मा त्त त्कल्प मधिकृत्य प्रगृहीतोचितयोगाराधनतएव स कृतकृत्यतां व्रजते, पूर्वाधीतं तु विस्रोतसिकात्यर्थनिमित्त नित्यमेवैकाग्रमनाः सम्यक् प्रायो नुस्मरति, आहच अपुव्वंनहिज्जइ आगमेसोपडुच्चकप्पं । जमुचिय पगहियजोगा राहणमुचवकियकिच्चा ॥ १ ॥ पुव्वाहीयंतुतयपा यंश्रणुसइनिच्चमवेस एगग्गमणोसम्मं विस्सोयसिगाएखयहेऊ ॥ २ ॥ वेदद्वारे-नित्यप्र वृत्तिकाले वेदपुरुषवेदो भवेत् नपुंसकवेदो वा न स्त्रीवेदः स्त्रियाः परिहारविशुद्धिकल्पप्रतिपत्त्यसंभवात्, अतीत नय मधिकृत्य पुनः पूर्वप्रतिपन्न श्चित्यमानः सवेदो वा ऽवेदो वा तत्र सवेद श्रेणिप्रतिपत्त्यभावे उपशमश्रेणिप्रतिपत्तौ त्व वेद इति, उक्तंच-वेदोणविसिकाले इत्थीवज्जोउहोइएग यरो । पुव्वपडिवन्नगोपुण होज्जसवेदोअवेदोवा ॥ १ ॥ कल्पद्वारे-स्थितकल्पे यवाय नास्थितकल्पे ठियकप्पंमियनियमा इति वचनात्, तत्रा चेल क्यादिषु दशस्वपि स्थानेषु ये स्थिताः साधव स्तत्कल्पः स्थितकल्प उच्यते ये पुनश्चतुर्षु शय्यातरपिण्डे वावस्थितेषु कल्पेषु स्थिताः शेषेषु चा चेलक्यादिषु षट्सु अस्थिता स्तत्कल्पा स्थितकल्पः' उक्तंच-ठियअठियंमि यकप्पो आचेलुक्काइएसुठाणेसु । सव्वेसुविठियापढमो चउठियछमुअठिया बीउ ॥ १ ॥ आचेलक्यादीनिच दशस्थानान्यमूनि । आचेलक्कुद्देसिय सिज्जायररायपिण्डकियकम्म । वयजेट्ठपडिक्कमणे मासपज्जोसवणकप्पो ॥ १ ॥

॥ मूल ॥

णवासी वाणमंतरा जोइसिया वेमाणिया से किंतं भवणवासी ? भवणवासी दसविहा पण्णत्ता, तंजहा असु

॥ भाषा ॥

त्तं मणुस्सा सेकित दुया २ चउविहा पं० तं० । एतले कर्मभूमिया कह्या एतले अंतर कह्या एतले सर्व मनुष्य कह्या, हिवे देवतांना ४ भेद कह्या ते कहे

चत्वारश्चावस्थिताः कल्पाइमे सेऊकायरपिछम्मी चाउज्जामेयपुरिसजेहेय । किइकम्मस्सयकरणे चत्तारिअवहियाकप्पा ॥ २ ॥ लिंगद्वारे-नियमितो द्विविधेपि लिंगे नवात तद्यथा-द्रव्यलिंगे नावलिंगे च एकोनापि विना विवक्षितकल्पोचितसामाचार्ययोगात्, लेश्याद्वारे-तेजःप्रभृतिकासू त्तरा सु तिसृषु विशुद्धासु लेश्यासु परिहारविशुद्धिक कल्प प्रतिपद्यते पूर्वप्रतिपन्नः पुनः सर्वास्वपि कथं चि द्भवति तत्रापी स्वराविशुद्धिलेश्यासु नात्य न्तसंक्लिष्टासुवर्त्तते तथाभूतासुवर्त्तमानोनप्रभूतकालमवतिष्ठते किंतुस्तोक यतःस्वीर्यवशात्झटित्येव ताभ्योव्यावर्त्तते अथ प्रथमत एव कस्मा त्प्रव र्त्तते उच्यते कर्मवशात् उक्तञ्च लेसासुविसुद्धासु पढिवज्जइतीसुनउणसेसासु पुव्वपडिवन्नउपुण होज्जासद्धासुविकहिचि ॥ १ ॥ सुचरसंकिलिठासु थोवंकालंचहांनेश्चयेनदिइयरासु चित्तकम्माणगडं तहाविवीरियफलदेइ ॥ १ ॥ ध्यानद्वारे-धर्मध्याने न प्रवर्द्धमाननपरिहारविशुद्धिकप्रतिपद्यते पू र्वप्रतिपन्नः पुनरार्त्तरौद्रयोरपिभवति केवलं प्रायेण निरनुबध आह च झाणम्मिविनय मेण पढिवज्जइसो पवद्धमाणेण इयरसुविझाणासु पुव्वप

---

वन्नो नपडिसिद्धो ॥ १ ॥ एवंचझाणजोगे उद्दामेतिव्वकम्मपरिणामा रोद्दट्टसुविन्नावो इमस्सपायनिरणुबंधो ॥ २ ॥ गणनाद्वारे जघन्यत स्त्रयो गणाः प्रतिपद्यन्ते उत्कर्षतः शतसङ्खाः पूर्वप्रतिपन्नाः जघन्यतः उत्कृष्टतो वा शतशः पुरुषगणनया जघन्यतः प्रतिपद्यमानाः सप्तविंशति रुत्कर्षतः सहस्रं पूर्वप्रतिपन्नकाः पुनर्जघन्यतः शतशः उत्कर्षतः सहस्रशः आह च गणनुतिन्नवगणा जहन्नपढिवत्तिसयस उक्कोसा उक्कोसजहन्नेण सयसाच्चियपुव्वप डिवन्ना ॥ १ ॥ सत्तावीसजहन्ना सहस्समुक्कोसनुयपढिवत्ती सयसोसहस्ससोवा पढिवन्नजहन्नउक्कोसा ॥ २ ॥ अन्य च यदा पूर्वप्रतिपन्नकल्पमध्या देको निर्गच्छति अन्यः प्रविशति तदो नप्रक्षेप प्रतिपत्तौ कदाचि देकोपि भवति पृथक्त्वं वा पूर्वप्रतिपन्नो प्येवं नजनया कदाचिदेकः प्राप्यते पृथ क्त्वं वा उक्तञ्च पढिवज्जमाणभयणाए होज्जएक्कोविजणपक्खेवे पुव्वपढिवन्नयावियं नइयाएक्कोपुहुत्तंवा ॥ १ ॥ अनिग्रहद्वारे-अनिग्रहा श्चतुर्विधा स्तद्यथा द्रव्यानिग्रहाः क्षेत्रानिग्रहा कालानिग्रहा नावानिग्रहा श्च एते चा न्यत्र चर्चिता इति न भूय श्चर्च्यते तत्र परिहारविशुद्धिकस्ये ते भिन्न

॥ टीका ॥

ट्ठा न जवन्ति यस्मा देतस्य कल्पस्यव यथोदितरूपो जिग्गहो वर्त्तते उक्तञ्च दव्वाईअजिग्गह विचित्तरूवानहींतिपुणकेई एयस्सजीयकप्पो कप्पोचिय जिग्गहोजेण ॥ १ ॥ एयमिगोयराई नियमानियमेणनिरववादाय तप्पालणवियपरं एयस्सविसुद्धिठाणंतु ॥ २ ॥ प्रव्रज्याद्वारे-ना सा वन्य प्रव्राजयति कल्पस्थिति रेषेति कृत्वा आहच पव्वावेइ न एसो अन्नकप्पठिइत्तिकाऊणंति उपदेश पुन र्यथाशक्ति प्रयच्छति मुंडापनद्वारेपि ना सा वन्य मुंडयति अथ प्रव्रज्यानन्तर नियमतो मुण्डनमिति प्रव्रज्याग्रहणेनैव तदृहीतमिति किमर्थं पृथक्द्वारं तद युक्त प्रव्रज्याद्वारे नियमतो मुण्डनस्या सम्भवात् अयोग्यस्य कथञ्चि दुत्तायामपि प्रव्रज्यायां पुनरयोग्यतापरिज्ञाने मुण्डनायोगादतः पृथगिदंद्वारमिति प्रायश्चित्तविधिद्वारे । मनसापि सूक्ष्ममप्यतिचारमापन्नस्य नियमत श्चतुर्गुरूकं प्रायश्चित्तमस्य यत एष कल्प एकाग्रताप्रधान स्तत स्तद्भङ्गे गुरुतरदोष इति कारणद्वारे तथा कारणनाम आलम्बनं यत्पुनः सुपरिशुद्धं ज्ञानादिकं तच्चा स्य न विद्यते येन तदाश्रित्यापवादपदसेविता स्यात् एष हि सर्वत्र निरपेक्ष क्लिष्टकर्मक्षयनिमित्तं प्रारब्ध मेव स्व कल्प यथोक्तविधिना समापयन् महात्मा वर्त्तते उक्तञ्च कारणमालंबणमोसु पुणनाणाईयमुपरिसुद्धं एयस्सतंनविज्जइ उचियतपसाहणोपाय ॥ १ ॥ सव्वत्थनिरवयक्खो आढत्तचयदढसमाणतो वट्टइएसमहप्पा किलिट्ठकम्मक्खयनिमित्त ॥ २ ॥ निःप्रतिकर्मताद्वारे एष महात्मा नि प्रतिकर्मशरीरो ऽक्षिमलादिकं मपि कदाचि न्ना पनयति न च प्राणांतकेपि समापतिते व्यसने द्वितीयपद सेवते उक्तञ्च निप्पडिकम्मशरीरो अच्छिमलाईविनावणेइसया पाणांतिए वियमहा वसगोमिनवट्टएसीए ॥ १ ॥ अप्पबहुत्तालोयण विसयादीउवहोइएसत्ति अहवासुहुन्नावाउ बहुगपयंचियइमस्स ॥ २ ॥ भिक्षाद्वारे-एतदेवचारित्र तथा विहारक्रम श्च तृतीयस्यां पौरुष्यां भवति शेषासु च पौरुषीषु कायोत्सर्गो निद्रापि चा

## रकुमारा नागकुमारा सुवण्णकुमारा विज्जुकुमारा अग्गिकुमारा दीवकुमारा उदहिकुमारा दिसाकुमारा वाउ

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

छे—भवणपतीया वाणमंतरा जोतिसिया वेमाणिया । भवनपती वानव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक । सेकिंत भवणवासी दसविहा प० तं० । हिवे भवनपती दशभेद कह्या ते कहछे— असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार विद्युकुमार अग्निकुमार दीवकुमार उदधिकुमार दिसिकुमार वायुकुमार थणिय

॥ टीका ॥

स्या ल्या द्रष्टव्या यदि पुनः कथमपि जङ्घाबलमस्य परिक्षीणं भवति तथा प्ये षो विहरन्न पि महानागो न द्वितीयपदमा पद्यते किन्तु तत्रैव यथा कल्पमा त्मीयं योगं विदधातीति उक्तञ्च तइयाएपोरिसीए भिक्खाकालोविहारकालोउ सेसासुउउस्सग्गो पायंअप्पायनिद्दिट्ठ ॥ १ ॥ जंघाबलंमि खीणे अविहरमाणोविनवरमावज्जे तत्थेवछहाकप्पंकुणइउजोगमहानागो ॥ १ ॥ एते च परिहारविशुद्धिका द्विविधाः तद्यथा-इत्वरा यावत्कथि काश्च तत्र ये कल्पसमाप्त्यनन्तरं तमेव कल्पं गच्छवास मुपयास्यंति तेइत्वराय पुनःकल्पसमाप्त्यनन्तरमव्यवधानेन जिनकल्प प्रति पत्स्यन्ते ते या वत्कथिका, उक्तञ्च-इत्तरियथेरकप्पे जिणकप्पेआवकहियत्ति अत्र स्थविरकल्पं ग्रहण उपलक्षणं स्वकल्पे चेतिद्रष्टव्यं तत्रे त्वराणां कल्पप्रभावा द्देव मनुष्यतैर्यग्योनिकृता उपसर्गाः सद्योघातिनः आतङ्क अतीवा विषह्या श्च वेदना न प्रादुःखन्ति यावत्कथिकानां सम्भवयुरपि ते हि जिनकल्पं प्र तिपत्स्यमाना जिनकल्पभावम नुविदधति जिनकल्पिकानां चो पसर्गादयः सम्भवन्तीति उक्तञ्च इत्तरियाणुवसग्गा आतंकावेयणायनहवंति आ वकहियाणनहया इति तथा सूक्ष्मो लोभांशावशेषः सम्परायः कषायोदयो यत्र तत्सूक्ष्मसम्परायं त द्व द्विधा विशुध्यमानकं संक्लिश्यमानकं च तत्र विशुध्यमानकं क्षपकश्रेणिमुपशमश्रेणिंवा समारोहतः संक्लिश्यमानं तू पशमश्रेणितः प्रच्यवमानस्य अथाख्यातमिति अथ शब्दो यथार्थे आङ अभिविधौ यथातथ्येन आभिविधिना वा यत्ख्यातं कथितं अकषायं चारित्र मिति तदा ख्यातं, उक्तञ्च अहसद्दोजहत्थे आङाभिविहीएकहियम क्खाय चरणकसायमुइयं तमहक्खायंजहक्खायं ॥ १ ॥ यथाख्यातमितिकं द्वितीयनाम तस्या य मन्वर्थः । यथा सर्वस्मिन् जीवलोके ख्यातं प्रसिद्धं अक षायं भवति चारित्र मिति तथैव यत् यथाख्यातं तच्च द्विधा छाद्मस्थिकं कैवलिकञ्च तत्रछाद्मस्थिकमुपशान्तमोह गुणस्थानके क्षीणमोहगुणस्थानके

॥ मूल ॥

कुमारा थणियकुमारा तेसमासनुदुविहा पन्नत्ता, तंजहा-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं भवणवासी से

॥ भाषा ॥

कुमार १० । असुरकुमार नागकुमार सुवर्णकुमार विद्युत्कुमार अग्निकुमार द्वीपकुमार उदधिकुमार दिशिकुमार वायुकुमार स्तनितकुमार १० । एते स मासओ दुविहा प० त० । ए सत्तपथो दोयभेद कह्या ते कहिछे-पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्तं भवणवासी । एतले भवनपती क

वा कैवलिकं सजोगि केवलिभवम योगिकेवलिभवं च सेत्तमित्याद्यु पसंहार कदंबकं सूत्रं सुगमं तदेवं उक्ताः मनुष्यः संप्रति देवप्रतिपादनार्थमाह ॥ सेकिंतमित्यादि ॥ अथके ते देवाः सूरिराह देवा श्चतुर्विधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-भवनवासिनो १ व्यन्तरा २ ज्योतिष्का ३ वैमानिकाः ४ तत्र भवनेषु वसन्तीत्येवं शीलाः भवनवासिनः एतद्बाहुल्यतो नागकुमारादयपेक्षया द्रष्टव्यं, ते हि प्रायो भवनेषु वसन्ति कदाचिदावासेषु असुरकुमाराः प्राचुर्येणा वासेषु कदाचि द्भवनेषु अथ भवनानामा वासानाञ्चकः प्रतिविशेष उच्यते भवनानि बहिर्वृत्तान्यन्तः समचतुरस्राणि अधः पुष्करकर्णिका संस्थाना नि आवासाः कायमानस्थानीया महामण्डपा विविधमणिरत्नप्रदीपप्रभासितसकलदिक्चक्रवालाइति । अन्तरं नाम अवकाश. त च्चेहा श्रयरूपं द्रष्टव्यं विविधं भवननगरावासरूपम न्तरं येषांते व्यन्तरा स्तत्र भवनानि रत्नप्रभायाःप्रथमे रत्नकाण्डे उपर्यध श्च प्रत्येकं योजनशतमपहाय शेषे ऽष्टयोजनशतप्रमाणे मध्यभागे भवन्ति नगराण्यपि तिर्यग्लोके तत्र तिर्यग्लोके यथा जम्बूद्वीपद्वाराधिपते विजयदेवस्या न्यस्मिन् जम्बूद्वीपे द्वा

---

दशयोजनसहस्रप्रमाणा नगरी आवासाः त्रिष्वपि लोकेषु तत ऊर्ध्वलोके पण्डकवनादाविति अथवा विगतमन्तरं मनुष्येभ्यो येषांते व्यन्तराः तथाहि मनुष्यानपि चक्रवर्त्तिवासुदेवप्रभृतीन् भृत्यवदु पचरंति केचि द्व्यन्तरा इति मनुष्येभ्यो विगतान्तरा यदि वा विविधम न्तरं शैलान्तरं वनान्तरं वा श्रयरूपं येषांते व्यन्तराः प्राकृतत्वा द्व सूत्रे वाणमन्तरा इति पाठः यदि वानमन्तरा इति पदसंस्कारः तत्रेयं व्युत्पत्तिर्वनानाम न्तराणि वना न्तराणि तेषु भवा वानमन्तराः पृषोदरादित्वा दुभयपदपदान्तरालवर्त्तिमकारागमः, तथा द्योतयन्ति प्रकाशयन्ति जगदिति द्योतीषि विमानानि औणादिकीशब्दव्युत्पत्तिः तेषु भवा ज्योतिष्का अध्यात्मादिभ्य इती कण् तचेवर्णोवर्णदोसिसुसइते इकण् आदि रिकारस्य लोपः अनन्निधाना द्व वृ द्धभावः यदि वा द्योतयन्ति शिरोमुकुटोपगूहिनिः प्रज्ञापनफलकल्पे सूर्यादिमण्डलैः प्रकाशयन्तीति ज्योतिषो देवाः सूर्यादय स्तथा हि सूर्यस्य सूर्याकारं मुकुटाग्रभागे चिह्नं चद्रस्य चद्राकारं नक्षत्रस्यनक्षत्राकारं ग्रहस्य ग्रहाकारं तारकस्य तारकाकारं तैः प्रकाशयतीति' आह च तत्त्वार्थभा

॥ टीका ॥

ष्यकृत् द्योतयंते इति द्योतींषि विमानानि तेषु भवा द्योतिष्काः यदवाज्योतिषो देवा ज्योति रिव ज्योतिष्का मुकुटै शिरो मुकुटोपगूहिनिः प्रभा मण्डलै रुज्ज्वलैः सूर्यचंद्रग्रहनक्षत्रतारकाणां मण्डलै र्यथा स्वचिह्नै विराजमाना द्युतिमतो ज्योतिष्का भवन्तीति तथा विविध मन्यते उपभुज्यन्ते पुण्यवद्भि र्जीवै रिति विमानानि तेषु भवा वैमानिकाः, सम्प्रत्ये तेषा मेव क्रमेणभेदानभिधित्सुराह-सेकिंतभवणवासी इत्यादि ॥ असुरा श्च ते कुमारा श्च असुरकुमाराः एवं नागकुमारा इत्याद्यपि भावनीय अथकस्मा देते कुमारा इति व्यपदिश्यंति उच्यते कुमारवच्चेष्टनात् तथाहि-कुमारावे तेसुकुमारमृदुमधुरललितगतयः शृंगाराभिप्रायकृतविशिष्टविशिष्टतरोत्तररूपक्रियाः कुमारव च्चो द्धतरूपवेष भाषाभरणप्रहरणाचरण यान वाहनः कुमारवच्चोल्बणरागाः क्रीडनपरा श्च तत कुमार इव कुमारा इति, किंनरा इत्यादि किन्नरा दशविधा स्तद्यथा किन्नराः किंपुरुषाः २ किंपुरुषोत्तमाः ३ किन्नरोत्तमा ४ हृदयगमा ५ रूपशालिनः ६ अनिंदिता ७ मनोरमा ८ रतिप्रिया ९ रतिश्रेष्ठाः १०' किंपुरुषा दशविधा स्तद्यथा पुरुषाः १ सत्पुरुषाः २ महापुरुषाः ३ पुरुषवृषभनाः ४ पुरुषोत्तमा ५ अतिपुरुषा ६ महादेवा ७ मरुतः ८ मेरुप्रतिभाः ९ यशस्वन्तः १०, महोरगा दशविधा स्तद्यथा भुजगा १ भोगशालिनः २ महाकाया ३ अतिकायः ४ स्कंधशालिनः ५ मनोरमा ६ महावेगा ७ महेययक्षा ८ मेरुकांताः ९ भास्वंतः

॥ मूल ॥

**किंतं वाणमंतरा२ अट्ठविहा प०, तंजहा किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा जक्खा रक्खसा भूया पिसाया ते समासओ दुविहा पन्नत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं वाणमंतरा से किंतं जोइसिया २**

॥ भाषा ॥

ख्या । सेकिंतं वाणमंतरा २ अट्ठविहा पं० तं० । हिवे बानव्यन्तर देवताना ८ भेद कह्या ते कहेछे—किन्नरा किंपुरिसा महोरगा गंधव्वा जक्खा राक्षसा भूया पिसाया एते समासथी दुविहा प० तं० । किन्नर किंपुरुष महोरग गन्धर्व यक्ष राक्षस भूत पिशाच ए संक्षेपथकी दोयभेदे कह्या ते कहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्त बाणमंतरा सेकिंतं जोयसिया २ पंचविहा पं० तं० । ते एतले बानव्यन्तर कह्या, हिवे ज्योतिषीना ५ भेद कह्या ते कहेछे-चंद्रा सूरा गहा नक्खत्ता तारा एते समासथी दुविहा पं० तं० चन्द्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा ५ । ए संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या ते कहे

॥ टीका ॥

१०, गंधर्वाद्वादशविधाः तद्यथा-हाहा १ हूहू २ तुम्बरवः ३ नारदाः ४ ऋषिवादिकाः ५ भूतवादिकाः ६ कादम्बाः ७ महाकादम्बाः ८ रेवताः ९ विश्वावसवः १० गीतरतयो ११ गीतयशसः १२, यक्षा त्रयोदशधा स्तद्यथा-पूर्णभद्राः १ माणिभद्राः २ श्वेतभद्राः ३ हरितभद्राः ४ सुमनोभद्राः ५ व्यतिपातिकभद्राः ६ सुभद्राः ७ सर्वतोभद्राः ८ मनुष्ययक्षाः ९ वनाधिपतयो १० वनाहाराः ११ रूपयक्षाः १२ यक्षोत्तमाः १३ राक्षसाः सप्तविधास्तद्यथा-भीमाः १ महाभीमाः २ विघ्नाः ३ विनायकाः ४ जलराक्षसाः ५ राक्षसः ६ राक्षसाः ७, भूतानवविधा स्तद्यथा-सुरूपाः १ प्रतिरूपाः २ अतिरूपाः ३ भूतोत्तमाः ४ स्कन्दकाः ५ महास्कन्दकाः ६ महावेगाः ७ प्रतिच्छन्नाः ८ आकाशगाः ९, पिशाचाः षोडशविधा स्तद्यथा-कूष्माण्डाः १ पटकाः २ जोषा ३ आह्निकाः ४ कालाः ५ महाकालाः ६ चोक्षाः ७ अचोक्षाः ८ तालपिशाचाः ९ मुखरपिशाचाः १० अधस्तारकाः ११ देहाः १२ विदे

॥ मूल ॥

पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा चंदासूरागहनक्खत्तातारा तेसमासेणं दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय से किंतं जोइसिया से किंतं वेमाणिया २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा कप्पोवग्गाकप्पाईयाय सेकिंतं कप्पोवग्गा २ बारसविहा पण्णत्ता, तंजहा सोहम्मा ईसाणा सणंकुमारा माहिंदा बंभलोया लंतया महासुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया तेसमासेणं दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय

॥ भाषा ॥

छ—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्तं जोइसिया सेकिंतं वेमाणिया दुविहा प० तं० एतले ज्योतिषी कह्या, हिवे वैमानिक दोयप्रकार कह्या ते कहेछे—कप्पोवग्गा कप्पाईया । कल्पोत्पन्न कल्पातीत । सेकिंत कप्पोवगा २ बारसविहा प० त० । हिवे कल्पोत्पन्नना १२ भेद कह्या ते कहेछे । सोहम्मा ईसाणा सणतकुमारा माहिंदा बंभालोया लंतया सुक्का सहस्सारा आणया पाणया आरणा अच्चुया ते समासथी दुविहा प०त० । सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्मलोक लांतक शुक्र सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत ते संक्षेपथकी दोयप्रकारे कह्या तेकहेछे—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्तं कप्पोवगा सेकिंत कप्पाईया २ दुविहा प० तं० । ए कल्पोत्पन्न कह्या, हिवे कल्पातीतना दोयभेद कह्या ते कहेछे—गेविज्ज

॥ टीका ॥

हाः १३ महाविदेहाः १४ तूष्णीकाः १५ वनचिह्नाश्च १६ इति ॥ कप्पोवगा कप्पातीयत्ति ॥ कल्पाचारः स चेह इन्द्रसामानिकत्रयस्त्रिंशादिव्यवहाररूप स्तमुपगताः सौधर्मेशानादिदेवलोकनिवासिनः यथोक्तरूप कल्पमतीता अतिक्रान्ताः कल्पातीता अधस्तनाधस्तनग्रैवेयकादिनिवासिन स्तेहि सर्वेप्य हमिन्द्रा स्ततो भवन्ति कल्पातीताः, कल्पोपगान् दर्शयति-सोहम्मीसाणइत्यादि ॥ सौधर्मदेवलोकनिवासिनः सौधर्माः, ईशानदेवलोकनिवासिनः

॥ मूल ॥

से किं कप्पोवगा से किं कप्पाईया २ दुविहा पण्णत्ता, तंजहा गेविज्जगाय अणुत्तरोववाइयाय से किं गेविज्जगा २ नवविहा पण्णत्ता, तंजहा हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जगा हिट्ठिममज्झिमगेविज्जगा हिट्ठिमउवरिम गेविज्जगा मज्झिमहिट्ठिमगेविज्जगा मज्झिम २ गेविज्जगा मज्झिमउवरिमगेविज्जगा उवरिमहिट्ठिमगेविज्ज गा उवरिममज्झिमगेविज्जगा उवरिम२ गेविज्जगा तेसमासेणं दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्ज

॥ भाषा ॥

गाय अणुत्तरोववाइयाय । ९ नव ग्रैवेयक ५ अणुत्तरविमान । सेकिंतं गविज्जगा २ नवविहा पं० तं० । हिवे ग्रैवेयक बासौना नवभेद कह्या ते कहेछै । हेट्ठिम२ गे वज्जगा हेट्ठिममज्झिमगेविज्जगा हेट्ठिमउवरिमगेविज्जगा मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जगा ४ । प्रथम ग्रैवेयकनो हेठलोग्रैवेयक प्रथम त्रिकनो उपरि लोग्रैवेयक प्रथम त्रिकनो मध्यग्रैवेयक होतिय त्रिकनो प्रथम ग्रैवेयक होतिय त्रिकनो मध्यमग्रैवेयक । मज्झिम २ गे० मज्झिमउवरिम गे० उवरिमहेट्ठि म गे० उवरिममज्झिम गे० उवरिम २ गेविज्जगा ५ । होतिय त्रिकनो त्रीजो ग्रैवेयक तीजा त्रिकनो प्रथमग्रैवेयक चोजा त्रिकनो मध्यमग्रैवेयक तीजा त्रिकनो जपरिलोग्रैवेयक । एते समासथी दुविहा प० तं० । ए संक्षेपे बेप्रकारे कह्या तेकहेछै । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्तं गेवेज्जगा । एतले ग्रैवेयकदेवता कह्या । सेकिंतं अणुत्तरोववाइया २ पंचविहा पं० तं० । हिवे अनुत्तरवासी कहेछै ते अनुत्तरवासीना पांचभेद कहेछै । विजया वेजयंता जयंता अपराजिया सव्वट्ठसिद्धा एते समासथी दुविहा पण्णत्ता तंजहा । विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित सर्वार्थसिद्ध ए संक्षेपे बेय भेदछै । पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । पर्याप्ता अपर्याप्ता । सेत्तं अणुत्तरोववाइया सेत्तं कप्पाईया सेत्तंवेमाणिया । एतले अणुत्तरवासी कह्या एते कल्पा

ईशानाः, एवंसर्वत्रापिभावनीयं ॥ तत्र तात्स्थ्यात्तद्व्यपदेशो यथापञ्चालदेशनिवासिनः पञ्चाला इति ॥ इतिश्रीमलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापना टीकायां प्रथम प्रज्ञापनाख्यं पद समर्थितमिति ॥ १ ॥ ग्रथाग्र १८२५ ॥ त देव व्याख्यात प्रथम पद सम्प्रति द्वितीय मारभ्यते । तस्य चा य मभिसम्बन्धः प्रथमपदे पृथिवीकायिकादय प्र रूपिताः इह तु तेषा मेव स्थानानि प्ररूप्यते तत्र चेद मादिसूत्र-कहिण भंते इत्यादि ॥ कहिति ॥ कस्मि न् ' णम्शब्दोवाक्यालंकारे ॥ भदंतेति ॥ परमगुर्वामत्रण, बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि स्वस्थानादीनि प्रज्ञप्तानि प्ररूपितानि एव गौ

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

नगाय सेत्तं गेविज्जगा से किंतं अणुत्तरोववाइया २ पंचविहा पण्णत्ता, तंजहा विजया वैजयंता जयंता अपराजिया सव्वठसिद्धा तेसमासतं दुविहा पण्णत्ता, तंजहा पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय सेत्तं अणुत्तरोववाइया सेत्तं कप्पाईया सेत्तं वेमाणिया सेत्तं देवा सेत्तं पंचिंदिया सेत्तं संसारसमावण्णजीवपन्नवणा सेत्तं जीवपन्नवणा सेत्तं पन्नवणा पन्नवणाए पढमंपयंसम्मत्तं ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणानिगणा प० ? गोयमा ! सठाणेणं अठसुपुढवीसु तंजहा—रयणप्पभाए सक्करप्प

॥ भाषा ॥

तीत कह्या वैमानिक कह्या । सेत्त देवा सेत्तं पंचेंदिय संसारसमावण्णजीव पण्णवणा सेत्त जीव पण्णवणा सेत्त पण्णवणा पण्णवणाए भगवइए पढमं पयं समत्तं । एतले देवता कह्या एतले पंचेंद्रिय कह्या एतले संसारसमापन्नजीव प्रज्ञापनानो अधिकार कह्यो पहिले पद पृथ्वीकायादिक कह्या, हिवे दूजेपद जीवने ऊपजवानो ठाम कहेछै—एतले पन्नवणा भगवतीनो प्रथमपद समाप्त थयो ॥ १ ॥ कहणंभंते बायरपढवीका इयाण पज्जत्तगाणं पं० । किहां हेभगवन् बादर पृथ्वीकायना पर्याप्तानां थानक कह्या उ० । गोयमा सठाणेणं अठसुपढवीसु तं रयणप्पभाए सक्करप्प० वालुय० पंकप्प० धूम० तम० तमतमप्प० ईसिप० ८ । रत्नप्रभा शर्करप्रभा बालुकप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा ऊचीग्रिलासिडकी ८ । अहोलोए पायाले भवणेसु भवणपत्थडेसु णिरएसु णिरयावलियासु णिरयपत्थडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु । पृथ्वीलगे अधोलोके पातालकलशें भुव

तमस्वामिना प्रश्नेकृते भगवानाह वर्द्धमानस्वामी गो० सद्दाणेणमित्यादि। ननु गौतमोपि भगवा नुपचितकुशलमूलो गणधरः तीर्थंकरभाषितमातृका पदश्रवणमात्रावाप्तप्रकृष्टश्रुतज्ञानावरणक्षयोपशम श्रुतदशपूर्ववित् सर्वाक्षरसन्निपाती विवक्षितार्थप्रतिज्ञानसमन्वित एव ततः किमर्थं पृच्छति न हि चतुर्दशपूर्वविदः सर्वोत्कृष्टश्रुतलब्धिसमन्वितस्य किञ्चित्प्राज्ञापनीयम विदितमस्ति यतउक्त-संखाइएविन्नवे साहइजंवापुरोउपेच्छेज्जा। नयणअणाइससी वियाणईयसळउमत्था ॥ १ ॥ सत्य मेतत् केवलं जानन्नेव गौतमस्वामी भगवान न्यत्र विनयेभ्यः प्रतिपाद्य तत्सम्प्रत्ययनिमित्तं विवक्षितार्थं पृच्छति यदि वा प्रायः सर्वत्र गणधरप्रश्नतीर्थंकरनिर्वचनरूप सूत्रमतो भगवाना यंष्यामो पीत्यमेव सूत्रं रचयति, अथवा सम्भवति तस्यापि गणभृतो गौतमस्वामिनो ऽनाभोगः छद्मस्थत्वात् उक्तंच-न हि नामा नाभोगः छद्मस्थस्येह कस्य चिन्ना स्ति। ज्ञानावरणीयं हि ज्ञानावरणप्रकृति कर्म ॥१॥ ततो जातसंशयः सन् पृच्छतीति न कश्चि द्दोषः, गोयमा इति लोकप्रथितमहाविशिष्टगोत्राभिधायकोपमामन्त्रणध्वनिः हेगौतम! गौतमगोत्रे ति भावार्थः ॥ सद्दाणेण इति ॥ स्वस्थानं यत्रा सते बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्ता आसना श्च वर्णादिविभागेना दृष्टुं शक्यन्ते तत्स्वस्थानमिति भावः स्वस्थानग्रहण मुपपातसमुद्घातस्थाननिवृत्त्यर्थं तेन स्वस्थानेन स्वस्थानम ङ्गीकृत्येति भावः' अष्टासु पृथिवीषु सर्वत्र बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्ता

॥ टीका ॥

---

नाए वालुयप्पभाए पंकप्पभाए धूमप्पभाए तमप्पभाए तमतमप्पभाए अहेसत्तमाए ईसीप्पभाराए पुढवीए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु वि

॥ मूल ॥

---

रस्य नर्के भवनपतिनिवासे नरकप्रकीर्णकरूपे नरकावास आवलीप्रविष्ट नरकने पाथडे ऊर्ध्वलोके कल्पदेवलोके सौधर्मादिके विमान। विमाणावलिए वि माणपत्थडेसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजएसु वक्खारेसु वासहरपव्वएसु वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु इत्थण ावरपुढवीकाइयाण पज्जत्तगाण ठाणाणं उववाएणंठाणा। विमानआवलिका विमानेनामे विमान ते प्रतरे तिरछेलोक क्षुल्लहिमवंतपर्वतने कूटे सिद्धायत न कूटशेषपर्वत शिखरसहित पर्वत तेनामे प्राग्भार विजये कच्छादि वक्षस्कार विद्युत्प्रभादि प्रवर्त्ते वर्षधरपर्वत हिमवन्तादि वेलमुद्रादि वेदिक जंबूद्वीप

॥ भाषा ॥

नां स्थानानीति योगः, ताएवा ष्टौ पृथिवीनामग्राह माह-तंजहेत्यादि ॥ तद्यथा रत्नप्रभायां यावदष्टम्या मीषत् प्राग्भारायां तथा ऽधोलोके पातालेषु पातालकलशेषु वलयामुखप्रभृतिषु भवनेषु भवनपतिनिकायावासरूपेषु भवनभूमिकारूपेषु इह भवनग्रहणेन भवनानामेव केवलानांग्रहणं भवनप्र स्तटग्रहणेन तु भवनानामपान्तरालस्यापि तथा नरकेषु प्रकीर्णकरूपेषु नरकावासेषु नरकावलिकासु आवलिकाव्यवस्थितेषु नरकावासेषु नरकप्रस्त

माणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए टंकेसु कूडेसु सेलेसु सिहरीसु पब्भारेसु विजयेसु वक्खारेसु वासेसु वासहरपव्वएसु वा वेलासु वेइयासु दारेसु तोरणेसु दीवेसु समुद्देसु एत्थणं बादरपुढवीकाइयाणं

दि जगतीद्वार विजयादि तोरणधारादिसंबधी घणों एं सर्वद्वीप समुद्रप्रते ठामै पूर्वोक्तस्थानके जे पर्याप्ता आऊखो भोगवे तेलेवा केतलाएक इमकहै पृथ्वीकायना असलगतिना लेवा पर्याप्ताना ठामकह्या ऊपजवो सर्वलोक। लोयस्स असंखिज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे सट्ठाणेणं। लो क ते असख्यातमेंभागे समुद्घातआश्री लोकने असंख्यातमेंभागे स्वस्थान रत्नप्रभा अन्तरालगे जेते। लोयस्स असंखिज्जइभागे कहिणंभंते बायरपुढवीका इयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणाणं पं०। लोकने असंख्यातमेंभाग ठामहुवे, हिवे किहां भगवन् बादर पृथ्वीकाइयाना अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा जत्थे व बायरपुढवीकाइयाण पज्जत्तगाणं ठाणा। हेगौतम जिहां बादरपृथ्वीकाइया पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तत्थेव बायरपुढवीकाइयाणं अपज्ज त्तगाणं ठाणा पं०। तिहां बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ताना ठामकह्या। उववाएणं समुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेण लोयस्स असंखिज्जइभागे। ऊपजवो स मुद्घात सर्वलोके मरणसमुद्घातने वस्यहवें स्वस्थानलोकने असख्यातमेंभागे। कहिणंभंते सुहमपुढवीकाइयाणं पज्जत्ता अपज्जत्तगाणं ठाणा पं०। किहां भ गवन् सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा सुहमपुढवीकाइया पज्जत्ता जे अपज्जत्ता ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता। हेगौतम सूक्ष्मपर्याप्ता अपर्याप्ता पृथिवीकायने सर्वनो एकविधछै विशेषरहित जिम पर्याप्ता तिम जाणिवा। सव्वलोय परियावण्णगा पं०। स र्वलोक व्यापारह्याछै रहवो कह्यो। समणाउसो। अहो श्रमण आउखावन्तो। कहिणं भंते बायर आउक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पं०। किहां

॥ टीका ॥

टेषु नरकभूमिरूपेषु अत्रापि नरकनरकावलिकाग्रहणेन केवला एव नरकावासाः परिगृह्यंते, नरकप्रस्तटग्रहणेन तु नरकापान्तराल मपि ऊर्द्धलोके कल्पेषु सौधर्मिकादिकल्पेषु, अनेन द्वादशदेवलोकपरिग्रहविमानेषु ग्रैवेयकसम्बन्धिषु प्रकीर्णकरूपेषु विमानावलिकासु आवलिकाप्रविष्टेषु ग्रैवेय कादिविमानेषु विमानप्रस्तटेषु विमानभूमिकारूपेषु अत्रापि प्रस्तटग्रहण विमानान्तरालभाविना मपि यथासम्भवभाविनां बादरपर्याप्तपृथिवीका यिकानां स्थानपरिग्रहार्थं तथापि तिर्यग्लोके टङ्केषु छिन्नटकेषु सिद्धायतनकूटप्रभृतिषु शैलेषु शिखरहीनपर्वतेषु शिखरिषु शिखरयुक्तेषु पर्वतेषु

॥ मूल ॥

पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्ज० सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा !

॥ भाषा ॥

भगवन् बादरअकाय पर्याप्तान ठामकह्या । गोयमा सट्ठाणणं सत्तसु घणोदही बलिएसु । हेगौतम स्वस्थानआश्री सप्त पृथिवीयें घनोदधि ठामे सात घनोदधिना वलयनेठामे । अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु । अधोलोकें पातालना भुवनविषै भवनना पाथडाविषै । उड्ढलोए कप्पेसु विमाणे सु विमाणवलियाएसु । ऊर्द्धलोके कल्प बारेदेवलोके विमाननी श्रेणीविषै । विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु एसुनदएसु दहेसु बावीसु पुक्खरिणीसु । विमान प्रतरविषै तिरछलोके तलावपानविषै नदी गङ्गादिकविषै द्रहविषै पद्मद्रहादि बावडीविषै पुष्करणीविषै । दीहियासु गुञ्जालियाएसु सरेसु । दीर्हिकी गुञ्जालिकावाव विषै सरोवरविषै । सरपंतियेसु सरसरपंतिया बिलपंतियासु उज्झारेसु निल्लसेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु । सरोवरनीपांती पा षाणबन्ध विषै बिलपंक्तिविषै जलस्थानके विल्लणीनामै पांणीना बखारविषै घणी खुं द्वीपने समुद्रादि जलठांमें । सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु । सर्व जलआश्री जलस्थानक कह्या थाकती भावना पाछलीपरे । इत्थणं बायरआउक्काइयाणं पज्जत्ताणं ठाणा पं० । इहां बादर अप्कायना पर्याप्ताना ठाम कह्या । उववाएण लोयस्स असंखिज्जइभागे । उपजवो लोकने असंख्यातमेंभागे । समुग्घाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे । समुद्घातलोकने असंख्यातमें भाग हुवे । सट्ठाणेणं लोयस्स असंखिज्जइभागे । स्वस्थानके लोकने असंख्यातमेंभाग हुवे । कहिणं भंते बायर आउक्काइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पं० । किहां

॥ टीका ॥

प्राग्नारेषु ईषत्कुब्जेषु विजयेषु कच्छादिषु वक्षस्कारेषु विद्युत्प्रभादिषु पर्वतेषु वर्षेषु भरतादिषु वर्षधरेषु हिमवदादिपर्वतेषु वेलासु समुद्रादिपानीयरमणभूमिषु वेदिकासु जम्बूद्वीपजगत्यादिसम्बन्धिनीषु द्वारेषु विजयादिषु तोरणेषु द्वारादिसम्बन्धिषु किम्बहुना सामस्त्येन सर्वेषु समुद्रेषु ॥ एत्थ णमित्यादि ॥ अत्र एतेषु स्थानेषु बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि मया अन्यैरपि तीर्थकृद्भिः ॥ उववाएणमित्यादि ॥ उपपातो बादरपृथिवीकायिकानां पर्याप्तानां यदनन्तर मुक्त त तत्प्राप्यानिमुख्य मिति भाव स्तेनो पपातमंगीकृत्येति भावः, लोकस्य चतुर्दशरज्वात्मकस्या सङ्ख्येयभागे अत्रै के व्याचक्षते-ऋजुसूत्रनयो विचित्र स्ततो यदा परिस्थूरऋजुसूत्रनयदर्शनेन बादरपृथिकायिकाः पर्याप्ता श्चिन्त्यन्त तदा ये स्वस्थान प्राप्ता आहारादिपर्याप्ति परिसमाप्या विशिष्टविपाकतो बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकायुर्वेदयन्ते त एव द्रष्टव्याः नापान्तरालगता वपि तदानीं विपाकायुर्वेदना संज्ञावात् स्वस्थान च्चतेषांरत्नप्रज्ञादिकं समुदितमपि लोकस्यासङ्ख्येयभागेवर्त्तते तत उपपातेनापि लोकस्यासङ्ख्येयभागगता वेदितव्या अन्येत्वजिदधति पर्याप्ता हि नाम बादरपृथिवीकायिकाः सर्वस्तोका स्तत स्ते ऽपांतरालगतावपि परिगृह्यमाणा लोकस्या सङ्ख्येयभाग एवेति न कश्चि द्दोषः तथा च समुद्घातेनापि लोकस्या सङ्ख्येयभाग एव वर्त्यन्ते अन्यथा समुद्घातावस्थायामपि स्वस्थानातिरेकेण क्षेत्रान्तरवर्त्तित्वसम्भवाद सङ्ख्ये

॥ मूल ॥

जत्थेव बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, तत्थेव बादरपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे कहिणं भंते ! सुहुम पुढविकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणयठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! सुहुमपुढविकाइया जेपज्जत्तगा जे

॥ भाषा ॥

हेभगवन् बादरअप्काय अपर्याप्ताने ठाम कहवा । गोयमा जत्थेव बायरआउक्काइयाण पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बायरआउक्काइयाणं अपज्जत्तगाण ठाणा पं० । हेगौतम जिहां बादर अप्काया पर्याप्ताना ठाम कह्या तिहां बादर अप्काय अपर्याप्ताना ठाम कह्या । उववाएण सव्वलोए समुग्घाएण सव्वलोए सट्ठाणेणं । उपजवो सर्वलोके समुद्घात सर्वलोके । सठाणेण लोयस्स असंखिज्जइभागे । स्वस्थानक लोकने असंख्यातमे भागे । कहिणं भंते सुहुमआ

॥ टीका ॥

यन्नागवर्त्तिता नो पपद्यतेति तत्त्वं पुनः केवलिनो विदंति विशिष्टश्रुतविदो वा तथासमुद्घातेणंलोगस्सअसंखेज्जइभागेइति ॥ समुद्घातेनसमुद्घात मधिकृत्य लोकस्य ऽसङ्ख्येयभागे इय मत्र भावना यदा बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकाः सोपक्रमायुषा निरुपक्रमायुषो वा त्रिभागाद्यवशेषायुषः परभविकमायुर्बद्ध्वा मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहन्यन्ते तदा ते विशिष्टात्मप्रादेशग्रहणा अपि लोकस्यासङ्ख्येयभागे एव भागे वर्त्तंते स्तोकत्वात्, बादरपृथिवीकायिकपर्याप्तायु श्चा द्या प्य क्षीणमिति पर्याप्तबादरपृथिवीकायिका अपि लभ्यन्ते इहपूर्वंपृथिव्यादिषु स्वस्थानमात्रमुक्तमिदानीं स्वस्थानेनापि किंयतिलोकस्यभागेवर्त्तंतइतिनिरूपयति सढाणेणंलोगस्स असंखेज्जइभागेइति॥ स्वस्थानं रत्नप्रभादि त च्च समुदितमपि लोकस्यासङ्ख्येयभागवर्त्तिः तथाहि रत्नप्रभा अशीतियोजनसहस्राधिकलक्षप्रमाणापिघनभावा यवशेषा अपि पृथिव्यः स्व २ घनभावेनवक्तव्याः पातालकलशा अपि योजनलक्षावगाहा नरकावासा स्त्रिसहस्रयोजनोच्छ्राया विमानान्यपि द्वात्रिंशद्योजनशतबाहुल्यानि ततः सर्वेषामपि परमितभावात्, समुदितानाम प्य सङ्ख्येयभागवर्त्तितैवेति बादरापर्याप्तपृथिवीकायिकसूत्रे उववाएणं सव्वलोएसमुग्घाएणं सव्वलोएइति ॥ इहा ऽपर्याप्ता बादरपृथिवीकायिका अपान्तरालगतावपि स्वस्थानेपि चा पर्याप्तबादरपृथिवीकायिकायु विशिष्टविपाकतोवेदयन्ते तथा देवनैरयिकवर्जेभ्यः शेषसर्वकायेभ्य श्चो पपद्यन्ते उद्वृता अपि च देवनैरयिकवर्जेषु शेषेषु सर्वेष्वपि स्थानेषु गच्छन्ति ततो ऽपान्तरालगतावपि वर्त्तमाना अमी गृह्यन्ते इति, प्रभूताश्च स्वभावतो पीत्थं उपपातेन समुद्घातेन च सर्वलोकेवर्त्तंते, अन्यत्व अभिदधति स्वभावत एवा मीबहव इति, उपपातेन समुद्घातेन च सर्वलोकव्यापिनः तत्रो पपातः केषा ञ्चि द्भवग त्या तत्र ऋजुगतिः सुप्रतीतावक्रस्यापना चैव अत्र यदेव प्रथमं वक्रमं क सहरन्ति तदेवा परं तद्वक्रदशमा पूरयन्ति एव द्वितीयवक्रदेश सहरणेपि तत्रो

## अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोएपरियावन्नगा पण्णत्ता , समणाउसो कहिणं

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

उक्काइयाणं पज्जत्त अपज्जत्तगाणं ठाणा पं० । कहिं णं भंते भगवन् सूक्ष्मअकायना पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कह्या । गोयमा सुहुमआउक्काइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता । हेगौतम सूक्ष्मअकाय जेपर्याप्ता अपर्याप्ता तेसर्वएकभेदछे बीजा अविशेष कहिवा । सव्वलो

॥ टीका ॥

त्पत्तावपि प्रवाहतो निरन्तर मापूरणं भावनीयं सठाणेणलोगस्स असंखेज्जइभागे इति॥ यथा पर्याप्तानां भावितं तथा अपर्याप्तानामपि भावनीयं तन्नि श्चयै स्तेषामु त्पादभावात् सूक्ष्मपृथिवीकायिकपर्याप्तापर्याप्तसूत्रे जेपज्जत्ताअपज्जत्ता ते सव्वे एगविहा अनाणत्तासव्वलोगपरियावन्नाइति॥ सूक्ष्मपृथिवी कायिका ये ऽपर्याप्ता एव पर्याप्ता ते सर्वेप्यै कविधा एकप्रकाराः प्राकृत स्वस्थानादिविचार मधिकृत्य भेदाभावात् अविशेषाविशेषरहिता यथा पर्याप्ता स्तथे तरेपि इति भावः, अनानात्वा नानात्ववर्जिता देशभेदेना लक्षितनानात्वा इत्यर्थः, किमुक्तं भवति येना धारभूतेना काशप्रदेशेषे के ते घ वे तरे पी ति सर्वलोकपर्यापन्नाः सर्वलोकव्यापिन उपपातसमुद्घातस्वस्थानैः प्रज्ञप्तामया अन्यै श्च ऋषभादिभि स्तीर्थकृद्भिः अनेना गमस्य कथंचि न्नित्य मावेदितं हेश्रमण हेआयुष्मन्! आमंत्रणमिद भगवत्प्रयुक्तं गौतमस्य एवमप्काायिकसूत्राण्यपि बादरसूक्ष्मविषयाणि, नवर पर्याप्तबादराप्का यिकसूत्रे सत्तसु घणोदहिवलएसुत्ति सप्तघनोदधिवलयानि स्व २ पृथिवीपर्यंतवेष्टिकानि वलयाकाराणि, अहोलोगपायालेसुत्ति पातालकलसेषु वल यामुखप्रभृतिषु तेष्वपि द्वितीये त्रिभागे देशतः तृतीये त्रिभागे सर्वात्मना जलभावात् भवनेषु कलपेषु विमानेषु चजल वाप्यादिषु विमानादीनि चात्र कल्पगतानि वेदितव्यानि ग्रैवेयकादिषु। वापीना मसम्भवतो जलासम्भवात्, अवटाः कूपा स्तडागानि प्रतीतानि नद्यो गङ्गासिंधुप्रभृतयो

॥ मूल ॥

भंते! बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! सठाणेणं सत्तसु घणोदधीसु सत्तसु घ णोदधिवलएसु ओहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु सरेसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालि

॥ भाषा ॥

ए परियावन्नगा पं०। सर्वलोकने व्यापीरह्या छे इमकह्या। समणाउसो। हेश्रमण आयुष्मन्! कहिणंभंते बायर तेउकाइयाण पज्जत्तगाणं ठाणा पं०। किहां हेभगवन् बादर तेजकायना पर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा सट्ठाणेणं अहोमणुस्स खेत्तेअड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु। हेगौतम स्वस्थाने मनुष्यलोक मांहि अढाईद्वीप समुद्रविषे। णिव्वाघाएणं पण्णरसु कम्मभूमीसु। व्याघातरहितपणे १५ कर्मभूमिविषे। सव्वाघायपडुच्च पंचसुमहाविदेहेसु। व्याघात चि

द्रहाः पद्मद्रहादयः वाप्य श्चतुरस्राकाराः ता एव वृत्ताकाराः पुष्करिण्यः यदि वा पुष्कराणिपद्मानिविद्यन्ते यासु ताः पुष्करिण्यो दीर्घिकाः ऋजु लघुनद्य स्ता एव वक्राः गुञ्जालिकाः बहूनि केवलकेवलानि पुष्पावकीर्णानि सरांसी त्युच्यन्ते, तथा बहूनि सरांसि एकपंक्त्या व्यवस्थितानि स रःपंक्ति स्ता बहव्यः सरःपंक्तयः तथा येषु सरस्सु पंक्त्याव्यवस्थितेषु कूपोदकं प्रणालिकया सञ्चरति सा सरःसरःपंक्तिस्ता बहव्यः सरः २ पंक्तयः

यासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु विलपंतियासु उज्झरेसु णिज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दी वेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु जलबूमिज्झासु एत्थ णं बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं

त्तबौ जलस्थानकविना पद्म महाविदेहमांहि सदीव ऊपजै। एत्थण बादर तेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पं०। इहां बादर तेउकाय पर्याप्तानो ठाम कह्या। उववाएणं लोयस्स असंखिज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असं० सट्ठाणेणं लोयस्स असं०। ऊपजवो लोकणेअसंख्यातमेभागे समुद्घातलोकने असंख्यात मेंभाग स्वस्थान लोकने असंख्यातमभागे। कहिणंभंते बायरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पं०। किहां हेभगवन् बायर तेउकायमें कह्या अपर्याप्ताना ठाम कह्या। गोयमा जत्थेव बायरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पं०। हेगौतम जिहां बादर तेउकाय पर्याप्ताना ठामकह्या। तत्थेव बायर तेउका इयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पं० उववाएणं। तिहां बादरतेउकाय अपर्याप्ताना ठामकह्या कि पर्यंत अढारेसेंयोजन बाहुल्य समस्त तिर्यक्लोक कहिये इ म तेजस्काय अपर्याप्ताना उपजवाना ठामकह्या विस्तार ग्रन्थान्तरथकौ जांणिवा ऊपजवो। लोगस्स दोसुवि कवाडेसु तिरियलोए तइय समुग्घाएणं मच्चलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखिज्जइभागे। लोकने अढाईद्वीपपरिमांण बाहिर पूर्वापर दक्षिणोत्तर स्वयंभूरमणपर्यंत जे पाठ केवल समुद्घात कपाटनो परे ऊर्द्धअधोलोकान्त स्पर्शते ऊर्द्धकपाट तथा तिरियलोएत्ति, तटस्थालरूप तिर्यक्लोक तट स्वयंभूरमणवद् समुद्घात सकललोक पूर एकेका पर्याप्तानो तणायें असंख्याता अपर्याप्ता ऊपजै स्वस्थभवपर्यंत मरण तपसमुद्घात करै इम सकललोक पूरीआ स्वस्थानके लोकने असंख्यातमेभाग मात्रायें हुवे। क हिणभंते सुहुम तेउकाइयाण पज्जत्त अपज्जत्तगाणय ठाणा प०। किहां हेभगवन् सूक्ष्म तेजस्काय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा सुहुम ते

बिलानीव बिलानि स्वभावनिष्पन्ना जगत्यादिषु कूपिका स्तेषां पंक्तयो बिलपंक्तयः उज्झरा गिरिस्थंजसां प्रश्रवणा स्त एव सदा वस्थायिनो नि झंराः बिल्लराणि अखाता स्तोकजलाश्रयभूताः भूप्रदेशा गिरिप्रदेशा वा पल्वानि अखातानि सरांसि वप्राः केदाराः किम्बहुना सर्वेऽपि वजलाशयेषु

ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे कहिणं भंते ! बायरआउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठा णा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरआउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरआउकाइयाणं अप

उकाइया जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा पं० अविसेसा अणाणत्ता । हेगौतम सूक्ष्मतेजस्काय जे पर्याप्ता अपर्याप्ता ते सर्वना एकहीजभेद अविशेष सर्व कहिवा । सव्वलोय परियावण्णगा पं० । सर्वलोक व्यापी रह्याछै । समणाउसो । अहो श्रमणो आयुषावन्तो । कहिणंभंते बायर बाउकाइया णं पज्जत्तगाणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् बादरवाउकाय पर्याप्तानां ठाम कह्या । गोयमा सट्ठाणेणं सत्तसुघणवाएसु सत्तसुघणवायवलएसु सत्तसुतणुवा एसु सत्तसु तणुवाय वलएसु । स्वस्थानके सात घनवातना वलयनेस्थानके वली सात तनुवातनावलय ठिकाणे । अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडे सु भवणकुड्डेसु भवणविखुडेसु निरएसु निरयावलियाएसु । अधोलोक पातालनाभुवन थानके पाथडाविषै अवकाश ठामै भवनविषै टूकस्थानकै नरकै न रकना वलयनेविषै । निरयपत्थडेसु निरयकुड्डेसु निरयनिक्खुडेसु । नरकनेकिड्डे नरकखूणै । उड्ढलोए कप्पविमाणेसु विमाणवलियाएसु विमाणपत्थ डेसु विमाणकुड्डेसु । उर्ध्वलोके कल्पविमाने अवलोकविमाने विमानप्रतरै विमानकुड्डे । विमाणनिक्खुडेसु तिरियलोए पाईण पडीण दाहिणउदीण सव्वे सुचेव । विमाणखूणे तिरछलोके पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तरै सर्व । लोगागासकुड्डेसु लोगनिक्खुडेसु । लोकाकाश कुहडे खूणै एहवै ठामै । एत्थणं बायर बाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पं० । बादरवाउकाय पर्याप्तानां ठामकह्या । उववाएणं लोयस्सअसंखेज्जइभागेसु समुग्घाएणं लोयस्सअस० । जपज वो लोकने असंख्यातमेंभागे समुद्घातलोकने असंख्यातमेंभागे । सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । स्वस्थान लोकने असंख्यातमेंभागे । कहिणंभंते अपज्जत्त बायरवाउकाइयाण ठाणा पं० । किहां हेभगवन् अपर्याप्ता बादरवायना ठामकह्या । गोयमा जत्थेवबायरवाउकाइयाणं ठाणा पज्जत्तगाणं ठाणा पं० ।

एतदेव व्याचष्टे जलस्थानेषु शेषभावनाप्राग्वत्' अधुनाबादरपर्याप्ततेजस्कायिकस्थानानि पृच्छति कहिणं भंते बायरतेउक्काइयाणमित्यादि प्रश्नसूत्रं सुगमं भगवानाह-गोयमेत्यादि । गौतम स्वस्थानेन स्वस्थानमङ्गीकृत्यां तमनुष्यक्षेत्र मध्ये इत्यर्थः अर्द्धतृतीय येषान्ते अर्द्धतृतीया स्तत्रान्तर्मनुष्यक्षेत्र

जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेणं लोयस्स असंखिज्जभागे। कहिणं सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा! सुहुमआउकाइया जेय पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोए परियावन्नगा प०, समणा ! कहिणं भंते ! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सठाणेणं अतोमणुस्सखेत्ते अड्ढाईज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाए पन्नरससु कम्मभूमीसु वाघायं पडुच्च पंचसु महाविदेहेसु एत्थणं बादरतेउकाइयाणं

हेगौतम जिहां बादरबाउकाइया अपर्याप्ताना ठामकह्या । तत्थेव बायरबाउक्काइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पं० । तिहां बादरबाउकाय बादरनिगोद आश्री । उववाएणं सव्वलोएसमुग्घाएणं सव्वलोएसंठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । उपजवानोठाम सर्वलोके स्वस्थानके लोकनाअसंख्यातमेभागे हुवे । कहिणंभंते सुहमबाउकाइयाणं पज्जत्तअपज्जत्तगाणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् सूक्ष्मबाउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा सुहमबाउकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता । हेगौतम सूक्ष्मबायुकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता तेसर्व एकभेदे अविशेष सर्व पाछलोपरे । सव्वलोए परियावन्नगा पं० । सर्वलोक व्यापीरह्याछे । समणाउसो । अहो श्रमणोआयुषावन्तो । कहिणंभंते बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पं० । किहां अहोभगवन् बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा सट्ठाणेणं सत्तसुघणोदहिसु सत्तसुघणोदहिवलएसु । हेगौतम स्वस्थानके घनोदधि घनोदधिनावलयविषै । अहोलोए पायालासु भवणेसु भवणपत्थडेसु । अधोलोकें पाताल भुवनविषै भुवनपाथडाविषै । उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणवलिएसु विमाणपत्थडेसु । उर्द्धलोके कल्पविमाने विमाननावलयविषै विमानपाथडाविषै । तिरियलोए अगडेसु तडागेसु नईएसु

॥ टीका ॥

स्या ईंतृतीयं समुद्राणां नविद्यते इतीदं विशेषणं द्वीपानां द्रष्टव्यं, द्वीपा श्च समुद्रा श्च द्वीपसमुद्राः तेषु निर्व्याघातेन व्याघातस्या भावो निर्व्याघातं तेन निर्व्याघातेन तृतीयाया इति पाक्षिको मादेशाभावः व्याघाताभावेने त्यर्थः, पञ्चदशसु कर्मभूमिषु पञ्चभरतपञ्चैरावतपञ्चमहाविदेहरूपासु व्याघातं प्रतीत्य व्याघाते सतीति भावः, पञ्चसुमहाविदेहेषु, इय मत्र भावना-व्याघातो नामा तिस्निग्धो तिरूक्षो वा कालः तस्मिन् सत्य ग्नि व्यवच्छेदा त्ततो यदा पञ्चसु भरतेषु पञ्चस्वैरावतेषु सुखमसुखमा सुखमासुखमदुःखमा वा वर्त्तते तदा, तिस्निग्धकालो दुःखमदुःखमायां वा तिरूक्ष इत्य ग्निव्यवच्छेदः तस्मिन्सति पञ्चसु महाविदेहेषु शषकाल पञ्चदशस्वपि कर्मभूमिषु ॥ एत्थणमित्यादि ॥ अत्र एतेषु स्थानेषु बादरतेजस्कायिकानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि ॥ उववाएणमित्यादि ॥ उपपातेन यथोक्तस्थानप्राप्त्या भिमुखेना पान्तरालगता वपीति भावः, चिन्त्यमाना लोकस्या सङ्ख्येय भागे स्तोकत्वात् समुद्घातेनापि चिन्त्यमाना लोकस्या सङ्ख्येयभागे मारणांतिकसमुद्घातवशतो विक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डानामपि स्तोकतया लोकासंख्येय भागमात्रव्यापित्वात् स्वस्थानेन लोकस्या संख्येयभागे मनुष्यक्षेत्रस्य पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षप्रमाणायामविष्कम्भतया लोकासंख्येयभागमात्रत्वात्,

॥ मूल ॥

पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते ! बादरतेऊकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरतेउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा प०,

॥ भाषा ॥

नहसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु। तिरक्केलोके कूप तलाव नदी द्रहविषै वावी पुष्करणी दीर्घकायें गुंजालिकायें सरोवरे सरपांतिविषै बिलपांतिविषै पांणीठामै निझरणें। चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसुसव्वेसुचेव। चौकणीठाम पलालसर ठामें द्वीप समद्र सघलठामें। जलासएसु जलट्ठाणेसु एत्थणं बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प०। जलनाठामनेविषै इहां बादरवनस्पतीकाइया पर्याप्ताना ठामकह्या। उववाएणंसव्वलोए समुग्घाएणंसव्वलोए। उपजवो सर्वलोके समुद्घात सर्वलोके। सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभा

॥ टीका ॥

अपर्याप्तबादरतेजस्कायिकस्थानानि पृच्छति-कहिणं भंतेइत्यादिसूत्रंगतार्थं, भगवानाह-गौतमेत्यादि-गौतम! यत्रैव बादरतेजस्कायिकानां पर्याप्तानां स्थानानि तत्रैव बादरतेजस्कायिकानामपर्याप्तानामपि स्थानानि प्रज्ञप्तानि पर्याप्तनिश्रयैवा पर्याप्तानाम वस्थानात्॥ उववाएणं लोगस्स देसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतहे य इति॥ इहा ढ़ तृतीयद्वीपसमुद्रनिस्तृते अढ़तृतीयेद्वीपसमुद्रप्रमाणबाहल्ये पूर्वापरदक्षिणोत्तरस्वयंभूरमणपर्यंते ये क

॥ मूल ॥

उववाएणं लोयस्स देसु उड्ढकवाडेसु तिरियलोयतहेयसमुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते ! सुहुमतेऊकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमतेऊ काइयाणं जे पज्जत्तगा अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अनाणत्ता सव्वलोए परियावन्नगा प०, समणाउसो ! कहिणं भंते ! बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणवाएसु सत्तसु घणवायवलएसु सत्तसु तणुवाएसु सत्तसु तणुवायवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु

॥ भाषा ॥

गे। स्वस्थाने लोकने असंख्यातमेभागे। कहिणं भंते बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाण ठाणापं०। किहां अहो भगवन् बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्ता ठामकह्या। गोयमा जत्थेव बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाण ठाणा पं०। हेगौतम जिहां बादरवनस्पतीकाय पर्याप्ता ठामकह्या। तत्थेवबायरवण स्सइकाइय णं अपज्जत्तगाणं ठाणापं०। तिहां बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्ता ठामकह्या। उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखिज्जइभागे। उपजवांसर्वलोके समुद्घातसर्वलोके स्वस्थानलोकने असंख्यातमेंभागे। कहिणंभंते सुहुमवणस्सइकाइयाण पज्जत्तअपज्जत्तगाण ठा पं०। किहां हेभगवन् सूक्ष्मवनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा सुहुमवणस्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अवि सेसा अणाणत्ता। अहो गौतम सूक्ष्मवनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता ते सर्व एकभेदे कह्या अविशेष पाछलोपरे। सव्वलोयपरियावन्ना प०। सर्वलोक व्यापी रह्याछै। समणाउसो। अहोआयुष्मंतो। कहिणंभंते बेइंदियाणं पज्जत्तअपज्जत्तगाणं ठाणा पं०। किहां हेभगवन् बेइन्द्रिय पर्याप्ता अ

॥ टीका ॥

पाटे केवलिसमुद्घातकपाटवत् ऊर्द्धमपिलोकान्तंस्पृष्टे ते ऊर्द्धकपाटे तयो रूर्द्धकपाटयो स्तथा॥ तिरियलोयतट्टेयइति॥ तट्टं स्थालं तिर्यग्लोकेतट्टमिव तिर्यक्लोकतट्ट तस्मिं श्चस्वयजूरमणसमुद्रवेदिकापर्यंत अष्टादशयोजनशतबाहल्य समस्तातिर्यग्लोके चेत्यर्थः, उपपातेन बादरतेजस्कायिकानाम पर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि केचित्-तिरियलोयतट्टे इति पठन्ति २ एव व्याचक्षते तयोः कपाटयोः स्थितः तस्थः तिर्यग्लोक श्चा सौ तस्य श्च तिर्यग्लोकतस्थः तयोरूर्द्धकपाटयो रन्तर्वर्ती तिर्यग्लोक इत्यर्थः, तस्मिश्चकिमुक्त भवति द्वयो रूर्द्धकपाटयो र्यथोक्तस्वरूपयो स्तिर्यग्लोकेपि च तयो

॥ मूल ॥

भवनपत्थडेसु भवणणिद्देसु भवननिरकुडेसु निरएसु निरयावलियासु निरयपत्थडेसु निरयणिद्देसु निरयनिरकुडेसु उड्ढलोयकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु विमाणणिद्देसु विमाणनिरकुडेसु तिरियलोएसु पाईणदाहिणउदीणसद्देसु चेव लोगागासणिद्देसु लोगनिरकुडेसुय एत्थण बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु। कहिणं भंते! अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं ठाणा पण्णत्ता? गोय

॥ भाषा ॥

मा! पर्याप्तानां ठामकथा। गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोएतदेकदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलावेसु जाव दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलट्ठाणेसु। हेगौतम ऊर्द्धलोकान्तक देशभागे मन्दरादि अधोलोकैक देशभागे ग्राम कूप तडागादि तिरछेलोके कूप तलाव यावत् द्वीपे समुद्रे सर्व जलठामें। एत्थण बेइंदिय पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठाणा प०। इहां बेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकथा। उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असं० सट्ठाणेणं लोयस्स असं०। उपपातलोकने असंख्यातमेंभागे समुद्घातलोकने असं० स्वस्थानलोकने असंख्यातमेंभागे। कहिणंभंते तेइंदि। पज्जत्ता अपज्जत्तगाण ठाणा पं०। किहां हेभगवन् तेंद्रिय पर्याप्तानां ठामकथा। गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागेतिरियलोए। हेगौतम ऊर्द्धलोकांतकदेशभागे अधोलोकांतकदेशभागे तिरछालोके। अगडेसु तलाएसु जाव दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलट्ठाणेसु य

रेव कपाटयो रन्तर्गते नान्यत्र शेषतिर्यग्लोकव्यवच्छेदनपरमेतद्वाक्यं तं विधानपरं विधानस्य कपाटग्रहणेनैव सिद्धत्वात्, तत्वं पुनः केवलिनां विशिष्टश्रुतविदां वा गम्यं, इयमत्र भावना-इह त्रिधाबादरपर्याप्ततेजस्कायिका स्तद्यथा एकभविका बद्धायुषो ऽभिमुखनामगोत्रा श्च तत्रयेएकस्मा द्भवताद्भिद्भवात् अनन्तरं बादरपर्याप्ततेजस्कायिकत्वेन उत्पत्स्यन्ते ते एकभविका, ये तु पूर्वभवत्रिभागादिसमये बद्धबादराः पर्याप्ततेजस्कायिकायुष स्ते बद्धायुषो ये पुन बादराः पर्याप्ततेस्कायिकायुर्नामगोत्राणि पूर्वभवमोचनानन्तरमाद्यद्वेदयन्ते अभिमुखनामगोत्राः तत्र एकभविका बद्धायुष श्च द्रव्यतो बादराः पर्याप्ततेजस्कायिकानभावत स्तद् युर्नामगोत्रवेदनाभावात् ततो नते रिह धिकारः, किंत्वभिमुखनामायुर्गोत्रै स्तेषामेवोपपातस्य स्वस्थानप्राप्त्या ऽभिमुख्यलक्षणस्य लभ्यमानत्वात्। तत्र यद्यपि ऋजुसूत्रनयदर्शनेन बादरा पर्याप्ततेजस्कायिका युर्नामगोत्रवेदनात् यथोक्तकपाठद्वय

॥ टीका ॥

---

मा ! जत्थेव बादरवाउकाइयाणं पज्जत्तगाणं तत्थेव बादरवाउकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता। उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए। सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जेसु भागेसु। कहिणं भंते ! सुहुम वाउकाइयाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सुहुमवाउकाइयाणं जे पज्जत्ता अपज्जत्ताणं

॥ मूल ॥

---

कूप तलाव यावत् द्वीपे समुद्रे सर्व जलाश्रय जलनेठामै। एत्थणं तेइंदिय पज्जत्तगाणं ठाणा पं०। इहां तेंद्रिय पर्याप्ताकह्या तिणांना ठामकह्या। उव वाएणं लोयस्स असं० समुग्घाएणं लोयस्स असं० सट्ठाणेणंलोयस्स असं०। ऊर्ध्वजवो लोकने असंख्यातमेभागे समुद्घातलोकने असंख्यातमेभागे स्वस्थानलोक ने असंख्यातमेभागे। कहिणंभंते चउरिंदिय ण पज्जत्त अपज्जत्तगाण ठ णा पं०। किहां हेभगवन् चौरिंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए। हेगौतम ऊर्ध्वलोकांतक देशभागे अधोलोकांतक देशभागे तिरछेलोके। अगडेसु तला एसु जाव दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु। कूप तलाव यावत् द्वीपसमुद्र सर्व जलाशयें जलठामै। एत्थणं चउरिंदिय पज्जत्त अपज्जत्त गाण ठाणा प०। इहां चौरिंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। उववाएणलोयस्स असं० समुग्घाएणलोयस्स असं० सट्ठाणेणलोयस्स असंखेज्जइभागे।

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

तिर्यग्लोकबाह्यव्यवस्थिता अपि बादराः पर्याप्ततेजस्कायिकव्यपदेशं लभन्ते' तथा प्यत्र व्यवहारनयदर्शनाश्रयणमात् ये २ स्वस्थानसमश्रेणिक पाटद्वय व्यवस्थिता ये तु स्वस्थानानुगते तिर्यग्लोके प्रविष्टा एव बादरपर्याप्ततेजस्कायिका व्यपदिश्यंते न शेषाः कपाटांतरालव्यवस्थिता विषमस्थानवर्त्तित्वात् तेन ये अद्यापिकपाटद्वयंनप्रविशं नापि तिर्यग्लोकं ते किल पूर्वजघावस्था एवेति न गण्यन्ते, उक्तञ्च-पणयाललक्खपिहुला दुन्निकवाऊायळद्दिसिपुढा । लोगंतेतेसिंतो जेतेऊतेउघिप्पंति ॥१॥ तत उक्तं ॥ उववाएणं दोसुउड्ढकवाऊेसु तिरियलोयतहेव इति' स्थापना, तदेव मिदं सूत्रं व्यवहारनयदर्शनेन व्याख्यातं तथासम्प्रदायात्, युक्तं चैतत्-विचित्रासूत्रस्यगति रिति वचनादिति ॥ समुग्घाएणं सव्वलोए इति ॥ इह द्वयोः

॥ मूल ॥

ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावन्नगा पन्नत्ता समणाउसो! कहिणं भंते बादरवण स्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा प० ? गो० ! सठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोए कप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए

॥ भाषा ॥

अपजवो लोकने असंख्यातमेभागे समुद्घातलोकने असं० स्वस्थानलोकने असं० । कहिणंभंते पंचेंदिय पज्जत्त अपज्जत्तगाणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोकतदेकदेसभागे तिरियलोए । हेगौतम ऊर्द्धलोकांतक देशभागे अधोलोकांतक देशभागे तिर्छालोकादिके । अगडेसु तलावेसु जावदीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु । कूप तलाव यावत् द्वीपसमुद्र सर्व जलासयें जलठामें । एत्थणं पंचेंदिय पज्जत्त अपज्जत्तगाणं ठाणा प० । इहां पंचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएणं लोयस्स अ० समुग्घाएणं लोयस्स अ० सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । अपजवो लोकने असं० समुद्घातलोकने असं० स्वस्थानलोकने असं०ख्यातमेभागे । कहिणंभंते णेरइयाणं पज्जत्त अपज्जत्तगाणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं णेरइया परिवसंति । किहां नारकी वसेछे । गोयमा सट्ठाणेणं सत्तसुपुढवीसु पं० । हेगौतम स्वस्थान सातें पृथिवीयेहुवे तेकहेछे—रयणप्पभाए सक्कर० वालुय० पंक० धूम० तम० तमतम० ७ । रत्नप्र

॥ टीका ॥

कपाटयो र्यथोक्तं स्वरूपयो र्योन्य पान्तरालानि तेषु ये सूक्ष्मपृथिवीकायिकादयो बादरपर्याप्ततेजस्कायिकेषू त्पद्यमानमारणांतिकसमुद्घातेन सम वहता स्ते किल विष्कम्भबाहल्याभ्यां शरीरप्रमाणमात्रत्वात् आयामत उत्कर्षतो लोकान्तयावत् आत्मप्रदेशान् विक्षिपन्ति तथा चा वगाहनासस्थाप नपदे वक्ष्यति पुढविकाइयस्सणं भंते मारणांतिकसमुग्घाएणं समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता गो० सरीरप्रमाणमे त्त विक्कम्भबाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभाग उक्कोसेणं लोगाउ लोगतो इति,, तत स्ते सूक्ष्मपृथिवीकायिकादय उत्पत्तिदेशं याव त् विक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डा अपान्तरालगतौ वर्तमाना बादरापर्याप्ततेजस्कायिकायुर्वेदनाल्लब्धबादरापर्याप्ततेजस्कायिकव्यपदेशाः समुद्घातगताएवा

॥ मूल ॥

अगडेसु तलागेसु दहीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरपंतियासु पंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलास एसु जलठाणेसु एत्थणं बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं सव्वलोए, समुग्घा एणं सव्वलोए सठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं

॥ भाषा ॥

भा सर्कराप्रभा बालुप्रभा पङ्कप्रभा धूमप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा । एत्थणं णेरइयाणं चउरासित्ति णिरयावास सयसहस्सा भवंतित्ति मक्खायं तेणं णिर या । इहां नारकीना ८४ लाख नरकावासाछै इम तीर्थंकरे कह्या तेकहेछै—अंतोवट्टावाहिं चउरंसा । मांहि बाटलाकारेछै बाहिर चौखूणा । अहे क्षुर प्प संठाणसंठिया । नीचे खुरप्पसस्थाने संस्थितछै । निच्चंधियारतमसावगय गह चंद सूर नक्खत्त जोइसि पहाय । नित्य अन्धकार तमसा ग्रह चन्द स यं नक्षत्र ज्योतिषीनो प्रभारहितछै । वसा पूयपडिल रुहिर मंस चिक्खिल्ललित्ताणलेवणतला । खभावें मेद वसा अधूत मांस तिणें लीप्या हाथपग । असु ई बीसा परमदुब्भिगधाकारा अगणिवण्णाभा । एतावता अपवित्रछै महादुर्गन्धशरीर अग्निबलतो सरीखो अभावछै जेहनो । कक्खडफासा दुरहिया सा असुभानरगा सुभानरएसु वेयणाओ । कर्कशस्पर्श असिपत्रपरे एहवा पाछा नगरनाठामै अतीव अशुभवेदना भोगवेछै । एत्थणं णेरइयाणं पज्जत्त

॥ टीका ॥

पान्तरालगतौ वर्त्तमाना इति समुद्घातगताश्च सकललोकमापूरयन्ति, उक्तञ्च-समुद्घातेन सर्वलोकेइति । अन्यत्व निदर्शति-अतिबहवः खलु बादराः पर्याप्ततैजस्कायिका एकैकं पर्याप्तनिश्रया असंख्येयानामपर्याप्ताना मुत्पादात् ते च सूक्ष्मेष्वपि स मुत्पद्यन्ति सूक्ष्माश्च सर्वत्र विद्यन्त इति बादरा पर्याप्ततैजस्कायिकाः स्व २ भवनपर्यंते कृतमारणान्तिकसमुद्घाताः सन्तः सकलमपि लोक मापूरयन्तीति न कश्चि द्दोषः । अपि तु निरुपचरिततेजस्कायिकसमुद्घातप्ररूपणागुणस्थापनस्वस्थानेनलोकस्यासंख्येयभागे इति पर्याप्तनिश्रया अपर्याप्तानामु त्पादात्, पर्याप्तानां च स्थान मनुष्यक्षेत्रं त च लोकासंख्येयतमभागमात्रमिति, सूक्ष्मपर्याप्ततैजस्कायिकसूत्र सूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तपृथिवीकायिकसूत्रव द्भावनीयं, एवं वायुकायिकवन

॥ मूल ॥

ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बादरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं सव्वलोए समुग्घाएणं सव्वलोए सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणय ठाणा प० ? गो० ! सुहुमवणस्सइकाइया जे पज्जत्तगा जे अपज्जत्तगा ते सव्वे एगविहा अविसेसा अणाणत्ता सव्वलोयपरियावण्णगा

॥ भाषा ॥

अपज्जत्तगाणं ठाणा पं० । इणंठामे नारकीपर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएणं लोयस्स असं० समुग्घाएणं लोयस्स असं० सट्ठाणेणं लोयस्स असं० । उपजवो लोकने असं० समुद्घातलोकने असं० स्वस्थानलोकने असंख्यातमेभागे । तत्थणं बहवे नेरइयापरिवसंति । तिहां नारकी वसेछे । कालाभा सागंभोर लोम हरिसाभीमा उत्तणगा परमकिण्हा वण्णा । कालोआभा कांतिजेहनो भयनेवसे उत्कटरोमछे जेहना परम उत्कृष्टवर्ण कह्या । तेणं तत्थ निच्चंभीया निच्चत्था निच्चंतसिया निच्चवगा निच्चंपरमसुहसंबंधनरगभयं पच्चणुभवमाणाविहरति । तिहां नित्य त्रास पाम्य छे परमाधार्मिक थकी नित्य च से मांहोमांहि नित्य उदिग्नछे नित्य परमअशुभ दुःखने संबंध नरकनाभय भोगवता विचरे । कहिणंभंते रयणप्पभपुढवी णेरइयाण पज्जत्त अपज्जत्ताणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् रत्नप्रभानारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते रयणप्पभपुढवी निरया परिवसंति । किहां हेभगवन्

स्पतिकायिकसूत्राण्यपि प्रत्येकं त्रीणि २ भावनीयानि, नवरं बादरपर्याप्तवायुकायिकसूत्रे भवनच्छिद्राणि भवनानामवकाशान्तराणि भवनानि कुटागवाक्षादिकल्पाः केचन भवनप्रदेशाः नरकच्छिद्राणि नरकानि कुटागवाक्षादिकल्पाः नरकावासप्रदेशाः एवंविमानच्छिद्राणि विमानानि कुटागवाक्षादिकल्पाः केचन विमानप्रदेशाः प्रतिपत्तव्याः, उववाएणं लोगस्स असंखेज्जेसु भागेसु इत्यादि ॥ बादरवायवो हि पर्याप्ता अतिबहवो यतो यत्र सुषिरं तत्र वायुः सुषिरबहुलश्चलोक इति त्रिष्वप्युपपातादिषु लोकस्य संख्येयेषु भागेषु त्यक्त्वा अपर्याप्तबादरवायुकायिकसूत्रे उववाएण समुग्घाएणसव्वलोएइति ॥ इह देवनारकवर्जेभ्यः शेषकायेभ्यः सर्वेभ्यो बादरापर्याप्तवायुकायेषु समुत्पद्यन्ते बादरापर्याप्ताश्चोपपातान्तरालगतावपि लभ्यन्ते बहूनि च स्वस्थानानि बादरपर्याप्तापर्याप्तवायुका

---

पन्नत्ता, समणाउसो ! कहिणं भंते ! बेइंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभागे, अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु वावीसु पुक्खरणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु, एत्थणं बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं

---

रत्नप्रभा नारकी कहेछे—गोयमा इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयणसहस्सं बाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा चगजोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से । हेगौतम ए रत्नप्रभापृथिवीये ८० योजन जाडपणें अबाधायें ऊपरि हजारयोजन मूकीने हेठल हजार मूकीने मध्यविषे १००१०८ एकलाख अठोत्तरसहस्र योजनपरिमांण । इत्थणं रयणप्पभपुढवी णेरइयाणं तीसं निरयावास सयसहस्सा हवंतित्ति मक्खाय । तिहां रत्नप्रभानारकी तीसलाख नरकावासेरहेछे इम तीर्थंकरे कह्यो । तेणंनरगा अंतोवट्टा बाहिंचउरंस अहेखुरप्पसंठाणसंठिया । ते नरकावासामांहि बाटलाकारे बाहिर चउरस नीचे खुरप्पस्त संस्थानछे । निच्चंधियार तमसा ववगय गह चंद सूर नक्खत्त जोइसपहा मेय वसा पूय पडल

॥ टीका ॥

यिकानां ततो व्यवहारनयमतेना प्युपपातमधिकृत्य सकललोकव्यापिता घटते इति न काचित् क्षतिः, समुद्घातेन सकललोकव्यापिता सुप्रतीतैव सर्वेषु सूक्ष्मेषु सर्वत्र च लोके तेषां समुत्पादसम्भवात्, बादरापर्याप्तवनस्पतिकायिकसूत्रे उववाएणं सव्वलोए इह बादरपर्याप्तवनस्पतिकायिकानां स्वस्थानं घनोदध्यादि। तत्र बादरनिगोदानां सेवालादीनां सम्भवात् सूक्ष्मनिगोदानां च अवस्थितिरन्तर्मुहूर्त्तं तत स्ते बादरनिगोदेषु पर्याप्तेषु समुत्पद्यमाना बादरनिगोदपर्याप्तायुरनुभवन्तः सुविशुद्धऋजुसूत्रनयदर्शनस्युपगमेन लब्धबादरपर्याप्तवनस्पतिकायिकव्यपदेशा उपपातेन सकलकालं सर्वलोकं व्याप्नुवंति, तत उक्तं-उपपातेन सर्वलोके इति समुद्घातेन सव्वलोए इति ॥ यदा बादरनिगोदाः सूक्ष्मनिगोदेषु आयुर्बद्धा पर्यन्ते मारणांतिकसमुद्घातेन समवहता आत्मप्रदेशानुत्पत्ति देशयावत् विक्षिपन्ति तदा बादरनिगोदपर्याप्तायुरद्याप्य क्षीणमिति बादरपर्याप्तनिगोदा एव

॥ मूल ॥

भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए अगडेसु तलाएसु वावीसु पुक्करणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु विलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभाए, अहोलोए तदेकदेसभागे, तिरियलोए

॥ भाषा ॥

रुहिर मंस चिक्खिल्लभूमितलालित्ताणुलेवणतला । नित्य अन्धकार रहितके ग्रह चंद्र सूर्य नक्षत्र ज्योतिषीनो प्रभा रहितके मेद वशा अधूत पडल रुधिर मांस तणेकरी चोकणाके हाथ पग शरीर जेहना एतावता ! असुइबीभा परमदुब्भिगंधा काउय अगणिवण्णाभा । अपवित्त परमदुर्गंधकाय अग्नि वर्ण बलतोकांतिके । कक्खडफासादुरहियासा असुभानरगा असुभानरएसु वेयणाओ पच्चणुभवमाणाविहरंति । कर्कशस्पर्श दुखेसहिवा एहवा माठानगर

समुद्घातगताश्चसकललोकव्यापिनश्चेति समुद्घातेन सर्वलोके स्वस्थानेन लोकस्यासंख्येयतमे भागे घनोदध्यादीनां सर्वेषामपि समुदितानां लोकस्या संख्येयभागमात्रवर्त्तित्वात् ग्रथाग्र २००० शेषसुगमं एव द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियसामान्यत पञ्चेन्द्रियसूत्राण्यपि भावनीयानि नवरं द्वीन्द्रियादयो बहवो जलसम्भूताः शङ्खप्रभृतय इति सर्वेष्वपि सूत्रेषु स्थानान्य वटादीनि उक्तानि, तथा ऊर्द्धलोके तदेकदेशभागे मन्दरादि वाप्यादिषु अधोलोके तदेकदेश अधोलौकिकग्रामकूटतटागादिषु शेषेषू पयुज्य स्वयं परिभावनीयं, अधुना पर्याप्तापर्याप्तनैरयिकस्थानप्ररूपणार्थं माह-कहिणंभंतेनेरया णमित्यादि ॥ कस्मिन् प्रदेशे भदन्तनैरयिकाणां पर्याप्तापर्याप्तानां स्थानानि प्रज्ञप्तानि एतदेव व्यक्तं पृच्छति यथान्ये प्यवबुध्यन्ते, कहिणमिति ॥

॥ टीका ॥

---

ज्झगेसु तलाएसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु णिज्झरेसु उज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं चउरिंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते! पंचिंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाण प०

॥ मूल ॥

---

नेठामै तिहां माठीवेदना भोगवताथका विचरैछै । एत्थण रयणं रयणप्पभ पुढवी णेरइयाणं पज्जत्तअपज्जत्तगाणं ठाणा पं० । एणें प्रकारे रत्नप्रभा नारकीना पर्याप्ता अपर्याप्ता रहेछै । उववाएण लोयस्स असं० समुग्घाएण लोयस्स असं० सट्ठाणेणंलोयस्स असं० । जपजवो लोकने असं० समुद्घातलोकने असं० स्वस्थानलोकने असं० । तत्थणं बहवे रयणप्पभ पुढवीणेरइया परिवसंति । तिहां घणां रत्नप्रभा नारकी वसैछै ते केहवाछै । कालाकालोभासा गंभीरलो महरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हवण्णा पन्ना पण्णत्ता । कालाकालो आभाछै एटलोमछै जेहना त्रासनाथका परमकालेवर्णकह्या । समणाउसो । अहोश्रमणो आयुषावन्तो । तेणं निच्चंभीया निच्चतत्था निच्चंतसिया निच्चत्रगा निच्चपरमसहसंवधनरगभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति । नित्य बीहता नित्य त्रासथाछै नित्य उद्विग्नछै नित्य परमअसुखसंबधी नरकना भयप्रते भोगवता विचरै । कहिणंभंते सक्करप्पभपुढवीणेरइयाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

एकस्मिन् प्रदेशे णमिति वाक्यालङ्कृतौ नैरयिकाः परिवसन्ति' भगवानाह-गौतम स्वस्थानेन सप्तपृथिवीषु ता एव नामग्राह माह-तंजहा॥ रय णप्पभाएइत्यादि ॥ गतार्थं एत्थणमित्यादि ॥ अत्रैतासु पृथिवीषु सप्तसु पृथिवीषु नैरयिकाणां सर्वसङ्ख्या चतुरशीतिनरकावासशतसहस्राणि भ वन्ति तथाहि-रत्नप्रभायां त्रिंशन्नरकावासशतसहस्राणि भवन्ति शर्करप्रभायां पञ्चविंशतिशतसहस्राणि वालुकप्रभायां पञ्चदशलक्षाः पङ्कप्रभायां दशलक्षाः धूमप्रभायां त्रीणिलक्षाः तमःप्रभायामेकं शतसहस्रं पञ्चोनं तमस्तमःप्रभायां पञ्चेति भवन्ति सर्वसङ्ख्या चतुरशीतिर्लक्षाः नरकावासाना मित्याख्यातं मया शेषैश्च तीर्थकृद्भिः, तेणंनरकावासाइत्यादि ॥ तेनरकावासा श्चतुरशीति र्लक्षप्रमाणाः सर्वेपि प्रत्येकम न्तर्मध्यभागे वृत्ताकाराः बहिर्भागे चतुरस्रा श्चतुरस्राकाराः इदञ्च पीठोपरिवर्त्तन मध्यभागम धिकृत्य प्रोच्यते सकलपीठाद्यपेक्षया त्वावलिका प्रविष्टा वृत्तत्र्यस्रचतुरस्र

॥ मूल ॥

? गोयमा ! उड्ढलोए तदेकदेसभागे अहोलोए तदेकदेसभागे तिरियलोए अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सरसरपंतियासु विलपंतियासु उज्झरेसु णि ज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं पंचिंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखिज्जइ भागे, सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। कहिणं भंते ! नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ?

॥ भाषा ॥

ठाणा पं०। किहां हेभगवन् शर्करप्रभापृथिवीना नारकोना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्याछे। कहिणभंते सक्करप्पभपुढवी णेरइया परिवसंति। कि हां ते भगवन् रत्नप्रभानारको रह्याछे। गोयमा सक्करप्पभाए पुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिएगजोयणसहस्सं उगाहित्ता हिट्ठावेग जोयणसहस्स वज्जित्ता। हेगौतम शर्करप्रभाना पृथिवीयें एकलाख बत्तीसहजार जाडपणें तेहने ऊपर एकहजारयोजन मूकीने हेठले एकसहस्रयोज न मूकीने। मज्झे तीसुत्तरेजोयणसहस्सं वज्जिज्जा। मध्ये एकलाख बत्तीसहजार जाडपणें। एत्थणं सक्करप्पभपुढवी णेरइयानं पणवीसं तिरियावासस

॥ टीका ॥

संस्थानाः प्रतिपत्तव्याः अहेखुरप्पसंठाणसंठियाइति ॥ अधोभूमितले क्षुरप्रस्येव प्रहरणविशेषस्य य त्संस्थानमाकारविशेष स्तीदृक्तालक्षण स्तेन संस्थिता, स्तथाहि-तेषु नरकावासेषु भूमितले मसृणत्वाज्जावतः शर्करिले पादेषु न्यस्यमानेषु शर्करमात्रसस्पर्शेपि क्षुरप्रेणेव पादाः कृत्यंते, निच्चंधयारतमसाइति ॥ नित्यान्धकारा उद्योताज्जावतो य त्तम स्तदिह तम उच्यते तेन तमसा नित्यं सर्वकालमन्धकारा स्तत्रा पवरकादिष्विव नामान्धकारा स्ति केवलं बहिः सूर्यप्रकाशे मन्दतमो भवति नरकेषु तीर्थकरजन्मदीक्षादिकालव्यतिरेकेणा न्यदा सर्वकालमपि उद्योतलेशस्या प्य ज्ञावतो जात्यन्धस्येव मेघच्छन्नकालाद्धरात्रइवा तीव बहलतरो वर्त्तते तत उक्त तमसा नित्यान्धकाराः तम श्च तत्र सदावस्थित मुद्योतकारिणाम सम्भवात्

॥ मूल ॥

कहिणं भंते ! नेरइया परिवसंति ? गोयमा ! सठाणेणं सत्तसु पुढवीसु तंजहा—रयणप्पन्नाए सक्करप्पन्नाए वालुयप्पन्नाए पंकप्पन्नाए धूमप्पन्नाए तमप्पन्नाए तमतमप्पन्नाए एत्थणं नेरइयाणं चउरासिं निरयावास सयसहस्साइ भवंतीति अक्खायं, तेणं णरगा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयार तमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयरुहिरमंसचिक्कलित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परम

॥ भाषा ॥

यसहस्रा भवतीत्ति मक्खायं। इहां शर्करप्रभा पृथिवीनानारकी पंचवीसलाख नरकावासे बसकै इम तीर्थंकरे कह्योकै स्वयंमुखे प्ररूप्या। तेणं नरगा अंतोवट्टाबाहिं चउरसा अहेखुरप्पसंठिया। ते नरकावासामांहि बाटला बाहिर चौरंशकै नीचे खुरप्प संठाणेकै। निच्चंधियार तमसा ववगयसूरचंदगहनक्खत्त जोइसियमहामेयवसापूयपडलरुहिरमांसचिक्खिल्लित्ताणुलेवणतला। नित्य अन्धकारकै तमकरके गयोकै सूर्य चंद्र गृह नक्षत्र ज्योतिषीनो प्रभ ाप्रमुख मेद वशा पूतपडल रुधिर मांस तेणकरी चीकणाकै हाथ पगना तला। असुइ बीसा परमदुब्भिगंधाकाओ अगणिवण्णाभा। अपविच दुर्गन्धकाय लोढो धमनी जेहनेहव तेहवो आभा काली कट्ठो सातमोवर्जी कक्खडफासा दुरहियासा असुभानरगावासा असुभानरएसुवेयणा। कर्कशस्पर्शकै दुखे अहियासवयोग्या एहवामाठा नगरना। एत्थण सक्करप्पभपुढवी नेरइयाण पज्जत्तअपत्तगाण ठा प० तिहां शर्करप्रभापृथिवीना नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता

॥ टीका ॥

तथाचाह ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसियपहा ॥ व्यपगतःपरिभ्रष्टो ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणामु पलक्षणमे तत्तारारूपाणा च्च ज्योतिष्काणां पन्थामा र्गो येभ्य स्ते व्यपगतग्रहचद्रसूर्यनक्षत्रज्योतिष्कपन्थाः तथामेदवसापूयरुधिरमसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतलाइति ॥ स्नायवसपन्नै मेदोवसापूतिरुधि रमासै र्यश्चिक्खिल्लः कर्दमः तेन लिप्तमु पदिग्धं अनुलेपनन सकृल्लिप्तस्य पुनः पुन रुपलेपनेन तलभूमिका येषां ते मदोवशापूतिरुधिरमासचिक्खि ल्ललिप्तानुलेपनतलाः अतएवा शुचयो पवित्रा बीभत्सा दर्शनेप्यति जुगुप्सोत्पत्तेः क्वचित् वीसा इति पाठ स्तत्र विस्रा आमगन्धिका परमदुरभिगंधा

॥ मूल ॥

दुब्भिगंधा काऊयगणिवन्नाभा कक्कफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरएसु वेयणाओ एत्थणं नेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे, एत्थणं बहवे नेरइया परिवसंति काला कालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हा वण्णेणं पन्नत्ता, तेणं तत्थ निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहिणं भंते! रयणप्पभा पुढवीनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा प० ? कहिणं भंते! रयणप्पभापुढविनेरइया परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्समोगाहित्ता

॥ भाषा ॥

ना ठानकहा। उववाएणं लोयस्स असं० समुग्घाएणं लोयस्स असं० सट्ठाणेणंलोयस्स अ० । उपजवोलोकने अ० स्वस्थानलोकने अ० समु०लो०ख्यातमेभागे । तत्थणं बहवे सक्कर पभपढवी नेरइया परिवसंति । तिहां घणां शर्करप्रभाना नारकी वसेछे । कालाकालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमाउत्तासणगा पर मकिण्हा वण्ण प० । ते स्थानके कालाकालो आभाछे जेहने भवन बसे उत्कटरोमछे जेहना भयकरी रूपछे उत्कृष्ट वर्णछे परमकाला दुखीछे । समणा उसो । अहोआयुष्मणो आयुष्यावन्तो । तत्थणं ते निच्चभीया निच्चत्था निच्चतसिया निच्चउव्विग्गा निच्चपरममसुहसंबद्धं नरगभय पच्चणुभवमाणा विहरंति । ति

मृतगवादिकलेवरेभ्योऽप्यतीवा निष्टदुरभिगन्धाः ॥ काऊअगणिवन्नाभाइति ॥ लोहे धम्यमाने यादृक् कपोतो बहुकृष्णरूपो भवेद् वर्णः किमुक्तं भवति यादृशी बहुकृष्णवर्णरूपा अग्निज्वाला विनिर्गच्छतीति तादृशी आभा आकारो येषां ते कपोताग्निवर्णाभा धम्यमानलोहाग्निज्वालाकल्पा इति भावः, नारकोत्पत्तिः स्यानव्यतिरेकेण न्यत्र सर्वत्रा प्यु ष्णरूपत्वात् यत्र च षष्टसप्तमपृथिवीवर्जेत्र वसय, तथा च वक्ष्यति नवरं ॥ छट्ठसत्तमीसुणंकाऊ गणिवन्नाभानभवति ॥ तथा कर्कशो तिदु सहो विपत्रस्येव स्पर्शोयेषु ते कर्कशस्पर्शाः, अत एव दुरहियासा इति दुःखेनाध्यास्यन्ते सह्यन्ते दुरध्यासा



हेट्ठाचेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं तीसं निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं, तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा णरगा असुभा नरगेसु वेदणा एत्थणं रयणप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे



हां ते नित्य बोलेछे परमाधामीयेंकरी नित्य त्रास्या नित्य उद्विग्न नित्य परमासुखबंधी नरकनाभय भोगवताथका विचरेछे। कहिणभंते वालुयप्पभपुढवीणेरइयाणं पज्जत्त अपज्जत्ताणं ठाणा पं०। किहां हेभगवन् वालुकप्रभापृथिवी नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता ना ठामकह्या। गोयमा वालुयप्पभापुढवीए अट्ठावीसुत्तर जोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरिं एगंजोयण सहस्सं ओगाहित्ता। हेठोतम वालुकप्रभा पृथिवीयें एकलाख अट्ठावीसहजार जाडपणें बाहुल्य तेहमांहि एकसहस्रयोजन ऊपरमूकीने। हिट्ठावेगंजोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से। हेठे एकयोजन सहस्र मूकीने मध्य विचे एकलाख अठोसहजारनो अवकाश। एत्थणं वालुयप्पभपुढवी नेरइयाणं पन्नरनिरयावाससयसहस्सा भवतीतिमक्खायं। तिहां वालुकप्रभा पृथिवीना नारकीना पनरेलाख नरकावासाछे तेयकह्यानीयें कह्योछे। तेणनरगा अंतोवट्टा बाहिं चउरसा जाव असुभानरगा असुभानिरएसु वेयणा

॥ टीका ॥

अशुना दर्शनतो नरका स्तथा गन्धरसस्पर्शशब्दै रशुभा अतीवा सातरूपा नरकेषु वेदना ॥ णत्थणमित्यादि ॥ यावत् णत्थणंबहवेनेरयापरिवसन्ति कालाइत्यादि ॥ कालाः कृष्णाः तत्र कोपि निःप्रतिपत्रतया मन्दकृष्णोपि भवति तत स्तदा शक्यव्यवच्छेदार्थं विशेषणान्तरमाह-कालावभासाः कालः कृष्णो वभासः प्रतिभाविनिर्गमो येषां ते कालावभासाः कृष्णप्रभापटलोपचिता इतिभावः, अत एव गम्भीरलोमहर्षाः गम्भीरो ऽतीवो त्कटो

॥ मूल ॥

इन्नागे, समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइन्नागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइन्नागे। तत्थणं बहवे रयणप्पन्नापुढविनेरइया परिवसंति। काला कालोन्नासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता, समणाउसो! तेणं णिच्चं भीया निच्चं तत्था णिच्चं तसिया णिच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसयहं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं भंते! सक्करप्पन्नापुढविनेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता? कहिणं भंते, सक्करप्पन्नापुढविणेरइया परिवसंति? गोयमा! सक्करप्पन्नापुढविए बत्तीसुत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए। उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे

॥ भाषा ॥

थी। ते नरकावासामांहि दुष्टाकार बाहिरचौरस यावत् अशुभ नरकावासा अशुभनरकनी वेदना भोगवतां। णत्थणं बालुयप्पभपुढवीणेरइयाणं पज्जत्त अपज्जत्ताणं ठाणा पं०। इमेठामे बालुकप्रभा नारकोना पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या। उववाएणंलोयस्स असं० समुग्घाएणंलोयस्स असं० सट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जइभागे। उपजवोलोकने असंख्यातमेंभाग समुद्घातलोकने असं० स्वस्थानलोकने असं०। तत्थणंबहवेबालुयप्पभपुढवीणेरइया परिवसंति। निच्चं घणं बालुकप्रभाना नारको वसेछे। कालाकालीभासा जाव निच्चं परममसुहसंबद्धंनरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कालाशरीरे कालीआभ छे यावत् नित्य परमअसुखसंबंधी नरकनाभय प्रतिभोगवता विचरेछे। कहिणंभंते पंकप्पभपुढवी णेरइयाणं पज्जत्त अपज्जत्ताणं ठाणा पं०। किहां हे भगवन् पङ्कप्रभानारकी पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या। पंकप्पभपुढवीए बावत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगंजोयणसहस्सं उग्गाहित्ता। हे

॥ टीका ॥

लोमहर्षो लोमोद्गर्षोत्पत्तिवशात् येषां ते तन्नीरलोमहर्षाः किमुक्तं भवति एवं नाम कृष्णाः कृष्णावभासा ये दर्शनमात्रेपि क्षेपनारकजन्तूनां भयसंपादनेन मात्रातिग लोमहर्षमुत्पादयन्तीति, अत एव भयानका भीमत्वाद्देव उत्रासनकाः उत्रास्यन्ते क्षेपनारका जन्तव एभि रित्युत्रासन उत्रासना एव उत्रासनकाः किम्बहुना वर्णेन वर्णमधिकृत्य परमकृष्णा यत ऊर्द्धं न किमपि कृष्णतरमस्ति भयानकत्वा बहूत्कर्षप्राप्तकृष्णवर्णाः प्रज्ञप्ता मया क्षेपै

॥ मूल ॥

तीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थणं सक्करप्पभापुढवीणेरइयाणं पणवीसं निरयावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया णिच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरणक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईबीसा परमदुब्भिगंधा काऊअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थणं सक्करप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थणं बहवे सक्करप्पभापुढविणेरइया परिवसंति । काला

॥ भाषा ॥

गौतम पङ्कप्रभापृथिवीये एकलाख बीसहजारयोजन बाहल्य ऊपरिलेपासे एकहजारयोजन छांडीने । हिट्ठे वेग जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठारसुत्तर जोयणसयसहस्से । हेठे पिण एकहजारयोजन छांडिवे विचे एकलाख अठारेहजार अवकाशे । एत्थणं पंकप्पभ पुढवी णेरइयाणं दस निरयावाससयसहस्सा भवंतीत्ति मक्खायं । इहां पङ्कप्रभापृथिवीना दशलाख नरकावासा भगवन्ते कह्या इम । तेणं नरगा अंतोवट्टा बाहिं चउरंस जाव असुहा निरएसु वेयणाओ । ते नरकावासामांहि बाटलाकारे बाहिर चउरंश यावत् अशुभनरकनी वेदना भोगवेछे इम । एत्थणं पंकप्पभपुढवी णेरइयाणं पज्जत्तअपज्जत्ताणं ठाणा पं० । इहां पङ्कप्रभानारकी पर्याप्ताअपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएणंलोयस्स असं० समुग्घाएणंलोयस्स असं सट्ठाणेण असं० ऊपजवोलोकने असंख्यातमेभागे समुद्घातलोकने असंख्यातमेभागे स्वस्थानकलोकने असं० । तत्थणं बहवे पंकप्पभपुढवीणेरइया परिवसंति । तिहां घणां पङ्कप्रभा नार

॥ टीका ॥

श्च तीर्थंकरैः हेश्रमण! हेआयुष्मन्॥ तेणं निच्चंभीया इत्यादि॥ ततो नैरयिकाणमिति वाक्यालंकारे, नित्यं सर्वकालं क्षेत्रस्वभावजनितमहानिवृत्यन्धकार दर्शनतो भीता नित्यं सर्वकालं त्रस्ताः परमाधार्मिकपरस्परोदीरितदुःखसम्भातजया दगपि त्रासमुपपन्नाः नित्यं सर्वकालं परमाधार्मिकैः पर स्परं वा त्रासिताः त्रास ग्राहिताः तथा नित्यं सर्वकालं यथायोगं परमदुस्सहशीतोष्णवेदनानुभवतः परमाधार्मिकपरस्परोदीरितदुःखानुभवत श्चो

॥ मूल ॥

कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता। समणाउसो! तेणं निच्चं भीता निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं भंते! बालुयप्पभापुढवीणेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता? गोयमा! बालुयप्पभापुढवीए अट्ठावीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा वेगंजोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तिण्हीसुत्तरजोयणसयसहस्से एत्थणं बालुयप्पभापुढविणेरइयाणं पणवीसनिरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खा यं। तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसू

॥ भाषा ॥

की बसेछे। कालाकालोभासा जाव निच्चं परममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कालाकालो आभा यावत् नित्य परमअसुखसंबंधी नर कनोभय प्रतिभंगवता विचरेछे। कहिणभंते धूमप्पभ पुढवी णेरइयाणं पज्जत्त अपज्जत्ताणं ठाणा पं०। किहां हेभगवन् धूमप्रभानोनारको पर्याप्ता अ पर्याप्तानाठाम कह्याछे ते कहेछे। गोयमा धूमप्पभाए पुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए। हेगौतम धूमप्रभानानारकी एकलाख अठारेहजा र योजनप्रमाण जाडपणे। उवरिं एगंजोयण सहस्सं उग्गाहित्ता। ऊपरि एकहजारयोजन मूकी तेकहेछे। हिट्ठावेगंजोयणसहस्सं वज्जित्ता। एकहजा रयोजन वर्जीने। मज्झं सोलसुत्तर जोयणसयसहस्से। विचाले एकलाखसोलहजारमांहि पिछे। एत्थणंधूमप्पभपुढवीणेरइयाण तिन्निनिरयावाससयसा हस्सा भवंतीतिमक्खायं। इहां धूमप्रभापृथिवी नारकीना तीनलाख नरकावासा कहवा तीर्थंकरेकह्याछे। तेणनरगा अंतोवट्टा बाहिं चउरंसा जाव

॥ टीका ॥

द्विग्ना स्तद्गतवासपराङ्मुखचित्ता एवं नित्यं सर्वकालं परम मशुभमे कान्तेना शुभसम्बद्धं नतु जातु चिदपि मनाग प्य पान्तराले व्यवच्छिन्नसंता नं नरकजयं नरकदुःख प्रत्यनुभवन्तः प्रत्येक वेदयमाना विहरन्त्य वतिष्ठन्ते, तदेव सामान्यतो नैरयिक सूत्र व्याख्यात मेव इत्यप्रज्ञादिविषयाण्यपि सूत्राणि यथायोगं परिभावनीयानि, प्राय उक्तव्याख्यानानुसारेण सुगमत्वा स्केवलं षष्ठपृथिव्यां ॥ सप्तमपृथिव्यां च नरकावासाः कपोतवर्णाना

॥ मूल ॥

रणरुक्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊ अगणिवन्नाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा णरएसु वेयणा एत्थणं वालुयप्पभापुढवीणेरइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । तत्थणं बहवे वालुयप्पभापुढवीणेरइया परिवसंति काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं प० समणाउसो । तेणं निच्चं

॥ भाषा ॥

असुभनरगा असुभनरगेसुवेयणाओ । तिहां नरकावासामांहि बाटलाकारे बाहिर चौरश यावत् अशुभनरकावासा अशुभ नरकनीवेदना भोगवेछे । एत्थणं धूमप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं पज्जत्तअपज्जत्ताणं ठाणा पं० । इहां धूमप्रभापृथिवी नारकी अपर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएणलोयस्स असं० समुग्घाएणं लोयस्सअसं० सट्ठाणेणंलोयस्स असं० । जपजवोलोकना असं० समहातलोकने असं खख्यानलोकने असं० । तत्थण बहवे धूमप्पभपुढवी णेरइया परिवसंति । तिहां घणांधूमप्रभानारकी वसेछे। कालाकालोभासा जाव निच्चंपरममसुहसंबद्धं नरगभयं पच्चणुभवमाणाविहरंति । कालाकाली आभासहित यावत् नित्य परमअशुभ नरकभय प्रतिधरताथकां विचरेछे । कहिणभंते तमापुढवीणेरइयाण पज्जत्तअपज्जत्ताणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् तमापुढवीना नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा तमाएपुढवीए सोलसुत्तर जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगंजोयणसहस्सं ओगाहित्ता । हेठोतम तमापृथिवीये एकलाख सोलेहजार प्रमाण जाडपणे उपरि एकहजारयोजन मूकीने । हिट्ठाएगंजोयणसहस्सवज्जित्ता मज्झे चेव

न वक्तव्याः नारकोत्पत्तिस्थानव्यतिरेकेणा न्यत्र सर्वत्रापि तेषां शीतपरिणामत्वात् तथा चाह-नवरं छट्ठसत्तमासु काऊणाअगणिवन्नाजाननवन्ति संप्रति यथोक्तपृथिवीबाहल्य परिमाणप्रतिपादिकां सङ्ग्रहणिगाथामाह-असीयबत्तीसमित्यादि॥ अशीतिसहस्राधिकशतसहस्ररत्नप्रज्ञाया बाहल्य श



नीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं णरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति कहिणं भंते ! पंकप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! पंकप्पभापुढवीए वीसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठारसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं पंकप्पभापुढविनेरइयाणं दस निरयावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं । तेणं णरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरुप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगह चंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्खिल्लाणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काऊयगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसुवेयणाभ एत्थणं पंकप्पभापुढवि



दसुत्तरे जोयणसहस्से । नीचे एकहजारयोजन मूकीने बिचे एकलाख चउदहजार योजनमांहि । एत्थणं तमप्पभपुढवी णेरइयाणं । इहां तमप्रभापृथिवीना नरकावास छे । एगपचूण निरयावाससयसहस्साहवतित्तिमक्खायं । एकलाखपांचे जन नरकावासा तीर्थंकर कह्या । तेणंनरगा अंतोवट्टाबाहिं चउरंसा अहेखुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा । ते नरकावासामांहि बाटलाकार बाहिर चौरसछे नीचे खुरप्रसंस्थानसंस्थितछे नित्यअंधकारछे गयो । ववगय गह चंद सूर नक्खत्त जोइसि पहा मेय वसापूय पडल रुहिरमंस चिक्खिल्लालित्ता गुलेवणतला असुइबीसापरमदुब्भिगंधा । ग्रह चंद्र सूर्य नक्षत्र ज्योतिषीनो प्रभारहित स्वभावे मेद वशा पूतपडल रुधिरमांस तेणेकरी चीकणीछे भूमिनो एतावतामाठो गन्धछे । कक्खडफासा सहियासा असुभनरगा असुभानिरएसु वेयणाओ । कर्कशस्पर्श दुखेसहिवायोग्य कापोतनावर्ण कहे एहवी अशुभवेदना नरकनी । एत्थणंतमापुढवी णेरइयाण पज्जत्तअपज्जत्ताण

णेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे , समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे , सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे पंकप्पभापुढविणेरइया परिवसंति , काला कालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पन्नत्ता समणाउसो । तेणं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति । कहि णं भंते ! धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! धूमप्पभाएपुढवीए अट्ठारसुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठा वेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे सोलसुत्तरे जोयणसयसहस्से एत्थणं धूमप्पभापुढवीणेरइयाणं तिण्णि निरयावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयवसापूयपडलरुहिरमंसचिक्कलित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा काउअगणिवण्णाभा कक्खडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेयणाओ एत्थणं धूमप्पभापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे , समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइ



ठाणा पं० । इहां तमपृथिवीना नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । उवाएणं लोयस्स असं० समुग्घाएणंलोयस्स असं० सट्ठाणेणंलोयस्स असं । ऊप जवालोकने असं० समुद्घातलोकने असं० स्वस्थानलोकने असं० । तत्थण बहवे तमप्पभपुढवीणेरइया परिवसंति । तिहां घणां तमप्रभानानारकी वसेछे कालाकालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणगा परमकण्हावण्णेणं पं० । कालाकालीआभाछे भयसे भयनेवसे उत्कटरोमछे जेहना भीम विभत्सरूप तिणेकरी बीहता उत्कटकाले वर्ण कह्या । समणाउसो । अहो श्रमणो आयुष्मंतो । तेण निच्चंभीया निच्चतत्था निच्चतसिया निच्चुविग्गा परममुहसंबद्ध

॥ मूल ॥

न्नागे, सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइन्नागे तत्थणं बहवे धूमप्पन्नापुढविणेरइया परिवसंति काला कालोन्नासा गंन्नीरलोमहरिसा न्नीमा उत्तासणगा परमकिण्हा वण्णेणं पण्णत्ता समणाउसो। तेणं णिच्चं न्नीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुन्नसवहुनरगन्नय पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं न्नंते ! तमा पुढविनेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तमापुढवीए सोलसुत्तरजोयणसयसहस्सबाह ल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे चोद्दसुत्तरे जोयणसहस्से एत्थणं तमप्पन्नापुढविणेरइयाणं एगे पंचूणे नरगावाससयसहस्से हवंतीति मक्खायं, तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेदवसापूय पडलरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदुब्भिगंधा कक्कडफासा दुरहियासा असुभा न रगा असुभा नरगेसु वेयणा एत्थणं तमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइन्नागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइन्नागे सट्ठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइन्नागे, तत्थणं बहवे तमप्पन्नापुढवीणेरइया परिवसंति काला कालोन्नासा गंन्नीरलोमहरिसा न्नीमा उत्तासणगा परमकिण्हा

॥ भाषा ॥

नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। ते नित्य भीहता नित्यत्रस्ता नित्यत्रास्या नित्य उद्विग्नयका नाशना परमदुखने संबधेकरी नरकनाभय प्रतिभोगवता विचरे। कहिणंभंत तमतम० पुढवीणेरइयाण पज्जत्तअपज्जत्ताणं ठाणा प०। किहां हेभगवन् तमतमापृथिवी नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ता ठामकह्या। गोयमा तमतम ए पृढवीए अठ्ठत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए। हेगौतम तमतमा पृथिवी एकलाख बत्तेअठोहजार योजन जाडपणेछे। उवरि अट्ठ तेवण्णजोयणसयसहस्सं उग्गाहित्ता। जपर साढीबावनसहस्सयोजन अवगाहीछे। हिट्ठावि अट्ठतेवण्णजोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झेतिसुजोयणसहस्सेसु।

॥ टीका ॥

कंरप्रभाया द्वात्रिंशत्सहस्राधिकं वालुकाप्रभाया अष्टाविंशतिसहस्राधिकं पङ्कप्रभाया विंशतिसहस्राधिकं अष्टादशसहस्राधिकं धूमप्रभायाः षोडशसहस्राधिक तमःप्रभायाः अष्टोत्तरं अष्टसहस्राधिकं लक्षं ॥ हेट्ठिमिया इति ॥ सर्वाधस्तन्या स्तमस्तमप्रभाया इति, सम्प्रत्यु पर्यंध श्च एकैक योजनसहस्रं मुक्त्वा यावत्प्रमाणं नरकावासयोग्यं पृथिवीबाहल्यं तावत्संगृहीतुकाम आह-अहुत्तर चेत्यादिगाथाद्वयं ॥ रत्नप्रभायाहि अशीतिसहस्राधिकं

॥ मूल ॥

वासेणं पन्नत्ता समणाउसो। तेणं निच्चं भीया निच्चं तत्था निच्चं तसिया निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति। कहिणं भंते! तमतमापुढविणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प०, ? गोयमा! तमतमापुढवीए अहुत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि अहुतेवन्नजोयणसहस्साइं उग्गाहित्ता हेट्ठावि अहुतेवन्नजोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे तिन्निजोयणसहस्सेसु एत्थणं तमतमापुढवीणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महइमहालगा महानिरया पन्नत्ता, तंजहा—काले महाकाले रोरुए महारोरुए अपइट्ठाणे, तेणं नरगा अंतो वट्टा बाहिं चउरंसा अहे खुरप्पसंठाणसंठिया निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्तजोइसपहा मेयपूयवसारुहिरमंसपडलचिक्कलित्ताणुलेवणतला असुईवीसा परमदु

॥ भाषा ॥

हेठ पिण साढीबावनसहस्र मूकीने मध्य विचाले तीनसहस्रयोजन। एत्थणं तमतमापुढवीणेरइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं०। इहां तमतमा पृथवीना नारकी पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। पंचदिसिं पंचअणुत्तरा महइ महालया महानिरयावासा पं० त०। पांचेदिसा मोटा महामोटा महानरकावासा कह्या तेकहेछे—काले महाकाले रुरुए महारुरुए अप्पइट्ठाणे तेण नरगाअंतोवट्टाबाहिरचउरंसा। काल महाकाल रुरुई महारुरुई अप्रतिष्ठान ते नरकावासामांहि बाटलाकारछे बाहिर चउरग्रछे। अहे खुरप्पसंठाणसंठिया। नीचे खुरप्रसंस्थानसंस्थितछे। निच्चंधयार तमसा ववगयगह चंदसूरनक्खत्तजोइसिय पहामेयवसापूयपडलरुहिरचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला। नित्यअन्धकार कालेवर्णे गयोछे ग्रह चन्द्र सूर्य नक्षत्र ज्योतिषीनो तेज

लक्षं बाहल्यपरिमाणं तस्योपरितन मेकं योजनसहस्रमेकं चाधोयोजनसहस्रं वर्जयित्वा शेषंनरकावासाधारभूतमतो रत्नप्रभाया नरकावासयोग्यं बाहल्यपरिमाणा ष्टसप्ततिसहस्राधिकं भवति लक्षं एवं सर्वत्रा प्युपयुज्य भावनीयं' साम्प्रतं नरकावाससङ्ख्याप्रतिपादनाय सङ्ग्रहणिगाथामाह-तीसाय

॥ टीका ॥

**अभिगंधा कक्कडफासा दुरहियासा असुभा नरगा असुभा नरगेसु वेदणाओ एत्थणं तमतमापुढविनेरइयाणं ठाणा पन्नत्ता, उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभाए समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभाए सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभाए तत्थणं बहवे तमतमापुढविनेरइया परिवसंति काला कालाभासा गंभीरलोमहरिसा भीमा उत्तासणया परमकिण्हा वन्नेणं पन्नत्ता समणाउसो ! तेणं निच्चं भीया णिच्चं तत्था निच्चं उव्विग्गा निच्चं परममसुभसंबद्धं नरगभयं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति, असीतंबत्तीसं अट्ठावीसंचहोइवीसंच । अट्ठारससो**

॥ मूल ॥

प्रभारहित स्वभावे मेद वसा अपूत पडल रुधिरमांस तेणेंकरी चोकणो । असुइबीभा परमदुब्भिगंधाकाओय अगणिवण्णाभा। भूमिनोतलो अशुचि परम दुर्गन्ध अग्निवर्णाभा । कक्खडफासा दुरहियासा असुभानिरएसु वेयणाओ । कर्कशस्पर्श घणें अहियासवायोग्य एहवामाठा नरकावासा तेहनो वेदनोय अशुभवेदनानरक अशुभनरकवेदना । एत्थणं तमतमा पुढवीणेरइयाणं ठाणा पं० । इहां सातमीपृथिवी नारकीना नामकह्याछे । उववाएण लोयस्स असं० समुग्घाएणंलोयस्स अ० संट्ठाणेण लोयस्स अ० । उपजवोलोकने अ० समुद्घातलोकने अ० स्वस्थानलोकने अ० । तत्थणं बहवे तमतमा पुढवि णेरइया परिवसंति । तिहां घणां तमतमापृथिवीना नारकी वसेछे—कालाकालोभासा गंभीरलोमहरिसा भीमाओत्तासणगा परमकिण्हावण्णेणं पं० । कालेवर्ण कालीआभा भयते वसे उत्कटरोमछे जेहने उत्कृष्टवर्णकह्या परम कृष्णवर्ण । समणाउसो । अहोश्रमण आउषावन्तो । तेण निच्चभीया निच्चतत्था निच्चतसिया निच्चुविग्गा निच्चपरमसुहसबद्धनरभयं पच्चणुभवमाणा विहरंति । ते नित्य बीहता नित्य त्रस्ता नित्य त्रास्या नित्य उद्विग्न नित्य परमअसुख नरकसंबधी भय भोगवताथका विचरे—आसीयंबत्तीसं अट्ठावीसंचहोइवीसंच अट्ठारससोलसगं अट्ठुत्तरमेवहिट्ठमिया । १ । रत्नप्रभा एकलाख असीहजा

॥ भाषा ॥

इत्यादिगतार्था ॥ तिर्यग्पञ्चेन्द्रियसूत्रं प्राग्वत्' नवरं ऊर्ध्वलोके तदेकदेशे तिर्यक् पञ्चेन्द्रिया मत्स्यादयो मन्दिरादि वाप्यादिषु अधोलोके तदे



लसगं अट्ठुत्तरमेवहेट्ठिमया ॥ १ ॥ अट्ठुत्तरंचवत्तीसं बत्तीसंचेवसयसहस्संतु अट्ठारससोलसगं चोद्दसमहियं तुछट्ठीए । अट्ठतेवन्नसहस्सा उवरिमहोवज्जिऊतीन्नणियं मज्झेउतिसुसहस्से सुहोंतिनरगातमतमाए । तीसा यपन्नवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं । तिन्नियपंचूणेगं पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ ४ ॥ कहिणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० ? गो० ! उड्ढलोए तदेकदेसन्नाए अहोलोए तदेकदेसन्नाए तिरियलोएसु अगडेसु तलाएसु नदीसु दहेसु वावीसु पुक्करिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु स



रपिण्ड शर्करप्रभानो एकलाख बत्तीसहजार एकलाख अट्ठावीसहजार एकलाख बीसहजार एकलाख अठारेहजार एकलाख सोलेहजार एकलाख ८ हजार एसर्व पृथिवीनो पिण्डकह्यो, हिवे नरकनो अवकाशमान कहेछे—अट्ठुत्तरंचतीसं छब्बीसंचेवसयसहस्सतु अट्ठारससोलसगं चउदसमहियतुछट्ठीए २ । एकलाख अठहत्तरहजार रत्नप्रभा एकलाख तीसहजार श० एकलाखछब्बीसहजार बा० एकलाख अठारेहजार धू० एकलाख सोलेहजार प० एकलाखचौदेहजार त० प्र० छट्ठीपृथिवीनो । अट्ठतिवण्णसहस्सा उवरिमहेवज्जिऊणतीसमणियं मज्झे तिसयसहस्से सुहुतिहुनरगातमतमाए ३ । साढाबावनहजार सातमीयेयोजन ऊपर मूकीने साढाबावनहजारयोजन हेठे मूकीने मध्यविचे तीनहजारयोजन अवकाश तमतमापृथिवीये हुवे । ३ । तीसायपण बीसा पण्णरसदसेवसतसहस्साइं तिण्णियपंचूणेगं पंचेवअणुत्तरानरगा । ४ । हिवे नरकावासानी संख्या कहेछे, ३००००० तीसलाख नरकावासा पचवीसलाख नर० पनरेलाख नर० दशलाख बा० तीनलाख नरकावासा पचे ऊन एकलाख नरकावासा तमप्र० । ४ । कहिणंभंते पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्ताअपज्जत्ताणं ठाणा पं० । किहां हिवे हेभगवन् पचेंद्रिय तिर्यंचयोनियाना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा उड्ढलोएतदेकदेसभाए अहोलोएतदेकदेसभाए तिरियलोए । हेगौतम ऊर्ध्वलोके एकदेशभागे अधोलोके एकदेशभागे तिरछेलोके । अगडेसु तलाएसु नईएसु दहेसु वावीसु पुक्खर

॥ मूल ॥

रपंतियासु सरसरपंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० । उववाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे । समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० । अंतो मणुस्सखित्ते पणयालीसाए जोयणसयसहस्सेसु अड्ढाईज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाए अंतरदीवेसु एत्थणं मणुस्साणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० । उववाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे समुग्घाएणं सव्वलोए सठाणेणं लोयस्स असंखेज्जइभागे । कहिणं भंते ! भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० ? कहिणं

---

णीस दीहियासु गुञ्जालियासु सरेसु सरपंतियासु विलपंतियास । कूपे तलावे नदी द्रह वावि पुष्करणी दीर्घिका गुञ्जालिका सर सरपातिनेविषै बिलपंतिविषै उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्ललेसु पल्ललेसु वप्पिणेसु दीवेसु समुद्दस सव्वेसुचेव जलासएसु जलठाणेसु । सर्वविषै पर्वत पांणीनोझरणे चीकणेठामेंपालरपाणीठामै द्वीपे समुद्रे सर्व जलाश्रये जलठामे । एत्थणं पचेंदियतिरिक्खजोणियाणं पज्जत्तअपज्जत्ताणं ठाणा पं० । इहां पचेंद्रिय तिर्यंचयोनियाना ठाम पर्याप्ता अपर्याप्ता कह्या । उववाएणं लोयस्स असं० समुग्घाएणलोयस्स अ० सठाणेणलोयस्स अ० । ऊपजवोलोकने अ० समुद्घातलोकने अ० स्वस्थानलोकने असंख्यातमेभागे । कांहिणभंते मणुस्साणं पज्जत्तअपज्जत्तगाणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन मनुष्यना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । गोयमा अंतोमणुस्सखेत्ते पणयालीसाएजोयणसहस्सेसु । हेगौतम मनुष्यक्षेत्रमांहि ४५ लाखयोजनविषै । अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु पन्नरसकम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु छप्पन्नाएअंतरदीवेसु । अढाईद्वीपविषै समुद्र दोय १५ कर्मभूमिविषै तीस अकर्मभूमिविषै ५६ अंतरद्वीपे । एत्थणं मणुस्साणं पज्जत्त अपज्जत्ताणं ठाणा प० । इहां मनुष्य पर्याप्ता अपर्याप्ता कह्या । उववाएणं लोयस्स अ० समुग्घाएणं लोयस्स अ० सठाणेणंलोयस्स अ० । ऊपजवो लोकने असंख्यातमेंभागे स्वं

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

कदेशे अधोलौकिकग्रामादिषु मनुष्यसूत्रमपि मृगमं, नवरं ॥ समुग्घायणंसत्तलोएइति ॥ केवलिसमुद्घातमधिकृत्य सम्प्रतिभवनपतिस्थानं प्रतिपादनार्थं माह-कहिणं भंते भवणवासीणदेवाणमित्यादि ॥ असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाएइति ॥ अशीत्युत्तरं अशीतिसहस्राधिकयोजनशतसहस्रं बाहल्यं यस्याः सा तथा तस्याः ॥ सत्तभवणकोडीओ बावत्तरिभवणावाससयसहस्सभवन्तीति मक्खायमिति ॥ असुकुमाराणां हि चतुःषष्टिशतसहस्राणि भवनानां ततः सर्वसङ्ख्या यथोक्तं भवनसङ्ख्यानं भवति ॥ तेणं भवणाइत्यादि ॥ तानि णमिति वाक्यालङ्कारे पुंस्त्वं प्राकृतत्वात् भवनानि बहिर्वृत्तानि वृत्ताकाराणि अंतःसमचतुरस्राणि अधस्तनभागे पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि कर्णिकानाम उन्नतसमचित्रबिन्दुकिनी ॥ उक्किन्नंतरविउलगंभी

॥ मूल ॥

भवणवासीदेवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेच्चेठागं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्सं एत्थणं भवणवासीदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं सत्तभवणकोडीनं बावत्तरिंच भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो समचउरंसा अहे पुक्करकन्नियासंठाणसंठिया उक्किन्नंतरविउलगं

॥ भाषा ॥

ह लोकने अ० स्वस्थानलोकने अ० । कहिणभंत भवणवइदेवाण पज्जत्त अपज्जत्ताण ठाणा प० । किहां हेभगवन् भवनवासीदेव पर्याप्ता अपर्याप्ताना स्थान कह्या । कहिणंभंते भवणवासीदेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् भवनपतीदेवता बसेछे । गोयमा इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए । हेगौतम ए रत्नप्रभापृथिवीने एकलाख असीयोजन प्रमाणमांहि । उवरिं एगंजोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हिट्ठाएगंजोयणसहस्सं वज्जित्ता । ऊपर एकहजारयोजन प्रमाण मूकीने हेठे एकहजारयोजन मूकीने । मज्झे अट्ठत्तरजोयणसहस्से । विचाले एकलाख ७८ हजार योजन । तत्थणं भवणवासीदेवाणं सत्तभवणकोडीओ । तिहां भवनपती देवताना सातकोडी ऊपर । बावत्तरी भवणवाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं । ७२ लाख भवनपती सञ्चाडे तीर्थंकरे कह्यो । तेणं भवणाबाहिंवट्टा अंतोसमचउरसा अहेसु पुक्खरकर्णिया संठाणसंठियाओ । ते भवनपतीना भवन बाहिर बाटलाकार मां

॥ टीका ॥

रखायफलिहाइति ॥ उत्कीर्णा मिवो त्कीर्णा मतीव व्यक्तमित्यर्थः, उत्कीर्णमन्तरंयासां खातपरिखाणां ता उत्कीर्णान्तराः किमुक्तं भवति खातानां च परिखाणां च स्पष्टवैवक्त्योन्मीलनार्थं मपान्तराले महती पाली समस्तीति खातानि च परिखा श्च खातपरिखा उत्कीर्णान्तरा विपुला विस्तीर्णा गम्भीरा अलब्धमध्यभागा खातपरिखा येषां भवनानां परित स्तानि उत्कीर्णान्तरविपुलगंभीरखातपरिखानि खातपरिखाणां चायं प्रतिविशेष परिखा उपरिविशाला अधःसङ्कुचिता, खातं तू भयत्रापि सममिति ॥ पागारट्टाल कवाड तोरण पडिदुवारदेसभागाइति ॥ प्रतिभवनप्रकारेषु शा लासुअट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वाराणि अट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वाररूपदेशभागा देशविशेषायेषु तानि प्राकाराट्टालककपाटतोरणप्रतिद्वारदेशभा गानि तत्र अट्टालकाः प्राकारस्योपरि भृत्याश्रयविशेषाः, कपाटानि प्रतोलीद्वारसक्तानि एतेन प्रतोल्यः सर्वत्र सूचिता अन्यथा कपाटानाम सम्भवा त् तोरणानि प्रतोलीद्वारेषु प्रतिद्वाराणि स्थूलद्वारापान्तरालवर्त्तीनि लघुद्वाराणि तथा ॥ जंतसयग्घिमुसलमुसंढिपरिवारिया इति ॥ यंत्राणि नानाप्र काराणि शतघ्न्यो महायष्टयो महाशिला वा याः पतिताः सत्यः पुरुषाणां शतानि घ्नन्ति मुसलानि प्रतीतानि मुसंढयःप्रहरणविशेषा स्तैः परिवा रितानि समंततो वेष्टितानि अत एवा योध्यानि परैर्योद्धुमशक्यानि अयोध्यत्वा देव च सदाजयानि सर्वकालं जयो येषु तानि सदाजयानि स र्वकालं जयवन्ती त्यर्थः, तथा सदा सर्वकालं गुप्तानि प्रहरणैः पुरुषै श्च योद्भिः सर्वतः समन्ततो निरन्तरपरिवारिततया परेषामसहमानानां म

॥ मूल ॥

नीरखातफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सयाज
या सया अजेया सदा गुत्ता अडयालकोट्ठरइया अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरुडोवरक्कि

॥ भाषा ॥

डि चउरस्स सम हेठे कमलनी कर्णिका सस्थाने एतले मूलअर्थ । उक्किन्नंतरविउलगभीर खायफलिहा पागारट्टालय कवाड तोरण पडिदुवारदेसभागा । ऊंचा विस्तीर्ण फिटकमय प्रकार कपाटसहित तोरण मोटाद्वार तेमां छोटे बारणेयुक्त । जंतसयग्घिमुसलमुसंढि परियारियाय अोज्झासया अजवास यागुत्ता । यंत्रनाशनछै जिहां मुशल प्रहरण विशेषपणे शस्त्रे परिवेष्टित श्वासछै उफासेंकरी सदा जीपताछै सदा गुप्तछै । अडयालकुट्ठगरइया अडया

॥ टीका ॥

नागपि प्रवेशासम्भवात् ॥ अठ्यालकोष्ठरइया इति ॥ अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविच्छित्तिकलिताः कोष्ठका अपवरका रचिताः स्वयमेवरचनां प्राप्ता येषु तानि अष्टचत्वारिंशत्कोष्ठकरचितानि सुखादिदर्शना त्यादिको निष्ठान्तस्य परनिपातः, तथा अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविच्छत्तयः कृतवनमाला येषु तानि अष्टचत्वारिंशत् कृतवनमालानि, अन्येत्व त्रिदधति अठ्यालशब्दो देशीवचनत्वात् प्रशस्तवाची ततो यमर्थः-प्रशस्तकोष्ठकरचितानि प्रशस्तकृतवनमालानीति तथा क्षेमाणि परकृतोपद्रवरहितानि शिवानि सदामङ्गलोपेतानि तथा किङ्करभूता ये ऽमरा स्तै दंशैः कृतोपरक्षि तानि सर्वतः समन्ततो रक्षितानि किङ्करामरदशदोपरक्षितानि ॥ लाउल्लोइयमहियाइति ॥ इयंनामय द्भूमे र्गोमयादिना उपलेपनं उल्लोइयं, कुड्यानां मालस्य च सेटिकादिभिः सम्मृष्टीकरणं लाइ उल्लोइयाभ्यां महितानि पूजितानि लाइउल्लोइयमहितानि, तथा गोशीर्षेण गोशीर्षनामकच न्दनेन रक्तचन्दनेन चर्दरेण बहलेन चपेटाप्रकारेण वा दत्ताः पञ्चाङ्गुलय स्तला हस्तका येषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलि त लानि, तथोपचिता निवेशिता चन्दनकलशा माङ्गल्यकलशा येषु तानि उपचितचन्दनकलशानि ॥ चन्दनघटसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागाइति ॥ च न्दनघटैः चन्दनकलशैः सुकृतानि सुष्ठुकृतानि शोभनानीति तात्पर्यार्थः, यानि तोरणानि तानि चन्दनघटसुकृतानि तोरणानि प्रतिद्वारदेशभागं द्वारदेशभागे येषु तानि चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागानि, तथा ॥ आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावाइति ॥ आआवाङ् अधोभूमौ

॥ मूल ॥

या लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदनदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो रणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवया

॥ भाषा ॥

लकयवणमाला । अडतालीसेभेदे कोटरचनाकोधीछे अडतालीसभेदे कोटरचनाकोधीछे अडतालीस फूलमालासहित । खेमासिवा किंकरा मरदंडोवर क्खिया लाउल्लोइय महियागोसीसरसरसरत्तचदणा । क्षेमपरिकृतनो तथा उपद्रव तिणें रहित किंकरभूत जे देवता तेणे राख्योछे जेघर लालकुगणा ख डिये धवल्याछे गोशीर्षनाम चन्दन रक्तचन्दन । दद्दरादिन्न पंचागुलितलाओय चियचदण कलसाचंदण घडसुकय तोरण पडिदुवारदेसभागा । दर्दर दो

॥ टीका ॥

सक्ता आसक्तो भूमौलग्न इत्यर्थः' उर्द्धं सक्तउत्सक्त उल्लोकतले उपरिसम्बद्ध इत्यर्थः, विपुलोवि स्तीर्णो वृत्तो वर्त्तुलः वग्घारियइति प्रलंबितो माल्यदाम कलापः पुष्पमालासमूहो येषु तान्य सक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रलम्बितमाल्यदामकलापानि तथा पंचवर्णेन सुरभिणा मुक्तेन क्षिप्तेन पुष्पपुञ्जलक्षणेनो पचारेण पूजया कलितानि पञ्चवर्णसुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितानि ॥ कालागुरुपवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामेइति॥ कालागुरुः प्रसिद्धः प्रवरः प्रधानः कुन्दुरुक्क चीड तुरुक्कसिल्हकं कालागुरु श्च प्रवरकुंदुरुक्कतुरुक्केचकालागुरुप्रवरकुंदुरुक्कतुरुक्काणि तेषां धूपस्य यो मघमघायमानो गंधउद्धुत इतस्तो विप्रसृत स्तेना भिरामाणि रमणीयानि कालागुरुकुंदुरुक्कतुरुक्कधूपमघमघायमानगंधोद्धूताभिरामाणि । तथा शोभनो गंधो ये षांते सुगन्धाः ते च ते वरगन्धा श्चवासाः सुगन्धवरगन्धा स्तेषां गन्धः स एव स्तीति सुगन्धवरगंधगंधिकानि अतोनेकस्वरादितीकप्रत्ययः, अत एव गन्धवर्त्तिभूतानि सौरभ्यातिशया द्गन्धगुटिकाकल्पानीति भावः, तथा अप्सरोगणानां संघः समुदाय स्तेन सम्यक् रमणीयतया विकीर्णानि व्याप्तानि अप्सरोगणसङ्घविकीर्णानि तथा दिव्यानां त्रुटितानां मातोद्यानां वेणुवीणामृदंगादीनां ये शब्दा स्तैः सम्प्रणदितानि सम्यक् श्रोतृमनोहारितया प्रकर्षेण सर्वकाल नदितानि शब्दवंति सर्वरत्नमयानि सर्वात्मना सामस्त्येन नत्वे कदेशेन रत्नमयानि वा अच्छानि आकाशस्फटिकरत्नवदति स्वच्छानि श्लक्ष्णानि श्लक्ष्णपुद्गलस्कंधनिष्पन्नापि श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् ॥ लण्हानि॥ मसृणानि घुंटितपटवत्॥ घट्ठाइति॥ घृष्टानीवघृष्टानि खरशानया पाषाण

॥ मूल ॥

रकलिया (ग्रं१४००) कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुत्ताभिरामा सुगंधवरगंधगंधिया गंधव
ट्टीभूया अच्छरगणसंघसंकिन्ना दिव्वतुडियसद्दसंपन्नादित्ता सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा

॥ भाषा ॥

धाके पचागुलौना चपेटा जिहां उपस्थितथाप्याके मङ्गलीकमय चन्दननाकलशो सूडासोभित कोधाके तोरण प्रतिद्वार देसभाग जिहां। आसक्तोसत्तरि ओ लट्टवग्घारियमल्लदामकलिया। भूमि ऊपर बांध्या विस्तीर्ण फूलमाला पञ्चवर्ण सस्य सुगन्ध पुष्प मूक्याके पूज्यनीपरे। पंचवणसरससुरहिमुक्क पप्फ पुंजोवया रकलिया कालागुर पवरकुंदरुक्कतुरुक्क धूवम घमघत गंधद्धुया भिरामे। विखेराके जिहां फूलकली तथा कृष्णागर प्रधानकन्दरु चौढ सेल्हा

॥ टीका ॥

प्रतिमावत् ॥ मठाइति ॥ सृष्टानि सुकुमारज्ञानया पाषाणप्रतिमेव अत एव नीरजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात् निर्मलानि आगंतुकमलाभावात् निष्पङ्कानि कलङ्कविकलानि कर्दमरहितानि वा निष्कङ्कटच्छाइति । निःकङ्कटानि निःकवचा निरावरणानिरुपघातेति भावार्थः, च्छायादीप्तिर्येषां तानि निष्कङ्कटच्छायानि सप्रभाणि स्वरूपतःप्रभावन्ति समरीचीनि बहिर्विनिर्गतकिरणजालानि सोद्योतानि बहिर्व्यवस्थितवस्तुस्तोमप्रकाशनकरा णि प्रसादीयानि मनःप्रसादाय मनःप्रसत्तये हितानि प्रसादीयानि मनःप्रसत्तिकारणि इतिभावः, तथा दर्शनीयानि दर्शनयोग्यानि यानि पश्यत श्चक्षुषी न श्रमं गच्छत इति तात्पर्यार्थः, अभिरूपा इति अभिसर्वेषां द्रष्टृणां मनःप्रसादानुकूलतया अभिमुखं रूप येषान्तानि अभिरूपाणि अत्यन्तकम नीयानि इत्यर्थः, अतएव पडिरूवाइति । प्रतिविशिष्टं रूपं येषां तानि प्रतिरूपाणि अथवा प्रतिक्षण नव नवमिव रूप येषान्तानि प्रतिरूपाणि

॥ मूल ॥

णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं भवणवासीणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० । उववाएणं लोगस्स असंखिज्जइ

॥ भाषा ॥

रस जेहना धूपने हरोगन्ध तेथेंकरी अद्भुत मघमघायमानछे गन्ध जिहां । सुगधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छारगण सघसविगणा दिव्वतुडियसहस्स याणादिया । सुगन्ध प्रधानछे गन्धजेहनी गन्धनीबाल गोलीभूत सौगन्धनो अतिशय कह्यो अप्सरना गणसमूह तिणे संकीर्णछे त्रुटितवेणु मृदङ्गादि सं श्रवणयोग्य मनोहरलागे साभलै थके सुखउपजै । सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लट्ठा घट्ठामट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकणच्छाया । सर्व रत्नमयछे आकाशनीपरे निर्मलछे सुकमाल सूक्ष्मपुद्गल निपटछे घुटतनीपरे निर्मलछे सुकमाल सूक्ष्म घठारा मठाराछे पाषाणनीपरे निर्मल उपघानादिकेंकरी नथी । सप्रभा सस्सिरीया ससिरीया पडिरूवा सउज्जोवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । सप्रभा मोतीनीपरे श्रीयेंकरी सोहायमानछे प्र तिरुप जूजूयारुप दीसेछे उद्योतसहित मननो प्रसादकारी देखवायोग्य अभिरूप रूपजाणु सांहिमो आवे । एत्थणं भवणवासीणं देवाणं पज्जत्त अपज्ज त्ताणं ठा० पं० । एहवे नामे भवनपतीना देवारा पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । उववाएणंलोयस्स अ० समुग्घाएणंलोयस्स अ० संठाणेणंलोयस्स अ० ।

॥ टीका ॥

एते॥ भवणवासी त्यादि॥ एतेऽनन्तरोक्ता असुरकुमारादयो भवनवासिनो यथाक्रमं चूडामणिर्नाम मुकुटे रत्नं चिह्नभूतं येषांते तथा नागकुमारा भूषणनियुक्तनागस्फटारूपचिह्नधरा मुकुटरत्नभूषणनियुक्ताः नागस्फटादिचित्रचिह्नधरा श्च तथा हि असुरकुमारभवनवासिनश्चूडामणिमुकुटरत्नाः ॥ १ ॥ चूडामणिर्नाम मुकुटे रत्नं चिह्नभूतं येषान्ते तथा नागकुमारा भूषणनियुक्तनागस्फटारूपचिह्नधराः ॥ २ ॥ सुपर्णकुमारा भूषणनियुक्तगरुडरूपचिह्न धराः ॥ ३ ॥ विद्युत्कुमारा भूषणनियुक्तवज्ररूपचिह्नधराः वज्रनामशक्रस्यायुधं ॥ ४ ॥ अग्निकुमारा मुकुटनियुक्तपूर्णकलशरूपचिह्नधराः ॥ ५ ॥ द्वीपकुमारा भूषणनियुक्तसिंहरूपधराः ॥ ६ ॥ उदधिकुमारा भूषणनियुक्तहयवररूपचिह्नधराः ॥ ७ ॥ दिक्कुमारा भूषणनियुक्तगजरूपचिह्नधराः ॥ ८ ॥ वायुकुमारा भूषणनियुक्तमकररूपचिह्नधारिणः ॥ ९ ॥ स्तनितकुमारा भूषणनियुक्तवरवर्द्धमानरूपचिह्नधराः ॥ १० ॥ वर्द्धमानकशरावसम्पुटं अक्षर गमनिकात्वेव भूषणेषु नागस्फुटागरुडवज्राणि येषांते भूषणनागस्फुटागरुडवज्राः पूर्णकलशेनाङ्कितउत्फेसो मुकुटो येषांते पूर्णकलशाङ्कितोत्फेसाः

॥ मूल ॥

नागे समुग्घाएणं लोयस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे भवणवासीदेवा परिवसंति तं—असुरानागसुवन्ना विज्जूअग्गीयदीवउदहीय । दिसिपवणथणियणामा दसहाएएभवण वासी । चूडामणिमउडरयणभूसणा फणिगरुलवइरपुण्णकलसंकिउप्फेसा सीहमगरमयंकअस्ससवरवद्धमाणनि

॥ भाषा ॥

ऊपजवोलोकने अ० समुद्घातलोकने अ० स्वस्थानलोकने असंख्यातमेंभागे । तत्थणं बहवे भवणवासी देवा परिवसंति तं० । तिहां घणां भवनपती देवता रहेछे तेहनानाम कह्या । असुरानागसुवर्णा विज्जुअग्गीयदीवउदहिय । दिसपवणथणियनामा दसहाएएभवणवासी ॥ १ ॥ असुरकुमार नागकुमार सुवर्ण विद्युत अग्नि द्वीप उदधि दिशि पवन स्तनित ए नामछे दशप्रकारे भवनपती ॥ १ ॥ चूडामणिमउडरयण भूषणा नागफण गरुल वइर पुण्ण कलसं किउप्फेसा सीह हयवरया अंकमगर वद्धमान निज्जुत्तचिण्हचिंधगया सुरूवा महड्ढिया महज्जुइया महायसा महाबला महाणुभागा महासुक्खा । चूडामणि रत्नचिह्न मुकुटे शोभे असुरकुमारनो चिह्न नागकुमारनो सर्प गरुड सुवर्णकुमारनो वज्र कलश सिंह अश्व गज मगर सरावसंपुट १० ए चिन्हेस

॥ टीका ॥

तथा सीहहयवरगजाः अङ्का अर्धाङ्कूपणेषु येषांते सीहहयवरजाङ्काः तथा मकरवर्द्धमानिके नियुक्ते भूषणेषु नियोजिते चिह्ने आश्चर्यभूते चिह्ने गते स्थिते येषांते मकरवर्द्धमाननियुक्तचिह्नचिह्नधरा स्ततः पूर्वपदैर्द्वंद्वः समासः, पुनः सर्वे कथंभूता इत्याह-सुरूपाः शोभनं रूप येषांते तथा अत्यन्त कमनीयरूपाइत्यर्थः, तथामहिड्ढियाइति ॥ महती ऋद्धि र्भवनपरिवारादिका येषांते महर्द्धिकाः, तथा महती द्युतिः शरीरभूता आभरणगता च येषामिति महाद्युतयः, तथा महत् बलं शारीरप्राणायेषांते महाबलाः, तथामहद्यश ख्यातिः र्येषांते महायशसः, महान् अनुभागाः सामर्थ्यं शापानुग्रहविषयं येषान्ते महानुभागाः तथा ॥ महेसक्खाइति ॥ महान्ईशः ईश्वरः इत्याख्यात प्रसिद्धिर्येषाते महेशाख्या अथवा ईशान मीशो भावे घञ्प्रत्ययः ऐश्वर्यमित्यर्थः, ईशऐश्वर्यइतिवचनात्, तत ईशमै श्वर्यमा त्मनाख्यान्ति अन्तर्भूतण्यर्थतया ख्यापयन्तीति ईशाख्याः, महान्त श्च ते ईशाख्या श्च महेशाख्याः, क्वचिन्महासोक्खाइतिपाठः, तत्रमहत्सौख्यं प्रभूतसद्वेदोदयवशाद्येषान्ते महासौख्या, अन्येपठन्ति महासक्खा इति ॥ तत्रायंशब्दसंस्कारो महाश्वात्ताः इयं चात्रपूर्वसूरिप्रदर्शिता व्युत्पत्तिः आशुगमनाद श्वो मनः अत्तानि इन्द्रियाणि स्वविषयव्यापकत्वात् अश्व श्व अत्तानि चेत्यश्वात्तानि महान्ति अश्वात्तानि येषान्ते महाश्वात्ताः ॥ हारविराइयवत्था इति ॥ हारै र्विराजितं वक्षो येषांते हारविराजितवक्षसः ॥ कडगतुडियथंभियभुया इति ॥ कटकानि कलाचिकाभरणानि त्रुटितानि बाहुरक्षका स्तैः स्तम्भिता विव स्तम्भितौ भुजौ येषान्ते कटकत्रुटितस्तम्भितभुजाः, तथा अङ्गदानि बाहुशीर्षाभरणविशेषरूपाणि कुण्डले कर्णाभरणविशेषरूपे तथा मृष्टौ मृष्टौ कृतौ गण्डौ कपोलौ यै स्तानि मृष्टगण्डानि कर्णपीठानि कर्णाभरणविशेषरूपाणि धारयन्ती

॥ मूल ॥

**जुत्तचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा महाबला महाणुभावा महासोक्खा हारविराइयवत्था कडगतुडियथंभियभुया अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउ**

॥ भाषा ॥

हित रूपवन्त महर्द्धिवन्त महद्युतिवन्त महायशवन्त महाबली महाभाग्यवन्त महासुखी । हारविराइयवत्था कडगतुडियथंभियभुया । हारोंकरी विराजमानछीयो जेहनो कडा बहोरखा तिणें थभ्या समछै भुजा । अंगयकुंडलमडगल्लतणकण पीढधारी विचित्त हत्याभरणा । अंगद कुण्डल कर्णाभरण धारा

॥ टीका ॥

त्येवं शीलाः ॥ अङ्गदकुण्डलमृष्टगण्डकर्णपीठधारिणः तथा विचित्राणि नानारूपाणि हस्ताभरणानि येषांते विचित्रहस्ताभरणाः तथा ॥ विचित्तमालाम उलिमउडा विचित्रा माला कुसुमस्रक् मौलौ मस्तके मुकुटं च येषांते विचित्रमालामौलिमुकुटाः' तथा कल्याण कङ्कल्याणकारि प्रवरं वस्त्रं परिहितं यैस्ते कल्याणकप्रवरवस्त्रपरिहिताः, सुखादिदर्शनान्निष्टान्तस्यात्र पाक्षिकपरनिपातः' तथा कल्याणकं कल्याणकारि यत्प्रवरमाल्यपुष्पदाम यच्चानुलेपनं तद्धर तीति कल्याणकप्रवरमाल्यानुलेपनधराः तथा भास्वराः देदीप्यमानाः बोन्दि शरीरं येषान्ते भास्वरबोन्दयः तथाप्रलम्ब इति प्रलम्बा या वनमाला तां धरतीति प्रलम्बवनमालाधराः ॥ दिव्वेणं संघयणेणंति ॥ शक्तिविशेषम पेक्ष्य संहननेव संहनने न तु साक्षात्संहननेन देवानां संहननाऽसम्भवात् संहननं हि अस्थिरचनात्मकं न च देवानामस्थीनि संति तथा चोक्तं जीवाभिगमे-देवाअसंघयणी जम्हा तेसिं नेवट्ठी नेव सिरा इत्यादि ॥ दिव्वाए इड्ढीए इति दिव्यया प्रधानया ऋद्ध्या परिवारादिकया दिव्यया द्युत्या इष्टार्थसंप्रयोगलक्षणया, द्युअभिगमने इति वचनात् दिव्यया प्रभया भवनावासगतया दिव्यया च्छायया समुदयशोभया दिव्येना र्चिषा शरीरस्थरत्नादितेजोज्वालया दिव्येन तेजसा शरीरप्रभवेन दिव्यया वा लेश्यया देहवर्णसुंदरतया

॥ मूल ॥

लिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुत्तीए दिव्वाए पभाए दिव्वाए च्छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणवाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसाणं

॥ भाषा ॥

थका विचित्रहाथना आभरण । विचित्तमालामउलमाला कल्लाणग पवर वत्थ पहिरिया । विचित्रमाला मस्तकेछे कल्याणमङ्गलीकनाकारक वस्त्र प हिराछे । कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदीपलंबवणमालधरा । मङ्गलीकनाकारक विलेपनकीधाछे देदीप्यमानशरीरे लांबीमाला धरीछे । दि व्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वे णफासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए । दिव्यवर्ण दिव्यगन्ध दिव्यस्पर्श दिव्यसंघयणविशेष दिव्यसंस्था

॥ टीका ॥

दशदिशा उद्योतयंतः॥ प्रकाशयंतप्रभासितमाणाइति॥ सोऽमाना स्ते भवनवासिनो देवाणमिति वाक्यालङ्कारे तत्र स्वस्थाने साण २ मिति स्वेषा २ मात्मीयानामित्यर्थः॥ आहेच्चपोरेवच्चमित्यादि॥ आधिपतेः कर्म आधिपत्यं रक्षाइत्यर्थः, सा च रक्षा सामान्येना रक्षकेणेव क्रियते ततआह-पुरस्यपतिः पुरपतिः तस्यकर्म पौरपत्यं सर्वेषामा त्मीयानामग्रेसरत्वमितिभावः, तद्वाग्रेसरत्वं नायकत्वमंतरेणापित्वनायकमियुक्त तथाविधगृहचिंतकसामान्यपु रुषस्येव भवति ततोनायकत्वप्रतिपत्त्यर्थमाह-स्वामित्वं स्वमस्यास्तीतिस्वामी तद्भावः स्वामित्वंनायकत्वमित्यर्थः, तदपि च नायकत्वं कस्यचि त्पोष कत्व मन्तरेणापि भवति यथा हरिणाधिपति हरिणस्य तत आह-भर्तृत्वं अतएव महत्तरकत्वं कस्यचिदा ज्ञाविकलस्यापि संबंधि भवति यथाकस्य चिद्वणिजः स्वदासीवर्गंप्रति तत आह-आणाईसरसेणावच्चं॥ आज्ञाया ईश्वरः आज्ञेश्वरः सेनायाः पतिः सेनापतिः आज्ञेश्वर श्चा सौ सेनापति श्च आ ज्ञेश्वरसेनापति स्तस्य कर्म आज्ञेश्वरसेनापत्यंस्वसैन्ये प्रत्यद्भुत श्चाज्ञाप्रधान्यमिति भावः, कारयतोन्यैर्नियुक्तकैःपुरुषैः पालयन्तः स्वयमेव महतारवेणे

॥ मूल ॥

साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ परियाणं साणं २ अणीयाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडि

॥ भाषा ॥

न दिव्व ऋद्धि। दिव्वाए जुइए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए। दिव्यद्युति दिव्यप्रभा दिव्यछाया दिव्य अचित दिव्यतज दिव्यलेश्या। दसदिसाओ उज्जोएमाणा पभासेमाणा। दशदिशिनेविषै उजवालो करता। तेण तत्थ साणं २ भवणवाससयसहस्साणं। ते तिहां पोताना भवन लाखेंकरी। साण सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसगाणं। आपणा सामानिक देवेंकरी आपणा चायत्रिंशेंकरी। साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं परिसाणं साणं अणियाणं। आपणें लोकपालेंकरी आप आपणा अग्रमहिषीयेंकरी आपणा कटकेकरी। साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय। आप आपणें कटकनाधणीयें करी आपणा आत्मर

॥ टीका ॥

ति योगः ॥ अहयति ॥ आख्यानकप्रतिबद्धानि यदिवा अहतानि अव्याहतानि नित्यानुबंधीनीति भावः, ये नाट्यगीते नाट्यं नृत्तं गीतं गानं यानि च वादितानि तंतीतलतालत्रुटितानि तत्र तन्त्री वीणा तलौ हस्ततलौ ताल कंसिका त्रुटितावादित्राणि तथा यश्च घनमृदङ्गपटुनापुरुषेणप्रवादितः तत्र घनमृदङ्गोनामघनसमानध्वनिर्योमृदङ्गस्तत एतेषां द्वंद्व स्तेषां रवेण दिव्यान् दिवि भवान् प्रधानानिति भावः, भोगार्हाः भोगाः शब्दादयो

॥ मूल ॥

यघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति । कहिणं भंते ! असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! असुरकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से बाहल्लाए एत्थणं असुरकुमाराणं देवाणं चोवट्ठि भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्करकण्णियासंठा

॥ भाषा ॥

चक देवेंकरी अनेरा घणां भवनवासी देव देवांगतानां अधिपति । आहेवच्च पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्त । रथपालपणों पुरोगामिपणों स्वामीपणों पोषकपणों बडाईपणो । आणाईसरसेणावच्च कारेमाणा पालेमाणा महयाहय नट्टगीय वाइयरवेणं तंती तलतालतुडिय घणमुइंग पडुप्प वाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति । आज्ञापालता पलावता करताकरावता मोटाबाजा वजरावता नृत्य गीत वादित्र तंत्री तलताल त्रुटित वा मृदंग मोटाशब्दें तिणेंकरी दिव्य देवतानां भोग भोगवता विचरेछे। कहिणंभंते असुरकुमार देवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् असुरकुमार देवतानां पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । कहिणं भंते असुरकुमारदेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् असुरकुमारदेवता वसेछे। गोयमा रयणप्पभापुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं जोयणसयसहस्स उग्गाहित्ता । हेगौतम एरत्नप्रभाने एकलाख असीहजारयोजन जाड पणें तेहमांहि उपर एकहजारयोजन मूकीने । हिट्ठाएगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहुत्तरेजोयणसयसहस्से । हेठलो एकसहस्रयोजन वर्जीनेवि

भोगभोगा स्तान् भुञ्जमाना विहरन्त्या सते, असुरकुमारसूत्रे कालाःकृष्णवर्णाः ॥ लोहितक्खबिम्बोष्ठा ॥ लोहिताक्षरत्नवत् बिम्बीफलवद्रक्तौष्ठौ येषान्ते लोहिताक्षबिम्बोष्ठाः आरक्तोष्ठा इति भावः, धवलाःपुष्पवत्सामर्थ्यात् कुन्दकलिका इव दन्ता येषांते धवलपुष्पदन्ताः अञ्जिताः कृष्णाः केशा येषांते



णसंठिया किन्नंतरविउलगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुस लमुसंढिपरिवारिया अउज्झा सदा सया वलया सदा गुत्ता अडयालकयवनमाला खेमा सिवा किंकरामरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उव चियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कझज्झंतधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरा



चाले एकलाख अठहत्तरहजारयोजन । एत्थणं असुरकुमाराणं देवाणं चउसट्ठिभवणवाससयसहस्सा हवंतिमक्खायं । इहां असुरकुमारना ३४ दक्षिण ३० उत्तर ६४ भवनसंख्या हुवे भगवंते कही । तेणं भवणाबाहिंवट्टा अंतो समचउरंसा । ते भवन बाहिर बाटलाछे मांहिलो चोखूणाछे । अहेपुक्खरकण्णि या संठाणसंठिया उक्किण्णंतर विउलगंभीर खायफलिहा पागारट्टालय कविाडतोरण पडिदुवारदेसभागा । हेठे कमलनी कर्णिकाने संस्थाने संस्थित उत्कीर्ण विचे पिहुली गंभीर फिटकमयी प्राकारउपरि कविाड तोरण द्वारमोटा तेहना नान्हाद्वार कडा देशभाग । जंतसयग्घि मुसलमुसंढि परिवाय रिया आओज्झासया जयासया गुप्ता । मूंसलप्रहरणादिके वेष्टितछे साहमो देखवा समर्थनही सदाजीपताछे सदा गुप्तछे । अडयालकुडुगरइया । ४८ दे शीभाषायें प्रसंसा वचन । अडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदडोवरक्खिया । ४८ भेदेकरी फूलमाला कल्याणकारी उपद्रवबिना किङ्करभूत जे देवता तेणेंराख्योछे जे भुवन । लाउल्लोइय महियागोसीस सरस रत्तचंदन दद्दरदिन्न पंचागुलि तला उवचियचंदणकलसा । लीप्याछे मणादिकनीपरे मांहि गोशीर्ष चन्दन रक्तचन्दनादिके दर्दरदीधाछे पंचागुलिना हाथा उपचित थाप्याछे चन्दनकलश । चंदणघडसुकय तोरणपडिदुवार देसभागा । च

॥ टीका ॥

असितकेशाःदन्तःकेशा श्वा मीषां वैक्रिया द्रष्टव्याः न स्वाभाविका वैक्रियशरीरत्वात् वामेयकुण्डलधरा एककर्णावसक्तकुण्डलधारिणः तथा आर्द्रे णसरसेनचन्दनेनानुलिप्तगात्रयैस्ते आर्द्रचन्दनानुलिप्तगात्राः, तथा ईषत् मनाक् शिलीध्रपुष्पप्रकाशानि शिलिध्रपुष्पसदृशवर्णानि ईषद्रक्तानी त्यर्थः अ संक्लिष्टानि अत्यन्तसुखजनकतयामनागपिसंक्लेशानुत्पादिकानि सूक्ष्माणि मृदुलघुस्पर्शान्यच्छानि चेतिनाथः, वस्त्राणि प्रवराणि अत्र सूत्रे विभक्तिलोपः

॥ मूल ॥

मा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपन्नंदिया सव्वरयणामया अ च्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरिया सउज्जोया पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । उववा एणं लोयस्स असंखिज्जइभागे समुग्घाएणं लोगस्स असंखेज्जइभागे सट्ठाणेणं लोगस्स असंखेज्जइभागे त त्थणं बहवे असुरकुमारादेवा परिवसंति काला लोहितक्खा बिंबोट्ठा धवलपुप्फदंता असियकेसा वामेयकुं डलधरा अद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता विइयं च असंपत्ता जुव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियथंभियभुया दसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया महज्जुइया म हायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवक्खा कडयतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंड

॥ भाषा ॥

न्दनकलशे रूडा शोभनकौधाछे तोरणनो प्रतिद्वार देशभागछे । आसक्तोसक्तविउलवट्टवग्घारिय मल्लदामकलावा पंच-वसरसमुरहिमुक्कपुप्फपुंजोवया रकलिए । जिहां आसक्तोसक्तभूमि अद्र ऊपर बांध्या विपुलविस्तीर्ण प्रलम्बित माल्य दामना कलापसमूह जिहां पंचवर्ण सरस सुरभिगंधछे जेहनो अभिगंधनो बाटसहित । कालागुरुपवरकुंदरुक्क तुरुक्क धूवमघमघत गंधुद्धयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया ।-कृष्णागर प्रधानकुन्द सेल्हारसे क

॥ टीका ॥

प्राकृतत्वा त्परिहितापरिहितवन्तः तथा वयः प्रथमं कुमारत्वलक्षणम तिक्रान्ता स्तत्पर्यंतवर्त्तिन इति भावः, द्वितीयञ्च मध्यमलक्षणं वयोऽसम्प्राप्ताः एतदेवव्यक्तीकरोति भद्रे अतिप्रशस्ये भद्रे यौवने वर्त्तमानाः ॥ तलभङ्गयतुडियथरभूसणनिम्मलमणिरयणमंडियभुयाइति ॥ तलभङ्गका बाहाभरणविशेषा स्तुटितानि बाहुरक्षिका अन्यानि च यानि वराणि भूषणानि बाह्वाभरणानि येषु ये निर्मला मणय श्चन्द्रकान्ताद्या यानि रत्नानि इन्द्रनीलादीनि तै र्मंडितौ भुजौ हस्ताग्रौ येषांते तथा, तथा दशभिर्मुद्राभिर्मंडितौ भुजौ अग्रहस्तौ येषांते दशमुद्रामण्डिताग्रहस्ताः ॥ चूडामणिचित्तचिंधगयाइति ॥

॥ मूल ॥

यलकखपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्लाणगपवर मल्लाणुलेवणधरा भासरबोंदी पलंबवनमालधरा दिव्वेणं वसेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघय णेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तावत्तीसाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं भवणवा सीणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पा

॥ भाषा ॥

री मघमघायमान सुगन्ध प्रधानगन्ध जेहनो अतिगन्धनो बाटसहित अप्सराना । गणसंघसंविगया दिव्वतुडियसहसपणडेया सव्वरयणमया । गणसमूह तिणेकरी सहित मृदङ्गादि शुभशब्द सांभलता सर्व रत्नमयछे । अच्छासण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया सप्पभा सस्सिरिया । आछाछे घडयाछे मठाराछे निरज निर्मल निष्प्रकम्प निर्कण्टक प्रभासहित । सउज्जोया पासाइया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । उद्योतसहित दर्श नीक अभिरूप प्रतिरूप । एत्थणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । इहांठामे असुरकुमार देवता वसेछे पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या ।

॥ टीका ॥

चूडामणिनामकं चित्रमद्भुतं चिह्नगतं तं स्थितं येषांते चूडामणिचित्रचिह्नगताः, चमरबलिसामान्यसूत्रे कालाः कृष्णवर्णाः एतदेवो पमानतः प्रतिपाद यति महानीलसरिसा महानीलं यत्किमपिवस्तु जातं लोके प्रसिद्धं तेन सदृशा एतदेव व्याचष्टे नीलगुटिका नील्यागुटिका गवलं माहिषं शृंगं अत सीकुसुमं प्रतीतं तेषामिव प्रकाशः प्रतिभा येषांते नीलगुटिकागवलातसीकुसमप्रकाशाः तथा विकसितशतपत्रमिवनिर्मले ईषद्देशविभागेन मनाक् सिते रक्ते ताम्रे च नयने येषां ते विकसितशतपत्रनिर्मलेषत्सितरक्ताम्रनयनाः गरुडस्येवा यता दीर्घा ऋज्वी अकुटिला तुङ्गा उन्नता नासा नासिका येषांते गरुडायतदीर्घतुङ्गनासाः, तथा उपचि तं तेजितं यत्शिला प्रवालं विद्रुमरक्तं यच्च बिंबफलं बिंब्याः सत्कं फलं तत्संनिभोष्ठरोष्ठो येषांते तथा पा

॥ मूल ॥

लेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमा णा विहरंति, चमरबलिणो इत्थ दुवे असुरकुमारिंदा असुरकुमाररायाणो परिवसंति काला महानीलस रिसा नीलगुलियगवलयसिकुसुमप्पगासा वियसियसयवत्तनिम्मलसीसियरत्ततंबनयणा गरुलायय उज्जुतुंग नासा उवचियसिलप्पवालबिंबफलसन्निहा हरोट्ठा पंडुरससिसगलविमलनिम्मलदहिघणसंखगोखीरकुंद गरयमुणालिया धवलदंतसेढी अयवहणिद्धंतधोयतत्ततवणिज्जरत्ततलतालुजीहा अंजणघणकसिणरुयगरमणि

॥ भाषा ॥

उववाएणं लो० अ० समुग्घाएणं लो० अ० संठाणेणं लो० अ०। अपजवोलोकने अ० समुहातलो० अ० स्वस्थानलो० अ०। तत्थणं वहवे असुरकुमारदेवा परिवसंति। तिहां घणां असुरकुमारदेवता वसेछै। कालालोहियक्खाविबोट्ठा। कालेवर्ण रातानेच विम्वफल समहोठ। धवलपुप्फदंता असियकेसा बा मेयकुंडल धरा अट्ठंदयाणुलित्तगता। धवलफूल समदात कालाकेश लावैकाने कुण्डल धाराछै आर्द्रसरसचन्दने लीप्याछै गात्र। वैसिसिलिंध पुप्फप यासाइं असकिलिट्ठाइं सुहमाइं वत्थाइं पवरपरिहीया। सिंगारेकराता शिलेंद्रनाफूलसरीखा असंक्लिष्ट अतिसुखकारी सूक्ष्मवस्त्रेकरी प्रधान पहिरा छै तथा। वयंच पढमसमइक्कंता बिइयंचअसंपत्ता भद्रदेभुवणे वट्टमाणा। वय प्रथम कुमारलक्षण औरवमण अप्राप्तथका भद्रयौवने वर्त्तमानथका।

॥ टीका ॥

गरुरं नतु सन्ध्याकालभ्राव्यारक्तं शशिसकलं चंद्रखण्डं तदपि च कथंभूतमित्याह-विमलं रजसा रहितं कलङ्कविकलं वा तथा निर्मलो यो दधिघनश
ङ्खो गोक्षीरं यानि कुन्दानि कुन्दकुसुमानि दकरजः पानीयकणाः मृणालिका च तद्वत् धवला दन्तश्रेणि र्येषांते तथा विमलशब्दस्य विशेष्या त्परनि

॥ मूल ॥

जानिहकेसा वामेयकुंडलधरा सुद्दचंदणाणुलित्तगत्ता ईसीसिलिंधपुप्फपगासाइं सुसंकिलिठाइं सुक्कमाइं व
त्थाइं पवरपरिहिया वयं च पढमं समइक्कंता विइयंच सुसंपत्ता नद्दे जोव्वणे वट्टमाणा तलभंगयतुडियप
वरभूसणनिम्मलमणिरयणमंडियभुयादसमुद्दामंडियग्गहत्था चूडामणिविचित्तचिंधगता सुरूवा महिड्ढीया
महज्जुया महायसा महब्बला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवत्था कडयतुडियथंभियभुया अंगदकुंड
लमठगंडतलकसपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलिमउडा कल्लाणगपवरवत्थपरिहिया कल्ला
णगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं

॥ भाषा ॥

तालभंगयतुडियपवरभूसण निम्मलमणि रयणमडिय भुयादसमुद्दामंडियग्गहत्था । तालभंग यावत् आभरणविशेष भूषण निर्मल मणिरत्नकरी मण्डित
भुज जेहनो दश मूंदडो येसोनेहाथ । चूडामणि विचित्तचिंधगया सुरूवा महड्ढिया महज्जुइया महायसा महब्बला महाणुभावा महासुक्खा । चूडाम
णिनामें चिन्हेसहित स्वरूप महाऋद्धिवन्त महाद्युतिवन्त महायशवन्त महाबलवन्त महानुभाव महासुखी । हारविराइयवत्था कडतुडियथंभियभुया । हा
रेकरी विराजमानहोयो कडा बहोरखा तिणें थंभ्याछै भुज । अंगयकुंडल गंडगल्ल तणकण पीडधारी । अंगद कुण्डलकाने कपोलाभरण पीतधराछै ।
विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलि कल्लाणगपवर वत्थपरिहिया । विचित्रहाथ आभरण विचित्रमालाछै मस्तके कल्याणकारी प्रवरवस्त्र पहिराछै ।
कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधराभासुरबोंदी पलबवणमालधरा । कल्याणकारक प्रधानविलेपन धाराछै देदीप्यशरीरे मालाधरता । दिव्वेणंवन्नेण दिव्वेण
गंधेण दिव्वेण फासेण दिव्वेणं संघयणेण दिव्वेणसंठाणेणं । दिव्यवर्णे दिव्यगंधेकरी दिव्यस्पर्शेकरी दिव्यसंघयणे दिव्यसंस्थाने । दिव्वाएइड्ढीए दिव्वाएजुइए

॥ टीका ॥

पातः प्राकृतत्वात् तथा हुतवहेन वैश्वानरेण निर्ध्मातं सत् यद् जायते धौतं निर्मलं तप्तमुत्तप्तं तपनीयमा रक्तं सुवर्णं तद्वत् रक्तानि हस्तपादत लानि तालुजिह्वे च येषां ते हुतवहनिर्ध्मातधौततप्ततपनीयरक्ततलतालुजिह्वाः, तथा अञ्जनं सौवीराञ्जनं घनः प्रावृट्कालभावी मेघ स्तद्वत् कृष्णारु चकवत् रुचकरत्नवत् रमणीयाः स्निग्धा श्च केशा येषां ते अञ्जनघनकृष्णरुचकरमणीयस्निग्धकेशाः ॥ तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे इति ॥ स्वस्थानो

॥ मूल ॥

संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जुईए दिव्वाए नासाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए पहाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं एएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भवणावाससयसहस्सा णं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तावत्तीसाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं२ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारे माणे पालेमाणे महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भु

॥ भाषा ॥

दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणतेएणं दिव्वाएलेस्साए। देवतानीऋद्धि देवतानी द्युति देवतानीप्रभासै दिव्यछायायें दिव्यकि रणे दिव्यतेजे दिव्यलेश्यायें। दसदिसाओ उज्जोएमाणा पभासेमाणा। दशदिशा उद्योतकरता तिहां शोभताथका। तेणं तत्थ साणं २ भवणाणं वासाणं सयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसगाणं २ साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं। ते तिहां आप आपणे भवने लाख गमे आप आपणें सामानिक सहस्रेकरी आप आपणा त्रायत्रिंसकेंकरी आप अपणा लोकपालेकरी आप आपणा अग्रमहिषेकरी। साणं २ अणि याणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणीयाहिवईण साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंचबहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय। आप आपणै अणी काधिपेंकरी आपणी २ परषदांकरी आपरी अणीकाधिकेंकरी आपरा आपरा आत्मरक्षकेंकरी अनेरा भवनवासी देवता देवांगनानो। आहेवच्चं पोरे

॥ टीका ॥

उपपातसमुद्घातरूपेषु त्रिष्वपि स्थानेषु लोकस्या सङ्ख्येयतमे भागे वक्तव्यानि ॥ चोयट्ठीअसुराणमि त्यादि ॥ गाथाद्वयं ॥ सामान्यतो ऽसुरकुमारादीनां भवनसङ्ख्याप्रतिपादकं सुगमं ॥ चोत्तीसाचोयालाइत्यादि ॥ गाथा दाक्षिणात्यानाम सुरकुमारादीनां भवनसङ्ख्याविधायिका तस्या व्याख्या-दक्षिणतो ऽसुरकुमाराणां भवनानि चतुस्त्रिंशत्सहस्राणि नागकुमाराणां चतुश्चत्वारिंशत् सुवर्णकुमाराणाम द्वात्रिंशत् वायुकुमाराणां पञ्चाशत् द्वीपदिगुदधिविद्युत्स्तनिताग्निकुमाराणां प्रत्येकं चत्वारिंशत्शतसहस्राणि भवनानामिति ॥ तीसा चत्तालीसा इत्यादि ॥ उत्तरस्त उत्तरस्यां दिशि असुरकुमाराणां भ

॥ मूल ॥

जेमाणा विहरंति, कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता ? कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गो० ! जंबुद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमी से रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्स उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरजोयणसयसहस्से एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीणय चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सोचेव वण्णओ जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला असुरकुमारदेवा देवीउ परिवसंति काला लोहियक्खा तहेव जाव

॥ भाषा ॥

वच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसर सेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे । अधिपतिपणो पौराधिपत्यणो स्वामीपणो पोषकपणों मोटापणों आज्ञा पालता पलावता करता । महया हयनट्टगीयवाइय तंतीतल ताडतुडिय घणमृदंग पडुप्पवाइय रवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणाविहरंति । मोटा शब्दना नृत्य वादित्र तंत्री ताल तालोटा त्रुटित घनमृदंग पटहशब्द तिणेकरी देवताना भोग भोगवता [illegible] चमर बलिणो इत्यादुवे असुरकुमारसबाणोपरिवसंति । चमरेन्द्र बलेन्द्रनामेछै असुरकुमारना जीव वसेछै । कालामहानीलसरिसा नीलगुलियगवलय अयसिकुसुमप्पगासा । कालेवर्ण महानील

॥ मूल ॥

भुंजेमाणे विहरंति, एवं सहस्स णाणियव्वं णवणवासीणं, चमरे इत्थ असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ काले महानीलसरिसे जाव पहासेमाणे सेणं तत्थ चउत्तीसाए भवणावाससयसहस्साणं चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं च चउसट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति। कहिणं भंते ! उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। कहिणं भंते! उत्तरिल्ला असुरकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर

॥ भाषा ॥

कई वस्तुने सरीखा नीलगुलीनीपरे श्याम विकसितपत्रनीपरे निर्मल। विकसितसयवत्त निर्मलदलसरिसयत्ततंबनयणा। महानिर्मल राताछै नेत्र जेहना गुरुलाइयउज्जुतुंगनासा उवचियसिलप्पवालबिंबफल संविहाधरुट्ठा। गुरुडनीपरे लांबोनाक जेहनो विकसित बिंबफल समहोठ। पडरससिसगलविमल निम्मलसंखगोखीरकुंददगरयमुणालिय धवलदंतसढीहुयवत्तनिभतधायत्ततवणिज्ज करतललत्ताणुजीहा। शंख गोक्षीर कुन्द पांणीनाकण कमलना भांतु आ धवलादातनो अणी धौत निर्मल एहवा राते सुवर्णनीपरे हाथ पग तला जीभ जिणरी तथा। अंजणघण कसिणरुयगरमणिज्ज निद्धकेसा। अञ्जन सोवारांजनादिकें कोधाछै काला चीकणाकेश। वामेयकुंडलधरा अद्धचंदणलित्ताइंसिसिलिंध पुप्फपयासाइं। वामेकांने कण्डल आर्द्रचन्द्रने लीधाछै गाल तथा लिंगारेक पुष्पवर्ण जेहवा। असंकिलिट्ठाइं सुहुमाइं वत्थाइं पवरपरिहियाइं। असंक्लिष्ट अत्यंतसूक्ष्म वस्त्रेंकरी पहिरया छै। वयचवडमसयकंता बोद्दयंतु असंपत्ता भद्दे जुव्वणे वट्टमाणा। पहिलोबय क्रीडोने बीजो वयनथी पाम्या यौवनकुमारपणें पाम्याछै। तलभंगयतुडिय पवरभूसण निम्मल मणि रयणमंडियभुया दसमुद्दिया मंडियग्गहत्था। एतल तलभंग बाहना आभरण बीहरखाप्रमुख प्रवरभूषण निर्मल मणिरत्नेकरी मांड्याछै भजदंड

॥ मूल ॥

जोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं देवीणय तीसं भवणावाससयसहस्सा भवंतीति मक्कायं तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति, बली इत्थ वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसइ, काले महानीलसरिसे जाव पन्नासेमाणे सेणं तत्थ तीसाए भवणा

॥ भाषा ॥

मंडडोयें गह्या छै हाथ । चूडामणि चित्तचिंधगया मुकुवा महड्ढिया महज्जया महाजसा महाबला महाणुभागा महासुक्खा हारविराइयवक्खा कडय तुडय थंभियभुया । चूडामणिचिन्हेकरी सहितस्वरूप महाऋद्धेकरी महाद्युतिकरी महायशेकरी महाबलेकरी महाभागे महासुखेकरी हारेकरी शोभित हीयो कडा बांहरखायें थंभ्याछै भुज । अंगयकुंडलमडगंडतलकण्णपीढधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलि । अंगदकुंडल मुकुट एहवा कर्णाभरण धारा छै विचित्र हाथना आभरण विचित्रमाला । कल्लाणगपवरमल्लालिवणा भासुरबोंदिपलवमालधरा । कल्याणकारक लेपन देदीप्य लांबीमाला धरता । दिव्वेणं वण्णेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं । दिव्यवर्णे दिव्यगंधे दिव्यस्पर्शे दिव्यसंघयणे दिव्यसंस्थाने । दिव्वेणं इड्ढीए दिव्वाएजुईए दिव्वाएपभाए दिव्वाएछायाए दिव्वाएअच्चीए दिव्वेणंतेएणं दिव्वाएलेस्साए । दिव्यऋद्धि दिव्यद्युति दिव्य भाषायें दिव्यछाया दिव्यप्रभा दिव्यकिरण दिव्यतेज दिव्यलश्यायेंकरी । दसदिसाओ उज्जोएमाणापभासेमाणा । दशदिशि उद्योतकरता विचरेछै । तेणं तत्थ साणं २ भवणवाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं । ते तिहां आपणा भवनमै लाखगमेंकरी आप आपणा सामानिकसहस्रें करी साणं तायतीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं । आपणा त्रायत्रिंशेंकरी आपणा लोकपालेकरी अग्रमहिषीयेंकरी पोतानी परिषदायें करी आप आपणी अणियेंकरी । साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंचबहूणं भवणवासीणं देवाणय देवीणय । आत्मरक्षक सहस्रेकरी और पिणघणों भवणवासी देवता देवांगनो । आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं । अधिपतिपणों पौराधिपणों स्वामीप

॥ मूल ॥

वाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं पंचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरंति । कहिणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिणं

॥ भाषा ॥

णोबडाइपणें । अणाइसर सेणावच्च कारेमाणे पालेमाणे । आज्ञापलावताथका करावताथका । महयाहय नट्ट गीयवाइय तंतीतलताल घणमुयंग पडुप्प वाइयरवेणं । मोटाशब्द नटगीत वर्जित तंत्री ताल तलेटा मृदंग मोटा पडहशब्दें । दिव्वाइं भोगभोगाइं भुजमाणा विहरंति । दिव्य भोग भोगवता विचरेछे । कहिणंभंते दाहिणिल्लाणं असुरकुमारदेवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् दक्षिणदिशिना असुरकुमारदेवना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते दाहिणिल्ला असुरकुमारदेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् दक्षिण असुरकुमारदेवता वसेछे । गोयमा जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं । हेगौतम जंबूद्वीप मेरूपर्वतथी दक्षिणदिशे । इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरजोयणसहस्स बाहल्लाए उवरिं एगंजोयण सहस्सं उग्गाहित्ता । ए रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे एकलाख असीहजारयोजन जाडपणें ते ऊपर एकसहस्र योजन उगगहीने । हिट्ठाएगंजोयणसहस्स वज्जित्ता । नीचे एकयोजन सहस्र मूकीने । मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसहस्से । विचे अठत्तरहजार एकलाखयोजन । एत्थणं दाहिणिल्लाण असुरकुमाराणं देवाणं चउतीसं भवणवास सयसहस्साहिवइत्तिमक्खायं । तिहां दक्षिणना असुरकुमारदेवताना ३४ लाख विभुवन् भगवतेकह्या । तेणं भवणावाहिवट्टा अंतो चउरंसा सोचेव वण्णओ जाव पडिरूवा । ते भवन बाहिर बाटलाछे मांहि चोखूणाछे । वर्णव सर्व पाछलीपरे जालगे प्रतिरूप । एत्थणं दाहिणिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताणं ठाणा पं० । तिहां दक्षिणना असुरकुमार देवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिमुविलोयस्स असंखिज्जेभागे पं० । तीन बोललोकने असंख्यातमेंभागे हुवे । एत्थणं बहवे दाहिणिल्ला असुरकुमारदेवदेवीओ परिवसंति । तिहां घणा असुरकुमारना दे

॥ मूल ॥

भंते ! नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्से बाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं वज्जिऊण मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं चुलसीइभवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा अंतो चउरं

॥ भाषा ॥

वता देवो वसेछे काला लोहियक्खा तहेव जाव भुंजमाणा विहरंति । कालोवर्ण रातीआख्यां तिमहीज यावत् भोग भोगवता विचरेछे । एएसिं तहेव तायत्तिंस लोगपालाभवंति । एहने तिमहीज त्रायत्रिंसक देवता लोकपाल । एवं सव्वत्थ भाणियव्वं भवणवासीणं । इणतरे सर्व पाछली परे कहिवो भवणवासी ते । चमरे असुरकुमारिंदे असुरकुमारराया परिवसइ । चमरचंचा राजधानीयें असुरकुमारनामे इन्द्र वसेछे । काले महानीलसरिसे जाव पभासेमाणे । कालेवर्ण महानील वस्तुविशेष तेहनीप्रभा करता विचरेछे । सेणं तत्थ चउतीसाए भवणवाससहस्साणं चउसट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं । तिहां चउतीसलाख भवनेकरी ६४००० सामानिक देवतायेंकरी । तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं । त्रायत्रिंयक देवेंकरी ४ लोक पालेकरी । पचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं । पांच अग्रमहिषेंकरी परिवारसहित । तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउसट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं । तीन परिषदा करी ७ अनीकाकरी ७ अनिकेंधिपति करी चौसठ चौगुणांकरता दोयलाख छप्पनहजार आत्मरक्षक देवेंकरी। अण्णेसिंचबहूणं दाहिणिल्लाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति । अनेरा घणां दक्षिणवासी देवता देवांगना अधिपतिपणों पौराधिपणों यावत् विचरे । कहिणंभंते उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं भंते उत्तरिल्ला असुरकुमारादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् उत्तरना असुरकुमारदेवता वसेछे । गोयमा जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं । हेगौतम जंबूद्वीपनामे द्वीप ते जंबूद्वीपने मेरुपर्वतथकी उत्तरे । इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए । ए रत्नप्रभापृथिवीने एकलाख असीहजार योजन जाडपणें । उवरिं एगंजोयणसहस्सं उग्गाहित्ता । ऊपर एकयोजनसहस्र उगाहीने । हिट्ठाएगं

॥ मूल ॥

सा जाव पडिरूवा तत्थणं नागकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइ भागे तत्थणं बहवे नागकुमारादेवा परिवसंति , महिड्ढिया महज्जुइया सेसं जहा जीवाभिगमे जाव विहरंति धरणभूयाणंदा एत्थ दुवे नागकुमारराया परिवसंति महिड्ढिया सेसं जहा जीवाभिगमे जाव विहरंति कहिणं

॥ भाषा ॥

जोयणसहस्सं वज्जित्ता । हेठे एकयोजनसहस्र मूकीने । मज्झे अट्ठहत्तरजोयणसयसहस्से । विचे एकलाख अठहत्तरसहस्र । एत्थणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणं तीसंभवणावाससयसहस्सं हवंतित्तिमक्खाय । तिहां उत्तरना असुरकुमारदेवताना बौसलाख भुवन कह्याछे तीर्थंकरे कह्या । तेणं भवण बाहिंवट्टा अंतोचउरंसा सेसंजहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति । तेभुवन बाहिर बाटलाछे मध्ये चौखूणांछे शेष जिम दक्षिणनोपरे यावत् विचरेछे । इत्थ बलि वइरोयणिंदे वइरोयणराया परिवसंति । इहां बलेन्द्रनामे रोहणी राजा वसेछे । काले महाणीलसरिसे जाव पभासेमाणा । कालेवर्ण महा नीलवस्तुनोपरे यावत् शोभतारहेछे । सेणं तत्थतीसाए भवणवाससयसहस्साणं । ते तिहां तौसलाख भवनेकरी । सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं । साठसहस्र सामानिकदेवेकरी तायत्रिंशकदेवेकरी । चउण्हं लोगपालाणं पचण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं । चार लोकपालेकरी पंच अग्रमहिषीयेंकरी परिवारेसहित तीन परषदायेंकरी । सत्तण्हं अणीयाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं । सात अनीकेकरी ७ अनी काधिपतिकरी । चउण्हं सट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिंचबहूणं उत्तरिल्लाणं असुरकुमाराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जावविहरइ । साठचौगुणाकरतां दोयलाख चालीसहजार देवता आत्मरक्षक और दूजा घणां उत्तरदिशि असुरकुमारदेवता देवीनो अधिपतिपणों पौरपणों विचरे । कहिणं भंते नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् नागकुमारदेवना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं भंते नागकुमारादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् नागकुमारदेवता वसेछे । गोयमा इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरे जोयणसयसहस्स बाहल्लाए । हेगौतम ए रत्नप्रभापृथिवीने एकलाख असीहजारयोजन जाडपणो । उवरिं एगजोयणसहस्सं उग्गाहित्ता । ऊपर एकयोजन सहस्र उगाहीने । हिट्ठा

॥ मूल ॥

भंते ! दाहिणिल्लाणनागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! दाहिणिल्लाणं नागकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरिं एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं चोयालीसं भवणावा

॥ भाषा ॥

एगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता । नीचे एकयोजनसहस्र मूकीने । मज्झे अट्ठहुत्तरे जोयणसयसहस्से । बिचे १७८००० परिमाण । एत्थण नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताणं ठाणा पं० । इहां नागकुमार देवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । चुलसीति भुवणावाससयसहस्स हवंतित्तिमक्खायं । ८४ लाख भुवनसंख्या हुवे भगवंते कह्यो । तेणं भवणाबाहिंवट्टा अंतो चउरंसा जाव पडिरूवा । ते भवन बाहिर बाटलाकारे मांहि चौरंस इमसर्व यावत् प्रतिरूप । तत्थणं नागकुमारा देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । तिहां नागकुमारदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ता ठामकह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीनलोकने असंख्यातमेंभाग हुवे । तत्थणं बहवे नागकुमारा देवा परिवसंति । तिहां घणां नागकुमार देवता बसेछे । महड्ढिया महज्जुइया सेसंजहा ओहियाणं जाव विहरंति । मोटीऋद्धि मोटी द्युतिकरी शेषथाकतो जिम ओघनो आलावो यावत् विचरे । कहिणंभंते दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् दक्षिणदिशिना नागकुमारदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते दाहिणिल्ला नागकुमारादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् दक्षिणदिशिना नागकुमार बसेछे । गोयमा जंबूद्दीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स दाहिणेणं । हे गौतम जंबूद्दीप २ मेरुपर्वतथकी दक्षिणदिशि । इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए । ए रत्नप्रभापृथिवीयें एकलाख असीह जार योजन जाडपणें । उवरिं एगंजोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हिट्ठा एगंजोयणसहस्सं वज्जित्ता । ऊपर एकहजार उगाहीने नीचे एकयोजनसहस्र मूकीने । मज्झेअट्ठहुत्तरजोयण सयंसहस्से । विचाले एकलाख अठोतरसहस्र । एत्थणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं । इहां दक्षिणदिशिना नागकु

वनानि त्रिंशत्शतसहस्राणि नागकुमाराणां चत्वारिंशत् चतुस्त्रिंशत् सुवर्णकुमाराणां षट्चत्वारिंशत् द्वीपदिगुदधिविद्युत्स्तनिताग्निकुमाराणां प्रत्येकं षट्त्रिंशद्भवनशतसहस्राणि ॥ सम्प्रति सामानिकात्मरक्षकदेवसङ्ख्यासंग्रहार्थमाह-चउसट्ठीसट्ठीखलु इत्यादि ॥ दाक्षिणात्यस्या ऽसुरकुमारेंद्रस्य



ससयसहस्सा हवंतीति मक्कायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे एत्थणं बहवे दाहिणिल्लाणं नागकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया जाव विहरंति । धरणे एत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसंति महिड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ चोयालीसाए भवणावाससयसहस्साणं छण्हं सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं



मारदेवताछै । चौमालीस भवणावाससहस्सा हवंतीतिमक्खायं । चौवालीससलाख भवन इम तीर्थंकरे कह्या । तेणं भवणावाहिंवट्टा अतो चउरंसा जाव पडिरूवा । तेभवन बाहिर वाटला मांहि चौरंस यावत् प्रतिरूप । एत्थणं दाहिणिल्लाणं नागकुमाराणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पं० । इहां दक्षिणना गकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीने बोललोकने असंख्यातमेभाग । एत्थण बहवे दाहिणिल्ला नागकु मारदेवा परिवसंति । इहां घणां दक्षिणना नागकुमारदेवता वसेछै । महिड्ढिया जाव विहरति । मोटोऋद्धि यावत् विचरै । धरणे इत्थ नागकुमा रिंदे नागकुमारराया पोपरिवसंति । धरणनामे नागकुमारनामे इन्द्र नागकुमारराजा वसैछै । महड्ढिया जाव पभासेमाणे । मोटोऋद्धि प्रभासहि त । सेणं तत्थ चउयालीसाए भवणावाससयाणं छण्हं सामाणियसाहस्सीणं । ते तिहां चौमालीससलाख भवननीसंख्या कही छसहस्र सामानिकें करी । तायतीसाए तायतीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं छण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं । तीनहजार त्रायस्त्रिंशकेकरी चारलोकपालकरी अग्रमहिषीयेंकरी

सामानिकादेवाः चतुःषष्टिसहस्राणि औत्तराहस्य षष्टिसहस्राणि असुरवर्जानाम सुरकुमारेंद्रवर्जानां सर्वेषा मपि दाक्षिणात्यानां औत्तराहानां च षट् २ सहस्राणि प्रत्यकं सामाणियाउ एतेऽनन्तरोक्तसंख्याकादयः सामानिका ज्ञातव्याः आत्मरक्षकाः पुनः सर्वत्रापि सामानिकचतुर्गुणाः प्रतिप



देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव कुव्वमाणे विहरंति कहिणं भंते ! उत्तरिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, कहिणं भंते ! उत्तरिल्ला नागकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! जंबूदीवे२ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं उग्गाहित्ता हेट्ठावेगं जोयणसहस्सं वज्जित्ता मज्झे अट्ठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं उत्तरिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति, नूयाणंदे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया परिवसइ मह



परिवारसहित । तिण परिसाणं सत्तण्ह अणियाणं अणीयाहिवईणं चउवीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं । तीन परषदासहित सात अनीकेकरी सात अनीकाधिपति करी चौवीससहस्र आत्मरक्षक देवेंकरी । असेसिंचवहूणं दाहिणिल्लाणं नागकुमारा देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जावमाणे विहरंति । अनेरा घणां दक्षिणना नागकुमारदेवता देवांगना अधिपतिपणो पालता विचरेछे । कहिणंभंते उत्तरिल्लाणं नागकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्तागाणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् उत्तरना नागकुमारदेवता पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । कहिणंभंते उत्तरिल्ला नागकुमारदेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् उत्तरना नागकुमारदेवता वसेछे । गोयमा । जंबूदीवे २ मंदरस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए । हेगौतम जंबूद्वीपे २ मेरुपर्वतथकी ए रत्नप्रभा पृथिवीने एकलाख असीहजारयोजन जाडपणे । उवरिं एगंजोयणसहस्सं उग्गाहित्ता । ऊपर एकहजारयोजन उगाहीने । हिट्ठाएगंजोयणसहस्सं वज्जित्ता । हेठे एकहजारयोजन वर्जीने । मज्झे अट्ठहत्तर जोयणसयसहस्से । मांहि एकलाख अ

॥ टीका ॥

त्तव्याः इदानीं दाक्षिणात्यानां औत्तराहानां चासुरकुमारादीनां यथाक्रमं इंद्रादीन् निर्दिशति चमरेधरणे इत्यादि दाक्षिणात्यानां असुरकुमाराणाम धिपति श्चमरोनागकुमाराणां धरणः सुवर्णकुमाराणां वेणुदेवः विद्युत्कुमाराणां हरिकान्तः अग्निकुमाराणाम ग्निसिंहः द्वीपकुमाराणां पू

॥ मूल ॥

ढिए जाव पन्नासेमाणे सेणं तत्थ चत्तालीसाए भवणावाससयसहस्साणं अहेवच्चं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! सुवण्णकुमारादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं बावत्तरिभवणावाससय सहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा तत्थणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, तत्थणं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया सेसं जहा णोहियाणं जाव विहरंति, वेणुदेव वेणुदालीय इत्थ दुवे सुवण्णकुमारिंदा सुवण्णकुमार

॥ भाषा ॥

ठोत्तरइजार । एत्थणं उत्तरिल्लाणं नागकुमारदेवाणं चत्तालीसं भवणावास सहस्सा हवंतीत्ति मक्खायं । इहां उत्तरदिशिना नागकुमारना चालीसलाख भवननीसंख्या कही बीजा गें कही । तेभवणाबाहिवट्टा सेसं जहा दाहिणिल्लाणं जाव विहरंति । ते भवन बाहिर बाटला शेष सर्व दक्षिण दिशिनीपरे यावत् विचरे । भूयाणंदे इत्थ नागकुमारिंदे नागकुमारराया णो परिवसंति । भूतानन्द नागकुमारनामे राजा बसेछे । महड्ढिए जाव पभासेमाणे । मोटी ऋद्धि यावत् प्रभासहित । सेणं तत्थ चत्तालीसाए भवणवाससयसाहस्सीणं अहेवच्चं जाव विहरंति । ते तिहां चालीसलाख भवननीसंख्या हुवे अधिपतिपणों विचरेछे । कहिणंभंते सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता पज्जत्ता ठाणा पं० । किहां हेभगवन् सुवर्णकुमारदेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते सुवण्णकुमारदेवता परिवसंति । किहां हेभगवन् सुवर्णकुमार बसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए जाव एत्थणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं बावत्तरि भवणावास सयसहस्सा हवंतीत्ति मक्खायं । हेगौतम ए रत्नप्रभापृथिवीयें यावत् इहां सुवर्णकुमारदेव बसेछे बह

॥ टीका ॥

र्णः उदधिकुमाराणां जलकान्तः दिक्कुमाराणाम मितः वायुकुमाराणां वेलम्बः स्तनितकुमाराणां घोषः ॥ बलिनूअणंदेइत्यादि ॥ उत्तरदिग्वर्त्ति नामसुरकुमाराणामिन्द्रोबलिः नागकुमाराणां भूतानन्दः सुपर्णकुमाराणां वेलुदालिः विद्युत्कुमाराणां हरिःसह अग्निकुमाराणामग्निमाणवः द्वीप कुमाराणां विशिष्टः उदधिकुमाराणां जलप्रभः दिक्कुमाराणाम मितवाहनः वायुकुमाराणां प्रभंजनः स्तनितकुमाराराणां महाघोषः सम्प्रतिवर्ण

॥ मूल ॥

रायाणो परिवसंति महड्ढिया जाव विहरंति । कहिणं भंते ! दाहिणल्लाणं सुवन्नकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ता णं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! दाहिणल्ला सुवन्नकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे जाव मज्झे अठहत्तरिजोयणसयसहस्से एत्थणं दाहिणल्लाणं सुवण्णकुमाराणं अठत्तीसं भवणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा बाहिं वट्टा जाव पडिरूवा, तत्थणं दाहिणल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे, एत्थणं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति । वेणुदेवे इत्थ सुवन्तिंदे सुवण्णकुमारराया परिवसंति सेसं जहा नागकुमाराणं । कहिणं भंते ! उत्तरिल्लाणं सुवन्नकु

॥ भाषा ॥

त्तरलाख भवनकह्या दक्षिणदिशि ३८ लाख उत्तरदिशि ३४ लाख तीर्थंकरे कह्यो । तेणं भवणाबाहिंवट्टा जावपडिरूवा । ते भवन बाहिर यावत् प्रति रूप । तत्थण सुवत्तकुमाराण देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । तिहां सवर्णकुमारना ठामकह्या । तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभागे । तीने बोललोकने असंख्यातमेंभागे । तत्थणं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति । तिहां घणां सुवर्णकुमारना देवता वसेछे । सेसं जहा ओहियाणं जाव विहरंति । शेष ओघना आलावनीपरे विचरे । वेणुदेव वेणुदालिय इत्थदुवे सुवण्णकुमारेंद्रा सुवण्णकुमाररराया णो परिवसंति । वेणुदेव वेणुदालो ए दोय सुवर्णकुमार ना राजा जांणवा राजापणें विचरेछे । कहिणंभंते दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् दक्षिणना सुवर्णकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणभंते दाहिणल्ला सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति । किहा हेभगवन् दक्षिणना सुवर्णकुमार वसेछे । गोयमा इमीसे

॥ टीका ॥

संग्रहार्थमाह-कालाअसुरकुमाराइत्यादि गाथाद्वयं असुरकुमाराः सर्वेपि कालाः कृष्णवर्णाः नागकुमाराउदधिकुमाराश्चैते उन्नयेपि पाण्डुराः श्वेत वर्णाःवरं जात्यं यत्कनकं तस्य निघर्षः कष पट्टकेरेखाताद्वत् गौराअवंति सुवर्णकुमारा दिक्कुमाराः स्तनितकुमारा श्च तथा विद्युत्कुमारा अग्नि कुमाराद्वीपकुमारा श्च भवंत्युत्तप्तकनकवर्णा ईषद्रक्तवर्णा इतिभावः वायुकुमाराः श्यामाः श्यामत्वमेवस्पष्टयति प्रियङ्गुवर्णाः सम्प्रतिवस्त्रगतवर्णप्र

॥ मूल ॥

माराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारा परिवसंति ? गोय मा ! इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थणं उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं चउत्तीसं भवणावासस यसहस्सा भवंतीतिमक्खायं । ते णं भवणा बाहिंवट्टा जाव पडिरूवा । एत्थणं उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । इहां उत्तरना सुवर्णकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठा मकह्या । तिर्यग्विलोगस्य असंखिज्जइभागे । तीन बोललोकने असंख्यातमेभागे हुवे । एत्थणं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति । इहां घणां सुवर्णकुमा र देवता बसेछे । वेणुदेवेय इत्थ सुवण्णकुमारिंदे सुवण्णकुमाररायाणो परिवसंति । वेणु देवनामे सुवर्णकुमारनो राजा बसेछे । सेसं जहा नागकुमारा णं । थाकतो शेष नागकुमारनीपरे । कहिणं भंते उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता २ य ठाणा पं० । किहां हेभगवन् उत्तरना सुवर्णकुमारदेव

॥ भाषा ॥

जाव मज्झे अट्ठहत्तरे जोयणसयसहस्से । हेगौतम ए यावत् मांहिले एकलाख अठोत्तरहजार । एत्थणं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं अठतीस भवणावास सयसहस्सा हवंतितिमक्खायं । इहां दक्षिणना सुवर्णकुमारदेवताना ३८ लाख भवन हुवे तीर्थंकरेंकह्या । तेणं भवणाबाहिंवट्टा जाव पडिरूवा । ते भवन बाहिर बाटला यावत् प्रतिरूप । एत्थणं दाहिणिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । इहां दक्षिण सुवर्णकुमारना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठा मकह्या । तिरियलोगस्स असंखिज्जइभागे । तीन बोललोकने असंख्यातमेभागे हुवे । एत्थणं बहवे सुवण्णकुमारा देवा परिवसंति । इहां घणां सुवर्णकुमा र देवता बसेछे । वेणुदेवेय इत्थ सुवण्णकुमारिंदे सुवण्णकुमाररायाणो परिवसंति । वेणु देवनामे सुवर्णकुमारनो राजा बसेछे । सेसं जहा नागकुमारा णं । थाकतो शेष नागकुमारनीपरे । कहिणं भंते उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं देवाणं पज्जत्ता २ य ठाणा पं० । किहां हेभगवन् उत्तरना सुवर्णकुमारदेव

॥ टीका ॥

तिपादनार्थमाह-असुरेसुहोंतिरत्ता इत्यादिगाथाद्वयं ॥ असुरेषु सुरकुमारेषु भवन्ति वस्त्राणिरक्तानि नागकुमारेषु उदधिकुमारेषु च शिलिंध्रपुष्प प्रभाणिनीलवर्णा नीत्यर्थः सुवर्णकुमारा दिक्कुमाराः स्तनितकुमारा श्च अश्वास्यगवसनधरा अश्वस्याश्वंमुखंअश्वास्यं तत्र गतो यः फेनः सोश्वास्यगत स्तद्वत् धवलं यद्वस्त्रं तद्वरन्ती त्यश्वास्यगवसनधराः बाहुल्येन श्वेतवस्त्रपरिधानशीलाइत्यर्थः विद्युत्कुमारा द्वीपकुमारा अग्निकुमाराश्च नीलानुराग

॥ मूल ॥

चोत्तीसंचेवसयसहस्साइं । बायालत्तीसा उत्तरओहोंतिभवणाइं ॥ ४ ॥ चउसठीसठीखलु छच्चसहस्सा असुरवज्जाणं । सामाणियाणएए चउगुणाआयरक्खाउ ॥ ५ ॥ चमरेधरणेतहवे णुदेवहरिकंतअग्गिसीहेय । पुणेजलकंतेय अमियवेलंबेयघोसेय ॥ ६ ॥ बलिनूयाणंदेवे णुदालीहरिस्सहेअग्गिमाणवविसिठे । जलप्पभेअमियवाहणे पभंजणेयमहाघोसे ॥ ७ ॥ उत्तरिल्लाणं जाव विहरंति , कालाअसुरकुमारा नागाउदहीपं फुरादोवि । वरकणगणिहसगोरा होंतिसुवण्णादिसाथणिया ॥ १ ॥ उत्तत्तकणगवन्ना विज्जुअग्गीयहोंति दीवाय । सामापियंगुवण्णा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ २ ॥ असुरेसुहोंतिरत्ता सिलिंधुपुप्फनायणाउदही । आ

॥ भाषा ॥

पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् उत्तरना सुवर्णकुमारदेवता बसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए जाव एत्थणं उत्तरिल्लाणं सुवण्णकुमाराणं चउतीसं भवणावाससयसहस्सा हवंतित्तिमक्खायं । हेगौतम ए रत्नप्रभाने यावत् इहां उत्तरना सुवर्णकुमारना ३४ लाख भवननी संख्याकही तीर्थंकरे कह्यो । तेणं भवणा जाव एत्थणं बहवे उत्तरिल्ला सुवण्णकुमारादेवा परिवसंति । ते भवन यावत् इहां घणां उत्तरना सुवर्णकुमारना देवता बसेछे । महड्ढिया जाव विहरंति । महर्द्धिक यावत् विचरेछे । वेणुदालिय इत्थ सुवण्णकुमारिंदे सुवण्णकुमारराया णो परिवसंति । वेणुदालो इहां सुवर्णकुमार सुवर्णकुमारनामेराजा वसेछे । महड्ढिया सेसं जहा नागकुमाराणं एवं जहा सुवण्णकुमाराणं वत्तव्वया भणिया । महर्द्धिक शेष जिम नागकुमार इम जिम सुवर्णकुमारनी कहिणी कही । तहा सेसाणवि चउदसण्हं इंदाणं भाणियव्वं । ति

म शेष पिण चौदे इन्द्रनी वक्तव्यता । नवरं भवणाणत्तं इंदणाणत्तं वण्णाणत्तं परिहरणीयाणत्तं इमाइं गाहाइं अणुगंतव्वं । एतलोविशेष भवननीसंख्या जू इन्द्रप्रभानाम जू वर्णप्रधान जू वस्त्रपणे गाथेकरी समझवो ते कहेछे—चउसट्ठिय असुराणं चुलसीतहचेवहोइनागाण । बावत्तरीसुवण्णे वायकुमाराणछ णउए ॥ १ ॥ ६४ लाख भवन असुरकुमारना ८४ लाख भुवन नागकुमारना ७२ लाख सुवर्णकुमारना १०८ लाख वायुकुमारना ॥१॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणिणं छण्हंपिजुगलियाणं छावत्तरिमोसयसहस्सा ॥ २ ॥ १२ इद्रना एतले ६ युगलांका भवन ॥ २ ॥ चउतीसाचउचत्ता अट्ठतीसंचसयसहस्संच पण्णाचत्तालीसा दाहिणओहोंतिभवणाइं ॥ ३ ॥ चमरेन्द्र ३४ धरणेंद्र ४४ वेणुदेव हरिकन्त अग्निशिख पूर्ण ३८ शतसहस्र लक्ष जलकन्त अमित ५० वेलम्बक घोष ४० ४६००००० ॥३॥ तीसाचत्तालीसा चउतीसंचेवसयसहस्साइं छायालाछत्तीसा उत्तरओहोंतिभवणाइं ॥ ४ ॥ बलेंद्र ३० लाख भूतानेंद्र हरिस वेणुदाली ४० लाख अग्नि माणव बलिहा ३४ लाख जलप्रभ अमितवाहन ४६ लाख प्रभञ्जन महाघोष ३६ लाख उत्तरश्रेणिरा इन्द्रिरा भवन

---

जाणिवा ३६६००००० ॥ ४ ॥ चउसट्ठीसट्ठीखलु छच्चसहस्साइं असुरवज्जाणं सामाणियाउएए चउगुणा आयरक्खाओ ॥ ५ ॥ ६४ हजार चमरेंद्र ६० हजा र बलेंद्र ६ हजार धरणेंद्रादि एक असुरवर्जीने सामानिकथी चौगुणा करता आत्मरक्षकदेवता जाणिवा । ५ ॥ चमरधरणेतहवेणु देवहरिकंतअग्गि सीहेय पुण्णजलकंतेच अमियवेलंबयघोसेय । ६ ॥ चमरेंद्रे धरणेंद्रे जिम वेणुदेव हरिकन्त अग्निसीहा पूर्ण जलकन्त अमित वेलंम्बक घोषा १० इति द क्षिणश्रेणी । बलिए भूयाणिंदे वेणुदालि हरस्सिहे अग्गिमाणवेवसिट्ठे । बलेंद्रा भूतानेंद्र वेणुदाली हरियाह अग्निमाणव वसिष्ट । जलपह तह अमितवा हणि पभजणेय महाघोसे ओत्तरिल्लाणु जाव विहरंति । जलप्रभ अमितवाहन प्रभञ्जन महाघोष २० उत्तरदिशिना यावत् विचरेछे । काला असुरकुमा रा नागो उदहिय पांडुरादीवि । असुरकुमार काला नागकुमार ए बेय पांडुरा । पवरकणग निहसगोराहोंति । प्रवर सुवर्णवंसे कच्छोटिये जेहवो सुवर्ण । सुवण्णादिसाथणिया । सुवर्णकुमार दिग्गिकुमार स्तनितकुमार ३ । उत्तत्तकणयवण्णा विज्जुअगीयहुंतिदीवाय । सामापियगुवण्णा वाउकुमारामुणे

सासयवसणधरा होंतिसुवस्सादिसाथणिया ॥ ३ ॥ नीलाणुरागवसणा विज्जूअग्गीयहोंतिदीवाय । संज्झाणु रागवसणा वाउकुमारामुणेयव्वा ॥ ४ ॥ कहिणं भंते ! वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता , कहिणं भंते ! वाणमंतरा देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावि एगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरवाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं भोमेज्जा णगरा बाहिं वट्टा अंतो चउरंसा अहे पुक्करकन्नियासंठाणसंठिया उक्किन्नंतरविउलगंभीरखायफलिहा पागारट्टालयकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतसयग्घिमुसलमुसंठिपरिवारिया अउज्झा सया जया सया गुत्ता अडयालकुट्ठरइयअडयालकयवणमाला खेमा सिवा किंकरा मरदंडोवरक्खिया लाउल्लोइयमहिया गोसीयसरसरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उवचियचंदणकलसा चंदणघडसुकयतो

यव्वा ॥ १ ॥ तप्तासोना जेहवा विद्युत्कुमार अग्निकुमार दीपकुमार श्यामछे प्रियङ्गुनोपरे वायुकुमारनो वर्ण जाणिवो । कहिणंभंते वाउकुमारा वाणमंतराणं पज्जत्ता २ ण ठाणा प० । किहा वायुकुमार हेभगवन् वाणमन्तर पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते वाणमंतरा देवा परिवसंति । किहां हेभगवन् वाणमंतरदेव वसेछे । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पढवीए रयणमयस्स कडस्स जोयणसहस्स बाहल्लस्स । हेगौतम ए रत्नप्रभानो ऊपर लो रत्नमयकाण्ड योजनसहस्रने जाडपणें । उवरिं एगंजोयणसयं उग्गाहित्ता । ऊपर एकयोजन थत उगाहीने । हिट्ठाएगंजोयण सयंवज्जित्ता । हेठे ए कसोयोजन अवकाशछे । मज्झे अट्ठजोयणसएसु । मांहि विचे ८०० योजन । एत्थण वाणमंतराण देवाण तिरियमसंखिज्जा । इहां वाणमंतर तिरछा असंख्यातगुणां । भोमिज्जानगरावाससयसहस्साहवंतीतिमक्खायं । भूमि रूहनीपरे नगरना लाखागमे अरिहंते कह्यो । तेणं भोमिज्जानगरा बाहिंवट्टा

॥ टीका ॥

वसना वायुकुमाराः संख्यानुरागवसना वानमंतरसूत्रे तिसुविलोगस्सअसंखेज्जइभागे इति ॥ स्वस्थानोपपातसमुद्घातरूपेषु त्रिष्वपि स्थानेषु लोक स्या सङ्ख्येयभागे वक्तव्यानि तथा नुयगवयणोमहाकाया महोरगाः किं विशिष्टाः ते इत्याह-नुजगपतयः गन्धर्वगणा गन्धर्वसमुदायाः किं विशिष्टा स्ते इत्यादि-निपुणगन्धर्वगीतरतयो निपुणाः परमकौशलोपेता येगन्धर्वजातीया देवा स्तेषां यद्गीतं तत्र रतिर्येषां ते तथा एते व्यन्तराणाम ष्टौ

॥ मूल ॥

रणपरिक्खित्तवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवन्नसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोव यारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधधूसाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टीभूया अच्छ रगणसंघविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपल्लादिया पडागमालाउलाभिरामा सव्वरयणमया अच्छा सण्हा लठा घठा मठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणि

॥ भाषा ॥

अंतोचउरंसा । ते नगर बाहिर वाटला मांहि चौरंसा । अहे पुक्खरकण्णियाणं संठाणसंठिया । नीचे कमलनी कर्णिकाने आकारे । उत्कृष्टंतर विउलगं भीरक्खाय फलिहा पागारट्टालय कवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा । उत्कीर्ण विचे पिहुलो गम्भीर फिटकमयो प्राकार ऊपर कपाठ तोरण द्वार मोटा तेहमा नाम्हाद्वार । जंतस मयंधि मुसले मुसंढिपरियरिया । कूडोदेशभाग मुसलप्रहरणादिकें परिवेष्टितछै । अयोभिसया जयासया गुत्ता अडयालकट्ट गरइया अडयाल कयवणमाला खमासवा किंकरा मरदंडावरक्खिया । सांहमा देखवा समर्थनहो सदा जोपछै सदा गुप्त ४८ देशीभाषायें प्रसंसाना वचन ४८ भेदेंकरी फूलमाला कल्याणकारी उपद्रवविना किङ्कर भूतजदेवता तेणें राख्याछै घर । लाउल्लोइयमहिया गोसीसरत्तचंदण दद्दरदिन्न पंचां गुलितला उवचिय चंदणकलसा । ४८ भेदेंकरी फूलमाला कल्याणकारी उपद्रवविना किङ्करभूत जेदेवता तेणें राख्याछै लीप्य छै मणादिकनीपरे महा गोशीर्ष रक्तचन्दने दर्दर दीधाछै पञ्च गुलीनाहाथ उपचित थाप्याछै चन्दनकलशा । चंदणकय तोरण पडिदुवारदेसभागा । चन्दनकलशे करी शोभन कीधीछै । आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय मल्लदामकलावा । आसत्तो सप्तभूमि ऊपर वांध्या विपुलविस्तीर्ण दामना कला । पंचवण्ण सरससुरभिमुक

॥ टीका ॥

मूलभेदा इमे चान्ये ऽवान्तरभेदा अष्टौ ॥ अणपन्निय इत्यादि ॥ कथं भूता एते षोडशोपि त्यत आह-चलचलचपलचित्तक्रीलणदवप्पिया चञ्चला अनवस्थितचित्ता स्तथा चलचपलम तिशयेन चपलं य क्रीडनं यश्च चित्तेद्रव्यः परिहास स्तौ प्रियौ येषां ते चलचपलचित्तक्रीडनदूवप्रियाः ततश्चञ्चल शब्देन विशेषणसमासः तथा गहिरहसियगीयणच्चणरतो ॥ गम्भीरेषु हसतिगीतनर्तनेषु रति र्येषां ते तथा ॥ वणमालामेलमउलकुंडलसच्छदविउव्वियाभरणचारुभूसणधराइति ॥ वनमालामयानि यानि आमेलमुकुटकुण्डलानि आमेलइति ॥ आपीडशब्दस्य प्राकृतलक्षणवशतः आपीडः शेखरकः

॥ मूल ॥

जा अजिरूवा पज्जिरूवा एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे वाणमंतरा देवा परिवसंति तंजहा-पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किन्नरा किं पुरिसा भुयगवतिणोय महाकाया गंधव्वगणा य निउणगंधव्वगीतरइणो अणवत्थियपणवन्तियइसिवा

॥ भाषा ॥

पुरुष पुंजोवयारकलियार । ए पांच वर्ण सरस सुगन्ध मूक्या पूजनीक कलो ए परिवड्या । कालागुरु पवरकुंदरुक्क तुरुक्कडज्झंत धूम घनघंत गंधउया भिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया । कालागर पवरप्रधान कुन्दरुक्ख तुरक सेल्हारसेंकरी मघमघात्मान सुगन्ध तिणेंकरी गन्धनी बाट हुइछे । अच्छार गणसंघ संकिण्णा दिव्वतुडिय सद्दसपण्णइया । अप्सरानासमूहनीये करीसहित । पडागजालाउलाभिरामा सव्व रयणामया अत्थासणा । मद्दङ्गा दि साम्मलता मनोहरशब्द सर्व रत्नमय आछाछे । घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया । घट्याछे मठारयाछे नीरज निर्मल निष्प्रकम्प निष्कण्टक प्रभासहित । सप्पहा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । सद्योत दर्शनीकछे देखवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप । एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पं० । इणां वाणव्यन्तर देवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसुविलोगस्स असंखिज्जइ भागे । तीने बोललोकने असंख्यातमेंभागे हुवे । तत्थणं बहवे वाणमंतरादेवा परिवसंति तं० । तिहां घणां वाणव्यन्तर देवता वसेछे तेकहेछे—पिसाया भूया जक्खा रक्खसा किन्नरा किंपुरसा भुयगवयणो महाकाया । पिशाच भूत यक्ष राक्षस किन्नर किंपुरुष भुजपति महोरग महाकन्त । गंधव्व गणाय

॥ टीका ।

तथा स्वच्छन्द विकुर्वितानि यानि २ आभरणानि तै र्यत् चारुभूषणं मण्डनं तद्धरंतीति वनमालापीनमुकुटकुण्डल स्वच्छन्दविकुर्विताभरणचारुभूषणधराः तथा सर्वर्तुकैः सर्वर्तुभाविभिः सुरभिकुसुमैः सुरचिताः सुष्ठु निर्वर्तिताः तथा प्रलम्बते इति प्रलम्बाः शोभते इति शोभमानाः कान्ताः कमनीया विकसन्तो अमुकुलिता स्नानपुष्पमयीचित्रा नानाप्रकारावनमाला रचिता वक्षसि यैस्ते सर्वर्तुकसुरभिकुसुमरचितप्रलंबशोभमानकांतविकसच्चित्रवनमालारचितवक्षसः तथा कामं स्वेच्छया गमो येषां ते कामगमाः स्वेच्छाचारिणः क्वचित्कामकामाइतिपाठः तत्र कामेन स्वेच्छया कामो मैथुनसेवा येषान्ते कामकामा ॥ अनियतकामा इत्यर्थः ॥ तथा कामं स्वेच्छया रूपं येषान्ते कामरूपा स्ते च ते देहा श्च कामरूपदेहा स्तान् धरन्ती त्येवं शीलाः कामरूपदेहधारिणः स्वेच्छाविकुर्वितनानारूपदेहधारिण इत्यर्थः तथा नानाविधै र्वर्णै रागो रक्तता येषां तानि नानाविधवर्णरागाणि वराणि प्रधानानि चित्राणि नानाविधानि अद्भुतानि वा चिल्लगानि देशीवचनात्, देदीप्यमानानि नियंसणाणि परिधानानि येषां ते नानाविधवर्ण रागवरवस्त्रचिल्लकनिवसनाः तथा विविधै र्देशीनेपथ्यै गृहीतो वेषो यै स्ते विविधदेशीनेपथ्यगृहीतवेषाः तथा समुइयकन्दप्पकलहकेलि कोलाहलप्रियाइति कंदर्पः कामोद्दीपनं चेष्टा च कलहो राटी केलिः क्रीडा कोलाहलो बोलः कंदर्पकलहकेलिकौलाहलः प्रिया येषां ते कंदर्पकल

॥ मूल ॥

इयन्नूयवाइय कंदिय महाकंदिय कोहंडपयंगदेवा चवलचवलचित्तकीलणदवप्पिया गहिरहसियपियागीयणि
च्चरती वणमालामेलमउलकुंडलसच्छंदविउव्वियाभरणचारुभूसणधरा सव्वोयसुरभिकुसुमसुरइयपलंबसोहंत

॥ भाषा ॥

निउणगीतरइणो । गन्धर्वगण समुदाय निपुण गधर्वनेविषै गीत रतिनो । अणवन्निय पणवन्तिय इसवाइय भूयवाइय कंदिय महाकंदियाय कुहंडे पयगदेवा चंचलचलचवलचित्त कीजणदवप्पिया । अणपन्नो पणपन्नो ऋषिवादी भूतवादी कन्दी महाकन्दी कोहंडी पतक १७ एहवैनामै चंचल विसस्थल छै क्रीडारामनेविषै । गहिरह सियपिय गीयनच्चणरइ । गहिरगम्भीर प्रियगीत नृत्यविषै रुचिछै । वणमालामेलमउल कुंडल सच्छंद विउव्विया भरण चारुभूषणधरा सव्वोयसुरहिकुसुम पलंबसोहंतकंत विहसंतिचित्त वणमालरइयथा । वनमालेकरी मस्तक सोभछै पोतानी छायायें विकुर्व्याछै आभरण

॥ टीका ॥

हकेलिकोलाहलप्रियाः ततः समुदितशब्देन सह विशेषणसमासः ॥ हासबोलबहुलाइति ॥ हासबोलौ बहुलाव तिप्रभूतौ असिमुद्गरशक्तिकुंता हस्ते येषांतेहासबोलबहुलाः तथा ॥ असिमुद्गरशक्तिकुन्ताहस्ताः ॥ अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तचित्तचिन्धगयाइति ॥ मणय चन्द्रकान्ताद्याः रत्नानि कर्कतनादीनि अनेकै मंणिरत्नै विविधं नानाप्रकारं नियुक्तानि चित्राणि नानाप्रकाराणि चिह्नानि गतानि स्थितानि येषां ते तथा शेषं सुगम नवरं कालेयमहाकाले इत्यादि॥ दक्षिणोत्तराणां पिशाचानां यथाक्रममिन्द्रौ कालमहाकालौ भूतानां सुरूपप्रतिरूपौ यक्षाणां पूर्णभद्रमाणिभद्रौ रा क्षसां भीममहाभीमौ किन्नराणां किन्नरकिंपुरुषौ किंपुरुषाणां सत्पुरुषमहापुरुषौ महोरगाणाम तिकायमहाकायौ गन्धर्वाणां गीतरतिगीतयशसौ ज्योतिष्कसूत्रे अट्ठकविठगसंठाणसंठियाइं अट्ठं कपित्थस्या ष्टकपित्थं तस्य संस्थानं तेन संस्थितानि अत्रा क्षेपपरिहारौ चन्द्रप्रज्ञप्टिटीकायां चाभि हितावितिततो वधार्यौ सव्वफालियामया इति सर्वात्मना स्फटिकमयानि तथा अच्युद्गता आभिमुख्येनसर्वतोविनिर्गता उत्सृता प्रबलतया सर्वासु

॥ मूल ॥

कंतवियसियचित्तवन्नमालरइयवच्छा कामकामा कामरूवदेहधरा नाणाविहवन्नरागवरवच्छलंलतचित्तचिल्ल गणियवसणा विविहदेसिनेवत्थगहियवेसा समुइयकंदप्पकलहकेलिकोलाहलप्पिया हासा बोलबहुला असि मोग्गरसत्तिकुंतहत्था अणेगमणिरयणविविहनिजुत्तविचित्तचिंधगयासुरूवा महिड्ढिया महज्जुतिया महायसा

॥ भाषा ॥

चारु मनोहरभूषण धराछै सुरभिफूल प्रलम्ब लहिकता शोभता कमनीय विकसित नानाप्रकारनो विभूषारचना कीधीछै। कामकक्षा कामरूवदेह धारी णाणाविहवण्णरागवत्थचिल्लग विचित्तरूवगा नियंसणा विविहदेसे नेवत्थगहियावासा। हीयाविषे कामातुरथकै देहधारी अनेकविध विचित्तरू पना चित्ररूप अनेकदेशनो पहिरखना ग्रह्याछै वेश जेणें। कंदप्पकेलिकोलाहलप्पिया हासबोलबहला। प्रमुदित हर्ष पांमीछै कन्दर्पचेष्टा क्रीडा को लाहल प्रियछै हासना बोल बहुलछै। असिमुसत्तिकुंतहत्था। असिखड्गछै हाथनेविषे। अणेगमणिरयणविविहनिजुत्ति विचित्तविवहगया सुरूवा। अनेक मणिरत्न विविध विचित्रसहित चिन्हछै सुरूपछै। महड्ढिया महज्जुइया महायसा महाबला महाणुभागा महासुक्खा हारविराइयवक्खा। म

॥ मूल ॥

महावला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगयकुंडलमट्ठगंडजुयलक
सपीठधारी विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलीकल्लाणगपवरवत्थपरिहया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणध
रा भासुरबोंदी पलंबवणमालधरा दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्व संघाणेणं दिव्वाए इ
द्धीए दिव्वाए जूईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेस्साए दसदि
साओ उज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ भोमेज्जाणगरावाससयसहस्सा असंखिज्जाणं साणं २
सामाणियसाहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सपरिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिव

॥ भाषा ॥

ऋद्धिकवन्त मोटीद्युति महायश महाबल महाभाग्य महासुखी हारेकरी शोभितछे हीयो। कडयतुडियथंभियभुया आयकुंडलमकुगडतलकणपीठधारी।
कडा बहिरखा तिणें थम्भीने भुजा अंगद बाहुग्रीवाभरण विशेष कुंडल गाल पीठनेविषे। विचित्तहत्थाभरणा विचित्तमालामउलि कल्लाणगपवरवत्थप
रिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरा भासुरबोंदिपलंबवणमालधरा विचित्तहाथनाभरणछे। विचित्तमाला मुकुटछे मङ्गलीक वस्त्र पहिराछे तथा मंग
लीक लेपनधाराछे जेहने देदिप्यमान माला धारीछे। दिव्वेणं दिव्वेण गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेण दिव्वेणं संठाणेणं। देवसंबंधी दिव्य
गंधकरी दिव्य स्पर्शेकरी दिव्य संघयणेकरी दिव्य संस्थानेकरी। दिव्वाएइड्ढीए दिव्वाएपहाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अर्चीए। दिव्य ऋद्धीकरी दिव्य
प्रभाकरी दिव्य छायायेंकरी दिव्य किरणेंकरी। दिव्वेण तेएण दिव्वाएलेस्साए दसदिसाओ उज्जोएमाणा पभासेमाणा। दिव्य तेजेकरी दिव्य लेश्यायें
करी दशदिशा उद्योतकरताथकां रहे। तेणं तत्थ साणं २ भोमिज्जनगरा वाससयसहस्साणं। ते तिहां आप आपणा भूमि नगरना लाख गमेकरी। सा
णं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं साण २ परिसाण साण २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवइणं। आपआपणा सामानिक सहस्रेंकरी।
आपआपणां अग्रमहिषीयेंकरी आपआपणां पर्षदायेंकरी आपआपणां अनीकेकरी आप आपणें अनीकाधिपतियेंकरी। आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसि

ईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलताल तुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति कहिणं भंते ! पिसायाणं देवाणं पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! पिसायादेवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्सकंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरिएगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा भवंतीति मक्खायं तेणं भोमेज्जा नगरावाहिं बहा जहाणहिंभवणवण्णओ तहा भाणियव्वो जाव पडिरू

चबहुण बाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्च सामित्त भट्टित्तं महत्तरगत्तं । आपणो आत्मरक्षकदेवने सहस्रेकरी अनेरा घणां वाणव्यन्तर ना देवता देवी अधिपतिपणें पौरपपणों स्वामीपणों धारता बडाईपणें। आणाईसर सेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा । आज्ञा ईश्वरपणें धारता करावता पालता । महयाहय नट्टगीयवाईय तंतीतलताल तुडिय घणमुयंग पडुप्पवाईयरवेणं । मोटाबाजा नृत्य गीत वाजित्र तबो ताल त्रुटित बाजित्रविशेष पडहने शब्देंकरी । दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति । देवताना भोगभोगवता विचरेछे । कहिणभंते पिसायाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठा० पं० । किहां हेभगवन् पिशाचदेवता वसेछे पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणभंते पिसायादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् पिशाचदेवता वसेछे। गोयमा इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स । हेगौतम ए रत्नप्रभा पृथिवीये रत्नमयकांड योजनसहस्र जाडो छै । एगंजोयणसयं उग्गाहित्ता । तेहमांहि एकयोजन शत अवगाहीने । हिट्ठा एगंजोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु । हेठे एकसो योजन वर्जीने मांहि आठसोयोजन इहां । एत्थणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भोमिज्जानयरावाससयसहस्सा हवंतित्तिमक्खायं । पिशाचदेवतारा घर

॥ मूल ॥

वा, एत्थणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे पिसाया परिवसंति महड्ढिया जहा उहिया जाव विहरंति, काला महाकाला इत्थ दुवे पिसाया इंदा पिसायरायाणो परिवसंति, महड्ढिया महाजुइया जाव विहरंति। कहिणं भंते! दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं ठाणा पन्नत्ता। कहिणं भंते! दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति? गोयमा! जंबूद्दीवे २ मंदरस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्ला उवरि एगं जोयणसयं उग्गाहित्ता हिट्ठावेगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु एत्थणं दाहिणिल्लाणं पि

॥ भाषा ॥

के तिरछा असंख्याता मुहरामीपरे नगर तेहना लाखागमें तीर्थंकरे कह्या। तेणंभोमेज्जानयराबाहिंवट्टा एवं जहाओहियभवणवत्तव्वया तहा भाणियव्वा जाव पडिरूवा। तेभुतण नगर केहवाके बाहिर बाटलाकारे इम जिम ओघनोसूत्र जिमकह्यो तिम कहावणो यावत् प्रतिरूप। एत्थणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्ताणं ठा० पं०। इहां पिशाच देवो देवना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे। तीने बोलेलोकने असंख्यातमें भागे हुवे। तत्थण बहवे पिसायादेवा परिवसंति। तिहां घणां पिशाचदेवता बसेछे। महड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति। मोटीऋद्धि जिम ओघनोआलावो यावत् विचरे। काले महाकालेय इत्थदुवे पिसायरायाणो परिवसति। कालेवर्णे महाकालनामे इहां दोय पिशाचनामे राजा बसेछे। महड्ढिया जाव विहरंति। महर्द्धिक यावत् विचरे। कहिणंभंते दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठा० पं०। किहां हेभगवन् दक्षिणना पिशाच पर्याप्ता अपर्याप्तामा ठामकह्या। कहिणंभंते दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति। किहां हेभगवन् दक्षिणनापिशाच देवता बसेछे। गोयमा जंबूद्दीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं। जंबूद्दीपनामे द्वीपमांहि मेरूपर्वत दक्षिणपासे। इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए रयणमयस्सकांडस्स जोयणसहस्स बाहल्लस्स। ए रत्नप्रभानामे पृथिवीविषे रत्नमय कांडनो योजनसहस्र जाडपणो मांहि। उवरिं एगंजोयणसयं उग्गाहित्ता। जपरिलो एकसोयं ज

॥ मूल ॥

सायाणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं भवणा जहा ओहिअ भवणवत्तव्वया तहेव भाणियव्वो जाव पडिरूवा एत्थणं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला पिसाया देवा परिवसंति महड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति काले जत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसंति महड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भोमेज्जा णगरावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आय

॥ भाषा ॥

नउगाहीने। हिट्ठाएगजोयणसय वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु। हेठे एकसोयोजन वर्जीने मध्ये आठसोयोजन विषै। एत्थणं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जाणं। इहां दक्षिणना पिशाचदेवताना तिरछादिशें असंख्याता। भोमेज्जानयरावाससयसहस्सा हवतित्तिमक्खाय। भौमता नगरना लाखगमें कह्या वीतरागे। तेणं भवणा जहा ओहियभवणवत्तव्वया तहा भाणि० जाव पडिरूवा। तेभवन जिम ओघनो आलावो तिम कहवो यावत् प्रतिरूप। एत्थणं दाहिणिल्लाणं पिसायाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०। इहां दक्षिणदिशिना पिशाचदेवता पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कह्या। तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभागे। तीने बोललोकने असंख्यातमेभागे। तत्थणं बहवे दाहिणिल्ला पिसायादेवा परिवसंति। इहां घणां दक्षिणना पिशाचदेवता वसेछे। महड्ढिया जहा ओहिया जाव विहरंति। महर्द्धिक जिम ओघनो आलावो तिम। कालेय इत्थ पिसाइंदे पिसायरायाणो परिवसंति। कालेनामे पिचाचनो इन्द्र राजापणें वसेछे। महड्ढिए जाव पभासेमाणे। महर्द्धिक यावत् प्रभासहित। सेणं तत्थ तिरियमसंखेज्जाणं भोमेज्जानगरावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं। ते तिहां तिरछालोक असंख्याता भौमनगरवाससहस्र लाखागमें हुवे चारहजार सामानिक देवतासहित चारहजार अग्रमहिषीयें सपरिवारें। तिण परिसाणं सत्तण्ह अणियाण सत्तण्हं अणि

॥ मूल ॥

रक्कदेवसाहस्सीणं अब्भंतरिंच बहूणं दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं देवाणयदेवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति। उत्तरिल्लाणं पुच्छा गो० ! जहेव दाहिणिल्लाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणंपि नवरं मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं महाकाले जत्थ पिसायइंदे पिसायराया परिवसंति जाव विहरंति एवं जहा पिसायाणं तहा भूयाणंपि जाव गंधव्वाणं नवरं इंदेसु नाणत्तं नाणियव्वं इमेणंपि विहिणा भूयाणं सुरूवपडिरूवा जक्खाणं पुण्णभद्द माणिभद्द रक्कसाणं भीममहाभीमा किन्नराणं किन्नरकिंपुरुसा किंपुरिसाणं सप्पुरिसमहापुरिसा महोरगाणं अइकायमहाकाया गंधव्वाणं गीतरईगीतजसा जावगीयजसे विहरति—कालेयमहाकाले सुरूवपडि

॥ भाषा ॥

याहिवइणं। तीन परिषदा ७ अनीकेकरी ७ अनीकाधिपतिकरी। सोलसण्हं आयरक्ख देवसाहस्सीणं अब्भंतरिंच बहूणं दाहिणिल्लाणं वाणमंतराणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति। सोलहजार आत्मरक्षकेकरी और घणां दक्षिणदिशिना वाणमंतर देवता देवी अधिपति पौरपति यावत् विचरे। उत्तरिल्लाणं पुच्छा। उत्तरदिशिनो प्रश्न। गोयमा जहेव दाहिणिल्लाणं वत्तव्वया तहेव उत्तरिल्लाणंवि भाणि०। हेगौतम जिम दक्षिणदिशिनो कह्यो तिम उत्तरदिशिनो विशेष कहवो। नवरं मंदरस्स उत्तरेणं महाकालेय। एतलो मेरुने उत्तरपासे महाकालनामे इन्द्र। इत्थ पिसाइंदे पिसायराया परिवसंति सेसंतंचेव जाव विहरंति। पिशाचनोराजा तिहां बसेछे तिम शेष जाणवो। एव जहापिसायाण तहा भूयाणंपि भाणि०। इम जिम पिशाचने तिम भूतनेन्द्रने। जाव गंधव्वाणंवि भा०। यावत् आठमो गंधर्वनिकायलगे कहिये। नवरं इंदेसु णाणत्तं भाणियव्वं। एतलोविशेष इन्द्रनानामतो विशेष कहिवो। इमेणं विहिणाभूयाणं सुरूवपडिरूवा। इणे विधेकरी भूतने स्वरूप प्रतिरूप। जक्खाणं पुण्णभद्द माणभद्दाण भीम महाभीमा। यक्षनिकायें पूर्णभद्र मानभद्र, २ राक्षसने भीम महाभीम २। किन्नराणं किंपुरुसा। किन्नर किंपुरुष ४,। किंपुरुसाणं सप्पुरिस महापुरिसा। किंपुरिषने सपुरुष महापुरुष, २। महोरगाणं अइकाय महाकाय। महोरगने अतिकाय महाकाय, २। गंधव्वाणं गीयरइ गीयजसा २। गन्धर्वने गी

॥ मूल ॥

रूवपुण्णभद्दे य । अमरवइमाणभद्दे भोमेयतहामहाभीमे ॥ १ ॥ किन्नरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहामहा पुरिसे । अइकाएमहाकाए गीयरतिचेवगीयजसे ॥२॥ विहरति कहिणं भंते ! अणवन्नियाणं देवाणं ठा णा पं० । कहिणं भंते ! अणवन्निया देवा परिवसंति गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयणसहस्सबाहल्लस्स उवरि हिट्ठायएगं जोयणसयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयणसएसु अत्थ णं अणवन्नियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा भवणा वाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेण जाव पडिरूवा एत्थणं अणवन्निया देवाणं ठाणा पं० । उववाएणं समुग्घाएणं सठाणेणंतो तत्थणं अणवन्निया देवा परिवसंति महिड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति सन्निहियसामाणा इच्छ दुवे अणवन्निंदा अणवन्नि

---

तरति गीतयश । जाव गीयजसा विहरंति गाहा । यावत् गीतयश विहरै गाथा—कालेयमहाकाले सुरूवपडिरूवमाणभद्दे य अमरवतिमाणभद्दे भीमेय तहामहाभीमे ॥ १ ॥ काल महाकाल सुरूप प्रतिरूप पूर्णभद्र अमरपति माणभद्र भीम तिम महाभीम ८ ॥ १ ॥ किंनरकिंपुरिसेखलु सप्पुरिसेखलुतहा महापुरिसे अइकायमहाकाए गीयरईचेवगीयजसे ॥२॥ किन्नर किंपुरुष निश्चै सत्यपुरुष तिम महापुरुष अतिकाय महाकाय गीतरति गीतयश १५ ॥२॥ कहिणंभंते अणपन्नियाणं देवाणं पन्नत्ता २ ण ठा० पं० । किहां हेभगवन् अनेरा व्यन्तरना देवताना ठामकह्या । कहिणं भंते अणवन्तियादेवा परिवस ति । किहां हेभगवन् अनेरा व्यन्तर किहां वसै । गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पृढवीए रयणामयस्सकंडस्स जोयणसयस्स बाहल्लस्स । हेगौतम ए रत्न प्रभापृथिवीने रत्नमयकांड योजनसहस्र जाडपणे । उवरिं जाव अट्ठसु जोयणसएसु । ऊपरला अडुगतयोजन छांडीने तेमांहि १०० योजन अवकाश । एत्थणं अणपन्नियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जाणगरावाससयसहस्सा हवंतित्ति मक्खायं तेणं जाव पडिरूवा । ममांहि इहां अनेरा व्यन्तरदेवता तिरछा असंख्याता भूहरानोपरे नगर लाखेगमा कह्या तीर्थंकरे यावत् प्रतिरूप विहरै । एत्थणं अणवण्णियाणं देवाणं पन्नत्ता २ णं ठाणा पं० । इहां अनेरा व्य

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

य कुमाररायाणो परिवसंति महड्ढिया जहा कालमहाकाला एवं जहा कालमहाकालाणं दोण्हंपि दाहिणिल्लाणं उत्तरिल्लाणय भणिया तहा संनिहियसामाणाणंपि भाणियव्वा संग्गहणि गाहा—अणवन्नियपणवन्नि य इसिवाइयभूयवाइएचेव। कंदियमहाकंदिय कुहंडपयंगदेवाय। इमे इंदा—संनिहियासामाणा धाइविधाए यइसीयइसिबाले ईस्सरमहेस्सरेविय हवइसुवत्थविसालेय॥१॥ हासेहासरईविय सेएयभवेतहामहासेए पयगेप यगपएविज नेयव्वाआणुपुव्वीए ॥ २ ॥ कहिणं भंते ! जोइसियाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठाणा पन्नत्ता ? कहिणं

॥ भाषा ॥

स्तरना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीन बाललोकने असंख्यातमेंभागेहुवे । तत्थणं बहव अणवण्णिया देवा प रिवसंति महड्ढिया जहा पिसाया जाव विहरंति । तिहां घणां अनेरा व्यन्तरीक देवता बसेछे महर्द्धिक जिम पिशाच तिम विचरेछे । सन्निहिय सा माणिय इत्थ अणवण्णेंदा अणवण्णियकुमाररायाणो परिवसंति । सन्निहित सामानिक ए बेइन्द्र अने राजा वसेछै । महड्ढिया जहा काल महाकाला एवं जहा काल महाकाला । महर्द्धिक जिमकाल महाकालनोपरे बेहो उत्तरदक्षिणकह्या । एवं जहा दुण्हंपि दाहिणिल्लाण उत्तराणिय भाणिय व्वो । इम जिम सन्निहित सामानिक दक्षिणसबंधी उत्तरसबंधी कह्या । तहा सन्निहिय सामाणियाणंपि भाणियव्वं । तिम सन्निहित सामानिक भ णिवा ते प्रमाणे सामानिक जाणवा । इमा संघयण गाहा । ए संघयण गाथाकहिये । अणवण्णियपणवण्णिय इसिवाइयभूयवाइयाचेव । कंदियमहाकंदि य कुसंडपवइयादेवा ॥ १ ॥ अणपन्नो पणपन्नो ऋषिवादी भूतवादी तिमे कदी महाकन्दी कोहण्डो पतकट ए देवताना इन्द्र कहेछै—इमेइंदा । सन्नि हिएसामाणिए धाइविधाइयतहवइसिवाले इसरमहेसरेविय हवईसुवत्थेविसालेय ॥२॥ सन्निहित सामानिक धाता बिधाता तिम ऋषि ऋषिपाल ई श्वर महेश्वर हवे सुवत्स विशाल १० । हासेहासरईविय सेएयभवेतहामहासेए पयगेपयगपएविय नायव्वाआणुपुव्वीए ॥ १ ॥ हास्य हास्यरति श्वेत हवे तिम महाश्वेत पतक पतकापत ए १६ इन्द्रअनुक्रमे। कहिणं भंते जोइसियाणं देवाणं पज्जत्ताणं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् ज्योतिषीदेवताना ठा

दिशु प्रसृता याः प्रभा दीप्तिस्तया सितानि धवलानि अभ्युद्गतोत्सृतप्रभासितानि, तथा विविधानां मणिकनकरत्नानां या नक्तयो विच्छित्तिविशेषा स्तानि चित्राणि आश्चर्यभूतानि विविधमणिकनकनक्तिचित्राणि॥ वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिया वातोद्धूता वायुकम्पिता विजयोदय स्तत्संसूचिका वैजयंत्यभिधाना याः पताका अथवा विजयइति वैजयंतीनां पार्श्वकर्णिका उच्यते तत्प्रधाना वैजयंत्यः पताका स्ता एव विजयवैजयंत्यः पताकाः छत्रातिछत्राणि उपर्युपरि स्थितानि छत्राणि तैः कलितानि वातोद्धूतविजयवैजयंतीपताकाछत्रातिछत्रकलितानि तुङ्गानि उन्नानि तथा गगनतलमं बरतलं अनुलिखन् अभिलङ्घयन् शिखरं येषां तानि गगनतलानुलिखच्छिखराणि तथा जालानि जालकानि तानि च न

॥ टीका ॥

नंते! जोइसिया परिवसंति? गो०! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तणउए जोयणसए उड्ढं उप्पइत्ता दसुत्तरं जोयणसयं बाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोइसविसए एत्थणं जोइसियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा अद्धकविट्ठगसंठाणसंठिया सव्वफालियामया अब्भुग्गयमुसियपहसियाइव विविहमणिकणगरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुत

॥ मूल ॥

मक्खा। कहिणं भंते जोइसिया देवा परिवसंति। किम हेभगवन् ज्योतिषोदेवता वसंछे। गोयमा इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्तनउएजोयणसएउड्ढं उपइत्ता। हेगौतम ए रत्नप्रभापृथिवीथकी घणो रमणीक भूमिभागछे तेहथकी सातसै नेऊयोजन ऊंचाछे। दसुत्तरजोयणसएणं बाहल्ले तिरियमसंखिज्जे जोइसिविसए पं०। ते तिहां ११० योजनमांहि थिका असंख्याता ज्योतिषीना वासाकह्या। एत्थणं जोइसियाणं देवाणं तिरियमसंखिज्जा जोइसियविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं। इहां ज्योतिषीदेवना तिरछा असंख्याताना ज्योतिषीनाविमान लाखांगमे तीर्थंकरे कह्यो। तेण विमाणा अद्धकविट्ठगसंठाणसंठियाणं सव्व फलिहमया। तेहनांविमांन अर्द्धकोठ संस्थान संस्थितछे सर्वफटिक रत्नमयछे तथा। अब्भुग्गहयमुसियपहसियाइव विविहमणि कणगरयण भत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागा। आसीकर्ण विनिर्गत प्रवर सघलो दिशिसंबंधीछे दीप्ति

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वनजिनिक्तिषु लोके प्रतीतानि तदन्तरेषु विशिष्टशोभितानि विचित्ररत्नानि यथा तानि तथा पञ्जरात् उन्मीलितमिव बहिष्कृतमिवपञ्जरोन्मीलितवत् तथाहि किल किमपि वस्तु पञ्जरात् वंशादिमयप्रच्छादनविशेषात् बहिष्कृतमत्यन्ताविनष्टच्छायत्वात् शोभते तथा तान्यपि विमानानीति भावः, तथा मणिकनकानां सम्बधिनी स्तूपिका शिखरं येषां तानि मणिकनकस्तूपिकाकानि ततः पूर्वपदाभ्यां सह विशेषणसमासः, तथाविकसितानि यानि शतपत्राणि पौण्डरीकानि च द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन स्थितानि तिलका श्च त्रिस्यादिषु पुंड्राणि रत्नमया श्चा र्द्धचंद्राद्वारादिषु तैश्चित्राणि विकसितशतपत्रपुंड्रीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्राणि, तथा नानामणिमयीनि दामानि रलंकृतानि नानामणिमयदामालंकृतानि, तथा अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णानि मसृणानि तथा तपनीयं सुवर्णविशेष स्तन्मय्या रुचिरायां वालुकायाः प्रस्तटः प्रसरो येषु तानि तपनीयरुचिरवालुकाप्रस्त

॥ मूल ॥

विजयवेजयंतीपडागाछत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगनतलमहिलंघमाणसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मीलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयपत्तपोंडरीया तिलगरयणड्ढचंदचित्ता नानामणिमयदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जरुइलवालुया पच्चडा सुहफासा ससिरीयरूवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा

॥ भाषा ॥

तेणेकरी धवलीप्रभा विस्तरीछे सघले अनेक मणिकणकना रत्नना आश्चर्यकारी भीतें चित्रांम जेहते वायें प्रेरी इलावी विजय अभ्युदय तेहनी कर तार विजय वैजयंती पार्श्वकार्श्वकानामे पताकाछे तिहां। छत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगणतल मभिलंघमाणसिहरा जालंतर रयणपंजरुम्मिलियव्व मणिकणगथूभियागा। छत्र ऊपर छत्रसहितछे ऊंचा गगनतल लघता एहवा ऊंचा शिखरछे जेहना तथा जालांतर पांजरा बांधनीजालो मणिमय गवाक्ष। वियसियसयवत्त पौंडरीया तिलयरयणचंदलित्ता नाणामणिमयदामालंकिया। विकस्या शतपत्रमरीखी भीतछे जिहां तिलकरत्न अर्द्धचंद्राकार हारे एहवा चित्रामछे जिहां अनेकमणिमय अलंकृतछे चित्रामछे जिहां अनेक अलङ्कृतछे मांहि। अंतोबाहिंच सण्हा। बाहिर सुकमालछे। तवणिज्जइ इलवालुया पत्थडा सुहफासा सरिसरीया सुरूवा पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। तपनीय-सोनामीपरे मनोहर प्रतर

॥ टीका ॥

टानि तथा सुखस्पर्शानि शुभस्पर्शानि वा शेषं प्राग्वत् यावत् वहस्सईचंदा ॥ बृहस्पतिचंद्रसूर्यशुक्रशनैश्चरराहुधूमकेतुबुधांगारकाः कथंभूता इत्याह-तप्ततपनीयकनकवर्णा ईषद्रक्तवर्णाः तथा ये ग्रहा उक्तव्यतिरिक्ता ज्योतिष्के ज्योतिश्चक्रे चारं चरंति केतवो ये च गतिरतिका ये चाष्टाविंशतिविधा नक्षत्रा देवगणा स्ते सर्वेपि नानासंस्थानसंस्थिताश्च चशब्दात्तप्ततपनीयकनकवर्णाः तारकाः पञ्चवर्णाः एते च सर्वेपि स्थितलेश्या अवस्थिततेजोलेश्याका स्तथा ये चारिण श्चारस्ता स्ते अविश्राममण्डलगतिका स्तथा सर्वेपि प्रत्येकं नामांकेन स्व २ नामांकेन प्रकटितं चिह्नं

॥ मूल ॥

पण्हिरूवा एत्थणं जोइसियाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०, तिसुविलोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे जोइसिया देवा परिवसंति तं०-वहस्सईचंदासूरासुक्कासणिच्छरारांहूधूमकेतुबुधाअंगारगा तत्ततवणिज्जकणगवन्ना जेगहा जोइसंमि चारं चरंति केतूयगतिरइया अट्ठावीसइविहाय नक्खत्ता देवयगणा नाणासंठाणसंठियाउय पंचवन्नाउ तारयाउ तेवियलेस्साचारिणो अविस्साममंडलगई पत्तेयं णामंकपगडि

॥ भाषा ॥

अत्यन्तसुख स्पर्शके सशोकके सुरूपदेवता देखवायोग्य अभिरूप संमुख प्रतिरूप। यत्थणं जोइसियाणं देवाणं पज्जत्ताणं ठा० पं०। इहां ज्योतिषीना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसलोयस्स असंखिज्जइभागे। तीन बोललोकने असख्यातमेभागें हुवे। तत्थणबहवे जोइसिया देवा परिवसंति तं०। तिहां घणांज्योतिषीदेवता वसेछे तेकहेछे। बहस्सइ चंदासूरा सुक्का सणिस्सरराहू धूमकेउ बुहा अंगारका तत्ततवणिज्ज कणगवण्णाभा। बृहस्पति चंद्र सूर्य शुक्र शनैश्चर राहु धूमकेतु बुध मंगल वले केहवाछे तप्त तपनीय कनकवर्णछे। जेयगहा जेयसंमि चारंचरंति केइंजाइंयगयरइंया। जे ग्रह ज्योतिषीचार चालेछें गतिकरी सुखमानेछे एहवा। अट्ठावीसइविहाय नक्खत्त देवगणाओ नाणासंठाणसंठियाओ। २८ नक्षत्र आदिदेवताना आदिसमूह आकार अनेकसंस्थितछे। पंचवण्णाओ तारयाओ तेयलसचारिणो। तारा पञ्चवर्णकरी अवस्थितछे तथा ते चाररतछे। अविस्रामामडल गइपत्तेयना मंकिय पगडियंचिधमउडा महिड्ढिया जाव पभासेमाणा। ते विसामाविना मांडलानीगति फिरता प्रत्येके २ स्वनामांङ्कित प्रकट मुकुट चिन्हछे जेहने

॥ टीका ॥

मुकुटे येषां ते प्रत्येकंस्वनामाङ्कप्रकटितचिह्नमुकुटाः किमुक्तं भवति चंद्रस्य स्वमुकुटे चंद्रमण्डलं लांछनं स्वनामांकितप्रकटितं सूर्यस्य सूर्यमण्डलं ग्रहस्यग्रहमण्डलं नक्षत्रस्य नक्षत्राकारं तारकस्य तारकाकारमिति। वैमानिकसूत्रे चतुरशीतिविमानलक्षणानि सप्तनवतिर्विमानसहस्राणि त्रयोविंशतिविमानानीति ॥ बत्तीसअट्ठावीसा बारसअट्ठ चउरोसयसहस्साइत्यादि ॥ सख्यामीलनेन परिभावनीयानि॥ तेणं निगमहिसेत्यादि ॥ सौधर्मदेवा मृगरूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः, ईशानदेवामहिषरूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः, सनत्कुमारदेवा वराहरूपप्रकटितचिह्नमुकुटाः, माहेंद्रदेवाः सिंहरूपप्रकटितमुकुटचिह्नाः, ब्रह्मदेवलोकाः छगलरूपप्रकटितमुकुटचिह्नाः, लांतकदेवा दर्दुरूपप्रकटितमुकुटचिह्नाः, शुक्रकल्पदेवा हयमुकुटचिह्नाः, सहस्रारकल्पदेवा गजपतिमुकुटचिह्नाः, आनतकल्पदेवा भुजगमुकुटचिह्नाः, प्राणतकल्पदेवाः खड्गमुकुटचिह्नाः, खड्गश्चतुष्पदविशेष आटव्यः आरणकल्पदेवा वृषभमुकुटचिह्नाः, अच्युतकल्पदेवा विहिममुकुटचिह्नाः ॥ वरकुंडलुज्जोवियाणणाइति॥ वराभ्यां कुण्डलाभ्यामु द्योतितं भास्वरीकृत माननं येषां ते तथा शेषं सुगमं-सौधर्मकल्पसूत्रे। अच्चिमालीभासिवन्नाभे इति ॥ वज्जपाणी इति ॥ वज्रं पाणावस्य इति वज्रपाणिः असुरादिपुराणां दारणात् पुरंदरः॥ सय

॥ मूल ॥

यचिंधमउडा महिड्ढिया जावप्पन्नासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणि

॥ भाषा ॥

एतले सूर्यमण्डल लक्षण सर्व ते कहिवो सौभाव चन्द्रनो चन्द्रमण्डलनो मुकुटचिन्हछे महर्द्धिक यावत् प्रभासहित ते। तेणं तत्थ साणं विमाणावाससयसहस्साणं। तिहां आप आपणेविमाने लाखागमेंकरी। साणं २ सामाणियसाहस्सीणं। आप आपणे सामानिकसहस्रेंकरी। साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं। आप आपणी अग्रमहिषीयेंकरी सपरिवारे। साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं। आप आपणे परषदासहित आपआपणां अनीकेकरी आप आपणी अनीकाधिपतें तिणेसहित आप आपणे आत्मरक्षकदेवे सहस्रेंकरी। अण्णेसिंच बहूणं जोयसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरंति। अनेरा घणां ज्योतिषीना देवताना देवीनां अधिपतिपणां यावत् विचरेछे। चंद्रमसूरी

॥ मूल ॥

याहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्तेसिंचबहूणं जोइसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति चंदिमसूरियाय एत्थ दुवे जोइसिंदा जोइसियरायाणो परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ जोइसियविमाणावाससयसहस्साणं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जोइसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति। कहिणं भंते ! वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० ? कहिणं भंते ! वेमाणियादेवा परिवसंति ? गो० ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बज्झसमरम

॥ भाषा ॥

याय इत्थदुवे जोइसिंदा जोइसिरायाणो परिवसंति। चन्द्रमा सूर्य एदोय इहां ज्योतिषीदेवतारो राजपणों बसेछे। महड्ढिया जाव पभासेमाणा। महर्द्धिक यावत् प्रभासहितथका। तेण तत्थसाणं जोइसियविमाणावास सयसहस्साणं। तें तिहां आपणा ज्योतिषीनाविमान लाखागमेंकरी। चउण्हं सामाणियसाहस्सीण चउण्हं अग्गमहिसीण सपरिवाराणं तिण्हंपरिसाणं सतण्हं अणियाणं सतण्हं अणियाहिवईणं सोलसण्हं आयरक्ख देवसाहस्सीण अण्णेसिंचबहूणं जोयसियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं जाव विहरंति। चार अग्रमहिषीयेंकरी सपरिवारें नीतिपरिषदायेंकरी ७ अनी केंकरी ७ अनीधिपतियेंकरी सोलेहजार आत्मरक्षदेवेंकरी अनेराघणां ज्योतिषीना देव देवीना अधिपतिपणें यावत् विचरें। कहिणंभंते वेमाणियाणं पज्जत्ता २ णं ठा० प०। किहां हेभगवन् वैमानिक पर्याप्ता तपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिणं भंते वेमाणियादेवा परिवसंति। किहां हेभगवन् विमान बासी बसेछै। गोयमा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदम सूरय गहगणणक्खत्ततारारूवाणं। हेगौतम ए रत्न प्रभायें घणीं समोरमणीक भूमिभागथी ऊंचो चन्द्र सूर्य ग्रहगण नक्षत्र तारारूप घणां योजनना सैकडा। बहूहिं जोयणसहस्साइं बहूहिं जोयणसयसहस्साइं बहूहिं जोयणकोडीओ। घणांयोजनना सैकडा घणां योजननो शतसहस्र लाखे घणांयोजननो कोडी। बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं

॥ मूल ॥

णिज्जाउं भूमिभागाउं उड्ढं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूगाउं जोयणकोडीउं बहूगाउं जोयणकोडाकोडीउं उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेविज्जाणुत्तरेसु तत्थ एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं चउरासीविमाणसयसहस्सा सत्ताणउईभवेसहस्सा तेवीसं विमाणा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणामया आया सण्हा लट्ठा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा इत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे वेमाणिया देवा परिवसंति तं०—सोह

॥ भाषा ॥

दूरं उप्पइत्ता । घणां योजननी कोडाकोडी जंचा उपाडी जाय । एत्थणं सोहम्मीसाण सणंकुमार माहेंद्र बंभलोय लांतग महासुक्कस सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चय ग्रैवेयक ९ अनुत्तर ५ । एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं चउरासीतिविमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउयंचसयसहस्सतेवीस विमाणाहवंतित्तिमक्खाय । तिहां वैमानिकदेवताना ८४ लाखविमान ऊपर सताणुहजार अने वले ते वीस एतलो विमाननोसंख्या कहोछे वीतरागें कही । तेणविमाणा सव्वरयणामया । तेविमान सर्व रत्नमयछे । आया सण्हा घट्ठामट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोइया पासाइया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । मूल घटारा मटारा नीरजा निर्मल निःपङ्क कचरामो प्राप्ति नथी प्रभासहित सश्रीक उद्योतसहित मनप्रसन्नकारी जोयवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप । एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठा० प० । इहां वैमानिकदेव पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीन बोललोकने असंख्यातमेंभागे । तत्थणं बहवे वेमाणिया देवाणं परिवसंति तं० । तिहां घणां वैमानिकदेवता वसेछे । सोहम्मीसाण स

॥ मूल ॥

म्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगमहासुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयगेवेज्जगाणुत्तरोववाइया देवा तेणं मियमहिसवराहसीहछगलदद्दुरहयगयवइसुयगखग्गउसभंकविहिमपागडियचिंधमउडा पसढिलवरमउडतिरीडधारिणो वरकुंडलुज्जोइयाणणा मउडदित्तसिरया रत्ताभा पउमपहगोरा भासेया सुहवसगंधफासा उत्तमवेउव्विणो पवरवत्थगंधमल्लाणुलेवणधरा महिड्ढिया महज्जुइया महायसा महाबला महाणुभागा महासोक्खा हारविराइयवच्छा कडगतुडियथंभियभुया अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारी विचित्त

॥ भाषा ॥

णंकुमार माहेंद्र बभलोग लांतग महासुक्क सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुया गेवेज्जगाणुत्तरोववाइया देवा। सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्मलोक लांतक महाशुक्र सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत ग्रैवेयक अनुत्तरोपपातिक देवता बसेछे। तेणं मिग महिस वराह सीह छगल दादुर हयगय भुयग खग्ग उसभ कविहि पगडिय चिंधमउडा। तेहना चिन्ह कहेछे – मृग महिष वराह सींह छाग दर्दुर अश्व गज भुजग खड्ग वृषभ कोकडा ए १२ देवलोकना प्रधान चिन्ह। सढिलचरमउड तिरीडधारणा वरकुंडल उज्जोयआणणा। ढलकना प्रधानमुकुट तिरीडमोड आभरण धरया कुंडलेकरी उद्योत जेहना। मउडदित्तसिरयारत्ताभा बउमप्पहभस्मगोरासेयासुहवसगंध फासा। मुकुटेकरी मस्तकरता पद्मनीपरे गौरदेह स्वेत शुभवर्ण गंधस्पर्श। उत्तमविउव्विणोपवरवत्थगंध मल्लालंकारिणं। उत्तमरूडी विकुर्वणा जेहनो प्रवरवस्त्र गंधमाल्यविलेपनना धरणहार। महड्ढिया महायसा महाणुभागा महासुक्खा हारविरायवच्छा कडयतुडियथंभियभुया। महर्द्धिक महायशवन्त महाभागी महासुखी हारेकरी विराजमान छीयो कडा बहीरखा तिणेकरी थभ्याछे भुज। अंगयकुंडलमट्ठगडपीठधारी विचित्तहत्थाभरण विचित्तमाला मउल कल्लाणगपवर वत्थ परिहिया। अंगद बांहाभरणकुंडल तिणे करी कर्णपीठधारता विचित्र आभरणे धराछे विचित्रमाला मुकुट कल्याणनाकारक वस्त्र पहिराछे। कल्लाणग पवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदीपलंब वणमालधरा। कल्याणकारी विलेपनकीधांछे भासुरदेदीप्यमानबोंदी प्रलंबमाला धारीछे। दिव्वेण गंधेण दिव्वेण वण्णेण दिव्वेण फासेण दिव्वेण संघयणेण

॥ मूल ॥

हत्थाभरणा विचित्तमालामउलीकल्लाणपवरवच्छपरिहिया कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणा भासुरबोंदीपलंबवत्त णमालधरा दिव्वेणं वन्नेणं दिव्वेणं गंधेणं दिव्वेणं फासेणं दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं दिव्वाए इड्ढीए दिव्वाए जूईए दिव्वाए पभाए दिव्वाए छायाए दिव्वाए अच्चीए दिव्वेणं तेएणं दिव्वाए लेसाए दसदिसाओ उ ज्जोवेमाणा पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ सामाणियसाहस्सीणं सा णं २ तावत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं साणं २ परिसाणं साणं २ अणियाणं साणं २ अणियाहिवईणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं वेमाणियाणं

॥ भाषा ॥

दिव्वेणं संठाणेणं। दिव्यगंध दिव्यस्पर्शकरो दिव्य संघयणेंकरो दिव्यसंस्थानेकरो। दिव्याएइड्ढीए दिव्याएजूइए दिव्याएपभाए दिव्याएछायाए दिव्याएअ र्चीए दिव्वेणंतेएण दिव्याएलेस्साए। दिव्यऋद्धिकरो दिव्यद्युतिकरो दिव्यप्रभावेंकरो दिव्यछायावेंकरो दिव्यअर्कवेंकरो दिव्यतेजेकरो दिव्यलेश्यावेंकरो। दसदिसाओ उज्जोएमाणा पभासेमाणा। दश दिशिनेविषे उद्योतकरता प्रभाकरंत विस्तारताथका। तेणं तत्थसाणं विमाणवासयसहस्साणं। ते ति हां आपआपणांविमानने लाखगमेंकरी। साणं २ सामाणियसाहस्सीणं साणं २ तायत्तीसगाणं साणं २ लोगपालाणं साणं २ अग्गमहिसीणं सपरिवारा णं। आपआपणां सामानिकसहस्रेंकरी आपआपणां त्रायत्रिंशकेंकरी आपआपणां लोकपालेंकरी आपआपणा अग्रमहिषावेंकरी सपरिवारें। साणं २ परि साणं साणं २ अणियाण साणं २ अणियाहिवइणं साणं २ आयरक्खदेवसाहस्सीणं। आप आपणी परिषदावेंकरी आप आपणी अनीकेंकरी आप आप णी अनीकाधिपतेंकरी आपआपणां आत्मरक्षकसहस्रेंकरी। अन्नेसिंचबहूणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्त। अनेराघणां वैमानिकदेवता देवीना अधिपतिपणें पौराधिकपणों स्वामीथका बडाईधरताथका। आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा। आज्ञा ई श्वरपणे पलावता करता पालता। महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडिय घणमुयंग पडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणा विहरंति।

देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महत्तरगत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणा पालेमाणा महयाहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवाइयरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरंति । कहिणं भंते ! सोहम्मगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० कहिणं भंते ! सोहम्मगदेवा परिवसंति ? गो० ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूणि जोयणसयाइं बहूणि जोयणसहस्साइं बहूणि जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं सोहम्मे नामं कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने अद्धचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालिभासरासिवन्ना

---

मंटानृत्य गीत वाजित्र तंत्री तल ताल त्रुटित घनमृदङ्ग पटु वाजित्रने शब्देकरी दिव्य भोगवताथका विचरेछे। कहिणंभते सोहम्मगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०। किहां हेभगवन् सौधर्मदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिणंभते सोहम्मगदेवा परिवसंति। किहां हेभगवन् सौधर्मदेवता व सेछे। गोयमा जंबूदीवे २ मदरस्सपव्वयस्स दाहिणेण। हेगौतम जंबूद्वीपनामा द्वीपनेविषे मेरुपर्वत दक्षिणपासे। इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहु समरमणिज्जाओ भूमिभागाओ। ए रत्नप्रभापृथिवीथकी घणो समरमणीक भूमिभागथकी जंचा। चंदासूरियाओगहगणणक्खत्ततारारूवाणं। चन्द्र सूर्य ग्रहगण नक्षत्र तारा रूपथी। बहूणि जोयणसयाइं जाव बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढंदूरं उप्पइत्ता। योजननासय जांलगे यावत् घणायोजननी कोडाकोडी जंचा उपाडी जे। एत्थणसोहम्मनामंकप्पे पं०। तिहां सौधर्मनामे कल्पकह्यो। पाईण पडीणाइं उदीणदाहिणविच्छिण्णे अडसंठाण संठिया। पूर्व पश्चिमलांबो उत्तर दक्षिण पिहुलछे अर्द्धचन्द्रसंस्थाने संस्थितछे। अर्चीमालो भासिरासिवन्नाभे। किरणनीश्रेणी सहितछे भासुरासने वर्णने तेजसरी खाछे। असंखिज्जाओ जोयणकोडाओ असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेण। असंख्यातायोजननी कोडी असंख्यातायोजननी कोडा

॥ मूल ॥

णं असंखेज्जाणं जोयणकोडीणं असंखेज्जाणं जोयणकोडाकोडीणं आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाणं जोयण कोडाकोडीणं परिक्खेवेणं सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे तत्थणं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसं विमाणावास सयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणमया अच्छा जाव पडिरूवा तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंचवडंसएया पं० तं—असोगवडंसए सत्तवन्नवडंसए चंपगवडंसए चूयवडंसए मज्झे तत्थ सोहम्मवडंसए तेणं वडंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थणं सोहम्मगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०, तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे सोहम्मगदेवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयसहस्साणं साणं २ अग्गमहिसीणं साणं २ सामाणियसाहस्सी

॥ भाषा ॥

कोडी लांबपणें पिहुलपणें। असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेण पं०। असंख्यातायोजननी कोडाकोडी परिधके चौफेर। सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे। सर्व रत्नमयछे निर्मल जांलगे प्रतिरूप। तत्थणं सोहम्मगदेवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्साहवंतीतिमक्खायं। तिहां सौधर्मना मदेवताना ३२ लाखविमान तीर्थंकरे कह्या। तेणंविमाण सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। ते विमाण सर्वरत्नमयछे निर्मल यावत् प्रतिरूप। तेण विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंचवडंसिया पं०। ते विमानने घणी मध्यदेशभागे मोटा पांच वतंशकविमान कहेछे—असोगवडेंसए सयवन्न व० चंपग व० चूय व० मज्झे इत्थ सोहम्मव०। अशोकवतंशक सप्तपर्ण व० चम्पक व० चूतवतंशक विचे इहां सौधर्मावतंशक ५। तेणंवडिंसिया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। ते वतंशकविमान सर्व रत्नमय निर्मल यावत् तेहने तुल बीजोरूपनथी। एत्थणं सोहम्मग देवाणं पज्जत्ता २ ठाणा प०। इहां सौधर्मदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे। तीन बोललोकने असंख्यातमेभागे। तत्थण बहवे सोहम्मगदेवाण परिवसंति। तिहां घणां सौधर्मदेवता वसेछे। महड्ढिया जाव पभासेमाणे। महर्द्धिक यावत् प्रभासहित। तेणं तत्थ साण २ विमाणावाससयसहस्सा

॥ टीका ॥

क्रतुरिति ॥ शतं क्रतूनां प्रतिमानाम अभिग्रहविशेषाणां श्रमणोपासकपञ्चमप्रतिमारूपाणां वा कार्त्तिकश्रेष्ठिनवापेक्षया यस्या सौ शतक्रतुः ॥ सहस्सक्खे इति ॥ सहस्रमक्ष्णां यस्या सौ सहस्राक्षः इंद्रस्य हि किलमंत्रिणां पञ्चशतानि संति तदीयानां चक्ष्णां मिंद्रप्रयोजनव्यापृततया इंद्रसंबंधित्वेन विवक्षणात् सहस्राक्षत्वमिंद्रस्य ॥ मघवंइति ॥ मघामहामेघा स्ते यस्य वशे संति समघवान् तथा पाको नाम बलवान् रिपुः स शिष्यते निराक्रियते येन सः पाकशासनः ॥ अरयंवरवत्थधरे ॥ अरजांसि रजोरहितानि स्वच्छतया अंबराणि वस्त्राणि धारयंतीति अंबरवस्त्रधरः ॥ आलइयमालमउडेइति ॥ माला च मुकुटश्च मालामुकुट मालगित माविद्धं मालामुकुटं येन स आलगितमालामुकुटं ॥ नवहेमचारुचित्तचंचलकुण्डलविलिहिज्जमाणगंडे ॥ नवमिव अत्युत्कटचारुवर्णतया प्रत्यग्रमिव हेम यत्र ते नवहेमनी नवहेमभ्यां चारुचित्राभ्यां चंचलाभ्यां कुण्डलाभ्यां विलिख्यमानौ गंडौ यस्य स तथा स

॥ मूल ॥

णं एवं जहेव उहियाणं तहेव एतेसिंपि भाणियव्वं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिं च बहूणं सोहम्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणं देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति । सक्के इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ वज्जपाणी पुरंदरे सयक्कउ सहस्सक्खे मघवं पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवई बत्तीसविमाणवाससयसहस्साहिवई एरावणवाहणे सुरिंदे अरयंवरवत्थधरे आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल

॥ भाषा ॥

णं माणं २ सामाणियसाहस्सीणं एवं जहेव उहियाणं तहेव एएसिंपि भाणि० । ते इहां आपआपणां विमानना लाखगमे करी आपआपणां सामानिकसहस्रेकरी इम जिन ओघनंदिषे कह्यो तिम सर्व इहां कहिवो । जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिंचबहूणं सोहम्मगकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणं य देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं जाव विहरंति । यावत् आत्मरक्षकमा सहस्र अनेराघणां सौधर्मकल्पनावासी वैमानिक अनेक देवता देवीनो अधिपतिपणे यावत् विचरे । सक्के इत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसंति । शक्र तिहां देवतारो राजादेवेंद्र बसेछे वज्रपाणी पुरंदरे सयक्रतुसहस्राक्षे । वज्रेकरी पुरंदर शतक्रतु सहस्रनेत्रधणो सहस्राक्ष । मघवं पाकसासणे दाहिणड्ढलोगाहिवइ बत्तीसविमाणा

॥ टीका ॥

नत्कुमारकल्पे-सपक्खं सपडिदिसंति ॥ समानाः पक्षाः पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपाः पार्श्वा यस्मिन् दूरमु त्यतने तत्सपक्षं समानस्य धर्मादिषु चेतिस मानस्य सद्भावः ॥ सपक्खिंदिसंति ॥ समानाः प्रतिदिशो विदिशो यत्र तत्सप्रतिदिक् सामानिकसंग्रहणिगाथा-चउरासीइत्यादि ॥ सौधर्मेंद्रस्य चतुर शीतिसामानिकसहस्राणि ईशानेंद्रस्या शीतिः सनत्कुमारस्य द्वासप्ततिः माहेंद्रदेवराजस्य सप्ततिः ब्रह्मलोकेंद्रस्य षष्टिः लांतकेंद्रस्य पंचाशत् महा शुक्रेंद्रस्य चत्वारिंशत् सहस्रारेंद्रस्य त्रिंशत् आनतप्राणतेंद्रस्य दशसामानिकसहस्राणि ॥ अवतंसकाश्चातिदेशेनोक्ताइति दुरवबोधा स्ततो विने

॥ मूल ॥

कुंडलविलिहिज्जमाणगंडे महिड्ढिए जाव पभासेमाणे सेणं तत्थ बत्तीसाए विमाणवाससयसहस्साणं चउरा सीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरि वाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं चउरासीणं आयरक्खदेवसाह स्सीणं अण्णेसिं च बहूणं सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीणय आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे

॥ भाषा ॥

वाससयसहस्साहिवई । मघवो पाकशासन देवताना बस्यकोना दक्षिणार्ध लोकाधिपति ३२ लाखविमाननोधणी । ऐरावणवाहणसुरिंदे अरयंबरवत्थ धरे । ऐरावण वाहनके जेहने सुरेंद्र रजविना गगनपरे निर्मलवस्त्रधारी । आलइयमालमउडे नवहेमचारुचित्तचंचल कुंडल विलहिज्जमाणगंडे । थाप्या छे कड मकुट नवा हेमनाचारु विचित्र कुण्डलकरी विलपमान गंडस्थलके जे इन्द्रना । महिड्ढिए जाव पभासेमाणे । महर्द्धिक यावत् सर्वउज्वालो कर तो । तत्थ बत्तीसाए विमाणावाससयसहस्साण चउरासीए सामाणिय साहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाण चउण्हं लोगपालाण अट्ठण्ह अग्गमहिसीणं सपरिवाराण । तिहं ३२ लाखविमाननो स्वामी ८४ सहस्र सामानिकोकरो त्रायत्रिंशक पूजनीकदेवतायें करो ४ लोकपाले ८ अग्रमहिषीयेंकरो सपरि वारें । तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाण सत्तण्हं अणियाहिवइण । तीन परषदायें ७ अनीककरो ७ अनीकाधिपतेंकरो । चउण्ह चउरासीणं आयरक्ख देवसाहस्सीण अण्णेसिंच बहूण सोहम्मकप्पवासीणं वेमाणियाण देवाणय देवीणय आहेवच्च जाव विहरइ । चारहिंगिनें ८४ हजार अ.त्मरक्षकेंकरो अने

॥ मूल ॥

जाव विहरति। कहिणं भंते! ईसाणगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पं० ? कहिणं भंते! ईसाणगदेवा परिवसंति ? गो० ! जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियग्गहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं जाव उप्पइत्ता एत्थणं ईसाणे नामं कप्पे पन्नत्ते, पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे तत्थणं ईसाणगदेवाणं अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं तेणं विमाणा सव्व रयणामया जाव पडिरूवा, तेसिणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडिंसगा पण्णत्ता, असोकवडिंसए सत्तवण्णवडिंसए

॥ भाषा ॥

रा घणां सौधर्म कल्पनावासी वैमानिकदेवता देवी अधिपतिपणों यावत् विचरै। कहिणंभंते ईसाणगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठा० पं०। किहां हेभगवन् ईशान देवलोकना पर्याप्ता अपर्याप्तांना ठामकह्या। कहिणंभंते ईसाणगदेवा परिवसंति। किहां हेभगवन् ईशानदेवता वसेछे। गोयमा जंबूदीवे २ मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरेणं। हेगौतम जंबूद्वीपनामाद्वीप विषे मेरुपर्वत उत्तरपासे। इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ। ए रत्नप्रभापृथ्वीथी घणां समरमणीक भूमिभागथकी। उड्ढं चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवा ण। ऊंचा चन्द्र सूर्य ग्रहगण नक्षत्र तारारूपथी। बहूणि जोयणसयाइं जाव उप्पइत्ता। घणां योजनना सैकडाम् यावत् कोडाकोडी ऊंचा जाय जे। एत्थणं ईसाणेनामंकप्पे पं०। इहां ईशाननामा कल्पकह्या। पाईणपडिणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने एवं जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे। पूर्व पश्चिम लांबोछे उत्तरदक्षिणे पिहलोछे इम जिम सौधर्मनोपरे यावत् प्रतिरूप। तत्थणं ईसाणगदेवाणं अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्सा हवंतीतिमक्खायं। तिहां ईशान देवतारा २८ लाखविमाननी संख्याकही तीर्थंकरे कह्या। तेणं विमाणासव्वरयणामया जाव पडिरूवा। ते विमान सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप। तेसिणं बहुमज्झदेसभाए पचवडेंसिए पं०तं०। तिहां घणो मध्य विचाले ५ अवतंसकविमानछे ते कहेछे—अशोकवडिंसए सप्तछवण्ण० रयण० जायरूव०। अशोकवतंसक पूर्व दक्षिणे स्फटिकावतंसक रत्नावतंसक याव

॥ टीका ॥

यजनानुग्रहार्थं वैक्रियेण मूलत आरभ्यो पदर्श्यते-सौधर्मे पूर्वस्यां अशोकावतंसको दक्षिणतःसप्तपर्णावतंसकः पश्चिमायां चंपकावतंसकः उत्तरत श्चूतावतंसकः मध्ये सौधर्मावतंसकः एव पूर्वादिक्रमेण ईशाने अङ्कावतंसकः स्फाटिकावतंसको रत्नावतंसको जातरूपावतंसकः मध्येईशानावतंसकः सनत्कुमारे अशोकः सप्तपर्णः चंपकः चूतः सनत्कुमारावतंसकः माहेंद्र अङ्कस्फाटिकरत्नजातरूपमाहेंद्रावतंसकाः ब्रह्मलोके अशोकसप्तपर्णचंपकचूत

॥ मूल ॥

रयणवइंसए जाव सरूववडिंसए मज्झे इत्थ ईसाणवडंसए, तेणं वडंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा एत्थणं ईसाणाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे सेसं जहा सोहम्मगदेवाणं जाव विहरंति, ईसाणे इत्थ देविंदे देवराया परिवसति सूलपाणी वसहवाहणे उत्तरड्ढलोगाहिवई अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिवई अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासेमाणे तत्थ अट्ठावीसाए विमाणावाससयसहस्साणं असीतीए सामाणियसाहस्सीणं तावत्तीसाए तावत्तीसगाणं

॥ भाषा ॥

त् रूपवतंसक। मध्ये इत्यईसाणवडेंसए तेणं वडिंसिया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। विचे इहांईशानावतंसक तेवतंसक सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप। एत्थ णं ईसाणदेवाणं पज्जत्ता २ ठाणापं०। इहां ईशानदेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे सेसं जहा सोहम्मदेवाणं जाव विहरंति। तीन बोललोकने असंख्यातमेंभागें हुवे थाकता जिम सौधर्मदेवता यावत् विचरेछे। ईशाणे इत्यदेविंदे देवरायाणो परिवसंति। ईशाननामे इन्द्र राजा बसेछे। सूलपाणिवसभवाहणे। त्रिशूल हाथमें जेहने। उत्तरड्ढ लोगाहिवई। उत्तरार्द्ध लोकनोधणी। अट्ठावीसविमाणावाससयसहस्साहिव ई। २८ लाख विमाननो धणी अतिरिक्त। अरयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स जाव पभासेमाणे। रजरहित वस्त्रधारक थाकतो जिन शक्रनोपरे यावत् प्रभासहित। सेणं तत्थ अट्ठावीसाएविमाणावाससयसहस्साणं असिईए सामाणियसाहस्सीणं तायत्तीसाए तायत्तीसगाणं। ते तिहां २८ लाख विमान करो सहित ८०००० सामानिकेंकरो सहित ३३ त्रायत्रिंशकेंकरो। चउण्हंलोगपालाणं अट्ठण्हंअग्गमहिसीणं सपरिवाराणं। ४ लोकपालेकरो८ अग्रमहि

चउण्हं लोगपालाणं अट्ठण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं असीतीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं पोरेवच्चं कुव्वमाणे जाव विहरइ, कहिणं भंते ! सणंकुमारदेवाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! सणंकुमारा देवा परिवसंति ? गोयमा ! सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता तत्थणं सणंकुमारे नामं कप्पे पण्णत्ते । पाईण

षौयैंकरो सपरिवारैंकरो । तिण्हं परिसाणं सत्तण्हं अणियाणं सत्तण्हं अणियाहिवईणं चउण्हं असईणं । तीन परिषदाकरी ७ अनीकेकरी ७ अनीकाधिपतेंकरी ४ दिशि । चउरासी आयरक्खदेवसाहस्सीण । ८४ आत्मरक्षकने सहयैंकरी । अन्नेसिंचबहूणं ईसाणकप्पवासीणं वेमाणियाणं देवाणय देवीण य आहेवच्चं कुव्वमाणे विहरति । अनेरा घणांईशान कल्पवासी वैमानिक देवदेवीनो अधिपतिपणों करतो यावत् विचरे । कहिणंभंते सणंकुमाराणं देवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् सनत्कुमारदेवतारा पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणंभंते सणकुमारदेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् सनत्कुमारदेवता वसेछे । गोयमा सोहम्मस्स कप्पस्स उप्पिंसपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणसयाइं । हेगौतम सौधर्मकल्पने ऊपरेसपक्षपणे सघलीदिशि घणायोजननासैकडा । बहूहिं जोयणसयसहस्साइं बहुगीओ जोयणकोडीओ बहुगीओ जोयणकोडाकोडीओ । घणां योजनना सहस्र घणां योजनना सहस्रलाख घणीयोजननी कोडी घणी योजननी कोडाकोडी । उड्ढंदूरं उप्पइत्ता । ऊंचा उपाडीने जाय । तत्थणं सणंकुमारेणामं कप्पे पं० । इहां सनत्कुमारनामे कल्पकह्यो । पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे जहा सोहम्मे जाव पडिरूवे । पूर्व पश्चिम लांबो उत्तरदक्षिण पिहु

॥ मूल ॥

पढीणायए उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा सोहम्मे कप्पे जाव पडिरूवे, तत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं बारस विमाणावाससयसहस्सा हवंतीति मक्खायं, तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडंसगा पण्णत्ता, तंजहा–असोगवडंसए सत्तवण्णवडंसए चंपगवडंसए चूयवडंसए मज्झे जत्थ सणंकुमारवडंसए तेणं वडंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा तत्थणं सणंकुमारदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे सणंकुमारा देवा परिवसंति महिड्ढिया जाव पभासेमाणा विहरंति नवरं अग्गमहिसीओ णत्थि, सणंकुमारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ असयंबरवत्थधरे सेसं जहा सक्कस्स सेणं तत्थ बारसण्हं विमाणावाससयसहस्साणं जाव

॥ भाषा ॥

लो जिम सौधर्म यावत् प्रतिरूप। एत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं बारसविमाणावाससयसहस्साहवंतीतिमक्खायं। इहां सनत्कुमारना १२ लाख विमानकह्या तीर्थंकरे। तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। ते विमान सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूपने। तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंचवडेंसया पं० तं०। विमानने घणी मध्यदेशभाग विचाले पञ्च अवतंसकाविमान कह्या। असोगवडिंसए सयवण्णव० चंपकय व० चूय व० मज्झ इत्थ सणंकुमार व० तेणं वडेंसया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। अशोकवतंसक पूर्वे सप्तपर्ण वतंसक दक्षिणे चपकवतंसक पश्चिमे चूतवतंसक उत्तरे विचे सनत्कुमारावतंसक ते वतंसक सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप। एत्थणं सणंकुमाराणं देवाणं पज्जत्ताणं ठाणा पं०। इहां सनत्कुमारना पर्याप्ताअपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभागे। तीन बोललोकने असंख्यातमेभाग हुवे। तत्थणं बहवे सणंकुमारादेवा परिवसंति। तिहां घणां सनत्कुमारदेवता बसेछे। महड्ढिया जाव पभासेमाणा विहरंति। महर्द्धिक यावत् प्रभासहित विचरेछे। नवरं अग्गमहिसीओ नत्थि सणंकुमारे इत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसति। एतलोविशेष अग्रमहिषी नही सनत्कुमारनामे देवेंद्र देवराजा वसेछे। असयंबरवत्थधरे सेसंजहा सक्कस्स। रजरहित गगन

॥ टीका ॥

जातरूपसहस्रारावतंसकाः प्राणते अशोकसप्तपर्णचंपकचूतप्राणावतंसकाः अच्युते अङ्कस्फटिकरत्नजातरूपाच्युता अवतंसका इति ॥ ग्रैवेयकसूत्रे-समऋियाइति ॥ समा ऋद्धि र्येषांते समर्द्धिकाः एवं ॥ समुज्जुइया इत्याद्यपि भावनीयं ॥ अणिंदाइति ॥ नविद्यते इंद्रो ऽधिपति र्येषांते अनिंद्राः ॥ अपेस्सा इति ॥ नविद्यते प्रेष्यः प्रेष्यत्वं येषांते अप्रेष्याः ॥ अपुरोहियाइति ॥ नविद्यते पुरोहितः शांतिकर्मकारी येषामशांतेरभावात् ते अपुरोहिताः

॥ मूल ॥

तरीए सामाणियसाहस्सीणं सेसं जहा सक्कस्स अग्गमहिसीवज्जं नवरं चउण्हं बावत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! माहिंदाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! माहिंदगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहुइं जोयणाइं जाव बहुगाइं जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता तत्थणं माहिंदे नामं कप्पे पण्णत्ते, पाईणपडीणायए जाव एवं जहेव सणंकुमारे, नवरं अट्ठ विमाणावाससयसहस्सा बण्णंसया जहा ईसाणे नवरं मज्झे तत्थ माहिं

॥ भाषा ॥

वत् वस्त्रधारी ग्रैवेयजिम शक्रनीपरें । सेणंतत्थबारसण्हंविमाणावाससयसहस्साणं । तिहां१२ लाखविमानेकरी । बावत्तरीए सामानिकदेवसाहस्सीणं जहा सक्करस अग्गमहिसीणं वज्जा । ७२ सामानिकसहस्रेंकरी जिम शक्रनीपरे अग्रमहिषी विना । नवरं चउण्हं बावत्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरंति । एतलोविशेष ७२ चौगुणाकरता २२७ आत्मरक्षक सहस्रेंकरी यावत् विचरै । कहिणं भंते माहेंददेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् माहेंद्रदेव पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठाम कह्या । कहिण भंते माहिंददेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् माहेंद्रदेवता वसे छै । गोयमा ईसाणस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूहिं जोयणाइं जाव बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता । हेगौतम ईशानकल्पने ऊपर पक्षसहित सर्व दिशिविषें घणा योजनना यावत् घणां योजननी कोडाकोडी ऊंचोजाय । एत्थणं माहेंदनामं कप्पे प० । तिवारे तिहां माहेंद्रनामें देवलोक कह्यो । पाईण पडिणायए उदीण दाहिणविच्छिण्णे । पूर्व दिसालांबो उत्तर दक्षिण पिहुलो । एवं जहेव सणंकुमारे नवरं अट्ठविमाणावाससयसहस्सा । इम सर्व

॥ मूल ॥

दवडंसए एवं सेसं जहा सणंकुमारदेवाणं जाव विहरंति माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबर वत्थधरे एवं जहा सणंकुमारे जाव विहरइ नवरं अट्ठण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सत्तरीए सामाणिय साहस्सीणं चउण्हं सत्तरीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! बंभलोगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! बंभलोगा देवा परिवसंति ? गो० ! सणंकुमारमाहिंदाणं कप्पाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणाइं जाव उप्पइत्ता एत्थणं बंभलोए नामं कप्पे पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिए अच्चिमालीभासरासिप्पभे अवसेसं जहा सणंकुमा

॥ भाषा ॥

जिम सनत्कुमार एतलोविशेष । अट्ठविमाणावाससयसहस्सा वक्तव्यता जहा ईसाणे नवर मज्झे । ८ लाखविमान कह्या वर्तयक जिम ईशाने कह्या ए तलोविशेष विचै । इत्थ माहेंदवडिंसए एवं सेसं जहा सणंकुमारदेवाणं जाव विहरंति । इहां माहेंद्रवतंयक इम शेषजिम सनत्कुमारदेवता यावत् वि चरेछै । माहिंदे इत्थ देविंदे देवराया परिवसंति । माहेंद्रनामै देवेंद्र देवराजा वसेछै । अरयंबरवत्थधरे एवं जहा सणंकुमारराजा विहरंति । रजर हित गगनवत् वस्त्रधारी इम सर्व जिम सनत्कुमार यावत् विचरै । नवरं अट्ठण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सत्तरिए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं सि त्तरीण आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरंति । एतलोविशेष ८ लाख विमानेकरी ७० सहस्र सामानिक ७० चौगुणां करता २८० आत्मरक्षक सहस्रेक री विचरै । कहिणंभंते बंभलोयदेवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा प० । किहां हेभगवन् ब्रह्मलोकनादेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठांमकह्या । कहिणंभंते बंभलो या परिवसंति । किहां हेभगवन् ब्रह्मदेवलोकवसै । गोयमा सणंकुमारमाहेंदाण कप्पाणं उप्पिं सपक्खिंसपडिदिसिं बहूहिंजोयण जाव उप्पइत्ता । हेगौ तम सनत्कुमार माहेंद्रकल्पथी । ऊपर सपक्ष सर्वदिशे घणीयोजन कोडाकोडी ऊंचा जाईजै । एत्थण बंभलोए नामं कप्पे पं० । तिहां ब्रह्मलोकनामा कल्प पूर्वपश्चिमे विशेष लांबो । उदीणदाहिणविच्छिन्ने पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिए । उत्तरदक्षिणे पहुलो पूर्णचंद्र संस्थाने संस्थितछै । अर्चिमालो भासिरा

॥ मूल ॥

राणं नवरं चत्तारि विमाणावाससयसहस्सा वडंसगा जहा सोहम्मस्सवडंसया नवरं मज्झे इत्थ बंभलोयवडंसए एत्थणं बंभलोगाणं देवाणं ठाणा पं० सेसं तहेव जाव विहरंति। बंभे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ अरयंबरवत्थधरे एवं जहा सणंकुमारे जाव विहरति नवरं चउण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हयसट्ठीणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरइ। कहिणं भंते! लंतगदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता, कहिणं भंते! लंतगदेवा परिवसंति? गोयमा! बंभलोगस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयणसयाइं जाव बहूइं जोयणकोडाकोडीओ

॥ भाषा ॥

सिप्पमें अविसेसं सणकुमाराणं भणिय तहा भा०। किरणने समोहेकरी भाषा थाकतो जिम सनत्कुमारे कह्यो तिम कहवो। नवरं चत्तारिविमाणावाससयसहस्सा वडेंसया जहा सोहम्मवडेंसया। एतलोविशेष ४ लाखविमान कह्या वतंशक जिम सौधर्मनोपरें। नवरं मज्झे इत्थ बंभलोयवडेंसए। ए विशेष विचे इहां ब्रह्मलोकावतंशक। एत्थणं बंभलोयाणं देवाण ठाणा पं० सेसंतहेव जाव विहरंति। इहां ब्रह्मलोकदेवतारा ठामकह्या शेष तिम यावत् विचरे। बंभेइत्थ देविंदे देवरायाणो परिवसंति। ब्रह्मनामे इहां देवेन्द्र देवराजा बसेछे। अरयबरवत्थधरे एवं जहा सणकुमारे जाव विहरंति। रजविान वस्त्रधारो इम सर्व सनत्कुमारनोपरे यावत् विचरे। नवरं चउण्हं विमाणावाससयसहस्साणं सट्ठीए सामाणियसाहस्सीण। एतलोविशेष ४ लाख विमानेकरी ६० हजार सामानिकेंकरी। चउण्हं सट्ठीण आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिंच बहूणं जाव विहरंति। साठ चौगुणां करता २४० हजार आत्मरक्षकेकरी अनेरा घणांदेवता यावत् विचरे। कहिणंभंते लंतगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०। किहां हेभगवन् लान्तकदेवता पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिणंभंते लंतगादेवापरिसंति। किहां हेभगवन् लांतकदेवता बसेछे। गोयमा बंभलोयस्स कप्पस्स उप्पिंसपक्खिं सपडिदिसिं बहूइं जोयण जाव बहुगोओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता। हेगौतम ब्रह्मलोक कल्पथी ऊपर सपक्ष सर्वदिशि घणीयोजननीकोडाकोडी जंघा

॥ मूल ॥

उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं लंतए नामं कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणायते जहा बंभलोए नवरं पन्नासाविमाणा वाससहस्सा हवंतीतिमक्खायं, वट्टंसगा जहा ईसाणवट्टंसगा नवरं मज्झे थ्थ लंतगवडेंसए देवा तहेव जाव विहरंति, लंतए थ्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकुमारे नवरं पन्नासाए विमाणावाससह स्साणं पन्नासाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं पन्नासाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं अण्णेसिंच बहूणं जाव विहरइ । कहिणं भंते ! महासुक्काणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! महासुक्कादेवा परिवसंति ? गोयमा ! लांतस्स कप्पस्सउप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं महासुक्के

॥ भाषा ॥

जाय । एत्थणं लंतएनामं कप्पे पं० । इहां लान्तकनामा कल्पकह्यो । पाईणपडीणायए एवं जहा बंभलोए । पूर्वपश्चिम लांबो इम जिम ब्रह्मलोक । णवरं पन्नासं विमाणावाससहस्साहिवइ वडेंसगा जहा ईसाणवडेंसगा । एतलोविशेष ५० सहस्र विमानकह्या वतंशक जिम ईशाननोपरे । नवरं म ज्झे इत्थलंतगवडेंसए देवा तहेव जाव विहरंति । एतलोविशेष इहां लांतकावतंशकदेव तिमहीज यावत् विचरै । लंतए इत्थ देविंदे देवरायाणो परि वसंति । लांतक देवेन्द्र देवराजा वसेछे । एवं जहा सणंकुमारे नवरं पन्नासाए विमाणावास सहस्साणं पन्नासाए सामाणियसाहस्सीणं । इम जिम सनत्कुमार एतलोविशेष ५० लाख विमान ५० हजार सामानिकसहस्रेंकरी । चउण्हं पन्नासाणं आयरक्ख देवसाहस्सीणं अण्णेसिंच बहूणं जाव वि हरंति । ५० हजारने चौगुणां आत्मरक्षक देवतायेंकरी अनेरा घणांदेव यावत् विचरै । कहिणं भंते महासुक्काणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । कि हां हेभगवन महाशुक्रदेवता पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । कहिणभंते महासुक्का देवा परिवसंति । किहां हेभगवन् महाशुक्रदेवता वसेछे । गोय मा लंतस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता । हेगौतम लांतककल्पथी ऊपर पक्षसहित यावत् ऊंचाजाय । एत्थणं महासुक्केनामं कप्पे पं० । इहां महाशुक्रनामे कल्पकह्यो । पाईणपडीणायए उदीणदाहिणविच्छिण्णे एवं जहा बंभलोए । पूर्व पश्चिमें लांबो उत्तरदक्षिणें पिहुलो इम ते जि

नामं कप्पे पन्नत्ते । पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ने जहा बंभलोए नवरं चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा हवंतीति मक्खायं, वट्टंसगा जहा सोहम्मवट्टंसगा नवरं मज्झे तत्थ महासुक्कवडेंसए जाव विहरइ महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया जहा सणंकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससाहस्सीणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हं चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरंति । कहिणं भंते ! सहस्सारदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । कहिणं भंते ! सहस्सारादेवा परिवसंति ? गो० ! महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिंसपरिक्खेवपरिक्खिविदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं सहस्सारे नामं कप्पे पं० । पाईणपडीणायते ज



म ब्रह्मलोक । नवरं चत्तालीस विमाणावाससहस्सा हवंतीत्तिमक्खायं । एतलोविशेष ४० हजारविमानकह्या तीर्थंकरे । वडेंसगा जहा सोहम्मवडेंसगा नवरं मज्झे इत्थ महासुक्कवडेंसए जाव विहरति । वतशक जिम सौधर्मनीपरे एतलोविशेष विचे इहां महाशुक्रनामावतशक यावत् विचरे । महासुक्के वडेंसए जाव विहरंति । महाशुक्रनामे । महासुक्के इत्थ देविंदे देवराया परिवसंति । महाशुक्रनामे देवेंद्र देवराजा वसेछे। एव जहा सणंकुमारे नवरं चत्तालीसाए विमाणावाससहस्साणं चत्तालीसाए सामाणियसाहस्सीणं । इम जिम सनत्कुमार एतलोविशेष ४० हजार विमानसंख्याहुवे ४० हजार सामानिकसहश्रेकरी । चउण्हं चत्तालीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव विहरंति । एकलाख साठहजार देवता आत्मरक्षक हुवे यावत् विचरे । कहिणंभंते सहस्सारदेवाण पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् सहस्रारदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं भंते सहस्सारगदेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् सहस्रारदेवता वसेछे । गोयमा महासुक्कस्स कप्पस्स उप्पिंसपरिक्खेवं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता । हेगौतम महाशुक्र कल्पने ऊपर पक्षसहित यावत् ऊंचा जाईने । एत्थणं सहस्सारेनाम कप्पे पं० । इहां सहस्रारनामे कल्पकह्यो । पाईण पडीणायए जहा बंभलोए । पूर्व पश्चिम लांबो जिम ब्रह्मलोक । छविमाणावाससहस्सा हवंतीत्ति मक्खायं देवातहेव वडेंसगा जहा ईसाणे णवरं मज्झे इत्थ सहस्सवडेंसए जाव विहरंति ।

॥ मूल ॥

हा बंभलोए नवरं छविमाणावाससहस्सा हवंतीति मक्कायं देवा तहेव वक्कंसगा जहा ईसाणस्स वक्कंसगा नवरं मज्झे जत्थ सहस्सारवडंसए जाव विहरंति, सहस्सारे इत्थ देविंदे देवराया परिवसइ जहा सणंकुमारे नवरं छण्हं विमाणावाससहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं चउण्हय तीसाणं आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव आहेवच्चं कारेमाणे विहरति। कहिणं भंते! आणयपाणयदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० ? कहिणं भंते! आणयपाणयदेवा परिवसंति ? गो० ! सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं आणयपाणयनामेणं दुवे कप्पा पन्नत्ता पाईणपडीणायते उदीणदाहिणविच्छिन्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिवण्णा सेसं जहा सणंकुमारे जाव पडिरूवा तत्थणं आण

॥ भाषा ॥

एतलोविशेष छ हजारविमान केवलीकह्यो वतंशक जिम ईशाननीपरे एतलोविशेष विचे इहां सहस्रावतंशक यावत् विचरै। सहस्सारे इत्थदेविंदे देवरायाणो परिवसंति। सहस्रारनामे देवेंद्रदेवराजा वसैछै। जहा सणंकुमारे नवरं छण्हं विमाणावाससहस्साणं तीसाए सामाणियसाहस्सीणं। जिम सनत्कुमार एतलोविशेष छहजार विमान। तीसाएसामाणियसाहस्सीणं चउण्हं तीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं जाव आहेवच्चं कारेमाणे जाव विहरंति। ३० हजार सामानिकेकरी एकसौबीसहजार आत्मरक्षकेकरी यावत् अधिपतिपणें विचरै। कहिणंभंते आणयपाणयकप्पाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणापं०। किहां हेभगवन् आनत प्राणतदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिणंभंते आणयपाणयाणं देवाणं परिवसंति। किहा हे भगवन् आनत प्राणतदेवता बसैछै। गोयमा सहस्सारस्स कप्पस्स उप्पिंसपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता। हेगौतम सहस्रारकल्पथी उपरि प्रतिदिसै जांलगे जांचा जाइजे। एत्थणं आणयपाणयनामं दुवेकप्पा पं०। तिहां आनत प्राणतनामे दोयकल्प कह्या। पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिन्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया। पूर्वपश्चिम लांबा उत्तरदक्षिण पिहुला अर्द्धचन्द्रमाने संस्थाने संस्थितछै। अर्चीमाली भासरासिसमप्पभा सेसंजहासकणु

॥ मूल ॥

यपाणयदेवाणं चत्तारि विमाणावाससया हवंती मक्कायं जाव पडिरूवा, वडंसगा जहा सोहम्मे नवरं मज्झे पाणयवडंसए तेणं वडंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एत्थणं आणयपाणयदेवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसंति महड्ढिया जाव पभासेमाणा तेणं तत्थ साणं २ विमाणवाससयाणं जाव विहरंति पाणएत्थ देविंदे देवराया परिवसंति जहा सणंकुमारे णवरं चउण्हं विमाणावाससयाणं वीसाए सामाणियसाहस्सीणं असीतीए आयरक्खदेवसाहस्सीणं अन्नेसिं च बहूणं जाव विहरंति । कहिणं भंते ! आरणच्चुयाणं देवाणं पज्जत्ता

॥ भाषा ॥

मारे जाव पडिरूवा । किरणने समूहे प्रभादिक शेष जिम सनत्कुमारनोपरे जांप्रतिरूप । तत्थणं आणयपाणयदेवाणं चत्तारिविमाणावाससया हवंतितिमक्खायं जाव पडिरूवा । तिहां आनत प्राणत देवताना चारविमाननासेकडा तीर्थंकरे कह्या यावत् प्रतिरूप । वडेंसगा जहा सोहम्मे नवरं मज्झे इत्थ पाणयवडेंसए तेणंविमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । वतंशक जिमसौधर्मे ए विशेष विचै प्राणावतंशक ते विमान सर्व रत्नमयछै यावत् प्रतिरूप । एत्थणं आणयपाणयदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । इहां आनतप्राणतदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीन बोललोकने असंख्यातमेंभागे हुवे । तत्थणं बहवे आणयपाणयदेवा परिवसंति महड्ढिया जाव पभासेमाणा । तिहां घणा आनत प्राणतदेवता वसेछै महर्द्धिक यावत् प्रभासहित । तेणं तत्थ साणं २ विमाणावाससयाणं जाव विहरंति । ते तिहां आप आपणें विमानना सेकडाये विचरै । पाणएनामं एत्थ देविंदे देवराया परिवसंति जहासणुकं मारे । प्राणतनामेइहां इन्द्रराजा वसैछै जिम सनित्कुमार । णवरं चउण्हं विमाणावाससयाणं बीसाएसामाणिय साहस्सीणं असीइ आयरक्ख देवसाहस्सीणं अन्नेसिंचबहूणं जाव विहरंति । एतलोविशेष चारसै विमानेकरी बीसहजार सामानिक देवतायेकरी ८० हजार आत्मरक्षेकरी अनेरा घणादेवता यावत् विचरै । कहिणंभंते आरणअच्चुयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० ।

॥ मूल ॥

२ णं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! आरणच्चुया देवा परिवसंति ? गोयमा ! आणयपाणयाणं कप्पाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं एत्थणं आरणाच्चुयानाम दुवे कप्पा पण्णत्ता । पाईणपडीणायगा उदीणदाहिणविच्छिन्ना अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिवण्णाभा असंखेज्जाइं जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाइं जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लट्ठा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला णिप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं आरणच्चुयाणं देवाणं तिन्नि विमाणावाससया हवंतीति मक्खायं, तेणं विमाणा सव्वरय

॥ भाषा ॥

किहां हे भगवन् आरण अच्युतदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं भंते आरणअच्चुयदेवा परिवसंति । किहां हे भगवन् आरणाच्युत देवता बसेछे । गोयमा आणयपाणयाणं कप्पाणं उप्पिंसपक्खिं सपडिदिसिं उप्पइत्ता । हे गौतम आनतप्राणत ऊपर सपक्ष चौकफरादिशे । एत्थणं आरणअच्चुतनामं दुवे कप्पा । इहां आरण अच्युत दोयकल्प कह्या । पाईणपडीणाइया उदीणदाहिण विच्छिण्णा अद्धचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालो भासिरासि वण्णाभा । पूर्व पश्चिमे लांबा उत्तरदक्षिणे पिहुला अर्द्धचन्द्रने संस्थितसंस्थान किरणनीमालाये सोभित देदीप्यमानवर्ण । असंखिज्जाओ जोयण कोडाकोडीओ आयामविक्खंभेण । असंख्यातायोजननो कोडाकोडी लांबा पिहुलाछे । असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडी परिक्खेवेणं पं० सव्वरयणामया । असंख्यातायोजननो कोडाकोडी प्रमाण परिधिछे सर्वरत्नमय । अत्यासण्हा लट्ठाघट्ठामट्ठा नीरया निम्मला निष्पंका निक्कंकडच्छाया । आच्छा श्वेतकरो धराछे मसल्याछे रजरहित निर्मल निर्कंप कचरादिकेरहित । सप्पभा सस्सिरिया सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । प्रभासहित सश्रीक उद्योतसहित प्रसन्नकारी दखवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप । एत्थण आरणअच्चुयाण देवाण तिण्णिविमाणावाससया हवंतित्तिमक्खाय । इहां आरण अच्युतनामेदेवताना तीनसोविमान केवलीये कह्या । तेणंविमाणासव्वरयणामया । तेविमान सर्वरत्नमय । अत्यासण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला

णामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउ
ज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अभिरूवा तेसिणं विमाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडंसया पण्णत्ता, तं०—
असोयवडंसए सत्तवण्णवडंसए चंपगवडंसए जाव रूयवडंसए मज्झे जत्थ अच्चुयवडंसए, तेणं वडंसया सव्वरय
णामया जाव पडिरूवा, एत्थणं आरणच्चुयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पण्णत्ता। तिसुवि लोगस्स
असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे आरणच्चुया देवा जाव विहरंति, अच्चुए तत्थ देविंदे देवराया परिवसइ।
जहा पाणए जाव विहरति नवरं तिण्हं विमाणावाससयाणं दसण्ह सामाणियसाहस्सीणं चत्तालीसाए



जाव पडिरूवा। निर्मलसंनिर्मल यावत् प्रतिरूप। एत्थणं आरणअच्चुयाणय देवाणं तिण्हविमाणावाससया हवतित्तिमरुखायं। इहां आरण अच्युतदेव
ताना तीनसेविमान कवलीयें कह्या। तेसिणं कप्पाण बहुदेसभाए पचवडिसगा पं० तं०। तिहां भूम्यपट्टले नीपना विमानने घणें मध्यविच ले पचवतंस
कविमान कहेछै। असोयवडं० सत्तवण्ण० चंपगव० जायरूववं० मज्झे इत्थ अच्चुयव०। असोवतंसक स्फुटिकव० रत्नव० जातिरूपव० विचे इहां अच्युतव
तंसक। ते वडेंसया सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। ते वतंसक सर्व रत्नमय यावत् प्रतिरूप। एत्थणं आरणअच्चुयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठा० पं०।
इहां आरण अच्युतदेवतारा पर्याप्ता अपर्याप्तारा ठामकह्या। तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे। तीन वीललोकने असंख्यातमेंभागे हुवे। तत्थणं बहवे
आरणअच्चुयगादेवा परिवसंति जाव विहरंति। तिहां घणां आरण अच्युतदेवता वसेछे यावत् विचरै। अच्चुए इत्थ देविंदेवरायाणो परिवसंति।
अच्युतनामे इहां देवेंद्र देवराजापणें वसेछै। जहा आणए जाव विहरंति। जिम आनतनोपरे यावत् विचरै। नवरं तिण्हविमाणावाससयाणं दसण्हं
सामाणियसाहस्सीणं चत्तालीसाए आयरक्खदेवसाहस्सीणं आहेवच्चं कुव्वमाणं जाव विहरंति। एतलोविशेष तीनसेविमान कह्या दशहजार सामानि
कदेवता ४० हजार आत्मरक्षक देवेकरो अधिपतिपणें यावत् विचरै—बत्तीसट्ठावीसा बारसअट्ठचउरसयसहस्साय पण्णचत्तालीसा कुवसहस्सासहस्सा

आयरक्कदेवसाहस्सीणं आहेवच्चं जाव कुव्वेमाणे विहरति, बत्तीसऽट्ठावीसा बारसऽट्ठचउरोसयसहस्सा पन्नाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणऽच्चुएतिण्णि । सत्तविमाणस साइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ २ ॥ सामाणियसंग्गहणीगाहा—चउरासीईऽसीति बावत्तरिसत्तरीयसट्ठीए । पन्नाचत्तालीसा तीसावीसादससहस्सा ॥ ३ ॥ एएचेव आयरक्का चउगुणा कहिणं भंते ! हिट्ठिमगेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पण्णत्ता ? कहिणं भंते ! हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! आरणऽच्चुयाणं कप्पाणं उप्पिं जाव उड्ढं दूरं उप्पइत्ता एत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं ततो गेवेज्जविमाणा



र ॥ १ ॥ सौधर्मे ३२ ईशाने २८ सनत्कुमारे १२ माहेंद्र ८ ब्रह्मेंद्रे ४ शतसहस्र लांतके ५० सहस्र शुक्रे ४० हजार सहस्रारे ६ ॥ १ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणाच्चुएतिण्णि सत्तविमाणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु । आनत प्राणत कल्पे ४०० आरण अच्युते पहिलोत्रिके १११ हि० त्रिके १०७ त्र० त्रि के १०० पंचानुत्तरे ५ एवं सर्व ३२३ हुवे ॥ २ ॥ सामाणियाणगाहा । हिवे सामानिकदेवता संघयननी गाथायेछे—चलसीतिअसीइबावत्तरि सत्तरिसट्ठी यपण्णचत्ताला तीसाबीसादससहस्सा एएसिंआयरक्खचउगुणिया ॥३॥ चौरासीसहस्र सौधर्मे ईशाने ८० सहस्र सनत्कुमारे ७२ सहस्र माहेंद्रे ७० सहस्र ब्र ह्मेंद्रे ६० सहस्र लांतके ५० सहस्र शुक्रे ४० सहस्र सहस्रारे ३० सहस्र आनतप्राणते २० सहस्र आरणअच्युते १० सहस्र इणांरा ए आत्मरक्षकदेवता जा णवा । कहिणंभंते हिट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहा हेभगवन् हेठला ग्रैवेयकना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या । कहिणं भंते हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति । किहां हेभगवंन् हेठला ग्रैवेयकदेवता वसेछे । गोयमा आरणअच्चयाणं कप्पाणं उप्पिं जाव उड्ढं उप्पइत्ता । हे गौतम आरण अच्युत कल्पथी ऊंचाजाईजे ऊपरि यावत् । एत्थण हिट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं तओगेविज्जगविमाण पत्थडा पं० । इहां हेठला ग्रैवेयक ना देवता वसेछे त्रिण ग्रैवेयकना प्रतर कह्या । पाईणपडीणायया उदीणदाहिणविच्छिण्णा पडिपुण्णचंद संठाणसंठिया । पूर्वपश्चिमे लांबा उत्तरदक्षिण

पत्थइा पन्नत्ता पाईणपडीणायगा उदीणदाहिणविच्छिन्ना पडिपुन्नचंदसंठाणसंठिया अच्चिमालीभासरासिवन्नाभा सेसं जहा बंभलोगे जाव पडिरूवा, तत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं एक्कारसुत्तरे विमाणावास सए हवंतीति मक्खायं तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा, एत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्ताणं २ ठाणा पन्नत्ता। तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति सव्वे समम्हिड्ढीया सव्वे समजुतीया सव्वे समजसा सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अ



पिहुला पूर्णचन्द्र संस्थानेसंस्थितछै। अच्चिमाली भासिरासिवर्णाभा सेसं जहा बंभलोए जाव पडिरूवा। किरणनीश्रेणीकरी आभासहित जिम ब्रह्मलोक तिम यावत् प्रतिरूप। तत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाण इक्कारसुत्तरविमाणावाससए हवतित्तिमक्खायं। तिहां हेठली ग्रैवेयकनादेवता एकसौइग्यारह विमाननीसंख्याकही तीर्थंकरे। तेणं विमाणा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा। ते विमान रत्नमय यावत् प्रतिरूप। तत्थणं हेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०। तिहां हेठला ग्रैवेयकदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। तिसुविलोगस्स असंखिज्जइभागे। तीन बोललोकने असंख्यातमेंभागे हुवे। तत्थणं बहवे हेट्ठिमगेविज्जगा देवा परिवसंति। तिहां घणां हेठलाग्रैवेयकनादेवता बसेछै। सव्वेसमम्हड्ढिया सव्वे समज्जुइया सव्वेसमज्जसा सव्वेसमब्बला सव्वेसमाणुभावा। सर्व महर्द्धिक समऋद्धि समद्युतिकरी सर्वसरीखे यश बलेसरीखा सर्वसरीखेभावे। महासुक्खा अहेंदा अप्पेसा अपुरोहिया। महासुखी इंद्र केहनेनहो केहने दासनथी पुरोहितनथी। अहमिंदानाम तदेवगणा पं०। सघला इद्रनीपरे रहेछै ते देवगण कह्या। समणाउसो। अहो समणो आयुषावन्तो। कहिणंभंते मज्झिमगेवेज्जगदेवाणगा परिवसंति। किहां हेभगवन् मध्यमग्रैवेयकनादेवता बसेछै। गोयमा हिट्ठिमगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता। हेगौतम हेठला ग्रैवेयकथी ऊपर जंचा फेर यावत् जाइये। एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं तओ पज्जत्ता २ णं ठाणा पं०। तिहां मध्यम ग्रैवेयकदेवताना पर्याप्ता अपर्याप्ताना ठामकह्या। कहिणंभंते मज्झिमगेविज्जगादेवा परिवसंति। किहां

॥ मूलं ॥

णिंदा अपेस्साअपुरोहिया अहमिंदा नामं ते देवगणा पन्नत्ता । समणाउसो ! कहिणं भंते ! मज्झिमगाणं गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! मज्झिमगेविज्जगदेवा परिवसंति ? गोयमा ! हेट्ठिमगेविज्जगाणं उप्पिं सपक्खिं सपडिदिसिं जाव उप्पइत्ता एत्थणं मज्झिमगेविज्जगदेवाणं तओगेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता पाईणपडीणायता जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं नवरं सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवंतीति मक्खाए, तेणं विमाणा जाव पडिरूवा एत्थणं मज्झिमगेवेज्जाणं देवाणं जाव तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे मज्झिमगेवेज्जगा देवा परिवसंति जाव अहमिंदा नामं देवगणा पन्नत्ता । समणाउसो ! कहिणं भंते ! उवरिमगेवेज्जगा देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा पन्नत्ता । कहिणं भंते ! उवरिम

॥ भाषा ॥

हेभगवन् मध्यम ग्रैवेयकना देवता बसेछे । गोयमा हिट्ठिमगेविज्जगाणं उप्पिंसपक्खिं सपडिदिस जाव उप्पइत्ता । हेगौतम हेठला ग्रैवेयकथकी ऊपर जंचा चौफेर यावत् जाइजे । एत्थणं मज्झिमगेपिज्जदेवाणं तओगेविज्जविमाणपत्थडा पं० । तिहां मध्यमग्रैवेयकना देवता तीनग्रैवेयकना प्रतरछे । पाईण पडीणायया एवं जहा हिट्ठिमगेविज्जगाणं नवर सत्तुत्तरे विमाणावाससए हवतितिमक्खाय तेणं विमाणा जाव पडिरूवा । पूर्वपश्चिमें लांबा उत्त जिम हेठलाग्रैवेयकनोपरे एतलोविशेष एकसोसात विमान तीर्थंकरे देवेकह्या तेविमान यावत् प्रतिरूप । एत्थण मज्झिमगेविज्जगाणं जाव तिसुविलोग स्स असंखिज्जइभागे । इहां मध्यमग्रैवेयकना देवताछे यावत् तीन बोललोकने असंख्यातमेंभागे हुवे । तत्थणं बहवे मज्झिमगेवेज्जगदेवा परिवसंति । तिहां घणां मध्यम ग्रैवेयकना देवता बसेछे । जाव अहमेंदानामे तेदेवगणा पं० । यावत् अहमिंद्रानामापदक कह्या । समणाउसो ! अहोश्रमण आयुषा वन्तो । कहिणंभते उवरिम गेविज्जगदेवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पं० । किहां हेभगवन् ऊपरिला ग्रैवेयकना देवता पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठामकह्या । कहिणंभते उवरिमगेविज्जगादेवा परिवसंति । किहां हेभगवन् ऊपरलाग्रैवेयकना देवता बसेछे । गोयमा मज्झिमगेविज्जगाण जाव उप्पइत्ता । हेगौत

॥ टीका ॥

किंरूपाः पुनस्ते इत्याह अहमिंद्रानाम ते देवगणाः प्रज्ञप्ताः ? हेश्रमण हेआयुष्मन् ! सिद्धसूत्रे एगाजोयणकोडीइत्यादि ॥ परिरयपरिमाणं विष्कं भवग्गदहगुणेत्यादि ॥ करणवशा त्स्वय मानेतव्यं सुगमत्वात् क्षेत्रसमासटीका वा परिभावनीयाः तत्र पंचचत्वारिंशल्लक्षप्रमाणविष्कंभमनुष्यक्षेत्रपरि रयस्य एतावत्प्रमाणस्य सविस्तरं भावितत्वात् तस्याश्च ईषत्प्राग्भारायाः पृथिव्या बहुमध्यदेशभागे अष्टयोजनिकमायामविष्कंभाभ्याम ऽष्टयोजन

॥ मूल ॥

गेविज्जगा देवा परिवसंति ? गोयमा ! मज्झिमगेवेज्जगदेवाणं उप्पिं जाव उप्पइत्ता तत्थणं उवरिमगेवेज्ज गाणं देवाणं तत्थ गेविज्जगविमाणपत्थडा पन्नत्ता । पाईणपडीणाय सेसं जहा हेट्ठिमगेविज्जगाणं नवरं एगे विमाणावाससए भवंतीति मक्खाए, सेसं तहेव भाणियव्वं जाव अहमिंदा नामं ते देवगणा पन्नत्ता समणाउसो ! एक्कारसुत्तरंहे ट्ठिमएसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए । सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्तरविमाणा ॥ १ ॥ कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्ता २ णं ठाणा पन्नत्ता ? कहिणं भंते ! अणुत्तरोववाइया

॥ भाषा ॥

म मध्यमग्रैवेयकथी ऊंचा यावत् ऊंचा । एत्थणं उवरिमगेविज्जगाणं देवाणं तत्थगेविज्जविमाणपत्थडा प० इहां ऊपरिलाग्रैवेयकना देवताके तीन विमा नना प्रतरके । पाईण पडीणाइया सेसं जहा हिट्ठिमगेविज्जगाणं । पूर्वपश्चिम लांबा शेष सर्व जिम नीचलाग्रैवेयकनीपरे । णवरं एगेविमाणावाससए भवतित्तिमक्खायं सेसंतंचेव भाणि० जाव अहमिंदानामे तद्देवगणा पं० । एतलाविशेष एकसोविमानके तिर्थंकरे कह्यो शेष तिमहीज कहवो यावत् अ हमिंद्र नामदेवता समूहकह्या । समणाउसोगाहा भोश्रमणा आयुषावन्तो गाथा । इक्कारसुत्तरहि ट्ठमसुसत्तुत्तरंचमज्झमए । सयमेगंउवरिमए पंचेवअणुत्त रविमाणा ॥ १ ॥ हेठलाग्रैवेयकनेविषे एकसोइग्यारहविमान मध्यमग्रैवेयक पांचविमान अनुत्तरविमाने। कहिणंभंते अणुत्तरोववाइयादेवा परिवस ति । किहां हेभगवन् अनुत्तरवासी देवता वसेके । गोयमा इमीसे रयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ । हेगौतम ए रत्नप्रभा पृथि वीथी घणो समरमणीक भूमिभागथकी । उड्ढंकांदिम सूरिय गहगणणक्खत्ततारारूवाणं । जंचा सूर्य चंद्र ग्रहगण नक्षत्र तारारूपथी । बहूइंजोयणस

॥ मूल ।

देवा परिवसंति ? गोयमा ! इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ उड्ढं दूरं उप्पइत्ता सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोगलंतगसुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुयकप्पा तिण्णियअट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए विती वइत्ता तेणं परं दूरं गता णीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा पंचदिसिं पंच अणुत्तरा महतिमहालया महाविमाणा पण्णत्ता, तंजहा—विजये वेजयंते जयंते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । तेणं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा सण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासा

॥ भाषा ।

यादं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुगाओ जोयणकोडीओ बहुगाओ जोयणकोडाकोडीओ । घणां योजनना सैकडा घणां योजनना सहस्र घणां योजननाकोडो घणांयोजननो कोडाकोडो । उडढ जाव उप्पइत्ता । जचा. जाइजे । सोहम्मीसाणसणकुमार माहद बंभलोग लांतग सक्कसहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुय कप्पा । सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्म लांतक शुक्र सहस्रार आनत प्राणत आरण अच्युत । तिण्णिय अट्ठारसुत्तरे गेविज्जविमाणावाससए वीइवइत्ता । ऊपर तीनसे अट्ठारह ग्रैवेयकनाविमान मूकीने ऊंचाजाईजे । तेणं परंदूर गया नीरयावि तिमिरा विसुडा । तिहांथकी दूरगया रजरहित अंधारेरहित शुद्ध । पंचदिसिं पंच अणुत्तरामहइमहालया महाविमाणा प० ते० । पांचेदिशि पच अणुत्तर उत्कृष्टा मोटाथीमोटा विमान कह्या ते कहेछे—विजए वजयंते जयते अपराजिए सव्वट्ठसिद्धे । विजय वैजयत जयत अपराजित सर्वार्थसिद्ध ५ । तेणं विमाणा सव्वरयणामया । ते पांचविमान सर्व रत्नमयछे । अत्या सण्हा लट्ठा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडछाया । आछा सूक्ष्मपुद्गलनोपना हाथेघस्या मसल्या रजविना निर्मल कचरारहित । सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाइया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा । प्रभासहित सश्रीक उद्योतसहित प्रस

प्रमाणं क्षेत्रं चाष्टौ योजनानि बाहुल्येन मध्यत्वेनो क्षैस्त्वेनेति भावः प्रज्ञप्ता तदनंतरं सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च मात्रया श्लोकया २ प्रदेशप्रहान्या

दीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एत्थणं अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं ठाणा प० । तिसुवि लोगस्स असंखेज्जइभागे तत्थणं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति सव्वे समसहड्ढिया सव्वे समबला सव्वे समाणुभावा महासोक्खा अणिंदा अप्पेस्सा अपुरोहिया अहमिंदा ते देवगणा पण्णत्ता । स मणाउसो ! कहिणं भंते ! सिद्धाणं ठाणा पण्णत्ता । कहिणं भंते ! सिद्धा परिवसंति ? गोयमा ! सव्वट्ठस्स महाविमाणस्स उवरिल्लाओ थूभियग्गाओ दुवालजोयणे उड्ढं अबाहाए एत्थणं इसीपब्भारा नामं पुढवी प०, पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं एगं जोयणकोडीतिवायालीसं च सयसहस्साइं तीसं सह

वकारो देखवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप । एत्थणं अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं पज्जत्ता २ ठा० पं० । इहां अणुत्तरवासीदेवता पर्याप्ता अपर्याप्तानां ठाम कह्या । तिसुविलोयस्स असंखिज्जइभागे । तीने बोललोकने असंख्यातमेभागे । तत्थणं बहवे अणुत्तरोववाइया देवा परिवसंति । तिहां घणां अणुत्तरवासीदेवता बसेछे । सव्वे समइड्ढिया सव्वेसमबला सव्वेसुमहाणुभावा महासुक्खा । सर्व महर्द्धिक सर्व समबला सर्व महानुभाव महासुखी । अणिंदा अप्पेसा अपुरोहिया अहमिंदानामं देवगणा पं० । इन्द्रनथी प्रेष्यानथी पुरोहितनथी सर्व अहमिंद्रनामे देवकह्या । समणाउसो । श्रीश्रमण आयुषावन्तो । कहिणंभंते ठाणा प० । किहां हेभगवन् सिद्धना स्थानक कह्या । कहिणंभंते सिद्धा परिवसति । किहां हेभगवन् सिद्ध बसेछे । गोयमा सव्वट्ठस्सविमाण स्स उवरिल्लाओ थूभियगाओ दुवालस जोयण उड्ढं अबाहाए । हेगौतम सर्वार्थसिद्ध महाविमान ऊपरलो थूभिकाथकी १२ योजनप्रमाण ऊंचो आवा धाये । इत्थणं इसीप्पभारानाम पुढवी पं० । तिहां मनुष्यनी अपेक्षायें सविस्तरभाव माटे ईषत्प्राग्भारपृथिवी कही । पणयालीसंजोयणसयसहस्साइं आ यामविक्खंभेणं । ४५ लाखयोजन लांबपणें पिहुलपणें, हिवे परिधि कहछे - एगं जोयणकोडी बायालीसंचसयसहस्साइं । एककोडी योजन ४२ लाख

॥ टीका

परिहीयमाना सर्वेषु चरमांतेषु मक्षिकापत्रतोऽप्यतितन्वी अंगुलासंख्येयभागं बाहल्येन प्रज्ञप्ता स्थापनाः ईसिईवाति पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् ईषत्प्राग्भारा इति वा ईषूतिवा तन्वीवा शेषपृथिव्यपेक्षया अतितनुत्वात् तणुतणूइतिवाइति ॥ तनुन्योपि जगत्प्रसिद्धेभ्य स्तन्वी मक्षिका पत्रतोपि पर्यंतप्रदेशेति तनुत्वात् तनुतन्वी सिद्धिरिति वा सिद्धक्षेत्रस्य प्रत्यासन्नत्वात् सिद्धालय इति वा इति सिद्धक्षेत्रस्य प्रत्यासन्नतयोपचारतः सिद्धानामा लयः सिद्धालयः एवं मुक्ति रिति वा मुक्तालय इति चेत्यपि परिभावनीय तथालोकाग्रेवर्त्तमानत्वात् लोकाग्रमिति लोकाग्रस्य स्तूपि

॥ मूल

रसाइं दोन्नि य अउणापन्ने जोयणसए किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं पन्नत्ता । इसीपब्भाराएणं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिए खेत्ते अट्ठजोयणाइं बाहल्लेणं पन्नत्ते , ततो अणंतरं चणं माताए २ पएसपरिहाणी २ परिहायमाणी २ सव्वेसु चरिमंतेसु मच्छियपत्तातो तणुयरी अंगुलस्स संखेज्जइभागे बाहल्लेणं पन्नत्ता, इसीपब्भाराएणं पुढवीए दुवालसनामधेज्जा पन्नत्ता इसीतिवा इसीपब्भाराइवा तणुतिवा तणु

॥ भाषा

योजन । दोसियबीणा पन्नजोयणसएहिं किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेण पं० । दोहजारयोजननेविषै उगुणपंचास योजन कांईकविशेषाधिक परिधि कहिये । ईसिप्पभाराएणं पुढवीए बहुमज्झदेसभाए अट्ठजोयणिएखेत्ते अट्ठजोयणाइं बाहल्लेणं पं० । इम क्षेत्रसमासनी टीकाथी सर्व विस्तर जाणवो ईषत्प्राग्भारा पृथिवीनो घणों मध्यदेशभागे ८ योजनप्रमाणक्षेत्र ८ योजन बाहल्य ऊंचापणे एतलो कहिवो । तयाणंतरंचणं मायाए सपरिहाणीए परिहायमाणी २ । तिवारपछी सघलीदिशि विदिशिमांहिं २ प्रदेशे परिहरियेमान घटत २ थको । सव्वेसु चरिमंते समच्छियपत्ताउतणुयरी अंगुलस्स असंखिज्जइभागे बाहल्लेणं पं० । सघलाने छेहडे माखीनो पांखडो पिण पातलो अंगुलनो असंख्यातमेभागनो मांहिथे बाहल्यपणे कह्यो । ईसिपब्भाराणं पुढवीए दुवालसनामधिज्जा पं० तं० । ईषत्प्राग्भारा पृथिवीना १२ नामकह्या तेकहेछे । ईसिप्पभाराणं ताणुइवा सिद्धइवा सिद्धालएत्तिवा मुत्तोइवा मुत्तालएत्तिवा लोयग्गेत्तिवा लोयग्गथूभिएइवा लोयग्गपडिबुज्झणाइवा । एकदिशि पातलो तेमाटे ईषत्प्राग्भार मोटोपणेछे तेमाटे वेसो पातलोछे पातलोसूंपा

केव लोकाग्रस्तूपिका तया लोकाग्रेण प्रत्यूह्यते इति लोकाग्रप्रतिवाहिनी सत्वपाणभूतजीवसत्तसुहावहा इति ॥ प्राणा द्वित्रिचतुरिंद्रिया इति भूता स्तरवो जीवाः पञ्चेंद्रियाः शेषाः प्राणिनः सत्वा उक्तञ्च प्राणाद्वित्रिचतुः प्रोक्ता भूता श्च तरवः स्मृताः । जीवाः पंचेंद्रिया ज्ञेयाः शेषाः सत्वा उदीरिता ॥ १ ॥ सर्वेषां प्राणभूतजीवसत्वानां सुखावहा उपद्रवकारित्वाभावा त्सर्वप्राणभूतजीवसत्वसुखावहा सा च ईषत्प्राग्भारा पृथिवी श्वेता श्वेतत्वमेवो पमया प्रकटयति संखदलविमलेत्यादि शङ्खदलस्य शङ्खदलचूर्णस्य विमलोनिर्मलः स्वस्तिकः शङ्खदलविमलस्वस्तिकः स च मृणालं च दकरज श्च तुषारं च हिमं च गोक्षीरं च हार श्च तेषा मिव वर्णो यस्या स्या तथा उत्तानकमु त्तानीकृतं यत् छत्रं तस्य य त्संस्थानं येन संस्थिता उत्तानछत्रसंस्थानसंस्थितत्वं च प्रागुपदर्शितस्यापनातोभावनीयं ॥ सव्वज्जुणसुवन्नमयी सर्वात्मनाश्वेतसुवर्णमयी इसीपब्भाराएणमित्यादि ईषत्प्राग्भा

---

तणुयरीतिवा सिद्धितिवा सिद्धालएतिवा मुत्तीइवा मुत्तालएइवा लोयग्गेतिवा लोयग्गथूभियातिवा लोयपडिवुज्झणाइवा सव्वपाणभूयजीवसत्तसुहावहा वइवा । इसीपब्भाराणं पुढवी सेता संखदलविमलसोच्छिय मुणालदगरयतुसारगोखीरहारवन्ना उत्ताणयछत्तसंठाणसंठिया सव्वज्जुणसुवणमई अच्छा सण्हा लण्हा घठा मठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा ससिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अ

---

तलो सिद्धालय सिद्धत्वात् मुक्तिकर्मणा मुक्तित्वात मुक्तालयनोभावना ए ४ नाम गुणफलके लोकनेअग्र लोकने थूभिकानीपरे लोकाग्र ए प्रतिबुद्धत्वात् । सव्वपाण भूय जीव सत्त सुहाइवा । सर्व प्राण भूत जीव सत्त्वने तिहांजाय तेहने सुखदाई । ईसिपभाराणं पुढवी सेय सखदल विमलसोत्थिय मुणाल दगरय तुसार गोखीरहारवन्ना । ए १२ नोनाम ईषत्प्राग्भारपृथ्वी केहवीछै सेतनो थोपमा शङ्खदल जिसो निर्मल स्वस्तिक मृणाल कमलपत्र जलपरे जल नोरज सेतगोत्र मोतीनोहार जजलो जेहवो दूधसन । उत्ताणयछत्तसठाणसंठिया सव्वज्जुण सुवणमई आ । उत्तान छत्रने संस्थाने संस्थितछे सर्व अर्जुन सेत सुवर्णमय । अत्था सण्हा लट्ठ घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पका निक्कंकडछाया । आछा सूक्ष्मपुद्गल निष्पन्न घठारा मठारा नीरज निर्मल

॥ टीका ॥
॥ मूल ॥
॥ भाषा ॥

रायाः पृथिव्या ऊर्द्धं सीयाए इति निःश्रेणिगत्या योजने लोकांतो भवति तस्य च योजनस्य य उपरितनं गव्यूतं चतुर्थं तस्य गव्यूतस्य यः सर्वो परितनो य द्भागो ऽत्रमितिवाक्यालंकारे सिद्धाभवंतः सादिकाः कर्मक्षयानंतरं सिद्धत्वभावात् एतेन अनादिबुद्धपुरुषप्रवादप्रति पत्ते आवेदितो द्रष्टव्यः अपर्यवसिता रागाद्यभावेन प्रतिपातासंभवात् रागादयो हि सिद्धत्वा च्यावयितुं प्रभविष्णवो न च ते भगवतां संति तेषां निर्मूलकाषंक षितत्वात् न च निर्मूलकाषंकषिता अपि भूयः प्रादु र्भवंति बीजाभावादिति तथा नेकै जीतिजरामरणैर्जन्मजरामृत्युभि र्यश्च तासु योनिषु संसारः संसरणं तेन च यः कलंकलीभावः कदर्थ्यमानता य श्च दिव्यसुखमनुप्राप्ता मपि पुनर्भव संसारे गर्भवसति प्रपञ्चः तौ समतिक्रांता अत एव शा



निरूवा पन्निरूवा इसीपब्भाराएणं सीताएजोयणंमिलोगंतोतस्सणं जोयणस्स जेसे उवरिल्ले गाऊए तस्सणं गाउयस्स जेसे उवरिल्ले छब्भागे एत्थणं सिद्धा भगवंतो सादिया अपज्जवसिया अणेगजातिजरामरणजो निसंसारकलंकलीभावपुणब्भवगब्भवासवसही एवंच समइक्कंता सासयमणागयद्धं कालं चिठंति, तत्थवियते



निःपङ्क निकंकटछाया। सप्रभा सश्रिरिया सउज्जोया पासाईया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा ईसिप्पभाराणं मायाए। प्रभासहित सश्रीक शो भायमान उद्योतसहित मनप्रसन्नकारी देखवायोग्य अभिरूप प्रतिरूप ईषत्प्राग्भारनी माफा। जोयणम्मिजोयंतो तस्सणं जोयणस्स जेसे उवरिल्लेगाउए तस्सणं गाउयस्स जेसे उवरिल्ले छब्भागे। योजने लोकांते ते योजने जेते ऊपरिलोगाऊ छेहलो ते गाउनो जे ऊपरिलोगाऊनो छट्ठोभाग। एत्थणं सिद्धाभयवंतो साईया अपज्जवसिया। तिहां सिद्ध भगवन्त सौधाकर्मदेवे अनादिपुरुषे दीठा कह्या अपर्यवसित रागादिकने अभाव पाम्यो ऊपजवो। अणेगजाइजरामरण जोणिसंसार कलकलीभाव पुणब्भव गब्भवाससही। अनेकजाति जरामरणयोनि संसार तेहनो कलेकलो कदर्थभाव मूको दिव्यसुख पाम्या पुनर्भवसंसारे गर्भनो वसति प्रपंचेकरीने वसे। एवंच समयके तासासयमणागयद्धंकालं चिट्ठंति। इम समय तिका ते तेणें दुखआकम्मनथी एतले शाखत अनागतकालपर्यंत रह्याछे तिहांथी तेठामनो च्यवनथी। तत्थवियते अवेया अवेयानानिम्मला। तिहां सिद्धक्षेत्र पहुंताछे भगवन्त ते वेदरहित

॥ टीका

श्वतम नागतं कालं तिष्ठंति ॥ तत्थवियतेअवेयाइत्यादि ॥ तत्रापि च सिद्धमेत्रगताः संत ते नगवंतो ऽवेदाः पुरुषवेदादिवेदरहिता अवेदनाः सातासातावेदनाजावात्, निर्ममाममत्वरहिताः असंगाः बाह्याभ्यन्तरसङ्गरहिताः, कस्मादेवमतआह-संसारविप्रमुक्ता हेतोःप्रथमा यतः संसाराद्वि प्रमुक्ता स्तस्मादवेदा अवेदना निर्ममा असंगाश्च, पुनःकथंनूता इत्याह-एएसनिवत्तसंठाणा ॥ प्रदेशै रात्मप्रदेशै र्नतु बाह्यपुद्गलैः शरीरपञ्चकस्या पि सर्वात्मना त्यक्तत्वात्, निवृत्तं निष्पन्नं संस्थानं येषांते प्रदेशनिवृत्तसंस्थाना अत्र शिष्यः पृच्छन्नाह-कहिंपडिहयासिद्धाइत्यादि ॥ कहिं इत्यत्र सप्तमी तृतीयार्थेप्रा कृतत्वात् ॥ यथा तिसुतिसुअलंकियापुढवीइत्यादि ॥ ततोयमर्थः-केन प्रतिहताः केन सूवलिता सिद्धा मुक्ता स्तथा क्व कस्मिन्

॥ मूल

अवेदा अवेयणा निम्ममा असंगाय संसारविप्पमुक्का पदेसनिव्वत्तिसंठाणा । कहिंपडिहयासिद्धा कहिंसि ठापइट्ठिया । कहिंबोंदींचइत्ताणं कत्थगंतूणसिज्झइ ॥ १ ॥ अलोएपडिहयासिद्धा लोयग्गेयपइट्ठिया । इहबोंदीचइत्ताणं तत्थगंतूणसिज्झइ ॥ २ ॥ दीहंवाहस्संवा जंचरिमनवेहविज्जसंठाणं । तत्तोतिनागहीणा सिद्धाणोगाहणाभणिया ॥ ३ ॥ संठाणंतुइहं नवंचयंतस्सचरमसमयम्मि । आसीयपदेसघणं तंसंठाणंतहिं

॥ भाषा

वेदनारहित ममतारहित असंगाय संसारविप्पमुक्का एएसनिव्वत्तिसंठाणा २ । बाह्याभ्यतर संगरहित संसारथीमूकाणा आत्मप्रदेशे बाह्यपुद्गल ५ शरी र संस्थान रहितछै । कहिंपडिहयासिद्धा कहिंसिद्धापयट्ठिया कहिंबोंदिंचइत्ताणं कत्थगंतूणसिज्झइ ॥१॥ शिष्यपूछे किणें प्रतिहत केणें संकलितछै सिद्ध किहां सिद्धरह्याछै किहां बोधशरीर मूकीने किहां जाईने सीझै—अलोएपडिहयासिद्धा लोयग्गेयपयट्ठिया इहंबोंदिंचइत्ताणं तत्थगंतूणसिज्झइ॥ २ ॥ अलोककरी खल्याछै धर्मास्तिकायादिकनो अभाव लोकाग्रे रह्याछै इहां मनुष्यलोके शरीरछोडीने तिहां जाईने सीझै—दीहंवाहस्सवाजं चरिमभवे हविज्जसंठाण तत्तोतिभागहीणा सिद्धाणोगहणाभणिया ॥ ३ ॥ दीर्घ ५०० धनुष ह्रस्व एकहाथ प्रमाणे जे छेहलेभवे संस्थाने हुवे ते संस्थानथकी त्रिभाग हीनपणें सिद्धनी अवगाहना कही, हिवे स्पष्ट देखाडेछै—जंसंठाणंतुइह भवंचयंतस्सचरमसमयम्मि असीयएएसघणं तंसंठाणंतहिंतस्स ॥ ४ ॥ जे इहां म

॥ टीका ॥

स्थने सिद्धाः प्रतिष्ठिता अवस्थिताः, तथा क्व कस्मिन् क्षेत्रे बोंदिं स्तनुः शरीरमित्यनर्थांतरं तां त्यक्त्वा क्व गत्वा सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवंति, सिज्झइत्यत्रानुस्वारलोपो द्रष्टव्यः, अथचैकवचनोपन्यासोपि सूत्रशैल्या न विरोधनाक् तथाचान्यत्राप्येवं प्रयोगः-वत्यगधमलंकार इत्यौनुसयणाणिय। अच्छंदाजंनजुंजंति नसेचाइत्तिवुच्चई इति। एव शिष्येण प्रश्ने कृते सूरिराह-अलोएपडिहयासिद्धाइत्यादि ॥ अत्रापि सप्तमी तृतीयार्थे, लोकेन केवलाकाशास्तिकायरूपेण प्रतिहताः स्खलिताः सिद्धाः इह तत्र धर्मास्तिकायाद्यभावा तदानंतर्यावृत्तिरेव प्रतिस्खलनं नतु संबंधेसति विघातोऽप्रतिघत्वात्, सप्रतिघानांहि संबंधेसति विघातो नान्येषामिति। तथा लोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्य अग्रं मूर्द्धनि प्रतिष्ठिताः अपुनरागत्या व्यवस्थिता इह मनुष्यलोके बोंदिं तनुं त्यक्त्वा तत्र लोकाग्रे समयान्तरप्रदेशान्तरास्पर्शनेन गत्या सिध्यन्ति निष्ठितार्था भवन्ति, सम्प्रति तत्रगतानां यत्संस्थानमान तदभिधित्सु राह-दीहंवाहस्संवाइत्यादि॥ दीर्घं वा पञ्चधनुःशतप्रमाणं ह्रस्वं वा हस्तद्वयप्रमाणं, वा शब्दात् मध्यमंवा विचित्रं यचरमभवे पश्चिमभवे भवेत् संस्थानं तत स्तस्मा त्संस्थाना त्त्रिभागहीना वदनोदरादिरंध्रपूरणेन तृतीयेन भागेन हीना सिद्धानामवगाहना अवगाहन्ते अस्यामित्यवगाहना स्वावस्थैव भणिता तीर्थकरगणधरैरिति, अत्र गतः संस्थानप्रमाणापेक्षया त्रिभागहीनं तत्र संस्थानमितिभावः, एतदेव स्पष्टतरमुपदर्शयति-जंसठाणंतुइहंइत्यादि ॥ यत्संस्थानं यावत्प्रमाणं संस्थानं इह मनुष्यभवे आसीत् तदेव, भवंति प्राणिनः कर्मवशवर्तिनोऽस्मिन्निति भवं शरीरं त्यज्यतः परित्यज्यतः कार्ययोगं परिजिहानस्येति भावः, चरमसमये सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिध्यानबलेन वदनोदरादिरंध्रपूरणात्त्रिभागेन हीनं प्रदेशघनमासीत्॥ तंसंठाणंतहिंतस्सेति॥ तदेव च प्रदेशघनं मूलप्रमाणापेक्षया त्रिभागहीनप्रमाणं संस्थानं तत्र लोकाग्रे तस्य सि

॥ मूल ॥

तस्स ॥ ४ ॥ तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोयहोइनायव्वो। एसाखलुसिद्धाणं उक्कोसोगाहणाभणिया ॥ ५ ॥
चत्तारिरयणीउ रयणितिभागूणियायबोधव्वा। एसाखलुसिद्धाणं मज्झिमोगाहणाभणिया ॥ ६ ॥ लगाय

॥ भाषा ॥

नुथभवे संस्थानहुवे तेभवे कर्मवशें शरीरछ डींने छेहलेसमयें सूक्ष्मक्रियाध्यान वदनोदररंध्र पूरण करिये धनआसीत हुवे ते प्रदेश घनमूल प्रमाणपेक्षाये

॥ टीका ॥

ङस्य ना न्यदिति । सांप्रतमुत्कृष्टावगाहनादिनेदमिन्नाम निधित्सु राह-तिन्निसयातित्तीसाइत्यादि ॥ त्रीणिशतानि त्रयस्त्रिंशानि त्रयस्त्रिंशदधिकानि धनुस्त्रिभाग श्च नवति बोद्धव्यः एषाखलु सिद्धाना मुत्कृष्टावगाहना ज्ञपिता तीर्थंकरगणधरैः सा च पञ्चधनुःशततनुकानाम वसेया, ननु मरुदेवा नाभिकुलकरपत्नी नाभे श्च पञ्चविंशत्यधिकानि पंचधनुःशतानि शरीरप्रमाणं यदेवच तस्य शरीरमानं तदेव मरुदेवाया अपि, संघयणं संठाणं उच्चत्तं चेव कुलगरेहिसमंमितिवचनात्, मरुदेवाच ज्ञगवती सिद्धा तत स्तस्या देहमानस्य त्रिज्ञागे पातिते सिद्धावस्थायाः साद्धानि त्रीणि धनुःशतान्येवावगाहना प्राप्नोति कथ मुक्तप्रमाणा उत्कृष्टावगाहना घटते? इति नैषदोषः मरुदेवायाः नाभेः किंचिदूनप्रमाणत्वात्, स्त्रियोह्युत्तमसंस्थाना उत्तमसंस्थानेज्यः पुरुषेज्यः स्व २ कालापेक्षया किंचिदूनप्रमाणा ज्ञवन्ति ततो मरुदेवापि पंचधनुःशतप्रमाणेति न कश्चिद्दोषः, अपिच हस्तिस्कन्धाधिरूढा संकुचितांगी सिद्धा ततः शरीरसंकोचनज्ञावा न्नाधिकावगाहनासंज्ञव इत्यविरोधः, आहच न्नाष्यकृत्-कहमरुदेवामाणं नाभीतोजेणकिंचि

॥ मूल ॥

होइरयणी अट्ठेवयअंगुलाइसाहियाई या । एसाखलुसिद्धाणं जहन्नोगाहणान्नणिया ॥ ७ ॥ नगाहणाएसिद्धा

॥ भाषा ॥

त्रिभाग हीनसंस्थानहुवें, हिवे ५०० धनुषअपेक्षायें ३ ३३ धनुष ऊपरे धनुषनो त्रीजोंभाग सिद्धनो अवगाहना हुवे—तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोहोइनायव्वो एमखलुसिद्धाणं उक्कोसोगाहणाभणिया ॥ ६ ॥ ५०० धनुषनो कायायें सिद्धहुवे तेहनो ए निश्चे सिद्धनो उत्कृष्टअवगाहना कही। चत्तारिरयणीओ रयणतिभागूणियायबोधव्वा एमाखलुसिद्धाणं मज्झिमओगाहणाभणिया ॥ ७ ॥ हिवे ७ हाथनो अवगाहना हुवे तेहने सिद्ध पणि एतलो अवगाहना ४ हाथनो त्रीजोंभाग ऊंणोहुवे जेहवो ७ हाथ देहहुवे ए निश्चे सिद्धनो मध्यमकही अवगाहना —एगायहोइरयणी अट्ठेवयअंगुलाइं साहियाइया एसाखलु सिद्धाणंजहन्नियोगाहणाभणिया ॥ ८ ॥ हिवे साढेतीनहाथनो देहोहुवे तेहनो अवगाहना कहेछे एक ऊपर हाथ आठअंगुलो कहिये साढातीन ए जंण हाथ देहोहुवे ए निश्चे सिद्धनो जघन्यअवगाहना भगवंतेकही—उगाहणायसिद्धा भवत्तिभागेणहुतिपरहीणा संठाणमणेकत्था जरामरणाविप्पमुक्काणं ॥ ९ ॥ जेहनो अवगाहनायें सिद्धा तेहनो अवगाहनायको त्रिभागयदनोदरादि पूर्णकहिये पूर्णकरो हीन हुवे संस्थान अनेकेकरो स्युं खे

॥ टीका

दूणासा तोकिरपंचसयच्चिय अहवासंकोचतोसिद्धा॥१॥चत्तारियरयणीउ इत्यादि॥चतस्रोरत्नयो रत्निश्च त्रिभागोना च॥सा बोधव्वाएसाखलुसिद्धाना मवगाहना भणिता मध्यमा आह-जघन्यपदे सप्तहस्तोच्छ्रितानां मागमे सिद्धि रुक्ता तत एषा जघन्या प्राप्नोति कथं मध्यमा तदयुक्तं वस्तुतत्त्वाप रिज्ञानात्, जघन्यपदेहि सप्तहस्तानां सिद्धि रुक्ता तीर्थंकरापेक्षया सामान्यकेवलिनां तु हीनप्रमाणानामपि भवति इदमपि चावगाहनामानं चिंत्य ते सामान्यसिद्धापेक्षया ततो न कश्चिद्दोषः, एगायहोयइत्यादि॥एकारत्निः परिपूर्णा अष्टौ चांगुलान्यधिकानि एषा भवति सिद्धा नामवगाहना जघन्या साच कूर्मापुत्रादीनां द्विहस्तानामवसेया, यदिवा सप्तहस्तोच्छ्रितानामपि यन्त्रपीलनादिना संवर्त्तितशरीराणा माहच भाष्यकृत्-जेठाणंपच धणुसय मज्झायसत्तहत्थस्स। देहत्तिभागहीणा जहन्नियाजाविहत्थस्स॥१॥सत्तूसिएसुसिद्धी जहन्नतोकहंमिहविहत्थेसु साकिरतित्थयरेसु सेसाणंसि ज्झमाणाणं॥२॥तेपुणहोज्जविहत्था कुम्मापुत्तादयोजहन्नेणं। अन्नसवच्छियसत्त हत्थसिद्धस्सहीणत्ति॥३॥सांप्रतमुक्तानुवादेनैव लक्षणं सिद्धानाम भिधित्सुराह-उगाहणाएइत्यादि॥सुगमं, नवरं-अनित्थंत्थमिति॥इदं प्रकारमापन्नमित्थं इत्थं तिष्ठतीति इत्थंस्थ न इत्थंस्थ अनित्थंस्थं वदना दिशुषिरप्रतिपूरणेन पूर्वाकारान्यथात्वभावतो अनियताकारमितिभावः, योपिच सिद्धादिगुणेषु, सिद्धेनदीहेनहस्सेइत्यादिना, दीर्घत्वादीनां प्रति षेधः सोपि पूर्वाकारापेक्षया संस्थानस्यानित्थंस्थत्वा त्प्रतिपत्तव्यो नपुनः सर्वथा संस्थानस्याभावत आहच भाष्यकृत्-सुसिरपरिपूरणाउ पुव्वागार नहावक्खातो। संठाणमणित्थंत्थं जंजणियंअणिययागारं॥१॥एत्तोच्चियपरिसेहो सिद्धाइगुणेसुदीहयाईणं जमणित्थंत्थंपुव्वा गाराविक्खाएना भावो॥नन्वेतेसिद्धाः परस्परं देशभेदेन व्यवस्थिताः उतेति नेति तद्ब्रूमः कस्मादितिचेत्॥जत्थयइत्यादि॥यत्रैव देशे च शब्दस्य एवकारार्थं

॥ मूल ॥

भवतिभागेणहोइपरिहीणा। संठाणमणित्थंत्थं जंजरामरणविप्पमुक्काणं॥८॥जत्थयएगोसिद्धो तत्थअणंता

॥ भाषा ॥

रादि पूर्ववैकरी जरामरण विप्रमुक्तपणेंकरी सिद्धथाय—जत्थयएगोसिद्धो तत्थअणंताभवक्खयविमुक्का अण्णोण्णसमोगाढा पुट्ठासव्वेविलोगंते॥१०॥जिहां एक सिद्धछे तिहां अनन्तासिद्ध भवक्षयथकी मूकाणा सिद्धक्षेभावें करीरह्याछे किण किम अन्योन्य समवगाढपणे अचित्तपरिणाम भणी धर्मास्तिकायनीप

॥ टीका ॥

त्वात्, एकः सिद्धो निर्वृत स्तत्रानन्ताऽवगाहनवक्तव्यविमुक्ता अत्र प्रथमतयग्रहणेन स्वेच्छया प्रवावतरणशक्तिमत्सिद्धव्यवच्छेदमाह-अन्योन्यसमवगाढा स्तथा विधाचिन्त्यपरिणामत्वा द्धर्मास्तिकायादिवत्, तथा स्पृष्टा लग्ना सर्वेपि लोकांते फुसइत्यादिस्पृशत्यनंतान् सिद्धान् सर्वप्रदेशै रात्मसंबंधिभि र्नि यमशः सिद्धः तथा तेपि सिद्धाः सर्वप्रदेशस्पृष्टेभ्यो ऽसंख्ययगुणा वर्त्तते ये देशप्रदेशैः स्पृष्टाः कथमितिचे दुच्यते, इहैकस्य सिद्धस्य यदवगाहनक्षेत्रं तत्रैकस्मिन्नपि परिपूर्णे अवगाढा अन्येप्यनन्ताः सिद्धाः प्राप्यंते अपरेतु ये तस्य क्षेत्रस्य एकैकं प्रदेशमाक्रम्यावगाढा स्तेपि प्रत्येकमनंता एवं द्वि त्रिचतुःपञ्चादिप्रदेशवृद्ध्या ये ऽवगाढा स्तेपि प्रत्येकमनंता स्तथा तस्य मूलक्षेत्रस्य एकैकं प्रदेशं परित्यज्य ये ऽवगाढा स्तेपि प्रत्येकमनंता एवंच सति प्रदेशवृद्धिहानिभ्यां ये समवगाढा स्ते परिपूर्णैकक्षेत्रावगाढेभ्यो ऽसंख्येयगुणा भवन्ति अवगाढप्रदेशाना मसङ्ख्यातत्वात्, आहच-एगेखेत्तेणंता पएसपरिवुड्ढीहाणिउ तहो। हुंतिअसंखेज्जगुणा असंखपएसोजमवगाढो॥ सम्प्रति सिद्धानेव लक्षणतः प्रतिपादयति-असरीरा इत्यादि॥ अविद्यमानश

॥ मूल ॥

तानवरकयविमुक्का । अन्नोन्नसमोगाढा पुढासव्वेविलोयंते ॥ ९ ॥ फुसइअणंतेसिद्धे सव्वपएसेहिंनियमसो सिद्धा । तेविअसंखेज्जगुणा देसपदेसेहिंजेपुढा ॥ १० ॥ असरीराजीवघणा उवउत्तादंसणेयनाणेय । सागा

॥ भाषा ॥

रे फरस्याछे लोगान्तकलगे करीने फरसे अनन्तासिद्ध सर्वप्रदेश ते आत्मासंबधी ते सिद्ध सर्वप्रदेश अर्थात्को असंख्यातगुणां जे प्रदेश फरसा किम कहि य एक सिद्धनो जे अवगाहनाक्षेत्रें एक प्रतिपूर्ण अवगाढे अनन्तासिद्ध हुवे बीजाक्षेत्र एकेक प्रदेशअवगाढने प्रत्येके अनन्ता तथा —फुसअणंतेसिद्धे सव्व पएसेहिंतियमसिद्धा तेवियसंखेज्जगुणा देसपदेसेहिंजेपुट्ठा ॥ ११ ॥ जिम त्रिण चार प्रदेशवृद्धि जे अवगाहना ते प्रत्येके अनन्ता तथा मूलक्षेत्र एकेक प्रसिद्ध प्रदेश परित्यागअवगाढ ते अनन्ता इमछे ३ । ४ प्रदेशहीनने अनन्ताप्रदेश वृद्धिहान कहे गाथा—कहमरुदेवामाणती नामीतोकिंचिऊणमाणासा किरपं चासयविय अहवासंकोचतोसिद्धा ॥ १ ॥ मरुदेवी ५२५ शरीरसिद्धो ३३३ ए बेसंबंद संकोचलात् प्रमाण औदारिकशरीर पांच रहितजीव घणां वद नादिरन्ध्र पूरणादिक उपयोगसहित दर्शनकरी ज्ञाने सामान्यविषय दर्शनविशेष ज्ञान साकारोपयोग अनाकारोपयोगसहित सुखसिद्धामें हिवे केवल

॥ टीका

रीरा अशरीरा औदारिकादिपञ्चविधशरीररहिता इत्यर्थः, जीवाश्च ते घनाश्च वदनोदरादिशुषिरपूरणात् जीवघनाः, उपयुक्तादर्शने केवलदर्शने ज्ञाने च केवलज्ञाने यद्यपि सिद्धत्वप्रादुर्भावसमये केवलज्ञानमिति ज्ञानं प्रधानं तथापि सामान्यसिद्धलक्षणमेतदिति ज्ञापनार्थं मादौ सामान्यालम्बनं दर्शनमुक्तं, तथाच सामान्यविषयं दर्शनं विशेषविषयं ज्ञानमिति, ततः साकारानाकारं सामान्यविशेषोपयोगरूपमित्यर्थः, सूत्रे मकारो लाक्षणिको लक्षणं तदन्यव्यावृत्तिस्वरूप मेतत् अनन्तरोक्तं तु शब्दो वक्ष्यमाणनिरुपमसुखविशेषणार्थः, सिद्धानां निष्ठितार्थानामिति, सम्प्रति केवलज्ञानदर्शनयो रशेषविषयता मुपदर्शयति- केवलणाणुवउत्ता इत्यादि॥ केवलज्ञानेनो पयुक्ता नत्वन्तःकरणेन तदभावादिति, केवलज्ञानोपयुक्ता जात्यवगच्छन्ति, सर्वज्ञावगुणज्ञावान् सर्वपदार्थगुणपर्यायान् प्रथमो ज्ञावशब्दः, पदार्थवचनो द्वितीयः पर्यायवचनः, गुणपर्यायस्त्वयं विशेषः-सहवर्त्तिनो गुणाः क्रमवर्त्तिनः पर्याया इति, तथा पश्यंति सर्वतः खलु खलुशब्दस्या वधारणात्' सर्वतएव केवलदृष्टिनि रनंतानि रनंतैः केवलदर्शनै रित्यर्थः, केवलदर्शनानां चानंतता सिद्धानाममंतत्वात्' इहादौ ज्ञानग्रहणं प्रथमतया तदुपयोगस्याः सिध्यन्तीति ज्ञापनार्थं, सम्प्रति निरुपमसुखप्राज स्ते इति दर्शयति-नविअत्थिइत्यादि। नैवास्ति मनुष्याणां चक्रवर्त्यादीनामपि तत्सौख्यं नैव सर्वदेवाना मनुत्तरपर्यंतानामपि य

॥ मूल ॥

रमणागारं लक्खणमेयंतुसिद्धाणं ॥ ११ ॥ केवलणाणुवउत्ता जाणंतीसव्वभावगुणभावे। पासंतिसव्वओखलु केवलदिट्ठीहिणंताहिं ॥ १२ ॥ नविअत्थिमाणुसाणं तंसोक्खंनत्थिसव्वदेवाणं। जंसिद्धाणंसुक्खं अव्वाबाहंउ

॥ भाषा ॥

ज्ञान दर्शननोविशेष देखाडेछे—असरीराजीवघणा उवउत्तादंसणेयनाणेय सागारमणागार लक्खणमेयंतुसिद्धाणं ॥ १२ ॥ केवलज्ञानेसहित जाणवा सर्वगुणनापर्याय सहसवर्त्ती गुणकर्मवर्त्ती पर्याय तेहने देखे सकलखलुशब्दस्य अवधारणार्थे केवलदीठो अनंत केवलदर्शन अनन्तादर्शन सिद्धवर्त्ती इहां प्रथम ज्ञानग्रहण उपयोग पिणसीझे इम जाणवो अर्थे निरुपम सुखभाजनछे ते देखाडेछे केवल दीवानोअर्थ कह्योनथो सूक्ष्म मनुष्यने चक्रवर्त्यादिकछे—केवलनाणुवउत्ता जाणंतीसव्वभावपासंती सुक्खेणसव्वओखलु केवलदिट्ठीअणंताहिं ॥ १३ ॥ नविअत्थिमणुस्साणं तंसुक्खंनविसव्वदेवाणं जेसिद्धाणंसुक्खं अव्वा

॥ टीका ॥

त्तिद्धानां सौख्यमव्याबाधामुपगतानां न विविधा अबाधा अव्याबाधा ता मुपसामीप्येन गतानां प्राप्तानां यथा नास्ति तथा नंग्योपदर्शयति-सु रगणसुहमित्यादि ॥ सुरगणसुखं देवसंघातसुखं समस्त संपूर्णं अतीतानागतवर्त्तमानकालोद्भवमित्यर्थः, पुनः सर्वाद्धापिण्डितं सर्वकालसमयगुणित तथा नंतगुणमिति, तदेवं प्रमाणं किलासत्कल्पनया एकैकाकाशप्रदेशे स्थाप्यते, इत्येवं सकलाकाशप्रदेशपूरणेन यद्यप्यनंतं भवति तदनन्तरमप्य नंतै र्वर्गै र्वर्गितम् तथाप्येवं प्रकर्षगतमपि मुक्तिसुखं सिद्धिसुखं न प्राप्नोति, एतदेव स्पष्टतरं नंग्यंतरेण प्रतिपादयति-सिद्धस्ससुहोरासीइत्यादि॥ सुखानां राशिः सुखराशिः सुखसङ्घातः सिद्धस्य सुखराशिः सिद्धसुखराशिः सर्वाद्धापिण्डितः सर्वया साद्यपर्यवसितया अद्धया यत्सुखं सिद्धः प्रति समयमनुभवति तदेकत्र पिण्डीकृत मितिभावः, सोनंतवर्गभक्तो ऽनंतै र्वर्गमूलै रपवर्त्तितः अनंतै र्वर्गमूलै स्तावदपवर्त्तितो यावत्सर्वाद्धालक्षणेन गु

॥ मूल ॥

वगयाणं ॥१३॥ सुरगणसुहंसमत्तं सव्वद्धापिंडियं अणंतगुणं। नविपावइमुत्तिसुहं णंताहिंवियग्गवग्गूहिं ॥१४॥
सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिंडिएजइहविज्जा। सोणंतवग्गभइउ सव्वागासेणमाइज्जा ॥ १५ ॥ जहनामको

॥ भाषा ॥

वाहंडवगयाणं ॥ १४ ॥ नथी सुख तेहवो देवताना इन्द्रादिकने जेहवो सुखप्रसिद्धछै नथी काईबाधा जे सिद्धने उपसमी गतिछै—सरगणसुहसमत्तं स वद्धापिंडियंअणंतगुणं नविएवियमुत्तिसुहं अणंतेहिंवग्गविग्गूहिं ॥ १५ ॥ देवतानासंघात सुखसमस्त अतीता नागत वर्त्तमानकालो द्भवे जेतलासुख सर्वा द्धापिण्डित सर्वकालसमय गुणित अनन्तगुणने प्रमाणछै असत्कल्पनायें एकै एकाकाशप्रदेश थापिये इम सकललोकाकाशप्रदेश शरीरे जे अणुथाय ते अन न्ता गिणिये ते गिणताथकाने अवगाढ ते परिपूर्ण क्षेत्रावगाढथकी असंख्यातगुणां हुवे अवगाढप्रदेश असंख्यातवर्त्ती उक्तञ्च—एगेखेत्तेणंता अपएसपरि वड्ढिहाणिओ तत्तोहाणीओ तत्तोहवंति असंखिज्जगुणा असंखपएसो जमवगाढो, हिवे सिद्धनोलक्षण कहेछै—सिद्धस्ससुहोरासी सव्वद्धापिंडिओजइह विज्जा सोणंतवग्गभइओ सव्वागासेनमाइज्जा ॥ १६ ॥ सिद्धना सुखनीराशि सर्वा द्धापिण्डित सर्वसादि अपर्यवसितपणें मोक्षनासुख समवड तथा हिवे स दृष्टपणेभाग देखाडेछै, तेसिद्ध सूक्ष्मसमयें अनुभव ते एकठाकीजे तेगुणाकार अनन्तवर्गे भजिये तो सर्व लोकाकाशसमाने, हिवे एहवासुख अनन्ताछै—ज

॥ टीका ।

णकारेण गुणने यदधिकं जातं तस्य सर्वस्यापवर्त्तनैः सिद्धत्वा द्यः समयनाविसुखमात्रतां प्राप्त इतिभावः, सर्वाकाशे न माति एतावन्मात्रेपि सर्वाकाशे न माति सर्वंस्तु दूरापास्तप्रसर एवेति ज्ञापनार्थं, पिण्डयित्वा पुनरपवर्त्तनं सुखराशेः, इयमत्रभावना-इह किल विशिष्टाह्लादरूपं सुखं परिगृह्यते ततश्च यत आरभ्य शिष्टानां सुखशब्दप्रवृत्तिस्तमाह्लादमधिकृत्य एकैकगुणवृद्धितारतम्येन तावद्सावाह्लादो विशिष्यते यावदनन्तगुणवृद्धया निरतिशयनिष्ठामुपगतः सोय मत्यंतोपमातीतैकांतोत्सुक्यविनिवृत्तिरूपस्तिमितसमकल्प अरमाह्लादः सदा सिद्धानां यस्मा च्चारतः प्रथमा च्चोद्वमपांतरालवर्त्तिनो ये गुणा स्तारतम्येना ह्लादविशेषरूपा स्ते सर्वाकाशप्रदेशेभ्यो व्यतिभूयांस स्ततः किलोक्तं-सव्वागासेनमाएज्जा इति ॥ अन्यथा तत्सर्वाकाशे न माति, तत्कथमेकस्मिन् सिद्धे मायादिति पूर्वसूरिसंप्रदायः' साम्प्रत मस्य निरुपमतां प्रतिपादयंति-जहनामेत्यादि ॥ यथा नाम कश्चिन्म्लेच्छो नगरगुणान् गृहनिवासादीन् बहुविधान् अनेकप्रकारान् विजानन् अरण्यागतःसन् अन्यस्मैम्लेच्छेन्यो न शक्नोति परिकथयितुं कस्मा न्नशक्नोतीत्यत आह-उपमायां तत्रासत्यां निमित्तकारणहेतुषु सर्वासां विभक्तीनां प्रायो दर्शनमिति न्यायात् हेतौ सप्तमी' तत्र उपमाया अभावादितिद्रष्टव्यं, एषगाथाक्षरार्थः; भावार्थः कथानकादवसेयस्तच्चेदं-एगोमहारण्णवासी मिच्छो रण्णे चिट्ठति इत्तोय एगोराया आसेण

॥ मूल ॥

इमिच्छो नगरगुणंबहुविजाणंतो । णवएउपरिकहेउं उवमाएतहिंअसंतीए ॥ १६ ॥ इयसिद्धाणंसोक्खं अणोवमंनत्थितस्सउवम्मं । किंचिविसेसेणित्तो सारिक्खमिणंसुणहबोल्यं ॥ १७ ॥ जहसव्वकामगुणियं पुरिसो भोत्तूणभोयणंकोइ । तण्हाछुहाविमुक्को अच्छिज्जजहाअमियतित्तो ॥ १८ ॥ इयसव्वकालतित्ता अउलंनि

॥ भाषा ॥

इनामकोइमिच्छो नगरगुणेबहुविहेवियाणतो नवपइपरिकहेओ उवमाएतहिंअसंतीए ॥ १७ ॥ जिम नगरनोबासो म्लेच्छनगरना गुणघणा ते बनबासो म्लेच्छ आगले अणजांणता आगलकहे तो ते कहो नसकै नगरनो चूर्ण न करिसकै उपमा बनमांहिसो कहो देखाडे, अछतावती छतीवस्तु बनमें का इनदोसे ए दृष्टांते करी—इयसिद्धाणसुखं अणोवमनत्थितस्सओवम्मं किंचिविसेसेणित्तो सारिक्खमिणमुबोहत्थं ॥ १८ ॥ एहवा सिद्धनासुख उपमारहित

॥ टीका ॥

अवहरितो तं अहविं पवेसतो तेण दिठो सक्कारेकुण जणवयं नीतो रत्नावि सो नगरं पच्छा उवगारिति गाढमुपचरितो जहा राया चिट्ठइ धवल घराईजोगेण वि चासा कालेण रत्नं सरिअमारद्धो रत्ना विसज्जिउं ततो रायणेगा पुच्छन्ति केरिसं नयरंति सो वियाणंतो वि तत्थोवमाजावा न सक्केइ नयरगुणे परिकहेउं एस दिठंतो अयमर्थोपनयः ॥ इयसिद्धाणमित्यादि ॥ इति, एवं सिद्धानां सौख्यमनुपमं वर्त्तते किमिति तत आह-यतो नास्ति तस्यौपम्यं तथापि बालजनप्रतिपत्तये किंचिद्विशेषेण ॥ इत्तो ॥ इति आर्षत्वा दस्येत्यर्थः, सादृश्य मिदं वक्ष्यमाणं शृणुतः ॥ जहसव्वेत्यादि ॥ यथेत्युदाहरणोपदर्शनार्थः ' जुज्यते इति जोजनं सर्वकामगुणितं सकलसौन्दर्यसंस्कृतं कोपि पुरुषो भुक्त्वा क्षुत्तृड्विमुक्तः सन् यथा अमृततृप्तः तथा तिष्ठति ॥ इयइत्यादि ॥ इति, एवं निर्वाणं मोक्षमुपगताः सिद्धाः सर्वकालं साद्यपर्यवसितं कालं तृप्ताः सर्वथोत्सुक्यविनिवृत्तिजावतः परमसंतोषमधिगता अतुलमनन्यसदृश मुपमातीतत्वात् ' शाश्वतं प्रतिपातानावात्, अव्याबाध लेशतोपि व्याबाधाया असम्भवात्, सुखं प्राप्ताः, अत एव सुखिन स्तिष्ठंति, एतदेव सविशेषतरं नावयति-सिद्धत्तियइत्यादि ॥ सितं बद्धमष्टप्रकारं कर्म ध्मातं नस्मीकृतं यै स्ते सिद्धाः पृषोदरादय इति रूपनिष्पत्तिः, निर्दग्धानेकनवकर्मेंधना इत्यर्थः, तेच सामान्यतः कर्मादिसिद्धा अपि नवन्ति, यत उक्तं-कम्मेसिप्पयविज्जाए मंतजोगेसज्झागमे ।

॥ मूल ॥

सिद्धाणमुवगयासिद्धा । सासयमव्वाबाहं चिट्ठंतिसुहीसुहंपत्ता ॥ १९ ॥ सिद्धत्तियबुद्धत्तिय पारगतत्तियपरंपर गतत्तिय । उम्मुक्ककम्मकवया अजराअमराअसंगाय ॥ २० ॥ णिच्छिन्नसव्वदुक्खा जातिजरामरणबंधणवि

॥ भाषा ॥

तहयो सुखनी उपमा इहां मनुष्यमानथी तोही पिण बालजनने समझावाने अर्थे स्या इत्यामान वक्ष्यमाण अणतो एहवो जो तथाकथ्यो ते सांभल---ज हसव्वकामगुणियं पुरिसोभुत्तूणजोयणकोडि तहोछुहाविमुक्को अच्छिज्जजहाअमियतत्तो ॥ १९ ॥ जिम सर्वकामगुणित सकलसौन्दर्य संस्कृत एहवोभोजन कोईपुरुष जोमोन भोजनकरीने क्षुधा तृषायें मूकाणाथको इच्छित अमृतेण तो जिमरहे---इयसव्वकालतित्ता अउलंनिव्वाणमुवगयासिद्धा सासयम व्वाबाहं चिट्ठंतिसुहंसुहंपत्ता ॥ २० ॥ इम सर्वकाल सिद्धसादि अपर्यवसित कालतगे क्षुधथका परमसंतोष पाम्या अतुल अन्योन्यसरीखा सुखपा म्या

॥ टीका ॥

अत्यजुत्ताअनिप्पाए तवेकम्मक्खएइया ॥ १ ॥ ततः कर्मादिसिद्धा व्यपोहायाह-बुद्धाइति ॥ अज्ञाननिद्राप्रसुप्तेजगत्यपरोपदेशेन जीवादिरूपं तत्वं बुद्धवंतो बुद्धाः सर्वज्ञसर्वदर्शित्वज्ञानावबोधरूपा इतिभावः, एतेपिच संसारनिर्वाणोभयपरित्यागेन स्थितवंतः, कैश्चिद्दिष्यंते-संसारे न च निर्वाणे, स्थितो जुवनजूतये अचिन्त्यःसर्वलोकानां, चिन्तारत्नाधिकोमहानि तिवचनात्, तत स्तन्निरासार्थमाह-पारगताइति ॥ पारं पर्यंतं संसारस्य प्रयोजनव्रातस्य वा गताः पारगताः, तथा जव्यत्वाद्विप्रसकलप्रयोजनसमाप्त्या निरवशेषकर्त्तव्यशक्तिविप्रमुक्ता इतिभावः, इत्थंजूता अपि कैश्चित् य दृच्छावादिनिरक्रमसिद्धत्वेनापि गीयंते' तथोक्तं-नैकादिसङ्ख्याक्रमतो चित्तप्राप्तिर्नियोगतः । दरिद्रराज्याप्तिसमा तद्वन्मुक्तिः क्वचिन्नकिं ॥ १ ॥ तत स्तन्मतव्यपोहायाह-परम्परागता इति ॥ परम्परया ज्ञानदर्शनचारित्ररूपया मिथ्यादृष्टिसासादनसम्यग्मिथ्यादृष्ट्यविरतिसम्यग्दृष्टिदेशविरतिप्रमत्तनिवृत्त्यनिवृत्तिबादरसम्परायसूक्ष्मसम्परायोपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगिकेवल्ययोगिकेवलिगुणस्थानजेदजिन्नया गताः, एतेच कैश्चि त्तत्वतो नुन्मुक्तकर्मकवचा अप्युपगम्यन्ते तीर्थनिकारदर्शनादिहागच्छंतीति वचनतः पुनः संसारावतरणाप्युपगमा दत स्तन्मतापाकरणार्थमाह-उन्मुक्तकर्मकवचा उत्प्राबल्येना पुनर्जवरूपतया मुक्तं परित्यक्तं कर्मकवचमिव कर्मकवचं यै स्ते उन्मुक्तकर्मकवचाः, अत एव अजराः शरीराजावतो जरसोऽजावात्, अमरा अशरीरत्वादेव प्राणत्यागासजवात्' उक्तञ्च-वयसोहाणीहजरा पाणच्चाउंयमरणमादिहं । सद्दहंमितदुजयं तदजावेनकस्सेव ॥ १ ॥ अ

---

॥ भाषा ॥

निर्वाण पोहता सिद्ध सास्वती प्रतिप्रातनअभाव अबाधो जिगारअबाधा नही जिहां एतले सुखपाम्या एतले सुखेरहेछै, हिवे विशेषपणे बखाणेछै-सि द्धत्तियबुद्धत्ति पारगत्तियपरंपरगत्तिय उम्मुक्तकम्मकवया अजराअमराअसंगाय ॥ २१ । सीधाकर्म भस्मकरीने अज्ञाननिद्रा मूकी जांख्याछै संसारनोपार पाम्याछै परपरायें सिध्यात्व १ सास्वादन २ जां चौदमो अयोगीगुणठाणे परंपरायेंचढीने सीधाछै मूक्याछै कर्मनाकवच बले दग्तपणेंकरी वले मूक्याछै कर्मकवच शरीरभावे जरानोअभाव अमर अशरीरीमाटै बाह्याभ्यन्तरसंगरहित—निच्छिण्णसव्वदुक्खा जाइजरामरणबंधणविमुक्का अव्वाबाहंसुक्ख अणुहवईसासयंसिद्धा ॥ २२ । छै निच्छिण्ण सर्वदुखथकी लंघितछै जाति जरामरण कर्मनाबन्धनथी मूकाणा अबाधाविना सुखप्रति पाम्या एहवा सास

॥ टीका ॥

संगा बाह्याभ्यन्तरसङ्गरहितत्वात् ॥ निच्छिन्नेत्यादि ॥ निस्तीर्णं लङ्घितं सर्वं दुखं यै ते निस्तीर्णसर्वदुःखाः' कुत इत्याह-जातिजरामरणबंधणवि मुक्का ॥ जाति जन्म जरा वयोहानिलक्षणा मरणं प्राणत्यागरूपं बन्धनानि तन्निबन्धरूपाणि कर्माणि ते विशेषतो निःशेषापगमनेन मुक्ता जाति जरामरणबन्धनविमुक्ताः, हेतावियं प्रथमा, यतो जरामरणबन्धनविमुक्ता स्ततो निस्तीर्णसर्वदुःखाः कारणाभावात्, ततो व्याबाधं सौख्यं शाश्वतं सिद्धा अनुभवन्ति ॥ इतिश्रीमलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां द्वितीयं पदं समाप्तं ॥ २ ॥ व्याख्यातं द्वितीयपद मधुना तृतीय मारभ्यते-तस्यचाय मभिसम्बन्धः, इह प्रथमे पदे पृथिवीकायिकादयः प्रज्ञप्ताः, द्वितीये ते एव स्वस्थानादिना चिंतिता अस्मिंस्तु तेषां दिग्नागादिना अल्पबहुत्वादि निरूप्यते, तत्रेदमादौ द्वारसंग्रहगाथाद्वय-दिसिगइइंदियकाएइत्यादि ॥ प्रथमं दिग्द्वारं १ तदनन्तरं गतिद्वारं २ तत इन्द्रियद्वारं ३ ततः कायद्वारं ४ ततो योगद्वारं ५ तदनन्तर वेदद्वारं ६ ततः कषायद्वारं ७ ततो लेश्याद्वारं ८ सम्यक्त्वद्वारं ९ तदनन्तरं ज्ञानद्वारं १० ततो दर्शनद्वारं ११ ततः संयमद्वारं १२ तत उपयोगद्वारं १३ तत आहारद्वारं १४ ततो भाषकद्वारं १५ ततः परित्त इति, परीताः प्रत्येकशरीरिणः शुक्लपाक्षिका श्च तद्वार १६ तदनन्तरं पर्याप्तिद्वारं १७ ततः सूक्ष्मद्वारं १८ तदनन्तरं सञ्ज्ञिद्वारं १९ ततो ॥ भवति ॥ भवसिद्धिद्वारं २० ततो स्तीति

॥ मूल ॥

मुक्का । अव्वाबाहं सुक्खं अणुहोंतीसासयंसिद्धा ॥ २१ ॥ बितियं पदं समत्तं ॥ २ ॥
दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेसाय । सम्मत्तणाणदंसण संजयउवओगआहारे ॥ १ ॥ भासगपरित्तप

॥ भाषा ॥

ता सुखप्राप्ति पाम्या तेहवा सुख अनुभवे छे ॥ पन्नवणाएठाणपयंबितियंसमत्तं २ ॥ इति श्रीप्रज्ञापनाख्याना पन्नवणाउपांगे द्वितीयपद समाप्तथयो देवता मनुष्य नारको तिर्यञ्च उत्पातस्थानक विवरो ॥ २ ॥ दिसिगइइंदियकाए जोएवेएकसायलेस्साए सम्मत्तणाणदंसण सजयउवओग आहारे ॥ १ ॥ दिशिद्वार गतिद्वार इंद्रियद्वार कायद्वार योग वेद कषाय लेश्या सम्यक्त्व ज्ञान दर्शन सयत उपयोग आहार १४—भासापरित्तपज्जत्त सुहुमेसण्णीभवत्थीए चरिमेजीवेयखित्तबंधे पुग्गलमहदंडएचेव २७ द्वारं दिसाणुवाएणं । भाषाद्वार, प्रत्येकशरीर शुक्लपक्ष ध्याय पर्याप्ता सूक्ष्म संज्ञी भव

॥ टीका

अस्तिकायद्वारं २१ तत श्चरमद्वारं २२ तदनन्तरं जीवद्वारं २३ ततः क्षेत्रद्वारं २४ ततो बन्धद्वारं २५ ततः पुद्गलद्वारं २६ ततो महादण्डकः २७ इति सर्वसङ्ख्या सप्तविंशतिद्वाराणि ॥ तत्र प्रथमद्वार मभिधित्सु राह-दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा पच्चत्थिमेण मित्यादि ॥ इह दिशः प्रथमे आचाराख्ये अंगे अनेकप्रकारा व्यावर्णिता स्तत्रेह क्षेत्रदिशः प्रतिपत्तव्या स्तासां नियतत्वा दितरासांच प्रायो ऽनवस्थितत्वा दनुपयोगित्वाच्च' क्षेत्रदिशांच प्रज्ञव स्तिर्यग्लोकमध्यगतादष्टप्रदेशका दुचकात्, यत उक्तं-अठपएसोरुयगो तिरियलोयस्समज्झियारम्मि । एसपभवोदिसाणं एसेवभवेअणुदिसाणमिति ॥ १ ॥ दिशा मनुपातो दिगनुसरणं तेन दिशो धिकृत्येति तात्पर्यार्थः' सर्वस्तोका जीवाः पश्चिमेन पश्चिमायां दिशि कथमितिचेत् -उच्यते-इदं ह्यल्पबहुत्वं बादरानधिकृत्य द्रष्टव्यं नसूक्ष्माणां सर्वलोकापन्नानां प्रायः सर्वत्रापि समत्वात्, बादरेष्वपि मध्ये सर्वबहवो वनस्पति

॥ मूल ॥

जत्त सुहुमसरीयन्नवत्थिसेचरिमे । जीवयखेत्तंबंधे पुग्गलमहदंडएचेव ॥ २ ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा पच्चत्थिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया दाहिणेणं उत्तरेणं विसेसाहिया पुरच्छिमेणं विसेसाहिया पच्चत्थिमेणं विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चत्थिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्त

॥ भाषा ॥

सिहि अस्ति चरमद्वार जीवद्वार क्षेत्रद्वार बन्ध पुद्गल महादण्ड २७ यमनावासद्वार कह्या दिग्प्रज्ञापनाओ । सव्वत्थोवा जीवा पच्चत्थिमेणं पुरत्थिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणविसेसाहिया । सर्वजीव थोडा पश्चिम जेमणी सुस्थित देवतानोवास गौतमद्वीप पश्चिमने लवण तेमाटे पाणी थोडो थोडयाणी वनस्पतीनोअभाव तेमाटे पूर्व विशेषाधिक जेमाटे गौतमद्वीप नथी दक्षिण सर्वजीव विशेषाधिक जेमणी तेमाटे पाणीघणों तिहां जीवघणां चन्द्र सूर्य द्वीपनथी तेमाटे अधिक उत्तरे विशेषाधिक जीवमाटे योजन कोडाकोडीप्रमाण मानस २ असंख्यातमेद्वीप तेमाटे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चत्थिमेणं वि० दाहिणेणं वि० उत्तरेणं वि० । षणादिग्प्रज्ञापनाओ लेखवता सर्वथकी पृथ्वीकाय थोडा दक्षिण जिहां घन तिहां

॥ टीका ॥

कायिका अनन्तसङ्घातततया तेषां प्राप्यमाणत्वात्, ततो यत्र ते बहव स्तत्र बहुत्वं जीवानां यत्र स्वल्पे तत्राल्पत्वं वनस्पतय श्च तत्र बहवो यत्र प्र
भूता आपः "जत्थजलंतत्थवणमितिवचनत„ स्तत्रावश्यं पनकसेवालादीनां भावात्, तेच पनकसेवालादयो बादरनामकर्मोदये वर्त्तमाना अपि अ
त्यन्तसूक्ष्मावगाहनत्वा दतिप्रभूतपिण्डीभावाच्च सर्वत्र सत्तोपि न चक्षुषा ग्राह्याः, तथाचोक्तमनुयोगद्वारेषु-तेणं वालग्गासुहुमपणगजीवस्स सरी
रोगाहणाहिन्तो असंखेज्जगुणा इति „ ततो यत्रापि नैते दृश्यन्ते तत्रापि ते संतीति प्रतिपत्तव्या आहच मूलटीकाकारः-इह सर्वबहवो वनस्प

॥ मूल ॥

रेणं विसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिणुत्तरेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया पच्चच्छि
मेणं विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणं विसेसाहि
या दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्चच्छिमेणं
पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदि

॥ भाषा

घणांपृथ्वीकाय सुखैरहै तिहां थोडो नरकावास घणां, तेमाटे पोलाड घणोछवे पृथ्वीकाय थोडोछवे उत्तरे विशेषाधिक घनभाव घणांवतो पूर्वे विशेषाधि
क पृथ्वीकायछै चन्द्र सूर्य द्वीपमाटै। पुरच्छिमेणं वि० पच्चच्छिमेणं वि०। चन्द्र सूयद्वीप पूर्वपश्चिमेछै पश्चिम विशेषाधिक पृथ्वीकायछै। हेगौतम द्वीपमा
टे पृथ्वीकायविशेष तथा पश्चिमें पृथ्वीकायविशेष धिक तथा किम पश्चिम अधोलोक सामादिसहस्रयोजनादि अवगाहछै खात पूरित न्यायेन तत्तुल्य
न विशेषाधिक। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया पच्चच्छिमेणंदाहिणेणं वि० उत्तरेणं वि०। दिशनीमेलै जीवतां सर्वथोडा अप्काइयाजीव पश्चिम
जेमाटे गौतमद्वीप पश्चिमें तेमाटे पांणी तिहांथोडो पूर्व २ विशेषाधिकछै द्वीपने अभावै दक्षिणें विशेषाधिक जेमणो चन्द्रसूर्यद्वीप नथी उत्तरविशेषाधि
क जेमाटे मानसरोवरछै। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया दाहिण उत्तरेणं पुरच्छिमेणं संखिज्जगुणा पच्चच्छिमेणं वि०। दिशआश्री जीवता थो
डासर्व तेजस्काय दक्षिण भरत उत्तर भरतऐरवत थोडा विस्तारवन्तो मनुष्यथोडे अग्नि पिण्डथोडी तेहथकी पूर्वे असंख्यातगुणा महाविदेहमाटे प

॥ टीका ॥

तयः इति कृत्वा यत्र ते संति तत्र बहुत्वं जीवानां तेषां च बहुत्वं "जत्थआउकाउतत्थनियमावणस्सइकाइयाइति, पणगसेवालहढाईबायराविहोंति सुहुमाआणगिज्झानचक्खणाइति „ उदकं च प्रभूतं समुद्रेषु द्वीपद्विगुणविष्कम्भात्, तेष्वपिच समुद्रेषु प्रत्येकं प्राचीप्रतीचीदिशो यथाक्रमं चन्द्रसूर्य द्वीपा यावतिच प्रदेशे चन्द्रसूर्यद्वीपा अवगाढा स्तावत्युदकाभावः, उदकाभावाच्च वनस्पतिकायिकाभावः केवलं प्रतीच्यां दिशि लवणसमुद्राधि पतिस्थितनामदेवावासभूतो गौतमद्वीपो लवणसमुद्रे ज्यधिको वर्तते तत्र च उदकाभावा द्वनस्पतिकायिकाना मभावात् सर्वस्तोका जीवाः पश्चिमा यां दिशि तेभ्यो विशेषाधिकाः पूर्वस्यां दिशि तत्रहि-गौतमद्वीपो न विद्यते तत स्तावता विशेषेणाधिका भवन्त्य तिरिच्यंते तेभ्योपि दक्षिणस्यां

॥ मूल ॥

या पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया,

॥ भाषा ॥

श्चिमे विशेषाधिक अधोग्रामादि घणांमाटे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा बाउकाइया पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणं वि०। दिशआश्री जोवतां सर्वथीथोडो वायु पूर्वे जेमणो घनभूमि घणोछे तेमाटेवाउथोडा पश्चिमे विशेषाधिक जेमणो अधोलोकवणां तेमाटे वाउघणो उत्तरे विशे० नरकावासानेठामे पोलाड घणो माटे दक्षिणे विशेषाधिक नरकावासा घणां तिहां वाउ घणो। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं वि०। दिशनोमेले सर्व थोडा वनस्तीकाय पश्चिम जेमणो गौतमद्वीपे जलथोडो तिणे माटे वनस्तो पिणथोडो पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीप नथो तेमाटे पाणीघणांने बन पि णघणो। दाहिणेणं वि० उत्तरेणं विसेसाहिया। दक्षिणनेविषे चंद्रसूर्यद्वीपनथो तेमाटे उत्तरेवि० मानसरोवरनो अपेक्षायें बनघणो। दिसाणुवाएण स व्वत्थोवा बेइंदिया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणंविसेसाहिया उत्तरेणं विसे०। दिशनोमेले सर्वथोडा बेइंद्रिय पश्चिमे जिहां पाणीथो डो तेमाटे शखादि थोडा पूर्वे विशेषाधिक पाणीघणो तेमाटे दक्षिणे विशेषाधिक चद्र सूर्य द्वीपनथो तेमाटे पाणीघणो बेइन्द्रिय पिणघणां उत्तर वि शेषाधिक मानसरोवरमाटे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तेंदिया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं वि० दाहिणेण वि० उत्तरेणं वि०। दिशनोमेले सर्वथोडा तेंद्रि

॥ टीका ॥

दिशि विशेषाधिकाः । यतः-तत्र चन्द्रसूर्यद्वीपा न विद्यन्ते तदभावा, तत्रोदकं प्रभूतं तत्प्राभृत्याच्च वनस्पतिकायिकाश्चापि प्रभूता इति विशेषाधिका स्तेभ्योप्युदीच्यां दिशि विशेषाधिकाः किंकारणमितिचेत् उच्यते-उदीच्यां हि दिशि सङ्ख्येययोजनेषु द्वीपेषु मध्ये कस्मिंश्चित् द्वीपे आयाम विष्कम्भाभ्यां सङ्ख्ययोजनकोटाकोटीप्रमाणं मानसं नाम सरः समस्ति ततो दक्षिणदिग्पेक्षया अस्यां प्रभूतमुदक मुदकबाहुल्या च्च प्रभूता वनस्पतयः, प्रभूता द्वीन्द्रियाः शंखादयः, प्रभूता स्तटलग्नशंखादिकलेवराश्रिता स्त्रीन्द्रियाः पिपीलिकादयः, प्रभूताः पद्मादिषु चतुरिन्द्रिया भ्रमरादयः, प्रभूताः पञ्चेन्द्रिया मत्स्यादय इति विशेषाधिका स्तदेवं समान्यतो दिगनुपातेन जीवानामल्पबहुत्व मुक्त मिदानीं विशेषेण तदाह-दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया दाहिणेणमित्यादि॥ दिगनुपातेन दिगनुसारेण दिशोधिकृत्येति भावः, पृथिवीकायिका श्चिन्त्यमानाः सर्वस्तोका दक्षिण स्यां दिशि कथमिति चेत् उच्यते-इह यत्र घनं तत्र बहवः पृथिवीकायिका यत्र सुषिरं तत्र स्तोका दक्षिणस्यां दिशि बहूनि भवनपतीनां भव

॥ मूल ॥

एवं चउरिंदियावि, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्ज गुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा रयणप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं दाहिणेणं असंखे ज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असं खेज्जगुणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा णेरइया वालुयप्पभापुढविपुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असं

॥ भाषा ॥

य पश्चिमें गौतमद्वीपमाटे पाणीथोडो थोडेपाणी सेवालादिकनो निश्चयें कथयाथोडा पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीपनथी तेमाटे दक्षिणे विशेषाधिक चंद्र द्वीपनथी उत्तरे विशे० मानसरोवरमाटे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा चौरिंदिया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं वि० दाहिणेणं उत्तरेणं वि०। दिग्नीमेले सर्व थीथोडा चउरिंद्रिय पश्चिमे गौतमद्वीपके तेवती पाणीथोडो तिहां कमलथोडा तिहां भमरो चौरिंद्रियादिक थोडा पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीपनथी तेमाटे दक्षिणे वि० चन्द्र सूर्यद्वीपनथी तेमाटे उत्तरे वि० मानसरोवरे भमरादि घणा। दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा णेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं

॥ टीका ॥

नानि बहवो नरकावासा स्ततः सुषिरप्राभृत्यसंभवात् सर्वस्तोका दक्षिणस्यां दिशि पृथिवीकायिका स्तेभ्य उत्तरस्यां दिशि विशेषाधिका यत्र उत्तरस्यां दिशि दक्षिणदिगपेक्षया स्तोकानि भवनानि स्तोकानरकावासा स्ततो घनप्राभृत्यसंभवा बहवः पृथिवीकायिका इति विशेषाधिकाः, तेभ्योपि पूर्वस्यां दिशि विशेषाधिका रविशशिद्वीपानां तत्र भावात्, तेभ्योपि पश्चिमायां दिशि विशेषाधिकाः किंकारणमितिचेत्-उच्यते-यावंतो रविशशिद्वीपाः पूर्वस्यां दिशि तावन्तः पश्चिमायामपि ततएव तावता साम्यं परं लवणसमुद्रे गौतमनामाद्वीपः पश्चिमायामधिकोस्ति तेन विशे

॥ मूल ॥

खिज्जगुणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंकप्पभापुढविणेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा धूमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा

॥ भाषा ॥

दाहिणेणं असंखिज्जगुणा । दिशनीमेले सर्वथीडा नारकी पूर्वथीडा पश्चिमथीडा उत्तरेथीडा स्यामाटे पुष्पावकीर्ण नरकावासाथी दक्षिणे असंख्यातगुणा अधिका जेमणी दक्षिणदिशे पुष्पवकीर्ण नरकावासाछे तेमाटे कृष्णपक्षीजीव । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा रयणप्पभा पुढवी णेरइया पुरच्छिमेणं पच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखिज्जगुणा । दिशानी मेले सर्वथीडा रत्नप्रभापृथिवीना नारकी पूर्वदिशे पुष्पावकीर्ण नथी पश्चिमदिशे उत्तरदिशने असंख्यात विस्तारे नरकावासाछे तिहां कृष्णपक्षी घणाछे ऊपजे । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सक्करप्पभापुढवी णेरइया पुरच्छिमेणं पच्चच्छिमेणं उत्तरेणं दाहिणेणं असंखिज्जगुणा । दिशनीमेले सर्वथीथीडा शर्करप्रभापृथिवीना नारकी पूर्वादिशि पुष्पावकीर्ण नथी पश्चिमें मोटा नरकावासा उत्तरथकी दक्षिणे असंख्यात गुणा असंख्यातयोजने विस्तारे कृष्णपक्षी घणां ऊपजे । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वालुयप्पभपुढवीणेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखिज्जगुणा । दिशनीमेले सर्वथीडा बालुकप्रभाना नारकी सर्वदिशे पुष्पावकीर्ण नथी पश्चिमउत्तरथी मोटा असंख्यात विस्तारे दक्षिणे संख्यातगुणा कृष्णपाक्षिक घणां ऊपजे तेमाटे । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंकप्पभपुढवीणेरइयापुरच्छिम पच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असखिज्जगुणा । दिशनीमेले सर्व

॥ टीका ॥

धाधिकाः, अत्रपरआह-ननु यथा पश्चिमायां दिशि गौतमद्वीपो ज्यधिकः समस्ति तथा तस्यां पश्चिमायां दिशि अधोलौकिकग्रामा अपि योजन सहस्रावगाहाः सन्ति ततः खातपूरितन्यायेन तत्तुल्याएव पृथिवीकायिकाः प्राप्नुवन्ति न विशेषाधिकाः, नैतदेवं-यतो धोलौकिकग्रामावगाहो योजनसंहस्रं गौतमद्वीपस्य पुनः षट्सप्तत्यधिकं योजनसहस्र मुच्चैस्त्वं विक्रम्य स्तस्य द्वादशयोजनसहस्राणि यच्च मेरो रारभ्य धोलौकिकग्रामेभ्यो ऽर्वाक् हीनत्वं हीनतरत्वं तत्पूर्वस्यामपि दिशि प्रभूतगर्त्तादिसम्भवात् समानं ततो यद्यधोलौकिकग्रामच्छिद्रेषु बुध्या गौतमद्वीपः प्रक्षिप्यते तथा पि समधिकएव प्राप्यते नतुल्य इति, तेन समधिकेन विशेषाधिकाः पश्चिमायां दिशि पृथिवीकायिकाः, उक्तं दिगनुपातेन पृथिवीकायिकाना म ल्पबहुत्व मिदानी मप्कायिकाना मल्पबहुत्वमाह-दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा आउक्काइया इत्यादि ॥ सर्वस्तोका अप्कायिकाः पश्चिमायां दिशि गौ

॥ मूल ॥

दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पभापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दि साणुवाएणं सव्वत्थोवा अहे सत्तमापुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेहिंतो अहे सत्तमापुढ विनेरइएहिंतो छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असं

॥ भाषा ॥

थोडा पङ्कप्रभापृथ्वी नारकी पूर्वादिशे पुष्पावकीर्ण नथी तेमाटे पश्चिमउत्तर नथी दक्षिण असंख्यातगुणा कृष्णपाक्षिक घणां ऊपजे। दिसाणुवाएणं सव्व त्थोवा धूमप्पभपुढवीणेरइयाणं पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखिज्जगुणा। दिग्गनोमेलें सर्वथोडा धूमप्रभानारकी पूर्वे पुष्पावकीर्ण नथी ते माटे पश्चिम उत्तर नथी दक्षिणे असंख्यातगुणा कृष्णपक्षी घणांमाटे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा तमप्पभपुढवीणेरइया पुरच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं अस खिज्जगुणा। दिग्गनोमेलें सर्वथोडा तमप्रभानानारकी पूर्वे पुष्पावकीर्ण नथी तेमाटे पश्चिमउत्तर नथी दक्षिणे असंख्यातगुणा। दिसाणुवाएणं सव्व त्थोवा अहेसत्तमपुढवीणेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखिज्जगुणा। दिग्गनो मेलें सर्वथोडा हेठे सातमीनारकी पूर्वे पुष्पावकीर्ण नरकावासा नथी तेमाटे पश्चिम उत्तर दक्षिणे असंख्यातगुणां विस्तारेछे कृष्णपक्षी घणांमाटे, हिवे सात पृथ्वीयकी दिग्गनो अल्पबहुत्व कहेछे—दाहि

॥ टीका ॥

तमद्वीपस्थाने तेषा मल्पत्वात्, तेभ्योपि विशेषाधिकाः पूर्वस्यांदिशि तेभ्योपि विशेषाधिका दक्षिणस्यांदिशि चन्द्रसूर्यद्वीपाल्पत्वात्, तेभ्योप्युत्तरस्यां दिशि विशेषाधिका मानसरः सद्भावात्, तथा दक्षिणस्या मुत्तरस्यां च दिशि सर्वस्तोकाः तेजस्कायिका यतो मनुष्यक्षेत्रे एव बादरा स्तेजस्कायिका नान्यत्र तत्रापि यत्र बहवो मनुष्याः तत्र ते बहवो बाहुल्येन पाकारम्भसम्भवात्, यत्र त्वल्पे तत्रस्तोका स्तत्र दक्षिणस्यां दिशि पंचसु भरतेषु उत्तरस्यां दिशि पंचस्वैरावतेषु क्षेत्रस्याल्पत्वात्, स्तोका मनुष्या स्तेषां स्तोकत्वेन तेजस्कायिका अपि स्तोका अल्पपाकारम्भसम्भवा ततः सर्वस्तोका दक्षिणोत्तरयो र्दिशोः तेजस्कायिकाः स्वस्थानेतु प्रायः समानाः तेभ्यः पूर्वस्यां दिशि सङ्ख्येयगुणाः क्षेत्रस्य सङ्ख्येयगुणत्वात्, ततोपि पश्चिमायां दिशि विशेषाधिकाः अधोलौकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यात् ॥ दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पुरच्छिमेणमित्यादि ॥ इह यत्र शुषिरं

॥ मूल ॥

खेज्जगुणा, दाहिणल्लेहिंतो तमापुढविनेरइएहिंतो पंचमाधूमप्पन्नाए पुढवीए नेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दाहिणल्लेहिंतो धूमप्पन्नापुढविनेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पन्नाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा। दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दाहिणल्लेहिंतो पंकप्पन्नापुढविनेरइएहिंतो तइयाए वालुयप्पन्नाए पुढविनेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं अ

॥ भाषा ॥

णेहिंतो अहेसत्तमाएपुढवी णेरइयाएहिंतो छट्ठीएतमाएपुढवी णेरइए पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं असंखिज्जगुणा। हेठे सातमीपृथ्वीनी दक्षिणदिग्भागे सातमीथी छट्ठीपृथ्वीनानारकी पूर्व पश्चिम उत्तरे असंख्यातगुणां स्यांमाटे हीन २ तर पापकर्मना करणहार हीन नरकगति जपजे तेमाटे सातमीपृथ्वीथी छट्ठीनरके असंख्यातगुणा जपजे। दाहिणेणं असंखिज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो तमापुढवीणेरइएहिंतो पंचमाए धूमप्पभाएपुढवी णेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं असंखिज्जगुणा। दक्षिणे असंख्यातगुणायुक्त सर्व पाछलीपरें जांणवी दक्षिणदिग्भागनी तमापृथ्वीथकी पांचमी धूमप्रभा पृथ्वीना नारकी हीनतर पापकर्मना करणहार तेमाटे पूर्वपश्चिम उत्तरनानारकी असंख्यातगुणे अधिका हुवे। दाहिणेणं असंखिज्जगुणा। तेहथकी दक्षि

॥ टीका ॥

तत्र वायु यत्र च घनं तत्र वाय्वभावः तत्र पूर्वस्यां दिशि प्रभूतं घनमित्यल्पबादरायवः पश्चिमायांदिशि विशेषाधिकाः अधोलौकिकग्रामेषु सम्भवात् उत्तरस्यां दिशि विशेषाधिकाः भवननरकावासबाहुल्येन शुषिरबाहुल्यात्, ततोपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकं उत्तरदिगपेक्षया दक्षिणस्यां दिशि भवनानां नरकावासानां चातिप्रभूतत्वात्, तथा यत्र प्रभूता आपस्तत्र प्रभूता पनकादयो ऽनन्तकायिका नवस्पतयः प्रभूताः शङ्खादयो द्वीन्द्रियाः प्रभूताः पिपीलिकाभूतसेवालाद्याश्रिताः कुन्थ्वादय स्त्रीन्द्रियाः प्रभूताः पद्माद्याश्रिताः भ्रमरादय श्चतुरिन्द्रिया इति, वनस्पत्यादिसूत्राणि चतुरिन्द्रियसूत्र

॥ मूल ॥

संखेज्जगुणा, दाहिणेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणल्लेहिंतो वालुयप्पभापुढविणेरइएहिंतो बीयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दाहिणल्लेहिंतो सक्करप्पभापुढविणेरइएहिंतो इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणल्लेणं असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया पच्चच्छिमेणं पुरच्छि

॥ भाषा ॥

णे असंख्येयगुणा कृष्णपक्षी घणा तेमाटे। दाहिणिल्लेहिंतो धूमप्पभापुढवीए णेरइएहिंतो चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीएणेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं असंखिज्जगुणा। दक्षिणदिशिना धूमप्रभापृथ्वीना नारकी दक्षिणदिशिथी चौथी पङ्कप्रभानानारकी पूर्व पश्चिम उत्तरना असंख्यातगुणे अधिकहुवे। दाहिणेणं असंखिज्जगुणा दाहिणिल्लेहिंतो पंकप्पभाएपुढवीणेरइएहिंतो। तेहथी दक्षिणे असंख्यातगुणा कृष्णपक्षी घणा तेमाटे दक्षिणदिशिना पङ्कप्रभाना नारकीथी। तइयाए वालुयप्पभाएपुढवीए णेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं असंखिज्जगुणा। त्रीजी वालुकप्रभापृथ्वीना नारकी पूर्व पश्चिम उत्तरना असंख्यातगुणा होनकर्मना करणहार तेमाटे। दाहिणेणं असंखिज्जगुणा। तेहथकी असंख्यातगुणा युक्त पाछलीपरे। दाहिणिल्लेहिंतो वालुयप्पभपुढवी णेरइएहिंतो। दक्षिणदिशिना नारकी वालुकप्रभाना नारकीथकी। दुइयाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं असंखिज्जगुणा। दूजी शर्करप्रभाना नारकी पूर्व पश्चिम उत्तरना असंख्यातगुणा हुवे थोडापापी तेमाटे दक्षिणे असंख्यागतुणा हुवे थोडापापी तेमाटे।

॥ टीका ॥

पर्यंतानि अप्कायिकसूत्रवद् भावनीयानि, नैरयिकसूत्रे-सर्वस्तोकाः पूर्वोत्तरपश्चिमविदिग्भाविनो नैरयिकाः पुष्पावकीर्णनरकावासानां चात्राल्पत्वात् बहूनां प्रायः संख्येययोजनविस्तृतत्वाच्च, तेभ्यो दक्षिणदिग्भागविभाविनो संख्येयगुणाः पुष्पावकीर्णनरकावासानां तत्र बाहुल्यात्, तेभ्यश्च प्रायो सङ्ख्येययोजनविस्तृतत्वात्, कृष्णपाक्षिकाणां तस्यां दिशि प्राचुर्येणोत्पादाच्च, तथाहि-द्विविधा जन्तवः शुक्लपाक्षिकाः कृष्णपाक्षिकाश्च, तेषां लक्षणमिदं-किञ्चिदूनपुद्गलपरावर्त्तार्द्धमात्रसंसारास्ते शुक्लपाक्षिकाः अधिकतरसंसारभाजिन स्तु कृष्णपाक्षिकाः, उक्तञ्च-जेसिमवड्ढोपुग्गल परियट्टोसेसओसंसा

॥ मूल ॥

मेणं विसेसाहिया, दाहिणणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहिणउत्तरेणं पुरच्छिमेणं संखेज्जगुणा । पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया । दिसाणुवासीणं सव्वत्थोवा भवणवासी देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा । दाहिणेणं असंखेज्जगुणा, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा

॥ भाषा ॥

दाहिणेण असंखिज्जगुणा । दक्षिणे असंख्यातगुणा अधिक पाछलोपरे । दाक्षिणात्यहितो सक्करप्पभपुढवी णेरइएहितो । दक्षिणदिशिना शर्करप्रभापृथ्वी ना नारकोथी । इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए णेरइया पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेण असंखिज्जगुणा । आ पहिली रत्नप्रभापृथ्वीना नारको पूर्व पश्चिम उत्तरना असंख्यातगुणा हुवे । दाहिणेण असंखिज्जगुणा । तेहथकी दक्षिण असंख्यातगुणा, असंख्यात कृष्णपक्षी माटे । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा पचेंदिय तिरिक्खजोणिया पच्चच्छिमेणं पुरच्छिमेणं विसेसाहिया उत्तरेण वि० । दिशनोमेले सर्वथोथोडा पचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया पश्चिमे ते गौतमद्वीपके लवणसमुद्र तिहांपाणी थोडा तेमाटे तिर्यंचयोनिया मत्स्यादिक थोडा जपजे पूर्वे विशेषाधिक गौतमद्वीप नथी उत्तरे विशेषाधिक मानसरोवर इम मत्स्यादि घणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहिण उत्तरेण पुरच्छिमेण संखिज्जगुणा पच्चच्छिमेणं वि० । दिशथकी जाता सर्वथोडा मनुष्य दक्षिण उत्तर जेमणी उत्तरे ऐरवत दक्षिणे भरतक्षेत्र थोडा पूर्वे मनुष्यसंख्यातगुणा अधिक जेमणी महाविदेह मोटक्षेत्र पश्चिमदिशि विशेषाधिक जेमणी अधोलोकग्रामिक मनुष्य घणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा पुरच्छिम पच्चच्छिमेण उत्तरेण असंखिज्जगुणा दाहिणेण असंखिज्जगुणा । दिशनी

रो। तेसुकृष्णपक्खियाखलु अहीएपुणकरहपक्खीउ ॥ १ ॥ अतएवच श्लोकाः शुक्लपाक्षिका अल्पसंसारिणां श्लोकत्वात्, बहवः कृष्णपाक्षिकाः प्रजूनसंसारिणामतिप्रचुरत्वात्, कृष्णपाक्षिकाश्च प्राचुर्येण दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते न शेषासु दिक्षु तथास्वाम्नाव्यात्, तच्च तथास्वाम्नाव्यं पूर्वाचार्यै रेवं युक्तिभि रुपबृंहयन्ते, तद्यथा-कृष्णपाक्षिका दीर्घतरसंसारभाजिन उच्यंते दीर्घतरसंसारभाजिनश्च बहुपापोदया भवन्ति, बहुपापोदया श्च क्रूरकर्माणः क्रूरकर्माश्च प्राय स्तथास्वाम्नाव्यात्, तद्भवसिद्धिका अपि दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते नशेषासु दिक्षु यत उक्तं-पायमिहक्रूरकम्मा भवसिद्धीयाविदाहिणल्लेसु। नेरइयतिरियमणुया सुराइछाणेसुगच्छन्ति ॥ १ ॥ ततो दक्षिणस्यां दिशि बहूना कृष्णपाक्षिकाणा मुत्पादसंभवात्, पूर्वोक्तकारणद्वयाच्च सम्भवन्ति, पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविन्यो दाक्षिणात्या असंख्येयगुणाः, यथाच सामान्यतो नैरयिकाणां दिग्विभागेना ल्पबहुत्वमुक्तमेवं प्रतिपृथिव्यपि



वाणमंतरादेवा पुरच्छिमेणंपच्चच्छिमेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया, दाहिणेणं विसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं दाहिणेणं विसेसाहिया, उत्तरेणं विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सोहम्मे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसे



मेले सर्वथोडा भवनवासीदेवता पूर्वपश्चिमें भवन थोडा उत्तरे असंख्यातगुणां ३० लाख भवननो अपेक्षायें दक्षिणें भुवनपती असंख्यातगुणां ३४ लाख भुवननो अपेक्षायें कृष्णपक्षी घणां ऊपजे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरादेवा पुरच्छिमेण पच्चच्छिमेण विसेसाहिया उत्तरेणं वि० दाहिणेणं विसेसाहिया। दिशनोमेले सर्वथोडा वाणव्यंतर देवता पूर्वे स्थांमाटे घनभूमि घणां पश्चिमें विशेषाधिक अधोग्राम मुखेरहे तिहांघणां उत्तरे विशेषाधिक नगरनोआवास घणांनो अपेक्षायें दक्षिण विशेषाधिक नगरावास घणा ते भणी। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसियादेवा पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं दाहिणेणं विसेसाहिया। दिशनोमेले सर्वथोडा ज्योतिषीदेवता पूर्वपश्चिम चंद्रसूर्यना विमानछे तेमाटे विमानथोडा दक्षिणे विशेषाधिक चंद्रसूर्यहोय नथी। उत्तर विशेषाधिक जेमणी मानसरोवर ज्योतिषीरहिवा आवेछे तेहनारूप मच्छदेखी जातिस्मरण पामी अणसण लेइ ज्योतिषीमध्ये ऊपजे तेमाटे ज

वक्तव्यं युक्तेः सर्वत्रापि समानत्वात् तदेवं प्रतिपृथिव्यपि दिग्विज्ञागेना ल्पबहुत्व मु क्तमिदानीं सप्तापि पृथिवीरधिकृत्य दिग्विज्ञागेना ल्पबहुत्व माह-दाहिणेणंतो अहे सत्तमपुढविनेरइएहिंतो छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया इत्यादि ॥ सप्तमपृथिव्यां पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्विज्ञाविभ्यो नैरयिके भ्योये सप्तमपृथिव्यामेव दाक्षिणात्या स्ते ऽसङ्ख्ययगुणा स्तेभ्यः षष्ठपृथिव्यां तमप्रज्ञाभिधानायां पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्विज्ञाविभ्यो ऽसङ्ख्ययगुणाः कथमिति चेत्, उच्यते-इह सर्वोत्कृष्टपापकारिणः सञ्ज्ञिपंचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याः सप्तमनरकपृथिव्या मुत्पद्यन्ते, किंचिद्हीनहीनतरपापकर्मकारिणश्च षष्ठ्यादिषु पृथिवीषु सर्वोत्कृष्टपापकर्मकारिणश्च सर्वस्तोकाः बहवश्च यथोत्तरं किंचिद्हीनतरादिपापकर्मकारिण स्ततो युक्तमसंख्येयगुणत्वं, सप्तमपृथिवीदाक्षिणात्यनारकापेक्षया षष्ठपृथिव्यां पूर्वोत्तरपश्चिमनारकाणा मेव मुत्तरोत्तरपृथिवीरप्यधिकृत्य भावयितव्यं, तेभ्योपि तस्यामेव षष्ठपृथिव्यां दक्षिणस्यां



साहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा दाहिणेणं विसेसाहिया, दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सणंकुमारेकप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरच्छिमेणंपच्चच्छिमेणं, उत्तरेणं



पर घणां। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवादेवा सोहम्मेकप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखिज्जगुणा दाहिणेणं विसेसाहिया। दिग्नौमेले सर्वथोडा सौधर्म कल्पे पूर्वादिशें जेमणी पुष्पावकीर्ण नथी पश्चिमेपिण एहजभाव उत्तरे असंख्यातगुणां अधिक दक्षिणदिशि विशेषाधिक जेमाटे कृष्णपक्षी। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा ईसाणेकप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखिज्जगुणा। दिग्नौमेले जोवता सर्वथोडा ईशानकल्पे पूर्वे पुष्पावकीर्ण नथी तेमाट पश्चिम उत्तरे असंख्यात विस्तारविशेष। दाहिणेणं विसेसाहिया। दक्षिणे असंख्यातगुणा कृष्णपक्षी घणां ऊपजे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा माहिंदे कप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिमेणं उत्तरेणं असंखिज्जगुणा। दिग्नाआथी जोवता सर्वथोडा देवता माहेंद्र कल्पना देवता सर्वपश्चिमे पुष्पावकीर्ण नथी उत्तरे असंख्यातगुणा। दाहिणेणं विसेसाहिया। दक्षिणविशेषाधिक कृष्णपक्षी ऊपजे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिम प

॥ टीका ॥

दिशि नारका असंख्येयगुणा युक्तिरत्र प्रागेवोक्ता तेभ्योपि पञ्चमपृथिव्यां धूमप्रभानिधानायां पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो सङ्ख्येयगुणाः तेभ्योपि तस्यामेव पञ्चमपृथिव्यां दाक्षिणात्या असंख्येयगुणाः' एवं सर्वास्वपि क्रमेण वाच्यं, तिर्यक्पंचेन्द्रियसूत्रं त्वप्कायसूत्रवत्-दिसाणुवायणं सव्वत्थोवा मणुस्सा दाहिणउत्तरेणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका मनुष्या दक्षिणस्या मुत्तरस्यां च पञ्चानां भरतक्षेत्राणां पञ्चाना मैरावतक्षेत्राणा मत्यल्पत्वात्, तेभ्यः पूर्वस्यां दिशि सङ्ख्येयगुणाः क्षेत्रस्य संख्येयगुणत्वात्, तेभ्योपि पश्चिमायां दिशि विशेषाधिकाः स्वभावत एवाधोलौकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यभावात् ॥ दिसाणुवायणं सव्वत्थोवा भवणवासीत्यादि ॥ सर्वस्तोका भवनवासिनो देवाः पूर्वस्यां पश्चिमायांच दिशि तत्र भवनानामल्पत्वात्, तेभ्यो उत्तरदिग्भाविनो ऽसंख्येयगुणाः स्वस्थानतया तत्र भवनानां बाहुल्यात्, तेभ्योपि दक्षिणदिग्भाविनोऽसंख्येयगुणा स्तत्र भवनाना मतीवबाहुल्यात्,

॥ मूल ॥

असंखेज्जगुणा, दाहिणेणं विसेसाहिया। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा बंभलोए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा। दिसाणुवाएणं लंतए कप्पे देवा पुरच्छिमपच्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्ज

॥ भाषा ॥

च्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखिज्जगुणा। दिग्नयोमेले सर्वथोडा ब्रह्मलोक कल्पनादेवता पूर्व पश्चिमे पण्यावकोणे नथी उत्तरे दक्षिणे असंख्यातगुणा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा लंतएकप्पे देवा पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेण असंखिज्जगुणा। दिग्नयोमेले सर्वथोडा लांतककल्पनादेवता पूर्व पश्चिम उत्तरे दक्षिणे असंख्यातगुणा जाणिवा। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा महासुक्केकप्पे पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखिज्जगुणा। दिग्नयोमेले सर्वथोडा देवता महाशुक्र कल्पना पूर्व पश्चिमे उत्तरे दक्षिणे असख्यातगुणा युक्तपाक्षको परे। दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सहस्सारे कप्पे देवा पुरच्छिम पच्चच्छिम उत्तरेणं दाहिणेणं असंखिज्जगुणा। दिग्नयोमेले जोवता सर्वथोडा देवता सहस्रारकल्पना पूर्व पश्चिमे उत्तरे दक्षिणे असंख्यात कृष्णपक्षी माटे। तेण परं बहुसमोववन्नगा समणाउसो। तिवारपछे सरीखा स्थामाटे तिहां मनुष्य जपजे ते समावती सरीखा हुवे अहोश्रमणो आयु

तथाहि-निकाये २ चत्वारि २ भवनशतसहस्राण्यतिरिच्यंते, कृष्णपाक्षिकाश्च बहवो स्तत्रोत्पद्यन्ते, ततो भवन्त्यसंख्येयगुणाः, व्यन्तरसूत्रे भावना यत्र शुषिरं तत्र व्यन्तराः प्रचरन्ति, यत्र घनं तत्र न, ततः पूर्वस्यां दिशि घनत्वात् स्तोका व्यन्तरा स्तेभ्यो ऽपरस्यां दिशि विशेषाधिकाः, अधो लौकिकग्रामेषु शुषिरसम्भवात्' तेभ्योप्युत्तरस्यां दिशि विशेषाधिकाः स्वस्थानतया नगरावासबाहुल्यात्, तेभ्योपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकाः अतिप्रभूतनगरावासबाहुल्यात्, तथा सर्वस्तोका ज्योतिष्काः पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि चन्द्रादित्यद्वीपेषूद्यानकल्पेषु कतिपयानामेव तेषां भावात्' तेभ्योपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिका विमानबाहुल्यात्' कृष्णपाक्षिकाणां दक्षिणदिग्भावित्वाच्च, तेभ्यो प्युत्तरस्यां दिशि विशेषाधिकाः यतो मानसे सरसि बहवो ज्योतिष्काः क्रीडास्थान मिति क्रीडनव्यापृताः नित्यमासते, मानससरसि च ये मत्स्यादयो जलचरा स्ते आस न्नविमानदर्शनतः समुत्पन्नजातिस्मरणात् किंचिद्व्रतं प्रतिपद्या नशनादिच कृत्वा कृतनिदाना स्तत्रोत्पद्यन्ते, ततो भवन्त्यौत्तराहा दाक्षिणात्येभ्यो

---

विशेषाधिकाः, तथा सौधर्मे कल्पे सर्वस्तोकाः पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि वैमानिकादेवा यतो यान्यावलिकाप्रविष्टानि विमानानि तानि चतसृष्वपि दिक्षु तुल्यानि यानि पुनः पुष्पावकीर्णानि तानि प्रभूतानि असंख्येययोजनविस्तृतानि तानि च दक्षिणस्यामुत्तरस्यां दिशि नान्यत्र ततः स र्वस्तोकाः पूर्वस्यां पश्चिमायां च दिशि तेभ्य उत्तरस्यां दिशि असङ्ख्येयगुणाः पुष्पावकीर्णविमानानां बाहुल्या दसंख्येययोजनविस्तृतत्वाच्च, तेभ्योपि दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकाः, कृष्णपाक्षिकाणां प्राचुर्येण तत्र गमनात्, एवमीशानसनत्कुमारमाहेन्द्रकल्पसूत्राण्यपि भावनीयानि, ब्रह्मलोककल्पे सर्वस्तोकाः पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनो देवा यतो बहवः कृष्णपाक्षिका स्तिर्यग्योनयो दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते शुक्लपाक्षिकाः पुनः पूर्वोत्तरपश्चिमासु शुक्लपाक्षिकाश्च स्तोका इति पूर्वोत्तरपश्चिमदिग्भाविनः सर्वस्तोकाः तेभ्यो दक्षिणस्यां दिशि असंख्येयगुणाः कृष्णपाक्षिकाणां बहूनां तत्रोत्पादात्, एवं लान्तकशुक्रसहस्रारसूत्राण्यपि भावनीयानि, आनतादिषु पुन र्मनुष्या एवोत्पद्यन्ते तेन प्रतिकल्पं प्रतिग्रैवेयकं प्रत्यनुत्तरविमानं चतसृषु दिक्षु

॥ टीका ॥

प्रायो बहुसमावेदितव्या स्तथाचाह ॥ तेणपरं बहुसमोबवन्नगा समणाउसो ! इति दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणमित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः सिद्धा दक्षिणस्या मुत्तरस्यां च दिशि कथमितिचेत् ? उच्यते-इह मनुष्याएव सिध्यन्ति नान्ये मनुष्या अपि सिध्यंतो येषा काशप्रदेशे ष्विह चरमसमय अवगाढा स्तेष्वेवाकाशप्रदेशेषू र्ध्वमपि गच्छन्ति, तेष्वेव चोपर्यवतिष्ठन्ति, न मनागपि वक्रं गच्छन्ति, सिध्यन्तिच, यत्र दक्षिणस्यां दिशि पंचसु भरतेष्वुत्तरस्यां दिशि पञ्चसैरावतेषु मनुष्या अल्पाः क्षेत्रस्याल्पत्वात्, सुखमसुखमादौ च सिद्धे अभावादिति तत्क्षेत्रसिद्धाः सर्वस्तो का तेभ्यः पूर्वस्यां दिशि संख्येयगुणाः पूर्वविदेहानां भरतैरावतक्षेत्रेभ्यः संख्येयगुणतया तद्गतमनुष्याणामपि संख्येयगुणत्वात्, तेषां च सर्वकालं सिद्धिभावात्, तेभ्यः पश्चिमायां दिशि विशेषाधिका अधोलौकिकग्रामेषु मनुष्यबाहुल्यात् गतं दिग्द्वार मिदानीं गतिद्वारं-तत्रेदमादिसूत्रं-एएसिणं भंते ! नेरइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका मनुष्याः षण्णवतिच्छेदनकच्छेद्यराशिप्रमाणत्वात् सच षण्णवतिच्छेदनकदायीराशि रग्रे दर्शयिष्यते, ते

॥ मूल ॥

गुणा । दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा महासुक्के कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा सहस्सारे कप्पे पुरच्छिमपच्चच्छिमउत्तरेणं दाहिणेणं असंखेज्जगुणा , तेण

॥ भाषा ॥

मन् । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणं पुरच्छिमेणं संखिज्जगुणा पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया द्वार १ । दिग्नीमेले जीतां सर्वथोडा सिद्ध दक्षिण उत्तरे भरतऐरवत्ना थोडा तेमणी थोडासिद्ध पूर्वे महाविदेह मणी संख्यातगुणा पश्चिमे अधोग्रामे मनुष्यगणां तेमणी सिद्धा विशेषाधिक इति दिग्द्वार ॥ १ ॥ हिवे गतिद्वारनो अल्पबहुत्व कहेछे—एएसिणं भंते णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाणय पंचगइसमासे । एहने हेभगवन् नारकीनो तिर्यंचयोनियाने मनुष्यने देवताने सिद्धने पांचगति ते समासेकरी । सेणं कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया । ते किहां २ थोडाहुवे घणांहुवे सरीखाहुवे किहां विशेषाधिक हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा मणुस्स णेरइया असंखिज्जगुणा देवा असंखिज्जगुणा सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा । हेगौतम सर्वथोडा मनुष्यछनुंछद्रकछे इन्द्रिय प्रमाणने आये विचार कहेछे—तेहथकी नारकी असंख्यातगुणा

ज्यो नैरयिका असंख्येयगुणा अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः सम्बन्धिनि प्रथमवर्गमूले द्वितीयवर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि र्भवति, तावत्प्रमा णासु घनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावन्तो नभः प्रदेशा स्तावत्प्रमाणत्वात्, तेभ्यो देवा असंख्येयगुणाः व्यन्तराणां ज्योतिष्काणां च प्रत्येकं प्रतरासंख्येयभागवर्त्तिश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्, तेभ्यः सिद्धा अनन्तगुणा अन्योन्येष्वप्यनन्तगुणत्वात्, तेभ्य स्तिर्यग्योनिका अ नन्तगुणाः वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्योप्यनन्तगुणत्वात्, तदेवं नैरयिकतिर्यग्योनिकमनुष्यदेवसिद्धरूपाणां पञ्चानामल्पबहुत्व मुक्त मिदानीं नैर यिकतिर्यग्योनिकतिर्यग्योनिकीमनुष्यमानुषीदेवदेवीसिद्धलक्षणाना मष्टाना मल्पबहुत्वमभिधित्सुरिदमाह-एएसिणं भंते ! नेरइयाणमित्यादि ॥ स



परं वज्रसमोत्ववन्नगा समणाउसो ! दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा सिद्धा दाहिणउत्तरेणं पुरच्छिमेणं संखेज्जगु णा, पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया दार १ । एएसिणं भंते ! णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साणं देवाणं सिद्धाणय पंचगइसमासेणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा ? गोयमा !



अंगुलमात्र क्षेत्रप्रदेश राशिवर्ग पहिले वर्गमूले गुणते बीजे वर्गमूले गुणते प्रदेशराशि हुवे तेतलेमान सूची घनकीजे धोलोक एहवो एकप्रदेशकीजे जेतलो ते नभप्रदेश तेतलाप्रमाणवती असंख्यातगुणा व्यन्तरज्योतिषाणां प्रत्येकप्रतर संख्येयभागवर्त्ति श्रेणिगत आकाश प्रदेशराशिछे ते प्रमाणछे सिद्ध अणंतगु णा अभव्यथी अनन्तगुणा तेमाटे तिर्यंचयोनिया अनन्तगुणा । वनस्पतीकाय अनन्तकाय तेमाटे । एएसिणंभंते णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं मणुस्साण मणुस्सीणं देवाण देवीणं सिद्धाणय अट्ठगइसमासेणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । एह हेभगवन् एह नारकोने तिर्यंचने तिर्यंचणीने मनुष्यने मनुष्यणीने देवने देवीने सिद्धने ए आठपद समासेकरी माहोमांहि करी किहा २ थोडा अधिका । गोयमा सर्वस्तोवाओ मनुष्योओ मनुष्या असंखिज्जगुणा णेरइ या असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथीथोडी मनुष्यणी मनुष्यथी सत्तावीसगुणी स्त्री अधिकीछे पिण इहां थोडी ते सम्मूर्च्छिममनुष्य मांहिभेल्या तेमाटे स्त्री थी मनुष्य असंख्यातगुणा ते मनुष्यथी नारकी असंख्यातगुणा । तिरिक्खजोणिणीओ असंखिज्जगुणीओ देवा असंखिज्जगुणा देवीओ संखिज्जगुणीओ सि

॥ टीका ॥

र्वस्तोका मानुष्यो मनुष्यस्त्रियः संख्येयकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, ताभ्यो मनुष्या असंख्येयगुणा इह मनुष्याः संमूर्च्छनजा अपि गृह्यन्ते, वेदस्या विवक्षणात्, तेच संमूर्च्छनजा वान्तादिषु नगरनिर्द्वमनान्तेषु जायमाना असंख्येयाः प्राप्यन्ते तेभ्यो नैरयिका असंख्येयगुणा मनुष्या श्रुत्कृष्टपदे पि श्रेण्यसङ्ख्येयभागगतप्रदेशरात्रिप्रमाणा लभ्यन्ते, नैरयिकास्त्वङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशिसत्कद्वितीयवर्गमूलगुणितप्रथमवर्गमूलप्रमाणश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणा स्ततो भवन्त्यसङ्ख्येयगुणा स्तेभ्य स्तिर्यग्योनिकाः स्त्रियो ऽसङ्ख्येयगुणाः प्रतरासङ्ख्येयभागवर्त्यसङ्ख्येयश्रेणिनभ प्रदेशराशिप्रमाणत्वात्, ताभ्यो

॥ मूल ॥

सव्वत्थोवा मणुस्सा णेरइया असंखेज्जगुणा देवा असंखेज्जगुणा सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा । एएसिणं भंते ! णेरइयाणं तिरिक्खजोणियाणं तिरिक्खजोणिणीणं मणुस्साणं मणुस्सीणं देवाणं सिद्धाणय अट्ठगतिसमासेणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सीओ मणुस्सा असंखेज्जगुणा । णेरइया असंखेज्जगुणा तिरिक्खजोणिणीओ असंखेज्जगुणा

॥ भाषा ॥

द्धा अणंतगुणा तिरिक्खजोणिया अणंतगुणा द्वार २ । ते नारकोथी तिर्यञ्च स्त्री असंख्यातगुणी प्रतर असंख्यातभाग वर्त्तसंस्थान श्रेणि नभप्रदेश राशिप्रमाण ते तिर्यञ्चणीथी देवता असंख्यातभाग वर्त्ति गतप्रदेश राशिप्रमाण ते देवताथी देवांगना संख्यातगुणी ३२ गुण ३२ रूप इति वचनात देवीथी सिद्धजीव अनन्तगुणा ते सिद्धथकी तिर्यञ्चयोनिया अनन्तगुणा सूक्ष्मबादर त्रिगोद्द भेपात् इति गतिद्वार संपूर्ण हुवे, हिवे इन्द्रियद्वार कहेछे—दूजपदे तो जोद्वार ॥ ३ ॥ एएसिणं भंते सइंदियाण । एह हेभगवन् सेन्द्रिय । एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचेंदियाणं अणिंदियाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । एकेंद्रियने बेइन्द्रियने तेइन्द्रियने चौरिन्द्रियने पंचेन्द्रियने अनेन्द्रियने सिद्धने कोहवा २ थी थोडा अथवा घणां । गोयमा सव्वत्थोवा पंचेंदिया । हेगौतम सर्व पंचेंद्रिय संख्यातयोजन कोडाकोडी तेहथी । चउरिंदिया विसेसाहिया तेइंदियाविसेसाहिया बेंदियाविसेसाहिया । चौरिन्द्रियविशेषाधिक विष्कम्भ सूचीप्रभूत संख्यातयोजन कोडाकोडी प्रमाण तेंद्रियविशेषाधिक विष्कम्भ सूचीप्रभूत तर संख्यातयोजन कोडाकोडी प्रमाण तेह

॥ टीका ॥

पि देवा असंख्येयगुणाः प्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणिगतप्रदेशराशिमानत्वात्, तेभ्योपि देव्यः संख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात्, ताभ्योपि सिद्धा अनन्तगुणा स्तेभ्योपि तिर्यग्योनिका अनन्तगुणाः, अत्र युक्तिः प्रागेवोक्ता, गतं गतिद्वार मिदानीं मिन्द्रियद्वार मधिकृत्याह-एएसिणं भंते ! सइंदियाणयमित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः पञ्चेन्द्रियाः संख्येया दशयोजनकोटाकोटीप्रमाणविष्कंभसूचीप्रतिप्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणिगताकाशप्रदे

॥ मूल ॥

न । देवा असंखेज्जगुणा । देवीन संखेज्जगुणान सिद्धा अणंतगुणा तिरिक्कजोणिया अणंतगुणा दारं २। एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं अणिंदियाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिंदिया चउरिंदियाविसेसाहियातेइंदिया विसेसाहिया बेइंदिया विसेसाहिया अणिंदिया अणंतगुणा । एगिंदिया अ० सइंदिया वि० । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदिया पंचिंदियाणं अपज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पंचिं

॥ भाषा ॥

थी बेंद्रिय विशेषाधिक सूचीप्रभृत असंख्यातयोजन कोडाकोडी प्रमाण । अणिंदिया अणंतगुणा एगिंदिया अणंतगुणा सइंदिया विसेसाहिया । तेह थी अनेंद्रियसिद्ध अनन्तगुणा एकेंद्रिय अनन्तगुणा वनस्पतीमांहि घालतेथकै तेहथी सेंद्रिय विशेषाधिकपणे बेंद्रियमांहिला । एएसिणंभंते सइंदियाणं बेंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणय अपज्जत्तगाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । भगवन् एह सेंद्रियने एकेंद्रियने बेइन्द्रियने तेरिंद्रियने चौरिंद्रियने पचेंद्रियने अपर्याप्तामांहि किहां २ थकी थोडा घणां । गोयमा सर्वथोवा पंचिंदिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया तेंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया एगिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया । हेगीतम सर्वथीथोडा पचेंद्रिय अपर्याप्ता एकप्रतरे जेतला अंगुल असंख्यातभागमात्र खण्ड तेतलेप्रमाण तेहथी चउरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूतअंगुल

॥ टीका ॥

शराशिप्रमाणत्वात्, तेभ्य श्चतुरिन्द्रिया विशेषाधिका विष्कम्भसूच्या स्तेषां प्रभूतसंख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्योपि त्रीन्द्रिया विशेषाधिका स्तेषां विष्कम्भसूच्याः प्रभूततरसंख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्योपि द्वीन्द्रिया विशेषाधिका स्तेषां विष्कम्भसूच्याः प्रभूततरसंख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणत्वात्, तेभ्यो ऽनीन्द्रिया अनन्तगुणाः सिद्धाना मनन्तत्वात्, तेभ्योपि एकेन्द्रिया अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात् तेभ्योपि सेन्द्रिया विशेषाधिका द्वीन्द्रिया दीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, तदेवमुक्त मेकमौधिकाना मल्पबहुत्व मिदानी मेतेषा मेवा पर्याप्तानां द्वितीयमल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! सइंदियाणा मित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः पचेंद्रिया अपर्याप्ता एकस्मिन्प्रतरे यावन्त्यङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वात्, तेषां तेभ्य श्चतुरिन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूताङ्गुलासंख्येयभागखण्डप्रमाणत्वात्, तेभ्य स्त्रीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूततरप्रतराङ्गुलासंख्येयभागखण्डप्रमानत्वात्, तेभ्योपि द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूततमाङ्गुला

॥ मूल ॥

दिया अपज्जत्तगा चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा असंखगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया। एएसिणं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पज्जत्तगा चउरिंदिया

॥ भाषा ॥

असंख्यातभाग खण्ड तेतले प्रमाण तेहथी तेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूतप्रतर असंख्यात भागमात्र खण्डप्रमाण तेहथी बेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिकप्रभूतप्रतर असंख्यातभाग खण्डप्रमाण एकेंद्रिय अपर्याप्ता अनन्तगुणा सदा अनन्ता पामिये तेहथी अपर्याप्ता विशेषाधिक बेंद्रिय अपर्याप्तामां हि घालता। एएसिणभंते सइंदियाणं। हेभगवन् एह सेंद्रियने। एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचेंदियाणं पज्जत्तगाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। एकेंद्रियने बेइन्द्रियमे तेइन्द्रियने चौरिन्द्रियने पचेंद्रियने पर्याप्ताने किहां २ थकी अल्पबहुत्व ४। गोयमा सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्त

॥ टीका ॥

संख्येयभागखण्डप्रमाणत्वात्, तेभ्य एकेन्द्रिया अपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानामपर्याप्तानां मनन्ततया सदा प्राप्यमाणत्वात्, तेभ्योपि सेन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियाद्यपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, गतं द्वितीयमल्पबहुत्वं मधुनैतेषामेव पर्याप्तानां मल्पबहुत्वमाह-ए एसिणं भंते ! सइंदियाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका श्चतुरिन्द्रियाः पर्याप्ता यतोल्पायुष श्चतुरिन्द्रिया स्ततः प्रभूतकालमवस्थानाभावात्, पृच्छासमये

॥ मूल ॥

पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्ता पज्जत्तगा सइंदिया संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगिंदिया पज्जत्तगा एगिंदिया अपज्जत्ता असं० । एएसिणं भंते !

॥ भाषा ॥

गा पंचेंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया । हेगौतम सर्वथोडा चौरिंद्रिया पर्याप्ता जेमथी थोडा आडखामांहि तेहथी पचेंद्रिय पर्याप्ता जेमणी विशेषाधिक प्रभूत अगुल असंख्यात भागमात्र खण्डप्रमाण । बेइंदियपज्जत्तगा विसेसाहिया तेइंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया एगिंदिय पज्जत्तगा विसेसाहिया असंखेज्जगुणा सइंदियपज्जत्तगा विसेसाहिया । बेइंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक प्रभूतप्रतर अगुल असख्यात भागमात्रखंड तेतले प्रमाण तेंद्रियपर्याप्ता विशेषाधिक एकेंद्रियपर्याप्ता अनन्तगुणा वनस्पतिपर्याप्ता अनन्तामाटे तेहथी सेंद्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक बेइन्द्रियपर्याप्तामांहि घालता । एएसिणं भंते सइंदियाण पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थकी थोडा इत्यादि ४ ॥ गोयमा सव्वत्थोवा सइंदिया अपज्जत्तगा सइंदिया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सेंद्रिय अपर्याप्ता इहां सेंद्रियमांहि एकेंद्रिय घालै सूक्ष्म पर्याप्ता सेंद्रिय संख्यातगुणा हुवे । एएसिणंभंते एगिंदियाणं पज्जत्त अपज्जत्तगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह एकेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ता

॥ टीका ॥

स्तोका अपि प्रतरे यावत्यङ्गुलसंख्येयभागमात्राणि खंडानि तावत्प्रमाणा वेदितव्या स्तेभ्यः पञ्चेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूताङ्गुलसंख्येयभागखण्डप्रमानत्वात्, तेभ्योपि द्वीन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः प्रभूततरप्रतराङ्गुलसंख्येयभागखण्डप्रमानत्वात्, तेभ्योपि त्रीन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः स्वभावत एव तेषां प्रभूततमप्रतराङ्गुलसंख्येयभागखण्डप्रमाणत्वात्, तेभ्य एकेन्द्रियाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः वनस्पतिकायिकानां पर्याप्ता ना मनन्तत्वात्, तेभ्यः सेन्द्रियाः पर्याप्ता विशेषाधिका द्वीन्द्रियादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात्, गतं तृतीयमल्पबहुत्वं-सम्प्रत्येतेषामेव सेन्द्रियाणां प्रत्येकपर्याप्ताऽपर्याप्तगतान्यल्पबहुत्वान्याह-एएसिणं भंते । इत्यादि सर्वस्तोकाः सेन्द्रिया अपर्याप्तका इह सेन्द्रिया एव बहव स्तत्रापि

॥ मूल ॥

बेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा । सव्वत्थोवा बेइंदिया अपज्जत्ता बेइंदिया अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! तेइंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा तेइंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! चउरिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदियापज्जत्तगा चउरिंदिया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते ! पंचेंदियाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो

॥ भाषा ॥

मांहि किहांथकी थोडा घणां सरीखा विशेषाधिक हुवे ४ ॥ गोयमा सव्वत्थोवा एगिंदिय अपज्जत्तगा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा एकेंद्रिय पर्याप्ताबादर सूक्ष्मअपर्याप्ता घणांहुवे एकेंद्रिय पर्याप्ता संख्यातगुणाछै। एएसिणं भंते पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह बेइन्द्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थकी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तगा बेंदिया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा बेइन्द्रिय पर्याप्ता जेतला प्रतरना अंगुल संख्यातप्रमाण तेहथी बेइंद्रिय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा असंख्यात प्रतरभाग। एएसिणं भंते तेइंदियाणं पज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह तेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी थोडा घणां सरीखा विशेषाधिक हुवे ।

॥ टीका ॥

सूक्ष्मा स्तेषां सर्वलोकापन्नत्वात्, सूक्ष्माश्चापर्याप्ताः सर्वस्तोकाः पर्याप्ताः संख्येयगुणा इति, सेन्द्रिया अपर्याप्ताः सर्वस्तोकाः पर्याप्ताः संख्येयगुणाः एव मेकेन्द्रिया अप्यपर्याप्ताः सर्वस्तोकाः पर्याप्ताः संख्येयगुणा भावनीयाः, तथा सर्वस्तोकाद्वीन्द्रियाः पर्याप्ता यावन्ति प्रतरे ऽङ्गुलस्य असंख्येयभा

॥ मूल ॥

एएसिणं भंते! सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचिंदियाणं पज्जत्तापज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा पंचिंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा

॥ भाषा ॥

गोयमा सव्वत्थोवा तेंदिया पज्जत्ता २ असंखेज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा तेंद्रियपर्याप्ता जेतला प्रतरना अंगुल संख्यात खंडप्रमाण तेंद्रियपर्याप्ता असंख्यातगुणा हुवे प्रतरगत असंख्यातगुणा हुवे। एएसिणं भंते चउरिंदिया णं पज्जत्ता २ पय कयरे २ हिंतो अपपावा ४। हेभगवन् एह चौरिंद्रिय ते पर्याप्ता अपर्याप्ता किहां २ थकी थोडाहुवे घणांहुवे ४॥ गोयमा सव्वत्थोवा चउरिंदिया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा चउरिंद्रिय पर्याप्ता जेतला प्रतरना अंगुल संख्यात भागप्रमाण प्रतरगत अंगुल २ असंख्यातभाग प्रमाण। एएसिणं भंते पंचेंदियाण पज्जत्ता २ पय कयरे २ हिंतो अपपावा ४। हेभगवन् एह पचेंद्रिय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थकी थोडा घणां विशेषाधिक हुवे। गोयमा सव्वत्थोवा पंचेंदिया पज्जत्तगा पंचिंदिया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा पचेंद्रिय पर्याप्ता प्रतरांगुल संख्यातभाग प्रमाण पंचेंद्रिय अपर्याप्त असंख्यातगुणा प्रतरगत असंख्यातप्रमाण। एएसिणं भंते सइंदियाणं एगिंदियाणं बेइंदियाणं तेइंदियाणं चउरिंदियाणं पंचेंदियाणं पज्जत्ता२ पय कयरे२ हिंतो अपपावा४। भगवन् एह सेंद्रियने एकेंद्रियने बेंद्रियने तेइन्द्रियने चउरिंद्रियने पंचेंद्रियने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां२ थी थोडा घणां हुवे। गोयमा सव्वत्थोवा चउरेंदिया पज्जत्तगा पचेंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया तेइंदियपज्जत्तगा विसेसाहिया बेइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया। हेगौतम सर्वथोडा चौरिंद्रिय

॥ टीका ॥

गमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वा तेषां तेभ्यो ऽपर्याप्ता असंख्येयगुणाः प्रतरगताङ्गुलासंख्येयभागखण्डमात्रत्वा देवं त्रिचतुरिन्द्रियाल्पत्वान्यपि वक्तव्यानि, गतं षष्ठल्पबाहुल्यत्वात्मकं चतुर्थमल्पबहुत्वं सम्प्रत्येतेषां सन्द्रियादीनां समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तानामल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! इत्यादि ॥ इदं प्रागुक्तद्वितीयतृतीयाल्पबहुत्वभावनानुसारिणः स्वयं भावनीयं, तत्वतो भावितत्वात्, गत मिन्द्रियद्वार मिदानीं कायद्वार मधि कृत्याह-एएसिणं भंते ! सकाइयाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका त्रसकायिका द्वीन्द्रियादीनामेव त्रसकायिकत्वात्, तेषाच शेषकायापेक्षया अत्यल्प

॥ मूल ॥

चउरिंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, बेइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सइंदिया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, एगिंदिया पंज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सइंदिया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सइंदिया विसेसाहिया दारं ३ । एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं अकाइ

॥ भाषा ॥

पर्याप्ता भावना पाछलोपरे तेहथी पंचेंद्रिय पर्याप्ताविशेषाधिक जांणिवा तेहथा तेन्द्रियपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी बेइंद्रिया पर्याप्ता विशेषाधिक । पचेंद्रिया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा चउरिंद्रिया अपज्जत्तगा वि० तेइंद्रिया अपज्जत्तगा वि० बेइंद्रिया अपज्जत्तगा वि० एगिंद्रिया अपज्जत्तगा अ० । सइंद्रिया अपज्जत्तगा वि० । तेहथी पचेंद्रिय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा तेहथी चौरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी तेन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी बेइन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी एकेन्द्रिय अनन्तगुणा तेहथी सेइन्द्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक । एगिंद्रिया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा सइंद्रियपज्जत्तगा वि० द्वारं ॥ ३ ॥ तेहथकी एकेन्द्रियपर्याप्ता सख्यातगुणा तेहथी सेन्द्रिय पर्याप्ता विशेषाधिक जांणवा इति तृतीयद्वार तीजे पदे तीसरोद्वार संपूर्णहुवो ॥ एएसिणंभंते सकाइयाणं पुढवीकाइयाण आउका० तेउका० वाउका० वणस्सई का० तसका० अकाइयाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् कायद्वारकह्यो एह सकायने पृथ्वीकायने अप्कायने तेउकायने वाउकायने वनस्पतीकायने त्रसकायने अकायने एकमांहि कि

त्वात्' तेभ्य स्तेजस्कायिका असंख्येयगुणा असंख्येयलोकाकाशप्रमाणत्वात्, तेभ्यः पृथिवीकायिका विशेषाधिकाः प्रभूतासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्यो ऽप्कायिका विशेषाधिकाः प्रभूततरासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्यो वायुकायिका विशेषाधिकाः प्रभूततमासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशमानत्वात्, तेभ्यो ऽप्कायिका अनन्तगुणाः, सिद्धाना मनन्तत्वात्, तेभ्यो वनस्पतिकायिका अनन्तगुणा अनन्तलोकाकाशप्रदेशराशिमानत्वात्, तेभ्यः सकायिका विशेषाधिकाः पृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, उक्तमौधिकानामल्पबहुत्व मिदानी मेतेषामेवा पर्याप्तानां द्वितीयमल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! सकाइयाणमित्यादि ॥ सुगमं, सम्प्रत्येतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! सकाइयाणमित्यादि ॥



याणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया विसेसाहिया, आउकाइया विसेसाहिया, वाउकाइया विसेसाहिया अकाइया अणंतगुणा, वणस्सइकाइया अणंतगुणा, सकाइया विसेसाहियावा । एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणय अपज्जत्तगाणं कयरे कय



हां २ थकी थोडा इत्यादि ॥ ४ ॥ गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया तेउकाइया असंखिज्जगुणा । हे गौतम सर्वथोडा त्रसकाया भावना पाछलोपरे तेहथी असंख्यातगुणा । पुढवीकाइया वि० आउकाइया वि० वाउकाइयावि० अकाइया अण० वणस्सइकाइया अण० सकाइया वि० । तेहथी पृथिवीकायिक विशेषाधिक प्रभूत असंख्यात लोकाकाश प्रमाण तेहथी बाउकाय वि० प्रभूत तमसं० लोकाकाश तेहथी अकाइया अणंतगुणा सिद्धता भणी तथा वनस्पतीकाय अनन्तगुणा अनन्तलोकाकाश प्रमाण तेहथी सकाइय विशेषाधिक पृथ्वीकायादिमांहि घालता ओघपणें । एएसिणं भंते सकाइयाण पुढवीकायाणं आउ० तेउ० वाउ० वणस्सइ० तसकाय० अपज्जत्तगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हे भगवन् एह सकाइयाने पृथ्वीकायने अपकाय तेउ वा उ वनस्पती त्रसकायने अपर्याप्ताने किहां २ थकी थोडा घणां विशेषाधिक ४ । गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा तेउकाइया अपज्जत्तगा अ

॥ मूल ॥

रेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणय पज्जत्तगाणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया। आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वणस्सइकाइया पज्जत्ता अणंतगुणा, सकाइया पज्जत्ता

॥ भाषा ॥

संखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोथोडा त्रसकाइया अपर्याप्ता तेहथी तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। पृढवीकाइया अपज्जत्तगा वि० आउकाइया अपज्जत्तगा वि० वाउकाइया अपज्जत्तगा वि० वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा। तेहथी पृथिवीकाइया अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी अप्का इया अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी वाउकाइया अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता अनन्तगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसे साहिया वाउकाइया अपज्जत्तगा वि०। तेहथी सकाइया अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी वाउकाय अपर्याप्ता विशेषाधिक। एएसिणं भंते सकाइया णं पृढवीकाइयाणं आउ० तेउ० वाउ वणस्स० तस्सका० पज्जत्तगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् ए सकायने पृथ्वीकाइयाने अप्का० तेउ वा उ वनस्पती त्रस० पर्याप्तानें किहां २ थी थोडा अथवा घणांहवे ४। गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा वि० तेउकाइया पज्जत्तगा वि० असं०। हेगौतम सर्वथोडा त्रसकाय पर्याप्ता तेहथी तेउकाय पर्याप्ता वि० असंख्यातगुणां। पृढवीकाइया पज्जत्तगा वि० आउकाइया पज्जत्तगा वि० वाउ काइया अपज्जत्तगा वि० वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणं०। पृथ्वीकाइया पर्याप्ता वि० अप्कायिका पर्याप्ता वि० वायुकाय पर्याप्ताविशेष तेहथी व

सुगमं, साम्प्रतमेतेषामेव सकायिकादीनां प्रत्येकं पर्याप्ताऽपर्याप्तगत मल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पज्जत्ताऽपज्जत्ताणमित्यादि ॥ सुगमम्, सम्प्रत्येतेषामेव सकायिकादीनां समुदितानां पर्याप्ताऽपर्याप्तानां मल्पबहुत्वं पञ्चममाह-एएसिणं भंते ! सकाइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तो

॥ टीका ॥

विसेसाहिया । एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! पुढविकाइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तगा, पुढविकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। एएसिणं भंते ! आउकाइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आउकाइया अप

॥ मूल ॥

नस्पतीकाय पर्याप्ता अनन्तगुणा । सकाइया पज्जत्तगा वि० । तेहथी सकाइया पर्याप्ता विशेषाधिक । एएसिणं भंते सकाइयाण पज्जत्तापज्जत्ताणय क यरे २ हितो अप्पावा ४ । भगवंत एह सकाइयाने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सकाइया अपज्जत्तगा सका इया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सकाइया अपर्याप्ता तेहथी सकाइया पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिणं भंते पुढवीकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह पृथ्वीकायिकने पर्याप्ता अपर्याप्ताने कहां २ थी थोडा घणां विशेषाधिक हुवे । गोयमा सव्वथो वा पुढवीकाइया अपज्जत्तगा पुढवीकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा पृथ्वीकाय अपर्याप्ता पृथ्वीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिणं भंते आउकाइयाणं पज्जत्तापज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह अप्कायने पर्याप्ता किहांथी थोडा घणां सरीखा विशेषाधिक । गोयमा सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तगा आउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा अप्काय अपर्याप्ता अप्काय पर्याप्ता संख्यात गुणा । एएसिणं भंते तेउकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा । हेभगवन् एह तेउकायने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहांथी थोडा घणां इ

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

का त्रसकायिकाः १ । पर्याप्तका स्तेभ्य त्रसकायिका एवा ऽपर्याप्तका असङ्ख्येयगुणाः द्वीन्द्रियादीनामपर्याप्तानां पर्याप्तद्वीन्द्रियादिभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणत्वात् २ । तत स्तेजस्कायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ३ । ततः पृथिव्यम्बुवायवो ऽपर्याप्ताः क्रमेण विशेषाधिकाः ६ । तत स्तेजस्कायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः सूक्ष्मेभ्यपर्याप्तेभ्यः पर्याप्तानां संख्येयगुणत्वात् ७ । ततः पृथिव्यप्वायवः पर्याप्ताः क्रमेण

॥ मूल ॥

जत्तगा, आउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! तेउकाइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तगा, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा एएसिणं भंते ! वाउकाइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तगा, वाउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! वणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता२णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, वणस्सइकाइया पज्ज

॥ भाषा ॥

त्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तेउकाइया अप० तेउका० पज्ज० संखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा तेउकाइया अपर्याप्ता तेउकाइया पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिणंभंते वाउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह वायुकायने पर्याप्ता अपर्याप्तामे किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तेउकाइया अप० वाउका० पज्ज० संखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा तेउकाइया अप० वाउकाइया पर्याप्ता संखितगुणा । एएसिणं भंते वणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे२ हिंतो अप्पा ४ । हेभगवन् एह वनस्पतीकायने पर्या० अप० ने किहां २ थी थोडा घण इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अप० वणस्सइकाइया पज्ज० संखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा वनस्पतीकायिक पर्या० वनस्पतीकायिक अपर्या० संख्यातगुणा । एएसिणं भंते तसकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे२ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह त्रसकाय पर्या० अप० किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा त्रसकाइया पर्या० त्रसकाय अप०

॥ टीका ॥

विशेषाधिकाः १० । ततो वनस्पतयो ऽपर्याप्ता अनन्तगुणाः ११ । पर्याप्ताः संख्येयगुणाः १२ । तदेवं कायद्वारे सामान्येन पञ्चसूत्राणि प्रतिपादितानि । सम्प्रत्यस्मिन्नेव द्वारे सूक्ष्मबादरादिभेदेन पञ्चदशसूत्राण्याह-एएसिणं भंते ! सुहुमाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका असंख्येय

॥ मूल ॥

त्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! तसकाइयाणं पज्जत्ता पज्जत्ताणं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ गोयमा ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्ज० । एएसिणं भंते ! सकाइयाणं पुढविकाइयाणं आउकाइयाणं तेउकाइयाणं वाउकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं तसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गो० ! सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा, तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा पुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, आउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, तेउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, पुढवि

॥ भाषा ॥

असंख्यातगुणा । एएसिणं भंते सकाइयाणं पुढवीकाइयाणं आउ० तेउ० वाउ० वणस्सइ० तसकाइयाणय पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सकायने पृथ्वीकायने अप्कायने तेउकायने वायुकायने वनस्पतीकाय त्रसकाइया पर्या० अप० किहां २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तगा तसकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हेगौतत सर्वथोडा त्रसकाइया पर्याप्ता त्रसकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । तेउकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । तेहथी तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । पृढवीकाइया अपज्जत्तगा वि० आउका अप० वि० बाउका अप० वि० तेउका० अप० संखेज्जगुणा । तेहथी पृथ्वीकायिक अपर्याप्त विशेषाधिक तेहथी अप्काइया अपर्याप्ता विशेषाधिक वायुकायिक अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथकी तेउकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा । पुढवीकाइयाणं पज्जत्तगा वि० आउकाइया पज्जत्तगा वि० बाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया वणस्सइकाया अपज्जत्तगा अणंतगुणा । पृथ्वीकाय पर्याप्ता विशेषाधिक अप्काय पर्याप्ता विशेषाधिक वायुकाय पर्याप्ता विशेषाधिक वनस्पतीकाय पर्याप्ता

॥ टीका ॥

लोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्यः सूक्ष्मपृथिवीकायिका विशेषाधिकाः प्रभूतासंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्यः सूक्ष्माप्कायिकाः, प्रभूततरासंख्येयलोकाकाशमानत्वात् २। तेभ्यः सूक्ष्मवायुकायिका विशेषाधिकाः प्रभूततमासंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिमानत्वात्, तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदा असंख्येयगुणाः (ग्रंथाग्रं ३०००) सूक्ष्मग्रहणं बादरव्यवच्छेदार्थं, द्विविधाहि-निगोदाः सूक्ष्मा बादराश्च, तत्र बादराः सूरणकंदादिषु सूक्ष्माः

॥ मूल ॥

काइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अप्पकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, वाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, अपज्जत्तगा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा सकाइया विसेसाहिया, एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमणिगोयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया, सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया सुहुमआउकाइया

॥ भाषा ॥

अनन्तगुणा। सकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। सकाइया अपर्याप्ता विशेषाधिक वनस्पतीकाइया पर्याप्ता संख्यातगुणा। सकाइया पज्जत्तगा विससाहिया। सकाइया पर्याप्ता विशेषाधिक। पचसूत्राणिसामान्येन प्रतिपादितानि अधुनासूक्ष्मबादरादिभेदेन पंचदशसूत्रयोराह। ए पांचसूत्र सामान्यपणें कायर्योगद्वारे कह्या, हिवे सूक्ष्मबादर भेदेंकरी १५ सूत्र कहेछे—एएसिणंभंते सुहुमाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुम-तेउ सुहुमवाउ- सुहुम वणस्स- सुहुमनिगोयाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एहने सूक्ष्मपृथ्वीकायने सूक्ष्मअप्कायने सूक्ष्मतेउकायने सूक्ष्मवायुकायने सूक्ष्मवनस्पतीकाय सूक्ष्मनिगोदने किहां २ थोथोडा घणां सरीखा विशेषाधिक हुवे। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया सुहुमपुढवीकाइया विसेसाहिया। हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय तेहथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय विशेषाधिक। सुहुम आउकाइया वि० सुहुमवा उकाइया वि० सुहुमनिगोया असं०। सूक्ष्म अप्काय विशेषाधिक सूक्ष्मवायुकायिक वि० तेहथी सूक्ष्मनिगोद असंख्यातगुणो। सुहुमवणस्सइकाइया अणं

॥ टीका ॥

सर्वलोकापन्नाः तेच प्रतिगोलकमसंख्येया इति सूक्ष्मवायुकायिकेभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणाः, तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः प्रतिनिगोदमनन्तानां भावात्, तेभ्यः सामान्यिकाः सूक्ष्मजीवा विशेषाधिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, गतमौघिकाना मिद मल्पबहुत्व मिदानी मेतेषा मेवा ऽपर्याप्तानामाह-एएसिणं भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाणमित्यादि सर्वंप्राग्व द्भावनीय, सम्प्रत्येतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! सुहुमपज्जत्तगाणमित्यादि ॥ इदमपि प्रागुक्तक्रमेणैव भावनीयं, अधुना अमीषामेव सूक्ष्मादीनां प्रत्येकं पर्याप्तगतानि अल्पबहुत्वान्या

॥ मूल ॥

विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अणंतगुणा, सुहुमा विसेसाहिया । एएसिणं भंते ! सुहुमअपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुमनिगोदा अपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउका

॥ भाषा ॥

तगुणा सुहुमा वि० । तेहथी सूक्ष्मवनस्पतीकाइया अनन्तगुणा सूक्ष्म सर्व पृथिव्यादि वि० । एएसिण भंते सुहुम अपज्जत्तगाणं सुहुमपुढवीकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगाणं सुहुम तेउकाइय अप० सुहुमबाउकाइय अप० सुहुम वणस्सइकाइय अप० सुहुमनिगोय अपज्जत्तगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्म अपर्याप्तामे सू० पृथ्वीकाय अप० सू० अप्काय अप० सू० तेउकाय अप० सू० बाउकाय अप० सू० वनस्पतीकाय अप० सू० निगोद अप० किहां २ थी थोडा सरीखा विशेषाधिक हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अप० सू० पुढवीकाइया अप० वि० सू० आउका० अप० वि० सू० बाउका० वि० सू० निगोया अप० असं० सू० वणस्स अप० अणंत सू० अपज्जत्तगा वि० । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय अप० सू० पृथ्वीकाय अप० वि० सू० अप्काय अप० वि० सू० वायुकाय अप० वि० सू० निगोद अप० असंख्यातगुणा सू० वनस्पतीकाय अप०

॥ मूल ॥

अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा अ संखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया एएसिणं भंते ! सुहुमपज्जत्तगाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमवाउकाइयापज्जत्तगाणं सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्ताणं सुहुमनिगोदपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा, सुहुमपुढविकाइयापज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहु

॥ भाषा ॥

अणंतगुणा सू० अप० विशेषाधिक। एएसिणं भंते सुहुम पज्जत्तगाण सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तगाणं सु आउ० पज्जत्तगा सु० तेउ० पज्ज सु० वाउका० पज्ज० सु० वणस्स० पज्ज० सु० निगोय पज्जत्तगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सूक्ष्म पर्याप्ताने सू० पृथ्वीकायपर्याप्ताने सू० अप्काय पर्या० सू० तेउका० पर्या० सू० वायुकाय पर्या० सू० वनस्तीकाय पर्या० सू० निगोद पर्याप्ताने किहां २ थी थोडा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया पज्जत्तगा सु० पुढवीकाइया अप० वि० सु० आउकाइया पज्ज० वि० सु० वाउका० पज्ज० सु० निगोवा पज्जत्तगा संखिज्जगुणा सु० वणस्सइका० पज्जत्तगा अणंतगुणा सुहुम पज्जत्तगा विसेसाहिया। हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता तेहथी सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्या० वि० सू० अप्काय पर्याप्ता वि० सूक्ष्म वायुकाय प० विशेषाधिक सूक्ष्म निगोद प० संख्यातगुणा सूक्ष्म वनस्तीकाय प० अनन्तगुणा सूक्ष्म सर्वपर्याप्ता विशेषाधिक। एएसिणं भंते सुहुमाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। एहने हेभगवन् सूक्ष्म पर्या० अप० ने किहां २ थी थोडा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम अपज्जत्तगा सुहुमपज्जत्तगा संखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म अपर्याप्ता सूक्ष्मपर्याप्ता संख्यातगुणा। एएसिणं भंते सुहुमपुढवीकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। एहने हेभगवन् सूक्ष्म अप्कायने पर्या० अप० ने किहां २ थी थोडा घणां। गोयमा सव्वत्थो

॥ टीका ॥

इ-एएसिणं भंते! सुहुमाणं पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि॥ इह बादरेषु पर्याप्तेभ्यो ऽपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा एकैकपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्येयानामपर्याप्तानामुत्पादात्तथाचोक्तं-प्राक् प्रथमे प्रज्ञापनाख्ये पदे-पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमन्ति, जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा इति, सूक्ष्मेषु पुन र्नायं क्रमः पर्याप्ताश्चा पर्याप्तापेक्षया चिरकालावस्थायिन इति सदैव ते बहवो लभ्यन्ते, तत उक्तं-सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा अपर्याप्ता स्तेभ्यः सूक्ष्मा पर्याप्तकाः सङ्ख्येयगुणाः, एवं पृथिवीकायिकादिष्वपि प्रत्येकं भावनीयं, गतं चतुर्थमल्पबहुत्व मिदानीं सर्वेषां समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तगतं पञ्च

॥ मूल ॥

निगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइयापज्जत्तया अणंतगुणा, सुहुमापज्जत्ता विसेसाहिया दारं ३। एएसिणं भंते! सुहुमाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? सव्वत्थोवा सुहुमा अपज्जत्तगा सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमआउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गोयमा! सव्व

॥ भाषा ॥

वा सुहुमपुढवीकाइया अप० सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्मपृथ्वीकाय अपर्याप्ता सूक्ष्मपृथ्वीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणा पर्याप्ता अपर्याप्ताने। एएसिणं भंत सुहुम आउकाइयाण पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सूक्ष्मअप्कायने पर्याप्ता अपर्याप्ता किहां २ थी थोडा घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा सुहुम आउकाइयाए पज्जत्तगा संखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म अप्कायने पर्याप्ता अपर्याप्ता तेहथी सूक्ष्म अप्काइया पर्याप्ता संख्यातगुणा। एएसिणं सुहुम तेउकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी थोडा घणां। गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुण। हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म तेउकाय अपर्याप्ताने सूक्ष्म तेउकाय अर्याप्ताने संख्यातगुणा। एएसिणं भंते सु

॥ टीका ॥

ममल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! सुहुमपुढविकाइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः सूक्ष्मा स्तेजस्कायिका अपर्याप्ताः कारणं प्रागेवोक्तं, तेभ्यः सूक्ष्मा पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः तेभ्यः सूक्ष्मा ऽप्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिका, स्तेभ्यः सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः, अत्रापि कारणं प्रागेवोक्तं, तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः सङ्ख्येयगुणाः अपर्याप्तेभ्योहि पर्याप्ता संख्येयगुणाः इत्यनन्तरं भावितं तत्र सर्वस्तोकाः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता उक्ताः, इतरेच सूक्ष्मपर्याप्तपृथिवीकायिकादयो विशेषाधिका विशेषाधिकत्वंच मनागधिकत्वं न द्विगुणत्वं न त्रिगुणत्वंवा, ततः सूक्ष्मतेजस्कायिकेभ्यो पर्याप्तेभ्यः पर्याप्ताः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः सङ्ख्येयगुणाः सन्तः सूक्ष्मवायुकायिकाऽपर्याप्तेभ्योपि सङ्ख्येयगुणा भवन्ति'

॥ मूल ॥

त्थोवा सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमतेउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमतेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा एएसिणं भंते सुहुमवाउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा सं

॥ भाषा ॥

हुमवाउकाइयाणं पज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । भगवन्त एहने सूक्ष्मवायुकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता ने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम आउकाइया अपज्जत्तगा सुहुमवाउकाइयाणं पज्जत्तगा संखि० । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्म वायुकाय अपर्याप्ता सूक्ष्म वायु काय पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिणं भंते सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता अपज्जत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एहने सूक्ष्म वनस्पती काय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी थोडा । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्मवनस्पतीकाइया अपर्याप्ता सूक्ष्म वनस्पतीकाइया पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिणं भंते सुहुमनिगोयाणं पज्जत्ता २ णय क यरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्मनिगोदने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहा २ थी थोडा घणां । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुमनिगोया अपज्जत्त

खेज्ज० । एएसिणं भंते ! सुहुमवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमनिगोदाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमनिगोदा अपज्जत्ता, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुम आउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणय पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया, सुहु



गा सुहुमनिगोया पज्जत्तगा स० । हेगौतम सर्वथोडा सूक्ष्मनिगोदिया अपर्याप्ता तेहथी सूक्ष्मनिगोद पर्याप्ता संख्यातगुणा । एएसिणं भंते सुहुमाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुम तेउ० सुहुम वाउ० सुहुमवणस्सइकाइयाण सुहुम निगोयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अपपावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्मने सूक्ष्मपृथिवीकायने सू० अप्कायने सू० तेउकायने सू० वायुने सू० वनस्पतीकायने सू० निगोदने पर्याप्ता २ ने किहां २ थी थोडो इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा सुहुम तेउकाइया अपज्जत्तगा सुहुम पुढवीकाइया अपज्जत्तगा वि० सु० आउकाइया अपज्जत्तगा वि० । हेगौतम सर्वथोडा सू० तेउकाय अपर्याप्ता सू० पृथ्वीकाय अप० वि । सू० अप्काय अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुम वाउकाइया पज्जत्ता वि० सू० तेउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा सु० पुढवीकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम आउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम वाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमनिगोया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्म अप्काय पर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोद अप

॥ टीका ॥

तेभ्यः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः, तेभ्यः सूक्ष्मऽप्कायिकाः पर्याप्ताः विशेषाधिकाः, तेभ्योपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः, तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असंख्येयगुणा स्तेषा मतिप्राचुर्यात्, तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाः पर्याप्ताः सङ्ख्येयगुणाः सूक्ष्मेषपर्याप्तेभ्यः पर्याप्ता ना मोघतः सङ्ख्येयगुणत्वात्, तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता अनन्तगुणाः प्रतिनिगोद मनन्तानां तेषां भावात्, तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा अपर्याप्तकाः, विशेषाधिकाः, सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः सङ्ख्येयगुणाः' सूक्ष्मेषुहि अपर्याप्तेभ्यः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः, यच्चापान्तराले विशेषाधिकत्वं तदल्पमिति न सख्येयगुणत्वव्याघातः, तेभ्यः सूक्ष्मपर्याप्तका विशेषाधिकाः,

॥ मूल ॥

मणाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमा वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा विसेसाहिया, एएसिणं भंते ! बादरगाणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसका

॥ भाषा ॥

र्याप्ता असंख्यातगुणा। सूक्ष्मनिगोद पर्याप्ता संख्यातगुणा तेहथी सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा तेहथी सूक्ष्मवनस्पतीकाय अपर्याप्ता अनन्तगुणा। सूक्ष्म अपज्जत्तगा विसेसाहिया सूक्ष्म वणस्पतिकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। तेहथी सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी सूक्ष्म वनस्पतीकाइया पर्याप्ता असंख्यातगुणा। सूक्ष्म पज्जत्तगा विसेसाहिया सूक्ष्मा विसेसाहिया। सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक सर्व सूक्ष्म विशेषाधिक। एएसिणं भंते बायराणं बायरपुढवीकाइयाण बायरआउकाइया बायर तेउ बायर बाउ बायर वणस्सइ। भगवन् एह बादर पृथ्वीकायने बादर अपकायने बादर तेउकायने बादर वाउकायने बादर वनस्पतीकायने। पत्तेयसरीरबायर वणस्सइकाय बाय

सूक्ष्मपृथिव्यादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १४ । तेभ्यः सूक्ष्मा विशेषाधिका अपर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् १५ । तदेवमुक्तानि सूक्ष्माश्रितानि पञ्चसूत्राणि साम्प्रतिबादराश्रितानि पंचोक्तक्रमेणाभिधित्सुराह-एएसिणं भंते ! बायराणं बायरपुढविकाइयाणमित्यादि । सर्वस्तोका बादरा त्रसकायिका द्वीन्द्रियादीनामेव बादरत्रयत्वात्, तेषांच शेषकायेभ्यो ऽल्पत्वात् १ । तेभ्यो बादरतेजस्कायिका असंख्येयगुणाः २ । असंख्येयलोका



इयाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गो० ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीर बादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा बायरनिगोया असंखेज्ज गुणा, बादरपुढविकाइया असंखिज्जगुणा, बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा बादरवाउकाइया असंखे ज्जगुणा बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया, एएसिणं भंते ! बादरापज्जत्तगाणं बाद रपुढविकाइया अपज्जत्तगाणं बादरआउकाइया अपज्जत्तगाणं बादरतेउकाइयाअपज्जत्तगाणं बादरवाउ



रनिगोयाणं बायर तसकाइयाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकायने बादरनिगोदने बादर त्रसकायने किहांथी थोडा घणां । गोयमा सव्वत्थोवा बायरतसकाइया बायर तेउकाइया असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा सकाया बादर त्रसकाइया तेहथी बादर तेउकाइया असंख्यातगुणा । पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया असंखिज्जगुणा । प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाइया असंख्यातगुणा । बायरनिगोया असंखिज्जगुणा बायर पृढवीकाइया असं० बायर आउ० असं० । बादरनिगोद असंख्यातगुणा बादरपृथ्वीकाय असं० तेहथी बादरअप्काय असंख्यातगुणा । बायर बाउकाइया असं० बायर वणस्सइकाइया अणता बायरा विसेसाहिया । बादर बायुकाय असंख्यातगुणा बादर वनस्पतीकाय अनन्तगुणा तेहथी बादर विशेषाधिक । एएसिणं भंते बायर अपज्जत्तगाणं बायरपृढवीकाइया अपज्जत्तगाणं बायरआउकाइय अप० बायर तेउकाइय अप० बायर बाउ काय अप० बायर वणस्सइकाइय अप० । हेभगवन् एह बादर अपर्याप्ताने बादर पृथ्वीकाय अपर्या० बादर अप्का० अपर्या० बादर तेउकाय अपर्या०

॥ टीका ॥

काशप्रदेशप्रमाणत्वात्, तेभ्योपि प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणाः ३। स्थानस्यासंख्येयगुणत्वात्, बादरतेजस्कायिकाहि मनुष्यक्षेत्रएव भवन्ति, तथाचोक्तं द्वितीये स्थानाख्ये पदे-कहिणं भंते ! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं अंतो मणुस्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु निव्वाघाएणं पन्नरसकम्मभूमीसु वाघाएणं पंचसु महाविदेहेसु एत्थणं बायरतेउक्काइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, तत्थेव बायरतेउक्काइयाणमपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता इति ॥ बादरवनस्पतिकायिकासु त्रिष्वपि लोकेषु भवनादिषु, तथाचोक्तं-तस्मिन्नेव द्वितीये स्थानाख्ये पदे-कहिणं भंते ! बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता ? गोयमा ! सट्ठाणेणं सत्तसु घणोदहीसु सत्तसु घणोदहिवलएसु अहोलोए पायालेसु भवणेसु भवणपत्थडेसु उड्ढलोएकप्पेसु विमाणेसु विमाणावलियासु विमाणपत्थडेसु तिरियलोए अगडेसु तलाएसु न

॥ मूल ॥

काइया अपज्जत्तणाणं बादरवणस्सइया अपज्जत्तगाणं पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगाणं बादरनिगोदा अपज्जत्तगाणं बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा, बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्ज

॥ भाषा ॥

बादर बायुकाय अप० बादर वनस्पतीकाय अप०। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइय अप० बायरनिगोय अप० बायर तसकाइय अपज्जत्तगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाइया अपर्याप्तानें बादरनिगोद अपर्या० बादर त्रसकाइया अप० किहां २ थी थोडा घणां सरीखा विशेष हुवे। गोयमा सव्वत्थोवा बायर तसकाइया अप० बायर तेउकाइया अपज्जत्तगा असं। हेगौतम सर्वथोडा बादरत्रसकाइया अपर्याप्ता तेहथी बादर तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा बायरनिगोया अपज्जत्तगा असं०। तेहथी प्रत्येकशरीरी बादर वनस्पतीकाइका अप० असंख्यातगुणा बादरनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। बायरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असं०।

॥ टीका ॥

दीसु दहेसु वावीसु पुक्खरिणीसु दीहियासु गुंजालियासु सरेसु सरपंतियासु सर २ पंतियासु बिलपंतियासु उज्झरेसु निज्झरेसु चिल्लरेसु पल्लले सु विप्पिन्नेसु दीवेसु समुद्देसु सव्वेसु चेव जलासएसु जलठाणेसु एत्थणं बायरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता, तथा जत्थेव बायरवण स्सइकाइयाणं पज्जत्तगाणं ठाणा तत्थेव बायरवणस्सइकाइयाणं अपज्जत्तगाणं ठाणा पन्नत्ता इति „ ततः क्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात् उपपद्यन्ते, बा दरतेजस्कायिकेभ्यो ऽसंख्येयगुणाः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका स्तेभ्यो बादरनिगोदा असंख्येयगुणा स्तेषा मत्यन्तसूक्ष्मावगाहनत्वा ज्जलेषु सर्वत्रापिच भावात्, पनक सेवालादयोहि जले अवश्यं भाविन स्तेच बादरानन्तकायिका इति तेभ्योपि बादरपृथिवीकायिका असंख्येयगुणाः अ

॥ मूल ॥

गुणा, बादरपुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरअप ज्जत्तगा विसेसाहिया २। एएसिणं भंते! बादरपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइया पज्जत्तयाणं, बादरआउ काइया पज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयापज्जत्तयाणं बादरवाउकाइया पज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइया पज्ज त्तयाणं पत्तेयसरीरयादरवणस्सइकाइया पज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तयाणं बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय

॥ भाषा ॥

भाचर पृथ्वीकाय अप० असख्यातगुणा। बायर आउकाइया पज्जत्तगा असं० बायर वाउकाइया अप० असं०। बादर अपकाय अपर्या० असं० बादर वायुकाइया अपर्या० असं०। बायर वणस्स० अप० अणं० बायर अपज्जत्तगा विसेसाहिया। बादर वनस्पतीका० अपर्या० अनन्तगुणा बादर अपर्या० विशेषाधिक। एएसिणं भंते बायरपज्जत्तगाणं वायरपुढवीकाइया प० वायर आउका० प० बायर तेउका० प० बायर वाउका० प० वायर वणस्सइका इय पज्जत्ता। हेभगवन् एह बादर प० वादर पृथ्वीकाय प० बादर अपका० प० बादर तेउकाय प० बादर वाउका० प० बादर वनस्पतीकाय प०। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया प० बायर निगोय प० बायर तसका० पज्जत्तगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा ४। प्रत्येक बादरवनस्पतीकाय प० बाद

॥ टीका ॥

ष्टासु पृथिवीषु सर्वेषु विमाननवनपर्वतादिषु भावात्, तेभ्यो ऽसंख्येयगुणाबादराप्कायिकाः समुद्रेषु जलप्राचुर्यात्, तेभ्यो बादरवायुकायिका असंख्येयगुणाः सुषिरे सर्वत्र वायुसंभवात्, तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः, प्रतिबादरनिगोद मनन्तानां जीवानां भावात् ८, तेभ्यः सामान्यतो बादरा जीवा विशेषाधिका बादरत्रसकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ९। गतमेकमौधिकानां बादराणामल्पबहुत्व मिदानीं तेषामेवा ऽपर्याप्तानां द्वितीयमाह-एएसिणं भंते ! बायरापज्जत्तगाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका अपर्याप्तका युक्तिरत्र प्रागुक्तैव, तेभ्यो बाद रतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वा दित्येवं प्रागुक्तक्रमेणेद मल्पबहुत्वं भावनीयं, गतं द्वितीयमल्पबहुत्व

॥ मूल ॥

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया, बादरतस्सकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादर आउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरापज्जत्तगा विसेसाहिया ३ । एएसिणं भंते ! बादराणं पज्जत्ता २ णं

॥ भाषा ॥

रनिगोद प० बादर त्रसकाय प० किहां २ था थोडा बहुल इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाय प० बायर वणस्सइका० प० असं०। हेगौतम सर्वथोडा बादर तेउका० अप० तेहथी बादर त्रसका० अप० असं०। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाय प० असं० बायरनिगोद प० असं०। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय प० असं० बादरनिगोद असंख्यातगुणा। बायर पुढवीका प० असं० बायर आउका० प० असं०। बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता असं ख्यातगुणा बादर अप्काय पर्याप्ता असंख्यातगुणा। बायर वाउका० प० असं० बायरवणस्सइका० प० अणंतगुणा। बादर वायुका० प० असंख्यात गुणा बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता अनन्तगुणा। बायर पज्जत्तगा विसेसाहिया। बादर पर्याप्ता विशेषाधिक। एएसिणं भंते बायराणं पज्जत्ता २

॥ टीका ॥

मिदानी मेतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! बादरपज्जत्तयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ता आवलिकासमयवर्गस्य कतिपयसमयन्यूने रावलिकासमये गुणितस्य यावान् समयराशि र्भवति तावत्प्रमाणत्वं तेषा मुक्तंच-आवलिवग्गोकुणावलिएगु

॥ मूल ॥

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुगावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरापज्जत्तगा । बादरा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! बादरपुढविकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा १ । बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंत ! बादरआउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जत्तगा बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! बादरतेउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया ? गोयमा !

॥ भाषा ॥

णय कयरे कयरेहिंतो अपपा ४ । हेभगवन् एह बादर पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थावा बायरपज्जत्तगा बायर अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा बादरपर्याप्ता तेहथी बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । एएसिणं भंतेबायरपढवीकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अपपावा ४ । हेभगवन् एह बादरपृथिवीकायने प० अप० किहां २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायरपुढवीकाइया अप० असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा बादर पृथ्वीकाय पर्या० बादर पृथ्वीकाय अप० असंख्यातगुणा । एएसिणं भंते बायरआउकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एहने बादर अपकायने पर्या० अप० किहां थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर आउकाइया प० अप० असं० । हेगौतम सर्वथोडा बादर अपकाय प० बादर अप० असंख्यातगुणा । एएसिणं भंते बायर तेउकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह बादर तेउकायने प० अप० ने किहां २ थी अल्प घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाय प० बायर तेउकाय अ

॥ टीका ॥

णिउहुबायरातेऊ इति, तेभ्यो बादरत्रसकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः २ प्रतरे यावत्यं गुलासंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वा तेषां २, तेभ्यः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ताः असङ्ख्येयगुणाः, प्रतरे यावत्यंगुलासङ्ख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वा तेषां, उक्तञ्च-पत्तेयपज्जवणका इयाउपयरंहरंतिलोगस्स। अंगुलअसंखभागेणभाइयमिति ३, तेभ्यो बादरनिगोदाः पर्याप्तका असङ्ख्येयगुणाः तेषा मत्यन्तसूक्ष्मावगाहनत्वात्, जलाशयेषु च सर्वत्रभावात् ४, तेभ्यो बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणा अतिप्रभूतसङ्ख्येयप्रतराङ्गुलासङ्ख्येयभागखण्डमानत्वात् ५। तेभ्योपि बादराप्कायिकाः पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा अतिप्रभूततरसङ्ख्प्रतराङ्गुलासङ्ख्येयभागखण्डसङ्ख्त्वात् ६। तेभ्यो बादरवायुकायिकाः

॥ मूल ॥

सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया बादरतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! बादरवाउकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा। बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! बादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा। बादरवणस्सइकाइ

॥ भाषा ॥

प० असं०। हेगौतम सर्वथोडा बादर तेउकाय पर्या० बायर तेउकाय पर्याप्ता० अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। एएसिणं भंते बायर वाउकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह बादर वायुकायने पर्याप्ता अप० किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायर वाउकाइया पज्जत्तगा बायर वाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा तेउकाइया पर्याप्ता तेहथी बादर वाउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। एएसिणं भंते बायर वणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्तामांहि किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोथोडा बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता बादर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। एएसिणं भंते पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइयाणं प

पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा घनीकृतस्य लोकस्यासङ्ख्येषु प्रतरेषु सङ्घात तमभागवर्तिषु यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणत्वा त्तेषां ७। तेभ्यो बादरव नस्पतिकायिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् ८। तेभ्यः सामान्यतो बादरपर्याप्ता विशेषाधिका बादर तेजस्कायिकानामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ९। गतं तृतीयमल्पबहुत्व मिदानी मेतेषामेव पर्याप्तापर्याप्तगतान्यल्पबहुत्वान्याह-एएसिणं भंते !



या अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पत्तेयसरीरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा । पत्तेयसरीरबादरव णस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! बादरनिगोदाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तगा। बादरनिगोदा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। एएसिणं भंते ! बादरतसकाइयाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा



ज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा । हेभगवन् एह प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकायने पर्याप्ता अपर्याप्तामांहि किहां २ थी थोडा घणां । गोयमा सव्वत्थोवा पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय पर्याप्ता प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । एएसिणं भंते बायरनिगोयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह बादरनिगोद पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायरनिगोदा पज्जत्ता बायर निगोया अपज्जत्तगा असं० । हेगौतम सर्वथोडा बादरनिगोद पर्याप्ता तेहथी बादरनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । एएसिणंते बायर तसकाइ याणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह बादर त्रसकायने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर तसकाइया पज्जत्तगा बायर तसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा बादर त्रसकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाइया

॥ टीका ॥

बायराणं पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ इह बादरैकैकपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्येया बादरा अपर्याप्ता उत्पद्यन्ते ॥ पज्जत्तगनिस्साए अपज्जत्तगा वक्कमन्ति जत्थ एगो तत्थ नियमा असंखेज्जा इतिवचनात् , ततः सर्वत्र पर्याप्तेभ्यो ऽपर्याप्ता असंख्येयगुणा वक्तव्याः, त्रसकायिकसूत्रं प्रागुक्तयुक्त्या भावनीयं, गतं चतुर्थमल्पबहुत्वं' साम्प्रत्वेतेषामेव समुदितानां पर्याप्तापर्याप्तानां पञ्चममल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! बायराणं बायरपुढविकाइयाणमि

॥ मूल ॥

बादरतसकाइया पज्जत्तगा । बादरतसकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा४ । एएसिणं भंते ! बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १ । बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा २ । बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३ । बादरपत्तेय

॥ भाषा ॥

अपर्याप्ता असंख्यातगुणां हुवे इति चौथो अल्प बहुत्व कह्यो, हिवे समुदित अल्प बहुत्व पांचमो कहेछे—एएसिणं भंते बायराणं बायरपुढवीकाइयाणं बायर अप० तेउ० बाउ० वणस्सइकाइया । हेभगवन् एहने बादर पृथ्वीकायने अप्काइने तेउकायने बाउकायने वनस्पतीकायने । पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइया बादर निगोयाणं बायर तसकाइयाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकायने बादर निगोदियाने बादर त्रसकायनेपर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया पज्जत्तगाणं बायर तसकाइया पज्जत्तगा असं० । हेगौतम सर्वथोडा बादर तेउकाय पर्याप्ता एहनो युक्ति सर्व पाछलोपरे कहिवा बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां । बायर तसकाइया अपज्जत्तगा असं० । बादर त्रसकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां । पत्तेयसरीर बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असं० । तेहथकी बादर प्रत्येकवनस्पती प० असंख्यातगुणा हुवे । बायर निगोया बायर पुढवीकाइया बायर आउकाइया बायर बाउ बायर तेउकाइया अप० असं० । तेहथकी बादरनिगोद बा०

॥ टीका ॥

त्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः १ । तेभ्यो बादरत्रसकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः २ । तेभ्यो बादरत्रसकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ३ । तेभ्यो बादरप्रत्येकवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ४ । तेभ्यो बादरनिगोदाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५ । तेभ्यो बादरपृथिवीकायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६ । तेभ्यो बादराऽप्कायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ७ । तेभ्यो बादरवायुकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ८ । एतेषु पदेषु युक्तिः प्रागुक्ता अनुसरणीया, तेभ्यो बादरतेजस्कायिकाः अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः, यतो बादरवायुकायिकाः पर्याप्ता संख्येयेषु प्रतरेषु यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणा बादरतेजस्कायिकाश्चापर्याप्ता असंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्ततो ज्ञवन्त्यसंख्येयगुणाः ९। ततः प्रत्येकबादरवनस्पतिकायिकाः १० । बादरनिगोद ११ । बादरपृथिवीकायिक १२। बादराप्कायिक १३। बादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर

॥ मूल ॥

वणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ४ । बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जा० ५ । बादरपुढविकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ६ । बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ७ । बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ८ । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ९ । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १० । बादरनिगोदा अपज्जत्ता असंखेज्जगुणा ११ । बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १२ । बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १३ । बादरवाउकाइया

॥ भाषा ॥

पृथ्वीकाय बादर अप्काय बादर वायुकाय बादर तेजस्काय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा जेमणी बादर वायुकाय पर्याप्ता० असंख्यात प्रतर जेतला आकाश तेमाटे असंख्यातगुणा । तेतले प्रमाणछे बादर तेउकाय अपर्याप्ता असं० लोकाकाश प्रमाणछे । पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असं० । प्रत्येकशरीर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । बायरनिगोया बायर पुढवीकाइया बायर आउकाइया बायर वाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । तेहथी बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाइया बादर अप्काय बादर वाउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां । बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अ

॥ टीका ॥

मसंख्येयगुणा वक्तव्याः, यद्यपि चैते प्रत्येकमसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा स्तथाप्यसङ्ख्या तस्या सङ्ख्यातभेदत्वात् इत्थं यथोत्तरमसङ्ख्येयगुणत्वं न विरुध्यते १४। तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः, प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् १५। तेभ्यः सामान्यतो बादराः पर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १६। तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणा एकैकपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकनिगोदनिश्रया असंख्येयाना मपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकनिगोदाना मुत्पादात् १७। तेभ्यः सामान्यतो बादराऽपर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीना मप्यपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १८। तेभ्यः पर्याप्तापर्याप्तविशेषणरहिताः सामान्यतो बादरा विशेषाधिका बादरपर्याप्ततेजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १९। गतानि बादराश्रितान्यपि पञ्चसूत्राणि, सम्प्रति सूक्ष्मबादरसमुदायगतां पञ्चसूत्रीमभिधित्सुः प्रथमत औधिकं सूक्ष्मबादरसूत्रमाह-एएसिणं भंते ! इत्यादि ॥ इह प्रथमं बादरगतमल्पबहुत्वं बादरसूत्र्यां यत्प्रथमं सूत्रं तद्भावनीयं, यावद्बादरवायुकायिकापर्याप्तपदं ७। तदनन्तरं यत्सूक्ष्मगतमल्पबहुत्वं ततः सूक्ष्मपञ्चसूत्र्यां यत्प्रथमं सूत्रं तद्वत् तावद्यावत्सूक्ष्मनिगोदचिन्ता

॥ मूल ॥

अप० असंखेज्जगुणा १४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा १५। बादरपज्जत्तगा विसेसाहिया १६। बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा १७। बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया १९। बादरा विसेसाहिया २०। एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउ

॥ भाषा ॥

णंतगुणा बायर पज्जत्तगा विसेसाहिया बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायर अपज्जत्तगा विसेसाहिया बायराविसेसाहिया ५। बादर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता अनन्तगुणा बादर पर्याप्ता विशेषाधिक बादर वनस्पतीकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा बादरअपर्याप्ता विशेषाधिक तेहथी सर्वबादर विशेषाधिक, हिवे ५ सूत्र कहेछे—एएसिणं भंते सुहुमाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं सुहुम आउकाय सुहुम तेउकाय सुहुम वाउ वणस्सइकाइया सुहुमनिगोयाणं बायराणं बायरपुढवीकायियाणं। हेभगवन् एह सूक्ष्मपृथ्वीने सूक्ष्मअप्कायने सूक्ष्मतेउकायने सूक्ष्मवाउकायने सूक्ष्मवनस्पती

॥ टीका ॥

१२ । तदनन्तरं बादरवनस्पतिकायिका अनन्तगुणाः प्रतिबादरनिगोदमनन्तानां जीवानां भावात् १३ । तेभ्यो बादरा विशेषाधिका बादरतैजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १४ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा बादरनिगोदेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाना मसंख्येयगुणत्वात् १५ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा विशेषाधिकाः, सूक्ष्मतैजस्कायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १६ । गत मेकमल्पबहुत्व मिदानी मेतेषामेवा ऽपर्याप्तानां द्वितीयमाह-एएसिणं भंते ! इत्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरत्रसकायिका अपर्याप्ताः १ । ततो बादरतेजस्कायिका बादरप्रत्येकवनस्पतिकायिकं बादरनिगोद बादरपृथिवीकायिकबादराप्कायिकबादरवायुकायिका अपर्याप्ताः क्रमेण यथोत्तर मसंख्येयगुणा अत्र भावना बादरपञ्चसूत्र्यां यत् द्वितीयमपर्याप्त

॥ मूलं ॥

काइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं बादराणं बादरपुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया १ । बादरतेउकाइया असंखेज्जगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा असंखिज्जगुणा । बादरपुढविकाइया असंखेज्जगुणा ५ । बादरआउकाइया असंखेज्जगुणा

॥ भाषा ॥

ने सूक्ष्मनिगोदने बादरपृथ्वीकायने । बादर आउ तेउ वाउ वणस्पतिकाय । बादर अप्कायने वाउकायने तेउकायने वनस्पतीकायने । पत्तेयसरीर बायरवणस्पतिकाय बायर निगोया णं बायर तसकाइयाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । प्रत्येकबादर वनस्पतीकायने बादर निगोदने बादर त्रसकायने किहां किहांथी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर तसकाइया बायर तेउकाय असंखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा बादर त्रसकाइया तेहथी बादर तेउकाय असंख्यातगुणा । पत्तेयसरीर बायर वणस्पतिकाइया असंखेज्जगुणा । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय असंख्यातगुणां । बादरनिगोया बायर पुढवीकाइया बायर आउकाइया असं० । बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाय बादर अप्काय असंख्यातगुणां । बायर वाउकाय सूक्ष्म तेउकाय असं०

॥ टीका ॥

कमूत्रं तदुत्कर्त्तव्याः ७ । ततो बादरवायुकायिकेभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणाः सूक्ष्मतैजस्कायिका अपर्याप्ता अतिप्रभूतासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् ८ । तेभ्यः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः १ । सूक्ष्माप्कायकायिका २ सूक्ष्मवायुकायिक ३ सूक्ष्मनिगोदा ४ । पर्याप्ता यथोत्तर मसंख्येयगुणा, अत्र भावना-सू

॥ मूल ॥

बादरवाउकाइया असंखेज्जगुणा । सुहुमतेउकाइया असंखेज्जगुणा । सुहुमपुढविकाइया विसेसाहिया । सुहुमआउकाइया विसेसाहिया । सुहुमवाउकाइया विसेसाहिया । सुहुमनिगोदा असंखेज्जगुणा । बादरवणस्सइकाइया अणंतगुणा बादरा विसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइया असंखेज्जगुणा १५ । सुहुमाविसेसाहिया १ । एएसिणं भंते ! सुहुमअपज्जत्ताणं सुहुमपुढविकाइयाणं अपज्जत्तगाणं सुहुम आउकाइया अपज्जत्तयाणं सुहुमतेउकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाया अपज्जत्तयाणं सुहुमवण स्सइकाइयाणं अपज्जत्तयाणं सुहुमनिगोदा अपज्जत्तयाणं बादरा अपज्जत्तयाणं बादरपुढविकाइया अप ज्जत्तयाणं बादरआउकाइया अपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइया अपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइया अपज्जत्तया

॥ भाषा ॥

सहुम पृढवीकाया वि० सहमआउकाय वि० सुहुम वाउकाय वि० सुहमनिगोया असं० । बादर वायुकाय असं० सूक्ष्मतेजकाय असं० सूक्ष्म पृथ्वीकाय वि शेषाधिक सूक्ष्मअप्काइया विशेषाधिक सूक्ष्म वाउकाय विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोदा असं० । बायर वणस्सइकाइया अणतगुणा बायरा विसेसाहिया । ते हथो बादर वनस्पतीकाय अनन्तगुणा बादरविशेषाधिक । सहम वणस्सइकाइया असं० सुहुमाविसेसाहिया ॥ १ ॥ सूक्ष्मवनस्पतीकाय असंख्यातगुणा सूक्ष्मविशेषाधिक । एएसिणं भंते सुहम अपज्जत्तगाणं सुहमपुढवीकाइय अपज्जत्तगाणं सु० आउका अ० सु० तेउका अप० सु० वाउका अप० सु० वणस्स इका अप० । हेभगवन् एह सूक्ष्मअपर्याप्ताने सूक्ष्मपृथ्वीकायने अपर्याप्ताने सूक्ष्मअप्काय पर्या० सू० तेउकाय अप० सू० वायुकाय अप० सू० वनस्पती काय अपर्याप्ताने । सुहुम निगोय अप० बायर अप० बायरपुढवीकाय अप० बायर आउकाय अपज्जत्ता बायर बाउकाय अपज्जत्ता बायर वणस्सइका

त्मपञ्चसूत्र्यां यद्वितीयं सूत्रं तद्वत् १२ । तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाऽपर्याप्तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवा अपर्याप्ता अनन्तगुणाः प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तानां सद्भावात् १३ । तेभ्यः सामान्यतो बादरा अपर्याप्तका विशेषाधिका बादरत्रसकायिकाः पर्याप्तादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १४ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः बादरनिगोदपर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदापर्याप्तानां मसङ्ख्येयगुणत्वात् १५ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मापर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्मतेजस्कायिकापर्याप्तादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् १६ । गतं द्वितीयमल्पबहुत्वं मधुनैतेषामेव पर्याप्तानां तृतीयमल्पबहुत्वमाह-एए सिणं भंते ! सुहुमपज्जत्तयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ताः १ । तेभ्यो बादरत्रसकायिका २ बादरप्रत्येकवनस्पतिकायिका ३



णं बादरवणस्सइकाइया अपज्जयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तयाणं बादरनिगोदा अपज्जत्तयाणं बादरतसकाइया अपज्जत्तगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतसकाइया अपज्जत्तगा । बादरतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा , पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ३ । बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । बादरपुढविकाइया अपज्जा



य अपज्जत्ता । सू० निगोद अप० बादर अप० बादर पृथ्वीकाय अप० बादर अप्काय अप० बादर तेउकाय अप० बादर वायुकाय अप० बादर वनस्पतीकाय अप० । पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया अप० बायरनिगोया अप० बायर तसकाइया अप० कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय अप० बादरनिगोद अप० बादर त्रसकाय अप० किहां २ थी थोडा घणां सरीखा विशेष हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा बायरतसकाइया अपज्जत्तगा तेभ्यो प० असंखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा बादर त्रसकाइया अप०तेहथी पर्या० असंख्यातगुणा । पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया अप० असं० । तेहथी प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय अप० असं० । बायरनिगोया अप० असं० । बादरनिगोद अप० असंख्यातगुणा । बायर पृथ्वीकाइया अप० असं० । बादरपृथ्वीकाय अप० असं० । बायर अपकाइया अपज्जत्तगा० असं० । बादर अप्काय अप० असं० । बायर तेउकाय अपज्जत्ता असं० ।

॥ टीका ॥

बादरनिगोदा ४ बादरपृथिवीकायिका ५ बादराप्कायिका ६ बादरवायुकायिकाः ७ पर्याप्ता यथोत्तरं सङ्ख्येयगुणाः अत्र भावना-बादरपञ्चसूत्र्यां यत् तृतीयं पर्याप्तसूत्रं तद्वत्कर्त्तव्या ७, बादरपर्याप्तवायुकायिकेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिकापर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा बादरवायुकायिकाहि असङ्ख्येयप्रतरप्रदेशराशिप्रमाणाः सूक्ष्मतैजस्कायिकास्तु पर्याप्ता असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा स्ततोऽसङ्ख्येयगुणाः ८। ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिक ९ सूक्ष्माप्कायिका १० सूक्ष्मवायुकायिकाः ११ पर्याप्ताः क्रमेण यथोत्तरं विशेषाधिकाः ११, ततः सूक्ष्मवायुकायिकेभ्यः पर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदा पर्याप्तका असंख्येयगु

॥ मूल ॥

त्तगा असंखेज्जगुणा। बादरआउकाइया अपज्जत्तगा असंखे० ६। बादरवाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया ९ सुहुमआउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १०। सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणा, बादरा अपज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा, सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया २।

॥ भाषा ॥

बादर तेउकाय अपर्याप्ता असं०। बायर बाउकाय अप० असं०। बादर वायुकाय अप० असं०। सुहुम तेउकाय अप० असं० सुहुम पुढवीकाइया अप० विसेसाहिया। सूक्ष्म तेउकाय अप० असं० सूक्ष्म पृथ्वीकाइया विशेषाधिक। सुहुम आउकाइया अप० विसे० सुहुम बाउका० अप० विसे०। सूक्ष्म अपकाइया अप० विशेषाधिक सूक्ष्म बाउकाइया अपर्याप्ता विशेषाधिक। सुहुम निगोय अप० असं० बायरवणस्सइकाइया अप० अणंतगुणा। सूक्ष्मनिगोद अप० असं० गुणा। बादर वनस्पतीकाय अप० अनन्तगुणा। बायर अप० विसे०। बादर अप० विशेषाधिक। सुहुम वणस्सइकाइया अप० असं०। सूक्ष्म वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असख्यातगुणा। सुहुमा अपज्जत्ता विसेसाहिया ॥ २ ॥ सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक। एएसिणं भंते सुहुम पज्जत्तगा सुहुमपुढवीकाइया पज्जत्तयाणं। हेभगवन् एह सूक्ष्म पर्याप्तानें सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्तानें। सुहुम आउकाय पज्जत्तगाणं। सुहुम आका

॥ टीका ॥

णा स्तेषामतिप्रभूततया प्रतिगोलकं भावात् १२। तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका जीवा पर्याप्तका अनन्तगुणाः प्रतिबादरैकैकनिगोदमनन्तनां भावात् १३। तेभ्यः सामान्यतो बादरापर्याप्तका विशेषाधिकाः, बादरतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १४ तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः बादरनिगोदपर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदपर्याप्तानां मसङ्ख्येयगुणत्वात् १५। तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्माः पर्याप्ता विशेषाधिकाः, सूक्ष्मतेजस्कायिकादीनामपि पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् १६। गतं तृतीयमल्पबहुत्व मिदानी मेतेषामेव सूक्ष्मबादरादीनां प्रत्येकं पर्याप्तापर्याप्तानां

॥ मूल ॥

एएसिणं भंते! सुहुमपज्जत्तयाणं सुहुमपुढविकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमआउकाइयपज्जत्तगाणं सुहुमतेउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवाउकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं सुहुमनिगोयपज्जत्तयाणं बादरपज्जत्तगाणं बादरपुढविकाइयपज्जत्तयाणं बादरआउकाइयपज्जत्तयाणं बादरतेउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवाउकाइयपज्जत्तयाणं बादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइयपज्जत्तयाणं बादरनिगोदपज्जत्तया बादरतसकाइयपज्जत्तयाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा वा

॥ भाषा ॥

य पर्याप्तानं। सुहुम तेउका० बाउका० वणस्स० निगोया पर्या०। सूक्ष्म तेजस्काय वायुकाय वनस्पतीकाय निगोदने पर्याप्तानं। बायर पुढवीका० पज्जत्ता बायर आउका प० बादर तेउकाय बादर बाउकाय बायर वणस्सइकाइया पज्जत्ता। बादर पृथ्वीकाय पर्याप्तानं बादर अप्काय पर्या० बादर तेउकाय पर्या० वायुकाय पर्या० बादर वनस्पतीकाय पर्याप्तानं। पत्तेयसरीर बायर वणस्स बायर निगोया बायर तसकाय पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय पर्याप्तानं बादरनिगोद प० बादर त्रसकाय प० किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाय प० बादर तसकाय पज्जत्तगा असं०। हेगौतम सर्वथोडा बादर तेउकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंखेज्जगुणां। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया बायरनिगोया बायर पुढवीकाइया बायर आउकाइय बायर तेउकाय अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणां बायर बाउकाय

॥ टीका ॥

पृथग् २ अल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! सुहुमाणं बायराणं पज्जत्तापज्जत्ताणमित्यादि ॥ सर्वत्रेयं भावना-सर्वस्तोकाबादराः पर्याप्ताः परमित क्षेत्रवर्त्तित्वात्, तेभ्यो बादरा अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा एकैकबादरपर्याप्तनिश्रया असङ्ख्येयानां बादरापर्याप्तानामुत्पादात्, तेभ्यः सूक्ष्मा अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः, सर्वलोकोपपत्ततया तेषां क्षेत्रस्या संख्येयगुणत्वात्' तेभ्यः सूक्ष्मपर्याप्ताः संख्येयगुणाः चिरकालावस्थायितया तेषां सदैव संख्येय गुणतया वाप्यमानत्वात् ॥ गतं चतुर्थमल्पबहुत्वम् ॥ इदानी मेतेषामेव सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनां बादरपृथिवीकायिकादीनां च प्रत्येकं पर्याप्ता

॥ मूल ॥

दरतेउकाइया पज्जत्तगा । बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा । पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपुढविकाइया पज्जत्तया असं० बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा । सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया, सुहुमवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया । सुहुमनिगोदा पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बाद

॥ भाषा ॥

अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणां । प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय बादरनिगोद बादरपृथ्वीकाय बादर अप्काय बादर तेजस्काय बादर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां । सुहुमतेउकाय सुहुम पुढवीकाय सुहुम आउकाय सुहुम वाउकाय पज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुम निगोया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणां । सूक्ष्म तेउकाय पृथ्वीकाय अप्काय वायुकाय निगोदिया अपर्याप्ता असंख्यातगुणां । बादर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा अणंतगुणां । बादर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता अनन्तगुणां । बादर अपज्जत्तगा विसेसाहिया । बादर अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुम वणस्सइकाय अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणां सुहुमा अपज्जत्तगा विसेसाहिया । सूक्ष्म वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक । २ । एएसिणं भंते सुहुमय ज्जत्तगाणं सुहुम पुढवीकाइय पज्जत्तगाणं । हेभगवन् एइ सूक्ष्म पृथ्वीकाय पर्याप्तने । सुहुम आउकाय पज्जत्तयाणं । सूक्ष्म अप्काय पर्याप्तने ।

रवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा, बादरपज्जत्तया विसेसाहिया, सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। सुहुमपज्जत्तया विसेसाहिया ३। एएसिणं भंते! सुहुमाणंबादराणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरा पज्जत्तरा, बादगा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा सुहुमा अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमपुढविकाइया



सुहुम तेउकाय बाउकाय वणस्सइकाय निगोय पज्जत्ता। सूक्ष्म तेजस्काय वायुकाय वनस्पतीकाय निगोद पर्याप्ताने। बायर पृथ्वीकाइया आउकाय तेउकाय बाउकाय वणस्सइकाय पज्जत्ता। बादर पृथ्वीकाय अप्कायने तेजस्काय वायुकाय वनस्पतीकाय पर्याप्ताने। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाय बायर निगोय बायर तसकाइया पज्जत्तगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय बादर निगोदने बादर त्रसकाय पर्याप्ताने किहां थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया प० असं० बायर तसकाइया अ० असं०। हेगौतम सर्वथोडा बादर तेउकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइय बादर निगोद बायर पृढवीकाय अपज्जत्तगा असं०। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां बादरनिगोद बादर पृथ्वीकाय असंख्यातगुणां। बायरआउकाइय बायर बाउकाय पज्जत्ता असंखिज्जगुणां बादर अपकाय बादर आउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां। सुहुम तेउकाय प० असं० सु० पुढवीकाय पज्जत्तगा विसेसाहिया सु० आउकाय सु० बाउकाय सु० निगोय पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां सू० पृथ्वीकाय प०र्याप्ता विशेषाधिक सू० अप्काये पर्या० विशे० सू० वायुकाय प० विशे० सू० निगोद पर्या० असंख्यातगुणां। बायरवणस्सइकाय पज्जत्तगा अणंतगुणां। बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता अनन्तगुणां। बायर पज्जत्तगा विसेसाहिया। बादर पर्याप्ता विशेषाधिक। सुहुम वणस्सइकाय पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां। सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया। ३। सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक अल्प बहुत्व, इति त्रीजो अल्प बहुत्व। एएसिण भंते सुहुमाणं बायराणं

णं बादरपुढविकाइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरपुढविकाइया पज्जत्तया बादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा, सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमआउकाइयाणं बादरआउकाइयाणं पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरआउकाइया पज्जया बादरआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमआउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमआ



पज्जत्ता २ णय कयर २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्मबादरने पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी थोडा घणां सरीखा विशेष हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा बायर पज्जत्तगा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणां । हेगौतम सर्वथोडा बादर पर्याप्ता तेहथी बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सूहम अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणां । सूक्ष्म अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सूहम पज्जत्तगा संखिज्जगुणां । सूक्ष्मपर्याप्ता असंख्यातगुणां । एएसिणं भंते सूहम पुढवीकाइयाणं बायरपुढवीकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सू० पृथ्वीकायने बादर पृथ्वीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ताने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायरपुढवीकाइया पज्जत्तगा बायर पुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा बादर पृथ्वीकाय पर्या० तेहथी बादर पृथ्वीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां । सूहम पुढवीकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणां सुहमपुढवीकाइया पज्जत्तगा संखिज्ज० । सूक्ष्म पृथ्वीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां सू० पृथ्वीकाय पर्याप्ता संख्यातगुणां । एएसिणं भंते सुहम आउकाइयाणं बायर आउकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह अप्कायने बादर अप्कायने पर्याप्ताने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर आउकाइया पज्जत्तगा बायर आउकाइया अपज्जत्तगा असं० । हेगौतम सर्वथोडा बादर पर्याप्ता बादर अपर्याप्ता असंख्यातगुणां । सूहम आउकाइया पज्जत्ता असंखिज्जगुणा सुहमआउकाय अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा । सू० अपकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां सू० अपकाय अपर्याप्ता असंख्यातगु

उक्काइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमतेउक्काइयाणं बादरतेउक्काइयाणय पज्जत्ता २ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउक्काइया पज्जत्तया, बादरतेउक्काइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउक्काइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा, सुहुमतेउक्काइया पज्जत्ता संखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! सुहुमवाउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणय पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरवाउकाइया पज्जत्तया बादरवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा । सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जा० । सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते! सुहुमवणस्सइकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणय पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा !



णां । एएसिणं भंते सुहुम तेउकाइयाणं बायर बायरतेउकाइयाणंय पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा । ४ । हेभगवन् एह सू० तेउकायने बादर तेउकायने पर्याप्ता अपर्याप्तामे किहांथी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाय पज्जत्तगा बायर तेउकाय अपज्जत्तगा असंखिज्ज गुणां । हेगौतम सर्वथोडा बादर तेउकाय पर्याप्ता बादर तेउकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां । सुहुम तेउकाय अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणां । सूक्ष्म तेउ काय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सुहुम तेउकाय पज्जत्तगा संखिज्जगुणां । सूक्ष्म तेउकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां । एएसिणं भंते सुहुम वाउकाइयाणं बायर वाउकाइयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह सूक्ष्मवायुकायने बादर वायुकायने पर्याप्ता अपर्याप्तामे किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा बायर वाउकाइया पज्जत्तगा बायर वाउकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणां । हेगौतम सर्वथोडा बादर वायु काय पर्याप्ता बादर वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां । सुहुम वाउकाय अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणां सुहुम वाउकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । सू क्ष्म वायुकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां सूक्ष्म वायुकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां । एएसिणंभं ते सुहुम वणस्सइकाइयाणं बायर वणस्सइकाइयाणं पज्ज

॥ टीका ॥

पर्याप्तानां च समुदायेन पञ्चम मल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणमित्यादि ॥ सर्वस्तोका बादरतेजस्कायिका पर्याप्ता आवलिकासमयवर्गकतिपयसमयन्यूनै रावलिकासमयै र्गुणिते यावान् समयराशि स्तावत्प्रमाणत्वात् तेषां, तेभ्यो बादरत्रसकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः प्रतरे यावन्त्यङ्गुलसंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वा त्तेषां, तेभ्यो बादरत्रसकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः प्रतरे यावन्त्य

॥ मूल ॥

सव्वत्थोवा बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया, बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा। सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखिज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुहुमनिगोदाणं बादरनिगोदाणय पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा बादरनिगोदा पज्जत्तया, बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे०, सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा, सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखेज्जगुणा ४। एएसिणं भंते ! सुहुमाणं सुहुमपुढविकाइयाणं सुहुमआउकाइयाणं सुहुमतेउकाइयाणं सुहुमवाउकाइयाणं सुहुमवणस्सइकाइयाणं सुहुमनिगोदाणं बादराणं बादर

॥ भाषा ॥

त्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह वनस्पतीकायने बादरवनस्पतीकायने पर्याप्ता अपर्याप्तानें किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा बायरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणां। हेगौतम सर्वथोडा बादर वनस्पतीकाय पर्याप्ता बादर वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां। सुहुम वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणां। सूक्ष्म वनस्पतीकाय अपर्याप्ता असंख्यातगुणां। सुहुम वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखेज्जगुणां। सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता सख्यातगुणां। एएसिण भंते सुहुमनिगोयाणं बायरनिगोयाणं पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सूक्ष्मनिगोदने बादरनिगोदने पर्याप्ता अपर्याप्तानें किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा बायरनिगोया पज्जत्तागा बायरनिगोया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा बादरनिगोद पर्याप्ता बादर निगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणां।

॥ टीका ॥

ङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि खण्डानि तावत्प्रमाणत्वा त्तेषां ततः प्रत्येकबादरवनस्पतिकायिक ४ बादरनिगोद ५ बादरपृथिवीकायिका ६ बादरा प्कायिक ७ बादरवायुकायिकाः ८ पर्याप्ता यथोत्तरं असंख्येयगुणा, यद्यप्येते प्रत्येकं प्रतरे यावत्यङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि खण्डानि यावत्प्रमाणा स्तथा प्यङ्गुलासङ्ख्येयभागस्या सङ्ख्येयभेदत्वेन्नत्वा दित्थं यथोत्तर मसङ्ख्येयगुणत्व मभिधीयमानं न विरुध्यते ९। एतेभ्यो बादरतेजस्कायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणत्वात् १०। ततः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिक ११ बादरनिगोद १२ बादरपृथिवीकायिक १३ बाद

॥ मूल ॥

पुढविकाइयाणं बादरआउकाइयाणं बादरतेउकाइयाणं बादरवाउकाइयाणं बादरवणस्सइकाइयाणं पत्ते यसरीरबादरवणस्सइकाइयाणं बादरनिगोदाणं बादरतसकाइयाणं पज्जत्ता२ णं कयरे कयरेहिंतो अप्पा वा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा बादरतेउकाइया पज्जत्तया १। बादरतसकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा २ बादरतसकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ३। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया असंखिज्ज गुणा ४। बादरनिगोदा पज्जत्तया असंखिज्जगुणा ५। बायरपुढविकाइया पज्जत्तया असंखेज्जगुणा ६। बादरआउकाइया पज्जत्तगा असंखिज्जगुणा ७। बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा ८। बादरतेउ

॥ भाषा ॥

सुहुम निगोदा अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा सुहुम निगोया पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। सूक्ष्म निगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म निगोद पर्याप्ता संख्यातगुणा। एएसिणं भंते सुहुमाणं सुहुमपुढवीकाइयाणं सुहुम आउकाय सु० तेउ सु० वाउ सु० वणस्सइकाय सु० निगोयाणं बायराणं बायरपुढवीकाइयाणं बायर आउ० बायर तेउ० वाउ० सुहुम वणस्सइ०। हेभगवन् एस सू० पृथ्वीकायने सू० अप्कायने सू० तेउकायने सू० वायुकायने सू० वनस्पतीकायने सू० निगोदने, बादर पृथ्वीने बादर अप्कायने बादर तेउने बादर वायुने बादर वनस्पतीने। पत्तेयसरीर बायरवणस्सइकाइया बायर निगोयाणं बायरतसकाइयाणय पज्जत्ता अपज्जत्ताणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। प्रत्येकशरीर बादर वनस्पतीने बादर निगोदने बादर त्रसकायने पर्याप्ता अ

राप्कायिक १३ बादरवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तर मसङ्ख्येयगुणाः १४। ततो बादरवायुकायिकेभ्यो ऽपर्याप्तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः १५ ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिकाः १६। सूक्ष्माप्कायिक १७ सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता यथोत्तरं विशेषाधिकाः १८ ततः सूक्ष्मपर्याप्ता स्तेजस्कायिका सङ्ख्यातगुणाः, सूक्ष्मेभ्यपर्याप्तेभ्यः पर्याप्ताना मोघत एव सङ्ख्येयगुणत्वात् १९। ततः सूक्ष्मपृथिवीकायिक २० सूक्ष्माप्कायिक २१ सूक्ष्मवायु

काइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा ९। पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्ज० १०। बादरनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० ११। बादरपुढविकाइया अपज्जत्तया असंखे० १२। बादरआउकाइया अपज्जत्तया असंखे० १३। बादरवाउकाइया अपज्जत्ता असंखे० १४। सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा १५। सुहुमपुढविकाइया अपज्जत्तगा विसेसाहिया १६। सुहुमआउकाइया अप

पर्याप्ताने किहां २ थी थोडा घणां सरीखा विशेष हुवे। गोयमा सव्वत्थोवा बायर तेउकाइया पज्जत्तगा बायरतसकाइया पर्याप्ता असंखिज्जगुणा बायरतसकाइय अप० असंखेज्जगुणा। हेगौतम सर्वथाडा बादर तेउकाय पर्याप्ता बादर त्रसकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां बादर त्रसकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणां। पत्तेय सरीर बायरवणस्सइ० पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बायरनिगोय पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय पर्याप्ता असंख्यातगुणां बादर निगोद पर्याप्ता असंख्यातगुणां। बायर पुढवीकाइय पज्जत्तगा असंखेज्जगुणां बायर आउकाइय पज्जत्तगा असं० बायर वाउकाय अप० असं० बायर तेउकाय अप० असं०। बादर पृथिवीकाइया पर्याप्ता असं० बादर अप्काय पर्या० असं० बादर वायुकाय अप० असं० बादर तेउकाय अप० असं०। पत्तेयशरीर बायर वणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असं० बायरनिगोय अपज्जत्तगा असं० बायरपुढवीकाइय अप० असं० बायर आउकाय अप० असं० बायर वाउकाय अप० असं०। प्रत्येकशरीर बादरवनस्पतीकाय अपर्याप्ता असं० बादर निगोदिया अपर्याप्ता असं० बादर पृथ्वीकाय पर्या० असं० बादर अप्काय पर्या० असं० बादर वायुकाय अप० असं०। सुहुम तेउकाय अपज्जत्तगा असं० सु० पुढवीकाय अप० सु० आउ०

कायिकाः पर्याप्ता यथोत्तरं विशेषाधिकाः २२, तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्ता असङ्ख्येयगुणा स्तेषां मतिप्राभृत्येन सर्वलोकेषु भावात् २३; तेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाः पर्याप्तकाः सङ्ख्येयगुणाः सूक्ष्मेषपर्याप्तेभ्यः पर्याप्तानां मोघत एव सदा सङ्ख्येयगुणत्वात्, एतेच बादरापर्याप्ततेजस्कायिकादयः पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यवसानाः षोडश पदार्था यद्यप्यन्यत्रा विशेषेणा सङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणतया सङ्कीर्यंते, तथाप्यसंख्येयस्या सङ्ख्येदभिन्नत्वा दित्थमसंख्येयगुणत्वं विशेषाधिकत्वं सख्येयगुणत्वं प्रतिपाद्यमानं न विरोधजागर्ति २४। तेभ्यः पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदेभ्यो बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः, प्रतिबादरैकैकनिगोदमनंतानां जीवानां भावात् २५। तेभ्यः सामान्यतो बादराः पर्याप्ता विशेषाधिकाः, बादरपर्याप्ततेजस्कायिका



जत्तगा विसेसाहिया १७। सुहुमवाउकाइया अपज्जत्तया विसेसाहिया १८। सुहुमतेउकाइया पज्जत्तया संखि० १९। सुहुमपुढविकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २०। सुहुमआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया २१ सुहुमवाउकाइया पज्जत्तया विसेसाहिया २२। सुहुमनिगोदा अपज्जत्तया असंखे० २३। सुहुमनिगोदा पज्जत्तया संखि० २४। बादरवणस्सइकाइया पज्जत्तया अणंतगुणा २५। बादरपज्जत्ता विसेसाहिया २६ बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखिज्जगुणा २७। बादरअपज्जत्तया विसेसाहिया २८। बादरा



अप० विस० सु० बाउकाय अप० विसे०। सूक्ष्म तेउकाय अप० असं० सू० पृथ्वीकाय अप० विशेषाधिक सू० अप्काय अप० विशेषाधिक सू० वायुकाय अप० विशेषाधिक। सु० तेउकाय पज्जत्तगा असं० सु० पृढवीकाय पज्जत्तगा विसे० सु० आउकाय० बाउकाय निगोय पज्ज० विसे०। सू० तेउकाय अप० असं० सू० पृथ्विीकाय अपर्याप्ता विशे० सू० अप्काय अप० विश० सू० वायुकाय अप० विशे० सू० निगोदोया अप० संख्यातगुणां। बायर वणस्सइकाइया पज्ज० अणंतगुणा वायर पज्जत्तगा विसे०। बादर वनस्पतीकाय पर्या० अनन्तगुणां बादर पर्या० विशेषाधिक। वायर वणस्सइकाइय अप० असं० बायर अपज्जत्तगा विसे० बायरा विसेसाहिया। बादर वनस्पतीकाय अप० असं० बादर अप० विशेषाधिक बादर विशेषाधिक। सुहुम

॥ टीका ॥

दीनामपि तत्र प्रक्षेपात् २६ । तेभ्यो बादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः एकैकपर्याप्तबादरनिगोदनिश्रया असंख्येयानां बादरनिगोदापर्याप्तानामुत्पादात् २७ । तेभ्यः सामान्यतो बादरापर्याप्ता विशेषाधिका बादरतेजस्कायिकादीना मप्यपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् २८ । तेभ्यः सामान्यतो बादरा विशेषाधिकाः पर्याप्तानामपि तत्र प्रक्षेपात् २९ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता संख्येयगुणा बादरनिगोदेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाना मप्य पर्याप्ताना मप्य संख्येयगुणत्वात् ३० । ततः सामान्यतः सूक्ष्माऽपर्याप्तका विशेषाधिकाः सूक्ष्मपृथिवीकायिकादीना मप्य पर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ३१ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता संख्येयगुणाः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका पर्याप्तेभ्यो हि सूक्ष्मवनस्पतिकायिकपर्याप्ता संख्येयगुणाः सूक्ष्मेभ्यो घतो ऽपर्याप्तेभ्यः पर्याप्तानां संख्येयगुणत्वात्, ततः सूक्ष्मा पर्याप्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा विशेषाधिकत्वस्य संख्येयगुणत्वबाधनायोगात् ३२ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्माः पर्याप्ता विशेषाधिकाः पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीना मपि तत्र प्रक्षेपात् ३३ । ततः सामान्यतः सूक्ष्मा पर्याप्तापर्याप्तविशेषणरहिता विशेषाधिका' अपर्याप्ताना मपि तत्र प्रक्षेपात् ३४ । गतं सूक्ष्मबादरसमुदायगतं पंचम मल्पबहुत्वं तद्गतौ समर्थितानि पञ्चदशापि सूत्राणीति गतं कायद्वार' मिदानीं योगद्वार माह-एएसिणं भंते ! जीवाणं सजोगीणं मित्यादि । सर्वस्तोका मनोयोगिनः संज्ञिन २ प

॥ मूल ॥

विसेसाहिया २९ । सुहुमवणस्सइकाइया अपज्जत्तगा असंखि० ३० । सुहुमअपज्जत्तगा विसेसाहिया ३१ सुहुमवणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखे० ३२ । सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया ३३ । सुहुमा विसेसाहिया ३४ दारं ४ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सजोगीणं मणजोगीणं वयजोगीणं कायजोगीणं अजोगीणय कयरे २

॥ भाषा ॥

वणस्सइकाइया अप० असं० सु० अप० विसेसाहिया । सू० वनस्पतीकाय अप० असं० सू० अप० विशे० । सु० वणस्सइकाइया पज्जत्तगा संखिज्जगुणा । सूक्ष्म वनस्पतीकाय पर्याप्ता अपर्याप्ता सख्यातगुणां । सुहुमपज्जत्तगा विसेसाहिया सुहुमविसेसाहिया द्वारं । सूक्ष्म पर्याप्ता विशेषाधिक इति सूक्ष्मविशेषाधिक द्वार, हिवे काययोगद्वार कहेछे—एएसिणं भंते जीवाणं सयोगीणं मणयोगीण वययोगीणं काययोगीणं अयोगीणय कयरे २ हिंतो

॥ टीका ॥

र्योप्राप्त एव हि मनोयोगिन स्तेच स्तोका इति तेभ्यो वाग्योगिनो संख्येयगुणा द्वीन्द्रियादीनां वाग्योगिनां संज्ञिभ्यो संख्यातगुणत्वात्, तेभ्यो ऽयो गिनो ऽनन्तगुणाः। सिद्धाना मनन्तत्वात्, तेभ्यः काययोगिनो ऽनन्ता वनस्पतीना मनन्तत्वात्। यद्यपि निगोदजीवाना मनन्ताना मेकं शरीरं तथापि तेनैकेन शरीरेण सर्वैप्याहारादिग्रहणं कुर्वंतीति। सर्वेषामपि काययोगित्वा न्ना नंतगुणत्वव्याघात तेभ्यः सामान्यतः सयोगिनो विशेषो धिका द्वीन्द्रियादीना मपि वाग्योग्यादीनां तत्र प्रक्षेपात्। गतं योगद्वार, मिदानीं वेदद्वारमाह-एएसिणं भंते! जीवाणं सवेयगाणमित्यादि, सर्व स्तोकाः पुरुषवेदाः संज्ञिनामेव तिर्यग्मनुष्याणां देवानां च पुरुषवेदभावात्। तेभ्यः स्त्रीवेदाः संख्येयगुणाः, यत उक्तं जीवाभिगमे-तिरिक्खजो णियपुरिसेहिंतो तिरिक्खजोणियइत्थीउ तिगुणीउ तिरूवाहियाओय तहामणुस्सपुरिसेहिंतो मणुस्सइत्थीउ सत्तावीसगुणाउ सत्तावीसरूवुत्तराउय तहादेवपुरिसेहिंतो देवत्थीउ बत्तीसगुणाउ बत्तीसरूवुत्तराउय इति। वृद्धाचार्यै रप्युक्तं-तिगुणातिरूवअहिया तिरियाणइत्थियामुणेयव्वा सत्तावी सगुणापुण मणुयाणंतदहियाचेव १ बत्तीसगुणाबत्तीसु रूवअहियाय तहयदेवाण देवीउसपन्नत्ता जिणेहिंजियरागदोसेहिं २ अवेदका अनंतगुणाः सिद्धा नामनन्ततत्वात्। तेभ्यो नपुंसकवेदा अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्यो प्यनंतगुणत्वात्' सामान्यतः सवेदका विशेषाधिकाः स्त्रीवेदकपुरुषवेदका

॥ मूल ॥

हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणजोगी वयजोगी असं खेज्जगुणा अजोगीअणंतगुणा कायजोगी अणंतगुणा सजोगी विसेसाहिया, दारं ५। एएसिणं भंते ! जीवाणं सवेदगाणं इत्थीवेदगाणं पुरिसवेदगाणं नपुंसगवेदगाणं अवेदगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४

॥ भाषा ॥

अल्पाबा ४। हेभगवन् जीवाने सयोगीने मनयोगीने वचनयोगीने काययोगीने अयोगीने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा मणजोगी वयजोगी असंखिज्जगुणां अयोगी अणंतगुणा काययोगी अणंतगुणा सयोगी विसेसाहिया दार। हेगौतम सर्वथोडा जीव मनयोगी सन्नी पर्याप्ता भणी वचनयोगी असंख्यातगुणां बेंद्रियमाटे अयोगी अनन्तगुणां सिद्धवती काययोगी अनन्तगुणां वनस्पतीमाटे सयोगी विशेषाधिक

॥ टीका ॥

नामपि तत्र प्रक्षेपात्, गतं वेदद्वारं, इदानीं कषायद्वारमाह ॥ एएसिणं भंते! जीवाणं सकसाईणं इत्यादि। सर्वस्तोका अकषायिणः सिद्धानां कतिपयानां च मनुष्याणां अकषायत्वात्। तेभ्यो मानकषायिणो मानकषायपरिणामवतो ऽनंतगुणाः षट्स्वपि जीवनिकायेषु मानकषायपरिणामस्या वाप्यमानत्वात्' तेभ्यः क्रोधकषायिणो विशेषाधिका स्तेभ्यो मायाकषायिणो विशेषाधिका स्तेभ्योपि लोभकषायिणो विशेषाधिका मानकषायपरिणामकालापेक्षया क्रोधादिकषायपरिणामकालस्य यथोत्तरं विशेषाधिकतया क्रोधादिकषायाणामपि यथोत्तरं विशेषाधिकत्वलाभात्, लोभकषायिभ्यः सामान्यतः सकषायिणो विशेषाधिका, मानादिकषायाणा मपि तत्र प्रक्षेपात् सकषायिण इत्यत्रैवं व्युत्पत्तिः कषायशब्देन कषायोदयः परिगृह्यते तथाच-लोकेव्यवहारः सकषायो यं कषायोदयवा नित्यथः, सह कषायेण कषायोदयेन वर्त्तते सकषायोदया विपाकावस्थांप्राप्ताः स्वोदय मुपदर्शयंतः कषायकर्मपरिमाणवंतस्तेषुसत्सु जीवत्वावश्यं कषायोदयसंभवात्' सकषायाविद्यन्ते येषांते सकषायिणः कषायोदयसहिता इति तात्पर्यार्थः,

॥ मूल ॥

? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेदगा इत्थीवेदगा संखेज्जगुणा, अवेदगा अणंतगुणा नपुंसगवेदगा अणंतगुणा सवेयगा विसेसाहिया, दारं ६ । एएसिणंणं भंते ! जीवाणं सकसाईणं कोहकसाईणं माणकसाईणं मायाकसाईणं लोभकसाईणं अकसाईणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा

॥ भाषा ॥

बेंद्रियादिकमांहि घालता, वेदद्वार कहेछे—एएसिणं भंते जीवाणं सवेयगाणं इत्थीवेयगाणं पुरिसवेयगा नपुंसगवेयगाण अवेयगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एहने जीव सवेदीने स्त्रीवेदीने पुरुषवेदने नपुंसकवेदीने अवेदीने किहां २ थी अल्प घणा इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा पुरिसवेयगा इत्थीवेयगा संखिज्जगुणा अवेदगा अणंतगुणा नपुंसगवेयगा अणंतगुणा सवेयगा विसेसाहिया। हेगौतम सर्वथोडा जीव नपुंसकवेदी संज्ञामां तिर्यंचमां मनुष्यमां बडाछव तेमाटे तेहथी स्त्रीवेदी संख्यातगुणी अवेदी अनन्तगुणा सिद्ध नपुंसकवेदी अनन्तगुणा वनस्पतीमाटे सवेदी विशेषाधिक स्त्रीवेदे पुरुषवेद घालता, इति वेदद्वार ६। एएसिणं भंते जीवाणं सकसाईणं कोहकसाईणं माणकसाईणं मायाकसाईणं लोहकसाईणं अकसाईणय

॥ टीका ॥

गतं कषायद्वारं । मिदानीं लेश्याद्वारं-एएसिणं भंते ! कण्हलेसाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः शुक्ललेश्या लांतकादिष्वेवा नुत्तरपर्यवसानेषु विमानि केषु देवेषु कतिपयेषु च गर्भव्युत्क्रांतिकेषु कर्मभूमिकेषु संख्येयवर्षायुष्केषु मनुष्येषु तिर्यक्स्त्रीपुंनपुंसकेषु कतिपयेषु संख्येयवर्षायुष्केषु तस्याः संभ वात्, तेभ्यः पद्मलेश्याका संख्येयगुणाः साहि सनत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्मलोक कल्पवासिषु देवेषु तथाप्रभूतेषु गर्भव्युत्क्रांतिकेषु कर्मभूमिजेषु संख्ये यवर्षायुष्केषु मनुष्यस्त्रीसनपुंसेषु । तथा गर्भव्युत्क्रांतिक तिर्यग्योनिकस्त्रीपुंसेषु असंख्येयवर्षायुष्के ष्वाप्यते सनत्कुमारादिदेवादयश्च समुदितनां तकादिदेवादिभ्यः संख्येयगुणा इति भवंति, शुक्ललेश्याकेभ्यः पद्मलेश्याकाः संख्येयगुणाः, तेभ्य स्तेजोलेश्याकाः संख्येयगुणाः, सर्वेषां सौधर्मैशा नज्योतिष्कदेवानां कतिपयानां च भवनपतिव्यन्तर गर्भव्युत्क्रांतिक तिर्यक्पंचेंद्रिय मनुष्याणां बादराऽपर्याप्तैकेन्द्रियाणां च तेजोलेश्याभावात्, न न्वसंख्येयगुणाः कस्मा न्न भवंति कथन भवंती तिचेत् उच्यते-इहज्योतिष्का भवनवासिभ्यो प्यसंख्येयगुणाः, किंपुनः सनत्कुमारादिदेवेभ्य स्तेचभ्यो

॥ मूल ॥

अकसाईमाणकसाईअणंतगुणा, कोहकसाई विसेसाहिया, मायाकसाई विसेसाहिया, लोभकसाई विसेसा हिया, सकसाई विसेसाहिया, दारं ७। एएसिणं भंते! जीवाणं सलेसाणं किण्हलेसाणं नीललेसाणं काउ

॥ भाषा ॥

कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एहजीव सकषायने क्रोधकषायन मानकषायन मायाकषायने लोभकषायने अकषायने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा अकसाई माणकसाई अणंतगुणा। हेगौतम सर्वथोडा जीव अकषायी सिद्धमाटे तेहथी मानकषायी अनन्तगुणा षटकायनेविषे मान लोभे। कोहकसाय विसेसाहिया मायाकसाई विसेसाहिया लोभकसाई विसेसाहिया सकसाय विसेसाहिया दार। क्रोधकषायने विशेषाधिक मानथी क्रोधनो कालाविशेषाधिक मायाकषायविशेषाधिक क्रोधथी मायाकषायनो कालअधिक लोभकषाय विशेषाधिक यथोत्तर परिणा म कालादिक सकषाय विशेषाधिक मानकषायमांहि भेलता इति कषायद्वार ७, हिवे लेश्याद्वार कहेछे—एएसिणंभंते जीवाण सलेस्साण किण्हलेसाण नीललेसाण काऊलेसाणं तेऊलेसाणं पद्मलेसा सुक्कलेसाणं अलेसाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह जीवने सलेशीने कृष्णलेशीने नीललेशीने

॥ टीका ॥

तिका स्तेजोलेश्याका स्तथासौधर्मेशानकल्पदेवाश्च ततः प्राप्नुवंत्यसंख्येयगुणा स्तदयुक्तं वस्तुतत्वापरिज्ञानात्, लेश्यापदेहि गर्भव्युत्क्रांतिकतिर्यग्यो निकानां संमूर्च्छिमपचेंद्रियतिर्यक्योनिकानां च कृष्णलेश्याद्यल्पबहुत्वे सूत्रं वक्ष्यति-सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणिया सुक्कलेसा तिरिक्खजो णिणीउ संखेज्जगुणाउ पम्हलेसागब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, तिरिक्खजोणिणीउ संखेज्जगुणाउ तेउलेसा गब्भवक्कंतियतिरिक्खजोणिया संखेज्जगुणा, तेउलेसाउ तिरिक्खजोणिणीउ संखेज्जगुणाउ इति॥ महादंडके च तिर्यग्योनिकस्त्रीभ्यो व्यंतरज्योतिका श्च संख्येयगुणा वक्ष्यंते ततो यद्यपि भवनवासिन्यो प्य संख्येयगुणा ज्योतिका तथापि पद्मलेश्याकेभ्य स्तेजोलेश्याकाः संख्येयगुणाएव इद मत्र तात्पर्यार्थः, यदि केवलान् देवानेव पद्मलेश्यान धिकृत्य देवाएव तेजोलेश्याका श्चिंत्यन्ते ततो भवत्य संख्येयगुणा यावता तिर्यक्सन्निश्रया पद्मलेश्याकेभ्य स्तिर्यक्सन्नि श्राएव तेजोलेश्याका श्चिंत्यन्ते तिर्यंचश्च पद्मलेश्या अपि अतिबहव स्ततः संख्येयगुणा इति। तेभ्यः अलेश्याका अनंतगुणाः सिद्धाना मनन्तत्वात् तेभ्यः कापोतलेश्या अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना मपि कापोतलेश्यायाः संभवात् वनस्पतिकायिकानां च सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात् तेभ्यो पि नीललेश्याविशेषाधिकाः प्रभूततराणां नीललेश्यासंभवात् तेभ्योपि कृष्णलेश्याका विशेषाधिकाः प्रभूतानां कृष्णलेश्यकत्वात्, सामान्यतः सले

॥ मूल ॥

लेसाणं तेउलेसाणं पम्हलेसाणं सुक्कलेसाणं अलेसाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सुक्कलेसा पम्हलेसा संखिज्जगुणा तेउलेसा संखिज्ज० अलेसाअणंतगुणा काउलेसा अणंतगुणा नील

॥ भाषा ॥

कापोतलेश्याने तेजोलेश्याने पद्मलेश्याने शुक्ललेश्याने अलेश्याने किहां२ थोथोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवाजीवा सुक्कलसगा पद्मलेसगा संखिज्जगुणा। हेगौतम सर्वथोडा जीव शुक्ललेश्याना तेनकथी ऊपरिला देवने थाय पद्मलेश्याना घणो संख्यातगुणां ईशानादिक देव मणुष्यने हुवे तेमाटे। तेउलेसगा संखिज्जगुणा अलेसगा अणंतगुणा काउलेसगा अणंतगुणा नीललसगा विसेसाहिया किण्हलेसगाविसेसाहिया सलेसगा विसेसाहिया इति ८। तेजोले श्या ज्योतिषीने हुवें तेमाटे संख्याता अलेश्याछिइ तेथकी अनंता कापोतलेश्याना घणो अनन्ता वनस्पती थकी नीललेश्याना घणो विशेषाधिक घणां

॥ टीका ॥

इया विशेषाधिका नीललेश्याकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात्, गतं लेश्याद्वारं, मिदानीं सम्यक्त्वद्वारं माह-एएसिणं भंते ! जीवाणं सम्मदिट्ठीणं मित्यादि ॥ सर्वस्तोकाः सम्यग्मिथ्यादृष्टयः । सम्यग्मिथ्यादृष्टिपरिणामकालस्यां तर्मुहूर्त्तप्रमाणतयाऽतिस्तोकत्वेन तेषां पृच्छासमये स्तोकानामेव लभ्यत्वात्; तेभ्यः सम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तत्वात्, तेभ्योपि मिथ्यादृष्टयोऽनन्तगुणाः वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्योऽप्यनन्तगुणत्वात्, तेषांच मिथ्यादृष्टित्वादिति । गतं सम्यक्त्वद्वारं, मधुना ज्ञानद्वारं माह-एएसिणं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं मित्यादि ॥ सर्वस्तोकामनःपर्यवज्ञानिनः संयतानामेवामर्षौषध्यादिऋद्धिप्राप्तानां मनःपर्यवज्ञानसंभवात्, तेभ्योऽसंख्येयगुणा अवधिज्ञानिनो नैरयिकतिर्यक्पंचेंद्रियमनुष्यदेवानामप्यवधिज्ञानसंभवात्, तेभ्य आभिनिबोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिनश्च विशेषाधिकाः संज्ञितिर्यग्पंचेंद्रियमनुष्याणामेवावधिज्ञानविकलानां

॥ मूल ॥

लेसा विसेसाहिया कण्हलेसा विसेसाहिया, दारं ८। एएसिणं भंते ! जीवाणं सम्मदिट्ठीणं मिच्छादिट्ठीणं समामिच्छदिट्ठीणं च कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छदिट्ठी, सम्मदिट्ठी असंतगुणा मिच्छदिट्ठीअणंतगुणा, दारं ९। एएसिणं भंते ! जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं

॥ भाषा ॥

जीवानेथाय कृष्णलेश्याना धणो विशेषाधिक सातमीनरक तथा मनुष्य तिर्यंचने सर्वलेश्यानाधणो विशेषाधिक आय इति लेश्याद्वार, हिवे सम्यक्त्वद्वार क हेछे—एएसिणं भंते जीवाणं सम्मदिट्ठीणं मिच्छदिट्ठीणं सम्मामिच्छादिट्ठीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह जीवने सम्यक्त्वदृष्टिने मिथ्यादृष्टि सम्यक्त्वमिथ्यादृष्टिने किहां २ थी अल्प घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा सम्मामिच्छादिट्ठी सम्मदिट्ठी असंतगुणा मिच्छदिट्ठी असंतगुणा द्वार। हेगौतम सर्वथोडाजीव सम्यग्मिथ्यादृष्टि जेमणी मिश्रगुणठाणानोकाल तेमणी तेहथी सम्यक्त्वदृष्टि अनन्तासिद्ध भेलता तेहथी मिथ्यादृष्टि अनन्ता वनस्पती भेलता इति सम्यक्त्व ८ हिवे ज्ञानद्वार कहेछे—एएसिणंभंते जीवाणं आभिणिबोहियणाणीण सुयनाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह जीवाने मतिज्ञानीने श्रुतज्ञानीने अवधिज्ञानीने मनपर्यवज्ञानीने केवलज्ञानीने किहां २ थी थोडा

॥ टीका ॥

मपि केषांचि दाभिनिबोधिकश्रुतज्ञानन्नावात्, स्वस्थाने तु ल्येपि परस्परं तुल्याः जत्थमइनाणं तत्थसुयनाणं जत्थसुयनाणं तत्थमइनाण मितिवच नात्, तेन्यः केवलज्ञानिनो अनन्तगुणाः सिद्धाना मनन्तत्वात्, उक्तंहि-ज्ञानानि मल्पबहुत्व मिदानी तत्प्रतिपक्षन्नूताना मज्ञानिना मल्पबहुत्व माह-एएसिणं नंते ! जीवाणं मइअन्नाणीण मि यादि ॥ सर्वस्तोका विन्नङ्गज्ञानिनः कतिपयानामेव नैरयिकदेवतिर्यक्पंचेंद्रियमनुष्याणां विन्नंगज्ञा वात्, तेन्यो मत्यज्ञानिनः श्रुताज्ञानिनो ऽनन्तगुणाः, वनस्पतीनामपि मत्यज्ञान श्रुताज्ञानन्नावात्, स्वस्थानेतु परस्परं तुल्याः जत्थमइअन्नाणं त त्थसुयअन्नाणं जत्थ सुयअन्नाणं तत्थमइअन्नाण मितिवचनात्-संप्रत्युन्नयेषां ज्ञानाज्ञानिना मल्पबहुत्व माह-एएसिणं नंते ! जीवाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका मनःपर्यवज्ञानिन संयताना मेवा मर्षौषध्या वृद्धिप्राप्ताना मनःपर्यवज्ञानसंन्नवात्, तेन्यो ऽसंख्येयगुणा अवधिज्ञानिन स्तेन्य आन्निनि

॥ मूल ॥

सुयणाणीणं नहिणाणीणं मणपज्जवनाणीणं केवलनाणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्व त्थोवा मणपज्जवनाणी नहिमाणी असं० आन्निणिबोहियनाणी सुयनाणी दोवि तुल्ला विसेसाहिया केव लनाणी अणं० । एएसिणं नंते ! जीवाणं मइअन्नाणीणं सुयअन्नाणीणं विन्नंगनाणीणय कयरे कयरेहिंतो

॥ भाषा ॥

घणां इत्यादि गोयमा सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवणाणी ओहिणाणी असंखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा मनपर्यवज्ञानीने किम अमोसही लब्धिना धणी ते हवे तेमाटे तेहथी अवधिज्ञानी असंख्यात देवता नारकी मनुष्य तिर्यंचने हवे तेमाटे आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी दोवितुल्ला विसेसा हिया केवलणाणी अणंतगुणा । मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी बेसरीखा जीवाभिगमे कह्याछे जत्थमइणाणं तत्थसुइणाण, मइनाणं अवधिणाणीथी विशेषाधिक केवलज्ञानी अनन्तगुणां सिद्धनालेवा भणी, हिवे ज्ञानना प्रतिपक्षीनो अल्पबहुत्व कहेछे—एएसिणं भंते जीवाणं मइअन्नाणीणं सुयअन्नाणीण विभंगणा णीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एहजीवने मतिज्ञानीने श्रुतज्ञानीने विभंगज्ञानीने किहां २ थी थोडा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा विभंग णाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवितुल्ला अणंतगुणा । हेगौतम सर्वथोडा विभङ्गज्ञानी देव नारकी मनुष्य तिर्यंचमे तेमथी मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी दो

॥ टीका ॥

बोधिकज्ञानिनः श्रुतज्ञानिन श्च विशेषाधिकाः स्वस्थाने तु द्वावपि परस्परं तुल्या अत्रभावना प्रागेवोक्ता, तेभ्योसंख्येयगुणा विभंगज्ञानिनो यस्मा त्सुरगतौ निरयगतौ च सम्यग्दृष्टिभ्यो मिथ्यादृष्टयो ऽसंख्येयगुणाः पठ्यन्ते, देवनैरयिका श्च सम्यग्दृष्टयो ऽवधिज्ञानिनो मिथ्यादृष्टयो विभंगज्ञानिन इत्य संख्येयगुणा स्तेभ्य केवलज्ञानिनो ऽनन्तगुणाः सिद्धाना मनन्तत्वात्, तेभ्यो मत्यज्ञानिः श्रुताज्ञानिनश्चा नन्तगुणा वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्यो प्यनन्त

॥ मूल ॥

अप्पाबा१ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा विभंगनाणी मइअन्नाणी सुयअन्नाणी दोवि तुल्ला अणंतगुणा। एएसिणं भंते ! जीवाणं आभिनिबोहियनाणीणं सुयनाणीणं ओहिनाणीणं मणपज्जवनाणीणं। केवलनाणी णं मतिअन्नाणीणं सुयअन्नाणीणं विभंगनाणीणय कयरे कयरेहिंतो अप्पाबा१ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवनाणी ओहिनाणी असंखिज्जगुणा, आभिनिबोहियनाणी सुयनाणीय दोवि तुल्ला. विसेसाहि या, विभंगनाणी असंखेज्ज०, केवलनाणी अणंतगुणा मइअन्नाणी सुयअन्नाणीय दोवि तुल्ला अणंतगु

॥ भाषा ॥

य सरीखा विभंगथी अनन्तगुणां जेमणो मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी वनस्पतीने थाय तेमाटे। एएसिणं भंते जीवाणं आभिणिबोहियणाणीणं सुयणाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी केवलणाणी। हेभगवन् एहने मतिज्ञानीने श्रुतज्ञानीने अवधिज्ञानीने मनपर्यवज्ञानीने केवलज्ञानीने। मइअन्नाणीणं सुय अन्नाणीणं विभंगणाणीणय कयरे २ हिंतो अप्पाबा १। मतिअज्ञानीने श्रुतअज्ञानीने विभंगज्ञानीणे किहां २ थोडा घणां सरीखा विशेष होवे। गोय मा सव्वत्थोवा जीवा मणपज्जवणाणी ओहिणाणी असंखिज्जगुणा आभिणिबोहियणाणी सुयणाणी दोवितुल्ला विसेसाहिया। हेगौतम सर्वथोडा जीव मनपर्यवनाधणी लब्धना धणी साधुने हवे। तेहथी अवधिज्ञानी असंख्यातगुणां मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी बेसरीखा अवधिज्ञानीथी विशेषाधिक। विभंगणा णी असंखिज्जगुणा केवलणाणी अणंतगुणा मइअन्नाणी दोवितुल्ला अणंतगुणा द्वार १०। विभङ्गज्ञानी असंख्यातगुणा मिथ्यात्वीने हवे पिण सम्यक्त्वी नथी तेमाटे केवलज्ञानी अनन्तगुणा सिद्ध भेलता मतिअज्ञानी श्रुतअज्ञानी दोय सरीखा केवलज्ञानीथी अनन्तगुणां वनस्पतीमाटे इति ज्ञानद्वार।

॥ टीका ॥

त्वात्, तेषांच मत्यज्ञानिश्रुताज्ञानित्वात्, स्वस्थानेतु द्वावपि परस्परं तुल्यौ गतं ज्ञानद्वार मिदानीं दर्शनद्वारमाह-एएसिणं भंते! जीवाणं चक्षु दंसणीण मित्यादि॥ सर्वस्तोका अवधिदर्शनिनो देवनैरयिकाणां कतिपयानां च संज्ञिपंचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याणा मवधिदर्शनभावात्, तेभ्यो श्चतुदर्शनिनो ऽसंख्येयगुणाः सर्वेषां देवनैरयिक गर्भजमनुष्याणां संज्ञितिर्यग्पंचेंद्रियाणां चतुरिंद्रियाणां च असंज्ञितिर्यग्पंचेंद्रियाणां चक्षुदर्शनभावात्, तेभ्यः केवल दर्शनिनोऽनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तत्वात्, तेभ्यो ऽचक्षुदर्शनिनो ऽनन्तगुणा वनस्पतिकायिकानांसिद्धेभ्योप्यनंतत्वात्, गतं दर्शनद्वार, मधुना संय तद्वार माह-एएसिणं भंते! जीवाणं मित्यादि॥ सर्वस्तोकाः संयता उत्कृष्टपदेपि तेषां कोटिसहस्रपृथक्त्वप्रमाणतया लभ्यानत्वात्, कोडिसहस्सपुहुत्तं मणुयलोए संजयाण मितिवचनात्, तेभ्यः सयतासंयतादेशविरता असंख्येयगुणा स्तिर्यक् पंचेंद्रियाणा मसंख्यातानां देशविरतिसद्भावात्, तेभ्यो

॥ मूल ॥

णा, दारं १० । एएसिणं भंते! जीवाणं चक्खुदंसणीणं अचक्खुदंसणीणं ओहिदंसणीणं केवलदंसणीणय क यरे कयरेहिंतो अप्पवा४? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा ओहिदंसणी चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा, केवलदंस णी अणंतगुणा अचक्खुदंसणी अणंतगुणा, दारं ११ । एएसिणं भंते! जीवाणं संजयाणं असंजयाणं संज यासंजयाणं नोसंजया नोअसंजया नोसंजया२ णय कयरे२ हिंतो अप्पावा४? गोयमा! सव्वत्थोवा

॥ भाषा ॥

एएसिण भंते जीवाण चक्खुदंसणीणं अचक्खुदंसणीणं ओहिदसणीण केवलदंसणीणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४। हेभगवन् एह चक्षुदर्शनि दर्शनद्वार कहेछे अचक्षुदर्शनि अवधिदर्शनीने केवलदर्शनीने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा ओहिदंसणी चक्खुदंसणी असंखेज्जगुणा। हे गौतम सर्वथोडा जीव अवधिदर्शनी जेमणी मनुष्य तिर्यंच देव नारकीने हुवे चक्षुदर्शनी असंख्यातगुणा चौरिन्द्रियादिकमें। केवलदंसणी अणंतगुणा अ चक्खुदंसणी। केवलदर्शनी अनन्तगुणा अचक्षुदर्शनी अनन्ता पांचेथाय थावरआश्री इति ११। एएसिणं भंते जीवा संजयाणं असंजयाणं संजयासंजयाण नोसंजय नोअसंजय नोसंजय संजयाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह जीवाने संयतने असंयतने संयतासंयतने नोसंयत नोअसंयतने नोसंय

॥ टीका ॥

नोसंयता नोअसंयतासंयता अनन्तगुणाः प्रतिषेधत्रयवृत्ता ति सिद्धा स्ते चा नंता इति तेभ्यो ऽसंयता अनन्तगुणा वनस्पतीनां सिद्धेभ्यो ऽनन्त त्वात्, गतं संयतद्वारं, संप्रत्यु पयोगद्वार माह-एएसिणं भंते ! जीवाणं साकारोवउत्ताण मित्यादि ॥ इहो नाकारोपयोगः कालः सर्वस्तोकाः सा कारोपयोगकाल स्तु सङ्ख्येयगुणाः ततो जीवा अप्य नाकारोपयोगोपयुक्ताः सर्वस्तोकाः पृच्छासमये तेषां स्तोकानामेवा वाप्यमानत्वात्, तेभ्यः सा कारोपयोगोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणाः साकारोपयोगकालस्य दीर्घतया तेषां पृच्छासमये बहूनांप्राप्यमाणत्वात्, गत मुपयोगद्वार, मिदानी माहार द्वारं-एएसिणं भंते ! आहारगाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका जीवा अनाहारका विग्रहगत्यापन्नादीना मेवा नाहारकत्वात्, उक्तं च-विग्गहगइमाव न्ना केवलिणोसमुहयाअजोगीय सिद्धायअणाहारा सेसाआहारगाजीवा ॥ १ ॥ तेभ्य आहारका असङ्ख्येयगुणाः ननु वनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्यो

॥ मूल ॥

जीवा संजया संजया असंजया असंखेज्जगुणा, नोसंजता नोअसंजता नोसंजतासंजता अणंतगुणा, असंज ता अणंतगुणा, दारं १२ । एएसिणं भंते ! जीवाणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, दारं १३ । एए

॥ भाषा ॥

तासयतने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवाजीवा संजयासंजय असंखिज्जगुणा नोसंजय नो असंजय अणंतगुणा नो संजयासंजय अणंतगुणा असंजया अणंतगुणा दार १२। हे गौतम सर्वथोडा जीव सयतासंयत कोडिसहस्स पुहुत्त मणुलोए संजयाणमिति वचनात् देशविरति असं ख्यातगुणा तिर्यंच पंचेंद्रियने थाय तेथी प्रतिषेधवर्त्ती सिद्ध अनन्तगुणा तेहथी असंयत अनन्तगुणा वनस्पतीकायमाठे तेहथी असंयत अभव्य अनन्तगुणा इति १२। एएसिणं भंते जीवाणं सव्वत्थोवा सागारोवउत्ता अणागारोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह जीवने साकारोपयोगीने अनाकारोपयोगीने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा अणागारोवउत्ता सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा दारं। हेगौतम सर्वथोडा जी व अनाकारोपयोगी पृच्छासमये थोडालाभे तेहथी साकारोपयोगी संख्यातगुणां पृच्छासमय घणां लाभे। एएसिणं भंते जीवाणं आहारगाणं अणाहा

॥ टीका ॥

प्य नन्तत्वात्, तेषांचा हारकतयापि लभ्यमानत्वात्, कथमनंतगुणा न भवंति तदयुक्तं वस्तुतत्वापरिज्ञानात्' इह सूक्ष्मनिगोदाः सर्वसङ्ख्या प्य सङ्ख्येयाः तत्रा प्यन्तर्मुहूर्त्तसमयराशितुल्याः सूक्ष्मनिगोदाः सर्वकालविग्रहे वर्त्तमाना लभ्यन्ते ततो नाहारका अप्यतिबहवः सकलजीवराइयसङ्ख्येयभा गतुल्या इति' तेभ्य आहारका असङ्ख्येयगुणा स्तेच नानन्तगुणाः, गत माहाद्वार, अभाषकद्वार माह-एएसिणं भंते ! जीवाणं भासगाण मित्यादि सर्वस्तोका भाषका भाषालब्धिसंपन्ना द्वीन्द्रियादीना मेवंभाषकत्वाते, अभाषका भाषालब्धिहीना अनन्तगुणा वनस्पतिकायिकाना मनन्तत्वात्' गतं भाषकद्वारं, संप्रति परीत्तद्वार माह-एएसिणं भंते ! जीवाण मित्यादि ॥ इह परीत्ता द्विविधा, भवपरीत्ताः कायपरीत्ता श्च तत्र भवपरीत्ता

॥ मूल ॥

सिणं भंते ! जीवाणं आहारगाणं अणाहारगाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा अणाहारगा आहारगा असंखिज्जगुणा, दारं १४ । एएसिणं भंते ! जीवाणं भासगाणं अभासगाणय क यरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा भासगा अभा सगा अणंतगुणा, दारं १५ । एएसिणं भंते ! जीवाणं परित्ताणं अपरित्ताणं नोपरित्ता नोअपरित्ताणय

॥ भाषा ॥

रगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीवने आहारीने किहां २ थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा अणाहारगा आहारगा असंखिज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा जीव अनाहारी विग्रहगति आहारनहीं तथा सिद्ध अनाहारी गाथा—विग्गहगइमावन्ना केवलिणोसमुहयाअयोगी य सिद्धायअणाहारा सेसाआहारगाजीवा इति वचनात् तेहथी आहारीजीव असंख्यातगुणां हुवे अनन्तगुणां नहीं तेकिम सूक्ष्मनिगोद सर्वकाले वि ग्रहगति वर्त्तमानपामे तेमाटे अनाहारी घणां पिण सकलजीवराशि संख्यातभाग तुल्यछे तेभणी आहारकजीव संख्यातगुणां लाभे पिण अनाहारीथी अनन्तगुणां नलाभे ए आहारकद्वार १४ मो कह्यो । एएसिणं भंते भासगाणं अभासगाणय कयरे २ हिंतो अप्पवा ४ । हेभगवन् जीवाने भाषकाने वली अभाषकाने किहां २ थी थोडा घणां देव मनु तिर्यंच नारकी इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवाजीवा भासगा अभासगा अणतगुणा द्वार १५ । हेगौतम सर्व

॥ टीका ॥

येषांकिंचिदूना ऽपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तमानसंसारः कायपरीत्ताः प्रत्येकशरीरिणः तत्रोभयेपिपरीत्ताः सर्वस्तोकाः शुक्लपाक्षिकाणां प्रत्येकशरीरिणां च शे षजीवापेक्षया तिस्तोकत्वात्' ततो नोपरीत्ता नोअपरीत्ता अनन्तगुणा उभयप्रतिषेधवृत्ता हि सिद्धा स्तेचा नता इति तेभ्यो ऽपरीत्ता अनन्तगुणाः कृष्णपाक्षिकाणां साधारणवनस्पतीनां वा सिद्धेभ्यो ऽनन्तगुणत्वात्, गतं परीत्तद्वारं । संप्रति पर्याप्तिद्वारं-एएसिणं ॐत ! जीवाणं पज्जत्तगाणा मित्यादि ॥ सर्वस्तोका नोपर्याप्तका नोअपर्याप्तका उभयप्रतिषेधवर्त्तिनो हि सिद्धा स्तेचा पर्याप्तकादिभ्यः सर्वस्तोका इति, तेभ्यो ऽपर्याप्तका

॥ मूल ॥

कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा परित्ता नोपरित्ता नोअपरित्ता अणंतगुणा अपरित्ता अणंतगुणा, दारं १६ । एएसिणं भंते ! जीवाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं नोपज्जत्ता नोअपज्जत्ता णय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोपज्जत्तगा नोअपज्जत्तगा अपज्जत्तगा

॥ भाषा ॥

थोडा जीवभाषक लब्धिसम्पन्न बेंद्रियादिक तेहथी अभाषक अनन्तगुणा वनस्पती भेलता इति १५ भाषकं समाप्तं, हिवे प्रत्येकद्वार कहेछे—एएसिण भंते जीवाणं परित्ताणं अपरित्ताणं नोपरित्ता परित्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीव परित्त अपरित्त दोयभेदे भवपरित्ता काय परित्ता तिहां भवपरित्ता जेहने जघो अर्द्धपुद्गल कहिये कायपरित्ता प्रत्येकजीवनो परित्ता अपरित्ता सिद्ध कहिये एहमांहि किहां २ थी थोडा घ णां इत्यादि सरीखा विशेषाधिक हुवे । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा परित्ता नोपरित्ता २ अणंतगुणा अपरित्ता अणंतगुणां द्वार १६ । हेगौतम सर्वथोडा जीव शुक्लपक्षी प्रत्येकशरीर दोय प्रतिषेधवर्त्ती सिद्ध ते अनन्त तेहथी अपरित्ता अप्रत्येक अनन्तगुणां साधारण वनस्पती भेलता इति प्रत्येकद्वार १६ । एएसिण भंते जीवाणं पज्जत्ताणं अपज्जत्ताणं नो पज्जत्ता २ णय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह जीव पर्याप्ता अपर्याप्तने दोय प्रतिषेधी सि द्धने अपर्याप्ता पर्याप्ता किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा नो पज्जत्तगा नो अपज्जत्तगा अपज्जत्तगा अणंतगुणा पज्जत्तगा सं खिज्जगुणा द्वार १७ । हेगौतम सर्वथोडा जीव उभयप्रतिषेधी सिद्धभणी सिद्धथोडा तेहथी अपर्याप्ता अनन्तगुणा साधारणवनस्पती भणी तेहथी संख्या

॥ टीका ॥

अनन्तगुणाः साधारणवनस्पतिकायिकानां सिद्धेभ्योनन्तगुणानां सर्वकालमपर्याप्तत्वेन लभ्यमानत्वात्' तेभ्यः पर्याप्ताः सङ्ख्येयगुणाः इह सर्वबहवो जीवाः सूक्ष्माः सूक्ष्माश्च सर्वकाल मपर्याप्तेभ्यः पर्याप्ताः सङ्ख्येयगुणा इति। संख्येयगुणाउक्ता गतं पर्याप्तिद्वारं १७। संप्रति सूक्ष्मद्वारं-एएसिणं भंते ! जीवाणं सुहुमाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका जीवा नोसूक्ष्मा नोबादराः सिद्धाइत्यर्थः, तेषां सूक्ष्मजीवराशे र्बादरजीवराशे श्चा नन्तभागकल्पत्वात्' तेभ्यो बादरा अनन्तगुणा बादरनिगोदजीवानां सिद्धेभ्यो नन्तगुणत्वात्, तेभ्यः सूक्ष्मा असंखगुणा बादरनिगोदेभ्यः सूक्ष्मनिगोदाना मसंख्येयगुण त्वात्' गतं सूक्ष्मद्वारं १८। इदानीं संज्ञिद्वारं-एएसिणं भंते ! जीवाणं सन्नीण मित्यादि॥ सर्वस्तोकाः संज्ञिनः समनस्कानामेव संज्ञित्वात्, तेभ्यो नोसंज्ञिनो नोऽसंज्ञिनो ऽनन्तगुणा उभयप्रतिषेधवृत्ता हि सिद्धा स्तेच संज्ञिभ्यो ऽनन्तगुणा एवेति, तेभ्यो ऽज्ञिनो ऽनन्तगुणा वनस्पतीनां सिद्धे

॥ मूल ॥

अणंतगुणा पज्जत्तगा संखेज्जगुणा। एएसिणं भंते! सुक्कमाणं बादराणं नोसुक्कमाणं नोबादराणय कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा नोसुक्कमा नोबादरा, बादरा अणंतगुणा सुक्कमा असंखेज्जगुणा, दारं १८। एएसिणं भंते ! जीवाणं सन्नीणं असन्नीणं नोसन्नीणं नोअसन्नीणय कयरे कयरे हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा सन्नी नोसन्नी नोअसन्नी अणंतगुणा, असन्नी अणंतगुणा।

॥ भाषा ॥

तगुणां पर्याप्ता इति पर्याप्ताद्वार संपूर्ण हुवो, हिवे सूक्ष्मद्वार १८ मो कहेछे—एएसिणं भंते सुहुमाणं बायराणं नो सुहुमाणं बायराणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह सूक्ष्मबादरने उभयप्रतिषेधवर्त्ती सिद्धने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा नो सुहमा नो बायरा बा यरा अणंतगुणा सुहमा असंखिज्जगुणां द्वार। हेगौतम सर्वथोडाजीव उभय प्रतिवर्त्ती सिद्धना जेमणो सूक्ष्मबादर जीवरा[illegible]ने अनन्तमेभागे सिद्धछे ते थकी बादर अनन्तगुण निगोदिया तेहथी सूक्ष्मनिगोद असंख्यातगुणांछे इति ३ पदे सूक्ष्मद्वार १८ मो कह्यो, हिवे संज्ञीद्वार कहेछे—एएसिण भंते जी वाणं सन्नीणं असन्नीणं नो सन्नीणय नो असन्नीणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह जीव संज्ञीअसंज्ञीने नसंज्ञी नअसंज्ञी उभयवर्त्ती सिद्धने

ज्यो प्यनन्तगुणत्वात्, गतं संप्रतिद्वारं १८। इदानीं नवसिद्धिकद्वार माह-एएसिणं भंते ! जीवाणं नवसिद्धियाण मित्यादि॥ सर्वस्तोका अनवसिद्धिकाः अनव्या जघन्ययुक्ता नन्तकपरिमाणत्वात्, उक्तं चानुयोगद्वारेषु उक्कोसएपरित्ताणं तरूवेपक्खित्तेजहन्नयजुत्ताणं तयंहोइअनव सिद्धियावित्तियाचेवे ति, तेभ्यो नोनवसिद्धिका नोअनवसिद्धिका अनन्तगुणा यत उभयप्रतिषेधवृत्तयः सिद्धा स्तेचा ऽजघन्योत्कृष्टयुक्तानन्तकपरिमाणा इत्य नन्तगुणा, स्तेभ्यो भवसिद्धिका अनंतगुणा यतो भव्यनिगोदस्यै कस्या नन्तभागकल्पाः सिद्धा भव्यजीवराशिनिगोदा श्चा सङ्ख्या लोके इति, गतं



दारं १९। एएसिणं भंते! जीवाणं भवसिद्धियाणं अभवसिद्धियाणं नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धियाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया, नोअभवसिद्धिया अणंतगुणा भवसिद्धिया अणंतगुणा, दारं २०। एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगास



किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा सण्णी नोसण्णी नोअसण्णी अणंतगुणां असण्णी अणंतगुणां द्वार १८। हेगौतम सर्वथोडा जी वसंज्ञी मनना धणी नोसंज्ञी नोअसंज्ञी सिद्ध अनन्तगुणा उभयवर्त्ती तेहथी असंज्ञी अनन्तगुणां इति संज्ञीद्वार १८ मो पूरोथयो। एएसिणं भंते जीवाणं भवसिद्धिया अभवसिद्धियाणं नो भवसिद्धिय नो अभवसिद्धियाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् जीवने भवसिद्धने अभवसिद्धने नही भवसिद्ध नही अभवसिद्ध उभयप्रतिषेधवर्त्ती सिद्धने किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा सव्वत्थोवा जीवा अभवसिद्धिया नोभवसिद्धिया नोअभवसिद्धिया अणंतगुणा भवसिद्धिया अणंतगुणा द्वार २०। हेगौतम सर्वथोडा अभव्य जघन्य युक्तानन्त प्रमाणछे तेहथी उभय प्रतिषेधोसिद्ध अनन्तगुणां जेमणी ज घन्योत्कृष्ट युक्तानन्त प्रमाणछे तेमाटे अनन्ता तेहथी भव्यसिद्ध अनन्ता जेमणी भव्य एक निगोदने अनन्तमेभागेछे इति भव्यसिद्धि, हिवे अस्तिकाय क हेछे—एएसिणं भंते धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभग वन् एहने धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अद्धासमय ६ द्रव्यथी किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोय

॥ टीका ॥

नवसिद्धिकद्वारं २० । सांप्रत मस्तिकायद्वार माह-एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकाये त्यादि ॥ धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय एते त्र यो ऽपि द्रव्यार्थतया द्रव्यमेवा र्थोद्रव्यार्थ स्तस्यभावो द्रव्यार्थता तया द्रव्यरूपतया इत्यर्थः, तुल्याः समानाः प्रत्येक मेकसङ्ख्याकत्वा दतएव सर्वस्तो का, स्तेभ्यो जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया नन्तगुणः जीवानां प्रत्येक तद्द्रव्यत्वात्तेषां च जीवास्तिकाये ऽनन्तत्वात्, तस्मादपि पुद्गलास्तिकायो द्रव्या र्थतया नन्तगुणः कथ मितिचेत् उच्यते-इह परमाणु द्विप्रदेशकादीनि पृथक् २ द्रव्याणि तानि च सामान्यत स्त्रिधा तद्यथा-प्रयोगपरिणतानि मिश्रपरिणतानि विश्रसापरिणतानिच तत्र प्रयोगपरिणतान्यपि तावज्जीवेभ्यो ऽनन्तगुणानि एकैकस्य जीवस्या नंतैः प्रत्येकं ज्ञानावरणीयादिकर्म सु पुद्गलस्कन्धै रावेष्टितत्वात् किंपुनः शेषाणि ततः प्रयोगपरिणतेभ्यो मिश्रपरिणतान्य नन्तगुणानि तेभ्यो पि विश्रसापरिणतान्य नन्तगुणानि,

॥ मूल ॥

त्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए तिन्निवि तुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्व ट्ठयाए अणंतगुणे, पुग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे अद्धासमए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे। एएसिणं भंते! धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए अद्धासमयाणं पदेसट्ठयाए

॥ भाषा ॥

माधर्मास्तिकाए अधर्मास्तिकाए आगासत्थिकाए एएणं तिण्हवितुल्ला दव्वट्ठयाए । हेगौतम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय ए ३ द्रव्यार्थभा वे द्रव्यरूपपणें २ २ सरीखाछे असख्यातपणांमाटे । सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणां पुग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे अद्धासमए दव्वट्ठ याए अणंतगुणे । सर्वथोडाजीव जीवास्तिकाय द्रव्यथी अनन्तगुणां छे जीवास्तिकायथी पुद्गलास्तिकाय द्रव्यार्थथकी अनन्तगुणां तेमाटे पुद्गलना २ भेदकह्या प्रयोगपरिणित मिश्रपरिणित विश्रसापरिणित ३ तिहां जे प्रयोगपरिणित ते जीवथी अनन्तगुणांछे जिमारे एकजीवने अनन्त ज्ञानावरणा दिक पुद्गल स्कन्ध आवेष्टितछे ते प्रयोगपरिणतथकी मिश्रप० अनन्तगुणां तेहथी विश्रसा परिणित अनन्तगुणां उक्तच- प्रश्नो सर्वथोडा पुद्गल प्रयो

तथा चोक्तं प्रज्ञप्तौ सर्वस्तोका पुग्गलापयोगपरिणया मीसपरिणया अनन्तगुणा वीससापरिणया अनन्तगुणा इति । ततो भवति जीवास्तिकायात् पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनन्तगुणः, तस्मादप्य द्धासमयो द्रव्यतया अनन्तगुणः कथ मितिचेत् उच्यते-इहै कस्यैवपरमाणो रनागतेकाले तत्तद्वि प्रदेशकत्रिप्रदेशकयाव द्दशप्रदेशक संख्यातप्रदेशका ऽसंख्यातप्रदेशका ऽनन्तप्रदेशकस्कन्धान्तःपरिणामितया अनन्ता भाविनः संयोगाः पृथक् २ कालाः केवलवेशोपलब्धा यथा चैकस्य परमाणो स्तथा सर्वेषां प्रत्येकं द्विप्रदेशकादिस्कन्धानां च अनन्ताः संयोगाः पुरस्कृताः पृथक् २ कालाउपलब्धाः स सर्वेषामपि मनुष्यक्षेत्रान्तर्वर्त्तितया परिणामसंभवात्, तथा क्षेत्रतो प्ययं परमाणु रमुष्मिन् आकाशप्रदेशे अमुष्मिन्काले अवगाहिष्यते इत्येव मन ताः एकस्य परमाणो र्भाविनः संयोगा यथै कस्य परमाणो स्तथा सर्वेषां परमाणूनां तथा द्विप्रदेशकादीनामपि स्कन्धाना मनन्तप्रदेशस्कन्धपर्यंता नां प्रत्येकं तत्तदेकप्रदेशाद्यवगाहभेदतो भिन्न २ काला अनंता भाविनः संयोगा स्तथा कालतो प्ययं परमाणु रमुष्मिन्ना काशप्रदेशो एकसमयस्थि

॥ टीका ॥

---

**कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए एएसिणं दोवि तुल्ला पदेसट्ठयाए स व्वत्थोवा जीवत्थिकाए पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा पोग्गलत्थिकाए पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा अद्धासमए पदेसट्ठ**

॥ मूल ॥

---

पयपरिणता अपरिणता अनन्तगुणांथी संसापरिणया अनन्तगुणां इति, एक परमांणु अनन्ताकालेके तिचतुः पच इम संख्यात अनन्त प्रदेशस्कन्ध परमाणुमते अनन्तभावा संयोगकेवलि ए दीठा इम सर्व मनुष्यक्षेत्रे पुद्गल जे अनन्तप्रदेशीस्कन्ध असंत भावीसंयोग पूर्व अनन्तकाल संयोग इम इत्यादिक सगले जाणिवो द्रव्यथकी अल्प बहुत्व कह्यो, हिवे प्रदेशथी अल्प बहुत्व कहेछै। एएसिणं भंते धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गलत्थिकाय अद्धासमयाणं एए पएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय जीवास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय अद्धासमय प्रदेशार्थे किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि। गोयमा धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय एएणं दोएहवितुल्ला। हेगौतम धर्मास्तिका य अधर्मास्तिकाय ए दोय सरीखाछै। पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा जीवत्थिकाए पएसट्ठ याए अनन्तगुणे पुग्गलत्थिकाए पएसट्ठयाए असंखगुणे अद्धासमए प

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

तिक इत्येव मेकस्यापि परमाणो रेकस्मिन्नाकाशप्रदेशे संख्येया भाविनः संयोगा एवं सर्वेष्वप्या काशप्रदेशेषु प्रत्येकमसंख्येया भाविनः संयोगा स्त तो भूयोभूय स्तथाकाशप्रदेशेषु परावृत्तौ कालस्या नन्तत्वा दनन्ताः कालतो भाविनः संयोगा यथा चैकस्यपरिमाणो स्तथा सर्वेषां परमाणूनां स र्वेषां च प्रत्येकं द्विप्रदेशकादीनां स्कन्धानां, तथा भावतो प्य यं परमाणुरमुष्मिन्काले एकगुणकालको भवती त्येव मेकस्यापि परमाणो र्भिन्न २ काला अनंताः संयोगा, यथा चैकस्यपरमाणो स्तथा परमाणूनां सर्वेषांच द्विप्रदेशकादीनां स्कन्धानां पृथक् २ अनंता भावतः पुरस्कृताः संयोगाः तदेव मेकस्यापि परमाणो र्द्रव्यक्षेत्रकालभावविशेषसबंधवशा दनन्ता भाविनः समयाउपलब्धा, यथैकस्य परमाणो स्तथा सर्वेषां परमाणूनां सर्वे षांच प्रत्येकं द्विप्रदेशकानां स्कन्धानां नचै तत्परिणामकालवस्तुव्यतिरेकपरिणामिपुद्गलास्तिकायादि व्यतिरेके चोपपद्यन्ते ततः सर्वमिदं च तात्वि क मवसेयं। उक्तंच-संयोगपुरक्खार श्च नाम भाविनि हि युज्यते कालेन हि संयोगपुरक्खारो ह्यसतां केषांचि दुपपन्न इति। यथा च सर्वेषां पर

॥ मूल ॥

याए अणंतगुणा आगासत्थिकाए पदेसट्ठाए अणंतगुणा। एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकायस्स दव्वट्ठयाए पदे सट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगे धम्म त्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पदेसट्ठयाए असंखिज्जगुणा। एएसिणं भंते ! अधम्मत्थिकायस्स दव्वट्ठयपदे

॥ भाषा ॥

एसट्ठयाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे। प्रदेशथकी लोकाकाशप्रदेश परिमान सर्वथोडा जीवास्तिकायप्रदेशार्थे अनन्तगुणां जी वना अनन्ता सारै एकेका जीवनाप्रदेश लोकाकाशप्रदेश प्रकाशछै पुद्गलास्तिकायप्रदेशार्थे अनन्तगुणां अनन्ताकर्मना परमाणु वारावेष्टितछै एकेका जी वनाप्रदेश तेमाटे अनन्ता पुद्गलास्तिकाय हुवे अद्धासमय प्रदेशार्थ अनन्तगुणा हुवे आकाशास्तिकाय अनन्ताछै, हिवे द्रव्यार्थ प्रदेशार्थआश्री परस्परे अल्प बहुत्वकहेछै—आकाशास्तिकाय प्रदेशथी अनन्तगुणां लोकता अनन्ताभावथी तेहथी अद्धासमय अनन्तगुणांप्रदेशथी अनन्ता अनागतसमयमें भा व तेहथी अद्धासमया अनन्तगुणां। एएसिणं भंते धम्मत्थिकायस्स दव्वट्ठ पएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह धर्मास्तिकायादिकने

माणूनां च द्विप्रदेशकादीनां स्कन्धानां प्रत्येकं द्रव्यक्षेत्रकालभावविशेषसंबंधवशा दनन्ताभाविनो ह्रासमया स्तथा अतीता अपीति सिद्धः पुद्गलास्तिकायाद नन्तगुणो ह्रासमयो द्रव्यार्थतयेति । उक्तं-द्रव्यार्थतया परस्पर मल्पबहुत्व मिदानी मेतेषामेव प्रदेशार्थतया तदाह-एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकाये त्यादि ॥ धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि परस्परं प्रदेशार्थतया तुल्यौ द्वयोरपि लोकाकाशप्रदेशत्वात्, शेषास्तिकाया ऽद्धासमयाश्चैतया च सर्वस्तोकौ ततो जीवास्तिकायः प्रदेशार्थतया अनन्तगुणः, जीवास्तिकाये जीवाना मनन्तत्वात्, एकैकस्यच जीवस्य लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशत्वात्, तस्मादपि पुद्गलास्तिकायः प्रदेशार्थतया अनन्तगुणः कथ मिति उच्यते-इहकर्मस्कन्धप्रदेशा अपि तावत्सर्वजीवप्रदेशेभ्यो ऽनन्तगुणा एकैकस्यच जीवप्रदेशस्या नन्तानंतैः कर्मपरिमाणुभि रावेष्टितपरिवेष्टितत्वात्, किंपुनः सकलपुद्गलास्तिकायप्रदेशाः ततो भवति जीवास्तिकाया त्पुद्गलास्तिकायः प्रदेशार्थतया अनन्तगुणः, तस्मादप्य द्धासमयः प्रदेशार्थतया अनंतगुण एकैकस्य पुद्गलास्तिकायप्रदेशस्य प्रागुक्तक्रमेण तत्तद्द्रव्यक्षेत्रकालभावविशेष संबधभावतो ऽनन्ताना मतीताद्धासमयाना मनन्ताना मनागतसमयानां भावात्, तस्मा दाकाशास्तिकायप्रदेशार्थतया

॥ टीका ॥

**सठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे अधम्मत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पदे सठयाए असंखिज्जगुणे। एतस्सणं भंते ! आगासत्थिकायस्स दव्वट्ठपदेसठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४**

॥ मूल ॥

द्रव्यार्थप्रदेशना आश्री जीवता किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सर्वस्तोवा धर्मास्तिकाए द्रव्यट्ठयाए सोचेव पएसट्ठयाए असंखेज्जगुणा । हेगौतम सर्वथोडा धर्मास्तिकाय द्रव्यथकी एकमाटे ते धर्मास्तिकाय प्रदेशथकी असंख्यातगुणां लोकाकाश । एवस्सणं भंते अधर्मास्तिकायस्स दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एहने अधर्मास्तिकाय द्रव्यथी प्रदेशथी किहां २ थी अल्प घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा एगे अधम्मत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेवपएसट्ठयाए असंखिज्जगुणे । हेगौतम सर्वथोडा एक अधर्मास्तिकाय द्रव्यथी एकमाटे अधर्मास्तिकाय प्रदेशथी असंख्यातगुणां लोकाकाश प्रदेशप्रमाणछै। एएसिणं भंते आगासत्थिकायस्स दव्वट्ठ पएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा । हेभगवन् एह आकाशास्तिकायने द्रव्यथी प्रदेशथी कि

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

अनन्तगुणः अलोकस्य सर्वतोप्यनन्तताभावात्, गतं प्रदेशार्थतया प्यल्पबहुत्व, मिदानीं प्रत्येकं द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया ल्पबहुत्व माह-एएसिणं भंते! इत्यादि ॥ सर्वस्तोकोधर्मास्तिकायो द्रव्यार्थतया एकत्वात् प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणो लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशात्मकत्वा देव मधर्मास्तिकायसू त्रमपि भावनीयं, आकाशास्तिकायो द्रव्यार्थतया सर्वस्तोक एकत्वात् प्रदेशार्थतया अनंतगुणो ऽपरिमितत्वात्, जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया सर्वस्तोक प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणः प्रतिजीवं लोकाकाशप्रदेशभावात्, तथा सर्वस्तोकः पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया द्रव्याणां सर्वत्रापि स्तोकत्वात्, सएव पुद्गलास्तिकाय स्तद्द्रव्यापेक्षया प्रदेशार्थतया चिंत्यमानो ऽसंख्येयगुणः, ननु बहवः खलु जगत्यनंतप्रदेशका अपि स्कन्धा विद्यन्ते। ततो ऽनंतगु णाः कस्मा न्नभवंति तदयुक्तं-वस्तुतत्वापरिज्ञाना दिह हि स्वल्पा अनंतप्रदेशकाः स्कन्धाः परिमाणवादयस्त्वतिबहव, स्तथा वक्ष्यति सूत्रं-सव्वत्थो

॥ मूल ॥

? गोयमा ! सव्वत्थोवे एगे आगासत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पदेसट्ठयाए अणंतगुणा, एतस्सणं भंते ! जीवत्थिकायस्स दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्व ट्ठयाए सोचेव पदेसट्ठयाए असंखिज्जगुणा, एतस्सणं भंते ! पुग्गलत्थिकायस्स दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे २

॥ भाषा ॥

हां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवे एगे आगासत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पएसट्ठयाए अणंतगुणे । हेगौतम सर्वथोडा आकाशास्तिका य द्रव्य एकमाटे आकाशास्तिकाय प्रदेशथी अनंतगुणे अपरिमितमाटे । एएसिणं भंते जीवत्थिकायस्स दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए कयरे २ हिंतोअप्पावा ४ । हेभगवन् एहने जीवास्तिकाय द्रव्यथी प्रदेशथी किहां २ थी थोडाहुवे । गोयमा सव्वत्थोवे जीवत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पएसट्ठयाए असंखिज्जगुणे । हेगौतम सर्वथोडा जीवास्तिकाय द्रव्यथी ते जीवास्तिकाय प्रदेशथी अनन्तगुणां प्रतिजीव ते लोकाकाश प्रदेशप्रमाण प्रदेशहुवे । एएसिणं भंते पुग्गल त्थिकायस्स दव्वट्ठ पएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह पुद्गलास्तिकाय द्रव्यथी प्रदेशथी किहां २ थी थोडा घणां इत्यादि । गोयमा स व्वत्थोवे पुग्गलत्थिकाए दव्वट्ठयाए सोचेव पएसट्ठयाए असंखिज्जगुणे अद्धासमए न पुच्छिज्जा पएसाभावा । हेगौतम सर्वथीथोडा पुद्गलास्तिकाय द्रव्यथी-

॥ टीका ॥

वा अणंतपएसियाखंधा दव्वठयाए परिमाणुपोग्गला दव्वठयाए अनंतगुणा संखेज्जपएसिया खंधा दव्वठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा दव्वठयाए असंखेज्जगुणा इति' ततो यदा सर्वे एव पुद्गलास्तिकायाः प्रदेशार्थतया चिंत्यते तदा अनंतप्रदेशकानां स्कन्धाना मतिस्तोकत्वा त्परमा णूनां च तिबहुत्वा त्तेषांच पृथक् २ द्रव्यत्वात् असंख्येयप्रदेशकानां च स्कन्धानां परमाणवपेक्षया असंख्येयगुणत्वा दसंख्येयगुण एवो पपद्यते ना नंतगुणः अद्धासमए न पुच्छिज्जइति । अद्धासमयो द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया नपृच्छ्यते कुत इत्याह-प्रदेशाऽभावात्, आह को य मद्धासमयानां द्रव्यार्थ तानियमो यावता प्रदेशार्थता पि तेषां विद्यते एव तथाहि-यथा अनंतानां परमाणूनां समुदायस्कन्धो ऽभण्यते स च द्रव्यं तदवयवा श्च प्रदेशा स्तथे हापि सकलः कालो द्रव्यं तदवयवाश्च समयाः प्रदेशा इति । तदयुक्तं दृष्टांतदार्ष्टांतिकवैधम्या त्परमाणूनां समुदायः तदा स्कन्धो ऽवति यदा ते परस्परसापेक्षतया परिणमंते परस्परनिरपेक्षाणां केवलपरमाणूनामिव स्कन्धत्वायोगात्, अद्धासमयास्तु परस्परंनिरपेक्षाएव वर्त्तमान समयभावे पूर्वापरसमययो रभावात्, ततो नस्कन्धत्वपरिणाम स्तदभावा श्च ना द्धासमयाः प्रदेशाः किंतु पृथक्द्रव्याण्येवेति सम्प्रत्यमीषां धर्मा स्तिकायादीनां सर्वेषां युगपद्द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया ल्पबहुत्व माह-एएसिणं भंते ! इत्यादि ॥ धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकायः

॥ मूल ॥

**हिंतो अप्पावा१ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पुग्गलत्थिकाए दव्वठयाए सोचेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणा अद्धासमए ण पुच्छिज्जइ पदेसाभावा । एएसिणं भंते ! धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीव**

॥ भाषा ॥

द्रव्यपणें सघले थोडामाटे तेहथी पुद्गलथी प्रदेशद्रव्य सुचिन्तवना असंख्यातगुणां हुवे तेकिम परमाणवा षणां अनन्तप्रदेशिक स्कन्धना थोडामाटे असं ख्यातप्रदेशस्कन्ध संख्यातपणांमाटे असंख्यातगुणां हुवे पिण अनन्तानन्तगुण न जपजे द्रव्यार्थमय द्रव्यार्थ प्रदेशार्थथकी न पूछिये प्रदेश अभावके जेमाटे अनन्ता परमाणवाने स्कन्धकहिये ते द्रव्य तेहना अवयव ते प्रदेश कहिये ते अद्धासमय स्कन्धनो अयोगछे तेमाटे द्रव्यप्रदेशानो विशेष नथी, इिव द्रव्य थी धर्मास्तिकायादिकनो द्रव्यथी प्रदेशनो एकठोहीज अल्प बहुत्व कहेछे—एएसिणं भंते धम्मत्थिकाय अधम्मत्थिकाय आगासत्थिकाय जीवत्थिकाय पुग्गल

॥ टीका ॥

एते त्रयोपि द्रव्यार्थतया तुल्याः सर्वस्तोकाश्च प्रत्येकमेकसंख्याकत्वात् ३। तेभ्यो धर्मास्तिकायो ऽधर्मास्तिकाय एतौ द्वावपि प्रदेशार्थतया ऽसंख्यगुणौ स्वस्थानेतु परस्परं तुल्यौ ताभ्यां जीवास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनंतगुण अनंतानां जीवद्रव्याणां भावात् ६, सएव जीवास्तिकायः प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणः प्रतिजीवमसंख्येयानां प्रदेशानां भावात् ७। तस्मादपि प्रदेशार्थतया जीवास्तिकाया त्पुद्गलास्तिकायो द्रव्यार्थतया अनंतगुणः प्रतिजीवप्रदेशं ज्ञानावरणीयादिकर्मपुद्गलस्कन्धाना मप्य नंतानां भावात् ८। स एव पुद्गलास्तिकायः प्रदेशार्थतया असंख्येयगुणः अत्र भावना प्रागिव ९। तस्मादपि प्रदेशार्थतया पुद्गलास्तिकायात् अद्धासमयो द्रव्यार्थतया अनंतगुण अत्रापि भावना प्रागिव १०। तस्मादप्या काशास्तिकायः प्रदेशार्थतया अनंतगुणः सर्वास्वपि दिक्षुविदिक्षु तस्यात्तर्भावात्, अद्धासमयस्य च मनुष्यक्षेत्रमात्रभावात् ११, गत मस्तिकाय, मिदानी चरमद्वार

॥ मूल ॥

त्थिकाय पोग्गलत्थिकाय अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाएय एएणं तिन्निवि तुल्ला, दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवा धम्मत्थिकाए

॥ आज्ञा ॥

त्थिकाय अद्धासमयाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। हेभगवन् एह अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकायने जीवास्तिकायने पुद्गलास्तिकायने अद्धासमयने द्रव्यप्रदेशथी किहां २ थी थोडाहवे। गोयमा धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए एए तिण्णिवितुल्ला दव्वट्ठयाए सव्वत्थोवे पएसट्ठयाए धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए दव्वट्ठयाए अणंतगुणे सोचेव पएसट्ठयाए असंखिज्जगुणे। हेगौतम धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय ए ३ ने द्रव्यथकी सरीखाछे सर्वथोडाछे प्रत्येके २ असंख्याताछे द्रव्यथी सरीखा हुवे प्रदेशथी सर्वथोडाछे धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय ए दोय सरीखास्थानके द्रव्यथी असंख्यातगुणे प्रदेश अधिकाछे तेह जीवास्तिकायप्रदेशथी असंख्यातगुणां द्रव्यप्रदेशछे तेमाटे पुद्गलास्तिकाय द्रव्यथी अनन्तगुणां ते पुद्गलास्तिकायप्रदेशथी असंख्यातगुणां। अद्धासमए दव्वट्ठपएसट्ठयाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पएसट्ठयाए अणंतगुणे द्वार। अद्धासमय द्रव्यप्रदेशथी अनन्तगुणां आकाशास्तिकाय प्रदेशथकी अनन्तगुणां सर्वादिशि विदिशने अन्तछे इति २१ मो अस्तिद्वार ३ पदे पूरोहुवो

॥ टीका ॥

माह-एएसिणं भंते ! जीवाणं चरिमाण मित्यादि ॥ इह येषां चरिमोऽनवः संज्ञवो योग्यतयापि ते चरमा उच्यन्ते-तेचा थाङ्ग्व्या इतरे ऽचरमा अजव्याः सिद्धा श्च उजयेषामपि चरमाचरमजवाजावात्, तत्र सर्वस्तोका अचरमा अजव्यानां सिद्धानां च समुदितानाम प्यजघन्योत्कृष्टयुक्तानंतक परिमाणत्वात्, तेज्यो ऽनंतगुणा श्चरमा अजघन्योत्कृष्टानंतानंतकपरिमाणत्वात्, गतं चरमद्वार, मधुनाजीवद्वार माह-एएसिणं जंते ! जीवाणं पोग्गलाण मित्यादि ॥ सर्वस्तोका जीवा स्तेज्यः पुद्गला अनंतगुणाः २ तेज्यो ऽद्धासमया अनंतगुणा अत्रजावना प्रागेवकृता इ तेज्यो ऽद्धासमये ज्यः सर्वद्रव्याणिविशेषाधिकानि कथ मितिचेत् उच्यते-इह येषां अनंतरमद्धासमयाः पुद्गलेज्यो ऽनन्तगुणा उक्ता स्तेप्रत्येकं द्रव्याणि ततो द्रव्यचिंतायां तेपिपरिगृह्यंते तेषुच मध्ये सर्वजीवद्रव्याणि सर्वपुद्गलद्रव्याणि धर्माधर्माकाशास्तिकायद्रव्याणि च प्रक्षिप्यंते तानिच समुदितान्यप्य द्धासमयाना मनंतजागकल्पानी ति तेषु प्रक्षिप्तेष्वपि मनागधिकत्वं जात मित्यद्धासमयेज्यः सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि ४। तेज्यः सर्वप्रदेशा अनंतगुणा आकाशानंतत्वात् ५ तेज्यः सर्वपर्यवा अनंतगुणा एकैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ऽनन्ताना मगुरुलघुपर्यायाणां जावात् ६ गतं जीवद्वार, मधुनाक्षेत्रद्वारमाह-

॥ मूल ॥

**अधम्मत्थिकाएय एएणं दोण्हिवितुल्ला पदेसठयाए असंखेज्जगुणा, जीवत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे सो चेव पदेसठयाए असंखिज्जगुणे पोग्गलत्थिकाए दव्वठयाए अणंतगुणे सोचेव पएसठयाए असंखेज्जगुणे**

॥ भाषा ॥

हिवे चरमद्वार कहेछै—एएसिणं भंते जीवाणं चरमाणं अचरमाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । हेभगवन् एह चरमभव जेहने ते चरम ते भव्यकहिये अचरम ते अभव्य ते सिद्धने कहिये किहां २ थी थोडा २ हुवै । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा अचरमाचरमा अणंतगुणा द्वारं । हेगौतम सर्व थोडा सिद्धछै अनें जघन्योत्कृष्ट युक्तानंत परमाणछै चरमभव्य अनंतगुणा जघन्योत्कृष्ट युक्तानंत प्रमाणवती इति चरम तीसरे पदे २२ मो द्वार पूरो हुवो । हिवे जीवद्वार कहेछै—एएसिणं भंते जीवाणं पुग्गलाणं । हे भगवन् एह जीवारा पुद्गलानें । अद्धासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वत्थपएसाणं । अद्धासमयछै सर्वपर्यायनें सर्वद्रव्यनें सर्वप्रदेशाने । सव्वपज्जवाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ । केहां २ थी अल्प घणा इत्यादि । गोयमा सव्वत्थोवा जीवा पुग्गला अणंतगुणा ।

॥ टीका ॥

खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए इत्यादि॥ क्षेत्रस्यानुपातो नुसारक्षेत्रानुपात स्तेन विचिंत्यमाना जीवाः सर्वस्तोका ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके इह ऊर्द्धलोकस्य यदधस्तन माकाशप्रदेशप्रतरं यच्च सर्वतिर्यग्लोकस्य सर्वोपरितनमाकाशप्रदेशप्रतर मेषऊर्द्धलोकप्रतर स्तथा प्रवचने प्रसिद्धेः तत्र य मत्र भावना इहसामस्त्येन चतुर्दशरज्वात्मकोलोकः सच त्रिधा निद्यते तद्यथा-ऊर्द्धलोकःतिर्यग्लोकोऽधोलोक श्च रुचका द्येषां विभाग स्तथा हि रुचकस्या धस्ता न्नवयोजनशतानि रुचकस्योपरिष्टा न्नवयोजनशतानि तिर्यग्लोकस्तिर्यग्लोकस्याधस्तादधोलोक उपरिष्टा दूर्द्धलोको देशोनसप्तरज्जुप्रमाण ऊर्द्धलोकः समधिकसप्तरज्जुप्रमाणोऽधोलोको मध्येष्टादशयोजनशतोच्छ्रय स्तिर्यग्लोक स्तत्र रुचकसमा भूतलभागा न्नवयोजनशतानि गत्वा य उज्योतिश्चक्रस्योपरितनं तिर्यग्लोकसंबंधि एकप्रदेशिक माकाशप्रतरं त त्तिर्यग्लोकप्रतरं तस्य चो परियदेकप्रदेशिकमा

॥ मूल ॥

अट्ठासमए दव्वठपदेसठयाए अणंतगुणे आगासत्थिकाए पदेसठयाए अणंतगुणा दारं २१। एएसिणं भंते! जीवाणं चरिमाणं अचरिमाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा! सव्वत्थोवा जीवा अचरिमा चरिमा अणंतगुणा दारं २२। एएसिणं भंते! जीवाणं पोग्गलाणं अट्ठासमयाणं सव्वदव्वाणं सव्वपएसाणं

॥ भाषा ॥

हेगोतम सर्व थोडा जीवछे तेहथी पुद्गल अनंतगुणा इहां भावना पाछलो परें तेहथी अद्धासमय अनंतगुणा सर्व पुद्गलद्रव्य धर्मास्तिकायादिक घालें ते इथकी सर्व द्रव्य विशेषाधिक कह्यो। अद्धासमया अणंतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपएसा अनंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा दारं। तेहथकी सर्व द्रव्यविशेषगुणा आकाश अलोकादि अनंतवती तेहथी सर्वपर्याय अनंतगुणा एकेकआकाशप्रदेश अनंतागरु लघुपर्यायगुणा विशेषछे एतलें जीवद्वार कह्यो इति २२ मो द्वार तीजे पदे समाप्त हुवो। हिवे क्षेत्रद्वार कहेछे—खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय विसेसहियावा तिरियलोए असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असं० अहोलोए विसेसाहियावाखित्ताणुवाएणं। आश्रीजोतां जे जीव मरणांत क्षेत्र समुद्घातकेतलां ने प्रतरनुबंधमध्य रज्जाकेवलीऊवाथी नीचाउपजेने इहां नलेवा सर्वथोडाजीव ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके जे आठारेसेंयोजन तिर्यक्लोकतेहनो जेतलोप्रदेशोन

॥ टीका ॥

काशप्रतरं तदूर्ध्वलोकप्रतरं एतेच द्वे अप्यूर्ध्वलोकतिर्यग्लोकइति व्यपदिश्यते, तथा ऽनादिप्रवचनपरिभाषा प्रसिद्धेः तत्रवर्त्तमानाजीवाः सर्वस्तोकाः कथमितिचेत् उच्यते-इहयं ऊर्ध्वलोका तिर्यग्लोके तिर्यग्लोका दूर्ध्वलोके समुत्पद्यमाना विवक्षितं प्रतरद्वयं स्पृशंति ये च तत्रस्था एव केचन तत्प्रतरद्वयाध्यासिनो वर्त्तते तेकिल विवक्षिते प्रतरद्वये वर्त्तते, मान्ये पुन रूर्ध्वलोका दधोलोके समुत्पद्यमाना स्तत्प्रतरद्वयं स्पृशंति ते नगण्यंते, तेषां सूत्रांतरविषयत्वात्, तत स्तोकाएवा ऽधिकृतप्रतरद्वयवर्त्तिनो जीवा ननू र्ध्वलोकगतानामपि सर्वजीवानाम ऽसंख्येयभागो ऽनवरतं म्रियमाणो ऽवाप्यते तेच तिर्यग्लोके समुत्पद्यमाना विवक्षितं प्रतरद्वयं स्पृशंती इति कथम ऽधिकृतप्रतरद्वयस्पर्शिनः स्तोका स्तदयुक्तं वस्तुतत्वापरिज्ञानात्, तथाहि-यद्यपि नामकूर्ध्वलोकगतानां सर्वजीवलोकानाम ऽसंख्येयोभागो नवरतं म्रियमाणोवाप्यते तथापि न ते सर्वएव तिर्यग्लोके समुत्पद्यंते प्रभूततराणा मधोलोके ऊर्ध्वलोकेच समुत्पादात् ततो ऽधिकृतप्रतरद्वयवर्त्तिनः सर्वस्तोका एव १ तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका इह यद ऽधोलोकस्योपरितन मेकप्रादेशिक माकाशप्रदेशप्रतरं यच्च तिर्यग्लोकस्य सर्वाधस्तनमेकप्रादेशिक माकाशप्रदेशप्रतर मेतद्द्वय मध ऽधोलोकतिर्यग्लोक इत्युच्यते, तथा प्रवचनप्रसिद्धेः तत्र ये विग्रहगत्या तत्रस्थतया वा वर्त्तते तेविशेषाधिकाः कथ मितिचेत् उच्यते-इह ये अधो

॥ मूल ॥

सव्वपज्जवाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा पोग्गला अणंतगुणा अद्धासमया अणंतगुणा सव्वदव्वा विसेसाहिया सव्वपदेसा अणंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा दारं २३ । खित्ता

॥ भाषा ॥

प्रतर तहथो ऊर्ध्वलोक तेहनोजेतलोप्रदेशनोप्रतर एकेकाप्रदेशनो ते बेहूं प्रतरनो नामऊर्ध्वलोक तिर्यक्लो कएबे प्रतरने पुरसेने जीव थोडाछे किम तिर्यक्लोक ऊर्ध्वलोकें उपजतां प्रतरने फरसें ऊर्ध्वलोक तथा अधोलोक उपजतांजेगणीयेनहो तेमाटेथोडा इह सामान्ये चवदे राजलोके त्रिणभेदे तकिम ऊर्ध्वलोकें अधोलोकें तिर्यगलोके चत्रथको भागलेषवोये कचि कहेछे नवसेयोजन कचिकउपरि नवसेयोजन तिर्यक्लोक कहेछे अधोलोक तिर्यक्लोक उपरि ऊर्ध्वलोककांइकऊणासातराजप्रमाण ऊर्ध्वलोक कांइक अधिकसातराजप्रमाण अधोलोक मध्यप्रदारेसेयोजनजंचो तिर्यग्लोक तिहां

॥ टीका ॥

लोका स्तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऽधोलोके ईलिकागत्या समुत्पद्यमाना अधिकृतं प्रतरद्वयं स्पृशंति येच तत्रस्थाएव केचन तत्प्रतरद्वयम ऽध्यासीना वर्त्तंते तेविवक्षितप्रतरद्वयवर्त्तिनो येपुन रधोलोका दूर्द्धलोके समुत्पद्यमाना स्तत्प्रतरद्वयं स्पृशंति ते न परिगृह्यंते तेषां सूत्रांतरविषयत्वात्, केवल मूर्द्धलोका दधोलोको विशेषाधिक इत्यधोलोका स्तिर्यग्लोके ईलिकागत्या समुत्पद्यमाना ऊर्द्धलोकापेक्षया विशेषाधिका अवाप्यंते ततो विशेषाधिकाः २। तेभ्य स्तिर्यग्लोकवर्त्तिनो ऽसंख्येयगुणा, उक्तक्षेत्रद्वंद्विका स्तिर्यग्लोके क्षेत्रस्यासंख्येयगुणत्वात्, ३। तेभ्य स्त्रैलोक्ये त्रिलोकसंस्पर्शिनो ऽसंख्येयगुणा' इह ये केवलेऊर्द्धलोके अधोलोके तिर्यग्लोके वा वर्त्तंते येचविग्रहगत्या ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकौ स्पृशंति ते नगण्यंते किंतु ये विग्रहगत्यापन्ना स्त्रीनपिलोकान् स्पृशंति ते परिगृह्यामूत्रस्यविशेषविषयत्वात्, तेचतिर्यग्लोकवर्त्तिभ्यो ऽसंख्येयगुणाएव कथ मितिचेत् उच्यते-

॥ मूल ॥

**णुवाएणं सव्वत्थोवा जीवा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोय तिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखिज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा**

॥ भाषा ॥

रुचिक सम भूतउपरि नवसेयोजनजइयें तिहां ज्योतिषचक्र उपरितिर्यक्लोकसबंधिएकप्रदेशोआकाशप्रतर तिर्यक्लोकप्रतर उपरिजे एकदेशनो आकाशप्रतर ऊर्द्धलोक तिर्यक्लोक कहियें ऊर्द्धलोक तिर्यक्लोकें विशेषाधिक तिहां जे विग्रहगतिवर्त्तेछे ते विशेषाधिककिमजे अधोलोक तिर्यक्लोक अधोलोकप्रतरफरसें ऊर्द्धलोक उपजतांनगणीयें तेमाटें विशेषाधिककहिये तेथकी तिर्यक्लोक ३ असंख्यातगुणामाटें असंख्यातगुणाक्षेत्रफरसें ते असंख्यातगुणा छे विग्रहगतिऊर्द्धलोक तिर्यक्लोकफरसें तेनगिणियें निगोदीया उपजिवामणीतेहथकी ऊर्द्धलोकना असंख्यातगुणा उपपातक्षेत्रपणामाटें तेहथकी अधोलोकें विशेषाधिकछे क्षेत्रविशेषाधिकपणामाटें सामान्यपणें सर्वजीवआश्रीक्षेत्रपणे अल्पबहुत्वपणेकह्यो। सव्वत्थोवानेरइयातिलोके अहोलोयतिरियलोए असं० अहोलोए असंखिज्जगुणा। द्विवेपारगतिआश्रीनरकनो अल्पबहुत्वकहेछे क्षेत्रआश्रीसर्वथोडानारकी त्रिलोकनाअर्थनाकिमजे मेरु प्रमुखनीशाश्वनामछनरकमांहिजपजनां त्रिलोकतेअर्थेथोडाछे तेहथकी अधोलोक तिर्यलोकअर्थना असंख्यातगुणा जे घणाद्वीपसमुद्रनें तिर्यंचनारकी

इहबहवःप्रतिसमय मूर्द्धलोकेअधोलोकेच सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्त्तंते, येतु तिर्यग्लोकवर्त्तिनः सूक्ष्मनिगोदा उद्वर्त्तंते तेऽर्वादऽधोलोके ऊर्द्धलोके वा केचित्तस्मिन्नेव वा तिर्यग्लोकेसमुत्पद्यंते, ततो नतेलोकत्रयसंस्पर्शिन इति, नाऽधिकृतसूत्रविषयाः तत्रोर्द्धलोकाधोलोकगतानां सूक्ष्मनिगोदानामुद्वर्त्तमानानां मध्ये केचित्स्वस्थान एवऊर्द्धलोके अधोलोकेवा समुत्पद्यंते, केचि तिर्यग्लोके तेभ्यो ऽसंख्ययगुणा अधोलोकगता ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकगता अधोलोके समुत्पद्यंते, तेच तथोत्पद्यमाना स्त्रीनऽपिलोकान् स्पृशंतीत्यऽसंख्येयगुणाः ' कथं पुन रेतदवसीयते य दुत एवंप्रमाणा बहवोजीवाः सदाविग्रहगत्यापन्ना लभ्यंते इति चेत् उच्यते-युक्तिवशात्, तथाहि प्रागुक्तमि दमऽत्रैवसूत्रंपर्याप्तिद्वारे । सव्वत्थोवाजीवानोपज्जत्ता नोअपज्जत्ता अपज्जत्ता अनंतगुणा पज्जत्ता संखेज्जगुणा इति, ॥ ततएवनामाऽपर्याप्ताः बहवो ये नैतेभ्यः पर्याप्ताः संख्येयगुणा एव नाऽसंख्येयगुणा नाऽप्यऽनंतगुणा स्तेचाऽपर्याप्ताबहवोंऽतरगतौवर्त्तमानालभ्यंते इति ४ । तेभ्य ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकावस्थिता असंख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्यातिबहुत्वात्' असंख्येयानांच नागानामुद्वर्त्तनायाश्च सत्त्वात्, तेभ्यो ऽधोलोके अधोलोकवर्त्तिनो विशेषाधिका ऊर्द्धलोकक्षेत्रा दधोलोकक्षेत्रस्य विशेषाधिकत्वात्, तदेवं सामान्य



**नेरइया तेलुक्के अहोलोगतिरियलोगे असंखेज्ज० अहोलोए असंखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोगतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, ते**



मांहिजपज्जत्ता छे प्रतरनैसंख्यं असंख्यातगुणामाटे अधोलोके असंख्यातगुणा । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया । चेव आभीतिर्यंचयोनिया सर्वथोडाऊर्द्धलोक तिर्यक्लोकिसामान्यजीवमूकनें अलावेकहीछें तिमजाणिवो । उड्ढलोय तिरियलोए अहोलोए । तिर्यक्लोकें विशेषाधिक । तिरियलोए विसे० तिरियलोए असं० तिलुक्के असं० । तेहथीतिर्यक्लोके असंख्यातगुणा तेहथीऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा । उड्ढलोए असंखिज्जगुणा । ऊर्द्धवो के असंख्यातगुणाछवे । अहोलोए विसेसाहिया खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाओ तिरिक्खजोणिणीओ । अधोलोके विशेषाधिकए सामान्यसूत्रथीजाणिवो तिर्यंचनो अल्पबहुत्वकहेछे चेवआभीसर्वथोडोतिर्यंचयोनिनीस्त्री । उड्ढलोए तिरियलोए असंखिज्जगुणा । ऊर्द्धलोकजेमणोमेरुपर्वत अंजनमुखदधिनोवा

॥ टीका ॥

तो जीवानां क्षेत्रानुपातेना ऽल्पबहुत्वमुक्त, मिदानीं चतुर्गतिदंडकक्रमेण तदभिधित्सु प्रथमतो नैरयिकाणा माह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा नेरइया तेलोके इति ॥ क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण नैरयिका श्चिंत्यमानाः सर्वस्तोका स्त्रैलोक्ये लोकत्रयसंस्पर्शिनः कथंलोकत्रयसंस्पर्शिनो नैरयिकाः कथंवा तेसर्वस्तोका इतिचेत्, उच्यते-इह ये मेरुशिखरे अंजनदधिमुखपर्वतशिखरादिषु वा वापीषु वर्त्तमानामत्स्यादयोनारकेषूत्पत्सव इलिकागत्या प्रदेशा न् विक्षिपंति तेकिल त्रैलोक्यमपि स्पृशंति नारकव्यपदेशंचलभंते तत्कालमेवनरकेषूत्पन्ननारकायुष्कप्रतिसंवेदनात्, तचेत्थंभूताकतिपयेइतिसर्वस्तो काः, अन्येतु व्याचक्षते नारकाएवयथोक्तवापीषु तिर्यक्पंचेंद्रियतयो त्पद्यमानाः समुद्घातवशतो विक्षिप्तनिजात्मप्रदेशदंडाः परिगृह्यंते तेहिकिल त दा नारका एव निर्विवादंतदायुष्कप्रतिसंवेदनात्, त्रैलोक्यसंस्पर्शिनश्च यथोक्तवापी र्यावदात्मप्रदेशदंडस्य विक्षिप्तत्वादिति । तेभ्यो ऽधोलोकति र्यग्लोकसंज्ञा प्रागुक्तप्रतरद्वयस्य संस्पर्शिनोऽसंख्येयगुणा' यतो बहवोऽसंख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकानरकेषू त्पद्यमाना यथोक्तप्र

॥ मूल ॥

लुक्के असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्ज० अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्कजो णिणीउ उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्ज०, तेलुक्के असंखेज्ज० अहोलोयतिरिलोए संखिज्जगुणाउ अहोलोए संखेज्जगुणाउ तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुस्सा तेलुक्के उड्ढलोयतिरिय

॥ भाषा ॥

वघातोतिर्यंचयोनियानोस्त्रीहुवै चेत्रआश्रीसर्वथोडाकहिये तेहथी ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोकवर्त्तमान असंख्यातगुणा किमसहस्रारदेवलोकादिकथी तिर्यंचनी स्त्रीमांहिउपजतेहथीचिलोके असंख्यातगुणी । तिन्नुके असंखिज्जगुणाओ भवनपतिव्यंतरथकी ऊर्द्धलोकतिर्यंचउपजे । अहोलोय तिरियलोए असंखिज्ज गुणाओ अहोलोएसंखिज्जगुणाओ । तेहथी अधोलोकतिर्यक्लोक सख्यातगुणा घणानारकीमरणसमुद्घात तिर्यंचनीस्त्रीपणेछै । तिरियलोए संखिज्जगु गुणाओखित्ताणुवाएणं तेमाटेतेहथी अधोलोकसख्यातगुणोजेमाटै अधोग्रामथकीहुवै समुद्रमां नवसैंयोजनमच्छीमां उपजै । सव्वत्थोवा मणुस्सातिलु के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा । चेत्रआश्रीसर्वथोडा मनुष्यचिलोकपुरसै वैक्रियसमुद्घातना करणहारपुरसै तेहथी ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके असं

॥ टीका ॥

तरद्वयं स्पृशंति ततो भवंति पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणाः क्षेत्रस्यासंख्यातगुणत्वात्; मंदराद्दिक्षेत्रा दसंख्येयद्वीपसमुद्रात्मकं क्षेत्र मऽसंख्येयगुणमित्य तो भवंत्यऽसंख्येयगुणा, अन्येत्व भिदधति नारकाएवा ऽसंख्येयेषु द्वीपसमुद्रेषु तिर्यक्पंचेंद्रियतयोत्पद्यमाना मारणांतिकसमुद्घातेन विक्षिप्तनि जात्मप्रदेशदंडा द्रष्टव्या स्तेहि नारकायुःप्रतिसंवेदना नारका उद्वर्त्तमाना अपि ऽसंख्येयाः प्राप्यंते इति। प्रागुक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तेभ्यो ऽधोलो के ऽसंख्येयगुणा स्तस्य तेषां स्वस्थानत्वात्, उक्तं नारकगति मधिकृत्य क्षेत्रानुपातेना ऽल्पबहुत्व, मिदानी तिर्यग्गति मधिकृत्या ह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया उड्ढलोयतिरियलोए इत्यादि ॥ इदं सर्वमपि सामान्यतो जीवसूत्रमिव भावनीयं। तदपि तिरश्चएव सूत्रनिगो दान ऽधिकृत्य भावित मधुना तिर्यग्योनिकस्त्रीविषय मऽल्पबहुत्वमा ह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाउ तिरिक्खजोणिणीउ उड्ढलोए इत्यादि। के

॥ मूल ॥

लोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाउ मणुस्सीउ तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए संखे ज्जगुणाउ उड्ढलोए संखेज्जगुणाउ अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा

॥ भाषा ॥

ख्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए संखि०। जेमाटे वैमानिकदेवतामनुष्यमांहि उपजेतेप्रतरक्षेनैपुरसें अधोलोक तिर्यक्लोकें संख्यातगुणा भवनपति आदि मनुष्यलोकमांहि उपजेयकै कर्ध्वलोक सं० गुणविद्याधरादि पुद्गलमांहि समूर्च्छिनमनुष्यउपजे तेहथी अधोलोकेसंख्यातगु णा अधोग्रामादि स्वभाषितमनुष्यपणामाटेनहो। तिरियलोए संखि० तिर्यग्लोकेमनुष्यसंपूर्णात्रिकें लोकेषणामनुष्यस्त्रीं हिवेस्त्रीकहेछै। खित्ताणुवाए ण सव्वत्थोवाओ मनुस्सओ तिलोके उड्ढलोयतिरियलोए संखिज्जगुणाओ। क्षेत्रनीमेलेजोतां सर्वथोडीमनुष्यक्षेत्रेत्रैलोके तेमाटेवैक्रियसमुद्घात केवलीस मुद्घातवसैत्रैलोक्य स्परशेतेहथी ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोक वैमानिकदेवता मनुष्यणीमांउपजे तेहथी संख्यातगुणीछवै। अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणीओ उड्ढलोएसंखिगुणाओ अहोलोए संखिज्जगुणाओ। तेहथी अधोलोकतिर्यक्लोकें संख्यातगुणी अधोलोकग्रामादि तिर्यंचीमरीने मनुष्यस्त्रीपणे उपजती

॥ टीका ॥

त्रानुपातेन तिर्यग्योनिकस्त्रियश्चिन्त्यमानाः सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके इषत्प्राग्भारादिवापीषत्प्रतिष्ठापिहि पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाः स्त्रियोऽवंति ताश्च ते त्रस्याऽल्पत्वात् सर्वस्तोका स्तास्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोक ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये वर्त्तमाना असंख्येयगुणाः कथ मितिचेत् उच्यते-याव त्सहस्रारदेवलोक स्तावद्देवा अपि गर्भव्युक्रांतिकतिर्यक्पंचेंद्रिययोनिषू त्पद्यते किंपुनः शेषकाया स्तेहि यथासंज्ञवमुपरिवर्त्तनोऽपि तत्रो त्पद्यते, ततो ये सहस्रारांतादेवा अन्येऽपच शेषकाया ऊर्द्धलोका तिर्यग्पंचेंद्रियस्त्रीत्वेन तदायुः प्रतिसंवेदसमाना उत्पद्यंते, या स्तिर्यग्लोकवर्त्तिन्य स्तिर्यग्पंचेंद्रियस्त्रिय ऊर्द्धलोके देवत्वेन शेषकायत्वेनचो त्पद्यमाना मारणांतिकसमुद्घातेनोत्पत्तिदेशे निजनिजात्मकप्रदेशदंडान् विक्षिपंति ता य थोक्तप्रतरद्वयं स्पृशंति तिर्यग्योनिकस्त्रियश्च ता स्ततो ऽसंख्येयगुणाः क्षेत्रस्या ऽसंख्येयगुणत्वात्, ताभ्य स्त्रैलोक्य संख्येयगुणा यस्माद ऽधो

॥ मूल ॥

देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा तेलुक्के असंखेज्जगुणा अहोलोए तिरियलोए असंखेज्ज० अहोलोए संखिज्जगुणाउ तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाउ देवीउ उड्ढलोय उड्ढलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणाउ तेलुक्के संखेज्जगुणाउ अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाउ अहोलोए संखे

॥ भाषा ॥

प्रदेशस्पर्शे ऊर्द्धलोकसुध्यानगुणो क्रीडार्थेचैत्यवंदनार्थे विद्याधरोजातिथके प्रदेशस्पर्शेअधोलोके संख्यातगुणा अधोग्रामउपजतो। तिरियलोएसंखिज्जगुणाओ। तिर्यक्लोकसंख्यातगुणो क्षेत्रअसंख्यातगुणामाटे। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवादेवाउड्ढलोए। हिवेदेवतानो अल्पबहुत्वकहेछे क्षेत्रथीसर्वथोडादेवता ऊर्द्धलोके जे भवनपतिजिनेंद्रते महोत्सवेमेरुपर्वतेजायतेमाटे। उड्ढलोयतिरिलोए असंखिज्जगुणा। तेहथी ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोक असंख्यातगुणा भवनपतिव्यंतरज्योतिषी सौधर्म्यादिगतबेप्रतरस्पर्शे। तिन्नेकेसंखिज्जगुणा अहोलोयतिरियसंखिज्जगुणा। तेहथीत्रैलोक्य असंख्यातगुणा भवनपतिव्यंतरवैक्रिय समुद्घातत्रिलोकनैस्पर्शे तेहथी अधोलोकतिर्यक्लोक असंख्यातगुणा भवनपतिव्यंतरतिर्यक्लोक आवतें तिर्यंचयोनिमांहि उपजेतेसंख्यातगुणा। अहोलोएसंखिज्जगुणा तिरियलोएसंखिज्जगुणा॥ अधोलोकेसंख्यातगुणा भवनपतिनैषीतामाठामतेहथी त्रिहुँलोकसंख्यातगुणा व्यंतरज्योतिषी स्वस्थानमाटें

लोला द्भवनपतिव्यंतरनारका शेषकाया अपि चोर्द्धलोकेऽपि तिर्यक्पंचेंद्रियस्त्रीत्वेनो त्पद्यंते ऊर्द्धलोकाद्देवादयो ष्यऽधोलोकेच ते समवहता निज निजात्मप्रदेशदंडै स्त्रीनऽपि लोकान् स्पृशंति प्रभूताश्चते तथा तिर्यग्योनिकस्त्रियायु प्रतिसंवेदनात्, तिर्यग्योनिकस्त्रियश्च ततः संख्येयगुणाः ३ । ताभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये वर्त्तमानाः संख्ययगुणा बहवोहि नारकादयः समुद्घातमंतरेणाऽपि तिर्यग्लोके तिर्यक्पचेंद्रियस्त्रीत्वेनो त्पद्यंते, तिर्यग्लोकवर्त्तिनश्च जीवा स्तिर्यग्योनिकस्त्रीत्वेना ऽधोलोकिकग्रामेषु ऽपि च तेच तथो त्पद्यमाना यथोक्तंप्रत रद्वयं स्पृशंति' तिर्यग्योनिकस्त्रियायुःप्रतिसंवेदना च तिर्यग्योनिकस्त्रियोऽपि तथा ऽधोलौकिकग्रामायोजनसहस्रावगाहापर्यंते ऽर्वाक् क्वचित्प्रदेशे नवयोजनशतावगाहाऽपि तत्र काश्चित्तिर्यग्योनिकस्त्रियो ऽवस्थानेनाऽपि यथोक्तप्रतरद्वयाऽध्यासिन्यो वर्त्तते, ततो भवंति पूर्वोक्ताभ्यः संख्येयगु णाः ४ । ताभ्यो ऽधोलोके संख्ययगुणा यतोऽधोलौकिकग्रामाः सर्वेऽपिच समुद्रा योजनसहस्रावगाहा स्ततो नवयोजनशतानामऽधस्तात् या वर्त्तते मत्स्यीप्रभृतिकाः तिर्यक्योनिकस्त्रिय स्ताः स्वस्थानत्वात् प्रभूता इति संख्येयगुणाः क्षेत्रस्य संख्येयगुणत्वात्, ताभ्य स्तिर्यग्लोके संख्येय गुणाः, उक्तं तिर्यग्गतिमप्यधिकृत्या ल्पबहुत्व मिदानीं मनुष्यगतिविषय माह-खेत्ताणुवाएणंमिइत्यादि॥ क्षेत्रानुपातेन मनुष्या श्चिंत्यमाना स्त्रैलोक्य त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः सर्वस्तोका यतो ये ऊर्द्धलोकाद ऽधोलौकिकग्रामेषु समुत्पित्सवो मारणांतिकसमुद्घातेन समवहता भवंति ते केचित्समुद्घात वशा द्बहिर्निगंतैः स्वात्मप्रदेशै स्त्रीनऽपिलोकान् स्पृशंति येपिच वैक्रियसमुद्घात माहारकसमुद्घातं वा गता तथाविधप्रयत्नविशेषा दूरतर मूर्द्धाऽधोविक्षिप्तात्मप्रदेशा यच केवलसमुद्घातगता स्तेपि त्रीनपिलोकान् स्पृशंति स्तोकाश्चेति सर्वस्तोका स्तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऊर्द्धलोक तिर्यग्लोकसंज्ञेप्रतरद्वयसंस्पर्शिनो ऽसंख्ययगुणा यत इहवैमानिकदेवाः शेषकायाश्च यथासंभवमूर्द्धलोका त्तिर्यग्लोके मनुष्यत्वेन समुत्पद्यमाना



जागुणाउ तिरियलोए संखिज्जगुणाउ खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा मणुयावासीदेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए



हिवेदीकहेछे। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवाओ दवीओ उड्ढलाए। चत्रयाओजोतां सर्वथोडादेवांना ऊर्द्ध कोलविषै एसर्वदेवतानोपरेभावना। उड्ढलोए

॥ टीका ॥

यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शिनो भवंति विद्याधराणामऽपिच मंदरादिषु गमनं तेषांच शुक्ररुधिरादिपुद्गले संमूर्च्छिममनुष्याणामुत्पाद इति । ते विद्याधरारुधिरादिपुद्गलसंमिश्रा ऽवगच्छंति तथा संमूर्च्छिममनुष्या अपि यथोक्तप्रतरद्वयस्पर्शवंत उपजायंत तेचा तिबहव इत्यसंख्येयगुणा, तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये संख्येयगुणा यतो ऽधोलौकिकग्रामेषु स्वभावतएव बहवोमनुष्या स्ततोये तिर्यग्लोका न्मनुष्येभ्यः शेषकायेभ्योवा ऽधोलौकिकग्रामेषु गर्भव्युत्क्रांतिकमनुष्यत्वेन संमूर्च्छिममनुष्यत्वेनवा समुत्पित्सवो येचा ऽधोलोकाद ऽधोलौकिकग्रामरूपात् शेषाद्वा मनुष्येभ्यः शेषकायेभ्योवा तिर्यग्लोके गर्भव्युत्क्रांतिकमनुष्यत्वेनवा संमूर्च्छिममनुष्यत्वेनवा समुत्पत्तुकामा स्ते यथोक्त किल प्रतरद्वयं स्पृशंति बहुतराश्च ते, तथा स्वस्थानतोपि केचिदधोलौकिकग्रामेषु यथोक्तप्रतरद्वयस्पर्शिन इति प्रागुक्तेभ्यो संख्येयगुणा स्तेभ्य ऊर्द्वलोकेसंख्येयगुणाः सीमनसादिषु क्रीडार्थं चैत्यवदननिमित्तवा प्रभूततराणां विद्याधरचारणमुनीनां भावात्, तेषांच यथायोगं रुधिरादिपुद्गलयोगतः संमूर्च्छिममनुष्यसंभवात्' तेभ्यो ऽधोलोके संख्येयगुणाः स्वस्थानत्वेन बहुत्वभावा त्तेभ्य स्तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः क्षेत्रस्यसंख्येयगुणत्वा त्स्वस्थानत्वाच्च, संप्रति क्षेत्रानुपातेन मानुषीविषय मल्पबहुत्व माह-सेत्ताणुवाएण मित्यादि ॥ क्षेत्रानुपातन मानुष्यश्चिंत्यमानाः सर्वस्तोका स्त्रैलोक्यस्पर्शिन्यऊर्द्वलोका ऽधोलोके समुत्पित्सूनां मारणांतिकसमुद्घातवशविनिर्गतदूरतरात्मप्रदेशाना मऽथवा वैक्रियसमुद्घातगतानां केवलिसमुद्घातगतानां वा त्रैलोक्यसंस्पर्शान् तासांचा तिस्तोकत्वमिति । सर्वस्तोका स्तेभ्य ऊर्द्वलोकतिर्यग्लोके ऊर्द्वलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये संख्येयगुणा वैमानिकदेवानां शेषकायाणां चो ऊर्द्वलोका स्तिर्यग्लोके मनुष्यस्त्रीत्वेनो त्पद्यमानानां तथा तिर्यग्लोकगतमनुष्यस्त्रीणामू र्द्वलोकेसमुत्पित्सूनां मारणांति

॥ मूल ॥

**असंखेज्जगुणाउ तेलुक्के संखिज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा**

॥ भाषा ॥

तिरियलोए असंखिज्जगुणाओ तिलोकसंखिज्जगुणाओ । ऊर्द्वलोकतिर्यकलोके असंख्यातगुणो देवतानोपरितेहत्थो त्रैलोक्येसंख्यातगुणो । अहोलोएतिरियलोए संखिज्जगुणाओ । अधोलोकतिर्यकलोकेसंख्यातगुणो । अहोलोएसंखिज्जगुणाओ अधोलोकेसंख्यातगुणोदेवांगना एसर्वदेवतानाओघणाआलावा

॥ टीका ॥

केवलसमुद्घातवशा दूरतरमूर्द्ध्वविक्षिप्तात्मप्रदेशानाम ऽद्याऽपि कालमकुर्वतीनां यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शनभावात्, तासांचो भयेषामऽपि बहुतरत्वात्, ताभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके प्रागुक्तस्वरूपप्रतरद्वयरूपे संख्येयगुणा स्तिर्यग्लोका न्मनुष्यस्त्रीभ्यः शेषेभ्यो वा ऽधोलौकिकग्रामेषु यदिवा ऽधोलोका दधोलौकिकग्रामरूपात् शेषाद्वा तिर्यग्लोके मनुष्यस्त्रीत्वेनो त्पित्सूनां कासांचिद ऽधोलौकिकग्रामेष्वऽवस्थानतोऽपि यथोक्तप्रतरद्वयसस्पर्शसम्भवात्, तासांच प्रागुक्ताभ्यो ऽतिबहुत्वात्, ताभ्यो ऽप्यूर्द्ध्वलोकेसंख्येयगुणाः क्रीडार्थं चैत्यवंदनानिमित्तं वा सौमनसादिषु प्रभूततराणां विद्याधरीणां सम्भवात्, ताभ्योऽपि अधोलोकसंख्येयगुणा स्वस्थानत्वेन तत्रापि बहुतराणां भावात्, ताभ्य स्तिर्यग्लोके संख्येयगुणाः क्षेत्रस्या संख्येयगुणत्वात् स्वस्थानत्वा च्च, गतं मनुष्यगतिमधिकृत्या ल्पबहुत्व मिदानीं देवगतिमधिकृत्याह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा उड्ढलोए इत्यादि॥ क्षेत्रानुपातेन चिंत्यमाना देवाः सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके, ऊर्द्धलोके वैमानिकानामेव तत्रभावात्, तेषांचा ऽल्पत्वात् येपि भवनपतिप्रभृतयो जिनेंद्रजन्ममहादौ मन्दरादिषु गच्छंति तेऽपि स्वल्पा एवे ति सर्वस्तोका स्तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकसञ्ज्ञे प्रतरद्वये असंख्येयगुणा स्तद्विज्योतिष्काणां प्रत्यासन्न मि इति स्वस्थानं तथा भवनपतिव्यंतरज्योतिष्का मंदरादौ सौधर्मादिकल्पगताः स्वस्थानगमागमेन तथा येसौधर्मादिषु देवत्वेनोत्पित्सवो देवायुःप्र तिसंवेदयमानाः स्वोत्पत्तिदेशमभिगच्छंति यथोक्तं प्रतरद्वयं स्पृशंति ततः सामस्त्येन यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शनः परिभाव्यमाना अतिबहव इतिपू र्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा, स्तेभ्य स्त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः संख्येयगुणाः ३ । ततो भवनपतिव्यंतरज्योतिष्कवैमानिका देवा स्तथाविधप्रयत्नविशेषवशतो वैक्रियसमुद्घातेन समवहताः संत स्त्रीनपिलोकान् स्पृशंति तेचे त्थंसमवहताः प्रागुक्तप्रतरद्वयस्पर्शिभ्यः संख्येयगुणाः केवलमेदसोपलभ्यन्त इति

॥ मूल ॥

अहोलोए असंखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासिणीओ देवीओ उड्ढलोए तिरियलोए असंखि०,

॥ भाषा ॥

नोपरिकहियो। हिवेविग्रवभवनपतिनो अल्पबहुत्वकहेछे। तिरियलोएसंखिज्जगुणाओ तिर्यक्लोकदेवांगना असंख्यातगुणी। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा भवणवासीदेवा चेवथीजोतां सर्वथीथोडादेवभवनवासी ऊर्द्धलोके कोइपूर्वसंगति सौधर्मदेवलोके तथा तीर्थंकरने जन्मेमेरुपर्वतेजाये तेमाटे थोडा तेहथी

संख्येयगुणा' स्तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके ऽधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये वर्त्तमानाः संख्येयगुणा स्तद्धि प्रतरद्विकं भवनपतिव्यंतरदेवानां प्रत्या सन्नतया स्वस्थानं तथा बहवोभवनपतयः स्वभावस्था स्तिर्यग्लोकगमागमेन तथो द्वर्त्तमाना स्तथावैक्रियसमुद्घातेनसमवहता स्तथा तिर्यग्लोक वर्त्तिन स्तिर्यग्पचेंद्रियमनुष्या वा भवनपतित्वेनो त्पद्यमाना भवनपत्याऽऽयुरऽनुभवंतो यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शिनो ऽतिबहव इति संख्येयगुणाः' तेभ्यो ऽधोलोके संख्येयगुणा भवनपतीनां स्वस्थानमिति कृत्वा तेभ्य स्तिर्यग्लोके संख्येयगुणा ज्योतिष्कव्यंतराणां स्वस्थानत्वात्, अधुना देवी रधिकृत्याल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवादेवीउ उड्ढलोए इत्यादि ॥ सर्वदेवसूत्रमिवाऽविशेषेण भावनीयं, तदेवमुक्तं देवविषयमौघिक मल्पबहुत्व मिदानीं भवनपत्यादिविशेषविषयं प्रतिपिपादयिषुः प्रथमतो भवनपतिविषयमाह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा देवा भवणवासीउड्ढलो ए इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन भवनवासिनो देवा श्चिंत्यमानाः सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके तथाहि-केषांचि त्सौधर्मादिष्वपि कल्पेषु पूर्वसंगतिकनिश्रया ग मनं भवति केषांचि न्मन्दरे तीर्थंकरजन्ममहिमानिमित्त मंजनदधिमुखेष्टाहिकानिमित्त मपरेषां मन्दरादिषु क्रीडानिमित्तं गमन मेतेच सर्वेपि स्वल्पा इति, सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके रुज्जुप्रतरद्वये ऽसंख्येयगुणाः, कथमितिचेत् उच्यते-इहहि तिर्यग्लोकस्थावैक्रियसमु द्घातेन समवहता ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकं च स्पृशंति यथा ते तिर्यग्लोकस्थाएव मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहता ऊर्द्धलोके सौधर्मादिषु देवलो केषु बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकतया बादरपर्याप्ताऽप्कायिकतया बादरपर्याप्तप्रत्येकवनस्पतिकायिकतया च रुज्जुषु मणिविधानादिषु स्थानेषूत्प

## तेलुक्के संखेज्जगुणाउ अहोलोएतिरियलोए असंखेज्ज०, तिरियलोए असंखिज्ज० अहोलोए असंखिज्ज०





उड्ढलोएतिरियलोए असंखिज्जगुणा ऊर्द्धलोकचिक्कैलोक असंख्यातगुणा मरणसमुद्घात ऊर्द्धलोकेबादर पृथ्व्यादिकपर्ये उपजतां त्रिलोकस्पर्शे त्रैलोक्य असंख्यातगुणा वैक्रियसमुद्घातेकरोनै । तिर्छालोकसंखिज्जगुणा अहोलोयतिरिलोए असंखिज्जगुणा । तेहथी अधोलोकचिक्कैलोक असंख्यातगुणाप्रतरने स्पर्शे तिर्यकलोकगमनागमनभाव । तिरियलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए असंखिज्जगुणा । तेहथी चिक्कैलोक असंख्यातगुणा समोसरणक्रीडार्थे समाग

सुकामा अद्याऽपि स्वजन्मावायुः प्रतिसंवेदयमाना न पारभविकं पृथवीकायिकाद्यायु द्विविधाहि मारणान्तिकसमुद्घाते समवहताः केचित्पारभविकमायुःप्रतिसंवेदयंते केचिन्नेति, तथा चोक्तं प्रज्ञप्तौ-जीवेणं भंते मारणंतिकसमुग्घाएणं समोहए समोहणित्ता जेनविए मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं बायरपुढविकाइत्ताए उववज्जित्तए सेणं भंते किं तत्थ गए उववज्जेज्जा उयाहु पडिनियत्तेत्ता उववज्जइ गो० ! अत्थेगइए तत्थगए चेव उववज्जइ, अत्थेगइए तओ पडिनियत्तेत्ता दोच्चंपि मारणांतियसमुग्घाएणं समोहणंति समोहणित्ता तओ पच्छा उववज्जइति, स्वजन्मवायुःप्रतिसंवेदनाच्च ते भवनवासिन एव लभ्यंते ते इत्थंभूता उत्पत्तिदेशे विद्युत्प्रात्मप्रदेशदण्डा स्तथा ऊर्द्धलोकगमनागमनत स्तत्प्रतरद्वयप्रत्यासन्नक्रीडास्थानश्च यथोक्तं प्रतरद्वयं स्पृशंति, ततः प्रागुक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तेभ्य स्त्रैलोक्य त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः संख्येयगुणा यतो ये ऊर्द्धलोके तिर्यग्पञ्चेन्द्रिया भवनपतित्वेनोत्पत्तुकामा येच स्वस्थाने वैक्रियसमुद्घातेन मारणान्तिकप्रथमसमुद्घातेन वा तथाविधतीव्रप्रयत्नविशेषेण समवहता स्ते त्रैलोक्यसंस्पर्शिन इति संख्येयगुणाः, परस्थानसमवहतेभ्यः स्वस्थानसमवहतानां सङ्ख्येयगुणत्वात्, तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके अधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये ऽसङ्ख्येयगुणाः स्वस्थानप्रत्यासन्नतया तिर्यग्लोके गमनागमनभावतः स्वस्थानस्थितक्रोधादिसमुद्घातगमनतश्च बहूनां यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शना



खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाणमंतरादेवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्ज० अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थो



र्मचिरकालस्थायीमाटे घणा तेहथी अधोलोक असख्यातगुणा भवनपतिनीदेवीनो। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवाओ भवनवासणीओ देवीओ उड्ढलोये। क्षेत्रथाओ अल्पबहुत्वकहेछे सर्वथोडीदेवांगना ऊर्द्धलोके भवनपतिदेवतानीपरेसर्वकहिवो। उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणाओ ऊर्द्धलोकतिर्यकलोके असख्यातगुणीहुवे। तिल्लोके संखिज्जगुणाओ अहोलोयतिरियलोए असं० अहोलोए असं० तिरियलोए असं०। त्रिलोकसंख्यातगुणाहुवे वैक्रियसमुद्घात वेला अधोलोत्रिछःलोके असंख्यातगुणी त्रिछेलोके असख्यातगुणी समोसरणे अधोलोके असंख्यातगुणा स्वस्थान माटे त्रिछेलोके अ०। खित्ताणुवा०ण

॥ टीका ॥

वात् तेभ्यः तिर्यग्लोके ऽसङ्ख्येयगुणाः समवसरणादौ वन्दननिमित्तं द्वीपेषु च रमणीयेषु क्रीडानिमित्तमागमसम्भवा दागतानांच चिरकालमऽप्यऽवस्थानात्, तेभ्यो ऽधोलोके ऽसंख्येयगुणाभुवनवासिनामधोलोकस्य स्वस्थानत्वात्, एवं भवनवासिदेवीगतमल्पबहुत्वं भावनीयं, साम्प्रतिव्यन्तरगतमल्पबहुत्वमाह-खेत्ताणुवाएणमित्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चिन्त्यमाना व्यंतराः सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके कतिपयानामेव पण्डकवनादौ तेषां भावात्,

॥ मूल ॥

वाणमंतरीणं देवीणं उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणाणं तेलुक्के संखिज्जगुणाणं अहोलोए तिरियलोए असंखिज्ज० अहोलोए संखिज्ज० तिरियलोए संखिज्जगुणाणं खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया देवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोएअसंखिज्ज० तेलुक्के संखेज्जगुणा अहोलोएतिरियलोए असंखिज्ज गुणा अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए असंखेज्जगुणा खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिणीणं देवीणं उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाणं तेलुक्के संखेज्जगुणाणं अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज०, अहो

॥ भाषा ॥

सव्वत्थोवा वाणमंतरादेवा उड्ढलोए। हिवेव्यंतरनोकहेछे सर्वथोडाव्यंतर ऊर्द्धलोकने विषेसोधर्मे पूर्वेसगतिने मिलवामेतोथंकरजन्मे। उड्ढलोयतिरियलोए असं० तिलोके संखिज्जगुणा। तेहथी ऊर्द्धलोकतिर्छलोक असं० मरणसमुद्घात तथा बादरमां पृथ्वीमांउपजे ते असंख्याता त्रैलोकें संख्यातगुणा वैक्रियसमुद्घातें। अहोलोयतिरियलोए असं०। अधोलोकतिरछालोकें वे प्रतरस्पर्शेगमनागमनकरनें। अहोलोए असंखिज्जगुणा तिरियलोए असं० खित्ताणुवाएणं। तेहथी अधोलोकें असंख्यातगुणा स्वस्थानमाटे तिरछेलोकें असं० समोसरणादिकें। हिवेव्यंतरीकनोकहेछे चेत्रआश्री। सव्वत्थोवाओवाणमंतरीओ देवीओ उड्ढलोए। सर्वथोडोवाणव्यंतरी ऊर्द्धलोकें पूर्वसंगति अथ तीर्थंकरजन्मे। उड्ढलोयतिरियलोए असं० तिर्छलोके संखिज्जगुणाओ। तेहथी ऊर्द्धलोकतिर्यकलोक असंख्यातगुणी त्रैलोक्ये असंख्यातगुणी वैक्रियसमुद्घातकरतां। अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणाओ। अधोलोकें तिरछेलोके असंख्यातगुणी गमनागमनवती। अहोलोए असं० तेहथी अधोलोकें असंख्यातमाटें। तिरियलोए असंखिज्जगुणाओ खित्ताणुवाएणं। तिरछेलोकें अ

तेभ्य ऊर्द्धलोके तिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे असंख्येयगुणाः केषांचित्स्वस्थानांतर्वर्त्तितया अपरेषां स्वस्थानप्रत्यासन्नतया ऽन्येषां बहूनां मंदरादिषु गमनागमनभावतो यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शात् तेषां समुदायेन चिंत्यमानानामतिबहुत्वभावात्, तेभ्य स्त्रैलोक्ये संख्येयगुणा यतोलोकत्रयवर्त्तिनोपि व्यंतरा स्तथाविधप्रयत्नविशेषवशतो वैक्रियसमुद्घातेन समवहताः संत स्त्रीनपि लोकानात्मप्रदेशैः स्पृशंति तेच प्रागुक्तेभ्यो तिबहव इति संख्येय गुणाः, स्तेभ्यो धोलोकेतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसंख्येयगुणा स्तद्धि बहूनां व्यंतराणां स्वस्थानानां तत स्तत्संस्पर्शिनो बहव इत्यसंख्येयगुणाः, अधोलोके संख्येयगुणा अधोलौकिकग्रामेषु तेषां स्वस्थानभावा द्बहूना मधोलोके क्रीडार्थंगमनभावात्, तेभ्य स्तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणा स्तिर्यग्लोक स्य तेषां स्वस्थानत्वा॰, एवं व्यंतरदेवीविषयमप्यल्पबहुत्वं वक्तव्य सांप्रति ज्योतिष्कविषय मल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा जोइसिया इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन ज्योतिका श्चिंत्यमानाः सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके केषांचिदेव मंदरे तीर्थंकरजन्ममहोत्सवनिमित्त मंजनदधिमुखाष्ट्राह्निकानि

---

मित्त मपरेषां केषांचि न्मंदरादिषु क्रीडानिमित्त गमनसंभवात्, तेभ्यः ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसंख्येयगुणा स्तद्धि प्रतरद्वयं कैश्चित्स्व स्थाने स्थिता अपि स्पृशंति प्रत्यासन्नत्वा दपरे वैक्रियसमुद्घातसमवहता अन्ये ऊर्द्धलोके गमनागमनभावत स्ततो ऽधिकृतप्रतरद्वयस्पर्शिनः पूर्वो क्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा, स्तेभ्य स्त्रैलोक्य त्रैलोक्यसस्पर्शिनः संख्येयगुणाः, येहि ज्योतिका स्तथाविधतीव्रप्रयत्नवैक्रियसमुद्घातेन समवहता स्त्रीनऽपि लोकान् स्वप्रदेशैः स्पृशंति ते स्वभावतो ऽप्य ऽतिबहव इति। पूर्वोक्तेभ्यः संख्येयगुणा स्तेभ्यो ऽधोलोकप्रतरद्वये वर्त्तमाना असंख्येयगुणा, यतो बहवो ऽधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादिनिमित्तं अधोलोके क्रीडानिमित्तं गमनागमनभावतो बहवश्चा ऽधोलोका ज्योतिष्केषु समुत्पद्यमाना यथो क्तं प्रतरद्वयं स्पृशंति, ततो घटन्ते पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा, स्तेभ्यः संख्येयगुणा अधोलोके बहूनामधोलोके क्रीडानिमित्त मधोलौकिकग्रामेषु स मवसरणादिषु चिरकालमवस्थानात्, तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकस्य तेषां स्वस्थानत्वात्, एवं ज्योतिष्कदेवीसूत्रमपि भावनीयं।

॥ टीका ॥

सांप्रति वैमानिकदेवविषयमल्पबहुत्वं माह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा उड्ढलोयतिरियलोए इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण चिंत्यमाना वैमानिकादेवाः सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये यतोयेऽधोलोके तिर्यग्लोके वा वर्त्तमाना जीवा वैमानिकेषूत्पद्यन्ते येच तिर्यग्लोके वैमानिका गमनागमनं कुर्वंति, येच विवक्षितप्रतरद्वयाध्यासिनः क्रीडास्थानं संश्रिता येच तिर्यग्लोकेस्थिता एव वैक्रियसमुद्घातमारणांतिकसमुद्घातंवा कुर्वाणा स्तथाविधप्रयत्नविशेषा दूर्द्धमात्मप्रदेशदंडं निसृजंति ते विवक्षितं प्रतरद्वयं स्पृशंति, तेचाऽल्पे इति। सर्वस्तोका स्तेभ्य ऊर्द्धलोके संख्येयगुणाः, कथमिति चेदुच्यते-इह येऽधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादिनिमित्तमऽधोलोकेवा क्रीडानिमित्तंगताः संतो वैक्रियसमुद्घातं मारणांतिकसमुद्घातंवा कुर्वाणा स्तथाविधप्रयत्नविशेषात् दूरतरं मूर्द्धविक्षिप्तात्मप्रदेशदंडा येच वैमानिकत्वेन दीर्घिकागत्या च्यवमाना अधोलौकिकग्रामेषु समुत्पद्यंते तेकिल त्रीनपि लोकान् स्पृशंति, बहवश्च पूर्वोक्तेभ्य इति संख्येयगुणा, स्तेभ्योपि अधोलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयसंज्ञे संख्येयगुणा, अधोलौकिकग्रामेषु समवसरणादौ गमनागमनभावतो विवक्षितप्रतरद्वयाध्यासिनः समवसरणादौवा ऽवस्थानतो

---

लोए संखि० तिरियलोए असंखे० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वेमाणिया देवा २००० उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्ज० अहोलोयतिरियलोय संखिज्ज० अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोय संखेज्ज० उड्ढलोए

॥ मूल ॥

---

संख्यातगुणो समोसरणक्रीडार्थं ज्योतिषीकहेछे क्षेत्रग्राह्यो। सव्वत्थोवाजोयसियादेवा उड्ढलोए। सर्वथोडाज्योतिषी ऊर्द्धलोकें मेरुनेविषे जन्मोत्सवेरामतिकाजें। उड्ढलोयतिरिलोए असंखिज्जगुणा। तेहथी ऊर्द्धलोकतिर्यकलोकें बे प्रतरस्पर्शे असं० वैक्रियसमुद्घातवेला। तिल्लोके संखिज्जगुणा। त्रैलोक्ये संख्यातगुणा वैक्रियसमुद्घातवेला। अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा। अधोलोके तिरछेलोके असंख्यातगुणा गमनागमनभणीतिर्यंचमां उपजतां। अहोलोए संखिज्जगुणा तिरियलोए संखिज्जगुणा। अधोलोके संख्यातगुणा समोसरणादिक्रीडार्थे तिर्यकलोके संख्यातगुणा स्वस्थानवतो। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवीओ जोयसिणीओ देवीओ उड्ढलोए। क्षेत्रग्राह्यज्योतिषीणी कहेछे सर्वथोडीज्योतिषणी ऊर्द्धलोकें ज्योतिषीनोपरेभावना। उड्ढलोयतिरिय

॥ भाषा ॥

बहूनां यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शनाभावात्, तेभ्यो धोलोके संख्येयगुणाः; अधोलौकिकग्रामेषु बहूनां समवसरणादाव ऽवस्थानाभावात्, तेभ्य स्तिर्यग्लोके संख्येयगुणा बहुषुसमवसरणेषु बहुषुच क्रीडास्थानेषु बहूना मवस्थानाभावात्' तेभ्य ऊर्द्धलोके ऽसंख्येयगुणा ऊर्द्धलोकस्य स्वस्थानत्वात्, त



असंखिज्ज० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं वेमाणिणीइं देवीइं उड्ढलोयतिरियलोए तेलुक्के संखेज्जगुणाइं अहोलोयतिरियलोए संखिज्ज० अहोलोयसंखेज्ज० तिरियलोए सखेज्ज० उड्ढलोए असंखि० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदिया जीवा उड्ढलोए तिरियलोए, अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असं



लोए असंखिज्जगुणाओ। ऊर्द्धलोके तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा। तिर्यक्लोके संखि० त्रिलोके संख्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए असं० अधोलोकतिर्यक्लोक असंख्यातगुणो। अहोलोए संखि० अधोलोके संख्यातगुणो। हिवै वैमानिकनां कहेछै। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा विमाणीयादेवा उड्ढलोयतिरियलोए। सर्वथोडावैमानिकदेवता ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोकेने विमतिर्यक्लोकें वर्त्तताजीव वैमानिकमां उपजे तथा वैक्रिय समुद्घात स्वप्रदेशेकरी बेप्रतरस्पर्शे तिर्लोके संखिज्जगुणा। तेजीव थोडाछै त्रैलोक्येसंख्यातगुणा समोसरणार्थे। अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा। अधोलोक तिर्यक्लोके बेप्रतरेस्पर्शे समोसरणार्थे। अहोलोए सं० तिरियलोए सं०। अधोलोके संख्यातगुणा समोसरणार्थे तिरछेलोके संख्यातगुणा रमवाभणी। उड्ढलोए असं० खित्ताणुवाएणं। ऊर्द्धलोक असंख्यातगुणा स्वस्थानमाटै हिवै देवीनो कहेछै। सव्वत्थोवाओ वेमाणणीओ देवीओ उड्ढलोयतिरियलोए तिर्लोके सं०। सर्वथोडोवैमानिक नीदेवी ऊर्द्धलोके तिरछेलोकें वैक्रियसमुद्घातकरतां मनुष्यादिदेवीमां उपजे ते थोडोत्रिलोकनें स्पर्शेमख्यातगुणो समोसरणार्थे। अहोलोयतिरियलोए संखि०। अधोलोकें संख्यातगुणो समोसरणभणी तिरछेलोके संख्यातगुणा। अहोलोए सं० तिरियलोए सं०। अधोलोके समोसरणभणी तिरछेलोके संख्यातरमवाभणी। उड्ढलोए असंखिज्जगुणाओ। ऊर्द्धलोकें असंख्यातगुणो स्वस्थानभणी। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगेंद्रियजीवा उड्ढलोए तिरिलोए। एकेंद्रियनो कहेछै सर्वथोडा चेवाश्रीजीतां एकेंद्रियजीव ऊर्द्धलोक तिरछेलोके मरणांतसमुद्घातकरता प्रतरबेस्पर्शे तेजीवथोडा। अहोलोयतिरियलोए।

त्रच सर्वेवबहुतरत्नावात्' एवं वैमानिकदेवीविषयसूत्र मपि भावनीयं' सांप्रत्ये केंद्रियादिगत मल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंदि या इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेनचिंत्यमाना एकेंद्रियाजीवाः सर्वस्तोका ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकसंज्ञे प्रतरद्वये यतो ये तत्रस्थाएव केचन येचो र्द्धलोका त्तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऊर्द्धलोके समुत्पित्सवः कृतमारणांतिकसमुद्घाता स्ते किल विवक्षित प्रतरद्वयं स्पृशंति स्वल्पाश्च ते इति सर्वस्तोका, स्तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका यतो ये अधोलोका त्तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऽधोलोके ईलिकागत्या समुत्पद्यमाना विव क्षितं प्रतरद्वयं स्पृशंति तत्रस्याश्च ऊर्द्धलोकाच्चा धोलोकोविशेषाधिक स्ततो बहवो धोलोका त्तिर्यग्लोके समुत्पद्यमाना अवाप्यंते इति विशेषाधि का, स्तेभ्य स्तिर्यग्लोके असंख्येयगुणा उक्तप्रतरद्विकक्षेत्रा त्तिर्यग्लोकक्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात्' तेभ्य स्त्रैलोक्ये संख्येयगुणा बहवोहि ऊर्द्धलोका द

॥ टीका ॥

खेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा एगिंया जीवा अपज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असं खेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं

॥ मूल ॥

अधोलोके तिरछेलोके। विसेसाहिया तिरियलोए असं०। विशेषाधिक उपजतां बेप्रतरनैरपणे तेमाटे तिरछेलोकें असंख्याततगुणा क्षेत्रमाटे। तिह्नोके असंखिज्जगुणा उड्ढलोए अस०। तेहथी त्रिलोके असंख्यातगुणा जे ऊंचाथी नीचा ऊर्द्धलोकथी। अहोलोए विसेसाहियावा खित्ताणुवाएणं। अधोलो के विशेषाधिक उपजावता घणा चवाथी। सव्वत्थोवा एगिंदीअपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए। सर्वथोडा जीव एकेंद्रिय अपर्याप्ता ऊर्द्धलोक तिर्यक्लो के सर्वपर्याप्तानी परे। अहोलोयतिरियलोए वि० तिरियलोए असं०। अधोलोकें तिरछेलोक विशेषाधिक तिरछेलोकें अस०। तिह्नोके असं० उड्ढला असं०। त्रिलोके अस० ऊर्द्धलोक। अहोलोए विसेसाहिया। ऊर्द्धलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा एगिंदियपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरिय चंचनोमेलेथोडा एकेंद्रियजीवपर्याप्ता ऊर्द्धलोकतिर्यक्लोके भावनापाछलोपरें। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए। अधोलोकें तिरछेलोके

॥ भाषा ॥

धोलोके अधोलोकाद्वा ऊर्ध्वलोके समुत्पद्यंते तेषांच मध्ये बहवो मारणांतिकसमुद्घातवशा द्विद्वित्रात्मप्रदेशदंडा स्त्रीनपिलोकान् स्पृशंति ततो ज्ञवंत्यऽसंख्येयगुणा, स्तेज्य ऊर्ध्वलोके असंख्येयगुणा उपपातक्षेत्रस्या ऽतिबहुत्वा त्तेज्यो ऽधोलोके विशेषाधिका ऊर्ध्वलोकक्षेत्रा दधोलोकक्षेत्रस्य वि शेषाधिकत्वात्' एवम ऽपर्याप्तविषयं पर्याप्तविषयं च सूत्रं ज्ञावयितव्य मऽधुना द्वींद्रियविषय मल्पबहुत्व माह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदि या इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण चिंत्यमाना द्वींद्रिया सर्वस्तोका ऊर्ध्वलोके ऊर्ध्वलोकस्यैकदेशे तेषां संज्ञवात्, तेज्य ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके प्रत



सव्वत्थोवा एगिंया जीवा पज्जत्तगा, उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असं०, अहोलोए तिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया अ पज्जत्तया उड्ढलोए । उड्ढलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असं



विशेषाधिक तिरक्केलोकें असंख्यातगुणा । तिलोक असं० उड्ढलोए असं० त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा । अहोलोए विसेसाहिया अधोलोके विशेषाधिक । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवावेंदिया उड्ढलोये उड्ढलोयतिरिएलोए असंखिज्जगुणा तिलोके असंखिज्जगुणा । क्षेत्रानुजोता सर्व थोडावेंद्रिय ऊर्ध्वलोके मेरुनोचूलिकावांविमांहिहुवे तेमणो तिर्यकलोकें किमऊर्ध्वथो अधउपजे अधथो ऊर्ध्व उपजें तेमणो समुद्घातवसें मरणांतकरता तो नलोकस्यर्ग । अहोलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा । अधोलोक तिर्यकलोके असंख्यातगुणा स्वस्थानभणो । अहोलोए संखि० तिरियलोए संखिज्जगुणा । अधोलोके संख्यातगुणा उपजे तिरक्केलोकें संख्यातगुणा उपजणनाठाम । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवावेंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए । क्षेत्रनोमेलें सर्वथोडा बेंद्रिय अपर्याप्ता ऊर्ध्वलोकें भावनाओघनीपरे । उड्ढलोयतिरियलोए असं० । ऊर्ध्वलोकें तिर्यकलोके असंख्यातगुणा । तिलोके असं० तीनलोकस्यर्ग असं

॥ टीका ॥

रद्वयरूपे असंख्येयगुणाः, यतो ये ऊर्द्वलोका तिर्यग्लोके तिर्यग्लोकाद्वा ऊर्द्वलोके द्वींद्रियत्वेन समुत्पत्तुकामा स्तदायुरनुभवंत ईलिकागत्या समुत्पद्यन्ते येच द्वींद्रियाएव तिर्यग्लोका दूर्द्वलोके ऊर्द्वलोकाद्वा तिर्यग्लोके द्वींद्रियत्वेना ऽन्यत्वेनवा समुत्पत्तुकामाः कृतप्रथममारणांतिकसमुद्घाता अतएव द्वींद्रियायुःप्रतिसंवेदयमानाः समुद्घातवशा च्च दूरतरविक्षिप्तनिजात्मप्रदेशदंडा येच प्रतरद्वयाऽध्यासितक्षेत्रसमासीना स्ते यथोक्तप्रतरद्वयस्पर्शिनो बहव श्चेति पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा, स्तेभ्य स्त्रैलोक्ये ऽसंख्येयगुणा यतो द्वींद्रियाणां प्राचुर्येणो त्पत्तिस्थानान्य ऽधोलोके तस्माच्चा ऽति प्रभूतानि तिर्यग्लोके तत्र ये द्वींद्रिया अधोलोका दूर्द्वलोके द्वींद्रियत्वेना ऽन्यत्वेन वा समुत्पत्तुकामाः कृतप्रथममारणांतिकसमुद्घाताः समुद्घातवशाच्चो त्पत्तिदेशं यावद्विक्षिप्तात्मप्रदेशदण्डा स्ते द्वींद्रियायुःप्रतिसंवेदयमाना येचो ऽर्द्वलोका ऽदधोलोके द्वींद्रियाशेषकाया याव द्वींद्रियत्वेन समु

॥ मूल ॥

खेज्जगुणा, अहोलोए संखे०, तिरियलोए संखे० खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदिया पज्जत्तया उड्ढलो उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलो

॥ भाषा ॥

क्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए असं० अधोलोकें तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा। अहोलोए संखि० अधोलोके संख्यातगुणा। तिरियलोए संखि० तिरछेलोकें संख्यातगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा बेइंदियपज्जत्तगा उड्ढलोए। चेचनोमेलेजोतां सर्वथोडा बेंद्रियपर्याप्ता ऊर्द्वलोकें भावनाश्रीवनीपरें। उड्ढतिरियलोए असं० तिर्छालोके असं०। ऊर्द्वलोक तिर्यक्लोक असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए तिरियलोए असं०। अधोलोकें तिरछेलोकें असंख्यातगुणा। अहोलोए संखि० तिरियलोए संखि०। अधोलोके संख्यातगुणा तिरछेलोके संख्यातगुणा हिवे तेंद्रियकहेछे। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवातेइंदिया उड्ढलोए उड्ढलोए तिरियलोए असं० तिर्लोके असं०। चेचनोमेलें सर्वथोडातेंद्रिय ऊर्द्वलोकें बेंद्रियनीपरि तेंद्रियनीपरें भावनाकीजे ऊर्द्वलोक तिरछेलोक असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए असं० अधोलोके तिर्यक्लोकें असंख्यातगुणा। अहोलोए सं० तिरि यलोए

॥ टीका ॥

त्पद्यमाना द्वींद्रियायु रनुभवंति त्रैलोक्यसंस्पर्शिन स्तेच पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणाः तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणाः यतो ये द्वींद्रिया अधोलोका स्तिर्यग्लोके येच द्वींद्रिया स्तिर्यग्लोका दधोलोके द्वींद्रियत्वेन शेषकायत्वेनो त्पित्सवः कृतप्रथममारणांतिकसमुद्घाता द्वींद्रियायु रनुभवंतः समुद्घातवशेनो त्पत्तिदेशंयाव द्दिक्षात्मप्रदेशदंडा स्ते यथोक्तं प्रतरद्वयं स्पृशंति। प्रभूताश्चेति, पूर्वोक्तेभ्यो ऽसंख्येयगुणा स्तेभ्यो ऽधोलोके संख्येयगुणा स्तेभ्यो त्पत्तिस्थानाना मतिप्रचुराणां भावात्, तेभ्योपि तिर्यग्लोके संख्येयगुणा अतिप्रचुरतराणां योनिस्थानानां तत्र भावात्,

॥ मूल ॥

ए असं० । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अधोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया अपज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदिया पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोएतिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, अहोलोए तिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए संखिज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व

॥ भाषा ॥

संखि० । अधोलोके तिरश्चैलोके संख्यातगुणा । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवातेइंदिया अपज्जत्तगा । त्रैचनौमेलेसर्वथोडा तेंद्रिय अपर्याप्ता । उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असं० । ऊर्ध्वलोके भावनाबेंद्रियनोपरे ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्यातगुणा । तिर्छलोके असंखिज्जगुणा । त्रिलोके असंख्यातगुणा अहोलोए तिरियलोए असं० । अधोलोके तिरश्चैलोके असंख्यातगुणा । अहोलोए संखि० । अधोलोके संख्यातगुणा । तिरियलोए संखि० । तिरश्चैलोके संख्यातगुणा । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेइंदियपज्जत्तगा उड्ढलोए । त्रैचनौमेलै सर्वथोडा तेंद्रियपर्याप्ता ऊर्ध्वलोके । उड्ढलोए तिरियलोए असं० । ऊर्ध्वलोक तिरश्चैलोके असंख्यातगुणा । तिर्छलोके असं० । त्रिलोके असंख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए असं० । अधोलोके तिरश्चैलोके असंख्यातगुणा । अहोलोए संखि० तिरियलोए संखि० । अधोलोके संख्याता तिरश्चैलोके संख्यातगुणा बेंद्रियनोपरिं चौरिंद्रिय कहैछै । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिया

॥ टीका ॥

यथे दमौघिकं द्वींद्रियसूत्रं तथा पर्याप्ताऽपर्याप्तद्वींद्रियसूत्रौघिकत्रींद्रियपर्याप्तापर्याप्तौघिकचतुरिंद्रियपर्याप्तापर्याप्तसूत्राणि भावनीयानि, सांप्रत मौघिकपंचेंद्रियविषय मल्पबहुत्वमाह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया तेलोक्के इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चिंत्यमानाः पंचेंद्रियाः सर्वस्तोकाः त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसंस्पर्शिनो यतो ये ऽधोलोका दूर्द्धलोके ऊर्द्धलोकाद्वा ऽधोलोके शेषकायाः पंचेंद्रियायुरनुभवंत इलिकागत्या समुत्पद्यंते, येच पं चेंद्रिया ऊर्द्धलोकाद ऽधोलोके अधोलोका दूर्द्धलोके शेषकायत्वेन पंचेंद्रियत्वेनचो त्पित्सवः कृतमारणांतिकसमुद्घाताः समुद्घातवशा द्वोत्पत्ति

॥ मूल ॥

त्थोवा चउरिंदिया जीवा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा । तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अहोलो यतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदियाजीवा अपज्जत्तगा उड्ढलोए, उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, अ होलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्व त्थोवा चउरिंदिया जीवा पज्जत्तगा उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा

॥ भाषा ॥

जीवा उड्ढलोए। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा चौरिंद्रिय जीव ऊर्द्धलोके इममर्वभावना वेंद्रियनोपरि करवी। उड्ढलोयतिरियलोए असं० तिर्छालोके असं० अहो लोयतिरियलोए असं०। तिरिक्षैलोक असंख्यातगुणा अधोलोके तिरक्षैलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए संखि० तिरियलोए सं०। अधोलोके संख्यातगु णा तिरक्षैलोके संख्यातगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा चउरिंदिय अपज्जत्तगा उड्ढलोए। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा चतुरिंद्रिय जीव अपर्याप्ता ऊर्द्धलोके बेंद्रियनोपरे ऊर्द्धलोके। उड्ढलोयतिरियलोए असं० तिर्छालोके असं०। ऊर्द्धलोक तिरक्षैलोक अ० त्रिलोके असंख्यातगुणा। अहोलोयतिरियलोए असं० अधोलोक तिरक्षैलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए सं० तिरियलोए संखि०। अधोलोके संख्येयगुणा तिरक्षैलोके संख्यातगुणा। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थो वा चउरिंदियपज्जत्तगा उड्ढलोए। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा चतुरिंद्रिय जीव पर्याप्ता ऊर्द्धलोके। उड्ढलोए तिरियलोए अ० तिर्छालोके असं०। ऊर्द्धलोक ति

॥ टीका ॥

देशंयावत् विक्षिप्तात्मप्रदेशदंडाः पंचेंद्रियायु रद्याप्यनुन्नवंति ते त्रैलोक्यसंस्पर्शिन स्तेभा स्पेइति । सर्वस्तोका स्तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्व यरूपे संख्येयगुणाः प्रभूततराणा मुपपातेन समुद्घातेन वा यथोक्तप्रतरद्वयसंस्पर्शसंन्नवात्, तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके संख्येयगुणा अतिप्रभूत तराणा मुपपातसमुद्घाताभ्या मऽधोलोकतिर्यग्लोकसंज्ञप्रतरद्वयसंस्पर्शनावात्, तेभ्य ऊर्द्धलोके संख्येयगुणा वैमानिकाना मऽवस्थानन्नावात्, ते भ्यो ऽधोलोके संख्ययगुणा वैमानिकदेवेभ्यः संख्येयगुणानां नैरयिकाणां तत्र नावात्' तेभ्य स्तिर्यग्लोके ऽसंख्येयगुणाः संमूर्च्छिमजलचरखचरा दीनां व्यंतरज्योतिष्काणां संमूर्च्छिममनुष्याणांच तत्र नावात्, एवं पंचेंद्रियाऽपर्याप्तसूत्रमपि नावनीयं, पंचेंद्रियपर्याप्तसूत्र मिदं-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्ता उड्ढलोए इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चिंत्यमानाः पंचेंद्रियाः पर्याप्ताः सर्वस्तोका ऊर्द्धलोके प्रायोवैमानिकानामेव त त्र नावात्, तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वयरूपे ऽसंख्येयगुणा विवक्षितप्रतरद्वयप्रत्यासन्नज्योतिष्काणां तदध्यासितक्षेत्राश्रितव्यंतरतिर्यग्पंचेंद्रि

॥ मूल ॥

अहोलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए संखे० । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थो वा पंचिंदिया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए तिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया

॥ भाषा ॥

रछैलोके असख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए असं० । अधोलोक तिरछैलोके असंख्यातगुणा । अहोलोए सं० तिरियलोए सं० । अधोलोके तिरछैलोके संख्यातगुणा । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचेंदिया तिलोके उडढलोए तिरियलोए सं० अहोलोयतिरियलोए सं० । क्षेत्रमेलोने सर्व थोडा पचेंद्रिय तीनलोकना स्पर्शणहार ऊर्द्धना अधअधना ऊर्द्धसैलकागति उपजे तेथोडा ऊर्द्धलोक तिरछैलोके संख्यातगुणा । उडढलोए सं० अहो लोए असं० तिरियलोए असखिज्जगुणा । उपपातसमुद्घातवसे बेप्रतरपुरसे अधोलोक तिर्यक्लोके संख्यात० अतिप्रभूततर उपपातसमुद्घात न वसे बे प्रतरस्पर्शे ऊर्द्धलोके असंख्यातविमानमां उपजता तेहथी अधोलोके असंख्यातानारको मांहि उपजे घणा तेमाटे घणा मनुष्य तिरछैलोके उपजे।

यारणां वैमानिकव्यंतरज्योतिष्कविद्याधरचारणमुनितिर्यग्पंचेंद्रियाणा मूर्द्धलोके तिर्यग्लोके च गमनागमने कुर्वता मऽधिकृतप्रतरद्वयस्पर्शात्, तेभ्य स्त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः संख्येयगुणाः कथ मितिचेत् यतो ये भवनपतिव्यंतरज्योतिष्कवैमानिका विद्याधरा वा ऽधोलोकस्थाः कृतवैक्रियसमुद्घाता स्तथाविधप्रयत्नविशेषा दूर्द्धलोकविक्षिप्तात्मप्रदेशदंडा स्ते त्रीनऽपि लोकान् स्पृशंती ति संख्येयगुणा, तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके प्रतरद्वय रूपे संख्येयगुणा बहवोहिव्यंतराः स्वस्थानप्रत्यासन्नतया भवनपति स्तिर्यग्लोके ऊर्द्धलोकेवा व्यंतरज्योतिष्कवैमानिका देवा अधोलौकिकग्रामेषु स मवसरणादा वऽधोलोके क्रीडादिनिमित्तं च गमनागमनकरणत स्तथा समुद्रेषु केचित्तिर्यग्पंचेंद्रियाः स्वस्थानप्रत्यासन्नतया अपरे तदध्यासितक्षेत्रा श्रिततया यथोक्तं प्रतरद्वय स्पृशंति ततः संख्येयगुणाः तेभ्यो ऽधोलोके संख्येयगुणा नैरयिकाणां भवनपतीनांच तत्रा ऽवस्थानात्, तेभ्य स्तिर्यग्



अपज्जत्तया, तेलोक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा तिरियलोए संखिज्जगुणा खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पंचिंदिया पज्जत्ता उड्ढलोए उड्ढलोयतिरियलोए असं०, तेलुक्के असं०, अहोलोयतिरियलोए संखेज्ज० अहोलोए संखेज्ज० तिरियलोए असंखेज्ज०, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए



खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचेंदिय अपज्जत्तगा तिर्छालोके । चेत्रनोमेले सर्वथोडा पचेंद्रिय अपर्याप्ता तिरछेत्रिलोके भावना ओघनी परि कहवो । उड्ढ लोयतिरियलोए असं० । ऊर्द्धलोके तिरछेलोके असख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए संखिज्जगुणा उड्ढलोए संखिज्जगुणा अहोलोए सं० तिरियलोए असंखिज्जगुणा । अधोलोके तिरछेलोके संख्यातगुणा ऊर्द्धलोके अधोलोके संख्यातगुणा तिरछेलोके असंख्यातगुणा । खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पचेंदि यपज्जत्तगा उड्ढलो उड्ढलोयतिरियलोए असं० । चेत्रनोमेले सर्वथोडा पचेंद्रिय पर्याप्ता ऊर्द्धलोके वैमानिकने भावे तेहथी ऊर्द्धलोके तिर्यकलोके अ संख्यातगुणा वेप्रतरपुरसे ज्योतिषी विद्याधरचारण श्रमणने गमनागमने । तिर्छालोके संखिज्जगुणा । त्रिलोके संख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए । अ

॥ मूल ॥

विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया पज्जत्तया उड्ढलोए तिरियलोए तिरियलोयअहोलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया, खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि

॥ भाषा ॥

धोलोक तिरछेलोकें संख्यातगुणा घणाव्यंतर स्वस्थान पणा माटे। सं० तिरियलोए संखेज्जगुणा खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढवीकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तेहथी तिर्यकलोके संख्यातगुणा पंचेंद्रियस्वस्थान तिर्यंचमनुष्यमांहि नावे। हिवे एकेंद्रयनो अल्पबहुत्व कहेछे क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा पृथिवीकाइक ऊर्द्धलोक तिर्यलोके भावना सर्वपाछलो परिजाणवो। अधोलोकें तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए असं० तिलोके असं० उड्ढलोए असं० अहोलोए विसेसाहिया। तिर्यकलोकें असंख्यातगुणा त्रिलोकें असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोक असंख्यातगुणा अधोलोकेविशेषाधिक। खित्ताणुवाएण सव्वत्थोवा पुढवीकाइय अपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा पृथ्वीकाइया अपर्याप्ता ऊर्द्धलोक तिरछेलोके भावनापाछलो परे। ऊर्द्धलोक अधोलोके विशेषाधिक। तिरियलोए असं० तिलोके असं० उड्ढलोए असंखि०। तिरछेलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्द्धलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए विसेसाहिया। अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढवीकाइयपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए। क्षेत्रनीमेले सर्वथोडा पृथिवीकाइयापर्याप्ता ऊर्द्धलोके तिर्यकलोके भावनापाछलोपरे। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। अधोलोकें विशेषाधिक तिरछेलोके। तिरियलोए असं० तिलोके असं० उड्ढलोए असं० अहोलोए विसेसाहिया। तिरछेलोके

सेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसे साहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि सेसाहिया तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसे साहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा आउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोएतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए वि सेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसे साहिया। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया,



असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएणं सर्वस्तोका आउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए। चेवनौमेले सर्वथोडा अपकाइया अपर्याप्ता ऊर्ध्वलोके तिरछेलोके। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असं०। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिर्लोके अ० उड्ढलोए अ०। त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए विसेसाहिया खित्ताणुवाएणं। अधोलोके विशेषाधिक चेवनौमेले सर्वथोडा। आउकाइयअपज्जत्तगा उड्ढलोयतिरियलोए। अपकाइया अपर्याप्ता ऊर्ध्वलोके तिरछेलोके सर्व एकेंद्रियनोपरें भावना। अहोलोए तिरियलोए विसेसाहिया। अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए असंखेज्जगुणा तिर्लोके अ०। तिरछेलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा। उड्ढलोए असं० अहोलोए विसेसाहिया। ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएणं सर्वस्तोका आउकाइयपज्जत्तगा। चेवनौमेले सर्वथोडा अपकाइयापर्याप्ता। उड्ढलोयतिरियलोए विसेसाहिया। ऊर्ध्वलोके तिर्यक्लोके। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अ०। अधोलोके तिर्यक्लोके विशेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिर्लोके अ० उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया। त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएणं सर्वस्तोका तेउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए। चेव

तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्ज०, उड्ढलोए असंखिज्ज०, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ताणु
वाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि
यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ता
णुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरि
यलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया। खेत्ता
णुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। तिरियलोए अ



नीमेले सर्वथोडा तेउकाइया ऊर्ध्वलोक तिर्यक्लोके भावनापाकलौपरे। अहोलोयतिरियलोए विशेषाधिया तिरियलोए अ०। अधोलोके तिरछेलोके वि
शेषाधिक तिरछेलोके असंख्यातगुणा। तिलोके असं० उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया। त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधो
लोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइयअपज्जत्तगा। चेचनीमेले सर्वथोडा तेउकाइया अपर्याप्ता। उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरि
यलोए विसेसाहिया। ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलोके अ० उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया।
तिरछेलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तेउकाइयपज्जत्तगा
चेचनीमेले सर्वथोडा तेउकाइयापर्याप्ता। उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया। ऊर्ध्वलोके तिर्यक्लोके अधोलोके तिर्यक्लोक विशे
षाधिक। तिरियलोए अ० तिलोके अ० उड्ढलोए अ०। तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा। अहोलोए वि० खित्ताणुवाएण सव्वत्थो
वा। अधोलोके विशेषाधिक चेचनीमेले सर्वथोडा। वायुकाइया उड्ढलोयतिरियलोए। वायुकाइया ऊर्ध्वलोके तिर्यक्लोके। अहोलोयतिरियलोए विसे०
अधोलोके तिरछेलोके विशेषाधिक। तिरियलोए अ० तिलोके अ० उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया। तिरछेलोक असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्या

॥ मूल ॥

संखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वाउकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलोक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अधोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । तेलुक्के असंखेज्जगुणा

॥ भाषा ॥

तगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुण अधोलोके विशेषाधिक । खित्ताणुवाएणं सर्वस्तोका वायुकायिक अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका । त्रैचनौ मेलैसर्वस्तोका वायुकायिका अपर्याप्ता ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके । अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिरश्चैलोके असंख्यातगुणा । तिर्यग्लोके असं० ऊर्ध्वलोके असं० अधोलोके विशेषाधिका । त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक । खित्ताणुवाएणं सर्वस्तोका वायुकायिकपर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके । त्रैचनौमेलै सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका ऊर्ध्वलोके तिर्यग्लोके । अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिर्यग्लोके असं० । अधोलोके तिरश्चैलोके विशेषाधिक तिरश्चैलोके असंख्यातगुणा । तिर्यग्लोके असं० ऊर्ध्वलोके असं० अधोलोके विशेषाधिका । त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक । खित्ताणुवाएणं सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके । अधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिका तिरश्चैलोके असंख्यातगुणा । तिर्यग्लोके असं० ऊर्ध्वलोके असं० अधोलोके विशेषाधिका । त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक । खित्ताणुवाएणं सर्वस्तोका वनस्पतिकायिका अपर्याप्तका ऊर्ध्वलोकतिर्यग्लोके । त्रैचनौमेलै सर्वस्तोका वनस्प

॥ टीका ॥

लोके ऽसंख्येयगुणा स्तिर्यक्पंचेंद्रियमनुष्यव्यंतरज्योतिष्काणा मवस्थानात्, तदेव मुक्तं पंचेंद्रियाणा मल्पबहुत्व मिदानी मेकेंद्रियभेदानां पृथिवी कायिकादीनां पंचाना मौघिकपर्याप्तापर्याप्तभेदेन प्रत्येकं त्रीणित्रीण्य ऽल्पबहुत्वान्या ऽह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुढविकाइया उड्ढलोयतिरिय

॥ मूल ॥

उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया अपज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखिज्जगुणा, तेलुक्के असंखिज्जगुणा, उड्ढलोए असंखेज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइया पज्जत्तया उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा, तेलुक्के असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोए विसेसाहिया । खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तस्सकाइया तेलुक्के

॥ भाषा ॥

तिकाइया अपर्याप्ता ऊर्ध्वलोके तिरश्चैलोके । अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए अ० तिलोके अ० । अधोलोके तिरश्चैलोके विशेषाधिक तिरश्चैलोके त्रिलोके असंख्यातगुणा । उड्ढलोए अ० अहोलोए विसेसाहिया । ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा अधोलोके विशेषाधिक । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा वणस्सइकाइयपज्जत्तगा । चेवनौमेलै सर्वथोडा वनस्पतिकाइयापर्याप्ता । उड्ढलोयतिरियलोए अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया । ऊर्ध्वलोके तिरश्चैलोके अधोलोके तिरश्चैलोकै विशेषाधिक । तिरियलोए अ० तिलोके अ० उड्ढलोए अ० । तिरश्चैलोके असंख्यातगुणा त्रिलोके असंख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके असंख्यातगुणा । अहोलोएविसेसाहिया खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाईया । अधोलोके विशेषाधिक चेवनौमेलै सर्वथोडा त्रसकाइया । तिर्लोके उड्ढलोयतिरियलोए असं० अहोलोयतिरियलोए संखि० । त्रिलोके परसें ते इहां पचेंद्रियनोपरें भावना ऊर्ध्वलोके तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा अधोलोके तिरश्चैलोके संख्यातगुणा । उड्ढलोए संखि० अहोलोए संखि० तिरियलोए असं० । ऊर्ध्वलोके संखिज्जगुणा अधोलोके संखिज्जगुणा तिरश्चैलोके असंख्यातगुणा । खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाईय अपज्जत्तगा । चेवनौमेलै सर्वथोडा त्रसकाइया अपर्याप्ता । तिलोके उड्ढलोयतिरियलोय असं० अहोलोय

लोए इत्यादि ॥ इमानि पंचदशापिसूत्राणि प्रागुक्तैकेंद्रियसूत्रवद् भावनीयानि सांप्रत मौधिकत्रसकायापर्याप्तापर्याप्तत्रसकायसूत्राण्या ह-खेत्ताणुवा एणं सव्वत्थोवा तसकाइया तेलोक्के इत्यादि ॥ इमानि पंचेंद्रियसूत्रवद् भावनीयानि गतं क्षेत्रद्वारं २४ । इदानीं बंधद्वारं वक्तव्यं, बंधोपलक्षितं द्वारं तदाह-एएसिणं भंते ! जीवाणं आउयस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाण मित्यादि ॥ इहा युःकर्मबंधकाबंधकानां पर्याप्ताऽपर्याप्तानां सुप्तजाग्रतां



उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखेज्जगुणा, अहोलोए संखेज्जगुणा, तिरियलोए असंखिज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तस्सकाइया अपज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा तसकाइया पज्जत्तया तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखिज्जगुणा, अहोलोयतिरियलोए संखेज्जगुणा, उड्ढलोए संखिज्जगुणा, अहोलोए संखिज्जगुणा, तिरियलोए असंखेज्जगुणा। दारं २४। एएसिणं भंते ! जीवाणं आउस्स कम्मस्स बंधगाणं अबंधगाणं अपज्जत्ताणं पज्जत्ताणं



तिरियलोए संखिज्जगुणा । त्रिलोके ऊर्ध्वलोके तिर्यक्लोके असंख्यातगुणा अधोलोके तिर्यक्लोके संखिज्जगुणा । उड्ढलोए संखिज्जगुणा अहोलोए संखि० । ऊर्ध्वलोके संख्यातगुणा अधोलोके संख्यातगुणा तिरछैलोके असंख्यातगुणा । खित्ताणुवाएणं सर्व्वस्तोवा त्रसकायिकापर्याप्ता । त्रिलोके उड्ढलोयतिरियलोय असं० । त्रिलोके ऊर्ध्वलोकतिर्यक्लोके असंख्यातगुणा । अहोलोयतिरियलोए संखि० उड्ढलोए सं० । अधोलोकतिर्यक्लोके संख्यातगुणा ऊर्ध्वलोके संख्यातगुणा । अहोलोए सं० तिरियलोए असं० द्वारं । अधोलोके संखिज्जगुणा तिरछैलोके असंख्यातगुणा इति तीजे ३ पदे २४ । चौवीसमो द्वार जाणिवो ॥ एएसिणं भंते जीवाणं । हिवे बंधद्वार कहैछै—हेभगवन् एहजीवनै । आउकम्मस्सबंधगाणं अबंधगाणं पज्जत्तगाणं अपज्जत्तगाणं । आयुकर्मनाबंधकनै आठकर्मना अबंधकनैपर्याप्ता अपर्याप्तावैं । सुत्ताणं जागराणं समोहयाणं असमोहयाणं । सूतानै जा

॥ टीका ॥

समवहतासमवहतानां सातावेदकाऽसातवेदकानां इंद्रियोपयुक्तनोइंद्रियोपयुक्तानां साकारोपयुक्ताऽनाकारोपयुक्तानां समुदायेनाऽल्पबहुत्वं वक्तव्यं, तत्र प्रत्येकं तावद्ब्रूमो येन समुदाये सुखेन तद ऽवगम्यते तत्र सर्वस्तोका आयुषो बंधका अबंधकाः संख्येयगुणाः, यतो ऽनुभूयमानभवायुरपि त्रिभागाऽवशेषपारभाविक मायु जीवा बध्नंति त्रिभागत्रिभागाद्यऽवशेषे वा ततो द्वौ त्रिभागा वऽबंधकाल एकं त्रिभागो बंधकाल इति। बंधकेभ्यो ऽबंधकाः संख्येयगुणा' स्तथा सर्वस्तोका अपर्याप्तकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणा, एतच्च सूक्ष्मजीवान ऽधिकृत्य वेदितव्यं' सूक्ष्मेषु हि बाह्यो व्याघातो न भवति तत स्तदऽभावा द्बहूनां निष्पत्तिः स्तोकानामेव चा ऽनिष्पत्ति स्तथा सर्वस्तोकाः सुप्ता जागराः संख्येयगुणाः, एतदऽपि सू

॥ मूल ॥

सुत्ताणं जागराणं समोहयाणं असमोहयाणं सातावेदगाणं असातावेदगाणं इंदियउवउत्ताणं णोइंदियउवउत्ताणं सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहिया वा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा आउस्स कम्मस्स बंधगा अपज्जत्तया संखिज्जगुणा, सुत्ता संखिज्जगुणा, संमोहया संखिज्जगुणा, सातावेदगा संखिज्जगुणा, इंदियउवउत्ता संखिज्जगुणा, अणागारोवउत्ता

॥ भाषा ॥

गताने समोह्यानें असमोह्यानें। सायावेयगाणं असायावेयगाणं। सातावेदकनें असातावेदकनें। इंदिओवउत्ताणं नोइंदियोवउत्ताणं। इंद्रियोपयुक्तनै नोइंद्रियोपयुक्तनै। सागारोवउत्ताणं अणागारोवउत्ताणय। साकारोपयुक्तनै अनाकारोपयुक्तनै। कयरे २ हिंतो अप्पावाजाव विसेसाहियावा गो० सव्वत्थोवा जीवा आउकम्मस्सबंधगा अपज्जत्तगा संखिज्जगुणा सत्तासंखिज्जगुणा। एहमां किहां २ थो थोडा अथवा घणा सरीषा विशेषाधिक हुवे। हेगो तम सर्वथोडा जीव आयुकर्मनाबंध त्रिभागविशेषे परभवनो आयुःबंधनो थोडा तेहथी अबंधक असख्यातगुणाछे बेत्रिण भावना अबंधकाल त्रिभाग बंधकालमाटें अबंधक असंख्यातगुणा सर्वथोडा अपर्याप्ताए सूक्ष्मजीवाश्रीजांणिवो सर्वथोडा सताने जांगता संख्यातगुणाए पिणसूक्ष्मएकेंद्रियनें जमाटे अपर्याप्ता सूता कहिये। असंमोहयासंखिज्जगुणा सायवेयगा स० इंदिओवउत्ता सं० अणागारोवउत्ता सं० सागारोवउत्ता सं० नोइंदिओवउत्ता वि०।

॥ टीका ॥

त्मानं केंद्रियान ऽधिकृत्य वेदितव्यं, यस्माद ऽपर्याप्ताः सुप्ता एव लभ्यंते जागराअपि, उक्तं मूलटीकायां-जम्हा अपज्जत्ता सुत्ता लब्भंति, केइ अपज्जत्तगा जेसिं संखिज्जा समया अतीता ते थोवा इयरे विथोवगा चेव सेसा जागरा पज्जत्तगा ते संखिज्जगुणा इति, जागराः पर्याप्ता स्ते न संख्येयगुणा इति, तथा समवहताः सर्वस्तोका यतइह समवहता मारणांतिकसमुद्घातेन परिगृह्यंते मारणांतिक श्च समुद्घातो मरणकाले न शेषकालं तत्राऽपि न सर्वेषा मिति सर्वस्तोका' स्तेभ्यो ऽसमवहता संख्येयगुणा जीवनकालस्या ऽतिबहुत्वात्, तथा सर्वस्तोकाः सातवेदका यत इह ब हवः साधारणशरीरा अल्पे प्रत्येकशरीरिणः साधारणशरीरा श्च बहवो ऽसातवेदकाः स्वल्पाः सातवेदिनः प्रत्येकशरीरिण स्तेभ्यूयांसः, सातवेद काः, स्तोका असातवेदिन, स्ततः स्तोकाः सातवेदका, स्तेभ्यो ऽसातवेदकाः संख्येयगुणा स्तथा सर्वस्तोका इंयोपयुक्ता इंद्रियोपयोगो हि प्रत्यु त्पन्नकालविषय स्ततः तदुपयोगकालस्य स्तोकत्वात्, पृच्छासमये स्तोका अवाप्यंते यदातु तमेवार्थं इंद्रियेण दृष्ट्वा विचारयत्यो ऽयसंज्ञया ऽपि त दा नेंद्रियोपयुक्तः स व्यपदिश्यते ततो नेन्द्रियोपयोगस्या ऽतीताऽनागतकालविषयतया बहुकालत्वा त्संख्येयगुणा नोइंद्रियोपयुक्ता स्तथा सर्व स्तोका अनाकारोपयुक्ता अनाकारोपयोगकालस्य स्तोकत्वात्' साकारोपयुक्ताः संख्येयगुणा' अनाकारोपयोगकाला त्साकारोपयोगस्य संख्येयगु

॥ मूल ॥

**संखेज्जगुणा, सागारोवउत्ता संखिज्जगुणा, नोइंदियउवउत्ता विसेसाहिया, असातावेदगा विसेसाहिया, असंमोहिया विसेसाहिया, जागरा विसेसाहिया, पज्जत्तगा विसेसाहिया, आउस्स कम्मस्स अबंधगा**

॥ भाषा ॥

ने पर्याप्ता जागता कहिये। तेमाटें असंख्यातगुणा सर्वथोडा समोहित मरणसमुद्घात आश्रीले थकिसें मरणांतसमुद्घात मरणकाले हुवें। तेमाटें अ संमोहना संख्यातगुणा छे जीववानाकाल घणा माटें सर्वथोडा सातावेदनीय प्रत्येकशरीरी साधारण शरीरी असातावेदकने असंख्यातगुणा सर्वथो डा इंद्रियोपयुक्त असंख्यातगुणा इंद्रियोपयुक्त प्रत्युत्पन्नकालें ते उपयोगकाल थोडोछे पृच्छासमयें थोडा पामियें नोइंद्रियोपयुक्तकालाश्री अनोतानाग तो विषय घणा माटें असंख्यातगुणा सर्वथोडा अनाकारोपयोगनाकाल थोमाटें। आसायवेयगा वि० असमोहया वि० जागरविसे० पज्जत्तगा वि०

॥ टीका ॥

णत्वात्, इदानीं समुदायगतं सूत्रोक्त मऽल्पबहुत्वं भाव्यते, सर्वस्तोका जीवाः आयुःकर्मणो बंधकाः आयुर्बंधकालस्य प्रतिनियतत्वात्, तेभ्यो ऽपर्याप्ताः संख्येयगुणा, यस्मा दपर्याप्ता अनुभूयमानभवत्रिभागाद्यऽवशेषायुषः पारभाविक मायु बंध्नंति ततो द्वौ त्रिभागाव बंधकाल एको बंधकाल इति बंधकालाद ऽबंधकालः संख्येयगुणः तेन संख्येयगुणाएवा ऽपर्याप्ता आयुर्बंधकेभ्यः, तेभ्यो ऽपर्याप्तेभ्यः सुप्ताः संख्येयगुणायस्माद ऽपर्याप्तेषु च पर्याप्तेषु च सुप्ता लभ्यंते, पर्याप्ताश्चा पर्याप्तेभ्यः संख्येयगुणा इत्य ऽपर्याप्तेभ्यः सुप्ताः संख्येयगुणा स्तेभ्यः समवहताः संख्येयगुणा बहूनां

॥ मूल ॥

विसेसाहिया, दारं २५। खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणा अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया, तिरियलोए असंखेज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्जगुणा अहोलोए विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला उड्ढदिसाए अहोदिसाए विसेसाहिया उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपच्छिमेणय दोवि तुल्ला असंखेज्जगुणा। दाहिणपुरच्छिमेणं उत्तरपच्छिमेणय दोवि तुल्ला विसेसाहिया पुरच्छि

॥ भाषा ॥

आउकम्मस्सअबंधगा द्वारं। तेहथी साकारोपयोग असंख्यातगुणा अनाकारोपयोग थी साकारोपयोगनो काल घणो छै पर्याप्ता विशेषाधिक आयुःकर्मना बंधथी अबंधक विशेषाधिक एतले बंधद्वार २५। मो तीजे पदे अल्पबहुत्वनोंहिपूरो हुवो॥ खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा पुग्गल तिलोके उड्ढलोयतिरियलोए अणंतगुणा। हिवै पुद्गलद्वार कहेछै—क्षेत्रनै प्रमाणेकरी द्रव्यथी जे महास्कन्ध ते त्रैलोक्यव्यापी थोडा पुद्गलछै ऊर्द्धलोक तिरछैलोके अनंतगुणा। ऊर्द्धलोकनो अधप्रदेशछै प्रतरनेफरसें तेमाटें अनंतगुणा छै। अहोलोयतिरियलोए विसेसाहिया तिरियलोए असंखिज्जगुणा उड्ढलोए असंखिज्जगुणा। तेहथी अधोलोक तिर्यकलोके प्रागुक्त प्राकार बेप्रतरनै फरसें विशेषाधिकमाटें तेहथी तिर्यकलोके असंख्यातगुणा क्षेत्रअसंख्यातगुणा माटे ऊर्द्धलोकें असंख्यातगुणा तिर्यकलोकथी ऊर्द्धलोक असंख्यातगुणा माटे। अहोलोए विसेसाहिया दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पुग्गल उड्ढदिसाए अहोदिसाए विसेसाहिया उत्तरपुरत्थिमेणं। अधोलोके विशेषाधिक क्षेत्रक्षेत्रअधिका माटे ७ राजकांइक अधिकावनो विशेषाधिक हिवैदिशि चारप्रदेश घणो ७ राजप्रमा

॥ टीका ॥

पर्याप्तेषु ऽपर्याप्तेषु च मारणान्तिकसमुद्घातेन समवहतानां सदा लभ्यमानत्वात्, तेभ्यः सातावेदकाः सङ्ख्येयगुणा आयुर्बन्धकापर्याप्तकसुप्तेष्वपि सातवेदकानां लभ्यमानत्वात्, तेभ्य इन्द्रियोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणा असातवेदकानामपि इन्द्रियोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेभ्यो ऽनाकारोपयोगोपयुक्ताः इन्द्रियोपयोगेषु नो इन्द्रियोपयोगेषु वा ऽनाकारोपयोगस्य लभ्यमानत्वात्, तेभ्यः साकारोपयुक्ता सङ्ख्येयगुणा इन्द्रियोपयोगेषु नोइन्द्रियोपयोगेषु साकारोपयोगकालस्य बहुत्वात् तेभ्यो नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिकाः नोइन्द्रियोऽनाकारोपयुक्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, साकारानाकारोपयुक्तानामपि तत्र प्रक्षेपात्, अत्र विनेयजनानुग्रहार्थम ऽसद्भावस्थापनया निदर्शन मुच्यते-इह सामान्यतः किल साकारोपयुक्ता द्विनवत्यधिकं शतं १९२ तेच किल द्विधा इन्द्रियसाकारोपयुक्ता नोइन्द्रियसाकारोपयुक्ताश्च तत्रेन्द्रियसाकारोपयुक्ताः किलाऽतीवस्तोका इति विंशतिसंख्या कल्प्यन्ते, शेषं द्विसप्तत्युत्तरं शतं १७२। नोइन्द्रियसाकारोपयुक्ता नोइन्द्रियाऽनाकारोपयुक्ताश्च द्विपञ्चाशत्कल्पा स्ततः सामान्यतः साकारोपयुक्ते

॥ मूल ॥

मेणं असंखेज्जगुणा पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेणं विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं तेलुक्के उड्ढलोयतिरियलोए असंखेज्जगुणाइं अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइं उड्ढलोए

॥ भाषा ॥

ण अधोलोक समधिक ७ सातराज कांइक विशेषाधिक छुवे ईशानकूणे विद्युत्प्रभमालयवाननव कूट तेहथी उपरिलनपट्टल । दाहिणपच्चत्थिमेणय दोवितुल्ला असंखिज्जगुणा दाहिणपुरत्थिमेणं उत्तरपच्चत्थिमेणयदोवितुल्ला विसेसाहिया पुरच्छिमेणं असंखिज्जगुणा पच्चच्छिमेणं विसेसाहिया दाहिणेण विसेसाहिया उत्तरेणं विसेसाहिया। दक्षिण पश्चिमें बेसरिषोनें असख्यातगुणे अधिकाछे तेहथी दक्षिणपूर्वे उत्तरपश्चिमें प्रत्येकें २ विशेषाधिक स्वस्थान कें परस्परेसरिषा इहां सौमनसगंधमादननामव कूट तिहां सूक्ष्मपुद्गलप्रभूत उपजताछे तेहथी पूर्वे असंख्यातगुणा चेतना असंख्यातपणा माटे तेहथी पश्चिमें विशेषाधिक अधोलोकग्रामनें सर्वेभावे घणा पुद्गलना थानकछे दक्षिणे विशेषाधिक भवननैसुखनेभावें पुद्गलविशेषाधिकछे उत्तरपुद्गल विशेषाधिक मानसरोवरछे तेमाटे कह्यो पुद्गलनो अल्पबहुत्वद्रव्यार्थो कहेछे। खित्ताणुवाएणं सव्वत्थोवा दव्वाइं तिलोके उड्ढलोयतिरियलोए असंखगु

ञ्य इन्द्रियसाकारोपयुक्तेषु विंशतिकल्पेष्वऽपनीतेषु द्विपञ्चाशत्कल्पेषु अनाकारोपयुक्तेषु तेषु मध्ये प्रक्षिप्तेषु द्वेशते चतुर्विंशत्यधिके भवतः ततः साकारोपयुक्तेभ्यो नोइन्द्रियोपयुक्ता विशेषाधिका स्तेभ्यो ऽसातवेदका विशेषाधिका इन्द्रियोपयुक्तानामऽप्य ऽसातवेदकत्वात् १० तेभ्यो ऽसमवहता विशेषाधिकाः सातवेदकानामऽप्यऽसमवहतत्वभावात्, तेभ्यो जागरा विशेषाधिकाः समवहतानामऽपि केषांचि ज्जागरत्वात् १२। तेभ्यः पर्याप्ता विशेषाधिकाः सुप्तानामऽपि केषांचि त्पर्याप्तत्वात्, सुप्ताहि पर्याप्ताऽपर्याप्ता अपि भवन्ति जागरास्तु पर्याप्ता एवेतिनियमः १३। तेभ्यो ऽपि पर्याप्तेभ्य आयुःकर्माऽबन्धका विशेषाधिका अपर्याप्तानामऽप्यायुःकर्माबन्धकभावात् १४। इदमेवाऽल्पबहुत्वं विनेयजनानुग्रहाय स्थापनारा शिन्नि रुपदर्श्यते-इह द्वे पंक्ती उपर्यधोभावेन न्यस्येते तत्रोपरितन्यां पंक्तौ आयुःकर्मबन्धका अपर्याप्ताः सुप्ताः समवहताः सातवेदका इन्द्रियोपयु क्ता अनाकारोपयुक्ताः क्रमेण स्थाप्यंते तस्या अधस्तन्यां पंक्तौ तेषामेव पदानामधस्तात् यथासंख्येय मायुरबन्धका पर्याप्ता जागरा असमवहता अ सातवेदका नोइन्द्रियोपयुक्ताः साकारोपयुक्ताः स्थापनाचेय माद्यमिति तत्परिमाणं संख्यायामेकः स्थाप्यते ततः शेषपदानि किल जघन्येन संख्ये यगुणानीति द्विगुणो द्विगुणांक स्तेषु स्थाप्यते तद्यथा-द्वौ चत्वार अष्टौ षोडश द्वात्रिंशत् चतुःषष्टिः सर्वोऽपि जीवराशि रनन्तानन्तस्वरूपो ऽप्य ऽसत्कल्पनया षट्पंचाशदधिकशतद्वयपरिमाणः परिकल्प्यते ततो ऽस्मा द्राशेरायुर्बन्धकादिगताः सङ्ख्या शोधयित्वा यत् शेष मऽवतिष्ठति तदायुर



असंखेज्ज० अहोलोए असंखेज्जगुणाइं तिरियलोए संखिज्जगुणाइं दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं अहेदिसाए उड्ढदिसाए असंखेज्जगुणाइं उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपच्छिमेणं दोवि तुल्लाइं असंखेज्जगुणाइं दाहिण



णाइं अहोलोयतिरियलोए विसेसाहियाइं उड्ढलोए असंखिज्जगुणाइं अहोलोए असंतगुणाइं तिरियलोए संखिज्जगुणाइं। क्षेत्राश्रो सर्वथोडा द्रव्यधर्मा स्तिकायादित्रिणें लोकें फरस्याछै धर्मास्तिकायपुद्गल महास्कंध समुद्घातजीवनें पणिज तीनलोक फरसें तेहद्रव्यथोडाछै अनंताजीवनें पुद्गलनें द्रव्यैक री जीवद्रव्यने फरसेंकरीने अनतगुणा हुवै तेहथी ऊर्द्धलोकातिर्यकलोकें प्रागुक्त स्वरूपप्रतरबेनै फरसें बेअनंतगुणा हुवै। तेहथी अधोलोकातिर्यकलोकें वि

बन्धकादीनां परिमाणे स्थापयितव्यं तद्यथा-आयुरबन्धकादिपदे द्वे शते पञ्चपञ्चाशदधिके शेषेषु यथोक्तक्रमं द्वेशते चतुःपञ्चाशदधिके द्वेशते द्वि पञ्चाशदधिके द्वेशते अष्टचत्वारिंशदधिके द्वेशते चत्वारिंशदधिके द्वेशते चतुर्विंशत्यधिके द्विनवत्यधिके शतम्, एवंचसति उपरितनपंक्तिगतान्यनाकारोपयुक्तपर्यन्तानि पदानि सङ्ख्येयगुणानि द्विगुणद्विगुणाऽधिकत्वात्, ततः परं साकारोपयुक्तपदमऽपि संख्येयगुणं त्रिगुणत्वात्, शेषाणितु नो इन्द्रियोपयुक्तादीनि प्रतिलोमं विशेषाधिकानि द्विगुणत्वस्यापि क्वचिदभावात्। तदेवं गतं बंधद्वार मिदानीं पुद्गलद्वारमाह ॥ खेत्ताणुवाएणं सव्व त्थोवा पोग्गलातेलोक्के इत्यादि ॥ इदमल्पबहुत्वं पुद्गलानां द्रव्यार्थत्व मङ्गीकृत्य व्याख्येयं तथा सम्प्रदायात् तत्र क्षेत्रानुपातेन क्षेत्रानुसारेण चिन्त्य मानाः पुद्गला स्त्रैलोक्ये त्रैलोक्यसंस्पर्शिनः सर्वस्तोकाः सर्वस्तोकानि त्रैलोक्यव्यापीनीति पुद्गलद्रव्याणीति भावः, यस्मा न्महास्कन्धाएव त्रैलोक्य व्यापिन स्तेचाल्पा इति तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके अनन्तगुणा यतस्तिर्यग्लोकस्य य त्सर्वोपरितनमेकप्रादेशिकं प्रतरं यच्चोर्द्धलोकस्य सर्वाधस्तनमेक

---

प्रादेशिकं प्रतर मेते द्वे अपि प्रतरे ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोक उच्यते-तेचाऽनन्ताः सङ्ख्येयप्रादेशिका अनन्ता असङ्ख्यप्रदेशिका अनन्ता अनन्तप्रदेशिकाः स्क न्धाः स्पृशन्तीति द्रव्यार्थतया अनन्तगुणा स्तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोकप्रागुक्तप्रकारेण प्रतरद्वयरूपे विशेषाधिकाः क्षेत्रस्य आयामविष्कम्भाभ्या मना क्विशेषाधिकत्वात्, तेभ्य स्तिर्यग्लोके असङ्ख्येयगुणाः क्षेत्रस्याऽसङ्ख्येयगुणत्वात्, तेभ्य ऊर्द्धलोके असङ्ख्येयगुणा यत स्तिर्यग्लोकक्षेत्रा ऊर्द्ध[illegible] सङ्ख्येयगुणमिति तेभ्यो ऽधोलोके विशेषाधिका ऊर्द्धलोकादऽधोलोकस्य विशेषाधिकत्वात्, देशोनसप्तरज्जुप्रमाणो ह्यूर्द्धलोकः [illegible] ण स्त्वऽधोलोकः, सम्प्रति दिगन्तपातेना ऽल्पबहुत्वमाह-दिसाणुवाएणं सव्वत्थोवा पोग्गला ऊर्द्धदिसाए इत्यादि ॥ दिगनुपातेन दिगनुसारेण चिन्त्यमानाः पुद्गलाः सर्वस्तोका ऊर्द्वदिशि इह रत्नप्रभासमभूमितलमेरुमध्ये अष्टप्रादेशिको रुचक स्तस्माद्विनिर्गता श्चतुःप्रदेशाः ऊर्द्धादिक्याव ल्लो कान्त स्तत स्तत्र सर्वस्तोकाः पुद्गला स्तेभ्यो ऽधोदिशि विशेषाधिका अधोदिगपि रुचकादेव प्रभवति चतुःप्रदेशा याव ल्लोकान्त स्तत स्तस्यावि

शेषाधिकत्वात्' तत्र पुद्गला विशेषाधिका स्तेभ्यः उत्तरपूर्वस्यां दक्षिणपश्चिमायांच प्रत्येकमऽसंख्येयगुणाः स्वस्थानेतु परस्परं तुल्या सत स्ते द्वेऽपि दिशौ रुचकाद्विनिर्गते मुक्तावलिसंस्थिते तिर्यग्लोकांतमऽधोलोकांतमूर्द्वलोकांतं पर्यवसिते तेन क्षेत्रस्या ऽसङ्ख्येयगुणत्वा त्तत्र पुद्गला असंख्येय गुणाः क्षेत्रंतु स्वस्थाने समामिति पुद्गला अपि स्वस्थाने तुल्या स्तेभ्योऽपि दक्षिणपूर्वस्या मुत्तरपश्चिमायांच प्रत्येकं विशेषाधिकाः स्वस्थानेतु परस्प

॥ टीका ॥

पुरच्छिमेणं उत्तरपच्चच्छिमेणय दोवि तुल्लाइं विसेसाहियाइं पुरच्छिमेणं असंखेज्जगुणाइं पच्चच्छिमेणं वि सेसाहियाइं दाहिणेणं विसेसाहियाइं उत्तरेणं विसेसाहियाइं। एएसिणं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं संखेज्जप

॥ मूल ॥

शेषाधिक लिगारेक ७ राज अधिकाभणी तेहथी ऊर्द्धलोकें असंख्यातगुणा क्षेत्र असंख्यातगुणा माटें अधोलोकें अनंतगुणा अधोलोकग्रामें क्षेत्रभावद्रव्य कालना अनंतापर्याय माटें तिर्यकलोकें कालसद्भावविशेषाधिक असंख्यातगुणा हुवें । दिसाणुवाएण सव्वत्थोवा इंदव्वाइं अहोदिसाइं उड्ढदिसाइं अ णंतगुणाइं उत्तरपुरच्छिमेणं दाहिणपच्चच्छिमेण दोवितुल्लाइं असंखिज्जगुणाइं । हिवेंदिशि आश्री सामान्यपणें द्रव्यनी अल्पबहुत्वकहेछे—दिशिनें अनु सारें सर्वथोडाद्रव्य अधोदिशि पाकलीपरें बषाणवो तेहथी ऊर्द्धदिशि अनंतगुणा किम इहां ऊर्द्धलोकें मेरुनी पांचसैंयोजन स्फाटिकमयकांड तिहां चंद्रा दित्य प्रभायेंकरी ऊर्द्धदिसें अनंतगुणाछे तेहथी ईशानकूणे तथा नैऋतिकूणें ए बेदिशि सरीषाछे क्षेत्रथी असंख्यातगुणा माटें । दाहिणपुरच्छिमेणं उत्त रपुरच्छिमेणय दोवितुल्लाइं विसेसाहियाइं । असंख्यातगुणा अग्निकूणे वायवकूणेए बेसरिषाछे अनेविशेषाधिकछे विद्युत्प्रभमाल्यवंत कूटाश्रीधूमकांता दि उक्तपुद्गल घणां उपजेछे तेमाटें विशेषाधिकछे । पुरच्छिमेणं असंखिज्जगुणाइं पच्चच्छिमेणं विसेसाहियाइं दाहिणेणं विसेसाहियाइं उत्तरेणं वि० । तेहथी पूर्वनोदिशिद्रव्य असंख्यातगुणा क्षेत्रअसंख्यातगुणा माटें तेहथी पश्चिमें विशेषाधिक अधोलोकग्रामादि सुखोभावघणा पुद्गलद्रव्य रहित तेहथी दक्षिणे विशेषाधिक घणें सुखनेभावें । तेहथी उत्तरदिशि विशेषाधिक मानसरोवरने विषे जीवद्रव्यनी तेजस्कायेंण पुद्गलस्कंधनीय द्रव्यघणाछे तेमाटें विशेषाधिक कहिये । एएसिणं भंते परमाणुपुग्गलाणं संखिज्जपएसियाणं असंखिज्जपएसियाणं अणंतपएसियाणं खंधाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठप

॥ भाषा ॥

रं तुल्याः कथं विशेषाधिका इति चेत् उच्यते-इह सौमनसगन्धमादनेषु सप्त २ कूटानि विद्युत्प्रभमाल्यवतो नव २ तेषुच कूटेषु धूमिका अवश्या यादिसूक्ष्मपुद्गलाः प्रभूताः सम्भवन्ति ततो विशेषाधिकाः स्वस्थानेतु क्षेत्रस्य पर्वतादेश्च समानत्वा त्तुल्या स्तेभ्यः पूर्वस्यां दिशि असंख्येयगुणाः क्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात्, तेभ्यः पश्चिमायां विशेषाधिका अधोलौकिकग्रामेषु शुषिरभावतो बहूनां पुद्गलानामऽवस्थानभावात्, तेभ्यो दक्षिणस्यां विशेषाधिका बहुभवनशुषिरभावात्, तेभ्य उत्तरस्यां विशेषाधिकाः यत उत्तरस्यामाऽयामविष्कंभाभ्यां संख्येययोजनकोटीकोटीप्रमाणं मानसं सर स्तत्र ये जलचराः पनकसेवालादयश्च सत्वा स्ते अतिबहव इति तेषां ये तैजसकार्मणपुद्गला स्ते अधिकाः प्राप्यंते इति पूर्वोक्तेभ्यो विशेषाधिकाः तदेवं पुद्गलविषयमल्पबहुत्वमुक्त मिदानीं सामान्यतो द्रव्यविषयं क्षेत्रानुपातेन आह-खेत्ताणुवाएणं सव्वत्थोवाइं दव्वाइं तेलोक्के इत्यादि ॥ क्षेत्रानुपातेन चिन्त्यमानानि द्रव्याणि सर्वस्तोकानि त्रैलोक्यसंस्पर्शानि यतो धर्मास्तिकायाऽधर्मास्तिकायाकाशास्तिकायद्रव्याणि पुद्गलास्तिकायस्य महास्कन्धाजीवास्तिकायस्य मारणान्तिकसमुद्घातेना तीवसमवहता जीवा स्त्रैलोक्यव्यापिन स्तेचाल्पे इति सर्वस्तोकानि, तेभ्य ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोके प्रागुक्तस्वरूपप्रतरद्वयात्मके अनन्तगुणानि अनंतैः पुद्गलद्रव्यै रनंतै र्जीवद्रव्यै स्तस्य संस्पर्शनात्, तेभ्यो ऽधोलोकतिर्यग्लोके विशेषाधिकानि ऊर्द्धलोकतिर्यग्लोकादधोलोकतिर्यग्लोकस्य मनाग् विशेषाधिकत्वात्, तेभ्य ऊर्द्धलोके असंख्येयगुणानि क्षेत्रस्याऽसंख्येयगुणत्वात्' तेभ्यो ऽधोलोके अनन्तगुणानि' कथमितिचेत् उच्यते इहाधोलोकग्रामेषु कालोस्ति तस्यच कालस्य तत्तत्परमाणुसंख्येयाऽसंख्येयाऽनन्तप्रादेशिकद्रव्यक्षेत्रकालभावपर्या

## देसियाणं असंखिज्जपदेसियाणं अणंतपदेसियाणय खंधाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठ पदेसट्ठयाए



एसट्ठयाए। हिवें परमाणुपुद्गल संख्यातप्रदेश अनंतप्रदेशाश्री अल्पबहुत्वकहेछे—हेभगवन् एहने परमाणुपुद्गलद्रव्यने संख्यातप्रदेशी असंख्यातप्रदेशीने अनंतप्रदेशीने स्कंधनें द्रव्यथी प्रदेशीथी द्रव्यनें अर्थे प्रदेशनें द्रव्यार्थ प्रदेशार्थए मांहि। कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए परमाणुपुग्गलादव्वट्ठयाए अणंतगुणा। केहां २ थी थोडा घणा ४ हेगौतम सर्वथोडा अनंतप्रदेशी मिली नोपनाखंध तेथोडा स्वभावेछे द्रव्यथी

॥ टीका ॥

यसम्बन्धवशा त्प्रतिपरमाणवादिद्रव्यऽमनन्तता ततो भवन्त्यऽधोलोके ऽनंतगुणानि तेभ्य स्तिर्यग्लोके सङ्ख्येयगुणानि अधोलौकिकग्रामप्रमाणानां खण्डानां मनुष्यलोके कालद्रव्याधारभूते सङ्ख्याना मवाप्यमानत्वात्, साम्प्रतिदिगनुपातेन सामान्यतो द्रव्याणा मल्पबहुत्वमाह-दिसाणुवाएणं सव्व त्थोवाइं दव्वाइं अहे दिसाए इत्यादि ॥ दिगनुपातेन दिगनुसारेण चिन्त्यमानानि सामान्यतो द्रव्याणि सर्वस्तोकानि अधोदिशि प्राग्व्यावर्णित स्वरूपायां तेभ्य ऊर्द्वदिश्यऽनन्तगुणानि किंकारणमितिचेत्, उच्यते-इह ऊर्द्वलोके मेरोः पञ्चयोजनशतकं स्फटिकमयं काण्डं तत्र चन्द्रादित्यप्रभानुप्रवेशात् द्रव्याणां क्षणादिकालप्रतिज्ञागोस्ति कालस्यच प्रागुक्तनीत्या प्रतिपरमाणवादिद्रव्यमानन्त्या तेभ्यो ऽनन्तगुणानि तेभ्य उत्तरपूर्वस्यामीशान्यां दक्षिणपश्चिमायां नैर्ऋतकोणे इत्यर्थः' असङ्ख्येयानि क्षेत्रस्यासंख्येयगुणत्वात्, स्वस्थाने तु द्वयान्यपि परस्परं तुल्यानि समानक्षेत्रत्वात्, तेभ्यो दक्षिणपूर्वस्यामाग्नेय्यामुत्तरपश्चिमायां वायव्यकोणे इतिभावः, विशेषाधिकानि विद्युत्प्रभमाल्यवन्तकूटाश्रितानां धूमिकावश्यायादिश्लक्ष्णपुद्गलद्रव्याणां बहूनां सम्भवा त्तेभ्यः पूर्वस्यां दिशि असंख्येयगुणानिक्षेत्रस्या संख्येयगुणत्वात्, तेभ्यः पश्चिमायां विशेषाधिकानि अधोलौकिकग्रामेषु सुषिरत्वतो बहूनां पुद्गलद्रव्याणामवस्थानात्, ततो दक्षिणस्यां दिशि विशेषाधिकानि बहुभवनसुषिरत्वात्, तत उत्तरस्यां विशेषाधिकानि तत्र मानससरसि जीवद्रव्याणां तदाश्रितानां तैजसकार्मणपुद्गलस्कन्धद्रव्याणां च भूयसां भावात्, साम्प्रति परमाणुपुद्गलानां संख्येयप्रदेशानां असंख्येयप्रदेशानामनन्तप्रदेशानां परस्परमल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! परमाणुपुग्गलाणं संखेज्जपएसियाण मित्यादि ॥ पाठसिद्धं ॥ नवर मत्राल्पबहुत्व भावनायां सर्वत्र तथा स्वाभाव्यं कारणं वाच्यं साम्प्रत्येतेषामेव क्षेत्रप्राधान्येनाल्पबहुत्वमाह-एएसिणं भंते ! एगपएसोगाढाणमित्यादि ॥ इह क्षेत्रा

॥ मूल ॥

कयरे२ हिंतो अप्पावा४ ? गो० ! सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा दव्वट्ठयाए परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए अ

॥ भाषा ॥

परमाणु पुद्गलअनंतगुणाछे । संखिज्जपएसिया खंधादव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपएसिया खंधा दव्वट्ठयाए असं० पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंत पएसियाखंधा । संख्यातप्रदेशखंध द्रव्यथी संख्यातगुणाछे खभावे असंख्यातप्रदेशी खंध द्रव्यथी असंख्यातगुणाछे सर्वथीडा अनंतप्रदेशीखंध । परमाणुप

॥ टीका ॥

धिकारतः क्षेत्रस्य प्राधान्या त्परमाणुकाद्यनन्ताणुकाः स्कन्धा अपि विवक्षितैकप्रदेशावगाढा आधाराधेययोरभेदोपचारा देकद्रव्यत्वेन व्यवस्थियते ते इत्थभूता एकप्रदेशावगाढाः पुद्गलाः पुद्गलद्रव्याणि सर्वस्तोकानि लोकाकाशप्रदेशप्रमाणानीत्यर्थः' नहि स कश्चि देवंभूत आकाशप्रदेशोस्ति य

॥ मूल ॥

णंतगुणा संखेज्जपदेसिया खंधा दव्वठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपदेसिया खंधा दव्वठयाए असंखेज्जगुणा पदेसठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खंधा पदेसठयाए परमाणुपोग्गला अणंतगुणा संखेज्जपदेसिया खंधा पदेसठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा पदेसठयाए असंखेज्जगुणा दव्वठपदेसठयाए सव्वत्थोवा अणंतपदेसिया खधा दव्वठयाए तेचेव पदेसठयाए अणंतगुणा परमाणुपोग्गला दव्वठपदेसठयाए अणंतगुणा संखिज्जपदेसिया खधा दव्वठयाए संखिज्जगुणा तेचेवय पदेसठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपएसिया खंधा दव्वठयाए असखिज्जगुणा तेचेव पदेसठयाए असंखेज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगपदेसो

॥ भाषा ॥

गालापएसठयाए अणंतगुणा संखिज्जपएसियाखधा पएसठयाए संखिज्जगुणा। परमाणुपुद्गल अप्रदेशार्थयो अनंतगुणाछे संख्यातप्रदेशीखंध प्रदेशार्थेकरी संख्यातगुणा। असंखिज्जपएसियाखंधा पएसठयाए असंखिज्जगुणा दव्वठपएसठयाए। असख्यातप्रदेशी खंधप्रदेशार्थे असख्यातगुणा द्रव्यार्थेप्रदेशार्थेकरी सव्वत्थोवा अणंतपएसियाखधा दव्वठयाए तचेवपएसठयाए अणतगुणा। सर्वथोडा अनंतप्रदेशीखंध द्रव्यथी तिम सर्वप्रदेश अनतगुणाछे। परमाणुपुग्गला दव्वठयाए पएसठयाए अणतगुणा। परमाणुपुद्गलद्रव्यार्थ प्रदेशार्थेकरी अनंतगुणाछे। संखिज्जपएसियाखंधा दव्वठयाए संखिज्जगुणा तचेव पएसठयाए संखिज्जगुणा। सख्यातप्रदेशीखंधा द्रव्यार्थे संख्यातगुणा ते सर्वप्रदेशसख्यातगुणा। असखिज्जपएसियाखधा दव्वठयाए असंखिज्जगुणा तचेव पएसठयाए असं०। असख्यातप्रदेशीखंधा द्रव्यार्थे असख्या० तिमजीवप्रदेशार्थे असख्या०। एएसिणं भंते एगपएसोगाढ संखिज्जपएसोगाढं असंखि० सोगाढाणय पुग्गलाणं। हेभगवन् एकप्रदेशावगाढनै सख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलने असंख्यप्रदेशावगाढपुद्गलने। दव्वठयाएपएसठयाए कयरे२ हिंतो अप्पावा४ जा०

एकप्रदेशावगाहनपरिणामपरिणतानां परमाणवादीना मवकाशप्रदानपरिणामेन परिणतो नवर्त्तते इति' तेभ्यः संख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणाः, कथमितिचेत् ? उच्यते-इहापि क्षेत्रस्यप्राधान्यात् द्व्यणुकाद्यनन्ताणुकस्कन्धा द्विप्रदेशावगाढा एकद्रव्यत्वेन विवक्षन्ते तानि

॥ टीका ।

॥ मूल ॥

गाढाणं संखेज्जपदेसोगाढाणं असंखिज्जपदेसोगाढाणय पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगपदेसोवगाढा पुग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जपएसोवगाढा पुग्गला दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए संखिज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखेज्जगुणा दव्वट्ठपदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयपदेसट्ठयाए संखेज्जपदेसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा तेचेय पएसट्ठयाए संखेज्जगुणा

॥ भाषा ॥

द्रव्यथौ प्रदेशथौ द्रव्यार्थं प्रदेशार्थंथौ किद्दांर थौथाडा घणा इत्यादि हेगौतम । सव्वत्थोवा पुग्गला एगपएसोगाढा दव्वट्ठयाए संखिज्जपएसोगाढा पुग्गला दव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा । सर्वथोडा पुद्गलप्रदेशावगाढद्रव्यार्थं संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेशौ संख्यातगुणा। असंखिज्जपएसोगाढा पुग्गला दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा। असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यार्थं असंख्यातगुणा । पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पुग्गला पएसट्ठयाए। प्रदेशार्थं सर्वथोडा प्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेयथौ। संखिज्जपएसोगाढा पुग्गला पएसट्ठयाए संखिज्जगुणा । संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेयथौ संख्यातगुणा । असंखिज्जपएसोगाढा पुग्गला पएसट्ठयाए असंखिज्जगुणा । असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गलप्रदेयथौ असंख्यातगुणा । दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा पुग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए । द्रव्यार्थप्रदेशार्थंथौ सर्वथोडा एकप्रदेशावगाढ पुद्गलद्रव्यार्थं अप्रदेशार्थं । संखिज्जपएसोगाढा पुग्गलादव्वट्ठयाए संखिज्जगुणा । संख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गल द्रव्यार्थं संख्यातगुणा । तंचेव पएसट्ठयाए स० । तिसद्दोज प्रदेशार्थं संख्यातगुणा । असंखिज्जपएसोगाढा पुग्गला दव्वट्ठयाए ।

॥ टीका ॥

च तथाभूतानि पुद्गलद्रव्याणि पूर्वोक्तेभ्यः संख्येयगुणानि तथाहि-सर्वलोकप्रदेशा स्तत्त्वतो ऽसंख्येया अपि असत्कल्पनया दश परिकल्प्यन्ते तेच प्रत्येकचिन्तायां दशैवेति दश एकप्रदेशावगाढानि पुद्गलद्रव्याणि लब्धानि तेष्वेव दशसु प्रदेशेष्वन्यग्रहणान्यमोचणद्वारेण बहवो द्विकसंयोगा लभ्यन्ते इति भवन्त्येकप्रदेशावगाढेभ्यो द्विप्रदेशावगाढानि पुद्गलद्रव्याणि संख्येयगुणानि' एवं तेभ्योपि त्रिप्रदेशावगाढानि एवमुत्तरोत्तरं याव दुत्कृष्ट संख्येयप्रदेशावगाढानि, ततः स्थितमेतत् एकप्रदेशावगाढेभ्यः सख्येयप्रदेशावगाढपुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा इति, एवं तेभ्यो ऽसंख्येयप्रदेशावगाढाः पुद्गला द्रव्यार्थतया संख्येयगुणा असङ्घातस्य असङ्घातभेदाभिन्नत्वात्, प्रदेशार्थतासूत्रं द्रव्यार्थपर्यायार्थतासूत्रञ्च सुगमत्वात् स्वयं भाव

॥ मूल ॥

असंखिज्जपएसोगाढा पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखेज्जगुणा तेचेव पएसट्ठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगसमयठितीयाणं संखिज्जसमयठितीयाणं असंखिज्जसमयठितीयाणय पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जसमयठितीया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखिज्जसमयठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पोग्गला पदेसट्ठयाए संखेज्जसमयठिईया पोग्गला

॥ भाषा ॥

असंख्यातप्रदेशावगाढ पुद्गला द्रव्यार्थं । असंखिज्जगुणा तेचेव पएसट्ठयाए असं० । असंख्यातगुणा तिमहौजप्रदेशार्थं असंख्यातगुणा एएसिण भंते एगसमयठिईयाणं संखिज्जसमयठिईयाण । हेभगवन् एह एकसमयनी प्रतिमानी संख्यातसमयनी प्रतिमानी । असंखिज्जसमयठिईयाणय पुग्गलाण दव्वट्ठयाए असंखिज्जसमयनी प्रतिमापुद्गला द्रव्यथी । पएसट्ठयाए पदेसट्ठपएसट्ठयाए । प्रदेशथी द्रव्यार्थप्रदेशार्थं । कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गो० । किहां २ थी अल्पघणा इत्यादि हेगौतम । सव्वत्थोवा एगसमयठिईया पुग्गला दव्वट्ठयाए । सर्वथोडा एकसमयनी प्रतिमापुद्गलछै तेहथी । संखिज्जसमयठितीया पुग्गला दव्वट्ठयाए संखि० । संख्यातसमयनी प्रतिमापुद्गलछै तेहथी संख्यातगुणा । असंखिज्जसमयठितीया पुग्गला दव्वट्ठयाए असं० । असंख्यातसमयनी प्र

॥ मूल ॥

पएसट्ठयाए संखिज्जगुणा असंखिज्जसमयट्ठिईया पोग्गला पदेसट्ठयाए असंखिज्जगुणा दव्वट्ठयपदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगसमयट्ठिईया पुग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए संखेज्जसमयट्ठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा तेचेव पदेसट्ठयाए संखेज्जगुणा असंखिज्जसमयट्ठिईया पोग्गला दव्वट्ठयाए असंखिज्जगुणा तेचेव पदेस ट्ठयाए असंखिज्जगुणा । एएसिणं भंते ! एगगुणकालगाणं संखिज्जगुणकालगाणं असंखेज्जगुणकालगाणं अणंतगुणकालगाणय पोग्गलाणं दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! जहा परमाणुपोग्गला तहा नाणियव्वा, एवं संखेज्जगुणकालयाणवि, एवं सेसाणवि वन्नगंधरस

---

तिमापुद्गलछे तेहथी द्रव्य असंख्यातगुणा । पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा एगसमयट्ठितीया । प्रदेशार्थे सर्वथोडा एकसमयस्थितानि । पुग्गला पएसट्ठयाए संखिज्जसमयट्ठितीया । पुद्गलप्रदेशार्थे संख्यातसमयस्थितिना । पुग्गला पएसट्ठयाए संखि० । पुद्गलप्रदेशार्थे संख्यातगुणा । असंखिज्जसमयट्ठितीया पुग्गला पएसट्ठयाए असं० दव्वट्ठपएसट्ठयाए । असंख्यातसमयनो स्थितिपुद्गलप्रदेशो असंख्यातगुणा द्रव्यप्रदेशार्थे । सव्वत्थोवा एगमयट्ठितीया पुग्गला दव्वट्ठपएसट्ठयाए सर्वथोडा एकसमयनो स्थितिमान पुद्गलद्रव्यप्रदेशने । संखिज्जसमयट्ठितीया पुग्गला दव्वट्ठयाए संखि० । संख्यातसमयनो प्रतिमा पुद्गलद्रव्यार्थे संख्यातगुणो । तंचेव पएसट्ठयाए संखि० । तिमहीजप्रदेशार्थे संख्यातगुणा । असंखिज्जसमयट्ठितीया पुग्गला दव्वट्ठयाए असं० । असंख्यातसमयस्थितिना पुद्गलद्रव्यथी असंख्यातगुणा । तंचेव पएसट्ठयाए असं० एएसिणं भंते । तिमहीजप्रदेशे असंख्यातगुणा हेभगवन् । एगगुणकालगाणं संखिज्जगुणकालगाणं एहएकगुणकालादिकालने संख्यातगुणाकाले । असंखिज्जगुणकालगाणं । असंख्यातगुणा कालने । अणंतगुणकालगाणय पुग्गलाणं दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए । अनंतगुणाकालने पुद्गलने द्रव्यथी प्रदेशथी । दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे२ हिंतो अप्पावा४ गो० । द्रव्यथी प्रदेशार्थे किहां२ अल्प घणा इत्यादि हेगो० । सव्वत्थोवा जहा परमाणुपुग्गला तहा भा० । सर्वथोडा जिमपरमाणुपुद्गल तिम सर्वकहिवो एवं संखिज्जगुणकालगाणवि एवं सेसावि वर्णगंधरसा भाणि

॥ भाषा ॥

नीयम्, कालभावसूत्राण्यपि सुगमत्वा स्वयमभावयितव्यानि नवरं॥ जहा पोग्गला तहा भाणियव्वा इति॥ यथा प्राक् सामान्यतः पुद्गला उक्तास्तथा एकगुणकालकादयोपि वक्तव्याः, तेचैवं-सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा एगगुणकालगा परमाणुपोग्गला दव्वट्ठयाए एगगुणकालगा अणंतगुणा संखेज्जपएसिया खंधा एगगुणकालगा संखेज्जगुणा असंखेज्जपएसिया खंधा एगगुणकालगा असंखेज्जगुणा पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा अणंतपएसिया खंधा एगपरमाणुपोग्गला एगगुणकालगा अणंतगुणा इत्यादि॥ एवं संख्येयगुणकालकाना मनन्तगुणकालकानामपि वाच्य मेवं शेषवर्णगन्धरसा अपि वक्तव्याः, कर्कशमृदुगुरुलघवः स्पर्शा यथा एकप्रदेशाद्यवगाढा भणिता स्तथा वक्तव्याः तेचैवं-सव्वत्थोवा एगपएसोगाढा एगगुणकक्खडफासा दव्वट्ठयाए संखेज्जपएसोगाढा एगगुणकक्खडफासा दव्वट्ठयाए संखेज्जगुणा इति, एवं संख्येयगुणककर्कशस्पर्शा असंख्येयगुणककर्कशस्पर्शा वाच्याः, एवं मृदुगुरुलघव अवशेषा श्चत्वारः शीतादयः स्पर्शा यथा वर्णादय उक्ता स्तथा वक्तव्या स्तत्र पाठोप्युक्तानुसारेण सुगमत्वात् स्वयं भावनीयो, गतं पुद्गलद्वारं॥ २६॥ इदानीं महादंडकं विवक्षु र्गुरुमापृच्छति-अहभंते! त्यादि॥ अथ भदन्त! सर्वजीवाल्पबहुत्वं सर्वजीवाल्पबहुत्वबक्तव्यतात्मकं



गंधा भाणियव्वा, फासाणं कक्कडमउयगरुयलहुयाणं जहा एगपदेसोगाढाणं भणियं तहा भाणियव्वं सेसा फासा जहा वण्णा भणिया तहा भाणियव्वा दारं २६। अह भंते! सव्वजीवप्पबहुं महादंडयं वत्तइस्सामि सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियमणुस्सा मणुस्सीओ संखेज्जगुणाओ बादरतेउकाइयापज्जत्तया असंखिज्जगुणा



यव्वा। इम संख्या० कालपिण इम बीजा वर्ण गंधरस सर्व कहिवा। फासाणं कक्खडमउयगुरुयलहुयाणं। फरसथी कर्कशमृदुगुरुलघु। जहा एगपएसोगाढाणं भणिय तहाभा०। एहनै एकजिम प्रदेशावगाढ कह्यो तिमकहिवो। अवसेसा फासा जेजहा वण्णा भणिया तहा भा० द्वार। थाकताफरस जिम कह्या तिम कहिवा पुद्गलद्वार इति ३ पदे २६ द्वार समाप्त हुवे। हिवै महादंडककहेछे जीवनो अल्पबहुत्व। अह भंते सव्वजीवप्पबहुमहादंडयं वत्तइस्सामि हेभगवन् एह सर्वजीवनो अठा आगे। सव्वत्थोवागब्भवक्कंतियमणुस्सा। सर्वथोडा जीवगर्भजमनुष्य। मणुस्सीओ संखिज्जगुणाओ व्यायरतेउकाइयपज्जत्तया

॥ टीका ॥

महादण्डकं वक्तयिष्यामि रचयिष्यामीति तात्पर्यार्थः, अनेन एतत् ज्ञापयति-तीर्थंकरानुज्ञामात्रसाध्येन एव भगवान् गणधर सूत्ररचनां प्रतिप्रवर्त्तते नपुनः श्रुताभ्यासपुरस्सरमिति, यद्वैतज्ज्ञापयति कुशलेपि कर्मणि विनयेन गुरुमनापृच्छा न प्रवर्त्तितव्यं किन्तु तदनुज्ञापुरस्सर मन्यथा विनेयत्वायोगात् विनेयस्यहि लक्षणमिदं-गुरोर्निवेदितात्मायो गुरुभावानुवर्त्तकः । मुक्त्यर्थंचेष्टतेनित्यं सविनेयःप्रकीर्त्तितः ॥ १ ॥ गुरुरपि यः प्रच्छनी

॥ मूल ॥

अणुत्तरोववाइया देवा असंखेज्जगुणा उवरिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा मज्झिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा हेट्ठिमगेवेज्जगा देवा संखेज्जगुणा अच्चुएकप्पे देवा संखेज्जगुणा आरणे कप्पे देवा संखेज्जगुणा पाणए कप्पे देवा संखेज्जगुणा आणएकप्पे देवा संखिज्जगुणा अहे सत्तमाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा छट्ठीए तमाए पुढवीए नेरइया असं० सहस्सारे कप्पे देवा असंखिज्जगुणा महासुक्के कप्पे देवा असंखिज्जगुणा पंचमाए धूमप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० लंतए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा, चउत्थीए पंकप्प

॥ भाषा ॥

असंखिज्जगुणा अणुत्तरोववाइया असंखिज्जगुणा । तेहथो मनुष्यणी सख्यातगुणी २७ गुणी तेहथो बादरतेउकायपर्याप्ता असख्यातगुणा असंख्यात अनुत्तरोपपातदेवता असंख्यातगुणा । उवरिमगविज्जगादेवा संखिज्जगुणा । तेहथो उपरिलाग्रिकग्रैवेयकदेवता संख्यातगुणा । मज्झिमगविज्जगादेवा संखिज्जगुणा हिट्ठिमगेविज्जगादेवा संखिज्जगुणा । मध्यमग्रैवेयकत्रिकनादेवता संख्यातगुणा तेहथो हेठलात्रिकनादेवता संख्यातगुणा । अच्चुएकप्पदेवा संखिज्जगुणा । तेहथो अच्युतदेव संख्यातगुणा । आरणेकप्पेदेवा संखिज्जगुणा पाणएकप्पेदेवा संखिज्जगुणा । आनतनादेव संख्यातगुणा । अहेसत्तमाए पुढवीएनेरइया संखिज्जगुणा छट्ठीएतमाए पुढवीएनेरइया असंखिज्जगुणा । तेहथो नीचे सातमीनरकनानारको संख्यातगुणा छट्ठीनरकनानारको असख्यातगुणा । सहस्सारेकप्पदेवा असंखिज्जगुणा । तेहथो सहस्रारकल्पनादेवता असंख्यातगुणा । महासुक्केकप्पेदेवा असंखिज्जगुणा । तेहथो महाशुक्रनादेव असंख्यातगुणा । पचमीए धूमप्पभाए पुढवीएनेरइया असंखिज्जगुणा । पांचमीनरकनानारको असख्यातगुणा । लंतएकप्पदेवा असंखिज्जगुणा

॥ टीका ॥

यः स एवंरूपो-धर्मज्ञोधर्मकर्त्ताच सदाधर्मप्रवर्त्तकः ॥ सत्वेभ्योधर्मशास्त्रार्थं देशकोगुरुरुच्यते ॥ १ ॥ इति, महादण्डकं वक्तंयिष्यामीत्युक्तं ततः प्रतिज्ञातमेव निर्वाहयति-सव्वत्थोवा गब्भवक्कंतियमणुस्सेत्यादि ॥ सर्वस्तोका गर्भव्युत्क्रान्तिका मनुष्या सख्येयकोटीकोटीप्रमाणत्वात् १, तेभ्यो मानुष्यो मनुजस्त्रियः सङ्ख्येयगुणाः सप्तविंशतिगुणत्वात्, उक्तञ्च-सत्तावीसगुणापुण मणुयाणंतदहियाचेवेति ॥ २ ॥ ताभ्यो बादरतेजस्कायिकाः पर्याप्ता असङ्ख्येयगुणाः कतिपयवर्गन्यूनावलिकाघनसमयप्रमाणत्वात् ३, तेभ्यो ऽनुत्तरोपपातिनो देवा असङ्ख्येयगुणाः, क्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्त्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ४, तेभ्य उपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवाः सङ्ख्येयगुणाः वृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्त्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वा देतदपि कथमवसेय मितिचे दुच्यते-विमानबाहुल्यात्, तथाह्यनुत्तरदेवानां पञ्चविमानानि विमानशतं तूपरितनग्रैवेयकत्रिकप्रतिविमानवा ऽसङ्ख्या देवा यथा २ चाधोवर्त्तीनि विमानानि तथा २ देवा अपि प्राचुर्येण लभ्यन्ते, ततोऽवसीयते अनुत्तरोपपातिदेवेभ्यो वृहत्तरक्षेत्रपल्योपमासङ्ख्येयभागवर्त्त्याकाश

॥ भाषा ॥

प्रदेशराशिप्रमाणा उपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवा एव मुत्तरत्रापि भावना कार्या यावदानतकल्पः ५, तेभ्योप्युपरितनग्रैवेयकत्रिकदेवेभ्यो मध्यमग्रैवेयकत्रिकदेवाः सङ्ख्येयगुणाः ६, तेभ्यो प्यधस्तनग्रैवेयकत्रिकदेवाः संख्येयगुणाः ७, तेभ्यो प्यच्युतकल्पदेवाः सङ्ख्येयगुणाः ८, तेभ्यो प्यारणकल्पदेवाः संख्येयगुणा यद्यप्यारणाच्युतकल्पौ समश्रेणीकौ समविमानसंख्याकौच तथापि कृष्णपाक्षिका स्तथास्वाभाव्यात् प्राचुर्येण दक्षिणस्यां दिशि समुत्पद्यन्ते नोत्तरस्यां बहव श्च कृष्णपाक्षिकाः स्तोकाः शुक्लपाक्षिका स्ततो च्युतकल्पदेवापेक्षया आरणकल्पे देवाः संख्येयगुणाः ९, तेभ्योपि प्राणतकल्पे देवाः संख्येयगुणाः १०, तेभ्योप्यानतकल्पे देवाः संख्येयगुणा भावना आरणकल्पव त्कर्त्तव्याः ११, तेभ्यो ऽधःसप्तमनरकपृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणाः श्रेण्यसंख्येयभागगतनभ प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १२, तेभ्यः षष्ठपृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणा एतच्च प्रागेव दिगनुपातेन नैरयिकाल्पबहुत्वचिन्तायां भावितं १३, तेभ्योपि सहस्रारकल्पदेवा असंख्येयगुणाः षष्ठपृथिवीनैरयिकपरिमाणहेतुश्रेण्यसंख्येयभागापेक्षया सहस्रारकल्पदेवपरिमाण

हेतोः श्रेण्यसंख्येयभागस्था संख्येयगुणत्वात् १४, तेभ्यो महाशुक्रे कल्पे देवा असंख्येयगुणा विमानबाहुल्यात्, तथाहि-षट्सहस्राणि विमानानां सहस्रारकल्पे चत्वारिंशत् सहस्राणि महाशुक्रे अन्यच्चाधोविमानवासिनो देवा बहुबहुतराः स्तोकस्तोकतरा श्चोपरितनोपरितनविमानवासिनः ततः सहस्रारदेवेभ्यो महाशुक्रकल्पे देवा असंख्येयगुणाः १५। तेभ्योपि पञ्चमपृथ्वप्रज्ञाभिधाननरकपृथिव्या नैरयिका असंख्येयगुणाः वृहत्तमश्रेण्य संख्ययभागवर्त्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १६। तेभ्योपि लान्तके कल्पे देवा असंख्येयगुणा अतिवृहत्तरश्रेण्यसंख्येयभागगतनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् १७। तेभ्योपि चतुर्थ्यां पङ्कप्रज्ञायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणा युक्तिप्रागुक्तैव भावनीया १८। तेभ्योपि ब्रह्मलोके कल्पे देवा असंख्येयगुणा युक्तिप्रागुक्तैव १९। तेभ्योपि तृतीयस्यां वालुकाप्रज्ञायां पृथिव्यां नैरयिकाः संख्येयगुणाः २०। तेभ्योपि माहेन्द्रकल्पे देवा असंख्येयगुणाः २१। तेभ्योपि सनत्कुमारकल्पे देवा असंख्येयगुणाः २१। तेभ्योपि सनत्कुमारकल्पे देवा असंख्येयगुणा युक्तिस्सर्वत्रापि प्रागुक्तैव २२। तेभ्यो द्वितीयस्यां शर्कराप्रज्ञायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणा एतेच सप्तमपृथिवीनारकादयो द्वितीयपृथिवीनरकपर्यन्ताः प्रत्येकं स्वस्थाने चिन्त्यमानाः स



ज्ञाए पुढवीए नेरइया असंखेज्जगुणा बंभलोए कप्पे देवा असंखेज्जगुणा तच्चाए वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखेज्जगुणा माहिंदे देवा असंखिज्जगुणा सणंकुमारे कप्पे देवा असंखेज्जगुणा दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीए णेरइया असं० संमुच्छिममणुस्सा असंखेज्ज० ईसाणे कप्पे देवा असं० ईसाणे कप्पे देवीओ



चउत्थीए पंकप्पभाए पुढवीएनेरइया असंखिज्जगुणा। लांतकदेवता असंख्यातगुणा तेहथी चोथीनारकनानारकी असंख्यातगुणा। बंभलोएकप्पेदेवा असंखिज्जगुणा। ब्रह्मलोकनादेव असंख्यातगुणा। तच्चीए वालुयप्पभाए पुढवीएनेरइया असंखिज्जगुणा। तीजीनरकनारकी असंख्यातगुणा। माहेंदेकप्पे देवा असं० सणंकुमारेकप्पदेवा असंखिज्जगुणा। माहेंद्रकल्पनादेव असंख्यातगुणा सनत्कुमारदेव असंख्यातगुणा। दोच्चाए सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइया असं० संमुच्छिनमणुस्सा असं०। बीजीनरकनानारकी असंख्यातगुणा तेहथी संमूर्च्छिममनुष्य असंख्यातगुणा। ईसाणेकप्पदेवा असंखिज्जगुणा

॥ टीका ॥

वैपि घनीकृतलोकश्रेण्यसंख्येयभागवर्त्तिनभःप्रदेशराशिप्रमाणा द्रष्टव्याः केवलं श्रेण्यसंख्येयभागोऽसंख्येयभेदत्रिन्न स्तत इत्थमसंख्येयगुणतया अल्प बहुत्वमभिधीयमानं न विरुध्यति २३ । तेभ्यो द्वितीयनरकपृथिवीनारकेभ्यः समूच्छिममनुष्या असंख्येयगुणा स्तेहि अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः सम्बन्धिनि तृतीयवर्गमूलेन गुणिते प्रथमवर्गमूले यावान् प्रदेशराशि स्तावत्प्रमाणानि खण्डानि यावन्त्यकस्यामेव प्रादेशिक्यांश्रेणौ भवन्ति तावत्प्रमाणाः २४ । तेभ्य ईशाने कल्पे देवा असंख्येयगुणा यतोऽङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः सम्बन्धिनि द्वितीये वर्गमूले तृतीयेन वर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि र्भवति तावत्प्रमाणा स्तु घनीकृतस्य लोकस्यैकप्रादेशिकीषु श्रेणिषु यावन्तो नभःप्रदेशा स्तावत्प्रमाणा ईशानकल्पगतो देवदेवीसमुदाय स्तद्

॥ मूल ॥

संखे०, सोहम्मे कप्पेदेवा संखेज्ज० सोहम्मे कप्पे देवीउ संखेज्जगुणाउ भवणवासीदेवा असंखेज्जगुणा भवणवासिणीउ देवीउ संखिज्जगुणाउ । इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए णेरइया असंखिज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा खहचरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीउ संखिज्जगुणाउ थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा असंखेज्जगुणा थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीउ संखिज्जगुणाउ जलयरपं

॥ भाषा ॥

ईशाणेकल्पेदेवीओ संखिज्जगुणीओ । तेहंतो ईशानदेव असंख्यातगुणा तेहंतो ईशाननीदेवी असंख्यातगुणी । सोहम्मदेवा संखिज्जगुणा सौहम्मेकल्पे देवीओ संखिज्जगुणीओ । तेहंतो सौधर्मनादेव संख्यातगुणा तेहंतो सौधर्मदेवी संख्यातगुणी । भवणवासीदेवा असं० भवणवासिणीओ देवीओ संखि० । तेहंतो भवनपतिदेवता असंख्यातगुणा तेहंतो भवनपतिनीदेवी संख्यातगुणी । इमीसेरयणप्पभाए पुढवीएनेरइया असं० खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा संखि० । तेहंतो रत्नप्रभानारकी असंख्यातगुणा तेहंतो खचरपंचेंद्रियतिर्यंचयोनिया संख्यातगुणा । खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणीओ सं० थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा सं० । तेहंतो खचरपंचेंद्रियतिर्यंच योनियानीस्त्री संख्यातगुणा थलचरपंचेंद्रियतिर्यंच योनिया संख्यातगुणा । थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिणीओ सं० । थलचरपंचेंद्रियतिर्यंच योनियानीस्त्री संख्यातगुणा । जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया पुरिसा सं० । तेहंतो ज

तकिंचिदूनद्वात्रिंशत्तमभागकल्पा ईशानदेवा ततो देवाः संमूर्च्छिममनुष्येभ्यो ऽसंख्येयगुणाः २४। तेभ्य ईशानकल्पे देवय ऽसंख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात्, बत्तीसगुणाबत्ती सरूवअहियाउहोंतिदेवीउ इतिवचनात् २६। ताभ्यः सौधर्मकल्पे देवाः संख्येयगुणा स्तत्र विमानबाहुल्यात्, तथाहि-तत्र द्वात्रिंशत्शतसहस्राणि विमानाना मष्टाविंशतिशतसहस्राणि ईशाने कल्पे अपिच दक्षिणदिग्वर्त्ती सौधर्मकल्प ईशानकल्प स्तूत्तरदिग्वर्त्ती दक्षिणस्यां च दिशि बहवः कृष्णपाक्षिकाः समुत्पद्यन्ते ततः ईशानदेवेभ्यः सौधर्मदेवाः संख्येयगुणाः, नन्वियं युक्ति र्माहेंद्रसनत्कुमारकल्पयो रप्युक्ता परं तत्र माहेन्द्रकल्पापेक्षया सनत्कुमारकल्पदेवा असंख्येयगुणा उक्ता इहतु सौधर्मकल्पे संख्येयगुणा स्तदेव तत्कथं उच्यते-वचनप्रामाण्यात्

॥ टीका ॥

चिंदियतिरिक्कजोणिया पुरिसा संखेज्जगुणा जलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणिणीउ संखिज्जगुणाउ वाणमंतरा देवा संखेज्जगुणा वाणमंतरीउ देवीउ संखेज्ज० जोइसिया देवा संखेज्जगुणा जोइसिणीउ देवीउ संखिज्जगुणाउ खहयरपंचिंदियतिरिक्कजोणिया नपुंसया संखिज्ज० थलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणिया नपुंसया संखेज्ज० जलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणिया नपुंसया संखे० चउरिंदिया पज्जत्तया संखेज्ज० पंदिया पज्जत्ता

॥ मूल ॥

लचरपंचेंद्रितिर्यंच योनिया संख्यातगुणा। जलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिणीओ सं० वाणमंतरादेवा संखिज्जगुणा वाणमंतरीओ देवीओ स०। जलचरनीस्त्री सख्यातगुणा तेहथी वानव्यंतरदेव संख्यातगुणा तेहथी वाणव्यंतरनीस्त्री संख्यातगुणा। जोइसियादेवा स० जोइसिणीओ देवीओ सं०। तेहथी ज्योतिषी संख्यातगुणा ज्योतिषीनीस्त्री संख्यातगुणा। खहयरपचेंदियतिरिक्खजोणीया नपुंसगा सं०। तेहथी खचरपचेंद्रियतिर्यंच योनियानपुंसक संख्यातगुणा। थलचरपचेंदियतिरिक्खजोणीया नपुंसगा सं०। तेहथी थलचरपचेंद्रियतिर्यंच योनियानपुंसक संख्यातगुणा। जलयरपचेंदियतिरिक्खजोणिया नपुंसगा चउरेंदियपज्जत्तगा सं० पचेंदियपज्जत्तगा विसे० बेंदियपज्जत्तगा विसे० तेइंदियपज्जत्तगा वि०। तेहथी जलचरपचेंद्रिय नपुंसक संख्यातगुणा चौरिंद्रियपर्याप्ता संख्यातगुणा पचेंद्रियपर्याप्ता विशेषाधिक बेंद्रियपर्याप्ता विशेषाधिक तेंद्रियपर्याप्ता विशेषाधिक। पचेंदिय-अपज्जत्तगा असं० च

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

नचात्र पाठक्रमो यतोन्यत्राप्युक्तं-ईसाणेसव्वत्थवि बत्तीसगुणाउहोंतिदेवीउ । संखेज्जासोहम्मे तउअसंखाभवणवासी ॥ १ ॥ २७ । इति, तेभ्योपि तस्मिन्नेव सौधर्मकल्पे देव्यः संख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् । सव्वत्थविबत्तीसगुणाउहोंतिदेवीउइतिवचनात् २८ । ताभ्योप्यसंख्येयगुणा भवनवासिनः कथमितिचेत् इह अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः सम्बन्धिनि प्रथमे वर्गमूले तृतीयेन वर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि र्भवति तावत्प्रमाणायु घनीकृतस्य लोकस्य एकप्रदेशिकीषु श्रेणिषु यावंतो नभःप्रदेशा स्तावत्प्रमाणो भवनपतिदेवदेवीसमुदायः तद्गतकिंचिदूनद्वात्रिंशद्भागकल्पा श्च भवनप तयो देवा स्ततो घटन्ते सौधर्मदेवीभ्य स्ते ऽसंख्येयगुणाः २९ । तेभ्यो भवनवासिनोदेव्यः संख्येयगुणा द्वात्रिंशत्गुणत्वात् ३० । ताभ्यो प्यस्यां रत्न

॥ मूल ॥

विसेसाहिया बेइंदिया पज्जत्ता विसे० । पंचिंदिया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा चउरिंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया तेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया बेइंदिया अपज्जत्तया विसेसाहिया पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरनिगोदा पज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरपुढविकाइया अपज्जत्तगा असंखेज्जगुणा बादरआउकाइया पज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरवाउकाइया पज्जत्तगा असंखि

॥ भाषा ॥

उरिंदियपज्जत्तगा वि० । पंचेंद्रिय अपर्याप्ता असंख्यातगुणा चौरिंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक । तेइंदिय अपज्जत्तगा वि० बेइंदिय अपज्जत्तगा विसेसा० तेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक बेंद्रिय अपर्याप्ता विशेषाधिक । पत्तेयसरीरबायरवणइकाइयापज्जत्तगा असं० । प्रत्येकशरीरबादर वनस्पतिकाइक पर्याप्ता असंख्यातगुणा । बायरनिगोयपज्जत्ता असं० बायरपुढवीकाइयपज्जत्तगा असं० । बादरनिगोदोवापर्याप्ता असंख्यातगुणा बादरपृथिवीकाइयपर्याप्ता असंख्यातगुणा । बायरआउकाइयपज्जत्तगा असं० बायरवाउकाइयपज्जत्तगा असं० । बादर अप्काइयापर्याप्ता असंख्यातगुणा बादरवाउकाइयापर्याप्ता असंख्यातगुणा । बायरतेउकाइय अपज्जत्तगा असं० । बादरतेउकाइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । पत्तेयसरीरबायरवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा असं० । प्रत्येकशरीरीबादर वनस्पतिकाइया अपर्याप्ता असं० । बायरनिगोय अपज्जत्तगा अ० बायरपुढवीकाइय अपज्जत्तगा अ० । बादर

प्रज्ञायां पृथिव्यां नैरयिका असंख्येयगुणा अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः सम्बन्धिनि प्रथमवर्गमूले द्वितीयेन वर्गमूलेन गुणिते यावान् प्रदेशराशि स्तावत्प्रमाणासु श्रेणिषु यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणत्वात् ३१ । तेभ्योपि खचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषा असङ्ख्येयगुणाः प्रतरा ऽसङ्ख्येयभागवर्त्यसङ्ख्येयश्रेणिगतनभः प्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ३२ । तेभ्योपि खचरपञ्चेन्द्रिया स्तिर्यग्योनिकाः स्त्रियः संख्येयगुणा स्त्रिगुणत्वात्, तिगुणातिरूवअहिया तिरियाणंइत्थियाओ इतिवचनात् ३३ । ताभ्यः स्थलचरपंचेंद्रिया स्तिर्यग्योनिकाः पुरुषाः संख्येयगुणाः वृहत्तरप्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ३४ । तेभ्यः स्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः स्त्रियः संख्येयगुणा स्त्रिगुणत्वात् ३५ । ताभ्यो जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकाः पुरुषाः संख्येयगुणा वृहत्तमप्रतरासंख्येयभागवर्त्यसंख्ययश्रेणिगताकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ३६ । तेभ्यो जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकास्त्रियः संख्येयगुणा स्त्रिगुणत्वात् ३७ । ताभ्यो व्यन्तरा देवाः पुंवेदोदयिनः संख्येयगुणा यतः-संख्येययोजनकोटाकोटीप्रमाणानि श्रूची

---

रूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवंति तावन्तः सामान्येन व्यन्तराः केवलमिह पुरुषाविवक्षिता इति सकलसमुदायापेक्षया किंचिदूनद्वात्रिंशत्तमभागकल्पा वेदितव्याः ततो घटंते जलचरयुवतिभ्यः संख्येयगुणाः ३८ । तेभ्यो व्यन्तर्यःसंख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ३९ । ताभ्यो ज्योतिष्क देवाः संख्येयगुणा स्तेह्यि सामान्यतः षट्पञ्चाशत् अधिकशतद्वयाङ्गुलप्रमाणानि श्रूचीरूपाणि खण्डानि यावंत्येकस्मिन् प्रतरे भवंति तावत्प्रमाणाः परमिह पुरुषा विवक्षिता इति ते सकलसमुदायापेक्षया किंचिदूनद्वात्रिंशत्तमभागकल्पाः प्रतिपत्तव्या स्तत उपपद्यन्ते' व्यन्तरीभ्यः संख्येयगुणाः ४० । तेभ्यो ज्योतिष्कदेव्यः संख्येयगुणा द्वात्रिंशद्गुणत्वात् ४१ । ताभ्यः खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानपुंसकाः संख्येयगुणाः क्वचित् असंख्येयगुणा इतिपाठः स न समीचीनो यत इत ऊर्द्धं ये पर्याप्तचतुरिन्द्रिया वक्ष्यंते तेपि ज्योतिष्कदेवापेक्षया संख्येयगुणा एवोपपद्यन्ते तथाहि-षट्पंचाशदधिकशतद्वयाङ्गुलप्रमाणानि श्रूचीरूपाणि खण्डानि यावत्येकस्मिन्प्रतरे भवंति तावत्प्रमाणा ज्योतिष्काः उक्तंच-छप्पन्नदोसयांगुल सूइपएसेहिनाइय

पयरं । जोइसिएहिंहीरइइति अङ्गुलसङ्ख्येयभागमात्राणिच सूचीरूपाणि खण्डानि यावत्येकस्मिन्प्रतरे भवंति तावत्प्रमाणा श्चतुरिन्द्रिया उक्तंच प ज्जत्तापज्जत्ता विति चउअसन्निणोअवहरंति । अंगुलसंखाऽसंख भागमइयंपुढोपयरं । अंगुलसंख्येयभागापेक्षया षट्पञ्चाशदधिकमङ्गुलशतद्वयं स ङ्ख्येयगुणं ततो ज्योतिष्कदेवापेक्षया परिभाव्यमानाः पर्याप्तचतुरिन्द्रियाअपि सङ्ख्येयगुणा एवघटंते किंपुनः पर्याप्तचतुरिन्द्रियापेक्षया सङ्ख्येयभागमा त्रखचरपञ्चेन्द्रियनपुंसका इति ४२ । तेभ्योपि थलचरपञ्चेन्द्रियनपुंसका सङ्ख्येयगुणाः ४३ । तेभ्योपि जलचरपञ्चेन्द्रियनपुंसका सङ्ख्येयगुणाः ४४ । ते भ्योपि पर्याप्तचतुरिन्द्रियाः सङ्ख्येयगुणाः ४५ । तेभ्योपि पर्याप्ताः संज्ञसञ्ज्ञिभेदभिन्नाः पञ्चेन्द्रिया विशेषाधिकाः ४६ । तेभ्योपि पर्याप्ता द्वीन्द्रिया विशेषाधिकाः ४७ । तेभ्योपि पर्याप्तेइन्द्रिया विशेषाधिकाः ४८ । यद्यपि पर्याप्तचतुरिन्द्रियादीनां पर्याप्तत्रीन्द्रियपर्यन्तानां प्रत्येकमङ्गुलासंख्येयभा गमात्राणि सूचीरूपाणि खण्डानि यावंत्येकस्मिन् प्रतरे भवंति तावत्प्रमाणत्वमविशेषेणान्यत्र वर्ण्यते तथाप्यङ्गुलासंख्येयभागस्य सङ्ख्येयभेदभिन्नत्वा

---

दित्यंविशेषाधिकत्वमुच्यमानं न विरुद्धं उक्तंचैत्थ मल्पबहुत्व मन्यत्रापि ततो नपुंसक खहयरसंखेज्जा थलयरजलयरनपुंसका चतुरिंदिय तज्जपणाबि तिपज्जत्तकिंचहिया इति ४८ । तेभ्योपि पर्याप्तत्रीन्द्रियेभ्यो ऽपर्याप्ताः पञ्चेन्द्रिया असङ्ख्येयगुणाः ४९ । अङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि खण्डानि सूचीरू पाणि यावंत्येकस्मिन् प्रतरे भवंति तावत्प्रमाणत्वात् ४९ । तेभ्य श्चतुरिन्द्रिया अपर्याप्ताविशेषाधिकाः ५० । तेभ्योपि त्रीन्द्रिया अपर्याप्ता विशे षाधिकाः ५१ । तेभ्यो द्वीन्द्रिया अपर्याप्ता विशेषाधिका यद्यपि चापर्याप्ता श्चतुरिन्द्रियादयो ऽपर्याप्तद्वीन्द्रियपर्यन्ताः प्रत्येकमङ्गुलस्या सङ्ख्येयभाग मात्राणि खण्डानि सूचीरूपाणि यावंत्येकस्मिन् प्रतरे भवंति तावत्प्रमाणा अन्यत्राविशेषेणोक्ता स्तथाप्यङ्गुलासंख्येयभागस्य विचित्रत्वा दित्थं वि शेषाधिकत्व मुच्यमानं न विरोधमास्कंदति ५२ । तेभ्योपि द्वीन्द्रियापर्याप्तेभ्यः प्रत्येकबादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणा यद्यपि चा पर्याप्तद्वीन्द्रियादिवत् पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिका ऽप्यङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि सूचीरूपाणि खण्डानि यावन्त्येकस्मिन् प्रतरे भवंति तावत्प्र

माणा अन्यत्रोक्ता स्तथाप्यङ्गुलासंख्येयभागस्या संख्येयभेदत्रिन्नत्वात्, बादरपर्याप्तप्रत्येकवनस्पतिपरिमाणचित्तायां मंगुलासंख्येयभागो ऽसंख्येय गुणहीनः परिगृह्यते ततो न कश्चिद्विरोधः ५३। तेभ्यो बादरनिगोदा अनन्तकायिकशरीररूपाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५४। तेभ्योपि बादरपृ थिवीकायिकाः पर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५५। तेभ्योपि पर्याप्तबादराप्कायिका असंख्येयगुणा यद्यपिच पर्याप्तबादरप्रत्येकवनस्पतिकायिकाऽप्कायि काः प्रत्येकमङ्गुलासंख्येयभागमात्राणि सूचीरूपाणि खण्डानि यावत्यैकस्मिन् प्रतरे भवंति तावत्प्रमाणा अन्यत्राविशेषेणोक्ता स्तथाप्यङ्गुलासंख्येय भागस्या संख्येयभेदत्रिन्नत्वा दित्यमसंख्येयगुणत्वा दित्य मभिधाने न कश्चिद्दोषः ५६। तेभ्यो बादरपर्याप्ताप्कायिकेभ्यो बादरवायुकायिकाः प र्याप्ता असंख्येयगुणा घनीकृतलोकासंख्येयभागवर्त्यसंख्येयप्रतरगतनभःप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५७। तेभ्यो बादरतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येय



जागुणा वादरतेउकाइया अपजत्तगा असंखेजगुणा पत्तेयसरीरबादरवणस्सइकाइया अपजत्तगा असं खिजगुणा बादरनिगोदा अपजत्तया संखिजगुणा बादरपुढविकाइया अपजत्तगा असंखेजगुणा बाद रआउकाइया अपजत्तगा असंखिजगुणा बादरवाउकाइया अपजत्तया असंखेजगुणा सुहुमतेउकाइया अपजत्तगा असंखेजगुणा सुहुमपुढविकाइया अपजत्तगा विसेसाहिया सुहुमआउकाइया अपजत्तया विसेसाहिया सुहुमवाउकाइया अपजत्तगा विसेसाहिया सुहुमतेउकाइया पजत्तगा असंखिजा० सुहु



निगोद अपर्याप्ता असं० बादरपृथिवीकाइका अपर्याप्ता असं०। बादर आउकाइया अपज्जत्तगा अ०। बादर अप्काइया अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। बादरवाउकाइय अपज्जत्तगा अ०। बादरवायुकाइक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुमतेउकाइया अपज्जत्तगा असं०। सूक्ष्मतेउकाइक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा। सुहुमपुढवीकाइया अपज्जत्तगा वि० सुहुम आउकाइ अपज्जत्तगा वि० सुहुमवाउकाइय अपज्जत्तगा वि०। सूक्ष्मपृथिवीकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मअप्काइक विशेषाधिक सूक्ष्मवायुकाइक अपर्याप्ता विशेषाधिक। सुहुमतेउकाइयपज्जत्तगा सं० सुहुमपुढवीकाइयपज्जत्तगा वि० सु

॥ टीका ॥

गुणा असंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् ५८ । तेभ्यः प्रत्येकशरीरबादरवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ५९ । तेभ्योपि बादर निगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६० । तेभ्यो बादरपृथिवीकायिका अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ६१ । तेभ्यो बादराप्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६२ । तेभ्यो बादरवायुकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६३ । तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ६४ । तेभ्यः सूक्ष्म पृथिवीकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ६५ । तेभ्यः सूक्ष्माप्कायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ६६ । तेभ्यः सूक्ष्मवायुकायिका अपर्याप्ता विशेषाधिकाः ६७ । तेभ्यः सूक्ष्मतेजस्कायिकाः पर्याप्तका असंख्येयगुणा अपर्याप्तकसूक्ष्मेभ्यः पर्याप्तसूक्ष्माणां स्वजातावेव प्राचुर्येण भावात् तथाचाह-अस्यांएव प्रज्ञापनायां सङ्ग्रहणिकारः-जीवाणमऽपज्जत्ता बहुतरगाबायराणविन्नेया सुहुमाणयपज्जत्ता उहेणयकेवलीबिंति ॥ ६८ ॥ तेभ्योपि सूक्ष्म पृथिवीकायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः ६९ । तेभ्योपि सूक्ष्माप्कायिकाः पर्याप्ता विशेषाधिकाः ७० । तेभ्योपि सूक्ष्मवायुकायिकाः पर्याप्ता वि

॥ मूल ॥

मपुढविकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुक्ष्मआउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुक्ष्मवाउकाइया पज्जत्तगा विसेसाहिया सुक्ष्मणिगोदा अपज्जत्ता असंखे० सुक्ष्मणिगोदा पज्जत्तया संखिज्जगुणा अनत्तसिद्धिया अणंतगुणा पडिवत्तिय सम्मदिठी अणंतगुणा सिद्धा अणंतगुणा बादर वणस्सइकाइया पज्जत्तगा अणंतगुणा बादरपज्जत्ता विसेसाहिया बादरवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखिज्जगुणा बादरअपज्जत्तया

॥ भाषा ॥

इमआउकाइय पज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मतेउकाइकपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपृथवीकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मअप्काइकपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवाउकाइयपज्जत्तगा वि० सुहुमनिगोय अपज्जत्तगा अ० । सूक्ष्मवायुकाइकपर्याप्ता विशेषाधिक सूक्ष्मनिगोद अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । सुहुम निगोयपज्जत्तगा सं० अभवसिद्धिया अणंतगुणा पडिवडियसम्मत्तया अणं० सिद्धाअणं० । सूक्ष्मनिगोदपर्याप्ता संख्यातगुणा तेहथी अभवसिद्धिक अनंतगुणा प्रतिपतितसम्यग्दृष्टि अनंतगुणा सिद्ध अनंतगुणा । बायरवणस्सइकाइयपज्जत्तगा अणं० । बादरवनस्तिकाइकपर्याप्ता अनंतगुणा । बायरपज्जत्तगा

॥ टीका ॥

शेषाधिकाः ७१ । तेभ्योऽपि सूक्ष्मनिगोदा अपर्याप्तका असंख्येयगुणाः ७२ । तेभ्योऽपि पर्याप्ताः सूक्ष्मनिगोदाः संख्येयगुणा यद्यपिच पर्याप्ततेजस्कायिकादयः पर्याप्तसूक्ष्मनिगोदपर्यन्ता अविशेषेणाऽन्यत्राऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणा उक्ता स्तथाऽपि लोकाऽसंख्येयत्वस्याऽसंख्येयभेदत्रित्वादित्यमल्पबहुत्वमत्रिधीयमानमुपपन्नं द्रष्टव्यं ७३ । तेभ्यो ऽनवसिद्धिका अनन्तगुणा जघन्ययुक्तानन्तकप्रमाणत्वात् ७४ । तेभ्यः प्रतिपतितसम्यग्दृष्टयोऽनन्तगुणाः ७५ । तेभ्यः सिद्धा अनन्तगुणाः ७६ । तेभ्योऽपि बादरवनस्पतिकायिकाः पर्याप्ता अनन्तगुणाः ७७ । तेभ्योऽपि सामान्यतो बादरपर्याप्ता विशेषाधिका बादरपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ७८ । तेभ्यो बादराऽपर्याप्तवनस्पतिकायिका असंख्येयगुणा एककैकबादरनिगोदपर्याप्तनिश्रयासंख्येयगुणानां बादराऽपर्याप्तनिगोदानां सम्भवात् ७९ । तेभ्यः सामान्यतो बादराऽपर्याप्ता विशेषाधिका बादराऽपर्याप्तपृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८० । तेभ्यः सामान्यतो बादरा विशेषाधिकाः पर्याप्ताऽपर्याप्तानां तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिका अपर्याप्ता असंख्येयगुणाः ८२ । तेभ्यः सामान्यतः सूक्ष्मा अपर्याप्ता विशेषाधिकाः सूक्ष्माऽपर्याप्त पृथिवीकायिकादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्यः सूक्ष्मवनस्पतिकायिकाः पर्याप्तकाः संख्येयगुणाः पर्याप्तसूक्ष्माणामऽपर्याप्तसूक्ष्मेभ्यः स्वजा

॥ मूल ॥

**विसेसाहिया बादरा विसेसाहिया सुक्ष्मवणस्सइकाइया अपज्जत्तया असंखेज्जगुणा सुक्ष्मा अपज्जत्तया विसेसाहिया सुक्ष्मवणस्सइकाइया पज्जत्तया संखेज्ज० सुक्ष्मपज्जत्तया विसेसाहिया सुक्ष्मा विसेसाहि**

॥ भाषा ॥

वि० बायरवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा असं० । बादरपर्याप्ता विशेषाधिक बादरवनस्पतिकाइक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा । जीवाबायरा अपज्जत्तगा वि० बायराविसेसाहिया । सुहुमवणस्सइकाइय अपज्जत्तगा असं० सुहुमअपज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकाइक अपर्याप्ता असंख्यातगुणा सूक्ष्म अपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमवणस्सइकाइयपज्जत्तगा सं० सुहुमपज्जत्तगा वि० । सूक्ष्मवनस्पतिकाइकपर्याप्ता संख्यातगुणा सूक्ष्मपर्याप्ता विशेषाधिक । सुहुमावि० भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोयजीवा विससाहिया । सूक्ष्मविशेषाधिक तेहथी भवसिद्धिया विशेषाधिक तेहथी निगोदजीव विशेषाधिक ।

॥ टीका ॥

वतः सदैव संख्येयगुणतया प्राप्यमाणत्वात्, तथाकेवलवेदसोनुपलब्धेः ८४। तेभ्योपि सामान्यतः सूक्ष्माः पर्याप्ता विशेषाधिकाः पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८५। तेभ्यः पर्याप्ताऽपर्याप्तविशेषणरहिताः सूक्ष्मा विशेषाधिका अपर्याप्तसूक्ष्मपृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिकायिकानामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८६। तेभ्योऽपि भवसिद्धिका भवे सिद्धि र्येषां ते भवसिद्धिका भव्याविशेषाधिका जघन्ययुक्तानन्तकमात्राऽभव्यपरिहारेण सर्वजीवानां भव्यत्वात् ८७। तेभ्यः सामान्यतो निगोदजीवा विशेषाधिकाः इह भव्या अभव्या श्चाऽतिप्राचुर्येण बादरसूक्ष्मनिगोदजीवराशावेव प्राप्यन्ते नाऽन्यत्राऽन्येषां सर्वेषाऽमपि मिलिता नामसंख्ययलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्, अभव्याश्च युक्तानन्तकसंख्यामात्रपरिमाण स्ततो भव्यापेक्षया ते किंचिन्मात्रा भव्याश्च प्रागऽभव्यपरिहारेण चिन्तिता इदानीतु बादरसूक्ष्मनिगोदचिन्तायां तेपि प्रक्षिप्यन्ते इति विशेषाधिकाः ८८। तेभ्यः सामान्यतो वनस्पतिजीवा विशेषाधिकाः प्रत्येकशरीरिणामपि वनस्पतिजीवानां तत्र प्रक्षेपात् ८९। तेभ्यः सामान्यत एकेन्द्रिया विशेषाधिकाः बादरसूक्ष्मपृथिवीकायिकादीनामपि तक्षेपात् ९०। तेभ्यः सामान्यत स्तिर्यग्योनिका विशेषाधिकाः पर्याप्तापर्याप्तद्वित्रिच

॥ मूल ॥

या भवसिद्धिया विसेसाहिया निगोदा जीवा विसेसाहिया वणस्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिट्ठी विसेसाहिया अविरया विसेसाहिया छउमत्था विसेसाहिया सजोगी विसेसाहिया संसारत्था विसेसाहिया सव्वजीवा विसेसाहिया ॥ पन्नवणाए भगवईए

॥ भाषा ॥

वणस्सइजीवा विसेसाहिया एगिंदिया विसेसाहिया। वनस्पतिजीव विशेषाधिक एकेंद्रिय विशेषाधिक। तिरिक्खजोणिया विसेसाहिया मिच्छदिट्ठी विसेसाहिया। तेहथी तिर्यंचयोनिया विशेषाधिक तेहथी मिथ्यादृष्टि विशेषाधिक। अविरती विसेसाहिया सकसाई विसेसाहिया छउमत्था विसेसा० सयोगी विसेसाहिया संसारत्था विसेसाहिया। तेहथी अविरती सम्यगदृष्टी विशेषाधिक सकषाई विशेषाधिक छद्मस्थ विशेषाधिक सयोगी विशेषाधिक संसारीजीव विषाधिक। सव्वजीवा विसेसाहिया ९८ पन्नवणाए भगवईए बहुवत्तया पयं समत्तं। तेहथी सर्वजीव विशेषाधिक सिद्धजीवाए ९८

॥ टीका ॥

तुरिन्द्रियतिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणामपि तत्र प्रक्षेपात् ८१ । तेभ्य श्चतुर्गतिभाविनो मिथ्यादृष्टयो विशेषाधिका इह कतिपयाविरतसम्यग्दृष्ट्यादिसञ्ज्ञि व्यतिरेकेण शेषाः सर्वेपि तिर्यञ्चो मिथ्यादृष्टिचिन्तायां चासंख्येयनारकादय स्तत्र प्रक्षिप्यन्ते तत स्तिर्यग्जीवराशियपेक्षया चतुर्गतिका मिथ्यादृष्टय श्चिन्त्यमाना विशेषाधिकाः ८२ । तेभ्योप्यविरता विशेषाधिका अविरतसम्यग्दृष्टीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८३ । तेभ्यः सकषायिणो विशेषाधिका देशविरतादीनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८४ । तेभ्यः छद्मस्था विशेषाधिका उपशान्तमोहादीनामपि तत्र प्रक्षेपात् ८५ । तेभ्यः सयोगिनो विशेषाधिकाः सयोगिकेवलिनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८६ । तेभ्यः संसारस्था विशेषाधिका अयोगिकेवलिनामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८७ । तेभ्यः सर्वजीवा विशेषाधिकाः सिद्धानामऽपि तत्र प्रक्षेपात् ८८ ॥ इतिश्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां बहुवक्तव्याख्यं तृतीयं पदं समाप्तम् ॥ ३ ॥

व्याख्यातं तृतीयपद मिदानीं चतुर्थमा रभ्यते-तस्यचायमभिसम्बन्धः इहानन्तरपदेदिगनुपातादिनाऽल्पबहुत्वसङ्ख्या निर्द्धारिता अस्मिंस्तु तया अल्पबहुत्वसङ्ख्या निर्द्धारितानां जीवानां सत्वानां जन्मतः प्रभृत्यामरणात् यन्नारकादिपर्यायरूपेण व्यवच्छिन्न मवस्थानं त च्चिन्त्यते, अनेन स म्बन्धेनायातस्यास्येदमादिमं सूत्रं-नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिईपन्नत्ता इति ॥ नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ताः तत्र स्थी

॥ मूल ॥

बक्कवत्तव्वयपदं समत्तं ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
णेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं साग

॥ अ० ॥

नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि' अपर्याप्तनैर

॥ भाषा ॥

द्वारनो महादंडक अल्पबहुत्वनो पद त्रीजो समाप्तथयो इणत्रीजे पदे अल्पबहुत्व जीवनो कह्यो २७ द्वार प्रज्ञापना भगवती मांहि ॥ ३ ॥
नेरइयाणं भंते केवतियं कालंठिई पं० । हिवे चउथेपदे पर्याप्त उत्कृष्टजघन्यस्थिति आयुनो कहेछे—नारकीनो हेभगवन् केतलाकालनोस्थिति कह्यो । गो० जहन्नेणं दसवाससहस्साइ उ० तित्तीससागरोवमाइं । हेगौतम जघन्य थकी दशहजारवर्षनो स्थितिरत्नप्रभानी अपेक्षायें उत्कृष्टो तेतीससागरोपम

यते ऽवस्थीयते अनया ऽायुःकर्मानुभूत्येति स्थितिः स्थितिरायु कर्मानुभूति जीवनमितिपर्यायाः' यद्यप्यत्र जीवेन मिथ्यात्वादिनिरुपात्तानां कर्मपु

रोवमाइं अपज्जत्तणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं रयणप्पभापुढविणेरइयाणं भंते !

यिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्तं, पर्याप्तकनैरयिकाणां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतः त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि, रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः सागरोपमम्, अपर्याप्तरत्नप्रभापृ

नो स्थिति तमतमा पृथिवीनो अपेक्षायें । अपज्जत्तग नेरइयाणं भंते केवतियं कालंठिई प० । अपर्याप्तानारकीनो केतलाकालनोस्थितिकहो । गो० जह सेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हेगौतम जघन्यैपिण अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टैपिण अंतर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगनेरइयाणं भंते केवतियं कालंठिई पं० । पर्याप्ता नारकीनो केतलाकालनोस्थितिकहो । गो० जहन्नेण दसवाससहस्साइं । हेगौतम जघन्यैदशहजारवर्ष । अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीससागरोव माइं अंतोमुहुत्तूणाइं । अंतर्मुहूर्त्तऊणो उत्कृष्टैतेतीससागरोपम अंतर्मुहूर्त्तऊणो । रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणंभंते केव० । रत्नप्रभा पृथिवीना नारकीनो हेभगवन् केतलाकालनोस्थिति । गोयमा जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेण सागरोवमं । हेगौतम जघन्यदशहजारवर्ष उत्कृष्टें एकसागरोपम । अपज्ज त्तरयणप्पभपुढवीनेरइयाणं भंते के० । अपर्याप्ता रत्नप्रभाना नारकीनो केतलोस्थिति हेभगवन् । गोयमा जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतो मुहुत्तं । हेगौतम जघन्यैपिण अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टैपिण अंतर्मुहूर्त्त । पज्जत्तरयणप्पभपुढवीनेरइयाणं भंते के० । पर्याप्ता रत्नप्रभाना नारकीनो केतलोस्थिति हेभगन् । गोयमा जहण्णेणं दसवाससहस्साइं । हेगौतम जघन्यैदशहजारवर्ष । अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं सक्करप्पभपुढवीनेरइयाणं भंते

केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं सागरोवमं अपज्जत्तरयणप्प
भापुढविणेरइयाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमु
हुत्तं पज्जत्तयरयणप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवा
ससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं । सक्करप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केव
इयं ठाणं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं सागरोवमं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं अपज्जत्तय
सक्करप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेण
वि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तसक्करप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं साग

« मूल »

थिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्तं, पर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवी
नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतः सागरोपममन्तर्मुहूर्त्तोन
म् । शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैकं सागरोपममुत्कर्षत स्त्रीणि सागरोपमा
णि, अपर्याप्तकशर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्त

« अ० »

के० । अंतर्मुहूर्त्तऊणो उत्कृष्टो सागरोपम अंतर्मुहूर्त्तऊन शर्कराप्रभाना नारकीनोस्थिति केतलोकाल हेभगवन् । गोयमा जहन्नय एगसागरोवमं।
उक्कोसेणं तिन्निसागरोवम । हेगौतम जहन्य एकसागरोपम उत्कृष्टेतीनसागरोपमनो स्थिति । अपज्जत्तसक्करप्पभपुढवीनेरइयाणं भंते के० । अपर्याप्ता
शर्कराप्रभाना नारकीनो केतलोस्थिति हेभगवन् । गोयमा जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उ० अंतोमुहुत्तं । हेगौतम जघन्येअंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टे अंतर्मुहूर्त्त । पज्जत्तग
सक्करप्पभपुढवीनेरइयाणं भंते के० । पर्याप्ताशर्कराप्रभापृथिवीना नारकीनोस्थिति हेभगवन् केतलोस्थितिकही । गोयमा जहण्णेणं सागरोवमं अंतोमुहु

« भाषा »

॥ मूल ॥

रोवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं तिण्णि सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं बालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं तिण्णि सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं अपज्जत्तयवालुयप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयवालुयप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोय

॥ अ० ॥

म् । पर्याप्तशर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तानं सागरोपम मुत्कर्षतोन्त र्मुहूर्त्तोनानि त्रीणि सागरोपमाणि । वालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन त्रीणि सा गरोपमाणि उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाणि । अपर्याप्तकवालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकवालुकाप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघ

॥ गाथा ॥

त्तूण उ० तिन्नसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हेभगवन् जघन्य एकसागरोपम अंतर्मुहूर्त्तऊणो उत्कृष्टोतीनसागरोपम अंतर्मुहूर्त्तऊणो । वालुयप्पभपुढ वीनेरइयाणं भंते के० । वालुकप्रभाना नारकोनो केतलोस्थिति हेभगवन् । गोयमा जहण्णेण तिन्निसागरोवमाइं उ० सत्तसागरोवमाइं । हेगौतम ज घन्ये तीनसागरोपम उत्कृष्टे सातसागरोपम । अपज्जत्तवालुयप्पभपुढवीनेरइयाण भंते के० । अपर्याप्ता वालुकप्रभाना नारकोनो केतलोस्थिति हेभगवन् गोयमा जहन्नेण अंतोमुहुत्तं उक्को० अंतमुहुत्तं । हेगौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगवालुयप्पभपुढवीनेरइयाणं भंते के० । पर्याप्तावा लुकप्रभाना नारकोनो केतलोस्थिति हेभगवन् । गोयमा जहन्नेणं तिन्निसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हेगौतम जघन्यतीनसागरोपम अंतर्मुहूर्त्तऊण । उ० सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उत्कृष्टेसातसागरोपमनो अंतर्मुहूर्त्तऊणो । पंकप्पभपुढवीनेरइयाण भंते के० । पंकप्रभाना नारकोनो केतलोस्थिति कही प्र० । उत्तर हेगौतम जघन्य सात सागरोपम उत्कृष्ट दश सागरोपमनो स्थिति कही । अपज्जत्तपंकप्पभत्ति । अपर्याप्त पंकप्रभाना नारकोनो

॥ टीका ॥

ट्टलानां ज्ञानावरणीयादिरूपतया परिणतानां यदवस्थानं सा स्थिति रितिप्रसिद्धं तथापि नारकादिव्यपदेशहेतुरायुःकर्मानुभूति स्तथाहि-यद्यपि नरकगतिपञ्चेन्द्रियजात्यादिनामकर्मोदयाश्रयो नारकत्वपर्याय स्तथापि नारकायुःप्रथमसमयसंवेदनकालएव तन्निबन्धननारकक्षेत्रमप्राप्तोपि नारकस्य व्यपदेशं लभन्ते, तथाच मौनीन्द्रं प्रवचनं-नेरइएणं भंते ! नेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ ? गो० ! नेरइए नेरइएसु उववज्जइ नो अनेरइए नेरइएसु उववज्जइ इत्यादि, ततः सैवायुःकर्मानुभूति रिह यथोक्तव्युत्पत्त्या स्थिति रभिधीयते इति, अत्र निर्वचनमाह-गोयमेत्यादि ॥ एतच्च पर्याप्तापर्याप्तविभागाभावेन सामान्यत उक्तं यदा तु पर्याप्तापर्याप्तभागेन चिन्ता तदेदं सूत्रं-अपज्जत्तनेरइयाणं भंते ! इत्यादि ॥ इहापर्याप्ता द्विविधा लब्ध्या करणैश्च तत्र नैरयिका देवा सङ्ख्येयवर्षायुष स्तिर्यग्मनुष्याः करणैरेवाऽपर्याप्ता न लब्ध्यालब्ध्याऽपर्याप्तकानां तेषु मध्ये उत्पादासम्भवात् तत एते उपपातकालएव करणैः कियन्तं काल मपर्याप्ता द्रष्टव्याः' शेषास्तु तिर्यग्मनुष्या लब्ध्या अपर्याप्ता उपपातकाले च, उक्तञ्च-नारगदेवातिरिमणु यगब्भजाजेअसंखवासाऊ । एएअपज्जत्ती इववाएचेवबोधव्वा ॥ १ ॥ सेसायतिरियमणुया लद्धिंपप्पोववायकालेय । दुहतु वियन्नइयव्वा पज्जत्तियरेयजिणवयणं ॥ २ ॥ अपर्याप्तका श्च जघन्यत उत्कर्षतोवान्तर्मुहूर्त्तं मत उक्तं-गोयमा ! जहन्नेणं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं, ॥ अपर्याप्तावापगमे च शेषकालः पर्याप्तावा तत उक्तं पर्याप्तसूत्रे-गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तऊणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तऊणाइं ॥ एतच्च पृथिव्यऽविभागेन चिन्तितं सम्प्रति पृथिवीविभागेन चिन्तयति-रयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! इत्यादि सुग

॥ मूल ॥

मा ! जहन्नेणं तिन्नि सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं पंकप्प

॥ अ० ॥

न्येन त्रीणि सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि । पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं

॥ भाषा ॥

हेभगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हेगौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त नी उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त्त नी कही । पज्जत्तय पकप्रभक्ति । पर्याप्ता पंकप्रभापृथिवीना नारकीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त न्यून सात सागरोपम उत्कृष्ट अन्तर्मुह

नापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं सत्तसागरोवमाइं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं । अपज्जत्तयपंकप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयपंकप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं धूमप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दससागरोवमाइं



कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाणि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि, अपर्याप्तपङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो प्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम्, पर्याप्तकपङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतो दशसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि । धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दश सागरोपमाण्युत्कर्षतः सप्तदश सागरोपमाणि । अपर्याप्तधूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भगवन् ! कियन्त कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तं मुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् ।



र्त्त न्यून दश सागरोपम नी कही । धूमप्रभेति । धूमप्रभापृथिवी ना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य दश सागरोपम नी उत्कृष्ट सतरह सागरोपम नी कही । अपज्जत्तय धूमेति । अपर्याप्त धूमप्रभा पृथिवीना नारकीनो हे भगवन् केतला काल नी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त नी उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त नी कही । पज्जत्तधूमेति । पर्याप्त धूमप्रभा पृथिवीना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दश सागरोपम उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कम सतरे सागरोपम कही । तमप्पभेति । तमप्रभा पृथिवीना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य सतरह सागरोपम

॥ मूल ॥

उक्कोसेणं सतरसागरोवमाइं । अपज्जत्तयधूमप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयधूमप्पभापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सतरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं , तमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं सत रसागरावमाइं उक्कोसेणं बावीसंसागरोवमाइं । अपज्जत्तयतमप्पभापुढविनेरइयाणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि । अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयतमप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केव

॥ अ० ॥

पर्याप्तधूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दश सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कृष्टतः सप्तदशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि, तमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तदशसाग रोपमाण्युत्कर्षतो द्वाविंशतिः सागरोपमाणि । अपर्याप्ततमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मु हूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्ततमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन सप्तदश

॥ भाषा ॥

उत्कृष्ट बावीस सागरोपम नो कहो । अपज्जत्ततमत्ति । अपर्याप्त तमप्रभा पृथिवीना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कहो प्र० । उ त्तर हे गौतम जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त नो उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त नो कहो । पज्जत्तयतमत्ति । पर्याप्ता तमप्रभा पृथिवीना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कहो प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून सतरह सागरोपमनो उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून बावीस सागरोपम नो कहो अहेसत्तमत्ति । अधोसातमी पृथिवी ना नारकीनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कहो प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य बावीस सागरोपम नो उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम नो प्ररूपो । अपज्जत्तय अहेसत्तमत्ति । अपर्याप्त नीच सातमी पृथिवीना नारकीनो केतला कालनो स्थिति प्ररूपो प्र० । उत्तर

॥ मूल ॥

इयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं सतरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । अहे सत्तमपुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयअहेसत्तमपुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयअहेसत्तमपुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ॥ देवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवा

॥ अ० ॥

सागरोपमाण्यंतर्मुहूर्त्तोनान्युत्कर्षतो द्वाविंशतिः सागरोपमाण्यंतर्मुहूर्त्तोनानि । अधस्सप्तमापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन द्वाविंशतिः सागरोपमाण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । अपर्याप्तकाधस्सप्तमापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकाधस्सप्तमापृथिवीनैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन द्वाविंशतिः सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । देवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सा

॥ भाषा ॥

हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त नो कहो । पज्जत अहेसत्तमत्ति । पर्याप्त नीचे सातमी पृथिवीना नारकीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त न्यून बावीस सागरोपम उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून तेतीस सागरोपम नो प्ररूपी देवाणं भंतेत्ति । देवतानी हे भगवन् केतला कालनी स्थि कही प्र० । उत्तर हे गौतम जघन्य दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम नो प्ररूपी । अपज्जत्तदेवाणंति । अपर्याप्त देवतानी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति प्ररूपी प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट

ससहस्साइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तऊणियाए । देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पणपन्नपलिओवमाइं । अपज्जत्तगदेवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तयदेवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं

॥ सूत्र ॥

गरोपमाणि । अपर्याप्तदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्तोनानि उत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्तोनानि ॥ देवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि, अपर्याप्तकदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तदेवीनां भदन्त ! कि

॥ अ० ॥

पिण अन्तर्मुहूर्त्त नी कही । पज्जत्तदेवाणंति । पर्याप्ता देवतानी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून तेत्रीस सागरोपम नी कही । देवीणं भंतेत्ति । देवीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट पंचावन ५५ पल्योपमनी कही । अपज्जत्तदेवीणंति । अपर्याप्ता देवीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त्त नी कही । पज्जत्तदेवीणंति । पर्याप्ता देवीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त न्यून दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त न्यून ५५ पंचावन पल्योपम नी क

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

उक्कोसेणं पणपन्नपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । भवणवासीणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं । अपज्जत्तयभवणवासीणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयभवणवासीणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं । भवणवासिणीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई प०

॥ अ० ॥

यन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तानानि दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तानानि ॥ भवनवासिदेवानां भदन्त ! कियन्तं काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपमम् । अपर्याप्तकभवनवासिदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकभवनवासिदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तानानि उत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपममन्तर्मुहूर्त्तोनम् । भवनवासिनीनां देवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतोऽर्द्धपञ्चमानि

॥ भाषा ॥

हो । भवणवासीण भंतेत्ति । भवनवासी देवतानी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न । उत्तर गौतम जघन्य थी दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी सातिरेक सागरोपम कही । अपज्जत्तयभवणवासीणंति । अपर्याप्त भवनवासी देवतानी केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तभवणवासीणंति । पर्याप्त भवनवासी देवतानी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर गौतम जघन्य थी दश हजार वर्षनी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून सातिरेक सागरोपम । भवणवासिणीणंति । भवनवासि देवीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी साढे चार पल्योपम नी कही । अपज्जत्तिया

॥ मूल ॥

? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अट्ठपंचमाइं । पलिओवमाइं अपज्जत्तियाणं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं भंते ! भवणवासिणीणं देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अट्ठपंचमाइं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं साइरेगं सागरोवमं अपज्जत्तयअसुरकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं

॥ अ० ॥

(साडेचतुः) पल्योपमानि । अपर्याप्तभवनवासिदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तं मुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तभवनवासिदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतो सार्द्धपञ्चमानि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि ॥ असुरकुमाराणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतो दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपमम् । अपर्याप्तासुरकुमारदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तं मुत्कर्षतो

॥ भाषा ॥

ण भवणवासिणीणंति । अपर्याप्त भवनवासि देवीनो हे भगवन् केटला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त कही । पज्जत्तयाणं भवणवासिणीणंति । पर्याप्त भवनवासी देवीनो हे भगवन् केटला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त न्यून दश हजार वर्ष उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून साढे चार पल्योपम नी कही । असुरकुमाराण भंतेत्ति । असुरकुमारदेवतानी हे भगवन् केटला कालनी स्थिति कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य दशहजार वर्षनी उत्कृष्ट थी सातिरेक सागरोपम नी कही । अपज्जत्त असुरकुमाराणंति । अपर्याप्त असुरकुमार देवतानी हे भगवन् केटला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त्त

उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयअसुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सातिरेगं सागरोवमं अंतोमुहुत्तूणं। असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं। अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गो



प्यन्तर्मुहूर्त्तम्। पर्याप्तकासुरकुमाराणां देवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तोनानि दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतः सातिरेकं सागरोपममन्तर्मुहूर्तोनम्॥ असुरकुमार देवीनां भदन्त ! कियन्तं काल स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतोर्द्धपञ्चमानि पल्योपमानि। अपर्याप्तकासुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्तम्। पर्याप्ता सुरकुमारदेवीनां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मु



नी कही। पज्जत्त असुरकुमाराणंति। पर्याप्त असुरकुमार देवतानी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून कुछ अधिक सागरोपम कही। असुरकुमारीणं भंते देवीणंति। असुरकुमार देवीनी हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट साढे चार पल्योपमनी कही। अपज्जत्तियाणं असुरकुमारीणंति। अपर्याप्त असुरकुमारदेवीनी हे भगवन् केतली आयु कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नी उत्कृष्ट थी पिण अन्तमुहूर्त्त नी। पज्जत्तियाणं असुरकुमारीणंति। पर्याप्ता असुरकुमारनी देवीनी केतली आयु कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दश हजार वर्षनी उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून साढ चार पल्योपमनी कही। नागकुमाराणं देवाणंति। नागकुमार देवतानी हे भगवन् केतली आयु कही प्र० उ० हे गौ०

॥ मूल ॥

यमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अद्धपंचमाइं पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। नागकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं दोवि पलिओवमाइं देसूणाइं । अपज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं भंते ! नागकुमाराणं देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं दोण्णि पलिओवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं

॥ अ० ॥

हूर्त्तोनान्युत्कर्षतोर्द्वेपञ्चमानि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । नागकुमाराणां भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमे । अपर्याप्तकनागकुमाराणां भगवन् ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतोप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकानां भदन्त ! नागकुमाराणां देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनान्युत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमेअन्तर्मुहूर्त्तोने । नागकुमारीणां भदन्त ! देवीनां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम। जघन्येन दशवर्षसहस्राणि उत्कर्षतो (देशेन ऊनं) देशोनं (किञ्चिन्न्यूनं) पल्योपमम् । अपर्याप्तकनागकुमारीणां भदन्त! देवीनां कियन्तं

॥ भाषा ॥

जघन्य थी दशहजार वर्षनो उत्कृष्ट थी देशोन दोय पल्योपम कह्यो । अपज्जत्तियाणं नागकुमाराणंति । अपर्याप्त नागकुमारनो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उ० जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त कह्यो उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त कह्यो । पज्जत्तियाणं नागकुमाराणंति। पर्याप्त नागकुमार देवतानो हे भ० केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ० जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त ऊन दशहजार वर्षनो उत्कृष्ट देशोन दोय पल्योपम एतले अन्तर्मुहूर्त्त ऊन दोय पल्य पम कह्यो नागकुमारीणंति। नागकुमारी देवीनो हे भ० केतलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ० जघन्य दशहजारवर्षनो उत्कृष्ट देशोन पल्योपम। अपज्जत्तियाणं नागकु

॥ मूल ॥

दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं । अपज्जत्तियाणं नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं नागकुमारीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । सुवण्णकुमाराणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणंपुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्को

॥ अ० ॥

कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतोप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकनागकुमारीणां भदन्त ! देवीनां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतो देशोनं पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम् ॥ सुपर्णकुमाराणां भगवन् ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो द्वे पल्योपमे देशोने । अपर्याप्तकानां पृच्छा ' गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा ' गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतो देशोने द्वे पल्योपमेन्तर्मुहूर्त्तोने । सु

॥ भाषा ॥

मारोणति । अपर्याप्त नागकुमार देवोनो हे भगवन् केटलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ० जघन्य पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तियाणं नागकुमारीणं । पर्याप्त नागकुमारी देवीनो हे भगवन् केटलो आयु कह्यो प्र० उ० हे गौ० जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दशहजार वर्षनो उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त्त न्यून देशोन पल्योपम । सुवन्नकुमाराणंति । सुवर्ण कुमार देवतानो केटलो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी दशहजार वर्ष उत्कृष्ट थी देशोन दोय पल्योपम । अपज्जत्तियाण पुच्छा, अपर्याप्त सुवर्णकुमारनो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयाण पुच्छा । पर्याप्तनो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दशहजारवर्ष उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून देशोन दोय पल्योपम । सुव

सेणं दो पलिओवमाइं देसूणाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। सुवण्णकुमारीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं। अपज्जत्तियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं देसूणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं, एवं एएणं अभिलावेणं णेहियअपज्जत्तपज्जत्तसूत्तत्तयं देवाणं देवीणय णेयव्वं जाव थणियकुमाराणं जहा नागकुमाराणं। पुढविकाइयाणं भंते! केवइयं कालं ठिई प० ? गो० ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं। अपज्जत्तयपुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गो० !

॥ मूल ॥

---

पर्णकुमारदेवीनां पृच्छा ' गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्युत्कर्षतो देशोनं पल्योपमम्। अपर्याप्तकसुपर्णकुमारदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम्। पर्याप्तकसुपर्णकुमारदेवीनां पृच्छा ' गौतम ! जघन्येन दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतो देशोनं पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम्। एवमेतेनाभिलापेनौघिकापर्याप्तपर्याप्तसूत्रत्रय देवानां देवीनाञ्च ज्ञातव्यं यावत्स्तनितकुमाराणां यथा नागकुमाराणाम्॥ पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कियत्कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि। अपर्याप्त

॥ अ० ॥

---

सकुमारीणं पृच्छा। सुवर्णकुमारीनो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य दशहजारवर्ष उत्कृष्ट देशोन पल्योपम। अपज्जत्तियाणं पुच्छा। अपर्याप्त सुवर्णकुमार देवीनो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। पज्जत्तियाणं पुच्छा। पर्याप्त सुवर्णकुमारनी देवीनो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दशहजारवर्ष उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून देशोन पल्योपम, इम एणें अभिलावें औधिक १ अपर्याप्त २ पर्याप्त ३ सूत्र तीन देवता देवीना जाणवा यावत्स्तनितकुमार लगें कहवो जिम नागकुमारने कह्यो तिम कहवो। पृथिवीकायिकनो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट बावीसहजार वर्षनो। अपज्जत्तयपुढविकाइयाणंति। अपर्याप्त पृथिवीकायनो

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयपुढविकाइयणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तयसुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयसुहुमपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बादरपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं । अपज्जत्तयबादरपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं ।

॥ अ० ॥

कपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कियत्कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्यतोप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकपृथिवीकायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तं मुत्कर्षतो द्वाविंशतिर्वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोप्यन्तर्मुहूर्त्तंमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । अपर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकसूक्ष्मपृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोप्युत्कर्षतो प्यन्तर्मुहूर्त्तम् । बादरपृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यनान्त

॥ भाषा ॥

हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्रश्न उत्तर हे गौतम ! जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो कह्यो । पज्जत्तपुढविकाइयाणंति । पर्याप्त पृथिवीकाय नो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून दशहजारवर्ष नो कह्यो । सुहुमपुढविकाइयाणंति । सूक्ष्मपृथिवीकाय नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । अपज्जत्तयसुहुमपु० । अपर्याप्त सूक्ष्मपृथिवीकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । पज्जत्तयसुहुमपु० । पर्याप्तसूक्ष्मपृथिवीकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । बादरपुढविकाइयाणंति । बादरपृथिवीकायनो प्र० कीधो उत्तर हे

॥ मूल ॥

पज्जत्तयबादरपुढविकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावीसं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं। आउकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं । अपज्जत्तयआउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयआउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तऊणाइं । आउकाइयाणं नेहियाणं अपज्जत्तयाणं पज्जत्तयाणं जहा सुहुमपुढविकाइयाणं तहा ना

॥ अ० ॥

मुंहूर्त्तमुत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकबादरपृथिवीकायिकानां पृच्छा , गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकबादरपृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्वाविंशतिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि ॥ अप्कायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकाप्कायिकानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकाप्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । अप्का

॥ भाषा ॥

गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट थी बावीसहजारवर्ष नो । अपज्जत्तयबादरपुढविकाइयाणंति । अपर्याप्त बादर पृथिवीकायिक नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । पज्जत्तयबादरपुढवित्ति । पर्याप्त बादरपृथिवीकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून बावीसहजार वर्ष नो । आउकाइयाणं भंते त्ति । अप्कायिक नो हे भगवन् केतलो आयु कह्यो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट थी सातहजारवर्ष नो । अपज्जत्तयआउकाइयाणंति । अपर्याप्ताप्कायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो कह्यो । पज्जत्तय आउकाइयाणंति । पर्याप्त अप्कायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी सातहजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । आउकाइयाणं ओहियाणंति । अप्कायिक औधिक १ अपर्याप्त २ पर्याप्तने जिम सू

णियव्वं । बादरआउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं अपज्जत्तयबादरआउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सत्तवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । तेउकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं

यिकानामौधिकानामपर्याप्तकानां पर्याप्तकानां यथा सूक्ष्मपृथिवीकायिकानां "भणितं" तथा भणितव्यम् । बादराप्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादराप्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तं । पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः सप्तवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । तेजस्कायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिंदिवानि । अपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्यन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिंदिवानि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सूक्ष्मतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्ये

क्ष्म पृथिवी कायिकने कह्यो तिम कहवो । बादरआयुकाइयाणंति । बादर अप्कायिकनो प्र० कीधो हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी सात हजारवर्ष नो कह्यो । अपज्जत्तयबादर आउकाइयाणंति । अपर्याप्तबादर अप्कायिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयाणंति । पर्याप्तक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी सातहजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊन कह्यो । तेउकाइयाणंति । तेजस्काय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन अहोरात्र । अपज्जत्तियाणंति । अपर्याप्त तेजस्कायिक नो प्र० कीधो उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तियाणंति । पर्याप्त तेजस्कायिक नो प्र० कीधो उ० हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्क

॥ मूल ॥

उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमतेउकाइयाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । अपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बायरतेउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा, ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि राइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वाउकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि वाससहस्साइं । अपज्जत्तवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्ने

॥ अ० ॥

नाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । अपर्याप्तपर्याप्तसूक्ष्मतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । बादरतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिंदिवानि । अपर्याप्तकबादरतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम्, पर्याप्तकबादरतेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि रात्रिंदिवानि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि । वायुकायिकानां

॥ भाषा ॥

ष थी तीन रात्रिदिन । सुहुमतेउकाइयाणंति । सूक्ष्मतेजस्कायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो कह्यो । अपज्जत्तापज्जत्ताणं सुहुमाणं । अपर्याप्त पर्याप्त सूक्ष्म तेजस्कायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । बादरतेउकाइयाणंति । बादरतेजस्काय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट तीन अहोरात्र । अपज्जत्तयाणंति । अपर्याप्त बादरतेजस्काय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्ताणंति । पर्याप्त बादर तेजस्काय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी तीन रात्रिदिन अन्तर्मुहूर्त्त जन । वाउकाइयाणंति । वायुकायिक नो हे भगवन् केतला कालनी स्थिति कही । गौतम जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त्त नो उत्कृष्ट थी तीन हजारवर्ष नो । अपज्जत्तवायुकाइयाणंति । अपर्याप्त वायुकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघ

॥ मूल ॥

णवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बादरवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं । अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे

॥ अ० ॥

पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकवायुकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि ॥ सूक्ष्मवायुकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । अपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतोप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षेणाप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । बादरवायुकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादरवायुकायि

॥ भाषा ॥

न्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्ताणंति । पर्याप्त वायुकायनो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी तीनहजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । सुहुमवायुकाइयाणंति । सूक्ष्मवायुकाय नो प्रश्न कीधो उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । अपज्जत्तियाणंति । अपर्याप्त सूक्ष्मवायुकायिक नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयाणंति । पर्याप्त सूक्ष्मवायुकाय नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । बादर वाउकाइयाणंति । बादर वायुकाय नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष तीनहजारवर्ष नो । अपज्जत्तबादरवाउकाइयाणंति । अपर्याप्तबादर वायुकायिक नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तमुहूर्त्त । पज्जत्तबादर वायु० । पर्याप्तबादर वायुकाय नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन

णवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तबादरवाउकाइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं । अपज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सुहुमवणस्सइयाकाइणं तहियाणं अपज्जत्तापज्जत्ताणय अंतोमुहुत्तं । बादरवणस्सइकाइयाणं

॥ मूल ॥

कानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तबादरवायुकायिकानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि ॥ वनस्पतिकायिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकवनस्पतिकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सूक्ष्मवनस्पतिकायिकानामौधिकानामपर्याप्तपर्याप्तकानां च्यान्तर्मुहूर्त्तम् ॥ बादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो दशवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्त

॥ अ० ॥

हजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त जन । वणस्सइकाइयाणंति । वनस्पतिकाइक नो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही । हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट दश हजार वर्षनो । अपज्जत्तियाण पुच्छा । अपर्याप्त वनस्पतिकाय नो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त पज्जत्तयाणंति । पर्याप्त वनस्पतिकाय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी दशहजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त जन । सुहुमवणस्सइकाइयाणंति । सूक्ष्मवनस्पतिकायिक औधिक अपर्याप्त पर्याप्त नो अन्तर्मुहूर्त्त नो आयु कह्यो । बादरवणस्सइकाइयाणंति । बादरवनस्पतिकाय नो प्र० कीधो उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट दशहजारवर्ष नो कह्यो । अपज्जत्तबादर वणस्सइकाइयाणंति । अपर्याप्त बादर वनस्पतिकाय नो प्र०

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं । अपज्जत्तबादरवणस्सइकाइयाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तबादरवणस्सइकाइयाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । बेइंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गो० ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं । अपज्जत्तबेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तबेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बारस संवच्छराइं अंतोमुहुत्तूणाइं । तेइंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं

॥ अ० ॥

मुहूर्त्तम् । पर्याप्तबादरवनस्पतिकायिकानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोदशवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । द्वीन्द्रियाणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्वादश संवत्सराणि । अपर्याप्तद्वीन्द्रियाणां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तद्वीन्द्रियाणां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्वादश संवत्सराणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि ॥ त्रीन्द्रियाणां भदन्त ! कियन्त कालं स्थितिः प्रज्ञ० ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षत एकोनपञ्चाशद्रात्रिंदिवानि । अपर्याप्तत्रीन्द्रियाणां भदन्त !

॥ गाथा ॥

कोधो हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तबादर वणस्सइकाइयाणंति । पर्याप्त बादर वनस्पतिकाय नो प्र० कोधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी दशहजारवष नो अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । बेइंदियाणंति । बेइंद्रियनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी बारेवर्ष । अपज्जत्तयाणं बेइंदियाणंति । अपर्याप्त द्वीन्द्रिय नो प्र० कोधो उत्तर हे गौतम जघन्य था पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तबेइंदियाणंति । पर्याप्त बेइंद्रिय नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी बारे वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । तेइंदियाणंति । तेइंद्रियनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी उगुण

उक्कोसेणं एगूणवण्णराइंदियाइं । अपज्जत्ततेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्ततेइंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अंतोमुहुत्तं जहण्णेणं उक्कोसेणं एगूणवण्णराइंदियाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । चउरिंदियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा । अपज्जत्तयचउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयचउरिंदियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा अंतोमुहुत्तूणा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं ।

पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षत श्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तत्रीन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षत एकोनपञ्चाशद्रात्रिंदिवानि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि । चतुरिन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः षण्मासाः । अपर्याप्तकचतुरिन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकचतुरिन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः षण्मासा अन्तर्मुहूर्त्तोनाः ॥ पञ्चेन्द्रिय

चास अहोरात्र । अपज्जत्ततेइंदियाणंति । अपर्याप्त तेरिंद्रिय नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्ततेइंदियाणंति । पर्याप्त तेरिंद्रिय नो प्र० कोधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी उगुणचास अहोरात्र अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । चउरिंदियाणंति । चौरिंद्रियनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी छ मासनो कही । अपज्जत्तयचउरिंदियाणंति । अपर्याप्त चतुरिंद्रियनो केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त कही । पज्जत्तचउरिंदियाणंति । पर्याप्त चौरिंद्रीनो केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून छ मास । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणंति । पंचेंद्रियतिर्यंच योनिकनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी तीन पल्यो

अपज्जत्तपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं , पज्जत्तपं चिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतो मुहुत्तूणाइं । सम्मूच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयसंमूच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयसम्मूच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उ



तिर्यग्योनिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तकसम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तसम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्तोना । गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्त



पम । अपज्जत्तपंचिंदियत्ति । अपर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तपंचिंदिय त्ति । पर्याप्त पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट थी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणंति । संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० कोधो उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोटी । अपज्जत्तयसंमुच्छिमत्ति । अपर्याप्त संमूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयसंमूच्छिमत्ति । पर्याप्त सम्मूर्च्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून पूर्वकोडी । गब्भवक्कंतियत्ति । गर्भव्युत्क्रान्तिक

॥ मूल ॥

क्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गो० ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । अपज्जत्तगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्त जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयज

॥ अ० ॥

र्मुहूर्त्तमुत्कर्षत स्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षत स्त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्तो

॥ भाषा ॥

पंचेंद्रिय तिर्यञ्च योनिकनो प्र० हेगौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम । अपर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिकनो प्र० उ० हेगौतम जघन्य थी उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिक पंचेंद्रिय तिर्यञ्चयोनिकनो प्र० उ० हेगौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । जलचरपंचेंद्रियतिरिक्खजोणियाणंति । जलचरपंचेंद्रिय तिर्यंच योनिकनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोडी । अपज्जत्त जलचरपंचेंद्रियत्ति । अपर्याप्त जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । पज्जत्तपंचेंद्रियत्ति । पर्याप्त जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो

लयरपंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । सम्मूच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तसम्मूच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्कजो



ना । सम्मूच्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिः । अपर्याप्तसम्मूच्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षत श्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तसम्मूच्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्तोना । गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षेण पूर्वकोटिः । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तगर्भव्यु



प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त न्यून पूर्वकोडी । संमुच्छिम जलयरपंचेंदियतिरिक्खत्ति । संमूर्च्छिम जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोडी । अपज्जत्तसम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियत्ति । अपर्याप्त समूर्च्छिम जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तसम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियत्ति । पर्याप्त समूर्च्छिम जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोटी अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । गब्भवक्कंतियजलयरत्ति । गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोटी । अपज्जत्तगब्भवक्कंतियत्ति । अपर्याप्त गर्भव्यु

णियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तगसम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा। चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णिपलिओवमाइं अपज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। सम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा,

---

त्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्त्तोना पूर्वकोटिः । चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सम्मूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः चतुरशीतिवर्ष

---

क्रान्तिक जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अंतर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। पज्जत्तगसम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियत्ति। पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त्त ऊन पूर्वकोडी। चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खत्ति। चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम अपज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियत्ति। अपर्याप्त चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यग्योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। पज्जत्तयचउप्पयथलयरपंचिंदियत्ति। पर्याप्त चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी

॥ मूल ॥

? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं अपज्जत्तयसम्मूच्छिमचउप्पयथलय रपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गो० ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगसम्मूच्छिम चउप्प यथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं चउरासीइं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अं तोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिण्णि पलिओवमाइं । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं

॥ अ० ॥

सहस्राणि । अपर्याप्तसम्मूर्च्छिमस्थलचरचतुष्पदपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तसम्मूर्च्छिम चतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतश्चतुरशीतिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । गर्भव्युत्क्रा न्तिकचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्ति कचतुष्पदस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपञ्चे

॥ भाषा ॥

तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त जान । सम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियत्ति । सम्मूच्छिमचतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी चौरासी सहस्रवर्ष नो । अपज्जत्तसम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खत्ति । अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम चतुष्पदस्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त नो । पज्जत्तसम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजो णियाणं पुच्छा । पर्याप्त सम्मूर्च्छिम चतुष्पदस्थलचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी चौरासी हजारवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त जान । गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियत्ति । गर्भव्युत्क्रान्तिकचोपद थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरत्ति । अपर्याप्त गर्भज चोपदथलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो प्रश्न । उत्तर

पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तगसन्नवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अपज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । सम्मूच्छिमसामण्णपुच्छा कायव्वा, गोयमा ! जहन्नेणं

---

न्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तकोरःपरिसर्पस्थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षत श्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोन्तर्मुहूर्त्तोना पूर्वकोटिः । संमूर्च्छिमसामान्यपृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रिपञ्चाशद्वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तकसम्मूर्च्छिमो

---

हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरत्ति । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक चौपद थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंग्योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । उरपरिसप्पथलयरत्ति । उरपरसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यञ्च योनिकनो प्र० गौतम जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्षथी पूर्वकोडी । अपज्जत्तयउरपरिसप्पथलयरत्ति । अपर्याप्त उरपरिसर्प थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्षथी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगउरपरिसप्पथलयरत्ति । पर्याप्त उरपरसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यञ्च योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोडी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । समुच्छिमसामन्नत्ति । संमूर्च्छिमनो सामान्य पृच्छा

॥ मूल ॥

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेवण्णवाससहस्साइं । अपज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तेवण्णं वाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्

॥ अ० ॥

रःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकसम्मूर्च्छिमोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रिपञ्चाशद्वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । गर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियति

॥ भाषा ॥

करवो उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी चेपनहजारवर्षनो । अपज्जत्तसम्मूच्छिमउरपरिसर्प्पत्ति । अपर्याप्तसमूर्च्छिम उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हेगौतम जघन्य थी उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगसंमुर्च्छिमउरपरिसर्प्पत्ति । पर्याप्तसंमूर्च्छिमउरपरिसर्प थलचर पचेंद्रिय तिर्यग्योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी चेपनहजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । गब्भवक्कंतियउरपरिसर्प्पत्ति । गर्भव्युत्क्रान्तिक उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यञ्चयोनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोडी । अपज्जत्तयगब्भवक्कंतिय उरपरिसर्प्पत्ति । अपर्याप्त गर्भज उरपरसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्ज

॥ मूल ॥

जोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं पज्जत्तथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमुहुत्तूणा । सम्मूच्छिमथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमथलयरपंचिंदि

॥ अ० ॥

यंग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्तोना । स्थलपरिसर्पस्थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तस्थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तस्थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्तोना । सम्मूर्च्छिमभुजपरिसर्पस्थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्राणि । अपर्याप्तसम्मू

॥ भाषा ॥

त्तगर्भजकतिर्यग्उरपरिसर्पप्रति । पर्याप्त गर्भज उरपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्व कोडी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । भुजपरिसर्पस्थलचरप्रति । भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोडी । अपर्याप्तभुजपरिसर्पप्रति । अपर्याप्त भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पर्याप्तक भुजपरिसर्प थलचर नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्वकोडी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । सम्मूर्च्छिम भुजपरसर्प पंचेंद्रिय नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी बेतालीस हजारवर्ष । अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम भुज

॥ मूल ॥

यतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगसम्मूच्छिमजुयपरि
सप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बायालीसं वा
ससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियजुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गो
यमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियति
रिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजुजपरिस
प्पथलयरपंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पुव्वकोडी अंतोमु

॥ अ० ॥

र्च्छिमजुजपरिसर्पस्थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तसम्मूर्च्छिमजुजपरिसर्पस्थलचर
पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्विचत्वारिंशद्वर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । गर्भव्युत्क्रान्तिकजुजपरिस
र्पस्थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिः । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकजुजपरिसर्पस्थलचरपं
चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकजुजपरिसर्पस्थलचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिका

॥ भाषा ॥

परिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगसम्मूच्छिमभुजपरिसर्पत्ति । पर्या
प्तकसम्मूर्च्छिम भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच्च योनिकनो प्र० उ० हेगौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी बेतालीस हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊन
गब्भवक्कंतियभुयपरिसर्प्पत्ति । गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पूर्व
कोडी । अपर्याप्तक गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच्चयोनिक नो प्र० उ० हेगौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्ज
त्तगगब्भवक्कंतियभुयपरिसर्प्पत्ति । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक भुजपरिसर्प थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हेगौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष

ऊणाणि । खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो । अपज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखिज्जइभागे अंतोमुहुत्तूणे । सम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं बावत्तरिवाससहस्साणि । अपज्जत्तयसम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतो



नां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पूर्वकोटिरन्तर्मुहूर्त्तोना । खचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासङ्ख्येयो भागः । अपर्याप्तखचरपचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तखचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासङ्ख्येयो भागो ऽन्तर्मुहूर्त्तोनः । सम्मूच्छिमखचरपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्विसप्ततिवर्षसहस्राणि । अपर्याप्तसम्मूच्छिमखचरपचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो द्विसप्ततिवर्षसहस्राण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । गर्भव्युत्क्रान्तिक



थो पूर्वकोडो अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । खहयरपंचिंदियत्ति । खचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थो अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थो पल्योपम नो असंख्यातमो भाग । अपज्जत्तखहयरत्ति । अपर्याप्त खचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थो पिण उत्कर्ष थो पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणंति । पर्याप्त खचर पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थो अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थो पल्योपम नो असंख्यातमो भाग अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । सम्मुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाण पुच्छा । सम्मूर्च्छिम खेचर पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिक नो

॥ मूल ॥

मुञ्चत्तं । पज्जत्तयसम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुञ्चत्तं उक्कोसेणं बावत्तरिवाससहस्साइं अंतोमुञ्चत्तूणाइं । गब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुञ्चत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागे । अपज्जत्तयगब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुञ्चत्तं । पज्जत्तयगब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुञ्चत्तं उक्कोसेणं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागो अंतोमुञ्चत्तूणो । मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं

॥ अ० ॥

खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतो पल्योपमस्याऽसंख्येये भागे । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतः पल्योपमस्यासंख्येयतमे भागे ऽन्तर्मुहूर्त्तोने । मनुष्याणां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तकमनुष्याणां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकमनुष्याणां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सम्मूर्च्छिममनुष्याणां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येना

॥ भाषा ॥

प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी बहत्तर हजार वर्ष । अपज्जत्तसम्मुच्छिमखहयरपंचिंदियत्ति । अपर्याप्त सम्मूर्च्छिम खचर पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयसंमुच्छिमखहयरपंचिंदियत्ति । पर्याप्त सम्मूर्च्छिम खचर पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी बहत्तर हजार वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । गब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियत्ति गर्भव्युत्क्रान्तिक खचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पल्योपम नो असंख्यात मो भाग । अपज्जत्तयग

अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं । अपज्जत्तगमणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयमणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सम्मुच्छिममणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं गब्भवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं । अपज्जत्तगब्भवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगब्भवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं तिन्नि पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वाणमंतराणं



प्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाऽन्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि । अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तमुत्कर्षतस्त्रीणि पल्योपमानि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि । वानव्यन्तराणां देवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता, गौतम ! जघन्येन दस वाससहस्सा



भवक्कंतियखहयरत्ति । अपर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक खचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अंतर्मुहूर्त्त । पज्जत्तगभवक्कंतियखहयरत्ति । पर्याप्त गर्भव्युत्क्रान्तिक खचर पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्यथी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी पल्योपम नो असंख्यातमो भाग अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । मणुस्साणं भंते त्ति । मनुष्य नी हे भगवन् केतला काल नी स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम । अपज्जत्तगमणुस्साण पुच्छा । अपर्याप्त मनुष्य नो प्र० उ० गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयमणुस्साण ति । पर्याप्त मनुष्य नो प्र० कोधी उत्तर हेगौतम जघन्य थी अंतर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । संमूर्च्छिममणुस्साणं पुच्छति । संमूर्च्छिम मनुष्य नो प्रश्न उत्तर हेगौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त उत्कर्ष थी विण तेहिज । गब्भवक्कंतियमणुस्साणं पुच्छा । गर्भज मनुष्य

॥ मूल ॥

णंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं पलिओवमं । अपज्जत्तवाणमंतरदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयवाणमंतर देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । वाणमंतरीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं । अपज्जत्तियाणं णंते ! वाणमंतरीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्ज

॥ अ० ॥

णि उत्कर्षतः पल्योपमम् । अपर्याप्तकवानव्यन्तर देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यंतर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकवानव्यन्तराणां देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन दस वर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतोन्तर्मुहूर्त्तोनं पल्योपमम् । वानव्यन्तरीणां देवीनां पृच्छा' गौतम ! जघन्येन दस वर्षसहस्राणि उत्कर्षतो अर्द्धपल्योपमम् । अपर्याप्तदेवीनां भदन्त ! पृच्छा' गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तकवानव्यन्तरीणां भदन्त ! पृच्छा, गौतम ! जघन्येन दस वर्षसहस्राणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमम् अन्तर्मुहूर्त्तोनम् । ज्योतिष्काणां भदन्त ! देवानां कियन्त कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता, गौतम ! जघन्येन पल्योपमाष्टभागो उत्कर्षतः पल्योपमं वर्षसहस्राभ्यधिकम् ।

॥ भाषा ॥

नो प्रश्न उत्तर हेगौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम । अपज्जत्तग गब्भवक्कंतियमणुस्साणं ति । अपर्याप्त गर्भज मनुष्य नो प्रश्न कीधो उत्तर हेगौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त नो । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियमणुस्साणंति । पर्याप्त गर्भज मनुष्य नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त उत्कर्ष थी तीन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । वाणमंतराणं भंते देवाणंति । वानव्यन्तर देवनो हे भगवन् केतला काल नो स्थिति कहो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी दशहजार वर्ष उत्कर्ष थी पल्योपम । अपज्जत्तयवाणमंतराणंति । अपर्याप्त वानव्यन्तर देवता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । पज्जत्तयवाणमंतराणं देवाणं ति । पर्याप्त वानव्यन्तर देवता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त

॥ मूल ॥

त्तियाणं भंते ! वाणमंतरीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । जोइसियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं । अपज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । जोइसिणीणं

॥ अ० ॥

अपर्याप्तज्योतिष्काणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकज्योतिष्काणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपमाष्टभागम न्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतः पल्योपमं वर्षशतसहस्राभ्यधिकमन्तर्मुहूर्तोनम् । ज्योतिष्कदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतः पल्योपमाष्टभाग उत्कर्ष

॥ भाष ॥

न्यून दशहजार वर्षनो उत्कर्ष थी पल्योपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । वाणमंतरीणं देवीणंति । वानव्यन्तर देवी नो प्र० उ० गौतम जघन्य थी दश हजारवर्ष उत्कर्ष थी अर्ध पल्योपम । अपज्जत्तियाणं भंत वाणमंतरीणं देवीणं ति । अपर्याप्त वानव्यंतर देवी नो हे भगवन् केटलो आयु कह्यो हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तियाणं भंते वाणमंतरीण देवीणं ति । पर्याप्त वानव्यन्तरनी देवी नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी दशहजा रवर्ष अन्तर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी अर्ध पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । जोइसियाणं भंते देवाणंति । जोतिष्क देवता नो हे भगवन् केटला कालनो स्थिति कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम नो आठमो भाग उत्कर्ष थी पल्योपम एकलाख वर्ष अधिक । अपज्जत्तयजोइसियाणं पुच्छा । अपर्याप्त जोतिष्क नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तयजोइसियाणंति । पर्याप्त जोतिषी नो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम नो आठमो भाग अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कर्ष थी पल्योपम लाख वर्ष अधिक अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । जोइसणीणं भंते देवीणं ति । जोतिष्क देवी नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम नो आठमो भाग उत्कर्ष थी अर्ध पल्योपम पचास हजारवर्ष अधिक । अपज्जत्तियाणं जोइसणीणंति । अ

॥ मूल ॥

णंते ! देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो उक्कोसेणं अड्ढपलिओवमं पण्णासवाससहस्स मब्भहियं । अपज्जत्तियाणं जोइसिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तियाणं जोइसिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमट्ठभागो अंतोमुहुत्तूणो उक्कोसेणं अड्ढपलिओवमं पण्णासवाससहस्सेहिं अब्भहिए अंतोमुहुत्तूणं । चंदविमाणेणं भंते ! देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउब्भागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं । चंदविमाणेणं भंते ! अपज्जत्तयाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । चंदविमाणेणं भंते ! पज्जत्तयाणं देवाणं

लोऽर्द्धं पल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्राभ्यधिकम् । अपर्याप्तकज्योतिष्कदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यत उत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तज्योतिष्कदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतः पल्योपमाष्टभागोनमन्तर्मुहूर्त्तोन उत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकमन्तर्मुहूर्त्तोनम् । चन्द्रविमाने भदन्त ! देवानां पृच्छा ' गौतम ! जघन्येन चतुर्भागं पल्योपममुत्कर्षतः पल्योपमं वर्षलक्षाभ्यधिकम् । चन्द्रविमाने भदन्त ! अपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । चन्द्रविमाने भदन्त ! पर्याप्तकानां देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागम

॥ अ० ॥

पर्याप्त जातिष्क देवो नी प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तियाणं जोइसणीणंति । पर्याप्त जोतिष्क देवो नी प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम नो आठमो भाग अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कृष्ट थी अन्तर्मुहूर्त्त ऊन पचास हजारवर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम । चंदविमाणेणं भंते देवाणंति । चन्द्रविमाने भदन्त देवतानी केतला कालनी स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी चतुर्भाग पल्योपम उत्कर्ष थी पल्योपम लाख वर्ष अधिक । चंदविमाणेणं भंते अपज्जत्तयाणं देवाणंति । चन्द्रविमान मा हे भगवन् अपर्याप्त देवनी पृच्छा हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । चंदविमाणेणं भंते पज्जत्तयाणंति । चन्द्रविमान मां देवतानी हे भगवन् केतलो आयु प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी चतुर्भाग पल्योपम

॥ भाषा ॥

मं ॥ शेषमपि सुगम मापदपरिसमाप्ते र्भवरं चंदविमाणेणं भंते ! देवाणमित्यादि ॥ चन्द्रविमाने चन्द्र उत्पद्यते शेषाश्च तत्परिवारभूता स्तत्र त त्परिवारभूतानां जघन्यतश्चतुर्भागपल्योपमप्रमाणा उत्कर्षतः केषांचिदिन्द्रसामानिकादीनां वर्षलक्ष्याभ्यधिकं पल्योपमं चन्द्रदेवस्य तु यथोक्तमुत्क



पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससयसहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । चंदविमाणेणं देवीणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं । चंदविमाणेणं अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण वि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । चंदविमाणेणं पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पण्णासाए वाससहस्सेहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । सूरवि



न्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतः पल्योपमं वर्षलक्षाभ्यधिकमन्तर्मुहूर्त्तोनम् । चन्द्रविमाने देवीनां पृच्छा ? गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतोर्द्धं पल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकम् । चन्द्रविमाने अपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । चन्द्रविमाने पर्याप्तकदे वीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतोर्द्धपल्योपमं पञ्चाशद्वर्षसहस्रैरधिकमन्तर्मुहूर्त्तोनम् । सूर्यविमाने प्रद



अन्तर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी पल्योपम लाखवर्ष अधिक अन्तर्मुहूर्त ऊन । चंदविमाणे देवीणंति । चन्द्रविमान मां देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम नो चौथो भाग उत्कृष्ट थी पचास हजार वर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम । चंदविमाणे अपज्जत्तियाण देवीणंति । चन्द्रमां ना विमानने विषे अपर्याप्तक देवीनो स्थितिनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । चंदविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणंति । चन्द्रमाना विमान नें विषें पर्याप्तक देवीनी स्थिति नो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम नो चौथो भाग अन्तर्मुहूर्त न्यून उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त न्यून पंचास ह जारवर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम । सूरविमाणेणं भंते देवाणंति । सूर्यना विमानने विषे हे भगवन् देवतानो केटला कालनो स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौ

माणेणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं । सूरविमाणे अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सूरविमाणेणं पज्जत्तदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पलिओवमं वाससहस्समब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं । सूरविमाणदेवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउभागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं । सूरविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सूरविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गो

॥ मूल ॥

---

ल्ल ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतः पल्योपमं वर्षसहस्राभ्यधिकम् । सूर्यविमाने ऽपर्याप्तदेवानां पृच्छा ' गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । सूर्यविमाने पर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममन्तर्मुहूर्तोनम् उत्कर्षतः पल्योपमं वर्षसहस्राभ्यधिकमन्तर्मुहूर्तोनम् । सूर्यविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतोर्द्धं पल्योपमं पञ्चभिर्वर्षशतैरधिकम् । सूर्यविमाने ऽपर्याप्तदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । सूर्यविमाने पर्याप्तकदेवीनां पृ

॥ अ० ॥

---

तम जघन्य थी चौथे भागे पल्योपमने उत्कृष्ट पल्योपम हजारवर्ष अधिक । सूरविमाणे अपज्जत्तदेवाणंति । सूर्यना विमानने विषे अपर्याप्त देवनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । सूरविमाणे पज्जत्तदेवाणंति । सूर्यविमानने विषे पर्याप्त देवनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अंतर्मुहूर्त्त न्यून पल्योपमनो चौथो भाग उत्कर्ष थी अंतर्मुहूर्त्त न्यून हजारवर्ष अधिक पल्योपम । सूरविमाणे देवीणंति । सूर्यना विमानने विषे देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपमनो चौथो भाग उत्कृष्ट पांच वर्ष अधिक अर्द्ध पल्योपम । सूरविमाणे अपज्जत्तियाण देवीणंति । सूर्यना विमानने विषे अपर्याप्त देवीनो प्र० उ० हे गो० जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अंतर्मुहूर्त्त । सूरविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणंति । सूर्यना विमानने विषे

॥ भाषा ॥

यमा ! जहन्नेणं चउन्नागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं अट्ठपलिओवमं पंचहिं वाससएहिं अब्भहियं अंतोमुहुत्तूणं। गहविमाणे देवाणं पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणं चउन्नागपलिओवमं उक्कोसेणं पलिओवमं। गहविमाणे अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। गहविमाणे पज्जत्तदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउन्नागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं। गहविमाणे देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउन्नागपलिओवमं उक्कोसेणं अट्ठपलिओवमं। गहविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। पज्जत्तियाणं गहविमाणे

---

च्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतोद्वंपल्योपमं पञ्चभिर्वर्षशतैरधिकमन्तर्मुहूर्त्तोनम्। ग्रहविमाने देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतः पल्योपमम्। ग्रहविमानेऽपर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम्। ग्रहविमाने पर्याप्तदेवानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तोनं पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतः पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम्। ग्रहविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतोद्वंपल्योपमम्। ग्रहविमानेऽपर्याप्तदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम्। ग्रह

---

पर्याप्त देवोनी स्थिति नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अंतर्मुहूर्त्त न्यून पल्योपम नो चौथो भाग उत्कर्ष थी पांच वर्ष अधिक पल्योपम अंतर्मुहूर्त्त न्यून। ग्रहविमाणे देवाणं पुच्छा। ग्रहना विमानने विषे देवता नो प्र० उ० हे गो० जघन्य थी पल्योपमनो चोथो भाग उत्कर्ष थी पल्योपम। ग्रहविमाणे अपज्जत्तदेवाणं ति। ग्रहना विमान मां अपर्याप्त देवता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अंतर्मुहूर्त्त। ग्रहविमाणे पज्जत्तदेवाण पुच्छा। ग्रहना विमानने विषे पर्याप्त देवनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य अंतर्मुहूर्त्त न्यून पल्योपम नो चौथो भाग उत्कृष्ट थी पल्योपम अंतर्मुहूर्त्त ऊन ग्रहविमाणे देवीण पुच्छा। ग्रहना विमानने विषे देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम चतुर्भाग उत्कृष्ट अर्द्ध पल्योपम। ग्रहविमाणे अपज्ज

॥ मूल ॥

देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउन्नागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । नक्खत्तविमाणे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउन्नागपलिओवमं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं । नक्खत्तविमाणे अपज्जत्तयाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । णक्खत्तविमाणे पज्जत्तयाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउन्नागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं अद्धपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । नक्खत्तविमाणदेवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं चउन्नागपलिओवमं उक्कोसेणं

॥ अ० ॥

विमाने पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्तोनं पल्योपमचतुर्भागमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपममन्तर्मुहूर्तोनम् । नक्षत्रविमाने देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतोऽर्द्धं पल्योपमम् । नक्षत्रविमानेऽपर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । नक्षत्रविमाने पर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्भागपल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतोऽर्द्धपल्योपममन्तर्मुहूर्तोनम् । नक्षत्रविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतश्चतुर्भागं पल्योपममुत्कर्षतस्सातिरेकं चतुर्भागपल्योपमम् । नक्षत्रविमानेऽपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम !

॥ भाषा ॥

त्तियाणं देवीणं पुच्छा । ग्रहविमानने विषे अपर्याप्त देवीनो प्र० ७० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अंतर्मुहूर्त्त । पज्जत्तियाणंति । पर्याप्त ग्रहविमाननी देवीनो प्र० ७० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून पल्योपम चतुर्भाग उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून अर्द्ध पल्योपम । नक्खत्तविमाणे देवाणं पुच्छा । नक्षत्र विमानमां देवता नो प्र० ७० हे गौतम जघन्य थी चतुर्भाग पल्योपम उत्कर्ष थी अर्द्ध पल्योपम । नक्खत्तविमाणे अपज्जत्तयाणं देवाणंति नक्षत्रना विमानने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र०७० हेगौ० जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । नक्खत्तविमाणे पज्जत्तदेवाणंति । नक्षत्रना विमानने विषे पर्याप्त देवतानो प्र० ७० हे गौ० जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त ऊन पल्योपम चतुर्भाग उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त्त ऊन अर्द्ध पल्योपम । नक्खत्तविमाणे देवीणं पुच्छा । नक्षत्रना विमानने विषे देवीनो प्र० ७० हे गौतम जघन्य थी चतुर्भाग पल्योपम उत्कर्ष थी सातिरेक चतुर्भाग पल्योपम । नक्षत्र विमान ने

सातिरेगं चउन्नागपलिओवमं। नक्खत्तविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा? गो०! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। नक्खत्तविमाणे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा? गो०! जहण्णेणं चउन्नागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं सातिरेगं चउन्नागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं। ताराविमाणे देवाणं पुच्छा? गो०! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं चउन्नागपलिओवमं। ताराविमाणे अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा? गो०! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। ताराविमाणे पज्जत्तदेवाणं पुच्छा, गो०! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उ



जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम्। नक्षत्रविमाने पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम! अन्तर्मुहूर्त्तोनं चतुर्भागपल्योपममुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्त्तोनं सातिरेकं चतुर्भागपल्योपमम्। ताराविमाने देवानां पृच्छा, गौतम! जघन्येनाष्टभागं पल्योपममुत्कर्षतश्चतुर्भागं पल्योपमम्। ताराविमानेऽपर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम! जघन्यतश्चोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम्। ताराविमाने पर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तोनमष्टभागपल्योपममुत्कर्षतोन्तर्मुहूर्त्तोन चतुर्भागपल्योपमम्। ताराविमाने देवीनां पृच्छा, गौतम! जघन्येनाष्टभागपल्योपममुत्कर्षतः सातिरेकमष्टभागपल्यो



विष अपर्याप्त देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। नक्खत्तविमाणे पज्जत्तियाणंति। नक्षत्र विमानने विषे पर्याप्त देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी चतुर्भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कर्ष थी सातिरेक चतुर्भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून। ताराविमाने देवाणं ति। ताराविमाननें विषे देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अष्टभाग पल्योपम उत्कर्ष थी चतुर्भाग पल्योपम। ताराविमाणे अपज्जत्तदेवाणंति। ताराविमान ने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। ताराविमाणे पज्जत्तदेवाणंति। ताराविमानने विषे पर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अष्ट भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कर्ष थी चतुर्भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून ताराविमाणे देवीणंति। ताराविमानने विषे देवीनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अष्ट भाग पल्योपम उत्कर्ष थी सातिरेक अष्ट भाग पल्योपम।

क्कोसेणं चउन्नागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । ताराविमाणे देवीणं पुच्छा ? गो० ! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं । तराविमाणे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा, गो० ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । ताराविमाणे पज्जत्तयाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं साइरेगं अट्ठभागपलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । वेमाणियाणं भंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । अपज्जत्तयवेमाणियाणं भंते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तवेमाणियाणं पुच्छा ? गोयमा

---

पमम् । ताराविमानेऽपर्याप्तदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । ताराविमाने पर्याप्तदेवीनां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तोनमष्टभागं पल्योपममुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्त्तोनं सातिरेकमष्टभागपल्योपमम् । वैमानिकानां भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्यतः पल्योपममुत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । अपर्याप्तकवैमानिकानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तवैमानिकानां पृच्छा, गौ० ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । वैमानिकदेवीनां पृच्छा'

---

ताराविमाणे अपज्जत्तदेवीणंति । ताराविमानने विषे अपर्याप्त देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । ताराविमाणे पज्जत्तयाण देवीणंति । ताराविमानने विषे पर्याप्त देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अष्ट भाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कर्ष थी सातिरेक अष्टभाग पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून । वेमाणियाणं भंतेत्ति । वैमानिक देवनो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम उत्कर्ष थी तेतीस सागरोपम । अपज्जत्तियवेमाणियाणं देवाणंति । अपर्याप्त वैमानिक नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तवेमाणियाणं पुच्छा । पर्याप्त वैमानिकनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून पल्योपम उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून तेतो

जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । वेमाणिणीणं भंते ! देवीणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपन्नं पलिओवमाइं । अपज्जत्तियाणं देवीणं वेमाणिणीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तयाणं वेमाणिणीणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पणपण्णं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं । सोहम्मेणं भंते ! कप्पे देवाणं केवइयं कालं ठिई पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं पलिओवमं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं । सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतो

? गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि । अपर्याप्तकवैमानिकदेवीनां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । पर्याप्तकवैमानिकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्तोनानि । सौधर्मे भदन्त ! कल्पे देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतो द्वे सागरोपमे । सौधर्मे कल्पेऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । सौधर्मे कल्पे पर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतो

स सागरोपम । वेमाणीण भंते देवीणंति । वैमानिकनी देवीना हे भगवन् केटला आयु कह्या प्र० उ० हे गौ० जघन्य थी पल्योपम उत्कृष्ट थी पचावन पल्योपम । अपज्जत्तियाणं वेमाणीणंति । अपर्याप्त वैमानिकनी देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पज्जत्तियाण वेमाणीणं देवीणंति । पर्याप्त वैमानिक देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून पल्योपम उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त्त न्यून पचावन पल्योपम सोहम्मेच भंतेति । सौधर्म देवलोकने विषे हे भगवन् देवतानो केटला कालनो स्थिति कही प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम उत्कर्ष थी दो सागरोपम । सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तदेवाणंति । सौधर्म देवलोकने विषे अपर्याप्त देवनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त ।

॥ मूल ॥ ॥ अ० ॥ ॥ भाषा ॥

मुञ्जत्तं । सोहम्मे कप्पे पज्जत्तदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं अंतोमुञ्जत्तूणं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं अंतोमुञ्जत्तूणाइं । सोहम्मे कप्पे देवीणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं उक्कोसेणं पन्नासं पलिओवमाइं । सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुञ्जत्तं ( ग्रन्थाग्र २५०० ) सोहम्मे कप्पे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं पलिओवमं अंतोमुञ्जत्तूणं उक्कोसेणं पन्नासं पलिओवमाइं अंतोमुञ्जत्तूणाइं । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं पु



द्वे सागरोपमेऽन्तर्मुहूर्त्तोने । सौधर्मे कल्पे देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चाशत्पल्योपमानि । सौधर्मे कल्पेऽपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । सौधर्मे कल्पे पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनान्तर्मुहूर्त्तोनं पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सौधर्मे कल्पे परिगृहीतानां देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतः सप्तपल्योपमानि । सौधर्मे कल्पे परिगृहीतानामपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तोनम् । सौधर्मे कल्पे परिगृहीत



सोहम्मे कप्पे पज्जत्तदेवाणं पुच्छा । सौधर्मे कल्प पर्याप्त देवनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कर्ष थी दोय सागरोपम अन्तर्मुहूर्त न्यून । सोहम्मे कप्पे देवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम उत्कर्ष थी पचास पल्योपम । सोहम्मे कप्पे अपज्जत्तियदेवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे अपर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अंतर्मुहूर्त्त । सोहम्मे कप्पे पज्जत्तियाणं देवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे पर्याप्तक देवीनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अंतर्मुहूर्त्त न्यून पल्योपम उत्कर्ष थी अंतर्मुहूर्त्त ऊन पंचास पल्योपम सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे परिगृहीत देवनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पल्योपम उत्कर्ष थी सात पल्योपम । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं । सौधर्म कल्पने विषे परिगृहीत अपर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अंतर्मुहूर्त्त

च्छा, गोयमा ! जहन्नेणं पलिनवमं उक्कोसेणं सत्त पलिनवमाइं। सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सोहम्मे कप्पे परिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं पलिनवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं सत्त पलिनवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं पलिनवमं उक्कोसेणं पन्नासंपलिनवमाइं। सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सोहम्मे कप्पे अपरिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं पलिनवमं अंतो



पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तानमुत्कर्षतः सप्तपल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सौधर्मे कल्पेऽपरिग्रहीतानां देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चाशत्पल्योपमानि । सौधर्मे कल्पेऽपरिग्रहीतानामपर्याप्तकानां देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । सौधर्मे कल्पेऽपरिग्रहीतानां पर्याप्तकानां देवीनां पृच्छा' गौतम ! जघन्येन पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतः



सोहम्मे कप्पे परिगहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे परिग्रहीत पर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अंतर्मुहूर्त्त ऊन पल्योपम उत्कर्ष थी अंतर्मुहूर्त ऊन सात पल्योपम । सोहम्मे कप्पे अपरिगहियाणं देवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे अपरिग्रहीत देवीनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम उत्कर्ष थी पंचास पल्योपम । सोहम्मे कप्पे अपरिगहियाणं अपज्जत्तियदेवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे अपरिग्रहीत अपर्याप्ता देवीनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । सोहम्मे कप्पे अपरिगहियाणं पज्जत्तियाण देवीणंति । सौधर्म कल्पने विषे अपरिग्रहीत पर्याप्तक देवीनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पल्योपम अंतर्मुहूर्त्त ऊनउत्कर्ष थी पचास पल्योपम अन्तर्मुहूर्त ऊन । ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा । ईशान कल्पने विषे देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम उत्कर्ष थी सातिरेक दो

मुक्कत्तूणाइं । ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं । ईसाणे कप्पे अपज्जत्तयाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुक्कत्तं ईसाणे कप्पे पज्जत्तयाणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं अंतोमुक्कत्तूणं उक्कोसेणं सातिरेगाइं दो सागरोवमाइं अंतोमुक्कत्तूणाइं । ईसाणे कप्पे देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं सातिरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपण्णपलिओवमाइं । ईसाणे कप्पे देवीणं अपज्जत्तियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुक्कत्तं । ईसाणे कप्पे पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगं

पञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । ईशाने कल्पे देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममुत्कर्षतः सातिरेके द्वे सागरोपमे । ईशाने कल्पेऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । ईशाने कल्पे देवानां पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनम् । उत्कर्षतः सातिरेके द्वे सागरोपमेऽन्तर्मुहूर्त्तोने । ईशाने कल्पे देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यतः सातिरेकं पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि । ईशाने कल्पेऽपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । ईशाने





सागरोपम । ईशाणे कल्पे अपर्याप्तक देवाणंति । ईशान कल्पने विषे अपर्याप्तक देवनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । ईशाणे कल्पे पर्याप्तयाणं देवाणंति । ईशान कल्पने विषे पर्याप्तक देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त जन उत्कर्ष थी सातिरेक दोय सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन । ईशाणे कल्पे देवीणंति । ईशान कल्पने विषे देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम उत्कर्ष थी पंचावन पल्योपम । ईशाणे कल्पे अपर्याप्तियदेवीणंति । ईशान कल्पने विषे अपर्याप्तक देवीनो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । ईसाणे कल्पे पर्याप्तियदेवीणंति । ईशान कल्पने विषे पर्याप्तक देवीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी सातिरेक

॥ मूल ॥

पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पणपन्नपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं नव पलिओवमाइं । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं नव पलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा ? गोयमा ! जह

॥ अ० ॥

कल्पे पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । ईशाने कल्पे परिगृहीतानां देवीनां पृच्छा, गौ० ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममुत्कर्षतो नव पल्योपमानि । ईशाने कल्पे परिगृहीतानामपर्याप्तक देवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । ईशाने कल्पे परिगृहीतानां पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्त्तोनमुत्कर्षतो नवपल्योपमान्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । ईशाने कल्पेऽपरिगृहीतानां देवीनां पृच्छा' गौतम ! जघन्येन सातिरेकं

॥ भाषा ॥

पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । उत्कर्ष थी पचावन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं देवीणंति । ईशान कल्पने विषे परिग्रहीत देवीनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम उत्कर्ष थी नव पल्योपम । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं अपज्जत्तियदेवीणंति । ईशानकल्पने विषे परिग्रहीत अपर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । ईसाणे कप्पे परिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणंति ईशान कल्पने विषे परिग्रहीत पर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कर्ष थी नव पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाणं देवीणं पुच्छा । ईशान कल्पने विषे अपरिग्रहीत देवीनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम उत्कर्ष थी पंचावन पल्योपम । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा । ईशान कल्पने विषे अपरिग्रहीत अपर्याप्तक देवीनो प्र० उ० हे

न्तेणं साइरेगं पलिओवमं उक्कोसेणं पणपन्नपलिओवमाइं । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाणं अपज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा, गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । ईसाणे कप्पे अपरिग्गहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगं पलिओवमं अंतोमुहुत्तूणं उक्कोसेणं पणपन्नपलिओवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सणंकुमारे कप्पे देवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं दो सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्त सागरोवमाइं । सणंकुमारे कप्पे अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सणंकुमारे कप्पे पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं

---

पल्योपममुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि । ईशाने कल्पेऽपरिगृहीतानामपर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्यनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । ईशाने कल्पेऽपरिगृहीतानां पर्याप्तकदेवीनां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेकं पल्योपममन्तर्मुहूर्तोनमुत्कर्षतः पञ्चपञ्चाशत्पल्योपमानि अन्तर्मुहूर्तोनानि । सनत्कुमारे कल्पे देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन द्वे सागरोपमे उत्कर्षतः सप्त सागरोपमानि । सनत्कुमारे कल्पे ऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । सनत्कुमारे कल्पे पर्याप्तकानां देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन द्वे सागरो

---

गो० जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । ईसाणेकप्पे अपरिगहियाणं पज्जत्तियाणं देवीणंति । ईशानकल्पदेवलोकने विषे अपरिग्रहीत पर्याप्तक देवीनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सातिरेक पल्योपम अंतर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी पंचावन पल्योपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । सणंकुमारे कप्पे देवाण पुच्छा । सनत्कुमार कल्पने विषे देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी दोय सागरोपम उत्कर्ष थी सात सागरोपम । सणंकुमारे कप्प अपज्जत्ताणं देवाणंति । सनत्कुमार कल्पदेवलोकने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गो० जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । सणंकुमारेकप्पेपज्जत्ताणंति सनत्कुमार देवलोकने विषे पर्याप्त देवनो प्र० उ० हेगौतम जघन्य थी अन्तर्मुहूर्त्त ऊन दोयसागरोपम उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त्त ऊन सातसागरोपम । म।

सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । माहिंदे कप्पे देवीणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्त साहियाइं सागरोवमाइं । माहिंदे अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । माहिंदे पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगाइं दो सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सत्तसाहियाइं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । बंभलोए कप्पे देवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं सत्तसागरोवमाइं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं । बंभलोए अपज्जत्ताणं पुच्छा,

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

पमेनर्मुहूर्तोने उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । माहेन्द्रे कल्पे देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेके द्वे सागरोपमे उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाणि साधिकानि । माहेन्द्रे कल्पे ऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । माहेन्द्रे कल्पे पर्याप्तकानां देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सातिरेके द्वे सागरोपमेऽन्तर्मुहूर्तोने उत्कर्षतः सप्तसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । ब्रह्मलोके कल्पे देवानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाण्युत्कर्षतः दशसागरोपमाणि । ब्रह्मलोके कल्पेऽपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षत

॥ भाषा ॥

छिदकप्पे देवाणंति । माहेन्द्र देवलोकने विषे देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी सातिरेक दोड सागरोपम उत्कर्ष थी अधिक सात सागरोपम । माहिंदे कप्पे अपज्जत्तयदेवाणंति । माहेन्द्र देवलोकने विषे अपर्याप्त देवता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त । माहिंदे पज्जत्ताणं पुच्छा । माहेंद्रदेवलोकने विषे पर्याप्तदेवतानो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी सातिरेक दोयसागरोपम अन्तर्मुहूर्तेऊन । उत्कर्ष थी साते अधिक एकसागरोपम अन्तर्मुहूर्त ऊन । बंभलोए कप्पे देवाणंति । ब्रह्मलोक कल्पने विषे देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी सात सागरोपम उत्कर्ष थी दस सागरोपम । बंभलोए अपज्जत्ताणंति । ब्रह्मलोकने विषे अपर्याप्त देवतानो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अंतर्मुहूर्त बंभलोए पज्जत्ताणंति । ब्रह्मलोकने विषे पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सात सागरोपम अंतर्मुहूर्त्त थी ऊन उत्कर्ष थी दस साग

? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । बंभलोए पज्जत्ताणं पुच्छा , गोयमा ! जहन्नेणं सत्त सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । लंतए पुच्छा ? गो० ! जहन्नेणं दससागरोवमाइं उक्कोसेणं चउद्दससागरोवमाइं । लंतए अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । लंतए पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं चउद्दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । महासुक्के देवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं चउद्दससागरोवमाइं उक्कोसेणं सतरसागरोवमाइं । महासुक्के अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्तेणवि उक्कोसे

॥ मूल ॥

---

श्चान्तर्मुहूर्तम् । ब्रह्मलोके कल्पेपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सप्तसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतो दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । लान्तके पृच्छा, गौ० ! जघन्येन दशसागरोपमाण्युत्कर्षत श्चतुर्दशसागरोपमाणि । लान्तकेऽपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षत श्चान्तर्मुहूर्त्तम् । लान्तके पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनान्युत्कर्षतश्चतुर्दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । महाशुक्रे देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्दश सागरोपमाण्युत्कर्षतः सप्तदश सागरोपमाणि । महाशुक्रेऽपर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । महाशुक्रे पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन चतुर्दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनान्युत्कर्षतः सप्तदशसागरोपमाण्य

॥ अ० ॥

---

रोपम अंतर्मुहूर्त्त थी ऊन । लंतए पुच्छा । लंतकनो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी दस सागरोपम उत्कर्ष थी चउदे सागरोपम । लंतए अपज्जत्ताणंति । लंतक देवलोकने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । लंतए पज्जत्ताणंति । लंतकने विषे पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी दस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त थी ऊन उत्कर्ष थी अन्तर्मुहूर्त्त थी ऊन चउदे सागरोपम । महासुक्केदेवाणंति । महासुक्र देवलोकने विषे देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी चउदे सागरोपम उत्कर्ष थी सतरे सागरोपम । महासुक्के

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

णवि अंतोमुहुत्तं । महासुक्के पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं चोद्दससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सहस्सारे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं सतरसाग रोवमाइं उक्कोसेणं अट्ठारससागरोवमाइं । सहस्सारे अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसे णवि अंतोमुहुत्तं । सहस्सारे पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं सतरसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अट्ठारस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । आणए देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठारस

॥ अ० ॥

न्तर्मुहूर्तोनानि । सहस्रारे देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सप्तदश सागरोपमाण्युत्कर्षतोष्टादशसागरोपमाणि । सहस्रारेऽपर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । सहस्रारे पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन सप्तदश सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनान्युत्कर्षतो ष्टादश सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि । आनते कल्पे देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाष्टादशसागरोपमाण्युत्कर्षत एकोनविंशतिः सागरोपमाणि । आ नते कल्पेऽपर्याप्तकानां देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्तम् । आनते कल्पे पर्याप्तकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येना ष्टा

॥ भाषा ॥

अपज्जत्ताणंति । महाशुक्र देवलोकने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । महासुक्के पज्ज त्ताणंति । महासुक्रने विषे पर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी चउदै सागरोपम । अंतर्मुहूर्त्त करि जन उत्कर्ष थी सतरै सागरोपम अंत मुंहूर्त्त करि जन । सहस्सारे देवाणंति । सहस्रार देवलोकने विषे देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सतरह सागरोपम उत्कृष्ट थी अठारै सा गरोपम । सहस्सारे अपज्जत्ताणंति । सहस्रारकल्पने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण त्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । सहस्सारे पज्जत्ताण देवाणंति । सहस्रारे कल्पने विषे पर्याप्त देवतानो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी सतरह सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन उत्कर्ष थी अठारै सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन । आणए कप्पेति । आनतकल्पे देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी अठारै सागरोपम उत्कृष्टे उगणीस सागरोपम ।

सागरोवमाइं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं । आणए अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । आणए पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं अट्ठारस सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । पाणए कप्पे देवाणं पुच्छा, ? गोयमा ! जहन्नेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं वीसंसागरोवमाइं । पाणए अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । पाणए पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं एगूणवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं वीसंसागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । आरणे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं वीसंसागरोवमाइं उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं । आरणे अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । आरणे पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा,

दशसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तानानि उत्कर्षतः सप्त विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तानानि । अधस्तनग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन च

आणए कप्पे अपज्जत्तदेवाणंति । आनत कल्पे अपर्याप्त देवतानो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । आणए कप्पे पज्जत्ताणंति । आनतकल्पे पर्याप्त देवतानो प्र० उ० हेगौतम जघन्ये अठारह सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन उत्कृष्टे उगणीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । पाणए कप्पे देवाणं पुच्छेति । प्राणत कल्पना देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी उगणीस सागरोपम उत्कृष्ट थी वीस सागरोपम । पाणए अपज्जत्ताणंति । प्राणत कल्पे अपर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्यै पिण उत्कृष्टे पिण अन्तर्मुहूर्त्त । पाणए पज्जत्ताणंति । प्राणत कल्पे पर्याप्त देवतानो प्रश्न उ० हे गौ० जघन्य थी उगणीससागरोपम अन्तर्मुहूर्त्तकरी ऊन उत्कृष्टे वीससागरोपम अन्तर्मुहूर्त्तकरी ऊन । आरणेकप्पे देवाणं पुच्छेति । आरणकल्पे देवतानो उ० प्र० हे गौ० जघन्य थी वीस सागरोपम उत्कृष्टे इक्कीससागरोपम । आरणेकप्पे अपज्जत्तदेवाणंति । आरणकल्पने विषे अपर्याप्त

॥ मूल ॥

गोयमा ! जहन्नेणं वीससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं एकवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। अच्चुएकप्पे देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं बावीससागरोवमाइं। अच्चुए अपज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। अच्चुए पज्जत्ताणं देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं एकवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। हेठिम हेठिम गेविज्जदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीससागरोवमाइं उक्कोसेणं तेवीससागरोवमाइं। हेठिम हेठिम अपज्जत्तदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। हिठिम २ पज्जत्तदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीससागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्को

॥ भाषा ॥

देवतानो प्र० छ० हेगो० जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। आरणेकप्पे पज्जत्तगदेवाणं पुच्छेति। आरणकल्पने विषे पर्याप्त देवतानो प्र०छ० हे गो० जघन्य थी बावीससागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन उत्कृष्ट थी इकवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्तजन। अच्चुएकप्प देवाणं पुच्छेत्ति। अच्युतकल्पने विषे देवतानो प्र०छ० हेगो० जघन्य थी इकवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन उत्कृष्ट थी बावीससागरोपम अन्तर्मुहूर्त्तजन। अच्चुएकप्पे अपज्जत्तदेवाणं पुच्छेति। अच्युतकल्पने विषे अपर्याप्त देवतानो प्र० छ० हेगो० जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। अच्चुएकप्पे पज्जत्ताणति। अच्युत कल्पने विषे पर्याप्त देवतानो प्र० छ० हे गौतम जघन्य थी इकवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन उत्कृष्ट थी बावीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन। हिट्ठिमहिट्ठिम देवाणं पुच्छेति। हेठिमहेठिम देवतानो प्र० छ० हे गौतम जघन्य थी बावीस सागरोपम उत्कृष्ट थी पिण तेवीस सागरोपम। हिट्ठिमहिट्ठिम अपज्जत्तेति। हिठिमहिठिम अपर्याप्त देवतानो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कृष्ट थी पिण अंतर्मुहूर्त्त। हिट्ठिमहिट्ठिम पज्जत्तेति। हेठिमहेठिम पर्याप्तानो प्रश्न उ० हे गो० जघन्य थी बावीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन उत्कृष्ट थी तेवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन। हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पुच्छेति।

सेणं तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हिट्ठिममज्झिम गेविज्जदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं चोवीसं सागरोवमाइं । हिट्ठिममज्झिम अपज्जत्तयदेवाणं पुच्छा; गो० ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हिट्ठिममज्झिम पज्जत्तदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं चोवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । हिट्ठिमउवरिमगेविज्जदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं पणवीससागरोवमाइं । हेठिमउवरिम गेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । हेठिमउवरिमगेवि

॥ मूल ॥

तुर्विंशतिसागरोपमाण्युत्कर्षतः पञ्चविंशतिसागरोपमाणि । अधस्तनो परितन ग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनोत्कर्षत

॥ अ० ॥

हेट्ठिमहेट्ठिम ग्रैवेयकें देवतानो प्रश्न उ० हे गौ० जघन्य थी पिण तेवीस सागरोपम उत्कर्ष थी पिण चोवीससागरोपम । हेट्ठिमहेट्ठिम अपज्जत्तदेवाणंति । हेट्ठिमहेट्ठिम ग्रैवेयकने विषे अपर्याप्त देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जदेवाणं पुच्छेति । हेट्ठिममध्यम ग्रैवेयकें देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी पिण तेवीस सागरोपम उत्कृष्ट थी पिण चोवीस सागरोपम । हेट्ठिममज्झिम अपज्जत्तदेवाण ति । हेठे मध्यम अपर्याप्त देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम ! जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । हेट्ठिममज्झिम पज्जत्तदेवाणंति । हेठिम मध्यम पर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी तेवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी चोवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । हिट्ठिम उवरिमगेवि ज्जदेवाणंति । हेठिम उपरिमग्रैवेयक देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी चउवीस सागरोपम उत्कर्ष थी पंचविंशति सागरोपम । हेठिम उवरिमगे विज्जदेवाणं अपज्जत्ताणंति । हेठिम उवरिमग्रैवेयक देवता अपर्याप्ता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । हेट्ठिमउवरि मगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छसि । हेट्ठिमउपरिम ग्रैवेयकना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी चोवीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन

॥ भाषा ॥

जदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं पंचवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा? गोयमा! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा! जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं छव्वीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं। मज्झिम२ गेवि

॥ सूत्र ॥

अन्तर्मुहूर्त्तम्। अधस्तनो परितनग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा, गौ०! जघन्येन चतुर्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तानानि उत्कर्षेण पञ्च विंशति सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तानानि। मध्यमाधस्तनग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम! जघन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाण्युत्कर्षतः षड्विंशति सागरोपमाणि। मध्यमाऽधस्तन ग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा, गौतम! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम्। मध्यमाधस्तनग्रैवेयकेपर्याप्त देवानां पृच्छा, गौतम! जघन्येन पञ्चविंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तानानि उत्कर्षेण षड्विंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तानानि। मध्यममध्यम ग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम! जघन्येन षड्विंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षेण सप्तविंशतिसागरोपमाणि। मध्यममध्यमग्रैवेयके अपर्याप्तानां दे

॥ अ० ॥

उत्कर्ष थी पचीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणत्ति। मध्यम हेट्ठिमग्रैवेयक देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पचीस सागरोपम उत्कर्ष थी छवीस सागरोप। मज्झिम हेट्ठिमगेविज्जग अपज्जत्तदेवाणति। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकना अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त। मज्झिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणंति। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पचीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन उत्कृष्ट थी छव्वीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन। मज्झिम २ गेविज्जदेवाणंति। मध्यम २ ग्रैवेयक देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी छावीस सागरोपम उत्कर्ष थी सत्तावीस सागरोपम। मज्झिम २ गेविज्जअपज्जत्तदेवाणंति। मध्यम२

॥ भाषा ॥

जदेवाणं पुच्छा , गोयमा ! जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं । मज्झिम२ गेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । मज्झिम२ गेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणं तेवीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । मज्झिमउवरिमगेविज्जदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं । मज्झिमउवरिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । मज्झिमउवरिमगेविज्ज देवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णे

॥ मूत्र ॥

वानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । पर्याप्तानां तत्रैव पृच्छा ' गौतम ! जघन्येन षट्त्रिंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतः सप्तविंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । मध्यमोपरितनग्रैवेयकदेवानां पृच्छा ' गौतम ! जघन्येन सप्तविंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षेणाऽष्टाविंशतिसागरोपमाणि । तत्रैवापर्याप्तानां पृच्छा ' गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोऽप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । मध्यमोपरिम ग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा, गौतम । जघन्येन सप्तविंशतिसागरोपमाणि अन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षेणाऽष्टाविंशतिसागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । उपरितना

॥ अ० ॥

ग्रैवेयकना अपर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । मज्झिम २ गेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणंति । मध्यम २ ग्रैवेयकना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी छावीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी सत्तावीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त्त ऊन । मज्झिमउवरिमगेविज्जदेवाणंति । मध्यमउपरिम ग्रैवेयकना देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी सत्तावीस सागरोपम उत्कर्ष थी अट्ठावीस सागरोपम । मज्झिमउवरिमगेविज्जग अपज्जत्तदेवाणंति । मध्यम उपरिमग्रैवेयकना अपर्याप्त देवतानो उ० प्र० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । मज्झिमउवरिमगेविज्जग पज्जत्तदेवाणंति । मध्यमउपरिम गरैवेयकना पर्याप्त देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी सत्तावीस सागरोपम

॥ गाथा ॥

॥ मूल ॥

णं सत्तावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं एगूणतीसंसागरोवमाइं । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । उवरिमहिट्ठिमगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उवरिममज्झिमगेविज्जदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तीसंसागरोवमाइं । उवरिममज्झिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं

॥ अ० ॥

ऽष्टाविंशतिसागरोपमाणि उत्कर्षेण एकोनत्रिंसत्सागरोपमाणि । उपरितनाधस्तनग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । उपरितनाधस्तनग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाऽष्टाविंशति सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षेण एकोनत्रिंसत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । उपरितनमध्यम ग्रैवेयकदेवानां पृच्छा,

॥ भाषा ॥

अन्तर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी अट्ठावीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणंति उपरिमहेट्ठिम ग्रैवेयकना देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी अट्ठावीस सागरोपम उत्कर्ष थी उगुणतीस सागरोपम नो कह्यो । उवरिम हेट्ठिमगेविज्जग अपज्जत्तदेवाणंति । उपरिम हेठिम ग्रैवेयकना अपर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणंति उपरिम अधस्तन ग्रैवेयकना देवता पर्याप्तानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी अट्ठावीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त न्यून उत्कर्ष थी एगुणत्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । उवरिममज्झिमगेविज्जदेवाणंति । उपरिममध्यमग्रैवेयकना देवतानो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी एगुणत्रीस सागरोपम उत्कर्ष थी त्रीस सागरोपम । उवरिममज्झिमगेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणंति । उपरिममध्यम ग्रैवेयकना अपर्याप्त देवतानो प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अंतर्मु

पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । उवरिममज्झिमगेविज्जगदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उवरिम २ गेविज्जगदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं । उवरिम २ गेविज्जदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । उवरिम २ गेविज्जदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा जहन्नेणं तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं

॥ मूल ॥

गौतम ! जघन्येनैकोनत्रिंशत्सागरोपमाण्युत्कर्षत स्त्रिंशत्सागरोपमाणि । उपरितन मध्यमग्रैवेयकदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतश्चान्तर्मुहूर्त्तम् । उपरितनमध्यमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकोनत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनान्युत्कर्षत स्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । उपरिमोपरिमग्रैवेयकदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन त्रिंशत्सागरोपमाण्युत्कर्षत एकत्रिंशत्सागरोपमाणि । उपरिमोपरिमग्रैवेयका पर्याप्तकदेवानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । उपरिमोपरिमग्रैवेयकदेवानां पर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येन त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षत एकत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । विजयवैजयन्तजयन्ताचरा जि

॥ अ० ॥

हूर्त्तं । उवरिममज्झिमगेविज्जगदेवाण पज्जत्ताणंति । उपरिममध्य गरैवेयकना पर्याप्त देवता नो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी एगुणत्रीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी त्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । उवरिम २ गविज्जगदेवाणंति । उपरिम२ गरैवेयकना देवतानो प्रश्न उ० हे गौतम जघन्य थी त्रीस सागरोपम उत्कर्ष थी एकत्रीस सागरोपम । उवरिम २ गेविज्जगदेवाण अपज्जत्ताणंति । उपरिम २ गरैवेयकना अपर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । उवरिम २ पज्जत्तदेवाणंति । उवरिमोपरिम गरैवेयकना पर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी त्रीस सागरोपम अंतर्मुहूर्त्त ऊन उत्कर्ष थी एकत्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त ऊन । विजयवैजयंतजयंताचराजितेसु देवाणंति । विजयवैजयन्त

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । विजयवेजयंतजयंतअपराजिएसुणं भंते देवाणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं अपज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । विजयवेजयंतजयंतअपराजितदेवाणं पज्जत्ताणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं अपज्जत्ताणं

॥ अ० ॥

तेषु भदन्त ! देवानां कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैकत्रिंशत्सागरोपमाण्युत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि । विजयवैजयन्तजयन्तापराजितदेवानामपर्याप्तानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्त्तम् । विजयवैजयन्तजयन्तापराजितेषु पर्याप्तदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकत्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि उत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्त्तोनानि । सर्वार्थसिद्धकदेवानां भदन्त ! कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! अजघन्यानुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः प्रज्ञप्ता । सर्वार्थसिद्धकदेवानामपर्याप्तका

॥ भाषा ॥

जयन्त अपराजित विमान ना देवतानो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी एकत्रीस सागरोपम उत्कर्ष थी तेत्रीस सागरोपम । विजयवैजयन्तजयन्त अपराजितदेवाणं अपज्जत्ताणंति । विजय वैजयन्त जयन्त अपराजितना अपर्याप्त देवतानो प्र० उ० हे गौ० जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त्त । विजयवजयंतजयंतअपराजितदेवाणं पज्जत्ताणंति । विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित विमानना पर्याप्त देवतानो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य थी एकत्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन उत्कर्ष थी तेत्रीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त्त जन । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते केवइयंति । सर्वार्थसिद्ध विमानना देवतानो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कही प्र० उत्तर हे गौतम अजघन्य अनुत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपम नो कह्यो । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं अपज्जत्ताणंति । सर्वा

॥ टीका ॥

इमेव, एवं सूर्यादिविमानेष्वपि भावनीयं । इतिश्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां चतुर्थं स्थितारूयं पदं समाप्तं ॥ ४ ॥
तदेवं व्याख्यातं चतुर्थपदमिदानीं पञ्चममारभ्यते तस्य चायमभिसम्बन्धः, इहानन्तरपदे नारकादिपर्यायरूपेण सत्वानामवस्थितिरुक्ता इहत्वौ दयिकक्षायोपशमिकक्षायकभावाश्रयपर्यायावधारणं प्रतिपाद्यते' तत्रचेदमादिमं सूत्रं-कइविहाणं भंते ! पज्जवा पन्नत्ता इति ॥ अथ केनाभिप्रायेण गौतमस्वामिना भगवानेवं पृष्ट ? उच्यते-उक्तमादौ प्रथमपदे प्रज्ञापना द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-जीवप्रज्ञापना अजीवप्रज्ञापनाचेति, तत्र ]

॥ मूल ॥

पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्तं । सव्वट्ठसिद्धदेवाणं पज्जत्ताणं केवइयं कालं ठिई पन्नत्ता ? गोयमा ! अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं ठिई पन्नत्ता । पन्नवणाए भगवतीए चउत्थं ठिइपदं समत्तं ॥ ४ ॥ कइविहाणं भंते ! पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा !

॥ अ० ॥

नां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनाप्युत्कर्षतोप्यन्तर्मुहूर्तम् । सर्वार्थसिद्धकदेवानां भदन्त ! पर्याप्तकानां पृच्छा, गौतम ! अजघन्यानुत्कर्षेण त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यन्तर्मुहूर्तोनानि स्थितिः प्रज्ञप्ता ॥ इतिश्रीप्रज्ञापनासूत्रसंस्कृतानुवादे रामचन्द्रगणिविनेयेन नानकचन्द्रेण विरचिते चतुर्थं स्थितिपदं सम्पूर्णम् ॥ ४ ॥ कतिविधा भदन्त ! पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-जीवप

॥ भाषा ॥

थमिइ विमानना अपर्याप्त देवतानो हे भगवन् केतला कालनो स्थिति कहो प्र० उ० हे गौतम जघन्य थी पिण उत्कर्ष थी पिण अन्तर्मुहूर्त नो कहो सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं पज्जत्ताणंति । सर्वार्थसिद्ध विमानना पर्याप्त देवतानो केतला कालनो स्थिति कहो प्र० उत्तर हे गौतम अजघन्य थी अनुत्कर्ष थी तेत्तीस सागरोपम अन्तर्मुहूर्त न्यून नो कहो ॥ एतले प्रज्ञापना नो चौथो स्थिति पद पूर्ण थयो ॥ ४ ॥ चतुर्थ पदने विषे नारकादि पर्याय रूप थी जीव नो स्थिति कही इहां पंचम पदने विषे तो औदयिक क्षायोपशमिक क्षायक भाव आश्री पर्याय नो अवधारण कहेछे—कति विहाणं भंतेत्ति । केतले भेदे हे भगवन् पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हेगौतम बेप्रकारना कह्या ते कहेछे—जीव पर्याय अने अजीव पर्याय । जीवपज्जवाणं भंतेत्ति । जो

वाश्चाजीवाश्च द्रव्याणि, द्रव्यलक्षणं चेदं "गुणपर्यायवद्द्रव्यमिति," ततो जीवाजीवपर्यायभेदावगमार्थमेवं पृष्टवान् तथाच भगवानपि निर्वचनमेव माह-गो० ! दुविहा पज्जवा पं तं-जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य इति ॥ तत्र पर्याया गुणा विशेषाधर्मा इत्यनर्थान्तरं, ननु सम्बन्धप्रतिपादय तदमुक्तं इहत्वौदयिकादिभावाश्रयपर्यायपरिमाणाऽवधारणं प्रतिपाद्यत इति औदयिकादयश्च भावा जीवाश्रया स्ततो जीवपर्याया एव गम्यन्ते अथ चास्मिन्निर्वचनसूत्रे द्वयानामपि पर्याया उक्ता स्ततो न सुंदरः सम्बन्धः, तदयुक्तमभिप्रायापरिज्ञानात्' औदयिकोहि भावः पुद्गलवृत्तिरपि भवति ततो जीवाजीवभेदेनौदयिकभावस्य द्वैविध्या न्न सम्बन्धः, कथं न निर्वचनसूत्रयो र्विरोधः' सम्प्रति सम्बन्धपरिमाणावगमाय पृच्छति-जीवपज्जवाणं भंते ! किं संखेज्जा इत्यादि ॥ इह यस्माद्वनस्पतिसिद्धवर्जं सर्वेपि नैरयिकादयः प्रत्येकमसङ्ख्येया मनुष्येष्वसङ्ख्येयत्वं संमूर्च्छिममनुष्यापेक्षया वनस्पतयः सिद्धाश्च प्रत्येकमनन्ता स्ततः पर्यायिणामनन्तत्वा द्भवन्त्यनन्ता जीवपर्यायाः तदेवं गौतमेन सामान्यतो जीवपर्यायाः पृष्टा भगवानपि

॥ टीका ॥

---

दुविहा पण्णत्ता, तंजहा-जीवपज्जवा य अजीवपज्जवा य । जीवपज्जवाणं भंते ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नोसंखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ-जीवपज्जवा नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! असंखेज्जा णेरइया असंखेज्जा असुरा असंखेज्जा नागा

॥ मूल ॥

---

र्यवा श्चाजीवपर्यवाश्च । जीवपर्यवा भदन्त ! किं सङ्ख्येया असङ्ख्येया अनन्ताः ? गौतम ! नोसंख्येया नोऽसंख्येया अनन्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जीवपर्यवा नो संख्येया नो असंख्येया अनन्ताः ? गौतम ! असंख्येया नैरयिकाः असंख्येया असुरा असंख्येया नागा असंख्येयाः

॥ अ० ॥

---

व पर्याव हे भगवन् शुं संख्याता असंख्याता अनन्ताछे प्रश्न उत्तर हे गौतम जीव पर्याय संख्याता नथी असंख्याता पिण नथी अनन्ताछे । तेह स्यामाटै हे भगवन् इम कह्यो जीवपर्याय संख्याता नथी असंख्याता पिण नथी अनन्ताछे प्रश्न उत्तर हे गौतम असंख्याता नारकीछे असंख्याता असुरछे असंख्याता नागछे असंख्यात सुवर्णकुमारछे असंख्याता विद्युत्कुमारछे असंख्याता अग्निकुमारछे असंख्याता द्वीपकुमारछे असंख्याता उदधिकुमा

॥ भाषा ॥

च सामान्येन निर्वचनमुक्तवान्' इदानीं विशेषविषयप्रश्नं गौतम आह-नेरइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पन्नत्ता इति ॥ अथ केनाभिप्रायेणैवं गौतमः पृष्टवान् ? उच्यते-पूर्वं किल सामान्यप्रश्ने पर्यायाणामनन्तत्वात् पर्यायाणामानन्त्यमुक्तं यत्र पुनः पर्यायाणामानन्त्यं नास्ति तत्र कथमिति पृच्छति-नेरइयाणमित्यादि ॥ तत्रापि निर्वचनमिदमनन्ता इति, अत्रैवं जातसंशयः प्रश्न इति-सेकेणट्ठेणं भंते ! इत्यादि ॥ अथ केनार्थेन केन कारणेन केन हेतुना भदन्त ! एवमुच्यते-नैरयिकाणां पर्याया एव मनन्ता इति, भगवानाह-गोयमा ! नेरइए नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले इत्यादि ॥



असंखेज्जा सुवण्णा असंखेज्जा विज्जुकुमारा असंखेज्जा अग्गिकुमारा असंखेज्जा दीवकुमारा असंखेज्जा उदहिकुमारा असंखेज्जा दिसाकुमारा असंखेज्जा वायुकुमारा असंखेज्जा थणियकुमारा असंखिज्जा पुढविकाइया असंखिज्जा आउकाइया असंखेज्जा तेउकाइया असंखेज्जा वाउकाइया अणंता वणस्सइकाइया असंखेज्जा बेइंदिया असंखेज्जा तेइंदिया असंखेज्जा चउरिंदिया असंखेज्जा पंचिंदियतिरिक्खजोणिया असंखेज्जा मणुस्सा असंखेज्जा वाणमंतरा असंखेज्जा जोइसिया असंखेज्जा वेमाणिया अणंता सिद्धा से



सुपर्णा असंख्येया विद्युत्कुमारा असंख्येया अग्निकुमारा असंख्येया द्वीपकुमारा असंख्येया उदधिकुमारा असंख्येया दिक्कुमारा असंख्येया वायुकुमारा असंख्येयाः स्तनितकुमारा असंख्येयाः पृथिवीकायिका असंख्येया अप्कायिका असंख्येया तेजस्कायिका असंख्येया वायुकायिका अनन्ता वनस्पतिकायिका असंख्येया द्वीन्द्रिया असंख्येयास्त्रीन्द्रिया असंख्येया चतुरिन्द्रिया असंख्येयाः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका असंख्येया मनु



रुष्ट असंख्यात दिशाकुमार असंख्याता वायुकुमार असंख्याता स्तनितकुमार असंख्याता पृथिवीकायिक असंख्यात अप्कायिक असंख्याता तेजस्कायिक असंख्याता वायुकायिक अनन्ता वनस्पतिकायिक असंख्याता बेरिन्द्री असंख्यात तेरिन्द्री असंख्याता चौरिन्द्री असंख्याता पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक असंख्याता मनुष्य असंख्याता वानव्यन्तर असंख्याता ज्योतिषी असंख्याता वैमानिक अनन्ता सिद्ध ते तेणे अर्थे हे गौतम इम कह्यो जीवना प

॥ टीका ॥

अथ पर्यायाणामानन्त्यं कथं घटते इति पृष्टे तदेव पर्यायाणामानंत्यं यथायुक्त्युपपन्नं भवति तथा निर्वचनीयं नान्यत्, ततः केनाभिप्रायेण भगवानेवं निर्वचनमवादि नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्य इति ? उच्यते-एकमपि द्रव्यमनन्तपर्यायमित्यस्य न्यायस्य प्रदर्शनार्थं तत्र यस्मादिदमपि नारकजीवद्रव्यमेकसङ्ख्याऽवरुद्धमिदमिति नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यो द्रव्यमेवार्थो द्रव्यार्थ स्तद्भावो द्रव्यार्थता तया तुल्य एवं तावद्द्रव्यार्थतया तुल्यत्वमभिहित मिदानीं प्रदेशार्थतामधिकृत्य तुल्यत्वमाह-पएसट्ठयाए तुल्ले ॥ इदमपि नारकजीवद्रव्यं लोकाकाशप्रदेशपरिमाणप्रदेशमिति प्रदेशार्थतयापि नैरयिको नैरयिकस्य तुल्यः प्रदेशएवार्थः प्रदेशार्थस्तद्भावः प्रदेशार्थता तया प्रदेशार्थतया कस्मादभिहितमितिचेत् ? उच्यते-द्रव्यद्वैविध्यप्रदर्शनार्थं तथाहि-द्विविधं द्रव्यं प्रदेशवत् अप्रदेशवच्च, तत्र परमाणुरप्रदेशो द्विप्रदेशादिकं तु प्रदेशवत् एतच्च द्रव्यद्वैविध्यं पुद्गलास्ति

॥ मूल ॥

एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ—तेणं णोसंखेज्जा नो असंखिज्जा अणंता । णेरइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—णेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! णेरइए णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए सियहीणे

॥ अ० ॥

ष्या असंख्येया वानव्यन्तरा असंख्येया ज्योतिष्का असंख्येया वैमानिका अनन्ताः सिद्धा स्तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-ते (जीवपर्यवाः) नैव संख्येया नैवासंख्येया अनन्ताः । नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! नैरयिको नैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया

॥ भाषा ॥

र्थ संख्याता नथी असंख्याता पिण नथी अनन्ताछे । नारकी माहि हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते कण अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जे नारकी ना पर्याय अनन्ताछे प्र० उत्तर हे गौतम नारकी नारकीने द्रव्यार्थ पणे करी तुल्यछे अने प्रदेशार्थ पणें करी पिण नारकी नारकीने समछे नारक जीव द्रव्य लोकाकाशप्रदेश परिमाण प्रदेशीछे तेणी अवगाहनार्थतायें करी कदाचित् हीन अधिकी अवगाहना

काय एव भवति शेषाणि तु धर्मास्तिकायादीनि द्रव्याणि नियमा त्सप्रदेशानि ॥ उग्गाहणठयाए सिय हीणे इत्यादि ॥ नैरयिकोऽसङ्खातप्रदेशोऽपरस्य नैरयिकस्य तुल्यप्रदेशस्य अवगाहनमवगाहं शरीरोच्छ्रयोवगाहनमेवार्थोऽवगाहनार्थस्तद्भावो वगाहनार्थता तया अवगाहनार्थतया ॥ सिय हीणे इत्यादि ॥ स्याच्छब्दः प्रश्नास्तित्वविवादविचारणाऽनेकान्तसंशयप्रश्नादिष्वर्थेषु, अत्राऽनेकान्तद्योतकस्य ग्रहणं स्याद्धीनो नैकांतेन हीन इत्यर्थः, स्यात्तुल्यो नैकांतेन तुल्य इत्यर्थः, स्यादभ्यधिको नैकान्तेनाभ्यधिक इति भावः, कथमितिचेत् ? उच्यते-यस्माद्भण्यति-रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाणां भवधारणीयस्य वैक्रियशरीरस्य जघन्येनावगाहनाया अङ्गुलस्यासङ्ख्येयो भाग उत्कर्षतः सप्तधनूंषि त्रयोहस्ताः षट्चाङ्गुलानि, उत्तरोत्तरासु च पृथिवीषु द्विगुणं २ यावत्सप्तमपृथिवीनैरयिकाणां जघन्यतो वगाहनाऽङ्गुलस्यासङ्ख्येयोभाग उत्कर्षतः पंचधनुःशतानीति तत्र ॥ जइहीणेत्यादि ॥ यदि हीन स्ततोऽसङ्ख्येयभागहीनोवा स्या त्सङ्ख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा स्यात् असङ्ख्येयगुणहीनोवा अथाभ्यधिक स्ततोऽसङ्ख्येयभागाभ्य

॥ टीका ॥

## सिय तुल्ले, सिय अब्भहिए जदि हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभाग हीणेवा संखेज्जगुणहीणे वा

॥ मूल ॥

कदाचित् सम कदाचित् अधिक अवगाहना हुवे ते जिम रत्नप्रभाना नारकीने भवधारणीय वैक्रीय शरीर नी जघन्य अवगाहना अंगुलने असंख्यातवें भाग उत्कर्ष थी सात धनुष तीन हाथ छ अंगुलनी कही इम आगे आगे उत्तरोत्तर पृथिवीमां बेगुण बेगुण कहवी यावत्सातमी पृथिवीना नारकीनी जघन्य अवगाहना अगुलने असंख्यातवें भाग उत्कर्ष थी पांचसे धनुष कही। जइहीणे असंखेज्जइभागहीणेवा । जो हीन हुवे तो अगुलने असंख्यातवें भागहीन हुवे एक नारकी ५०० से धनुषनी अवगाहनानो धणी हुवे १ नारकी अंगुलने असंख्यात भागे न्यून होवे ते असंख्यात भाग हीन कहिये। संखेज्जगुणहीणेत्ति। तथा एक नारकीने ४९८ चारसे अठाणूं धनुषनी अवगाहना हुवे ते ५०० पांचसे धनुषनी अवगाहना ना नारकी थी संख्यात भाग हीन कहावे। संखिज्जगुण हीणेवा। एक नारकी एकसो पचीस धनुष अंचपणेछे अने अन्य बीजो परिपूर्ण पांचसी धनुष अंचपणेछे एकसो पचीसने चारगुणा करवाथी पांचसी पूराथाय ते हेतु पांचसी धनुष अंचपणा नी अपेक्षावें एकसो पचीस धनुष अंचपणे जे नारकी ते संख्यातगुणहीन कहि

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

धिकोवा स्यात् असंख्येयभागाभ्यधिकोवा संख्येयगुणाधिकोवा असंख्येयगुणाधिकोवा कथमितिचेदुच्यते-एकः किल नारक उच्चैस्त्वेन पञ्चधनुःशतानि अपरस्तान्येवाङ्गुलाऽसंख्येयभागहीनानि अङ्गुलासंख्येयभागश्च पञ्चानां धनुःशतानामसंख्येये भागे वर्त्तते तेन सोऽङ्गुलासंख्येयभागहीनः पञ्चधनुःशतप्रमाणो परस्य परिपूर्णपञ्चधनुःशतप्रमाणस्यापेक्षया असंख्येयभागहीन इतरस्त्वितरापेक्षया असंख्येयभागाभ्यधिकः, तथा एकः पञ्चधनुःशतान्युच्चैस्त्वेना ऽपरस्तु ताभ्येव द्वाभ्यां त्रिभिर्वा धनुर्भिर्न्यूनानि ते च द्वे त्रीणि वा धनूंषि पञ्चानां धनुःशतानां संख्येयभागे वर्त्तते ततः सोपरस्य परिपूर्णपञ्चधनुःशतप्रमाणस्यापेक्षया संख्येयभागहीनः, अपरस्तु परिपूर्णपंचधनुःशतप्रमाणस्तदपेक्षया संख्येयभागाधिक स्तथा एकः पञ्चविंशति धनुःशतमुच्चैस्त्वेना ऽपरः परिपूर्णानि पञ्चधनुःशतानि पञ्चविंशं च धनुःशतं चतुर्भिर्गुणितं पञ्चधनुःशतानि भवन्ति ततः पञ्चविंशत्यधिकधनुःश

॥ मूल ॥

असंखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखेज्जभागमब्भहिए संखेज्जभागमब्भहिएवा असंखेज्जगुणमब्भहिए

॥ अ० ॥

स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिको यदि हीनो ऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयगुणहीनो वा। अथा

॥ भाषा ॥

वे। असंखेज्जगुणहीणेवत्ति। तथा एक नारको अपर्याप्त अवस्था मा अंगुलने असंख्यातवे भाग अवगाहनायें रहै अने बीजो अन्य नारको पांचसो धनुष अवगाहनायें रहै ते अंगुलनो असंख्यातमो भाग असंख्यातगुणो थाय तिवारे पांचसो धनुष थाय ते हेतु अपर्याप्त अवस्था मां अंगुलने असंख्यातवें भागे वर्त्ततो तेनारको पूर्ण पांचसो धनुष अवगाहनायें वर्त्तता नारकोनो अपेक्षायें असंख्यातगुणहीन कहिये। अह अब्भहिये असंखेज्जभागमब्भहिएत्ति। जे अधिक हुवे तो असंख्यात भाग अधिक हुवे, जिम एक नारको पांचसो धनुष ऊंचपण अन्य बीजो नारको अंगुलने असंख्यातवें भागे ऊंचपणे ते अंगुलनो असंख्यातमो भाग असंख्यात भागेछे तेथी पांचसो धनुषनी अवगाहनायें वर्त्ततो नारको असंख्यातगुण अधिक कहिवाय। संखेज्जभागमब्भहिएत्ति। तथा संख्यातभाग अधिक हुवे, जिम पांचसो धनुषनी पूर्ण अवगाहना एकनो बीजानो दो तीन धनुष कम पांचसो नो अवगाहनाकु दो तीन धनुष जे कु पांचसोने संख्यात भागेछे ते थी दो तीन धनुष न्यून पांचसो धनुष नो अवगाहना ना नारको नो अपेक्षाये पांचसो पूर्ण धनुष नो अवगा

तप्रमाणोङ्गैस्त्वेप्यपरस्य परिपूर्णपञ्चधनुःशतप्रमाणस्यापेक्षया संख्येयगुणहीनो भवति तदपेक्षयात्वितरः परिपूर्णपञ्चधनुःशतप्रमाणः संख्येयगुणाधिकः, तथा एकोऽपर्याप्तावस्थायामङ्गुलस्य संख्येयभागावगाहे वर्त्तते अन्यस्तु पञ्चधनुःशतप्रमाणान्युङ्गैस्त्वेनाङ्गुलासंख्येयभागश्चासंख्येयेन गुणितःसन् पञ्चधनुःशतप्रमाणो भवति ततोऽपर्याप्तावस्थायामङ्गुलासंख्येयभागप्रमाणेऽवगाहे वर्त्तमानः परिपूर्णः पञ्चधनुःशतप्रमाणापेक्षया असंख्येयगुणहीनः पञ्चधनुःशतप्रमाणस्तु तदपेक्षया असंख्येयगुणाभ्यधिकः ॥ ठिइए सियहीणा इत्यादि ॥ यथाऽवगाहनया हानौ वृद्धौ च चतुःस्थानपतित उक्त स्तथा स्थित्यापि वक्तव्य इति भावः। एतदेवाह-जइहीणे असंखेज्जइभागहीणेवा इत्यादि ॥ तत्रैकस्य किल नारकस्य त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिरपरस्यतु तान्येव समयादिन्यूनानि तत्र यः समयादिन्यूनत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमप्रमाणस्थितिकः स परिपूर्णत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकनारकापे



संखेज्जगुणमब्भहिएवा । ठिइए सियहीणे सियतुल्ले सियमब्भहिए । जइहीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखे



भ्यधिको ऽसंख्येयभागाभ्यधिको वा संख्येयभागाभ्यधिको वा ऽसंख्येयगुणाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा । स्थितौ स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्या दभ्यधिकः । यदि हीनो ऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयगुणहीनो वा । अथाभ्यधिको ऽसंख्येयभा



हनायें वर्त्ततो नारको संख्यातगुण अधिको कहिवायछे । असंखिज्जगुणमब्भहिएत्ति । असंख्यातगुण अधिक हुवे जिम अपर्याप्त अवस्थायें अंगुलने असंख्यातवे भागे वर्त्तता नो अपेक्षायें पांचसो धनुष नो अवगाहनायें वर्त्ततो नारको । संखेज्जगुण अब्भहिएत्ति । संख्यातगुण अधिक जेम १२५ एकसो पचीस धनुषनो अवगाहनायें वर्त्तता नारको नो अपेक्षाये जे पूर्ण पांचसो धनुषनो अवगाहनायें वर्त्ततो नारको ते संख्यातगुण अधिकछे एकसो पचीस संख्यातगुणा ४ गणा करवा थी पांचसो पूराथाय ते थी । ठिइए सियहीणे इत्यादि । जेम अवगाहनाने विषे हानि वृद्धि कही तेमज इहां स्थिति ने विषे पिण चतुस्थान पतित कहवो, कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे । जइ हीणे इत्यादि । जो हीन हुवे तो असंख्यात भाग हीन ते जिम एक नारकीनो ३३ तेत्रीस सागरोपम नो स्थिति अने बीजानो समय आदि न्यून तेत्रीस सागरोपम नो स्थिति हुवे तो तिहां जे समय आदि

त्तया असंख्येयभागहीनः । परिपूर्णः त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकस्तु तदपेक्षया असंख्येयभागाऽभ्यधिकः समयादेः सागरोपमापेक्षया ऽसंख्येयभागमात्रत्वात्, तथाह्यऽसंख्येये समये एकाऽावलिका संख्याताभिरावलिकाभिरेक उच्छासनिः स्वासकालः सप्तभिरुच्छासनिःश्वासैरेकः स्तोकः सप्तभि स्तोकैरेको लवः सप्तसप्तत्या ७७ लवानामेकोमुहूर्तः त्रिंशता मुहूर्त्तैरहोरात्रः पञ्चदशभिरहोरात्रैः पक्षो द्वाभ्यां पक्षाभ्यां मासो द्वादशभि र्मासैः संवत्सरः असंख्येयैः संवत्सरैः पल्योपमसागरोपमाणि । समयावलिकोच्छ्वासमुहूर्त्तदिवसाहोरात्रपक्षमाससंवत्सरयुगैर्हीनः परिपूर्णस्थितिकनारकापेक्षयाऽसं ख्येयभागहीनो भवति तदपेक्षयात्वितरोसङ्ख्येयभागाऽभ्यधिकः, तथा एकस्य त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि स्थितिः परस्य तान्येव पल्योपमैर्न्यूनानि द शभिश्च पल्योपमकोटाकोटीभिरेकं सागरोपमं निष्पद्यते ततः पल्योपमैर्न्यूनस्थितिकः परिपूर्णस्थितिकनारकापेक्षया सङ्ख्येयभागहीनः परिपूर्णस्थिति कस्तु तदपेक्षयासङ्ख्येयभागाभ्यधिकः, तथा एकस्य सागरोपममेकं स्थितिरपरस्य परिपूर्णानि त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि तत्रैकसागरोपमस्थितिकः प



## जाइभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखिज्जगुणहीणे वा । अह अप्पड्ढिए असंखेज्जइभागमप्पड्ढिए वा



न्यून तेत्रीस सागरोपम स्थितिक नारकोछे ते तेत्रीससागरोपम स्थितिक नारकोनो अपेक्षाये असंख्यातभाग हीनछे, समय आदि जे छे ते सागरोपमने असंख्यातें भागेंछे तिमज देखाडेछे—असंख्यात समयथी १ आवलिका संख्याती आवलिकाथी १ उत्स्वासनिश्वास सात उत्स्वासनिश्वासथी १ स्तोक सात स्तोक थी १ लवसतहत्तर लवथी १ मुहूर्त्त त्रीस मुहूर्त्त थी १ अहोरात्र पचदश अहोरात्र थी १ पक्ष बोय पक्ष थी १ मास बार मासथी १ सवत्सर असंख्यात वर्ष थी पल्योपम सागरोपम थाय छे, समय आवलिका उत्स्वासनिश्वास मुहूर्त्त दिवस अहोरात्र पक्ष मास संवत्सर युग इत्यादि थी हीन ते त्रीस सागरोपम स्थितिक नारकी पूर्ण ३३ सागरोपम स्थितिक नारकी थी असंख्यात भाग हीन कहिवाय। एहनी अपेक्षाये इतर एतला माटे समय आदि ऊन स्थितिक नारकी नी अपेक्षाये बीजो जे पूर्ण तेत्रीस सागरोपम नी स्थिति नो नारकी छे ते असंख्यात भाग अधिक छे। तथा एक नारकी नी तेत्रीस सागरोपम नी स्थिति छे अने बीजानी पल्योपम न्यून तेत्रीस सागरोपम नी स्थिति होवे दश पल्योपम कोडाकोडी थी एक सागरोपम थाय

रिपूर्णस्थितिकनारकापेक्षया संख्येयगुणहीनः एकस्य सागरोपमस्य त्रयस्त्रिंशता गुणने परिपूर्णस्थितिकत्वप्राप्तेः, परिपूर्णस्थितिकस्तु तदपेक्षया असङ्ख्येयगुणाभ्यधिकः, तथा एकस्य दशवर्षसहस्राणि स्थितिरपरस्य त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि दशवर्षसहस्राण्यसङ्ख्येयरूपेण गुणकारेण गुणितानि त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि भवन्ति ततो दशवर्षसहस्रस्थितिकस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिकनारकापेक्षया असङ्ख्येयगुणहीनस्तदपेक्षया तु त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमस्थितिको ऽसङ्ख्येयगुणाभ्यधिक इति' तदेवमेकस्य नारकस्याऽपरनारकापेक्षया द्रव्यतो द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया च तुल्यत्वमुक्तं क्षेत्रावगाहनं प्रति हीनाधिकत्वेन चतुःस्थानपतितत्वं कालतोपि स्थितितो हीनाधिकत्वेन चतुःस्थानपतितत्वमिदानीं भावाश्रयं हीनाधिकत्व मभिधित्सुराह, यतः सकलमेव जीवद्रव्यमजीवद्रव्यं वा परस्परतो द्रव्यक्षेत्रकालभावैर्विभज्यते यथा घटः तथाहि घटो द्रव्यत एको मार्त्तिको ऽरः काम्बुको राजतादिर्वा क्षेत्रत एक इहत्यो परः पाटलिपुत्रकः कालत एको ऽद्यतनो ऽन्यस्त्वैषमः परुत्तनो वा भावतः एकः श्यामो ऽपरस्तु रक्तादिरेवम

॥ टीका ॥

---

तिवारे पल्योपमने संख्यातगुणा करवाथी ३३ सागरोपम थाय ते माटे कहिवो जे पल्योपम न्यून ३३ सागरोपम स्थितिक नारको छे ते परिपूर्ण ३३ सागरोपम स्थितिक नारको नी अपेक्षायें संख्येय भाग हीन छे, जे पण पूर्ण तेत्रीससागरोपम स्थितिक नारकोछे ते पल्योपम न्यून तेत्रीस सागरोपम स्थितिक नारकनी अपेक्षायें संख्येयभाग अधिक छे। तथा एक नारकनी एक सागरोपम स्थिति अने बीजा नी परिपूर्ण तेत्रीस सागरोपम नी तिहां जे एकसागरोपम स्थितिक नारकोछे ते परिपूर्ण ३३ सागरोपम स्थितिक नारकनी अपेक्षायें संख्यातगुण हीनछे, जे माटे १ सागरोपमने ३३ तेत्रीस गुणा करवा थी परिपूर्ण ३३ सागरोपम थाय, तिहां जे परिपूर्ण ३३ सागरोपम स्थिति नारकोछे ते १ सागरोपम स्थितिक नारकनी अपेक्षायें संख्यातगुण अधिको छे। तथा एकनारकनी दशहजारवर्षनी स्थिति अने बीजानी परिपूर्ण ३३ तेत्रीस सागरोपमछे ते दशहजारवर्ष जे छे ते असंख्याता गुणकारें गुणवा थी ३३ सागरोपम थाय तेमाटे दशहजारवर्ष स्थितिक नारको तेत्रीस सागरोपम स्थितिना नारकोनी अपेक्षायें असंख्यातगुण हीन

॥ भाषा ॥

न्यदपि तत्र प्रथमतः पुद्गलविपाकिनामकर्मोदयनिमित्तजीवौदयिकभावाश्रयेण हीनाधिकत्वमाह-कालवण्णपज्जवेहिं सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए ॥ अस्यान्तरघटना पूर्ववत् तत्र यथा हीनत्वमन्यधिकत्वं वा तथा प्रतिपादयति ॥ जइहीणेत्यादि ॥ इह भावापेक्षया हीनाधिकत्वचिन्तायां हानौ वृद्धौ च प्रत्येकं षट्स्थानपतितत्वमवाप्यते षट्स्थानके च यत् यदपेक्षया अनन्तभागहीनं तस्य सर्वजीवानन्तकेन भागे हृते यल्लभ्यते तेनानन्ततमेन भागेन हीनं यच्च तदपेक्षयासङ्ख्येयभागहीनं तस्यापेक्षणीयस्यासङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणेन राशिना भागे हृते यल्लभ्यते तावता भागेन न्यूनं यच्च तदधिकृत्य संख्येयभागहीनं तस्यापेक्षणीयस्योत्कृष्टसङ्ख्येयकेन भागे हृते यल्लभ्यते तावता हीनं गुणनसंख्यायां तु यद्यतः संख्येयगुणं तदवधिभूतमुत्कृष्टेन संख्येयकेन गुणितं सत् यावद्भवति तावत्प्रमाणमवसातव्यं' यच्च यतोऽसंख्येयगुणं तदवधिभूतमसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणेन

॥ टीका ॥

संखेज्जइभागमब्भहिए वा असंखिज्जगुणमब्भहिए संखिज्जगुणमब्भहिए वा । कालवण्णपज्जवेहिं सियहीणे

॥ मूल ॥

गाधिको वा सङ्ख्येयभागाधिको वाऽसङ्ख्येयगुणाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा । कालवर्णपर्यवैः स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि

॥ अ० ॥

छे, एहनो अपेक्षायें बीजो पूर्व स्थितिक नारको असंख्यातगुण अधिकोछे। इम एक नारकने अन्य बीजा नारकनो अपेक्षायें द्रव्यथी प्रदर्शार्थ थी तुल्य पणो कहिवो । क्षेत्र थी अवगाहना मां हीनाधिक पणें करी चतुःस्थानपतित पणो काल थी पिण स्थिति मां हीनाधिक पणें करी चतुःस्थानपतित पणो कह्यो इवें भाव आश्री हीनाधिक पणो कहतो कहेछे—जे माटे समस्त जीव द्रव्य अथवा अजीव द्रव्य परस्पर द्रव्यक्षेत्र काल भाव थी विभाविये जेम घट द्रव्यथी एक माटीनो बीजो सोनानो अथवा चांदीनो क्षत्रथी कोकण देशनो नीपनो एक पाटलीपुत्र नो नीपनो काल थी एक आज नो नीपनो एक भूतकालनो नीपनो भाव थी एक नीलो अन्य बीजो लाल आदि एम अन्य पिण जाणवो तिहां प्रथम पुद्गल विपाकि नामकर्मोदय निमित्त जीवाने औदयिक भावाश्री हीनाधिक पणो कहेछे—कालवण्णपज्जवेहिं सियहीणे इत्यादि । एहनो अक्षर घटना पूर्वनो परें जाणवो कदाचित् हीन

॥ भाषा ॥

गुणकारेण गुण्यते गुणितंसत् यावद्भवति तदवसेयं यच्च यस्मादनन्तगुणं तदवधिभूतं सर्वजीवानन्तकरूपेण गुणकारेण गुण्यते गुणितं सत् यावद्भवति तावत्प्रमाणं द्रष्टव्यं तथाचैतदेव कर्मप्रकृतिसङ्ग्रहिण्यां षट्स्थानकप्ररूपणावसरे भागहारगुणकारस्वरूपमुपवर्णितम्-सव्वजीवाणंतमसंखलोगसंखेज्ज गस्स जेट्ठस्स भागो तिसु गुणणातिसु इति॥ सम्प्रत्यधिकृतसूत्रोक्तषट्स्थानपतितत्वं भाव्यते-तत्र कृत्स्नवर्णपर्यायपरिमाणं तत्वतोनन्तसङ्ख्यात्मकमप्य सद्भावस्थापनया किल दशसहस्राणि १०००० तस्य सर्वजीवानन्तकेन शतपरिमाणपरिकल्पितेन भागो ह्रियते लब्धं शतं १००, तत्रैकस्य किल नार कस्य कृत्स्नवर्णपर्यायपरिमाणं दशसहस्राणि, अपरस्य तान्येव शतेन हीनानि ९९००, शतं च सर्वजीवानन्तभागहारलब्धत्वादनन्ततमोभाग स्ततो यस्य शतेन हीनानि दशसहस्राणि सोपरस्य परिपूर्णदशसहस्रप्रमाणकृत्स्नवर्णपर्यायस्य नारकस्यापेक्षया नन्तभागहीन स्तदपेक्षयातु सोपरः कृत्स्न वर्णपर्यायोऽनन्तभागाभ्यधिकः तथा कृत्स्नवर्णपर्यायपरिमाणस्य दशसहस्रसङ्ख्याकस्या संख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणपरिकल्पितेन पञ्चाशत्परिमाणेन



सिय तुल्ले सियमब्भहिए। जदि हीणे अणंतभागहीणे वा असंखेज्जभागहीणे वा संखे



ज्जइभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा अणंतगुणहीणे वा तुल्ले वा अब्भहिए वा कदाचित् तुल्य हुवे कदाचित् अधिक हुवे, तिहां जेह जिम हीन हुवे अधिक हुवे ते हिज कहइ—जइहीणे इत्यादि। जो हीन हुवे तो अनन्तभाग हीन हुवे अथवा असंख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यातगुण हीन हुवे असंख्यातगुण हीन हुवे अथवा अनन्तगुण हीन हुवे, इहां भावनो अपेक्षायें हीनाधिक पणानो चिंता मां हानि अने वृद्धिने विषे प्रत्येकें षट्स्थान पतित हुवे, षट्स्थान मां जेह जेहनो अपेक्षा यें अनन्त भाग हीन हुवे, तेहने सर्व जीवानन्तक थी भाग हार कियायकां जे लाभे तेह अनन्ततम भाग थी हीन, जे पिण जेहनो अपेक्षायें संख्यात भागहीन हुवे तेहने अपेक्षणीय अन्य द्रव्य असंख्यातलोकाकाशप्रदेशप्रमाणराशि थी भाग हार करवा थी जे लाभे तेतला भाग थी न्यून, जे पिण इनजी अपेक्षायें संख्यात भाग हीन हुवे तेहने अपेक्षणीय उत्कृष्ट संख्येयकना भागहार थी जे लाभे तेतला भाग थी हीन। जइ अब्भहिए इत्यादि। जो अधिक हुवे तो अनन्त भाग अधिक हुवे अथवा असंख्यात भाग अधिक अथवा संख्यात भाग अधिक अथवा संख्यातगुण अधिक अथवा असंख्यात

भागहारेण भागो ह्रियते लब्धे द्वे शते ' एषोऽसंख्येयतमोभाग स्तत्रैकस्य किल नारकस्य कृष्णवर्णपर्याया दशसहस्राणि शतद्वयेन हीनानि ९८००, अपरस्य परिपूर्णानि दशसहस्राणि १०००० ' तत्र यः शतद्वयहीनदशसहस्रप्रमाणकृष्णवर्णपर्यायः स परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया ऽसंख्येय भागहीनः परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायस्तु तदपेक्षयाऽसंख्येयभागाधिकः २ । अथा तस्यैव कृष्णवर्णपर्यायराशे र्दशसहस्रसंख्याकस्योत्कृष्टसंख्येयकपरिमाण कल्पितेन दशकपरिमाणेन भागहारेण भागो ह्रियते लब्धं सहस्रं एषः किल सङ्घाततमोभागः तत्रैकस्य नारकस्य किल कृष्णवर्णपर्यायपरिमाणं नवसहस्राणि ९०००, अपरस्य दशसहस्राणि १००००, नवसहस्राणि तु दशसहस्राणि सहस्रेण हीनानि सहस्रञ्च संख्येयतमो भाग इति नवसह स्रप्रमाणकृष्णवर्णपर्यायपरिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया संख्येयभागहीनः तदपेक्षयात्वितरः संख्येयभागाधिकः, तथैकस्य नारकस्य किल कृष्ण वर्णपर्यायपरिमाणं सहस्रं अपरस्य दशसहस्राणि तत्र सहस्रदशकेनोत्कृष्टसङ्घातककल्पनेन गुणितं दशसहस्रसंख्याक भवतीति सहस्रसंख्यकृष्णव

॥ टीका ॥

---

जागुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा अणंतगुणहीणे वा । अह अब्भहिए अणंतभागमब्भहिए वा असंखेज्ज

॥ मूल ॥

---

हीनो ऽनन्तभागहीनो वा ऽसंख्येयभागहीनो वा संख्ययभागहीनो वा संख्ययगुणहीनो वा ऽसंख्येयगुणहीनो वा ऽनन्तगुण हीनोवा । अथा

॥ अ० ॥

गुण अधिक अथवा अनन्तगुण अधिक हुवे । गुणन संख्याने विषे तो जह जह थी संख्यातगुण हुवे तह तदवधिभूत उत्कृष्ट संख्यकना गुणवा थी जेतलो हुवे तेतलो जाणवो । जेह जेह थी असंख्यातगुणो हुवे तो तेहने तदवधिभूत हुवे असंख्येय लोकाकाशप्रदेश प्रमाण गुणाकार थी गुणिये गुणतां थकां जेतलो हुवे तेतलो जाणवो, जेह जेह थी अनन्तगुण हुवे तदवधिभूत हुवे सर्व जीवानन्तक थी गुणतांथका जेतलो हुवे तेतले प्रमाणे जाणवो, सांप्रत एहीज सूत्रनी भावना कहेछे—तिहां कृष्णवर्ण पर्याय परिमाण तत्वथी अनन्तसंख्यात्मक भी छे तथापि असद्भावस्थापना थी दशहजार परिमाणे देखवो तेहने सर्वजीवानन्तकने शत परिमाण कल्पनाये करी तेहथी भाग देवो लब्ध १०० तिहां एक नारकीने कृष्णवर्ण पर्याय परिमाण दशहजार हुवे अने बीजाने १०० न्यून दशहजार हुवे एतले ९९०० शत हुवे तेहने सर्वजीवानन्त भागहारलब्धपणा थी अनन्ततम भाग हुवे तेमाटे शत न्यून दश

॥ भाषा ॥

र्णपर्यायो नारको दशसहस्रसंख्याककृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया संख्येयगुणहीन स्तदपेक्षया परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायसंख्येयगुणाभ्यधिकः तथा एकस्य किल नारकस्य कृष्णवर्णपर्यायाग्रं द्वे शते ऽपरस्य परिपूर्णानि दशसहस्राणि द्वे च शते संख्येयलोकाकाशप्रदेशपरिमाणं प्रकल्पितेन पञ्चाशत्परिमाणेन गुणकारगुणितेन दश सहस्राणि जायन्ते, ततो द्विशतपरिमाणकृष्णवर्णपर्यायो नारकः परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया असंख्येयगुणहीन स्तदपेक्षया त्वितरोऽसंख्येयगुणाभ्यधिकः ५ तथैकस्य किल नारकस्यकृष्णवर्णपर्यायपरिमाणं शतमपरस्य दशसहस्राणि शतेच सर्वजीवानन्तकपरिकल्पितेन गुणकारेण गुणिते जायन्ते दशसहस्राणि ततः शतपरिमाणकृष्णवर्णपर्यायो नारकः परिपूर्णकृष्णवर्णपर्यायनारकापेक्षया ऽनन्तगुणहीन इतरस्तु तदपेक्षयाऽनन्तगुणाभ्यधिको यथा कृष्णवर्णपर्यायानधिकृत्य हानौ वृद्धौ च षट्स्थानपतितत्वमुक्त मेवं शेषवर्णगन्धरसस्पर्शैरपि प्रत्येकं षट्स्थानपतितत्वं भावनीयं तदेवं पुद्गलविपाकेनामकर्मोदयजनितजीवौदयिकभावाश्रयेण षट्स्थानपतितत्वमुपदर्शितं मिदानीं जीवविपाकिज्ञाना



**णागमब्भइए वा संखेज्जणागमब्भइए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखेज्जगुणमब्भहिए वा अणंतगुणमब्भहिए वा । नीलवन्नपज्जवेहिं लोहियवन्नपज्जवेहिं पीयवन्नपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए ।**



भ्यधिको ऽनन्तभागाधिको वा ऽसंख्येयभागाधिको वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा ऽसंख्येयगुणाधिको वा ऽनन्तगुणाधिको वा । नीलवर्णपर्यवै र्लोहितवर्णपर्यवैः पीतवर्णपर्यवैः शुक्लवर्णपर्यवै श्च षट्स्थानपतितः । सुरभिगन्धपर्यवै र्दुरभिगन्धपर्यवैः षट्स्थानपतितः ।



हजार कृष्णवर्ण पर्याय परिमाण नारको छे ते अपर पूर्ण दशहजार परिमाण कृष्णवर्ण पर्यायना नारको थी अनन्त भागे हीनछे तेहनी अपेक्षायें पूर्ण परिमाण पर्यायें वर्त्ततो नारको अनन्तभाग अधिकोछे, एम आगे भावना टीका थी जाणवी । नीलवन्नपज्जवेहिंति । जेम कृष्णवर्ण पर्यायनी भावना कही तेमज नीलवर्ण पर्यायनी तथा लोहितवर्ण पर्यायनी करवी तथा पीतवर्णपर्यायें करी शुक्लवर्ण पर्यायेंकरी षट्स्थान पतित कहवो । सुब्भिगंध पज्जवेहिंति । सुरभिगन्ध पर्यायेंकरी दुरभिगन्ध पर्यायेंकरी षट्स्थान पतित कहवो । तित्तरसपज्जवेहिं इत्यादि । तिक्तरस पर्यायेंकरी कटुकरस पर्याय

वरणीयादिकर्मत्रयोपशमजन्यावाश्रयेण तदुपदर्शयति-आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं इत्यादि ॥ पूर्ववत् प्रत्येकमाभिनिबोधिकादिषु षट्स्थानपतितत्वं भावनीय, इह द्रव्यतस्तुल्यत्वं वदता सम्मूर्च्छितसर्वप्रज्ञेदनिर्भेदबीजं मसूराण्डकरसवदनभिव्यक्तदेशकालक्रमप्रत्यवबुद्धविशेषभेदपरिणतेर्योग्यं द्रव्यमित्यावेदितं, अवगाहनया चतुःस्थानपतितत्वमभिवहता क्षेत्रतः सङ्कोचविकोचधर्माऽऽत्मा न तु द्रव्यप्रदेशसङ्ख्या इति दर्शितम्, उक्तञ्चैतदन्यत्रापि बिकसनसङ्कोचनयो र्नस्तोद्रव्यप्रदेशसंख्याया वृद्धिर्ह्रासौसःक्षेत्रतस्तु तावान्मनस्तस्मात्स्थित्या चतुः स्थानपतितत्वं वदता आयुःकर्मस्थितिर्निर्वर्त्तकानामध्यवसायस्थानानामुत्कर्षापकर्षवृत्तिरूपदर्शिता अन्यथा स्थित्या चतुःस्थानपतितत्वायोगात्' आयुकर्मचोपलक्षणं तेन च सर्वकर्मस्थितिनिर्वर्त्तकेष्वध्यवसायेत्कर्षापकर्षवृत्तिरवसातव्या कृष्णादिपर्यायैः षट्स्थानपतितत्वमुपदर्शयिता एकस्यापि नारकस्य पर्याया अनन्ताः किम्पुनः सर्वेषां

॥ टीका ॥

सुब्भिगंधपज्जवेहिं दुब्भिगंधपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। तित्तरसपज्जवेहिं कडुयरसपज्जवेहिं कसायरसपज्जवेहिं अंबिलरसपज्जवेहिं मज्झररसपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए। कक्कडफासपज्जवेहिं मज्जयफासपज्जवेहिं गरुयफासपज्जवेहिं लज्जयफासपज्जवेहिं सीतफासप० उसिणफासपज्जवेहिं णिद्धफासपज्जवेहिं लुक्कफासपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए। आभिणिबोहियणाणपज्जवेहिं सुयणाणपज्जवेहिं ओहिणाणपज्जवेहिं मइअण्णाणपज्जवेहिं

॥ मूल ॥

तिक्तरसपर्यवैः कटुकरसपर्यवैः कषायरसपर्यवैः अम्लरसपर्यवैः मधुररसपर्यवैः षट्स्थानपतितः । कर्कशस्पर्शपर्यवैः मृदुकस्पर्शपर्यवैः गुरुकस्पर्शपर्यवैः लघुस्पर्शपर्यवैः शीतस्पर्शपर्यवैः उष्णस्पर्शपर्यवैः स्निग्धस्पर्शपर्यवैः रूक्षस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैः श्रुत

॥ अव० ॥

करो कषायरस पर्यायेकरो अम्लरस पर्यायेकरो मधुररस पर्यायेकरो पिण प्रत्येकें षट्स्थान पतित कहवो । कर्कशस्पर्श पर्यायेकरो मृदुकस्पर्श पर्यायेकरो कोमलस्पर्श पर्यायेकरो भारीजेस्पर्श तेहने पर्यायेकरो लघुस्पर्श पर्यायेकरो उष्णस्पर्श पर्यायेकरो स्निग्धस्पर्श पर्यायेकरो रूक्षस्पर्श पर्यायेकरो पिण षट्स्थान पतित कहवो । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं इत्यादि । मतिज्ञान पर्यायेकरो श्रुतज्ञान पर्यायेकरो अवधिज्ञान पर्यायेकरो मतिअज्ञान

॥ भाषा ॥

नारकाणामिति दर्शितं, अथ नारकाणां पर्यायानन्त्यं पृष्टेन भगवता तदेव पर्यायानन्त्यं वक्तव्यं नत्वन्यत्, ततः किमर्थं द्रव्यक्षेत्रकालभावाजिधानमिति-तदयुक्तमभिप्रायापरिज्ञानात्' इह न सर्वेषां सर्वे स्वपर्यायाः समसंख्याः किन्तु षट्स्थानपतिता एतज्ज्ञानन्तरमेव दर्शितम्' तच्च षट्स्थानपतितत्वं परिणामित्वमन्तरेण न भवति तच्च परिणामित्वं यथोक्तलक्षणस्य द्रव्यस्येति, द्रव्यतस्तुल्यत्वमभिहितं तथा न कृष्णादिपर्यायैरेव पर्यायवान् जीवः किन्तु तत्तत् क्षेत्रसङ्कोचविकोचधर्मतयापि' तथा तत्तदध्यवसायस्थानयुक्ततयापीति ख्यापनार्थं क्षेत्रकालाभ्यां चतुःस्थानपतितत्व मुक्तमिति कृतं प्रसङ्गेन' तदेवमवसितं नैरयिकाणां पर्यायानन्त्यमिदानीमसुरकुमारेषु पर्यायाग्रंपिपृच्छिषुराह-असुरकुमाराणं भंते ! केवइया पज्जवा प०, इत्यादि॥ उक्तएवार्थः प्रायः सर्वत्रप्यसुरकुमारादिषु ततः सकलमपि चतुर्विंशतिदण्डकसूत्रं प्राग्वद्भावनीयं, यस्तु विशेष उपदर्श्यते तत्र यत् पृथि

॥ टीका ॥

सुयअन्नाणपज्जवेहिं विभंगनाणपज्जवेहिं चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । से तेणट्ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ—णेरइयाणं नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता पज्जवा पण्णत्ता । असुरकुमाराणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से

॥ मूल ॥

ज्ञानपर्यवैः अवधिज्ञानपर्यवैः मनःपर्यवज्ञानपर्यवैः श्रुताज्ञानपर्यवैः विभङ्गज्ञानपर्यवैः अचक्षुर्दर्शनपर्यवैः चक्षुर्दर्शनपर्यवैः अवधिदर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतित स्तत्तेनार्थेन । गौतम ! एवमुच्यते-नैरयिकाणां नो संख्येया नो असंख्येया अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । असुरकुमाराणां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः" अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-असुरकुमाराणा मनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम !

॥ अ० ॥

पर्यायेकरी श्रुत अज्ञान पर्यायेकरी विभंगज्ञान पर्यायेकरी चक्षुदर्शन पर्यायेकरी अचक्षुदर्शन पर्यायेकरी अवधिदर्शन पर्यायेकरी पिण प्रत्येके षट्स्थान पतित कहवो। ते तेणें अर्थें हे गौतम इम कह्यो नैरयिकना पर्याय संख्याता नथी असंख्याता नथी अनन्ताछे । असुरकुमाराणं भंते केवइया पज्जवा इति । असुरकुमारने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम ! अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थें हेभगवन् इम कह्यो—जे असुरकुमारना

॥ भाषा ॥

वीकायिकादीनामवगाहनाया अङ्गुलासङ्ख्येयभागप्रमाणायाअपि चतुःस्थानपतितत्वं तदङ्गुलासङ्ख्येयभागस्यासङ्ख्येयभेदत्वादवसेयं स्थित्या हीनत्व मधिकत्व च त्रिस्थानपतितं न चतुःस्थानपतितमसङ्ख्येयगुणवृद्धिहान्यो रसम्भवात्' कथं तयोरसम्भव इतिचेत् उच्यते-इह पृथिव्यादीनां सर्वजघ

॥ टीका ॥

केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा परूविया ? गोयमा ! असुरकुमारे असुरकुमार स्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठाए चउट्ठाणवडिए , ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवन्नपज्ज वेहिं छट्ठाणवडिए, एवं नीलवन्नपज्जवेहिं लोहिल्लहालिद्दसुक्किल्लसुब्भिगंधपज्ज वेहिं दुब्भिगंधपज्जवेहिं तित्तरसपज्जवेहिं कडुयरसपज्जवेहिं कसायरसप० अंबिलरसप० मज्जरसपज्जवेहिं

॥ मूल ॥

असुरकुमारो ऽसुरकुमारस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । कालवर्ण पर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवं नीलवर्णपर्यवै र्लोहितहारिद्रवर्णपर्यवैः शुक्लवर्णपर्यवैः सुरभिगंधपर्यवै दुरभिगन्धपर्यवै स्तिक्तरसपर्यवैः कटुकरस

॥ अ० ॥

अनन्ता पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम ! असुरकुमार असुरकुमारने द्रव्यार्थे तुल्यछे प्रदेशार्थेकरी पिण तुल्यछे अवगाहनार्थतायेंकरी चतुःस्थान पतित छे, स्थिति थी पिण चतुःस्थान पतित कहवो। कालवर्णपर्यायेंकरी षट्स्थान पतित कहवो। एवं नीलवर्ण पर्यायेंकरी लाल पीत वर्ण पर्यायें करी शुक्लवर्ण पर्यायें करी सुगंध पर्यायें तथा दुर्गन्ध पर्यायें करी तीक्षारस पर्यायें करी कडुआरस प र्यायें करी कषायरस पर्यायें करी खट्टारस पर्यायें करी मधुररस पर्यायें करी कर्कश मृदु गुरु लघु शीत उष्ण स्निग्ध पर्यायें करी लूखास्पर्श पर्यायें क री मतिज्ञान पर्याय करी श्रुतज्ञान पर्याय करी अवधिज्ञान पर्यायें करी मतिअज्ञान पर्यायें करी श्रुत अज्ञान पर्यायें करी विभंगज्ञान पर्याय करी चक्षुदर्श पर्याय करी अचक्षुदर्शन पर्यायें करी अवधिदर्शन पर्यायें करी पिण प्रत्येकें षट्स्थान पतित कहवो। ते तेणे अर्थे हे गौतम इम कह्यो— जे असुरकुमारने अनन्ता पर्याय कह्या । एवं जहे इत्यादि। एम जिम नारकी अने असुरनी वक्तव्यता कही तेम नागकुमारनी पिण कहवी यावत्

॥ भाषा ॥

« टीका »

न्यमायुःक्षुल्लकभवग्रहणं क्षुल्लकभवग्रहणस्य परिमाणमावलिकानां द्वेशते षट्पञ्चाशदधिके मुहूर्त्ते च द्विघटिकाप्रमाणे सर्वसङ्ख्या क्षुल्लकभवग्रहणानां पञ्चषष्टिसहस्राणि पञ्चशतानि षट्त्रिंशदधिकानि ६५५३६ "उक्तंच-दोन्निसयाइंनियमा छप्पन्नाइंपमाणओहोंति। आवलिअपमाणेणं खुड्डागभवग्गहणमेयं ॥ १ ॥ पन्नट्ठियसहस्साइं पंचेवसयाइंतहयछत्तीसा। खुड्डागभवग्गहणाइंति" एते मुहूर्त्तेन पृथिव्यादीनां च स्थितिरुत्कर्षतोपि सङ्ख्येय वर्षप्रमाणाः ततोनासङ्ख्येयगुणवृद्धिहान्योः सम्भवः शेषवृद्धिहानित्रिकभावनात्वेवं-एकस्य किल पृथिवीकायस्थितिः परिपूर्णानि द्वाविंशतिवर्षसह

« मूल »

कक्कडफासपज्जवेहिं मउयफासपज्जवेहिं गरुयफासपज्जवेहिं लहुयफासप० सीतफासप० उसिणफासप० निद्धफासपज्जवेहिं लुक्खफासपज्जवेहिं आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं सुयनाणप० ओहिनाणप० मणपज्जवनाणप० सुयअन्नाणप० विभंगनाणपज्जवेहिं चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं ओहिदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए। से तेणट्ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ—असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता। एतं जहा

« अ० »

पर्यवैः कषायरसपर्यवैः अम्लरसपर्यवैः मधुररसपर्यवैः कर्कशस्पर्शपर्यवैः मृदुस्पर्शपर्यवैः गुरुकस्पर्शपर्यवैः लघुकस्पर्शपर्यवैः शीतस्पर्शपर्यवैः उष्णस्पर्शपर्यवैः स्निग्धस्पर्शपर्यवैः रूक्षस्पर्शपर्यवैः आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैः श्रुतज्ञानपर्यवैः अवधिज्ञानपर्यवैः मनःपर्यवज्ञानपर्यवैः श्रुताज्ञानपर्यवैः विभङ्गज्ञानपर्यवैः अचक्षुर्दर्शनपर्यवैः चक्षुर्दर्शनपर्यवैः अवधिदर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतित स्तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-असुरकुमाराणामनन्ताः पर्यवाः प्र

« भाषा »

स्तनितकुमार लगें कहवो। पुढविका इयाणं भंते केवइया पज्जवा पं० इत्यादि। पृथिवी कायिकने हे भगवन् केतला पर्यवे कह्या प्र० उ० हे गौतम ! अनन्ता पर्यव कह्या ते कहेछे—अथ केणे अर्थे हे भगवन् इमकह्यो जे पृथिवी कायना अनन्ता पर्याय छे—हे गौतम पृथिवी कायिक पृथिवी कायिकने द्रव्यार्थे पणें तुल्य छे प्रदेशार्थे पणें पिण तुल्य छे अवगाहनार्थेतावे कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिकछे। जइहीणे इत्यादि। जो हीन हुवे तो असंख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात भागहीन हुवे संख्यातगुण हीनहुवे, अथवा असंख्यातगुण अधिक हुवे। जो अधिक हुवे तो असं

॥ टीका ॥

स्थानि अपरस्य तान्येव समयन्यूनानि ततः समयन्यूनद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकः परिपूर्णद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकापेक्षया असङ्ख्येयभागहीनस्त दपेक्षयात्वितरोऽसङ्ख्येयभागाधिकः । तथा एकस्य परिपूर्णानि द्वाविंशतिवर्षसहस्राणि स्थिति रपरस्य तान्येवान्तर्मुहूर्त्तादि नोनानि अन्तर्मुहूर्त्ता दिकं द्वाविंशतिवर्षसहस्राणां संख्येयतमो भागः ततोऽन्तर्मुहूर्त्तादिन्यूनद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकः परिपूर्णद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकापेक्षया

॥ मूल ॥

णेरइया जहा असुरकुमारा तहा नागकुमारावि जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं भंते ! केवइया प जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं एवं वुच्चइ—पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! पुढविकाइए पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले, पदेसट्ठयाए तुल्ले, ओगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखिज्जगुणहीणे वा । अह अब्भहिए असंखेज्जइभागअब्भइए वा संखेज्जइभागअब्भहिए वा संखेज्जगुण मब्भहिए वा असंखिज्जगुणमब्भहिए वा । ठिईए सियहीणे सियतुल्ले सियअब्भहिए, जइ हीणे असंखिज्ज

॥ अ० ॥

ज्ञप्ताः । एवं यथा नैरयिका यथा ऽसुरकुमारास्तथा नागकुमारा अपि यावत्स्तनितकुमाराः । पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेनैव मुच्यते-पृथिवीकायिकाना मनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! पृथिवीकायि कः पृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः, अवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि हीनो ऽसंख्येयभा

॥ भाषा ॥

ख्यात भागे अधिक हुवे संख्यात भागे अधिक हुवे अथवा संख्यातगुण अधिक हुवे अथवा असंख्यातगुण अधिक हुवे । स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित क हुवो कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे । जइहीणे इत्यादि । जो हीन हुवे तो असंख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यातगुण हीन हुवे । अह अब्भहिए इत्यादि । जो अधिक हुवे तो असंख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात भाग अधिक हुवे अथ

सङ्ख्येयभागहीनः तदपेक्षया तु इतरः सङ्ख्येय भागाभ्यधिकः तथा एकस्यद्वाविंशतिवर्षसहस्राणि स्थितिरपरस्यान्तर्मुहूर्तं मासो वर्षं वर्षसहस्रं वा अन्तर्मुहूर्तादिकं नियतपरिमाणया संख्यया गुणितं द्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिप्रमाणं भवति तेनान्तर्मुहूर्तादिप्रमाणस्थितिकः परिपूर्णद्वाविंशति

॥ ठीका ॥

भागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा । अह अप्पहिए असंखेज्जभागअप्पहिए वा संखेज्ज भागअप्पहिए वा संखेज्जगुणमप्पहिए। वण्णेहिं गंधेहिं रसेहिं फासेहिं मइअन्नाणपज्जवेहिं सुयअन्नाण पज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । आउक्काइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गो यमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—आउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता

॥ मूल ॥

गहीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयभागहीनो वा । अथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागाभ्यधिको वा संख्येयभागाभ्यधिको वा संख्येयगुणाभ्यधिको वा ऽसंख्येयगुणाभ्यधिको वा । स्थितौ स्यादुनस्यात्तुल्यस्यादभ्यधिकः । यदि हीनोऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येय भागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा अथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागाभ्यधिको संख्येयभागाभ्यधिको वा संख्येयगुणाधिको वा । वर्णैर्गन्धैरसैस्स्पर्शैर्मत्य ज्ञानपर्यवैः श्रुताज्ञानपर्यवैरचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । अप्कायिकानां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-अप्कायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अप्कायिकोप्कायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदे

॥ अ० ॥

वा संख्यातगुण अधिक हवे पृथिवी आदि एकेन्द्रिय ने उत्कर्ष थी पिण स्थिति संख्यातवर्ष प्रमाणे कही तेमाटे असंख्यातगुण हानि अने वृद्धि संभवे नथी पतले स्थान पतित कहवा भावना टीका थी जाणवी । वण्णेहिं गंधेहिं रसेहिं इत्यादि । वर्ण पांच थी गंध बे थी रस पांच थी स्पर्श आठ थी मतिअज्ञान पर्यायें करी श्रुतअज्ञान पर्यायें करी अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित कहवा । आउक्काइयाणंति । आउकायने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते केण अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जे अप्कायना अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम अप्कायिक अप्कायिकने

॥ भाषा ॥

वर्षसहस्रस्थितिकापेक्षया संख्येयगुणहीनः तदपेक्षया तु परिपूर्णद्वाविंशतिवर्षसहस्रस्थितिकः संख्येयगुणाभ्यधिकः । एवमप्कायिकादीनामपि च तुरिन्द्रियपर्यन्तानां स्वस्वोत्कृष्टस्थित्यनुसारेण स्थित्या त्रिस्थानपतितत्वं भावनीयम् । तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणां मनुष्याणां च चतुःस्थानपतितत्वं तेषां ह्युत्कर्षतः त्रीणि पल्योपमानि स्थितिः पल्योपमं च्यासंख्येयवर्षसहस्रप्रमाणमतो ऽसंख्येयगुणवृद्धिहान्योरपि सम्भवा दुपपद्यते-चतुःस्थानपतितत्वं एवं व्यन्तराणामपि तेषां जघन्यतो दशवर्षसहस्रस्थितिकत्वा दुत्कर्षतः पल्योपमस्थितिः ज्योतिष्कवैमानिकानां पुनः स्थित्या त्रिस्थानपतितत्वं यतो

॥ टीका ॥

? गोयमा ! आउकाइए आउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले, उग्गाहणट्ठाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तिट्ठाणवडिए, वन्नगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए । तेउकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंतपज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! वुच्चइ-तेउकाइयाणं अनंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! तेउकाइए तेउकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, उगाहणट्ठाए चउ

॥ मूल ॥

आर्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुस्स्थानपतितः । स्थितौ त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थान पतितः । तेजस्कायिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-तेजस्कायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! तेजस्कायिकस्तेजस्कायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितःस्थितौत्रिस्थानप

॥ भा० ॥

द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पिण तुल्य छे, अवगाहनार्थताये चतुःस्थान पतित एतले जेम पृथिवीकायिक तेमज जाणवो । स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित जेम पृथिवीकायिकतिमज, वर्ण गन्ध रस स्पर्श मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अने अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित कहवा । तेउकायाणंवि । तेजस्काय नो प्रश्न उ० हे गौतम तेजस्कायिकने अनन्त पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जे तेजस्काय ने अनन्ता पर्याय छे प्र० उ० हे गौतम तेजस्काय तेजस्कायने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य छे, अवगाहनाये करी चतुःस्थान पतित छे, स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित

ठाणवडिए ठिईए तिठाणवडिए । वण्णगंधरसफासमइअण्णाणसुयअण्णाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छठ्ठाण वडिए । वाउकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! वाउक्काइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—वाउकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! वाउकाइए वाउक्काइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तिठाणवडिए वण्णगंधरसफासमइअण्णाणसुयअण्णा णअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छठ्ठाणवडिए । वणस्सइकाइयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा !

तितः । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । वायुकायिकानां पृच्छा, गौतम ! वायुकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एव मुच्यते-वायुकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० ! वायुकायिको वायुकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । वनस्पतिकायिकानां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त !

कहवो, वर्ण गन्ध रस स्पर्श मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित छे । वाउकाइयाणंति । वायुकायिक नो प्रश्न उत्त र हे गौतम वायुकायिकने अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो वायुकायिकने अनन्ता पर्याय हे गौतम वायुकाय वायुकायने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे करी पिण तुल्य छे, अवगाहनार्थतायें करी चतुःस्थान पतित । स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित, वर्ण गन्ध रस स्पर्श मति अ ज्ञान श्रुत अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित छे । वणस्सइकाइयाणंति । वनस्पतिकायनें हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो वनस्पतिकायना अनन्ता पर्याय प्र० उ० हे गौतम वनस्पतिकाय वनस्पतिकायने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे पिण तुल्य छे, अवगाहनार्थतायें चतुःस्थान पतित । स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श मति अज्ञान श्रुत अ

॥ मूल ॥ ॥ अ० ॥ ॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ वणस्सइकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! वणस्सइकाइए वणस्सइकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईय तिट्ठाणवडिए । वन्नगंधरसफासमइअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए से तेणट्ठेणं ? गोयमा ! वणस्सइकाइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता । बेइंदियाणं पुच्छा , गोयमा ! बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! बेइंदिए बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । उग्गाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले सियअ

॥ अ० ॥

एवमुच्यते–वनस्पतिकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! वनस्पतिकायिको वनस्पतिकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवै श्च षट् स्थानपतित स्तत्ते नार्थेन गौतम ! वनस्पतिकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । द्वीन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केना

॥ भाषा ॥

ज्ञान अचक्षुदर्शन पर्याये करी षट्स्थान पतित कहवो ते तेणे अर्थे हे गौतम इम कह्यो वनस्पतिकायने अनन्ता पर्याय कह्या । बेइंदियाणं पुच्छा । द्वीन्द्रियनो प्रश्न उत्तर हे गौतम बेरिन्द्री ने अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् इमकह्यो बेरिन्द्री ने अनन्ता पर्याय प्र० उ० हे गौतम बेरिन्द्री बेरिन्द्री ने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य छे । अवगाहनार्थे करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे, जे हीन हुवे तो असंख्यातभाग हीन हुवे अथवा संख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात गुण हीन हुवे अथवा असंख्यात गुण हीन हुवे । अह अब्भहि पत्ति । जो अधिक हुवे तो असंख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात गुणअधिक हुवे अथवा असंख्यात गुण अधिक हुवे । स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित हुवे । वर्ण गन्ध रस स्पर्श आभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञान मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित हुवे ।

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

ब्भहिए। यदिहीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणब्भहिए वा असंखेज्जगुणब्भहिए वा छट्ठाणवडिए। वन्नगंधरसफासआभिणिबोहियनाणसुअनाणओहिनाणमणपज्जवनाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए। एवं तेइंदियाणवि। एवं चउरिंदियाणवि, णवरं दो दंसणा चक्खुदंसणं अचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए। पंचिंदियतिरिक्कजोणियाणं पज्जवा जहा णेरइयाणं तहा णाणियव्वा। मणुस्साणं भंते! केवइया पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ मणुस्साणं अणंता पज्जवा प०, गोयमा! मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए

थैन नदन्त। एवमुच्यते-द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः? गौतम! द्वीन्द्रियो द्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो वगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः। यदि हीनोऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वाऽसंख्येयगुणहीनो वा। अथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागाधिको वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वाऽसंख्येयगुणाधिको वा। स्थितौ त्रिस्थानपतितः। वर्णगन्धरस

एवं तेइंद्रियाणवि। तेइंद्रीने पणि इमज कहवो। एवं चउरिंदियाणवि। चौरिन्द्रीने पणि एमज कहवो एतलो विशेष दर्शन दोय चक्षुदर्शन अने अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित कहवो। पंचिंदियतिरिक्ख जोणियाणंति। पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक ने पर्याय जिम नारकी ने कह्या तिम कहवा। मणुस्साणं भंतेत्ति। मनुष्यने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हेगौतम अनन्ता पर्याय कह्या। ते केणें अर्थे हे भगवन् इम कह्यो मनुष्यने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम मनुष्यने मनुष्य द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पिण तुल्य अवगाहनायें करी चतुस्थान पतित स्थितियें करी चतुःस्थान पतित वर्ण गन्ध रस स्पर्श मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधि मनपर्यव ज्ञान पर्यायें करी षट्स्थान पतित कहवो केवलज्ञान पर्यायें

॥ टीका ॥

ज्योतिष्काणां जघन्यमायुः पल्योपमाष्टभाग उत्कर्षतो वर्षलक्षाधिकं पल्योपमं वैमानिकानां जघन्यं पल्योपमं उत्कृष्टं त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि दशको टाकोटीसंख्येयपल्योपमप्रमाणं च सागरोपमस्य स्तोकमप्य संख्येयगुणवृद्धिहान्यसम्भवात्, स्थितितः त्रिस्थानपतितता शेषसूत्रभावनातु सुगमत्वात् स्वयं भावनीया, तदेवं सामान्यतो नैरयिकादीनां प्रत्येकपर्यायानन्त्यं प्रतिपादितमिदानीं जघन्याद्यवगाहनाद्यधिकृत्य तेषामेव प्रत्येकं पर्यायाग्रं

॥ मूल ॥

तुल्ले उग्गाहणठाए चउठाणवडिए । ठिईए चउठाणवडिए । वन्नगंधरसफासआभिणिबोहियनाणसुयनाण ओहिनाणमणपज्जवनाणपज्जवेहिय छठाणवडिए, केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छठाणवडिए केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले । वाणमंतरा जहा नेरइया ठिईए चउठाणवडिया वन्नादीहिं छठाण

॥ अ० ॥

स्पर्शाभिनिबोधिकज्ञानश्रुतज्ञानमत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । एवं त्रीन्द्रियाणामपि । एवं चतुरिन्द्रियाणामपि, नवरं द्वेदर्शने चक्षुर्दर्शनाचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पर्यवा यथा नैरयिकाणां तथा भणितव्याः । मनुष्याणां भद० । कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः, तत्केनाऽर्थेन भदन्त ! एवमुच्यते मनुष्याणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! मनुष्यो मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शाभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञानावधिज्ञानमनःपर्यवज्ञानपर्यवैः षट्स्थानपतितः । केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्यः । त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः, केवलदर्शनप र्यवैस्तुल्यः । वानव्यन्तराः अवगाहनार्थतया स्थितौ चतुःस्थानपतिताः । वर्णादिभिः षट्स्थानपतिताः । ज्योतिष्कवैमानिकावपि एवमेव नवरं

॥ भाषा ॥

करी तुल्य वर्ण अज्ञान वर्ण दर्शने करी षट्स्थान पतित केवलदर्शन पर्यायें करी तुल्य छे । वाणमंतरत्ति । वानव्यन्तर अवगाहनार्थे करी स्थितिये करी चतःस्थानपतित वर्ण आदिकें करी षट्स्थान पतित । जोइसियवेमाणियावित्ति । ज्योतिषी वैमानिक पिण एमज कहवा एतलो विशेष स्थिति ने विषे त्रिस्थान पतित कहवा । जहन्नोगाहणगाणं नेरइयाणंति । जघन्य अवगाहना ना नारकीने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हेगी

॥ मूल ॥

वक्रिया जोइसियवेमाणियावि एवंचेव नवरं ठिईए चउठाणवडिए तिठाणवडिया । जहन्नोगाहणाणं भंते ! णेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा प० । से केणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहन्नोगाहणगाणं भंते णेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । सेकेणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहन्नोगाहणगाणं णेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए णेरइए जहन्नोगाहणस्स णेरइयस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उग्गाहणठयाए तुल्ले ठिईए चउठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छठाणवडिए । उ

॥ अ० ॥

स्थितौ त्रिस्थानपतितौ । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्तास्तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—जघन्यावगाहकानां नैरयिकाणां अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनको नैरयिको जघन्यावगाहनकनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतयाच तुल्योऽवगाहनयाऽपि तुल्यः स्थितौ चतुःस्थानपतितः । वर्णरसगन्धस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । उत्कृष्टाऽवगाहनकानां भदन्त ! नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । त

॥ भाषा ॥

तम अनन्ता पर्याय कह्या । ते कणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जघन्य अवगाहना ना नारकोने अनन्ता पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य अवगाहना नो नारकी जघन्य अवगाहना ना नारकोने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनायें पिण तुल्य स्थितियें करी चतुःस्थान पतित वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी त्रण ज्ञाने करी त्रण अज्ञाने करी त्रण दर्शने करी षट्स्थान पतित । उक्कोसोगाहणगाणंति । उत्कृष्ट अवगाहना ना नारकी ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या, ते कणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो उत्कृष्ट अवगाहना ना नारकी ने अनन्ता पर्याय प्र० उ० हे गौतम उत्कृष्ट अवगाहना नो नारकी उत्कृष्ट अवगाहना ना नारकी ने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनायें तुल्य स्थि

प्रतिपादयिषुराह-जहन्नोगाहणाणं भंते ! इत्यादि ॥ सुगमं ॥ नवरंठिईएछट्ठाणवडिए इति ॥ जघन्यावगाहनो हि दशवर्षसहस्राणिस्थितिकोपि भवति रत्नप्रभाया मुत्कृष्टस्थितिकोपि सप्तमनरकपृथिव्यांतत्रोपपद्यते, स्थित्या चतुःस्थानपतितत्वात् ॥ तिहिं नाणाहिं तिहिं अन्नाणाहिंति ॥ इह

॥ टीका ॥

क्कोसोगाहणयाणं भंते ! णेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—उक्कोसोगाहणयाणं णेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! उक्कोसोगाहणए णेरइए उक्कोसोगाहणस्स णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । उग्गाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए सियहीणे सियतुल्ले सियब्भहिए । यदि हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा । अह ब्भहिए असंखेज्जभागब्भहिए वा संखेज्जभागमब्भहिए वा वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । अजहन्नुक्कोसगाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा !

॥ मूल ॥

एकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते उत्कर्षावगाहनकानां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! उत्कृष्टावगाहनकनैरयिक उत्कृष्टावगाहनकनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः, स्थितौ स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि हीनोसङ्ख्येयभागहीनोवा सङ्ख्येयभागहीनोवा, अथाभ्यधिकः असङ्ख्येयभागाभ्यधिकः संख्येयभागाभ्यधिको वा, वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । अजघन्योत्कृष्टावगाहनकानां नैरयिकाणां भदन्त ! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः

॥ भा० ॥

तियें करी कदाचित् हीन कदाचित् सम कदाचित् अधिक । जे हीन हुवे असंख्यात भागहीन हुवे संख्यात भाग हीन हुवे । जे अधिक हुवे ते असंख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात भाग अधिक हुवे । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी त्रण ज्ञाने करी त्रण अज्ञानें करी त्रण दर्शनें करी षट्स्थान पतित कहवो । अजहन्नुक्कोसगाणं नेरइयाणंति । मध्यम अवगाहना ना नारकी ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय

॥ नाथा ॥

॥ टीका ॥

यदा गर्भव्युत्क्रान्तिकसञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रिया नरकेषूत्पद्यन्ते तदा स नारकायुःसंवेदनप्रथमसमयएव पूर्वगृहीतौदारिकशरीरपरित्यागं करोति तस्मिन्नेव समये सम्यग्दृष्टे स्त्रीणि ज्ञानानि मिथ्यादृष्टे स्त्रीणि अज्ञानानि समुत्पद्यन्ते ततोऽविग्रहेणविग्रहेण वा गत्वा वैक्रियशरीरसङ्घातं करोति यस्तु सम्मूर्च्छिमा सञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियो नरकेषूत्पद्यते तस्य तदानीं विभङ्गज्ञानं नास्तीति जघन्यावगाहनस्था ज्ञानानि भजनया द्रष्टव्यानि द्वे त्रीणिवेति' उत्कृष्टावगाहनसूत्रे स्थित्या हानौ वृद्धौ च द्वित्स्थानपतितत्वं' तद्यथा-असङ्ख्येयभागहीनत्वं वा सङ्ख्येयभागहीनत्वं वा तथा असङ्ख्येयभागाधिकत्वं वा संख्येयभागाधिकत्वं वा' नतु संख्येयाऽसंख्येयगुणवृद्धिहानी कस्मा दितिचे दुच्यते-उत्कृष्टावगाहनाहि नैरयिकाः पञ्चधनुःशतप्रमाणाः ते च सप्तमनरकपृ

॥ मूल ॥

अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—अजहन्नुक्कोसगाणं णेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अजहन्नुक्कोसए णेरइएअजहन्नुक्कोसगस्स णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उगाहणट्ठयाए तुल्ले । ठिईए सियहीणे सियतुल्ले सियअब्भहिए । जदि हीणे असंखिज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा , अहअब्भहिए असंखेज्जइभागअब्भहिए संखेज्जइभागअब्भहिए वा वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । अजहन्नुक्कोसोगाहणगाणं

॥ अ० ॥

प्रज्ञप्ताः, अजघन्योत्कृष्टावगाहनकनैरयिकोऽजघन्योत्कृष्टावगाहनकनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि हीनोऽसङ्ख्येयभागहीनो वा सङ्ख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयगुणहीनो वा । अथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागाधिको वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा असंख्येयगुणाधिको वा । स्थितौ स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्याद

॥ गाथा ॥

कह्या, ते केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जे मध्यम अवगाहना ना नारकी ने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम मध्यम अवगाहना नो नारकी मध्यम अवगाहना ना नारकी ने तुल्य छे द्रव्यार्थ पणे करी प्रदेशार्थ पणे तुल्य छे अवगाहनाये करी कदाचित् हीन कदाचित्तुल्य कदाचित् अ

थिव्यां तत्र जघन्या स्थितिः द्वाविंशतिसागरोपमाणि उत्कृष्टा त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणि ततो सङ्ख्येयासंख्येयभागहानिवृद्धिरेव घटेते न सङ्ख्येयगुणहानिवृद्धी तेषां चोत्कृष्टावगाहनानां त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि वा नियमा द्वेदितव्यानि न भजनया भजनाहेतोः सम्मूच्छिंमासञ्ज्ञिपञ्चेन्द्रियोत्पादस्य तेषामसम्भवात्' अजघन्योत्कृष्टावगाहनसूत्रे यदवगाहनया चतुःस्थानपतितत्वं तदेवं-अजघन्योत्कृष्टावगाहनोहि सर्वजघन्याङ्गुलासङ्ख्येयभागात्परतो मनाक् वृद्धतराङ्गुलासङ्ख्येय भागा दारभ्य यावदङ्गुलासङ्ख्येयभागन्यूनानि पञ्चधनुःशतानि तावदवसेयः ततः सामान्यनैरयिकसूत्रेइवात्राप्युपप

॥ टीका ॥

नंते ! णेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणठेणं नंते ! एवं वुच्चइ-अजहन्नुक्कोसोगाहणगाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अजहन्नुक्कोसोगाहणए णेरइए अजहन्नुक्कोसोगाहणस्स णेरइयस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उगाहणठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जइभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा असंखिज्ज गुणहीणे वा । अह अब्भहिएवा असंखिज्जभागमब्भहिए वा संखेज्जइभागमब्भहिए वा संखिज्जगुणअब्भहिए

॥ मूल ॥

न्यधिकः । यदि हीनोऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा असंख्येयगुणहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा । अथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागा

॥ अ० ॥

धिक छे । जइ होवे इत्यादि । जे हीन हुवे असंख्यात भागहीन हुवे अथवा संख्यात भागहीन हुवे संख्यात गुण हीन हुवे अथवा असंख्यात गुण हीन हुवे । अह अब्भहिएत्ति । जे अधिक हुवे असंख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात गुण अधिक हुवे अथवा असंख्यात गुण अधिक हुवे, स्थितिने विषे कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे, जे हीन हुवे असंख्यात भाग हीन हुवे अथवा संख्यात भाग हीन हुवे अथवा असंख्यातगुण हीन हुवे अथवा संख्यात गुण हीन हुवे, अथ जे अधिक हुवे असंख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यातगुण अधिक हुवे अथवा असंख्यात गुण अधिक हुवे, वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यवे करी चक्ष ज्ञाने करी चक्ष अज्ञाने करी चक्ष दर्शने

॥ भाषा ॥

द्यते' अवगाहनत श्चतुःस्थानपतितता स्थित्या चतुःस्थानपतितता सुप्रतीता दशवर्षसहस्रेभ्य आरभ्यो त्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाणामपि तस्यां लभ्यमानत्वात्, जघन्यस्थितिसूत्रेऽवगाहनया चतुःस्थानपतितत्वं तस्यावगाहनायां जघन्यतोऽङ्गुलासंख्येयभागादारभ्योत्कर्षतः सप्तपादोनधनुषोऽवाप्यमानत्वात्, अत्रापि त्रीण्यज्ञानानि केषांचि त्कदाचि त्कतया द्रष्टव्यानि संमूर्च्छिमासंज्ञिपञ्चेन्द्रियेभ्य उत्पन्नानामपर्याप्तावस्थायां विभंगस्याऽभावात्, उत्कृष्टस्थितिचिन्तायामवगाहनया चतुःस्थानपतितत्व मुत्कृष्टस्थितिकस्याऽवगाहनाया जघन्यतोऽङ्गुलासङ्ख्येयभागादारभ्यो त्कर्षतः पञ्चानां धनुःशतानामवाप्यमानत्वात् ॥ अजहन्नुक्कोसठिईएवि एवंचेवेत्यादि ॥ अजघन्योत्कृष्टस्थितावपि वक्तव्यं यथा जघन्यस्थितिसूत्रे उत्कृष्टस्थिति सूत्रे च नवरमय विशेषो जघन्यस्थितिसूत्रे उत्कृष्टस्थितिसूत्रे च स्थित्या तुल्यत्व मभिहित मत्रतु स्वस्थानेपि स्थितावपि चतुःस्थानपतित इति व



वा असंखेज्जगुणअब्भहिएवा। ठिईए सियहीणे सियतुल्ले सियअब्भहिए। जदि हीणे असंखेज्जभागहीणे वा संखेज्जभागहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा। अह अब्भहिए असंखेज्जइभागअब्भहिएवा संखेज्जइभागअब्भहिए वा संखेज्जगुणअब्भहिए असंखेज्जगुणअब्भहिए वा वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छठ्ठाणवडिए। से तेणठेणं एवं वुच्चइ ? गोयमा ! अजहन्नुक्कोसो



धिको वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा असंख्येयगुणाधिको वा। वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितस्तत्तेनार्थेन गौतम ! अजघन्योत्कृष्टावगाहनकानां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। जघन्यस्थितिकानां भदन्त ! नैरयि



करो षट्स्थान पतित हुवे ते तेणे अर्थे हे गौतम इम कह्यो मध्य अवगाहना ना नारकी ने अनन्ता पर्याय कह्या। जहन्न ठितीयाणति। जघन्य स्थितिना नारकी ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या, ते केणे अर्थे इम कह्यो जघन्य स्थितिना नारकी ने अनन्ता पर्याय प्र० उ० हे गौतम जघन्य स्थितिना नारकी जघन्य स्थितिक नारकी ने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनाये चतुःस्थान पतित, स्थिति

॥ मूल ॥

गाहणगाणं णेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता । जहण्ण ठिईयाणं भंते ! णेरइयाणं केवइया पज्जवा प० ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–जहन्नठिईयाणं णेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नठितीए नेरइए जहन्नठिईयस्स णेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठिईए तुल्ले वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसठिईएवि । अजहन्नुक्कोसठिईएवि एवं णवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए जहण्णगुणकालयाणं भंते ! णेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ – जहण्णगुणकालयाणं णेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगु

॥ प० ॥

काणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञ० । अथ केनार्थेन भ० ! एवमुच्यते जघन्यस्थितिकनैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यस्थितिकनैरयिको जघन्यस्थितिकनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थितौ तुल्यः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षस्थितिकनैरयिकोऽपि चतुःस्थानपतितः अजघन्योत्कर्षस्थितिकोऽपिनवरं स्वस्थाने चतुःस्थानपतिततः । जघन्यगुणकालकानां भदन्त ! नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यगुणकालकानां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यगुणकालक

॥ भाषा ॥

ने विषे तुल्य वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याये करी त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान करी त्रण दर्शने करी षट्स्थान पतित । एव उक्कोसठितीएवि । एमज उत्कृष्ट स्थितिना नारकी ने आलावो कहवो । अजहन्नुक्कोसठितो एवि, मध्यम स्थितिना नारकी ने पणि इमज एतलो विशेष स्वस्थाने चतुस्थान पतित कहवो । जहन्नगुणकालयाणंति । जघन्यगुण कालकने हे भगवन् नारकी ने केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या , ते केणें अर्थे हेभग

णकालए नेरइए जहन्नगुणकालगस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाण वडिए । ठितीए चउट्ठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए सेतेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ – जहन्नगुणकालगाणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता । एव उक्कोसगुणकालएवि । अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव नवरं कालवण्णपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं अवसेसा चत्तारि वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा नाणियव्वा । जहण्णाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्ज

---

नैरयिको जघन्यगुणकालकनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतयापि तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितस्तत्तेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यगुणकालकनैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । एवमुत्कर्षगुणकालकोपि । अजघन्यानुत्कर्षगुणकालकोप्येवञ्चैव नवरं कालवर्णपर्यवैः षट्स्थानपतितः एवमवशेषाश्चत्वारोवर्णाः द्वौ गन्धौ पञ्च रसा अष्टौ स्पर्शा ज्ञातव्याः । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त ! नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः

---

वत् इम कह्यो जघन्यगुण कालक नारकी ने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० ह० हे गौतम जघन्यगुण कालक नारकी जघन्यगुण कालक नारकीने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनार्थे चतुस्थान पतित । स्थितिने विषे चतुस्थान पतित कालवर्ण पर्यायें तुल्य, अवशेष वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी षट्स्थान पतित ज्ञान त्रण अज्ञानें करी त्रण दर्शनेंकरी षट्स्थान पतित । तेह तेणें अर्थे गौतम इम कह्यो जघन्यगुणकालक नारकीने अनन्ता पर्याय कह्या । एवं उत्कोस गुणकालयाणंति । एमज उत्कृष्ट गुण कालकने पणि कहवो । अजहन्नमणुक्कोसत्ति । मध्यम गुण कालकने पणि एमज कहवो एतलो विशेष कालवर्ण पर्यायेंकरी षट्स्थान पतित । एमज अवशेष चार वर्ण दोय गन्ध पांच रस आठ फरस कहवा । जहन्नाभिणिबोहियत्ति । जघन्य अभिनिबोधिक ज्ञानी

वा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णाभिणिबोहियनाणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता गोयमा ! जहण्णाभिणिबोहियनाणीनेरइए जहण्णाभिणिबोहियनाणिस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउट्ठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले सुयनाणसुयनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि । अजहण्णमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि एवंचेव नवरं आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं स

प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ता स्तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनैरयिको जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतयावा तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवै स्तुल्यः श्रुतज्ञानावधिज्ञानपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानिनोपि । अजघन्यानुत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञान्यप्येवं चैव नवरमाभिनिबोधि

नारकीने हेभगवन केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हेगौतम अनन्ता पर्याय कह्या, ते कणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो—जघन्याभिनिबोधिक ज्ञानी नारकीने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी नारकी जघन्य आभिनिबोधिक नारकी ने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे तुल्य अवगाहनार्थे चतुस्थान पतित । स्थितिने विषे चतुस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी षट्स्थान पतित । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यायें करी तुल्य श्रुतज्ञान अने अवधिज्ञान पर्यायें करी षट्स्थान पतित । एवं उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पिण कहेवो । अजघन्यमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि एवं चेवत्ति । मध्यमा भिनिबोधिकज्ञानी ने पिण एमज जाणवो एतलो विशेष आभिनिबोधिक ज्ञान प

नवरं ॥ जस्स नाणा तस्स अन्नाणा नत्थित्ति ॥ यस्य ज्ञानानि तस्याज्ञानानि न सन्तीति यतः सम्यग्दृष्टे ज्ञानानि मिथ्यादृष्टे रज्ञानानि सम्यग्दृष्टित्वं च मिथ्यादृष्टित्वोपमर्दैन भवति मिथ्यादृष्टित्वमपि सम्यग्दृष्टित्वोपमर्दैन भवति ततो ज्ञानसद्भावे अज्ञानाभाव एवमज्ञानसद्भावे ज्ञानाभावः तत उक्तं-जहा नाणा तहा अन्नाणावि भाणियव्वा नवरं जस्स अन्नाणा तस्स नाणा नत्थवंति इति ॥ शेषं पाठसिद्धमेवमसुरकुमारादिसूत्राण्यपि

ठाणे छठाणवडिए । एवं सुयनाणी । ओहिनाणीवि एवंचेव नवरं जस्स नाणा तस्स अन्नाणा नत्थि जहा नाणा तहा अन्नाणावि भाणियव्वा नवरं जस्स अन्नाणा तस्स नाणा नत्थि । जहन्नचक्खुदंसणीणं भंते ! नेरइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ जहन्नचक्खुदंसणीणं नेरइयाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नचक्खुदंसणीणं नेरइए जहन्नचक्खुदंसणिणस्स नेरइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठिईए चउट्ठा

कज्ञानपर्यवैः स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं श्रुतज्ञान्यवधिज्ञान्यपि नवरं यस्य ज्ञानानि तस्याज्ञानानि न सन्ति यथा ज्ञानानि तथाऽज्ञानान्यपि भणितव्यानि नवरं यस्याज्ञानानि तस्य ज्ञानानि न सन्ति । जघन्यचक्षुर्दर्शनिनां भदन्त ! नैरयिकाणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यचक्षुर्दर्शनिनां नैरयिकाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघ

र्यायें करी स्वस्थाने षट्स्थान पतित । एवं श्रुतज्ञानी अने अवधिज्ञानी ने पण कहवो एतलो विशेष जेहने ज्ञान हुवे तेहने अज्ञान न हुवे जेम ज्ञान तेम अज्ञान पिण कहवा एतलो विशेष जेहने अज्ञान तेहने ज्ञान नथी । जहन्न चक्खुदंसण नेरइयाणंति । जघन्य चक्षुर्दर्शन नारकी ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जघन्य चक्षुर्दर्शन नारकी ने अनन्ता पर्याय कह्या हे गौतम जघन्य चक्षुर्दर्शन नारकी ने जघन्य चक्षुर्दर्शन नारकी द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य अवगाहनार्थे करी चतुःस्था

॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥ ॥ अ० ॥ ॥ भाषा ॥

जावनीयानि प्रायः समानगमत्वात्, जघन्यावगाहनादिपृथिव्यादिसूत्रे – स्थित्या त्रिस्थानपतितत्वं संख्येयवर्षायुष्कत्वात्, एतच्च प्रागेव सामान्यप

णवण्हिए । वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं छट्ठाणवडिए । चक्खुदंसणपज्जवेहिं तुल्ले । अचक्खुदंसणपज्जवेहिं नहिदंसणवज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसचक्खुदंसणीवि । अजहन्नमणुक्कोसचक्खुदंसणीवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं अचक्खुदंसणीवि नहिदंसणीवि । जहन्नोगाहणगाणं भंते ! असुरकुमाराणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–जहन्नोगाहणगाणं असुरकुमाराणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नोगाह

न्यचक्षुर्दर्शनिनैरयिको जघन्यचक्षुर्दर्शिनैरयिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैः षट्स्थानपतितः । चक्षुर्दर्शनपर्यवैस्तुल्योऽचक्षुर्दर्शनपर्यवैरवधिदर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कृष्टचक्षुर्दर्शिनोऽपि । अजघन्यानुत्कर्षचक्षुर्दर्शिनोऽप्येवंचैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतिताः । एवमचक्षुर्दर्शन्यपि, अवधिदर्शन्यपि एवं । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! असुरकुमाराणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथकेनार्थेन

न पतित, स्थितिने विषे चतुःस्थान पतित वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी त्रण ज्ञाने करी त्रण अज्ञाने करी षट्स्थान पतित हुवे चक्षुदर्शन पर्यायें करी तुल्य अचक्षुदर्शन पर्यायें करी अवधिदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित हुवे । एवं उक्कोस चक्खुदंसणीवित्ति । एमज उत्कृष्ट चक्षुदर्शनी पणि कहवो मध्यम चक्षुदर्शनी नें पिण एमज कहवो एतलो विशेष स्वस्थान ने विषे षट्स्थान पतित हुवे । एवं अचक्खुदंसणीवि । अचक्षुदर्शनी पण एमज कह्यो । अवधिदर्शनी पण्हि एमज कहवो । जहन्नोगाहणगाणं भंते असुरकुमाराणंति । जघन्य अवगाहना ना असुरकुमारने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जघन्य अवगाहना ना असुरकुमारने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उत्तर

णए असुरकुमारे जहन्नोगाहणगस्स असुरकुमारस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए । वण्णादीहिं छट्ठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणसुयनाणओहिनाणपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिय छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणएवि । एवं अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि नवरं उक्कोसोगाहणएवि असुरकुमारठितीए चउट्ठाणवडिए । एवं जाव थणियकुमारो । जहन्नोगाहणगाणं भंते ! पुढविकाइयाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता ।

॥ मूल ॥

भदन्त ! जघन्यावगाहनकानामसुरकुमाराणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनकोऽसुरकुमारो जघन्यावगाहनकस्यासुरकुमारस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । वर्णादिभिः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानश्रुतज्ञानावधिज्ञानपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षावगाहनकोऽपि । एवमजघन्योत्कर्षावगाहनकोऽप्यसुरकुमारस्थितौ चतुःस्थानपतितः । एवं यावत्स्तनितकुमारः । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! पृथिवीकायिकानां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां पृथिवीकायिकानामनन्ताः पर्यवाः

॥ अ० ॥

हे गौ० जघन्य अवगाहना नो असुरकुमार जघन्य अवगाहना ना असुर कुमारने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे पण तुल्य अवगाहना थी तुल्य छे । स्थिति थी चतुःस्थान पतित छे । वर्णादिकें करी षट्स्थान पतित कहवो । आभिनिबोधिक ज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान पर्याये करी तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शनें करी षट्स्थान पतित हुवे । एव उक्कोसोगाहणएवि । एमज उत्कृष्ट अवगाहना नो असुरकुमार कहवो । एमज मध्यम असुरकुमार ने कहवो एतलो विशेष उत्कृष्ट अवगाहना नो असुरकुमार स्थितियें चतुस्थान पतित एमज यावत्स्तनित कुमार लगें कहवो । जहन्नोगाहणगाण भंते पुढविकाइयाणंति । जघन्य अवगाहना ना पृथिवीकायिक ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या ? गौतम ! अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणे अर्थे हे भगवन्

॥ भाषा ॥

पृथिवीकायिकसूत्रे भावितं पर्यायचिंतायामज्ञाने एवमत्रेज्ञानश्रुत्यज्ञानलक्षणे वक्तव्ये नतु ज्ञाने तेषां सम्यक्त्वस्पर्शोपि तेषु मध्ये सम्यक्त्वसहितस्य चोत्पा

॥ टीका ॥

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णोगाहणगाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए पुढविकाइए जहण्णोगाहणगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले । उग्गाहणट्ठयाए तुल्ले । ठितीए तिट्ठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणएवि । अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि एवचेव नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए । जहण्णठितीयाणं भंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा , गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं

॥ मूल ॥

प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनकः पृथिवीकायिको जघन्यावगाहनकस्य पृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः' स्थितौ त्रिस्थानपतितः, वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः द्वाभ्यामज्ञानाभ्यामचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षावगाहनकपृथिवीकायिकोपि । अजघन्यानुत्कर्षावगाहनकपृथिवीकायिकोप्येव ज्ञैव नवरं स्वस्थाने चतुःस्थानपतितः । जघन्यस्थितिकानां भदन्त ! पृथिवीकायिकानां पृच्छा' गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यस्थितिकानां पृथिवीकायिकानामन

॥ अ० ॥

इस कहा जघन्य अवगाहना ना पृथिवीकायिक ने अनन्ता पर्याय कहा प्र० ह० हे गौतम जघन्य अवगाहना नो पृथिवीकायिक जघन्य अवगाहना ना पृथिवीकायिक ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेश र्थे करी पण तुल्य अवगाहनाये करी पण तुल्य छे । स्थितिवे करी त्रिस्थान पतित कहवो स्यातवर्ष आयुपणा थकी । वर्ण गंध रस फरस पर्यायें करी दोय अज्ञानें करी अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित कहवो । एवं उक्कोसोगाहणए विति । एम उत्कृष्ट अवगाहना ना पृथिवी कायिकने आलावो कहवो । अजहण्ण मणुक्कोसएवि एवचेवत्ति । मध्यम अवगाहना ना पृथिवीकायिक ने पण एमज कहवो एतलो विशेष स्वस्थाने चतुस्थान पतित छे । जहण्णठितियाणं पुढविकाइयाणंति । जघन्य स्थितिना पृथिवीकायिकने हे भगवन्

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

नंते ! एवं वुच्चइ—जहन्नठितीयाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णठितीए पुढविकाइए जहण्णठितीयस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तुल्ले । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं मतिअन्नाणसुयअन्नाणअचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसठितीएवि । अजहन्नमणुक्कोसठितीएवि एवंचेव णवरं सट्ठाणे तिट्ठाणवडिए । जहण्णगुणकालयाणं नंते ! पुढविकाइयाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं नंते ! एवं वुच्चइ—जहन्न

॥ अ० ॥

न्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । जघन्यस्थितिकः पृथिवीकायिको जघन्यस्थितिकस्य पृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ तुल्यः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैर्मत्यज्ञानश्रुताज्ञानाचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षस्थितावपि । अजघन्योत्कर्षस्थितावप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने त्रिस्थानपतितः । जघन्यगुणकालकानां भ० ! पृथिवीकायिकानां पृच्छा' गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यगुणकालकानां पृथिवीकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघ

॥ भाषा ॥

केतला पर्याय प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्यस्थितिना पृथिवीकायिक ने अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणें अर्थें हे भगवन् इम कह्यो जघन्य स्थितिना पृथिवीकायिक ने अनन्ता पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्यस्थिति नो पृथिवीकायिक जघन्यस्थितिक पृथिवीकायिक ने द्रव्यार्थें करी तुल्य प्रदेशार्थें करी पणि तुल्य अवगाहनायें करी चतस्थान पतित कहवो । स्थितिने विषे तुल्य । वर्ण गंध रस फरस पर्यायें करी मति अज्ञान श्रुत अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित कहवो । एवमुक्कोसठितीएविति । एमज उत्कृष्ट स्थितिना पृथिवीकायिक ने कहवो । अजहण्णमणुक्कोसठितीएवि एवं चेवत्ति । मध्यमस्थिति ना नारकी ने पणि एमज कहवो एतलो विशेष स्वस्थान ने विषे त्रिस्थान पतित । जहण्णगुणकालयाणं भंते पुढविकाइयाणं ति । जघन्य गुण कालक पृथिवी कायिकने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणे अर्थें हे भगवन् इम

गुणकालगाणं पुढविकाइयाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए पुढविकाइए जहन्नगुणकालगस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। ठितीए तिट्ठाणवडिए। कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। दोहिं अन्नाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालएवि। अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं पंचवन्ना दोगंधा पंचरसा अट्ठफासा नेयव्वा। जहण्णमइअन्नाणीणं भंते! पुढविकाइयाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता पज्जवा पण्णत्ता। से केणट्ठेणं भंते!

॥ सूत्र ॥

॥ प्र० ॥

॥ भाषा ॥

न्यगुणकालकः पृथिवीकायिको जघन्यगुणकालकस्य पृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः। स्थितौ त्रिस्थानपतितः। कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः। द्वाभ्यामज्ञानाभ्यामचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षगुणकालकोपि। अजघन्यानुत्कर्षगुणकालकोप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। एवं पंच वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्च रसा अष्टौ स्पर्शा ज्ञातव्याः। जघन्यमत्यज्ञानिनां भदन्त! पृथिवीकायिकानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथकेनार्थेन भदन्त!

कह्यो—जघन्यगुण कालक पृथिवीकायिक ने अनन्ता पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्यगुणकालक पृथिवीकायिक जघन्यगुणकालक पृथिवीकायिक ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनायें करी चतुस्थान पतित छे। स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित। कालवर्ण पर्यायें करी तुल्य अवशेष वर्ण गंध रस फरस पर्यायें करी षटस्थान पतित। दो अज्ञाने करी अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षटस्थान पतित कहवो। एवं उक्कोसगुणकालएवि त्ति। एमज उत्कृष्टगुणकालक ने पण वक्तव्यता कहवी। अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवित्ति। मध्यमगुण कालकने पण एमज जाणवो एतलो विशेष स्वस्थाने षटस्थान पतित हुवे। एवं पंच वर्ण दो गंधा इति। एम पांच वर्ण दोय गंध पांच रस आठ फरस भणवा। जहण्णमइअन्नाणीणं भंते पुढवि

एवं वुच्चइ—जहन्नमतिअन्नाणीपुढविकाइए जहन्नमतिअन्नाणिणस्स पुढविकाइयस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। ठितीए तिट्ठाणवडिए वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। मतिअन्नाणपज्जवेहिं तुल्ले सुयअन्नाणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसमतिअन्नाणीवि। अजहन्नमणुक्कोसमतिअन्नाणीवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए एवं सुयअन्नाणीवि। अचक्खुदंसणीवि एवंचेव। एवं जाव वणस्सइकाइया। जहन्नोगाहणगाणं भंते! बेइंदियाणं पुच्छा,

॥ सूत्र ॥

एवमुच्यते-जघन्यमत्यज्ञानिपृथिवीकायिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यमत्यज्ञानिपृथिवीकायिको जघन्यमत्यज्ञानिपृथिवीकायिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः। स्थितौ त्रिस्थानपतितः। वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः मत्यज्ञानपर्यवैस्तुल्य श्रुत्यज्ञानपर्यवैश्चक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षमत्यज्ञान्यपि। अजघन्यानुत्कर्षमत्यज्ञान्यप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। एवं श्रुताज्ञान्यपि। अचक्षुर्दर्शन्यप्येवं चैव। एवं यावद्वनस्पतिकायिकः। जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! द्वी

॥ अ० ॥

काइयाणंति। जघन्यमति अज्ञानी पृथिवीकायिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याव कह्या। तेह केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जघन्यमति अज्ञानी पृथिवी कायिकने अनन्ता पर्याव प्र० उ० हे गौतम जघन्य मतिअज्ञानी पृथिवी कायिक जघन्य मति अज्ञानी पृथिवी कायिकने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी चतुस्थान पतित। स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित। वर्ण गंध रस स्पर्श पर्यायें करी षट्स्थान पतित। मति अज्ञान पर्यायें करी तुल्य। श्रुत अज्ञान पर्यायें करी अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित। एवं उक्कोसमइअन्नाणीवि। एमज उत्कृष्ट मति अज्ञानी पणि जाणवो। अजहन्नमणुक्कोसअन्नाणीवित्ति। मध्यम मति अज्ञानी पृथिवी कायिक पणि एमज एतलो विशेष स्वस्थाने षट्स्थान पतित। एवं सुयअन्नाणीवित्ति। एमज श्रुतज्ञानी पणि जाणवो। अचक्खुदंसणीवि एवंचेव। अचक्षुदर्शनी पणि एमज जाणवो। एवं जाववणस्सइकाइयत्ति। एम

॥ भाषा ॥

दासम्भवात् "उभयाज्ञावो पुढवाइएसुइतिवचनात्, अतएवैतदेवोक्तमत्र-दोहिं अन्नाणेहिं इति ॥ जघन्यावगाहनद्वीन्द्रियसूत्रे॥ दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं इति॥ द्वित्रिन्द्रियाणांहि केषाञ्चित् अपर्याप्तावस्थायां सास्वादनसम्यक्त्वमवाप्यते सम्यग्दृष्टेश्च ज्ञाने लभ्यते शेषाणा मज्ञाने तत उक्तं-द्वाभ्यां ज्ञानाभ्यां द्वाभ्या मज्ञानाभ्यामिति, उत्कृष्टावगाहनायांत्वपर्याप्तावस्थाया अभावात्, सास्वादनसम्यक्त्वं नावाप्यते तत स्तत्र ज्ञाने नवक्तव्ये तथा चाह-

॥ टीका ॥

? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–जहन्नोगाहणगाणं बेइंदियाणं अ णंता पज्जवा प० ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए बेइंदिए जहन्नोगाहणगस्स बेइंदियस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले । ओगाहणठयाए तुल्ले । ठितीए तिठाणवडिए। वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छठाणवडिए । एवं उक्कोसोगाहणएवि नवरं णाणा नत्थि । अ

॥ मूल ॥

न्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनको द्वीन्द्रियो जघन्यावगाहनकस्य द्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योवगाहनार्थतया तुल्यः, स्थितौ त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः द्वाभ्यां ज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां अज्ञानाभ्यां अचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षावगाह

॥ अ० ॥

यावत् वनस्पतिकाय लगे सर्व जाणवा । जहन्नोगाहणगाणं बेइंदियाणंति । जघन्य अवगाहना ना बेइंद्रियनो प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय क ह्या । ते केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जघन्य अवगाहना ना बेइंद्रो ने अनन्ता पर्याय प्रश्न उत्तर हे गौतम जघन्य अवगाहना नो बेइंद्रो जघन्य अ वगाहना ना बेइंद्रिय ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी तुल्य स्थितिने विषे त्रिस्थान पतित । वर्ण गंध रस फरस पर्यवे करी दोय ज्ञान दोय अज्ञान अचक्षुदर्शन पर्याये करी षटस्थान पतित । एवं उक्कोसोगाहणएवि । एम उत्कृष्ट अवगाहना नो द्वीन्द्रिय पणि एतलो विशेष ज्ञान नथी । अजहन्न मणुक्कोसोगाहणए जहा जहन्नोगाहण एत्ति । मध्यम अवगाहना नो बेइंद्रो जिम जघन्य अवगाहना नो बेइन्द्रो एतलो

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

एवं उक्कोसितोगाहणाएवि नवरं नाणा नत्थित्ति॥ तथा अजघन्योत्कृष्टावगाहना किल प्रथमसमयादूर्द्धं भवति इति अपर्याप्तावस्थायामपि तस्यास म्भवाद् सासादनसम्यक्त्ववतां ज्ञाने अन्येषां चाज्ञाने इति, ज्ञानेचाज्ञाने च वक्तव्ये तथाचाह-अजहन्नुक्कोसोगाहणाए जहा जहन्नोगाहणाए इति तथा जघन्यस्थितिसूत्रे द्वे अज्ञाने एव वक्तव्ये न तु ज्ञाने यतः सर्वजघन्यस्थितिको लब्ध्यपर्याप्तको भवति न च लब्ध्यपर्याप्तकेषु मध्ये सासादनसम्य ग्दृष्टिरुपपद्यते किं कारणमिति चे दुच्यते लब्ध्यपर्याप्तकोहि सर्वसंक्लिष्टः सासादनसम्यग्दृष्टिश्च मनाक्शुभपरिणाम स्ततः स तेषु मध्ये नोत्पद्यते

॥ मूल ॥

जहन्नमणुक्कोसोगाहणए जहा जहन्नोगाहणए णवरं सट्ठाणे नोगाहणाए चउट्ठाणवडिए । जहन्नठितीयाणं भंते बेइंदियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते एवं वुच्चइ जहन्नठितीयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता गोयमा ! जहन्नठितिए बेइंदिए जहन्नठितियस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले नोगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए तुल्ले । वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं

॥ अ० ॥

नकोपि नवरं ज्ञानानि नसन्ति । अजघन्यानुत्कर्षावगाहनको यथा जघन्यावगाहनको नवरं स्वस्थाने ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । जघन्यस्थितिकानां भदन्त ! द्वीन्द्रियाणां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्य स्थितिकानां द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० ! जघन्यस्थितिको द्वीन्द्रियो जघन्य स्थितिकस्य द्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतयापि तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या तुल्यो वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः द्वाभ्यामज्ञानाभ्यामचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एव

॥ भाषा ॥

विशेष स्वस्थाने अवगाहनाये करी चतुस्थान पतित । जहन्न ठितियाणंति । जघन्य स्थितिक बेइन्द्री ने हे भगवन् केतला पर्याय प्रश्न उत्तर हे गौत म अनन्ता पर्याय । तेह केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जघन्य स्थितिक बेइन्द्री ने अनन्ता पर्याय हे गौतम जघन्य स्थितिक बेइन्द्री जघन्य स्थिति ना बेइन्द्रिय ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनाये करी चतुःस्थान पतित । स्थितिये करी त्रिस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्वा

तेनाज्ञाने एव लभ्यते न ज्ञाने उत्कृष्टस्थितिषु पुनर्मध्ये सासादनसम्यक्त्वसहितोपपद्यते इति तत्सूत्रे ज्ञाने ऽज्ञाने च वक्तव्ये तथाचाह-एवं उक्को

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

अन्ताणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसठितीएवि नवरं दो नाणा अब्भहिया । अ जहण्णमणुक्कोसठितीए जहा उक्कोसठितीए नवरं ठितीए तिठाणवडिए । जहण्णगुणकालयाणं भंते ! बेइंदियाणं पुच्छा , गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णगुणकालयाणं बेइंदियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए बेइंदिए जहण्णगुणकालगस्स बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठितीए तिठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं

॥ अ० ॥

मुत्कर्षस्थितिकोपि । नवरं द्वे ज्ञानेऽभ्यधिके । अजघन्यानुत्कर्षस्थितिको यथोत्कर्षस्थितिको नवरं स्थित्या त्रिस्थानपतितः । जघन्यगुणका लकानां द्वीन्द्रियाणां पृच्छा' गौतम ! अनंताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः' तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यगुणकालकानां द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्य वाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यगुणकालको द्वीन्द्रियो जघन्यगुणकालकस्य द्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो वगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैः तुल्योऽवशेषैः वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः द्वाभ्यां ज्ञानाभ्यां द्वाभ्यामज्ञानाभ्यामचक्षुर्द

॥ भाषा ॥

यें करी दोय अज्ञान अने अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित । एवं उक्कोसठितीएवि । एमज उत्कृष्ट स्थितिक पण जाणवो एतलो विशेष दोय ज्ञान अधिक । अजहण्णमणुक्कोसठितीए जहा उक्कोसठितीए । मध्यम स्थितिक जेम उत्कृष्ट स्थितिक एतलो विशेष स्थितियें करी त्रिस्थान पतित । जह ण्णगुणकालयाणंति । जघन्यगुण कालक बेइन्द्रो नो प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह कणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो—जघन्य गुण का लक बेइन्द्रो ने अनन्ता पर्याय कह्या । उ० हे गौतम जघन्य गुण कालक बेइन्द्रो जघन्यगुण कालक बे इन्द्रोने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अ वगाहनायें करी चतुःस्थान पतित । स्थितियें करी त्रिस्थान पतित । कालवर्ण पर्यायें करी तुल्य, अवशेष वर्ण गंध रस फरस पर्यायें करी बे ज्ञाने क

सठिईएवि नवरं दोनावा अब्भहिया इति ॥ एवमेवाजघन्योत्कृष्टस्थितिसूत्रमपि वक्तव्यं, नावत्सूत्राणि षाढसिद्धानि । एवं त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रि

तुल्ले अवसेसेहिं वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाण वडिए । एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं पंच वन्ना दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा नाणियव्वा । जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! बेइंदियाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ–? गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियनाणी बेइंदिए जहन्नाभिणिबोहियनाणी बेइंदियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले

शंनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणकालकोपि । अजघन्यानुत्कर्षगुणकालकोप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं पञ्च वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्च रसा अष्टौ स्पर्शा ज्ञातव्याः । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त ! द्वीन्द्रियाणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते–जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां द्वीन्द्रियाणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानी द्वीन्द्रियो जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिद्वीन्द्रियस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपति

रो बे अज्ञाने करी अने अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित । एवं उत्कृष्ट गुण कालक पण कहवो । अजघन्यअनुत्कृष्ट गुण कालक बेइन्द्रिय ने पण एमज कहवो एतलो विशेष स्वस्थान ने विषे षट्स्थान पतित । एम पांच वर्ण बे गंध पांच रस आठ फरस कहवा । जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं भंतेत्ति । जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी ने हे भगवन् बेइन्द्रिय ने केत्ला पर्याय कह्या गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणं अर्थे हे भगवन् इम कह्यो—जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी बेइन्द्री ने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी बेइंद्रिय जघन्य आभिनिबोधिकज्ञानी बेइन्द्रिय ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहना

ओगाहणठयाए चउठाणवडिए । ठिईए तिठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुयनाणपज्जवेहिं छठाणवडिए अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि । अजहन्नमणुक्कोसाभिनिबोहियनाणीवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छठाणवडिए एवं सुयनाणीवि । सुयअन्नाणीवि । मतिअन्नाणीअचक्खुदंसणीवि नवरं जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि जत्थ अन्नाणा तत्थ नाणा नत्थि । जत्थ दंसणं तत्थ नाणात्रि अन्नाणावि । एवंचेव तेइंदियाणवि । एवं



तः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवै स्तुल्यः श्रुतज्ञानपर्यवैः षट्स्थानपतितः । अचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एव मुत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञान्यपि । अजघन्यानुत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञान्यप्येवं चैव नवरं, स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं श्रुतज्ञान्यपि । श्रुताज्ञान्यपि । मत्यज्ञान्यपि । अचक्षुर्दर्शन्यपि । नवरं यत्र ज्ञानानि तत्राज्ञानि नसन्ति । यत्रा ज्ञानानि तत्र ज्ञानानि न सन्ति । यत्र दर्शनं तत्र ज्ञानान्यपि अज्ञानान्यपि । एवं चैव त्रीन्द्रियाण्यपि । चतुरिन्द्रियाण्यप्येव चैव नवरं चक्षु

यें करी चतुःस्थान पतित । स्थितियें करी त्रिस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी षट्स्थान पतित । आभिनिबोधिकज्ञान पर्यायें करी तुल्य, श्रुतज्ञान पर्यायें करी षट्स्थान पतित । अचक्षु दर्शन पर्यायें करी षट्स्थान पतित । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि । एम उत्कृष्ट आभिनि बोधिक ज्ञानी पणि जाणवो । अजहन्नमणुक्कोसाभिणिबोहियन्ति । अजघन्य अनुत्कर्ष एतले मध्यम आभिनिबोधिक ज्ञानी ने पणि एमज एतलो विशेष स्वस्थान ने विषे षट्स्थान पतित । एवं सुयनाणीवि सुअ अन्नाणीवि मति अन्नाणीविन्ति । एमज श्रुतज्ञानी ने तथा श्रुत अज्ञानी ने तथा मति अज्ञानी ने पण जाणवो । अचक्खुदंसणीति । अचक्षु दर्शनी पणि एमज एतलो विशेष जिहां ज्ञान हुवे तिहां अज्ञान न हुवे, जिहां अज्ञान हुवे तिहां ज्ञान न हुवे, जिहां दर्शन हुवे तिहां ज्ञान अने अज्ञान पण वेहुं हुवे । एवं चेव तेइंदियाणवि । तेरिन्द्री पणि एमज जाणवो । चउरिंदियावि एवं चेव

याऽपि वक्तव्या नवरं, चतुरिन्द्रियाणां चक्षुर्दर्शनमधिकमन्यथा चतुरिन्द्रियत्वाऽयोगादिति तेषां चक्षुर्दर्शनविषयमपि सूत्रं वक्तव्यं जघन्यावगाह
नतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे-ठिईएतिठाणवज्जिहइति ॥ इह तिर्यग्पञ्चेन्द्रियसङ्ख्येयवर्षायुष्क एव जघन्यावगाहनो भवति नो सङ्ख्येयवर्षायुष्कः किं कार



चउरिंदियाणवि एवचेव नवरं चक्खुदंसणं अब्भहियं । जहण्णोगाहणगाणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहण्णोगाहणगाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णोगाहणगस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठितीए तिट्ठाणवडिए । वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दंसणेहिं



दर्शनमभ्यधिकं । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामनन्ताः पर्यवा प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनकः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकोजघन्यावगाहनकस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैर्द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां ज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः । उत्कर्षावगाहनकोऽप्येव मेव



त्ति । चतुरिंद्रिय ने पण एमज एतलो विशेष चक्षुदर्शन अधिको कहवो । जहन्नोगाहणगाणं भंते पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया इति । जघन्यावगाहनक हे भगवन् पंचेंद्रिय तिर्यञ्च योनिक ने केवला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो—जघन्यावगाहनक पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक ने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम जघन्यावगाहनकपंचेन्द्रिय तिर्यञ्चयोनिक जघन्यावगाहनक पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी तुल्य । स्थितिये करी त्रिस्थान पतित । वर्ण गंध रस स्पर्श प

यामितिचेदुच्यते-असङ्ख्येयवर्षायुष्काहि महाशरीराः कङ्ककुक्षिपरिणामत्वात् पुष्टाहाराः प्रबलधातूपचया स्तत स्तेषां नूनान् शुक्रनिषेको भवति शुक्रनिषेकानुसारेण च तिर्यङ्मनुष्याणामुत्पत्तिसमये वगाहनेति न तेषां युगलिकानां जघन्यावगाहना लभ्यते किन्तु असङ्ख्येयवर्षायुषां असङ्ख्येयवर्षायुष च स्थित्या त्रिस्थानपतिता एतच्च भावितं प्राक् तत उक्तस्थित्या त्रिस्थानपतिता इति। दोहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं इति। जघन्यावगाहनोहि तिर्यक्पञ्चेन्द्रियासङ्ख्येयवर्षायुषोऽपर्याप्तो भवति सोपिचाल्पकायेषु मध्ये समुत्पद्यमानस्ततस्तस्यावधिविभङ्गज्ञानासम्भवात् द्वे ज्ञाने द्वे ऽज्ञाने उक्ते' यस्तु विभङ्गज्ञानसहितो नरकादुद्वृत्य असङ्ख्येयवर्षायुष्केषु तिर्यक्पञ्चेन्द्रियेषु मध्ये समुत्पद्यमानो वक्ष्यते स महाकायेषूत्पद्यमानो द्रष्टव्यो नाल्पकायेषु तथास्वाज्ञाव्या दन्यथाधिकृतसूत्रविरोधः, उत्कृष्टावगाहनतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे-तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं इति ॥ तिन्निन्नाणे तिन्नि रन्नाणे षट्स्थानपतिताः त्रीण्यज्ञानानि अथमितिचेदुच्यते-इह यस्य योजनसहस्रशरीरावगाहना स उत्कृष्टावगाहनः स च असङ्ख्येयवर्षायुष्क एव भवति पर्याप्तश्च तेन तस्य त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि च सम्भवन्ति, स्थित्यापिचासावुत्कृष्टावगाहनः त्रिस्थानपतितः असङ्ख्येयवर्षायुष्कत्वात्' जघन्यो



ठाणवडिए। उक्कोसोगाहणएवि एवंचेव नवरं तिहिं नाणेहिं तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए। जहा उक्कोसोगाहणए तहा अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि नवरं नगाहणठितीए चउठाणवडिए



नवरं त्रिज्ञाने त्रिज्ञिरज्ञाने त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितो यथोत्कर्षावगाहनकस्तथाऽजघन्यानुत्कर्षावगाहनकोपि नवरं अवगाहनार्थतया स्थित्या चतुःस्थानपतितः। जघन्यस्थितिकानां पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां भदन्त! कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः।



र्यंचे करी बे ज्ञाने करी बे अज्ञाने करी बे दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे। उक्कोसोगाहणएवि एवं चेवत्ति। उत्कृष्ट अवगाहना नो पर्याप्तेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक ने पणि एमज कहवो एतलो विशेष पण ज्ञान पण अज्ञान अने त्रण दर्शने करी षटस्थान पतित। जेम उत्कृष्ट अवगाहना नो पर्याप्तेन्द्रिय तेम अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना नो पर्याप्तेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक पणि जाणवो एतलो विशेष अवगाहनार्थतायें करी चतुःस्थान पतित हुवे। ठितीए छट्ठा

॥ टीका ॥

त्कृष्टावगाहसूत्रे-स्थित्या चतुःस्थानपतितो यतो जघन्योत्कृष्टावगाहनोऽसङ्ख्येयवर्षायुष्कोऽपि लभ्यते तद्योपपद्यते प्रागुक्तयुक्त्या चतुःस्थानपतितत्वं जघन्यस्थितिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे द्वे ऽज्ञाने एव वक्तव्ये नतु ज्ञाने यतोसौ जघन्यस्थितिको लब्ध्यपर्याप्तक एव भवति न तन्मध्ये सासादनस्य गृष्टेरुत्पाद इति' उत्कृष्टस्थितिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे ॥ दो नाणा दो अन्नाणा इति ॥ उत्कृष्टस्थितिकोहि तिर्यक्पञ्चेन्द्रियस्त्रिपल्योपमस्थितिको

॥ मूल ॥

ठितीए चउठाणवडिए । जहन्नठितीयाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहन्नठितीयाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नठितीए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहन्नठितीयस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए चउठाणवडिए । ठितीए तुल्ले । वन्नगंधरस पज्जवेहिं दोहिं अन्नाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छठाणवडिए । उक्कोसठितीएवि एवंचेव नवरं दोन्नाणा

॥ भ० ॥

अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यस्थितिकानां पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यस्थितिकः पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकोजघन्यस्थितिकस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या तुल्यो वर्णगन्धरसपर्यवै र्द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः । उत्कर्षस्थितिकोप्येवञ्चैव नवरं द्वे ज्ञाने द्वे अज्ञाने द्वे दर्शने ।

॥ भाषा ॥

वडिए । स्थितिवे करी चतुःस्थान पतित हुवे । जहन्नठितीयाणं भंते पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंति । जघन्य स्थितिक पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम ! जघन्यस्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच ने अनन्ता पर्याय कह्या तेह केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जे जघन्य स्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच ने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम जघन्य स्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जघन्यस्थितिक पंचेन्द्रिय तिर्यंच ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अने अवगाहनार्थे करी चतुःस्थान पतित हुवे । स्थिति करी तुल्य हुवे, वर्ण गन्ध रस सप्त पर्यायें करी बे ज्ञा

भवति' तस्य च द्वेऽज्ञाने तावन्नियमेन यदा पुनः षण्मासाविशेषायुर्वैमानिकेषु बद्धायुष्को भवति तदा तस्य द्वे ज्ञाने लभ्येते' अत उक्तं-द्वे ज्ञाने द्वेऽज्ञाने इति ॥ अजघन्योत्कृष्टस्थितिकतिर्यग्पञ्चेन्द्रियसूत्रे-ठिईए चउट्ठाणवडिए इति ॥ अजघन्योत्कृष्टस्थितिको हि तिर्यक्पञ्चेन्द्रियसङ्ख्येयवर्षायुष्कोपि लभ्यते, असङ्ख्यवर्षायुष्कोपि समयोनत्रिपल्योपमस्थितिकः ततश्चतुःस्थानपतितता जघन्यावधिनिबोधिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसूत्रे-ठिईए चउट्ठा



णा दो दंसणा । अजहन्नमणुक्कोसठितीएवि एवंचेव नवरं ठितीए चउट्ठाणवडिए । तिन्नि नाणा तिन्नि अन्नाणा तिन्नि दंसणा । जहन्नगुणकालगाणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा , गोयमा ! अणंता पज्जवा प० । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गो० ! जहन्नगुणकालगाणं पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अणंता पज्जवा प० ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहन्नगुणकालगस्स पंचिंदि



अजघन्यानुत्कर्षस्थितिकोप्येवं चैव नवरं स्थित्या चतुस्स्थानपतितः । त्रीणि ज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि त्रीणि दर्शनानि । जघन्यगुणकालकानां भदन्त ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यगुणकालकानां पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० ! जघन्यगुणकालकः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिको जघन्यगुणकालकस्य पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य



न बे अज्ञान करी ब दर्शन करी षट्स्थानपतित हुवे । उत्कृष्ट स्थितियें करी पण एमज एतलो विशेष ब ज्ञान बे अज्ञान बे दर्शन हुवे । अजहन्नमणुक्कोसठितीएवि एवंचेवत्ति । अजघन्य अनुत्कर्ष स्थितियें करी पण एमज एतलो विशेष स्थितियें करी चतुःस्थान पतित हुवे । त्रण ज्ञान त्रण अज्ञान त्रण दर्शन हुवे । जहन्नगुणकालयाणं भंते ! पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं पुच्छा , जघन्य गुण कालक नो हे भगवन् पचेंद्रिय तिर्यञ्च योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह कणें अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जे पचेंद्रिय तिर्यञ्च योनिक जघन्यगुण कालक न अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम जघन्यगुणकालक पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक जघन्यगुणकालक पचेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य

यतिरिक्कजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउट्ठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा । जहन्नाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियनाणीपंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहन्नाभिणिबोहियनाणिस्स पंचिं

॥ मूल ॥

द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणकालकोऽपि । अजघन्यानुत्कर्षगुणकालकोऽप्येवञ्चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं पञ्च वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्चरसा अष्टौ स्पर्शा ज्ञातव्याः । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त ! पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकानां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते—जघन्याभिनिबोधिकज्ञानि

॥ अ० ॥

अवगाहनाये करी चतुःस्थान पतित छे । स्थितिये करी चतुस्थान पतित छे । कालवर्णपर्याय करी तुल्य छे । अवशेष वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याये करी स्व स्थान स्व अज्ञान स्व दर्शने करी षट्स्थान पतित हवे । एवं उत्कोसगुणकालकविशि । एम उत्कृष्ट गुण कालक पंचेन्द्रिय तिर्यञ्च योनिक पण जाणवो । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवचवत्ति । अजघन्य अनुत्कृष्ट गुण कालक पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिक पण एमज एतलो विशेष स्वस्थाने षटस्थान पतित । एम पांच वर्ण बे गन्ध पांच रस आठ फरस जाणवा । जहन्याभिनिबोहियनाणीणं भंते पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणंति । जघन्य आभिनिबोधिक ने हे भगवन् पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक ने केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह कणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो

॥ भाषा ॥

दियतिरिक्कजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउ० वन्तगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुयनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि णवरं ठितीए तिट्ठाणवडिए । तिण्णि नाणा तिण्णि अण्णाणा तिण्णि दंसणा । सट्ठाणे तुल्ले सेसेसु छट्ठाणवडिए अजहन्नुक्कोसाभिणिबोहियनाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि नवरं ठितीए चउट्ठाणवडिए । एवं

पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिको जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य द्रव्यार्थतयातुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थितौ चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैस्तुल्यः । श्रुतज्ञानपर्यवैः षट्स्थानपतितः । चक्षुर्दर्शनपर्यवैः अचक्षुर्दर्शनपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञान्यपि नवरं स्थित्या त्रिस्थानपतितः । त्रीणिज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि त्रीणि दर्शनानि । स्वस्थाने तुल्यः शेषेषु षट्स्थानपतितः । अजघन्योत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञानी यथोत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञानी नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः । एवं श्रुतज्ञान्यपि । जघन्या

प्र० भ० हे गौतम जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक न द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी चतुस्थान पतित स्थितिये करी चतुस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस फरस पर्यायें करी षट्स्थान पतित । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यायें करी तुल्य श्रुतज्ञान पर्यायें करी षट्स्थान पतित । चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन पर्यायें करी षटस्थान पतित । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणी विषि । एम उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पण जाणवो एतलो विशेष स्थितिये करी त्रिस्थान पतित हुवे । त्रण ज्ञाने करी त्रण दर्शने करी स्वस्थाने तुल्य हुवे शेष स्थानके विषे षट्स्थान पतित हुवे । अजहन्नुक्कोसाभिणिबोहियनाणीति । अजघन्य अनुत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी जेम उ

॥ सूत्र ॥ ॥ अ० ॥ ॥ भाषा ॥

सुयनाणीवि । जहण्णोहिनाणीणं भंते ! पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा प० से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोहिनाणी पंचिंदियतिरिक्खजोणिए जहण्णोहिनाणिणस्स पंचिंदियतिरिक्खजोणियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए तिट्ठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं आभिणिबोहियनाणसुयनाणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । ओहिनाणपज्जवेहिं तुल्ले अण्णाणा नत्थि । चक्खुदंसणपज्जवेहिं अचक्खुदंसणपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोहि

---

वधिज्ञानिनां भदन्त ! पंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यावधिज्ञानिपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकोजघन्यावधिज्ञानिपंचेन्द्रियतिर्यग्योनिकस्य द्रव्यार्थतयातुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैराभिनिबोधिकश्रुतज्ञानपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । अवधिज्ञानपर्यवैस्तुल्यो ऽज्ञानानि न सन्ति । चक्षुर्दर्शनपर्यवैरचक्षुर्दर्शनपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षोभिनिबोधिकज्ञान्यपि । अजघन्यानुत्कर्षावधिज्ञान्यप्येवंचैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । यथाभिनिबोधिकज्ञानी तथा मत्यज्ञानी श्रुताज्ञानी च । यथावधिज्ञानी यथा विभङ्गज्ञानीच । चक्षुर्दर्शन्यच

---

क्षुष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी तेमज एतलो विशेष स्थितिथी चतुस्थान पतित । एम श्रुतज्ञानी पण जाणवो । जहण्णोहिनाणीणंति । जघन्य अवधिज्ञानी नो नो हे भगवन् पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह कणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो—जघन्य अवधिज्ञानी ने अनन्ता पर्याय हे गौतम जघन्य अवधिज्ञानी पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक जघन्य अवधिज्ञानी पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिक ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी चतुःस्थान पतित । स्थितिथे करी त्रिस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी आभिनिबोधिकज्ञान श्रुतज्ञान पर्यायें करी षट्स्थान पतित, अवधिज्ञान पर्यायें करी तुल्य, अज्ञान नथी । अचक्षुदर्शन चक्षुदर्शनें करी षट्स्थान पतित । एवं उक्कोसोहिनाणीवित्ति । ए

णावठिए इति ॥ असङ्खेयवर्षायुषोपि हि तिर्यक्पंचेन्द्रियस्य स्वभूमिकानुसारेण जघन्ये नाभिनिबोधिकश्रुतज्ञाने लभ्येते ततः संख्येयवर्षायुषोऽसंख्येयवर्षायुषश्च जघन्याभिनिबोधिकश्रुतज्ञानसम्भवाद्भवति स्थित्या चतुःस्थानपतितः । उत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानसूत्रे स्थित्या च त्रिस्थानपतितता वक्तव्या यत इह यस्योत्कृष्ट आभिनिबोधिकश्रुतज्ञाने स नियमात्संख्येयवर्षायुषश्च स्थित्या त्रिस्थानपतित एव यथोक्तं प्राक्-अवधिसूत्रे , विभङ्गसूत्रे पि स्थित्या त्रिस्थानपतितता किङ्कारणमितिचे दुच्यते-असंख्येयवर्षायुषोऽवधिविभङ्गासम्भवात् " आहच मूलटीकाकारः-जेहिविभंगंसु नियमा तिट्ठाणवडिए किंकारणं भन्नइ जेहिविभंगा असंखेज्जवासाउयस्स नत्थि यत्ति „ जघन्यावगाहनमनुष्यसूत्रे-ठिइएतिठाणवडिए इति ॥ तिर्यक्पञ्चेन्द्रियवन्मनुष्योपि जघन्यावगाहनो नियमात् संख्येयवर्षायुष्कः संख्येयवर्षायुष्कश्च स्थित्या त्रिस्थानपतित एवेति ॥ तिहिंनाणेहिंइति ॥ यदा यदा कश्चित्तीर्थकरोनुत्तरोपपातिकदेवो वा अप्रतिपतितेनावधिज्ञानेन जघन्यायामवगाहनायामुत्पद्यते तदा ऽवधिज्ञानमपि लभ्यते इति त्रिभिर्ज्ञानैरित्युक्तं ' विभङ्गज्ञानसहितस्तु नारकादुद्वृत्तोजघन्यायामवगाहनायां नोत्पद्यते तथास्वाभाव्यादतो विभङ्गज्ञानं न लभ्यते इति द्वाभ्यामज्ञा

॥ टीका

नाणीवि । अजहन्नुक्कोसोहिनाणीवि एवंचेव नवरं सठाणे छठाणवडिए । जहा आभिणिबोहियनाणी तहा मतिअन्नाणी सुयअन्नाणीय । जहा जेहिनाणी तहा विभंगनाणीय । चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणीय जहा आभिणिबोहियनाणी । जेहिदंसणी जहा जेहिनाणी । जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि जत्थ अन्ना

॥ मूल ॥

चक्षुर्दर्शनी च यथाभिनिबोधिकज्ञानी । अवधिदर्शनी यथावधिज्ञानी । यत्र ज्ञानानि तत्राज्ञानानि न सन्ति , यत्राज्ञानानि तत्र ज्ञानानि न सन्ति यत्र दर्शनं तत्र ज्ञानान्यप्यज्ञानान्यपि सन्तीति भावितव्यम् । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम !

॥ अ० ॥

नज उत्कृष्ट अवधिज्ञानी जाणवो । अजहन्नुक्कोसोहिनाणीवित्ति । अजघन्य अनुत्कृष्ट अवधिज्ञानी पण एमज एतलो विशेष स्वस्थान ने विषे षट्स्था न पतित हुवे । जेम आभिनिबोधिक ज्ञानी तेम मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी पण जाणवो । जम अवधिज्ञानी तेम विभगज्ञानी पण जाणवो । चक्षुदर्श

॥ भाषा ॥

णा तत्थ नाणा नत्थि । जत्थ दंसणा तत्थ नाणावि अन्नाणावि अत्थित्ति नाणियव्वं । जहन्नोगाहणगाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जहन्नोगाहणगाणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए मणुस्से जहन्नोगाहणगस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठितीए तिट्ठाणवडिए । वण्ण गंधरसफासपज्जवेहिं तिहिं नाणेहिं दोहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । उक्कोसोगाहणएवि

॥ मूल ॥

अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां मनुष्याणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्यावगाहनको मनुष्योजघन्यावगाहनकस्य मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैस्त्रिभिर्ज्ञानैर्द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । उत्कर्षावगाहनकोप्येवं चैव नवरं स्थित्या स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि हीनोऽसङ्ख्येयभागहीनोथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागाधिको द्वे ज्ञाने द्वेऽज्ञाने द्वे दर्शने । अजघन्योत्कर्षावगाहनकोप्येवं चैव

॥ अ० ॥

नो अचक्षुदर्शनी जेम आभिनिबोधिक ज्ञानी, अवधिदर्शनी जेम अवधिज्ञानी कह्यो तेम जाणवो । जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थित्ति । जिहां ज्ञान हुवे तिहां अज्ञान नहुवे, जिहां अज्ञान हुवे तिहा ज्ञान न हुवे । जिहां दर्शन हुवे तिहा ज्ञान पणि हुवे अज्ञान पणि हुवे । एम कहवो । जहन्नोगाहणगाणं भंते मणुस्साणंति । जघन्य अवगाहना ना मनुष्य ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो जघन्य अवगाहना ना मनुष्य ने अनन्ता पर्याय छ हे गौतम जघन्य अवगाहना नो मनुष्य जघन्य अवगाहना ना मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनाये करी तुल्य स्थितिये करी त्रिस्थान पतित । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्यायें करी त्रण ज्ञान बे अज्ञाने करी त्रण दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे । उक्कोसोगाहणएवि एवं चेवत्ति । उत्कृष्ट अवगाहना ना मनुष्य ने पणि इमज कहवो एतलो विशेष स्थितिये करी क

॥ भाषा ॥

नाभ्यामित्युक्तं, उत्कृष्टावगाहनमनुष्यसूत्रे-ठिइए सियहीणे सियतुल्ले सियअब्भहिए जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे जइ अब्भहिए असंखेज्जइभागअब्भहिए ॥ उत्कृष्टावगाहना हि मनुष्या स्त्रिगव्यूतोच्छ्राया स्त्रिगव्यूतानां स्थिति जघन्यतः पल्योपमासंख्येयभागहीनानि त्रीणि पल्योपमानि उत्कर्षतस्तान्येव परिपूर्णानि त्रीणि पल्योपमानि "उक्तञ्च जीवाभिगम-उत्तरकुरुदेवकुराए मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालं ठिइ पन्नत्ता, गोयमा ! जहन्नेणं तिन्नि पलिओवमाइं पलिओवमस्स असंखेज्जइभागहीणाइं उक्कोसेण तिन्नि पलिओवमाइंति„ पल्योपमासंख्येयभागश्च त्रयाणां पल्योपमानामसंख्येयतमोभाग इति पल्योपमासंख्येयभागहीनः पल्योपमत्रयस्थितिकः परिपूर्णपल्योपमत्रयस्थितिकापेक्षया ऽसंख्येयभागहीन इतरस्तु तदपेक्षयाऽसंख्येयभागाधिकः शेषा वृद्धिहानयो न गण्यन्ते ॥ दो नाणा दो अन्नाणा इति ॥ उत्कृष्टावगाहना हि असंख्येयवर्षायुषो ऽसंख्येयवर्षायुषां चाऽविशिष्टाऽसंख्येयभागाधिकस्तथास्वाभाव्या दतो द्वे एव ज्ञाने द्वेचाज्ञाने इति, तथा जघन्योत्कृष्टावगाहनः संख्येयवर्षायुष्कोपि भवत्यसंख्येयवर्षायुष्कोपि गव्यूतद्विगव्यूतोच्छ्रयस्ततोवगाहनयापि चतुःस्थानपतितत्वं स्थित्यापि तथाऽऽद्यैश्चतुर्भिर्मतिश्रुतावधिमनःपर्यवरूपैर्ज्ञानैः षट्स्थानपतिता स्तेषां चतु

---

एवंचेव नवरं ठितीए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीणे असंखेज्जइभागहीणे । अह अब्भहिए असंखेज्जइभागमब्भहिए । दो नाणा दो अन्नाणा दो दंसणा । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि एवंचेव नवरं ओगाहणठयाए चउठाणवडिए । ठितीए चउठाणवडिए । आइल्लेहिं चउहिं नाणेहिं छठाणवडि

---

नवरमवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । आदिमैश्चतुर्भिर्ज्ञानैः षट्स्थानपतितः । केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्यस्त्रिभिर्

---

दाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे । जे हीन हुवे असंख्यात भाग हीन हुवे, जे अधिक हुवे असंख्यात भाग अधिक हुवे बे ज्ञान बे अज्ञान बे दर्शन हुवे । अजहन्नुक्कोसोगाहण एवि एवं चेवत्ति । अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना ना मनुष्यने पणि एमज एतलो विशेष अवगाहनार्थताव करी चतुःस्थान पतित हुवे । स्थितिये करी चतुःस्थान पतित हुवे । आइल्लेहिंति । आदिम मति श्रुत अवधि अने मनपर्यव ज्ञान करी षटस्थान पतित

र्णानपि ज्ञानानां तत्तद्द्रव्यादिसापेक्षक्षयोपशमवैचित्र्यतातारतम्यभावात्केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्यता नि शेषस्वावरणक्षयतः प्रादुर्भूतस्य केवलज्ञानस्य भेदाभावात्' शेषं सुगमं ॥ जघन्यस्थितिकमनुष्यसूत्रे-दोहिं अन्नाणेहि इति ॥ द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां मत्यज्ञानश्रुताज्ञानरूपाभ्यां षट्स्थानपतितता वक्तव्या नतु ज्ञानाभ्यां कस्मादितिचेदुच्यते-जघन्यस्थितिका मनुष्याः सम्मूर्च्छिमाः सम्मूर्च्छिममनुष्याश्च नियमतो मिथ्यादृष्टयस्ततस्तेषामज्ञानेएव न

ए । केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले । तिहिं अण्णाणेहिं दंसणेहिं छठाणवडिए । केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले । जहण्णठितीयाणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता । से केणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णठितीए मणुस्से जहण्णठितीयस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउठाणवडिए । ठितीए तुल्ले । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं अण्णाणेहिं दोहिं दंसणेहिं छठाणवडिए । एवं उक्कोसठितीएवि नवरं दो नाणा दो अण्णाणा दो दंसणा । अजहण्ण

ज्ञानैर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्यः । जघन्यस्थितिकानां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यस्थितिकोमनुष्योजघन्यस्थितिकस्य मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुस्थानपतितः । स्थित्या तुल्योवर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैर्द्वाभ्यामज्ञानाभ्यां द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः ।

हुवे, केवल ज्ञान पर्यायें करी तुल्य हुवे चण ज्ञान अने चण दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे । केवल दर्शन पर्याय करी तुल्य हुवे । जघन्यस्थितिवाणं भंते मणुस्साणति । जघन्य स्थितिक मनुष्य ने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या, तेह केणे अर्थे हे भगवन् इम कहो जघन्य स्थितिक मनुष्य ने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य स्थितिक मनुष्य जघन्य स्थितिक मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थे करी चतुःस्थान पतित । स्थितिये करी तुल्य । वर्ण गन्ध रस स्पर्श पर्याये करी बे अज्ञाने करी बे दर्शने करी षट्स्थान पतित ।

॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥ ॥ अ० ॥ ॥ भाषा ॥

ज्ञाने, उत्कृष्टस्थितिमनुष्यसूत्रे-दो नाणा दो अन्नाणा इति॥ उत्कृष्टस्थितिकाहि मनुष्या क्षिपल्योपमायुषस्तेषा च तावद्ज्ञाने नियमेन यदा पुनः षण्मासावशेषायुषो वैमानिकेषु बद्धायुष स्तदा सम्यक्त्वलाभात् द्वे ज्ञाने लभ्यते अवधिविभङ्गाएवासंख्येयवर्षायुषां न स्त इति त्रीणि ज्ञानानि त्री ण्यज्ञानानीतिनोक्तं, अजघन्योत्कृष्टस्थितिकमनुष्यसूत्र मजघन्योत्कृष्टावगाहनमनुष्यसूत्रमिव भावनीयं। जघन्यावगाहनिबोधिकमनुष्यसूत्रे द्वेज्ञाने व

॥ टीका ॥

मणुक्कोसठितीएवि एवं चेव नवरं ठिईए चउठाणवडिए। ओगाहणट्ठयाए चउठाणवडिए। आभिणिबोहिय च उहिं नाणेहिं छठाणवडिए। केवलनाणपज्जवेहिं तुल्ले। तिहिं अन्नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छठाणवडिए केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले। जहन्नगुणकालयाणं भंते! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता? गोयमा! अणंता पज्जवा पन्नत्ता। से केणठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नगुणकालए मणूसे जहन्नगुणका

॥ सूत्र ॥

एवमुत्कर्षस्थितिकोपि नवरं द्वे ज्ञाने द्वेऽज्ञाने द्वे दर्शने। अजघन्यानुत्कर्षस्थितिकोप्येव मेव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः। अवगा हनार्थतया चतुःस्थानपतितः। आदिमेषुत्रिषुज्ञानेषु षट्स्थानपतितः। केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्यस्त्रिभिरज्ञानैस्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्यः। जघन्यगुणकालकानां भदन्त! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते-जघन्यगुणकालकमनुष्यस्यानन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः? गौतम! जघन्यगुणकालकोमनुष्यो जघन्यगुणकालकस्य

॥ अ० ॥

एवं उत्कोसठितीएवि एवति। इम उत्कृष्ट स्थिति ने विषे पण एमज एतलो विशेष बे ज्ञान बे अज्ञान अने बे दर्शन हुवे। अजहन्न मणुक्कोसठितीएवि एवं चेवत्ति। अजघन्य अनुत्कर्ष स्थितिने विषे पण एमज एतलो विशेष स्थिति करी चतुःस्थान पतित। अवगाहनार्थताये करी चतुःस्थान पतितहुवे। आभिणिबोहिंति। पहिला चार ज्ञाने करी षट्स्थान पतित हुवे। केवलज्ञान पर्यायें करी तुल्य हुवे। त्रण अज्ञान त्रण दर्शने करी षट्स्थान पतित हु वे। केवल दर्शन पर्यायें करी तुल्य हुवे। जहन्नगुणकालयाणंति। जघन्य गुण कालक ने हे भगवन् मनुष्य ने केतला पर्याय हुवे प्र० उत्तर हे गौतम

॥ भाषा ॥

लगस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । चउहिं णाणेहिं छट्ठाणवडिए । केवलणाणपज्जवेहिं तुल्ले तिहिं अण्णाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले । एवं उक्कोसगुणकालएवि । अजहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि एवं चेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं पंच वण्णा दो गंधा पंच रसा अट्ठ फासा णेयव्वा । जहण्णाभिणिबोहियणाणीणं भंते! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता



मनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्योऽवशेषैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । चतुर्भिर्ज्ञानैः षट्स्थानपतितः । केवलज्ञानपर्यवैस्तुल्य स्त्रिभिरज्ञानैः स्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । केवलदर्शनपर्यवैः स्तुल्य एवमुत्कर्षगुणकालकोऽपि । अजघन्यानुत्कर्षगुणकालकोऽप्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं पञ्च वर्णा द्वौ गन्धौ पञ्च रसा अष्टौस्पर्शा ज्ञातव्याः । जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिनां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्याभिनिबोधिकज्ञानिमनुष्योजघन्याभिनिबोधिकज्ञानिमनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशा



अनन्ता पर्याय हुवे । तेह केणे अर्थे हे भगवन् इम कहो तेहिज कहवो हे गौतम जघन्यगुण कालक मनुष्य जघन्यगुण कालक मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी तुल्य अवगाहनार्थताये करी चतुःस्थान पतित हुवे । कालवर्ण पर्यायें करी तुल्य अवशेष वर्ण गंध रस स्पर्श पर्यायें करी षट्स्थान पतित । चार ज्ञाने करी षट्स्थान पतित । केवल ज्ञान पर्याये करी तुल्य तीन अज्ञान तीन दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे । केवलदर्शन पर्यायें करी तुल्य हुवे । एवं उत्कृष्टगुणकालकपिण्डि । एम उत्कृष्टगुणकालक पण जाणवो । अजघन्य अनुत्कृष्टगुणकालक पण एमज एतलो विशेष स्वस्थाने षट स्थान पतित हुवे । एम पांच वर्ण बे गन्ध पांच रस आठ फरस कहवा । जहण्णाभिणिबोहियनाणीणं भंते ! मणुस्साणं ति । जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञा

क्तव्ये हे दर्शने किंकारणमितिचेद् उच्यते-जघन्याभिनिबोधिकोहि जीवो नियमादवधिमनःपर्यवज्ञानविकलः प्रबलज्ञानावरणकर्मोदयसद्भावादन्यथा जघन्याभिनिबोधिकज्ञानत्वायोगात्, ततः शेषज्ञानदर्शनाभ्यांसहभावादाभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैः स्तुल्यश्रुतज्ञानपर्यवैर्द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां च षट्स्थानपतितता उक्ता उत्कृष्टाभिनिबोधिकसूत्रे-ठिइए तिठाणवडिएइति॥ उत्कृष्टाभिनिबोधिकोहि नियमात्संख्येयवर्षायुरसंख्येयवर्षायुष स्तथा जघन्याभ्या



गोयमा ! असंखा पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नाभिणिबोहियनाणी मणुस्से जहन्नाभिणिबोहियनाणिस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठितीए चउट्ठाणवडिए । वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । सुयनाणपज्जवेहिं दोहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसाभिणिबोहियनाणीवि नवरं आभिणिबोहियनाणपज्जवेहिं तुल्ले । ठितीए तिठाणवडिए । तिहिं नाणेहिं तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । अ



र्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । आभिनिबोधिकज्ञानपर्यवैस्तुल्यः श्रुतज्ञानपर्यवैर्द्वाभ्यां दर्शनाभ्यां षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञान्यपि नवरं आभिनिबोधिकज्ञानपर्यायैः स्तुल्यः स्थित्या त्रिस्थानपतितः । स्त्रिभिर्ज्ञानैः स्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । अजघन्यानुत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञानी यथोत्कर्षाभिनिबोधिकज्ञानी

नो मनुष्यने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उ० हे गौतम ! अनन्ता पर्याय कह्या । तेह कोर्ये अर्थे हे भगवन् इम कहो प्र० उत्तर हे गौतम जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी मनुष्य जघन्य आभिनिबोधिक ज्ञानी मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य अवगाहनाये करी चतुःस्थान पतित हुवे । स्थितिये करी चतुःस्थान पतित हुवे । वर्ण गंध रस स्पर्श पर्यायें करी षट्स्थान पतित हुवे । आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यायें करी तुल्य हुवे । श्रुतज्ञान पर्यायें करी बे दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे । इम उत्कृष्ट आभिनिबोधिक ज्ञानी पण एतलो विशेष आभिनिबोधिक ज्ञान पर्यायें

त्, सर्वोत्कृष्टाभिनिबोधिकज्ञानसंभवात्, सङ्ख्येयवर्षायुषश्च प्रागुक्तयुक्तेः स्थित्या त्रिस्थानपतिता इति॥ जघन्यावधिसूत्रे उत्कृष्टावधिसूत्रे च अवगा

॥ टीका ॥

जहन्नमणुक्कोसाभिणिबोहियनाणी जहा उक्कोसाभिणिबोहियनाणी नवरं ठितीए चउठाणवडिए । सट्ठाणे वि चउठाणवडिए । एवं सुयनाणीवि । जहन्नोहिनाणीणं भंते ! मणूसाणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहन्नोहिनाणी मणूसे जहन्नोहिनाणिस्स मणूसस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तिठाणवडिए । ठितीए तिठाणवडिए । वण्णगंधरसफासपज्जवेहिं दोहिं नाणेहिं चउठाणवडिए । ओहिनाणपज्जवेहिं तुल्ले मणपज्जवनाण

॥ मूल ॥

नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः । स्वस्थानेऽपि षट्स्थानपतितः । एवं श्रुतज्ञान्यपि । जघन्यावधिज्ञानिनां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यावधिज्ञानी मनुष्यो जघन्यावधिज्ञानिनोमनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया त्रिस्थानपतितः । स्थित्या त्रिस्थानपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवाभ्यां ज्ञानाभ्यां षट्स्थानपतितः । अवधिज्ञानपर्यवैस्तुल्यो मनःपर्यवज्ञानपर्यवैः षट्स्थानपतितः । स्त्रिभिर्दर्शनैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षाभि

॥ अ० ॥

करी तुल्य । स्थितिये करी त्रिस्थान पतित हुवे । चक्षु ज्ञान चक्षु दर्शने करी षट्स्थान पतित हुवे । अजघन्यानुत्कर्षाभिनिबोधिक ज्ञानी जेम उत्कर्षाभिनिबोधिक ज्ञानी एतलो विशेष स्थितिये करी चतुस्थान पतित हुवे । सट्ठाणेवि छट्ठाणवडिए । स्वस्थान ने विषे पण षटस्थान पतित हुवे । एम श्रुतज्ञानी पण जाणवो । जहन्नोहिनाणीणं भंते ! मणूसाणं इति । जघन्य अवधिज्ञानी न हे भगवन् मनुष्य ने केतला पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह कणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो प्रश्न उत्तर हे गौतम ! जघन्यावधिज्ञानी मनुष्य जघन्यावधिज्ञानी मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य अवगाहनाये करी त्रिस्थान पतित हुवे । स्थितिये करी चतु स्थान पतित हुवे । वर्ण गंध रस स्पर्श पर्याय ओ बे ज्ञाने क

॥ भाषा ॥

इनया त्रिस्थानपतितो वक्तव्यः' यतः सर्वजघन्योऽपि मनोलब्धस्वरूपो मनुष्याणां पारभविको न भवति किंतु तद्भवभावी सोऽपि च पर्याप्तावस्थायां ऽपर्याप्तावस्थायां तद्योग्यविशुद्धभावात्' उत्कृष्टोऽप्यवधि र्भावतश्चारित्रिण स्ततो जघन्यावधिरुत्कृष्टावधिर्वाऽवगाहनया त्रिस्थानपतितः अजघन्यो

॥ टीका ॥

पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । तिहिं दंसणेहिं छट्ठाणवडिए । सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसोहिनाणीवि । अजहन्नमणुक्कोसोहिनाणीवि एवचेव नवरं नगाहणठयाए चउठाणवडिए । सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । जहा नेहिनाणी तहा मणपज्जवनाणीवि नाणियव्वो । नवरं नगाहणठयाए तिठाणवडिए जहा आभिणिबोहिय नाणीतहा सुयअन्नाणीय नाणियव्वो । जहा नेहिनाणी तहा विभंगनाणीवि नाणियव्वो । चक्खुदंसणी अचक्खुदंसणी य जहा आभिणिबोहियनाणी नेहिदंसणी जहा नेहिनाणी । जत्थ नाणा तत्थ अन्नाणा नत्थि,

॥ मूल ॥

निबोधिकज्ञान्यपि । अजघन्यानुत्कर्षावधिज्ञान्यप्येवमेव नवरं अवगाहनया चतुःस्थानपतितः । स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । यथाव धिज्ञानी तथा श्रुताज्ञान्यपि ज्ञातव्योनवरमवगाहनया त्रिस्थानपतितः । यथाऽऽभिनिबोधिकज्ञानी तथा श्रुताज्ञान्यपि ज्ञातव्यः । यथावधि ज्ञानी तथा विभङ्गज्ञान्यपि ज्ञातव्यः । चक्षुर्दर्शन्यचक्षुर्दर्शनीच यथाऽऽभिनिबोधिकज्ञानी । अवधिदर्शनी यथाऽवधिज्ञानी । यत्र ज्ञानानि तत्रा

॥ अ० ॥

रो षट्स्थान पतित हुवे । अवधिज्ञान पर्याये करी तुल्य मनपर्यवज्ञान पर्याये करी षटस्थान पतित हुवे । चक्षु दर्शने करी षटस्थान पतित हुवे । एवं उक्कोसोहिनाणी विषे । एम उत्कृष्ट अवधिज्ञानी पण जाणवो । अजघन्य अनुत्कृष्ट अवधिज्ञानी पण एमज एतलो विशेष अवगाहनाये चतुःस्थान पतित हुवे । स्वस्थाने षटस्थान पतित । जेम अवधिज्ञानी तेम मनपर्यवज्ञानी पण कहवो, एतलो विशेष अवगाहनाये त्रिस्थान पतित हुवे । जेम आभि निबोधिक ज्ञानी तेम श्रुत अज्ञानी पण कहवो । जेम अवधि ज्ञानी तेम विभंग ज्ञानी पण कहवो । चक्षु दर्शनी अने अचक्षुदर्शनी जेम आभिनिबो धिक ज्ञानी कह्यो । ओहि दंसणी जहाओहिनाणी । अवधि दर्शनी जेम अवधि ज्ञानी । जिहा ज्ञान हुवे । तिहां अज्ञान न हुवे जिहां अज्ञ न हुवे

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

त्कृष्टस्त्वऽवधिः पारभविकोपि सम्भवति ततोऽपर्याप्तावस्थायामऽपि तस्य सम्भवात्, अजघन्योत्कृष्टावधिरवगाहनया चतुःस्थानपतितः स्थित्या तु जघन्यावधिरुत्कृष्टावधिरजघन्योत्कृष्टावधिर्वा त्रिस्थानपतितः । असंख्येयवर्षायुषामवधेऽरसम्भवात्, संख्येयवर्षायुषां च त्रिस्थानपतितत्वात् जघन्यमनःपर्यवज्ञानी उत्कृष्टमनःपर्यवज्ञानी अजघन्योत्कृष्टमनःपर्यवज्ञानी स्थित्या त्रिस्थानपतितः चारित्रिणामेवमनःपर्यवज्ञानसद्भावात् चारित्रिणांचसंख्येयवर्षायुष्कत्वात् केवलज्ञानसूत्रेतु-नवगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिएइति ॥ केवलिसमुद्घातं प्रतीत्य तथाहि-केवलिसमुद्घातगतः केवली शेषकेवलिन्यो ऽसङ्ख्येयगुणाऽवगाहनस्तदपेक्षया शेषाः केवलिनो ऽसङ्ख्येयगुणहीनावगाहनाः स्वस्थानेतु शेषाः केवलिनस्त्रिस्थानपतिता इति स्थित्या

॥ मूल ॥

जत्थ अन्नाणा तत्थ नाणा नत्थि । जत्थ दंसणा तत्थ नाणावि अन्नाणावि । केवलनाणीणं भंते ! मणुस्साणं केवइया पज्जवा पन्नत्ता ? गोयमा ! अणंता पज्जवा पन्नत्ता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—केवलनाणीणं मणुस्साणं अणंता पज्जवा पन्नत्ता, गोयमा ! केवलनाणी मणुस्से केवलनाणिस्स मणुस्सस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । ठिईए तिट्ठाणवडिए । वन्नगंधरसफा

॥ भाषा ॥

ज्ञानानि न सन्ति' यत्राज्ञानानि तत्र ज्ञानानि न सन्ति । यत्र दर्शनानि तत्राज्ञानान्यप्यज्ञानान्यपि । केवलज्ञानिनां भदन्त ! मनुष्याणां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-केवलज्ञानिमनुष्याणामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! केवलज्ञानिमनुष्यो केवलज्ञानिमनुष्यस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योवगाहनार्थतया चतुस्थानपतितः । स्थित्या त्रिस्था

जिहां ज्ञान न हुवे । जिहां दर्शन हुवे तिहां ज्ञान अने अज्ञान पिण बेहू हुवे । केवल नाणीणं भंते ! मणुस्साणंति । केवलज्ञानी ने हे भगवन् मनुष्य ने केतला पर्याय कह्या प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो—केवलज्ञानी मनुष्य ने अनन्ता पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम केवल ज्ञानी मनुष्य केवल ज्ञानी मनुष्य ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पिण तुल्य अवगाहनाये करी चतुःस्थान पतित हुवे । स्थि

त्रिस्थानपतितत्वं सङ्ख्येयवर्षायुष्कत्वात्, व्यन्तरा यथा असुरकुमाराः ज्योतिष्का वैमानिका अपि तथैव नवरं ते स्वस्थाने स्थित्वा त्रिस्थानपतिता वक्तव्याः यतश्च प्रागेव भावितं उपसंहारमाह-सेत्तं जीवपज्जवा ॥ ते जीवपर्यायाः [ ग्रन्थाग्रं ५००० ] सम्प्रत्यजीवपर्यायान् पृच्छति-अजीवपज्जवाणंइत्यादि ॥ रूविअजीवपज्जवाय अरूविअजीवपज्जवाय इति ॥ रूपमिति उपलक्षणमेतत् वर्णगन्धरसस्पर्शाश्च विद्यते येषां ते रूपिणस्तेच ते जीवाश्च रूप्यजीवा स्तेषां पर्याया रूप्यजीवपर्याया इत्यर्थः, तद्विपरीता अरूप्यजीवपर्याया अमूर्त्यऽजीवपर्याया इति भावः ॥ धम्मत्थिकाए इत्यादि ॥ धर्मा

सपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । केवलनाणपज्जवेहिं केवलदंसणपज्जवेहिं तुल्ले । एवं केवलदंसणीवि मणुस्से भाणियव्वे । वाणमंतरा जहा असुरकुमारा एवं जोइसिया वेमाणिया नवरं सट्ठाणे ठिईए तिट्ठाणवडिए भाणियव्वे । सेत्तं जीवपज्जवा । अजीवपज्जवाणं भंते ! कइविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा प० , तं० रूविअजीवपज्जवाय अरूविअजीवपज्जवाय । अरूविअजीवपज्जवाणं भंते ! कतिविहा पन्नत्ता ? गोयमा ! दसविहा पन्नत्ता, तंजहा-धम्मत्थिकाए धम्मत्थिकायस्स देसे धम्मत्थिकायस्स पदेसा । अधम्मत्थि

नपतितः । वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । केवलज्ञानपर्यवैः केवलदर्शनपर्यवैस्तुल्यः । एवं केवलदर्शन्यपि मनुष्यो भणितव्यः । वानव्यन्तरा यथाऽसुरकुमाराः । एवं ज्योतिष्का वैमानिका नवरं स्वस्थाने स्थित्वा त्रिस्थानपतिता भणितव्याः ॥ समाप्ता जीवपर्यवाः ॥ अजीवपर्यवा भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! द्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-रूप्यजीवपर्यवाश्चारूप्यजीवपर्यवाश्च । अरूप्यजीवपर्यवा भदन्त ! कतिवि

तिये करी त्रिस्थान पतित हुवे । वर्ण गन्ध रस अने स्पर्श पर्यायें करी षट्स्थान पतित केवल दर्शन पर्यायें करी अने केवल ज्ञान पर्यायें करी तुल्य हुवे । एम केवलदर्शनी मनुष्य पण कहवो । वाणमन्तरत्ति । वानव्यन्तर जेम असुरकुमारने कह्यो । एम ज्योतिषी अने वैमानिक पण जाणवा एतलो विशेष स्वस्थाने स्थितिये करी त्रिस्थान पतित कहवो ॥ सेत्त जीवपज्जवा ॥ एतले जीव पर्याय कह्या । हिवे अजीव पर्याय कहे छे—अजीव पज्जवाणं भंतेत्ति । अजीव पर्या

॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥ ॥ अ० ॥ ॥ भाषा ॥

स्तिकाय इति परिपूर्णमत्रयवि द्रव्यं धर्मास्तिकायस्य देश स्तस्यै बार्द्धादिरूपो विभागः धर्मास्तिकायस्य प्रदेशा स्तस्यैव निर्विभागा भागा एवं

काए अधम्मत्थिकायस्स देसे अधम्मत्थिकायस्स पदेसा । आगासत्थिकाए आगासत्थिकायस्स देसे आगासत्थिकायस्स पदेसा अद्धासमए । रूविअजीवपज्जवाणं भंते ! कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! चउव्विहा प० , खंधा खंधदेसा खंधपदेसा परमाणुपोग्गला । तेणं तेत्ति ! किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गोयमा ! नोसंखिज्जा नोअसंखिज्जा अणंता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—नोसंखिज्जा नोअसंखिज्जा अणंता ? गोयमा ! अणंता परमाणुपोग्गला अणंता दुपएसिया खंधा जाव अनंता दसपदेसिया खंधा अणंता

धाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम । दशविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-धर्मास्तिकायोधर्मास्तिकायस्य देशोधर्मास्तिकायस्य प्रदेशा अधर्मास्तिकायोऽधर्मास्तिकायस्य देशोऽधर्मास्तिकायस्य प्रदेशा आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायस्य देश आकाशास्तिकायस्य प्रदेशा अद्धा समयः १० । रूप्यजीवपर्यवा भदन्त ! कतिविधाः प्रज्ञप्ताः ? गौ० ! चतुर्विधाः प्रज्ञप्ताः-स्कन्धाः स्कन्धदेशाः स्कन्धप्रदेशाः परमाणुपुद्गलाः । ते भदन्त ! किं सङ्ख्येया असङ्ख्येयाः अनन्ताः ? गौतम ! नोसंख्येया नोसंख्येया अनन्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-नोसंख्येया नोऽसंख्येया अनन्ताः ? गौतम ! अनन्ताः परमाणु

य हे भगवन् केतले भेदे कह्या प्रश्न उ० हे गौ० बे प्रकार ना कह्या ते कहे छे—रूपी अजीव पर्याय अने अरूपी अजीव पर्याय । अरूपी अजीव पर्याय हे भगवन् केतले भेदे कह्या प्रश्न उ० हे गौ० दश भेदे कह्यो ते कहे छे धर्मास्तिकाय धर्मास्तिकाय देश धर्मास्तिकाय प्रदेश, अधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायदेश अधर्मास्तिकायप्रदेश, आकाशास्तिकाय आकाशास्तिकायदेश आकाशास्तिकाय प्रदेश, अद्धा समय १० । रूवि अजीवपज्जवाणं भंते कतिविहा प० । रूपी अजीव पर्याय हे भगवन् केतले भेदे कह्यो प्रश्न उ० हे गौ० चार प्रकारे कह्यो ते कहे छे—स्कन्ध स्कन्धदेश स्कन्ध प्रदेश अने परमाणु पुद्गल । तेणं भंते किं संखेज्जत्ति । तेह हे भगवन् ए संख्याता असंख्याता अनन्ता प्रश्न उ० हे गौ० ! नही संख्याता नही असंख्याता अनन्ता छे । तेह केवे अर्थे

त्रिकमधर्मास्तिकाये आकाशास्तिकाये च भावनीयं, एतावता चान्योन्यानुगमात्मकावयवावयविस्वरूपं धर्मास्तिकायादिकं वस्त्विति प्रतिपादितं दशमोऽद्वा समयः' नन्वत्र पर्याया वक्तुमुपक्रान्ता स्तत्कथं द्रव्यमात्रोपन्यासः कृत, उच्यते-पर्यायपर्यायिणोः कथञ्चिद्भेदख्यापनार्थः एवमुत्तरोपि ग्रन्थः आह च मूलटीकाकारः अत्र सर्वत्र पर्यायपर्यायिणोः कथञ्चिद्भेदख्यापनार्थमित्थं सूत्रोपन्यास इति परमार्थतस्त्वेतद्दृष्टव्यं धर्मास्तिकायत्वं धर्मास्तिकायदेशत्वं धर्मास्तिकायप्रदेशत्वमित्यादि ॥ तेणं भंते! किं संखेज्जा इत्यादि ॥ स्कन्धादयः प्रत्येकं किं संख्येया असंख्येया अनन्ता ? भगवानाह-अनन्ता एतदेव भावयति-से केणट्ठेणं भंते! इत्यादि पाठसिद्धं । सम्प्रति दण्डकक्रमेण परमाणुपुद्गलादीनां पर्यायाश्चिन्तनीयादण्डकक्रमसूत्रं प्रथमतः सामान्येन परमाणवादयश्चिन्तनीया स्तदनन्तरं एव एकप्रदेशाद्यवगाढा स्तत एकसमयादिस्थितिकाः तदनन्तरमेकगुणकालकादयः ततो जघन्याद्यवगाहनाप्रकारेण तदनन्तरं जघन्यस्थित्यादिभेदेन ततो जघन्यगुणकालादिक्रमेण तदनन्तरं जघन्यप्रदेशादिना भेदेनेति उक्तञ्च-अणुभाईत्ति दियाणं खेत्तादिपएससंगयाणंच । जहन्नाबगाहणाईण चेवजहन्नादिदेसाणं ॥१॥ अस्या अक्षरगमनिका प्रथमतोऽणवादीनाश्चिन्ताकर्त्तव्या तदनन्तरं

॥ टीका ॥

संखिज्जपदेसिया खंधा अनंता असंखिज्जपदेसिया खंधा अणंता अणंतपदेसिया खंधा से तेणट्ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ—तेणं नो संखेज्जा नो असंखिज्जा अणंता । परमाणुपोग्गलाणं भंते! केवइया पज्जवा

॥ मूल ॥

पुद्गला अनन्ता द्विप्रदेशिकाः स्कन्धा यावदनन्ता दशप्रदेशिकाः स्कन्धा अनन्ताः संख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा अनन्ता असंख्येयप्रदेशिकाः स्कन्धा अनन्ता अनन्तप्रदेशिकाः स्कन्धास्तत्तेनार्थेन ? गौतम! एवमुच्यते-ते नो संख्येया नो असंख्येया अनन्ताः । परमाणुपुद्गलानां भदन्त ! कियन्तः

॥ अ० ॥

हे भ० इम कह्यो नहो संख्याता नहो असंख्याता अनन्ता के प्र० उ० हे गो० अनन्ता परमाणु पुद्गल अनन्त द्विप्रदेशिक स्कन्ध यावत् अनन्ता दशप्रदेशिक खंध अनन्ता संख्यातप्रदेशिक खंध अनन्ता असंख्यातप्रदेशिक खंध अनन्ता अनन्त प्रदेशिक खंध तेह तेणे अर्थे हे गो० इम कह्यो नहो संख्याता नहो असंख्याता अनन्ता के। परमाणु पुद्गलने हे भगवन् केतला पर्याय कह्या प्र० उ० हे गो० परमाणुपुद्गलने अनन्ता पर्याय कह्या। तेह केणे अर्थे हे भ० इम क

॥ भाषा ॥

क्षेत्रादिप्रदेशसङ्गतानां आत्रादिशब्दात्कालभावपरिग्रहः ततोऽयमर्थः प्रथमतः क्षेत्रप्रदेशै रेकादिभिः सङ्गतानाञ्चिन्ता कर्त्तव्या तदनन्तरं कालप्रदेशैरेकादिसमयैस्ततोभावप्रदेशैरेकगुणकालकादिभिरिति, तदनन्तरं जघन्यावगाहनादीनामिति अत्रापिशब्देन मध्यमोत्कृष्टावगाहना जघन्यमध्यमोत्कृष्टस्थिति जघन्यमध्यमोत्कृष्टगुणकालिकादिवर्णाः परिग्रहः ततो जघन्यादिप्रदेशानां जघन्यप्रदेशानां मध्यमप्रदेशानाम जघन्योत्कृष्टप्रदेशानामिति' अत्र प्रथमतः क्रमेण परमाण्वादीनां चिन्ता कुर्वन्नाह-परमाणुपोग्गलाणं भंते ! इत्यादि ॥ स्थित्या चतुःस्थानपतितत्वं। परिमाणोः समयादारभ्योत्कर्षतो ऽसङ्ख्येयकालमवस्थानभावात्' कालादिवर्णपर्याये षट्स्थानपतितत्वता एकस्यापि परमाणोः पर्यायानन्त्याविरोधात्, ननु परिमाणुरप्र

॥ टीका ॥

पएसट्ठा ? गोयमा ! परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पएसट्ठा । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पएसट्ठा ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले। ठिईए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए । जइ हीणे संखेज्जइभागही

॥ मूल ॥

पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! परमाणुपुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-परमाणुपुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! परमाणुपुद्गलः परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया तुल्यः । स्थित्या स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः । यदि हीनः संख्येयभागहीनोवाऽसंख्येयभागहीनोवा संख्येयगुणहीनोवा ऽसङ्ख्येयगुणहीनोवा । अथाभ्यधिकोऽसङ्ख्येयभागाधि

॥ अ० ॥

ह्यो—परमाणु पुद्गलने अनन्ता पर्याय कह्या प्रश्न ४० हे गौ० परमाणुपुद्गल परमाणुपुद्गलने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य अवगाहनाये करी तुल्य, स्थितिये करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे, जे हीन हुवे ते संख्यात भागे हीन हुवे अथवा असंख्यात भागे हीन हुवे अथवा संख्यात गुणहीन हुवे अथवा असंख्यातगुणहीन हुवे । अथ जे अधिक हुवे असंख्यात भागे अधिक हुवे अथवा संख्यात भागे अधिक हुवे अथवा संख्यात गुण अधिक हुवे अथवा असंख्यातगुण अधिक हुवे। कालवर्ण पर्यायेकरी कदाचित् हीन हुवे कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे। जे हीन हुवे अनन्त

॥ भाषा ॥

देशो गीयते ततः कथं पर्यायानन्त्याविरोधः पर्यायानन्त्ये नियमतः सप्रदेशत्वप्रशक्तेस्तदयुक्तं वस्तुतत्वापरिज्ञानात् । परमाणुर्हि अप्रदेशो गीयते



॥ मूल ॥

णेवा असंखेज्जभाग० संखेज्जगुणहीणे वा असंखेज्जगुणहीणे वा । अहव अब्भहिए असंखेज्जइभागमब्भहिए वा संखेज्जइभागमब्भहिए वा संखेज्जगुणमब्भहिए वा असंखिज्जगुणमब्भहिए वा । कालवन्नपज्जवेहिं सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए जइ हीणे अनंतभागहीणे वा असंखिज्जभागहीणे वा संखिज्जभागहीणे वा संखिज्जगुणहीणेवा असखेज्जगुणहीणे वा अणंतगुणहीणे वा । अहव अब्भहिए असंखेज्जइभागमब्भहिए वा संखेज्जइभागमब्भहिए वा संखिज्जगुणमब्भहिए वा असंखिज्जगुणमब्भहिए वा अणंतगुणमब्भहिए वा एवं अवसेसवन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । फासाणं सीयउसिणनिद्धलुक्खेहिं छट्ठाणवडिए से तेण



को वा सङ्ख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा ऽसंख्येयगुणाधिको वा । कालवर्णपर्यवैः स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्याद्भ्यधिकः, यदि हीनोऽनन्तभागहीनो वा ऽसंख्येयभागहीनो वा संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा ऽसंख्येयगुणहीनो वा ऽनन्तगुणहीनो वा । अथाभ्यधिकोऽसंख्येयभागाधिको वा संख्येयभागाधिको वा संख्येयगुणाधिको वा ऽसंख्येयगुणाधिको वा ऽनन्तगुणाधिको वा' एवमवशेषवर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः स्पर्शानां शीतोष्णस्निग्धरूक्षैः षट्स्थानपतितस्तत्तेनार्थेन ? गौतम ! एवमुच्यते-परमाणुपुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । द्वि



भाग हीन हुवे अथवा असंख्यात भागे हीन हुव अथवा संख्यात भाग हीन हुव अथवा असख्यात गुणे हीन हुव अथवा अनन्तगुण हीन हुव । जे अधिक हुवे असंख्यात भाग अधिक हुवे संख्यात भाग अधिक हुवे अथवा संख्यात गुण अधिक हुव अथवा असंख्यात गुण अधिक हुव अथवा अनन्तगुण अधिक हुवे । एव अवसेसवन्नगंधेत्ति । एम शेष वर्ण गन्धरस अने स्पर्श पर्यवे करी षट्स्थान पतित हुवे । फासाणंति । स्पर्शन मध्ये शीतोष्णस्निग्धरूक्ष पर्यवे षट्स्थानपतित तेह तणे अर्थे गौतम इम कह्यो परमाणु पुद्गलने अनन्ता पर्याय कह्या । दुपदेसियाए पुच्छा । द्विप्रदेशिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम अन

द्रव्यरूपतया सांशो न भवतीति नतु कालभावाभ्यामिति "अपएसोदव्वट्ठयाए इतिवचनात्" ततः कालभावाभ्यां सप्रदेशत्वेपि न कश्चिद्दोषः तथा प
रमाण्वादीनामसङ्खातप्रदेशस्कन्धपर्यन्तानां केषाञ्चिदनन्तप्रदेशकानामपि स्कन्धानां तथा एकप्रदेशावगाढानां यावत्सङ्खातप्रदेशावगाढानां क्षीणो

ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ—परमाणुपोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता। दुपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा पण्णत्ता, से केणठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा ! दुपदेसिये दुपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले, उग्गाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे पदेसहीणे। अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए। ठितीए चउट्ठाणवडिए। वन्नादीहिं उवरिल्लेहिं चउफासेहिय छट्ठाणवडिए। तियपएसिएवि नवरं उग्गाहणट्ठाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए। जइ हीणे पदेसहीणे वा दुप

प्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन प्रदत्त। एवमुच्यते ? गौतम ! द्विप्रदेशिको द्विप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः। यदि हीनः प्रदेशहीनः। अथाभ्यधिकः प्रदेशाधिकः। स्थित्या चतुःस्थानपतितः। वर्णादिभिरुपरिमैः शुतुःस्पर्शैः षट्स्थानपतितः। त्रिप्रदेशिको ऽप्येवं नवरमवगाहनया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः। यदि हीनः प्रदेशहीनो वा द्विप्रदेशहीनो वा। अथाभ्यधिको वा प्रदेशाधिको वा एवं यावद्दशप्रदेशिको नवरमवगाहनार्थतया प्रदेशपरि

न्ता पर्याय कह्या। तेह कणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो प्र० उत्तर हे गौतम बे प्रदेशी खध बे प्रदेशी खधने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी पण तुल्य अवगाहनाये करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे। जे हीन हुवे प्रदेशे करी हीन हुवे। जे अधिक हुवे तो प्रदेशे अधिक हुवे। स्थितिये करी चतुःस्थान पतित हुवे। वर्णादीहिं ति। वर्णादिके करी अने पहिला चार स्पर्शे करी षट्स्थान पतित हुवे। त्रण प्रदेशिक खध पण ए मज एतलो विशेष अवगाहनाये करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हुवे। जे हीन हुवे तो प्रदेश हीन हुवे अथवा द्विप्रदेश हीन

एसहीणे वा। अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए वा एवं जाव दसपदेसिए नवरं ओगाहणाए पदेसपरिवुड्ढी कायव्वा जाव दसपदेसिए नवरं पदेसहीणेत्ति। संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता पज्जवा पं०। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—गोयमा! संखिज्जपदेसिए संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सियमब्भहिए। जइ हीणे संखेज्जतभागहीणे वा संखेज्जगुणहीणे वा। अह मब्भहिए एवंचेव ओगाहणट्ठयाए वि दुट्ठाणवडिए, ठितीए चउट्ठाणवडिए, वन्नादिउवरिल्ले चउफासपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए। असंखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता पज्जवा पं०। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ—गोयमा!

वृद्धिः कर्त्तव्या यावद्दशप्रदेशिको नवरं प्रदेशहीन इति। संख्येयप्रदेशिकानां पृच्छा' गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते-? गौतम! संख्येयप्रदेशिकः संख्येयप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः, यदि हीनः संख्येयभागहीनो वा संख्येयगुणहीनो वा, अथाभ्यधिक एवं चैवावगाहनार्थतयापि द्विस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः। वर्णादिजघन्यपरिमैश्चतुर्भिः स्पर्शैश्च षट्स्थानपतितः। असंख्येयप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भदन्त! ए

हवे। जो अधिक हवे तो प्रदेश अधिक हुवे एम यावत् दश प्रदेशिक लगे कहवो एतलो विशेष अवगाहनाने विषे प्रदेश परिवृद्धी करवी यावत् दशप्रदेशिक लगे एतलो विशेष प्रदेशहीन कहवो। संखेज्ज पदेसियाणं पुच्छा। संख्यात प्रदेशिक नी प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या। तेह कणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो प्रश्न उत्तर हे गौतम संख्यात प्रदेशी संख्यातप्रदेशी ने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी कदाचित् हीन कदाचित् तुल्य कदाचित् अधिक हवे। जे हीन हवे संख्यात भाग हीन हवे अथवा संख्यात गुण हीन हवे। अधिक पणि एमज अवगाहनार्थे करी पणि द्विस्थान पतित हुवे। स्थितियें करी चतुःस्थान पतित हुवे। वर्णादिके करी पहिला चार स्पर्शे करी छस्थान पतित हुवे। असंखेज्जपदेसियाणति। असंख्यात

स्निग्धरूक्षरूपा चत्वारएव स्पर्शा इति तैरेव परमाणवादीनां षट्स्थानपतितता वक्तव्या न शेषैः द्विप्रदेशकस्कन्धसूत्रे-जुगाहणट्ठयाए सिय हीणे सिय तुल्ले सिय अब्भहिए इत्यादि ॥ यदा द्वावपि द्विप्रदेशकौ स्कन्धौ द्विप्रदेशावगाढावेकप्रदेशावगाढौ वा भवतस्तदा तुल्यावगाहनौ यदात्वेको द्विप्रदेशावगाढस्तदा एकप्रदेशावगाढो द्विप्रदेशावगाढापेक्षया प्रदेशहीनो द्विप्रदेशावगाढस्तु तदपेक्षया प्रदेशाभ्यधिकः शेषं प्राग्वत्, त्रिप्रदेश स्कन्धसूत्रे-जुगाहणट्ठयाए सिय हीणे इत्यादि ॥ यदा द्वावपि त्रिप्रदेशकौ स्कन्धौ त्रिप्रदेशावगाढौ द्विप्रदेशावगाढावेकप्रदेशावगाढौ वा तदा तुल्यौ यदात्वेकस्त्रिप्रदेशावगाढो वा द्विप्रदेशावगाढोवा ऽपरस्तु द्विप्रदेशावगाढ एकप्रदेशावगाढो वा तदा द्विप्रदेशावगाढैकप्रदेशावगाढौ यथाक्रमं त्रिप्रदेशावगाढद्विप्रदेशावगाढापेक्षया एकप्रदेशहीनौ त्रिप्रदेशावगाढद्विप्रदेशावगाढौ तु तदपेक्षया एकप्रदेशाभ्यधिकौ यदात्वेकस्त्रिप्रदेशावगा

॥ मूल ॥

असंखेज्जपदेसिए खंधे असंखेज्जपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । जुगा हणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । वन्नादिउवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाणवडिए । अणंतपदेसियाणं पुच्छा, गो यमा ! अणंता पज्जवा पं० । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा ! अणंतपदेसिए खंधे अणंतपदेसि

॥ अ० ॥

वमुच्यते ? गौतम ! असंख्येयप्रदेशिकः स्कन्धः असंख्येयप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया चतुःस्थानपतितः । अवगाहनतया चतुःस्थानपतितः । वर्णादिनिरुपरिमैश्चतुर्भिः स्पर्शैश्च षट्स्थानपतितः । अनन्तप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-? गौतम ! अनन्तप्रदेशिकः स्कन्धो ऽनन्तप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानप

॥ गाथा ॥

प्रदेशिक नो प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या, तेह केणें अर्थें हे भगवन् इम कह्यो प्रश्न उत्तर हे गौतम असंख्यात प्रदेशी खंध असंख्यात प्रदेशी खंधने द्रव्यार्थें करी तुल्य प्रदेशार्थें करी चतुःस्थान पतित । अवगाहनायें करी चतुस्थान पतित । वर्णादिके करी अने पहिला चार स्पर्श करी षट् स्थान पतित हुवे । अणंतपदेसियाणं ति । अनन्तप्रदेशीनो प्रश्न उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणे अर्थें हे भगवन् इम कह्यो प्रश्न उत्तर

॥ मूल ॥

यस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए अट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठितीए चउट्ठाणवडिए वन्नगंधरसफासपज्जवेहिं अट्ठाणवडिए । एगपदेसोगाढाणं पोग्गलाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा पं० । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—गोयमा ! एगपदेसोगाढे पोग्गले एगपदेसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए अट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठितीए चउट्ठाणवडिए वन्नादिउवरिल्लचउफासेहिय अट्ठाणवडिए एवं दुपएसोगाढेवि जाव दसपदेसोगाढे । संखेज्जपदेसोगाढाणं पुच्छा, गो

॥ अ० ॥

तितः । अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः, स्थित्या चतुःस्थानपतितः, वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एकप्रदेशावगाढानां पुद्गलानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! एकप्रदेशावगाढः पुद्गलः एकप्रदेशावगाढस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः । अवगाहनार्थतया तुल्यः, स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णादिभिरुपरिमैश्चतुःस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एवं द्विप्रदेशावगाढोपि यावद्दशप्रदेशावगाढः । संख्येयप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थे

॥ भाषा ॥

हे गौतम अनन्तप्रदेशी स्कन्ध अनन्तप्रदेशी स्कन्धने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी षट्स्थानपतित हुवे । अवगाहनायें करी चतुःस्थानपतित हुवे स्थितिये करी चतुःस्थानपतित हुवे । वर्णगंधरसस्पर्श वर्णादिकरी षट्स्थानपतित हुवे । एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं पुच्छा । एक प्रदेशावगाढपुद्गलनो प्र० उत्तर हे गौतम एकप्रदेशावगाढपुद्गलनां अनन्ता पर्याय कह्या तेह केणें अर्थे हे भगवन् इम कह्यो प्र० उत्तर हे गौतम एकप्रदेशावगाढ पुद्गले एकप्रदेशावगाढ पुद्गलने द्रव्यार्थेंकरी तुल्य प्रदेशार्थेंकरी षट्स्थानपतित हुवे । अवगाहनायें करी तुल्य हुवें स्थितीयेंकरी चतुःस्थानपतित हुवे वर्णादिकरी अने पछे आचारस्पर्शेंकरी षट्स्थानपतित हुवे । इम यावत् द्विप्रदेशावगाढलेइ दसप्रदेशावगाढलगे कहवो । संखेज्जपएसोगाढाणं पुच्छा । संख्यात प्रदेशावगाढनो प्रश्न कीधो उत्तर हे गौतम संख्यात प्रदेशावगाढना अनन्ता पर्याय कह्या तेह केणें अर्थे भगवन् इम कह्यो प्र० उत्तर हे गौतम संख्यातप्रदेशावगाढ

यमा ! अणंता पं० । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ गोयमा ! संखेज्जपदेसोगाढे पोग्गले संखिज्जपदेसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए । उगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए । ठिईए चउट्ठाणवडिए । वण्णादिउवरिल्लचउफासेहिय छट्ठाणवडिए । असंखेज्जपदेसोगाढाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता पज्जवा प० । सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ गोयमा ! असंखेज्जपदेसोगाढे पोग्गले असंखेज्जपदेसोगाढस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए उगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए चउट्ठा



न्नदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! संख्येयप्रदेशावगाढः पुद्गलः संख्येयप्रदेशावगाढपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः । अवगाहनार्थतया द्विस्थानपतितः, स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णादिभिरुपरिमैश्चतुःस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । असंख्येयप्रदेशावगाढानां पृच्छा' गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन न्नदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! असंख्येयप्रदेशावगाढः पुद्गलोऽसंख्येयप्रदेशावगाढस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः । अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः । स्थित्या चतुःस्थानपतितः । वर्णाद्यष्टस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एकसमयस्थितिकानां पृच्छा' गौतम ! अनन्ताः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन न्नदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! एकसमयस्थिति



पुद्गल संख्यातप्रदेशावगाढपुद्गलने द्रव्यार्थे करी तुल्य प्रदेशार्थे करी षट्स्थानपतित हुवे अवगाहनार्थेकरी दोय स्थानें पतित हुवे स्थितीयेंकरी चतुःस्थानपतित हुवे वर्णादिकें करी पहिला चार स्पर्शेंकरी षट्स्थान पतितहुवे । असंखेज्जपदेसोगाढाणं पुच्छा । असंख्यात प्रदेशावगाढनो प्र० उत्तर हे गौतम अनन्ता पर्याय कह्या । तेह केणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो प्र० उत्तर हे गौतम असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गल असंख्यात प्रदेशावगाढ पुद्गलने द्रव्यार्थेंकरी तुल्य प्रदेशार्थे करी षट्स्थान पतित हुवे । अवगाहनार्थेकरी चतुःस्थान पतित हुवे, स्थितियेंकरी चतुःस्थान पतित हुवे वर्णादिकेंकरी अनें आठ स्पर्शेंकरी षट्स्थान पतित हुवे । एकसमयठिइयाणंवि । एकसमयस्थितिक नो प्र० उत्तर हे गौतम अनन्त कह्या तेह केणे अर्थे हे गौतम इम कह्यो प्र०

ढो ऽपर एकप्रदेशावगाढस्त्रिप्रदेशावगाढापेक्षया द्विप्रदेशहीन स्त्रिप्रदेशावगाढे स्तु तदपेक्षया द्विप्रदेशाभ्यधिकः एवमेकैकप्रदेशपरिवृद्ध्या चतुःप्रदेशादिषु स्कन्धेष्ववगाहनामधिकृत्य हानिर्वृद्धि वा तावद्वक्तव्या याव द्दशप्रदेशकस्कन्ध स्तस्मिं श्च दशप्रदेशके स्कन्धे एवं वक्तव्य-जइ हीणे पएसही

॥ टीका ॥

णवट्ठिए, वसाइचउफासेहिं छट्ठाणवडिए। एगसमयठिईयाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणं ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! एगसमयठिईए पोग्गले एगसमयठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए, ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए, ठिईए तुल्ले, वसाइचउफासेहिं छट्ठाणवडिए। एवं जाव दससमयठिईए। संखेज्जसमयठिईयाणं एवंचेव नवरं ठिईए दुट्ठाणवडिए। असंखेज्जसमयठिईयाणं एवंचेव ठिईए चउट्ठाणवडिए। एगगुणकालगाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं भंते!

॥ मूल ॥

कः पुद्गल एकसमयस्थितिकस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः। अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः। स्थित्या तुल्यः। वर्णाद्यष्टस्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवं यावद्दशसमयस्थितिकः। संख्येयसमयस्थितिकाना मेवं चैव नवरं स्थित्या द्विस्थानपतितः। असंख्येयसमयस्थितिकानामप्येवं चैव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतिताः। एकगुणकालकानां पृच्छा' गौतम! अनन्ताः प्रज्ञप्ताः। अथ केनार्थेन भ

॥ अ० ॥

उत्तर हे गौतम एकसमयस्थितिक पुद्गल एकसमयस्थितिक पुद्गलने द्रव्यार्थेकरी तुल्य प्रदेशार्थेकरी षट्स्थान पतित, अवगाहनायेकरी चतुःस्थान पतित हुवे। स्थितियेंकरी तुल्य हुवे। वर्णादिकेकरी अने आठ फरसेंकरी छ स्थान पतित हुवे एम यावत् दश समय स्थितिक लगे कहवो। संख्यात समय स्थितिक पण एमज एतलो विशेष स्थितियेंकरी द्विस्थान पतित हुवे। असंखेज्जसमयठितियाणंति। असंख्यात समय स्थितिक पुद्गल पण एमज जाणवो स्थितियेंकरी चतुस्थान पतित हुवे। एगगुणकालगाणंति। एकगुणे कालकनो प्रश्न उत्तर हे गौतम एकगुणे काला पुद्गलने अनन्ता पर्याय कह्या। तेह कणे अर्थे हे भगवन् इम कह्यो प्रश्न उत्तर हे गौतम एकगुणे कालो पुद्गल एकगुणे काला पुद्गलने द्रव्यार्थे तुल्य प्रदेशार्थेकरी षट्स्थान पतित, अवगाह

॥ भाषा ॥

णे वा दुपएसहीणे वा जाव नवपएसहीणे वा । अह अब्भहिए पएसमब्भहिए वा दुपएस मब्भहिए वा जाव नवपएसमब्भहिए इति ॥ भावना पू

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

एवं बुच्चइ ? गोयमा ! एगगुणकालए पोग्गले एगगुणकालगस्स पुग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधरसपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । अट्ठहिं फासेहिं छट्ठाणवडिए । एवं जाव दसगुणकालए । संखेज्जगुणकालएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे दुट्ठाणवडिए । एवं असंखिज्जगुणकालएवि नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए एवं अणंतगुणकालएवि नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं जहा कालवण्णस्स वत्तव्वया भणिया, तहा से

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

दत्त । एवमुच्यते ? गौतम ! एकगुणकालकः पुद्गल एकगुणकालकस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैस्तुल्यो ऽवशेषैर्वर्णगन्धरसपर्यवैः षट्स्थानपतितः । अष्टभिःस्पर्शैः षट्स्थानपतितः एवं यावद्दशगुणकालकः । सङ्ख्येयगुणकालकोप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवमसंख्येयगुणकालकोपि नवरं स्वस्थाने चतुःस्थानपतितः । एवमनन्तगुणकालकोपि नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवं यथा कालवर्णस्य वक्तव्यता भणिता तथा शेषाणामपि वर्ण

नावेकरो चतुःस्थान पतित हुवे । स्थिति थी चतुःस्थान पतित हुवे । कालवर्ण पर्यायेकरी तुल्य हुवे, अवशेष वर्ण गंधरस पर्यायेकरी षट्स्थान पतित हुवे । आठ स्पर्शेकरी षट्स्थान पतित हुवे एम यावत् दश गुणे कालो हुवे तहां लगे कहवो । संखेज्जगुणकालएवित्ति । संख्यातगुणे कालो पुद्गल पण एमज एतलो विशेष स्वस्थानने विषे दो स्थाने पतित हुवे । एवं असंखेज्जगुणकालएवित्ति । एमज असंख्यातगुणे कालो पुद्गल पण जाणवो एतलो विशेष स्वस्थानने विषे चतुःस्थान पतित होय । एवं अणंतगुणकालएवित्ति । एमज अनन्तगुणे कालो पुद्गल कहवो एतलो विशेष स्वस्थाने षट्स्थान पतित हुवे एम जिम कालवर्णनो वक्तव्यता कही तेमज शेष वर्णगंधरस अने फरसनो वक्तव्यता कहवी यावत् अनन्तगुणे लूखलगे कहवो । जहन्नोगाहणगाओ

॥ टीका ॥

र्वोक्तानुसारेण स्वयं कर्त्तव्याः । असङ्खातप्रदेशस्कन्धसूत्रे-जहण्णोगाहणठ्याए दुट्ठाणवडिए इति ॥ असङ्खेयज्ञानेन असङ्खेयगुणेनवेति, असङ्खातप्रदेशस्कन्धे-जहण्णोगाहणठ्याए चउठाणवडिए इति ॥ असङ्खातज्ञानेन असङ्खातज्ञानेन असङ्खातगुणेनाऽसङ्खातगुणेनेति । अनन्तप्रदेशस्कन्धे प्यवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितता, अनंतप्रदेशावगाहनया ऽसम्भवतो ऽनंतज्ञानानंतगुणाभ्यां वृद्धिद्वाभ्यसम्भवात्, एगपएसोगाढाणं पोग्गलाणं भंते इत्यादि ॥ अत्र दव्वठ्याए तुल्ले पदेसठ्याए छठाणवडिए इति । इदमपि विवक्षितैकप्रदेशावगाढं परमाण्वादिकं द्रव्यमिद मप्यपरैकप्रदेशावगाढं द्विप्रदेशादिकं द्रव्यमिति । द्रव्यार्थतया तुल्यता प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितता अनंतप्रदेशस्कस्यापि स्कन्धस्यै कस्मिन्नाकाशप्रदेशेऽवगाहसम्भवात्, शेषं सुगमं । एवं स्थितिज्ञानाद्याश्रयाण्यपि सूत्राणि उपयुज्य भावनीयानि । जहन्नोगाहणाणं भंते दुपएसियाण मित्यादि ॥ अथवा द्विप्रदेशिकस्य स्कन्धस्या वगा

साणवि वण्णगंधरसफासाणं वत्तव्वया भाणियव्वा जाव अणंतगुणलुक्खे । जहण्णोगाहणगाणं भंते ! दुपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए दुपदेसिए खंधे जहन्नोगाहणगस्स दुपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउठाणवडिए कालवन्न

गन्धरसस्पर्शानां वक्तव्यता भणितव्या यावदनन्तगुणरूक्षः । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! द्विप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम ! अनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यावगाहनको द्विप्रदेशिको जघन्यावगाहनकस्य द्विप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैः षट्स्थानपतितः शेषवर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । शी

भते दुपदेसियाण पुच्छा गोयमा । जघन्य अवगाहनाना हे भगवन् द्विप्रदेशोनें केतला पर्याय हे गौतम । अणंता पन्नवा पं० सेकेणट्ठेणं भते । अनन्ता पर्याय तेमाटे इम कह्यो । पं० गोयमा जहन्नोगाहणएदुपदेसिए खंधे । हे गौतम जघन्य अवगाहनानो बेप्रदेशीखंध । जहन्नोगाहणस्स दुपदेसियस्सखंधस्स । जघन्य अवगाहनाना द्विप्रदेशीखंधनें । दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले । द्रव्यार्थे सरीषा प्रदेशार्थे सरीषा । ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईएचउठाणवडिए

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

हना एकप्रदेशात्मिका उत्कृष्टा द्विप्रदेशात्मिका अत्र अपांतरालं नास्तीति मध्यमा न लभ्यते तत उक्तं-अजहन्नुक्कोसोगाहणत्ति नत्थि इति ॥ त्रिप्र
देशकस्य जघन्यावगाहना एकप्रदेशरूपा मध्यमा द्विप्रदेशरूपा' उत्कृष्टा त्रिप्रदेशरूपा' चतुःप्रदेशस्य जघन्या एकप्रदेशरूपा उत्कृष्टा चतुःप्रदे

पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए सेसवन्नगंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए सीतउसिणणिद्धलुक्खफासेहिं छट्ठाणव
डिए सेतेणट्ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहन्नोगाहणगाणं दुपदेसियाणं पोग्गलाणं अणंता पज्जवा प०,
उक्कोसोगाहणएवि एवंचेव अजहन्नमणुक्कोसोगाहणा नत्थि । जहन्नोगाहणगाणं भंते ! तिपदेसियाणं पुच्छा,
? गोयमा ! अणंता, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहा दुपदेसिए जहन्नोगाहणए उक्को

तोष्णस्निग्धरूक्षस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतित स्तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-जघन्यावगाहनकानां द्विप्रदेशिकानां पुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः प्र
ज्ञप्ताः । उत्कर्षावगाहनकोप्येव चैव अजघन्यानुत्कर्षावगाहनको नास्ति । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! त्रिप्रदेशकानां पृच्छा, गौतम ! अन
न्ताः प्रज्ञप्ताः' अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! यथा द्विप्रदेशिको जघन्यावगाहनको उत्कर्षावगाहनको प्येवंचैव, एव मजघन्यानु

अवगाहनार्थे सरीषा स्थितिकरो चतुःस्थानपतित । कालवर्णपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । कालवर्णे पर्याय छस्थानपतित हुवे । सेसाय वर्णगन्धरसफासप
ज्जवेहिंय छट्ठाणवडिए । थाकता वर्णगधरस स्पर्शने पर्याय ए छस्थानपतित हुवे । सीओसिणणिद्धलुक्खफासपज्जवेहि छट्ठाणवडिए । शीत उष्ण स्निग्ध लूक्ष
स्पर्शने पर्याय ए छस्थानपतित हुवे । सेतेणट्ठेणं गोयमा दुपदेसियाणं खंधाणं । तेमाटे इम हे गौतम द्विप्रदेशीखंधने । अणतापज्जवा उक्कोसोगाहणा
एवि एवंचेव । अनता पर्याय कह्या उत्कृष्ट अवगाहनाना पिण इमहीज । अजहण्णमणुक्कोसोगाहणानत्थि । अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहनाके नही प्रदे
शमाटे । जहण्णोगाहणाए भंते तिपदेसियाण पुच्छा गो० । जघन्य अवगाहनाना त्रिप्रदेशीने केतला पर्याय हे गौतम । अणंता प० सेकेणट्ठेणं भंते एवं
गोयमा । अनंता पर्याय कह्या तेहमाटे भगवन् इम कह्यो जे अनता हे गौतम । जहादुपदेसिए जहन्नोगाहणाए भणिओ तहाभा० । जिम द्वीयप्रदे

शात्मिका मध्यमा द्विविधा द्विविध्यप्रदेशात्मिका त्रिप्रदेशात्मिका च एवं च सति मध्यमावगाहन श्चतुःप्रदेशको मध्यमावगाहनचतुःप्रदेशका पेत्त



सोगाहणएवि एवंचेव, एवं अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि। जहण्णोगाहणगाणं भंते ! चउपदेसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नोगाहणए दुपदेसिए तहा उक्कोसोगाहणए चउप्पएसिएवि एवं अजहण्णमणुक्कोसोगाहणएवि चउप्पदेसिए णवरं उग्गाहणठ्याए सियहीणे सियतुल्ले सियमब्भहिए जइहीणे पदेसहीणे अह अब्भहिए पदेसअब्भहिए एवं जाव दसपदेसिए णेयव्वं। नवरं अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पदेसपरिवुड्ढीकाय



त्कर्षावगाहनकोपि। जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! चतुःप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! यथा जघन्यावगाहनको द्विप्रदेशिको तथा उत्कर्षावगाह नक श्चतुःप्रदेशिकोपि। एवमजघन्यानुत्कर्षावगाहनकोपि चतुःप्रदेशिको नवरं अवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदिहीनः प्रदेशहीनः, अथाभ्यधिकः प्रदेशाभ्यधिकः' एवं यावद्दशप्रदेशिके ज्ञातव्यं-नवरमजघन्यानुत्कर्षावगाहनके प्रदेशपरिवृद्धिः कर्तव्या यावत् दशप्र



शनें जघन्य अवगाहन कह्यो उत्कृष्ट अवगाहना कहो तिम। उक्कोसोगाहणाएवितंचेव एवं अजहन्नमणुक्कोसोगाहणाएवि। तिम सर्वकहिवो इम अज घन्य अनुत्कृष्टनें पिण इमहीजांणिवो। जहण्णोगाहणाणं भंते चउपएसियाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य अवगाहनाना ४ प्रदेशीखंधने केतला पर्याव हे गौतम। जहण्णोगाहणए दुपएसिए जहा जहण्णोगाहणए चउप्पदेसिएवि। जघन्य अवगाहनानाप्रदेशी तिम जघन्य अवगाहनाना चतुःप्रदेशीजाणिवा एवं जहा उक्कोसोगाहणएदुपदेसिए तहा उक्कोसोगाहणए चउपदेसिएवि। इम जिम उत्कृष्ट अवगाहनाना दुप्रदेशी तिम उत्कृष्ट अवगाहनाना चउ प्रदेशी पिण कहिवा। एवं अजहण्णमणुक्कोसोगाहणाएवि चउपदेसिए णवरं। इम अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहनाना चतुःप्रदेशीने ए विशेष। उगाहण ठ्याए सियहीणे। अवगाहनायें केइ हीन। सिय तुल्ले सियमब्भहिए जइहीणे पएसहीणे। अह अब्भहिए पएसमब्भहिए एवं जाव दसपएसिएणाणत्तं ण वरं। अथअधिकोहुवे तो पिण प्रदेशें अधिक इमजां लगे दशप्रदेशतांई जांणिवो ए विशेष। अजहण्णमणुक्कोसोगाहणए पएसपरिवुड्ढीकायव्वा। जाव

या यदि हीन स्तर्हि प्रदेशतो हीनो भवति । अथा ऽधिक स्ततः प्रदेशतो ऽधिकः एवं पञ्चप्रदेशादिषु स्कन्धेषु मध्यमावगाहना मधिकृत्य प्रदेशपरिवृद्ध्या वृद्धि र्हानिश्च तावद्वक्तव्या याव दृशप्रदेशके स्कन्धे सप्तप्रदेशपरिवृद्धिः सा चैवं वक्तव्या । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए दसपएसिए अजहन्नमणुक्कोसोगाहणस्स दसपएसियस्स खंधस्स उगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले सिय अब्भहिए जइ हीणे पएसहीणे दुपएसहीणे जावसत्तपएसहीणे । अह अब्भहिए पएसअब्भहिए दुपएसअब्भहिए जाव सत्तपएसअब्भहिए इति ॥ शेषं सूत्रं स्वय मुपपरिभावनीयं सुगमत्वात्, नवर मनन्तप्रदे



ह्या जाव दसपदेसियस्स सत्तपएसा परिवुड्ढिज्जंति । जहण्णोगाहणगाणं भंते ! संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ? गोयमा ! जहण्णोगाहणए संखेज्जपएसिए जहण्णोगाहणगस्स संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए उगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए वन्नादिचउफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसोगाहणएवि । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि एवं



देशिकस्य सप्तप्रदेशाःपरिवर्द्धन्ते । जघन्यावगाहनकानां भदन्त ! संख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ता स्तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यावगाहनकः संख्यातप्रदेशिको जघन्यावगाहनस्य संख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया द्विस्थानपतितः अवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णादिचतुःस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः, एवमुत्कर्षावगाहनकोपि । अजघन्यानुत्कर्षावगाहनको



दसपएसियस्सत्ति सत्तपएसापरिवुड्ढीज्जति । जांलगै दयप्रदेशातप्रदेशवृद्धिथायै इम प्रदेशदय सातप्रदेशविस्तारवा । जहन्नोगाहणाणं भंते संखिज्जपएसियाणं पुच्छा गोयमा । जघन्य अवगाहनाना संख्यातप्रदेशोनें केतला पर्याय गौतम । अणंता प० सकेणट्ठेण भंते प० । अनन्ता पर्याय तेमाटै इम कह्यो । जहन्नोगाहणए संखिज्जपएसिए । जघन्य अवगाहनायें संख्यातप्रदेशानें । जहण्णोगाहणस्ससंखिज्जपएसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले । जघन्य अवगाहनायें संख्यातप्रदेशोनें द्रव्यार्थे सरीषा । पएसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए । प्रदेशार्थे सरीषा द्विस्थानपतित हुवै । उगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईएचउट्ठाणवडिए । अवगाहना

॥ मूल ॥

चेव नवरं सट्ठाणे दुट्ठाणवडिए। जहन्नोगाहणगाणं भंते! असंखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ? गोयमा! जहन्नोगाहणए असंखेज्जपदेसिए खंधे जहन्नोगाहणगस्स असंखेज्जपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णादिउवरिल्लेफासेहिं छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसोगाहणएवि, अजहन्नमणुक्कोसोगाहणएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए। जहन्नोगाहणगाणं भंते! अणंतपदेसियाणं पुच्छा? गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं भंते? गोयमा! जहन्नोगाहणए अणंतपदेसिए खंधे जहन्नोगाहणस्स अणंतपदेसियस्स

॥ अ० ॥

एवं चैव नवरं स्वस्थाने द्विस्थानपतितः। जघन्यावगाहनकानां भदन्त! असंख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः, तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यावगाहनको ऽसंख्यातप्रदेशिकः स्कन्धो जघन्यावगाहनकस्यासङ्ख्यातप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया चतुःस्थानपतितः। अवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णादिप्रथमस्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षावगाहनकोपि। अजघन्यानुत्कर्षावगाहनको एवं चैव नवरं स्वस्थाने चतुःस्थानपतितः। जघन्यावगाहनकानां भदन्त! अनन्तप्रदेशिकानां पृच्छा,

॥ भाषा ॥

थें सरीषा स्थितिकरो चतुःस्थानपतित हुवै। वर्णादिचउफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। वर्णादि ४ स्पर्शने पर्याय छस्थानपतित हुवै। एव उक्कोसोगाहणएवि। इम उत्कृष्ट अवगाहना पिण। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणाएवि एवंचेव णवरं सट्ठाणेदुट्ठाणवडिए। अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना पिण इमहीजए विशेष स्वस्थानें द्विस्थानपतित हुवै। जहन्नोगाहणाणं भंते असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य अवगाहनावें असंख्यातप्रदेशीने केतला प्र० हे गौतम। अणंता प० सेकेणट्ठेणं भंते प्र० गोयमा। अनन्ता पर्याय तेमाटै इम कह्या हे गौतम। जहन्नोगाहणए असंखिज्जपएसिए। जघन्य अवगाहनावें असंख्यातप्रदेशीने। जहन्नोगाहणयस्स असंखिज्जपएसियस्स खंधस्स। जघन्य अवगाहनावें असंख्यातप्रदेशी खंधने। दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए चउट्ठा

॥ टीका ॥

शकोत्कृष्टावगाहनाचिन्तायां ठिइएवि तुल्ले इति ॥ उत्कृष्टावगाहनः किलानन्तप्रदेशकः स्कन्धः स उच्यते यः समस्तलोकव्यापी स चा चित्तमहा स्कन्धः केवलिसमुद्घातकर्मस्कन्धो वा तयो श्चो ऽन्यो रपि दंडकपाटमंथान्तरपूरणकलक्षण श्चतुः समयप्रमाणते ति तुल्यकालता' शेष सूत्र माप दपरिसमाप्तेः प्रागुक्तभावनानुसारेण स्वय मुपयुज्य परिभावनीय नवरं जघन्यप्रदेशकाः स्कन्धा द्विप्रदेशका उत्कृष्टप्रदेशाः सर्वोत्कृष्टानन्तप्रदेशाः,

॥ मूल ॥

खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए वन्नादिचउफासेहि छट्ठाणवडिए। उक्कोसोगाहणएवि एवंचेव नवरं ठिईएवि तुल्ले। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगाणं भंते! अणंतपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं? अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए अणंतपदेसिए खंधे अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगस्स अणंतपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहण

॥ अ० ॥

गौतम! अनन्ताः। अथकेनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यावगाहनकानन्तप्रदेशिकस्कन्धो जघन्यावगाहनकस्यानन्तप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः अवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णादिचतुर्भिः स्पर्शैः षट्स्थानपतितः। उत्कर्षावगाहनको प्येवं चैव नवरं स्थित्या तुल्यः। अजघन्यानुत्कर्षावगाहनकानां भदन्त! अनन्तप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः पर्यवाः। अथ केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? अजघन्यानुत्कर्षावगाहनकानन्तप्रदेशिकस्कन्धो अजघन्यानुत्कर्षावगाहनकस्या नन्तप्रदेशि

॥ भाषा ॥

णवडिए। द्रव्यार्थे सरीषा प्रदेशार्थे चतुःस्थानपतित हुवे। अवगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थे सरीषा स्थितिकरी चतुस्थानपतित हुवे। वर्णादिउवरिल्लफासेहियछट्ठाणवडिए। वर्णादिउपरिले स्पर्शने पर्यवे छस्थानपतितहुवे। एव उक्कोसोगाहणाएवि। इम उत्कृष्ट अवगाहना पिण अजहन्नमणुक्कोसोगाहणाएवि एवंचेव नवरं। अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना पिण इमहीज ए विशेष। सट्ठाणेचउट्ठाणवडिए। स्वस्थाने चतुःस्थाने पतित हुवे। अजहन्नोगाहणगाणं भंते अणंतपएसियाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य अवगाहनार्थे अनन्तप्रदेशीने केतला पर्याय कह्या हे गौतम। अणता प०

ठयाए चउठाणवडिए ठिईए चउठाणवडिए वन्नादिअट्ठफासेहिं छठाणवडिए । जहन्नठिईयाणं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहन्नठिईए परमाणुपोग्गले जहन्नठिईयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए तुल्ले उग्गाहणठयाए तुल्ले ठिईए तुल्ले वन्नाइ दुफासेहिय छठाणवडिए एवं उक्कोसठिईएवि । अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव नवरं ठिईए चउठाण वडिए जहन्नठिईयाणं दुपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहन्नठिईए दुप

कस्य । स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितः अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णाद्यष्टस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । जघन्यस्थितिकानां भदन्त ! परमाणुपुद्गलानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यस्थितिकपरमाणुपुद्गलो जघन्यस्थितिकस्य परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या तुल्यः वर्णादिद्विविधस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षस्थितिकोपि, अजघन्यानुत्कर्षस्थितिकोप्येवं चैव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः । ज

सेकेणट्ठेणं भंते पं० गोयमा । अनन्तप्रदेश तेमाटे इम कह्यो हे गौतम । जहन्नोगाहणए अणंतपएसिएखंधे । जघन्य अवगाहनावें अनन्तप्रदेशीस्कंध । जहन्नोगाहणयस्स अणंतपएसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए । जघन्य अवगाहनाये अनन्तप्रदेशीखंधने द्रव्यार्थेसरीषा । तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए । प्रदेशार्थे छस्थानपतित हुवे । उग्गाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईएचउट्ठाणवडिए । अवगाहनावें सरीषा स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवे । वन्नादिचउफासेहिं छट्ठाणवडिए । वर्णादि ४ स्पर्शेकरी छस्थानपतित हुवे । उक्कोसोगाहणएवि एवंचेव नवरं ठिईए तुल्ले । उत्कृष्टी अवगाहनावें विषे इम हीनाए विशेष स्थितिसरीषा । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणयाणं भंते अणंतपएसियाणं पुच्छा गोयमा । अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहना अनन्तप्रदेशीनें केतला पर्याय हेगो० अणंतापज्जवा भंते सेकेणट्ठेणं पं० गोयमा । अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए अणंतपएसिएखंधे । अजघन्य अनुत्कृष्टी अवगाहना अनन्तप्रदेशीखन्धने । अजह-

॥ सूत्र ॥

॥ अ० ॥

॥ गाथा ॥

देसिए जहन्नठिईयस्स दुपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले उग्गाहणट्ठयाए सियहीणे

जघन्यस्थितिकानां द्विप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम! जघन्यस्थितिकद्विप्रदेशिको जघन्यस्थितिकस्य द्विप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदि हीनः प्रदे

न्नमणुक्कोसोगाहणयस्स अणंतपएसियस्स खंधस्स । अजघन्न अनुत्कृष्टो अवगाहनाना अनन्तप्रदेशोस्कंधने । दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए । द्रव्यार्थेसरीषाछे प्रदेशार्थेछस्थानपतित हुवे । उगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतित हुवे । बसादिअट्ठफासेहि छट्ठाणवडिए । वर्णादि ८ अर्थे छस्थानपतित हुवे । जहन्नठिईयाणं भंते परमाणुपुग्गलाणं पुच्छा गोयमा । जघन्य स्थितिना परमाणुपुद्गलने केतला पर्याय हे गौतम । अणंते पज्जवा सेकेणट्ठणं भते पं० गोयमा । अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम । जहन्नठिईएपरमाणुपुग्गल । जघन्य स्थितिनापरमाणुपुद्गल । जहन्नठिईयस्स परमाणुपुग्गलस्स । जघन्य स्थितिनापरमाणु पुद्गलने । दव्वट्ठयाए तुल्ल पएसट्ठयाए तुल्ल । द्रव्यार्थेसरीषा प्रदेशार्थेसरीषा । उगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए तुल्ले । अवगाहनार्थेसरीषा स्थितिकरी सरीषा । बसादिदुफासेहियछट्ठाणवडिए । वर्णादिदुअर्थे छस्थानपतित हुवे । एवं उक्कोसठिईएवि । इम उत्कृष्ट स्थिति पिण । अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि एवचेव नवरं ठिईएचउट्ठाणवडिए । अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिना पिण इमहीज ए विशेष चतुःस्थानपतित हुवे जहन्नठिईयाणं भंते दुपदेसियाणं पुच्छा गोयमा । जघन्य स्थितिना द्विप्रदेशीनो प्र० हे गौतम । अणता प० सेकेणट्ठणं भते पं० गोयमा । अनन्ता पर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम । जहन्नठिईए दुपदेसिएखंधे । जघन्य स्थितिनाद्विप्रदेशीखन्ध । जहन्नठिईयस्सदुपदेसियस्स खंधस्स । जघन्य स्थितिनाद्विप्रदेशीखन्धने । दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ल । द्रव्यार्थेसरीषा प्रदेशार्थेसरीषाछे । उगाहणट्ठयाएसियहीणे सियतुल्ले सियअभहिए । अवगाहनाने अर्थेसरीषा केहीन केइअधिका केइसरीषा । जइ हीणे पएस हीणे । जेहीन तेप्रदेशेहीन । अह अभहिए पएसमभहिए ठिईए तुल्ले । अथ अधिक प्रदेशे अधिक स्थितिथी सरीषा । बसादिचउफासेहिय छट्ठाणवडिए । वर्णादि ४ अर्थे छस्थानपतितहुवे । एवं उक्कोसठिईएवि । इम उत्कृष्टी स्थितिना पिण । अजहन्नम

सियतुल्ले सियअब्भहिए जहण्णेणं पदेसहीणे अह अब्भहिए पदेसछयाए अब्भहिए ठिईए तुल्ले वन्नादिचउफासेहिय छठाणवडिए एवं एक्कोसठिईएवि अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव नवरं ठिईए चउठाणवडिए एवं जाव दसपदेसिए नवरं पदेसपरिवुड्ढीकायव्वा, उगाहणठयाए तिसुवि गमएसु जाव दसपदेसिए नव पदेसा वुड्ढिज्जंति। जहन्नठिईयाणं भंते! संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गो०! अणंता। से केणट्ठेणं? गो०! जहन्नठिईए संखेज्जपदेसिए जहन्नठिईयस्स संखेज्जपदेसियस्स खंधस्स दव्वठयाए तुल्ले पदेसठयाए दुठा

॥ मूल ॥

ज्ञहीनः अथाभ्यधिकः प्रदेशाभ्यधिकः स्थित्या तुल्यः वर्णादिचतुर्भिः स्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षस्थितिकोपि। अजघन्यानुत्कर्षस्थितिकोप्येवं चैव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः। एवं यावद्दशप्रदेशिके नवरं प्रदेशपरिवृद्धिः कर्त्तव्याऽवगाहनार्थतया त्रिष्वपि गमकेषु यावद्दश प्रदेशिके नव प्रदेशाः परिवर्द्धन्ते। जघन्यस्थितिकानां भदन्त! संख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। कतरकेनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यस्थितिकः संख्यातप्रदेशिको जघन्यस्थितिकसङ्ख्यातप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया द्विःस्थानपतितः

॥ अ० ॥

एक्कोसठिईएवि एवचेव नवरं ठितीए चउट्ठाणवडिए। अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थितिनापिण ए विशेष स्थितिकरी चतुःस्थानपतितहुवै। एवं जाव दसपएसिए नवरं पएसपरिवुड्ढीकाव्वा। इम जालगें १० प्रदेशस्कंध ए विशेष प्रदेशें २ वृद्धिकरवी। उगाहणट्ठयाएतिसुविगमएसु जाव दसपएसिएणवपएसावुड्ढिज्जंति। अवगाहनाथी तीने आलावैकरी जालगें १० प्रदेश तांलगे ६ प्रदेशवधारीनें कहिवी। जहण्णठितीआणं भंते संखिज्जपएसियाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य स्थितिना संख्यातप्रदेशने केतलापर्याय हे गौतम। अथवा प० सेकेणट्ठेणं भंते पं० गोयमा। अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम। जहण्णठिईएसंखिज्जपएसिएखंधे जहण्णठिईयस्स। जघन्य स्थितिना संख्यातप्रदेशने जघन्य स्थितिनें। संखिज्जपएसियस्स खंधस्स। संख्यातप्रदेशीस्कंधने। दव्वठ्ठयाए तुल्ले पएसठ्ठयाए चउट्ठाणवडिए। द्रव्यार्थें सरीषाछे प्रदेशार्थें चतुःस्थानपतितहुवै। उगाहणठ्ठयाए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थें चतुःस्थानपतितहुवै। ठिईएतुल्ले

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

णवण्हिए नगाहणठयाए दुट्ठाणवडिए ठिईए तुल्ले वण्णादिचउफासेहिय छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसठिईएवि अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए। जहन्नठिईयाणं भंते! असंखिज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं? गोयमा! जहन्नठिईए असंखिज्जपएसिए जहन्नठिईयस्स असंखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए नगाहणठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तुल्ले वन्नादिउवरिल्लचउफासेहिं छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसठिईएवि। अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए। जहन्नठिईयाणं अणंतपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं? गोयमा!

॥ अ० ॥

अवगाहनार्थतया द्विस्थानपतितः स्थित्या तुल्यः वर्णादिचतुर्भिः स्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षस्थितिकोपि। अजघन्यानुत्कर्षस्थितिकोप्येवं चैव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः। जघन्यस्थितिकानां भदन्त! असंख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यस्थितिकोऽसंख्यातप्रदेशिको जघन्यस्थितिकस्या संख्यातप्रदेशिकस्यद्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया चतुःस्थानपतितो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या तुल्यः वर्णादिप्रथमचतुर्भिः स्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षस्थितिकोपि। अजघन्यानुत्कर्षस्थितिकोपि एवमेव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः। जघन्यस्थितिकानामनन्तप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। अ

॥ भाषा ॥

वर्णादिउवरिल्लेहिं चउफासेहिंछट्ठाणवडिए। स्थितिये सरीखा वर्णादिउपरिलै४ स्पर्शे छस्थानपतितहुवै। एवं उक्कोसठिईएवि अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि। इम उत्कृष्टी स्थितिना पिण अजघन्य अनुत्कृष्ट पणी। एवंचेव नवरं चउट्ठाणवडिए। इमहीज ए विशेष स्थितिकरी चतुःस्थानपतितहुवै। जहन्नठिईयाणं भंते असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य स्थितिना हे भगवन् असंख्यातप्रदेशीनो प्र० हे गौतम। अणतापः सेकेणं भंते पं० गोयमा। अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम। जहन्नठिईए असंखिज्जपएसिए खंधे। जघन्य स्थितिना असंख्यातप्रदेशीस्कंध। जहन्नठितीयस्स असंखिज्जपएसि

जहन्नठिईए अणंतपदेसिए जहन्नठिईयस्स अणंतपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तुल्ले वन्नादिअट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए एवं उक्कोसठिईएवि। अजहन्नमणुक्कोसठितीएवि एवंचेव नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए। जहन्नगुणकालयाणं परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा,

एकेनार्थेन अदत्त। एवमुच्यते ? गौतम! जघन्यस्थितिकानन्तप्रदेशिको जघन्यस्थितिकस्यानन्तप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितो वगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या तुल्यः वर्णाद्यष्टस्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षस्थितिकोपि। अजघन्यानुत्कर्षस्थितिको प्येवमेव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः। जघन्यगुणकालकानां परमाणुपुद्गलानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। अथ केनार्थेन

यस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ल। जघन्यस्थितिना असंख्यातप्रदेशो स्कंध द्रव्यार्थेसरीखाछे। पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए। प्रदेशार्थे चतुःस्थानपतित हुवे। ओगाहणट्ठयाएचउट्ठाणवडिए ठिईएतुल्ल। अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतित हुव स्थितियेसरीषा। वन्नादिअट्ठफासेहिंछट्ठाणवडिए। वर्णादिअष्टस्पर्शे ६ स्थानपतित हुवे। एव उक्कोसठिईएवि। इम उत्कृष्ट स्थितिना पिण छे। अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए। अजघन्य अनुत्कृष्टस्थितिना पिण इम होज ए विशेष स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवे। जहन्नठिईयाणं भंते अणंतपएसियाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य स्थितिना हे भगवन् अनन्तप्रदेशीना प्र० उ० हे गौ०। अणंतापo सेकेणट्ठण भंते गोयमा। अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम। जहन्नठिईए अणंतपएसिएखंधे। जघन्य स्थितिना अनन्तप्रदेशन स्कंध। जहन्नठिईयस्स अणंतपएसियस्स खंधस्स। जघन्य स्थितिना अनन्तप्रदेशीखंधने। दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए। द्रव्यार्थे सरीषाछे प्रदेशार्थे छस्थानपतित हुवे। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतित हुवे। ठिईए तुल्ल वन्नादिअट्ठफासेहियछट्ठाणवडिए। स्थितिकरी सरीषा वर्णादि ८ स्पर्शे छस्थानपतित हुवे। एवं उक्कोसठिईएवि अजहन्नमणुक्कोसठिईएवि एवंचेव नवरं ठिईएचउट्ठाणवडिए। इम उत्कृष्टीस्थितिना पिण अजघन्य अनुत्कृष्टी स्थितिना पिण इम होज ए विशेष स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवे। जह

गोयमा ! णो इणट्ठे समट्ठे । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए परमाणुपोग्गले जहन्नगुणकालगस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसा वन्ना नत्थि गंधरसफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालएवि । एवं अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि । नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । जहन्नगुणकालयाणं भंते ! दुपदेसियाणं पुच्छा ? गोयमा !

भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यगुणकालकः परमाणुपुद्गलो जघन्यगुणकालकस्य परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः । कालवर्णपर्यवैः तुल्यः अवशेषवर्णा नास्ति गन्धरसद्विविधस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणकालकोपि । एवमजघन्यानुत्कर्षगुणकालकोपि नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । जघन्यगुणकालकानां भदन्त ! द्विप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः । अथकेनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यगुणकालकद्विप्रदेशिको जघन्यगुणकालकस्य द्विप्रदेशिकस्य

सगुणकालनाएपरमाणुपुग्गलाण पुच्छा गोयमा । जहन्न गुणकालना परमाणुपुद्गलनो प्र० उ० हे गौ० । अणंताप० सेकेणट्ठेण भंते प० गोयमा । अनन्ता पर्याय ते कारणे अर्थे इम कह्यो हे गौ० । जहन्नगुणकालएपरमाणुपुग्गले जहन्नगुणकालगस्स परमाणुपुग्गलस्स । जघन्य गुणकालनो परमाणुपुद्गल जघन्य गुणकालनां परमाणुपुद्गलने । दव्वट्ठयाएतुल्ले पएसट्ठयाएतुल्ले । द्रव्यार्थे सरीषाछे प्रदेशार्थेसरीषाछे । उगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए । अवगाहना र्थेसरीषाछे स्थितिकरी चतुःस्थानपतितहवे । कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसावन्नानत्थि । कालवर्णने पर्याये सरीषा थाकता वर्णनथी । गंधरसफासपज्ज वेहिय छट्ठाणवडिए । गन्धरसस्पर्शने पर्याये छस्थान पतित हवे । एवं उक्कोसगुणकालएवि अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि । इम उत्कृष्टगुणकालनाविषे अजघन्य अनुत्कृष्टगुणकालना विषे इम जाणवू । एवचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एविशेष स्वस्थानें छस्थानपतित हवे । जहन्नगुणकालगाणं भंते दुपदे सियाणं पुच्छा गो० । जघन्य गुणकालना हे भगवन् द्विप्रदेशीनां प्र० उ० गो० । अणंताप० सेकेणट्ठेणं भंत प० हे गौ० । अनन्तापर्याय तेमाटें इम कह्यो

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

॥ नाम ॥

अणंता से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए दुपदेसिए जहण्णगुणकालगस्स दुपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले सियब्भहिए जइ हीणे पदेसहीणे अहव बब्भहिए पदेसमब्भहिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसवण्णादिउवरिल्लचउफासेहिय छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालएवि जहण्णमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं जाव दसपदेसिए नवरं पदेसपरिवुड्ढी ओगाहणा तहेव। जहण्णगुणकालयाणं भंते! संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा,

द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्योऽवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदि हीनः प्रदेशहीनः, अथाभ्यधिकः प्रदेशाभ्यधिकः स्थित्या चतुःस्थानपतितः कालवर्णपर्यवैः स्तुल्यो वर्णेषवर्णाद्युपरिमचतुर्भिः स्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षगुणकालकोपि। अजघन्योत्कर्षगुणकालकोप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। एवं यावद्दशप्रदेशिको नवरं प्रदेशपरिवृद्धिरवगाहना तथैव। जघन्य

ह गो०। जहन्नगुणकालए दुपदेसियस्स। जघन्यगुणकालना द्विप्रदेशीनाखस्य। जहन्नगुणकालगस्सदुपदेसियस्सखंधस्स। जघन्यगुणकालना द्विप्रदेशी स्कंधने। दव्वट्ठयाएतुल्ले पएसट्ठयाएतुल्ले। द्रव्यार्थे सरीषो छे प्रदेशार्थे सरीषा। उगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले सियब्भहिए। अवगाहनार्थे कोइ हीन कोइ सरीषा कोइ अधिक होवे। जइहीणे पएसहीणे अहव्भहिए पएसमब्भहिए ठिईए चउट्ठाणवडिए। जेहीनतेप्रदेशहीन जे अधिक तेपिणप्रदेशे अधिक स्थितिकरी चतुःस्थानपतित होवे। कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अविसेसावण्णादि उवरिल्लचउफासेहियछट्ठाणवडिए। कालवर्णना पर्याय सरीषा बाकतावर्णादिकउपरिले ४ स्पर्शे छस्थानपतित होवे। एव उक्कोसगुणकालएवि। इम उत्कृष्टोगुणकालना पिण। अजहण्णमणुक्कोसगुणकएवि एवंचेव णवरं सट्ठाणेछट्ठाणवडिए अजघन्य अनत्कृष्टगुणकाला पिण इम होज स्वस्थाने छस्थानपतितहोवे। एव जाव दसपएसीए नवरं दसपएसपरिवुड्ढीओगाहणा। इम जांलगे दशप्रदेशीए विशेष १० प्रदेशनांहुंलगे वृद्धिकरीये। उगाहणातहेवभा० जहण्णगुणकालगाण भंते संखिज्जपएसियाणं पुच्छा गो०। अवगाहनादिकतिमहोज

गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए संखेज्जपदेसिए जहण्णगुणकालगस्स संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए, कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णादिउवरिल्लचउफासेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकालए वि एवं अजहण्णमणुक्कोसगुणकालए वि । एवं नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । जहण्णगुणकालयाणं भंते ! असंखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहण्णगुणकालए असंखेज्जपदे

॥ मूल ॥

गुणकालकानां भदन्त ! संख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा' गौतम ! अनन्ता स्तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यगुणकालकः संख्यातप्रदेशिको जघन्यगुणकालकस्य संख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया द्विःस्थानपतितो ऽवगाहनार्थतयापि द्विस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः कालवर्णपर्यवै स्तुल्यो ऽवशेषैर्वर्णादिप्रथमचतुःस्पर्शैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणकालकोपि । एवमजघन्यानुत्कर्षगुणकालकोपि नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । जघन्यगुणकालकानां भदन्त ! असंख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा' गौतम ! अनन्ता स्तत्केना

॥ अ० ॥

जघन्यगुणकालने संख्यातप्रदेशीनां केतलापर्याय प्र० उ० हेगो० । अणतापर्याय सकेणट्ठेणं भंते प० गो० । अनन्तापर्याय तेमाटे इम कहीं हेगो० । जहण्णगुणकालए संखिज्जपएसिए खंधे । जहण्णगुणकालगस्स संखिज्जपएसियस्स खंधस्स । जघन्यगुणकालनां संख्यातप्रदेशीस्कंध । जघन्यगुणकालनां संख्यातप्रदेशीस्कंधने दव्वट्ठयाएतुल्ले पएसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए । द्रव्यार्थे सरीषा प्रदेशार्थे द्विस्थानपतित हुवे । उगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए । अवगाहनार्थे द्विस्थानपतित हुवे । स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवे । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णादिउवरिल्लेचउफासेहिव छट्ठाणवडिए । कालवर्णने पर्यायसरीषा थाकतावर्णादि उपरिले ४ अन्य करी छस्थानपतितहुवे । एव उक्कोसगुणकालएवि अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवचेव नवर सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । इम उत्कृष्टगुणकालपिण कहिवा अजघन्य अनुत्कृष्ट गुणकालनां पिण । इम हीज ए विशेष स्वस्थाने छस्थानपतित हुवे । जहण्णगुणकालयाणं भंते असंखिज्जप

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

सिए जहन्नगुणकालगस्स असंखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वन्नादिउवरिल्लचउफासेहिय छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालएवि। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवचेव, नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। जहन्नगुणकालयाणं भंते! अणंतपदेसियाणं पुच्छा, अणंता। से केणट्ठेणं? भंते! गोयमा! जहन्नगुणकालए अणंतपदेसिए जहन्नगुण

॥ अ० ॥

र्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यगुणकालका सङ्ख्यातप्रदेशिको जघन्यगुणकालकस्या ऽसंख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः कालवर्णपर्यवै स्तुल्यः अवशेषवर्णादिप्रथमचतुष्कै स्स्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षगुणकालकोपि। अजघन्यानुत्कर्षगुणकालको एवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। जघन्यगुणकालकानामनन्तप्रदेशिकाणां पृच्छा, गौतम! अणंताः। अथकेनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? जघन्यगुणकालकानन्तप्रदेशिको जघन्यगुणकालकस्या नन्तप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदे

॥ भाषा ॥

येसियाणं पृच्छा गो०। जघन्यगुणकालना असंख्यातप्रदेशने केतलापर्याय प्र० उ० हे गौ०। अणंताप० सेकेणट्ठेणं भंते पं० गो०। अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम। जहन्नगुणकालये असंखिज्जपयेसिये जहन्नगुणकालगस्स असंखिज्जपयेसियस्स दव्वट्ठयाये तुल्ले पयेसट्ठयाये चउट्ठाणवडिये। जघन्यगुणकालना असंख्यातप्रदेशना जघन्य गुणकाल। असंख्यातप्रदेशीने द्रव्यार्थे सरीषाछै प्रदेशार्थे चतुःस्थानपतित हुवै। ठिईयेचउट्ठाणवडिये। स्थिति करी चतुःस्थानपतित हुवै। कालवन्नपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिंवन्नादिउवरिल्ले चउफासेहिय छट्ठाणवडिये। कालवर्णनापर्याय सरीषा थाकतावर्णादि उपरला ४ स्पर्श करी छस्थानपतित हुवै। ऐवं उक्कोसगुणकालएवि अजहन्नमणुक्कोसगुणकालयेवि ऐवंचेव नवरं सट्ठाणछट्ठाणवडिये। इम उत्कृष्टगुणकालना पिण अजघन्य अनुत्कृष्टगुणकाल पिण इम हीजए विशेष स्वस्थाने छस्थानपतितहुवै। जहन्नगुणकालगाणं भंते अणंता पयेसियाणं पुच्छा गोयमा जघन्य गुणकालना अनन्तप्रदेशीने केतलापर्याय हे गौतम। अणंताप० सेकेणट्ठेणं भंते प० गोयमा। अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम। जहन्न

॥ मूल ॥

कालगस्स अणंतपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवन्तपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिय वण्णादिअट्ठफासेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणकालएवि, एवं अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं नीललोहियहालिद्द सुक्किल्लसुब्भिगंधदुब्भिगंधतित्तकडुयकसायअंबिलमहुररसपज्जवेहिय वन्नइया नाणियव्वा नवरं परमाणुपोग्गलस्स सुब्भिगंधस्स दुब्भिगंधो न नस्सति दुब्भिगंधोस्स सुब्भिगंधो न नस्सति तित्तस्स अवसेसा न नस्संति,

॥ अ० ॥

ज्ञार्थतया षट्स्थानपतितः। अवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः कालवर्णपर्यवै स्तुल्योऽवशेषैर्वर्णाद्यष्टस्पर्शैः षट्स्थानपतितः। एवं मुत्कर्षगुणकालकोपि अजघन्यानुत्कर्ष गुणकालको प्येवंचैव नवर स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। एवं नीललोहित हारिद्र शुक्ल सुरभिगन्ध दुर्विगन्ध तिक्त कटुक कषाय अम्ल मधुररस पर्यवैर्वक्तव्यता ज्ञातेा नवर परमाणु पुद्गलस्य सुरभिगन्धस्य दुर्विगन्धो न ज्ञायते दुर्विगन्धस्य सुरभिगन्धो न ज्ञायते तिक्तस्यावशेषान ज्ञायंते। एवं कटुकादीमि विशषं तत्तथैव। जघन्यगुणकाल कर्कशानामनन्तप्रदेशिकानां

॥ भाषा ॥

गुणकालए अणंतपएसियखंधे। जहन्न गुणकालगाणं अनन्तप्रदेशीयस्य। जहन्नगुणकालयस्स अणंतपदेसीयस्स खंधस्स। जघन्यगुणकालगां अनन्तप्रदेशी स्कंधने। दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए। द्रव्यार्थे सरीषा प्रदेशार्थे छस्थान पतित हुवे। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थे चतुःस्थ नपतित हुवे। ठिईए चउट्ठाणवडिए। स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवे। कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णादी अट्ठफासेहियछट्ठाणवडिए। कालवर्णनापर्यायसरीषा आकता। वर्णादिस्पर्शे करी छस्थानपतितहुवे। एवं उक्कोसगुणकालएवि। इम उत्कृष्टगुणकालना पिण। अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवचेव णवरं सट्ठाणेछट्ठाणवडिए। अजघन्य अनुत्कृष्ट गुणकाल पिण इम हीज ए विशेष स्वस्थाने छस्थानपतित हुवे। एवं नीललोहियहालिद्दसुकिल्लसुब्भिगंधदुब्भिगंधतित्तकडूयकसायअंबिलमहुररसपज्जवेहिय। इम नीलवर्णरातो पीलो धवलो सुगध दुर्गंध तिक्तरस कटुरस कसाय आंबिल मधु

॥ मूल ॥

एवं कक्खडादीनि विसेसं तंचेव । जहन्नगुणकक्खडाणं अणंतपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहन्नगुणकक्खडे अणंतपदेसिए जहन्नगुणकक्खडस्स अणंतपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णगंधरसेहिं छट्ठाणवडिए कक्खडफासपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं सत्तफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणकक्खडे

॥ अ० ॥

पृच्छा, गौतम ! अनन्तास्तत्केनार्थेन उच्यन्ते ? एव मुच्यते ? गौतम ! जघन्यगुणकर्कशानन्तप्रदेशिको जघन्यगुणकर्कशस्यानन्तप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्याचतुःस्थानपतितः वर्णगन्धरसैःषट्स्थानपतितः कर्कशस्पर्शपर्यवै स्तुल्यो वशेषैः सप्तस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणकर्कशोपि । अजघन्यानुत्कर्षगुणकर्कशोप्येवं चैव नवरं स्वस्थाने

॥ भाषा ॥

ररसनापर्यायनो। वक्तव्यतासर्वजीवानां विशेष परमाणुपुद्गलस्य। सुरभिगंधस्यदुरभिगंधोदुरभिगंधस्यसुरभिगंधोनभणंति तिक्तरसस्यसेसारसानभणंति। सुगन्धने दुर्गंधनकहे बलोतिक्तरसने शेषरस न कहे । एव कक्खडादीविसेसंतंचेव जहन्नगुणकक्खडस्स अणंतपएसियाण पुच्छा गोयमा। इम कटुरकरस आदि कहिवो पाछलोथकी जघन्य गुणकर्कश अनन्तप्रदेशने केतलापर्याय हे गौतम । अणंताप०। सेकेणट्ठेणं भंते पं० गोयमा। अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम। जहन्नगुणकक्खडे अणंतपएसिए खंधे। जघन्यगुणकर्कश अनन्तप्रदेशीस्कंध । जहन्न गुणकक्खडस्स अणंतपएसीयस्स खंधस्स। जघन्यगुणकर्कश अनन्तप्रदेशीस्कंधने। दव्वट्ठयाएतुल्ल पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए । द्रव्यार्थेसरीषा प्रदेशार्थे छस्थानपतित हुवे। उगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतित हुवे। वण्णगंधरसेहि छट्ठाणवडिए। वर्णगन्धरस फरसें छस्थानपतित हुवे । कक्खडफासपज्जवेहिं तुल्ले अविसेसेहिं सत्तफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। कर्कशस्पर्शने पर्याये सरीषा थाकना ७ स्पर्शने पर्याये छस्थानपतित हुवे। एवं उक्कोसगुणकक्खडेवि। इम उत्कृष्टगुणकर्कशने पिण। अजहन्नमणुक्कोसगुणकक्खडेवि। अजघन्य अनुत्कृष्टगुणकर्कश पिण इमजकहिवो। एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए।

वि, अजहन्नमणुक्कोसगुणकक्खडेवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं मउयगुरुयलहुयवि नाणियव्वे । जहन्नगुणसीयाणं भंते ! परमाणुपोग्गलाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहन्नगुणसीयाणं परमाणुपोग्गले जहन्नगुणसीयस्स परमाणुपोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए वन्नगंधरसेहिं छट्ठाणवडिए सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले उसिणफासो न भवति निद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुणसीतेवि, अजहन्नमणुक्कोसगुणसी

षट्स्थानपतितः । एवं मृदुगुरुलघवोऽपि णितव्याः । जघन्यगुणकालकानां शीतानां भदन्त ! परमाणुपुद्गलानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ता स्तत्केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! जघन्यगुणकालकशीतःपरमाणुपुद्गलो जघन्यगुणकालकशीतस्य परमाणुपुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णगन्धरसैः षट्स्थानपतितः शीतः स्पर्शपर्यवै स्तुल्यः उष्णस्पर्शो न भवति स्निग्धरूक्षस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणशीतोपि । अजघन्यानुत्कर्षगुणशीतोप्येव मेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । जघन्य

ए विशेष छट्ठाणपडिए हवे स्वस्थाने । एव मउयगुरुयलहुयविभा० । इम मृदुगुरुलघवो पण कहिवो । जहन्नगुणसीयाणं भंत परमाणुपुग्गलाण पुच्छा गोयमा । जघन्यगुणकालशीत परमाणुपुद्गलन केतलाप्रयोय प्र० उ० हे गौ० । अणंता प० सेकेणट्ठणं भंत प० । अनन्तापर्यव तेमाटे इम कह्यो । जहन्नगुणसीतेरपमाणुपुग्गले । जघन्यगुणशीतनापरमाणुपुद्गल । जहन्नगुणसीयस्स परमाणुपुग्गलस्स । जघन्यगुणशीतपरमाणुपुद्गलने । दव्वट्ठयाएएपएसट्ठयाएतुल्ले उगाहणट्ठयाएतुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए । द्रव्यार्थेमरोबाके प्रदेशार्थे सरीषाके । अवगाहनार्थे सरीषा स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हवे । सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले उसिणफासोनभणति । शीतस्पर्शना पर्यायसरीषा उष्णस्पर्श न कहिवो । निद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । स्निग्धलूक्षस्पर्शना पर्यायकरी छट्ठा नपतित हवे । एव उक्कोसगुणसीएवि । इम उत्कृष्टगुणशीत कहिवा । अजहन्नमणुक्कोसगुणसीएवि एवचेव नवरं सट्ठाणे चउट्ठाणवडिए । अजघन्यअनुत्क

तेवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। जहन्नगुणसीताणं दुपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं भंते! गोयमा! जहन्नगुणसीते दुपदेसिए जहन्नगुणसीयस्स दुपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले सियब्भहिए जदि हीणे पदेसहीणे, अह अब्भहिए पदेसमब्भहिए ठितीए चउट्ठाणवडिए वण्णपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए सीयफासपज्जवेहिं तुल्ले उसिणणिद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणसीतेवि अजहन्नमणुक्कोसगुणसीतेवि एवंचेव नवरं

गुणशीतानां द्विप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। अथकेनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यगुणशीतः द्विप्रदेशिको जघन्यगुणशीतस्य द्विप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदिहीनः प्रदेशहीनः अथाभ्यधिकः प्रदेशाभ्यधिकः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णगन्धरसपर्यवैः षट्स्थानपतितः शीतःस्पर्शपर्यवैः तुल्यः उष्णस्निग्धरूक्षस्पर्शपर्यवैः षट्

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

स्थानपतितः एवं उत्कृष्टगुणशीतेऽपि अजघन्यानुत्कृष्टगुणशीतेऽपि एवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। जघन्यगुणशीतानां भदन्त द्विप्रदेशिकानां पृच्छा गौतम। जघन्यगुणशीतना द्विप्रदेशीने केतलापर्याव हे गौतम। अनंतापर्याव। सकेणट्ठेणं भंते पर्याव गौतम। अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम। जघन्यगुणशीतद्विप्रदेशिकस्वस्थाने। जघन्यगुणशीतनाद्विप्रदेशीखन्धना। जघन्यगुणशीतस्य खन्धस्य। जघन्य गुणशीतनाद्विप्रदेशीखन्धने। दव्वट्ठयाएतुल्ले पएसट्ठयाएतुल्ले। द्रव्यार्थेसरीखाछे प्रदेशार्थे सरीखाछे। ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले सियब्भहिए। अवगाहनार्थे केइहीन केइसरीखा केइअधिक। जइहीणे पएसहीणे जइअब्भहिए पएसमब्भहिए। जेहीन प्रदेशहीन हुवे जे अधिकते पिण प्रदेशे अधिक। ठितीए चउट्ठाणवडिए। स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवै। वण्णादिपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। वर्णादिपर्याय छस्थानपतित हुवै। सीतफासपज्जवेहिं तुल्ले। शीतस्पर्शने पर्यावेसरीखा। उसिणणिद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। उष्ण स्निग्ध लूक्ष स्पर्शनेपर्याये छस्थानपतित हुवै। एवं उक्कोसगु सीतेवि। इम उत्कृष्ट गुणशीतना पिण। अजहन्नमणुक्कोसगुणसीएवि एवंचेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाण

सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं जाव दसपदेसिए नवरं उगाहणट्ठयाए पएसपरिवुड्ढी कायव्वा जाव दसपदेसियस्स नवपदेसा वुड्ढिज्जंति। जहण्णगुणसीयाणं संखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता। से केणट्ठेणं? गोयमा! जहण्णगुणसीते संखेज्जपदेसिए जहन्तगुणसीयस्स संखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए उगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णादीहिं छट्ठाणवडिए सीयफास पज्जवेहिय तुल्ले उसिणनिद्धलुक्खेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणसीतेवि अजहन्तमणुक्कोसगुणसीतेवि।

॥ मूल ॥

स्थानपतितः। एवमुत्कर्षगुणशीतोपि। अजघन्यानुत्कर्षगुणशीतो प्येवं चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। एवं यावद्दशप्रदेशिको नवरम वगाहनार्थतया प्रदेशपरिवृद्धिः कर्त्तव्याः यावद्दशप्रदेशिकस्य नवप्रदेशापरिवर्ध्यन्ते। जघन्यगुणशीतानां संख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा' गौतम! अनन्ता स्तत्केनार्थेन भदन्त! एवमुच्यते? गौतम! जघन्यगुणशीतः संख्यातप्रदेशिको जघन्यगुणशीतस्य सङ्घातप्रदेशकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया द्विःस्थानपतितः अवगाहनार्थतया द्विस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णादिभिः षट्स्थानपतितः शीतस्पर्शपर्यवै स्तु

॥ अ० ॥

वडिए। अजघन्य अनुत्कृष्टगुणशीतना विषय ए विशेष स्वस्थाने छस्थानपतितहुवे। एवं जाव दसपएसिए णवरं उगाहणट्ठाए पएसपरिवुड्ढीकायव्वा। इम जां लगे १० प्रदेशी ए विशेष अवगाहनाने अर्थे वृद्धिकरिवी। जाव दसपएसियस्स णवपएसावुड्ढिज्जंति। जांलगे १० प्रदेशी तांलगे ९ प्रदेशनी वृद्धिकरिवी। जहण्णगुणसीयाणं संखिज्जपएसियाणं पुच्छा गोयमा। जघन्ये गुणशीतना संख्यातप्रदेशीनो प्र० हे गौतम। अनंतापज्जवा प्र० सेकणट्ठेणं भंते पं० गोयमा। अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम। जहण्णगुणसीते संखिज्जपएसिए। जघन्य गुणशीतना संख्यातप्रदेशी। जहण्णगुणसीयस्स संखिज्जपएसियस्स खबरम। जघन्य गुणशीतने संख्यातप्रदेशीखधने। दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए दुट्ठाणवडिए। द्रव्यार्थेसरीषा प्रदेशार्थे द्विस्थानपतित हुवे। उगाहणट्ठयाए दुट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थे द्विस्थानपतित हुवे। ठिईए चउट्ठाणवडिए। स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवे। वण्णादिहिं छट्ठा

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । जहण्णगुणसीयाणं असंखेज्जपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता से केणट्ठेणं भंते ? गोयमा ! जहण्णगुणसीते असंखेज्जपदेसिए जहण्णगुणसीतस्स असंखेज्जपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णादिपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए सीतफासपज्जवेहिं तुल्ले णिद्धलुक्खफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । एवं उक्कोसगुण

॥ अ० ॥

ल्यः उष्णस्निग्धरूक्षपर्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणशीतोऽपि अजघन्यानुत्कर्षगुणशीतो प्येव ज्ञेव । अजघन्यानुत्कर्षगुणशीतो प्येव ज्ञेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । जघन्यगुणशीतानां असङ्ख्यातप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः । अथ केनाऽर्थेन भदन्त ? गौतम ! जघन्यगुणशीतो असङ्ख्यातप्रदेशिको जघन्यगुणशीतस्या असङ्ख्यातप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया चतुःस्थानपतितो ऽवगाहनार्थतया चतुः

॥ भाषा ॥

स्थानवडिए । वर्णादिकें छस्थानपतित हुवै । सीतफासपज्जवेहिं तुल्ल उसिण निद्धलुक्खेहिं छट्ठाणवडिए । शीतस्पर्शने पर्यायें सरीषा उष्ण स्निग्ध लूक्ष छस्थान पतित हुवै । एवं उक्कोसगुणसीएवि अजहण्णमणुक्कोसगुणसीएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । इम उत्कृष्टगुणशीत पिण अजघन्य अनुत्कृष्टगुणशी तनेपिण इमहीज ए विशेष स्वस्थाने छस्थानपतितहुवै । जहण्णगुणसीयाणं असंखिज्जपएसियाणं पुच्छा गोयमा । जघन्यगुणशीतना असंख्यातप्रदेशीनो प्र० छ० हे गौ० । अणंतपज्जवा प० सेकेणट्ठेणं भंते पं० गौ० । अनन्तापर्याय तेमाटै इम कह्यो हे गौ० । जहण्णगुणसीए असंखिज्जपएसीएखधे । जघन्य गुणशीतना असख्यातप्रदेशीखधना । जहण्णगुणसीयस्स असंखिज्जपएसियस्स खधस्स । जघन्यगुणशीतना असख्यातप्रदशीखंधने । दव्वट्ठयाएतुल्ले पएसट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । द्रव्यार्थेसरीषा प्रदेशार्थे चतुःस्थानपतित हुवै । उगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतित हुवै । ठिईए चउट्ठाणवडिए । स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवै । वण्णादिपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । वर्णादिपर्यायें छस्थानपतित हुवै । सीतफासपज्जवेहिं तुल्ल उसिण णिद्धलुक्खफास पज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । शीतस्पर्शने पर्यायें सरीषा उष्ण स्निग्ध लूक्ष स्पर्शने पर्यायें छस्थानपतित हुवै । एवं उक्कोसगुणसीएवि । इम उत्कृष्टशीत पिण ।

सीतेवि अजहन्नमणुक्कोसगुणसीतेवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। जहन्नगुणसीयाणं अणंतपदेसियाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहन्नगुणसीते अणंतपदेसिए जहन्नगुणसीतस्स अणंतपदेसियस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णादिपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए सीतफासपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं सत्तफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसगुणसीतेवि अजहन्नमणुक्कोसगुणसीतेवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। एवं उसि

॥ मूल ॥

स्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितो वर्णादिपर्यायैः षट्स्थानपतितः शीतस्पर्शपर्यायैः तुल्यः स्निग्धोष्णरूक्ष स्पर्शपर्यायैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षगुणशीतोपि अजघन्यानुत्कर्षगुणशीतो प्येवञ्चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः। जघन्यगुणशीतानां अनन्तप्रदेशिकानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ता स्तत्केनार्थेन ? गौतम ! जघन्यगुणशीतो नन्तप्रदेशिको जघन्यगुणशीतस्या नन्तप्रदेशिकस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्

॥ अर्थ ॥

अजहन्नमणुक्कोसगुणसीएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। अजघन्य अनुत्कृष्टशीतनापिण इम होज ए विशेष स्वस्थाने छस्थानपतितहवै। जहन्नगुणसीयाणं अणंतपएसियाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य गुणशीतना अनंतप्रदेशीनो प्र० उत्तर हे गौतम। अनंतापज्जवा पं० से केणट्ठेणं भंते पं० गोयमा। अनन्तापर्यव तेमाटे इम कह्यो हे गौ०। जहन्नगुणसीए अणंतपएसिएखंधे। जघन्यगुणशीतना अनन्तप्रदेशनास्कंध। जहन्नगुणसीयस्स। अणंतपएसीयस्स खंधस्स दव्वट्ठयाएतुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए। जघन्यगुणशीतना अनन्तप्रदेशीखंध अनन्तप्रदेशीखंधने द्रव्यार्थेप्रदेशार्थे छस्थानपतितहवै। उगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतितहवै। ठिईए चउट्ठाणवडिए। स्थितिकरीचतुःस्थानपतितहवै। वण्णादिपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। वर्णादिपर्याये छस्थानपतित हवै। सीतफासपज्जवेहिं तुल्ले। शीतस्पर्शने पर्यायसरीषा। अवसेसेहिं छट्ठाणवडिए। बाकता ७ स्पर्शना पर्याये छस्थानपतित हुवै। एवं उक्कोसगुणसीएवि। इम उत्कृष्ट गुणशीत पिण। अजहन्नमणुक्कोसगुणसीएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए। अजघन्य अनुत्कृष्ट गुणशीतनें पिण

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

णेणिद्धेलुक्खे जहा सीते परमाणुपोग्गलस्स तहेव पडिपक्खो सव्वेसिं न भन्नतीति नाणियव्वं । जहन्नपदे सियाणं भंते ! खंधाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहन्नपदेसिए खंधे जहन्नपदे सियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले सियमब्भहिए जदिहीणे पदेसहीणे अहमब्भहिए पदेसमब्भहिए ठिईए चउट्ठाणवडिए वन्नगंधरसउवरिल्लचउफासपज्जवेहिं छट्ठा

॥ अ० ॥

स्थानपतितो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितो वर्णादिपर्य्यवैः षट्स्थानपतितः शीतस्पर्शपर्य्यवैस्तुल्यो ऽवशेषैस्सप्त स्पर्शपर्य्यवैः षट्स्थानपतितः । एवमुत्कर्षगुणशीतोपि । अजघन्योत्कर्षगुणशीतो प्येवमेव नवरं स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । एवमुष्णस्निग्ध रूक्षो यथा शीतपरमाणुपुद्गल स्तथैव प्रतिपत्तव्यः सर्वेषां न भण्यते इति भणितव्यं । सांप्रतं सामान्यसूत्र मारभ्यते । जघन्यप्रदेशिकानां भदन्त ! स्कन्धानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ता स्तत्केनार्थेन ? गौतम ! जघन्यप्रदेशिक स्कन्धो जघन्यप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थत या तुल्यो ऽवगाहनार्थतया स्याद्धीनः स्यात्तुल्यः स्यादभ्यधिकः यदि हीनः प्रदेशहीनः अथाभ्यधिकः प्रदेशाभ्यधिकः स्थित्या चतुःस्थानपतितः

॥ भाषा ॥

इम होज ए विशेष स्वस्थ ने षट्स्थानपतित हुवे । एवं उष्णे स्निग्धे रूक्षे जहा सीते परमाणुपुग्गलस्स तहेवपडिपक्खोसव्वे सिनभण्णंतिसमाणियव्वं । इम उष्ण स्निग्ध लूक्ष यथा शीतपरमाणुपुद्गलने तिमहीज प्रतिपक्षजाणिवो सर्वने नकहिवा । सांप्रतमामान्यसूत्रमारभ्यत । हिवेसामान्यसूत्रकहेछे । जहण्णप एसीयाणं भंत खंधाणं पुच्छा गोयमा । जघन्यप्रदेशीस्कंधने हे भगवन् केतलापर्याय प्र० उ० हेगो० । अणंता प० सेकेणट्ठेणं भंते प० गो० । अनन्तपर्याय ते माटे इम कह्या हे गौतम । जहण्णपएसिएखंधे जहण्णपएसियस्स खंधस्स । जघन्य प्रदेशीनाखंध जघन्य प्रदेशीखंधने । दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले । द्रव्यार्थे सरीषा प्रदेशार्थे सरीषा । उगाहणट्ठयाए सियहीणे सियतुल्ले सियअब्भहिए । अवगाहनार्थे कोइहीन कोइसरीषा कोइ अधिक । जइहीण पएसहीणे अह अब्भहिए पएसमब्भहिए । जेहीन तेप्रदेशहीन अथ अधिक ते प्रदेशे अधिक । ठिईए चउट्ठाणवडिए । स्थितिकरी चतुःस्थानपतिहुवे । वण्णगंधरस उ

णवड्ढिए । उक्कोसपदेसियाणं भंते ! खंधाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! उक्कोसपएसिए खंधे उक्कोसपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए तुल्ले ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णादिअट्ठफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए । अजहण्णमणुक्कोसपदेसियाणं भंते ! खंधाणं केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! अजहण्णमणुक्कोसपदेसिए खंधे अजहण्णमणुक्कोसपदेसियस्स खंधस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठा

---

वर्णगन्धरसोपरिम चतुःस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । उत्कर्षप्रदेशिकानां भदन्त ! स्कन्धानां पृच्छा । गौतम ! अनन्ताः । अथ केनार्थेन ? गौतम । उत्कर्षप्रदेशिक स्कन्धो उत्कर्षप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया तुल्यो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णाद्यष्टस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः । अजघन्यानुत्कर्षप्रदेशिकानां भदन्त ! स्कन्धानां कियन्तः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! अजघन्यानुत्कर्षप्रदेशिक स्कन्धो ऽजघन्यानुत्कर्षप्रदेशिकस्य स्कन्धस्य द्रव्यार्थतयानु

---

वरिल्ले चउफासपज्जवेहि छट्ठाणवडिए । वर्णगंधरस इपरिला ४ स्पर्शना पर्यवेकरी छस्थानपतित हुवै । उक्कोसपएसीयाणं भंते खंधाणं पुच्छा गोयमा । उत्कृष्टप्रदेशीना खधने केतला पर्याय ह गौतम । अणंताप० सेकेणट्ठेणं भंते प० गोयमा । अनन्ता पर्याय तेमाटै इम कह्यो हे गौतम । उक्कोसपएसिए खंधे उक्कोसपएसियस्स खंधस्स । उत्कृष्ट प्रदेशीखध उत्कृष्ट प्रदेशीखधने । दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए तुल्ले । ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । द्रव्यार्थे प्रदेशार्थे सरीषा । अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतित हुवै । ठिईए चउट्ठाणवडिए । स्थितिकरी चतुःस्थानपति हुवै । वण्णादि अट्ठफासपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए । वर्णादि ८ स्पर्शने पर्यायें छस्थानपतित हुवै । अजहण्णमणुक्कोसपदेसीयाणं भंते खंधाणं पुच्छा गोयमा । अजघन्य अनुत्कृष्टप्रदेशीना केतला पर्याय कह्या प्र० उत्तर हे गौतम । अणंताप० सेकेणट्ठेण गोयमा । अनन्तापर्याय तेम हे गौतम । अजहण्णमणुक्कोसपएसीए खंध । अजघन्य अनुत्कृष्टप्रदेशीना खंध ।

णवट्ठिए ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णादिअट्ठफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए। जहन्नोगाहणगाणं भंते! पोग्गलाणं पुच्छा, गोयमा! अणंता से केणट्ठेणं? गोयमा! जहन्नोगाहणए पोग्गले जहन्नोगाहणगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए वण्णादिउवरिल्लफासेहिय छट्ठाणवडिए। उक्कोसोगाहणएवि एवंचेव नवरं ठिईए तुल्ले। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगाणं भंते! पोग्गलाणं पुच्छा, गो०! अणंता। से केणट्ठेणं? गो०! अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए पोग्गले अज

ल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णाद्यष्टस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः। जघन्यावगाहनकानां भदन्त! पुद्गलानां पृच्छा' गौतम! अनन्ताः। अथ केनार्थेन? गौतम! जघन्यावगाहनकपुद्गलो जघन्याऽवगाहनकस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितो ऽवगाहनार्थतया तुल्यः स्थित्या चतुःस्थानपतितः वर्णादिप्रथमस्पर्शैश्च षट्स्थानपतितः। उत्कर्षावगाहनको ऽप्येवमेव नवरं स्थित्या तुल्यः। अजघन्यानुत्कर्षावगाहनकानां भदन्त! पुद्गलानां पृच्छा, गौतम! अनन्ताः। अ

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

जहण्णमणुक्कोसपदेसियस्स खंधस्स। अजहन्न अनुत्कृष्टप्रदेशीखंधने। दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए। द्रव्यार्थं सरीषा प्रदेशार्थं सरीषा छस्थानपतित हवे। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थं चतुःस्थानपतित हवे। ठिईए चउट्ठाणवडिए। स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवे। वण्णादि उवरिल्लफासपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए। वर्णादि आठमास्पर्शना पर्यायें छस्थानपतित हुवे। जहन्नोगाहणगाणं पुच्छा गोयमा। जघन्य अवगाहनाना पुद्गलनो प्र० उत्तर हे गौतम। अणंताप्र० सेकेणट्ठेणं गोयमा। अनन्तापर्याव तेमाटे इम हे गौतम। जहन्नोगाहणए पोग्गले जहन्नोगाहणयस्स पुग्गलस्स। जघन्य अवगाहनानापुद्गल जघन्य अवगाहनानां पुद्गलने। दव्वट्ठयाएतुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए। द्रव्यार्थेसरीषाप्रदेशार्थे छस्थानपतित हुवे। ओगाहणट्ठयाए तुल्ले ठिईए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थेसरीषा स्थितिकरी चतुःस्थानपतितहुवे। वण्णादि उवरिल्लफासेहिय छट्ठाणवडिए। वर्णादिउपरिलेस्पर्शकरी छ

हन्तमणुक्कोसोगाहणगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए। वण्णादिअट्ठफासपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए। जहन्नट्ठिईयाणं भंते ! पोग्गलाणं पुच्छा, गोयमा ! अणंता। से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहन्नट्ठिईए पोग्गले जहन्नट्ठिईयस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए तुल्ले वन्नादिअट्ठफासपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए। एवं उक्कोसठिईएवि अजहन्नमणुक्कोसठिएवि एवंचेव नवरं ठिईए चउट्ठाणवडिए। जह

॥ मूल ॥

---

थकेनाऽर्थेन भदन्त ! एवमुच्यते ? गौतम ! अजघन्योत्कर्षावगाहनक पुद्गलो ऽजघन्योत्कर्षाऽवगाहनकस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः वर्णाद्यष्टस्पर्शपर्यवैश्च षट्स्थानपतितः। जघन्यस्थितिकानां भदन्त ! पुद्गलानां पृच्छा, गौतम ! अनन्ताः। तत्केनार्थेन ? गौतम ! जघन्यस्थितिक पुद्गलो जघन्यस्थितिकस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया वा षट्स्थानपतितो वगाहनार्थतया चतु स्थानपतितः स्थित्या तुल्यः वर्णाद्यष्टस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतितः। एवमुत्कर्षस्थितिकोपि। अजघन्योत्कर्ष स्थितिकोप्येवमेव नवरं स्थित्या चतुःस्थानपतितः। जघन्यगुणकालकानां भदन्त ! किंपन्नत्ताः पवेदिताः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अनन्ताः। अथकेनार्थे

॥ अ० ॥

---

स्थानपतित हुवे। उक्कोसोगाहणएवि एवंचेव णवरं ठिईएतल्ले। उत्कृष्ट अवगाहनार्थे पिण इम होज ए विशेष स्थितिकरी सरीषा। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणगाणं भंते पुग्गलाण पुच्छा गोयमा। अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहनाना पुद्गलने केतला पर्याय प्र० उत्तर हे गौतम। अनंतापर्याय० से केणट्ठेणं गोयमा। अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम। अजहन्नमणुक्कोसोगाहणए पुग्गले। अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहनाना पुद्गल। अजहण्णमणुक्कोसोगाहणगस्स पुग्गलस्स। अजघन्य अनुत्कृष्ट अवगाहनाना पुद्गलने। दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए। द्रव्यार्थे सरीषा प्रदेशार्थे छस्थानपतित हुवे। ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए। अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतित हुवे। ठिईए चउट्ठाणवडिए। स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवे। वण्णादि अट्ठफासपज्जवेहिय छट्ठा

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

ल्लगुणकालयाणं भंते ! केवइया पज्जवा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणंता । से केणट्ठेणं ? गोयमा ! जहन्नगुणकालए पोग्गले जहण्णगुणकालगस्स पोग्गलस्स दव्वट्ठयाए तुल्ले पदेसट्ठयाए छट्ठाणवडिए ओगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए ठिईए चउट्ठाणवडिए कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अवसेसेहिं वण्णगंधफासपज्जवेहिं छट्ठाणवडिए से तेणट्ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ—जहन्नगुणकालयाणं पोग्गलाणं अणंता पज्जवा पण्णत्ता । एवं उक्कोसगु

॥ अ० ॥

न ? गौतम ! जघन्यगुणकालक पुद्गलो जघन्यगुणकालकस्य पुद्गलस्य द्रव्यार्थतया तुल्यः प्रदेशार्थतया षट्स्थानपतितो ऽवगाहनार्थतया चतुःस्थानपतितः स्थित्या चतुःस्थानपतितः कालवर्णपर्यवै स्तुल्यो ऽवशिष्टैर्वर्णगन्धरसस्पर्शपर्यवैः षट्स्थानपतित स्तत्केनार्थेन ? गौतम ! एवमुच्यते-जघन्यगुणकालकानां पुद्गलानामनन्ताः पर्यवाः प्रज्ञप्ताः । एवमुत्कर्षगुणकालकोपि, अजघन्यानुत्कर्षगुणकालको प्येवञ्चैव नवरं स्वस्थाने षट्स्था

॥ भाषा ॥

वडिए । वर्णादि ८ स्पर्शने पर्याये छस्थानपतित हुवै । जहन्नठिईयाणं भंते पुग्गलाण पुच्छा गोयमा । जघन्य स्थितिना पुद्गलनें केतला पर्याय प्र० उत्तर हे गौतम । अणंताप० सेकेणट्ठेणं गोयमा । अनन्तापर्याय ते इम हे गौतम । जहण्णठिईए पुग्गल जहण्णठिईयस्स पुग्गलस्स । जघन्य स्थितिना पुद्गल जघन्य स्थितिनां पुद्गलनें । दव्वट्ठयाए तुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए । द्रव्यार्थेंसरीषाछै प्रदेशार्थे छस्थानपतित हुवै । उग्गाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतित हुवै । ठिईए तुल्ले वण्णादि अट्ठफासपज्जवेहिय छट्ठाणवडिए । स्थितिकरी सरीषा वर्णादि ८ स्पर्शने पर्याये छस्थानपतितहुवै । एव उक्कोसठिईएवि । इम उत्कृष्ट स्थितिना पिण । अजहण्णमणुक्कोसठिईएवि । एवंचेव नवरं ठितीए चउट्ठाणवडिए । अजघन्य अनुत्कृष्ट स्थिति पिण । इमज ए विशेष स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हुवै । जहण्णगुणकालयाणं भंते पुग्गलाण केवइयापज्जवा प० गोयमा । जघन्य गुणकालना केतलापर्याय कह्या हे गौतम । अणताप० सेकेणट्ठेणं भंते प० गोयमा । अनन्तापर्याय तेमाटे इम कह्यो हे गौतम । जहण्णगुणकालएपुग्गले । जघन्य गुणकालना पुद्गल । जहन्नगुणकालगस्स पुग्गलस्स । जघन्यगुणकालनां पुद्गलनें । दव्वट्ठयाएतुल्ले पएसट्ठयाए छट्ठाणवडिए । द्रव्यार्थेंसरीषाछै प्रदेशार्थे छस्थानपतित हुवै ।

णकालएवि अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव नवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । एवं जहा कालवण्णपज्जवाणं वत्तव्वया भणिया तहा सेसाणवि वण्णगंधरसफासाणं वत्तव्वया भाणियव्वा , जाव अजहन्नमणुक्कोसलुक्खे सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । सेत्तं रूवि अजीवपज्जवा, सेत्तं अजीवपज्जवा । इति पन्नवणाए विसेसपयं समत्तं ॥ ५ ॥ बारसचउवीसाइं संतरयंएगसमयकालोय उवट्टणपरूवियाउयअट्ठेवचउग

नपतितः । एवं यथाकालवर्णपर्य्यवाणां वक्तव्यता भणिता तथैव शेषाणामपि वर्णगन्धरसस्पर्शानां वक्तव्यता भणितव्या यावदजघन्योत्कर्षरूक्षः स्वस्थाने षट्स्थानपतितः । समाप्ताः रूप्यजीवपर्य्यवाः, समाप्ता अजीवपर्य्यवाः ॥ इति श्रीमद्वाचकोपाध्याय रामचन्द्रगणिविनेयेन भानकचन्द्रेण विरचिते श्रीप्रज्ञापनानुवादे पञ्चमं विशेषपदं समाप्तम् ॥ ५ ॥ द्वादश च चतुर्विंशतिः सान्तरमेकसमये कुतश्चो । द्वर्त्त

ठगाहणट्ठयाए चउट्ठाणवडिए । अवगाहनार्थे चतुःस्थानपतितहवै । ठिईए चउट्ठाणवडिए । स्थितिकरी चतुःस्थानपतित हवै । कालवण्णपज्जवेहिं तुल्ले अब्भसेहि वण्णगंधरसफासपज्जवेहि छट्ठाणवडिए । कालवर्णन पर्यायें सरीषा थाकवा । वर्णगन्धरस स्पर्शन पर्यायेकरी छस्थानपतित हुवे । सेतेणट्ठेणं प० गोयमा । तेमाटे इम हे गौतम । जहन्नगुणकालगाणं पुग्गलाणं । अणंतापज्जवा प० एव उक्कोसगुणकालएवि । जघन्य गुणकालना पुद्गलनें । अनन्तापर्याय कह्या इम उत्कृष्टगुणकालना पिण । अजहन्नमणुक्कोसगुणकालएवि एवंचेव णवरं सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । अजघन्य अनुत्कृष्ट गुणकालना पिण इम होज ए विशेष स्वस्थाने छस्थानपतित हुवै । एवं जहा कालवण्णपज्जवाणं वत्तव्वया भणिया । इम जघन्य कालवर्णना पर्यायनें वक्तव्यता कही । तिम सेसाणवि वण्णगंधरसफासाणं वत्तव्वयाभा० । तिम होज थाकता वर्णगन्धरसस्पर्शनी वक्तव्यता कहवी । जाव अजहन्नमणुक्कोसलुक्खे सट्ठाणे छट्ठाणवडिए । जांलगें अजघन्य अनुत्कृष्ट लूख स्वस्थाने छस्थानपतित हुवै । सेत्तंरूवी अजीवपज्जवा । एसवणाए भगवईए पंचमपयं समत्तं ॥ इहां सर्वपर्याय मति अनुसारे कहिवा । इति रूपी अजीवना पर्याय कह्या प्रज्ञापना भगवती अथमें पांचमो पद पर्याय विशेष समाप्त थयो ॥ ५ ॥ बारसच

इति श्रीमलयगिरिविरचितायां विशेषाख्यं पंचमंपदं समाप्तम् ॥ ५ ॥ तदेवं व्याख्यातं पंचमंपदं । संप्रति षष्ठ मारभ्यते-तस्यचा ऽय मभिसम्बन्धः इहानन्तरपदे औदयिकक्षयोपशमिकक्षायिकभावाश्रय पर्यायपरिमाणावधारणं प्रतिपादित मिहत्वौदयिकाः क्षायोपशमिक विषयाः सत्वानामुपपातविरहादय श्चिन्त्यन्ते, तत्रा ऽऽदौ इय मऽधिकारसंग्रहणिगाथा-बारसचउवीसाइं इत्यादि ॥ प्रथमंगतिषु सामान्यत उपपा तविरहोद्वर्त्तनाविरहस्य च द्वादशमुहूर्त्ताः प्रमाण वक्तव्यं तदनन्तरं नैरयिकादिषु भेदेषू पपातविरहस्यो द्वर्त्तनाविरहस्य चतुर्विंशतिमुहूर्त्ता गतिषु प्रत्येकमादौ वक्तव्याः ॥ ततः सांतरमिति ॥ सांतरं नैरयिकादय उत्पद्यन्ते निरन्तरं चतिवक्तव्यं तदनन्तरं एकसमयेन नैरयिकादयः प्रत्येकं कति उत्पद्यन्ते

॥ टीका ॥

रिसा ॥ १ ॥ निरयगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं बारसमुहुत्ता । तिरियगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा !

॥ मूल ॥

नपारभविकायुष्क चाष्टावेवाकर्षाः ॥ १ ॥ नरकगति र्भदन्त ! कियन्तङ्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैकंसमय मुत्कर्षतो द्वादश मुहूर्त्ताः ? तिर्यग्गति र्भदन्त ! कियन्तङ्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैकंसमय मुत्कर्षतो द्वादशमुहूर्त्ताः । मनु ष्यगतिर्भदन्त ! कियन्तङ्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ता गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतो द्वादशमुहूर्त्ताः । देवगति र्भदन्त ! कियन्तङ्काल

॥ प्र० ॥

उवौमायअंतरयंगसमयंकत्तोय उव्वट्टणपरभवियाउयचऊहुवआगरिसा ॥ १ ॥ १२ मुहूर्त्त समान्यपणे विरह विरह २४ मुहूर्त्तनो इम आंतरो इमसमय पिण थोडानइवे । इम गतिसघले कहिवो उद्वर्त्तनाजिहांथी ॥ १ ॥ ऊपजनारको आश्रिपरभवनो आ उपो किमबांध उत्कृष्टो आउपो ए ८ बोलकहिवा। निरयगईणं भंते केवइयकाल विरहिया उववाएण पण्णत्ता गोयमा । सामान्यपणें नरकगति आश्री हे भगवन् केतलाकालनो विरह ऊपजावनो कह्यो छतले केतलोकोईनारको उपजे नही हे गौतम । जहन्नेण एगसमय उक्कोसेण बारसमुहुत्ता । जघन्ये समयें १ समयकोईनारको न ऊपजेतो १२ मुहूर्त्त लगे कोईनारको न ऊपजे उत्कृष्ट । तिरियगईणं भंते केवइयंकाल विरहिया उववाएणं पं० गोयमा । तिर्यंचनीगति आश्रीउपजवानो केतलोकालनो

॥ भाषा ॥

कतिचोद्वर्त्तन्ते इति चिन्तनीयं तत: कुत उत्पद्यन्ते नारकादय इति चिन्त्यते ॥ तत्रउवट्टणाइति ॥ नैरयिकादय उद्वृत्ता संतः कुत्रोत्पद्यन्ते इति वक्तव्यं, तदनन्तरं कतिभागाऽवशेषेऽनुभूयमाननवसुषि जीवाः पारभविकमायु बध्नन्तीति वक्तव्यं, तथा अतिसिष्टार्थे सूत्रकर्षत आयुर्बन्धका इति चिन्तायां सप्तौ आकर्षा वक्तव्याः, एषः संग्रहणिगाथासंक्षेपार्थः, यतमवक्रमेण विवरीषुराह-नेरइयगईणं भंते ! केवइयंकालं विरहिया उववाएण पन्नत्ता इत्यादि ॥ निरयगतिनाम नरकगतिकर्मोदयजनिता जीवस्य औदयिकोभावः सचैकः सप्तपृथिवीव्यापीचेति एकवचनं सप्तानाञ्च पृथिवीनां

जहण्णेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं बारसमुहुत्ता । मणुयगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगसमयं उक्कोसेणं बारसमुहुत्ता । देवगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगसमय उक्कोसेणं बारसमुहुत्ता । सिद्धिगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिता सिज्झणया पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगंसमयं उक्कोसेणं छम्मासा । निरयगईणं भंते ! केव

विरता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतो द्वादशमुहूर्ताः । सिद्धगति भदन्त ! कियत्कालं विरहिता सिध्यतया प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतः षण्मासाः । नरकगति भदन्त ! कियत्कालं विरहिता उद्वर्त्तन तया प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैकं स

विरह कहा है गौतम । जहन्नेणं एगसमयं उ० बारसमुहुत्ताय । जघन्ये १ समय उत्कृष्टे १२ मुहूर्त्त विरह । मनुष्यगतिने भंते केवइकालं विरहिया उव बाएण प० गो० । मनुष्यगतिने केतलाकालनो उपजवानो विरह छे गौ० । जहन्नेण एगसमयंउक्कोसेण बारसमुहुत्ता । जघन्य१ समय उत्कृष्टे१२ मुहूर्त्त । देवगईएण भंते केवइयंकालं विरहिया उववाएणं पं० गो० । देवगतिआश्री हेभ० केतलाकालनो उपजवानो । जहन्नेणएगसमयं उ० बारसमुहुत्ता । जघन्य १ समय उत्कृष्टे १२ मुहूर्त्त । सिद्धगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया सिझणयाए पं० गोयमा । सिद्धगतिने केतलाकालनो विरह उपजवानो सीझवानो छे गौ० । जहन्नेणंएगसमयं उ० छम्मासा निरयगईण भंते केवइयंकालं विरहिया उव्वट्टणा पं० गोयमा । जघन्ये १ समय उत्कृष्टो ६ मास विवेचववान

परिग्रहः, खमिति वाक्यालङ्कारे' भदंतेति गुर्वामंत्रणे परमकल्याणयोगिन् ॥ केवइयंति ॥ कियन्तं कालं विरहिता शून्या प्रज्ञप्ता उपपातेन उपपतनं उपपातस्तदन्यगतिकानां सत्वानां नारकत्वेनोत्पाद इतिभावः, तेन प्रज्ञप्ता प्ररूपिता भगवता अन्यैश्च ऋषभादिजिनतीर्थकरैः एवं प्रश्नेकृते भगवानाह-गौतम ! जघन्यत एकं समयं यावदुत्कर्षतो द्वादश मुहूर्तान्, अत्र मुग्धप्रेरकआह-नन्वेकस्यामपि पृथिव्यामग्रे द्वादशमुहूर्तप्रमाणउप

॥ टीका ॥

इयं कालं विरहिया उववाएणं प० ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं बारसमुहुत्ता । मणुयगईणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं प० ? गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं बारसमुहुत्ता। एवं देवगइएवि रयणप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा !

॥ मूल ॥

मय मुत्कर्षतो द्वादशमुहूर्ताः । तिर्य्यग्गति भदन्त ! कियन्तङ्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ता ? गौतम ! जघन्येनैकं समयमुत्कर्षतो द्वादशमुहूर्ताः । मनुजगति भदन्त ! कियन्तङ्कालं विरहिता उद्वर्त्तनेन तया ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतो द्वादशमुहूर्ताः । एवं देवगत्यपि । रत्न प्रभापृथिवी नैरयिकाः भदन्त ! कियन्तङ्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षत चतुर्विंशतिमुहूर्ताः । शर्क रप्रभापृथिवीनैरयिकाः भदन्त ! कियन्तङ्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षत सप्त रात्रिंदिवानि । धा

॥ अ० ॥

विरह कहेछे नारकोने चवणाविरह केतलो उद्वर्त्तव ए गौ० । जह० एगसमयं उ० बारसमुहुत्ता । जघन्य १ मुहूर्त्त १२ उत्कृष्टो समय । तिरियगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया उववट्टणा पं० गोयमा । तिर्यंचगतिनें केतलाकालनो विरह चविबानो छे गौ० । जह० एगंसमयउ० बारसमुहुत्ता । जघन्य १ समय उत्कृष्टे । १२ मुहूर्त्त । मणुयगईणं भंते केवइयकालं विरहिया उववट्टणा पं० गो० । मनुष्यगतिनें केतलाकालनो विरहचवणा छेगौ० । जह० एगंसमयं उ० बारसमुहुत्ता । जघन्य १ समय उत्कृष्टे १२ मुहूर्त्त । देवगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया उववट्टणा पं० गोयमा । देवगतिमें केतलाकालनो विरहचवण छे गौतम । जह० एगंसमयं उ० बारसमुहुत्ता द्वारं । जघन्य १ समय उत्कृष्ट १२ मुहूर्त्त इति सामान्यद्वार कह्यो विशेष द्वार कहेछे । रयणप्पभपुढवी

॥ भाषा ॥

पातविरहो न वक्ष्यते चतुर्विंशतिमुहूर्तादिप्रमाणस्य वक्ष्यमाणत्वात्, ततः कथं सर्वपृथिवीसमुदायेऽपि द्वादशमुहूर्तप्रमाणं प्रत्येकमनावे समुदायेऽ
भावादितिन्यायस्य श्रवणात्, तदऽयुक्तं वस्तुतत्त्वापरिज्ञानात्, यद्यपि हि नाम रत्नप्रभादिष्वेकैकनिद्वारेण चतुर्विंशतिमुहूर्तादिप्रमाणउपपात
विरहो वक्ष्यते तथापि यदा सप्तापि पृथिव्यः समुदिता उपेक्ष्योपपातविरहश्चिन्त्यते तदा स द्वादशमुहूर्तप्रमाणएव लभ्यते, द्वादशमुहूर्तानन्तर
मवश्यमन्यतरस्यां पृथिव्यामुत्पादसम्भवा तथा केवलवेदसोपलब्धेः यस्तु प्रत्येकमनावे समुदायेप्यभाव इतिन्यायः स कारणकार्यधर्मानुगमचिन्तायां
नान्यत्रेत्यदोषः। यथा नरकगति द्वादशमुहूर्तानुत्कर्षत उपपातेन विरहिता उक्ता एवं तिर्यग्मनुष्यदेवगतयोऽपि, सिद्धिगतिस्त्वुत्कर्षतः षण्मासा

जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता। सक्करप्पभापुढविणेरइयाणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं सत्त राइंदियाणि। वालुयप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं मासं। पंकप्पभापुढविणेरइयाणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता? गोयमा! जहन्ने

लुकप्रज्ञापृथिवीनैरयिकाः प्रदत्त! कियन्तङ्कालं विरहिताः उपपातेन प्रज्ञप्ताः? गौतम! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतो ऽर्द्धमासं। पङ्कप्रज्ञा
पृथिवीनैरयिकाः प्रदत्त! कियन्तङ्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः? गौतम! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतो मासं। धूमप्रज्ञापृथिवीनैरयिका

नेरइयाण भंते केवइयकाल विरहिया उववाएण प० गोयमा। रत्नप्रभानानारकोनो केटलो जघन्यनो विरह कह्यो छे गौतम। जह० एगंसमय उ०
चउवीसमुहुत्ता। जघन्य १ समय उत्कृष्टो २४ मुहूर्त। सक्करप्पभपुढवीनेरइयाणं भंते केवइयंकाल विरहिया उववाएणं प० गोयमा। शर्करप्रभापृथिवी
नानारकोनो केटलो छे भगवन् विरह जपजवानो कह्यो छे गौतम। जह० एगमसमय उ० सत्तराइंदियाइं। जघन्येनो १ समय उत्कृष्ट ७ दिननोविरह
वालुयप्पभपुढवीनेरइयाण भंते केवइयकाल वि० गोयमा। वालुकप्रभानानारकोनो केटलो विरह उपजवानो कह्यो छे गौतम। जह० एगंसमय उ०

नुपपातेन विरहिता, एव मुहूर्त्तनापि नवरं सिद्धा नो इत्यन्ते तेषां साद्यपर्यवसितकालतया शाश्वतत्वादिति सिद्धि मुहूर्त्तनया विरहिता वक्तव्या, गतं प्रथमद्वारं। इदानीं चतुर्विंशतिरिति द्वितीयं द्वारमभिधित्सुराह-इमीसे णं रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता इत्यादि ॥ पाठसिद्ध ' नवरमत्रोत्कर्षविगया इमा संग्रहणिगाथा-चउवीसयमुहुत्ता सत्तयराइंदियाइपक्खोय। मासोयदुगचउरोछम्मासनरएसु ॥ १ ॥ कमसोउक्कोसेणं चउवीसमुहुत्तनवयवासीसु। अविरहियापुढवाई विगलाणंतोमुहुत्तंतु ॥ २ ॥ संमुच्छिमतिरिपणिंदिय एवचियगब्भवार

॥ टीका ॥

णं एगं समयं उक्कोसेणं मासं। धूमप्पभापुढविणेरइयाणं भंते! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं दोमासा। तमापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं चत्तारिमासा। अहेसत्तमापुढविणेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं छम्मासा।

॥ मूल ॥

भदन्त ! कियत्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षेण द्वौ मासौ। तमप्रज्ञापृथिवीनैरयिका भदन्त ! कियत्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतश्चत्वारोमासाः। अधस्सप्तमापृथिवीनैरयिकाः भदन्त ! कियत्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतः षण्मासाः। असुरकुमाराः भदन्त ! कियत्कालं विरहिता

॥ अ० ॥

अढमास। जघन्य १ समय उत्कृष्ट १५ दिन। पङ्कप्रभापुढवीनेरइयाण भंत केवइयंकालं वि० गोयमा। पंकप्रभानारकोनो केतलो विरह हे गौतम। जह० एगसमयं उ० मास। जघन्य १ समय उत्कृष्टो मास १। धूमप्पभपुढवीनेरइयाणं भंते केवइयकालं वि० गोयमा। धूमप्रभानारकोनो केतलोविरह उपजिवानो हे गौतम। जह० एगसमयं उ० दोमासा। जघन्य १ समय उत्कृष्ट २ मास। तमापुढवीनेरइयाणं भंत केवइयकालं वि० गोयमा। तमापृथिवीनानारकोनै केतलो विरह ऊपजवानो हे गौतम। जह० एगसमय उ० चत्तारिमासा। जघन्य १ समय उत्कृष्टो ४ मास। अहेसत्तमापुढ

॥ भाषा ॥

समुहुत्ता । सम्मुच्छिमगब्भमणुया कमसोचउवीसबारसया ॥ ३ ॥ वणजोइससोहम्मी साणकप्पचउवीसइमुहुत्ताउ । कप्पंसणंकुमारे दिवसाणवयीसइंमु
हुत्ताउ ॥ ४ ॥ माहिंदेराइंदिय बारसदसमुहुत्तबंभलोगंमि । राइंदिअहुतेवी सुलंतएहोंतिपणयाला ॥ ५ ॥ महसुक्कंमिअसई सहस्सारिसयंतउक
प्पदुगे । मासासंखेज्जातह वासासखेज्जउवरिदुगे ॥ ६ ॥ हिट्ठिममज्झिमउवरिम जहसंखसयासहस्सलक्खाइं । वासाणविन्नेउं उक्कोसणंविरहकालो ॥

असुरकुमाराणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एगं समयं उक्को
सेणं चउवीसं मुहुत्ता । एवं नागकुमाराणं सुवण्णकुमाराणं विज्जुकुमाराणं अग्गिकुमाराणं दीवकुमाराणं
उदहिकुमाराणं दिसाकुमाराणं वाउकुमाराणं थणियकुमाराणय पत्तेयं जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसणं चउ
वीसं मुहुत्ता । पुढविकाइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! असुसमयम

उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैक समय मुत्कर्षेत श्चतुर्विंशति मुहूर्त्ताः । एवं नागकुमाराणां सुवर्णकुमाराणां विद्युत्कुमाराणां अग्नि
कुमाराणां द्वीपकुमाराणां उदधिकुमाराणां दिक्कुमाराणां वायुकुमाराणां स्तनितकुमाराणा च्च प्रत्येक ञ्जघन्येनैकं समय मुत्कर्षेत श्चतुर्विं
शतिमुहूर्त्ताः । पृथिवीकायिका भदन्त ! कियत्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौयम ! अनुसमयमविरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ?

वीनेरइयाणं भंते केवइयंकालं वि० गोयमा । नीचे ७ नारकीनो केटलोविरह उपजवानो छे गौतम । जह० एगंसमयं उ० छम्मासा असुरकुमाराणं
भंते केवइयकालं वि० । जघन्य १ समय उत्कृष्ट ६ मासा असुकुमारने छे भगवन् केटलोकालनो विरह । जह० एगंसमयं उ० चउवीसमुहुत्ता । जघन्य
१ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त । नागकुमाराण पुच्छा गोयमा । नागकुमारने पिण छे गौतम । जह० एगंसमयं उ० चउवीसंमुहुत्ता । जघन्य १ समय उ
त्कृष्ट २४ मुहूर्त्त । एवंसुवण्णकुमाराणं विद्युकुमाराणं अग्गिकुमाराणं । इम सुवर्णकुमाराणं विद्युकुमारने अग्निकुमारने । दीवकुमाराणं दिसिकुमारणं ।
द्वीपकुमारने दिशिकुमारने । उदहिकु० वाउकु० थणियकुमाराणय पत्तेयं २ । उदधिकुमारने वायुकुमारने स्तनितकुमारनें प्रत्येकें २ । जहन्नेणंएगंसमयं

॥ टीका ॥
॥ मूल ॥
॥ अ० ॥
॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

विरहियं उववाएणं पन्नत्ता। एवं आउकाइयाणवि तेउकाइयाणवि वाउकाइयाणवि वणस्सइकाइयाणवि अणुसमयविरहिया उववाएणं प० । बेइंदियाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पन्नत्ता ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । एवं तेइंदिया य चउरिंदिया य । सम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं अंतोमुहुत्तं । गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं

॥ अ० ॥

एव मप्कायिका स्तेजस्कायिका वायुकायिका अपि वनस्पतिकायिका अपि अणुसमयमविरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः । द्वीन्द्रियाः भदन्त ! कियन्तंकालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्तं । एवं त्रीन्द्रिया श्चतुरिन्द्रिया श्च' सम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकानां भदन्त ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतो ऽन्तर्मुहूर्तम् । गर्भव्युत्क्रान्तिक पञ्चेन्द्रिय तिर्यग्योनिकाः भदन्त ! कियन्तंकाल विरहिता

॥ भाषा ॥

उ० बारससमइत्ता । जघन्ये १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त । पृथ्वीकाइयाण भंत केवइयकालं वि० गोयमा । पृथ्वीकायने हे भगवन् केटलो विरह ऊपजवानो हे गौतम । अणुसमयविरहिय उववाएण प० । अनुसमयविरह एटले १ समयमात्र विरह विना ऊपजता कह्या । एवं आउकाइयाणवि । इम छोज अप्काय विष । तेउकाइयाणवि वाउकाइयाणवि वणस्सइकाइयाणवि । तेजस्काय पिण वायुकाय पिण । वनस्तिकाइयाने पिण । अणुसमयं अविरहियं उववाएणं प० । समयविना ऊपजिवानो विरह कह्यो । बेइंदियाण भंत केवइयकालं वि० गोयमा । बेंद्रियने हे भगवन् केटलो विरह ऊपजिवानो हे गौतम । जह० एगसमय उ० अंतोमुहुत्ता । जघन्ये १ समय उत्कृष्टा अंतमुहूर्त । एवं तेइंदिया चउरिंदियाणवि । इम तेंद्रियने चौरिंद्रियने पिण इमहीज । सम्मुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्खजोणियाण भंते केवइयकालं वि० गोयमा । सम्मुच्छिमपंचेंद्रियतिर्यंचने केटलाकालनो विरह ऊपज वानो कह्यो हे गौतम । जह० एगसमय उ० अंतोमुहुत्तं । जघन्य १ समय उत्कृष्टे अंतमुहूर्त । गब्भवक्कंतिय पंचिंदियतिरिक्खजोणियाण भंते केवइयकाल वि० गोयमा । गर्भजपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनियान केटलोकाल विरह ऊपजवानो कह्यो हे गौतम । जह० एगसमय उ० बारसमुहुत्ता । जघन्य १ समय

णंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा । जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता । सम्मुच्छिम मणुस्साणं णंते ! केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं चउवीसं मुहुत्ता । गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं बारस मुहुत्ता । वंतराणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं चउवीसं मुहुत्ता । जोइसियाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं चउवीसं मुहुत्ता । सोहम्मकप्पदेवाणं णंते !

---

उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समयं मुत्कर्षतो द्वादशमुहूर्ताः । सम्मूर्च्छिममनुष्याः णदन्त ! कियन्तङ्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षत श्चतुर्विंशतिर्मुहूर्ताः । गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतो द्वादशमुहूर्ताः । व्यन्तराणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षत श्चतुर्विंशतिर्मुहूर्ताः । ज्योतिष्काणां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकं समयमुत्कर्षेण चतुर्विंशति र्मुहूर्ताः । सौधर्मकल्पदेवाः णदन्त ! कियन्तङ्कालं विरहिता उपपातेन प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षत श्चतु

उत्कृष्टे १२ मुहूर्त्त । सम्मूच्छिम मनुष्याण भंते केवतियं काल वि० गोयमा । जह० एगंसमय उ० चउवीसं मुहूत्ता । जघन्ये १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त । गर्भव्युत्क्रांतिय मणुस्साणं भंते केवइयं काल वि० गोयमा । गर्भजमनुष्यनें केटलाकालनो विरह उपजवानो हे गौतम । जह० एगंसमय उ० बारसमुहुत्ता निंतराणं पुच्छा गोयमा । जघन्य १ समय उत्कृष्ट १२ मुहूर्त्त व्यंतरनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगंसमय उ० चउवीसमुहूत्ता जोइसियाण पुच्छा गोयमा । जघन्य १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त जोतिष देवनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगंसमय उ० चउवीसमुहूत्ता । जघन्ये १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त । सोहम्मकप्पदेवाण भंते केवइयं कालं वि० गोयमा । सौधर्मकल्पदेवतानो विरह उपजवानो प्र० उत्तर हे गौतम । जहन्नेणं एगंसमयं उ० चउवीसमुहूत्ता । जघन्य १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त । ईसाणकप्पदेवाणं पुच्छा गोयमा । ईशानकल्पे देवनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगंसमय उ० चउ

केवइयं कालं विरहिया उववाएणं पण्णत्ता, गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता । ईसाणे कप्पे देवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समएणं उक्कोसेणं चउव्वीसं मुहुत्ता । सणंकुमारदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं नव राइंदिय वीसमुहुत्ताइं । माहिंददेवाणं पुच्छा, ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं बारस राइंदियाइं दसमुहुत्ताइं । बंभलोए देवाणं पुच्छा, ? गोयमा ! जहण्णेणं इक्कं समयं उक्कोसेणं अट्ठतेवीसं राइंदियाइं । लंतगदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं एगं समयं उक्कोसेणं पणयालीसं राइंदियाइं । महासुक्कदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं इक्कं स

विंशतिर्मुहूर्ताः । ईसाने कल्पे देवानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षेण चतुर्विंशतिर्मुहूर्ताः । सनत्कुमाराणां देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतो नवरात्रिं दिवानि विंशतिर्मुहूर्ता श्च । माहेन्द्रकल्पे देवानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतो द्वादश रात्रिंदिवानि दशमुहूर्ताश्च । ब्रह्मलोके देवानां पृच्छा' गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षत स्सार्द्ध त्रयो विंशतिरात्रिंदिवानि । लान्त

वीसमुहुत्ता । जघन्य १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त । सणकुमारकप्पेदेवाणं पुच्छा गोयमा । सनत्कुमारना देवनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगंसमयं उ० णवराइंदियाइं वीसाइं मुहुत्ताइं । जघन्ये १ समय उत्कृष्ट ९ दिनकेवली २० मुहूर्त्त । माहेंदकप्पे देवाण पुच्छा गोयमा । माहेंद्रकल्पे देवनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगसमयं उ० बारस राइंदियाइं दसमुहुत्ताइं । जघन्य १ समय उत्कृष्ट १२ दिन उपरि १० मुहूर्त्त । बभलोए देवाण पुच्छा गोयमा । ब्रह्मलोकना देवनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एग समय उ० अट्ठतेवीसं राइंदिवाइं । जघन्य १ समय उत्कृष्ट साढा २२॥ दिननो विरह। लांतगे कप्पे देवाणं पुच्छा गोयमा । लांतके देवनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगसमयं उ० पणयालीसं राइंदियाइं । जघन्य १ समय उत्कृष्ट ४५ दिन । महासुक्केदेवाण पुच्छा गोयमा । महाशुक्रे देवनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगसमयं उ० असीइं राइंदिवाइं । जघन्ये १ समय उत्कृष्ट ८० अहोरात्रिनो ।

॥ सूत्र ॥

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

समयं उक्कोसेणं असीतिराइं दियाइं । सहस्सारदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं इक्कं समयं उक्कोसेणं राइंदिय सतं । आणयदेवाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहन्नेणं इक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जमासा । पाणय देवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जमासा । आरणदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जवासा अच्चुयदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जवासा । हेट्ठिमगेविज्जाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं इक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससयाइं ।



कदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकं समयं मुत्कर्षतः पञ्चचत्वारिंसत् रात्रिंदिवाः । महाशुक्रदेवानांपृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकंसमयमुत्कर्षतो ऽसीतीरात्रिंदिवसाः । सहस्रारदेवानांपृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकंशामय मुत्कर्षतस्सतरात्रिंदिवानि । आनतदेवानांपृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतस्संङ्खातमासाः प्राणतदेवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षत स्संङ्खातमासाः । आनत देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैक समय मुत्कर्षत स्संख्यातवर्षाः । अच्युतदेवानां पृच्छा, गौ० ! जघन्येनैक समयमुत्कर्षतस्संङ्खातदिवसाः । अधस्तनग्रैवेयकानां



सहस्रार देवाणं पुच्छा गोयमा । सहस्रार देवनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगमसमयं उ० सयराइं दियाइं । जघन्य १ समय उत्कृष्ट सौदिननी । आणदेवाण पुच्छा गोयमा । आनतदेवनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगमसमय उ० संखिज्जमासापाणएदवाणं पुच्छा गोयमा । जघन्य १ समय उत्कृष्ट संख्यातमास विरह प्राणतदेवनो प्र० उत्तर उत्तर हे गौतम । जह० एगसमयं उ० संखिज्जमासा । जघन्य १ समय उत्कृष्ट संख्यातमास । आरणदेवाण पुच्छा गोयमा । आरणदेवलोकनो प्र० उत्तर । जह० एगसमय उ० संखिज्जवासा । जघन्य १ समय उत्कृष्टे संख्यातावर्ष । अच्चुयदेवाण पुच्छा गोयमा । अच्याकल्प देवनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगसमय उ० संखिज्जवासा । जघन्य १ समय उत्कृष्टे संख्यातावर्ष । हिट्ठमगेविज्जाण पुच्छा गोयमा । हेठला ग्रैवेयकनो प्र० उत्तर हे गौतम । जह० एगसमय उ० संखिज्जावाससयाइं । जघन्य १ समय उत्कृष्टो संख्यातावर्षना सहेकडा । मज्झिमगेवि

मज्झिमगेविज्जाणं पुच्छा, गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससहस्साइं । उवरिमगे विज्जाणं पुच्छा, गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं संखेज्जाइं वाससयसहस्साइं । विजय १ वेज यंत २ जयंत ३ अपराजियदेवाणं पुच्छा, गोयमा । जहन्नेणं एक्कं समयं असंखेज्जं कालं सव्वट्ठसिद्धदेवाणं पुच्छा, गोयमा । जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं पलिओवमस्स संखेज्जइभागं सिद्धाणं भंते । केवइयं कालं विरहिया सिज्झणयाए पण्णत्ते ? गोयमा । जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासा । रयणप्पभापुढवी



पृच्छा, गौ० ! जघन्येनैकं समयमुत्कर्षतस्सङ्ख्यातानिवर्षसतानि । मध्यमग्रैवेयकानांपृच्छा' जघन्येनैकं समयमुत्कर्षतस्सङ्ख्यातानिवर्षसहस्राणि । उपरिमग्रैवेयकानां पृच्छा, गौ० ! जघन्येनैक समय मुत्कर्षतस्सङ्ख्यातानि वर्षसहस्राणि विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित देवानां पृच्छा, गौ० ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतो ऽसङ्ख्यातङ्कालं । सर्वार्थसिद्ध देवानां पृच्छा, गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतः पल्योपमस्य सङ्ख्यातंभाग । सिद्धा नां भदन्त ! कियन्तङ्कालं विरहिताः सिद्धगयाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षतः षण्मासाः । रत्नप्रभापृथिवी नैरयिकाणां भद



ग्रैवेयकदेवाणं पुच्छा गोयमा । मध्यमग्रैवेयकदेवनो प्रश्न उत्तर हे गौतम । जह० एगसमय उ० । जघन्ये १ समय उत्कृष्टे । संखेज्जवाससहस्साइं । उवरिमगे विज्जगदेवाणं पुच्छा गोयमा । संख्यातावर्षना सहस्र उपरिलाग्रैवेयकनो प्रश्न उत्तर हे गौतम । जह० एगंसमयं उ० संखेज्जवाससयसहस्साइं । जघन्य १ समय उत्कृष्ट संख्यातावर्षना लाखवरस उपजवानो । विजयवैजयतजयंत । विजय वैजयत जयत अपराजिय देवाणं पुच्छा गोयमा । अपराजितना देवनो प्रश्न उत्तर हे गौतम । जह० एगंसमय उ० असंखिज्जकाल । जघन्य १ समय उत्कृष्टे असंख्यातोकाल । सव्वट्ठसिद्धगदेवाणं भंते केवइयकालं विर हिया उववाएणं पं० गोयमा । सर्वार्थसिद्धना देवना केटलाकालनो विरह उपजवानो प्रश्न उत्तर हे गौतम । जह० एगंसमयं उ० पलिओवमस्स संखि ज्जइभागं । जघन्य १ समय उत्कृष्ट पल्योपमना असंख्यातमो भाग । सिद्धाणं भंते केवइयंकालं विरहिया सिझणया पं० गोयमा । सिद्धनो हेभगवन् केट

णेरइयाणं भंते ! केवइयं कालं विरहिया उव्वट्टणाए पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं चउवीसं मुहुत्ता एवं सिद्धवज्जा उव्वट्टणावि भाणियव्वा जाव अणुत्तरोववाइयत्ति, नवरं जोइसियवेमाणिएसु चयणंति अभिलावो कायव्वो । दारं । णेरइयाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति, ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति तिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति । मणुसाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उव

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

---

ल्ल ! कियन्तङ्कालं विरहिता उद्वर्त्तना प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! जघन्येनैकं समय मुत्कर्षत श्चतुर्विंशतिर्मुहूर्त्ताः । एवं सिद्धवर्जा उद्वर्त्तनापि भणित व्याः, यावदनुत्तरोपपात इति, नवरं ज्योतिष्क वैमानिकेषु च्यवनं अभिलापः कर्त्तव्यः । नैरयिकाणां भदन्त ! किंसान्तर मुत्पद्यन्ते निरन्तर म्वा उत्पद्यन्ते ? गौतम ! सान्तरमपि उत्पद्यन्ते, निरन्तरमपि उत्पद्यन्ते । तिर्य्यग्योनिकाः भदन्त ! किं सान्तर मुत्पद्यन्ते निरन्तरम्वोत्पद्य न्ते ? गौतम ! सान्तरमुत्पद्यन्ते निरन्तर मप्युत्पद्यन्ते । मनुष्याः भदन्त ! किं सान्तर मुत्पद्यन्ते निरन्तरम्वाउत्पद्यन्त ? गौतम ! सान्तरम

---

लोविरह सोभवानो कह्यो प्रश्न उत्तर हे गौतम । जहन्नेणं एगसमयं उ० छमासा । जघन्य १ समय उत्कृष्टो छमास । रयणप्पभपुढवीनेरइयाणं भंत केवइयकाल विरहिया उव्वट्टणा प० गोयमा । रत्नप्रभाना नारकीनो केतला कालना विरहउविवानो कह्यो प्रश्न उत्तर हे गौतम । जह० एगंसमयं उ० चउवीसंमहुत्ता । जघन्ये १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त । एवं सिद्धवज्जाउव्वट्टणावि भा० जाव अणुत्तरोववाइयेति । इम सिद्धवर्जीने सिद्धनेचविवो नथी ते माटे वर्जी बोलाने सर्वने इम कहिवो जोलगे अनुत्तरवासी देवता तांलगे ए विशेष । णवर जोयसियवेमाणीए सचयंति अभिलावोकायव्वो दारं । जो तिषी वैमानिकने चविवानोवचने अधिकोलापकहीए २ हितोयद्वार । ६ । २ । नेरइयाणं भंते किं सतर ववज्जंति निरंतरं उ० गोयमा । नारकीने हे भगवन् आंतरासहित उपजे प्रश्न उत्तर हे गौतम । संतरंपिउववज्जंति निरंतरंपि उ० तिरिक्खजोणियाणं भंते किं सांतरं उ० । आंतरासहित उपजे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

वज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति । देवाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति । रयणप्पभा पुढविनेरइयाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति । एवं जाव अहे सत्तमाए संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति । असुरकुमाराणं भंते ! देवाणं किं संतरं

॥ अ० ॥

पि उत्पद्यन्त निरन्तरमपि उत्पद्यन्ते । देवाः भदन्त ! किंसान्तरमुत्पद्यन्ते निरन्तरं वोत्पद्यन्ते ? गौतम ! सान्तरमप्युत्पद्यन्ते निरन्तरमप्युत्पद्यन्ते । रत्नप्रभापृथिवीनैरयिका भदन्त ! किं सान्तरमुत्पद्यन्ते निरन्तरमुत्पद्यन्ते ? गौतम ! सान्तरमुत्पद्यन्ते निरन्तरमुत्पद्यन्ते, एवं यावदधः सप्तमपृथिवीनैरयिकाः सान्तरमप्युत्पद्यन्ते निरन्तरमप्युत्पद्यन्ते । असुरकुमारा भदन्त ! देवाः किं सान्तरमुत्पद्यन्ते निरन्तरमुत्प

॥ भाषा ॥

अंतरा विना पिण उपज तिर्यंचनोनियाजीअंतरा सहित उपजे छे । निरंतर उ० गोयमा सांतरपि उ० निरंतरपि उ० । अंतराविना उपज किं हे गौतम अंतरासहित पिण अंतरारहित पिण उपजे । मनुष्याण भंते किं सांतर उ० निरंतरं उ० गोयमा । मनुष्य हे भगवन् किम सहित अंतरे उपजे अंतरा विना उपजे छे गौतम । सांतरपि उ० निरंतरपि उ० । अंतरासहित पिण अंतरारहित पिण उपज । देवाणं भंते किं सांतरं उ० निरंतर उ० गोयम । देवता किं अंतरासहित उपजे अंतरा विना उपजे छे गौतम । सांतरपि उ० निरंतरपि उ० । सहित अंतरे पिण अंतरे विना पिण उपजे । रत्नप्रभापृथ्वीनैरयिक भंते किं सांतरं उ० निरंतरं उ० गोयमा । रत्नप्रभानारकी अंतरासहित उपजे किं अंतर रहित उपजे हे गौतम । सांतरपि उ० निरंतरपि उ० । अंतरासहित पिण अंतररहित पिण उपजे इम जाणवुं । एवं जाव अहे सत्तमाए सांतरपि उ० निरंतरपि उ० । नीचे सातमीनरक तां लगे कहेवो अंतरासहित पिण अंतररहित पिण । असुरकुमाराण भंते देवाणं किं सांतरं उ० निरंतरं उ० गोयमा । असुरकु

उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति । एवं जाव थणिय कुमारा संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति । पुढवीकाइयाणं भंते ! पुच्छा, किं संतरं निरंतरं उववज्जंति ? गोयमा ! नो संतरं निरंतरं उववज्जंति । एवं जाव वणस्सइकाइया नो संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति । बेइंदियाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति ? गोयमा ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति । एवं जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया । मणूसाणं भंते ! किं संतरं उववज्जंति निरंतरं उववज्जंति ?

---

द्यन्ते ? गौतम ! सान्तरमपि निरन्तरमप्युत्पद्यन्ते, एवं यावत्स्तनितकुमाराः सान्तरमपि निरन्तरमप्युत्पद्यन्ते । पृथिवीकायिकानां भदन्त ! पृच्छा, गौतम ! नो सान्तरं निरन्तरमुत्पद्यन्ते, एवं यावद्वनस्पतिकायिका नो सान्तरं निरन्तरमुत्पद्यन्ते । द्वीन्द्रिया भदन्त ! किं सान्तरमुत्पद्यन्ते निरन्तरमुत्पद्यन्ते ? गौतम ! सान्तरमप्युत्पद्यन्ते निरन्तरमप्युत्पद्यन्ते, एवं यावत्पञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकाः । मनुष्याः भदन्त ! किं सान्तरमुत्पद्यन्ते निरन्तरमुत्पद्यन्ते ? गौतम ! सान्तरमप्युत्पद्यन्ते निरन्तरमप्युत्पद्यन्ते । एवं वानव्यन्तरज्योतिष्काः । सौधर्मईसान

---

मार किं आंतरेसहित उपजे पिण आंतरारहित पिण उपजे हे गौतम । सांतरंपि उ० निरंतरंपि उ० । आंतरेरहित पिण सहित पिण । एव जाव थणियकुमारासांतरंपि उ० निरंतरंपि उ० । इम जांलगे स्तनितकुमार तांलगे सर्व इम हीज कहिवो आंतरासहित पिण रहित पिण । पुढवीकाइयाणं भंते किं सांतरं उ० निरंतरं उ० गोयमा । पृथिवीकायने हे भगवन् आंतरेसहित उपजे आंतरेविना हे गौतम । नोसांतर उ० निरंतर उ० एव जाव वणस्सइकाइया नोसांतर उ० निरंतर उ० । नही आंतरसहित नही आंतरेरहित उ० इम जांलगे पंचेंद्रियतिर्यंच तांलगे कहिवो आंतराविना उपजे । बेइंदियाणं भंते किं सांतरउ० निरंतरं उ० गोयमा । बेन्द्रियने हे भगवन् आंतरेसहित उपजे कि आंतरेविना हे गौतम । सांतरंपि उ० निरंतरंपि० एव जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिया । आंतरसहित पिण आंतरेविना पिण उपजे इम जांलग पंचेंद्रियतिर्यंच तांलगे कहिवो । मणुस्साणं भंते किं सांतरं उ० नि-

गो० ! संतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति एवं वाणमंतरजोइसिया । सोहम्म ईसाण सणंकुमार माहिंद बंभलोय लंतग महासुक्क सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुय हिट्ठिमगेविज्जग मज्झिमगेविज्जा उवरिमगे विज्ज विजय वेजयंत जयंत अपराजिय सव्वट्ठसिद्ध देवाय संतरंपि उववज्जंति २ । सिद्धाणं भंते ! किं संतरं सिज्झंति २ ? गोयमा ! संतरंपि सिज्झंति निरंतरंपि सिज्झंति । णेरइयाणं भंते ! किं संतरं उव्वट्टंति निरंतरं उव्वट्टंति ? गोयमा ! संतरंपि उव्वट्टंति २ । एवं जहा उववाइए भणिए तहा उव्वट्टणावि सिद्धवज्जा जा

---

सनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोकलान्तकमहाशुक्रकसहस्रारआनत प्राणत आरण अच्युत अधस्तन ग्रैवेयक मध्यम ग्रैवेयक उपरिमग्रैवेयक विजय वैजयन्त जयन्त अपराजित सर्वार्थसिद्ध देवाः सान्तरमप्युत्पद्यन्ते निरन्तरमप्युत्पद्यन्ते । सिद्धाः भदन्त । सान्तरं सिद्धिस्थानं प्राप्नुवन्ति निरन्तरम्वा ? गौतम ! सान्तरमपि सिध्यन्ति निरन्तरमपि सिध्यन्ति । नैरयिका भदन्त । किं सान्तरमुद्वर्त्तन्ते निरन्तरमुद्वर्त्तन्ते ? गौतम !

---

रं उ० गोयमा । सांतरंपि उ० निरंतरंपि उ० । आंतरसहित पिण निरन्तर पिण उपजे । एव वाणमंतरजोयांमया । इम ज्योतिषी सोहम्मीयाणसणंकुमार माहेंदबभलोयलांतग । मसामुक्कसहस्सार आणयपाणय । सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेंद्र ब्रह्मेंद्र लांतक । महाशुक्र सहस्रार आनत प्राणत । आरणाच्युतहिट्ठिमगेविज्जमज्झिमगेविज्जग उवरिमगेविज्जग । आरण अच्युत हेठिलाग्रैवेयक विचिलाग्रैवेयक उपरिलाग्रैवेयक । विजयवैजयंतजयंत । विजय वैजयंत जयंत । अपराजित सव्वट्ठसिद्धदेवासांतरंपि उववज्जंति निरंतरंपि उववज्जंति । अपराजित सर्वार्थसिद्धलगे आंतरासहित पिण ऊपजे आंतरेविना पिण ऊपज । सिद्धाण भंते किं सांतरंसिझंति । सिद्धनें हे भगवन् आंतरासहित सीझे । के निरंतर सिझंति गोयमा सांतरंपि सिझंति । आंतरविना सीझे हे गौतम आंतरासहित सीझे । नेरइयाणं भंते किं सांतरं उववट्टंति निरंतरं उ० गोयमा । नारकी मांहि हे भगवन् आंतरासहित चवे कि आंतराविना हे गौतम । सांतरंपि उववट्टंति निरंतरंपि उ० एव । आंतरासहित चवे आंतरावना पिण चवे इम । जहाउववाओभणि

याणं भंते ! किं अंतरं उववज्जंति इत्यादि ॥ पाठसिद्धं' प्रागुक्तसूत्रार्थानुसारेण ज्ञातव्यस्य सुप्रतीतत्वात्' गतं तृतीयद्वारम् ॥ इदानीं चतुर्थद्वार

णियव्वा, जाव वेमाणिया नवरं जोइसिय वेमाणिएसु चयणं भाणियव्वो कायव्वो । दारं ३ । णेरइयाणं भंते! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दोवा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखिज्जावा असंखिज्जावा उववज्जंति । एवं जाव अहेसत्तमाए । असुरकुमाराणं भंते! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्को वा दोवा तिन्निवा उक्कोसेणं संखेज्जा असंखेज्जा वा एवं नागकुमारा जाव

सान्तरमप्युत्पद्यन्ते निरन्तरमप्युत्पद्यन्ते । एवं यथा उपपातो भणितस्तथैवात्रापि सिद्धवर्जो भणितव्यः, यावद् वैमानिकाः नवरं ज्योतिष्कवैमानिकेषु च्यवनाऽभिलापः कर्तव्यः । द्वारं ३ । नैरयिकाः भदन्त ! एकस्मिन्समये कियन्त उत्पद्यन्ते ? गौतम ! जघन्येनैको द्वौ वा त्रयो वा, उत्कर्षेण संख्याता असंख्याता वा उत्पद्यन्ते । एवं यावदधस्सप्तमायां । असुरकुमाराः भदन्त ! एकसमये कियन्त उत्पद्यन्ते ? गौतम !

ओ तहा उववाइयाभिसिद्धवज्जा भा० जाव वेमाणीवा णवरं । जिम उपपातो कह्यो तिम चवियो पिण सिद्धवर्जीने कहिवो जावत वैमानिक एतलो विशेष । जोयसियवेमाणीएसुचवणंति अभिलावोभाणियव्वो द्वारं । जोतिषी वैमानिकने चवियवानो आलावो कहिवो इहां उपजवानो चवियवानो मंण्याद र कहेजे ४ चौथो इति । ६ । १ । इहां । नेरइयाणं भंते एगसमएणं केवइया उववज्जंति गोयमा । नारकोने हे भगवन् एकेसमें केव० केतला उपजे हे गौतम । जह० एक्कोवादोवातिन्निवा उक्को० संखिज्जावा । जघन्यो १ । २ । ३ । उपजे उत्कृष्टे संख्याता पिण असंखिज्जावा उववज्जंति एवं जाव अहेसत्तम ए । असंख्याता पिण उपजे इम जावत नीचेसातमीनरक तांलगें कहिवो । असुरकुमाराणं भंते एगसमएणं केवइया उववज्जंति गोयमा असुरमारने हेभ० एकेसमये कतला उपजे हेगो० । जह० एक्कोवादोवातिन्निवा । उक्को०संखिज्जावा असंखिज्जावा । जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टे संख्याता पिण असंख्याता पिण उपजे । एवं नागकुमारा जाव थणियकुमारावि भा० । इम नागकुमार जावत स्तनितकुमार तांलग कहिवो। पुढवीकाइयाण

माह-नेरइयाणं भंते ! एगसमएणं केवइया उववज्जंति इत्यादि ॥ निगदसिद्धं, नवरं वनस्पतिसूत्रे-सट्ठाणुववायं पडुच्च असंखेज्जा अणंता इति ॥ स्वस्थानं वनस्पतीनां वनस्पतित्वं, ततोऽसमर्थ-मन्यनारकवनस्पतय एव वनस्पतिषूत्पद्यमाना श्चिन्त्यन्ते तदा प्रतिसमयमविरहि

॥ टीका ॥

थणियकुमारावि नाणियव्वा । पुढविकाइयाणं भंते ! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! असंखेज्जा समयं अविरहियं असंखेज्जा उववज्जंति । एवं जाव वाउकाइयाणं । वणस्सइकाइयाणं भंते ! एगसमएणं केवइया उववज्जंति ? गोयमा ! सट्ठाणुववायं पडुच्च असंखेज्जा समयं अविरहिया अणंता उववज्जंति । परट्ठाणुववायं पडुच्च असंखेज्जा समयं अविरहिया असंखेज्जा उववज्जंति । बेइंदियाणं भंते ! केवइया एगसमएणं

॥ मूल ॥

जघन्येनैको द्वौ वा त्रयो वा, उत्कर्षेण संख्याता ऽसंख्याता वा । एव नागकुमाराः यावत्स्तनितकुमारा अपि भावितव्याः । पृथिवीकायिकाः भदन्त ! एकस्मिन्समये कतिचो त्पद्यन्ते ? गौतम ! असमयमविरहिता संख्याताउत्पद्यन्ते । एवं यावद्वायुकायिकाः । वनस्पतिकायिका भदन्त ! एकसमयं किियन्त उत्पद्यन्ते ? गौतम ! स्वस्थानोपपातप्रतीत्य असमयमविरहिता अनन्ता उत्पद्यन्ते, परस्थानोपपातं प्रतीत्यासमयमविरहिता असंख्यासा उत्पद्यन्ते । द्वीन्द्रिया भदन्त ! एकसमये किियन्त उत्पद्यन्ते ? गौतम ! जघन्येनैको द्वौवा त्रयोवा, उत्कर्षेण संख्या

॥ अ० ॥

भंते एगसमएणं केवइया उ० गोयमा । पृथिवीकाईया हे भगवन् एकेसमये केतला उपजे हे गौतम । जह० एकोवादोवातिन्नि वा उक्कोसेणं असंख्याता असमयं अविरहियं असंखिज्जा उववज्जंति । जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्ट समयनो विरहविना एक समय २ असंख्याता उपजे । एवं जाव वाउकाईयाणं वण स्सइकाईयाणं भंते एगसमएण के० गोयमा । इम जांलगे वायुकाय तांलगे वनस्पतिकाईया एकेसमयकेतला उपजे हे गौतम । सट्ठाणोववाय पडुच्च अस मयं अविरहिय अणता उववज्जति । स्वस्थाने उपपात आश्रयीने समय २ विरहविना अनन्ता उपजे । परट्ठाणोववाय पडुच्च असमयं अविरहिय असंखिज्जा उववज्जंति । परस्थानकने आश्रयीने समय २ विरहविना असंख्याता उपजे । बेइंदियाणं भंते एगसमएण के० गोयमा । बेइंद्रियने हे भ०

॥ भाषा ॥

तं सर्वकालमऽनंता विज्ञेयाः प्रतिनिगोदमसङ्ख्येयभागस्य निरन्तरमुत्पद्यमानतया उद्वर्त्तमानतया च लभ्यमानत्वात् ॥ परद्वाणुवयायं पहुच्च अणुसम

उववज्जंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एगो वा दोवा तिन्नि वा उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा । एवं तेइंदिय चउरिंदिय सम्मुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणिया गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणिय सम्मुच्छिममणुस्सवाणमंतरजोइसियसोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलोयलंतग सुक्कसहस्सारकप्पदेवा एते जहा णेरइया, गब्भवक्कंतियमणुस्स आणय पाणय आरण अच्चुय गेवेज्जग अणुत्तरोववाइयाय एते जहन्नेणं एक्कोवा दोवा ति

ता असङ्ख्याता वा । एवं त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय सम्मूर्च्छिम पञ्चेन्द्रिय तिर्य्यग्योनिका गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकाः सम्मूर्च्छिममनुष्य वानव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मईशानसनत्कुमारमाहेन्द्रब्रह्मलोक लान्तक शुक्रसहस्रारकल्प देवा एते यथा नैरयिकाः । गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्य आनत प्राणत आरण अच्युत ग्रैवेयका अनुत्तरोपपातिका श्चैते जघन्येनैको द्वौवा त्रयोवा, उत्कर्षेण सङ्ख्याता उत्पद्यन्ते । सिद्धाः भदन्त ! एकसमये कियन्तः सिध्यन्ति ? गौतम ! जघन्येनैकोवा द्वौवा त्रयोवा । उत्कर्षेणाष्टशतं । नैरयिकाः भदन्त ! एकस्मिन्समये कियन्त श्चोद्वर्त्तन्ते ?

एकेसमये केतला ऊपज है गौतम । जह० एकोवादोवातिन्निवा उक्को० संखेज्जावा असंखेज्जावा । जघन्ये १ । २ । ३ । उत्कृष्टे संख्याता असंख्याता उपजे । एवं तेइंदिया चउरिंदिया सम्मुच्छिमपंचेंद्रियतिरिक्खजोणीया । इम तेंद्रिय चउरिंद्रिय सम्मूर्च्छिमपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिक । गर्भवक्कंतियपंचेंदियतिरिक्खजोणिया । गर्भजपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिया । सम्मुच्छिममणुस्सा वाणमंतरजोयसिय सोहम्मासाणसणंकुमारमाहेंद्र । सम्मूर्च्छिममनुष्य वानव्यंतरदेवता ज्योतिषी सौधर्म ईशान सनत्कुमार माहेंद्र । बंभलोयलांतगसुक्कसहस्सारकप्पदेवाएएजहानेरयिया गब्भवक्कंतियमणुस्स । ब्रह्म लांतक शुक्र सहस्रार कल्पदेवलोक जिमनारकी तिमजांणिवा अनगर्भजमनुष्य । आणयपाणय आरणअच्चुयगेविज्जगअणुत्तरोववाइयाए एते । आणत प्राणत आरण अच्युत ग्रैवेयक अनुत्तरवासी एसर्वने । जहण्णेणं एक्कोवादोवातिन्निवा उक्को संखेज्जावा उववज्जंति । जघन्ये १ । २ । ३ । उत्कृष्टे संख्याता उपजे असंख्याता नहीं

॥ टीका ॥
॥ मूल ॥
॥ अ० ॥
॥ भाषा

॥ टीका ॥

यमऽबिरहियमसंखेज्जा इति ॥ परस्थानं पृथिव्यादयः किमुक्तं भवति-यदि पृथिव्यादयः स्वभावादुद्वृत्य वनस्पतिषूत्पद्यमानाश्चिन्त्यन्ते तदा ॥ अ णुसमयविरहियमसंखेज्जा वक्तव्या इति ॥ तथा गर्भव्युत्क्रान्तिका मनुष्य उत्कृष्टपदेपि सङ्ख्येया एव नाऽसंख्येया स्तत स्तत्सूत्रे उत्कर्षतः सङ्ख्येया व क्तव्या आनतादिषु देवलोकेषु मनुष्या एवोत्पद्यन्ते न तिर्यंचोपि मनुष्याश्च सङ्ख्येया एवेत्यानतादिसूत्रेष्वपि सङ्ख्येया एव वक्तव्या नासङ्ख्याः सिद्धगता ना मुत्कर्षतोष्टशतं यावदुद्वर्त्तनासूत्रमपि वक्तव्यं ॥ नवरं जोइसियवेमाणियाणं चयणेणं अभिलावो कायव्वो इति ॥ ज्योतिष्कवैमानिकानां हि स्वभावा

॥ मूल ॥

न्तिरा उक्कोसेणं संखेज्जा उववज्जंति । सिद्धाणं भंते ! एगसमएणं केवइया सिज्झंति ? गोयमा ! जह न्नेणं एक्कोवा दोवा तिन्निवा उक्कोसेणं अट्ठसयं । णेरइयाणं भंते ! एगसमएणं केवइया उवट्टंति ? गो यमा ! जहन्नेणं एक्कोवा दोवा तिन्निवा उक्कोसेणं संखेज्जावा असंखेज्जावा उवट्टंति। एवं जहा उववाउ न्नणिउ तहा उवट्टणावि सिद्धवज्जा नाणियव्वा, जाव अणुत्तरोववाइया नवरं जोइसियवेमाणियाणं च

॥ अ० ॥

गौतम ! जघन्येनैको द्वौवा त्रयोवा, उत्कर्षेण सङ्ख्याता ऽसंख्याता वा उद्वर्त्तन्ते । एवं यथा उपपातो भणित स्तथो द्वर्त्तनाऽपि सिद्धवर्जा भ णितव्याः, यावदनुत्तरोपपातिकाः नवरं ज्योतिष्कवैमानिकानां च्यवनेनाभिलापः कर्त्तव्यः । द्वार ४ । नैरयिका भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ?

॥ भाषा ॥

सिद्धाणं भंते एगसमएण केवइया उववज्जंति गोयमा । सिद्ध हे भगवन् एकेसमयें केतलेजपजे । जह० एक्कोवादोवातिन्निवा उक्को० । पजघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्ट । अट्ठसय नेरइयाणं भंते एगसमयेणं केवइया उववट्टंति गोयमा । १०८ नारकीने हे भगवन् एकेसमय केतला उपजे हे गौतम । जह० एक्कोवादोवातिन्निवा उक्को० संखिज्जावा । जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्ट संख्याता पिण । असंखिज्जावा उववट्टंति एवं जहा उववाओ भणिओ । असंख्या ता पिण चवे इम जं उपजिवो कह्यो । तहा उववट्टणाविसिद्धवज्जा भा० । तिम चविवो पिण कहिवो सिद्धने वर्जीने । जाव अणुत्तरोववाइयाणं नवरं जोयसियवेमाणियाणं चयणेणं अभिलावोकायव्वो द्वार । जांलगे अणुत्तरवासी तांलगे कहिवो ए विशेष जोतिषी विमानवासीने चविवानो आलावो क

« टीका »

दुर्ज्ञानं च्यवनमित्युच्यते, तथा ऽनादिकालप्रसिद्धे स्ततस्तत्सूत्रे च्यवनेनाऽभिलापकः कर्त्तव्यः सचैवं-जीवसियाणं भंते ! एगसमएणं केवइया चवंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एगोवा दोवा इत्यादि गतं चतुर्थद्वार मिदानीं पञ्चमद्वारमभिधित्सुराह-नेरइयाणं भंते । कओ हिंतो उववज्जंति इत्यादि ॥ पाठसिद्धं, नवरमेषः संक्षेपार्थः सामान्यतो नरकोपपातचिंतायां रत्नप्रभोपपातचिन्तायां च देवनारकपृथिव्यादिपञ्चकविगलेंद्रियत्रिकाणां तथा ऽसंख्यवर्षायुषश्चतुष्पदखचराणां शेषाणामपि चापर्याप्तकानां तिर्यग्पंचेंद्रियाणां तथा मनुष्याणां संमूर्च्छिमानां गर्भव्युत्क्रांतिकाना मप्य

« मूल »

यणेणं अभिलावो कायव्वो। दारं ४ । नेरइयाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं णेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति मणुस्सेहिंतो उववज्जंति देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइया नो नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति मणुस्सेहिंतो उववज्जंति नो देवेहिंतो उववज्जंति जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति बेइंदियतिरिक्खजो

« अ० »

किं नरकादुत्पद्यन्ते किं तिर्य्यग्योनिका दुत्पद्यन्ते मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते देवेभ्य श्चोत्पद्यन्ते ? गौतम ! नैरयिका नैव नरकादुत्पद्यन्ते तिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते, मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते । नैव देवेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि तिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किमेकेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्यो द्वीन्द्रिय

« भाषा »

हिंतो इति ६ । ४ । नेरइयाणं भंते कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उ० । नारकोने केहोगतिना थातार ऊपजे नारकोमरीनारकोमें उपजे कें। तिरिक्खजोणीएहिंतो उ० मणुस्सेहिंतोउ० देवेहिंतोउ० गोयमा । तिर्यंचमरीनारको मांहि उपजे मनुष्यथी उपजे कें देवथी उपजे हे गौतम । नेरइएहिंतो नो उ० तिरिक्खजोणीएहिंतो उ० । नारकोमरीनारको न हुवे तिर्यंचमरी नारकोमांहि उपजे । मणुस्सेहिंतो उ० नोदेवेहिंतो उ० जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो उ० तद्किं । मनुष्यगतिमांहिथी मरी नारकोमांहि उपजे देवता मरी नारकोमांहि न उपजे तिर्यंचयोनिथी मरी नारकोमांहि उपजे तो किं । एगेंदियतिरिक्खजोणीएहिंतो उ० । एकेंद्रियतिर्यंचयोनिया उपजे किं । बेइंदियतिरिक्खजोणीएहिंतोउ० । बेंद्रियतिर्यंच उपजे किं । तेइंदियतिरिक्ख० ।

कर्मभूमिजानां अंतरद्वीपजानां कर्मभूमिजाना मप्यसंख्येयवर्षायुषां संख्येयवर्षायुषामपि अपर्याप्तानां प्रतिषेधः शेषाणां विधानं । शर्करप्रभायां संमूर्च्छिमाना मपि प्रतिषेधः, वालुकप्रभायां भुजपरिसर्पाणा मपि, पंकप्रभायां खचराणा मपि, धूमप्रभायां चतुष्पदाना मपि, तमःप्रभायां उरपरिसर्पाणा मपि, सप्तमपृथिव्यां स्त्रीणा मपि' भवनवासिषूपपातचिन्तायां देवनारकपृथिव्यादिपञ्चकविकलेंद्रियत्रिकाऽपर्याप्ततिर्यग्पञ्चेन्द्रिय

॥ टीका ॥

णिएहिंतो उववज्जंति तेइंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति चउरिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो एगिंदिया नो वेइंदिया नो तेइंदिया नो चउरिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति थलयरपंचिंदियतिरिक्ख

॥ सूत्र ॥

तिर्य्यग्योनिकेभ्य श्चोत्पद्यन्ते त्रीन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते चतुरिन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य श्चोत्पद्यन्ते पञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्यो वा उत्पद्यन्ते ? गौतम ! नैवैकेन्द्रियेभ्यो नैव द्वीन्द्रियेभ्यो न च त्रीन्द्रियेभ्यो नैव चतुरिन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्यः पञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते, यदि पञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते उत थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ऽथवा खचरपञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्यउत्पद्यन्ते ? गौतम ! जलचरपञ्चेन्द्रियेभ्य उत्पद्यन्त थलचरपञ्चेन्द्रियेभ्योप्युत्पद्यन्ते खचरपञ्चेन्द्रि

॥ अ० ॥

चउरेंद्रियति० पंचेंद्रियतिरिक्खजोणिएहिंतो उ० गोयमा । तेइंद्रियतिर्यंच ऊपजे कि चौरिंद्रियतिर्यंच पचेंद्रियतिर्यंच ऊपजे कि हे भौतम । णो ए गिंदियति० णोबेइंदियएति० णो । एकेंद्रियने नही बेइंद्रियने नरको नही । तेइंद्रियति० णो चउरेइंदियति० । तेइंद्रियने नरको नही चौरिंद्रियने नरकनही । पचेंदियतिरिक्खजोणीएहिंतो उ० । पचेंद्रियतिर्यंच ऊपजे नारको मांहि । जइपंचिंदियतिरिक्खजोणीएहिंतो उ० तेकि जलचरपचेंद्रिय ति० । जो पचेंद्रियतिर्यंचयोनिया ऊपजे तोकिसूं जलचरपचेंद्रियतिर्यंच थो ऊपजे । थलयरपंचेंदियति० खयरपचेंद्रियति० गोयमा । थलचरपचेंद्रियथो

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

जोणिएहिंतो उववज्जंति खहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गो० ! जलयरपंचिंदियतिरि० एहिंतो उववज्जंति थलयरपंचिंदियतिरि०एहितोवि उववज्जंति खहयरपंचिंदि०एहिंतोवि उववज्जंति । जदि जलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मुच्छिमजलयरपंचिंदिय०एहिंतोवि उववज्जंति गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदि०एहिंतोवि उववज्जंति । जदि सम्मुच्छिमजलयरपं

॥ अ० ॥

य तिर्य्यग्योनिकेभ्य श्चोत्पद्यन्ते । यदि जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं सम्मूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते उत । गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम । सम्मूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते, गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्यो प्युत्पद्यन्ते यदि सम्मूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्त सम्मूर्च्छिम जलचरपञ्चेन्द्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत अपर्य्याप्त सम्मूर्च्छिम जलचरपञ्चेंद्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्त सम्मूर्च्छिम जलचर

॥ भाषा ॥

ऊपजे खचरपचेंद्रियतिर्यंचथी उ०? हे गौतम । जलयरथलयरखयरेहिंतो उ० जइजलचरपंचिंदियतिरिक्खजोणीएहिंतो उ० । जलचरपंचेंद्रियतिर्यंचथी ऊपजें कि जलचरपचेंद्रियतिर्यंचयोनिवाथी ऊपजें कि । तइकिंसम्मुच्छिम जलयरपंचिंदियति० गब्भवक्कंतियजलयरपंचिएहितोतिरि० गोयमा । तो किमु सम्मुच्छिमजलचरतिर्यंच था ऊपजे गर्भजजलचरपचेंद्रियतिर्यंचथी ऊपजे कि हे गौतम । सम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियति० । सम्मूर्च्छिम जलचरथी ऊपजे कि । गब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियति० । गर्भजजलचरपचेंद्रिय तिर्यंचथी पिण ऊपजे । जइसम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणीएहिंतो उ० । जोसमूर्च्छिमजलचरपचेंद्रियतिर्यंच यानियाथी उपज कि । तइकिंपज्जत्तग सम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियति० । तोकिमु पर्याप्ता सम्मूर्च्छिम जलचर पचेंद्रियथी ऊपजे । अपज्जत्तगसम्मुच्छिमजलयरपंचिंदियति०गोयमा । अपर्याप्ता सम्मूर्च्छिमजलचर पंचेंद्रियतिर्यंचथी उपजे । पज्जत्तगसम्मुच्छिमजलयर

चिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तसम्मुच्छिमजलयरपंचिंदि०एहिंतो उववज्जंति किं अपज्जत्त सम्मुच्छिमजलयरपंचिंदिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तसम्मुच्छिमजलयरपंचिंदिएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तगसम्मूच्छिमजलयरपंचिंदिएहिंतो उववज्जंति । जदि गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदिएहिंतो उववज्जंति किं अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदिएहिंतो उववज्जं



पञ्चेंद्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते नैवा पर्य्याप्त सम्मूर्च्छिम जलचरपञ्चेंद्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचर पञ्चेंद्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तक गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेंद्रियेभ्य उत्पद्यन्ते किमपर्याप्तगर्भव्युत्क्रांतिक जलचरपञ्चेंद्रियेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेंद्रियेभ्य उत्पद्यन्ते नैवापर्याप्तकगर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपंचेंद्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि स्थलचरपचेंद्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते तर्हि किं चतुष्पदस्थलचरपंचेंद्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पारसर्प्यस्थलचरपंचेंद्रियति



पंचिंदियति० । पर्याप्तासम्मूर्च्छिम जलचरपचेंद्रियतिर्यंचथो उपजै । नोअपज्जत्तगसमुच्छिमजलयरपंचेंदियति० । नहो अपर्याप्तासम्मूर्च्छिम जलचरपंचेंद्रियतिर्यंचथो उपजे । जइगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियति० । जो गर्भजतिर्यंच जलचरपंचेंद्रियथो उपजै । तइकिंपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचेंदियति० तोकिंपर्याप्तागर्भजपंचेंद्रियतिर्यंच उपजे । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियति० गोयमा । अपर्याप्तागर्भजथो जलचरपंचेंद्रियथो उपज हे गौ० । पज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियति० । पर्याप्तागर्भजजलचरपंचेंद्रियतिर्यंचथो उपजे । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियति० । अपर्याप्तागर्भज जलचरपंचेंद्रियथो उपजे । जइ थलयरपंचेंदियतिरिक्खजोणीएहिंतो उ० । जो थलचरपंचेंद्रियतिर्यंच योनियाथो उपजे तोकिम० । तइकिंचउप्पयथलयरपंचेंदियति० । तोचतुष्पदथलचरपंचेंदियतिर्यंच उपजेकि । उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियति० गोयमा । उरपरिसर्प थलचरपंचेंद्रिय तिर्यंच उपजे हे गौ

॥ मूल ॥

ति नो सुपज्जत्तगगब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदिएहिंतो उववज्जंति, जदि थलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! चउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतोवि उववज्जंति परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतोवि उववज्जंति, जदि चउप्पयपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिमेहिंतो उववज्जंति गब्भवक्कंतिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतोवि उववज्जंति गब्भवक्कंतियचउप्पएहिंतोवि उववज्जंति, जदि सम्मु

॥ अ० ॥

ग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! चतुष्पदस्थलचर पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते परिसर्प्पस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते। यदि चतुष्पदस्थलचरपंचेंद्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं सम्मूर्च्छिमेभ्य उत्पद्यन्ते उत गर्भव्युत्क्रान्तिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! सम्मूर्च्छिम चतुष्पद स्थलचरपंचेंद्रियतिर्य्यग्योनिकेभ्यो प्युत्पद्यन्ते गर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपंचेंद्रियेभ्यो प्युत्पद्यन्ते। यदि सम्मुच्छिमचतुष्पदेभ्य

॥ भाषा ॥

तम। चउप्पयथलयरपंचेंदियति०। परिसप्पथलयरपंचिंदियति०। चौपदथलचर पंचेंद्रियतिर्यंचथो जपजे उरपरिसर्प थलचरपंचेंद्रियतिर्यंचथो पिण जपजे। जइचउप्पयथलयरपंचिंदियति०। जो चौपदथलचरपंचेंद्रियथो जपजे। तइकिंसमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदिति०। तोकिंसमूर्च्छिमथो चौपदथलचरपंचेंद्रियथो जपजे। गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियति० गोयमा। किंगर्भज चौपदथलचर पंचेंद्रियतिर्यंच जपजे हे गौतम। समुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियति० गब्भवक्कंतियच०थ० पंचिंदियति०। समूर्च्छिमचौपद थलचरतिर्यंच पिण जपजे गर्भजचौपदथो पिण उपजे तिर्यंच उपजे। जइसमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियति०। जोसमूर्च्छिम चौपदथलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचथो जपजे। तइकिंपज्जत्तगसमुच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदिय तिरि०। तो पर्याप्तासमूर्च्छिमचौपद थलचरपंचेंद्रियथो जपजे। अपज्जत्तगसमुच्छिमच०थ० पंति० गोयमा। अपर्याप्तासमूर्च्छिम चौपदथलचरपंचेंतिर्यंच उपजे हे

॥ मूल ॥

च्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तगसम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं अपज्जत्तगसम्मूच्छिमचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्त जाव उववज्जंति नो अपज्जत्तगथलयरचउप्पयसम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, जदि गब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं असंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणि

॥ प० ॥

उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तकसंमूर्च्छिमचतुष्पदस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं अपर्याप्तकस्थलचरसम्मूर्च्छिमचतुष्पदपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्त यावदुत्पद्यन्ते नैवा पर्याप्तकस्थलचरचतुष्पदसम्मूर्च्छिमपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते, यदि गर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं संख्यातवर्षायुष्कगर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किमसंख्यातवर्षायुष्कगर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! संख्यातवर्षायुष्केभ्य उत्पद्यन्ते नैवा स

॥ भाषा ॥

गौतम। पज्जत्तसम्मुच्छिमच० थ० प० ति०। पर्याप्तासंमूर्च्छिम चौपदथलचरा उपजे। नोअपज्जत्तगसम्मुच्छिमच० थ० पं० ति०। पिण अपर्याप्तासंमूर्च्छिम चौरिंद्रिय पचेंद्रियतिर्यंच उपजे। जइगब्भवक्कंतिय च० थ० प० ति०। जोगर्भजचौपदथलचरपचेंद्रिय तिर्यंच उपजे। किंसंखिज्जवासाउय गब्भवक्कंतियच० थ० प० ति०। तो संख्यातावर्षना आउषावालाथी उपजे। असंखिज्जवासाउय गब्भवक्कंतियच० थ० प० ति० गोयमा। असंख्याता वर्षना आयुषावालाथी उपजे हे गौतम। संखिज्जवासाउयगब्भ० च० प० ति०। संख्यातावर्षना आयुथी उपजे। नोअसंख्याता वर्षने आउषे न उपजे। जइसंखिज्जवासाउय गब्भ० च० थ० प० ति०। जोसंख्यातावर्ष आयुः गर्भजथलचरथी उपजे। किं पज्जत्तगसंखिज्जवासाउयगब्भ० चउ० थल० प० तिरि०। तोकिमूं पर्याप्तासंख्यात वर्षना आउषावालाथी उपजे। अपज्जत्तगसंखिज्जवासाउय गब्भ० च० थ० पं० ति० गोयमा। किं अपर्याप्तासंख्याता वर्षना

एहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति जदि संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं अपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियचउप्पयथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, जदि परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्ख

॥ मूल ॥

क्षातवर्षायुष्केभ्य उत्पद्यन्ते, यदि सङ्ख्यातवर्षायुष्कगर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तकसङ्ख्यातवर्षायुष्कगर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं अपर्याप्तकसङ्ख्यातवर्षायुष्कगर्भव्युत्क्रान्तिकचतुष्पदस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते नैवा पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते, यदि परिसर्प्पस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्प

॥ अ० ॥

आयुषावालाथो ऊपजे हे गौतम। पज्जत्तगसंखि० गब्भ० च० थ० पं० ति०। पर्याप्तासंख्याता चौपदथलचरथो ऊपज। अपज्जत्तगसंखि० गब्भ० च० थ० पं० ति०। पिण अपर्याप्तासंख्याताबली उपजे पिण अपर्याप्ता। जइपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति०। जो उरपरसर्पथलचर पचेंद्रिय तिर्यंच उपजे। किं उरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति०। तोकिसुं उरपरथो उपजे। भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति० गोयमा। भुजपरिसर्पथो ऊपज हे गौतम। दोहिंतोवि उववज्जंति जइउरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति०। दोयांहुंतो पिण ऊपजे जो उरपरिसर्प थलचरपंचेंद्रिय तिर्यंचथो ऊपजे। किं समुच्छिम उरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति०। तोसमूर्च्छिम उरपरसर्पथलचरपंचेंद्रिय तिर्यंचथो ऊपजे। गब्भवक्कंतियउरसप्पथलयरपंचिंदिय तिरिक्ख० गोयमा। गर्भजपचेंद्रिय उरपरसर्प थलचरपंचेंद्रिय तिर्यंच ऊपजे हेगौतम। समुच्छिम उरपरेहिंतो उ०। समूर्च्छिम उरपरसर्पथो ऊपजे कि०। गब्भवक्कंतियउरपरि

॥ भाषा ॥

जोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जंति, जदि उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मूच्छिमेहिंतोवि गब्भवक्कंतिएहिंतोवि उववज्जंति, जदि सम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो किं अपज्जत्तएहिंतो ? गोयमा ! पज्जत्तगसम्मूच्छिमेहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तगसम्मूच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, जदि गब्भवक्कंतियउरप



---

द्यन्ते किं उरः परिसर्पस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते उत भुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! द्वाभ्यामप्युत्पद्यन्ते, यदि उरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं सम्मूर्च्छिमोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं गर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! सम्मूर्च्छिमेभ्योपि गर्भव्युत्क्रान्तिकेभ्योप्युत्पद्यन्ते । यदि सम्मूर्च्छिमोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तकेभ्यः किमपर्याप्तकेभ्यः ? गौतम ! पर्याप्तकसम्मूर्च्छिमेभ्य उत्पद्यन्ते नो अपर्याप्तकसम्मूर्च्छिमोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते, यदि गर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरि



---

हितोवि० उववज्जंति । गर्भजथी पिण ऊपजे । जइसम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिय । जो सम्मूर्च्छिम उरपरसर्पथी ऊपजे तोकिम्भू किंपज्जत्तगसम्मुच्छिमउरपरिसप्पथलयर तिरिक्खजोणिय । तो पर्याप्ता सम्मूर्च्छिम उरपरिसर्पथलचरतिर्यंच उपजे । अपज्जत्तगसम्मुच्छिम उरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिया गोयमा । अपर्याप्ता सम्मूर्च्छिम उरपरसर्पथलचरपंचें द्रियतिर्यंचथी ऊपजे हे गौतम । पज्जत्तगसम्मूच्छिम उरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय तिरि० । पर्याप्ता सम्मूर्च्छिमथी ऊपजे । नो अपज्जत्तगसम्मुच्छिम उरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति० । पिण अपर्याप्ता थलचरउरपरसर्पथी

रिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो किं अपज्जत्तएहिंतो ? गोयमा ! पज्जत्तगसंमुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तगसंमुच्छिमउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति, जदि गब्भवक्कंतियउरपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिमनुज परिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति गब्भवक्कंतियनुयपरिसप्पथलयरपंचिंदियतिरिक्ख जोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जंति, जदि सम्मूच्छिमनुजपरिसप्पथलयरपंचिं

॥ मूल ॥

सर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तकेभ्यः किमपर्याप्तकेभ्यः ? गौतम ! पर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकेभ्य उत्पद्यन्ते नो अपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकोरःपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि गर्भजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं सम्मूर्च्छिमगर्भजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते गर्भव्युत्क्रान्तिकभुजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! द्वाभ्या मुत्पद्यन्ते' यदि सम्मूर्च्छिमगर्भजपरिसर्पस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तकसम्मूर्च्छिमभुजपरिस

॥ प० ॥

जपजे। जइगब्भवक्कंतिय उरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति०। जो गर्भजउरपरसर्पस्थलचरपंचेंद्रियतिर्यंच उपजे। किंपज्जत्तगगब्भवक्कंतिय उरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति०। नो पर्याप्तागर्भजथी उपजे। अपज्जत्तगगब्भवक्कंति उरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति० गोयमा। अपर्याप्तागर्भजउरपरसर्पस्थलचरतिर्यंचथी उपजे हे गौतम। पज्जत्तगगब्भवक्कंतिउरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति०। पर्याप्तागर्भजथी उपजे। नो अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिय उरपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति०। पिण नही अपर्याप्ता उरपरसर्पस्थलचरपंचेंद्रिय तिर्यंचथी नारकी मांहि न उपजे। जइभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति० किं सम्मुच्छिमभुयपरिसप्पथलयर पंचिंदियतिरि०। जो भुजपरसर्पस्थलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचथी नारकी मांहि उपजे तोकिसू सम्मूर्च्छिम भुजपरसर्पस्थलचरपंचेंद्रिय तिर्यंचथी नारकी मां उपजे। गब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति० गोयमा। गर्भजभुजपरसर्पस्थलचर पंचिंद्रिय तिर्यंच नारकी मांहि उपजे हे गौत

दियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तयसम्मूच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं अपज्जत्तयसम्मूच्छिमजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, जदि गब्भवक्कंतियजलयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति किं अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति



र्यस्थलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किमपर्याप्तसम्मूर्च्छिमजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते नो अपर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते, यदि गर्भव्युत्क्रान्तिकजलचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते किमपर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते नो अपर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि खचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य



म । दोहिंतोवि उववज्जति । दोवेकरो उपजे । जइसमुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति० । जो समुच्छिमभुजपरसपथलचर पचेंद्रिय तिर्यंचथी उपजे । किं पज्जत्तगसमुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदिय ति० । तो पर्याप्तासमूर्च्छिम भुजपरथी ऊपजे कि । अपज्जत्तगसमुच्छिमभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया गोयमा । अपर्याप्तासमूर्च्छिम भुजपरसपंथलचर पचेंद्रिय तिर्यंचथी ऊपजे हे गौतम । पज्जत्तगसमुच्छिमभुजपरिसप्पथलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया । पर्याप्तासमूर्च्छिम भुजपरथलचरतिर्यंच ऊपजे । अपज्जत्तगसमुच्छिमभुजपरथलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया । पिण अपर्याप्तासमूर्च्छिम भुजपरथलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचने ऊपजे । जइगब्भवक्कंतियभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया । जो गर्भजभुजपरिसर्पस्थलचरथी ऊपजे । किंपज्जत्तगगब्भवक्कंतिभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया । तो पर्याप्ताथी ऊपजे किं । अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिभुयपरिसप्पथलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया गोयमा । अपर्याप्ताथी ऊपजे हे गौतम । पज्जत्तगगब्भवक्कंति भुयपरिसप्पथलयरपंचिंदिय तिरिक्खजोणिया । पर्याप्ताथी उपजे । नो अपज्जत्तगगब्भवक्कंतिभु० य० प० ति० । पिण अपर्याप्ताथी न ऊपजे । जइखहरपचेंदिय ति० तहकिं समुच्छिमखहरप० ति० । जो खचरपचेंद्रि

? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, जदि खहयरपंचिंदियतिरिक्कजो णिएहिंतो उववज्जंति किं सम्मूच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्कजोणिएहिंतो उववज्जंति किं गब्भवक्कंतियख हयरपंचिंदियतिरिक्कजोणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा दोहिंतोवि उववज्जंति, जदि सम्मूच्छिमखह यरपंचिंदियतिरिक्कजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, जदि गब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्क जोणिएहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयएहिंतो उववज्जंति असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ?

॥ मूल ॥

उत्पद्यन्ते किं सम्मूर्च्छिमखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं गर्भव्युत्क्रान्तिकखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! द्वाभ्यामप्युत्पद्यन्ते । यदि सम्मूर्च्छिमखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तकेभ्यो पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते नो अपर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते, यदि गर्भव्युत्क्रान्तिकखचरपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं संख्येयवर्षायुष्केभ्य उत्पद्यन्ते असंख्येयवर्षायुष्केभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! संख्येयवर्षायुष्केभ्य नो असंख्येयवर्षायुष्केभ्य उत्पद्यन्ते । यदि संख्येयवर्षायुष्कगर्भव्युत्क्रान्तिकखचरपञ्चेन्द्रि

॥ अ० ॥

यतिर्यंचथी नारकीमां उपजे तो सम्मूर्च्छिमखचरथी उपजे कि । गर्भवक्कंतियखहरप० ति० गोयमा । गर्भजखचरथी उपजे हे गौतम । दोहिंतोवि० उव वज्जंति । दोएहंथी उपजे । जइसम्मूच्छिमखहरप० ति० । जो सम्मूर्च्छिमखचरपंचेंद्रिय तिर्यंचथी उपजे । किं पज्जत्तसम्मूच्छिमख० प० ति० । तो पर्या प्तथी उपजे । अपज्जत्तसम्मु० खहरप० ति० गोयमा । अपर्याप्तथी उपजे हे गौतम । पज्जत्तसम्मु० ख० प० ति० । पर्याप्तथी उपजे । नो अपज्जत्तसम्मूच्छि मख० प० ति० । पिण अपर्याप्तथी न उपजे । जइगब्भवक्कंतियखहरपंचेंदिय तिरिक्खजोणिया । जो गर्भजखचरतिर्यंचथी उपजे । किंसंखिज्जवा साउयगब्भ०खहरपचेंदिय ति० । तो संख्यातावर्षायुथी उपजे । असंखिज्जवासाउयग० खहरपचेंदिय ति० गोयमा । असंख्यातावर्षथी पजे हेगौउतम

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति , जदि संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतियखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तएहिंतो उ० ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति, जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिममणुस्सेहिंतो उववज्जंति गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो सम्मूच्छिममणुस्सेहिंतो उववज्जंति गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, जदि गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उववज्जंति

॥ अ० ॥

यतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते अपर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते नो अपर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं सम्मूर्च्छिममनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! नो सम्मूर्च्छिममनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते' यदि गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं कर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किमक

॥ भाषा ॥

साक्खेज्जवासाउयग० खहरपंचिंदिय ति० । संख्यातावर्ष आयुर्यो जपजे। नो असंखिज्जवासाउयग० खहरपंचिंदिय ति० । पिण असंख्यातावर्षायुर्यो न जपजे । जइसंखिज्जवासाउयग० खहरपंचिंदिय ति० । जो संख्यातावर्षायु गर्भखचरथी जपजे । किंपज्जत्तगसंखिज्जवासाउयग० खहरपंचिंदिय ति० । नो संख्यातावर्षायुर्यो जपजे। अपज्जत्तसंखिज्जवासाउयग० खहरपंचिंदिय ति० गोयमा । अपर्याप्तायी जपजे हे गौतम । पज्जत्तसंखिज्जवासाउयग० खहरपंचिंदिय ति० । पर्याप्तायी जपजे । नो अपज्जत्तसंखिज्जवासाउयग० खहरपंचिंदिय ति० । पिण अपर्याप्तायी न जपजे। जइमणुस्सेहिंतो उ० । जो मनुष्यथी उपजे। तइकिंसमुच्छिममणुस्सेहिंतो उ० । तो समूच्छिममनुष्यथी जपजे। गब्भवक्कंतियमणुस्सहिंतो उववज्जंति गोयमा । गर्भज मनुष्यथी उपजे नारकी मांहि हे गौतम । नो समुच्छिममणुस्सेहिंतो उ० । समूच्छिममनुष्यथी न जपजे । गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । गर्भजमनुष्यथी जपजे नारकी मांहि । जइगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । जो गर्भथी जपजे ते गर्भजथी जपजे । किंकम्मभूमिगगब्भवक्कंतिमणुस्सेहिंतो उ० ।

॥ मूल ॥

किं कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति अकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति नो अकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति नो अंतरदीवगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, जदि कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउयगब्भवक्कंतिएहिंतो उववज्जंति असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति

॥ अ० ॥

मभूमिगगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किमन्तरद्वीपगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! कर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते नैवाऽकर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते नैवान्तरद्वीपगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते, यदि कर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं सङ्ख्यातवर्षायुष्केभ्य उत्पद्यन्ते उत असंख्यातवर्षायुष्केभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! सङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्ति

॥ भाषा ॥

ला कर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथी उपजे। अकर्मभूमगगब्भवक्कंतिमणुस्सेहिंतो उ०। अकर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथा उपजे। अंतरदीवगगब्भवक्कंतिमणुस्सेहिंतो उ० गोयमा। अंतरद्वीपना पिण मनुष्य न उपजे हे गौतम। कम्मभूमगगब्भवक्कंति मणुस्सेहिंतो उ०। कर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथी उपजे नारकी मांहि उपजे। नो अकम्मभूमगगब्भ० मणुस्सेहिंतो उववज्जंति। पिण अकर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथी उपजे। नो अंतरदीवगगब्भ० मणुस्सेहिंतो उववज्जंति। अंतरद्वीपना पिण मनुष्य न उपजे। जइकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति। जो कर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथी उपजे। किं संखिज्जवासाउयगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति। नोसंख्यातावर्षायुषवालाथी उपजे। असंखिज्जवासाउयकम्मभूमगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति गोयमा। असंख्यातावर्षायुषवालाथी उपजे हे गौतम। संखिज्जवासाउयकम्मभूमगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति। संख्यातावर्षायुषवालाथी उपजे नो असंखिज्जवासाउयकम्मभूमगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति। पिण असंख्यातावर्षवालाथी मनुष्य न उपजे। जइसंखिज्जवासाउयकम्मभूमगग

« मूल »

नो असंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति, जदि संखेज्जवासाउयकम्मभूमिग
ब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो अपज्जत्तएहिंतो ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उव व
ज्जंति नो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति एवंजहा जेहियाउववाइया तहा रयणप्पभापुढवीनेरइयावि उववाए
यव्वा । सक्करप्पभापुढवीनेरइयाणंपुच्छा, गोयमा ! एतेवि जहा जेहिया तहेव उववाएयव्वा नवरं सम्मु

« भाषा »

कमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते नैवा सङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते । यदि सङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकम
नुष्येभ्य उत्पद्यन्ते तर्हि किं पर्याप्तकेभ्यो ऽपर्याप्तकेभ्यश्च ? गौतम ! पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते नैवा ऽपर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते । एवं यथौघिकोपपा
तस्तथैव रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकाअपि उपपाते ज्ञातव्याः, शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पृच्छा, गौतम ! एतेपि यथौघिका स्तथैवोपपाते ज्ञा

« भ० »

भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति । जो सङ्ख्यातवर्षायुषवाला यो कर्मभूमिगर्भज मनुष्य न उपजै । किं पज्जत्तसंखिज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतिय
मणुस्सेहिंतो उववज्जंति । नो पर्याप्तासङ्ख्याता कर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथी उपजै । अपज्जत्तसंखिज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उव व
ज्जंति गोयमा । अपर्याप्तासङ्ख्यातवर्षायुष गर्भजमनुष्यथी उपजै हे गौतम । पज्जत्तसंखिज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ।
पर्याप्तसंङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिना मनुष्यथी उपजै । अपज्जत्तस० क० ग० भ० उ० । पिण अपर्याप्ता नहीं उपजै । एवं जहाओहिया उववाइया तहा
रयणप्पभपुढवीनेरयावि उववाए भा० । इम जिम इवै तुंओघनो आलावो कह्यो उपजवानो तिम रत्नप्रभापृथिवीना नारकीने सघलो उपजवो पाछ
लोपरे कहिवो । सक्करप्पभपुढवीनेरइयाणं पुच्छा गोयमा । हिवै शर्करप्रभानो प्रश्न करैछै शर्करप्रभानारकीनो प्रश्न उत्तर भगवन् कहै सांभल हे गौ
तम । एते जहाओहिया तहेव उववाएयव्वा णवरं सम्मुच्छिमेहिंतो पडिसेहोकायव्वो । इहां सर्वजिम ओघनो आलावो उपजव्या तिम उपजै पिण एत
लो विशेष समूर्च्छिमनो निषेधकरिवो समूर्च्छिमतिम तिर्यंच बीजो नरकें न जाय । वालुयप्पभपुढवीनेरइयाणं भंते कओहिंतो उ० गोयमा । वालुकप्रभा

च्छिमेहिंतो पडिसेहो कायव्वो । वालुयप्पभापुढविनेरइयाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? जहा सक्करप्पभापुढविनेरइयाणं भुयपरिसप्पेहिंतोवि पडिसेहो कायव्वो । पंकप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा, गो० ! जहा वालुयप्पभापुढविनेरइया नवरं खहयरेहिंतो पडिसेहो कायव्वो । धूमप्पभापुढविनेरइयाणं पुच्छा, गोयमा ! जहा पंकप्पभापुढवीनेरइया नवरं चउप्पएहिंतोवि पडिसेहो कायव्वो । तमापुढवीनेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहा धूमप्पभापुढविनेरइया नवरं थलयरेहिंतो पडिसेहो कायव्वो, इमेणं अभिलावेणं

तव्याः नवरं सम्मूर्च्छिमेभ्यः प्रतिषेधः कर्त्तव्यः । वालुकाप्रभापृथिवीनैरयिका भदन्त ! कस्मादुत्पद्यन्ते ? यथा शर्कराप्रभापृथिवीनैरयिकाः । भुजपरिसर्पेभ्योपि प्रतिषेधः कर्त्तव्यः । पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पृच्छा' गौतम ! यथा वालुकाप्रभापृथिवीनैरयिका नवरं खचरेभ्यः प्रतिषेधः कर्त्तव्यः । धूमप्रभापृथिवीनैरयिकाणां पृच्छा, गौतम ! यथा पङ्कप्रभापृथिवीनैरयिका नवरं चतुष्पदेभ्योपि प्रतिषेधः कर्त्तव्यः । तमापृथिवीनैरयिकाणां पृच्छा' गौतम ! यथा धूमप्रभापृथिवीनैरयिका नवरं स्थलचरेभ्यः प्रतिषेधः कर्त्तव्यो ऽनेनाभिलापेन । यदि पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिके

ये किहां थी आव्या उपजे हे गौतम । जहा सक्करप्पभपुढवीनेरइयाणं भणिओ तहा भा० णवर । जिम शर्कराप्रभानारकीनो पर एतलो विशेष । भुयपरिसप्पेहिंतो विपडिसेहोकायव्वो । भुजपरसर्पनो निषेधकरिवो भुजपरसर्प नजाव । पंकप्पभपुढवीनेरइयाण पुच्छा गोयमा । पंकप्रभानो प्रश्न कीधो हे गौतम । जहा वालुयप्पभपुढवीनेरइयाणं तहा भा० । जिम वालुकप्रभातिम । णवरं खहयरेहिंतोविपडिसेहोकायव्वो । ए विशेष खचरप खीयानो निषेधकरिवो । धूमप्पभपुढवीनेरइयाणं पुच्छा गोयमा । छट्ठे धूमप्रभानो प्रश्न कीधो हे गौतम । जहा पंकप्पभपुढवीनेरइयाणं तहा भा० णवरं । जिम पंकप्रभातिमहीज पिण ए विशेष । चउप्पएहिंतोविपडिसेहोकायव्वो । चोपदथी निषेधवो चौपदधूमप्रभायें नावे । तमापुढवीनेरइयाणं भंते पुच्छा गोयमा । तमापृथिवीनो प्रश्न कीधो हे गौतम । जहा धूमप्पभपुढवीनेरइयाण तहा भा० । जिम धूमप्रभातिम पिण । णवरं थलयरेहिंतोवि

॥ मूल ॥ ॥ अ० ॥ ॥ भाषा ॥

णं । जदि पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलयरपंचिंदिएहिंतो थलयरेहिंतो उववज्जंति खहयरपंचिंदिएहिंतो ? गोयमा ! जलयरपंचिंदिएहिंतो उववज्जंति नो थलयरेहिंतो नो खहयरेहिंतो उववज्जंति, जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं कम्मभूमिएहिंतो अकम्मभूमिएहिंतो किं अंतरदीवएहिंतो? गोयमा ! कम्मभूमिएहिंतो उववज्जंति नो अकम्मभूमिएहिंतो नो अंतरदीवएहिंतो उववज्जंति, जइ क



ञ्य उत्पद्यन्ते किं जलचरपञ्चेन्द्रियेभ्यः स्थलचरेभ्य उत्पद्यन्ते खचरपञ्चेन्द्रियेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! जलचरपञ्चेन्द्रियेभ्य उत्पद्यन्ते नो स्थलचरेभ्य नो खचरेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं कर्मभूमिकेभ्यो ऽकर्मभूमिकेभ्यः किमन्तरद्वीपजेभ्यः ? गौतम ! कर्मभूमिजेभ्य उत्पद्यन्ते नो अकर्मभूमिजेभ्य नो अन्तरद्वीपजेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि कर्मभूमिजेभ्यः किं सङ्ख्येयवर्षायुष्केभ्यो ऽसंख्येयवर्षायुष्केभ्यः ? गौतम ! सङ्ख्येयवर्षायुष्केभ्यो नैवा संख्येयवर्षायुष्केभ्य उत्पद्यन्ते, यदि संख्येयवर्षायुष्केभ्यः किं पर्याप्तकेभ्यो पर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्तकेभ्य



पडिसेहो कायव्वो । ए विशेष थलचरतिर्यंच न ऊपजे । इमेण अभिलावेणं जइ पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति । इणें आलावें जाणिवो जोपचेंद्रियतिर्यंच योनिया हुंतो ऊपजे । किं जलयरपंचिंदिएहितो उ० । तो जलचरपचेंद्रिय तिर्यंचथो ऊपजे । थलयरपंचिंदियति० खहयरपंचिंदियति० गो० थलचरपचेंद्रियतिर्यंचथो खचरपचेंद्रियतिर्यंचथो ऊपजे हे गौतम । जलयरपंचिंदियति० नोथलयरपंचिंदियति० नोखहरपंचिंदियति० । जलचरपंचेंद्रियतिर्यंचथो ऊपजे नहीथलचरथो नहो खचरथो । जइमणुस्सेहिंतो उ० किं कम्मभूममणुस्सेहिंतो । जोमनुष्यथो ऊपजे तोकर्मभूमिथो । अकम्मभूममणुस्सेहिंतो अंतरद्वीपगमणुस्सेहिंतो उ० गोयमा । अकर्मभूमिथो मनुष्य उपजे ते अकर्मभूमिना मनुष्यथो ऊपजे अंतरद्वीपना मनुष्यथो ऊपजे हे गौतम । कम्मभूमएहिंतो उ० णो अकम्मभूमएहिंतो उ० णो । कर्मभूमिना मनुष्यथो ऊपजे पिण अकर्मभूमिथो न ऊपजे । अंतरद्वीपगहिंतो उ० जइकम्मभूमगमणुस्सेहितो उ० । अंतरद्वीपनहो ऊपजे जो कर्मभूमिथो मनुष्य ऊपजे । किंसंखिज्जवासाउकम्म० मणु० उ० असंखिज्जवासाउयक० मणु० उ० गोयमा । तो सं

संमूर्च्छिमाऽपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां प्रतिषेधः शेषाणां विधानं । पृथिव्यप्वनस्पतिषु सकलनैरयिकसनत्कुमारादिदेवानां तेजोवायुद्वित्रि
चतुरिन्द्रियेषु सर्वनारकसर्वदेवानां प्रतिषेधः, तिर्यग्पञ्चेन्द्रियेष्वानतादिदेवानां मनुष्येषु सप्तमपृथिवीनारकतेजोवायूनां व्यन्तरेषु देवनारकपृथि



म्मनूमिएहिंतो किं संखेज्जवासाउएहिंतो असंखेज्जवासाउएहिंतो ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो नो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति, जदि संखेज्जवासाउएहिंतो किं पज्जत्तएहिंतो अपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तएहिंतो, जदि पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिएहिंतो उववज्जंति किं इत्थीहिंतो उववज्जंति पुरिसेहिंतो उववज्जंति नपुंसएहिंतो उववज्जंति ? गो० !



उत्पद्यन्ते नो अपर्याप्तकेभ्यः । यदि पर्याप्तसंख्येयवर्षायुष्ककर्मभूमिजेभ्य उत्पद्यन्ते किं स्त्रीभ्य उत्पद्यन्ते पुरुषेभ्य उत्पद्यन्ते नपुंसकेभ्य उत्प
द्यन्ते ? गौतम ! स्त्रीभ्योपि पुरुषेभ्योपि नपुंसकेभ्योप्युत्पद्यन्ते । अधःसप्तमापृथिवीनैरयिका भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते ? गौतम ! एवं चैव न



ख्यातावर्षायुषथो उपजे असंख्यातावर्षायुषथो उपजे हे गौतम । संखिज्जवासाउयकम्म० म० उ० णोअसंखिज्जवासाउयकम्म० मणु० उ० । संख्यातावर्षा
युषथो उपजै पिण असंख्यातावर्षायुषथो न उपजै । जइसंखिज्जवासाउएहिंतो उ० किं पज्जत्तसंखि० मकम्म० मणु० उ० । जोसंख्यातावर्षायुष थो उपजै
तो पर्याप्ताथो उपजे । अपज्जत्तसंखि० क० मणु० उ० गोयमा । किंअपर्याप्ताथो उपजै हे गौतम । पज्जत्तसंखि० क० मणु० उ० णोअपज्जत्तसंखि० क० म
णु० उ० । पर्याप्तासंख्यातावर्षायुषथो उपजै पिण अपर्याप्तानथो उपजे । जइपज्जत्तसंखिज्जवासाउयकम्म० मणु० उ० । जोपर्याप्तासंख्यातावर्षायुषकर्मभू
मि उपजै । किं इत्थीवेदएहिंतो उ० पुरिसवेदएहिंतो उ० नपुंसगवेदएहिंतो उ० गोयमा । तो स्त्रीवेदीयाथो उपजै किंपुरुषवेदीयाथी उपजै किं नपुंस
कवेद उपजै हे गौतम । इत्थीहिंतोउ० पुरिसेहिंतोउ० नपुंसएहिंतोवि उ० । स्त्रीथो उपजै पुरुषवेदथी उपजै नपुंसकवेदथो उपजै । अहेसत्तमाएपुढवीनेरइ
याणं भंते कंतोहिंतो उ० गोयमा । नीच सातमीपृथिवीना नारकी किहांथी आवी उपजै हे गौतम । जहा तमाए तहेव सव्वमा० णवरं इत्थीवेहिंतो

॥ मूल ॥

इत्थीहिंतोवि पुरिसेहिंतोवि नपुंसगेहिंतोवि उववज्जंति। अहेसत्तमापुढवीनेरइयाणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? गोयमा एवंचेव नवरं इत्थीहितो पडिसेहो कायव्वो, असन्नीखलुपढमं दोच्चंसिरीसवातइयपक्खी सीहाजंतिचउत्थिं उरगापुणपंचमींपुढवीं ॥ १ ॥ छट्ठिंचइत्थियाओ मच्छामणुयायसत्तमिंपुढविं एसोपरमुववाओ बोधव्वोनेरगपुढवीणं ॥ २ ॥ असुरकुमाराणं भंते! कओहिंतो उववज्जंति? गोयमा! नो नेरइएहिंतो उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहितो उववज्जंति मणुस्सेहिंतो उववज्जंति नोदेवेहिंतो उववज्जंति एवं जे

॥ अ० ॥

वरं स्त्रीभ्यः प्रतिषेधः कर्त्तव्यः। प्रथमामसज्ञिनःखलु द्वितीयनरकंसरीसृपा पक्षी। तार्त्तीयं यान्तिसिंहा श्चतुर्थमुरगाश्च पञ्चमीं पृथिवीम्॥ १॥ षष्ठीं स्त्रिय श्चमत्स्या स्तथैवमनुजाश्च सप्तमीं पृथिवीम्। एषपरमुपपातो बोद्धव्यो नरकपृथिवीनाम्॥२॥ असुरकुमारा भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते? गौतम! नो नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते नो देवेभ्य उत्पद्यन्ते एवं यथो नैरयिकाणामुत्पा

॥ भाषा ॥

पांडकेहोकायव्वो। इमहोज ए छट्ठांतिम पतला विशेष स्त्रोवेदोनो तेहथो निषध करिवो स्त्रीने सातमोनहो नारकी। असणीखलुपढमंदोच्च सरीसवा तइयपक्खी सीहाजांतिचउत्थि उरगापुणपंचमींपुढवीं॥ १॥ छसत्तीयोनियांतिथा पहिलोनरकेजाय भुजपरिसर्पबीजेलगेजाय पखीबीजोलगेजाय सिंहा दिचतथी लगे जाय उरपरसर्पादि पचमी लगे॥ १॥ छट्ठिंचइत्थियाओ मच्छामणुयायसत्तमि पुढवीं एसोपरमुववाओ बाधव्वो नरग पुढवीण॥ २॥ स्त्रामरी छट्ठाजाय मछ ने मनुष्यसातमीलगे संक्लष्टभावथीजाय उपजवानो आलावोकह्यो गाथाने अनुसार पिण कांईकपाठफरदीसे॥ २॥ असुरकुमाराणं भंते कओहिंतो उ० गोयमा। हिवे असुरकुमारमांहि केटिगतिथी ऊपजे ते गौतम। नोनरइएहितो उ० तिरिक्खजोणिएहितो उ०। नारकीथी न ऊपजे तिर्यंचथी ऊपजे। मणुस्सेहितो उ० नोदेवेहितो उ०। मनुष्यथी ऊपजे पिण देवथी न ऊपजे। एव जेहिजेहितो नेरइयाण उववाओभणिओ। इमजेहथीनारकीमांहि ऊपजे। तोहितो असुकुमाराणविभा०णवरं। तेहथी असुरकुमारमांहिपिण ऊपजे ए विशेष। असंखिज्जवासाउय अकम्मभूमिग

॥ सूत्र ॥

हिंतो नेरइयाणं उववाओ तेहिंतो असुरकुमाराणंवि भाणियव्वं नवरं असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमिगअंत रदीवगमणुस्सतिरिक्खजोणिएहितोवि उववज्जंति सेसं तंचेव, एवं जाव थणियकुमारा। पुढवीकाइयाणं भंते! कतोहिंतो उववज्जंति किंनेरइएहिंतो जाव देवेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! नो नेरइएहिंतो तिरि क्खजोणिएहितो जाव देवेहिंतोवि उववज्जंति। जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंतिकिं एगिंदियतिरि क्खजोणिएहिंतो जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिं

॥ ४० ॥

दस्तेभ्यो ऽसुरकुमाराणामपि भणितव्यो नवरमसंख्येयवर्षायुष्काकर्मभूमिकान्तरद्वीपकमनुष्यतिर्यग्योनिकेभ्यो प्युत्पद्यन्ते शेषं तच्चैव, एवं या वत्स्तनितकुमाराः। पृथिवीकायिका भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्यः? गौतम! नो नैरयिकेभ्य स्तिर्यग्योनिकेभ्यो याव द्देवेभ्यो प्युत्पद्यन्ते। यदि तिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किमेकेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्यो यावत्पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते? गौतम! एके न्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्योपि यावत्पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्यो प्युत्पद्यन्ते। यदि एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पृथिवीकायिकेभ्यो याव

॥ अ० ॥

अंतरद्वीपगमनुष्यतिरिक्खजोणिएहिंतोवि उ०। असंख्याता आयुषाना कर्मभूमिना अन्तरद्वीपना मनुष्य तिर्यंचनारकी मांहि उपजे। सेसंतचेव एव जा वथणियकुमारा। जाकतो सर्वनारकीनो परे जांलगे स्तनितकुमारतांलगें। पृढवीकाइयाणं भंते कतोहिंतो उ० किं नेरइएहिंतो जावदेवेहिंतो उ० गोयमा। पृथिवीकाइया मांहि हेभगवन् किहांथी उपजे शुं नारकीथी उपजे हेगौतम। नोनेरइएहिंतोउ० देवेहिंतो तिरिक्खजोणीएहिंतोमणुस्सेहिंतो वि उ०। नारकीथी न उपजे देवताथी तिर्यंचयोनियथी उपजे मनुष्यथी उपजे। जइतिरिक्खजोणीएहिंतोउ० किंएगिंदियतिरिक्खजोणिय जावपंचेंदिय ति० गोयमा। जो तिर्यंचथी उपजे तोकिंशुं एकेंद्रियतिर्यंचथी उपजे जांलगे पंचेंद्रियथी उपजे हे गौतम। एगिंदियतिरिक्खजोणीएहिंतोउ०। एकेंद्रियति र्यंचथी उपजे। जाव पंचेंद्रियतिरिक्खजोणीएहिंतोवि उ०। जांलगे पंचेंद्रियतिर्यंचथी उपजे। जइएगिंदियति०। जो एकेंद्रियतिर्यंच उपजे। किंपुढवी

॥ भाषा ॥

तो जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति । जदि एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो किं पुढवीकाइए हिंतो उववज्जंतिजाव वणस्सइकाइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पुढवीकाइएहितोवि उववज्जंति जाव वणस्सइकाइएहिंतोवि उववज्जंति , किं सुहुमपुढवीकाइएहिंतो बादरपुढवीकाइएहितो उववज्जंति । जदि सुहुमपुढवीकाइएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तयपुढवीकाइएहिंतो उववज्जंति । जदि सुहुमपुढवीकाइएहिंतो किं पज्जत्तयसुहुमपुढवीकाइएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तयसुहुमपुढवीकाइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जंति । जदि बादरपुढवीकाइएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो किं अपज्ज

॥ सूत्र ॥

वनस्पतिकायिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पृथिवीकायिकेभ्योपि यावद्वनस्पतिकायिकेभ्योप्युत्पद्यन्ते, किं सूक्ष्मपृथिवीकायिकेभ्यो बादरपृथिवीकायिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकेभ्य उत्पद्यन्ते बादरपृथिवीकायिकेभ्योप्युत्पद्यन्ते । यदि सूक्ष्मपृथिवीकायिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तकपृथिवीकायिकेभ्य उत्पद्यन्ते अपर्याप्तकपृथिवीकायिकेभ्योपि ? गौतम ! द्वाभ्यामप्युत्पद्यन्ते । यदि बादरपृथिवीकायिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तकेभ्यो ऽपर्याप्तकेभ्यः ? गौतम ! द्वाभ्यामप्युत्पद्यन्ते' एवं यावद्वनस्पतिकायिका श्रुतुकक्रेन "सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्त„ भे

॥ भाषा ॥

काइयएगिंदिय०। तो पुढवीकायओ उवजे। जावयणस्सइकाइय एगिंदिय०। गोयमा। जालगं वणस्सतिकाइयाओ उवजे हे गौतम। पुढवीकाइय एगिंदियत्ति० जाव वणस्सइकाइयएगिंदियत्ति०। पुढवीकाइओ णिए उवजे जालगं वनस्सतिओ णिए उवजे। जइपुढवीकाइयएगिंदियत्ति० तइकि सुहुमपुढवीकाइय। जोपुढवीकायओ णिए उवजे तो सूक्ष्मपुढवीकाइयाओ उवजे। एगिंदियत्ति० बायरपुढवी० एगिंदि० ति० गोयमा। बादरपुढवीओ उवजे हे गौतम। दोहिंतोवि उववज्जंति जइसुहुमपुढ० एगिंदि० ति०। दोयांह ो उवजे तो सूक्ष्मपुढवीओ उवजे। किंपज्जत्तसुहुमपुढ० एगिंदि० ति० अपज्जत्तसुहुमपुढ० एगिंदि० ति० गोयमा। तो पर्याप्तासूक्ष्मपृथिवी उवजे अपर्याप्ता सूक्ष्मपृथिवी उवजे हे गौतम। दोहिंतो उववज्जंति जइबादरपुढवीका

॥ सूत्र ॥

॥ अ० ॥

॥ गाथा ॥

न्तएहिंतो ?गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जंति, एवं जाव वणस्सइकाइया चउक्कएणं भेदेणं उववाएयव्वा । जइ बेइंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तबेइंदिएहिंतो उववज्जंति अपज्जत्तबेइंदिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जंति एवं तेइंदियचउरिंदिएहिंतोवि । जदि पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं जलचरपंचिंदिएहिंतो एवं जेहिंतो नेरइयाणं उववाउ भणिउ तेहितो एतेसिंपि भाणियव्वो नवरं पज्जत्तगअपज्जत्तगेहिंतोवि उववज्जंति सेसं तंचेव । जदि मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिममणुस्सेहिंतो गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहितोवि उववज्जंति । जदि

देनोत्पादयितव्याः । यदि द्वीन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं पर्याप्तद्वीन्द्रियेभ्य उत्पद्यन्ते ऽपर्याप्तद्वीन्द्रियेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! द्वाभ्यामप्युत्पद्यन्ते, एवं त्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियेभ्योपि । यदि पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किं जलचरपञ्चेन्द्रियेभ्य एवं येभ्यो नैरयिकाणामुत्पादो भणितस्तेभ्य एतेषामपि भणितव्यो नवरं पर्याप्तकापर्याप्तकेभ्यो प्युत्पद्यन्ते शेषं तच्चैव । यदि मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं सम्मूर्च्छिममनुष्ये

इएहिंतो उ० । दोहिंतो उपजे जाव बादरपृथिवी उपजे । किं अपज्जत्तबायरपढ० र्गादिय ति० । तो अपर्याप्ता बादरपृथिवीएकेंद्रियथी उपजे । पज्जत्त बायरपढ० र्गादिय ति० गोयमा । पर्याप्ताबादर पृथिवी उपजे हे गौतम । दोहिंतोवि उववज्जंति एवं जाव वणस्सइकाइयाणवि चउक्कएणं भेदेणं उववाएयव्वो । पर्याप्ता अपर्याप्ता बेयको उपजे इम यावत् वनस्पतिकायलगें कहिवो ४ भेदेकरी उपजवाने केहासूत्र १ बादर २ पर्याप्ता ३ अपर्याप्ता ४ इम सघले उपजावीने कहिवो । जइबेइंदियतिरिक्खजो णिएहिंतो उ० । अथ द्विवेंद्रो बेंद्रियतिर्यंच योनियाथको पृथिवीकाय मांहि उपजे । तहिं पज्जत्त इंदिय ति० । तो शुं पर्याप्तबेंद्रिय तिर्यंचयोनियाथको उपजे । अपज्जत्तबेइंदिय ति० गोयमा । अपर्याप्ताबेंद्रियतिर्यंच योनियाथो उपजे हे गौतम । दोहिं तोवि उववज्जंति । ए बेइथकोपृथिवीकाय मांहि उपजे । एवं तेइंदियचउरेंद्रिएहिंतोवि उववज्जंति । इम इवे प्रकारे तेंद्रियचौरिंद्रियथी उपजावियो

गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो किं कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति अकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति सेसं जहा नेरइयाणं नवरं अपज्जत्तएहिंतोवि उववज्जंति । जदि देवेहिंतो किं भवणवासीवाणमंतरजोइसियवेमाणिएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! भवणवासीदेवेहिंतोवि जाव वेमाणियदे

भ्यो गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! द्वाभ्यामप्युत्पद्यन्ते । यदि गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्यः किं कर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते अकर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते शेष यथा नैरयिकाणां नवरमपर्याप्तकेभ्योऽप्युत्पद्यन्ते । यदि देवेभ्य उत्पद्यन्ते किं भवनवासिवानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! भवनवासिदेवेभ्योपि यावद्वैमानिकदेवेभ्यो ऽप्युत्पद्यन्ते । यदि भवनवासिदेवे

॥ भ० ॥

तेइंदियनोपरसवं दोयिभदेवरो कहिवा । जइपंचेंदिय तिरिक्खजोणीएहिंतो उ० । जो पंचेंद्रियतिर्यंचथो ऊपजे तो तहिं जलचरपंचेंदियति० । जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचथो ऊपजे । एवं जहिंतोनेरइयाण उववातो भणियो तेहिंतो एएसिंपि भा० नवरं । इम सर्व जिमतिर्यंचनो उपजवोमारको मांहि कह्यो इम तिर्यंचने पृथिवीकाय मांहि ऊपजिवो एतलो विशेष । पज्जत्त अपज्जत्तगेहिंतोवि उ० सेसंतंचेव जइमणुस्सेहिंतो उ० । पर्याप्ता अपर्याप्तथको ऊपजे थाकतो सर्वपाछलोपरि जो मनुष्यथो ऊपजे । तहिं किं सम्मुच्छिममणुस्सेहिंतो उ० गब्भवक्कंतिय मणुस्सेहिंतो उ० गोयमा । तो सम्मूर्छिममनुष्यथो उपजे गर्भजपृथिवी मनुष्यथो उपजे हे गौतम । दोहिंतोवि उववज्जंति जइगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । दोयांहुंतो उपजे जोगर्भजमनुष्यथो उपजे पृथिवीमांहि तहिं किं कम्मभूमिगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । तोकाई कर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथो अकर्मभूमिना मनुष्यथो अंतरद्वीपना मनुष्यथो । एवं जहानेरइयाणं तहाभा० णवरं । इम नारकोना आलावानोपरे सर्व कहिवो ए विशेष । अपज्जत्तएहिंतोवि उ० जइदेवेहिंतो उ० । अपर्याप्ता पृथिवीमांहि ऊपजे जो देवताथको पृथिवीमांहि ऊपजे । किं भवणवासीदेवेहिंतो उ० । तो भवणपतिपृथिवीमां उपजे । वाणमंतरदे० जोयसियदे० वेमाणीयदे० गौतमा । वानव्यंतर जोतिषी वैमानिकवासीथो उपजे हे गौतम । भवणवासीदेवेहिंतोवि उ० जाववेमाणीयदेवेहिंतोवि उ० । भवनपतिथो पृथिवीमांहि उपजे

॥ भाषा ॥

व्यादिपञ्चकविकलेन्द्रियत्रिकाऽपर्याप्ततिर्यग्पञ्चेन्द्रियसंमूर्च्छिमाऽपर्याप्तगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां ज्योतिष्केषु सम्मूर्च्छिमतिर्यक्पञ्चेन्द्रियासङ्ख्येयवर्षायुष्कखचरान्तरद्वीपजमनुष्याणामपि प्रतिषेधः एवं सौधर्मेशानयोरपि । सनत्कुमारादिषु सहस्रारपर्यंतेष्वऽकर्मभूमिजा ऽसङ्ख्यवर्षायुष्ककर्मभूमि

वेहिंतोवि उववज्जंति । जदि भवणवासीदेवेहिंतो किं असुरकुमारदेवेहिंतो जाव थणियकुमारेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! असुरकुमारदेवेहिंतो जाव थणियकुमारदेवेहिंतोवि उववज्जंति । जदि वाणमंतरदेवेहिंतो किं पिसायएहिंतो जाव गंधव्वएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! पिसाएहितोवि जाव गंधव्वेहिंतोवि उववज्जंति । जइ जोइसियदेवेहिंतो किं चंदविमाणेहिंतो जाव ताराविमाणेहिंतो उववज्जंति ? गो० !

भ्यः किमसुरकुमारदेवेभ्यो यावत्स्तनितकुमारदेवेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! असुरकुमारदेवेभ्यो यावत्स्तनितकुमारदेवेभ्योप्युत्पद्यन्त । यदि वानव्यन्तरदेवेभ्यः किं पिशाचेभ्यो यावद्गन्धर्वेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पिशाचेभ्योपि यावद्गन्धर्वेभ्योप्युत्पद्यन्ते । यदि ज्योतिष्कभ्यः किं चन्द्रविमानेभ्यो यावत्ताराविमानेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! चन्द्रविमाने ज्योतिष्कदेवेभ्यो यावत्ताराविमानज्योतिष्कदेवेभ्यो प्युत्पद्यन्ते । यदि वैमानि

जाव वैमानिकथी पिण उपजै । जइभवणवासीदेवेहिंतो उ तइ असुरकुमारदेवेहिंतो उ० । जो भवनपतिदेवथी उपजै तो असुरकुमारथी उपजै । जाव थणियकुमारदेवेहिंतो उ० गोयमा । जांलगै स्तनितकुमारथकी उपजै हे गौतम । असुरकुमारदेवेहिंतोवि उ० जाव थणियकुमारदेवेहिंतो उ० । असुरकुमारथी उपजै जां लगै स्तनितकुमारथी पिण उपजै । जइवाणमंतरदेवेहिंतोउ० किंपिसाएहिंतो उ० । जोवानव्यंतरदेवथी उपजै तोपिशाचथीउपजै । जाव गंधव्वेहिंतो उ० गोयमा । जांलगै गंधर्वथीउपजै हे गौतम । पिसाएहिंतोवि उ० जावगंधव्वेहिंतोवि उ० । पिशाचथी उपजै जावगंधर्वथी पिण उपजै । जइजोइसियदेवेहिंतो उ० तइकिं चंदविमाणेहिंतो उ० । जो जोतिषी देवताथी उपजै तो चद्रविमानथी उपजै । जाव ताराविमाणेहिंतो उ० जांलगैताराविमानथी उपजै हेगौतम । चंदविमाणजोइसियदेवेहिंतोवि उ० । चंद्रविमाननाजोतिषीउपजै । जावताराविमाणजोसियदेवेहिंतोवि

चंदविमाणे जोइसियदेवेहिंतो जाव तारविमाणजोइसियदेवेहिंतोवि उववज्जंति । जदि वेमाणियदेवेहिंतो किं कप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो कप्पातीतगवेमाणियदेवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कप्पोवगवेमाणिएहिंतो उववज्जंति । जदि कप्पोवगवेमाणिएहिंतो उववज्जंति किं सोहम्मेहिंतो जाव अच्चुएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सोहम्मेईसाणेहिंतो उववज्जंति नो सणंकुमार जाव अच्चुएहिंतो उववज्जंति एवं आउक्काइयावि, एवं तेउवाउएवि नवरं देववज्जेहिंतो उववज्जंति । वणस्सइकाइया जहा पुढवीकाइया, बे

॥ मूल ॥

कदेवेभ्यः किं कल्पोपकवैमानिकदेवेभ्यः कल्पातीतवैमानिकदेवेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! कल्पोपकवैमानिकेभ्यो नो कल्पातीतवैमानिकदेवेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि कल्पोपकवैमानिकदेवेभ्य उत्पद्यन्ते किं सौधर्मेभ्यो यावदच्युतेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! सौधर्मेशानेभ्य उत्पद्यन्ते नो सनत्कुमार (प्रभृति) यावदच्युतेभ्य उत्पद्यन्ते एवमप्कायिका अपि, एवं तेजोवाय्वपि नवरं देववर्जेभ्य उत्पद्यन्ते । वनस्पतिकायिका यथा पृ

॥ अ० ॥

जांलगे ताराविमानना जोतिषीथी ऊपजे । जइविमाणोयदेवेहिंतो उववज्जंति किंकप्पोवगवेमाणोयदेवेहिंतो उववज्जंति । जो विमानवासीदेवथी पृथिवीमांहि ऊपजै तोकांइकल्पगतथी पृथिवीकायमांहि ऊपजै । कप्पातीतिवेमाणोयदे० गोयमा । कल्पातीतथकी पृथिवीमांहि ऊपजै हे गौतम । कप्पोवगवेमाणोयदेवेहिंतो उ० नोकप्पातीतवेमाणोयदे० उ० । कल्पगतथी पृथिवीमांहि ऊपजै पिण कल्पातीतनापृथिवीमांहि ऊपजै । जइकप्पोवग वेमाणोयदेवेहिंतो उ० किं सोहम्मकप्पोवगवेमाणोयदे० । जो कल्पगतिना देवथा ऊपजै तो सौधमकल्पगतिनादेवथी ऊपजै । जाव अच्चुयकप्पोवग वेमाणोयदे० गोयमा । जांलगै अच्युतकल्पदेवथी ऊपजै हे गौतम । सोहम्मोमाणेहिंतो उ० नो सणंकुमार जाव नो अच्चुएहिंतोवि उ० । सौधर्मईशा नथी ऊपजै पिण नही सनत्कुमारथी जांलगै अच्युतथी ऊपजै । एवं आउकाइयाणवि एव तेउकाइयाणवि णवर देववज्जेहिंतो उ० । इम अपकाइय पिण कहिवा इम तेउवाउ पिण इम एतलो विशेष देवतावर्जीने ऊपजै । वणस्सइकाइया जहापुढवीकाइया । इम वनस्पतिकाय सर्व पृथिवीकायनी

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

इंदियतेइंदिय चउरिंदिया एते जहा तेउवाऊ देववज्जोहिंतो भाणियव्वो। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो उववज्जंति जाव देवेहिंतो उववज्जंति ? गो० ! नेरइएहिंतोवि उववज्जंति तिरिक्खजोणिएहिंतोवि मणुस्सेहिंतोवि देवेहिंतोवि उववज्जंति। जदि नेरइएहिंतोवि उववज्जंति किं रयणप्पभापुढवीनेरइएहिंतो जाव अहेसत्तमापुढवीनेरइएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढवीनेरइएहिंतोवि जाव अहेसत्तमापुढवीनेरइएहिंतोवि उववज्जंति, जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो किं एगिंदियतिरि

॥ अ० ॥

पृथिवीकायिकाः, द्वीन्द्रियास्त्रीन्द्रियाश्चतुरिन्द्रिया एते यथा तेजोवायू देववर्जेभ्यो भणितव्याः। पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते यावद्देवेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! नैरयिकेभ्योऽप्युत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेभ्योऽपि मनुष्येभ्योऽपि देवेभ्योऽप्युत्पद्यन्ते। यदि नैरयिकेभ्योऽप्युत्पद्यन्ते किं रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्यो यावदधःसप्तमपृथिवीनैरयिकेभ्यो प्युत्पद्यन्ते ? गौतम ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्योऽपि यावदधःसप्तमपृथिवीनैरयिकेभ्यो प्युत्पद्यन्ते। यदि तिर्यग्योनिकेभ्यः किमेकेन्द्रियेभ्यो यावत्पंचेन्द्रियेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! एके

॥ भाषा ॥

परे। बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया एत जहा तेऊवाऊदेवपज्जवहिंतो भा०। बेंद्रिय तेंद्रिय चउरिंद्रिय ए जिम तेऊवाऊ जिम देवतावर्जीने सघलो कहिवो। पंचेंदियतिरिक्खजोणीयाण भंते कतोहिंतो उ०। पचेंद्रियतिर्यंच योनियानो हे भगवन् किहांथी आवा ऊपजे। किं नेरइएहिंतो उ० जाव किंदेवेहिंतो उ० गोयमा नेरइएहिंतोवि उ० जाव देवेहिंतोवि उ०। कांई नारकीथी ऊपजे कांई जांलगे देवताथी ऊपजे हे गौतम नारकीथी ऊपजे जांलगे देवताथी पिण ऊपजे। जइनेरइएहिंतो उ० किं रयणप्पभपुढवीनेरइएहिंतो उ०। जो नारकीथी ऊपजे तोकिंइं रत्नप्रभाथी ऊपजे। जाव अहेसत्तमाए पुढवीएनेरइएहिंतो उ० गोयमा। जांलगे सातमी नरकथा पिण ऊपजे हे गौतम। रयणप्पभपुढवीनेरइएहिंतोवि उ० जाव अहेसत्तमापुढवीनेरइएहिंतोवि उ०। रत्नप्रभापृथिवीनानारकीथी ऊपजे पिण परा। जइतिरिक्खजोणिएहिंतो उ०। जोतिर्यंच पचेंद्रियथी ऊपजे

रुक्खजोणिएहिंतो जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति? गोयमा! एगिंदिएहिंतोवि जाव पंचिंदिएहिंतोवि उववज्जंति। जदि एगिंदिएहिंतोवि किं पुढवीकाइएहिंतो एवं जहा पुढवीकाइयाणं उववाइ ज्जणिउ तहेव एतेसिंपि जाणियव्वो नवरं देवेहिंतो जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतोवि उववज्जंति नो आणयकप्पोवगवेमाणियदेवेहिंतो जाव अच्चुएहिंतोवि उववज्जंति। मणुस्साणं भंते! कतोहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो जाव देवेहिंतो उववज्जंति? गोयमा! नेरइएहिंतोवि उववज्जंति जाव देवे

न्द्रियेभ्योपि यावत्पञ्चेन्द्रियेभ्य उत्पद्यन्ते, यदि एकेन्द्रियेभ्य स्तर्हि किं पृथिवीकायिकेभ्य एवं यथा पृथिवीकायिकानामुत्पादो भणित स्तथैवतेषामपि भणितव्यो नवरं देवेभ्यो यावत्सहस्रारकल्पोपकवैमानिकदेवेभ्योपि उत्पद्यन्ते नैवानतकल्पोपकवैमानिकदेवेभ्यो यावदच्युतेभ्योपि उत्पद्यन्ते। मनुष्या भदन्त! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्योयावद्देवेभ्य उत्पद्यन्ते? गौतम! नैरयिकेभ्योप्युत्पद्यन्ते यावद्देवेभ्योपि। य

किंवगिंदियति० जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उ० गोयमा। तो एकेंद्रिय तिर्यंचथी उपजे जावत पंचेंद्रियतिर्यंच योनियाथी उपजे इ गौतम। गिंदियति० जाव पंचेंदियतिरिक्खजोणिएहितोवि उ०। एकेंद्रियथी पिण उपजे जाव पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनियाथी उपजे। जइएगिंदिय ति० किं पुढवीकाइएगेंदियति०। जो एकेंद्रियथी उपजे तो पृथिवीकायथी पंचेंद्रिय तिर्यंचथी उपजे। एव जहापुढवीकाइयाणं उववाथी भणिओ तहेव एएसि पिभा०। इम जिम पृथिवीकायने उपजवो कह्यो तिम एहने पिण सर्व कहिवो। नवरं देवेहिंतो जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणीयदेवेहिंतो उ०। ए विशेष जाणवो सहस्रारकल्पनाद्वताथी पिण पंचेंद्रिय तिर्यंच मांहि उपजे। नो आणयकप्पोवगवेमाणीयदेवेहिंतो उ०। पिण आनतप्राणतना पंचेंद्रियतिर्यंच मांहि न उपजे। जाव अच्चयकप्पोवगवेमाणीयदे० मणुस्सा णं भंते कतोहिंतो उ० किंनेरइएहिंतो उ०। जाणवो अच्चुतादिकतिर्यंचमांहि न उपजे मनुष्य हे भगवन् किहां थी उपजे नारकीथी उपजे। जाव देवेहिंतो उ० गोयमा नेरइएहितोवि उ० जाव देवेहिंतोवि उ०। जाणवो देवताथी

॥ मूल ॥

हिंतोवि । जदि नेरइएहिंतो किं रयणप्पभापुढवीनेरइएहिंतो जाव किं अहेसत्तमापुढवीनेरइएहिंतोवि उववज्जंति ? गोयमा ! रयणप्पभापुढवीनेरइएहिंतोवि जाव तमापुढवीनेरइएहिंतोवि उववज्जंति णो अहेसत्तमापुढवीनेरइएहिंतो उववज्जंति । जदि तिरिक्खजोणिएहिंतो उववज्जंति किं एगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो, एवं जेहिंतो पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उववाओ भणिओ तेहिंतो मणुस्साणवि निरवसेसो भाणियव्वो नवरं अहेसत्तमापुढवीनेरइया तेउवाउकाइएहिंतो न उववज्जंति सव्वदेवेहिंतो य उववज्जाएयव्वा

॥ अ० ॥

दि नैरयिकेभ्यः किं रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्यो यावदधस्सप्तमपृथिवीनैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकेभ्योपि यावदधस्सप्तमपृथिवीनैरयिकेभ्योपि उत्पद्यन्ते । नैवाधस्सप्तमपृथिवीनैरयिकेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि तिर्यग्योनिकेभ्य उत्पद्यन्ते किमेकेन्द्रियतिर्यग्योनिकेभ्य एवं भेदः पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामुत्पादो भणित स्तेभ्यो मनुष्याणामपि निरवशेषो भणितव्यो नवरं अधस्सप्तमपृथिवीनैरयिका

॥ भाषा ॥

उपजे । गौतम नारकीथी पिण उपजे यावत् देवताथी उपजे । जइनेरइएहिंतो० किंरयणप्पभपुढवीनेरइएहिंतो उ० । जो नारकीथी उपजे तो रत्नप्रभापृथिवीकायथी उपजे । जाव अहेसत्तमपुढवीनेरइएहिंतो० गोयमा । जावंगे नोचेसातमीथी मनुष्यमांहि उपजे हे गौतम । रयणप्पभपुढवीनेरइएहिंतोविउ० । रत्नप्रभाथीपिण उपजे । जावछट्ठीतमापुढवीनेरइएहिंतोविउ० । जावंग छट्ठीतमापृथिवी लगें पिण उपजे । नो अहेसत्तमपुढवीनेरइएहिंतो उ० जइतिरिक्खजोणिएहिंतो उ० । पिण सातमीथी मनुष्य मांहि न उपजे तो तिर्यंचथी मनुष्यमांहि उपजे । किंएगिंदियतिरिक्खजोणिएहिंतो उ० । तो एकेंद्रिय तिर्यंचथी उपजे । एव जेहिंतोपंचिंदिय तिरिक्खजोणीयाणं उववाओ भणिओ तेहिंतो मणुस्साणविनिरवसेसोभा० । इम जिम पंचेंद्रिय तिर्यंचनो उपजवो कह्यो तिम सर्व अविशेषपणे मनुष्यनो पिण कहिवो । णवरं अहेसत्तमापुढवीनेरइएहिंतो । एविशेष नोचेसातमीथी आयो मनुष्यनथाय । तेउवाउकाइएहिंतोनो उववाएयव्वो सव्वदेवेहिंतो उववायव्वो । तेउकायथी वायुथी आयो मनुष्य न थाय अनेसघलदेवता मांहि थी उ

जाव कप्पातीतगवेमाणियसव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतोवि उववज्जावेयव्वा । वाणमंतरदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो जाव देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! जेहिंतो असुरकुमारा तेहिंतोवि भाणियव्वा । जोइसियदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! एवंचेव नवरं सम्मुच्छिमअसंखेज्जवासाउयखहयरअंतरदीवमणुस्सवज्जेहिंतो उववज्जावेयव्वा । एवं वेमाणियावि सोहम्मीसाणगा भाणियव्वा एवं । सणं

तेजस्कायिकवायुकायिकेभ्यो नोत्पद्यन्ते सर्वदेवेभ्यश्चोत्पादयितव्या यावत्कल्पातीतकवैमानिकसर्वार्थसिद्धदेवेभ्योपि उत्पादयितव्याः वानव्यन्तरदेवा भदन्त ! कस्मादुत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! एभ्योप्यसुरकुमारा स्तेभ्योपि भणितव्याः । ज्योतिष्कदेवा भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! एवं चैव नवरं सम्मूर्च्छिमा सङ्ख्यातवर्षायुष्कखचरांतरद्वीपमनुष्यवर्जेभ्यो त्पादयितव्याः, एवं वैमानिका अपि सौधर्मेसानकाप्येवं भणितव्याः । एवं सनत्कुमाराक अपि नवरं असङ्ख्यातवर्षायुष्काकर्मभूमिगवे



पजवो कहिवो । जाव कप्पातीतवैमाणियसव्वट्ठसिद्धदेवेहिंतोवि उ० । जाविगै कल्पातीतनवग्रैवेयकनादेवता सर्वार्थसिद्धना पिण मनुष्यमांहि उपजाव वा एतलें मनुष्यनो आगति कहो । वाणमंतरदेवाण भंते कतोहिंतो उ० किंनेरइएहिंतो उ० जावदेवेहिंतो उ० गोयमा । वाणव्यन्तरना देवता हे भगवन् किहांथी उपजे नारकीथी उपजे देवताथी उपजे हे गौतम । जेहिंतो असुरकुमारा उ० तेहिंतो वाणमंतरावि उ० । जिम मांहिथी असुरकुमार उपजे तिहांथी व्यंतर उपजे । जोयसियदेवाणं भंते कतोहिंतो उ० गोयमा । जोतिषीदेवता किहांथी उपजे हे गौतम । तंचेव णवरं सम्मुच्छिम असंखिज्जवासाउयखहरपचेंदियतिरिक्खजोणीयवज्जेहिंतो । इम होज व्यंतरनोपरि ए विशेष सम्मूर्च्छिम असंख्याता आयुषानाधणी खेचरपंचेंद्रियवर्जीने । अंतरदीवगमणुस्सवज्जेहिंतो उववाएयव्वो वेमाणियदेवाण भंते कतोहिंतो उ० गोयमा । अंतरद्वीपमां मनुष्यनें वर्जीने सघलें उपजावा वैमानिक किहांथी उपजे हे गौतम । नेरइएहिंतो उ० तिरिक्खजोणीएहिंतो उ० । नारकीमांहिथी न उपजे पंचेंद्रियतिर्यंचथी उपजे । मणुस्सेहिंतोवि उ० सोहेवेहिं

कुमारगावि नवरं असंखेज्जवासाउयअकम्मभूमिगवज्जेहिंतो उववज्जंति एवं जाव सहस्सारकप्पोवगवेमाणियदेवा जाणियव्वा । आणयदेवाणं भंते ! कओहिंतो उववज्जंति किं नेरइएहिंतो जाव देवेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएहिंतो नो तिरिक्खजोणिएहिंतो मणुस्सेहिंतो उववज्जंति, नो देवेहिंतो । जइ मणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सम्मुच्छिममणुस्सेहिंतो गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति नो सम्मुच्छिममणुस्सेहिंतो उववज्जंति । जदि गब्भवक्कंतियमणुस्से

॥ मूल ॥

यकेभ्य उत्पद्यन्ते । एवं यावत्सहस्रारकल्पोपकवैमानिकदेवा भणितव्याः । आनतदेवा भदन्त ! कुत उत्पद्यन्ते किं नैरयिकेभ्यो यावद्देवेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! नैव नैरयिकेभ्यो नच तिर्यग्योनिकेभ्यः, मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते नैव देवेभ्यः । यदि मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं सम्मूर्च्छिममनुष्येभ्यो गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते नैव सम्मूर्च्छिममनुष्येभ्यः । यदि गर्भव्युत्क्रान्तिक

॥ अ० ॥

तो उ० एवं सोहम्मीसाणगदेवाविभाणीयव्वा । मनुष्यथी उपजे देवताथी उपजे इम सौधर्मेशानकल्पे कहिवा । एवं सणंकुमाराणविभा० णवर असंखिज्जवासाउय अकम्मभग वज्जेहिंतो उ० । इम सनत्कुमार सर्व कहिवा ए विशेष असंख्याता वर्षना आउषाना अकर्मभूमिना वर्जीने उपजाववा । एवं जाव सहस्रारकप्पोवगवेमाणीयदेवाणभा० । इम जांलगे सहस्रारकल्पना वैमानिकदेवता सघले कहिवा तिर्यंच मनुष्यमांहि उपजे । आणयदेवाण भंते कओहिंतोउ० किंनेरइएहिंतो जाव देवोहिंतोउ० गोयमा । आनतप्राणतकल्पनादेवकिहांथी उपजे नारकीथी जांलगें देवताथी उपजे हे गौतम । नो नेरइएहिंतो उ० नो तिरिक्खजोणिएहिंतो उ० । नारकीथी न उपजे तिर्यंचथी पिण न उपजे । मणुस्सेहिंतोउ० णोदेवेहितोउ० जइमणुस्सेहिंतोउ० । मनुष्यथी उपजे देवताथी न उपजे जोमनुष्यथी उपजे तो । किंसमुच्छिममणुस्सेहिंतो उ० गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० गोयमा । समूर्च्छिमथी उपजे गर्भजमनुष्यथी उपजे हे गौतम । नोसमुच्छिममणुस्सेहिंतो उ० गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । समूर्च्छिममनुष्यथी न उपजे गर्भजमनुष्यथी उपजे । जदि ग

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

हिंतो उववज्जंति किं कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति अकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो अंतरदीवएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति नो अकम्मभूमिगेहिंतो नो अंतरदीवगेहिंतो। जदि कम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संखेज्जवासाउएहिंतो असंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! संखेज्जवासाउएहिंतो नो असंखेज्जवासाउएहिंतो । जदि संखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं पज्जत्तएहिंतो अपज्जत्तएहिंतो उवव

॥ भ० ॥

मनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं कर्मभूमिकेभ्यो ऽकर्मभूमिकेभ्यो ऽन्तरद्वीपकेभ्य श्चोत्पद्यन्ते ? गौतम ! कर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते नो बाकर्मभूमिकेभ्यो नचांतरद्वीपकेभ्यः । यदि कर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं सङ्ख्यातवर्षायुष्केभ्यो ऽसङ्ख्यातवर्षायुष्केभ्य श्चोत्पद्यन्ते ? गौतम ! सङ्ख्यातवर्षायुष्केभ्य उत्पद्यन्ते नैवा ऽसङ्ख्यातवर्षायुष्केभ्यः । यदि सङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं

॥ भाषा ॥

भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० किंकम्मभूमग गब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । जो नभंजमनुष्यथी उपजे तो कर्मभूमिना गर्भजपचेंद्रिय मनुष्यथी उपजे । अकम्म भूमगगब्भ० मणु० उ० अंतरदीवगगब्भ० मणु० उ० गोयमा । अकर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथी उपजे अंतरद्वीपना मनुष्यथी उपजे हे गौतम । नो अकम्मभूम गहिंतो णो अंतरदीवगेहिंतो उ० । अकर्मभूमिना नहीं अंतरद्वीपथी न उपजे। कम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । कर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथी उपजे जइकम्मभूमगगब्भ० मणु० उ० । जो कर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथी उपजे। किं संखिज्जवासाउयकम्मभू० । तो संख्यातावर्ष आयुषथी उपजे । असंखिज्जवासा उयकम्मभू० गोयमा । असंख्यातावर्ष आयुषथी उपजे हेगौतम । संखिज्जवासाउयकम्मभू० नो असंखिज्जवासाउयकम्मभू० । संख्यातावर्षायुथी उपजे असं ख्यातावर्षायुषथी उपजे । जइ संखिज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । जो संख्यातावर्षआयुषकर्मभूमिना गर्भजमनुष्यथी उपजे । किंपज्जत्तसंखिज्जवा० अपज्जत्तसंखिज्जवा० गो० । तो पर्याप्तासंख्यातावर्षायुषथी संख्याता अपर्याप्तावर्षथी उपजे हे गो० । पज्जत्तगसंखिज्जवासाउयकम्म

॥ मूल ॥

जंति ? गोयमा ! पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति नो अपज्जत्तए हिंतो उववज्जंति । जइ पज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं सम्मद्दिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति मिच्छद्दिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवासाउएहिंतो सम्मामिच्छद्दिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवासाउएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! सम्मद्दिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतोवि मिच्छद्दिट्ठीवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतिएहिंतोवि नोसम्मा

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

पर्याप्तकेभ्यो ऽपर्याप्तकेभ्य श्चोत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्तकसङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते नैवापर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि पर्याप्तकसङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं सम्यग्दृष्टिपर्याप्तकसङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिकभ्य उत्पद्यन्ते उत मिथ्यादृष्टि पर्याप्तकसङ्ख्यातवर्षायुष्कभ्यः सम्यग्मिथ्यादृष्टिपर्याप्तकसङ्ख्यातवर्षायुष्कभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! सम्यग्दृष्टिपर्याप्तकसङ्ख्येयवर्षायुष्ककर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्योपि मिथ्यादृष्टिपर्याप्तकेभ्योपि उत्पद्यन्ते नैव सम्यग्मिथ्यादृष्टिपर्याप्तकसङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिगर्भव्यु

भू० । पर्याप्ता सङ्ख्याताकर्मभूमयो उपजे । नो अपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभू० । अपर्याप्तासङ्ख्यातावर्षायुष कर्मभूमयो न उपजे । जइपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । जो पर्याप्तासङ्ख्यातावर्षायुष कर्मभूमिना गर्भजमनष्यो उपजे । किंसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवा० । तो सम्यग्दृष्टि पर्याप्ता सङ्ख्यातावर्षायुषयो उपजे । मिच्छदिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवा० सम्मामिच्छदिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवा० गोयमा । मिथ्यादृष्टि पर्याप्तायो उपजे सम्यग्मिथ्यादृष्टिपर्याप्तासङ्ख्यातावर्षायुषयो हुंगो० । सम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवा० मिच्छदिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवा० । सम्यग्दृष्टिद्वीपि उपजे मिथ्यादृष्टियो न उपजे यो सम्मामिच्छादिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवा० । सम्यग्मिथ्यादृष्टियो न उपजे । जइसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । जो सम्यग्दृष्टि पर्याप्ता सङ्ख्यातावर्षायुषकर्मभूमिना गर्भजमनुष्यो उपजे । किंसंयतसम्मदिट्ठिपज्जत्तगसंखेज्जवा० । तोसंयतसम्यग्दृष्टियो उपजे । असंयत

मिच्छादिट्ठीपज्जत्तएहिंतो उववज्जंति ॥ जदि सम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उववज्जंति किं संजयसम्मदिट्ठीपज्जत्तएहिंतो असंजयसम्मदिट्ठीपज्जत्तएहिंतो संजयासंजयसम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जेहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! तिहिंतोवि उववज्जंति । एवं जाव अच्चुओकप्पो एवं गेविज्जदेवावि नवरं संजयासंजया एते पडिसेहेयव्वा । एवं जहेव गेविज्जगदेवा तहेव अणुत्तरोववाइयावि नवरं इमं नाणत्तं संजयाचेव । जदि संजयसम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो

॥ सूत्र ॥

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

त्क्रान्तिकेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि सम्यग्दृष्टिपर्याप्तकसङ्ख्यातवर्षायुष्ककर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं संयतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तकेभ्यो ऽसंयतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तकेभ्यः संयतासंयतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तकसङ्ख्यातेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! त्रिभ्योऽप्युत्पद्यन्ते । एव यावदच्युतकल्पः, एवं ग्रैवेयकदेवा अपि नवरं संयतासयता एते प्रतिषेधयितव्याः, एवं यथैव ग्रैवेयकदेवा स्तथैवानुत्तरोपपातिकापि नवर मिमं नानात्वं संयता चैव यदि संयतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तसंख्येयवर्षायुःकर्मभूमिकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते किं प्रमत्तसंयतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तसंख्येयवर्षायुःकर्मभूमिकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्यो ऽप्रमत्तसंयतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तसंख्येयवर्षायु कर्मभूमिकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! अप्रमत्तसं

सम्मदिट्ठीपज्जत्तगसंखेज्जवा० संयतासंयतसम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवा० गोयमा । असंयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्तओ उपजे किंसंयतासंयतसम्यग्दृष्टिओ उपजे उ० हे गौतम । तीण्हंतोवि उववज्जंति एव जाव अच्चुओकप्पो । तीनांहतो उपजे इम जांबारनालगे आवक उपजे । एवंचेव गेविज्जगदेवाणंपि णवर संयत संयतेहिंतोविपडिसेहोकायव्वो । इमग्रैवेयकनादेवता तिमहोज ए विशेष यतिमिथ्यादृष्टिनोप्रतिकारिवो यतिलिंगमिथ्यादृष्टिहुंतोग्रैवेयकथीउपरि न उपजे एवं जहेव गेविज्जगदेवा तहेव अणुत्तरोववाइयावि णवर इमं णाणत्तं सजयाचेवउ० । इम तिमहोज अनुत्तरविमाननो उपजवो कहिवो पिण ए विशेष साधुचारित्रिया उपजे । जइसंयतसम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवासाउयकम्मभूमगगब्भवक्कंतियमणुस्सेहिंतो उ० । जो संयतसम्यग्दृष्टि पर्याप्ता संख्यातावर्षायुष्क

जानामपि प्रतिषेध आनतादिषु तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणामपि विजयादिषु मिथ्यादृष्टिमनुष्याणामपीति । गतं पञ्चमद्वार मिदानीं षष्ठं द्वारमभिधित्सु राह-नेरइयाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छन्ति कहें उववज्जती त्यादि ॥ पाठसिद्धं नवरमत्राप्येषः संक्षेपार्थः, नैरयिकाणां स्वभावा

उववज्जंति किं पमत्तसंजयसम्मदिट्ठीपज्जत्तएहिंतो अप्पमत्तसंजएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! अपमत्तसंजएहिंतो उववज्जंति नो पमत्तसंजएहिंतो उववज्जंति । जदि अपमत्तसंजएहिंतो उववज्जंति किं इड्ढिपत्त अपमत्तसंजएहिंतो अणिड्ढिपत्तअपमत्तसंजएहिंतो उववज्जंति ? गोयमा ! दोहिंतोवि उववज्जंति । दारं ५ नेरइयाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजो

यतसम्यग्दृष्टिपर्याप्तकेभ्य उत्पद्यन्ते नो प्रमत्तसंयतेभ्य उत्पद्यन्ते । यदि अप्रमत्तसंयतेभ्य उत्पद्यन्ते किमर्द्धिप्राप्ताप्रमत्तसंयतेभ्यो ऽनर्द्धिप्राप्ताप्रमत्तसंयतेभ्य उत्पद्यन्ते ? गौतम ! द्वाभ्यामप्युत्पद्यन्ते । द्वारम् । ५ । नैरयिका भदन्त ! अनन्तरमुद्वर्त्य क्व गच्छन्ति क्वोत्पद्यन्ते किं नैरयिकेषूत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषु मनुष्येषु देवेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! नो नैरयिकेषूत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते मनुष्येषूत्पद्यन्ते नो देवेषूत्पद्यन्ते । य

र्मभूमिना गर्भजमनुष्यथी ऊपजे । किं पमत्तसंयतसम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवा० अपमत्तसंयतसम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखेज्जवा० पं० गोयमा । तो अप्रमादीसंयत साधुसम्यग्दृष्टिथी ऊपजे अप्रमादीसंयतसम्यग्दृष्टिथी ऊपजे हेगौतम । अपमत्तसंयतसम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखि० । अप्रमत्तसाधु अनन्तरे ऊपजे । नो पमत्तसंयत सम्मदिट्ठीपज्जत्तसंखि० । पिण प्रमादीसाधुथी न ऊपजे । जइ अपमत्तसंजएहिंतो उ० किं इड्ढिपत्तया अपमत्तसंजएहिंतो उ० । जो अप्रमादीसाधुचारित्री थी ऊपजे तो ऋद्धिप्राप्ति आकर्मऔषध्यादि प्राप्त अपमत्तथी ऊपजे । अणिड्ढिपत्त अपमत्तसंजएहिंतो उ० गोयमा । अनऋद्धिप्राप्त अप्रमत्तसंयतथी ऊपजे हे गौ० । दोहिंतोवि उववज्जंति द्वारं । बेथकी ऊपजे एतले आगतिद्वार कह्यो ५ । नेरइयाणं भंते अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उ० । हिवे गतिद्वार कहेछैं नारकी हे भगवन् आंतराविना नीकली किहां जाय किहां ऊपजे नारकीमांहि उपजे । किं तिरिक्खजोणिएसु उ०

॥ मूल ॥

णिएसु मणुस्सेसु देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति म णुस्सेसु उववज्जंति नो देवेसु उववज्जंति । जदि तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति किं एगिंदिय जाव पंचिं दियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? गोयमा ! नो एगिंदिएसु जाव नो चउरिंदिएसु उववज्जंति। एवं जेहिं तो उववाउ भणिउ तेसु उव्वट्टणावि भाणियव्वा नवरं समुच्छिमेसु न उववज्जंति, एवं सव्वपुढवीसु भा णियव्वं नवरं अहे सत्तमाउ मणुस्सेसु न उववज्जंति । असुरकुमाराणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं ग

॥ अ० ॥

दि तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते किमेकेन्द्रिय (प्रज्ञप्ति) यावत्पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! नो एकेन्द्रियेषु यावन्नोचतुरिन्द्रियेषूत्पद्य न्ते एवं येषु उपपातो भणितस्तेषूद्वर्त्तनापि भणितव्या नवरं सम्मूर्च्छिमेषु नोत्पद्यन्ते' एवं सर्वपृथिवीषु भणितव्यम् नवरमधस्सप्तमातोमनु ष्येषु नोत्पद्यन्ते । असुरकुमारा भदन्त ! अनन्तरमुद्वर्त्य क्व गच्छन्ति क्वोत्पद्यन्ते किं नैरयिकेषूत्पद्यन्ते यावद्देवेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! नो नैरयि

॥ भाषा ॥

मणुस्सेसु उ० देवेसु उ० गोयमा । तिर्यंचमांहि उपजे मनुष्यमांहि उपजे देवताथी उपजे हे गौतम । नो नेरइएसु उ० तिरिखजोणीएसु उ० मणुस्सेसु उ० । नारकीमांहि न उपजे तिर्यंचमांहि उपजे मनुष्यमांहि उपजे। णो देवेसु उ० जदतिरिखजोणीएसु उ० । देवमांहिथी न उपजे जो तिर्यंचमांहि उ पजे तो । किएगेंदियति० जाव पंचिंदियति० गोयमा ! तो एकेंद्रियमांहि उपजे कि जाव पंचेंद्रियमांहि उपजे हे गौतम । नाएगेंदियति० जाव नो चौ रिंदियति० पंचिंदियति० । एकेंद्रियमांहि न उपजे जांलगे चौरिंद्रिय मांहि न उपजे पंचेंद्रियतिर्यंच । एव जेहिंतो उववाओ भणिओ तेसिउव्वट्टणावि भा० । इम जेणे उपजिवो कहिवो तिम चविवानो वक्तव्यता कहो । णवरं समुच्छिमेसु णो उववज्जति एवं सत्तसुपुढवीसुभा० णवर अहेसत्त[illegible]स सुनो उ० । ए विशेष समूर्च्छिमतिर्यंच मांहि नारकीमांहिनआवे इम सघलीपृथिवीये जाणिवो ए विशेष हेवे सातमीना नारकीमानुषमांहिनावे तिर्यंच थाय । असुरकुमाराणं भंते अणंतरं उव्वट्टित्ताकहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसुउ० । असुरकुमारथी हे भगवन् चवीने किहां उपजे किहां नार

च्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएसु तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु उववज्जंति नो देवेसु उववज्जंति । जदि तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति किं एगिंदिएसु जाव पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति ? गोयमा ! एगिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति नो बेइंदिएसु जाव नो चतुरिंदिएसु पंचिंदियतिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति । जदि एगिंदिएसु उववज्जंति किं किं पुढवीकाइयएगिंदिएसु जाव वणस्सइकाइयएगिंदिएसु उववज्जंति ? गोयमा ! पुढवीकाइयएगिंदिए

केषु तिर्यग्योनिकेषु मनुष्येषु नो देवेषूत्पद्यन्ते । यदि तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते किमेकेन्द्रियेषु यावत्पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! एकेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते नो द्वीन्द्रियेषु यावन्नो चतुरिन्द्रियेषु पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते । यदि एकेन्द्रियेषूत्पद्यन्ते किं पृथिवीकायिकैकेन्द्रियेषु यावद्वनस्पतिकायिकैकेन्द्रियेषु उत्पद्यन्ते ? गौतम ! पृथिवीकायिकैकेन्द्रियेष्वपि अप्कायिकैकेन्द्रियेष्वपि उत्पद्यन्ते नो तेजस्का

कोमांहि उपजै । जाव देवेसु उ० गोयमा नोनेरइएसुउ० तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु० णोदेवेसुउ० । जोनेरइएसु किं एगिंदियएसु जाव पंचेंदिय तिरिक्खजोणिएसु उ० गोयमा । जो तिर्यंचमें उपजैतो कोइ एकेंद्रियमांहि

सुवि आउक्काइयएगिंदियसुवि उववज्जंति नो तेउक्काइएसु नो वाउक्काइएसु वणस्सइकाइएसु उववज्जंति गोयमा ! नो सुहुमपुढवीकाइएसु अपज्जत्तयबादरपुढवीकाइएसु उववज्जंति । जइ बादरपुढवीकाइएसु किं पज्जत्तगबादरपुढवीकाइएसु अपज्जत्तयबादरपुढवीकाइएसु उववज्जंति ? गोयमा ! पज्जत्तएसु उववज्जंति नो अपज्जत्तएसु एवं आउवणस्सइसु नाणियव्वं, पंचिंदियतिरिक्खजोणियमणुस्सेसु य जहा नेरइयाणं उव्वट्टणा समुच्छिममवज्जा तहा नाणियव्वा । एवं जाव थणियकुमारा । पुढवीकाइयाणं भंते !

॥ सूत्र ॥

यिकेषु नो वायुकायिकेषु वनस्पतिकायिकेषूत्पद्यन्ते । यदि पृथिवीकायिकैकेन्द्रियेषु उत्पद्यन्ते किं सूक्ष्मपृथिवीकायिकेषूत्पद्यन्ते बादरपृथिवीकायिकेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! सूक्ष्मपृथिवीकायिकेषु बादरपृथिवीकायिकेषूत्पद्यन्ते । यदि बादरपृथिवीकायिकेषु किं पर्याप्तकबादरपृथिवीकायिकेषूत्पद्यन्ते अपर्याप्तकबादरपृथिवीकायिकेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! पर्याप्तकेषूत्पद्यन्ते नो अपर्याप्तकेषु । एवमब्वनस्पतीषु ज्ञातव्यम् । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकेषु मनुष्येषु च यथा नैरयिकाणामुद्वर्त्तना सम्मूर्च्छिमवर्जा तथा ज्ञातव्या, एवं यावत्स्तनितकुमाराः । पृथिवीकायिका भदन्त ! अन

॥ अ० ॥

बायरपुढवीकाइयएगिं० गोयमा । जो पुढविकायमांहि उपजे तो सूक्ष्मपृथिवीकायथी ऊपजे बादरपृथिवीकायथी उपजे हे गौतम । बायरपुढवीकाइयएगिंदिय० तो सूक्ष्मपुढवीकाइयएगिं० । बादरपृथिवीकायथी उपजे सूक्ष्मपृथिवीकायथी उपजे । जइ बादरपुढवीकाइएसु० । जोबादरपृथिवीकायथी ऊपजे । तइकिं पज्जत्तबायरपुढवीकाइएसु उ० अपज्जत्तबादरपुढवी गोयमा । तो पर्याप्तबादरपृथिवीकायथी ऊपजे अपर्याप्तबादरपृथिवीकाय ऊपजे हे गौतम । पज्जत्तएबादरपुढ० नो अपज्जत्तबायरपुढ० एम आउवणस्सइसुविभा० । पर्याप्तबादरपृथिवी पिण अपर्याप्तथी न ऊपजे इम अप्काय वनस्पतिथी । पंचिंदियतिरिक्खजोणीयमणुस्सेसु जहा नेरइयाणं उव्वट्टणा समुच्छिमवज्जाभणिया तहा भा० । पचेंद्रिय तिर्यंचथी जोनियंत मनुष्यमांहि जिम नारकीनी उद्वर्त्तना समूर्च्छिमवर्जीने कहिवा । एवं जाव थणियकुमारा पुढवीकाइयाणं भंते अणंतर उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंतिकहिं उ०

॥ भाषा ॥

अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति किं नेरइएसु जाव देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! नो नेरइएसु उववज्जंति तिरिक्खजोणिएसु मणुस्सेसु उववज्जंति, नोदेवेसु उववज्जंति । एवं जहा एतेसिंचेव उववाओ तहा उव्वट्टणावि देववज्जा भाणियव्वा । एवं आउवणस्सइबेइंदियतेइंदियचउरिंदियावि । एवं तेउवाउवि नवरं मणुस्सवज्जेसु उववज्जंति । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएसु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति, जइ नेरइएसु उववज्जंति किं रयणप्पभापुढवीनेरइएसु उववज्जंति जाव अहे सत्तमापुढवीनेरइएसु उववज्जंति ? गोयमा !

---

न्तरमुद्वर्त्य क्व गच्छन्ति क्वोत्पद्यन्ते किं नैरयिकेषु यावद्देवेषु ? गौतम ! नो नैरयिकेषूत्पद्यन्ते तिर्यग्योनिकेषु मनुष्येषु उत्पद्यन्ते नो देवेषु उत्पद्यन्ते एवं यथा एतेषां चैवोपपात स्तथोद्वर्त्तनापि देववर्ज्जा भणितव्या, एवमप्वनस्पतिद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिया अपि । एवं तेजोवाय्वपि नवरं मनुष्यवर्जेषु उत्पद्यन्ते । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका भदन्त ! अनन्तरमुद्वर्त्य क्व गच्छन्ति क्वोत्पद्यन्ते ? गौतम ! नैरयिकेषूत्पद्यन्ते यावद्देवेषूत्पद्यन्ते । यदि नैरयिकेषूत्पद्यन्ते किं रत्नप्रभापृथिवीनैरयिकेषूत्पद्यन्ते यावदधःसप्तमपृथिवीनैरयिकेषु उत्पद्यन्ते ? गौतम ! रत्नप्रभापृ

---

गोयमा । इम जांलगै स्तनितकुमार पृथिवीकायना जाव पृथिवीथी नीसरिया किहां जाय छै गौतम । नेरइएसु० उ० तिरिक्खजोणीएसु उ० मणुस्सेसु उ० नारकीमै तिर्यंचमें उपजै कि मनुष्यमांहि उपजै । नोदेवेसु उ० एवं जहा एतेसिंचेव उववाओ तहा उव्वट्टणावि देववज्जाभा० । देवथी न उपजै इम जिम उपजवो कह्यो तिम उद्वर्त्तना पिण कहवी । एवं आउवणस्सइबेइंदिया तेइंदिय चौरेंदियावि एवं तेउवाउवि णवरं मणुस्सवज्जमु उ० । इम अप्कायवनस्पतिकाय बेंद्रिय तेंद्रिय चौरेंद्रिय कहिवा इम तेउवाउ ए विशेष मनुष्यथी वर्जीने । पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंतिकहि उ० गोयमा । पंचेंद्रियतिर्यंच हे भगवन् अनंतर चवीने किहां उपजे जाय गौतम । नेरइएसु उ० जाव देवेसुउ० जइ नेरइएसु उ०

रयणप्पभापुढवीनेरइएसु उववज्जंति जाव अहेसत्तमपुढवीनेरइएसु उववज्जंति । जइ तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति किं एगिंदिएसु जाव पंचिंदिएसु ? गोयमा ! एगिंदिएसुवि उववज्जंति जाव पंचिंदिएसुवि उववज्जंति। एवं जहा तेसिंचेव उववाउ उव्वट्टणावि भाणियव्वा तहेव नवरं असंखेज्जवासाउएसुवि एते उववज्जंति। किं सम्मुच्छिममणुस्सेसु उववज्जंति मणुस्सेसु उ० गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु उववज्जंति ? गो० ! दोहिंतोवि



थिवीनैरयिकेष्वप्युत्पद्यन्ते यावदधस्सप्तमपृथिवीनैरयिकेष्वप्युत्पद्यन्ते । यदि तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते किमेकेन्द्रियेषु यावत्पञ्चेन्द्रियेषु ? गौतम ! एकेन्द्रियेष्वप्युत्पद्यन्ते यावत्पञ्चेन्द्रियेष्वप्युत्पद्यन्ते एवं यथा तेषाञ्चैवोपपात उद्वर्त्तनापि तथैव ज्ञातव्या नवरमसङ्ख्येयवर्षायुष्केषु उत्पद्यन्ते । यदि मनुष्येषूत्पद्यन्ते किं सम्मूर्च्छिममनुष्येषूत्पद्यन्ते गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्येषूत्पद्यन्ते ? गौ० । द्वयोरप्येवं यथोपपातस्तथो द्वर्त्तनापि ज्ञातव्या

तइ किं रयणप्पभपुढवीनेरइएसु उ० । नारकोमांहि उपजे जाव देवतामांहि पिण जो नारकोमें उपजे तो रत्नप्रभापृथिवीने उपजे । जाव अहेसत्तमा पुढवीने० गोयमा । जांलगे सातमीनरकतांई उपजे हे गौतम । रयणप्पभपुढवीने० जाव अहेसत्तमापुढवीने० । रत्नप्रभापृथिवीथी उपजे जांलगे सात मीनरकतांई । जइ तिरिक्खजोणीएसु उ० तइ किं एगिंदियति० जाव पंचिंदियति० गोयमा । जो तिर्यंचमांहि उपजे तो एकेंद्रियतिर्यंचमांहि उपजे जांलगे पचेंद्रियथी उपजे हे गौतम । एगिंदियति० जाव पंचेंदियति० एवं जहा एएसिंचेव उववाओ भणिओ । एकेंद्रियथी उपजे इम जिम एहनो उप जवो कह्यो । तहा उव्वट्टणावि भा० णवरं असंखिज्जवासाउएसुविएते उ० । तिम उद्वर्त्तना पिण कही ए विशेष असंख्यातावर्ष आउषथी उपजे । जइ मणुस्सेसु उ० तइ किं सम्मुच्छिममणुस्सेसु उ० गब्भवक्कंतियमणुस्सेसु उ० गोयमा । जो मनुष्यथी उपजे तो सम्मूर्च्छिममनुष्यथी उपजे गर्भजमनुष्यथी उपजे हे गौतम । दोसुविउ० एवं जहा उववाओ भणिओ तहेव उव्वट्टणावि भा० णवरं । दोयांहुंतो उपजे इम जिम उपपात कह्यो तिम उद्वर्त्तना कहिवी ए विशेष । अकम्मभूमिग अंतरदीवग असंखिज्जवासाउएसुविएते उववज्जंति भाणियव्वं । अकर्मभूमिनामनुष्यतिर्यंचमांहि उपजे अंतरद्वीपना मनुष्यतिर्यंचमां

एवं जहा उववाए भणिओ तहा उव्वट्टणाए वि णेयव्वा नवरं अकम्मभूमिगअंतरदीवगअसंखेज्जवासाउएसु वि एते उववज्जंतीति णेयव्वं, जदि देवेसु उववज्जंति किं भवणवासीसु उववज्जंति जाव किं वेमाणिएसु उववज्जंति ? गोयमा ! सव्वेसु देवेसुचेव उववज्जंति। जदि भवणवासीसु किं असुरकुमारेसु जाव थणियकुमारेसु उववज्जंति ? गोयमा ! सव्वेसुचेव उववज्जंति, एवं वाणमंतरजोइसियवेमाणिएसु निरंतरं उववज्जंति जाव सहस्सारोकप्पोत्ति । मणुस्साणं भंते ! अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंति कहिं उववज्जंति नेरइए

नवरमकर्मभूमिकान्तरद्वीपकासंख्येयवर्षायुष्केष्वपि एत उत्पद्यन्त इति भणितव्यम् । यदि देवेषूत्पद्यन्ते किं भवनपतिषूत्पद्यन्ते यावत्किं वैमानिकेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! सर्वेषु चैवोत्पद्यन्ते, यदि भवनपतिषूत्पद्यन्ते किमसुरकुमारेषु यावत्स्तनितकुमारेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! सर्वेषु चैवोत्पद्यन्ते । एवं वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकेषु निरन्तरमुत्पद्यन्ते यावत्सहस्रारः कल्प इति । मनुष्या भदन्त ! अनन्तरमुद्वृत्त्य क्व गच्छन्ति क्वोत्पद्यन्ते किं नैरयिकेषु यावद्देवेषूत्पद्यन्ते ? गौतम ! नैरयिकेष्वपि यावद्देवेष्वप्युत्पद्यन्ते' एवं निरन्तरं सर्वेषु स्थानेषु पृच्छा, गौतम !

हि असंख्यातावर्षायुषमांहि ऊपजे इम सघलै कहिवो । जद देवेसु उववज्जंति तद किं भवणवासीदेवेसु उ० । जो तिर्यंचदेवतामैं ऊपजै तो भवनपतिमां हि उपजै । जाव किं वेमाणीयदेवेसु उ० गोयमा । जाव णे वैमानिकमांहि ऊपजै हे गौतम । सव्वेसुचेवउ० जद भवणवासीसु उ० । सघलै ऊपजै जो भवनपतिथी उपजै । तद किं असुरकुमारेसु उ० जाव थणियकुमारेसु उ० गोयमा । तो असुरकुमारथी उपजै जाव स्तनितकुमारथी उपजै हे गौतम । सव्वेसुचेव उ० एवं वाणमंतरजोयसियवेमाणीएसु निरंतरं उव्वट्टित्ता जाव सहस्सारोकप्पोत्ति । सघलें ऊपजै इम वानव्यन्तरजोतिषी वैमानिकने निरंतर उद्वर्त्तना कहवी जांलगे सहस्रारकल्पतांई । मणुस्साणं भंते अणंतरं उव्वट्टित्ता कहिं गच्छंतिकहि उ० । मनुष्यने हे भगवन् अनंतरे नीकलीनें किहां जाय किहां ऊपजे । किंनेरइएसु उ० जाव किं देवेसु उ० गोयमा । नारकीमांहि ऊपजै जाव भवनपतिथी ऊपजै हे गौतम । नेरइएसुवि उ० जाव देवे

॥ सूत्र ॥ ॥ ५० ॥ ॥ गाथा ॥

सु उववज्जंति जाव देवेसु उववज्जंति ? गोयमा ! नेरइएसुवि उववज्जंति जाव देवेसुवि उववज्जंति, एवं निरंतरं सव्वेसु ठाणेसु पुच्छा, गोयमा ! सव्वेसु ठाणेसु उववज्जंति न कहिंवि पडिसेहो कायव्वो। जाव सव्वट्ठसिद्धदेवेसुवि उववज्जंति अत्थेगइया सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करंति, वाणमंतरजोइसियवेमाणियसोहम्मीसाणा जहा असुरकुमारा नवरं जोइसियाणय वेमाणियाण य चयंतीति अभिलावो कायव्वो। सणंकुमारदेवाणं पुच्छा, गोयमा ! जहा असुरकुमारा नवरं एगिंदिए

॥ सूत्र ॥

सर्वेषु स्थानेषूत्पद्यन्ते न क्वापि प्रतिषेधः कर्त्तव्यो यावत्सर्वार्थसिद्धदेवेष्वपि उत्पद्यन्ते, एके केचन सिध्यन्ति बुध्यन्ति मुच्यन्ते परिनिर्वान्ति सर्वदुःखानामन्तं कुर्वन्ति। वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकसौधर्मेशानाश्च यथा ऽसुरकुमारा नवरं ज्योतिष्कानाश्च वैमानिकानाश्च च्यवन्त इत्यभिलापः कर्त्तव्यः। सनत्कुमारदेवानां पृच्छा, गौतम ! यथा ऽसुरकुमारा नवरमेकेन्द्रियेषु नोपपद्यन्ते, एवं यावत्सहस्रारकदेवाः,

॥ ष० ॥

सुवि उ० एवं निरंतरं सर्वेसुठाणेसु पुच्छा गोयमा। नारकीमांहि उपजे जावत देवतामां उपजे इम निरंतर सघले ठिकाणे पूछे हे गौतम। सर्वेसठाणेसु उ० एकांहिंविपडिसेहोकायव्वो। सघले ठामें उपजे कांइगतिने प्रतिषेध न करिवो। जाव सव्वट्ठसिद्धदेवेसुवि उ०। जाव सर्वार्थसिद्धविमानें इंडकेथी उपजे। अत्थेगइया सिझंतिबुझंतिमुच्चंतिपरिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतंकरेंति। केतलाएक मनुष्यथी सीझे बुझेपामे कर्मथी मूंकाये सर्वार्थसिद्धपरि निर्वाण मोक्षसुखपामें सर्व संसारना दुःखथी अंतकरे इतले मोक्ष पामे। वाणमंतरजोयसियवेमाणियसोहम्मीसाणय। हिवे वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक सौधर्म ईशान। एते जहा असुरकुमारा णवरं जोइसियाणं वेमाणीयाणं चयंतीत्ति अभिलावो कायव्वो। ए जिम असरकुमारनं [illegible] णिवो पिण ए विशेष जोतिषी वैमानिकनो वक्तव्यता तिहां मुखेकरी आलावो पाठ कहिवो। सणंकुमारदेवाणं पुच्छा गोयमा। [illegible] प्रश्न उत्तर हे गौतम। जहा असुरकुमारा णवरं एगिंदिएसुणो उ०। जिम असुरकुमार तिम पिण ए विशेष एकेंद्रियमांहि न उपजे सौधर्म ईशानना

॥ भाषा ॥

सु न उववज्जंति, एवं जाव सहस्सारगदेवा। आणय जाव अणुत्तरोववाइया एवंचेव नवरं नो तिरिक्खजोणिएसु उववज्जंति, मणुस्सेसु पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्सेसु उववज्जंति। दारं ६। नेरइयाणं भंते! कइयाभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति एवं असुरकुमारावि जाव थणियकुमारावि पुढवीकाइयाणं भंते! कइयाभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति? गोयमा! पुढवीकाइया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—सोवक्कमाउया य निरुवक्कमाउया य तत्थणं जेते निरुवक्कमाउया ते नियमा तिभागावसे

आनत (प्रभृति) यावदनुत्तरोपपातिका एवं चैव नवरं नो तिर्यग्योनिकेषूत्पद्यन्ते मनुष्येषु पर्याप्तकसंख्येयवर्षायुःकर्मभूमिगर्भव्युत्क्रान्तिक मनुष्येषूत्पद्यन्ते। द्वारं। ६। नैरयिका भदन्त! कतिभागावशेषायुष्काः पारभविकायुः प्रकुर्वन्ति? गौतम! नियमात्त्रिभागावशेषायुष्काः पारभविकायुष्कं प्रकुर्वन्ति' एवं असुरकुमारा अपि यावत्स्तनितकुमाराः। पृथिवीकायिका भदन्त! कतिभागावशेषायुष्काः पारभाविकमायुः प्रकुर्वन्ति? गौतम! पृथिवीकायिका द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-सोपक्रमायुष्काश्च निरुपक्रमायुष्का श्च। तत्र ये निरुपक्रमायुष्कास्ते नियमात्रि

ऊपजै। एवं जाव सहस्सारगदेवा आणय जाव अणुत्तरोववाइयादेवावि एवंचेव णवरं नो तिरिक्खजोणीएसु उ०। इम सहस्रारलगै कहिवो आनतना जांलगै अनुत्तरविमानना तेहनैं पिण तेहिज ए विशेष पंचेंद्रियतिर्यंचमांहि न उपजै। मणुस्सेसुपज्जत्तगसंखिज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियेसु द्वारं। मनुष्यपर्याप्त संख्यातावर्षना आऊषाना कर्मभूमिना गर्भजमनुष्यमांहि ऊपजै ए आगतिद्वार कह्यो ६। नेरइयाणं भंते कतिभागावसेसाउयं परभवं उपकरेति गोयमा। हिवै आउषाने केतलें भागे आवताभवनो आउषो बांधै ते द्वार कहैछै नारकीरो हे भगवन् केतलोभाग आउषोथाकतां आवता भव आउ-बांधे हे गौतम। णियमाछम्मासावसेसाउयं परभवाउयं प०। निश्चेछमास थाकतां हुवे तिवारे दूजा भवनो आउषो बांधे। एवं असुरकुमारावि जाव थणियकुमारापुढवीकाइयाणं भंते कतिभागावसेसाउयं परभवाउय प० गोयमा। इम असुरकुमार जांलगै स्तनितकुमार पृथिवीकायने हे भगव

॥ मूल ॥ ॥ अ० ॥ ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

दुहृत्तानां गर्भजसंख्येयवर्षायुष्कतिर्यक्पंचेंद्रियमनुष्येषूत्पादः अधः सप्तमपृथिवीनारकाणां गर्भजसङ्ख्येयवर्षायुष्कतिर्यक्पञ्चेन्द्रियेष्वेव असुरकुमारादिज वानव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवानां बादरपर्याप्तपृथिव्यप्वनस्पतिगर्भजसङ्ख्येयवर्षायुष्कतिर्यग्पञ्चेन्द्रियमनुष्येषु पृथिव्यप्वनस्पतिद्वित्रिचतुरिन्द्रि यणां तिर्यग्गतौ मनुष्यगतौ च तेजोवायूनां तिर्यग्गतावेव तिर्यग्पञ्चेन्द्रियाणां नारकतिर्यङ्मनुष्यदेवगतिषु नवरं वैमानिकेषु सहस्रारपर्यन्तेषु मनुष्याणां सर्वेष्वपि स्थानेषु सनत्कुमारादिदेवानां सहस्रारदेवपर्यन्तानां गर्भजसङ्ख्येयवर्षायुष्कतिर्यग्पञ्चेन्द्रियमनुष्येषु आनतादिदेवतानां गर्भजसङ्ख्ये यवर्षायुष्कमनुष्येष्वेवेति । गतं षष्ठं द्वारमिदानीं सप्तमं द्वारं । तस्य चायमभिसम्बन्ध एषः-जीवानां नारकादिषु गतिषु विविध उपपातो वर्णितः

॥ मूल ॥

साउया परन्नवियाउयं पकरेंति तत्थणं जेते सोवक्कमाउया ते सिय तिन्नागावसेसाउया परन्नवियाउयं प करंति सिय तिन्नागतिन्नागाउया परन्नवियाउयं पकरंति सिय तिन्नागतिन्नागतिन्नागावसेसाउया परन्नवि

॥ अ० ॥

भागावशेषायुष्काः पारभाविकायुष्कं प्रकुर्वन्ति, तत्र ये सोपक्रमायुष्कास्ते स्यात्त्रिभागावशेषायुष्काः पारभाविकायुष्कं प्रकुर्वन्ति स्यात्त्रिभागत्रि भागावशेषायुष्काः पारभाविकायुष्कं प्रकुर्वन्ति स्यात्त्रिभागत्रिभागत्रिभागावशेषायुष्काः पारभाविकमायुः प्रकुर्वन्ति । अप्तेजोवायुवनस्पतिका

॥ भाषा ॥

न् कस्याभाग आउषांबंधतां बीजाभवनो आयुषो बांधे इ गोतम । पृढवीकाइयाद्विहापंत सोवक्कमाउयावनिरुवक्कमाउयाय । पृथिवीकाइयाना दोय भेदछे तेमध्ये सोपक्रम आऊषानाधणो १ । निरुपक्रम आऊषानाधणो २ । तत्थणंजेतेनिरुवक्कमाउआतेय तिन्नमातिभागावसेसाउयपकरंति । तिहां नि रुपक्रम आऊषानाधणो ते तिसे तीजोभागथाकतां आऊषा बांधे जिम २२ हजारवर्ष आयुषानो धणी आपणा भवनें तीजेभागे परलोकनो आऊषो बांधे तेहनो उत्कृष्टो ७३३३ सातहजारतीनसें तत्रीसवर्ष ४ मास एतलेकाल आऊषो आगलाभवनो बांधे । तत्थणं जेतेसोवक्कमाउआतेय सियतिभा गावसमाउयं परभवाउयप० । तिहां तेसोपक्रमा आऊषानाधणो ते कोइतीजोभाग थाकतां आऊषो बांधे । सियतिभागावसेसाउयं परभवाउयप० सि यतिभागतिभागतिभागावसेसाउयं परभवाउयप० इमहो । कोइजीव त्रिभाग एतलेशेष भागथाकतां परभवनो आउबांधे कोइवली नवमात्रिभाग २

याउयं पकरेंति । आउतेउवाउवणस्सइकाइयाणं बेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणवि एवंचेव पंचिंदियतिरिक्ख जोणियाणं भंते ! कइभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति ? गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया दुविहा पन्नत्ता तंजहा—संखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय । तत्थणं जेते असंखेज्जवासाउया ते नियमाच्छ मासावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति तत्थणं जेते संखिज्जवासाउया ते दुविहा पन्नत्ता सोवक्कमाउयाय निरुवक्कमाउयाय । तत्थणं जेते निरुवक्कमा ते नियमा तिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति । तत्थणं

यिकानां द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियाणामपि एवं चैव । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका भदन्त ! कतिभागावशेषायुष्काः पारभविकायुष्कं प्रकुर्वन्ति ? गौतम ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका द्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा—संख्येयवर्षायुष्का असंख्येयवर्षायुष्काश्च । तत्र ये ऽसंख्येयवर्षायुष्का स्ते नियमात्ष ण्मासावशेषायुष्काः पारभविकमायुः प्रकुर्वन्ति । तत्र ये संख्येयवर्षायुष्का स्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा—सोपक्रमायुष्काश्च निरुपक्रमायुष्काश्च । तत्र ये निरुपक्रमायुष्कास्ते नियमात्त्रिभागावशेषायुष्काः पारभविकमायुः प्रकुर्वन्ति । तत्र ये सोपक्रमायुष्कास्ते स्यात्त्रिभागावशेषायुष्काः पार

करता २७ भंगे परभवनो आउषो बांधे इमहो । आउतेउवाउवणस्सइकाइयाणवि बेइंदिय तेइंदियाण चउरिंदियाणवि । अपतेउवायु वनस्पतिन कहिवो बेंद्रिय तेंद्रिय चउरिंद्रिय पिण । एवंचेव पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते कतिभागावसेसाउय परभवाउयपकरेति गोयमा । इमहीज जाणिवा द्विवे पंचेंद्रियतिर्यंच योनिया केतलोभाग आउषो बांधे हे गौतम । पंचिंदियतिरिक्खजोणियादुविहा पं ते संखिज्जवासाउयाय असंखिज्जवासाउयाय । पचेंद्रियतिर्यंचना दोयभेदछे तेकहैछे—संख्यातावर्षेना आउनाधणो असंख्यातावर्षनाधणो । तत्थणं जते असंखिज्जवासाउया । तिहां जे असंख्यातावर्ष आयु षाना धणो । तेणं नियमाछम्मासावसेसाउय परभवाउयं प० । ते निश्चेकरी छनासषांकतां आउषेतिवारे बीजाभवनो आयुः बांधे । तत्थणं जेते संखि ज्जवासाउयातेदुविहा प तंजहा । तिहां संख्यातावर्षना आउषानाधणो तेहना दोयभेद तेकहैछे । सोवक्कमाउयानिरुवक्कमाउय तत्थणं जेते निरुवक्कमा

ते जीवैः पूर्वभवएव वर्त्तमाने रायुर्बद्धः ततः पश्चादुपपातो ऽन्यथोपपातायोगात्' तत्र कियति पूर्वभवायुषि शेषे पारभाविकमायुर्बद्धमितिसंश

॥ टीका ॥

जेते सोवक्कमाउया तेणं सिय तिभागावसेसा परभवियाउयं पकरेंति सिय तिभागतिभागे परभवियाउयं पकरेंति। सिय तिभागतिभागतिभागावसेसाउया परभवियाउयं पकरेंति। एवं मणुस्सावि वाणमंतरजोइसियवेमाणिया जहा नेरइया। कइविहेणं भंते! आउयबंधे पण्णत्ते? गोयमा! छविहे आउयबंधे पण्णत्ते जातिनाम निहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठितीनामनिहत्ताउए ओगाहणानामनिहत्ताउए पदेसनामनिहत्ताउ

॥ मूल ॥

भाविकमायुः प्रकुर्वन्ति, स्यात्त्रिभागत्रिभागे पारभाविकमायुः प्रकुर्वन्ति, स्यात्त्रिभाग २ त्रिभागावशेषायुष्काः पारभाविकमायुः प्रकुर्वन्ति। एवं मनुष्या अपि। वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका यथा नैरयिकाः। कतिविधो भदन्त! आयुर्बन्धः प्रज्ञप्तः? गौतम! षड्विधः प्रज्ञप्तस्तद्यथा-जातिनामनिधत्तायुर्गतिनामनिधत्तायुः स्थितिनामनिधत्तायुरवगाहनानामनिधत्तायुः प्रदेशनामनिधत्तायुरनुभावनामनिधत्तायुः ६। नैरयिकाणां भदन्त! कतिविध आयुर्बन्धः प्रज्ञप्तः? गौतम! षड्विधः प्रज्ञप्तस्तद्याथ-जातिनामनिधत्तायुर्गतिनामनिधत्तायुः स्थितिनामनिधत्तायुरव

॥ भ० ॥

उया। सोपक्रम आयुषाना धणो निरुपक्रम आऊषाना धणो ज तिहां निरुपक्रमना धणो। तेणं नियमातिभागाविसेसाउय परभवाउय प०। तिसेत्रि भाग आऊषोथाकै तिवारै बीजाभवनो आउषोबांधे पूर्वकोडिना आयुः धणोनें ३३३१३३३ एतलापूर्व अनें २३ कोडिलाष ५२ कोडिसहस्र एतलो पूर्व उपरि एतलोकालरहतो आवता भवनो आऊषो बांधे। तत्थणं जेते सोवक्कमाउया तेणं सियतिभागविससावसेस परभवाउयं प०। तिहां जे सोपक्रम आऊषाना धणी ते कोईजीव जे तीजोभागथाकतें आवताभवनो आऊषो बांधे। सियतिभागतिभागावसेसाउय परभवाउयप०। सियतिभाग २ तिभागावसेसाउयं परभवाउयंप०। कोईनवमोभाग थाकतांथकांबली कोईजीवसत्तावीसमो भागथाकतें आवताभवनो आउषो बांधे। एवं मणुस्साणवि वाणमंतर जोइसियवेमाणिया जहा नेरइयहारं। इम तिर्यंचनोपरें मनुष्यनांपण कहिवो वानव्यंतर १६ जोतिषी ५ वैमानिक १२ प्रतरना जिम नारकीनोपरे कहि

॥ भाषा ॥

ए अणुभावनामनिहत्ताउए । नेरइयाणं भंते ! कइविहे आउयबंधे पन्नत्ते ? गोयमा ! छव्विहे आउबंधे पं न्नत्ते जातिनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताए ठितीनामनिहत्ताउए ओगाहणानामनिहत्ताउए पदेसनामनिह त्ताउए अणुभावनामनिहत्ताउए । एवं जाव वेमाणियाणं । जीवाणं भंते ! जातिनामनिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं पकरेंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा उक्कोसेणं अट्ठहिं । नेरइयाणं भंते !

गाहनानामनिधत्तायुः प्रदेशनामनिधत्तायुरनुभावनामनिधत्तायुरेवं यावद्वैमानिकानाम् । जीवा भदन्त ! जातिनामनिधत्तायुष्कं कतिभिराकर्षैः प्रकुर्वन्ति ? गौतम ! जघन्यत एकेन वा द्वाभ्यां वा त्रिभिर्वा, उत्कर्षतोऽष्टभिः । नैरयिका भदन्त ! जातिनामनिधत्तायुष्क कतिभिराकर्षैः

वा ७ । कतिविहेणं भंते आउयबंधे पन्नत्ते गोयमा । छविहे कतले भदे हे भगवन् आयुषानो बधकरे ते कहे हे गौतम । छव्विहे आयुयबंधे पन्नत्ते तजहा । छभेद आयुषानो बंधकहो तकहेछे । जातिनामनिहत्ताउए १ । जातिनाम पृथ्वादि पंचप्रकृति नामकर्मनो तेहनो धरिवोलवोनिधत्ताउनिषेकें सकर्मपुद्गलना नाममोचभवनार्थरचनोने जातिनामनिहत्तायु १ । गतिनामनिहत्ताउए२ । गतिनाम नारकोतिर्यंच देवतामनुष्य ए ४ प्रकृतिनामकर्मनो तेहने आयुषा नो धरिवो ते गतिनाम निहत्तायु २ । ठितीनामनिहत्तायुए ३ । स्थितिनामनो आयुकर्मनो धरिवो भोगविवो स्थितिनामनिहत्तायु ३ । वोगाहणाना मनिहत्ताउए । अवगाहना औदारिकादि शरीरनामकर्म ३० तेथ्यान आयुना रहिवोतेहनो धरिवोने अवगाहनानाम निधत्तायु ४ । पएसनामनिहत्ता उए५ । प्रदेशदलसंचय आयुषानो धरिवो ज भवेजप्रदेश अनुभविये प्रदेशक्रम परिणामवसे प्रदेशासक्रमनोपभूमिना परिगृह्यते तत्प्रधाननाम प्रदेशनाम किमक्त भवतियस्मिन् २ भवेप्रदेशतो ऽनुभूयते तत्प्रदेशनामनिहत्तायु ५ । अणुभावनामनिहत्तायुए ६ । अनुभागतेहनो तीव्रमंदरसनो आयुनोधरिवो तेहनो बांधवोई । अनुभावो विपाकः सचेहमकर्षप्राप्तः परिगृह्यते तत्प्रधाननामे अनुभावनाम यत् यस्मिन् भवे तीव्रविपाकानां कर्माणिभूयते तथा नार कायुमें अशुभवर्णगधरस स्पर्शउपघातना दशदुखरयणो अकीर्त्यादिनामानि तदनुभावनाम तेनसह नधत्तायुरनुभावनामनिधत्तायुः । नेरइयाणं भंते क

थानः पृच्छति-नेरइयाणं भंते ! कइण्णागावसेसाउया परभवियाउयं बंधंति इत्यादि ॥ पाठसिद्धं तदेवं यद्भागावशेषेऽनुभूयमाननवायुषि पारभविकमायु बध्नन्ति तत्प्रतिपादितं सम्प्रति यत्प्रकारं बध्नन्ति तत्प्रकारं नैरयिकादिदण्डकक्रमेण प्रतिपादयति-नेरइयाणं भंते ! कतिविहे आउयबंधे पन्नत्ते ॥ इत्यादि ॥ जाइनामनिहत्ताउए इति ॥ जातिरेकेन्द्रियजात्यादि पञ्चप्रकाराः सैव नाम नामकर्मण उत्तरप्रकृतिविशेषरूपं जातिनाम तेन सह निधत्तं निषिक्तं यदायुस्तज्जातिनामनिधत्तायु निषेकश्च कर्मपुद्गलानामनुभवनार्थं रचना सा चैवं लक्षणा-भोत्तूणसगमबाहं पुढमाइट्ठिइए बहुयरंदव्वं । सेसेविसेसहीणं जावुक्कोसन्तिउक्कोसा ॥ १ ॥ गतिनामनिहत्ताउए इति ॥ गतिर्नरकगत्यादिर्नेदा चतुर्द्धा सैव नाम गतिनाम तेन सह नियत्तमायु र्गतिनामनिधत्तायुः, स्थिति र्यत्तेन भवेन स्थातव्यं तत्प्रधानं नाम स्थितिनाम यत् यस्मिन्भवे उदयमागमन मवतिष्ठते तद्गतिजाति शरीरपञ्चकादिव्यतिरिक्तं स्थितिनामावसेयमितिभावः, गत्यादीनां वर्जनं तेषां स्वपदैः ॥ गइनामनिहत्ताउए ॥ इत्यादिन्नि रुपाद्यत्वात्, तेन सह निधत्तमायुः स्थितिनामनिधत्तायु स्तथा अवगाहते यस्यां जीवः सावगाहना शरीरमौदारिकादि तस्य नाम औदारिकादिशरीरनामकर्म अवगाहनानाम शेषं तथैव प्रदेशाः कर्मपरमाणव स्तेच प्रदेशाः सक्रमतोप्यनुभूयमानाः परिगृह्यन्ते तत्प्रधानं नाम प्रदेशनाम किमुक्तं भवति-यत् यस्मिन्भवे प्रदेशतो ऽनुभूयते तत्प्रदेशनामेति, अनेन विपाकोदयमप्राप्तमपि नाम परिगृहीतं तेन प्रदेशनाम्ना सह निधत्तमायुः प्रदेशनामनिधत्तायुः, तथाऽनुभावो विपाकः सचेह प्रकर्षप्राप्तः परिगृह्यते तत्प्रधानं नाम अनुभावनाम यत् यस्मिन् भवे तीव्रविपाकं नामकर्मानुभूयते यथा नार

॥ टीका

जातिनामनिहत्ताउयं कतिहिं आगरिसेहिं पकरेंति ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्केणवा दोहिंवा तिहिंवा, उ

॥ मूल

प्रकुर्वन्ति ? गौतम ! जघन्यत एकेन वा द्वाभ्यां वा त्रिभिर्वा, उत्कर्षतोष्टभिः, एवं यावद्वैमानिकाः । एवं गतिनामनिधत्तमायुर्व्यापि, स्थिति

॥ भाषा

तिविहे आउयबंधे प गोयमा छव्विहे आउयबंधे प तंजहा जातिनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए । नारकोने भगवन् कतलेभेदे आयुःबंध कह्यो गौतम छभेदे आयुषानो बंध कह्यो केहां नारकोने जाति एकेंद्रियादि ५ नो आयुःधरें इम ४ गतिनो नामधरवो । ठितीनामनि० वोगाहणना० पदेस

कायुषि अशुभवर्णगन्धरसस्पर्शोपघातानादेयदुःस्वराऽयशोऽकीर्त्यादिनामानि तदनुभावनाम तेन सह निधत्तमायुरनुभावनामनिधत्तायुः, अथ कस्माज्जात्यादिनामकर्मभिरायु र्विशेष्यते ? उच्यते-आयुःकर्मप्राधान्यख्यापनार्थं, तथाहि-नारकाद्यायुरुदयेसति जात्यादिनामकर्मणा मुदयो भवति नान्यथेति भवत्यायुष प्रधानता इति' अथ जात्यादिनाम विशिष्टमायुः किंप्रकारकर्षं बध्नातीति जिज्ञासु जीवादिदण्डकक्रमेण पृच्छति-जीवाणं भंते ! जाइनामनिहत्ताउयं कइयाहिं आगरिसेहिं पगरंतीत्यादि ॥ आकर्षो नाम तथाविधेन प्रयत्नेन कर्मपुद्गलोपादानं यथा गौः पानीयं पिबंती प्रयत्नेन पुनः पुनराघोटयति एवं जीवोऽपि यदा तीव्रेणायुर्बध्नाध्यवसायेन जातिनामनिधत्तायुरन्यद्वा बध्नाति तदा एकेन मन्दतरेण

---

ना० । स्थितिवैक्रियादि शरीरनो धरवो अवगाहनानामना आयुबध नारकोने हुवे प्रदेश आयुनो धरवोनाम । अणुभावना० एवं जाव वेमाणियाणं । अनुभागतेहनो रसनो धरियो नारकोने हुवे इम यावत् २४ दंडके० ६ भेद वैमानिकलगे कहवो । जीवाणं भंते जातिनामनिहत्ताउयं कतिहि आगरसेहिं पकरेंति गोयमा । जीवने हे भगवन् जातिनामकर्मनो आयुधरतांथकां केतला आकर्षेकरी आयुकर्मने बांधे जिम गायपाणीपीयें पौतीथकीचलो प्रादिते आकर्ष कहिये आकर्षानामकर्म तथा भिधेतव्यत्र न कर्मपुद्गलोपादानं यथा गौतम पानीयंपिबति त्रयन पुनः पुनराघोटयति एवं जीवोपि यदा तीव्रायुः हे गौतम । जहन्नेणं एकवादोहिंवा तिहिंवा उ० अट्ठहिं । जघन्यतो १ आकर्षीकरे इम ३ । २ । उत्कृष्टे जांलगे आठलगे आकर्षीकरे । नेरइयाणं भंते जातिनामनिहत्तायुयं कतिह आगरिसेहिं पकरेंति गोयमा । हिवे नारकोने हे भगवन् जातिनामकर्मनो आयुः धरतोथको बध्नाध्यवसायेन जातिनामादुरन्यद्वा बध्नाति तदा एकेनोयमद्वयाभ्यां त्रिभिर्वामदतरेण चतुर्भिर्वा पचषट्समाष्टभिर्वाबध्नाति केतला आकर्ष करे हे गौतम । जहन्नेणं एक्केणवादोहिंवातिहिंवा उ० अट्ठहिं एव जाव वेमाणीया एवं गतिनामनिहत्ताउएवि । जघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टे ८ आकर्षा इम जांलगे वैमानिकपर्यंतगतिनामकर्मथकी । एवं स्थितिनामनिहत्ताउएवि एवं उगाहणाना० । इम स्थितिनामकर्मथकी पिण इम अवगाहनाथी । एवं पएसना० एवं अणु

त्रिभि श्चतुर्भिर्वा मन्दतमेन पञ्चभिः षड्भिः सप्तभि रष्टभिर्वा इह जात्यादिनाम्ना आकर्षनियम आयुषासह बध्यमाननामवसातव्यो न शेषैका

॥ टीका ॥

क्कोसेणं अट्ठहिं । एवं जाव वेमाणिया । एवं गतिनामनिहत्ताउएवि । ठितीनामनिहत्ताउएवि । जुगाहणा नामनिहत्ताउएवि । पदेसनामनिहत्ताउएवि । अणुभावनामनिहत्ताउएवि । एतेसिणं भंते ! जीवाणं जातिना मनिहत्ताउयं जहन्नेणं एक्कोवा दोहिवा तिहिंवा उक्कोसेणं अट्ठहिं आगरिसेहिं पकरेमाणाणं कयरेकयरे हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा जातिनामनिहत्ताउयं अट्ठहिं आगरिसेहिं पकरेमाणा , सत्तहि आगरिसेहिं पकरेमाणा संखेज्जगुणा , छहि आगरिसेहिं पकरे

॥ मूल ॥

नामनिधत्तायुष्यपि , अवगाहनानामनिधत्तायुष्यपि , प्रदेशनामनिधत्तायुष्यपि , अनुभावनामनिधत्तायुष्यपि । एतेषां भदन्त ! जीवानां जाति नामनिधत्तायुर्जघन्येनैकेन वा द्वाभ्यां वा त्रिभिर्वा उत्कर्षतोऽष्टभिराकर्षैः प्रकुर्वतां कतरे कतरेभ्यो अल्पावा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा जातिनामनिधत्तमायुरष्टभिराकर्षैः प्रकुर्वन्तः , सप्तभिराकर्षैः प्रकुर्वन्तः सङ्ख्येयगुणाः , षड्भिराकर्षैः प्रकुर्वन्तः

॥ भाषा ॥

भावनामनिहत्ताउएवि० एएसिणं भंते जीवाण । इम प्रदेशनामकर्म आउषोधरिवो इम अनुभावनाम आउषोधरिवो इम नारको ई भेदे ८ आठ ८ आ कर्षा कहिवेकरी एहने हे भगवन् जीवनें । जाति नामनिहत्ताउयं जहन्नेण एक्केणवा दोहिवातिहिवा उ० अट्ठहिं आगरसेहिं पकरेमाणाणं कयरे २ हि तो अप्पावा ४ गोयमा । जातिनामकर्म आऊषोधरता तेहनो आकर्षा कंघन्य १ । २ । ३ । उत्कृष्टे ८ आकर्षा कर्मपुद्गलनोलेवो करतांथकां संसारमांहि एहवा जीव केहा २ अल्पबहुपणा इत्यादि हे गौतम । सर्वस्तोकाजीवा जातिनामनिहत्ताउयं अट्ठहिं आगरसेहि पकरमाणा । सर्वथोडा जीव जातिनाम कर्मना आऊषाना धरणहार ८ आकर्षना कर्मपुद्गलनाकरणथोडाछे । सत्तहिं आगरिसहिं पकरेमाणा संखेज्जगुणा । ७ आकर्षना करणहार जीव जाति नामकर्मना संख्यागुणा । छहिं आगारसेहिं पकरेमाणा संखे० एवं पंचहिसंखे० चउहिसंखे० । तेहथी छ आकर्षना करणहार जाति नामकर्मना स

॥ टीका ॥

लां कासांचित् प्रकृतीनां ध्रुवबंधनीत्वा दपरासां परावर्त्तमानत्वात्, प्रभूतकालमपि बंधरूभवेनाकर्षांनियमात् ॥ १ ॥ इति श्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां व्युत्क्रांताख्य षष्ठ पदं समाप्तम् ॥ ६ ॥ व्याख्यातं षष्ठपद मिदानीं सप्तममारभ्यते-तस्यचायमभिसंबंध इहानंतरपदे सत्वाना मुपपातविरहादयो निर्दिता अस्मिन् पुनर्नारकादिभावेनोत्पन्नानां प्राणापानपर्याप्यापर्याप्तानां यथासम्भवमुच्छ्वासनिश्वासक्रियाविरहाविरहकालपरिमाणमभिधयमित्यनेन सम्बन्धेनायातस्येदमादिसूत्र- नेरइयाणं भंते ! इत्यादि ॥ नैरयिका णामितिवाक्यालङ्का

॥ मूल ॥

माणा संखेज्जगुणा, एवं पंचहिं संखेज्जगुणा, तिहिं संखेज्जगुणा, चउहिं संखेज्जगुणा, दोहिं संखेज्जगुणा, एगे आगरिसेणं पकरेमाणा संखेज्जगुणा। एवं एतेणं अभिलावेणं जाव अणुभावनिहत्ताउय। एवं एते छप्पि अप्पाबहुदंडगा जीवादिया नाणियव्वा ॥ इति पन्नवणाए वक्कंतिपदं छठं समत्तं ॥ ६ ॥

संख्येयगुणाः, एवं पञ्चभिः संख्येयगुणाः, त्रिभिः संख्येयगुणाः चतुर्भिः संख्येयगुणाः द्वाभ्यां संख्येयगुणाः, एकेनाकर्षेण प्रकुर्वन्तः संख्येयगुणाः। एवमेतेनाभिलापेन यावदनुभावनामनिधत्तायुः एवमेते षडपि अल्पबहुत्वदण्डका जीवादिका ज्ञातव्याः ॥ इति श्रीमहोपाध्यायरामचन्द्रगणिविनेयेन ऋषिनानकचन्द्रेण रचिते प्रज्ञापनानुवादे षष्ठं व्युत्क्रान्तिपदं समाप्तम् ॥ ६ ॥ नैरयिका अद

॥ टबा० ॥

ख्यातगुणा छे इम ५ ना करणहार संख्यातगुणा इम ४ करणहार संख्यातगुणा। तिहिं संखे० दोहिंस० एगेणं आगारसेणं पकरमाणा संखे०। तीनना करणहार संख्यातगुणा इम आकर्षना करणहार संख्यातगुणा इम १ आकर्षना करणहार संख्यातगुणा। एवं एएणं अभिलावेणं जाव अणुभागनिहत्ताउयाणं। इम एणें आलावेंकरी अनुभागकर्मनामलगें कहिवो। एव एते छप्पिय अप्पाबहुदंडगा जीवादियाणं भाणियव्वा। इम ए आयुबंधना आकर्षना दंडकसर्व दंडक २४ कहिवा। पन्नवणाए भगवईए वक्कंतियनाम छट्ठपयं समत्तं ॥ ६ ॥ इति प्रज्ञापना भगवतीमांहि छट्ठपदे ८ द्वार आयुः बद्धांतलगे कह्या से दंडकें कहिये हिवे ७ सातमो पदकहैछे। नेरइयाणं भंते केवतिकालस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा गो

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

रे भदन्त ! केवइकालस्स इति प्राकृतशैल्या पंचम्यर्थे तृतीयार्थेवा षष्ठी, ततोऽयमर्थः कियतः कालात् कियता कालेन ॥ आणमंति ॥ आनंति "आनप्राणने इति धातुपाठात्„ मकारोलाक्षणिक एवमन्यत्रापि यथायोगं परिभावनीयं„ पाणमंति ॥ प्राणंति [ वाशब्दौ समुच्चयार्थौ ] एतदेव पदद्वयं क्रमेणार्थतः स्पष्टयति-ऊससंतिवा नीससंतिवा यदेवोक्तं-आनंति तदेवोक्तमुच्छ्वसन्ति तथा यदेवोक्तं प्राणंति तदेवोक्तं निःश्वसन्ति, अथवा आनमंति प्राणमंति गमहनत्वे शब्दे इत्यस्य द्रष्टव्यं, धातूनामनेकार्थतया श्वसनार्थत्वस्याप्यविरोधः' अपरे व्याचक्ष्यते आनंति प्राणंतीत्यनेनांतःस्फुरंति उच्छ्वसंति श्वासक्रियापरिगृह्यते उच्छ्वसंति निःश्वसंतीत्यनेनतु बाह्याः, एवं गौतमेन प्रश्ने कृते भगवानाह-गौतम ! सततमविरहितं अतिदुःखिता हि नैरयिका दुःखितानां च निरन्तरमुच्छ्वसनि श्वासौ तथा लोके दर्शनात्, तच्च सततं प्रायो वृत्त्यापि स्यादत आह-सततमेव ॥ सततमेव अनवरतमेव नैकोपि समय स्तद्विरहकालो दीर्घत्वं प्राकृतत्वात्, आनमंतीत्यादेः पुनरुच्चारणं शिष्यवचनेन आदरोपदर्शनार्थं गुरुभिरादृियमाणवचना हि शिष्याः संतोषवंतो भवन्ति, तथा च सति पौनःपुण्येन प्रश्नप्रवृत्त्यर्थं निर्णयादिषु घटन्ते लोकेचादेयवचना भवन्ति एवं प्रभूतजन्योपकार स्ती

॥ मूल ॥

णेरइयाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा ? गोयमा ! सततं संत
यामेव आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा । असुरकुमाराणं भंते ! केवइकालस्स आणमं

॥ अ० ॥

भ ! कियता कालेनानमन्ति प्राणमन्ति उच्छ्वसन्ति निःश्वसन्ति ? गौतम ! संततं सन्ततमेवानमन्ति वा प्राणमन्ति वा उच्छ्वसन्ति वा निःश्व
सन्ति वा । असुरकुमारा भदन्त ! कियता कालेनानमन्ति वा प्राणमन्ति वोच्छ्वसन्ति वा निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येन सप्तभिः स्तोकै

॥ भाषा ॥

यमा । नारकोनैं हे भगवन् केतलाकालनों श्वासलेवैं ८ प्राणमैं उत्श्वासप नौश्वास लेवैं मूकै हे गौतम । सततंसंतयामेव आणमंतिवा पाणम० । निरंतर आंतराविना समयमात्र विरहविना आनमैं प्राणमैं । ऊसम० नौसम० असुरकुमाराणं भंते केवतिकालस्स । उत्श्वासलै निश्वासमूकैं घणादुःखमाटैं घणा श्वासोश्वासपै असुरकुमारनैं हे भगवन् केतलाकालमैं । आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊसस० नौसस० गोयमा । आनमैं प्राणमैं उत्श्वास निश्वास गौतम ।

॥ टीका ॥

थोत्पत्तिवृद्धि श्च, असुरकुमारसूत्रे-उक्कोसेणं सातिरेगस्स पक्खस्स इति ॥ इह देवेषु यस्य यावंति सागरोपमाणि स्थितिस्तस्य तावत् पक्षप्रमाण उच्छ्वासनिःश्वासक्रियाविरहकालः, असुरकुमाराणांचोत्कृष्टा स्थितिरेक सातिरेकं सागरोपमं "चमरबलिसारमहियमितिवचनात्„ ततः सातिरेगस्स पक्खस्सेत्युक्तं सातिरेकात्पक्षा दूर्द्धमुच्छ्वसंतीत्यर्थः, पृथिवीकायिकसूत्रे-वेमायाए इति ॥ विषमा मात्रा तया किमुक्तं भवति अनियतविरहकाल

॥ मूल ॥

तिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरहं थोवाणं, उक्कोसेणं सातिरेगस्स पक्करस ऊणमंतिवा जाव नीससंतिवा। नागकुमाराणं भंते ! केवइकालस्स ऊणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरहं थोवाणं, उक्कोसेणं मुहुत्तपुहत्तस्स। एवं जाव थणिय कुमाराणं। पुढवीकाइयाणं भंते ! केवइकालस्स ऊणमंतिवा जाव नीससंतिवा? गो० ! वेमायाए ऊणमंतिवा

॥ अ० ॥

उत्कर्षतः सातिरेकेण पक्षेणानमन्ति यावन्नि श्वसन्ति वा। नागकुमारा भदन्त ! कियता कालेनानमन्ति वा प्राणमन्तिवा उच्छ्वसन्ति वा निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येन सप्तभिः स्तोकैः उत्कर्षतोमुहूर्त्तपृथक्त्वम्, एवं यावत्स्तनितकुमाराणाम्। पृथिवीकायिका भदन्त ! कियता का

॥ भाषा ॥

जहन्नेणं सत्तरहं थोवाणं उ०। जघन्यतो सातस्तोके उच्छ्वास निश्वासल दृश्यमहस्रनो उपेक्षायें। सातिरेगस्सपक्खस्स ऊणमंतिवा जाव नीससंतिवा णागकुमाराणं भंते केवतिकालस्स। उत्कृष्ट कांईक अधिकपक्ष ख्यामाटै चमरबलि सारमहिय इति वचनात् सागरोपमे एकपक्षवाडो श्वासोच्छ्वासलेवे जेह ने जेतलासागरोपमने तेहने तेतलापक्षवाडा कहिये नागकुमारने हे भगवन् केतलेकालें। ऊणमंतिवा पाणमं० ऊससंतिनीस० गोयमा। आनमेप्राणमे उच्छ्वासनिश्वासले हे गौतम। जहन्नेण सत्तरहथोवाण उ० मुहुत्तपुहुत्तस्स एव जाव थणियकुमाराण। जघन्ये ७ स्तोकें उत्कृष्टमहूर्त्तपृथक्त्वदोयथी मांडी नवमोभ इम जांलगे स्तनितकुमार। पृढवीकाइयाणं भत केवतिकालस्स। पृथवीकाइया हे भगवन् केतलेकालें। ऊणमंतिवा जाव नीससंतिवा गय मा। ऊ नमें प्राणमें जाव उच्छ्वासनिश्वासले हे गौतम। वेमायाए ऊणमंतिवा जाव नीससंतिवा। वेमाचायें अनियतविरहकाल प्रमाणे जाव उच्छ्वासनि

मात्रप्रमाणा स्तेषा मुच्छ्वासनिःश्वासक्रिया, तथा देवेषु यो यथा महायुः स तथा सुखी सुखितानां च यथोत्तरं महान् उच्छ्वासनिःश्वासक्रियाविरह कालो दुःखरूपत्वा दुच्छ्वासनिःश्वासक्रियाया स्ततो यथा २ युषः सागरोपमवृद्धि स्तथातथोच्छ्वासनिःश्वासक्रियाविरहप्रमाणस्यापि पक्षवृद्धिः, इति

॥ टीका ॥

जाव नीससंतिवा । एवं जाव मणुस्सा । वाणमंतरा जहा नागकुमारा । जोइसियाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं मुहुत्तपुहत्तस्स, उक्कोसेणवि मुहुत्तपुहुत्तस्स जाव नीससंतिवा । वेमाणियाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स, उक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । सोहम्मदेवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेणं दोण्हं पक्खाणं जाव नीससं

॥ मूल ॥

लेनानमन्ति प्राणमन्ति उच्छ्वसन्ति निःश्वसन्ति वा ? गौ० ! विमात्रया नमन्ति प्राणमन्ति उच्छ्वसन्ति वा निःश्वसन्ति वा । एवं यावन्मनुष्याः । वानव्यन्तरा यथा नागकुमाराः । ज्योतिष्का भदन्त ! कियता कालेनानमन्ति वा यावत्प्राणमन्ति निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्यतो मुहूर्त्त पृथक्त्वेनोत्कर्षतोपि मुहूर्त्तपृथक्त्वेन यावन्निःश्वसन्ति वा । वैमानिका भदन्त ! कियता कालेनानमन्ति प्राणमन्ति यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौ० !

॥ अ० ॥

खासल । एवं जाव मणुस्सा वाणमंतरा जहा नागकुमारा । इम जावत मनुष्यतांलगें वानव्यन्तरनें जिम नागकुमारनोपर । जोइसियाण भंते केवति कालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा गोयमा । जोतिषीने हे भगवन् केतलाकाले आनमें प्राणमें जाव उत्स्वासनिस्वासले हे गौतम । जहन्नेणं मुहूत्त पहुत्तस्स इ० जाव नीससंतिवा । जघन्यें मुहूर्त्त पृथक्त बेथी मांडीनवसौम उत्कृष्ट मुहूर्त्तपृथक्तलगें जाव निस्व सले । वेमाणीयाणं भंते केवतिकालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा गोयमा । वैमानिकने हे भगवन् केतलाकाले आनमेंप्राणमें जाव उत्स्वासनिस्वासले हे गौतम । जहन्नेणं मुहूत्तपुहुत्तस्स उ० तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्यें मुहूर्त्तपृथक्त उत्कृष्ट दोयपचवाडा जाव ३३ पखें नीससें सागरोपमनो उपचायें । सोहम्मदेवाणं भंते केव

॥ भाषा ॥

तिवा । ईसाणगदेवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं साति रेगस्स मुहुत्तपुहुत्तस्स उक्कोसेणं सातिरेगाणं दोण्हं पक्खाणं जाव नीससंतिवा । सणंकुमारदेवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं दोण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं सत्तण्हं पक्खाणं जाव नीससंतिवा । माहिंदगदेवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्ने



जघन्यतोमुहूर्त्तपृथक्त्वेनोत्कर्षत श्वयस्त्रिंशत्पक्षै र्यावन्निःश्वसन्ति वा । सौधर्मदेवा भदन्त ! कियता कालेनानमन्ति वा यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्यतो मुहूर्त्तपृथक्त्वेनोत्कर्षेण द्वाभ्यां पक्षाभ्यां यावन्निःश्वसन्ति वा । ईशानदेवा भदन्त ! कियता कालेनानमन्ति वा यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्यतः सातिरेकेण मुहूर्त्तपृथक्त्वेनोत्कर्षतः सातिरेकाभ्यां द्वाभ्यां पक्षाभ्यां यावन्निःश्वसन्ति वा । सनत्कुमारदेवा भदन्त ! कियता कालेनानमन्ति यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्यतो द्वाभ्यां पक्षाभ्यामुत्कर्षतः सप्तभिः पक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । माहेन्द्रदे



तिकालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा गोयमा । सौधर्मदेवता केतलेकालें आनमेंप्राणमें जालगें निश्वासले हे गौतम । जहन्नेणं मुहुत्तपुहुत्तस्स उ० दोण्हंपक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्यें मुहूर्त्तपृथक्त उत्कृष्ट दोयपक्षवाडा जाव निश्वासले । ईसाणगदेवाणं भंते केवतिकालस्स जाव नीससंतिवा गो यमा । ईशानदेवना देवता केतलाकालें जाव निश्वासले हे गौतम । जहन्नेणं सातिरेगस्स मुहुत्तपुहुत्तस्स उ० सातिरेगाण दोण्हंपक्खाणं जाव नीससं तिवा । जघन्ये झाझेरो मुहूर्त्तपृथक्त उत्कृष्ट झाझेरो दोयपक्षवाडा जाव निश्वसें । सणंकुमारेणं भंते देवाणं केवतिकालस्स जाव नीससंतिवा गोयमा । सनत्कुमारना देवता हे भगवन् केतलाकालें जाव निश्वासले हे गौतम । जहन्नेणं दोण्हंपक्खाणं उ० सत्तण्हंपक्खाण जाव नीससंतिवा । जघन्ये बेपक्ष वाडा उत्कृष्टें सातपक्षवाडा जांलगें निश्वासले । माहेंदगदेवाणं भंते केवतिकालस्स जाव नीससंतिवा गोयमा । माहेंद्रदेवनो केतलेकालें जाव निश्वा सले हे गौतम । जहन्नेणं दोण्हंपक्खाणं उ० सातिरेगाण सत्तण्हंपक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये दोयपक्षवाडा उत्कृष्ट ७ पक्षवाडा जाव निश्वासले

णं दोण्हं पक्खाणं सातिरेगाणं, उक्कोसेणं सातिरेगाणं सत्तण्हं पक्खाणं जाव नीससंतिवा । बंभलोयदेवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं दसण्हं पक्खाणं जाव नीससंतिवा । लंतगदेवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं दसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं चउद्दसण्हं पक्खाणं जाव नीससंतिवा । महासुक्कदेवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं चोद्दसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं जाव



वा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्यतः सातिरेकाभ्यां द्वाभ्यां पक्षाभ्यामुत्कर्षतः सप्तभिः पक्षैः सातिरेकैर्निः श्वसन्ति वा । ब्रह्मलोकदेवा भदन्त ! कियता कालेनानमन्ति यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्यतः सप्तभिः पक्षैरुत्कर्षेण दशभिः पक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । लान्तकदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौ० ! जघन्यतो दशभिः पक्षैरुत्कर्षतश्चतुर्दशभिः पक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । महाशुक्रदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्यतश्चतुर्दशभिः पक्षैरुत्कर्षतः सप्तदशभिः पक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । सहस्रारदेवा भदन्त ! कियता कालेनानमन्ति यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्यतः सप्तदशभिः पक्षैरुत्कर्षतोऽष्टादशभिः पक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति



बभलोयदेवाण भंते केवतिकालस्स जाव नीससंतिवा गोयमा । ब्रह्मलोकमा देवता हे भगवन् केतलेकाले जाव निश्वासले हे गौतम । जहन्नेण सत्तण्हं पक्खाणं उ० दसण्हंपक्खाण जाव नीससंतिवा । जघन्य ७ पक्ष उत्कृष्टे १० पक्ष जोलगे निश्वासले । लंतगदेवाणं भंते केवतिकालस्स जाव नीससंतिवा गोयमा । लांतककल्पकतलेकाले जोलगे जाव निश्वासले गौतम । जहन्नेण दसण्हं पक्खाण उ० चउद्दसण्हं पक्खाण जाव नीससंतिवा । जघन्ये १० पक्ष उत्कृष्ट १४ पक्ष जाव निश्वासले । महासुक्कदेवाणं भंते केवतिकालस्स जाव नीससंतिवा गोयमा । महाशुक्रदेवतानो केतलाकालनो जोलगे निश्वासले गौतम । जहन्नेणं चउद्दसण्हं पक्खाण उ० सत्तदसण्हं पक्खाणं । जघन्ये १४ पक्ष उत्कृष्टे १७ पक्ष । जाव नीससंतिवा सहस्सारगदेवा

नीससंतिवा । सहस्सारगदेवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं सत्तरसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं अट्ठारसण्हं पक्खाणं जाव नीससंतिवा । आणयदेवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठारसण्हं पक्खाणं, उक्कोसेणं एगूणवीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । पाणयदेवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं एगूणवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं वीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । आरणदेवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं वीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं एक्कवीसाए पक्खाण जाव नीससंतिवा । अच्चुय

वा । आनतदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्यतोऽष्टादशपक्षैरुत्कर्षत एकोनविंशत्यर्धपक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । प्राणतदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्यत एकोनविंशत्यर्धपक्षैरुत्कर्षतो विंशत्यर्धपक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । आरणदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येन विंशत्यर्धपक्षैरुत्कर्षेणैकविंशत्यर्धपक्षैर्यावन्निःश्वसन्तिवा । अच्युतदेवा भ





दंत के० गो० । जाव निस्सासे सहस्सारकल्पे देवनो प्रश्न गौतम । जहन्नेणं सत्तदसण्हं पक्खाणउ० अट्ठारसण्हं पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जालगे नीसवासले जघन्ये १७ पक्ष उत्कृष्टे १८ पक्ष । आणयदेवाणं भंत के० गोयमा । आनतदेवनो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेण अट्ठारसण्हं पक्खाणं उ० एगूणवीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये १८ पक्ष उत्कृष्टे १९ पक्ष जाव निस्वासले । पाणयदेवाणं भंते के० गोयमा । प्राणतनो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं एगूणवीसाए पक्खाणं उ० वीसाए पक्खाण जाव नीससंतिवा । जघन्ये १९ पक्ष उत्कृष्टे २० पक्ष जाव निस्वासले । आरणदेवाणं भंते के० गो० । आरणदेवनो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं वीसाए पक्खाणं उ० एकवीसाए पक्खाण जाव नीससंतिवा । जघन्ये २० पक्ष उत्कृष्ट २१ पक्ष जाव निस्वासले । अच्चुयदेवाणं भंते के० गोयमा । अच्युतदेवनो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं एकवीसाए पक्खाणं उ० बावीसाए पक्खाणं । जघन्ये २१ पक्ष उत्कृष्टे २२ पक्ष

देवाणं केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं बावीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । हेट्ठिमहेट्ठिमगेविज्जगदेवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं बावीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं तेवीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । हेट्ठिममज्झिमगेविज्जदेवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं तेवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं चउवीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । हेट्ठिमउवरिमगेविज्जगाणं देवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं चउवीसाए पक्खाणं, उक्कोसेणं पणवीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । मज्झि

॥ मूल ॥

दन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येनैकविंशत्यर्द्धैरुत्कर्षतो द्वाविंशतिपक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । अधस्तनाधस्तनग्रैवेयकदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येन द्वाविंशतिपक्षै रुत्कर्षतस्त्रयोविंशत्यर्द्धैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । अधस्तनमध्यमग्रैवेयकदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येन त्रयोविंशत्यर्द्धै रुत्कर्षतश्चतुर्विंशतिपक्षै र्यावन्निःश्वसन्ति वा । अधस्तनोपरिमग्रैवेयकदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येन चतुर्विंशत्यर्द्धैरुत्कर्षतः पञ्चविंशतिपक्षै र्यावन्निःश्वसन्ति वा । मध्यमाधस्तनग्रैवेयकदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येन पञ्चविंशत्यर्द्धैरु

॥ अ० ॥

वाडा । जाव नीससंतिवा हिट्ठिमहिट्ठिमगेविज्जगदेवाणं भंते के० गोयमा । जाव निस्सासले हिट्ठिमहिट्ठिमग्रैवेयकदेवनो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं बावीसाए पक्खाणं उ० तेवीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये २२ पक्ष उत्कृष्टे २३ पक्ष जाव निस्सासले । हिट्ठिममज्झिमगेविज्जगदेवाणं भंते के० गोयमा । हिट्ठिममध्यमग्रैवेयक इ भगवन् प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं तेवीसाए पक्खाणं उ० चउवीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये २३ पक्ष उत्कृष्टे २४ पक्ष जाव निस्सासले । हिट्ठिमउवरिमगेविज्जगदेवाणं भंते के० गोयमा हिट्ठिमउपरिला ग्रैवेयकना देवनो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं चउ

॥ भाषा ॥

महेट्ठिमगेविज्जगाणं देवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं पणवीसाए प
क्काणं उक्कोसेणं छव्वीसाए पक्काणं जाव नीससंतिवा । मज्झिममज्झिमगेविज्जगाणं देवाणं भंते ! केवइ
कालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं छव्वीसाए पक्काणं, उक्कोसेणं सत्तावीसाए पक्काणं जाव
नीससंतिवा । मज्झिमउवरिमगेविज्जगाणं देवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! ज
हन्नेणं सत्तावीसाए पक्काणं, उक्कोसेणं अट्ठावीसाए पक्काणं जाव नीससंतिवा । उवरिमहेट्ठिमगेविज्जगाणं
देवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं अट्ठावीसं पक्काणं, उक्कोसेणं एगूण

त्कर्षतः षड्विंशत्यर्धपक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । मध्यममध्यमग्रैवेयकदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येन षड्विंश
त्यर्धपक्षैरुत्कर्षतः सप्तविंशत्यर्धपक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । मध्यमोपरिमग्रैवेयकदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येन
सप्तविंशत्यर्धपक्षैरुत्कर्षतोऽष्टाविंशत्यर्धपक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । उपरिमाधस्तनग्रैवेयकदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम !





वीसाए पक्खाणं उ० पणवीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये २४ पक्ष उत्कृष्ट २५ पक्ष जाव निश्वासले । मज्झिममहिट्ठिमगेविज्जगदेवाणं भंते
के० गोयमा । मध्यमहेठलाग्रैवेयकदेवतानो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं पणवीसाए पक्खाणं उ० छव्वीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये २५ पक्ष
उत्कृष्टे २६ पक्ष जाव निश्वासले । मज्झिमगेविज्जगदेवाणं भंत के० गोयमा । मध्यमग्रैवेयकदेवतानो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं छव्वीसाए पक्खा
णं उ० सत्तावीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये २६ पद उत्कृष्टे २७ पक्ष जाव निश्वासले । मज्झिमउवरिमगेविज्जगदेवाणं भंत के० गोयमा ।
मध्यमउपरिलाग्रैवेयकदेवतानो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं सत्तावीसाए पक्खाणं उ० अट्ठावीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये २७ पक्ष उत्कृष्टे
२८ पक्ष जांलगे निश्वासले । उवरिमहिट्ठिमगेविज्जगदेवाणं भंत के० गोयमा । उपरिला त्रिकना ग्रैवेयकनादेवतानो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं अट्ठावी

॥ मूल ॥

तीसाए पक्काणं जाव नीससंतिवा । उवरिममज्झिमगेविज्जगाणं देवाणं भंते ! केवइकालस्स आणमंतिवा जाव नीससंतिवा ? गो० ! जहन्नेणं एगूणतीसाए पक्काणं, उक्कोसेणं तीसाए पक्काणं जाव नीससंतिवा उवरिमउवरिमगेविज्जगाणं भंते ! देवाणं केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं तीसाए पक्काणं, उक्कोसेणं एक्कतीसाए पक्काणं जाव नीससंतिवा । विजय वेजयंत जयंत अपराजितविमाणेसु णं भंते ! देवाणं केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कतीसाए पक्काणं, उक्कोसेणं

॥ प० ॥

जघन्येनाष्टाविंशत्पक्षैरुत्कर्षत एकोनत्रिंशत्पक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । उपरिममध्यमग्रैवेयकदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येनैकोनत्रिंशत्पक्षैरुत्कर्षतस्त्रिंशत्पक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । उपरिमोपरिमग्रैवेयकदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येन त्रिंशत्पक्षैरुत्कर्षत एकत्रिंशत्पक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । विजयवैजयन्तजयन्तापराजितदेवा भदन्त ! कियता कालेन यावन्निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! जघन्येनैकत्रिंशत्पक्षैरुत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्पक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा । सर्वार्थसिद्धदेवा भदन्त ! कियता कालेन याव

॥ भाष ॥

साए पक्खाणं उ० एगुणतीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्य १८ पक्ष उत्कृष्टे २८ पक्ष जाव निस्वासले । उवरिममज्झिमगेविज्जगदेवाणं भंते के० गोयमा । उपरिलामध्यमग्रैवेयकनादेवनो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं एगुणतीसाए पक्खाणं उ० तीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये २९ पक्ष उत्कृष्टे ३० पक्ष जाव निस्वासले । उवरिमउवरिमगेविज्जगदेवाणं भंते के० गोयमा । उपरिला २ ग्रैवेयकनो देवनो प्रश्न हे गौतम । जहन्नेणं तीसाए पक्खाण उ० एकतीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये ३० पक्ष उत्कृष्टे ३१ पक्ष जाव निस्वासले । विजयवैजयंतजयंत अपराजितविमाणेसुणं भंते देवाणं के० गोयमा । विजय वैजयंत जयंत अपराजित विमानना देवता केवलां कालनो निस्व सले हे गौतम । जहन्नेणं एकतीसाए पक्खाणं उ० तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । जघन्ये ३१ पक्ष उत्कृष्टे ३३ पक्ष जाव निस्वासले । सव्वट्ठसिद्धगविमाणसुणं भंते देवाणं केवतिकालस्स जाव नीससंत

॥ टीका ॥

श्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां सप्तममुच्छ्वासाख्यं पदं समाप्तम् ॥ ७ ॥ तदेवं व्याख्यातं सप्तमपदमिदानी
मष्टममारभ्यते-तस्यचायमभिसम्बन्धः-इहानन्तरपदे सत्त्वानामुच्छ्वासपर्याप्तिनामकर्मयोगाश्रया क्रिया विरहाविरहकालप्रमाणेनोक्ता सम्प्रति वेदनी

॥ मूल ॥

तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । सव्वट्ठसिद्धदेवाणं भंते ! केवइकालस्स जाव नीससंतिवा ? गोय
मा ! अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाणं जाव नीससंतिवा । इति पन्नवणाए भगवतीए सत्तमं ऊसा
सपदं समत्तं ॥ ७ ॥ कतिणं भंते ! सन्नाउ पन्नत्ताउ, गोयमा ! दस सन्नाउ पन्नत्ताउ तंजहा-
आहारसन्ना भयसन्ना मेहुणसन्ना परिग्गहसन्ना कोहसन्ना माणसन्ना मायासन्ना लोभसन्ना लोगसन्ना

॥ अ० ॥

निःश्वसन्ति वा ? गौतम ! अजघन्यानुत्कर्षतस्त्रयस्त्रिंशत्पक्षैर्यावन्निःश्वसन्ति वा ॥ इति श्री महोपाध्याय रामचन्द्रगणि विनेयेन नानकचन्द्रे
ण विरचिते प्रज्ञापनानुवादे सप्तमं उच्छ्वासपदं समाप्तम् ॥ ७ ॥ कति भदन्त ! सञ्ज्ञाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! दश सञ्ज्ञाः

॥ भाषा ॥

वा गोयमा । सर्वार्थसिद्धनां विमाननां हे भगवन् केतलाकालें निश्वासले हे गौतम । अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसाए पक्खाण जाव नीससंतिवा ।
अजघन्ये अनुत्कृष्टे ३३ पक्ष जाव निश्वासले । पन्नवणाए भगवईए सत्तम ऊसासपयं समत्तं ॥ इति श्रीप्रज्ञापना भगवतीरो सातमोपद उश्वासनिश्वास
पद कह्यो ॥ ७ ॥ कतिणं भंते सन्नाओ पन्नत्ताओ गोयमा । हिवे ८ पदे वेदनो मोहनो उदय आश्रो दर्शना वरणीयादि संज्ञा कहैछे
हे भगवन् केतली संज्ञा कही हे गौतम । दससन्नाओ पन्नत्ताओ त । दशसंज्ञाकही ते कहैछे । आहारसन्ना भयसन्ना मेहुणसन्ना । आहारसंज्ञा वेदनो
आश्रो भयसंज्ञामोहनो आश्रो मैथुनसंज्ञामोहनो । परिग्रहसन्ना कोहसन्ना लोहसन्ना मांणसन्ना मायासन्ना । परिग्रहसंज्ञाकोभाश्रो क्रोधसंज्ञामोहनो
लोभसंज्ञामोहनो मानसंज्ञामोहनो मायासंज्ञ मोहनो । लोकसन्ना ओघसन्ना नेरइयाणं भंते कतिसन्नाओ पन्नत्ताओ गोयमा । मतिज्ञाने चयेंकरो
ज्ञानोपयोगलोकसंज्ञा सामान्यदर्शने अवबोध ओघसंज्ञा. नारकोने हे भगवन् केतली संज्ञा कही हे गौतम । दस सन्नाओ पन्नत्ताओ तंजहा आ

॥ टीका ॥

यमोहनीयोदयाश्रयात् ज्ञानावरणदर्शनावरणक्षयोपशमाश्रयां चात्मपरिणामविशेषान् अधिकृत्य प्रश्नसूत्रमाह-कइणं भंते सन्नाओ पन्नत्ताओ इति ॥ कति कियत्संख्या णमितिवाक्यालंकारे भदन्त ! सञ्ज्ञा प्रज्ञप्ताः तत्र संज्ञानं संज्ञा आभोग इत्यर्थः' यदिवा संज्ञायते ऽनया ऽयं जीव इति संज्ञा, उभयत्रापि वेदनीयमोहोदयाश्रिता ज्ञानावरणदर्शनावरणक्षयोपशमाश्रिता च विचित्रा आहारादिप्राप्तिक्रिया साचोपाधिभेदा दृशविधा, तथा चाह-गौतम ! दशविधाः प्रज्ञप्ताः तदेव दशविधत्वं नामग्राहमाह-आहारसन्ना इति ॥ तत्र क्षुद्वेदनीयोदया द्या कवलाद्याहारार्थं तथाविधपुद्गलोपादानक्रिया सा आहारसञ्ज्ञा ॥ १ ॥ तस्या आभोगात्मिकत्वात्, यदिवा संज्ञायते जीवो ऽनयेति एवं सर्वत्रापि भावना कार्या, तथा भयमोहनीयोदया द्भयोद्भ्रान्तस्य दृष्टिवदनविकारशिरोत्कम्पोद्भेदादिक्रिया भयसंज्ञा २। पुंवेदोदया न्मैथुनाय स्त्र्यालोकनप्रसन्नवदनसंस्तम्भितोरुवेपथुप्रभृतिलक्षणाक्रिया मैथुनसंज्ञा ३। तथा लोभोदया त्प्रधानसंसारकारणाभिष्वङ्गपूर्विकासचित्तेतरद्रव्योपादानक्रिया परिग्रहसंज्ञा ४। तथा क्रोधवेदनीयोदयात्, तदावेशगर्भापुरुषमुखनयनदन्तच्छदस्फुरणचेष्टा क्रोधसंज्ञा ५। तथा मानोदयादहङ्कारात्मिका उत्सेकादिपरिणति र्मानसंज्ञा ६। मायावेदनीयेनाऽशुभसंक्लेशा दनृतसम्भाषणादिक्रिया मायासंज्ञा ७। तथा लोभवेदनीयोदयतो लालसत्वेन सचित्तेतरद्रव्यप्रार्थना लोभसंज्ञा ८। तथा मतिज्ञानावरणकर्मक्षयोपशमनात् शब्दाद्यर्थगोचराः सामान्यावबोधक्रिया ओघसंज्ञा ९। तथा तद्विशेषावबोधक्रिया लोकसंज्ञा १०। एवं चेदमापतितं,

॥ मूल ॥

ओघसन्ना । नेरइयाणं भंते ! कइसन्ना पन्नत्ता ? गोयमा ! दससन्ना पन्नत्ता ? तंजहा—आहारसन्ना भयसन्ना मेहुणसन्ना परिग्गहसन्ना कोहसन्ना माणसन्ना मायासन्ना लोभसन्ना लोगसन्ना ओघसन्ना । सू

॥ अ० ॥

प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-आहारसञ्ज्ञा भयसञ्ज्ञा मैथुनसञ्ज्ञा परिग्रहसञ्ज्ञा क्रोधसञ्ज्ञा मानसञ्ज्ञा मायासञ्ज्ञा लोभसञ्ज्ञा लोकसञ्ज्ञा ओघसञ्ज्ञा ।

॥ भाषा ॥

हारसन्ना जाव ओघसन्ना । दससंज्ञाकहो ते कहेहे आहारसंज्ञा जाव ओघसंज्ञा । असुरकुमाराणं भंते कतिसन्नाओ पं गोयमा । असुरकुमारने केती संज्ञाकहो हे गौतम । दससन्नाओ पं गोयमा आहारसन्ना जाव ओघसन्ना । १० संज्ञाकहो गौतम आहारसंज्ञा जाव ओघसंज्ञा । एवं जाव थणि

दर्शनोपयोग ओघसंज्ञा, ज्ञानोपयोगो लोकसंज्ञा, अन्येस्वभिदधति-सामान्ये प्रवृत्ति र्यथा वल्लयावृत्त्या रोहणमोघसंज्ञा, लोकस्यहेयाप्रवृत्ति र्लोक संज्ञा, तदेवमेता सुखप्रतिपत्तये स्पष्टरूपा पञ्चेन्द्रियानधिकृत्य व्याख्याता एकेन्द्रियाणांत्वेता अव्यक्तरूपा अवगंतव्याः । नैरयिकसूत्रे-उसन्नकारणं पडुच्च नयसन्नोवउत्ता इति ॥ अत्रोत्सन्नशब्देन बाहुल्यमुच्यते' कारणशब्देन बाह्यं कारणं, ततोयमर्थः-बाह्यकारणमाश्रित्य नैरयिका बाहुल्येन न यसंज्ञोपयुक्ता स्तथाहि सन्ति तेषां सर्वतः प्रभूतानि परमाधार्मिकायःकवल्लीसंक्तकुंतादीनि नयोत्पादनानि ॥ संतइभावं पडुच्चेति ॥ इहान्तरो नुभवभावसंततिभाव उच्यत, तत आन्तरमनुभवभावमपेक्ष्य नैरयिका आहारसंज्ञोपयुक्ता अपि यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता अपि अल्पबहुत्वचिन्ता

॥ टीका ॥

**सुरकुमाराणं भंते ! कइ सन्ना पण्णत्ता ? गोयमा ! दस सन्ना पण्णत्ता ? तंजहा—आहारसन्ना जाव ओघ सन्ना । एवं जाव थणियकुमाराणं । एवपुढवीकाइयाणं जाव वेमाणियावसाणाणं णेयव्वं । नेरइयाणं भंते ! किं आहारसन्नोवउत्ता भयसन्नोवउत्ता मेहुणसन्नोवउत्ता परिग्गहसन्नोवउत्ता ? गोयमा ! उसन्नका**

॥ मूल ॥

**नैरयिकाणां भदन्त ! कतिसंज्ञाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! दश संज्ञाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-आहारसंज्ञा भयसंज्ञा मैथुनसंज्ञा परिग्रहसंज्ञा क्रोधसंज्ञा मानसंज्ञा मायासंज्ञा लोभसंज्ञा लोकसंज्ञा ओघसंज्ञा । असुरकुमाराणां भदन्त ! कतिसंज्ञाः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! दश संज्ञाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-आहारसंज्ञा यावदोघसंज्ञा । एवं यावत्स्तनितकुमाराः । एवं पृथिवीकायिकानां यावद्वैमानिकावसानानां ज्ञातव्यम् । नैरयिका भदन्त ! किमाहारसंज्ञोपयुक्ता भयसंज्ञोपयुक्ता मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः ? गौतम ! उसन्नं "बाहुल्यं" कारणं प्रतीत्य न**

॥ अ० ॥

यकुमाराणं एवं पृढवीकाइयाणं । इस लोलगे स्तनितकुमार तांकगे इस पृथिवीकायादि । वेमाणीय पर्यन्तमाणं नेवचं । वैमानिकरूपे २४ दंडके १० संज्ञा कहो । नेरइयाणं भंते किं आहारसण्णोवउत्ता भयसण्णोवउत्ता । नारकीने हे भगवन् शुं आहारसंज्ञा सहित भयसंज्ञा सहित हुवे । मेहुणस ण्णोवउत्ता परिग्गहसण्णोवउत्ता गोयमा । मैथुनसंज्ञा सहित हुवे परिग्रहसंज्ञासहितके हे गौतम । उसन्नकारणं पडुच्च भयसण्णोवउत्ता संततिकारणं पडुच्च

॥ भाषा ॥

यां सर्वस्तोका मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः, नैरयिकादि चक्षुर्निमीलनमपि न सुखिनः केवलमनवरतमतिप्रबलदुःखाग्निना सन्तप्तमानशरीरा उक्तंच-अच्छिनि मीलिएमेत्तं नत्थिसुहंदुःक्खमवपक्खिइत्तं । नरयनेरइयाणं अहोनिसंपच्चमाणाणं ॥ १ ॥ ततो मैथुनेच्छा तेषां भवतीति यदि परं क्वचित्कदाचित्कं यांचिद्भवति सापि च स्तोककालेति पृच्छासमये स्तोका मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः तेभ्यः सङ्ख्येयगुणा आहारसंज्ञोपयुक्ताः, दुःखितानामपि प्रभूतानां प्रभूतकालंचाहारेच्छाया भावतः पृच्छासमये अतिप्रभूतानामाहारसंज्ञोपयुक्तानां सम्भवात्तेभ्यः सङ्ख्येयगुणाः परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता आहारेच्छादिदेहार्थमेव भवति परिग्रहेच्छा तु देहे प्रहरणादिषु च प्रभूततरकालावस्थायिनी च परिग्रहेच्छा ततः पृच्छासमयेऽतिप्रभूततराः परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता अ



रणंपहुच्च भयसन्नोवउत्ता, संतइभावं पहुच्च आहारसन्नोवउत्ताणवि जाव परिग्गहसन्नोवउत्ता । एतेसिणं भंत ! नेरइयाणं आहारसन्नोवउत्ताणं भयसन्नोवउत्ताणं मेहुणसन्नोवउत्ताणं परिग्गहसन्नोवउत्ताणय कयरेकयरे हिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया मेहु



यसंज्ञोपयुक्ताः, सन्ततिभावं प्रतीत्याहारसंज्ञोपयुक्ता अपि यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः । एतेषां भदन्त ! नैरयिकाणामाहारसंज्ञोपयुक्तानां भयसंज्ञोपयुक्तानां मैथुनसंज्ञोपयुक्तानां परिग्रहसंज्ञोपयुक्तानाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका नैरयिका मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः आहारसंज्ञोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणाः, परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणाः, भयसंज्ञोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणाः,



आहारसन्नोवउत्तावि । घणीभूतसंज्ञाहेतवो भयसंज्ञाप्रणीघणी हुवै अंतरा आत्मा जोड़ै जे आहारसंज्ञासहित हुवै । जाव परिग्गहसन्नोवउत्तावि एतलिग भणे नैरइयाणं आहारसन्नोवउत्ताणं । जाणैं परिग्रहसंज्ञासहित हुवै एहने हे भगवन् नारकोने आहारसंज्ञासहितहुवै । भयसन्नोवउत्ताणं मेहुणसन्नोवउत्ताणं । भयसंज्ञा सहितनैं मैथुनसंज्ञासहितने । परिग्गहसन्नोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा जाव विसेसाहियावा गोयमा । परिग्रहसहित तेह ने किहा २ थी थोड़ा घणा सरीषा विशेषाधिकहुवै हे गोतम । सव्वत्थोवा नेरइयामेहुणसन्नोवउत्ता आहारसन्नोवउत्ता संखेज्जगुणा । सर्वथोड़ा नारकी

॥ टीका ॥

वाप्यंते इति भवंति पूर्वेभ्यः सङ्ख्येयगुणाः, नरकेषु हि नैरयिकाणां सर्वतो भयमामरणांतभावि ततः पृच्छासमयेऽतिप्रभूततमा भयसंज्ञोपयुक्ताः प्रा
प्यंते इति सङ्ख्येयगुणाः, तिर्यक्पञ्चेन्द्रिया अपि बाह्यं कारणं प्रतीत्य बाहुल्येनाहारसंज्ञोपयुक्ता भवन्ति न शेषसंज्ञोपयुक्ता स्तथाप्रत्यक्षतएवोप

॥ मूल ॥

णसन्नोवउत्ता आहारसन्नोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसन्नोवउत्ता संखेज्जगुणा, भयसन्नोवउत्ता संखे
ज्जगुणा । तिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा ! उस
ण्णकारणं पडुच्च आहारसण्णोवउत्ता । संतइभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गहसण्णोवउत्तावि
एतेसिणं भंते ! तिरिक्खजोणियाणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणय कयरेकयरे हिंतो

॥ अ० ॥

तिर्यग्योनिका भदन्त ! किमाहारसंज्ञोपयुक्ता यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः ? गौतम ! उस्सन्नं "बाहुल्यं" कारणं प्रतीत्याहारसंज्ञोपयुक्ताः, स
न्ततिभावं प्रतीत्याहारसंज्ञोपयुक्ता अपि यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता अपि । एतेषां भदन्त ! तिर्यग्योनिकानामाहारसंज्ञोपयुक्तानां यावत्परि
ग्रहसंज्ञोपयुक्तानां च कतरेकतरेभ्यो ऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका स्तिर्यग्योनिकाः परिग्रहसंज्ञो

॥ भाषा ॥

मैथुनसंज्ञा ना धणीये नपुंसकवेदा तेहथा आहारसंज्ञा ना धणी संख्यातगुणा । परिग्गहसण्णोवउत्ता सं० । परिग्रहसंज्ञाना धणी संख्यातगुणा प्रहरणादि
परि मूर्छासहितहुवे । भयसण्णोवउत्ता असं० तिरिक्खजोणियाणं भंते किं आहारसण्णोवउत्ता । तेहथी भयसंज्ञानारकी तिर्यंचयोनियाने हे भगवन् किमुं
आहारसंज्ञा हुवे कि । जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता गोयमा । जावमें परिग्रहसंज्ञा हुवे हे गौतम । उसण्णकारणं पडुच्च आहारसण्णोवउत्ता संततिकारण
पडुच्च आहारसण्णोवउत्तावि । बाहुल्यपणें आहारसंज्ञातिर्यंचने घणी आंतरा आश्री पिण आहारसंज्ञाघणी हुवे । जाव परिग्गहसण्णोवउत्तावि एएसि
णं भंते तिरिक्खजोणियाण आहारसण्णोवउत्ता । जावमें परिग्रहसंज्ञा सहितहुवे एहनें हे भगवन् तिर्यंचयोनियानें आहारादिसंज्ञा । जाव परिग्गहसण्णो
वउत्ताण्य कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा । जावमें परिग्रहसंज्ञासहितहुवे केहा २ थी थोडा इत्यादि ४ हेगौतम । सर्वस्तोवा तिरिक्खजोणिया परि

लेश्यैः आंतरमनुभवभावमाश्रित्याहारसंज्ञोपयुक्ता अपि यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता अपि अल्पबहुत्वचिन्तायां सर्वस्तोकाः परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः परिग्रहसंज्ञायास्तोककालत्वेन पृच्छासमये तेषां स्तोकानामेवावाप्यमानत्वात्, तेभ्यो मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणा मैथुनसंज्ञोपयोगस्य प्रभूततरकालत्वात्तेभ्योपि भयसंज्ञोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणाः सजातीयात्परजातीयाच्च तेषां भयसम्भवतो भयोपयोगस्य च प्रभूततमकालत्वात् पृच्छासमये भयसंज्ञोपयुक्तानामतिप्रभूततराणामवाप्यमानत्वात्, तेभ्यः संख्येयगुणा आहारसंज्ञोपयुक्ताः प्रायः सततं सर्वेषामाहारसम्भवात्, मनुष्या बाह्यकारणमधिकृत्य बाहुल्येन मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः स्तोकाः शेषसंज्ञोपयुक्ताः संततिभावमान्तरानुभवभावरूपं प्रतीत्याहारसंज्ञोपयुक्ता अपि यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता अपि अल्पबहुत्वचिन्तायां सर्वस्तोका भयसंज्ञोपयुक्ताः, स्तोकानां स्तोककालं च भयसंज्ञासम्भवात्, तेभ्य आहारसंज्ञोपयुक्ताः संख्येयगुणा आहारसंज्ञोपयोगस्य प्रभूततरकालभावात्, अतएव हेतो स्तेभ्यः संख्येयगुणाः परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता स्तेभ्यो मैथुनसंज्ञोपयुक्ता संख्येयगुणा मैथुनसंज्ञा

॥ टीका ॥

अप्पाबा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा तिरिक्खजोणिया परिग्गहसण्णोवउत्ता, मेहुणसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा । आहारसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा मणुस्साणं भंते ! किं आहारसण्णोव

॥ मूल ॥

पयुक्ताः, मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः संख्येयगुणाः, भयसंज्ञोपयुक्ताः संख्येयगुणाः, आहारसंज्ञोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणाः । मनुष्या भदन्त ! किमाहारसंज्ञोपयुक्ता यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः ? गौतम ! उपबृंहणकारणं प्रतीत्य मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः । सन्ततिभावं प्रतीत्याहारसंज्ञोपयुक्ता अपि यावत्प

॥ अ० ॥

गहसण्णोवउत्ता मेहुणसण्णोवउत्ता संखे० । सव्वथोडा तिरिक्खजोणिया परिग्गहसण्णा धणो तेहंतो मेहुणसण्णा धणो । भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा आहारसण्णोवउत्तासंखेज्जगुणा । तेहंतो भयसण्णा धणो संखातगुणा तेहंतो आहारसण्णा धणो संखातगुणा । मणुस्साणं भंते किं आहारसण्णोवउत्ता जाव किं परिग्गहसण्णोवउत्ता गोयमा । मणुस्से हेभगवन् आहारसण्णायुक्त सर्वं स्यु परिग्रहसंज्ञा सहितहुवे हेगौतम । उपबृंहणकारण पडुच्च मेहुणसण्णोवउत्ता संततिभाव पडुच्च आहारसण्णोवउत्तावि । बाहुल्यपणे मेथुनसंज्ञासहितछे अंतरपामीने आहारसंज्ञासहितछे । जाव परिग्गहसण्णोवउत्तावि एएसिणं भंते

॥ भाष ॥

या अतिप्रभूततरं कालं यावद्भावतः पृच्छासमये तेषामतिप्रभूततराणामवाप्यमानत्वात्, तथा बाह्यं कारणमधिकृत्य बाहुल्येन देवाः परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता मणिकनकरत्नादीनां परिग्रहसंज्ञोपयोगहेतूनां तेषां सदा सन्निहितत्वात्, संततिभावं यथोक्तरूपं प्रतीत्य पुनराहारसंज्ञोपयुक्ता अपि यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता अपि अल्पबहुत्वचिन्तायां सर्वस्तोका आहारसंज्ञोपयुक्ता आहारेच्छाविरहकालस्यातिप्रभूततया आहारसंज्ञोपयोगकाल



उत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा ! उसण्णकारणं पडुच्च मेहुणसण्णोवउत्ता । संततिभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गहसण्णोवउत्तावि । एतेसिणं भंते ! मणुस्साणं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणय कयरेकयरे हिंतो अप्पावा बहूयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा मणुस्सा भयसण्णोवउत्ता, आहारसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, मेहुणसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा । देवाणं भंते ! किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता ? गोयमा !



रिग्रहसंज्ञोपयुक्ता अपि । एतेषां भदन्त ! मनुष्याणामाहारसंज्ञोपयुक्तानां यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्तानां च कतरेकतरेभ्यो यावद्विशेषाधिका वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका मनुष्या भयसंज्ञोपयुक्ता आहारसंज्ञोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणाः परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः सङ्ख्येयगुणाः मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः



मणुस्साणं आहारसण्णोवउत्ताणं । जालगं परिग्रहसंज्ञासहितके एहनं हेभगवन् मनुष्यन आहारसंज्ञासहितके । जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणय कयरे२ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा । जालगे परिग्रहसंज्ञासहितके केहा २ थी थोडा इत्यादि ४ हे गौतम । सव्वत्थोवामणुस्सा भयसण्णोवउत्ता आहारसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा । सर्व थोडामनुष्य भयसंज्ञानाधणी तेहथी आहारसंज्ञानाधणी संख्यातगुणा । परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा मेहुणसण्णोवउत्ता संखिज्जगुणा । परिग्रहसंज्ञानाधणी संख्यातगुणा मैथुनसंज्ञानाधणी संख्यातगुणा । देवाणं भंते किं आहारसण्णोवउत्ता जाव परिग्गहसण्णोवउत्ता गो० । देवताने हे भगवन् किमुं आहारसंज्ञा कि जाव परिग्रहसंज्ञा मिण हुवे हे गौतम । उसण्णकारणं पडुच्च परिग्गहसण्णोवउत्ता संततिभाव पडुच्च आहारसण्णोवउ

॥ टीका ॥

स्यचातिस्तोकतया तेषां पृच्छासमये सर्वस्तोकानां तेषामवाप्यमानत्वात्, ततोऽभयसंज्ञोपयुक्ताः संख्येयगुणा अभयसंज्ञायाः प्रभूतानां प्रभूतकालं च भावात्, तेभ्यो मैथुनसंज्ञोपयुक्ता जीवापेक्षया बहवो वक्तव्या स्तेच तथैव भाविता इति ॥ इति श्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां संज्ञाख्यमष्टमं पदं समाप्तम् ॥ ८ ॥ तदेवं व्याख्यातमष्टमं पद मधुना नवम मारभ्यते-तस्यचा यमभिसम्बन्ध इहानन्तरपदे

॥ मूल ॥

उसन्नकारणं पडुच्च परिग्गहसण्णोवउत्ता। संतइभावं पडुच्च आहारसण्णोवउत्तावि जाव परिग्गहसण्णोवउत्तावि। एतेसिणं भंते! देवाणं आहारसण्णोवउत्ताणं जाव परिग्गहसण्णोवउत्ताणय कयरेकयरे हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा आहारसण्णोवउत्ता, भयसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, मेहुणसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवउत्ता संखेज्जगुणा। इति पन्नवणाए भगवईए अट्ठमंपदं समत्तं ॥ ८ ॥

॥ अ० ॥

सङ्ख्येयगुणाः। देवा भदन्त ! किमाहारसंज्ञोपयुक्ता यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः ? गौतम ! उसन्न कारण प्रतीत्य परिग्रहसंज्ञोपयुक्ताः, सन्तति भावं प्रतीत्याहारसंज्ञोपयुक्ता अपि यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्ता अपि। एतेषां भदन्त ! देवानामाहारसंज्ञोपयुक्तानां यावत्परिग्रहसंज्ञोपयुक्तानाञ्च कतरे कतरेभ्योऽल्पावा ४? गौतम ! सर्वस्तोका आहारसंज्ञोपयुक्ताः, भयसञ्ज्ञोपयुक्ताः संख्येयगुणाः, मैथुनसंज्ञोपयुक्ताः संख्येयगुणाः, परिग्रहसञ्ज्ञोपयुक्ताः संख्येयगुणाः ॥ इति श्री महोपाध्याय श्री रामचन्द्रगणि विनेयेन ऋषिरामचन्द्रेण विरचिते प्रज्ञापनानुवादे ऽष्टमं सं

॥ भाषा ॥

ज्ञानि। ब हुत्वपणे जीतो परिग्रहसज्ञ ना धणी इना आंतराआयो मूर्छाबणी हुवे मणाविकनो आहारसज्ञ सहितहुवे। जाव परिग्रहसज्ञोवउत्ताविए एसिणभंते देवाणं आहारसज्ञोवउत्ताणं। जीतगे परिग्रहसज्ञ सहितहुवे पहने हे भगवन् देवतान आहारसज्ञकहुवे। जाव परिग्रहसज्ञोवउत्ताणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा। जीतगे परिग्रहसज्ञासहितहुवे केहा २ थी अल्पबहुपा ४ हे गौतम। सर्वथोडादेवा आहारसज्ञोवउत्ता भयसज्ञोवउत्ता संखिज्जगुणा। सर्वथोडा देवता आहारसज्ञानाधणी भयसज्ञाना धणी सख्यातगुणा। मेहुणसज्ञावउत्ता सखेज्जगुणा परिग्रहसज्ञोवउत्ता सखेज्जगु

॥ टीका ॥

सत्वानां संहारपरिणामा उक्ता, इहतु तेषामेव योनयः प्रतिपाद्यंते तत्रचेदमादिसूत्रं-॥ कइविहाणं भंते ! जोणी इत्यादि ॥ कतिविधा कतिप्रकारा णमिति पूर्ववत् भदन्त ! योनिः प्रज्ञप्ता, अथ योनिरिति कः शब्दार्थः ? उच्यते युमिश्रमे युवंति तैजसकार्मणशरीरवंतः संत औदारिकादि शरीरप्रायोग्यपुद्गलस्कन्धसमुदयेन मिश्रीभवंत्यस्या मिति योनि रुत्पत्तिस्थान मौणादिको नि प्रत्ययो, भगवाना ह-गौतम ! त्रिविधा योनिः प्रज्ञप्ता तद्यथा-शीता उष्णा शीतोष्णा, तत्र शीतस्पर्शपरिणामा शीता, उष्णस्पर्शपरिणामा उष्णा, शीतोष्णरूपोभयस्पर्शपरिणामा शीतोष्णा, तत्र नैरयिकाणां द्विविधा योनिः शीता उष्णाच न तृतीया शीतोष्णा कस्यां पृथिव्यां का योनि रितिचे दुच्यते-रत्नप्रभायां शर्करप्रभायां वालुकप्रभा

॥ मूल ॥

कतिविहाणं भंते ! जोणी पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नत्ता तंजहा-सीताजोणी, उसिणाजोणी, सीतोसिणा जोणी। नेरइयाणं भंते ! किं सीताजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणाजोणी ? गोयमा ! सीतावि जोणी उसिणावि जोणी, नो सीतोसिणा जोणी। असुरकुमाराणं भंते ! किं सीताजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणा

॥ अ० ॥

जापद समाप्तम् ॥ ८ ॥ कतिविधा भदन्त ! योनिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रिविधा योनिः प्रज्ञप्ता, तद्यथा-शीता योनि रुष्णा योनिः शीतोष्णा योनिः। नैरयिकाणां भदन्त ! किं शीता योनिरुष्णा योनिः शीतोष्णा योनिः ? गौतम ! शीतापि योनिरुष्णापि योनि र्नो शीतोष्णा योनिः। असुरकुमाराणां भदन्त ! किं शीता योनिरुष्णा योनिः शीतोष्णा योनिः ? गौतम ! नो शीता योनिः नो उष्णा

॥ भाषा ॥

या। तथा मथुनसंज्ञानाधणो संख्यातगुणा तेहथी परिग्रहसंज्ञानाधणो परिग्रहसंज्ञानाधणो। पन्नवणाए सत्तापद बहुत्व समाप्त ॥ इति प्रज्ञापना भगवतीमांहि दशमसंज्ञानो चारगतिमें ८ मो पद समाप्त हुवो ॥ ८ ॥ कतिविहाणं भंते जोणी पं गोयमा। हिवे नवमो पद योनिनो कहेछे हे भगवन् केतलेभेदे योनिकही ते कही हे गौतम। तिविहाजोणी पं तं सीताजोणी उसिणाजोणी। तीनभेदे योनिकही उत्पत्तिनो ठामप्रदेश ते कहे उत्पन्नतो ठामयोत प्रदेश उष्णयोनि। सीतोसिणाजोणी० नेरइयाणं भंते किं सीताजोणी उसिणाजोणी सितोसिणाजोणी गोयमा सीतावि जोणी।

॥ टीका ॥

यां च यानि नैरयिकाणा मुपपातक्षेत्राणि तानि सर्वाण्यपि शीतस्पर्शपरिणामपरिणतानि उपपातक्षेत्रव्यतिरेकेण चा न्यत् सर्वमपि तिसृष्वपि पृथिवीषूष्णस्पर्शपरिणामपरिणतं तेन तत्रत्या नैरयिकाः शीतयोनिका उष्णां वेदना वेदयन्ते, पंकप्रभायां बहून्यु पपातक्षेत्राणि शीतस्पर्शपरिणामपरिणतानि स्तोका न्युष्णस्पर्शपरिणामपरिणतानि येषु च प्रस्तटेषु नरकावासेषु शीतस्पर्शपरिणामान्यु पपातक्षेत्राणि तेषु तद्व्यतिरेकेण चा न्यत्सर्व मुष्णस्पर्शपरिणामं तेषु प्रस्तटेषु नरकावासेषु चो पपातक्षेत्राण्यु ष्णस्पर्शपरिणामानि तेषु तद्व्यतिरेकेण चा न्यत्सर्वं शीतस्पर्शपरिणामं तेन तत्रत्या बहवो नैरयिकाः शीतयोनिका उष्णां वेदनां वेदयते, स्तोका उष्णयोनिकाः शीतवेदना मिति । धूमप्रभायां बहून्युपपातक्षेत्राणि उष्णस्पर्शपरिणामपरिणतानि स्तोकानि शीतस्पर्शपरिणामानि येषु च प्रस्तटेषु येषुच नरकावासेषु चो ष्णस्पर्शपरिणामपरिणतान्यु पपातक्षेत्राणि तेषु त

॥ मूल ॥

गोयमा ! नो सीताजोणी नो उसिणाजोणी ? सीतोसिणा जोणी। एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढवीकाइयाणं भंते ! किं सीताजोणी उसिणाजोणी सतोसिणाजोणी ? गोयमा ! सीतावि जोणी उसिणावि जोणी

॥ अ० ॥

योनिः शीतोष्णा योनिः । एवं यावत्स्तनितकुमाराणाम् । पृथिवीकायिकानां भदन्त ! किं शीता योनिरुष्णा योनिः शीतोष्णा योनिः ? गौत

॥ भाषा ॥

शीतोष्णयोनि, नारकोने हे भगवन् किमू शीतयोनि उष्णयोनि शीतोष्णयोनि हे गौतम शीतयोनिहवे । उसिणावियाणं नोसीतोसिणाजोणी । उष्णयोनिहवे नही शीतोष्णयोनि उभयस्पर्शपरिणामनी योनिचौजो भटनी नारकोने न हवे स्यामबती रत्नप्रभा शर्करा वालु ए नारकीना उपपातक्षेत्रने सर्व शीतस्पर्शपरिणतछे उपपातक्षेत्रविना त्रिण पृथिवीए उष्णस्पर्श परिणाम परिणतछे तेमाटे उष्णवेदना वेछे पंकप्रभाये उपपातक्षेत्र शीतस्पर्श परिणतछे उष्णपरिणाम परिणतथोडाछे तेमाटे तिहां घणानारकी शीतयोनिया उष्णवेदनाछ वेछे तेमाटे उष्णयोनिया थोडा धूमप्रभाये घणा उपपातक्षेत्र उष्णपरिणाम परिणतछे शीतपरिणामी थोडाछे जेणे पाथडे उष्णस्पर्श परिणतछे घणा तेमाटे उष्णयोनिया घणा शीतयोनिया वेदनासो वेछे तमप्रभाये उपपातक्षेत्र उष्णस्पर्शपरिणतछे तेमाटे उष्णयोनिया घणा शीतवेदना भोगवेछे । असुरकुमाराणं भंते किं सीताजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणाजोणी गो

॥ टीका ॥

द्व्यतिरेकेण चान्यत्सर्वं शीतपरिणामं तेषु च शीतस्पर्शपरिणामान्यु पपातक्षेत्राणि तेषु न्यत्सर्वं उष्णस्पर्शपरिणामं तेन च तत्रत्या बहवो नारका उ
ष्णयोनिकाः शीतवेदनां वेदयन्ते श्लोकाः शीतयोनिका उष्णवेदनामिति, तमःप्रभायां तमस्तमःप्रभायां चोपपातक्षेत्राणि सर्वाण्यप्युष्णस्पर्शपरिणा
मपरिणतानि तद्व्यतिरेकेण चान्यत्सर्वं तत्र शीतस्पर्शपरिणामं तेन तत्रत्या नारका उष्णयोनिकाः शीतवेदनां वेदयितार इति' असुरकुमारवासिनां गर्भ
व्युत्क्रान्तिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियगर्भव्युक्रान्तिकमनुष्याणां व्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकानां चोपपातक्षेत्राणि शीतोष्णरूपोभयस्पर्शपरिणामपरिणतानि तेन

॥ मूल ॥

सीतोसिणावि जोणी । एवं जाव उवणस्सइबेइंदियतेइंदियचउरिंदियाणवि पत्तेयं जाणियव्वं । तेउकाइयाणं नो सीता उसिणा नो सीतोसिणा । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं सीताजोणी उसिणाजो

॥ अ० ॥

म । शीतापि योनिरुष्णापि योनिः शीतोष्णापि योनिः । एवमब्वायुवनस्पतिद्वित्रिचतुरिन्द्रियाणामपि प्रत्येकं भणितव्यम् । तेजस्कायिकानां
नो शीता उष्णा नो शीतोष्णा । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां भदन्त ! किं शीता योनिरुष्णा शीतोष्णा योनिः ? गौतम ! शीतापि योनिरुष्णा

॥ भाषा ॥

असुकुमारने भगवन् शीतयोनि किं उष्णयोनि कांइ शीतोष्णयोनि हे गौतम । नोशीता नोउसिणा सीतोसिणाजोणी । नहीं शीतयोनि नहीं उष्ण
योनि शीतोष्णयोनिछे । एवं जाव थणियकुमाराणं पुढवीकाइयाणं भंते किं सीताजोणी २ पुच्छा हे गौतम । इम जावत् स्तनितकुमारलगे कहिवो
पृथ्वीकायने हे भगवन् किं शीतयोनिछे २ माहिलो प्रश्न हे गौ० । सीताविजोणी उसिणाविजोणी सितोसिणाविजोणी । शीत पिण छे उष्णयोनि
पिण छे मिश्रयोनि पिण छे । एवं आउवाउवणस्सइ बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाणवि । इम अप्काय वनस्पतिने वेंद्रिय तेंद्रिय चौरिंद्रियने पिण ।
पत्तेयं २ भाणीयव्वं तेउकाइयाणं नोसीताजोणी । प्रत्येके २ तीन २ योनि कहयो, तेउकायने नहीं शीतयोनि । उसिणाजोणी नोसीतोसिणाजोणी ।
उष्णयोनि छे मिश्रयोनि पिण छे । पंचिंदिय तिरिक्खजोणीयाणं भंते किं सीताजोणी । पंचेंद्रियतिर्यंच योनियाने हे भगवन् कैसी । उसिणाजोणी
सीतोसिणाजोणी गौ० । शीतयोनि उष्णयोनि शीतोष्णयोनि हे गौ० । सीताविउसिणावि सीतोसिणाविजोणी । शीतयोनि पिण उष्णयोनि पिण मिश्रयोनि

॥ टीका ॥

तेषां योनिरुष्णस्वभावा न शीता नाप्युष्णा, एकेन्द्रियाणामग्निकायिकवर्जानां द्वित्रिचतुरिन्द्रियसम्मूर्च्छिमतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसम्मूर्च्छिममनुष्याणां यो उपपातस्थानानि शीतस्पर्शान्युष्णस्पर्शान्युभयस्पर्शान्यपि भवन्तीति तेषां त्रिविधा योनिः, तैजस्कायिका उष्णयोनिका स्तथाप्रत्यक्षत उपलब्धेः, अल्पबहुत्वचिन्तायां सर्वस्तोकाः शीतोष्णयोनयः शीतोष्णरूपोभययोनिका भवनवासिगर्भजतिर्यक्पञ्चेन्द्रियगर्भजमनुष्यव्यंतरज्योतिष्का वैमानिका

॥ मूल ॥

णी सीतोसिणा जोणी ? गो० ! सीतावि जोणी उसिणावि जोणी सीतोसिणावि जोणी। सम्मुच्छिमपंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणवि एवंचेव। गब्भवक्कंतियमणुस्साणं भंते ! किं सीताजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! नो सीताजोणी नो उसिणाजोणी सीतोसिणा जोणी। मणुस्साणं किं सीताजोणी उसिणा

॥ ष० ॥

पि योनिः शीतोष्णापि योनिः। सम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामप्येवं चैव। गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां भदन्त ! किं शीता योनिरुष्णा योनिः शीतोष्णा योनिः ? गौतम ! नो शीता योनिर्नो उष्णा योनिः शीतोष्णा योनिः। मनुष्याणां भदन्त ! किं शीता योनिरुष्णा योनिः शीतोष्णा योनिः ? गौतम ! शीताप्युष्णापि शीतोष्णापि योनिः। सम्मूर्च्छिममनुष्याणां भदन्त ! किं शीता योनिरुष्णा योनिः शीतोष्णा यो

॥ भाष ॥

पिण। समुच्छिमपंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणवि एवचेव। समूर्छिमपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनियाने पिण इमहोज। गब्भवक्कंतिय पंचिंदिय तिरिक्खजोणिया णं भंते किं। गर्भजपचेंद्रिय तिर्यंचयोनियाने हे भगवन् केहवायोनिहुवे। सीताजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणाजोणी गोयमा। शीतयोनि उष्णयोनि मिश्रयोनिहुवे हे गौ०। नोसीता नोउसिणा सीतोसिणाजोणी मणुस्साणं भंते किं सीताजोणी। नही शीतयोनि नही उष्णयोनि मिश्रयोनि हुवे मनुष्यने भगवन् किसी योनिहुवे ३ मांहिली शीतयोनि। उसिणाजोणी सीतोसिणाजोणी गोयमा। उष्णयोनि मिश्रयोनि हेगौतम। सीतावि उसिणावि। सीतोसिणावि जोणी। शीतयोनिहुवे उष्णयोनिहुवे मिश्रयोनिहुवे। एवं समुच्छिममणुस्साणवि तिविहाभाणियव्वा। इम समुच्छिममनुष्यने किसी योनि हुवे इणां ३ मांहिली। गब्भवक्कंतियमणुस्साण भंते किं सीताउसिणा सीतोसिणाजोणी गोयमा। गर्भजमनुष्यने किसीयोनिहुवे ३ मांहिली शीतउष्ण

॥ टीका ॥

वायवोऽग्नययोनिकत्वात्, तेभ्यो संख्येयगुणाः उष्णयोनिकाः, सर्वेषां सूक्ष्मबादरभेदभिन्नानां तैजस्कायिकानां प्रभूततराणां नैरयिकाणां कतिपयानां पृथिव्यप्वायुप्रत्येकवनस्पतीनां चोष्णयोनिकत्वात्, अयोनिका अनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तत्वात्, तेभ्यः शीतयोनिका अनन्तगुणाः, अनन्तकायिकानां सर्वेषामपि शीतयोनिकत्वात्, तेषांच सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात्, भूयः प्रकारान्तरेण योनी प्रतिपिपादयिषुराह-कइविहाणं भंते ! जो

॥ मूल ॥

सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! सीतावि उसिणावि सीतोसिणावि जोणी । सम्मुच्छिममणुस्साणं भंते ! किं सीताजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणाजोणी ? गोयमा ! तिविहा जोणी । वाणमंतरदेवाणं किं सीताजोणी उसिणाजोणी सीतोसिणा जोणी ? गोयमा ! नो सीता नो उसिणा सीतोसिणा जोणी । जोइसियाणं वेमाणियाणवि एवंचेव । एतेसिणं भंते ! जीवाणं सीतजोणियाणं उसिणजोणियाणं सीतोसिणजोणियाणं अजोणियाणय कयरे कयरे हिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सीतोसिणजोणिया

॥ अ० ॥

निः ? गौतम ! त्रिविधापि योनिः । वानव्यन्तरदेवानां किं शीता योनिरुष्णा योनिः शीतोष्णा योनिः ? गौतम ! नो शीता नो उष्णा शीतोष्णा योनिः । ज्योतिष्काणां वैमानिकानामप्येवं चैव । एतेषां भदन्त ! जीवानां शीतयोनिकानामुष्णयोनिकानां शीतोष्णयोनिकानामयोनि

॥ भाषा ॥

शीतोष्ण हे गौतम । नोसीता नोउसिणा सीतोसिणाजोणी । नहीं शीतयोनि नहींउष्ण मिश्रयोनिछे । वाणमंतरदेवाणं भंते किं सीताउसिणा सीतोसिणाजोणी गोयमा । वानव्यन्तरदेवताने किसीयोनि शीतयोनि उष्णयोनि मिश्रयोनि हेगौतम । नोसीता नोउसिणा सीतोसिणाजोणी । नहींशीत नहींउष्ण मिश्रयोनिहुवे । जोइसियवेमाणियाणवि एवंचेव एएसिणं भंते जीवाणं सीतजोणियाणं । जोतिषीने वैमानिकने पिण इम होज एहने हे भगवन् जीवने शीतयोनियानें । उसिणजोणियाणं सीतोसिणजोणियाणं । उष्णयोनियानें मिश्रयोनियानें । अजोणिवाणय कयरे कयरे हिंतो अप्पावा ४ गोयमा । अयोनिनें केहा २ थी अल्प घणा इत्यादि हे गौतम । सवत्थावा जीवासीतोसिणजोणिया उसिणजोणिया संखि० । सर्वथोडा जीवशीतो

॥ टीका ॥

णी पन्नत्ता इत्यादि ॥ सचित्ता जीवप्रदेशसंबंधा अचित्ता सर्वथा जीवविप्रमुक्ता मिश्रा जीवविप्रमुक्ता विप्रमुक्तस्वरूपाः, तत्र नैरयिकाणां यदुपपातक्षेत्रं तत्र न केनचिज्जीवेन परिगृहीतमिति तेषां सचित्ता योनिः, यद्यपि सूक्ष्मैकेन्द्रियाः सकललोकव्यापिनः तथापि न तत्प्रदेशैरुपपातस्यानपुद्गला अन्योन्यानुगमसंबद्धा इत्यचित्तैव तेषां योनिः, एवमसुरकुमारादीनां भवनपतीनां व्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकानां वा ऽचित्तायोनि र्भावनी

॥ मूल ॥

उसिणजोणिया असंखेज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सीतजोणिया अणंतगुणा । कतिविहाणं भंते ! जोणी पन्नत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पन्नत्ता ? तंजहा—सचित्ता अचित्ता मीसिया । नेरइयाणं भंते ! किं सचित्ता जोणी अचित्ता जोणी मीसिया जोणी ? गोयमा ! नो सचित्ता जोणी अचित्ता नो मीसिया जोणी । असुरकुमाराणं भंते ! किं सचित्ता जोणी अचित्ता जोणी मीसिया जोणी ? गोयमा ! नो

॥ अ० ॥

कानाल्पबहुत्वे कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः शीतोष्णयोनिकाः, उष्णयोनिका असंख्येयगुणाः, अयोनिका अनन्तगुणाः, शीतयोनिका अनन्तगुणाः । कतिविधा भदन्त ! योनिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रिविधा योनिः प्रज्ञप्ता, तद्यथा—सचित्ता अचित्ता मिश्रा । नैरयिकाणां भदन्त ! किं सचित्ता योनिः अचित्ता योनिः मिश्रायोनिः ? गौतम ! नो सचित्ता योनिः अचित्ता नो मिश्रायोनिः । असुरकुमाराणां

॥ भाषा ॥

णयानिया देवतामणो उष्णयोनिया असंख्यातगुणा । अजोणिया अणंतगुणा सीतजोणिया अणंतगुणा । तेहथी अयोगी अनन्तगुणा तेहथी शीतयोनिया अनन्तगुणा । कतिविहाणं भंते जोणी गोयमा तिविहाजोणी पंतं । केतला भेदे स्त्रीयोनि कही हे गौतम तीनभेदे कही । सचित्ता अचित्ता मीसिया । सचित्त १ प्रदेश अचित्त २ जीव प्रदेशसहित मिश्रजीव प्रदेशमिश्र । नेरइयाणं भंते किं सचित्ताजोणी अचित्ताजोणी मीसियाजोणी गोयमा । नारकीने हे भगवन् केसीयोनि सचित्त के अचित्त के मिश्रयोनि कि हे गौतम । नोसचित्ताजोणी अचित्ताजोणी नोमीसियाजोणी । नहीसचित्त योनि अचित्तयोनि नहीं मिश्रयोनि हुवे । असुरकुमाराणं भंते किं सचित्ता अचित्तामीसियाजोणी गोयमा । असुरकुमारने केहीयोनि सचित्त अचित्त

या, पृथिवीकायिकादीनां सम्मूर्च्छिममनुष्यपर्यन्तानामुपपातक्षेत्रं जीवैः परिगृहीतमपरिगृहीतमुभयस्वभावं च सम्भवतीति त्रिविधा योनिः गर्भव्युत्क्रान्तिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणां गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणां च यत्रोच्यते सचित्ताऽचित्ता अपि शुक्रशोणितादिपुद्गलाः सचीतिमिश्रा तेषां योनिः



सचित्ताजोणी अचित्ताजोणी नो मीसिया । एवं जाव थणियकुमाराणं । पुढवीकाइयाणं भंते ! किं सचित्ताजोणी अचित्ता जोणी मीसिया जोणी ? गोयमा ! सचित्ता जोणी अचित्तावि मीसियावि जोणी । एवं जाव चउरिंदियाणं । सम्मुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं सम्मुच्छिममणुस्साणय एवचेव । गब्भवक्कंतिय पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं गब्भवक्कंतियमणुस्साणय नोसचित्ता नोअचित्ता मीसिया जोणी । वाणमंत



न्तर ! किं सचित्ता योनिरचित्ता योनिर्मिश्रायोनिः ? गौतम ! नो सचित्ता योनिः अचित्ता योनि नों मिश्रा । एवं यावत्स्तनितकुमाराणाम् । पृथिवीकायिकानां भदन्त ! किं सचित्ता योनिरचित्ता योनि मिश्रायोनिः ? गौतम ! सचित्तापि योनिरचित्तापि योनि मिश्रापि योनिः । एवं यावच्चतुरिन्द्रियाणाम् । सम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां सम्मूर्च्छिममनुष्याणां चैव चैव । गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणाञ्च नो सचित्ता नो अचित्ता मिश्रायोनिः । वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकानां यथासुरकुमाराणाम् । एतेषां



मिश्रयोनि हे गौतम । नोसचित्ता अचित्ताजोणी नोमीसियाजोणी । नहो सचित्त अचित्तयोनिहवे नहो मिश्रयोन । एवं जाव थणियकुमाराणं एव वीकाइयाणं भंते किं सचित्ता अचित्ता मीसियाजोणी गोयमा । इम जांलगे स्तनितकुमार पृथिवीकायने हे भगवन् सचित्त किं अचित्त कि मिश्रयोनि हे गौतम । नोसचित्ताजोणी अचित्ताजोणीवि मिसियाजोणी । नहो सचित्तहवे योनि अचित्तयोनिहवे मिश्रयोनिहवे । एवं जाव चउरिंदियाणं सम च्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं । इम जांलगे चौरिंद्रिय तांई सम्मूर्च्छमतिर्यंचयोनिहवे । सम्मुच्छिममणुस्साणय एवचेव गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्ख जोणियाणं । सम्मूर्च्छममनुष्यने पिण इम होज हिवे गर्भजपंचेंद्रिय तिर्यंचयोनिवाने । गब्भवक्कंतियमणुस्साणं नोसचित्तजोणी । गर्भजमनुष्यने नहो स

॥ टीका ॥

अल्पबहुत्वचिन्तायां सर्वस्तोका जीवा मिश्रयोनिका गर्भव्युत्क्रान्तिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियमनुष्याणामेव मिश्रयोनिकत्वात्, तेभ्योऽचित्तयोनिका असंख्येयगुणाः नैरयिकदेवानां कतिपयानां च प्रत्येकं पृथिव्यप्तेजोवायुप्रत्येकवनस्पतिद्वित्रिचतुरिन्द्रियसम्मूर्च्छिमतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसम्मूर्च्छिममनुष्याणाम चित्तयोनिकत्वात्, तेभ्योऽप्ययोनिका अनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तत्वात्, तेभ्यः सचित्तयोनिका अनन्तगुणा निगोदजीवानां सचित्तयोनिकत्वात्,

॥ मूल ॥

रजोइसियवेमाणियाणं जहा असुरकुमाराणं। एतेसिणं भंते ! जीवाणं सचित्तजोणीयं अचित्तजोणीयं मीस जोणीणं अजोणीणय कयरे२ हिंतो अप्पावा ४ ? गो० ! सव्वत्थोवा जीवा मीसजोणिया, अचित्तजोणि या असंखिज्जगुणा, अजोणिया अणंतगुणा, सचित्तजोणिया अणंतगुणा। कतिविहाणं भंते ! जोणीया पण्ण त्ता ? गो० ! तिविहा जोणी पण्णत्ता ? सचित्तजोणिया अणंतगुणा तं०—संवुडा जोणी विवडा जोणी संवुड

॥ अ० ॥

भदन्त ! जीवानां सचित्तयोनिकानामचित्तयोनिकानां मिश्रयोनिकानामयोनिकानाञ्च (मध्ये) कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवा मिश्रयोनिकाः, अचित्तयोनिका असङ्ख्यगुणाः, अयोनिका अनन्तगुणाः, सचित्तयोनिका अनन्तगुणाः। कतिविधा भदन्त ! योनिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रिविधा योनिः प्रज्ञप्ता, तद्यथा-संवृतायोनिर्विवृतायोनिः संवृतविवृतायोनिः ।

॥ भाषा ॥

चित्तयोनि । नोअचित्ताजोणी मीसियाजोणी वाणमंतरजोइसिवेमाणीयाण जहा असुरकुमाराणं । नहीं अचित्तयोनि मिश्रयोनिके वानव्यंतरने ज्योति षीने विमानवासीने जिम असुरकुमार तिम । एतेसिणं भंते जीवाणं सचित्तजोणीयाणं । एहने जीवने हे भगवन् सचित्तयोनियाने । अचित्तजोणीया णं मीसियजोणीयाणं । अचित्तयोनियाने मिश्रयोनिवाने । अजोणीयाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा । अयोनीने केटा २ थी अल्प घणा इत्या दि ४ हे गौतम । सव्वत्थोवा जीवा मीसिजोणीया अचित्तजोणीया असं० । सर्वथोडा जीव मिश्रयोनिया गर्भजमनुष्य तिर्यंचभणी अचित्तयोनि असंख्या तगुणा देवतानानारकी भणी । अजोणीया असं० सचित्तजोणीया असं० कतिविहाणं भंते जोणी प गोयमा । अयोनि अनन्तगुणा सिद्धभणी सचित्त

॥ टीका ॥

तेषांच सिद्धेभ्योऽनन्तगुणत्वात् । भूयोऽपि प्रकारान्तरेण योनीप्रतिपिपादयिषुकाम आह-कइविहाणं भंते ! जोणी पन्नत्ता इत्यादि ॥ तत्र नारका

॥ मूल ॥

वियडा जोणी नेरइयाणं भंते ! किं संवुडा जोणी वियडा जोणी संवुडवियडा जोणी ? गो० ! संवुडा जोणी नोवियडाजोणी नोसंवुडवियडाजोणी । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं । बेइंदियाणं पुच्छा, गो० ! नोसंवुडजोणी वियडजोणी नोसंवुडवियडजोणी । एवं जाव चउरिंदियाणं । संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं संमुच्छिममणुस्साणय एवंचेव । गब्भवक्कंतियपंचिंदियतिरिक्खजोणियय गब्भवक्कंतियमणुस्साणय नो सं

॥ भा० ॥

नैरयिकाणां भदन्त ! किं संवृतायोनिर्विवृतायोनिः संवृतविवृतायोनिः ? गौतम ! संवृतायोनिर्नोविवृतायोनिः नो संवृतविवृता योनिः । एवं यावद्वनस्पतिकायिकानाम् । द्वीन्द्रियाणां पृच्छा' गौतम ! नो संवृतयोनिर्विवृतयोनिर्नोसंवृतविवृतयोनिः । एवं यावच्चतुरिन्द्रियाणाम् । सम्मूर्च्छिमपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां सम्मूर्च्छिममनुष्याणा च्चैव चैव । गर्भव्युत्क्रान्तिकपञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणाञ्च नो

॥ भाषा ॥

योनि अनन्तगुणा निगोदीया भणी सिद्धथी निगोदघणी तेमाटे केतले प्रकारे यानि कही हे गौतम । तिविहाजोणी पंते संवुडाजोणी वियडाजोणी । तीने भेदेकही तेकहेछे संवृतयोनि १ विकटयोनि २ संवुडवियडाजोणी नेरइयाणं भंते किं संवुडाजोणी । संवृतविकटयोनि ३ नारकीन हे भगवन् केत लो संवृतयोनि । वियडाजोणी संवुडवियडाजोणी गो० । विकटयोनि संवृतिविकटयोनि हे गौतम । संवुडजोणी नोवियडाजोणी नोसंवुडवियडाजोणी संवृतयोनिहवे नही विकटयोनि नही संवृतविकटयोनि । एवं जाव वणस्सइकाइयाणं बेइंदियाणं पुच्छा गोयमा । इम जाव वनस्पतिकायने बेंद्रियनी प्रश्न उत्तर हे गौतम । नोसंवुडाजोणी वियडाजोणी नोसंवुडवियडाजोणी । नही संवृतयोनि विकटयोनिहवे नही संवृतविकटयोनि हुवे । एवं जाव चउरिंदियाण संमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं । इम जाव चउरिंद्रियने संमूर्च्छिमपचेंद्रिय तिर्यंचयोनियाने । संमुच्छिममणुस्साणय एवचेव गब्भव क्कंतियपंचिंदिय तिरिक्खजोणियाणं । संमूर्च्छिममनुष्यने पिण इमहीज गर्भजपचेंद्रियतिर्यंचयोनियाने । गब्भवक्कंतियमणुस्साणं नोसंवुडाजोणी नोविय

णां संवृत्ता योनि नैरकनिष्कुटानां नारकोत्पत्तिस्थानानां संवृतत्वाद्बाह्यवस्त्वल्पत्वात्, तत्र च जाताः संतो नैरयिकाः प्रवर्द्धमानमूर्त्तयः स्तोकाः पतंति अतो तेभ्यः उष्णेषु उष्णेभ्यः शीतेष्विति, भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकानामपि संवृतायोनि स्तेषां देवशयनीयदेवदूष्यान्तरिते उत्पादात्

॥ टीका ॥

बुहजोणी नो वियहा जोणी संवुहवियहा जोणी । वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं । एतेसिणं भंते ! जीवाणं संवुहजोणियाणं वियहजोणियाणय संवुहवियहजोणियाणं अजोणियाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गो० ! सव्वत्थोवा संवुहवियहजोणिया वियहजोणिया असंखेज्जगुणा अजोणिया अणंतगुणा संवुहजोणिया अणंतगुणा । कतिविहाणं भंते ! जोणी पं० ? गो० ! तिविहा जोणी पन्नत्ता,

॥ मूल ॥

संवृतयोनि र्नो विवृताद्योनिः संवृतविवृतायोनिः । वानव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिकानां यथा नैरयिकाणाम् । एतेषां भदन्त ! जीवानां संवृतयोनिकानां विवृतयोनिकानां संवृतविवृतयोनिकानामयोनिकानां च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? गौतम ! सर्वस्तोकाः संवृतविवृतयोनिकाः, विवृतयोनिका असङ्ख्येयगुणाः, अयोनिका अनन्तगुणाः, संवृतयोनिका अनन्तगुणाः । कतिविधा भदन्त ! योनिः प्रज्ञप्ता ? गौतम ! त्रिविधा यो

॥ अ० ॥

डाजोणी । गब्भजपंचेंद्रियमनुष्यनै नहो सवृतयोनि नहो विकटयोनि । संवुडवियडाजोणी वाणमंतरजोइसियवेमाणीयाणं । संवृतविकटयोनि हुवै वानव्यन्तरजोतिषी वैमानिकने । जहा नेरइयाणं एएसिणं भंते जीवाण संवुडवियडजोणीयाणं । जिमनारकी तिम एहनें हे भगवन् जीवने संवृतयोनिया नें विकटयोनियानें । संवुडवियडजोणीयाणं अजोणीयाणय कयरे२ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा । संवृतविकटयोनियाने अयोनिने केहा २ थी थोडा ४ हे गौतम । सव्वत्थोवा जीवा संवुडवियडजोणीया वियडजोणीया असं० अजोणीया अणं० । सर्वथोडा जीव संवृतविकटयोनिया गर्भजमनुष्यने तिर्यंचणी तेहथी विकटयोनि असंख्याताविकलेंद्रिय समूर्च्छिमभणी तेहथी अयोनि अनन्तसिद्धभणी । संवुडजोणीया अणंतगुणा कतिविहाणं भंते जोणी पं० गोयमा । तेहथी संवृतयोनि अनन्ताथाकता थावरने निगोदीयाभणी केतलेभेदेयोनिनो आकारकह्यो हे गौतम । तिविहा जोणी पं तं कुम्मुण्णया संखा

॥ भाष ॥

॥ टीका ॥

द्विजंसि देवदूसिंतरिए अंगुलासंखेज्जइभागमेत्ताए सरीरोगाहणाए उववज्जइ इतिवचनात्, एकेन्द्रिया अपि संवृतयोनिका स्तेषामपि योनेः स्पष्टमनुपलक्षमाणत्वात्, द्वीन्द्रियादीनां चतुरिन्द्रियपर्यन्तानां सम्मूर्च्छिमतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसम्मूर्च्छिममनुष्याणां च विवृतायोनि स्तेषामुत्पत्तिस्थानस्य जलाशयादेः स्पष्टमुपलभ्यमानत्वात्, गर्भव्युत्क्रान्तिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियगर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्याणांच संवृतविवृतायोनि गर्भस्य संवृतविवृतरूपत्वात्, गर्भोदरान्तःस्वरूपतो नोपलभ्यते, बहिस्तूदरवृद्ध्यादिनोपलक्ष्यते इति। अल्पबहुत्वचिन्तायां सर्वस्तोकाः संवृतविवृतयोनिकाः गर्भव्युत्क्रान्तिकतिर्यक्पञ्चेन्द्रियमनुष्याणामेव संवृतविवृतयोनिकत्वात्' तेभ्योविवृतयोनिकाः संख्येयगुणाः' द्वीन्द्रियादीनां चतुरिन्द्रियपर्यवसानानां सम्मूर्च्छिमतिर्यक्पञ्चेन्द्रियसम्मूर्च्छिममनुष्याणां च विवृतयोनिकत्वात्, तेभ्योऽयोनिका अनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तत्वात्' तेभ्यः संवृतयोनिका अनन्तगुणा वनस्पतीनां संवृतयोनिकत्वात्, तेषांच सिद्धेभ्यो प्यनन्तगुणत्वात्। सम्प्रति मनुष्ययोनिविशेषप्रतिपादनार्थमाह-कइविहाणं भंते! जोणी पन्नत्ता इत्यादि ॥ कूर्मपृष्ठमिवोन्नता कूर्मोन्नता, शंखस्येवावर्त्तोयस्याः सा शंखावर्त्ता, संयुक्तवंशीपत्रद्वयाकारत्वात् वंशीपत्रा। शेषं सुगमं, नवरं शङ्खावर्त्ता

॥ मूल ॥

तं०-कुम्मुन्नया संखावत्ता वंसीपत्ता। कुम्मुन्नयाणं जोणी उत्तमपुरिसमाऊयाणं कुम्मुन्नयाएणं जोणीए उत्तमपुरिसा गब्भं वक्कमंति तंजहा-अरहंतचक्कवट्टीणं बलदेवा वासुदेवा संखावत्ताणं जोणी इत्थिरयणस्स

॥ अ० ॥

निः प्रज्ञप्ता, तद्यथा-कूर्मोन्नता शङ्खावर्त्ता वंशीपत्रा। कूर्मोन्नता योनि उत्तमपुरुषाणां, कूर्मोन्नतायां यानौ उत्तमपुरुषा गर्भं व्युत्क्रामन्ति, तद्यथा-अर्हन्त चक्रवर्त्तिनो बलदेवा वासुदेवाः। शङ्खावर्त्ता योनिः स्त्रीरत्नस्य, शङ्खावर्त्तायां यौनौ बहवो जीवाश्च पुद्गलाश्चावक्रमन्ते व्युत्क्रामंति

॥ भाषा ॥

वत्ता वंसीवत्ताकुम्मुन्नयाणं जोणी। तीने भेदेकछो कांछवानी पूठनीपरें ऊचोते शंखनीपरें आवर्त्तयुक्तछे वंशीपत्र आकारपणा माटें कुर्मोन्नत योनि। उत्तमपुरिसमाऊणं कुम्मुन्नयाए जोणीए उत्तमपुरिसागब्भेवक्कमंति तं०। उत्तमपुरुषमरो मातारेइवे कूर्मोन्नतायोनिविषे उत्तमपुरुष उपजे ते केहा। अरिहंता चक्रवट्टी बलदेवा वासुदेवा। संखावत्ताणं जोणी इत्थिरयणस्स। अहिरेत२४ चक्रवर्त्ति १२ बलदेव ९ वासुदेव ९ शंखावर्त्तयोनि चक्रवर्त्तिनो स्त्री

॥ टीका ॥

यां यानौ बहवो जीवाजीवसंबद्धाः पुद्गलाश्चावक्रमंते आगच्छन्ति च्युत्क्रामन्ति गर्भतयोत्पद्यन्ते, तथा चीयन्ते सामान्यत श्चयमागच्छन्ति उपचीयन्ते विशेषत उपचयमायान्ति परं न निष्पद्यन्ते अतिप्रबलकामाग्निपरितापोध्वसगमनादितिवृद्धप्रवादः ॥ इति श्री मलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां योन्याख्यं नवमं पदं समाप्तम् ॥ ९ ॥ तदेवं व्याख्यातं नवमं पदं । इदानीं दशममारभ्यते, तस्यचायमभिस

॥ मूल ॥

संखावत्तागं जोणीए बहवे जीवाय पोग्गलाय वक्कमंति विउक्कमंति चयंति उवचयंति नोचेवणं निप्पज्जंति वंसीपत्ताणं जोणी पिंडजस्स वंसीपत्तियाएणं जोणीए पिंडजणे गब्भं वक्कमंति। इति जोणीपदं समत्तं नवमं ॥ ९ ॥ कतिणं भंते ! पुढवीओ पण्णत्ताओ ? गो० ! अट्ठपुढवीओ पण्णत्ताओ ? तं०—रयणप्पभा सक्करप्पभा वालुयप्पभा पंकप्पभा धूमप्पभा तमप्पभा तमतमप्पभा ईसीप्पब्भारा । इमाणं भंते !

॥ भाषा ॥

चीयन्ते उपचीयन्ते नैवच निष्पद्यन्ते । वंशीपत्रायोनिः पृथग्जनस्य, वंशीपत्रायां योनौ पृथग्जनो गर्भं अवक्रमन्ते ॥ इति श्री महोपाध्याय श्रीरामचन्द्र गणि विनेयेन क्षमिमानकन्द्रेण विरचिते प्रज्ञापनानुवादे योनिपदं नवमं समाप्तम् ॥ ९ ॥ कति नदन्त !

नेइये । संखावत्तो णं जोणीए बहवे जीवाय पुग्गलाय अवक्कमंतिविउक्कमंतिचयंति । घणा जीव संबधपुद्गल तिहां चावोनें योनिमांहि व्युत्क्रामंति गर्भ पणे उपजे सामान्यपणे आवे । उपचयं व नोचेवणं निपज्जिरमंति । विशेष पणे आवे पिण नोपजेनहो अतिकामनें प्रतापें विध्वंसपामे ए हुडवचन छे । वंसीपत्राए जोणी पिंडजस्स वसीपत्तियाएं जोणीएपिंडजणीगब्भवक्कमंति । ते वशीपत्रायोनि घ ी स्त्रानेइवे घणा जीवाजीवपुद्गल आवे गर्भपणे उपजे सामान्ये आवो विशेषपणे पामे नपजे । पन्नवणाए भगवईए नवमं जोणीपयं समत्तं । इति प्रज्ञापना भगवतीनो नवमो पद समाप्त हुवा योनिनो विवरो ॥ ९ ॥ कतिविहाणं भंते पुढवीओ पण्णत्ताओ गोयमा । इहिं १० मो अंचरमविवरो कहिके हेम० ३ पृथ्वीकेतलोकहो गो० । अट्ठपुढवीओ प० तं० रत्नप्रभाशर्करप्रभा वालुकप्रभा पंकप्रभाधूमप्रभा तमप्रभा तमतमप्रभा ईसीपब्भारा । ८ पृथिवीकहो ते कहिके रत्नप्रभा १

ग्रन्थः इहानन्तरपदे सत्वानां योनयः प्रतिपादिताः अस्मिंस्तु यदुपपातक्षेत्रं रत्नप्रभादि तस्य चरमाचरमविभागदर्शनं क्रियते, तत्रचेदमादिसूत्रं-कइणं भंते ! पुढवीओ पन्नत्ताओ इत्यादि सुगमं, नवरमीषत्प्राग्भारा पञ्चचत्वारिंशद्योजनलक्षायामविष्कम्भप्रमाणा [illegible] सिद्धशिला ॥ इमाणं भंते ! रयणप्पभापुढवी किं चरमा अचरमा ॥ इत्यादि पृच्छा' अथ केयं चरमाचरमपरिभाषा ? उच्यते-चरमं नाम पर्यन्तवर्त्ति तच्चरमत्वमापेक्षिकमन्यापेक्षया तस्य भावात्, यथा पूर्वशरीरापेक्षया चरमं शरीरमिति, अचरमं प्रांतिमध्यवर्त्तीति यावत्तदपिचापेक्षिकं तस्य चरमापेक्षया भावात्, यथा तथाविधान्यशरीरापेक्षया मध्यशरीरमचरमशरीरं तदेव चरमाचरमेत्येकवचनान्तः प्रश्नः कृतः सम्प्रति बहुवचनान्तमाह चरमाइं अचरमाइं इति ॥ एतानि चत्वारि प्रश्नसूत्राणि तथाविधैकत्वपरिणामविशिष्टद्रव्यविषयाणि कृतानि । सम्प्रति प्रदेशानधिकृत्य प्रश्नसूत्रद्वयमाह-चरमंतपएसाय इति ॥ चरमाण्यवान्तरवर्त्तित्वात् अन्ता श्चरमान्तप्रदेशा, अचरममेव कस्याप्यपेक्षया अनन्तरवर्त्तित्वाद्येऽचरमान्तप्रदेशाः, तदेवं षट्सु प्रश्नेषु कृतेषु भगवानाह-गौतम ! सा रत्नप्रभा पृथिवी नोचरमा चरमत्वंह्यापेक्षिकमित्युक्तं नचात्रान्यदपेक्षणीयमस्ति केवलाया एव तदन्यनिरपेक्षायाःपृष्टत्वात्, नाप्यचरमा ततएव हेतो स्तथाह्यचरमत्वमपि आपेक्षिकं नचात्रान्यदपेक्षणीयमस्तीति किमुक्तं भवति ? इयं रत्नप्रभा पृथिवी न पश्चिमा नापिमध्यमा तदन्यस्यापेक्षणीयस्याविवक्षणादिति, अतएव न चरमाणि चरमत्वव्यपदेशस्यैवाऽसम्भवस्तद्विषयबहुवचनासम्भवात्, तथाहि-यदा तस्याश्चरमत्वव्यपदेश एवोक्तियुक्तो नोपपद्यते तदा कथं तद्विषयं बहुवचनमुपपत्तुमर्हतीति एवं अचरमाण्यपि प्रतिषेधनीयानि प्रा

---

शर्करप्रभा २ वालुकप्रभा ३ पंकप्रभा ४ धूमप्रभा ५ तमप्रभा ६ तमतमप्रभा ७ ईषत्प्रभारा ४५ लखयोजन मान फटकमय ८ ए अ ठ । इमाणं भंते रयणप्पभा पुढवीकिं चरमा अचरमा । हे भगवन् रत्नप्रापृथिवी स्यं चरमा तथा अचरमा । चरमानि अचरमाचरमाणि अचरमानि । चरमा १ वचन अचरमा १ वचनें चरमानि बहुवचने अचरमानि बहुवचने । चरमंतपएसा अचरमंतपएसाय गोचमा । चरमांतप्रदेश २ अचरमांतप्रदेश ४ ए चार प्रश्न सूत्र ए रूप परिणामे विशेषे द्रव्यविषय कोधांपछे प्रदेशाश्रो सूत्रकहेछे हे गौतम । इमाण रयणप्पभापुढवी नोचरमा नो अचरमा नोचरमा । इम

॥ टीका ॥

॥ भाषा ॥

गुक्तयुक्ते रचरमत्वव्यपदेशस्यासम्भवात्, न चरमान्तप्रदेशा नाप्यचरमान्तप्रदेशा उक्तयुक्त्या चरमत्वस्याचरमत्वस्यचाऽसम्भव तस्तत्प्रदेशकल्पनाया अप्यसम्भवात्, यद्येव तर्हि किं स्वरूपा सेत्यत्र आह-नियमा त्रियमेनाचरमं चरमाणिच किमुक्तं भवति यदीयमखण्डरूपा विवक्षितत्वात् पृच्छ ते तदा यथोक्त भङ्गानामेकेनापि भङ्गेन व्यपदेशो न भवति यदात्वसंख्येयप्रदेशावगाढे त्यनेकावयवविभागात्मिका विवक्ष्यते तदा यथोक्तनिर्वच नविषया भवति तथाहि-रत्नप्रभापृथिवी तावदनेन प्रकारेण व्यवस्थिता स्थापनायेय एवमवस्थितायास्या यानि प्रांतेष्ववस्थितानि खण्डानि प्र

रयणप्पभापुढवी किं चरमा अचरमा चरमाइं अचरमाइं चरमंतपदेसा अचरमंतपदेसा? गो० ! इमाणं रयण प्पभापुढवी नो चरमा नो अचरमा नो चरमाइं नो अचरमाइं नोचरमंतपदेसा नो अचरमंतपदेसा नियमा अचरमं चरमानियम चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय एवं जाव अहेसत्तमापुढवी सोहम्मादी जाव अनु

पृथिव्यः प्रज्ञप्ताः ? गौतम ! अष्टौ पृथिव्यः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-रत्नप्रभा शर्कराप्रभा वालुकाप्रभा पंकप्रभा धूमप्रभा तमःप्रभा तमस्तमःप्रभा ईष त्प्राग्भारा । इयं भदन्त ! रत्नप्रभा पृथिवी किं चरमा अचरमा चरमाण्यचरमाणि चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशाः ? गौतम ! इयं रत्नप्रभा पृथिवी नो चरमा नो अचरमा नो चरमाणि नो अचरमाणि नो चरमान्तप्रदेशा नो अचरमान्तप्रदेशा नियमान्नियमेना चरमं चरमाणि च चरमान्तप्रदेशा चाचरमान्तप्रदेशा च । एवं यावदधःसप्तमापृथिवी । सौधर्म (प्रभृति) यावदनुत्तरविमानाना मेवं चैव । ईषत्प्राग्भाराप्येवं

रत्नप्रभापृथिवी नही चरमा नही अचरमा नही चरमा १ वचन । नो अचरमाणि नोचरमंतपएसाणियमा अचरमंचचरमाणिच । नही अचरमा नही -हु वन नही चरमांतप्रदेश निश्चय अचरमघणा वचन १ चरम १ वचन २ । चरमंतपएसाय अचरमंतपएसाय एव जाव अहेसत्तमाएढवी । चरमांतप्र दशन ३ अचरमांतप्रदेश ४ इम जांलगी हेठे सातमी नरकथी मांडी । सोहम्मीसाण जाव अणुत्तरविमाणाणि एवचेव । सौधर्म ईशान जांलगी अनुत्तर विमानलगी इमहीज । ईसीपभा राणि एवंचेव लोगेवि एवंचेव एवं अलोगेवि । ईषत्प्राग्भारा पिण इमहीज लोकविषेपिण इमहीज इम अलोकमें पिण

त्येकं तथाविधविशिष्टैकत्वपरिणामपरिणतानि चरमाणि १ यत्पुनर्मध्ये महद्रत्नप्रज्ञायाः खण्डं तत्तथाविधैकत्वपरिणामयुक्तत्वा देकत्वेन विवक्षित मित्यचरमं २ उभयसमुदायरूपाचयमन्यथा तदभावप्रसंगात्, तदेव भवयवावयविरूपतया चिन्तायां भचरमं चरमाणिचत्यखण्डैकनिर्वचनविषया प्रतिपादिता, यदा पुनः प्रदेशचिन्ता क्रियते तदेवं निर्वचनं चरमान्तप्रदेशाश्च अचरमान्तप्रदेशाश्च तथाहि-ये बाह्यखण्डेषु गताः प्रदेशा स्ते च रमान्तप्रदेशाः, ये पुनर्मध्यैकखण्डगताः प्रदेशा स्ते चरमान्तप्रदेशा, अन्ये तु व्याचक्ष्यते-चरमाणि नाम तथाविधप्रविष्टेतरप्रांतैकप्रादेशिकश्रेणि पटलरूपाणि मध्यभागो ऽचरम इति, तदपि समीचीनं दोषाभावात्' चरमान्तप्रदेशा यथोक्तरूपप्रान्तैकप्रादेशिकश्रेणिपटलगताः प्रदेशा अचर मान्तप्रदेशा मध्यभागगताः प्रदेशाः, अनेन निर्वचनसूत्रेण एकान्तदुर्नयनिरपप्रधानेन अवयवावयविरूपं रत्नप्रभादिकं वस्तु, तयोश्चावयवावयविनो र्नैकान्तेन भेद इत्यावेदितं तथाचावयवावयविरूपतायां परोक्तदूषणावकाश स्तथा धर्मसंग्रहिणिटीकायां बाह्यवस्तुप्रतिष्ठावसरे प्रतिपादितामिति, त तोऽवधार्यं, एवं जाव अहे सत्तमाए पुढवीए इत्यादि ॥ यथा रत्नप्रभापृथिवी प्रश्ननिर्वचनाभ्यामुक्ता एवं शर्कराद्याश्रापि पृथिव्यः सौधर्मादीनि च विमानानि अनुत्तरविमानपर्यवसानानि। ईषत्प्राग्भाराऽलोकश्च वक्तव्यः सूत्रपाठोपि सुगमत्वात् स्वयं परिभावनीयः सचैवं-सक्करप्पभाएणं भंते। पुढवी किं चरमा अचरमा चरमाणि अचरमाणि इत्यादि ॥ एवमलोकोऽपि इति ॥ एवमुक्तेन प्रकारेणालोकोपि वक्तव्यः सचैवं-अलोएणं भंते। किं चरमे अचरमे इत्यादि ॥ प्रश्नसूत्रं सचैव निर्वचनसूत्रं गोयमा। अचरमे चरमाणिय चरमंतपएसाय अचरमंतपएसाय। तत् चरमाणि यानि लोकनिष्कुटेषु प्रविष्टानि शेषमन्यत्सर्वमचरमं चरमखण्डगताः प्रदेशा श्चरमान्तप्रदेशा अचरमखण्डगताः प्रदेशा अचरमप्रदेशाः, सम्प्रत्येतेषु

॥ टीका ।

---

सरविमाणाणं एवंचेव इसीप्पब्भाराए एवंचेव लोगेवि एवंचेव एवं अलोगेवि। इमीसेणं भंते! रयणप्पभाए

---

चैव। लोकेप्येवं चैव। एवमलोकेपि। अस्या भदन्त! रत्नप्रभायाः पृथिव्या अचरमस्यच चरमाणां च चरमान्तप्रदेशानां चाचरमान्तप्रदेशानां

---

इमहोज। इमीसेणं भंते रयणप्पभाए पुढवीए। हिवे अचरमबहुत्व कहेछे हे भगवन् एह रत्नप्रभापृथिवी सुं एहना भेद। अचरमसमचरिमस्य चरमतष

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

रत्नप्रभादिषु प्रत्येकं चरमाचरमादिगतस्वल्पबहुत्वमभिधित्सुरिदमाह-इमीसेणं भंते ! रयणप्पभाए पुढवीए अचरमस्सय चरमाण इत्यादि प्रश्नसूत्रं सुगमं' निर्वचनसूत्रे सर्वस्तोकं द्रव्यार्थतया अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या अचरमखण्डं कस्मादितिचेदतआह-एकनिमित्तकारणहेतुषु सर्वेषां विप्रक्षीणा प्रायो दर्शनमितिन्याया दत्र हेतौ प्रथमा ततोऽमर्थः-यस्मा तथाविधैकस्कन्धपरिणामपरिणतत्वादेकं ततस्तोकं तस्मात् यानि चरमाणि खण्डानि तान्यसङ्ख्येयगुणानि तेषामसंख्यातत्वात्' अथाचरमं चरमाणि समुदितानि चरमाणां तुल्यानि विशेषाधिकानिचेति शङ्कायामाह-अचरमं चरमाणि च समुदितानि विशेषाधिकानि, तथाहि-यदचरमद्रव्यं तच्चरमद्रव्येषु प्रक्षिप्तं, तत श्चरमेभ्य एकेनाधिकत्वा द्विशेषाधिकसमुदायो भवति प्रदेशार्थत्वचिन्तायां सर्वस्तोका श्चरमान्तप्रदेशा यतश्चरमखण्डानि मध्यखण्डापेक्षयातिसूक्ष्माणि तत स्तेषा मसङ्ख्येयानामपि ये प्रदेशास्ते मध्य खण्डगतप्रदेशापेक्षया सर्वस्तोका स्तेभ्यो ऽचरमप्रदेशा असंख्येयगुणा अचरमखंडस्यैकस्यापि चरमखण्डसमुदायापेक्षया क्षेत्रतोसंख्येयगुणत्वात्,

॥ मूल ॥

पुढवीए अचरमस्सय चरमाणय चरमंतपदेसाणय अचरमंतपदेसाणय दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरमे चरमाइं असंखेज्जगुणाइं अचरमं चरमाणिय दोवि विसेसाहियाइं

॥ अ० ॥

च द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योल्पा वा बहुका वा तुल्यावा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोको ऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या द्रव्यार्थतया एकोऽचरमः, चरमाण्यसङ्ख्येयगुणानि, अचरमं चरमाणि च द्वावपि विशेषाधिकानि । प्रदेशार्थतया सर्वस्तो

॥ भाष ॥

एसाणय अचरमंतपएसाणय । अचरमे १ चरमे २ चरमांतप्रदेशने ३ अचरमांतप्रदेशने ४ । दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा । द्रव्यार्थप्रदेशार्थे द्रव्यार्थप्रदेशार्थे केहां २ थी थोडावणा ४ हे गौतम । सव्वत्थोवे इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए । सर्वथोडा ए रत्नप्रभापृथिवीनो नारकीथी । दव्वट्ठयाए एगे अचरमे चरमाणि अचरमखण्ड । द्रव्यथी १ वचने अचरमछे तेहथी चरमानि बहुवचने असंख्यातगुणा । अचर

॥ टीका ॥

चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशाश्च द्वयेऽपि समुदिता अचरमांतप्रदेशेभ्यो विशेषाधिकाः कथमितिचेदुच्यते-चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशापेक्षया असंख्येयभागप्रमाणा स्ततोचरमान्तप्रदेशेषु चरमान्तप्रदेशप्रक्षेपेऽपि ते अचरमान्तप्रदेशेभ्यो विशेषाधिकाएव भवंति, द्रव्यार्थप्रदेशार्थचिन्तायां॥ अचरमं चरमाणिय दोविविसेसाहियाइं चरमंतपएसा असंखेज्जगुणा इति॥ अचरमचरमसमुदाया चरमान्तप्रदेशा असंख्येयगुणाः, कथं उच्यते-इह यदचरमखंडं तदसंख्येयप्रदेशावगाहमपि द्रव्यार्थतया एकं चरमेषु पुनः खंडेषु प्रत्येकमसंख्येयाः प्रदेशास्ततो भवन्ति चरमाचरमद्रव्यसमुदाया

॥ मूल ॥

पदेसठयाए सव्वत्थोवा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए चरमंतपदेसा अचरमंतपदेसा, अचरमंतपदेसा असंखेज्जगुणा चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय दोवि विसेसाहिया दव्वठ्ठपदेसठयाए। सव्वत्थोवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए दव्वठयाए एगे अचरमे चरमाइं असंखेज्जगुणाइं अचरमं चरमाणिय दोवि विसेसाहियाइं चरमंतपदेसा असंखेज्जगुणा अचरमंतपदेसा असंखेज्जगुणा चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय दोवि विसे

॥ अ० ॥

का अस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशाः' अचरमान्तप्रदेशा असङ्ख्येयगुणा श्चरमान्तप्रदेशाश्चा चरमान्तप्रदेशाश्च द्वावपि विशेषाधिकानि द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया। सर्वस्तोको ऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या द्रव्यार्थतया एको ऽचरमश्चरमाणि असंख्येयगुणानि, अचरमं चरमाणि च द्वावपि विशेषाधिकानि, चरमान्तप्रदेशा असङ्ख्येयगुणाः, अचरमान्तप्रदेशा असङ्ख्येयगुणाः, चरमान्तप्रदेशाश्चाचरमान्तप्रदेशाश्च द्वावपि विशेषाधिकानि। एवं यावदधः सप्तमापृथिवी। सौधर्मस्य यावल्लोकस्य चैवं चैव। अलोकस्य नदन्त। अचरमस्य च चरमाणा

॥ भाषा ॥

मंचरमंचरमाणयि दोवि विसेसाहिया तिपएसठयाए। तेहथो अचरमचरमएक अचरमचरमेषु क्षेप्यंतेतदा द्वावपिविशेषाधिक्यानीत्यर्थः द्रव्यार्थतो प्रदेशार्थं अनेंसरोषाधिकहवै हिवें प्रदेशार्थयोकहेछे प्रदेशथो। सव्वत्थोवे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए चरमंतपएसा। सर्वस्तोका ए रत्नप्रभापृथिवी नारकीथी तेपृथिवीयें चरमांतबेइलाप्रदेशमध्यखंड गर्भप्रदेशनो अपेक्षाये। अचरमंतपएसा असं० चरमंतपएसाय अचरमंतपएसायदोविविसेसाहिया। तेहथो अच

साहिया । एवं जाव अहेसत्तमा सोहम्मस्स जाव लोगस्सय एवंचेव । अलोगस्सणं भंते ! अचरमस्सय चरमाणय चरमंतपदेसाणय अचरमंतपदेसाणय दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरेकयरेहिंतो

च चरमान्तप्रदेशानाञ्च अचरमान्तप्रदेशानाञ्च द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? ४ गौतम ! सर्वस्तोकोऽलोकस्य द्रव्यार्थतयैकोऽचरमः, चरमाण्यसङ्ख्येयगुणानि, अचरमञ्च चरमाणि च द्वे अपि विशेषाधिके । प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका अलो

रमांतप्रदेश असंख्यातगुणा अचरमखंडसमुदायनो अपेक्षाये चेव असंख्यातगुणा माटे तेहथी चरमांतप्रदेश अचरमांतप्रदेश ए बे विशेषाधिक ते किम च रमांतप्रदेश अचरमांतप्रदेशनो अपेक्षाये असंख्यातभाग प्रमाण अचरमांतप्रदेश तथाधिके अचरमांतप्रदेशथी विशेषाधिकपणे । दव्वट्ठयट्ठया सव्वत्थोवे । द्रव्यार्थप्रदेशार्थे चिंतवीइयें के द्रव्यार्थे प्रदेशथी सर्वथोडा । इमीसेरयणप्पभाए पुढवीए दव्वट्ठयाए एगे अचरमेचरमाणि असंखिज्जगुणाणि । ए रत्नप्रभापृथिवीये द्रव्यार्थप्रदेशथी २ अचरमछे तेहथी चरमसंख्यातगुणाछे अचरमसमुदायथी चरमांतप्रदेश किम असंख्यातगुणा इहां छे चरमखंडांतप्रदेशावगाढ द्रव्यथकी एकचरमथकी बलीखंडना असंख्यातप्रदेशपणे चरम अचरमद्रव्यसमुदाय असंख्यातगुणा चरमांतप्रदेशथकी अचरमांतप्रदेश असंख्यातगुणा तेह थीचरम अचरमप्रदेशसमर्पित विशेषाधिक इम पाछलोपरे । अचरमचरमाणिय दोवि विसेसाहिया चरमतपएसा असंखिज्जगुणा अचरमांतपएसा संखेज्जगुणा । अचरमने चरम ए छे विशेषाधिकपणे तेहथी चरमांतप्रदेश असंख्यातगुणापणे खंडसमुदायनो अपेक्षाये तेहथी अचरमांतप्रदेश असंख्यात गुणा चरमांतप्रदेशनो अपेक्षाये चेव असंख्यातगुणा माटे । चरमंतपएसाय अचरमांतपएसाय दोवि विसेसाहियाय । तेहथी चरमांतप्रदेश अने अचर मांतप्रदेश ए छे विशेषाधिकपणे ते अचरमांतप्रदेशमांहि वेयके अचरमांतप्रदेशथी विशेषाधिकपणे । एवं जाव अहेसत्तमाए सोहम्मस्स जाव लोगस्सवि एवचेव । इम जांलगे हठलो सातमो नरकलगे कहिवो रत्नप्रभाथकी उपरिसौधर्म पिण इमहीज कहिवो लोकांतलगे इमहीज कहिवो । अलोगस्सणं भंते अचरमस्सय चरमाणय चरमंतपएसाणय अचरमंतपएसाणय । हिवे अलोकने विशेषेकरी कहेछे हेभगवन् अचरमने १ चरमने २ चरमांतप्रदेशने ३

दसङ्ख्येयगुणा श्चरमान्तप्रदेशा स्तेभ्योप्यचरमान्तप्रदेशा असंख्येयगुणा स्तेभ्योपि चरमाचरमप्रदेशाः समुदिता विशेषाधिका इति पूर्ववत्, अलोकमूत्रे-प्रदेशार्थचिन्तायां सर्वस्तोका अलोकस्य चरमान्तप्रदेशा लोकनिष्कुटेष्ववान्तस्तेषां भावात्, तेभ्यो ऽचरमान्तप्रदेशा अनन्तगुणा अलोकस्यानन्तत्वात्, चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशाश्च समुदिता विशेषाधिकाः, चरमान्तप्रदेशाश्चाचरमान्तप्रदेशापेक्षया अनन्तभागकत्वा स्ततस्तेषां सचरमा

अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे अलोगस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरमे चरमाइं असंखेज्जगुणाइं अचरमच्च चरमाणिय दोवि विसेसाहियाइं, पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा अलोगस्स चरमंतपदेसा अचरमंतपदेसा अणंतगुणा चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय दोवि विसेसाहिया। दव्वट्ठपदेसट्ठयाए सव्वत्थोवे अलोगस्स दव्वट्ठयाए एगे

कस्य चरमान्तप्रदेशाः, अचरमान्तप्रदेशा अनन्तगुणाः, चरमान्तप्रदेशाश्चाचरमान्तप्रदेशाश्च द्वावपि विशेषाधिकौ, द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोकोऽलोकस्य द्रव्यार्थतया एकोऽचरमश्चरमाण्यसंख्येयगुणानि, अचरमच्च चरमाणि च द्वेऽपि विशेषाधिके, चरमान्तप्रदेशा अस

अचरमांतप्रदेशने ४ । दव्वट्ठयाए पएसट्ठय ए द्रव्यार्थपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पा वा ४ गोयमा । द्रव्यथी प्रदेशथी द्रव्यप्रदेशथी केहा २ थी थोडाघणा ४ हवे हे गौतम । सव्वत्थोवे अलोगस्सदव्वट्ठयाए एगे अचरमेचरमाइ असंखिज्जगुणाइ । सर्वथोडा अलोकने द्रव्यथी १ अचरमछे बहुवचने चरमसंख्यातगुणा तेहथी संख्यातगुणा चरमथी । अचरमचरमाणय दोवि विसेसाहियाइं पएसट्ठयाए सव्वत्थोवे । तेहथी अचरमचरम ए बे विशेषाधिक एटले द्रव्यथकी छता हिवे प्रदेशथीकहेछे प्रदेशथी सर्वथोडा । अलोगस्सचरमंतपएसे अचरमंतपएसा अणंतगुणा चरमंतपएसाय अचरमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थो । । लोकना चरमांतप्रदेश छेहलाप्रदेशमध्यगर्भ खंडगतप्रदेशनो अपेक्षाये तथा लोकने पूठे तेहनो अंतमाटे अलो[illegible] माटे तेहथी चरमांतप्रदेश अचरमांतप्रदेश ममलित विशेषाधिक चरमांतप्रदेश अचरमांत देशनी अपेक्षाये अनन्तभागने सरिषा अचरमांतपदेश ना श घालते अचरमांतप्रदेशथी विशेषाधिक द्रव्यार्थे प्रदेशार्थे सर्वथी थोडा । अलोगस्सदव्वट्ठयाए एगे अचरमेचरमाइं असंखिज्जगुणाइं । अलोकने विषे द्रव्यार्थे

न्तप्रदेशराशौ प्रक्षेपेपि ते ऽचरमान्तप्रदेशेभ्यो विशेषाधिका एव भवन्ति, सम्प्रति लोकालोकविषयं प्रश्नसूत्रमाह-लोगालोगस्सणं भंते ! अचरमस्स चरमाणय इत्यादि ॥ प्रश्नसूत्रं सुगमं, निर्वचनमाह-गोयमेत्यादि ॥ गौतम ! लोकस्य अलोकस्य च यत् एकैकं अचरमखंडं ततस्तोकमेकत्वा

अचरमे चरमाइं असंखेज्जगुणाइं अचरमंच चरमाणिय दोवि विसेसाहियाइं चरमंतपदेसा असंखेज्जगुणा अचरमंतपदेसा अणंतगुणा चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय दोवि विसेसाहिया। लोगालोगस्सणं भंते ! अचरमस्सय चरमाणय चरमंतपदेसाणय अचरमंतपदेसाणय दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवे लोगालोगस्स दव्वट्ठया

द्वयगुणा अचरमान्तप्रदेशा अनन्तगुणा चरमान्तप्रदेशाश्चाचरमान्तप्रदेशाश्च द्वावपि विशेषाधिकौ । लोकालोकस्य भदन्त ! अचरमस्य च चरमाणाञ्च चरमान्तप्रदेशानाञ्चा चरमान्तप्रदेशानाञ्च (मध्ये) द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ? ४ गौ० ! सर्वस्तोको लोकालोकस्य द्रव्यार्थतयैकैकोऽचरमः, लोकस्य चरमाण्यसंख्येयगुणानि, अलोकस्य चरमाणि विशेषाधिकानि, लोकस्यालोकस्य

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

क अचरमके चरमांतप्रदेशा असंख्यातगुणा । अचरमचरमाणय दोवि विसेसाहियाइं चरमंतपएसाय असंखिज्जगुणा । अचरमांतप्रदेशो चरमांतप्रदेशो ए बे विशेषाधिक हुवे चरमांतप्रदेशो असंख्यातगुणा । अचरमांतपएसा अणंतगुणा चरमंतपएसाय । अचरमांतप्रदेशो अनन्तगुणा चरमांतप्रदेशोने । अचरमांतपएसाय दोवि विसेसाहिया । अचरमांतप्रदेशने दोहोविशेषाधिकहुवे । लोगालोगस्सणं भंते । हिवे लोकालोकनो सूत्रकहेछे लोकालोकने हे भगवन् । अचरमस्सचरमाणाय चरमंतपएसाणय अचरमंतपएसाणय । अचरमने चरमने चरमांतप्रदेशने अचरमांतप्रदेशने । दव्वट्ठयाएपएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा । द्रव्यार्थे प्रदेशार्थे द्रव्यार्थेप्रदेशार्थे केहा २ थो थोडा हुवे ४ हे गौतम । सव्वत्थोवे लोगालोगस्स दव्वट्ठयाए एगमेगे अचरमे । सर्वथोडा लोकालोकना द्रव्यथी एकेक अचरमलोकनो जे एकेक चरमखंड एकमाटे ते थोडाछे । लोगस्सचरमाइं असंखेज्जगुणाइं ।

॥ टीका ।

त्, तेभ्यो लोकस्य चरमखण्डद्रव्याख्यसंख्येयगुणानि तेषामसंख्यातत्वात्, तेभ्योऽप्यलोकस्य चरमखण्डानि विशेषाधिकानि कथमितिचेदुच्यते-इह यद्यपि लोकस्य चरमखण्डानि तत्त्वतोऽसंख्येयानि तथापि प्रागुपदर्शितपृथ्वीन्यासपरिकल्पनया तान्यष्टौ परिकल्पन्ते, तद्यथा-एकैकं चतसृषु दिक्षु एकैकं च विदिक्ष्विति, अलोकचरमखण्डानि च तन्न्यासपरिकल्पनया परिगण्यमानानि द्वादश तद्यथा-एकैकं चतसृषु दिक्षु द्वे द्वे विदिक्ष्विति द्वादश चाष्टभ्यो न द्विगुणानि त्रिगुणानिच किंतु विशेषाधिकानि तेभ्यो ऽलोकस्य चरमखण्डेभ्यो लोकस्य चरमाचरमखण्डानि अलोकस्य चरमा

॥ मूल ॥

ए एगमेगे अचरमे लोगस्स चरमाइं असंखेज्जगुणाइं अलोगस्स चरमाइं विसेसाहियाइं लोगस्स अलोग
स्सय अचरमंच चरमाणिय दोवि विसेसाहियाइं पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा लोगस्स चरमंतपदेसा अलोगस्स
चरमंतपदेसा विसेसाहिया लोगस्स अचरमंतपदेसा असंखिज्जगुणा अलोगस्स अचरमंतपदेसा अणंतगुणा

॥ अ० ॥

चाचरम च्च चरमाणि च द्वेअपि विशेषाधिके । प्रदेशार्थतया सर्वस्तोका लोकस्य चरमान्तप्रदेशा अलोकस्य चरमान्तप्रदेशा विशेषाधिकाः, लोकस्याचरमान्तप्रदेशा असंख्येयगुणाः, अलोकस्या चरमान्तप्रदेशा अनन्तगुणाः, लोकस्यालोकस्य च चरमान्तप्रदेशाश्चाचरमान्तप्रदेशाश्च द्वा

॥ भाषा ॥

तेहथी लोकना चरमखडद्रव्यथी असंख्यातगुणा तेहथा असंख्यातगुणा माटे । अलोकस्स चरमाइं विसेसाहियाइं । तेहथी अलोकना चरमखड विशेषा धिकपणे ते किम इहलोकना चरमखंडथी असंख्यातगुणा पूर्वेकह्या वे पृथिवीनो ८ परिकल्पने विषेयें एकेक ४ दिशिछे बे विदिशि १२ पाछलोपरे । लोगस्सय अलोगस्सय अचरमंचरमाणिय दोवि विसेसाहियाइं । लोकने अलो ने अचरमचरमने वे विशेषाधिक अलोकचरमखंडथी लोकचरमखंडसमुदि त विशेषाधिक छेवें प्रदेशथी कहेछे । पएसट्ठयाए सव्वत्थोवा लोगस्स चरमंतपएसा । प्रदेशथी सर्वथोडा लोकना चरमांतप्रदेश ८ खंडनाप्रदेशने भावे ते छथी वली । अलोगस्स चरमंतपएसा विसेसाहिया लोगस्स अचरमंतपएसा असंखिज्जगुणा । अलोकना चरमांतप्रदेश विशेषाधिक तेहथी लोकना अच रमांतप्रदेश असंख्यातगुणा क्षेत्रना अतिप्रभूतपणा माटे प्रदेशना अतिप्रभूत घणामाटे असंख्यातगुणा । अलोगस्स अचरमंतपएसा अणंतगुणा । तेहथी

चरमखण्डानि समुदितानि विशेषाधिकानि तथाहि-लोकस्य चरमखण्डानि प्राक्तनयुक्तिकलापेन अष्टावेकमचरममित्युन्नयमीलनेन च अलोकस्यापि चरमाचरमखण्डानि समुदितानि त्रयोदश उन्नयेषां मेलने द्वादशानां लाभे द्वादशभ्यो नाष्टगुणा नापि त्रिगुणाः किंतु विशेषाधिकेति, अलोकस्य चरमखण्डेभ्यो लोकालोकचरमाचरमखण्डानि समुदितानि विशेषाधिकानि ॥ प्रदेशार्थतायाचिन्तायां सर्वस्तोका लोकस्य चरमान्तप्रदेशा अष्टखण्डसत्कानामेव प्रदेशानां लाभात्, तेभ्यो ऽलोकस्य चरमान्तप्रदेशा विशेषाधिकाः, तेभ्यो लोकस्याचरमान्तप्रदेशा असंख्येयगुणाः क्षेत्रस्यातिप्रभूततया तत्प्रदेशानामप्यतिप्रभूतत्वाल्लाभात्, तेभ्यो ऽप्यलोकस्याचरमान्तप्रदेशा अनन्तगुणाः क्षेत्रस्यानन्तगुणत्वात्' तेभ्योऽपि लोकस्य चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशा अलोकस्यापि चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशाः समुदिता विशेषाधिकाः, कथमितिचेद् उच्यते-इह अलोकस्याचरमान्तप्रदेशराशौ लोकस्य चरमाचरमान्तप्रदेशा अलोकस्य चरमान्तप्रदेशाश्च प्रक्षिप्यन्ते, तेच सर्वसंख्ययाप्यसंख्येयाश्चानन्तराश्यपेक्षयातिस्तोका इति प्रक्षेपेपि ते अलोकस्याचरमान्तप्रदेशेभ्यो विशेषाधिका एव' एतदनुसारेण द्रव्यार्थप्रदेशार्थचिन्तासूत्रमपि स्वयं परिभावनीयं-नवरं लोकालो

॥ टीका ॥

**लोगस्सय अलोगस्सय चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय दोवि विसेसाहिया, दव्वट्ठपदेसट्ठयाए सव्वत्थोवे लोगालोगस्स दव्वट्ठयाए एगमेगे अचरमे लोगस्स चरमाइं असंखेज्जगुणाइं अलोगस्स चरमाइं विसेसा**

॥ मूल ॥

वपि विशेषाधिकौ । द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोको लोकालोकस्य द्रव्यार्थतयैकैकोऽचरमः, लोकस्य चरमाण्यसंख्येयगुणानि, अलोकस्य

॥ अ० ॥

अलोकना अचरमांतप्रदेश अनंतगुणा माटे छेक अनंतीमाटे । लोगस्सय अलोगस्सय चरमंतपएसाय अचरमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया । तेहथी लोकना चरमांतप्रदेश अचरमांतप्रदेश अलोकनाचरमांतप्रदेश अचरमांतप्रदेश समुदितविशेषाधिकने किम इहां अलोकनो अचरमांतप्रदेश राशिलोकनोचरमांतप्रदेश राशि अलोकना चरमांतप्रदेश घातोये ते सर्वसंख्यायें असंख्येय अनन्तरापेक्षायें थोडा इम घालतेथकां अलोक अचरमांतप्रदेशथकी विशेषाधिक । दव्वट्ठएसट्ठयाए सव्वत्थोवे लोगस्स दव्वट्ठयाए एगमेगे अचरमे लोगस्सचरमाइं असंखिज्जगुणाइं । इम एवं अनुसारे द्रव्यार्थप्रदेशार्थनो सूत्र

॥ साध ॥

कचरमाचरमखण्डेभ्यो लोकस्य चरमान्तप्रदेशा असङ्ख्येयगुणा इति लोकस्य किल चरमाणि खण्डान्यष्टौ एकैकस्मिंश्च खण्डदेशे खण्डप्रदेशा असङ्ख्येयलोकालोकचरमाचरमखण्डानि च समुदितानि द्वाविंशति ततो घटन्ते लोकालोकचरमाचरमखण्डेभ्यो लोकस्य चरमान्तप्रदेशा असङ्ख्येयगुणाः, शेषपदभावना प्राग्वत् ॥ सर्वद्रव्या विसेसाहिया इति ॥ लोकालोकचरमाचरमान्तप्रदेशेभ्यः सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि अनन्तानन्तसंख्यानां जी

॥ टीका ॥

हियाइं लोगस्सय अलोगस्सय अचरमंच चरमाणिय दोवि विसेसाहियाइं लोगस्स चरमंतपदेसा असंखेज्जगुणा अलोगस्स चरमंतपदेसा विसेसाहिया लोगस्स अचरमंतपदेसा असंखेज्जगुणा अलोगस्स अचरमंतपदेसा अणंतगुणा लोगस्सय अलोगस्सय चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय दोवि विसेसाहिया सव्वदव्वा

॥ मूल ॥

चरमाणि विशेषाधिकानि, लोकस्यालोकस्यचाचरमं च चरमाणि च द्वेअपि विशेषाधिके, लोकस्य चरमान्तप्रदेशा असंख्येयगुणाः, अलोकस्य चरमान्तप्रदेशा विशेषाधिकाः, लोकस्याचरमान्तप्रदेशा असंख्येयगुणाः, अलोकस्याचरमान्तप्रदेशा अनन्तगुणाः, लोकस्यचालोकस्यच चरमान्तप्रदेशाश्चाचरमान्तप्रदेशा श्च द्वावपि विशेषाधिकौ, सर्वद्रव्याणि विशेषाधिकानि, सर्वप्रदेशा अनन्तगुणाः, सर्वपर्यवा अनन्तगु

॥ अ० ॥

जांणिवा द्रव्यार्थे प्रदेशार्थेकरी सर्वथोडा लोकालोकचरमखंड द्रव्यथकी एकेक अचरमखंड एकेकखंडे आठ २ प्रदेश तेहथकी लोकनाचरमा असंख्यातगुणा चेत्ना विस्तारमांटे। अलोगस्सचरमाइं विसेसाहियाइं लोगस्सय अलोगस्सय अचरमचरमाणिय दोवि विसेसाहियाइं । तेहथी अलोकनाचरमखंड विशेषाधिक लोकनेचरम अचरमने अलोकनेचरम अचरमनें ए बे अलोकथी विशेषाधिक । लोगस्सचरमंतपएसा असंखेज्जगुणा अलोगस्सचरमंतपएसा विसेसाहिया । लोकनाचरमप्रदेश असंख्यातगुणाछवे अलोकना अचरमांतप्रदेश विशेषाधिक । लोगस्स अचरमंतपएसा असं० अलोगस्स अचरमंतपएसा अणं० । तेहथी लोकना अचरमांतप्रदेश असंख्यातगुणा तेहथी अलोकना अचरमांतप्रदेशथी अनन्तगुणा लोकना अनंता । लोगस्स अलोगस्सय चरमंतपएसाय अचरमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया । तेहथी लोकअलोकना चरमांतप्रदेश अचरमांतप्रदेश ए बे विशेषाधिक । सव्वदव्वाविस० सव्वपएसा

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वानां तथा परमाणवादीनामनन्तपरमाणवात्मकस्कन्धपर्यन्तानां प्रत्येकानामनन्तसंख्यानां पृथक् २ द्रव्यत्वात्, तेभ्योपि सर्वप्रदेशा अनन्तगुणाः तेभ्योपि सर्वपर्याया अनन्तगुणाः प्रतिप्रदेशं स्वपरज्ञेदज्ञिन्नानां पर्यायाणामानन्त्यात्, तदेवं रत्नप्रभादिकं चरमाचरमादिभेदतश्चिन्तितमिदानीं परमाणवादिकं चिन्तयन्नाह-परमाणुपुग्गलेणं भंते । इत्यादि ॥ तत्र प्रश्नसूत्रे षड्विंशतिर्भंगा-यत स्त्रीणि पदानि चरमाऽचरमाऽवक्तव्यलक्षणानि

॥ मूल ॥

विसेसाहिया सव्वपदेसा अणंतगुणा सव्वपज्जवा अणंतगुणा। परमाणुपोग्गलाणं भंते! किं चरमे अचरमे अवत्तव्वए चरमाइं अचरमाइं अवत्तव्वयाइं ६ उदाहु चरमेय अचरमेय ७ उदाहु चरमेय अचरमयाइं ८ उदाहु चरमाइं अचरमेय ९ उदाहु चरमाइं च अचरमाइं च १० पढमा चउभंगी। उदाहु चरमेय अवत्तव्वएय ११ उदाहु चरमेय अवत्तव्वयाइं च १२ उदाहु चरमाइं च अवत्तव्वए य १४ उदाहु चरमाइं

॥ अ० ॥

णाः। परमाणुपुद्गलो भदन्त! किं चरमो चरमोऽवक्तव्यकः। चरमाणि अचरमाणि अवक्तव्यकानि ६। उताहो चरमश्चाचरमश्च ७। उताहो चरमश्चाचरमाणिच ८। उताहो चरमाणिचाचरमश्च ९। उताहो चरमाणिचाचरमाणि च १०। प्रथमा चतुर्भङ्गी। उताहो चरमश्चावक्तव्यकश्च ११, उताहो चरमश्चावक्तव्यानिच १२, उताहो चरमाणिचावक्तव्यश्च १३, उताहो चरमाणिचावक्तव्यानिच १४, द्वितीया चतुर्भङ्गी। उताहो अचर

॥ भाषा ॥

अनंतगुणा। तेहथी सर्वद्रव्यविशेष अधिक अनंतप्रदेशी परमाणथी स्कंधपर्यंत प्रत्येके अनंतसंख्याये जूजूवाद्रव्यमाटें तेहथी सर्वप्रदेश अनंतगुणा। सर्वपर्यवा अणंतगुणा परमाणुपुग्गलेणं भंते किं चरमे १। तहथी सर्वपर्याय अनंतगुणा प्रदेशे २ अनंतपर्यायम ठ रत्नप्रभादिकना चरम अचरमना भेदचिंतव्या हिवे परमाणुयादि चिंतवे छे प्रश्न सूत्रे २६ भाग चिहुपदना जाणिवा हे भगवन् परमाणुपुद्गल ते चरमकहिये १ वचनें। अचरमें २ अवक्तव्य ३ चरमाइं ४ अचरमाइं ५ अवक्तव्यइं ६। अचरम कहिये १ वचनें २ अवक्तव्यलक्षण कहिये १ वचन ३ चरमाइं बहुवचनें अचरमाइं बहुवचनें अवक्तव्यानि बहुवचनें ए ६ बोल। उदाहु चरमेय अचरमेय ७ उदाहु चरमेय। १ संयोगीने सर्वे ४ भांगाकहिये चरम १ अचरम १ कहिये चरम १ वचन।

॥ टीका ॥

तेषां चैकैकसंयोगे प्रत्येकमेकवचना त्रयो भंगाः तद्यथा-चरमः १ अचरमः २ अवक्तव्यकः ३, त्रयो बहुवचनेन तद्यथा-चरमाणि १ अचरमाणि २ अवक्तव्यानि ३ सर्वसंख्यया षट् द्विकसंयोगा त्रय स्तद्यथा-चरमाचरमपदयो रेक श्चरमाऽवक्तव्यकपदयो द्वितीयः अचरमाऽवक्तव्यकपदयो तृती यः ३ एकैकस्मिन् चत्वारो भंगा । तत्र प्रथमे द्विकसंयोगे एवं चरमश्चाऽचरमश्च १ चरमश्चऽचरमश्च २ चरमाश्चाचरमश्च ३ चरमाश्चाचरमाश्च ४

॥ मूल ॥

च अवत्तव्वयाइं च १४ बीया चउभंगी । उदाहु अचरमेय अवत्तव्वएय १५ उदाहु अचरमस्सय अवत्त व्वयाइं च १६ उदाहु अचरमाइं च अवत्तव्वएय १७ उदाहु अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८ तइया । उदाहु चरमेय अचरमेय अवत्तव्वएय १९ उदाहु चरमेय अचरमेय अवत्तव्वयाइच २० उदाहु चरमेय अचरमाइंच अवत्तव्वएय २१ उदाहु चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२ उदाहु चरमाइं अचरमेय

॥ भाषा ॥

मश्चावक्तव्यश्च १५ । उताहो अचरमश्चाऽवक्तव्यानि च १६ । उताहो अचरमाणिचावक्तव्यश्च १७ । उताहो अचरमाणिचावक्तव्यानि च १८ । तृतीया । उताहो चरमश्चाचरमश्चावक्तव्यकश्च १९ । उताहो चरमश्चाचरमश्चावक्तव्यानिच २० । उताहो चरमश्चाचरमाणिचावक्तव्यश्च २१ । उताहो

अचरमाइं ८ उदाहु चरमाइं अचरमेय ९ उदाहुचरमाइं । अचरमाणि बहुवचन ८ कहिछे चरमाइं बहुवचने अवरम १ वचने एकद्विक संयोगो ३ भांगा कहिछे चरमाइं बहुवचने । अचरमाइं १० पदनावउभंगो उदाहु चरमेय अवत्तव्वया ११ । अवरमाइं बहुवचने एकद्विकसंयोगो चोथोभांगो ए ६ भांगा मत्त ४ द्विकसंयोगीया मिली १० थया अवक्तव्य १ वचनें द्विकसंयोगीयो १ भांगो चरम १ वचनें अवक्तव्य बहुवचने । उदाहु चरमाइंच अवत्तव्वएय १२ उदाहुचरमाइं अवत्तव्वयाइं १४ बीयाचरभंगो । एतलें भांगो बीजो चरमबहुवचने अवक्तव्य १ वचनें एतले द्विकसंयोगीयो बीजो भांगो तीजोभांगो । उदाहु अचरमेय अवत्तव्वएय १५ उदाहु अचरमेय अवत्तव्वयाइं १६ । चरमाइं बहुवचने अवक्तव्यताने एतले बीजोचोभंगीनो चरम १ वचनें अवक्तव्य १ वचने द्विकसंयोगीयो भांगोथयो । उदाहु अचरमाणिच अवत्तव्वएय १७ उदाहु । अचरम १ वचने अवक्तव्यानि बहुवचने ए द्विकसंयो

एवमेव चतुर्भंगी चरम वक्तव्यपदयोः एवमेव वा चरमावक्तव्यपदयोः सर्वसंख्यया द्विकसंयोगे द्वादश भंगा. त्रिकसंयोगे एकवचनबहुवचनाभ्यां मीलौ सर्वसङ्कलनया षड्विंशतिः, अत्र निर्वचनमाह-गोयमा ! परमाणुपोग्गले नो चरमं इत्यादि ॥ परमाणुपुद्गल श्चरमो न भवति चरमत्वं ह्यन्यापेक्षं नचान्यदपेक्षणीयमस्ति तस्याविवक्षणा न्नच सांशः परमाणुर्येनांशापेक्षया चरमत्व प्रकल्पत निरवयवत्वा त्तस्मा न्न चरमो नाप्यच रमो निरवयवतया मध्यत्वायोगात्' किंत्ववक्तव्य चरमाचरमव्यपदशकारणतः शून्यतया चरमशब्देना ऽचरमशब्देना वा व्यपदष्टुमशक्यत्वात्,



अवत्तव्वए य २३ उदाहु चरमाइं अचरमेय अवत्तव्वयाइं २४ उदाहु चरम इंच अचरम इंच अवत्तव्वए य २५ उदाहु चरमाइंच अचरमाइंच अवत्तव्वयाइंच २६ एव छब्बीसं भंगा २६ ? गोयमा ! परमाणुपोग्गले नो

चरमश्चाचरमाणिचावक्तव्यानिच २२ । चरमाण्यचरमश्चावक्तव्यकश्च २३ । उताहो चरमाण्यचरमश्चावक्तव्यानि च २४ । उताहो चरमाणिचाचर माणि चावक्तव्यकश्च २५ । उताहो चरमाणिचाचरमाणि चावक्तव्यकानि च २६ । एव मत षड्विंशतिर्भङ्गाः ? गौतम ! परमाणुपुद्गलो नो चरमो



णो बीजो भांगो। अचरमाइंच अवत्तव्वयाइं १८। अचरमाइं बहुवचन अवक्तव्यया १ वचने १८ । तेरमोचरमभंगो उदाहुचरमेय अचरमेय अवत्तव्वए य १९ एकली तीजोभांगो अचरमाइं बहुवचन अवक्तव्यनें बहुवचनें एकद्विकसंयोगी चौभंगी एकलें चोभंगी कहो चौदे पाकुनाद्विकसयो गी ४ एवं १८ भांगा द्वि वें त्रिकसयोगीया ८ भांगा कहिछे चरम एकवचन अचरम एकवचनने अवक्तव्य एकवचनें एवं त्रिकसयोगीभांगो । उदाहु चरमेय अचरमेय अवक्त व्वयाइं २० । चरम १ वचने अचरम १ वचने अवक्तव्यानि बहुवचन एव त्रिकसयोगीभांगो। उदाहु चरमेय अचरमाइंच अवत्तव्वयाय २१ । चरम १ व चन अचरमबहुवने अवक्तव्यानि बहुवचन त्रिकसंयोगीभांगो । उदाहु चरमेय अचरमाइंच अवत्तव्वयाइं च० २२ । चरम १ वचने अचरमानि बहुवचने अवक्तव्यानि बहुवचन एवं त्रिकसंयोगी भांगो। उदाहु चरमाइंच अचरमेय अवत्तव्वयाय २३। चरम निबहुवचन अचरम १ वचने अवक्तव्यानि ३ बहुवचने त्रिकसंयोगीभांगो। उदाहु चरमाइं अचरमेय अवत्तव्वयाइंच २४ । चरमानि बहुवचने अचरम १ वचने अवक्तव्यनें बहुवचने त्रिकसंयो गी भांगो। उदा

॥ टीका ।

वक्तुं शक्यंहि वक्तव्यं यत्तुचरमशब्देन अचरमशब्देन वा स्व २ निमित्तशून्यतया वक्तुमशक्यं तदवक्तव्यमिति, शेषास्तु भंगाः प्रतिषेध्याः, परमाणौ तेषामसम्भवात्, वक्ष्यतिच ॥ परमाणुमियतइहं ॥ अस्यायमर्थः परमाणौ परमाणुचिन्तायां तृतीयो भंगः परित्याज्यः शेषा निरवयवत्वेन प्रतिषेध्याः । दुपएसिएणं भंते ! इत्यादि ॥ प्रश्नसूत्रं प्राग्वन्निर्वचनमाह-गोयमा ! सिय चरमे नो अचरमे सिय अवत्तव्वए इत्यादि ॥ द्विप्रदेशकः स्कंधः स्यात् कदाचि चरमं कथमितिच दुच्यते-इह यदा द्विप्रदेशकः स्कन्धो द्वयोराकाशप्रदेशयो रवगाढो भवति समश्रेण्या व्यवस्थितया तदा एकोपि परमाणुः अपरपरमाणवपेक्षया चरमो परोप्यपरपरमाणवपेक्षया चरम इति चरम अचरमस्तु न भवति सर्वद्रव्याणामपि केवलाच रमत्वस्यायोगात्, यदातु सएव द्विप्रदेशिकः स्कन्धः एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ऽवगाहते तदा स तथाविधैकत्वपरिमाणपरिणततया परमाणुवत् चर

॥ मूल ॥

चरमे नो अचरमे नियमा अवत्तव्वए सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा । दुपदेसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा, गो० ! दुपदेसिए खंधे सिय चरमे नो अचरमे सिय अवत्तव्वए, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा ! तिपएसिएणं भंते !

॥ अ० ॥

नो अचरमो नियमादवक्तव्यकः शेषा भङ्गाः प्रतिषेधयितव्याः । द्विप्रदेशिको भदन्त ! स्कन्धः पृच्छा, गौतम ! द्विप्रदेशिकः स्कन्धः स्याच्चर

॥ भाषा ॥

इ चरमाइं अचरमाइं च अवत्तव्वएण २५ । चरमाणि बहुवचन अचरमाणि बहुवचने अवक्तव्य १ वचने त्रिकसंयोगी भांगो । अटाह चरमाइं अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ । चरमाणि बहुवचन अचरमाणि बहुवचन एवं त्रिकसंयोगीभांगो एवं २८ भांगा अठारा पडिलाना ८ त्रि० संयोगी एवं २६ भांगा ते एवं छव्वीसं गोयमा परमाणुपुग्गले नोचरमेना अचरमेनया अवत्तव्व० सेसा भंगा पडिसेहियव्वा दुपदेसिएणं भंते खंधे पुच्छा गोयमा । हे गौतम परमाणुपुद्गल चरम नहवे स्याम टे चरमशब्दविनाकह्यो ते किम जे कहिवा कोई समर्थनहो हुवे कहिवा योग्यम टे कह्या पर्छे शून्यमाटे शेषभांगा निषेध्या परमाणु ऊपर भवमाटे परमाणुपुद्गल चरमनहे परमाणुपुद्गल चरमो भवेव चरमत्वकह्या ऊपरे छतचास पदपेक्षणीयमस्तो तस्याविवक्षणा थांस परमाणुजेनां अभेक्रियो चरमत्व प्रकल्पतनिरवयवत्वा तस्म न्चर मोनिरवयत्वात्तस्मान्नचरमो निरवयवतया हिवे एहनोदुप्रदेशो भगवन् खंध प्रश्न उ

॥ टीका ॥

माचरमव्यपदेशकारणशून्यत्वा न चरमशब्देन व्यपदेष्टुं शक्यते नाप्यचरमशब्देनेति अवक्तव्यः' शेषास्तु भङ्गाः प्रतिषेध्याः, तथाच वक्ष्यति-पढमो तइओ य होइ दुपएसे ॥ अस्यायमर्थः-द्विप्रदेशके स्कन्धे प्रथमोभङ्गः चरम इति तृतीयोऽवक्तव्य इति भवति, शेषास्तु प्रतिषेध्या असम्भवात्, स चासम्भवः सुप्रतीतएव ॥ तिपएसिएणं भंते खंधे इत्यादि ॥ प्रश्नसूत्रं प्राग्व न्निर्वचनं गोयमा ! सिय चरमे इत्यादि ॥ इह यदा त्रिप्रदेशिकः स्कन्धो द्वयोराकाशप्रदेशयोः समश्रेण्यावस्थितयोरेव मवगाढो भवति तदासौ चरमः साचरचमत्वभावना द्विप्रदेशिकस्कन्धवद्भावनीयाः, अच रमप्रतिषेधः प्राग्वत् स्यादवक्तव्य इति' यदा सएव त्रिप्रदेशकः स्कन्ध एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ऽवगाहते तदा परमाणुवत् चरमाचरमव्यपदेशकार

॥ मूल ॥

खंधे पुच्छा, गोयमा ! तिपदेसिए खंधे सिय चरमे नो अचरमे सिय अवत्तव्वए नो चरमाइं नो अचरमाइं नो अवत्तव्वयाइं नो चरमेय अचरमेय नोचरमेय अचरमाइं सिय चरमाइंच अचरमेय नो चरमाइंच अ

॥ अ० ॥

मां नो अचरमः स्यादवक्तव्यः शेषा भङ्गाः प्रतिषेधयितव्याः । त्रिप्रदेशिको भदन्त ! स्कन्धः पृच्छा, गौतम ! त्रिप्रदेशिकः स्कन्धः स्याच्चरमो नो अचरमः स्यादवक्तव्यको नो चरमाणि नो अचरमाणि नो अवक्तव्यकानि नो चरमश्चाचरमश्च नो चरमश्चाचरमाणि च स्याच्चरमाणि चाचरम

॥ भाष ॥

त्तर हे गौतम । तुपदेसिएखंधे सियचरमे नो अचरमे सिय अवत्तव्वए सेसाभंगा पडिसेहियव्वा । बेादेशोखचरमहुवे पिण अचरमनहीं पिण अवक्तव्य द्वप्रदेशोखधने आकाशे अवगाहें समश्रेणि तिवारे १ परमाणुवानो अपेक्षायें चरमहुवें पिण अचरमनहुवें तुप्रदेशो स्यं कहियें शेष भांगा प्रतिषेधवा द्विप्रदेशस्कंध पहिलो चौजोभागीहुवें पढमो तइओ होइ दुपदेसो इति वचनात् । तिपएसिएणं भंते खंधे पुच्छा गोयमा । त्रिप्रदेशीनें खधनें हे भगवन् स्यू चरम के अचरम के अवक्तव्य हे गौतम । तिपएसिएखंधे सियचरमे नो अचरमे सिय अवत्तव्वए नो चरमाइं नो अचरमाइं नो अवत्तव्वयाइं । त्रिप्रदेशी खध कांइचरमहुवें अचरमहुवे एक आकाशप्रदेश अवगाहन तिवारे परमाणुवानो परे अवक्तव्यहुवे चरमाइंबहुवचनहुवे अचरमाइं बहुवचनने उपदेश वा अवक्तव्यपिण न हुवे चरमहुवे नहीं अचरमाइं बहुवचन न हुवें । नो चरमेय अचरमाइं सियचरमांइंच अचरमेय नो चरमांइंच अचरमांइंच ।

कशून्यतया चरमाचरमशब्दाभ्यां व्यपदेष्टुमशक्यत्वा दवक्तव्यचतुर्थादयोऽष्टमपर्यंताः प्रतिषेध्या असंभवात्, असम्भवस्तु प्रतीतत्वात् स्वयमुपयुज्य वक्तव्यः, नवमस्तु ग्राह्यः तथाचाह-सिय चरमाइय अचरमेय प्राकृते द्वित्वेपि बहुवचनं ततोयमर्थः स्या त्कदाचिदयं त्रिप्रदेशिकस्कन्धः अंग अवयवो चरमौ अचरमश्च, तत्र यदा स त्रिप्रदेशिकस्कन्धः त्रिष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या व्यवस्थितेष्वेवमवगाहते तदा दिमांतिमौ द्वौ परमाणू पर्यंतवर्त्तित्वा चरमौ मध्यम स्तु मध्यवर्त्तित्वादचरम इति, दशमस्तु प्रतिषेध्य. स्कन्धस्य त्रिप्रदेशिकतया चरमाचरमशब्दयो र्बहुवचननिमित्तासंभवात् । एकादशस्तुग्राह्यस्त थाचाह-सिय चरमेय अवत्तव्वय ॥ स्यात्कदाचिदयं त्रिप्रदेशिकः अंग अवयवश्च, तत्र यदा स त्रिप्रदेशिकः समश्रेण्या विश्रेण्यावेवमवगाहते तदा द्वौ पर माणू समश्रेण्या व्यवस्थिताविति, द्विप्रदेशावगाढद्विप्रदेशिकस्कन्धवच्चरमव्यपदेशकारणभावत अवरम एकश्च परमाणुर्विश्रेणिस्थश्चरमाचरमशब्दाभ्यां व्यपदेष्टुमशक्य इत्यवक्तव्यः शेषास्तु भङ्गाः सर्वेपि प्रतिषेध्याः दर्शयति-पढमो तइओ नवमो एक्कारसमोयतिपएसे ॥ अस्यायमर्थः त्रिप्रदेशे स्कन्धे प्रथमोभंगश्चरम इति, तृतीयो वक्तव्य इति, नवमश्चरमौ वा चरमश्च एकादश अवरमश्चावक्तव्यश्चेति भवति, शेषा भंगा नघटंते ॥ चउप्पएसिएणं भंते ! खंधे इत्यादि ॥ प्रश्नसूत्र प्राग्व न्निर्वचनमाह-गोयमा ! सिय चरम इत्यादि ॥ अत्र प्रथमतृतीयं नवमदशमैकादशद्वादशत्रयोविंशतिमरू

---

चरमाइंच सिय चरमेय अवत्तव्वएय, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा । चउप्पएसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा, गोय मा ! चउप्पएसिएणं खंधे सिय चरमे नो अचरमे सिय अवत्तव्वए नो चरमाइं नो अचरमाइं नो अवत्त

---

श्च नो चरमाणि चाचरमाणि च स्याच्चरमश्चावक्तव्यश्च शेषा भङ्गाः प्रतिषेधयितव्याः । चतुःप्रदेशिको भदन्त ! स्कन्धः पृच्छा, गौतम ! चतुः

---

चरमबहुवनेहवे अचरम १ वचनहवे चरमाइं बहुवचनहव चरम १ वचनेहवे १ वचनें अवक्तव्य एतले चारयको प्रारंभो ८ पर्यंतहवे पढमो तइओ नवमो इग्यारमो । सियचरमेय अवत्तव्वए असेसाभंगा पडिसेहियव्वा चउप्पएसिएणं भंते खंधे पुच्छा गोयमा । त्रिप्रदेशो इति त्रिप्रदेशस्कन्धे प्रथमोभांगोनेति तृ तीये वक्तव्यता भवति भवेनश्चरमो वा चरमएकादश. श्चरमा श्चावक्तव्यश्चेति भवति त्रिश्रेणाभो न घटति ४ प्रदेशोखंधनो प्रश्न भागा साता १ । ५ । ८ ।

पाः सप्त भङ्गा ग्राह्याः शेषाः प्रतिषेध्याः, तत्र प्रथमभङ्गो यस्याचरमइति, इह यदा चतुःप्रदेशकस्कन्धो द्वयोराकाशप्रदेशयोः समश्रेण्या व्यवस्थितयोरेव मवगाहते-तदा चरमः साच चरमत्वभावना समश्रेण्याव्यवस्थितद्विप्रदेशावगाढद्विप्रदेशस्कन्धवद्भावनीया, तृतीयोभङ्गः स्यादवक्तव्य इति सचैव-यदा सएव चतुःप्रदेशकः स्कन्ध एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ऽवगाहते तदा परमाणुवदवक्तव्यः। नवमः स्याच्चरमौचाचरमश्च सचैव यदा स चतुःप्रदेशात्मकस्कन्ध स्त्रिष्वाकाशप्रदेशेष्वेवमवगाहते तदा आद्यन्तप्रदेशावगाढौ चरमौ मध्यप्रदेशावगाढस्त्वचरमः' दशमः स्याच्चरमौचाचरमौच तत्र यदा स चतुःप्रदेशात्मकः स्कन्धः समश्रेण्या व्यवस्थितेषु चतुर्ष्वाकाशप्रदेशेष्वेवमवगाहते तदा आद्यंतद्विप्रदेशावगाढौ द्वौ परमाणू चरमौ द्वयोस्तु मध्यमयोराकाशप्रदेशयोरवगाढौ द्वौ परमाणू अचरमाविति' एकादशः स्याच्चरमश्चावक्तव्यः सचैव-यदा स चतुःप्रदेशकः स्कन्धः त्रिष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्याचैवमवगाहते तदा समश्रेण्यव्यवस्थितद्विप्रदेशावगाढ स्त्रयः परमाणवो द्विप्रदेशावगाढद्विप्रदेशकस्कन्धवत् चरम एकश्च विश्रेणिस्थः परमाणुरिय चरमाचरमशब्दाभ्यां व्यपदेष्टुमशक्यत्वा दवक्तव्य इति, द्वादशः स्याच्चरमश्चावक्तव्यौ च सचैव-यदा स चतुःप्रदेशात्मकस्कन्ध श्चतुर्ष्वाकाशप्र

---

**ह्याइं नो चरमेय अचरमेय नो चरमेय अचरमाइं च सिय चरमाइं अचरमेय सिय चरमाइं च अचरमा**

प्रदेशिकः स्कन्धः स्याच्चरमो नो अचरमः स्यादवक्तव्यकः, नो चरमश्चाचरमश्च, नो चरमश्चाचरमाणिच' स्याच्चरमाण्यचरमश्च, स्याच्चरमाणि चा

---

१०। ११। १२। १३। ए भांगालेखा इ गो०। चरमेणं भंते खंधे सियचरमे नो अचरमे सिय अवत्तव्वए। ४ प्रदेशोखंध चरम १ वचने अचरमनहुवे अवक्तव्यहुवे। नो चरमाइं नो अवत्तव्वयाइं नो चरमेय नो अचरमेय नो चरमेय। बहुवचने चरमनहुवे बहुवचने अचरमनहुवे बहुवचने अवक्तव्य ४ प्रदेश समश्रेणि न हुवे चरम १ वचनेनहुवे अचरम एकवचन नहुवे अचरम एकवचन नहुवे बहुवचने अचरमनहुवे चरमनहुवे। अचरमाइंच सियचरमाइंच अचरमेय सियचरमाइंच। एकवचने चरमहुवे १ वचने अचरमनहुवे। अचरमाइंच सियचरमेय अवत्तव्वए सियचरमेय। एकवचने अचरमनहुवे १ वचने अवक्तव्यहुवे कोइचरमहुवे। अवत्तव्वयाइंच नो चरमाइंच अवत्तव्वयाइंच। अवक्तव्यहुवे बहुवचने चरमनहुवे अवक्तव्यहुवे। नोचरमेय अवत्तव्वए नो

देशेष्वेवमवगाहते द्वौ परमाणू द्वयोः समश्रेण्यावस्थितयो राकाशप्रदेशयो र्द्वौच परमाणू द्वयोः विश्रेण्या व्यवस्थितयो तदा द्वौ परमाणू समश्रेण्य-
व्यवस्थितौ द्विप्रदेशावगाढद्विप्रदेशस्कन्धव चरमः द्वौच परमाणू त्रिश्रेणिव्यवस्थितौ केवलपरमाणवश्चरमाचरमशब्दाभ्यां व्यपदेष्टुमशक्या वित्यव-
क्तव्यौ, त्रयोविंशतितमः स्याच्चरमौचाचरमश्चावक्तव्यश्चकथ मिति चेदुच्यते-इह यदा स चतुःप्रदेशकः स्कन्धस्त्रयाणां काशप्रदेशेष्वेवमवगाहते त्रयः प-
रमाणवस्त्रिषु समश्रेण्याव्यवस्थितेष्वाकाशप्रदेशेष्वेको विश्रेणिस्थ प्रदेशे तदा त्रिषु परमाणुषु समश्रेणिव्यवस्थितेषु मध्ये आद्यन्तौ परमाणुपर्यन्तवर्त्ति
त्वा चरमौ मध्यस्त्वचरमो विश्रेणिस्थस्त्वावक्तव्य इति वक्ष्यतिच-पढमोतइएनवमो दसमोएक्कारसमोयबारसमो । अगाचउव्वयसे तवीसइमोयसो

इं च सिय चरमेय अवत्तव्वए य सिय चरमेय अवत्तव्वयाइं च नो चरमाइंच अवत्तव्वएय नो अचरमाइंच
अवत्तव्वयाइं च नो अचरमेय अवत्तव्वएय नो अचरमेय अवत्तव्वयाइं च नो अचरमाइंच अवत्तव्वएय नो
अचरमाइंच अवत्तव्वयाइं च नो चरमेय अचरमेय अवत्तव्वएय नो चरमेय अचरमेय अवत्तव्वयाइं च नो
चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वएय नो चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च सिय चरमाइं च अचरमेय

चरमाणि च, स्याच्चरमश्चाणि चावक्तव्यकश्च, नो अचरमाणि चावक्तव्यकानि च, नो अचरमश्चावक्तव्यकश्च, नो अचरमश्चावक्तव्यकानि च,
नो अचरमाणि चावक्तव्यकश्च, नो अचरमाणि चावक्तव्यानि च, नो चरमश्चाचरमश्चावक्तव्यकश्च, नो चरमश्चा चरमश्चावक्तव्यानि च, नो
चरमश्चाचनमाणि चावक्तव्यश्च, नो चरमश्चाचरमाणि चावक्तव्यानि च, स्याच्चरमाणि चाचरमश्चावक्तव्यश्च, शेषा भङ्गाः प्रतिषेधयितव्याः ।

चरमेय अचरमेय अवत्तव्वयाइं च । १ वचने चरमहवे बहुवचने अवक्तव्यहवे १ वचन चरमनहवे एकवचने अचरमहवे अवक्तव्यहवे । नो चरमेय अचरम-
इं च अवत्तव्वयाइं च सियचरमाइ च अचरमेय अवत्तव्वएय । बहुवचने चरमनहवे अचरमनहवे अवक्तव्यहवे १ वचने चरमहवे १ वचने अचरमहवे अवक्त-
व्य १ वचनहवे । सेसाभंगापडिसेहियव्वा १ पंचपएसिएणं भंते खंधे पुच्छा गोयमा । दोषप्रतिषेधया पढमो तइओ नवमो दसमो एक्कारसमोय बारसमो

धन्नो ॥ १ ॥ गतार्था ॥ पंचपएसिएणं भंते ! इत्यादि ॥ प्रश्नसूत्रं प्राग्वत्, निर्वचनमाह-गोयमा ! सिय चरमे इत्यादि ॥ इह प्रथमतृतीयसप्तमनवमदशमैकादशद्वादशत्रयोदशत्रयोविंशतितमचतुर्विंशतितमपञ्चविंशतितमरूपा एकादश भङ्गा ग्राह्याः शेषाः प्रतिषेध्याः वक्ष्यतिच-पढमंतइयंसत्तम नवदसएक्कारबारतेरसमा । तेवीसचउव्वीसो पणवीसइमोयपञ्चमए ॥ १ ॥ तत्रायं प्रथमभङ्गः स्याच्चरम इति, इह यदा पञ्चप्रदेशात्मकस्कन्धो द्वयोराकाशप्रदेशयोः समश्रेण्या व्यवस्थितयोरवमवगाहते त्रयः परमाणव एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे द्वौ द्वितीये तदा द्विप्रदेशावगाढद्विप्रदेशकस्कन्धवच्चरमः तृतीयो वक्तव्यः सर्वैवं यदा स पञ्चप्रदेशात्मकः स्कन्ध एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ऽवगाहते तदा स परमाणुवदवक्तव्यः, सप्तमः स्याच्चरमश्चाचरमश्च सर्वैवं-यदा पञ्चप्रदेशकः स्कन्धः पञ्चस्वाकाशप्रदेशेष्ववमवगाहते तदा ये चरमाश्चत्वारः परमाणव स्तेषा मेकसम्बन्धिपरिणामपरिणतत्वादेकवर्णत्वमेकगन्धत्वादेकरसत्वादेकस्पर्शत्वाच्चैकत्वव्यपदेशे चरम इति व्यपदेशो मध्यस्तु परमाणु र्मध्यवर्त्तित्वादचरम इति, नवमश्चरमौ वा चरमश्च तत्र यदा स पञ्चप्रदेशकस्कन्धस्त्रिषाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या व्यवस्थितेष्ववमवगाहते द्वौ चरमाणू आद्ये आकाशप्रदेशे द्वावन्ते एको मध्ये तदा

अवत्तव्वए य, सेसा भंगा पडिसेहेयव्वा । पंचपदेसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा, गो० ! पंचपदेसिए खंधे सिय चरमे नो अचरमे सिय अवत्तव्वए नो चरमाइं नो अचरमाइं नो अवत्तव्वयाइं सिय चरमेय अचरमेय नो

पञ्चप्रदेशिको भदन्त ! स्कन्धः पृच्छा, गौतम ! पञ्चप्रदेशिकः स्कन्धः स्याच्चरमः १, नो अचरमः २, स्यादवक्तव्यः ३, नो चरमाणि ४, नो

भांगो चरमएसे तेवीसइमोय बोधव्वे ४ पांचप्रदेशीखधनो प्रश्न कीधो ११ भांगा पांचप्रदेश खंधेहवे हे गौतम। पचपएसिएणं खंधे सियचरमे १ नो अचरमे २ सिय अवक्तव्वएय ३ । १ । २ । ६ । १० । ११ । १२ । २३ । २४ । २५ । इहां पांचप्रदेशीखंधनें चरमहवे १ अचरमहवे २ अवक्तव्यहवे ३ । नो चरमाइंच ४ नो अचरमाइंच ५ नो अवक्तव्वयाइंच ६ । चरमनहुवे ४ अचरमबहुवचने नहुवे ५ अवक्तव्यबहुवचने चरमहुवे ६ । सिय चरमेय अचरमेय ७ नो चरमेय अचरमाइंच ८। कोई चरमहुवे अचरमहुवे ७ चरमनहुवे अचरमनहुवे ८ । सिय चरमाइंच अचरमेय ९ सिय चरमाइंच १० सिय चरमेय

टीका

मूल ।

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

आद्यप्रदेशावगाढौ द्वौ चरमौ द्वावंत्यप्रदेशावगाढौ चरम इति चरमौ मध्यस्तु मध्यवर्त्तित्वादचरमः, दशमश्चरमौचाचरमौ च तत्र यदा स पञ्च प्रदेशात्मकः स्कन्ध श्चतुर्ष्वाकाशप्रदेशेषु व्यवस्थितश्चैवमवगाहते त्रयः परमाणवः त्रिष्वाकाशप्रदेशेष्वेकस्मिन् द्वाविति, तदा आद्यप्रदेशवर्त्ती परमाणु श्चरमौ द्वौचान्त्यप्रदेशवर्त्तिनौ चरम इति चरमौ द्वौच मध्यवर्त्तित्वादचरमौ, एकादशश्चरमश्चावक्तव्यः कथमितिचे दुच्यते-यदा स पञ्चप्रदेशस्त्रि ष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्याचैव मवगाहते, द्वौ २ परमाणू द्वयोराकाशप्रदेशयोः समश्रेण्या व्यवस्थितयोरेको विश्रेणिस्थः तदा चत्वारः परमाणवो द्विप्रदेशावगाहित्वात् द्विप्रदेशावगाढद्विप्रदेशकस्कन्धवच्चरम एकश्च विश्रेणिस्थः परमाणुरवक्तव्यः, द्वादशश्चरमश्चावक्तव्यौ च तत्र यदा स पञ्च प्रदेशात्मकः स्कन्धश्चतुर्ष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या विश्रेण्याचैवमवगाहते द्वौ परमाणू द्वयोराकाशप्रदेशयोः समश्रेण्या व्यवस्थितयोरेको विश्रेणिस्थो द्वौ चान्यस्मिन् विश्रेणिस्थे तदा द्वौ परमाणू समश्रेणिव्यवस्थितद्विप्रदेशावगाढौ द्विप्रदेशावगाढद्विप्रदेशकस्कन्धवच्चरमः द्वौच विश्रेणिस्थः पृथग कैकाकाशप्रदेशावगाढौ चावक्तव्यौ, त्रयोदशश्चरमौ चावक्तव्यश्च तत्र यदा स पञ्चप्रदेशावगाढपञ्चस्वाकाशप्रदेशेष्वेवमवगाहते द्वौ परमाणू उपरि

चरमेय अचरमाइं च सिय चरमाइं च अचरमेय ९ सिय चरमाइं च अचरमाइं च १० सिय चरमेय अ वत्तव्वएय १२ सिय चरमेय अवत्तव्वयाइं च १२ सिय चरमाइं च अवत्तव्वएय १३ नो चरमाइं च अवत्त

अचरमाणि ५, नो अवक्तव्यानि ६, स्याच्चरमश्चाचरमश्च ७, नो चरमश्चाचरमाणि च ८, स्याच्चरमाणि चाचरमश्च ९, स्याच्चरमाणि चाचरमा



अवत्तव्वएय ११। अचरमबहुवचने बहुवे ९ कोई बहुवचने चरमबहुवे १० कोई चरमबहुवे अवक्तव्यबहुवे ११। सिय चरमेय अवत्तव्वयाइं च १२ सि य चरमाइं च अवत्तव्वएय १३। चरमबहुवे अवक्तव्यबहुवचने बहुवे १२ बहुवचन चरमबहुवे १३। नो चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४ नो चरमेय अवत्तव्वएय १५। नबहुवे चरमबहुवचन अवक्तव्यबहुवे १४ न चरम अवक्तव्यबहुवे १५। नोचरमेय अवत्तव्वयाइं १६ नो चरमाइं च अवत्तव्वएय १७। नचरम अवक्तव्यबहुवे १६ चरमनबहुवे अवक्तव्यबहुवे १७। नो चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८ नो चरमेय अचरमेय अवत्तव्वयाइं च १९। नदो चरम अवक्तव्यबहुवे १८ चरम नबहुवे

द्वयोराकाशप्रदेशयोः समश्रेण्या व्यवस्थितयो रवगाढो द्वौच द्वयो स्तयैवाधः एकपर्यन्तमध्यरुमे तदा द्वावुपरितनौ द्विप्रदेशावगाढद्व्यणुकस्कन्धव चरमौ द्वौचाधस्तनौ चरम इति चरमौ एकश्च केवलः परमाणुरिवावक्तव्य इति, त्रयोविंशतितमः चरमौचाचरमश्चावक्तव्यश्च सचैवं-यदा पञ्चप्रदेशकः स्कन्ध श्चतुर्ष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या विश्रेण्याचैवमवगाहते त्रिष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या व्यवस्थितेष्वाद्ये एकपरमाणु र्मध्ये द्वावंते एकश्चतुर्थे पि विश्रेणिस्थ एकः तदा त्रिष्वाकाशप्रदेशेषु मध्ये आद्यन्तप्रदेशावगाढौ चरमौ मध्यप्रदेशवर्त्ती तु द्व्यणुको मध्यवर्त्तित्वादचरमो विश्रेणिस्थश्चावक्तव्य इति, चतुर्विंशतितमः चरमौ वा चरमश्चावक्तव्यौ च कथमितिचेदुच्यते-स एव यदा पञ्चप्रदेशकः स्कन्धः पञ्चस्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या वि

॥ टीका ॥

ह्यायइं च नो अचरमे य अवत्तव्वए य नो अचरमे य अवत्तव्वयाइं च नो अचरमाइं च अवत्तव्वए य नो अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च नो चरमेय अचरमेय अवत्तव्वएय नो चरमेय अचरमेय अवत्तव्वयाइं च नो चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वएय नो चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च सिय चरमाइच अचरमेय अ

॥ मूल ॥

णि च १०' स्याच्चरमश्चावक्तव्यश्च ११, स्याच्चरमश्चावक्तव्यानि च १२, स्याच्चरमाणि चावक्तव्यश्च १३, नो चरमाणि चावक्तव्यानिच १४, नो अ चरमश्चावक्तव्यश्च १५, नो अचरमश्चावक्तव्यानि च १६, नो अचरमाणि चावक्तव्यश्च १७, नो अचरमाणि चावक्तव्यानि च १८' नो चरमश्चा च रमश्चावक्तव्यश्च १९, नो चरमोऽचरमश्चावक्तव्यानि च २०, नो चरमश्चाचरमाणिचावक्तव्यश्च २१' नो चरमश्चाचरमाणिचावक्तव्यानि च २२' स्याच्चरमाणि चाचरमश्चावक्तव्यश्च २३, स्याच्चरमाणि चाचरमश्चावक्तव्यानि च २४, स्याच्चरमाणि चाचरमाणिचावक्तव्यश्च २५, नो चरमाणि

॥ अ० ॥

अचरमहुवे अवत्तव्य हुवे १९ । नो चरमेय अचरमाइ च अवत्तव्वएय २० नो चरमेय अचरमेय अचरमाइ च अवत्तव्वयाइ च २२ । चरमनहुवे अचरम नहुवे अवत्तव्यहुवे २० १ वचने चरमहुवे अचरमहुवे अवत्तव्यहुवे २१ १ वचनें अचरमहुवे बहुवचने अवत्तव्यहुवे । सिय चरमाइ च अचरमेय अवत्तव्वएय ३ । कोइचरम बहुवचनेहुवे अचरमेहुवे अवत्तव्यहुवे २३ । सिय चरमाइ च अचरमेय अवत्तव्वयाइ च २४ । कोइबहुवचने चरमहुवे अचरमहुवे अवत्तव्य

॥ भाष ॥

श्रेण्याचैवमवगाहते-त्रयः परमाणवः त्रिष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्यवस्थितेषु द्वौ च द्वयोः परमाण्वोर्विश्रेणिस्थयोः तदा त्रिष्वाकाशप्रदेशेषु मध्ये द्वावाद्यन्तप्रदेशवर्त्तिनौ चरमौ मध्यश्चाचरमौ द्वौ च विश्रेणिस्थावक्तव्यौ, पञ्चविंशतितमचरमौ चाचरमौ चावक्तव्यश्च सचैवं-यदा स पञ्चप्रदेशकः स्कन्धः पञ्चस्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या विश्रेण्याचैवमवगाहते चत्वार श्चतुर्ष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्यवस्थितेष्वेको विश्रेणिस्थः तदा चतुर्ष्वाकाशप्रदेशेषु मध्ये द्वावाद्यन्तप्रदेशवर्त्तिनौ चरमौ द्वौ च मध्यमवर्त्तिनावचरमावेको विश्रेणिस्थो ऽवक्तव्यः ॥ छप्पएसिएणं भंते । इत्यादि ॥ प्रश्नसूत्रं प्राग्वत् । निर्वचनं-गोयमा ! सिय चरमे इत्यादि ॥ इह द्वितीयचतुःपञ्चमषष्ठपञ्चदशषोडशसप्तदशअष्टादशविंशतितमैकविंशतितमद्वाविंशतितमरूपा एकादश भंगाः प्रतिषेध्या वक्ष्यतिच-विचउत्थपंचछट्ठं पन्नरसोलचसत्तरठारं । बीसेक्कवीसगंच वक्खेजछट्ठंमि ॥ १ ॥ शेषास्त्वेकादयः



वत्तव्वएय सिय चरमाइं च अचरमेय अवत्तव्वयाइं २४ सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वएय २५ नो चरमाइंच अचरमाइं च अवत्तव्वयाइंच। छप्पएसिएणं भंते ! पुच्छा, गोयमा! छप्पएसिएणं खंधे सिय चरमे १ नो अचरमे २ सिय अवत्तव्वए ३ नो चरमाइं ४ नो अचरमाइं ५ नो अवत्तव्वयाइं ६ सिय



चाचरमाणिचावक्तव्यानि च २६ । षट्प्रदेशिको भदन्त ! स्कन्धः पृच्छा, गौतम ! षट्प्रदेशिकः स्कन्धः स्याच्चरमः १, नो अचरमः २, स्याद्



बहुवचनेहवै २४ । सिय चरमाइं च अचरमाइंच अवक्तव्वएय २५ । कोइचरमबहुवचनेहुवै अचरमबहुवचनेहुवै अवक्तव्य पिण हुवै २५ । नो चरमाइंच अचरमाइंच अवक्तव्वयाइंच २६ । चरमने बहुवचनहुवै अचरमबहुवचनेहवै एतले ५ प्रदेशोना भांगाकह्या १६ । छप्पएसिएणं भंते खंधे पुच्छा गोयमा । हिवै ६ प्रदेशीखंधना भांगानो प्रश्न उत्तर ई गौतम । छप्पएसिएणं खंधे सिय चरमे १ नो चरमे २ सिय अवक्तव्वएय ३ नो चरमाइं ४ । ६ प्रदेशनाखधने २ । ४ । ५ । १६ । १७ । १८ । २० । २१ । २२ । ए इग्यारे भांगा प्रतिषेध्या बीजा इग्यारिलेवा किवारे चरम हुवै १ अचरमनहुवै २ १ वचने अवक्तव्यहुवै ३ बहुवचन चरमनहुवै ४ । नो अचरमाइं ५ अवक्तव्वयाइं ६ सिय चरमे अचरमेय ७ । बहुवचने अचरमहुवै नहीं बहुवचने अवक्तव्य नहुवै ६ को

परिग्राह्या घटमानत्वा तत्र यथा द्वादयो न घटन्ते एकादयस्तु घटन्ते, तथा भाव्यते-इह यदा षट्प्रदेशकः स्कन्धो द्वयोराकाशप्रदेशयोः समश्रेण्या व्यवस्थितयोरेव मवगाहत, एकस्मिन्नप्याकाशप्रदेशे त्रयः परमाणवो ऽवस्थिताविति त्रय इति, तदा द्विप्रदेशावगाढद्विप्रदेशकस्कन्धव चरमः अचरमलक्षणास्तु द्वितीयो भङ्गो न घटते चरमरहितस्य केवलस्याऽचरमस्याऽसम्भवात् बहुत्वप्राप्तावाभावे मध्यं भवतीति भावनीयमेतत्, तृतीयो वक्तव्यलक्षणः सचैव यदा स षट्प्रदेशात्मकः स्कन्ध एतस्मिन्नाकाशप्रदेशेऽवगाहते तदा परमाणुश्चरमाश्चरमशब्देन व्यपदेष्टुमशक्यत्वा दवक्तव्यः, चतुर्थश्चरमाणीति, पंचमो चरमाणीति, षष्ठो वक्तव्यानीति, पंचदशो ऽचरमश्चावक्तव्यश्च, षोडशोऽचरमश्चावक्तव्यानि च, सप्तदशोचरमाणिचावक्तव्यश्चाष्टादशोऽचरमाणि चावक्तव्यानि चेत्येते सप्तभङ्गा नैवत्र सम्भवन्ति तथाप्रकाराणां द्रव्याणामेवासम्भवात्, नहि एवं जगति केवलानि चरमादीनि द्रव्याणि सम्भवन्ति असम्भवश्च प्रागुक्तभावनानुसारेण सुगमत्वात् स्वयं भावनीयः, सप्तम श्चरमश्चाचरमश्चेत्येवंरूप एवं यदा स षट्प्रदेशात्मकः स्कन्धः पञ्चस्वाकाशप्रदेशेष्वेकपरिपाट्या व्यवस्थितेष्वेव मवगाहते द्वौ परमाणू मध्यमप्रदेशे एकैकः शेषेषु तदा तेषां चतुर्णां परमाणूना मेकसम्बन्धिपरिणामपरिणतत्वा देकवर्णत्वादेकगन्धत्वादेकरसत्वादेकस्पर्शत्वात् चैकत्वव्यपदेशः, एकत्वव्यपदेशवच्चरम इति व्यपदेशो यौ तु द्वौ परमाणू मध्ये तावेकत्वपरिणामपरिणतावित्यचरम अष्टमश्चरमश्चाचरमौ च तत्र यदा सएव षट्प्रदेशात्मकः स्कन्धः षट्सु प्रदेशेषु एक

॥ टीका ॥

**चरमेय अचरमेय ७ सिय चरमेय अचरमाइं च ८ सिय चरमाइं च अचरमेय ९ सिय चरमाइं च अचरमाइं च १० सिय चरमेय अवत्तव्वएय ११ सिय चरमेय अवत्तव्वयाइं च १२ सिय चरमाइं च अवत्तव्वएय**

॥ मूल ॥

वक्तव्य ३, नो चरमाणि ४, नो अचरमाणि ५, नैवा वक्तव्यानि ६ स्याच्चरमो ऽचरमः ७ स्याच्चरमो ऽचरमाणिच ८ स्याच्चरमाण्यचरमश्च ९

॥ अ० ॥

ईचरमहवे अचरमहवे ७। सिय चरमेचरमाइं ८ सिय चरमाइंच अचरमेय ९ सिय चरमाइंच अचरमाइं च ११। कोईचरमहवे अचरमबहुवचनेहवे ८ कोइ चरम १ वचनें हुवे अचरम १ वचनेहवे कोईवचनें बहुवचनेचरमहवे कोईबहुवचने अचरमहवे १०। सिय चरमे अवत्तव्वएय ११ सिय चरमेय अवत्त

॥ भाषा ॥

परिक्षेपेणैकाधिकमेव मवगाहते तदा पर्यन्तवर्त्तिनः परिक्षेपेणावस्थिता श्चत्वारः परमाणवः प्रागुक्तयुक्तेरेकश्चरमो द्वौ च मध्यवर्त्तिनावचरमाविति, अन्यत्वन्निदर्शयति-चतुर्णां परमाणूनां क्षेत्रप्रदेशान्तरव्यवहितात्मिकत्वपरिणामो न भवति तदभावाच्च नैष दोष उपपद्यते प्रतिपिपादयिषुश्च सूत्रं यतो वक्ष्यति-बिचउत्थपंचछट्ठसमिति प्राकृतशैल्या छठअछट्ठइत्येतयोः पदयो निर्देशं ततोयमर्थः-षष्ठमष्टमं च वर्जयित्वेति, अथनामैवंरूपोपि भगो भवति तदेवं गम्यते य एकवेष्टकाव्यवधानेन चत्वारः परमाणवः ते तथाविधैकत्वपरिणामपरिणतत्वा श्चरमः तस्मादधिकोपि समश्रेण्यैवप्रतिबद्धत्वा न्न तदतिरिक्त इति सोपि तस्मिन्नेव चरमं गण्यते इत्येकं चरमं, पुनश्च योधिकमध्यं व्यवस्थित इति स मध्यवर्त्तित्वादनेकपरिणामित्वा च्च वस्तु नोऽचरमोपि ततोऽचरमाबित्यपि भवति अत्रापि न कश्चिद्विरोध स्तत्त्वं पुनः केवलिनो विदति' नवम श्चरमोचाचरमश्च यदा सप्तव षट्प्रदेशकः स्कन्धस्त्रिष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या व्यवस्थितेष्वेवमवगाहते एकैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे द्वौ २ परमाणू इति तदा द्वयप्रदेशवर्त्तिनौ द्वौ २ परमाणू चरमौ द्वावन्त्यप्रदेशवर्त्तिनौ चरम इति चरमौ द्वौतु मध्यप्रदेशवर्त्तिनावेको चरम इति, दशम श्चरमो वा चरमो च सचैवं-यदा षट्प्रदेशकः स्कन्ध श्चतुर्ष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या व्यवस्थितेष्वेवमवगाहते द्वौ चाद्य प्रदेशे द्वौ द्वितीये एकस्तृतीये एकश्चतुर्थे तदा द्वौ परमाणू प्रथमप्रदेशवर्त्तिनावेक श्चरम एकोन्त्यप्रदेशवर्त्ती चरम इति चरमौ द्वौ परमाणू द्वितीयप्रदेशवर्त्तिनावेको चरम एक स्तृतीयप्रदेशवर्त्ती अचरम इत्यचरमावपि द्वौ, एकादश

॥ मूल ॥

**१३ सिय चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४ नो अचरमेय अवत्तव्वएय १५ नो अचरमेय अवत्तव्वयाइं च १६**

॥ भाषा ॥

स्याच्चरमाण्यचरमाणिच १० स्याच्चरमोऽवक्तव्यकः ११ स्याच्चरमोऽवक्तव्यानिच १२ स्याच्चरमाण्यवक्तव्यश्च १३ स्याच्चरमाण्यवक्तव्यानिच १४ नो ऽचरमो ऽवक्तव्यकः १५ नचाचरमो ऽवक्तव्यानिच १६ नैवा चरमाण्यवक्तव्यः १७ नैवा चरमाण्यवक्तव्यानिच १८ स्याच्चरमो ऽचरमो ऽवक्तव्य

व्वयाइं १२। कोइ चरम १ वचन कोइ अवक्तव्यहुवे १ वचने ११ कोइ चरम १ वचन अवक्तव्य बहुवचनहुवे १२। सिय चरमाइं च अवक्तव्वएय १३ सिय च रमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४। कोइ बहुवचने चरमहुवे १ वचने अवक्तव्यहुवे १३ कोइबहुवचन चरमहुवे अवक्तव्यबहुवचनहुवे १४। नो चरमेय अवत्त

श्च चरमश्चावक्तव्यश्च सचैवं-यदा सएव षट्प्रदेशात्मकः स्कन्ध स्त्रिष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या विश्रेण्याचैवमवगाहते द्वावाद्ये प्रदेशे द्वौ समश्रेण्या व्यवस्थिते द्वितीय प्रदेश द्वौ विश्रेणिस्थ तृतीय प्रदेश तदा द्वितीयप्रदेशावगाढा श्चत्वारः परमाणवः समश्रेणिव्यवस्थितद्विप्रदेशावगाढद्व्यणुकस्कन्ध वदेक श्चरमो द्वौच विश्रेणिस्थप्रदेशावगाढौ परमाणुवदेको ऽवक्तव्यः, द्वादश श्चरमश्चावक्तव्यौ च तत्र यदा सषट्प्रदेशात्मकः स्कन्ध श्चतुष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या विश्रेण्याचैवमवगाहते द्वौ परमाणू प्रथम प्रदेशे द्वौ समश्रेणिव्यवस्थिते द्वितीये प्रदेशे एक स्ततः परमुपरि तृतीय प्रदेशे एकस्या पश्चतुर्थे इति तदा चत्वारः परमाणवो द्विप्रदेशावगाढ : पूर्ववदेक श्चरमो द्वौ च विश्रेणिस्थप्रदेशद्वयावगाढावक्तव्या विति, त्रयोदश श्चरमौ चावक्तव्यश्च यदा स एव षट्प्रदेशकः स्कन्धः पञ्चस्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या विश्रेण्या चैवमवगाहत द्वौ परमाणू द्वयोराकाशप्रदेशयोः समश्रेणिव्यवस्थितयो द्वौ तयोरधः समश्रेणिव्यवस्थितयो राकाशप्रदेशयोः श्रेणिद्वयमध्यभागसमश्रेण्यैकस्मिन्नाकाशप्रदेशे द्वाविति तदा द्विप्रदेशावगाढद्व्यणुकस्कन्धवदुपरितनद्विप्रदेशावगाढौ द्वौ परमाणू एकश्चरमो द्वावधस्तनाविति चरमौ द्वावेकप्रदेशावगाढौ परमाणुवदेको वक्तव्यः चतुर्दश श्चरमौचावक्तव्यौ च तत्र यदा सएव षट्प्रदेशकः स्कन्धः षट्स्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या विश्रेण्याचैवमवगाहते द्वौ परमाणू द्वयोराकाशप्रदेशयोः समश्रेण्या व्यवस्थितयो द्वौ तयोरेवाधःसमश्रेणिव्यवस्थितयो राकाशप्रदेशयो रेकः विश्रेणिद्वयमध्यभागसमश्रेणिस्थे प्रदेश एक उपरितनयो र्द्वयो र्द्वि

**नो अचरमाइं च अवत्तव्वए य १७ नो अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८ सिय चरमेय अचरमेय अवत्तव्वए य १९ नो चरमेय अचरमेय अवत्तव्वयाइं च २० नो चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वए य २१ नो चरमे**

कः १९ नच चरमोऽचरमो ऽवक्तव्यानिच २० नैच चरमो ऽचरमाण्यवक्तव्यकः २१ नहि चरमो ऽचरमाणिचावक्तव्यानिच २२ स्याच्चरमाण्यचर

व्वए य १५ नो चरमेय अवत्तव्वयाइं च १६ । चरम १ वचनेद्विके १ वचने अवक्तव्यद्विके एकवचनेचरम नद्विके बहुवचने अवक्तव्यद्विके १६ । नो चरमाइं च च अवत्तव्वए य १७ नो चरमाइंच अवत्तव्वयाइंच १८। बहुवचने चरमद्वोय बहुवचने अवक्तव्यद्वोय १७ बहुवचने चरम नद्वोय अवक्तव्यद्विके १८ । सिय च

॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥ ॥ अ० ॥ ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

श्रेणिस्थे तदा द्वावुपरितनावेक श्चरमौ द्वावधस्तनाविति चरमौ द्वौ चावक्तव्यकाविति, एकोनविंशतितमश्चरमश्चाचरमश्चावक्तव्यश्च सचैवं यदा स षट्प्रदेशकः स्कन्धः षट्स्वाकाशप्रदेशेषु एकपरिक्षेपेण विश्रेणिस्थैकाधिकमवगाहते तदा एकवेष्टका श्चत्वारः परमाणवः प्रागुक्तयुक्तेरेकश्चरम श्च कोऽचरमो मध्यवर्ती एको ऽवक्तव्यो यश्च विंशतितमश्चरमश्चाऽचरमश्चावक्तव्यौ च स सप्तमप्रदेशस्यैवोपपद्यते न षट्प्रदेशकस्य योप्येकविंशतितम श्चरमश्चाचरमौचा वक्तव्य श्च सोपि सप्तमप्रदेशस्यैवोपपद्यते न षट्प्रदेशकस्य यस्तु द्वाविंशतितमः चरमश्चारमौचावक्तव्यौ च सोऽष्टप्रदेशकस्यैवेति, त्रयोप्येकोनविंशत्यादयो ऽत्र प्रतिषिद्धाः यश्च त्रयोविंशतितम श्चरमौचाचरमश्चावक्तव्यः सच एव यदा स एव षट्प्रदेशकः स्कन्धश्चतुर्षाकाशप्रदेशेषे वमवगाहते द्वौ २ परमाणू द्वयोराकाशप्रदेशयो रेक स्तयोरेव समश्रेणिस्थ तृतीये आकाशप्रदेशे एको विश्रेणिस्थे इति तदा आद्यप्रदेशावगाढौ द्वौ परमाणू चरम स्तृतीयप्रदेशावगाढ श्चरमो द्वितीयप्रदेशावगाढौ द्वौ परमाणू चरमौ विश्रेणिस्थो ऽवक्तव्यः चतुर्विंशतितमचरमौ चाचरमश्चा वक्तव्यौ च तत्र यदा सएव षट्प्रदेशात्मकः स्कन्धः पञ्चस्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या विश्रेण्याचैवमवगाहते त्रिष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या व्यवस्थि तेष्वाद्ये एको द्वितीये एक स्तृतीये द्वौ द्वयोर्विश्रेणिस्थयोरेकैक इति तदा आद्यंतप्रदेशावगाढौ चरमौ मध्यावगाढौ अचरमौ विश्रेणिस्थप्रदेश द्व यावगाढौ अवक्तव्यौ पञ्चविंशतितमश्चरमौवा चरमौ चावक्तव्यश्च यदा सएव षट्प्रदेशात्मकः स्कन्धः पञ्चसु प्रदेशेषु समश्रेण्या विश्रेण्याचैवमवगा

॥ मूल ॥

य अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२ सिय चरमाइं च अचरमेय अवत्तव्वएय २३ सिय चरमाइं च अचरमेय

॥ अ० ॥

मोऽवक्तव्यकः २३ स्याच्चरमाणि अचरमो ऽवक्तव्यानिच २४ स्याच्चरमाण्यचरमाण्यवक्तव्य श्च २५ स्याच्चरमाण्य अचरमाण्यवक्तव्यानिच २६ । स

॥ भाषा ॥

रमेय अवत्तव्वएय १८ नो चरमेय अचरमेय अवत्तव्वयाइं च २० । चरम १ वचनें अवक्तव्यहोय १ १ वचनें चरमहोय अचरमहोय बहुवचनें अवक्तव्यहोय २० । नो चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वएय २१ नो चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२ । एकवचनेचरमहोय नबहुवचने अचरमहोय १ वचने अच रमहोय १ वचने अवक्तव्यहोय २१ १ वचनें अचरमहोय बहुवचने अवक्तव्यहोय अचरमहोय २२ । सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वएय २३ सिय च

हते चतुर्ष्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेणिव्यवस्थितेष्वाद्यप्रदेशत्रये एकैकश्चतुर्थे द्वौ पञ्चमे विश्रेणिस्थे एकः तदा आद्यन्तप्रदेशवर्त्तिनौ चरमौ मध्यप्रदेशद्वयवर्त्तिनौ द्वावचरमौ विश्रेणिप्रदेशस्य एकोऽवक्तव्यः षट्विंशतितमः चरमौवाऽचरमौचा वक्तव्यौ सर्वेवं यदा षष्प्रदेशकः स्कन्धः षट्स्वाकाशप्रदेशेषु समश्रेण्या विश्रेण्याचैवमवगाहते तदा आद्यन्तप्रदेशावगाढौ द्वौ चरमौ द्वौ मध्यप्रदेशावगाढावचरमौ द्वौच विश्रेणिस्थप्रदेशद्वयावगाढाववक्तव्याविति ॥ सत्तपएसिएणं भंते ! खंधे इत्यादि ॥ प्रश्नसूत्रं प्राग्व न्निर्वचनमाह-गोयमा ! सत्तपएसिएणं खंधे सिय चरमे नो अचरमे इत्यादि॥ इह द्वितीयचतुर्थपंचमषष्टपंचदशषोडशसप्तदशाष्टादशद्वाविंशतितमरूपा नवभङ्गाः प्रतिषेध्याः शेषा उपदेया वक्ष्यतिच-बिचउक्कपंचछक्कं पणरसोलंचसत्तरठारं । वज्जियबावीसइमं संसाभंगाउसत्तमए ॥ १ ॥ तत्र द्वादीनामष्टादशपर्यन्तानां प्रतिषेधकारणं प्रागुक्तमनुसर्त्तव्यं न केवलमत्र किंतु सर्वेष्वनुत्तरेषु स्कन्धेषु, यस्तु द्वाविंशतितमः सोष्टप्रदेशकस्यैव घटते न सप्तप्रदेशकस्येत्युक्तं प्राक् तत इह प्रतिषेधः । शेषास्तु प्रथमादयः षड्विंशतितमपर्यन्ताः सप्तदशभंगाः षट्प्रदेशकस्कन्धस्यैव भावनीया केवलं विनेयजनानुग्रहाय स्थापना-मात्रेणोपदर्श्यन्ते, प्रथमोभंगश्चरमभंगः, तृतीयोवक्तव्यः, सप्तमश्चरमश्चाचरमश्च, अष्टमश्चरमश्चाचरमौच, नवम श्चरमौचाचरमश्च, दशम श्चरमौचाचरमौच, एकादश श्चरमश्चावक्तव्यश्च, द्वादश श्चरमश्चावक्त



अवत्तव्वयाइं च २४ सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वए य २५ सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ । सत्तपएसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा, गोयमा ! सत्तपएसिएणं खंधे सिय चरमे १ नो अचर



प्रदेशिको भदन्त ! स्कन्धः पृच्छा, गौतम ! सप्तप्रदेशिको स्कन्धः स्याच्चरमः १ नैवाचरमः २ स्यादवक्तव्यः ३ नो चरमाणि ४ नो अचरमाणि



रमाइं च अचरमेय अवत्तव्वयाइं च २४ । कोइबहुवचने चरमहीय अचरमहीय अवक्तव्यहीय २३ कोइचरम अचरमबहुवचने अवक्तव्यहीव २४ । सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वए य २५ सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ । कोइचरम अचरमबहुवचने अवक्तव्यहीय २५ कोइबहुवचने अचरमबहुवचने चरमहीय अवक्तव्यहीय २६ । सत्तपएसियाणं भंते खंधे पुच्छा गोयमा सत्तपएसिएण खंधे सिय चरमे १ । द्विवे७ प्रदेशीस्कधनो प्रश्न

व्यौ च, त्रयोदश श्चरमौचावक्तव्यश्च, चतुर्दश श्चरमौचावक्तव्यौच, एकोनविंशतितम श्चरमश्चाचरमश्चावक्तव्यश्च, विंशतितमश्चरमश्चाचरमश्चावक्तव्यौ च, एकविंशतितमश्चरमश्चाचरमौचावक्तव्यश्च, त्रयोविंशतितम श्चरमौचाचरमश्चावक्तव्यश्च, चतुर्विंशतितम श्चरमौचाचरमश्चावक्तव्यौच, पंचविंशतितम श्चरमौचाचरमौचावक्तव्यश्च, षड्विंशतितमश्चरमौचाचरमौचावक्तव्यौ, इह यस्मा त्समप्रादेशिकस्कन्धः एकस्मिन्नाकाशप्रदेशे ऽवगाहते द्वयोरपि त्रिष्वपि यावत्सप्तस्वपि ततः सर्वे भंगाः सम्भवन्ति ॥ अट्ठपएसिएणं भंते ! खंधे त्यादि पृच्छा सूत्रं प्राग्वत् निर्वचनसूत्र-अट्ठपएसिएणं खंधे सियचरमे इत्यादि ॥ अत्र द्वितीयचतुर्थपञ्चमसप्तदशषोडशसप्तदशाष्टादशरूपा अष्टौ भङ्गाः प्रतिषेध्याः, शेषास्तु ग्राह्या वक्ष्यतिच-बिचउक्कपंचछक्कं पन्नरसोलचसत्तरहाणं । एएवज्जियभंगा सेसासंससुखंधेसु ॥ १ ॥ सुभगा नवरं सेसासंससुखंधेसु ॥ इति शेषाभङ्गाः शेषेषु सप्तप्रदेशकात् स्कन्धादितरेषु अष्टप्रदेशादिकेषु सर्वेषु स्कन्धेषु द्रष्टव्याः, अन्यत्वेवमुत्तरार्द्धं पठंति-एएवज्जियभंगा तेणपरमवहियाभंगा । सेसा सुगमं, ते च प्रथमादयो भङ्गाः षड्विंशतिपर्यन्ता अष्टादशभावनात् स्थापनातश्च प्राग्व द्भावनीया, नवरं-चरमश्चाचरमौचावक्तव्यौ चेत्येवंरूपो द्वाविंशति



मे २ सिय अवत्तव्वए ३ नो चरमाइं ४ नो अचरमाइं ५ नो अवत्तव्वयाइं ६ सिय चरमेय अचरमेय ७ सिय चरमेय अचरमाइं च ८ सिय चरमाइं च अचरमेय ९ सिय चरमाइं च अचरमाइं च १० सिय चर



५ अवक्तव्यानि ६ स्याच्चरमोऽचरमश्च ७ स्याच्चरमो ऽचरमाणिच ८ स्याच्चरमाण्यचरमश्च ९ स्याच्चरमाण्यचरमाणिच १० स्याच्चरमोऽवक्तव्यश्च ११ स्याच्चरमो ऽवक्तव्यानिच १२ स्याच्चरमाण्यवक्तव्यकः १३ स्याच्चरमाण्यवक्तव्यानिच १४ नचाचरमो ऽवक्तव्यकः १५ नो ऽचरमो ऽवक्तव्यानि च



उत्तर हे गौतम ७ प्रदेशोना खंधचरमहोय । नो अचरमे २ सिय अवक्तव्य ३ नो चरमाइं ४ नो अचरमाइं ५ । कोई अचरम २ कोई अवक्तव्यहोय ३ बहुवचने चरम ४ बहुवचने अचरम नहोय ५ । नो अवक्तव्यइं ६ सिय चरमे ७ सिय चरमे अचरमाइंच ८ । बहुवचने अवक्तव्यहोय ९ कोई एकवचने चरमहोय ७ कोई एकवचने अचरमहोय ८ । सिय चरमाइंच ९ अचरमाइंच १० सिय चरमे अवक्तव्वए ११ । कोई चरमबहुवचने अचरमहोय ९ अच

॥ टीका ॥

तमो भङ्गः तत एवं अथ द्विप्रदेशकादिषु स्कन्धेष्ववक्तव्यादित्येवं रूपं षष्ठो भंगः, कस्मात्प्रतिषिध्यते तस्यापि युक्तितः सम्भवभावात्, तथाहि-यदा एकः परमाणुरकस्मिन्नाकाशप्रदेशे द्वितीयो विश्रेणिस्थे प्रदेशे तथा एकोप्यवक्तव्यो द्वितीयोप्यवक्तव्य इति नवत्यवक्तव्यादिति भङ्गास्त्रिप्रदेश

॥ मूल ॥

मेय अवत्तव्वए य ११ सिय चरमेय अवत्तव्वयाइं च १२ सिय चरमाइं च अवत्तव्वए य १३ सिय चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४ नो अचरमेय अवत्तव्वए य १५ नोअचरमेय अवत्तव्वयाइं च १६ नो अचरमाइंच अवत्तव्वए य १७ नो अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८ सिय चरमेय अचरमेय अवत्तव्वए य १९ सिय चरमेय अचरमेय अवत्तव्वयाइं च २० सिय चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वए य २१ नो चरमेय अचरमाइं च

॥ अ० ॥

१६ नैवा चरमाण्य वक्तव्यकः १७ नैवा चरमाण्यवक्तव्यानिच १८ स्याच्चरमोऽचरमो ऽवक्तव्यकः १९ स्याच्चरमोऽचरमो ऽवक्तव्यानिच २० स्याच्चरमोऽचरमाण्य वक्तव्यकः २१ नो चरमो ऽचरमाण्य वक्तव्यानिच २२ स्याच्चरमाण्यचरमो ऽवक्तव्यकः २३ स्याच्चरमाण्यचरमो ऽवक्तव्यानिच २४

॥ भाषा ॥

रमहोय अवक्तव्यहोय १० कोइ एकवचने चरम १ बचने अवक्तव्यहोय ११। सिय चरमे अवत्तव्वेयाइं च १२ सिय चरमाइं च अवत्तव्वेय १३। कोइ चरमे अवक्तव्यहोय १२ कोइ चरमे कोइ बहुवचन अवक्तव्यहोय १३। सिय चरमाइं च अवत्तव्वेयाइं च १४ नो चरमेय अवत्तव्वेय १५। कोइ बहुवचने चरमहोय कोइ एकवचन अवक्तव्यहोय १४ कोइ बहुवचने चरमहोय कोइबहुवचन अवक्तव्यहोय १५। नो चरमेय अवत्तव्वेयाइं च १६ चरमाइ च अवत्तव्वेय १७। एकबचने चरम नहोय अवक्तव्यहोय १ बचने १ बचने चरम नहोय बहुवचन अवक्तव्यहोय १७। नो चरमाइं अवत्तव्वेयाइं च १८ सिय चरमे अचरमेय अवत्तव्वेय १९। कोइ बहुवचने चरम नहोय कोइ एकवचने अवक्तव्यहोय १८ बहुवचने अवक्तव्यहोय बहुवचने चरमहोय १९। सिय चरमेय अवत्तव्वयाइ च २० सिय चरमय अचरमाइं च अवत्तव्वयाइ च २१। १ बचन चरम एकवचने अचरम एकबचने अवक्तव्यहोय २० कोइएकवचने चरम एकवचने अचरम बहुवचने अवक्तव्यहोय २१। नो चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२ सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वए य २३। एकवचने चरम

॥ मूल ॥

अवत्तव्वयाइं च २२ सिय चरमाइं च अचरमेय अवत्तव्वए य २३ सिय चरमाइं च अचरमेय अवत्तव्वयाइं च २४ सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वए य २५ सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ । अट्ठपएसिएणं भंते ! खंधे पुच्छा, गोयमा ! अट्ठपएसिए खंधे सिय चरमे १ नो अचरमे २ सिय अवत्तव्वए ३ नो चरमाइं नो अचरमाइं ५ नो अवत्तव्वयाइं ६ सिय चरमेय अचरमेय ७ सिय चरमेय अचरमाइं च ८ सिय चरमाइं च अचरमेय ९ सिय चरमाइं च अचरमाइं च १० सिय चरमेय अवत्तव्वए य ११ सिय

॥ अ० ॥

स्याच्चरमाण्यचरमाणिचावक्तव्यश्च २५, स्याच्चरमाणिचाचरमावक्तव्यानिच २६ । अष्टप्रदेशिको भदन्त ! स्कन्धः पृच्छा, गौतम ! अष्टप्रदेशिकः स्कन्धः स्याच्चरमः १, नो अचरमः २' स्यादवक्तव्यकः ३, नो चरमाणि ४, नो अचरमाणि ५, नो अवक्तव्यानि ६, स्याच्चरमश्चाचरमश्च ७, स्याच्चरमश्चाचरमाणि च ८' स्याच्चरमाणि चाचरमश्च ९, स्याच्चरमाणि चाचरमाणि च १०, स्याच्चरमश्चावक्तव्यश्च ११, स्याच्चरमश्चावक्तव्यानि

॥ भाषा ॥

नहोय बहुवचने अचरमहोय अवक्तव्यहुवे २२ कोबहुवचन चरमहोय बहुवचने अचरमहोय कोइंएकवचने अवक्तव्यहोय २३ । सिय चरमाइंच अचरमेय अवत्तव्वयाइंच२४ सिय चरमाइंच अवत्तव्वाय२५ । कोइंबहुवचने चरमहोय कोइंएकवचन चरमहोय कोइंएकवचने अवक्तव्यहुवे कोइंएकवचने अचरमहोय कोइंएकवचने चरमहोय बहुवचने अवक्तव्यहुवे२५। सिय चरमाइंच अचरमाइंच अवत्तव्वयाइंच२६ । कोइंबहुवचने चरमहोय कोइंअचरमहोय एकवचने अवक्तव्यहोय २६ । अट्ठपएसियाणं भंते खंधे पुच्छा गो० । हिवे ८ गंधना प्रदेशनो प्रश्न कीधो २ । ४ । ५ । ६ । १५ । १६ । १७ । १८ । ए आठ भांगावजेवा यत: बिचउक्कपंचछक्कट्ठनवरम सोलसमसत्तर अठारस ए एवज्जियभगा सेसासेसमखधेसु ई ॥ अठारलगेभांगा पाछलोपरि कहिवा बाकीसर्वभांगा निषेधछे प्रश्न उत्तर छे गौतम । अट्ठपएसिएखधे सिय चरमे १ नो अचरमे २ सिय अवक्तव्वए य ३ । ८ प्रदेशीखंध कोइंएकवचने चरमहोय १ कोइं १ वचने चरम नहोय २ एकवचने कोइं अवक्तव्यहोय ३ नो चरमाइंच ४ अचरमाइंच ५ नो अवत्तव्वयाइंच ६ । बहुवचन चरम नहोय ४ अचरम नहोय

कचिन्तायामेकस्मिन्नेकपरमाणुरपरस्मिन् द्वौ चतुःप्रदेशकचिन्तायां प्रत्येकं द्वौ २ परमाणू इत्यादि सत्यमेतत् केवलमेवंरूपं जगति द्रव्यमेव नास्ति कथमेतदवसित मिति च दुच्यते-अतएव प्रतिषेधवचनात्, यदिहि-तथारूपं द्रव्यं सम्भव न्नाचार्यप्रतिषेधं कुर्यादिति यदिवा सम्भवेपि जातिपरनिर्देशात् तृतीयभङ्गक एवान्तर्भावो वेदितव्यः यथाचाष्टप्रदेशके स्कन्धे भङ्गाः प्रतिषेध्या विधेयाश्चोक्ता स्तथा सख्यातप्रदेशकऽसंख्यातप्रदेशकेच प्रत्येकं वक्तव्या स्तथाचाह-संखेज्जपएसिए असंखेज्जपएसिए इत्यादि ॥ पाठसिद्ध नवरमियं सर्वत्र भावना यस्मादेकादिद्वयाकाशप्रदेशे द्वयप्रदे

॥ टीका ॥

चरमेय अवत्तव्वयाइं च १२ सिय चरमाइं च अवत्तव्वए य १३ सिय चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १४ नो अचरमेय अवत्तव्वए य १५ नो अचरमेय अवत्तव्वयाइं च १६ नो अचरमाइं अवत्तव्वए य १७ नो अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च १८ सिय चरमेय अचरमेय अवत्तव्वए य १९ सिय चरमेय अचरमेय अवत्तव्वयाइं च

॥ मूल ॥

च १२, स्याच्चरमाणि चावक्तव्यश्च १३, स्याच्चरमाणि चावक्तव्यानि च १४' नो अचरमश्चावक्तव्यश्च १५, नो अचरमश्चावक्तव्यानि च १६, नो अचरमाण्यवक्तव्यश्च १७, नो अचरमाणिचावक्तव्यानि च १८, स्याच्चरमश्चाचरमश्चावक्तव्यश्च १९, स्याचरमश्चाचरमश्चावक्तव्यानि च २०, स्याच्च

॥ अ० ॥

५ बहुवचने अवक्तव्यहोय ६। सिय चरमेय अचरमेय ७ सिय चरमेय अचरमाइंच ८। एकवचने चरमहोय एकवचने अचरमहोय ७ को. एकवचने चरमहोय एकवचने अचरमहोय ८। सिय चरमाइं अचरमेय ९ सिय चरमाइंच १०। कोइंबहुवचन चरम एकवचने अचरमहोय ८ कोइंबहुवचनेचरम १० सिय चरमेय अवत्तव्वाय ११ सिय चरमेय अवत्तव्वयाइंच १२। कोइंएकवचने अवक्तव्य ११ कोइं एकवचने चरम कोइं बहुवचने अवक्तव्यहोय १२। सिय चरमाइंच अवत्तव्वाय १३ सिय चरमाइंच अवत्तव्वयाइंच १४। कोइंबहुवचने चरमकोइं बहुवचने अवक्तव्यहोय १३ कोइंबहुवचन चरमहोय कोइंअवक्तव्यहोय १४। नो चरमेय अवत्तव्वयाइंच १६ नो चरमाइंच अवत्तव्वए य १७। एकवचने अचरमहोय कोइं बहुवचने अवक्तव्यहोय १६ बहुवचने चरमहोय एकवचने अवक्तव्यहोय १७। नो चरमाइंच अवत्तव्वयाइंच १८ सिय चरमेय अचरमेय अवत्तव्वए य १९। बहुवचने चरमनहोय बहुवचने

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

शकादीनां स्कन्धानामवगाहो भवति तथा घटन्ते' यथोक्ताः सर्वेऽपि भङ्गाः, नन्वसङ्खातप्रदेशात्मकस्यानन्तप्रदेशात्मकस्यच स्कन्धस्य कथमेकस्मि न्नाकाशप्रदेशे ऽवगाह उच्यते-तथा २ महात्म्या न्नचैतदनुपपन्नं युक्तेः समाश्रीयमाणत्वा तथाह्यनन्तानन्ताद्विप्रदेशकाः स्कन्धायावदनन्तानन्ताः सङ्ख्येयप्रदेशात्मकाः स्कन्धा अनन्तानन्ता असङ्ख्येयप्रदेशात्मकाः स्कन्धा अनन्तानन्ता अनन्तप्रदेशात्मका लोकश्च सर्वात्मनाप्यसङ्ख्येयप्रदेशात्मक स्तेच सर्वे पि लोक एवावगाढा नालोके ततोऽवसीयते सन्त्येकस्मिन्नप्याकाशप्रदेशे वगाढा बहवः परमाणवो बहवो द्विप्रदेशकाः स्कन्धा याव द्बहवो ऽनन्त

॥ मूल ॥

२० सिय चरमेय अचरमाइं अवत्तव्वएय २१ सिय चरमेय अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२ सिय चर माइं च अचरमेय अवत्तव्वएय २३ सिय चरमाइं च अचरमेय अवत्तव्वयाइं च २४ सिय चरमाइं च अचरमाइं अवत्तव्वएय २५ सिय चरमाइं च अचरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २६ संखेज्जपदेसिए असंखेज्जपदेसिए अणं

॥ भ० ॥

रमश्चाचरमाणि चावक्तव्यश्च २१, स्याच्चरमश्चाचरमाणि चावक्तव्यानि च २२, स्याच्चरमाणि चाचरमश्चावक्तव्यश्च २३, स्याचरमाणिचाचरमश्चा वक्तव्यानिच २४, स्याच्चरमाणि चाचरमाणिचावक्तव्यश्च २५, स्याच्चरमाणि चाचरमाणिचावक्तव्यानिच २६। संख्येयप्रदेशिकोऽसंख्येयप्रदेशिको

॥ भाषा ॥

अवत्तव्वएय १८ कोई एकवचने चरमएय एकवचने अचरमएय अवक्तव्वएय १९। सिय चरमेय अचरमेय अवत्तव्वयाइं च २० सिय चरमेय अचरमा इं च अवत्तव्वएय २१। कोई १ वचनें चरमएय १ वचने अचरमएय बहुवचने अवक्तव्वएय २० कोई १ वचने चरमएय १ वचने अचरमएय अवक्त व्वएय २१। सिय चरमेय चरमाइं च अवत्तव्वयाइं च २२। सिय चरमाइं च अचरमेय अवत्तव्वएय २३। बहुवचने अचरमएय १ वचने अवक्तव्वएय २२ कोई बहुवचने चरमएय १ वचने अचरमएय अवक्तव्वएय २३। चरमाइं च अचरमेय अवत्तव्वयाइं च २४ सिय चरमाइं च अवत्तव्वएय २५। कोई बहुवचने चरमएय १ वचने अचरमएय बहुवचने अवक्तव्वएय २४ चरमकोई बहुवचने अवक्तव्वएय १ वचनें २५। सिय चरमाइं च अचरमाइं च अव त्तव्वयाइं च २६। कोई बहुवचने चरमएय बहुवचने चरमएय बहुवचने अवक्तव्वएय २६। संखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसिए अणतपएसिए खंधे

॥ टीका ॥

प्रदेशात्मकाः स्कन्धा स्तथाचात्र पूर्वसूरयः-प्रदीपदृष्टान्तमुपवर्णयंति-यथैकस्य प्रदीपस्य गृहमध्ये प्रज्वलितस्य प्रज्ञापरमाणवः सर्वमेव गृहं प्राप्नुवंति तथा प्रत्येकं प्रदीपसहस्रस्यापि नच प्रतिप्रदीपप्रज्ञापरमाणवो न भिन्नाः प्रतिप्रदीपे पुरुषस्य मध्यस्थितस्य छायाभेददर्शनात्, ततो यथेति स्थूला अपि प्रदीपप्रज्ञापरमाणव एकस्मिन्नप्याकाशप्रदेशे बहवो मांति तथा परमाण्वादयोपीति न कश्चिद्दोषः । आकाशस्य तथा २ वकाशदान स्वभावतया वस्तूनां च विचित्रपरिणमनस्वभावतया विरोधाभावात्, सम्प्रति परमाण्वादिषु ये भङ्गा ग्राह्या येच षट्प्रादिषु न ग्राह्या स्तत्संग्रा हिकाः सङ्ग्रहणिगाथा आह-परमाणुम्मियतइयंइत्यादि ॥ पाठसिद्धं, भाविताथत्वात् । नवरं षट्प्रदेशादिचिन्तायां प्रतिषेध्या भङ्गा स्तोका इति लाघवार्थं तएव संगृहीता इहानन्तरं स्कन्धानां चरमाचरमादिवक्तव्यतोक्ता स्कन्धाश्च यथायोगं परिमण्डलादिसंस्थाने च भवंति इत्यतः संस्थान

॥ मूल ॥

तपदेसिए खंधे जहेव अट्ठपदेसिए तहेव पत्तेयं भाणियव्वा । परमाणुम्मियतइयं पढमोतइयनवमो एक्कारसमोयतिपदेसे ॥ १ ॥ पढमोतइयनवमो दसमोएक्कारवारसमो भंगाचउप्पदेसे तेवी

॥ अ० ॥

ऽनन्तप्रदेशिकः स्कन्धोयथैवाष्टप्रदेशिकस्तथैव प्रत्येकं भणितव्यम् । परमाणौ च तृतीयः प्रथमतृतीयौ द्विप्रदेशेस्तः । प्रथमस्तृतीयोनवम एका दशमस्त्रिप्रदेशेस्यात् ॥ १ ॥ प्रथमस्तृतीयनवम-दशमैकादशद्वादशश्चैते । भंगाश्चतुःप्रदेशे त्रयोविंशतिश्च ज्ञातव्याः ॥ २ ॥ प्रथमस्तृतीयसप्तमनव दशैकादशद्वादशश्चैते । त्रयोदशश्चत्रिचतुः पंचाधिकविंशतिश्चात्र ॥ ३ ॥ द्विचतुःपंचषट्कं पंचषट्सप्ताधिकं दश । द्वाविंशतिमविहीना भंगान्सप्त

॥ भाष ॥

जहेव अट्ठपएसिए तहेव पत्तेयं भाणियव्वं । इम संख्यातप्रदेशस्कंध असंख्यातप्रदेशस्कंध अनंतप्रदेशीस्कंधलगे जिम अष्टप्रदेशीस्कंधकह्या तिम अनंतप्रदेशी स्कंधलगे कहिवा नो आकाशप्रदेश ८ प्रदेशस्कंध अनंतप्रदेशीलगेस्कंधकह्या नो अवगाहनाचेत्र तेतलो जिम तिहां पूर्वाचार्ये प्रदीपने दृष्टांते जिम १ दीप प्रभानें परमाणुयें सर्वगृहव्याप्योतो तिहां बली सहस्रगमे प्रदीपकीधें प्रभाना परमाणुया जूजूयाथी पुरुषमध्यरहे थकें छायानो भेदजूजूयो नदीसे जो थू लप्रभाप्रदीपनो हुवे तो एकेकें आकाशप्रदेशे घणा २ परमाणुवा प्रायेंति प्रदेशप्रमाणुथी ने इमहीज कहिवो दोस नहो । परमाणुम्मितइयो पढमो

सइमोयबोद्धव्वो २॥ पढमोयतइयसत्तम णवदसएक्कारबारतेरसमो तेवीसचउव्वीसम पणवीसइमोयपंचमए ३॥ विचउत्थपंचछठं पन्नरससोलंचसत्तरठारं वीसेक्कवीसबावी सगंचवज्जेज्जछठंमि ४॥ विचउत्थपंचछठं पन्नरस सोलंचसत्तरठारं बावीसइमविज्जू गा सत्तपदेसंमिखंधंमि ५। विचउत्थपंचछठं पन्नरसोलंचसत्तरठारं एतेवज्जि य भंगा सेसासंससुखंधेसु ॥६॥ कइणं भंते ! संठाणा पन्नत्ता ? गो० ! पंचसंठाणा पन्नत्ता, तंजहा—परिमंडले

प्रदेशेस्युः ॥ ४ ॥ द्विचतुः पञ्चषट् पंचषट्सप्ताष्टाधिकं दश । एते वर्जितभङ्गाः शेषाःशेषेषु ज्ञातव्याः ॥ ५ ॥ कति भदन्त ! संस्थानानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! पञ्च संस्थानानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा—परिमण्डलं वृत्तं त्र्यस्रं चतुरस्रमायतं च । परिमण्डलं भदन्त ! संस्थानं किं संख्येयमसं

ततियोयहोंतिदुपदेसे पढमोततियोनवमो एक्कारसमोयतिपदसे । दिवे भांगानो गाथाकहैछै प्रथमपरमाणुयो पहिलोभांगो तीजोभांगो दोयप्रदेशोछवे दिवे पहिलोतीजो नवमो इग्यारमो एतिप्रदेशोछवे खंधे भांगे १ । पढमोततियोनवमोदसमो एक्कारसोयबारसमो भंगा चउण्हसे तेवीसइमोय बोधव्वे । प्रथम तीजोनवमो दशमो इग्यारमो बारमो एतला भांगा ४ प्रदेशोखंधेछवे ते वीसमो पिण ४ प्रदेशोखधेछवे । पढमोततियो सत्तनवमदसमेक्कारसबार तेरसमो तेवीसचउव्वीसो पणवीसइमो पंचमए । पहिलो तीजो सातमो नवमो दसमो इग्यारमो बारमो तेरमो चवदमो तेवीसमो चउवीसमो पचवी समो । विचउत्थ पंचछठ्ठ पन्नरसोलंचसत्तरठ्ठ रं वीसेक्कवीसबावीसगंचवज्जेज्जछठ्ठंमि । ए ४ प्रदेशोस्कन्धनें दूजो चौथो पांचमो छठ्ठो पनरमो सोलमो सतर मो अठारमो वीसमो इक्कवीसमो बावीसमो एतले छ प्रदेशोयें विषे वर्जवा । विचउत्थ पंचछठ्ठं पन्नरसोलंचसत्तरठ्ठार बावीसइमविज्जू गा सत्तपएसम्मि खंधम्मि । दूजो चौथो पांचमो छठ्ठो पनरमो सोलमो सतरमो अठारमो बावीसमो एतलाभांगा सातमाप्रदेशखधविषे वर्जवा । विचउत्थ पंचछठ्ठं पन्नरसो लंचसत्तरठ्ठारं एते वज्जियभंगा सेसासंससुखंधेसु ६ ॥ २ । ४ । ५ । ६ । १५ । १६ । सतरमो १७ । १८ । एतलाभांगा वर्जवा शेषथाकताखधने विषे जाणि वा दिवे द्विप्रदेशो आदिखव चरमाचरमभेदखध ते वय योग्य परिमडलादि संस्थानें हुवें तेमाटे संस्थाननोवक्तव्यता कहैछै ६ ॥ कतिणं भते संठाणा पं०

॥ मूल ॥ ॥ अ० ॥ ॥ भाषा ॥

वक्तव्यतामाह-कइणं भंते ! संठाणा पन्नत्ता इत्यादि ॥ सुगमं' परिमण्डलादीनां संस्थानानां स्वरूपस्याद्यप्रथमपदएव सविस्तरं प्ररूपितत्वात्, शेषं पाठसिद्धं, नवरं॥ परिमण्डलेणं भंते ! संठाणे संखेज्जपएसोगाढे पुच्छा, गोयमा ! संखेज्जपएसोगाढे नो असंखेज्जपएसोगाढे नो अणंतपएसोगाढे इति ॥ यस्मात् तस्य संख्येयाएव प्रदेशा स्ततः कथमसंख्येयेष्वनन्तेषु वा प्रदेशेष्ववगाहते इति असंख्यातप्रदेशात्मकमनन्तप्रदेशात्मकं वा पुनः परिमण्डलसंस्थानं संख्येयेष्वसंख्येयेषु वा प्रदेशेष्ववगाहते विरोधाभावादनंतप्रदेशेषु असंख्यातप्रदेशात्मकस्यानन्तेषु प्रदेशेष्व वगा



वट्टे तंसे चउरंसे आयते य । परिमंडलाणं भंते ! संठाणा किं संखेज्जा असंखेज्जा अणंता ? गो० ! नो संखेज्जा नो असंखेज्जा अणंता । एवं जाव आयए । परिमंडलेणं भंते ! संठाणे किं संखेज्जपदेसिए असंखेज्जपदेसिए अणंतपदेसिए ? गोयमा ! सिय संखेज्जपदेसिए सिय असंखेज्जपदेसिए सिय अणंतपदेसिए



ख्येयमनन्तम् ? गौतम ! नो संख्येयं नो असंख्येयमनन्तम् । एवं यावदायतम् । परिमण्डलं भदन्त ! संस्थानं किं संख्येयप्रदेशिकमसंख्येयप्रदेशिकमनन्तप्रदेशिकम् ? गौतम ! स्यात्संख्येयप्रदेशिकं स्यादसंख्येयप्रदेशिक स्यादनन्तप्रदेशिकम् । एवं यावदायतम् । परिमण्डलं भदन्त ! संस्थानं संख्येयप्रदेशिकं किं संख्येयप्रदेशावगाढमसंख्येयप्रदेशावगाढमनन्तप्रदेशावगाढं ? गौतम ! संख्येयप्रदेशावगाढं नो असंख्येयप्रदेशावगा



गोयमा । केवला हे भगवन् संस्थान कह्या हे गौतम । पंचसठाणा पं० तं० परमंडलेवट्टंसचउरंसे आयए परिमंडलाणं भंते संठाणा किं संखिज्जा असंखिज्जा अणंता गोयमा । ५ संस्थानकहे परिमंडलचूडीनें आकार १ वर्तुल २ त्रिंश ३ चतुरंश ४ आयत ५ परिमंडलसंस्थानने हे भगवन् शुं कोइ संख्यातप्रदेश असंख्यातप्रदेश शुं अनंता हे गौतम । नो संखिज्जा नो असंखिज्जा अणंता एवं जाव आयया । नहीसंख्याता नहो असंख्याता अनन्ताछे इम जाणवो आयता । परिमंडलेणं भंते संठाणे किं संखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसिए अणंतपएसिए गोयमा । संस्थान परिमंडल शुं संख्यातप्रदेशीहुवे कि असंख्यातप्रदेशीहुवे कि अनंतप्रदेशीहुवे हे गौतम । सिय संखिज्जपएसिए सिय असंखिज्ज० सिय अणं० । कोइ संख्यातप्रदेशीहुवे कोइ असंख्यातप्रदेशीहुवे कोइ

इनाविरोधात्, अनन्तप्रदेशात्मकस्यापि विरोधस्य यस्माल्लोके व्यसङ्ख्यातप्रदेशात्मकत्व लोकादत्यत्र च पुद्गलानां सत्यसङ्ख्यात्व रूक्षत्वादनन्तप्रदेशिक मप्यसङ्ख्येषु प्रदेशेष्ववगाहते नानतेषु एवं वृक्षादीन्यपि सख्यानानि प्रत्यक्ष नावनीयानि, सङ्ख्यातप्रदेशा सङ्ख्यातप्रदेश नन्तप्रदेशपरिमण्डलादिसंस्था नचरमाचरमादिचिन्तायां निर्वचनसूत्राणि इत्यज्ञाया इव प्रत्येतव्यानि, अनेकावयवविभागात्मकत्वाविवक्षाया मचरमत्व चरमाणि चेति निर्वचनं

एव जाव आयते । परिमंडलेणं भंते ! संठाणे संखेज्जपदेसिए किं संखिज्जपदेसोगाढे असंखिज्जपदेसोगाढे अणंतपदेसोगाढे ? गोयमा ! संखेज्जपदेसोगाढे नो असंखेज्जपदेसोगाढे नो अणंतपदेसोगाढे । एवं जाव आयए । परिमंडलेणं भंते ! संठाणे असंखिज्जपदेसिए किं संखेज्जपदेसोगाढे असंखेज्जपदेसोगाढे अणंतपदेसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज्जपदेसोगाढे सिय असंखिज्जपदेसोगाढे नो अणंतपदेसोगाढे । एवं

ढं नो अनन्तप्रदेशावगाढम् । एव यावदायतम् । परिमण्डलं भदन्त ! सस्थानं असंख्येयप्रदेशिकं किं संख्येयप्रदेशावगाढमसंख्येयप्रदेशावगा ढमनन्तप्रदेशावगाढम् ? गौतम स्यात्संख्येयप्रदेशावगाढं स्यादसंख्ययप्रदेशावगाढं नो अनन्तप्रदशावगाढ मेव चैवायतम् । परिमण्डलं भ दन्त ! संस्थानमनन्तप्रदशिकं किं संख्येयप्रदेशावगाढमसख्येयप्रदेशावगाढमनन्तप्रदेशावगाढम् ? गौतम ! स्यात्संख्ययप्रदेशावगाढ स्यादसंख्य

अनन्तप्रदेशोढवे । एव जाव आयते परिमंडलेण भते संठाणे सांखेज्जपएसिए किं सांखेज्जपएसोगाढे असंखे० अणतपएसोगाढे गोयमा । इम आंतरो आयतलगी कहिवो परिमंडल हे भगवन् संस्थाने स्यं संख्यातप्रदशोढवे कि संख्यातप्रदशावगाढ असंख्यातप्रदशावगाढ कि अनन्त देशावगाढ हे गौतम । संखिज्जप मागाढे नो असंखिज्जपएसोगाढे नो अणंतपएसोगाढे । सख्यातावगाढछे पिण असख्यातप्रदेश वगाढ नही अनन्तप्रदशावगाढ नही । एव जाव आयते परिमंडलेणं भते संठाणे असंखिज्जपएसिए किं । इम आयतलगे कहिवो परिमंडलसंस्थाने हे भगवन् संख्यातप्रदेश कि । संखिज्जपएसोगा ढे असंखिज्जप० अणंतपएसोगाढे गोयमा । पिण संख्यातप्रदेशावगाढ पिण असख्यातप्रदशावगाढ कि अनतप्रदेशावगाढ हे गौतम । संखिज्जपएसोग

चेव णायते । परिमंडलेणं भंते ! संठाणे अणंतपदेसिए किं संखेज्जपदेसोगाढे असंखेज्जपदेसोगाढे अणंतपदेसोगाढे ? गोयमा ! सिय संखेज्जपदेसोगाढे सिय असंखेज्जपदेसोगाढे नो अणंतपदेसोगाढे । एवं जाव आयए । परिमंडलेणं भंते ! संठाणे संखेज्जपदेसिए संखेज्जपदेसोगाढे किं चरमे अचरमे चरमाइं अचरमाइं चरमंतपदेसा अचरमंतपदेसा ? गोयमा ! परिमंडलेणं संठाणे संखेज्जपदेसिए संखेज्जपदेसोगाढे नो चरमे नो अचरमे नो चरमाइं नो अचरमाइं नो चरमंतपदेसा नोअचरमंतपदेसा नियमा अचरमं च

यप्रदेशावगाढं नो अनन्तप्रदेशावगाढम् । एवं यावदायतम् । परिमण्डलं भदन्त ! संस्थानं संख्येयप्रदेशिकं संख्येयप्रदेशावगाढं किं चरमचरमं चरमाण्यचरमाणि चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशा ? गौतम ! परिमण्डलं संस्थानं संख्येयप्रदेशिकं संख्येयप्रदेशावगाढं नो चरमं नो अचरमं नो चरमाणि नोअचरमाणि नो चरमान्तप्रदेशा नो अचरमान्तप्रदेशा नियमादचरमञ्च चरमाणि च १' चरमान्तप्रदेशाश्चाचरमान्तप्रदे

॥ प्र० ॥

॥ भाषा ॥

ऊ सिय असंखेज्जपएसोगाढे नो अणंतपएसोगाढे । कोई संख्यातप्रदेशावगाढ कोई असंख्यातप्रदेशावगाढ नहीं अनन्तप्रदेशावगाढ । एव जाव आयते । परिमंडलेणं भंते संठाणे अणंतपएसिए किं संखिज्जपएसोगाढे । इम जीवगे आयत परिमंडलसंस्थाने सं अनन्तप्रदेशीहवे संख्यातप्रदेशावगाढछे । असंखिज्जप० अणंतपएसोगाढे गोयमा । असंख्यातप्रदेशावगाढ कि अनन्तप्रदेशावगाढ छे गौतम । सिय संखिज्जपएसोगाढे सिय असंखिज्जप० नो अणंतपएसोगाढे । कोइसंख्यातप्रदेशावगाढ कोई असंख्यातप्रदेशावगाढ नहीं अनंतप्रदेशावगाढ । एव जाव आयते परिमंडलेणं भंते संठाणे संखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसोगाढे किं । इम जीवगे आयत परिमडलसंस्थाने सं अनन्तप्रदेशीहवे संख्यातप्रदेशावगाढछे असंख्यातप्रदेशावगाढ कि । चरमे अचरमे चरमाणि अचरमाणि चरमंतपएसा गोयमा । चरमछे अचरमछे कि अचरमाचरम बहुवचने छे इम पाछलीपरि छ बोलकहवा छे गौतम । परिमंडले णं भंते संठाणे संखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसोगाढे नो चरमे । परिमडलसंस्थाने संख्यातप्रदेशी असंख्यातप्रदेशावगाढ नहीं चरम १ वचन । अचरमेच

रमाणिय १ चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय २ । एवं जाव आयते । परिमंडलेणं भंते ! संठाणे असंखे
ज्जपदेसिए संखेज्जपदेसोगाढे किं चरमे पुच्छा, गोयमा ! असंखेज्जपदेसिए संखेज्जपदेसोगाढे जहा संखे
ज्जपदेसिए । एवं जाव आयए । परिमंडलेणं भंते ! संठाणे असंखिज्जपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे । किं
चरमे पुच्छा, गोयमा ! असंखेज्जपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे नो चरमे जहा संखेज्जपदेसो गाढे । एवं जाव
आयए । परिमंडलेणं भंते ! संठाणे अणंतपदेसिए संखेज्जपदेसोगाढे किं चरमे पुच्छा, गोयमा ! तहेव



आश्च २, एवं यावदायतम् । परिमण्डलं भदन्त ! संस्थानमसंख्येयप्रदेशिकं संख्येयप्रदेशावगाढं किं चरमं पृच्छा, गौतम ! असंख्येयप्रदेशिकं
संख्येयप्रदेशावगाढं यथा संख्येयप्रदेशिकमेवं यावदायतम् । परिमण्डलं भदन्त ! संस्थानमसंख्येयप्रदेशिकमसंख्येयप्रदेशावगाढं किं चरमं पृ
च्छा, गौ० ! असंख्येयप्रदेशिकमसंख्येयप्रदेशावगाढं नो चरमं यथा संख्येयप्रदेशावगाढम् । एवं यावदायतम् । परिमण्डलं भदन्त ! संस्थानमनन्त
प्रदेशिकं संख्येयप्रदेशावगाढं किं चरमं पृच्छा, गौतम ! तथैव यावदायतम् । अनन्तप्रदेशिकमसंख्येयप्रदेशावगाढं यथा संख्येयप्रदेशावगाढ



रमाणि नो अचरमाणि नो चरमंतपएसा नो अचरमंतपएसा । अचरमनहो १ वचने बहुवचने अचरम ८ नहो चरमांतप्रदेशो नहो अचरमांतप्रदेश ।
नो अचरमंतपएसा नियमा अचरमवचरमाणिय चरम पएसाय अचरमंतपएसाय एवं जाव आयते । निसे अचरमांतकहिये चरमकहिये प्रदेशाश्रो चर
मांतप्रदेशकहिये इम रत्नप्रभानी परे जाव आयतलगे कहीये । परिमडलेणं भंते संठाणे असंखिज्जपएसिए संखिज्जपएसोगाढे किं चरमे पुच्छा गोयमा ।
परिमडलसंस्थाने हे भगवन् असंख्यातप्रदेशो संख्यातप्रदेशावगाढ चरमनो प्रश्न उत्तर हेगौतम । असंखिज्जपएसिए संखिज्जपएसोगाढे जहा संखिज्जप
एसिए एवं जाव आयते । असंख्यातप्रदेशो संख्यातप्रदेशावगाढने जिम संख्याता प्रदेशने कह्यो तिमहीज जाणिवो जावलगे आयत । परिमडलेण भंते संठा
णे असंखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसोगाढे किं चरमे पुच्छा गोयमा । परिमडले असंख्यातप्रदेशो असंख्यातप्रदेशावगाढने चरमनो प्रश्न उत्तर हेगौतम ।

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

जाव आयते। अणंतपदेसिए असंखेज्जपदेसोगाढे जहा संखेज्जपदेसोगाढे। एवं जाव आयते। परिमंडलस्सणं भंते! संठाणस्स संखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स अचरमस्सय चरमाणय चरमंतपदेसाणय अचरमंतपदेसाणय दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुयावा तुल्ला वा विसेसाहियावा? गोयमा! सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स संखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरमे, चरमाइं संखेज्जगुणाइं, अचरमं च चरमाणि य दोवि सिसेसाहियाइं। पदेस

॥ अ० ॥

मेवं यावदायतम्। परिमण्डलस्य भदन्त! संस्थानस्य सङ्ख्येयप्रदेशावगाढस्या चरमस्य च चरमाणाञ्च चरमान्तप्रदेशानां वा चरमान्तप्रदेशानां च द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा? गौतम! सर्वस्तोकः परिमण्डलस्य संस्थानस्य संख्येयप्रदेशिकस्य संख्यातप्रदेशावगाढस्य द्रव्यार्थतयैको ऽचरमश्चरमाण्यसंख्येयगुणानि, अचरमं च चरमाणि च द्वावपि

॥ भाष ॥

असंखिज्जपएसिए असंखिज्जपएसोगाढे नो चरिमे जहा संखिज्जपएसोगाढे। असंख्यातप्रदेशो असंख्यातप्रदेशावगाढ चरमइवे जिम असंख्यातप्रदेशावगाढ कह्यो। एवं जाव आयते परिमंडलेण भंते संठाणे अणंतपएसिए। इमजांलगे आयतपरिमंडले अनंतप्रदेशो। संखिज्जपएसोगाढे एवं जाव आयते परिमंडलस्सणं भंते संखिज्जपएसियस्स। संख्यातप्रदेशावगाढनें चरम अचरम इमजांलगें आयत परिमंडलने संख्यातप्रदेशीनें। असंखिज्जपएसोगाढस्स अचरमस्सय चरमाणय। असंख्यातप्रदेशावगाढने अचरमनें चरमनें। चरमंतपएसाणय अचरमंतपएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए। चरमांतप्रदेशने अचरमांतप्रदेशने द्रव्यथी प्रदेशथी। दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा। द्रव्यप्रदेशथी केहा २ थी थोडा छे गौतम। सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स संखिज्जपएसियस्स संखिज्जपएसोगाढस्स। सर्वथोडा परिमंडलना संख्यातप्रदेशीनें संख्यातप्रदेशावगाढनें। दव्वट्ठयाए एगे अचरिमेचरमा

मज्झिल्लसुत्ताह-परिमण्डलस्सणं भंते ! इत्यादि ॥ सुगमं, नवरं द्रव्यार्थतायाचिन्तायां चरमाणि ॥ संखेज्जगुणाइं इति ॥ सर्वात्मना परिमण्डलसंस्थानस्य सङ्घातप्रदेशात्मकत्वात्, असङ्घातप्रदेशस्यासङ्घातप्रदेशावगाढस्याल्पबहुत्वं रत्नप्रभाया इव भावनीयं, अनन्तप्रदेशकस्याप्यसङ्घातप्रदेशाव

ठयाए सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स संखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स चरिमंतपदेसा अचरिमंतपदेसा संखेज्जगुणा १ चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसा दोवि विसेसाहिया, दव्वठपदेसठयाए सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स संखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स दव्वठयाए एगे अचरमे, चरमाइं संखेज्जगुणाइं, अचरमं च चरमाणि य दोवि विसेसाहियाइं, चरमंतपदेसा संखेज्जगुणा अचरमंतपदेसा सं

विशेषाधिकानि । प्रदेशार्थतया सर्वस्तोकाः परिमण्डलस्य संस्थानस्य संख्येयप्रदेशिकस्य संख्येयप्रदेशावगाढस्य चरमान्तप्रदेशाः, अचरमान्तप्रदेशाः संख्येयगुणाः, चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशा द्वावपि विशेषाधिकाः । चरमान्तप्रदेशाः संख्येयगुणाः, अचरमान्तप्रदेशाः संख्ययगु

णि संखेज्जगुणानि अचरमंचचरमाणय दोविविसेसाहिया तिपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा । द्रव्यथो चरमादिथो संख्यातगुणाछे अचरमने चरमने ए दोय विशेषाधिकछवे त्रिप्रदेशथी सर्वथोडा। परिमंडलसंठाणस्स संखिज्जपएसियस्स संखिज्जपएसोगाढस्स चरमंतपएसा । परिमंडलनेसंख्यातप्रदेशीनेसंख्यातप्रदेशावगाहना चरमांतप्रदेशथी । अचरमंतपएसा संखि० चरमंतपएसाय । अचरमांतप्रदेशोसंख्याता चरम अचरमप्रदेश ए बे विशेषाधिकछवे । अचरमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया । इम सर्व रत्नप्रभानो परिभावनाकरिवो । दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स । द्रव्यार्थप्रदेशाश्री सर्वथोडा परिमंडलना असंख्यातप्रदेशो । संखिज्जपएसियस्स संखिज्जपएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरमेचरमाणि संखिज्जगुणानि । संख्यातप्रदेशावगाढने द्रव्यो १ वचने अचरम चरमथी संख्यातगुणा । अचरमंचरमाणय दोवि विसे० चरमंतपएसा संखिज्जगुणा । अचरमंचरम ए बे विशेषाधिकछवे चरमांतप्रदेशसंख्यातगुणाछे । अचरमंतपएसासंखे० चरमंतपएसाय अचरमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया । अचरमांतप्रदेशसंख्यातगुणा चरमांतप्रदेश अचर

गाढस्य नवरं संक्रमे अनन्तगुणा इति, क्षेत्रचिन्तातो यदा द्रव्यचिन्तां प्रति संक्रमणं तदा तानि चरमाण्यनन्तगुणानि वक्तव्यानि तद्यथा-स्व
ल्पत्वोवे एगे अचरमे चरमाइ खेत्तओ असंखेज्जगुणाइं, दव्वट्ठ अणंतगुणाइं अचरमं चरमाणि य दोवि विसेसाहियाइ इति ॥ तदेवं संस्थानान्यपि



खेज्जगुणा चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय दोवि विसेसाहिया । एवं वट्टतंसचउरंसआयएसुवि जोएयव्वं। परिमंडलस्सणं भंते ! संठाणस्स असंखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स अचरमस्स य चरमाणय चरमंतपदेसाणय अचरमंतपदेसाणय दव्वट्ठयाए पदेसट्ठयाए दव्वट्ठपदेसट्ठयाए कयरेकयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरमे, चरमाइं संखेज्जगुणाइं, अचरमंच चरमाणिय दोवि विसेसाहियाइं, पदेसट्ठयाए सव्वत्थोवा परिमं



णाः, चरमान्तप्रदेशाश्चाचरमान्तप्रदेशाश्च द्वावपि विशेषाधिकाः । एवं वृत्तव्यस्रचतुरस्रायतेष्वपि ज्ञातव्यम् । परिमण्डलस्य भदन्त ! संस्थान
स्या संख्येयप्रदेशिकस्य संख्येयप्रदेशावगाढस्या चरमस्य च चरमाणां च चरमान्तप्रदेशानां चाचरमान्तप्रदेशानां च द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया



मांतप्रदेश ए बे विशेषाधिकपणे । एवं वृत्तत्रिकोणचतुष्कोणायतेषु ज्ञातव्यं परमंडलसंस्थ । इम हुल चंग चोरंससंठाणे इम जोडियो परिमंडलनें । भंते संठा
णस्स असंखिज्जपएसियस्स संखिज्जपएसोगाढस्स । हे भगवन् असंख्यातप्रदेशीने संख्यातप्रदेशावगाढनें । अचरमस्सय चरमाणय चरमंतपएसाणय अचर
मंतपएसाणय । अचरमनें चरमनें चरमांतप्रदेशीने अचरमांतप्रदेशीने । दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठपएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा । द्रव्य
थी प्रदेशथी द्रव्यप्रदेशथी केहा थी थोडा छे गौतम । सर्वथोवा परमंडलस्स संठाणस्स असंखिज्जपएसियस्स संखिज्जपएसोगाढस्स । सर्वथोडा परिमण्ड
लसंस्थानें असंख्यातप्रदेशीने संख्यातप्रदेशावगाढने । दव्वट्ठयाए एगे अचरमे चरमाणि संखिज्जगुणानि । द्रव्यथी सर्वथोडा १ अचरमद्रव्ये तेहथी चरमसं
ख्यातगुणा । अचरमंचरमाणिय दोवि विसेसाहिया तिपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा संठाणस्स । अचरमनें चरम ए बे पाकलाथी विशेषाधिकद्रव्ये प्रदेशार्थे स

॥ मूल ॥

झलस्स संठाणस्स असंखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स चरमंतपदेसा अचरमंतपदेसा संखेज्जगुणा चरमंतपदेसाय अचरमंतपदेसाय दोवि विसेसाहिया, दव्वट्ठपदेसट्ठयाए सव्वत्थोवे परिमंडलस्स संठाणस्स असंखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरमे, चरमाइं संखेज्जगुणाइं, अचरमंच चरमाणिय दोवि विसेसाहियाइं, चरमंतपदेसा अचरमंतपदेसा संखेज्जगुणा, चरमंतपदेसाय अचरमंत

द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्यो ऽल्पावा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोकाः परिमण्डलस्य संस्थानस्या संख्येयप्रदेशिकस्य संख्येयप्रदेशावगाढस्य द्रव्यार्थतयैको चरमश्चरमाण्यसंख्येयगुणानि, अचरमश्च चरमाणि च द्वावपि विशेषाधिकानि, प्रदेशार्थतया सर्वस्तोकाः परिमण्डलस्य संस्थानस्यासंख्येयप्रदेशिकस्य संख्येयप्रदेशावगाढस्य चरमान्तप्रदेशाः, अचरमान्तप्रदेशाः संख्येयगुणाः, चरमान्तप्रदेशाश्चाचरमान्तप्रदेशाश्च द्वावपि विशेषाधिकाः । द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया सर्वस्तोकः परिमण्डलस्य संस्थानस्यासंख्येयप्रदेशिकस्य संख्येयप्रदेशावगाढस्य द्रव्यार्थतयैकोऽचरमः, चरमाण्यसंख्येयगुणानि, अचरमं च चरमाणि च द्वावपि विशेषाधिकानि, चरमान्तप्रदेशा अचरमान्तप्रदेशाः संख्येयगुणाः, चरमान्तप्रदेशाश्चाच

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

वंथोडा परिमण्डलना । असंखिज्जपएसियस्स संखिज्जपएसोगाढस्स चरमंतपएसा । असंख्यातप्रदेशीनें संख्यातप्रदेशावगाढनें चरमांतप्रदेशथी । अचरमंतपएसा संखि० चरमंतपएसाय अचरमंतपएसाय दोविविसेसाहिया । अचरमांतप्रदेशसंख्यातगुणा चरमांतप्रदेशानें अचरमांतप्रदेशनें ए बे विशेषाधिकछे । दव्वट्ठपएसट्ठयाए सव्वत्थोवा परिमंडलस्स संठाणस्स । द्रव्यार्थप्रदेशथी सर्वथोडा परिमण्डलना संस्थान । असंखिज्जपएसियस्स संखिज्जपएसोगाढस्स दव्वट्ठयाए एगे अचरमे । असंख्यातप्रदेशीनें संख्यातप्रदेशावगाढनें द्रव्यथी १ अचरमछे । चरमाणिसंखेज्जगुणाणि अचरमाणय दोविविसेसाहिया तेहथी चरमसंख्यातगुणा अचरमांतचरम ए बे विशेषाधिक । चरमंतपएसासंखि० अचरमंतपएसा संखे० । चरमांतप्रदेश संख्यातगुणा अचरमांतप्रदेशो संख्यातगुणा । चरमंतपएसाय अचरमंतपएसाय दोवि विसेसाहिया । चरमांतप्रदेशोनें अचरमांतप्रदेशोनें ए बे विशेषाधिकछे । एवं जाव आयत

पदेसाय दोवि विसेसाहियावा । एवं जाव आयते । परिमंडलस्सणं भंते ! संठाणस्स असंखेज्जपदेसियस्स असंखेज्जपदेसोगाढस्स अचरमस्स चरमाणय चरमंतपदेसाणय अचरमंतपदेसाणय दव्वट्ठयाए पदेसट्ठया ए कयरेकयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! जहा रयणप्पभाए अप्पाबहुयं तहेव निरवसेसं भाणियव्वा एवं जाव आयए । परिमंडलस्सणं भंते ! संठाणस्स अणंतपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स अचरमस्स य ४ दव्वट्ठयाए ३ कयरेकयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गो० ! जहा संखेज्जपदेसियस्स संखेज्जपदेसोगाढस्स

मूल ।

रमान्तप्रदेशाश्च द्वावपि विशेषाधिकाः । एवं यावदायतं । परिमण्डलस्य भदन्त ! संख्यानस्य संख्येयप्रदेशिकस्यासंख्येयप्रदेशावगाढस्याचरमस्य चरमाणां च चरमान्तप्रदेशानां चाचरमान्तप्रदेशानां च द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! यथा रत्नप्रभायामल्पबहुत्वं तथैव निरवशेषं ज्ञातव्यं । एवं यावदायतम् । परिमण्डलस्य भदन्त ! संख्यानस्यानन्तप्रदेशिकस्य संख्येयप्रदेशावगाढस्याचरमस्य च ४ द्रव्यार्थतया प्रदेशार्थतया द्रव्यार्थप्रदेशार्थतया कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा तुल्या वा बहुका वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! यथा

॥ अ० ॥

परिमंडलरसयं भंते संठा॰रस । इम जांगमें आयण परिमण्डलना हे भगवन् । असंखिज्जपएसियस्स असंखिज्जपएसोगाढस्स अचरमस्स्य चरमाणय चरमंतपएसाणय । असंख्यातप्रदेशीने असंख्यातप्रदेशावगाढने अचरमने चरमने चरमांतप्रदेशने । अचरमंतपएसाणय दव्वट्ठयाए पएसट्ठयाए दव्वट्ठएसट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा । अचरमांतप्रदेशने द्रव्यार्थप्रदेशार्थे द्रव्यप्रदेशथी केहा २ थी थोडा ४ हे गौतम । सव्वत्थोवा एवं जहा रयणप्पभाए अप्पाबहुगं तहेव निरवसेसं भाणियव्वं । सर्वथोडा इम जिम रत्नप्रभानो अल्पबहुत्वनो तिमहीज निरवशेष पणे कहिवो । एवं जाव आयए आयते परिमंडलरसयं भंते संठाणरस अणंतपएसियरस संखेज्जपएसोगाढस्स । इम जांगमें आयत परिमण्डलसंस्थाने हे भगवन् अनन्तप्रदेशीने संख्यातप्रदेशावगाढने अचरमरसय दव्वट्ठयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गोयमा । अचरमने द्रव्यार्थे केहा २ थी थोडा ४ हे गौतम । सव्वत्थोवा एवं जहा संखेज्जपएसि

॥ भाषा ॥

चरमाचरमादिविभागेन चिन्तितानि सम्प्रति जीवादीन् चरमाचरमविभागेन चिन्तयति-जीवेणं भंते ! गतिचरमेणं किं चरमे इत्यादि ॥ गतिप

॥ टीका ॥

नवरं संक्रमेणं अणंतगुणा, एवं जाव आयए । परिमंडलस्सणं भंते ! संठाणस्स अणंतपदेसियस्स असंखेज्जपदेसोगाढस्स अचरमस्स ४ कहा रयणप्पभाए नवरं संक्रमे अणंतगुणा। एवं जाव आयए। जीवेणं भंते ! गतिचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे। नेरइयाणं भंते ! गतिचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे। एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। नेरइया

॥ मूल ॥

सङ्ख्येयप्रदेशिकस्य संख्येयप्रदेशावगाढस्य नवरं सङ्क्रमणेनानन्तगुणाः, एवं यावदायतम् । परिमण्डलस्य भदन्त ! संस्थानस्यानन्तप्रदेशिकस्या संख्येयप्रदेशावगाढस्या चरमस्य चरमाणि चरमान्तप्रदेशानां चाचरमान्तप्रदेशानां च यथा रत्नप्रभायां नवरं सङ्क्रमे अनन्तगुणाः । एवं याव दायतम् । जीवो भदन्त ! गतिचरमेण किं चरमो चरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्यादचरमः । नैरयिको भदन्त ! गतिचरमेण किं चरमोऽचर मः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्यादचरमः, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकः । नैरयिका भदन्त ! गतिचरमेण किं चरमा अचरमाः ? गौतम ! चर

॥ अ० ॥

यस्य संखिज्जपएसोगाढस्स । सर्वथोडा इमजिम सङ्ख्यातप्रदेशोने संख्यातप्रदेशावगाढने । नवरं संक्रमेणं अणंतगुणा एवं जाव आयते परिमंडलसंठाणस्स अं ते संठाणस्स अणंतपएसियस्स । एतलो विशेष संक्रमने अनन्तगुणा ए चेव चिंतावे जिवारें द्रव्याथी संक्रमाणि अनन्तगुणा कहियें इम जांलगे आयत परिमण्डलने अनन्तप्रदेशीने । असंखिज्जपएसोगाढस्स अचरमस्स जहा रयणप्पभाए । असंख्यातप्रदेशावगाढने चरमादि चारबोल ते जिम रत्नप्रभाये कह्यो छे तिम जाणिवो । नवरं संक्रमेणं अणंतगुणा एवं जाव आयते जीवेणं भंते गतिचरमेणं किं चरमे अचरमे गोयमा । ए विशेष संक्रमणने सम्बंधे अनन्तगुणा कहियें इम आयत संस्थानलगें कहिवो बीजाचरमायो चरमचिंतवे जीवने निःपर्याय रूपायो चरमकें अचरम हे गौतम । सिय चरमे सिय अचरमे नेरइयाणं भंते गतिचरमेणं किं चरमे अचरमे गोयमा । कोई चरम कोई अचरम समर्थाये मनुष्यगतिरूपेपर्याये वर्त्तते आंतरे कांई गति पर्याय

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

र्यायरूपं चरमं गतिचरमं तेन जीवो भदन्त ! चिरत्यमानः किं चरमोऽचरमो ? भगवानाह-गौतम ! स्याच्चरमः स्यादचरमः, कश्चिच्चरमः कश्चिद चरम इत्यर्थः, तत्र यः पृच्छासमये सामर्थ्यान्मनुष्यगतिरूपे पर्याये वर्त्तमानानन्तरं नाकमपि गतिपर्यायमवाप्स्यति किंतु मुक्तौएव भविता स ग तिचरमः शेषस्त्वगतिचरम इति ॥ नेरइएणं भंते गइचरमे इत्यादि ॥ नैरयिको भदन्त ! गतिचरमेण सामर्थ्यो नरकगतिपर्यायरूपेण चरमेण चि न्त्यमानः किं चरमो ऽचरमोवा ? भगवानाह-गौतम ! स्या च्चरमः स्यादचरमो नरकगतिपर्यायादुद्वृत्तो भूयोपि नरकगतिपर्यायमलप्स्यते, स चरमः शेषस्त्वचरमः, एवं चतुर्विंशतिदण्डकक्रमेण निरन्तरं तावद्वक्तव्यं यावद्वैमानिकसूत्रं। बहुवचनदण्डकसूत्रे निर्वचनं ॥ चरमावि अचरमावि इति ॥ पृच्छासमये केचन नैरयिका स्तेषां मध्ये ऽवश्यं केचन नैरयिकगतिपर्यायेण चरमा इतरेत्वचरमा स्तत एकमेवेदमत्र निर्वचनं, चरमाअपि अचरमाअपि एवं सर्वस्थानेष्वपि तां तां गतिमधिकृत्य भावनीयं ॥ नेरइएणं भंते ! ठिइचरमेणं इत्यादि ॥ नैरयिको भदन्त ! तत्रैव नरकेषु चरम

णं भंते ! गतिचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि। एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। नेरइएणं ठितीचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे। एवं निरंतरं जा

॥ मूल ॥

मा अपि अचरमा अपि, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकाः। नैरयिको भदन्त ! स्थितिचरमेण किं चरमो चरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्याद चरमः, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकः। नैरयिका भदन्त ! स्थितिचरमेण किं चरमा अचरमाः ? गौतम ! चरमा अपि अचरमा अपि, एवं

॥ अ० ॥

नहीं पामे मुक्तिजास्ये ते गति चरमकहिये शेषकाले गति अचरमकहिये नारकोने गति चरमकहिये कि अचरमकहिये हे गौतम। सिय चरमे सिय अचरमे एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। चरमने अचरमने किम नरकना पर्यायछेदोने केवलीनरकेनही जाव ते गति चरमकहिये जे वली जास्येने अचरमकहिये इम २४ दंडके भावना करवी वैमानिकपर्यंत। नेरइआणं भंते गतिचरमेणं किं चरमा अचरमा गोयमा चरमावि अचरमावि एवं निरं तरं जाव वैमाणीय। नारकोने १ वचने स्थितिपर्यायथी अचरम हे गौतम कोइ चरमहोय कोइ अचरमहोय इम २४ दंडके कहिवो वैमानिकलगें।

॥ भाष ॥

समये स्थितिपर्यायरूपे चरमेण चिन्त्यमानः किं चरमोचरमोवा ? भगवानाह-स्याच्चरमः स्यादचरमः किमुक्तं भवति यो नूयोऽपि नरकमागत्य स्थितिचरमसमयं प्राप्स्यति सोचरमः शेषस्तु चरमः, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिको, बहुत्वदण्डकचिन्तायां॥ चरमावि अचरमावि इति॥ इह ये पृच्छासमये स्थितिचरमसमय प्राप्स्यति सोचरमः शेषस्तु चरमः । एवं निरन्तरं याव द्वैमानिको, बहुत्वदण्डकचिन्तायां चरमावि अचरिमावि इति ॥ इह ये पृच्छासमये स्थितिचरमसमये वर्त्तन्ते ते चिन्त्यन्ते इत्येतन्न अन्यथा उद्वर्त्तनाया विरहस्यापि सम्भवात्, एकादीनामपि चोद्वर्त्तनाया भावात् चरमावित्रचरमावीत्युभयत्राप्यवद्यं भाविनां बहुवचनेन निर्वचनं नोपपद्येत किंतु ये पृच्छासमये वर्त्तते ते क्रमेण स्व २ स्थितिचरमसमयं प्राप्ताः

॥ टीका ॥

व वेमाणिया । नेरइयाणं भंते ! ठितीचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइयाणं भंते ! भवचरमेणं किं चरमे किं अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे यिय अचरमे । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइयाणं भंते ! भवचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गो

॥ मूल ॥

निरन्तरं यावद्वैमानिकाः । नैरयिको भदन्त ! भवचरमेण किं चरमोऽचरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्यादचरमः, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकः । नैरयिका भदन्त ! भवचरमेण किं चरमा अचरमाः ? गौतम ! चरमा अप्यचरमा अपि, एवं निरन्तर यावद्वैमानिकाः । नैरयिको भद

॥ अ० ॥

नेरइयाणं भंते ठितीचरमेणं किं चरमे अचरमे गोयमा । नारकोनें बहुवचने स्थितिचरम कि अचरमछोय हे गौतम । सियचरमे सिय अचरमे एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । कोइचरम कोइ अचरम जे वलीनरकमें आवीछेहलो समयपामें ते चरमकहिये बीजा अचरम इमनिरंतरं जाव वैमानिकवासी लगें । नेरइयाणं भंते ठितीचरमेणं किं चरमा अचरमा गोयमा । नारकोनें १ वचने हेभगवन् स्थिति आश्री चरमकें अचरम हे गौतम । चरमावि अचरमावि एवं निरंतरं जाव वेमाणीया नेरइयाणं भंते किं भवचरमेणं चरमे अचरमे गोयमा । चरमपिण होय अचरमपिण होय नारकोनें बहुवचने भगवन् इम निरंतर जाव वैमानिक कि चरमाओके अचरम हे गौतम । सियचरमे सिय अचरमे एवं जाव वेमाणीया नेरइयाणं भंते किंभवचरमेणंचरमा कि

॥ भाषा ॥

संत स्तेन रूपेण चरमा अचरमावा इत्येतच्चिन्तनेन उपपद्यते, यथोक्तं निर्वचनमिति, भवचरमसूत्रगतिचरमसूत्रवत् ॥ नेरइएणं भंते ! भासाचर
मेत्यादि ॥ भाषाचरमं चरमा भाषा ततोयमर्थः-नैरयिको भदन्त ! चरमाया ऽचरमयाभाषया किं चरमोऽचरमोवा शेषं सुगमं, बहुवचनसू



यमा ! चरमावि अचरमावि । एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइयाणं भंते ! भासाचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइयाणं भंते ! भासाच
रमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि, एवं एगिंदियवज्जं जाव वेमाणिया । नेर
इएणं भंते ! आणापाणुचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे, एवं निरंतरं जा
व वेमाणिए । नेरइयाणं भंते ! आणापाणुचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि,



न्त ! भाषाचरमेण किं चरमो चरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्यादचरमः, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकः । नैरयिको भदन्त ! भाषाचरमेण किं
चरमा अचरमाः ? गौतम ! चरमा अपि अचरमा अपि' एवमेकेन्द्रियवर्जं यावद्वैमानिकाः । नैरयिको भदन्त ! आनप्राणचरमेण किं चरमो
चरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्यादचरमः' एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकः । नैरयिका भदन्त ! आनप्राणचरमेण किं चरमा अचरमाः ? गौत



अचरमा गोयमा । कोइ चरम कोइ अचरमहोय इम निरन्तर जांणगे वैमानिकवासी नारकोने एकवचने चरमहोय कि अचरमहोय हे गौतम ।
चरमावि अचरमावि एवं निरंतरं जाव वेमाणिया नेरइयाणं भंते किं भासाचरमेणं चरमे अचरमे गो० । चरमपिणहोय अचरमपिणहोय इमजांणगे वै
मानिकवासी नारकोने हे भगवन् अचरम कि चरम भाषाओ हे गौतम । सियचरमे सिय अचरमे एवं निरंतरं जाव वेमाणिया नवरं एगिंदियवज्जंभा
णियव्वं नेरइयाणं भंते भासाचरमेणं किं चरमा अचरमा गोयमा । चरमपिण होय अचरमपिण होय इम विमानवासीलगे कहिवो नारकोने हे भगवन्
भाषाओ चरमहोय कि अचरमहोय हे गौतम । चरमावि अचरमावि एवं निरंतरं जाव वेमाणिया नवरं एगिंदियवज्जंभा० । चरमपिणहोय अचरम

एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइएणं भंते ! आहारचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गो० ! सिय चरमे सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइयाणं भंते ! आहारचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गो० ! चरमावि अचरमावि, एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइयाणं भंते ! भावचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गो० ! सिय चरमे सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइयाणं भंते ! भावचरमेणं किं चरमा

म ! चरमा अप्यचरमा अपि, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकाः । नैरयिको भदन्त ! आहारचरमेण किं चरमो चरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्याद्चरमः' एवंनिरन्तरं यावद्वैमानिकः । नैरयिका भदन्त ! आहारचरमेण किं चरमा अचरमाः ? गौतम ! चरमा अप्यचरमा अपि, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकाः । नैरयिको भदन्त ! भावचरमेण किं चरमोऽचरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्याद्चरमः, एवं निरन्तरं यावद्वैमानि

पिणहोय इमजालगें वैमानिकवालोलगें ए विशेष एकेंद्रियवर्जीनें मघले दंडकेजाणवा । नेरइएणं भंते आणापाणचरमेणं किंचरमे अचरमे गो० । नारकी नें स्वामी स्वामाथी हे भगवन् चरम के अचरम हेगो० । सियचरमे सिय अचरमे एवं निरंतरं जाव वेमाणिया नेरइयाणं भंते आणापाणचरमेणं किं चरमा अचरमा गोयमा । कांइ चरम कांइ अचरम इम वैमानिकदामालगें कहिवो नारकीनें हे भगवन् स्वामी स्वामाथी चरम कि अचरम हेगौतम । चरमावि अचरमावि एवं निरंतर जाव वेमाणिया । चरमपिणहोय अचरमपिणहोय इमविमान मालगेकहिवो । नेरइयाणं भंते आहारचरमेण किं चरमे अचरमे गोयमा । नारकीनें हे भगवन् आहाराथी चरम कि अचरम हेगौतम । सियचरमे सिय अचरमे एवं निरंतर जाव वेमाणिया नेरइयाण भंते आहारचरमेणं किं चरमा अचरमा गोयमा । कांइचरमहोय कांइअचरमहोय इम वैमानिकलगेंकहिवो नारकीनें हेभ० आहाराथी चरमके अचरमहोय हेगौतम । चरमावि अचरमावि एवं निरंतरं जाव वेमाणिया नेरइयाणं भंते भावचरमेण किं चरमे अचरमे गोयमा । चरमपिण अचरमपिण इम निरंतर वैमानिकलगे कहिवो नारकीनें हे भगवन् भावाथी चरमहोय के अचरम हे गौतम । सियचरमे सिय अचरमे एवं निरंतरं जाव वेमाणिया ।

॥ मूल ॥

अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि, एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। नेरइयाणं भंते ! वण्णचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइयाणं भंते ! वण्णचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा चरमावि अचरमावि, एवं निरंतरं जाव वेमाणिया। नेरइयाणं भंते ! गंधचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए। नेरइयाणं भंते ! गंधचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि, एवं निरंतरं

॥ अ० ॥

कः । नैरयिका भदन्त ! भावचरमेण किं चरमा अचरमाः ? गौतम ! चरमा अप्यवरमा अपि । एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकाः । नैरयिको भदन्त ! वर्णचरमेण किं चरमोऽचरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्यादवरम , एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकः । नैरयिका भदन्त ! भावचरमेण किं चरमा अचरमाः ? गौतम ! चरमा अप्यवरमा अपि, एवं निरन्तर यावद्वैमानिकाः । नैरयिको भदन्त ! गन्धचरमेण किं चरमोऽचरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्यादचरमः, एव निरन्तरं यावद्वैमानिकः । नैरयिका भदन्त । गन्धचरमेण किं चरमा अचरमाः ? गौतम ! चरमा अप्य

॥ भाषा ॥

कोइं चरमहोय कोइं अचरमहोय इम वैमानिकलगै कहिवो । नेरइयाण भंते भावभावचरमे किं चरमा अचरमा गोयमा । नारकौने हे भगवन् भावाश्रौ चरमहोय कै अचरमहोय कि हे गौतम । चरमावि अचरमावि एव निरंतरं जाव वेमाणिया नेरइयाणं भंते वण्णचरमेणं किं चरमे अचरमे गोयमा । चरमपिण अचरमपिण होय इम जांलगै वैमानिक नारकौने हे भगवन् वर्णचरमहोय कि अचरमहोय हे गौतम । सियचरम सिय अचरमे एवं जाव निरंतरं वेमाणिया नेरइयाणं भंते वण्णचरमेणं किं चरमा अचरमा गोयमा । कोइं चरमहोय कोइं अचरमहोय इम जांलगै वैमानिक नारकौने हे भगवन् गंधाश्रौ चरमहोय कि अचरमहोय हे गौतम । चरमावि अचरमावि एव निरंतरं जाव वेमाणिया नेरइयाणं भंते गंधचरमेणं किं चरमे अचरमे गोयमा । कोइं चरमहोय कोइं अचरमहोय इम जांलगै वैमानिक नारकौन हे भगवन् गन्धाश्रौ चरमहोय अचरमहोय कि हे गौतम । सियचरम सिय

जाव वेमाणिया । नेरइएणं भंते ! रसचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइयाणं भंते ! रसचरमेणं किं चरमा अचरमा ? गोयमा ! चरमावि अचरमावि, एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । नेरइएणं भंते ! फासचरमेणं किं चरमे अचरमे ? गोयमा ! सिय चरमे सिय अचरमे, एवं निरंतरं जाव वेमाणिए । नेरइयाणं भंते ! फासचरमेणं किं चरमा अचरमा ?

चरमा अपि, एव निरन्तरं यावद्वैमानिकाः । नैरयिको भदन्त ! रसचरमेण किं चरमो चरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्यादचरमः, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकः । नैरयिका भदन्त ! रसचरमेण किं चरमा अचरमाः ? गौतम ! चरमा अप्यचरमा अपि, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकाः । नैरयिको भदन्त ! स्पर्शचरमेण किं चरमोचरमः ? गौतम ! स्याच्चरमः स्यादचरमः, एवं निरन्तरं यावद्वैमानिकः । नैरयिका भदन्त !

अचरमे एवं निरंतरं जाव वेमाणिया नेरइयाणं भंते गंधचरमेणं किं चरमा अचरमा गोयमा । कोई चरमहोय कोई अचरम इम जांलगे वैमानिक नारकोने हे भगवन् गन्धाश्रो चरमहोय अचरमहोवै कि हे गौतम । चरमावि अचरमावि एवं निरंतर जाव वेमाणिया नेरइयाणं भंते रसचरमेणं किं चरमे अरम चरमे गोयमा । चरमपिण अचरमपिण इम जांलगै वैमानिकतांई नारकोने हे भगवन् रसकरोचरमके अचरम हे गौतम । सिय चरमे सिय अचरम एवं निरंतरं जाव वेमाणिया नेरइयाणं भंते रसचरमेणं किं चरमा अचरमा गोयमा । कोई चरम कोई अचरम इम जांलगे वैमानिकतांई नारकोनेहे भगवन् रसचरम चरमकें अचरम हे गौतम । चरमावि अचरमावि एवं निरंतरं जाव वेमाणिया । चरमपिण होय अचरमपिणहोय इम जांलगे वैमानिकतांई । नेरइयाणं भंते फासचरमेणं किं चरम अचरमे गोयमा । नारकोने हे भगवन् स्पर्श आश्रो चरमहोय के अचरम हे गौतम । सिय चरमे सिय अचरमे एवं निरंतर जाव वेमाणिया । कोई चरमपिण होय अचरमपिण होय इम जांलगे वैमानिकतांई । नेरइयाणं भंते फासचरमेणं किं चरमा अचरमा गोयमा । नारकोने हे भगवन् फासाश्रो चरमहोय के अचरम हे गौतम । चरमावि अचरमावि एवं जाव वेमाणिया संवयणगाहा । कोई

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

वे प्रज्ञापनार्थो ये पृच्छासमये सारका स्ते स्वकालक्रमेण चरमां भाषां प्राप्ताः सन्तः तया चरमया भाषया चरमा अचरमा वा इति, ततो निर्वचनसूत्रमप्युपन्नं एवमुच्छ्वासाहारसूत्रेऽपि भावनीयं भावऔदयिकः शेषं सुगमं ॥ इति श्रीमलयगिरिविरचितायां प्रज्ञापनाटीकायां दशमं चरमास्यं पदं समाप्तम् ॥ १० ॥ तदेवं व्याख्यातं दशमं पदमिदानीमेकादशमारभ्यते-तस्य चायमभिसम्बन्ध इहानन्तरपदे सत्वानां यदुपपातक्षेत्रं रत्नप्रभादि तस्य चरमाचरमविभागप्रतिपादित इह भाषापर्याप्तानां सत्यादिभाषाविभागोपदर्शनं क्रियते, तत्रेदमादिसूत्रं-से



गोयमा ! चरमावि अचरमावि, एवं जाव वेमाणिया । संग्गहणी गाहा—गतिठितिभवेयभासा आणापाणुचरमेयबोधव्वा आहारभावचरमे वन्नरसगंधफासेय ॥ १ ॥ चरमपदं समत्तं ॥ १० ॥ सेनूणं भंते ! मन्नामीति ओहारणी भासा चिंतेमी ति ओहारणीभासा अहमन्नामीति ओहारणी भासा अह



स्पर्शचरमेण किं चरमा अचरमाः ? गौतम ! चरमा अप्यचरमा अपि एवं यावद्वैमानिकाः । सङ्ग्रहणिगाथा-गतिः स्थितिर्भवेद्भाषा- नप्राणश्चरमंतथा । हारो भावोवर्णरसौ गन्धःस्पर्श स्तथैवच ॥ १ ॥ इति श्री वाचनाचार्य श्री रामचन्द्र गणि शिष्य नानकचन्द्रेण विरचिते प्रज्ञापनानुवादे चरमपदं दशमं समाप्तम् ॥ १० ॥ अथ नूनं भदन्त ! मन्ये ऽवधारिणी भाषा, चिन्तयाम्यवधारिणी भाषा, अर्थे



चरमहोय कोई अचरम इम जांणवे वैमानिकतांई हिवे संग्रहणगाथा कहैछै । गतिठितिभवेयभासा आणापाणुयचरमेबोधव्वे आहारभावचरमे वन्न रसगंधफासेय ॥ १ ॥ गति १ स्थिति २ भव ३ भाषा ४ आनपान ५ चरमपांच कह्या आहारभाव ६ ७ चरम जांणवा वर्ण ८ रस ९ गंध १० स्पर्श ११ चरम ११ जांणिवा । पन्नवणाए दसमं चरमपयं समत्तं ॥ इति प्रज्ञापना भगवतीमांहि दशमे पदे चरमादि भावकह्या सर्व जीवनां उपपात नरकादिकनां कह्यो ॥ १० ॥ सेनूणं भंते मन्नामीति ओहारिणीभासा चिंतेमीति ओहारिणीभासा । हिवे ११ पदे भाषा पर्याप्तानीसत्यादि ४ भाषादेषालछै ते निश्चै हे भगवन् इम मानूंछुं भाषायें ते भाषा चिंतवुंछुं ते भाषा अर्थमानूंछुं । अहमन्नामीति ओहारणीभासा अहंचिंतेमीति ओहा०

नूणं भंते ! मण्णामिइतिउहारिणीभासाइत्यादि ॥ सप्तष्टो ऽथशब्दार्थः, सच वाक्योपन्यासे नूनमुपमानावधारणतर्कप्रश्नहेतुषु इहावधारणे, भदन्त ! इत्यामंत्रणे मन्ये ऽवबुध्य इति एवं यदुत अवधारिणी भाषा अवधार्यते अवगम्यते ऽर्थो ऽनयेत्यवधारिणी अवबोधबीजभूता इत्यर्थः, भाष्यते इति भाषा, तद्योग्यतयापरिणामितनिसृष्टनिसृज्यमानद्रव्यसंहतिः सपः पदार्थः, वाक्यार्थः पुनरयं-अथ भदन्त ! एव महं मन्य यदुतावश्यमवधारिणी भाषेति नचैवत् सकृदनालोच्यैव मन्ये किन्तु चिन्तयामि युक्तिद्वारेणापि परिभावयामीति एवं यदुत अवधारणीभाषेति एव मात्मीयमभिप्राय भगवते निवेद्या धिकृतार्थविनिश्चयनिमित्तमेवं भगवंतं पृच्छति-अहमन्नामी ॥ इह उहारिणीभासा इति इह अथ प्रक्रियाप्रश्नानन्तर्यमंगलोपन्यास प्रतिवचनसमुच्चयेषु, इह प्रश्ने काङ्काचास्य सूत्रस्य पाठ स्ततो यमर्थ अथ भगवन्नवमहं मन्ये एवमहं मननं कुर्या यथा अवधारिणीभाषेति द्वितीया भिप्रायनिवेदनमधिकृत्य प्रश्नमाह-अहचिन्तेमीउहारिणीभासाइति ॥ अथ भगवान् एवमहं चिन्तयामि एवमहं चिंतनं कुर्या यदुतावधारिणी भा

---

षेति निरवद्य मेतदित्याभिप्रायः, सम्प्रतिपृच्छासमयात् यथापूर्वं मननं चिंतनं वा कृतवानिदानीमऽपि पृच्छासमये तथैव मननं चिंतनं वा करो मि नान्यथेति भगवतो ज्ञानेन संवादयितुं कामः पृच्छति-तहमन्नामीइ उहारिणी भासा तह चिंतेमि उहारिणी भासा ॥ तथाइति समुच्चय निर्दे शावधारणनिश्चयसादृश्यप्रेष्येषु इह निर्देशे काङ्काचास्यापि पाठ स्ततः प्रश्नार्थत्वावगतिः भगवन् ! यथापूर्वं मतवानिदानीमप्यहं तथामन्य इति एवं यदुत अवधारिणी भाषेति किमुक्तं भवति तदानींतनमननस्य पूर्वमननस्य च मदीयस्य कश्चिद्विशेषो ऽस्त्येतद्भगव न्निति यथा पूर्वं भगवन् चिन्तित वान् इदानीमप्यहं तथाचिन्तयामीति एवं यदुत अवधारिणीभाषेति अस्त्येतदिति एवं गौतमेनाभिप्रायनिवेदने प्रश्ने कृते भगवानाह-हता गोय मा ! मन्नामीइ उहारिणी भासा इति ॥ हतेति सम्प्रेषणप्रत्यवधारणविवादेषु' इह प्रत्यवधारणे मन्नामीत्यादीनि क्रियापदानि प्राकृतशैल्या च्छा न्दसत्वात् युष्मदर्थेपि प्रयुज्यंते ततोयमर्थः-हतागौतम ! मन्यसे त्वं यदुत अवधारिणीभाषेति जानाम्यहं केवलज्ञानेनेदमित्याभिप्रायः, तथाचि

चिंतेमीति उहारणी भासा तहमण्णामीति उहारणीभासा तह चिंतेमीति उहारणीभासा ? हंता गोयमा ! मण्णामीति उहारणी भासा। चिंतेमित्ति उहारणी भासा, उह मन्नामीति उहारणी भासा, उहचिंतेमीति उहारणी भासा, तह मन्नामीति उहारणी भासा, तह चिंतेमीति उहारणी भासा। उहारणीए भंते ! भासाए किं सच्चा मोसा सच्चामोसा असच्चामोसा ? गोयमा ! सिय सच्चा सिय मोसा सिय सच्चामोसा

वं मन्ये ऽवधारिणी भाषेति, अथैवं चिन्तयाम्यवधारिणी भाषेति, तथा मन्ये ऽवधारिणी भाषेति, तथा चिन्तयाम्यवधारिणी भाषेति ? हन्त गौतम ! मन्ये ऽवधारिणी भाषेति, चिन्तयाम्यवधारिणी भाषेति, अथ मन्ये ऽवधारिणी भाषेति, अथ चिन्तयाम्यवधारिणी भाषेति, तथा मन्ये ऽवधारिणी भाषेति तथा चिन्तयाम्यवधारिणी भाषेति, अवधारिणी भदन्त ! भाषा किं सत्या मृषा सत्यमृषा असत्यामृषा ४ ? गौतम ! स्यात्सत्या स्यान्मृषा स्यात्सत्यामृषा स्यादसत्यामृषा । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-अवधारिणी भाषा स्यात्सत्या स्यान्मृषा





तहमण्णामीति ७० । ते अवधारणीभाषा अवबोध भूत अर्थं चिंतयितुं अवधारणीभाषा । तहचिंतेमीति ७० हंता गोयमा मण्णामीति उहारणीभासा । तिमचिंतयितुं अवधारणीभाषा भगवंतकहै हां गौतम मान्तुं अवधारितुं भाषा । चिंतेमी उहा० अहमण्णामीति ७० अहंचिंतेमीति ७० तहमण्णामीति ७० तहचिंतेमीति ७० । चिंतयितुं अवधारितुं भाषा अथमान्तुं अवधारितुं भाषा तिम चिंतयितुं अवधारणीभाषा । उहारणीए भंते भासा किं सच्चा मोसा सच्चामोसा असच्चामोसा गोयमा । हे भगवन् भाषा किम सत्या १ मृषा २ सत्यामृषा ३ के असत्य मृषा ४ हे गौतम । सियसच्चा सियमोसा सिय सच्चामोसा सिय असच्चामोसा सेकेणट्ठेणं भंते ए० । कोइं सत्या १ कोइं मृषा २ कोइं सत्यामृषा ३ कोइं असत्यामृषा ४ ते किम इमकहो । उहारणीए भासा सियसच्चा सियमोसा सियसच्चामोसा । अवधारणीभाषा कोइं सत्या कोइं मृषा कोइं सत्यमृषा । सिय असच्चामोसा गोयमा । कोइं असत्यामृषा हुंगी० ।

ऊर्द्धं निःशंकं मन्यस्व इत्येवं यदुतावधारिणी भाषेति अथ इत ऊर्द्धं निःशंकं चिन्तय इत्येवं यदुतावधारिणी भाषेति, अतीवेदं साध्वनवद्यमित्य भिप्रायः तथा २ अविकल परिपूर्णं मन्यस्व इत्येवं यदुतावधारिणीभाषेति यथा पूर्वं मतवान् किमुक्तं भवति यथा त्वया पूर्वमनन कृतनिदानी मपि मत्संमतत्वात् सर्वं तथैव मन्यस्व मामनागपि शंका कार्षीरिति, तथा २ अविकलं परिपूर्णं चिन्तय इत्येव यदुतावधारिणीभाषेति यथा पूर्वं चिन्तितवान् मामनागपि शंकिष्टा इति तदेव भाषा अवधारिणीति निर्णीत मिदानीमियमवधारिणी भाषा सत्या उत मृषेत्यादिनिर्णयार्थं पृच्छति-उहारिणीणं भंते ! इत्यादि ॥ अवधारिणी अवबोधबीजभूता णमितिप्राग्वत्, भदन्त ! भाषा किं सत्या मृषा सत्यामृषा असत्यामृषेति, तत्र संतो मुनय स्तेषामेव भगवदाज्ञासम्यगाराधकतया परमशिष्टत्वात्, सद्भ्यो हिता इह परलोकाराधकत्वेन मुक्तिप्रापिका सत्या युगादिपाठाभ्युपगमात् यप्रत्यय, यद्वा यो यस्मै हितः स तत्र साधुरिति, सत्सु साध्वी सत्या तत्र साधाविति यः प्रत्ययः, यदिवा संतो मूलोत्तरगुणा स्तेषा

---

मेव जगति मुक्तिपदप्रापकतया परमशोभनत्वात्' अथवा सन्तो विद्यमाना स्तेच भगवदुपदिष्टाएव जीवादयः पदार्था अन्येषां कल्पनामात्ररचितसत्ताकतया तत्त्वतो सत्वात् तेभ्यो हिता तेषु साध्वी वा यथावस्तुतत्वप्ररूपणेन सत्या, विपरीतस्वरूपा मृषा, उभयस्वभावा सत्यामृषा, या पुनस्तिसृष्वपि भाषास्वनधिकृता तल्लक्षणा योगत स्तत्रानन्तर्भाविनी सा आमंत्रणा आपनादिविषया असत्यामृषा उक्तंच-सच्चाहियासयामिह संतो मुणयोगुणाययच्छावा । तव्विवरीयामोसा मीसाजातदुभयसहावा ॥ १ ॥ अणहिगयाजातिसुवि झट्ठाविसयकेवलोभसच्चमोसा । इति भगवानाह-गोतम ! सिय सच्चा इत्यादि ॥ स्यात्सत्या स्यात्सत्या ऽसत्यापि भवतीत्यर्थः, एवं स्यादसत्या स्यात्सत्यामृषा स्यादसत्यामृषेति, अत्रैवार्थे प्रश्नमाह-सेकेणट्ठेण भंते ! इत्यादि सुगमं, भगवानाह-गौतम ! आराधिनी सत्या' इह विप्रतिपत्तौ सत्यां वस्तुप्रतिष्ठापनबुद्ध्यायां सर्वज्ञमतानुसारेण ज्ञाप्यते अस्त्यात्मा सदसन्नित्यानित्याद्यनेकधर्मकलापालिंगित इत्यादि सा यथावस्थितवस्त्वभिधायिनी आराध्यते मोक्षमार्गोनयेत्याराधिनी आरा

॥ टीका ॥

धिनीत्वात्सत्येति, विराधिनी मृषेति, विराध्यते मुक्तिमार्गोनयेति विराधिनी विप्रतिपत्तौ सत्यां वस्तुप्रतिष्ठाशयासर्वज्ञमतप्रातिकूल्येन या ज्ञाप्यते यथा नास्त्यात्मा एकान्तनित्यावेत्यादि' तथा सत्यापि परपीडोत्पादिका सा विपरीतवस्त्वभिधानात् परपीडाहेतुत्वा द्वा मुक्तिविराधना द्विराधिनी विराधिनीत्वाच्च मृषेति, यातु किञ्चन नगरं पत्तनं वा धिकृत्य पंचसु दारकेषु जातेष्वेव मन्निधीयते यथास्मिन्नद्य दश दारका जाता इति सा परिस्थूरव्यवहारनयमतेन आराधनविराधिनी इयंहि पञ्चानां दारकाणां यज्जन्म तावतांशेन संवादनसम्भवादाराधिनी दश न पूर्यंते इत्ये तावतांशेन विसंवादसम्भवा द्विराधिनी आराधिनी चासौ विराधिनीच आराधनविराधिनी कर्मधारयत्वात् पुंवद्भावः' आराधनविराधिनीत्वाच्च सत्यामृषा यातु नैवाराधना तल्लक्षणविगमात्, नापि विराधिनी विपरीतवस्त्वभिधानाभावात्, परपीडाहेतुत्वाभावाच्च ना प्याराधनविराधिनी' एकदेशसंज्ञवादविसंवादाभावात् हेसाधो प्रतिक्रमणं कुरु स्थंडिलानि प्रत्युपेक्षस्वेत्यादिव्यवहारपतिता आमंत्रिण्यादिभेदभिन्ना सा असत्या मृषा नाम चतुर्थी भाषा। सेतेणट्ठेणमित्याद्युपसंहारवाक्यं इह यथावस्थितवस्तुतत्त्वाभिधायिनी भाषा आराधनीत्वात् सत्येत्युक्तं, ततः संशयापन्न स्तदपनोदाय पृच्छति-अह भंते ! गावोमिया इत्यादि ॥ अथ भदन्त ! गावः प्रतीता मृगा अपि प्रतीताः पशवोऽजाः पक्षिणोपि प्रतीताः, प्रज्ञाप्यते ऽर्थो ऽनयेति प्रज्ञापनी, अर्थ प्रतिपादनी प्ररूपणीयेति यावत्, किमिति पूर्ववत् एषा भाषा नैषा भाषा मृषेति, इयमत्र भावना गाव इति भाषा गोजातिं प्रतिपादयति जातौच त्रिलिंगा अप्यर्था अभिधेया लिंगत्रयस्यापिजातौ सम्भवात्, एवं मृगपक्षुपक्षिष्वपि भावनीयं, नचैते शब्दा स्त्रिलिंगाभिधायिन स्तथाप्रतीते रभावात्, किंतु पुल्लिङ्गगर्भा स्ततः संशयः किमेष प्रज्ञापनी किंवा नेति भगवानाह-हंता गोयमा ? हंतेति

सिय असच्चामोसा। सेकेणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवाणं भासा सिय सच्चा सिय मोसा सिय सच्चामो

स्यात्सत्यामृषा स्यादसत्यामृषा ? गौतम ! आराधिनी सत्या' विराधिनी मृषा, आराधनविराधिनी सत्यामृषा' यत्रैवाराधिनी तत्रैव विरा

आराहणीसच्चा विराहणीमोसा आराहणविराहणी सच्चामोसा जेणेव आराहिणीतेणेव विराहिणी। आराधनी भाषा सत्या कहीये विराधनीभाषा

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ अ० ॥

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

सा सिय असच्चामोसा ? गोयमा ! आराहणी सच्चा विराहणी मोसा आराहणविराहणी सच्चामोसा जेणेव आराहणी तेणेव विराहणी तेणेवाराहणविराहणी असच्चामोसा नाम सा चउत्थी भासा से तेणट्ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ–उहारणीणं भासा सिय सच्चा सिय मोसा सिय सच्चामोसा सिय असच्चामोसा । अह भंते ! गाऊ मिया पसू पक्खी पन्नवणीणं एसा भासा ण एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! गाउ मिया

॥ ५० ॥

धिनी तत्रैवाराधनविराधिनी असत्यामृषा नाम्नी चतुर्थी भाषा तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-ऽवधारिणी भाषा स्यात्सत्या स्यान्मृषा स्यात्सत्यामृषा स्यादसत्यामृषा । अथ भदन्त ! गावो मृगाः पशवः पक्षिणः प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा ? हन्त गौतम ! गावो मृगाः पशवः पक्षिणः प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा । अथ भदन्त ! या च स्त्रीवाक् या च पुरुषवाक् या च नपुंसकवाक् प्रज्ञापन्येषा भाषा नै

॥ भाषा ॥

मृषा कहिये आ०विरा० सत्यामृषा कहिये जिहां आ०तिहां वि०जेणेव विराहणीतेणेव आराहणविराहणीणं । जिहांविणवि०भाषा तिहांआ०वि० असच्चामोसाणामं चउत्थीभासा सेतेणट्ठेणं गो० । असत्या अमृषानामें चउथीभाषाकही तेमाटे हेगो० । एवं उहारणीणं भासा सियसच्चा सियमोसा सिय सच्चामोसा सिय असच्चामोसा । इमकही जे अवधारणी कोइसत्याभाषा कोइमृषा कोइसत्यामृषा कोइअसत्यामृषा । अहभंते गाओमियापसुपक्खीपसव णीणं एसाभासाभोसा हंता गोयमा । हिवे भगवन् गायमृगपशुपक्षी अजादि प्रसिद्ध एहवा वचनना अर्थ जाणिवे ए भाषा सत्या मृषा के असत्या मृषा हे गो० । गाओमियापसुपक्खी पसवणीणंएसाभासाणएसाभासामोसा । गायमृगपशु पक्षीनी प्रज्ञापनी एभाषा कही नही ए भाषामृषा । अहभं ते जाइत्थीवच जाय पुरिसव०णपुंसग व०पसवणीणं एसा भासा मोसा । अह जे स्त्रीवचन प्रतिपादिका गंगा जे पुरुषवचन ते घटादिरूप जे नपुंसकव चने कुण्डशब्दादि प्रज्ञापनी ए भाषाकहे । हंतागोयमा जाय इत्थीव० पुरिसव० णपुंसगव० पसवणीणं एसा भासा णएसाभासामोसा । हांगौतम जे स्त्रीवचने जे पुरुषवचने जे नपुंसकवचने प्रज्ञापनी भाषामृषा नहीकही । अहभंत जाव इत्थी आगमणी जाय पुमाणवणी जाय णपुंसगआगमणी ए

॥ टीका ॥

प्रत्यवधारणे गौतमेत्यामन्त्रणे गाव इत्यादिका भाषा प्रज्ञापनी तदर्थकथनाय प्ररूपणी यथावस्थितार्थप्रतिपादकतया सत्यत्वात्, तथापि जात्यभिधायिनीयं भाषा जातिश्च त्रिलिंगार्थसमवायिनी ततोजात्यभिधानेन त्रिलिंगा अपि यथासंभवं विशेषा अभिहिता भवंतीति, भवति यथावस्थितार्थाभिधानादियं प्रज्ञापनी भाषेति, यदप्युक्तं-किंतु पुल्लिङ्गनिर्देशः इति तत्र शब्दे लिंगव्यवस्थालक्षणवशात् लक्षणं च स्त्रीपुंनपुंससहोक्तौ परं तथाग्राम्याभिशुद्धिखुरसंघे स्त्रीप्रायइत्यादि ततोऽनेवंत् क्वचित् शब्दे लक्षणवशात् स्त्रीत्वं क्वचित्पुंस्त्वं क्वचिन्नपुंसकत्वं चापरमार्थतः पुनः सर्वोपि

॥ मूल ॥

पसूपक्खीपन्नवणीणं एसा भासा पन्नवणीन एसा भासा मोसा। अह भंते! जायइत्थीबऊ जावपुंबऊ जाय नपुंसगबऊपन्न वणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा! जाय इत्थी बऊ जाय पुम वेऊ जाय नपुंसग बऊ पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा। अह भंते! जाय इत्थीआणमणी जाय

॥ अ० ॥

षा भाषा मृषा ? हन्त गौतम! याच स्त्रीवाक् याच पुरुषवाक् याच नपुंसकवाक् प्रज्ञापन्यैषा भाषा नैषा भाषा मृषा। अथ भदन्त! याच स्त्र्याज्ञापनी याच पुमाज्ञापनी याच नपुंसकाज्ञापनी प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा ? हन्त गौतम! याच स्त्र्याज्ञापनी याच पुमाज्ञापनी याच नपुंसकाज्ञापनी प्रज्ञापन्यैषा नैषा भाषा मृषा। अथ भदन्त! याच स्त्रीप्रज्ञापनी याच पुंसप्रज्ञापनी याच नपुंसकप्रज्ञापनी प्रज्ञाप

॥ भाष ॥

सवणीणं एसाभासा एएसाभासामोसा। अथ हेभगवन् जे स्त्री आदेयदापनी स्त्री जे पुरुषगौरव बहुल एकेंद्रिबलक्षणे जे नपुंसक दोयलक्षणे प्रज्ञापनी भाषा मृषाभाषा। हंतागोयमा जाय इत्थीआणवणी जाय पुमआणवणी जाय णपुंसगआणवणी पन्नवणीणं एसाभासा एएसाभासामोसा। हंतगोतम जे स्त्री आदेयदायिनी जेपुरुष आदेयदायिनी जेनपुंसक आदेयदायिनी प्रज्ञापनी भाषा नहीं मृषा कही। अहभंते जाय इत्थीपन्नवणी जायपुमपन्नवणी जाय णपुंसमपन्नवणी पन्नवणीणं एसाभासा एएसाभासामोसा। अथ हेभ० जे स्त्री लक्षणीभाषा पुरुषनीभाषा नपुंसकनीभाषा एहवी प्रज्ञापनीभाषा एमृषा नकहिये। हंतागो० जाय इत्थिपन्नवणी जाय पुमपन्नवणी जाय णपुंसकपन्नवणी पन्नवणीणं एसाभासा एएसाभासामोसा। हंतगो० जे स्त्रीप्रज्ञा

॥ टीका ॥

जातिशब्दस्त्रिलिङ्गानप्यर्थान् तत्तद्देशकालप्रस्तावादिसामर्थ्यवशादभिधत्ते इति न कश्चिद्दोषः, नचेयं परपीडाजनका नापि विप्रतारणादिदुष्टेति वासमुत्था ततो न मृषेति प्रज्ञापना ॥ अह भंते । जाय इत्थिवऊ इत्यादि ॥ अथेति प्रश्ने भदन्त इत्यामन्त्रणे याच स्त्री वाक् स्त्रीलिंगप्रतिपादिका भाषा खट्वालतेत्यादिलक्षणा या पुरुषवाक् घटः पट इत्यादिरूपा याच नपुंसका वाक् कुड्यं कायऊमित्यादिलक्षणा प्रज्ञापनीयं भाषा नैषा भाषा मृषेति । किमत्र संशयकारणं येनेत्थं पृच्छतीति चेदुच्यते-इह खट्वाघटकुड्यादयः शब्दा यथाक्रमं स्त्रीपुंनपुंसकलिङ्गाभिधायिनः स्त्रीपुंनपुंसकानांच लक्षणमिदं-योनिर्मृदुत्वमस्थैर्यं मुग्धताक्लीवतास्तनौ पुंस्कामितेतिलिङ्गानि सप्तस्त्रीत्वंप्रचक्षते ॥ १ ॥ मेहनखरतादार्ढ्यं शौण्डीर्यंस्मश्रुधृष्टता । स्त्रीकामितेतिलिंगानि सप्तपुंस्त्वेप्रचक्षते ॥ २ ॥ स्तनादिस्मश्रुकेशादि भावाभावसमन्वितं । नपुंसकंबुधाःप्राहु र्मोहानलसुदीपितं ॥ ३ ॥ तथान्यत्रा प्युक्तं-स्तनकेशवतीस्त्रीस्यात् लोमशःपुरुषःस्मृतः । उभयोरंतरंयच्च तन्नावेनपुंसकम् ॥ १ ॥ नचैवंरूपाणि स्त्र्यादिलक्षणानि षट्वादिषूपलभ्यन्ते तथाहि-यद्येकैकावयवपृथक्करणेन सम्यग्निभालन क्रियते तथापि न तेषां स्त्र्यादिलक्षणानां तत्रोपलम्भोस्ति ततः प्रज्ञापनीयं भाषा न वेति जातसंशय स्तदपनोदाय पृच्छतिस्म, अत्र भगवानाह-हंतागोयमेत्यादि ॥ अक्षरगमनिका प्राग्वत्, भावार्थस्त्वयं-नेह शब्दप्रवृत्तिचिन्तायां यथोक्तानि

॥ मूल ॥

पुमञ्ञाणमणी जाय नपुंसगञ्ञाणमणी पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जाय

॥ अ० ॥

न्यैषा भाषा नैषा भाषा मृषा ? हन्त गौतम ! प्रज्ञापन्यैषा भाषा नैषा भाषा मृषा । अथ भदन्त ! जातिस्त्रीवाक् जातौ पुंवाक् जातौ नपुं

॥ भाषा ॥

पनौ ज पुरुषवज्ञापनौ जेनपुंसकप्रज्ञापनौ प्रज्ञापनीभाषा एभाषामृषा नकहिये । अहभंते जाईति इत्थिव० जा पुमव० जाईति णपुसगव० पण्णवणीणं एसाभाषा णएसाभासामोसा। हिवे हेभ० जाति स्त्रीवचन सामान्य जे पुरुष नपुंसकवचन प्रज्ञापनी ए भाषामृषा नही । हतागो०अहभंते जाईति इत्थी आणमणी जाईति पुमआणवणी जाईति णपुंसग आणवणी पण्णवणीणं एसाभासा णएसाभासामोसा । हंतगोतम हिवे सामान्य स्त्रीआमंत्रणी सामान्य पुरुषआमंत्रणें सामान्य नपुंसकआमंत्रणें प्रज्ञापनी एभाषा मृषा नही । अहभंते जाईति इत्थिपण्णवणी जाईतिपुमपण्णवणी जाईति णपुंसगपण्णवणी प

स्त्र्यादिलक्षणानि स्त्रीलिङ्गादिशब्दाभिधेयानि किं स्वाभिधेयधर्मा इव मम मिदं शब्दव्यवस्थाहेतवः उपदेशपारंपर्यगम्याः स्त्रीलिङ्गादिशब्दाभिधेया न चैते कल्पनामात्रं वस्तुत स्तत्तच्छब्दाभिधेयतया परिणमनस्वभावात्' तेषामपि धर्माणां तत्त्वतस्तात्त्विकत्वात्' आहच-शकटसूनुरपि अयमियमिदमिति शब्दव्यवस्थाहेतुराभिधेयधर्म उपदेशगम्यः, स्त्रीपुंसनपुंसकत्वानीति व्यवस्थापित श्चायमर्थो विस्तरतरकेण स्वोपज्ञशब्दानुशासनविवरणे इति, ततः शब्दव्यवहारापेक्षया यथावस्थितार्थप्रतिपादनात् प्रज्ञापनीयं भाषा दुष्टविवक्षातः समुत्पन्ने रभावात्, परपीडाहेतुत्वाभावा च्च न मृषेति ॥ अह भंते ! इत्यादि ॥ अथ भदन्त ! या च स्त्र्यादिज्ञापनी आज्ञाप्यते आज्ञा सपादने प्रयुज्यते नया सा आज्ञापनी स्त्र्याज्ञापनी स्त्रिया आदेशदायिनीत्यर्थः, या च पुमाज्ञापनी नपुंसकाज्ञापनी प्रज्ञापनीयं भाषा नैषा भाषा मृषेति । अत्रेद सशयकारणं किल सत्या भाषा प्रज्ञापनी भवति इयं च भाषा आज्ञासम्पादनक्रियायुक्ताभिधायिनी, आज्ञाप्यमानश्च स्त्र्यादि तथा कुर्या न्न वा ततः संशयमापन्नो विनिश्चयाय पृच्छति-अत्र भगवाना

---

ह-हंता गोयमा ! इत्यादि ॥ अक्षरगमनिका सुगमा भावार्थस्त्वयं-आज्ञापनी भाषा द्विधा परलोकाबाधिनी इतरा च, तत्र या स्वपरानुग्रहबुद्ध्या शाठ्यमन्तरेण आमुष्मिकफलसाधनाय प्रतिपन्नैहिकालम्बनप्रयोजनाविवक्षितकार्यप्रसाधनसामर्थ्ययुक्ताविनीतस्त्र्यादिविनेयजनविषया सा परलोकाबाधिनी यथैव च साधूनां आज्ञापनी परलोकाबाधनात इतरास्तितरविषया साच स्वपरसंक्लेशजननान्मृषेत्यप्रज्ञापनी साधुवर्गस्य उक्तंच-अविणीयमाणवंतो किलस्सइंनासइंमुसंतहय । घटालोहंनालु कोकज्जकरणेपवत्तेजा ॥ १ ॥ क्रियाहि द्रव्य विनमयति नाद्रव्यमित्यभिप्रायः ॥ अह भंते ! जायइत्थिपन्नवणी इत्यादि ॥ अथ भदन्त ! या च भाषा स्त्रीप्रज्ञापनी स्त्रीलक्षणं प्रतिपादिका योनिर्मृदुत्वमस्थैर्यमुग्धतेत्यादिरूपा, या च पुंप्रज्ञापनी पुरुषलक्षणप्रतिपादिका मेहनखरतादार्ढ्यमित्यादिरूपा, याच [ ग्रंथाग्रं ६००० ] नपुंसकप्रज्ञापनी नपुंसकलक्षणाभिधायिनी स्तनादिस्मश्रुकेशादिभावाभावसमन्वितमित्यादिलक्षणा, प्रज्ञापनीयं भाषा नैषा मृषेति, कोत्राभिप्रायः इतिचेत् ? दुच्यते-इह स्त्रीलिङ्गादयः शब्दव्यवहारबला द

॥ टीका ॥

न्त्रापि प्रवर्त्तते यथा खट्वाघटकुट्यादयः खट्वादिष्वर्थेषु च नखलु तत्र यथोक्तानि स्त्र्यादिलक्षणानि संति यथोक्तं-प्राक्-ततः किमियमव्यापक त्वात् स्त्र्यादिलक्षणप्रतिपादिका भाषा न वक्तव्या आहोश्वि द्वक्तव्येति संशयमापन्नः पृष्टवान् अत्र भगवानाह-हंता गोयमेत्यादि ॥ अक्षरगमनिका सुप्रतीता भावार्थस्त्वयं-इह स्त्र्यादिलक्षणं द्विधा शब्दव्यवहारानुगतं वेदानुगतं च तत्र यदा शब्दव्यवहाराश्रितं प्रतिपादयितुमिष्यते तदेवं न वक्त व्यमव्यापकत्वात् यथा चाव्यापकता तथा प्रागेव लेशतो दर्शिता विस्तरत स्तु स्वोपज्ञशब्दानुशासनविवरणे ततश्चयं तदधिकृत्य प्रज्ञापनी, वेदा

॥ मूल ॥

इत्थीञ्जाणमणी जाय पुमञ्जाणमणी जाय नपुंसगाणमणी पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा । अह भंते ! जाय इत्थीपन्नवणी जाय पुमपन्नवणी जाय नपुंसगपन्नवणी पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! अह भंते ! जातीति इत्थीवऊ जातीइ पुमवऊ जाती नपुंसगवऊ पन्न वणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जाय इत्थीवऊ जातिपुमवऊ जातीति नपुंस वऊ पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा । अह भंते ! जायति इत्थीञ्जाणमणी जातीति पुमञ्जा

॥ भ० ॥

सकवाक् प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा ? हन्त गौतम ! जातौ स्त्रीवाक् जातौ पुंवाक् जातौ नपुंसकवाक् प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भा षा मृषा । अथ भदन्त ! जातिस्त्र्याज्ञापनी जातिपुमाज्ञापनी जाति नपुंसकाज्ञापनी प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा ? हन्त गौतम ! जातिस्त्र्याज्ञापनी जातिपुमाज्ञापनी जातिनपुंसकाज्ञापनी प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा । अथ भदन्त ! जातिस्त्रीप्रज्ञापनी जातिपुंप्र ज्ञापनी जातिनपुंसकप्रज्ञापनी प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा ? हन्त गौतम ! जातिस्त्रीप्रज्ञापनी जातिपुंप्रज्ञापनी जातिनपुंसकप्रज्ञाप

॥ भाषा ॥

णवणीणं एसाभासा णएसाभासामोसा । दिवेसामान्य स्त्रीप्रज्ञापनी सामान्य पुरुषप्रज्ञापनी सामान्य नपुंसक ज्ञापनी प्रज्ञापनी ए भाषा मृषा नहो । अहभंते मदकुमारएवा मंदकुमारियावा जाणइ बुयमाणे अहमेसबुयामीति । हिवइहम० मंदकुमार मंदकुमारनो उत्तानसया बालकाइसो जांणि मोसा

नुगतं प्रतिपादयितुमिष्यते तदा यथावस्थितार्थाभिधानात् प्रज्ञापन्येव मृषेति ॥ अह भंते ! जा जाइइत्थिवइ इत्यादि ॥ अथ भदन्त ! या जाति स्त्रीवाक् जातौच स्त्रीवचनं समेति, या जातौ पुंवाक् पुंवचनं जाव इति, याच जातौ नपुंसकवाक् सामान्यमिति प्रज्ञापनी एषा भाषा नैषा भाषा मृषेति, कोत्राभिप्राय इतिचे ? दुच्यते-जातिरिह सामान्यमुच्यते-सामान्यस्य च न लिङ्गसङ्ख्याभ्यां योगो वस्तूनामेव लिङ्गसङ्ख्याभ्यां योगस्य तीर्थान्तरीयै रभ्युपगमात्, ततो यदि परं जातावौत्सर्गिकमेकवचनं नपुंसकलिंगंचोपपद्यते न त्रिलिंगता, अथच त्रिलिङ्गाभिधायिनोपि शब्दाः प्र वर्त्तंते यथोक्तमनन्तरं ततः संशयः किमेषा भाषा प्रज्ञापनी किंवा नेति अत्र भगवानाह ? हंता गोयमा ! इत्यादि ॥ अक्षरार्थःसुगमो भावार्थस्त्वयं जातिनाम सामान्यमुच्यते-सामान्यं च न परपरिकल्पितमेवमनवयवमक्रियं तस्य प्रमाणबाधितत्वात्, यथाच प्रमाणबाधितत्वं तथा तत्वार्थटीकायां भावितमिति ततोऽवधार्यं, किंतु समानः परिणामो वस्तुन एव समानपरिणामो यः सएव सामान्यमितिवचनात्, समानपरिणामश्चानेकधर्मात्मा धर्माणां परस्परं धर्मिणोपिच सहान्योन्यानुवेधान्युपगमात्, तथा प्रमाणेनोपलब्धे स्ततो घटते जातेरपि त्रिलिंगतेति प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषेति ॥ अह भंते ! इत्यादि ॥ अथ भदन्त ! या जातिस्त्र्याज्ञापनी जातिमधिकृत्य स्त्रिया आज्ञापनी यथा अमुका ब्राह्मणी क्षत्रिया एवं कुर्यादिति, एवं जातिमधिकृत्य पुमाज्ञापनी नपुंसकज्ञापनी आज्ञापनी एषा भाषा नैषा भाषा मृषेति' अत्रापि संशयकारणमिदं आज्ञापनीहि नाम आज्ञासम्पादनक्रियायुक्तस्त्र्याद्यभिधायिनी स्त्र्यादिश्चाज्ञाप्यमान स्तथाकुर्या न्नवेतिसंशयः किमयं आज्ञापनी किं चान्यति, अत्र निर्वचनमाह-हंता गोयमेत्यादि ॥ अक्षरार्थ सुगमो भावार्थस्त्वयं-आज्ञापनीहि नाम परलोकाबाधिनी सा प्रोच्यते या स्वपरानुग्रहबुद्धया विव क्षितार्थसम्पादनसामर्थ्योपेतविनीतस्त्र्यादिविनेयजनविषया यथा अमुका ब्राह्मणी साध्वी शुभं नक्षत्रमद्येत्यमुकमङ्गं श्रुतस्कन्धं च पठेत्यादि सा प्र ज्ञापन्येव दोषाभावात्, शेषातु स्वपरपीडाजनना न्मृषेत्याज्ञापनीति ॥ अह भंते ! इत्यादि ॥ अथ भदन्त ! या जातिस्त्रीप्रज्ञापनी जातिमधिकृ

त्य स्त्रिया स्त्रीलक्षणस्य प्रतिपादिका यथा स्त्री स्वभावा तुच्छा भवति गौरबहुला चलिन्द्रिया दुर्बला च धृत्येति उक्तंच-तुच्छागारबहुला चलिं
दियादुब्बलायधीईए इत्यादि, याच जातिमधिकृत्य पुंप्रज्ञापनी पुरुषलक्षणस्य स्वरूपनिरूपिका यथा पुरुषः स्वभावात् गंभीराशयो भवति सह
त्यामपिचापदि न क्लीवतां भजते इत्यादि, याच जातिमधिकृत्य नपुंसकप्रज्ञापनी नपुंसकजातिप्ररूपिका यथा नपुंसकः स्वभावात् क्लीवो भवति
प्रबलमोहानलज्वालाकलापउज्वलितश्चेत्यादि प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषेति, अत्रापीदं संशयकारणं वक्ष्यते-खलु जातिगुणा एवंरूपाः प
र क्वचित् कदाचिद्व्यभिचारोपि दृश्यते तथाहि-रामापि कांचित् गम्भीराशया भवति धृत्याचातीव बलवती पुरुषोपि च कश्चि त्तुच्छप्रकृतिरूपो
लभ्यते स्तोकायामपि चापदि क्लीवतां भजते नपुंसकोपि कश्चि त्मन्दमोहानलो दृढसत्वश्च ततः संशयः किमेषा प्रज्ञापनी किं च नेति अत्र भगवा
नाह-हंता गोयमाइत्यादि ॥ अक्षरार्थः सुगमो भावार्थस्त्वयं-इह जातिगुणप्ररूपणं बाहुल्यमधिकृत्य भवति न समस्तव्यक्त्याश्रेपेणातएव जातिगु
णान् प्ररूपयतो विमलधियः प्रायः इदं समुच्चारयन्ति प्रायेणेद द्रष्टव्यं यत्रापि न प्रायः दृष्टः श्रवणं तत्रापि स द्रष्टव्यः प्रस्तावा त्ततः क्वचित् क
दाचि द्व्यभिचारोपि दोषाभावात् प्रज्ञापन्येषा भाषा न मृषेति, इह भाषा द्विधा दृश्यते एका सम्यगुपयुक्तस्य द्वितीया त्वितरस्य, तत्र यः पू
र्वापरानुसन्धानपाटवोपेतः श्रुतज्ञानेन पर्यालोच्यार्थंभाषते सम्यगुपयुक्तः सचैवं जानाति अहं मेतद्भाषे इति य स्तु करणापटिष्टतया बालादिनो



णमणी जातीति नपुंसगाणमणी पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जातीति
इत्थीआणमणी जातीति पुमआणमणी जातीति नपुंसगाणमणी पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मो
सा । अह भंते ! जातीति इत्थीपन्नवणी जातीति पुमपन्नवणी जातीति नपुंसगपन्नवणी पन्नवणीणं एसा



नी प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा । अथ भदन्त ! मन्दकुमारकोवा मन्दकुमारिकावा जानाति भाषमाणोऽहमेतद्भवीमीति अहमेतद्भवी



दिकनो बोलवो बोलीने तेहने एवं कहिये । गोयमा णोइणट्ठसमट्ठे एषत्थसक्खिणी । इणो० एअर्थं समर्थनहो जेनणी असणी अवधिज्ञानी । अहमंते मंदकु

पहतचैतन्यकतया वा पूर्वापरानुसन्धानविकलो यथा कथंचि न्मनसा विकल्प्य २ भाषते स इतरः रुचैवमपि न जानाति यथा अहमेतत् भाषे इति' बालादयोपि च भाषमाणा दृश्यंते ततः संशयं किमेते जानंति यथाय मेतद्भाषामहे इति किं वा न जानन्तीति पृच्छति-अह भंते ! मन्दकुमारएवा इत्यादि ॥ अथ भदन्त ! मन्दकुमारक उत्तानशयो बालको मन्दकुमारिका उत्तानशया बालिका भाषमाणा भाषायोग्यान् पुद्गलानादाय भाषात्वेन परिणमय्य विसृजंती एवं जानाति यथा हमेतद्ब्रवीमीति ? भगवानाह-गौतम ! नायमर्थः समर्थो नायमर्थोयुक्त्युपपन्नो यद्यपि मनः पर्याप्त्यापर्याप्त स्तथापि तस्याद्यापि मनःकरणमपटु अपटुत्वाच्च मनःकरणस्य क्षयोपशमोपि मन्दः श्रुतज्ञानावरणस्यहि क्षयोपशमः प्रायो मनःकरण पटिष्टतामप्यवलंब्योपजायते तथा लोके दर्शनात् ततो न जानाति मन्दकुमारो मन्दकुमारिकावा भाषमाणा यथाहमेतत् ब्रवीमीति, किं सर्वोपि न जानातीत्यत आह-तत्थसन्निणोइति ॥ अन्यत्र शब्दोत्र परिवर्जनार्थः दृष्टश्चान्यत्रापि परिवर्जनार्थो यथा अन्यत्र द्रोणश्लीष्णाभ्यां सर्वे योधाः परा ङ्मुखा इति,,द्रोणश्लीष्णौवर्जयित्वा इत्यर्थः, संज्ञी अवधिज्ञानी जातिस्मरः सामान्यतोपि विशिष्टमनःपटवोपेतो वा तस्मादन्यो न जानाति संज्ञी तु यथोक्तस्वरूपो जानीते एवमाहारादिविषयाण्यपि पंचसूत्राणि भावयितव्यानि । नवरमतिराउलेइति ॥ देशीपदमेत त्स्वामिकुलमित्यर्थः ॥ अ



भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! जातीति इत्थीपन्नवणी जातीति पुमपन्नवणी जातीति नपुंसगपन्नवणी २ णं एसा भासा न एसा भासा मोसा । अह भंते ! मंदकुमारएवा मंदकुमारिया वा जाणति



मीति ? गौ० ! नायमर्थः समर्थः ' नान्यत्र संज्ञिनः । अथ भदन्त ! मन्दकुमारको वा मन्दकुमारिकावा जानाति आहारमहारयन्नहमेनमाहार माहारयिष्यामि २ ? गौतम ! नायमर्थः समर्थः, नान्यत्र संज्ञिनः । अथ भदन्त ! मन्दकुमारको वा मन्दकुमारिका वा जानातिममतो अ



मारएवा मंदकुमारियावा जाणइ । हिवे हेभ० मन्दकुमारक जांणे । आहार माहारमाणे आहारमेयं आहारमाहारेमिति । आहार आहारें कहेछे आहार आहारोछौं । गोयमा पौ०एयट्ठसमट्ठे णपत्थसण्णिणो । हेगौतम एअर्थ समर्थनहो स्यांमाटे जेमणो संज्ञी नथो तेतत्त्वोयुक्ति नथो । अहभंते मंदकु

॥ टीका ॥

हिदारए इति ॥ भर्त्ता स्वामी तस्य दारकः पुत्रो भर्तृदारकः एव मुष्ट्यादिविषयाण्यपि पंच सूत्राणि भावयितव्यानि नवरमुष्ट्यादयोऽतिबालावस्थाः परिगृह्याः न जरठाः, न जरठावस्थावांहि परज्ञानस्य संशयात्, सम्प्रत्येकवचनादिभाषाविषयसंशयापनोदार्थं पृच्छति-अहभंते ! इत्यादि ॥

॥ मूल ॥

वुयमाणा अहमेसा वुयामि अहमेसाबुयामि अहमेसे वुयामीति ? गोयमा ! नो इणठे समठे णसत्थ सन्निणो । अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति आहारमाहारेमाणे अहमेसे आहारमाहारेमि अहमेसे आहारेमीति ? गो० ! णो इणठे समठे णणत्थ सन्निणो । अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति अयंमे अम्मापियरो गो० ! नो इणठे समठे णसत्थ सन्निग । अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति अयंमे अतिराउलो अयंमे अतिराउलेत्ति ? गो० ! णो इणठे समठे णणत्थ सन्निणो । अह भंते ! मंदकुमारए वा मंदकुमारिया वा जाणति अयंमे नहिदारिए अयमे नहिदारएत्ति ? गोयमा ! णो इणठे समठे णणत्थ सन्निणो । अह भंते ! उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणति पु

॥ अ० ॥

म्मापितरौ ? गौतम ! नायमर्थः समर्थः, नान्यत्र सञ्ज्ञिनः । अथ भदन्त ! मन्दकुमारको वा मन्दकुमारिका वा जानाति ममैतत्स्वामिकुलं २ ? गौतम ! नायमर्थः समर्थः, नान्यत्र सञ्ज्ञिनः । अथ भदन्त ! मन्दकुमारको वा मन्दकुमारिका वा जानात्येष मे भर्तृदारकः २ इति ? गौत

॥ भाषा ॥

मारएवा मंदकुमारियावा जाणइ अयंम अम्मापियरो । हिवे मन्दकुमार मन्दकुमारिका जाणे माहरा मातापिताछे । गो० णोइणठेसमठे णसत्थ सन्नि णो । हेगौतम एअर्थ समर्थनही जेमणी संज्ञानही । अहभंते मंदकुमारएवा मंदकुमारियावा जाणइ अयंमे भट्टिदारयत्ति । हिवे हेभग० मन्दकुमार मन्द कुमारिका जाणे एह माहरा धणीनोबालक एह माहरा धणीनी बालिका । गोयमा णोइणठेसमठे णसत्थ सन्निणो । हेगौतम एअर्थ समर्थनही जेमाटे संज्ञानही । अह भंते उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणइ वुयमाणे अहमेसे वुयामि । हिवे हे भगवन् ऊंट गोण खर अश्व अज एलडाने जाणे

॥ टीका ॥

अथ भदन्त ! मनुष्यो महिषो ऽश्वो हस्ती सिंहो व्याघ्रो वृषु एते प्रतीताः, द्वीपी चित्रकविशेषः ऋक्षः अच्छो भल्लः तरक्षो व्याघ्रो जातिविशेषः

॥ मूल ॥

यमाणे अहमेसे पयामि ? गोयमा ! णो इणठे समठे णणत्थ सन्निणो अह भंते ! उट्टे गोणे खरे घोडए अए एलए जाणति आहारेमाणे अहमेसे आहारेमि २ ? गोयमा ! णो इणठे समठे जाव णणत्थ सन्निणो अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणति अयंमे अम्मापियरो ? गोयमा ! णो इणठे णणत्थ सन्निणो । अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणति अयं अतिराउले २ ? गोयमा ! जाव णणत्थ सन्निणो । अह भंते ! उट्टे जाव एलए जाणति अयंमे णहिदारए २ ? गोयमा ! जाव सन्निणो । अह भंते ! मणुस्से महिसे आसे ह

॥ प० ॥

म । नायमर्थः समर्थः, नान्यत्रसञ्ज्ञिनः । अथ भदन्त ! उष्ट्रो गौः खरो घोटक अजा एलको जानाति आयमात्मोऽहमेतद्वदीमीति ? गौतम ! नायमर्थः समर्थः, नान्यत्र सञ्ज्ञिनः । अथ भदन्त ! उष्ट्रो गौः खरो घोटक अजा एलको जानाति आहारमाहारयन्नहमेषाहारयामीति ? गौतम ! नायमर्थः समर्थः, नान्यत्र सञ्ज्ञिनः । अथ भदन्त ! उष्ट्रो यावदेलको जानात्येनौ मेऽम्बापितराविति ? गौतम ! नायमर्थः समर्थः, नान्यत्र सञ्ज्ञिनः । अथ भदन्त ! उष्ट्रो यावदेलको जानाति एतन्मे श्वामिकुलमिति ? गौतम ! नायमर्थः समर्थः, नान्यत्र सञ्ज्ञिनः । अथ भ

॥ भाषा ॥

आहारकरता हूं आहारकूं । गोयमा जाव णणत्थ सन्निणो । हेगौतम जांलग संज्ञानहो । अहभंते उष्ट्र गोण खर घोडा अज एलक जाणे अयंमेम्मा पियरो । हिवे हेभगवन् उंट गोण खर घोडो अज एलक जाणे ए माहरा मातापिता । गोयमा णोइणठेसमठे णणत्थि सन्निणो । हेगौतम नहीं एअर्थ समर्थनहो सक्यो । अहभंते उष्ट्र जाव एलए जाणइ अयंमेइति उरालेय । हिवे हेभगवन् उंट एलक जांलग जाणे ए माहरा प्रधान । गोयमा जाव णणत्थि सन्निणो । हेगौतम जांलग सज्ञीनहो । अहभंते उष्ट्र जाव एलए जाणइ अयंम भहिदारए । हिवे हेभगवन् उंटएलक जांलगजाणे ए माहरा धणीनो बालक । गोयमा जाव णणत्थ सन्निणो । हेगौतम जांलग सज्ञीनहो । अहभं मणुस्स महिस आस हत्थी सीहे ब,घे ग दीवए अच्छेतरच्छेरच्छरे मि

त्थी सीहे वग्घे वगे दीविए अच्छे तरच्छे परस्सरे सियाले विराले सुणए कोलसुणए कोक्कंतीए ससए चि
त्तए चिल्लए जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा एगवऊगा ? हंता गो० ! मणुस्से जाव चिल्लए जेयावन्ने तहप्पगारे
सव्वा सा एगवऊ । अह भंते ! मणुस्सा जाव चिल्ललगा जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वा सा बक्कवऊ ? हंता
गोयमा ! मणुस्सा जाव चिल्ललगा सव्वा साबक्कवऊ । अहा भंते ! मणुस्सी महिसी बलवा हत्थिणिया सीही

दन्त ! उष्ट्रा यावदेलको जानाति एतन्मे भर्तृदारक इति गौतम ! यावत्संज्ञिनः । अथ भदन्त ! मनुष्योमहिषी श्वापहस्ती सिंही व्याघ्रावको द्वीपी अच्छस्तरक्षः परासरः शृगालो विरालः शुनकः काकशुनकः कोकंतिकः शशकाश्चित्रक श्चिल्लक येपि चान्ये तथाप्रकारा सर्वा सा एकवाक् ? हन्त गौतम ! मनुष्यो यावच्चिल्लक येपि चान्ये तथाप्रकारा सर्वा सैकवाक् ॥ अथ भदन्त ! मनुष्या यावच्चिल्ललका येपि चान्ये तथाप्रकाराः सर्वा सा बहुवाक् ? हन्त गौतम ! मनुष्या यावच्चिल्ललकाः सर्वा सा बहुवाक् । अथ भदन्त ! मानुषी महिषी बडवा हस्तिनी सिंही व्याघ्री व

यालि । द्विवे हे भगवन् मनुष्य महिष अश्व ऋक्ष सिंह वाघ छक होपकहो जे चौतो अर्थ तरक्षहां ऊर गड स्यालि । विरालेसुणएकोक्कलसुणएकोक्कंतिस सिएचित्तेचिल्लएण । जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वासाएगवऊहंता गोयमा । जे अनेरा एहवा तथाप्रकारे ए सर्व ते एकवचने कहियें हे गौतम । मणुस्से जाव चिल्लएण जेयावन्ने तहप्पगारासव्वासाएगवऊ । मनुष्यजांलगे चिल्लय एहना जे आरए सर्व एकवचने कहिये । अह भंते मणुस्सा जाव चिल्ललगा जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वासाबहुवऊहंता गोयमा । द्विवे भगवन् मनुष्यने जांलगे चोल्लय पशु विशेष एहवा अनेराने बहुवचने कहिये हां गौतम । मणुस्सा जाव चिल्ललगा सव्वासाबहुवऊ अह भंते मणुस्सीमहिसीवल्लवाहत्थिणिया । मनुष्य जांलगे चित्तल पशु विशेषने बहुवचने द्विवे मनुष्यणी भगवन् महिषी हथणी । सीहीवग्घीदीविया अच्छीपरस्सरी सियाली विराली । सिंहणी वाघणी छली

तीतः चिल्लक आरण्यः पशुविशेषः ॥ जेयावन्ने तहप्पगारा इति ॥ येपि चान्ये तथाप्रकारा एकवचनांता इत्यर्थः, सर्वा सा एकवाक् एकत्वप्रतिपादिका वाणी अयमत्र प्रश्नहेतुरभिप्रायः-इह वस्तु धर्मधर्मिसमुदायात्मकं धर्माश्च प्रतिवस्त्वनन्ताः मनुष्य इत्यादयुक्तौ च सकलं वस्तु धर्मधर्मिसमुदायात्मकं परिपूर्णं प्रतीयते तथा व्यवहारदर्शनात्, एकस्मिंश्चार्थे एकवचनं बहुषु बहुवचनं अत्र बहवो धर्माभिधेया स्ततः कथमेकवचन अथ च दृश्यते लोके एकवचनेनापि व्यवहार इति पृच्छति-सर्वा सा एकत्वप्रतिपादिका वाग् भवति काङ्क्षापाठं पठ्यते, ततः प्रश्नार्थत्वावगतिः भगवानाह-हंता गोयमा ! इत्यादि ॥ अक्षरार्थः सुगमो भावार्थं स्त्वयं-शब्दप्रवृत्तिरिह विवक्षाधीना विवक्षाच तत्तत्प्रयोजनवशात् वस्तुः क्वचित् कदाचित् कथंचित् भवतीत्यनियता तथाहि-सर्वैकः पुरुषो यदायं मे जनक इति पुत्रेण विवक्ष्यते तदा जनक इत्यभिधीयते स एव यदा तेनैव मा म ध्यापयतीति विवक्ष्यते तदा तूपाध्याय इति, तत्र यदा उपसर्जनीभूतधर्माप्राधान्येन विवक्ष्यते तदा धर्मिण एकत्वात् एकवचनं, धर्माश्च धर्मिण्य

---

न्तरगता इति परिपूर्णवस्तुप्रतीतिः यथात्र मिति तदा तूपसर्जनीभूतधर्मिणोः धर्माः पाणिग्रत्यपरोपकारित्वमङ्गादानदायित्वादयः प्राधान्येन विवक्ष्यत तदा धर्माणां बहुत्वा देकस्मिन्नपि बहुवचनं यथा यूयमिति, तत इहापि मनुष्य इत्यादावुपसर्जनीकृतधर्मांधर्मीप्राधान्येन विवक्षित इति भवति सर्वाप्येवं जातीया एकत्वप्रतिपादिका वाक् ॥ अह भंते ! मणुस्सा इत्यादि ॥ अक्षरगमनिका प्राग्वत् अत्रापीदं संशयकारणं मनुष्यादयः शब्दा जातिवाचका जातिश्च सामान्यं २ चैक मेकं नित्यं निरवयवमक्रियं सर्वगं च सामान्यमितिवचनात् ततः कथमत्र बहुवचनं, अथ च दृश्यते बहुवचनेनापि व्यवहार इति पृच्छति-सर्वा सा बहुवचनप्रतिपादिका वाग् भवति, काङ्क्षापाठात्प्रश्नार्थत्वावगतिः अत्र भगवानाह-हंता गोयमा इत्यादि ॥ अक्षरार्थः सुगमो भावार्थस्त्वयं-यद्यपि नामैते जातिवाचकाः शब्दा स्तथापि जातिरभिधीयते समानपरिणामः समानपरिणामश्चासमानपरिणामाविनाभावी अन्यथैकत्वापत्तितः समानत्वायोगात् ततो यदा समानपरिणामोऽसमानपरिणामसंलुलितप्राधान्येन विवक्ष्यते तदा समान

॥ टीका ॥

परिणामस्य प्रतिवक्तव्यतयानिकटत्वात् तदभिधाने च बहुवचनं यथा घटा इति यदा तु सर्वैकः समानपरिणामः प्राधान्येन विवक्ष्यते इतरस्त्व समानपरिणामः उपसर्जनीभूत स्तदा सर्वत्रापि समानपरिणामस्य एकत्वात्तदभिधानैकवचनं, यदा सर्वोपि घटः पृथुबुध्नोदराद्याकार इति अत्रा पि मनुष्या इत्यादौ समानपरिणामोऽसमानपरिणामसंकुलितः प्राधान्येन विवक्षित इति तस्यानेकत्वन्नाबा द्बहुवचनं ॥ अह भंते ! मणुस्सीइत्या

॥ मूल ॥

वग्घी वगी दीविया अच्छी तरच्छी परस्सरी रासभी सियाली विराली सुणिया कोलसुणिया कोक्कंतिया सिसिया चित्तिया चिल्ललिया जायावन्ना तहप्पगारा सव्वा सा इत्थीवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्सी जाव चिल्ललिया जेयावन्ना तहप्पगारा सव्वा सा इत्थीवऊ । अह भंते ! मणुस्सो जाव चिल्ललए जेयावन्ना त हप्पगारा सव्वा सा पुमवऊ ? हंता गोयमा ! मणुस्सो महिसो अस्सो हत्थी सीहो वग्घो वागो विदोविड

॥ भा० ॥

की द्वीपिका अच्छो तरक्षी परासरी रासभी शृगाली विराली शुनी काकशुनी कोकंतिका शशका चित्रका चिल्लका यापि चान्या तथाप्रकाराः सर्वा सा स्त्रीवाक् ? इन्त गौतम ! मानुषी यावच्चिल्लका यापि चान्या तथा प्रकारा सर्वा सा स्त्रीवाक् । अथ भदन्त ! मनुष्यो यावच्चिल्लको येपि चान्ये तथाप्रकारा सर्वा सा पुंवाक् ? इन्त गौतम ! मनुष्यो महिषोऽश्वो हस्तिः सिंहो व्याघ्रो वको द्वीपको ऽच्छस्तरक्षः परासरः शृ

॥ भाषा ॥

चोतरी पराधें गड खालको बिलाडो । सूचिया कोलसुणिया कोकंतिया ससिया चित्तिया । कूतरो लुंकतो कोलो कूतरो कागलो शसलो चित्तणो । चि ल्ललिया जेयावन्न तहप्पगारा सव्वासाइत्थिवऊ हंता गोयमा । चित्तलिका एहवा और एहवा सर्वने एकवचने कहिये हां गौतम । मणुस्सी जाव चिल्ल लिया जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वासाइत्थिवऊ । मनुष्यणी चिल्लली जांलगे एहवा वचने और स्त्री वचने कहिये । अह भंते मणुस्से जाव चिल्लए जेया वन्ने तहप्पगारा सव्वासापुमवऊ हंता गोयमा । हिवे लिंगवचने कहेछे भगवन् मनुष्य चिल्ललग जांलगे अरखपशु विशेष अनेरापिण एहवा सर्वने पुरु षवचनकहिये हां गौतम । मणुस्से महिसे अस्से हत्थी सीहे वाघे वगे दीवए । मनुष्य महिष अश्व गज सिंह वाघ बक चीतो । अच्छेतरच्छेपरस्सरे सिय

॥ टीका ॥

दि ॥ अत्रेदं संशयकारणं इह सर्ववस्तुत्रिलिङ्गं तथाहि-कटूपोयमिति पुल्लिङ्गं मृत्परिणतिरियं घटाकारा परिणतिरियमिति स्त्रीलिङ्गता इदं वस्त्विति नपुंसकलिङ्गता तत्रैवं शबलरूपे वस्तुनि व्यवस्थिते कथमेकलिङ्गमात्राभिधायीशब्द स्तदभिधायी भवति न खलु नरसिंहे सिंहशब्दो न रज्ञष्टो वा केवल स्तदभिधायी भवति अथच दृश्यते तदभिधायितयापि लोके व्यवहार स्ततः पृच्छति-सव्वा सा इत्थि बऊ इति ॥ सर्वा सा एवं

॥ मूल ॥

अच्छो तरच्छो परस्सरो सियालो विरालो सुणअ कोलसुणअ कोक्कंतिअ ससअ चित्तअ चिल्लअ जेयावन्ना तहप्पगारा सव्वा सा एगवऊ । अह भंते ! कंसं कंसोयं परिमंडलं सेलं थूभं जालं च्छालं तारं रूवं अत्थि पव्वं कुंभं पउमं दुहं दहिं नवनीयं आसणं सयणं भवणं विमाणं छत्तं चामरं भिंगारं अंगणं निरंगणं आभरणं रयणं जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वंतं नपुंसगवऊ ? हंता गोयमा ! कंसं जाव रयणं जेयावन्तं तहप्प

॥ छ० ॥

गालो विरालः शुनः काकशुनः कोकन्तिकः शशकश्चित्रक श्चिल्ललक येपि चान्ये तथा प्रकारा सर्वा सैकवाक् । अथ भदन्त ! कांस्यं कंशोकं परिमण्डलं शैलं स्थूभं जालं च्छालं तारं रूप्यमस्थि पर्व कुम्भं पद्म दुग्धं दधि नवनीतं आसनं शयनं भवनं विमानं छत्रं चामरं भृङ्गारमङ्गणं निरङ्गणमाभरणं रत्नं यदपि चान्य तथाप्रकार सर्वा सा नपुंसकवाक् ? हन्त गौतम ! कांस्यं यावद्रत्नं यद चान्य तथाप्रकारा सर्वा सा नपुंसक

॥ भाषा ॥

लेविरालेसुणएकोकंतिएससिएचित्तए चिल्लए जेयावन्ने तहप्पगारा सव्वापुमवऊ । अथेतरथोर स्थाल विलाड स्थान हंस शृगाली चोता चोल्लत अरण्य पशु विशेष जे एहवा अनेरानें पुरुषवचन कहिये । अह भंते कंसोयं परिमंडले सेतं थूणं जालंवालंतारारूवं । छिवै हे भगवन् कंशोक परिमंडल सेत थंभ जाल बाल ताराकप । अस्थिंकुंडंपव्वंपउमंदुहंदहिणवणीयं आसणं सयण भवणं विमाणं छत्तंचामरं । अस्थि कुंड पर्व पद्म दूध दही माखण आसण सयण भवनविमान छत्र चामर । भिंगारं अं णंनिरंगणं आभरणं रयणं जेवावन्ने तहप्पगारा सव्वेतेनपुंसगवऊ हता गोयमा । शृंगारकलश आंगणो निरांगणो आभरण रत्न एहवा जे अनेरासर्वनेंनपुंसकवचनकहिवै हां गौतम । कसंजावरयणं जेयावन्ने तहप्पगारा ते सव्वेनपुंसगवऊ । कंशो ज रत्न लों

॥ टीका ॥

प्रकारः स्त्रीलिङ्गविशिष्टार्थप्रतिपादिका वाक् भवति, काङ्क्षापाठात् प्रश्नार्थावगतिः भगवानाह-हंता गोयमा इत्यादि ॥ अक्षरार्थः सुगमो नवरा यंस्त्वयं यद्यपि नाम शबलरूपं वस्तु तथाप्येष शब्दो न्याय्यो येन धर्मेण विशिष्टः प्रतिपादयितुमिष्यते स तं प्रधानीकृत्य तेन विशिष्टं न्यग्भूतं शेषधर्माणां धर्मेण प्रतिपादयति यथा पुरुषत्वे ज्ञातृत्वे दातृत्वे भोक्तृत्वे जनकत्वे ध्यापयितृत्वे च युगपद्व्यवस्थितेपि पुनः पुत्रः समागच्छंतमवलोक्य पिता आगच्छतीति ब्रूते शिष्यरूपाध्याय इति' एवमिहापि यद्यपि मनुष्यीप्रकृतिकं सर्वं त्रिलिङ्गात्मकं तथापि योनिमृदुत्वास्थैर्यादिलक्षणं स्त्रीत्वमत्र प्रतिपादयितु मिष्टमिति ततः प्रधानीकृत्य तेन विशिष्टन्यग्भूतशेषधर्माणां धर्मेण प्रतिपादयतीति भवति सर्वा सा स्त्रीवाक्, एवं पुंवाक्नपुंसकवाचोपि भावनीये ॥ अह भंते ! पुढवीइत्यादि ॥ सुगमं नवरं ॥ आऊइति ॥ पुल्लिंगता प्राकृतलक्षणवशा त्संस्कृतेतु स्त्रीत्वमेव ॥ अह भंते ! पुढवी इत्थिआणवणी इत्यादि ॥ अथ भदन्त ! पृथिवीं कुरु पृथिवी मानयेत्येवं स्त्रियां स्त्रीलिङ्गे पृथिव्या आज्ञापनी एवं ॥ आऊइति ॥ पुमाज्ञापनी, धान्यमिति नपुंसकाज्ञापनी प्रज्ञापनी एषा भाषा नैषा मृषेति' भगवानाह-हंता गोयमा इत्यादि ॥ सुगमं ॥ अह भंते ! इत्यादि ॥ अथ भदन्त ! पृथिवी इति स्त्रीज्ञापनी स्वरूपस्य स्त्रीत्वप्ररूपणा ॥ एवं आऊइति ॥ पुंप्रज्ञापनी धान्यमिति नपुंसकप्रज्ञापनी आराधि

॥ मूल ॥

गारं तं सच्चं नपुंसगवऊ । अह भंते ! पुढवीइ इत्थीवऊ आणत्ति पुमवऊ धन्नोत्ति नपुंसगवऊ पन्नव णीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवीत्ति इत्थीवऊ आउत्ति पुमवऊ धणेत्ति ण

॥ छा० ॥

वाक् । अथ भदन्त ! पृथिवीति स्त्रीवाक् आपिति पुंवाक् धनमिति नपुंसकवाक् प्रज्ञापनी एषा भाषा नैषा भाषा मृषा ? हन्त गौतम ! पृथिवीति स्त्रीवाक् आपिति पुंवाक् धनमिति नपुंसकवाक् प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा । अथ भदन्त ! पृथिवीति स्त्र्याज्ञापनी आपिति

॥ भाषा ॥

लगे एहवाने सर्वने नपुंसकवचनकहिये । अह भंते पुढवीइत्थिवऊ आऊतिपुमवऊ धणेत्ति नपुंसगवऊ पन्नवणीणं एसाभासा नएसा मोसा हंता गो० । हिवे हेभगवन् पृथिवीविषे स्त्री वचन अप्ने पुरुषवचन स्त्रीवचने नपुंसकवचन प्रज्ञापनीये प्राकृतवचने संस्कृते एभाषा मृषाकहिये हां गो० । पुढवीइत्थि

नी मुक्तिमार्गप्रतिपंथिनी एषा भाषा नैषा भाषा मृषेति, किमुक्तं भवति नचैवं वदतो मिथ्याभाषित्वप्रसंगः, भगवानाह-आराधिनी एषा भाषा नैषा भाषा मृषेति शब्दव्यवहारापेक्षया यथावस्थितवस्तुतत्वप्ररूपणात्, इह कियत् प्रतिपदं प्रष्टुं शक्यते ततोतिदेशेन पृच्छति-इच्चेवं

पुंसगवऊ पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा । अह भंते ! पुढवी इत्थीआणमणी आउत्ति पु
आणमणी धणेत्ति नपुंसगाणमणी पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवी
ति इत्थीआणमणी आउत्ति पुमआणमणी धन्नेति णपुंसगाणमणी पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भास
मोसा । अह भंते ! पुढवीइ इत्थीपन्नवणी आऊ पुमपन्नवणी धन्नेत्ति नपुंसगपन्नवणी आराहणीणं एसा
भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! पुढवीइ इत्थीपन्नवणी आउत्ति पुमपन्नवणी धणेत्ति नपुं

॥ अ० ॥

पुमाज्ञापनी धनमिति नपुंसकाज्ञापनी प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा ? हन्त गौतम ! पृथिवीति स्त्र्याज्ञापनी अपिति पुमाज्ञापनी धन
मिति नपुंसकाज्ञापनी प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा । अथ भदन्त ! पृथिवीति स्त्रीप्रज्ञापनी अपिति पुंप्रज्ञापनी धनमिति नपुंसकप्र

॥ भाषा ॥

वऊ आऊत्तिपुमवऊ धणेत्तिनपुंसगवऊ पन्नवणीणं एसा भासा नएसा मोसा । पृथिवीनै स्त्रीवचन अपने पुरुषवचन स्त्रीनेनपुंसकवचन ए प्रज्ञापनानी भाषा नही मृषा । अह भंते पुढवीत्तिइत्थी आणमणी आऊत्तिपुम आणमणी । हिवै भगवन् पृथिवीनै स्त्री आमवणी अपनेपुरुष आमवणी । धणेत्ति नपुंसग आणमणी पन्नवणीणं एसा भासान एसा भासा मोसा हता गो० । स्त्रीनें नपुंसक आमंवणी प्रज्ञापनी ए भाषा मृषा नही छांगी० । पुढवीत्ति इत्थी आणमणी आऊत्तिपुम आणमणी । पृथिवीनै स्त्री आमवणी अपने पुरुषे आमंव णी । धणेत्तिनपुंसग आणमणी पन्नवणीणं एसा भासा नोसा । स्त्रीने नपुंसक आणमणी प्रज्ञापनीयें भाषा बोलनें मृषा प्रसंगनही । अह भंते पुढवीत्तिइत्थी पन्नवणी आऊत्तिपुमपन्नवणी । हिवै हे भगवन् पृथिवीनै स्त्री प्रज्ञापनी अपने पुरुष ज्ञापनी । धणेत्तिनपुंसग पन्नवणी आराहणीणं एसा भासाए एसा भासा मोसा हंता गोयमा । धन्नेनें नपुंसकप्रज्ञापनी

भंते ! इत्यादि ॥ इति रूपदर्शने, एवंशब्दः प्रकारे' उपदर्शितेन प्रकारेणान्यदपि स्त्रीवचनं पुंवचनं नपुंसकवचनं वा वदति साधु स्तथा तस्मिन्नेवं वदति या भाषा सा प्रज्ञापनी भाषा नैषा भाषा मृषेति, भगवानाह-प्रज्ञापनी एषा भाषा शाब्दव्यवहारानुसरणतो दोषाभावात्, अन्यथा स्थितेहि वस्तुन्यन्यथा भाषमाणो दोषो यदातु यद्वस्तु यथावस्थितं तत्तथा भाषते तदा कोदोष इति । तदेवं भाषाप्रतिपादनविषया ये केचन संदेहास्ते सर्वेऽपनीताः सम्प्रति सामान्यतो भाषायाः कारणं दिदृक्षुराह-भासाणं भंते ! किं मूइया इत्यादि ॥ भाषा अवबोधबीजभूता ण



सगपन्नवणी आराहणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा (ग्रथ४०००) इच्चेव भंते ! इत्थीवयणं वा पुमवयणं वा नपुंसगवयणं वा वयमाणे पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा ? हंता गोयमा ! इत्थीवयणं वा पुमवयणं वा नपुंसगवयणं वा वयमाणे पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा । भासा



प्रज्ञापनी आराधिनी एषा भाषा नैषा भाषा मृषा ? इन्त गौतम ! पृथिवीति स्त्रीप्रज्ञापनी अपिति पुंप्रज्ञापनी धनमिति नपुंसकप्रज्ञापनी आराधिनी एषा भाषा नैषा भाषा मृषा । इत्येवं भदन्त ! स्त्रीवचनं वा पुंवचनं वा नपुंसकवचनं वा वदति (सति) प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषेति ? हन्त गौतम ! स्त्रीवचनं वा पुंवचनं वा नपुंसकवचनं वा वदति प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषा । भाषा भदन्त ! किमादि



आराधनी भाषा मृषा नहो हां गौतम । पटवोत्तिइत्था आमंत्रणी आकृत्तिपुमपमवयणो भण्णेत्तिनपुंसगपन्नवणी । हिवे पृथिवीने स्त्री आमंत्रणी अपने पुरुषे आमंत्रणी धनने नपुंसकप्रज्ञापनी । आराहणीणं एसा भासा ण एसा भासा मोसा । आराधनी भाषा मृषा नहो । इच्चेवं भंते इत्थिवयणंवा पुमवयणंवा नपुंसगवयणंवा वयमाणे पन्नवणी एसा भासाण मोसा हंता गोयमा । इत्यादि हे भगवन् स्त्रीवचने पुरुषवचने नपुंसकवचने बोलतां बोलावतां प्रज्ञापनी ए भाषा मृषा न कहिये हां गौतम । इत्थिवयणंवा पुमवयणंवा नपुंसगवयणंवा वयमाणे पन्नवणीणं एसा भासा ण एसा भासा मोसा भासाणं भंते किमादीया । स्त्रीवचने पुरुषवचने नपुंसकवचने बोलतेबोलावतां ए भाषा मृषा नहो भाषाना हे भगवन् कांई आदि मूल । किं पवहा किं

॥ टीका ॥

मितिवाक्यालङ्कारे किमादिका उपादानकारणव्यतिरेकेण किमादि मौलं कारणं यस्याः सा किमादिका, तथा किं प्रज्ञप्ता कस्मात्प्रज्ञप्त उत्पादो यस्याः सा किंप्रज्ञप्ता, सत्यपि मौले कारणे पुनः कस्मात्कारणान्तरादुत्पद्यत इतिभावः, तथा किं संस्थितेति केनाकारेण संस्थिता किं संस्थिता कस्येव संस्थानमस्या इतिभावः, तथा किं पर्यवसिता इति कस्मिन् स्थाने पर्यवसिता निष्ठाङ्गता किं पर्यवसिता भगवानाह-गौतम ! जीवादिका जीव आदि मौलं कारणं यस्याः सा जीवादिका जीवगततथाविधप्रयत्नमन्तरेणावबोधबीजभूतभाषाया असम्भवात् आहच-भगवान् भद्रबाहुस्वामी-तिविहंमिसरीरंमी जीवप्पओगहवतिजीवस्स । जेहिंउगिण्हइगहणं तोभासइभासतुभासं ॥१॥ किं प्रज्ञप्ता तस्य निर्वचनमाह-शरीरप्रज्ञप्ता औदारिकवैक्रियाहारकान्यतमशरीरसामर्थ्यादेव भाषाद्रव्यनिर्गमे, तथा किं संस्थिता इत्यस्य निर्वचनं वज्रसंस्थिता वज्रस्येव संस्थानं यस्याः सा वज्रसंस्थिता भाषाद्रव्याणिहि तथाविधप्रयत्ननिसृष्टानि सन्ति सकलमपि लोकमाक्रम्य प्रभवंति लोकश्च वज्राकारसंस्थितः, किं पर्यवसितेत्यत्र निर्वचनं लोकान्तपर्यन्तपर्यवसिता परतो भाषाद्रव्याणां गत्युपष्टम्भकधर्मास्तिकायाभावतो गमनासम्भवात् प्रज्ञप्ता मया शेषैश्च तीर्थकृद्भिः पुनरपि प्रश्नमाह-भासा कतिय

॥ मूल ॥

णं भंते ! किमादीया किं पइट्ठा किं संठिया किं पज्जवसिया ? गोयमा ! भासाणं जीवादीया सरीरप्पइट्ठा

॥ अ० ॥

का किं प्रज्ञप्ता किं संस्थिता किं पर्यवसिता ? गौतम ! भाषा जीवादिका शरीरप्रज्ञप्ता वज्रसंस्थिता लोकान्तपर्यवसिता प्रज्ञप्ता । भाषाकुतश्चप्रभवति कतिभिः समयैश्च भाषाते भाषा । भाषा कतिप्रकारा कतिवा भाषाहेतवस्तु ॥ १ ॥ शरीरप्रज्ञप्ता भाषा द्वाभ्यांसमयाभ्यां भाषते

॥ भाष ॥

संठिया किं पज्जवसिया गोयमा ! लोगंतपज्जवसिया प० । भासा जीवादीया सरीरपइट्ठा वज्जसंठिया लोगंतपज्जवसिया प० । भासा कओपभवति कतिहिंवा समएहिं भासतीति भासा । भासाकओ उपजे ति कहिके केतले समये भासानीकले । कतिपगाराकतिण्हं भासा अणुमयाओ ? सरीरप्पभवा भासा भा० । भाषाके लें प्रकारे केतलो भाषानो साधन अनुमतिछे पूर्वकहो पिण काय योगेनीकले । दोहिंसमएहिंभासतो भासा भासाचउप्पगारा दोण्हंव

॥ टीका ॥

पन्नवा इत्यादि॥ भाषा कृतो योगात्प्रज्ञवति उत्पद्यते काययोगात् वाक्योगा द्वा तथा कतिभिः समयै भाषा भाषते किं मुक्तं भवति कतिभिः समयै निसृज्यमानद्रव्यसंहत्यात्मका भाषा भवति तथा भाषा कतिप्रकाराः कतिप्रभेदा कतिवा भाषा साधूनां वक्तुमनुगता अनुगता अनुज्ञाता अत्र निर्वचनं शरीरप्रयोगा इत्यादि अत्र शरीरग्रहणेन शरीरयोगः परिगृह्यते शरीरमात्रप्रज्ञवत्वस्य प्रागेवनिरूपितत्वात्, शरीरप्रज्ञवा इति कोर्थः काययोगप्रज्ञवा तथाहि-काययोगेन भाषा योग्यान् पुद्गलान् गृहीत्वा भाषात्वेन परिणमय्य वाग्योगेन निसृजति ततः काययोगबला द्भाषा उत्पद्यते इति योगप्रज्ञवे त्युक्तं आहच-भगवान् भद्रबाहुस्वामी-गिण्हइ य काइएणं निसिरइतहवाइएणजोगेणमिति॥ कइहिंवसमयेहिं भासइ भासमित्यस्य निर्वचनं द्वाभ्यां समयाभ्यां भासते भाषा तथा ह्येकेन समयेन भाषायोग्यान् गृह्णाति द्वितीये समये भाषात्वेन परिणमय्य निसृजतीति॥ भासा कइप्पगारा॥ इत्यस्य निर्वचनं भाषा सत्यादिभेदा चतुःप्रकारास्तेच सत्यादयो भेदाः प्रागेव भाविता इति॥ कइवा भासा अणुमयाय॥ इत्यस्य निर्वचनं-भाषा सत्यादिके भाषे

॥ मूल ॥

वा वज्जसंठिया लोगंतपज्जवसिया पन्नत्ता। भासा कइय पन्नवति कतिहिंव समएहिं भासतीभासं भासा कतिप्पगारा, कतिवा भासा अणुमयाय, सरीरप्पभवाभासा दोहिंयसमएहिंभासतीभासं। भासा चउप्प

॥ प० ॥

भाषा। भाषाचतुःप्रकारा द्वे भाषेवक्तुमनुमतेहेंद्रिः ॥ २ ॥ कतिविधा भदन्त! भाषा प्रज्ञप्ता? गौतम! द्विविधा भाषा प्रज्ञप्ता तद्यथा-पर्याप्ताऽपर्याप्ता च। पर्याप्ता भदन्त! भाषा कतिविधा प्रज्ञप्ता? गौतम द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-सत्या च मृषाच। सत्या भदन्त! भाषा

॥ भाषा ॥

भासा अणुमयाओ २। दोयसमयमांहि भाषा भासे १ समये भाषाना पुद्गलग्रहे जे समये मोकले ते भाषाना ४ प्रकार साधुने दोय भाषानी अनुमतिछे सत्यभाषा १ असत्याभाषा २। कतिविहाणं भंते भासा पं गोयमा। के लोकारे [illegible] भाषा कही छे गौतम। दुविहा भासा पं तं पज्जत्तियाय अपज्जत्तियाय पज्जत्तिय भासाणं भंते कतिविहा पं० गोयमा। दोयप्रकारे भाषाकही ते कहेछे पर्याप्तिभाषा अवधारीसकिये ते अपर्याप्ति भाषा अवधारी नसकिये पर्याप्तिभाषारा केतलाभेदछे हे गौतम। दुविहा पं तं सच्चामोसाय सच्चाणं भंते भासा कतिविहा पं गोयमा। दोयप्रकारे कह्या ते कहे स

॥ टीका ॥

साधूनां वक्तुमनुमते तद्यथा-सत्या असत्यामृषा च अर्थात् ये मृषा सत्यामृषे तेनानुज्ञाते तयोरयथावस्थितार्थप्रतिपादनपरतया मुक्तिप्रतिपंथित्वात् पुनः प्रश्नयति-कतिविहाणं भंते इत्यादि ॥ पज्जत्तिया अपज्जत्तिया इति ॥ पर्याप्तानामप्रतिनियतरूपतया अवधारयितुं शक्यते सा पर्याप्ता साच सत्या मृषावा द्रष्टव्या उभयोरपि प्रतिनियमरूपतया वधारयितुं शक्यत्वात्, यातु मिश्रतया उभयप्रतिषेधात्मकतया वा न प्रतिनियतरूपतया वधारयितुं शक्यते सा अपर्याप्ता सा च सत्यामृषा असत्यामृषा द्रष्टव्या उभयोरपि प्रतिनियतेन रूपेणावधारयितु मशक्यत्वात् ॥ पज्जत्तियाणं भंते इत्यादि ॥ नवरं सत्यामृषाचेत्युक्तमतः सत्याभेदावगमाय प्रश्नमाह-सच्चाणं भंते भासा पज्जत्तिया कइविहा पन्नत्ता इति पाठसिद्धं भगवानाह-गोयमा इत्यादि ॥ जणवयसच्चाइति ॥ तं तं जनपदमधिकृत्येष्टार्थप्रतिपत्तिजनकतया व्यवहारहेतुत्वा त्सत्या, जनपदसत्या, यथा कौंकणादिषु पयः पिच्छमित्यादि, सम्मतसत्या या सकललोकसामत्येन सत्यतया प्रसिद्धा कुमुदकुवलयोत्पलतामरसानां समानेपि पङ्कसंभवे गोपालजनोरविंदमेव पङ्कजं मन्यते न शेषमित्यरविंदे पङ्कजमिति सम्मतसत्या, स्थापनासत्या यथाविधमङ्कादिविन्यासं मुद्राविन्यासं चोपलभ्य प्रयुज्यते यथा एकं पुरतो बिंदुत्रयसहितमुपलभ्य ज्ञातमिदमिति बिंदुत्रयसहितं सहस्रमिदमिति तथाविधं मुद्राविन्यासमुपलभ्य मृत्तिकादिषु

॥ मूल ॥

गारा दोन्नियनासाऽणुमयाइं । कतिविहाणं भंते ! भासा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा भासा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तियाय अपज्जत्तियाय । पज्जत्तियाणं भंते ! भासा कतिविहा पन्नत्ता, गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—सच्चाय मोसाय । सच्चाणं भंते ! भासा पज्जत्तिया कतिविहा पन्नत्ता, गोयमा ! दसविहा

॥ अ० ॥

पर्याप्ता कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! दशविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-जनपदसत्या सम्मतसत्या स्थापनासत्या नामसत्या रूपसत्या प्रतीत्यसत्या

॥ भाषा ॥

त्या मृषा सत्या भाषाना भगवन् केतलाभेद हे गौतम । दसविहा पं तं जणवयसच्चा सम्मयसच्चा ठवणासच्चा नामरूवसच्चा पडुच्चसच्चा । १० प्रकारे ते कहेछे जनपदसत्या समयसत्या स्थापनासत्या नामसत्या रूपसत्या प्रतीत्यसत्या । ववहारसच्चा भावसच्चा जोगसच्चा । व्यवहारसत्या भावसत्या योगसत्या

भावोयं कार्षापणोयमिति, तथा नामतः सत्या नामसत्या यथा कुलमवर्द्धयन्नपि कुलवर्द्धन इति, तथा रूपतः सत्या रूपसत्या यथा दंभतोगृहीतप्रव्रजितरूपः प्रव्रजितोयमिति, तथा प्रतीत्या अन्यवस्त्वन्तरं सत्या प्रतीतसत्या यथा अनामिकाया कनिष्ठामधिकृत्य दीर्घत्वमध्यमामधिकृत्य ह्रस्वत्वं न च वाच्यम् । कथमेकस्या ह्रस्वत्वं दीर्घत्वंच तात्त्विकं परस्परविरोधादिति भिन्ननिमित्तत्वे परस्परविरोधामन्तामेव यदि कनिष्ठां मध्यमां वा एकामंगुलिमगीकृत्य ह्रस्वत्वं दीर्घत्वं च प्रतिपाद्येत ततो विरोधः संभवेत् एकनिमित्तपरस्परविरुद्धकार्यद्वयासंभवात्, यदात्वेकां मधिकृत्य ह्रस्वत्व मपरामधिकृत्य दीर्घत्वं तदा सत्वासत्वयोरिव भिन्ननिमित्तत्वात्परस्परमविरोधः । अथ यदि तात्त्विके ह्रस्वदीर्घत्वे ततऋजुत्ववक्रत्वे इव कस्मात्ते परानिरपेक्षे न प्रतिभासते तस्मात्परोपाधिकत्वात् काल्पनिके इमे इति तदयुक्तं-द्विविधाहि वस्तुनो धर्माः सहकारिव्यंगरूपा इतरेच ॥ तत्र ये सहकारिव्यंगरूपा स्ते सहकारिसम्पर्कवशा त्प्रतीतिपथमायांति यथा पृथिव्या जलसम्पर्कतो गन्ध इतरेत्वेवमेवापि यथा कर्पूरादिगंधो ह्रस्वत्वदीर्घत्वेऽपि च सहकारिव्यंगरूपे तत स्ते तं सहकारिसमासंख्यान्निर्व्यक्तिमायात इत्यदोषः, तथा व्यवहारो लोकविवक्ष्याव्यवहारतः सत्या व्यवहारसत्या यथा गिरिर्दह्यते गलति भाजनं अनुदरा कन्या अलोमिका एडका लोकोहि गिरिगततृणराहेतृणादिना सह गिरे रंशे विवक्षित्वा गिरिर्दह्यते इति ब्रूते, भाजनादुदके स्रवति उदकभाजनयोरंशे विवक्षित्वा गलति भाजनमिति, सम्भोगजबीजप्रज्ञयोदराभावे ऽनुदरइति, लक्षण

**पसत्ता, तंजहा-जणवयसच्चा सम्मतसच्चा ठवणासच्चा नामसच्चा रूवसच्चा पडुच्चसच्चा ववहारसच्चा भाव सच्चा जोगसच्चा उवम्मसच्चा । जणवयसंमुतियठवणा नामेरूवेपडुच्चसच्चेय । ववहारभावजोगे दसमेउ वम्मस**

व्यवहारसत्या भावसत्या योगसत्योपम्यसत्या १० । जनपदसम्मतस्थापना-नामरूपं प्रतीत्यसत्यञ्च । व्यवहार भावयोगो दशमस्त्वौपम्यसत्यञ्च

जणवय सम्मतिठवणानामेरूवे पडुच्च सच्चयववहारभावजोगे । जनपद १ सम्मत २ स्थापना ३ नाम ४ रूप ५ प्रतीत्यसत्य ६ व्यवहार ७ भाव ८ योग ९ दसमेयउवम्मसच्चेय ॥ १ ॥ कोसाणं भंते भासा पन्नत्तिया कतिविहा पंनत्तिया । उपमासत्या १० ए १० प्रकारे सत्या कइणा भंते भाषा हे भगवन् पर्याप्ताना

योग्यलोमाऽभावे ऽलोमिकेति, ततो लोकव्यवहारमपेक्ष्य साधोरपि तथाभ्रुवतो भाषा व्यवहारसत्या भवति, तथा भावो वर्णादि भावतः सत्या भावसत्या किमुक्तं भवति यो भावो वर्णादि र्यस्मिन्नुत्कटो भवति तेन या सत्या भाषा भावसत्या यथा सत्यपि पञ्चवर्णसम्भवे बलाका शुक्लेति यथा योगः सम्बन्ध स्तस्मा त्सत्या योगसत्या, तत्र छत्रयोगात् विवक्षितशब्दप्रयोगकाले छत्राभावेपि छत्रयोगस्य सम्भवात् छत्री' एवं दण्डयोगा दण्डी, उपम्यसत्या यथा समुद्रवत्तडागः अत्रैवार्थे विनेयजन नुग्रहाय संग्रहणिगाथामाह-जणवयसम्मयठवणा इत्यादि ॥ भावितायां मृषा दशविधा तद्यथा-कोहनिस्सियाइत्यादि ॥ क्रोधा न्निसृता क्रोधाद्वानिर्गता इत्यर्थः, एवं सर्वत्रापि भावनीयं । तत्र क्रोधाभिभूतो विसंवादनबुद्ध्या परं प्रत्याय यत्सत्यमसत्यं वा भाषते तत्सर्वं मृषा' तस्य हि आशयो ऽतीवदुष्ट स्ततो ख्यापनाया नुद्भूतमस्माभि स्तदानीमेव मैश्वर्यमित्यादि वदतः,



ज्ञेय ॥ १ ॥ मोसाणं भंते ! भासा पज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता, गोयमा ! दसविहा पण्णत्ता, तंजहा-कोहणिस्सिया माणणिस्सिया मायाणिस्सिया लोभणिस्सिया पेज्जनिस्सिया दोसणिस्सिया हासनिस्सिया भयणिस्सिया अक्खाइयाणिस्सिया उवघायणिस्सिया ॥ कोहेमाणेमाया लोभेपेज्जेतहेवदोसेय। हासभएअ



१ ॥ मृषा भदन्त ! भाषा पर्याप्ता कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! दशविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-क्रोधनिश्रिता माननिश्रिता मायानिश्रिता लोभनिश्रिता प्रेमनिश्रिता द्वेषनिश्रिता हास्यनिश्रिता भयनिश्रिता ऽऽख्यायिकानिश्रितोपघातनिश्रिता १० । क्रोधोमानमाया लोभःप्रेमत



केलें प्रकारें कह्यो छे गौतम । दसविहा पं० तं० कोहणिस्सिया माणणि० मायाणि० लोहणि० ४ । दशप्रकारे कह्या ते क्रोधनिश्रित १ माननिश्रित २ मायानिश्रित ३ लोभनिश्रित ४ । पेज्जणि० दोसणि० हासणि० उवघायणि० भयणि० अक्खायणि० । प्रेमनिश्रित ५ द्वेषनिश्रित ६ हास्यनिश्रित ७ शोक भानि० ८ भयनिश्रित ९ आख्यायितनि० १० जे कषाये सभ, वेभूठो । उवघायणि० कोहेमाणे मायालोभेपेजे तहेव । उपघातनिश्रित ते चोर पडयो असत्या घांत क्रोधें माने मायायें लोभें प्रेमें तिमहीज । दोसेयहासभए अक्खाइय उवघ, इयणिस्सिया दसमा । इम हास्य भय उपघातें आख्यातें निश्रित इत्या

मायानिसृता यत्परवंचयद्यपि घुणाक्षरन्यायेन सत्यमापतति ज्ञाप्यबुद्धया वोपेत्य सत्यं भाषते तदा प्याशयदोषदुष्टमिति मृषेति, माननिसृता पूर्वमननुभूतमप्यैश्वर्यमात्मोत्कर्षनाभिप्रायेण सत्यमसत्यं वा भाषते, लोभनिसृता यल्लोभान्निभृतः कूटतुलादिकृत्वा यथोक्तप्रमाणमिदं तुल्यादीनि ददतः' प्रमनिसृता वदति प्रेमवशाद्दासोहं तवेत्यादिवदतः, द्वेषनिसृता यत्प्रतिनिर्विष्टतीर्थकरादीनामप्यवर्णं भाषते, हास्यनिसृता यत्कैलिवशलोनृतभाषणं, भयनिसृता तस्करादिभयेनासमंजसभाषणं, आख्यायकानिसृता यत्कथास्वसत्याद्यभिधानं, उपघातनिसृता चौरस्त्वमित्याद्यभ्याख्यानं, अत्रापि सङ्ग्रहणिगाथामाह-कोहेमाणेइत्यादि ॥ भाविताथो सत्यामृषा दशविधा तद्यथा-उप्पन्नमिस्सियाइत्यादि ॥ उत्पन्नामिश्रिता अनुत्पन्नैः सह सङ्ख्यापूरणार्थं यत्र सा उत्पन्नमिश्रिता एवमन्यत्रापि यथायोगं भावनीयं तत्रोत्पन्नमिश्रिता यथा-कस्मिंश्चित् ग्रामे नगरे जनेष्वधिकेषु वा दारकेषु जातेषु दशदारका अस्मिन्नद्य जाता इति आदि एवमेव मरणकथने विगतमिश्रिता तथा जन्मनो मरणस्य च कृतपरिमाणस्याभिधाने विसंवादने चोत्पन्नविगतमिश्रिता, तथा प्रभूतानां जीवानां स्तोकानां च मृतानां च शंखशम्बूकादीनामेकत्र राशौ दृष्टे यदा कश्चिदेवं वदति



खाइय उवघाइयणिस्सियादसमा ॥ १ ॥ अपज्जत्तियाणं भंते ! कतिविहा भासा पण्णत्ता, गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता—सच्चामोसा य असच्चामोसा य । सच्चामोसाणं भंते ! भासा अपज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता, गो० !



यैव दोषश्च । हास्यजन्याख्यायिकमथ उपघातनिश्रिता दशमा ॥ १ ॥ अपर्याप्ता भदन्त ! भाषा कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! द्विविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा--सत्यामृषा चासत्यामृषाच । सत्यामृषा भदन्त ! भाषा अपर्याप्ता कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! दशविधा प्रज्ञप्ता तद्यथा-



टिकें करी झठवाले। अपज्जत्तियाणं भंते कतिविहा पं० गोयमा दुविहा पं० तं० सच्चामोसा १ असच्चामोसा २ । अपर्याप्तानो भाषा केत्लेभेदे छवे हेगोतम दोय भेदेकह्या ते सत्यामृषा १ असत्यामृषा २ । सच्चामोसाणं भंते भासा अपज्जत्तिया कतिविहा पं० गोयमा । सत्यामृषा भाषाना हे भगवन् अपर्याप्ताना केत्लाभेदछे हे गौतम । दसविहा पं० तं० उप्पन्नमिस्सिया विगतिमिस्सिया । १० भेदछे उत्पन्नमिश्रित अपनो तिम आज १० चेयाएकी जाणा किहां

॥ टीका ॥

अहो महान् जीवराशिरयमिति तदा सा जीवमिश्रिता' सत्यामृषात्वंचास्या जीवत्सु सत्यत्वात् मृतेषु मृषात्वात् यदा २ प्रभूतेषु मृतेषु स्तोकेषु जीवत्सु एकत्र राशीकृतेषु शङ्खादिष्वेवं वदति अहोमहानयं मृतो जीवराशिरिति तदा सा अजीवमिश्रिता, अस्यापि सत्यामृषात्वं मृतेषु सत्यत्वात् जीवत्सु मृषात्वात् तथा तस्मिन्नेवराशौ एतावन्तोत्र जीवंत एतावतोत्र मृता इति नियमेनावधारतोविसंवादे जीवाजीवमिश्रिता' तथा मूलकादिकमनन्तकायं तस्यैव सक्तेः परिपांडुपत्रैरन्येन वा केनचित्प्रत्येकवनस्पतिना मिश्रमवलोक्य सर्वोप्येष ऽनन्तकायिक इति वदतो ऽनन्तमिश्रिताः, तथा प्रत्येकवनस्पतिसङ्घातमनन्तकायिकेन सह राशीकृतमवलोक्य प्रत्येकवनस्पतिरयं सर्वोपि वदतः प्रत्येकमिश्रिता, तथा द्वाकालः सचेह प्रस्तावात् दिवसो रात्रिर्वा परिगृह्यन्ते संमिश्रितोयया साऽद्धामिश्रिता दिवसे वर्त्तमान एव वदति उत्तिष्ठ रात्रिर्जातेति रात्रौ वा वर्त्तमानायाम्

॥ मूल ॥

दसविहा पन्नत्ता—उप्पन्नमिस्सिया विगयमिस्सिया उप्पन्नविगयमिस्सिया जीवमिस्सिया अजीवमिस्सिया जीवाजीवमिस्सिया अणंतमिस्सिया परित्तमिस्सिया अद्धामिस्सिया अद्धद्धामिस्सिया । असच्चामोसाणं भंते ! भासा अपज्जत्तिया कतिविहा पन्नत्ता, गोयमा ! दुवालसविहा पन्नत्ता, तंजहा—आमंतणी

॥ अ० ॥

उत्पन्नमिश्रिता विगतमिश्रिता उत्पन्नविगतमिश्रिता जीवमिश्रिताऽजीवमिश्रिता जीवाजीवमिश्रिताऽनन्तमिश्रिता प्रत्येकमिश्रिताऽद्धामिश्रिताऽद्धाद्धामिश्रिता । असत्यामृषा भदन्त ! भाषा अपर्याप्ता कतिविधा प्रज्ञप्ता ? गौतम ! द्वादशधा प्रज्ञप्ता तद्यथा—आमन्त्रण्याज्ञापनी याच

॥ भाष ॥

१० मनुष्य मृषा। उत्पन्नविगतिमीस्सिया जीवमिस्सिया अजीवमिस्सिया। उत्पन्नविगतिमिश्रिता एवं मिश्रित ऊपनामृषा ते भाषा जीव मिश्रितासंयमे देखो महान् जीव राशिते ते छोड शखने देखो अहो महानयं मृतो जीवराशि। जीवाजीवमिस्सिया अणतमिस्सिया परित्तमि स्सिया। जीवाजीवमिश्रिता अनन्तमिश्रिता मूला पानदेखो प्रत्येकमिश्रिता प्रत्येकवनस्पति देखीने। अद्धामिस्सिया अद्धद्धामिस्सिया। कालमिश्रिता रात्रि पडोदिनजणो अर्द्धद्धा मिश्रिता रात्रिदिनमिश्रितबोले। असच्चमोसाणं भंते भासा अपज्जत्तिया कतिविहाणं पं० गोयमा असत्या मृषाना हे भगवन् भाषा अपर्याप्ताना केतला

॥ टीका ॥

त्तिष्ठोद्गतः सूर्य इति, तथा दिवसस्य रात्रेर्वा एकादशोऽद्धाद्धा सामिश्रिता यथा सा अद्धाद्धामिश्रिता यथा प्रथमपौरुष्यामेव वर्त्तमानायां कश्चित्कंचन त्वरयन् एवं वदति चल २ मध्याह्नीभूतं इति, असत्यामृषा द्वादशविधा तद्यथा-आमंतणयइत्यादि ॥ तत्र आमंतणी हेदेवदत्त ! इत्यादि एषाहि प्रागुक्तसत्यादिभाषात्रयलक्षणाविकलत्वा न्न सत्या नापि मृषा नापि सत्यामृषा केवलं व्यवहारमात्रप्रवृत्तिहेतु रित्यसत्यामृषा एवं सर्वत्र भावना कार्या, आज्ञापनीकार्येषु परस्पर प्रवर्त्तन यथेद कुर्विति, याचनी कस्यापि वस्तुविशेषस्य देहीति मार्गणं, पृच्छनी अविज्ञातस्य संदिग्धस्य कस्यचिदर्थस्य परिज्ञानाय तद्विदःपार्श्वे चोदना प्रज्ञापनी विनीतविनयस्य विनयजनस्योपदेशदानं यथा प्राणिवधान्निवृत्ता भवन्ति भवान्तरे प्राणिनो दीर्घायुष इत्यादि उक्तंच-पाणिवहाउनियत्ता हवंतिदीहाउयाअरोगाय । एम्माईपन्नत्ता पन्नवणीवीयरागेहिं ॥ १ ॥ याचमानस्य प्रतिषेधवचनं प्रत्याख्यानी, इच्छानुलोमा नाम यथा कश्चित्किंचित्कार्यमारभ्यमाणं कंचन पृच्छति स प्राह करोतु भवान् ममाप्येतदभिप्रेत मिति, अनभिग्रहा यत्र प्रतिनियतार्थानवधारणं यथा बहुषु कार्येष्ववस्थितेषु कश्चित्कंचनं पृच्छति किमिदानीं करोमि सप्राह-यत्प्रतिभायते तत्कुर्विति, अभिगृहीता प्रतिनियतार्थावधारणं यथा इदमिदानीं कर्त्तव्यमिदं ते नेति, संशयकरणी या एका वाक् अनेकार्था अभिधायितया परस्य संशयम्

॥ मूल ॥

आणमणी जायणीतहपुच्छणीयपन्नवणी। पच्चक्खाणीभासा भासाइच्छाणुलोमाय॥ १॥ अणभिग्गहिय.भासा भासा अभिग्गहंमिबोधव्वा संसयकरणीभासा बोगडअबोगडाचेव॥ १॥ जीवाणं भंते ! किं भासगा अभा

॥ भ० ॥

नीप्रच्छनीचप्रज्ञापनी । प्रत्याख्यानीभाषा भाषाइच्छानुलोमाच ॥ १ ॥ अनभिग्रहा च भाषा भाषाभिग्रहेचबोद्धव्या । संशयकरणी भाषा व्या

॥ भाषा ॥

भेदकहा हे गौतम । दुवालसविहा पं० तं० आमंतणी आणमणी जायणितह पुच्छणीयपन्नवणी पच्चक्खाणी भासा भासाइच्छाणुलोमाय ७। १२ भेदे कहा ते कहेछे आमंत्रण १ आनयमणी २ याचणी ३ प्रश्न भाषा ४ प्रज्ञापनी भिख्या ५ प्रत्याख्यानी ६ इछानुलोक ७। आणभिग्गहिया भासा भासाय अभिग्ग हंमिबोधव्वा । अनभिग्रहीता ८ अभिग्रहीता ९ जाणिवो । संसयकरणी भासा बोडगा अबोडगाचेव २ जीवाणं भंते किं भासगा । संदेहकारणी १०

त्वादयति यथासैंधवमानीयता मित्यत्र सैंधवशब्दो लवणवस्त्रपुरुषवाजिषु, व्याकृता या प्रकटार्था अव्याकृता अतिगम्भीरशब्दार्था अव्यक्तास्तप्रयुक्ता वा अविज्ञावितार्थत्वात्' शेषं सुगमं ॥ यावत्कइणं भंते ! भासज्जाया इत्यादि ॥ कति भदन्त ! भाषाजातानि भाषाप्रकाररूपाणि प्रज्ञप्तानि,

॥ टीका ॥

सगा ? गोयमा ! जीवा भासगावि अभासगावि । से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—जीवा भासगावि अभासगावि ? गोयमा ! जीवा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—संसारसमावन्नगा य असंसारसमावन्नगा य । तत्थणं जेते असंसारसमावन्नगा तेणं सिद्धा, सिद्धाणं अभासगा । तत्थणं जेते संसारसमावन्नगा, ते दुविहा, पन्नत्ता तंजहा—सेलेसिपडिवन्नगाय असेलेसीपडिवन्नगाय । तत्थणं जेते सेलेसीपडिवन्नगा तेणं अभासगा, त

॥ मूल ॥

कृताव्याकृता चैव ॥ २ ॥ जीवा भदन्त ! किं भाषका अभाषकाः ? गौतम ! भाषका अप्यभाषका अपि । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-जीवा भाषका अप्यभाषका अपि ? गौतम ! जीवा द्विविधाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा-संसारसमापन्नकाश्चा संसारसमापन्नकाश्च' तत्र ये ऽसंसारसमापन्नका स्ते सिद्धाः सिद्धा अभाषकाः, तत्र ये संसारसमापन्नका स्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-शैलेशिप्रतिपन्नकाश्चा शैलेशिप्रतिपन्नकाश्च, तत्र

॥ अ० ॥

व्याकृता ११ अव्याकृता १२ प्रयोगनार्था अतिभावनार्था जीव हे भगवन् भाषका । गोयमा जीवाभासगावि अभासगावि । हे गौतम जीव भाषा कपिण अभाषकपिण छै । सेकेणट्ठेणं भंते प० जीवाभासगावि अभासगावि । ते किमस्वामी जीव भाषक पिण अभाषक पिण । गोयमा जीवादुविहा पं०तं०संसारसमावन्नगाय असंसारसमावन्नगाय । हे गौतम जीवदोयभेदे १ संसारीसमावण १ बीजो असंसारी समावन्नग । तत्थणं जेते असंसारसमावन्नगा तेणं सिद्धासिद्धाणं अभासगा । जिहां ते असंसारीसमावन्न ते सिद्ध सिद्धानें अभाषक । तत्थणं जेते संसारसमावन्नगा ते दुविहा पं तं सेलेसिपडिवन्नगा अलेसिपडिवन्नगा । तिहां ते संसारीना दोय भेद कहैछै सेलेसिप्रतिपन्न १ जिहां अलेशीप्रतिपन्न । तत्थणं जेते अलेसिपडिवन्नगा ते दुविहा पं । तिहां जे अलेशीप्रतिपन्न तेहना दोय भेद ते कहैछै । एगिंदियाय अणेगिंदियाय । वेंद्रियथीपांचेतांइं । तत्थणं जेते एगिंदियतिणं अभासगा । ति

॥ भाषा ॥

त्थणं जेते अणेलेसीपडिवन्नगा ते दुविहा पन्नत्ता तंजहा—एगिंदियाय अणेगिंदियाय । तत्थणं जेते एगिंदिया तेणं अनासगा, तत्थणं जेते अणेगिंदिया ते दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं अनासगा, तत्थणं जेते पज्जत्तगाणं तेणं नासगा से तेणट्ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ—जीवा नासगावि अनासगावि । नेरइयाणं भंते ! किं नासगा अनासगा ? गोयमा ! नेरइया नासगावि अनासगावि ! से केणट्ठेणं नेरइया नासगावि अनासगावि ? गोयमा ! नेरइया दुविहा पन्नत्ता,

॥ मूक ॥

ये शैलेशिप्रतिपन्नका स्ते अभाषकाः, तत्र ये अशैलेशिप्रतिपन्नका स्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्तद्यथा-एकेन्द्रिया श्चानेकेन्द्रिया श्च, तत्र ये एकेन्द्रिया स्ते अभाषकाः तत्र ये अनेकेन्द्रिया स्ते द्विविधाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा-पर्याप्तका अपर्याप्तकाश्च तत्र ये अपर्याप्तका स्ते अभाषका स्तत्र ये पर्याप्तका स्ते भाषका स्तत्तेनार्थेन गौतम । एवमुच्यते-जीवा भाषका अप्यभाषका अपि । नैरयिका भदन्त ! किं भाषका अभाषकाः ? गौतम ! भाषका अप्यभाषका अपि । अथ केनार्थेन भदन्त ! एवमुच्यते-नैरयिका भाषका अप्यभाषका अपि ? गौतम ! नैरयिका द्विविधाः प्रज्ञप्ता स्त

॥ अ० ॥

हां जे एकेंद्रिय अभासक कहिए छै । तत्थणं जेते अणेगिंदिया ते दुविहा पं । तिहां अनेकेंद्रिय तेहना २ भेद कह्या । तं पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । ते कहे छै पर्याप्ता अपर्याप्ता । तत्थणं जेते अपज्जत्तगातेणं अभासगा । तिहां जे अपर्याप्ता तेह अभासक कहिए छै । तत्थणं जेते पज्जत्तगा तेणं भासगा । तिहां जे पर्याप्ता ते भासक कहिये । सेतेणट्ठेणं गोयमा ए० जीवाभासगावि अभासगावि । तेमाटे इम गौतम जीवभासक अभासकपिण । नेरइयाणं पुच्छा गोयमा भासगावि अभासगावि । नारकीना दोय भेद गौतम भासकपिण अभासकपिण । सेकेण० गोयमा नेरइया दुविहा पं तं पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । ते इम छै गौतम नारकीना दोयभेद पर्याप्ता अपर्याप्ता । तत्थणं जेते अपज्जत्तगा तेणं अभासगा । तिहां जे अपर्याप्ताने अभाषक छै । तत्थणं जेते पज्जत्तगातेणं भासगासेते० गोयमा ए० नेरइया भासगावि अभासगावि । तिहां जे पर्याप्ता ते भाषक कहिये ते इम छै गौतम नारकीने भाषकपिण अभा

॥ भाषा ॥

इदं प्रागुक्तायामपि भूयोऽपपत्तसूत्रान्तरसम्बन्धनार्थं यान्येव सूत्रान्तराणि दर्शयति-जीवाणं भंते ! किं सच्चं भासं भासंति इत्यादि ॥ सुगमं नवरं

॥ टीका ॥

तंजहा—पज्जत्तगाय अपज्जत्तगाय । तत्थणं जे ते अपज्जत्तगा तेणं असासगा, तत्थणं जे ते पज्जत्तगा तेणं सासगा, से तेणट्ठेणं ? गोयमा ! एवं वुच्चइ—नेरइया सासगावि असासगावि । एवं एगिंदियवज्जाणं निरंतरं भाणियव्वं । कतिणं भंते ! भासज्जाया पण्णत्ता, गोयमा ! चत्तारि भासज्जाया पण्णत्ता, तंजहा—सच्चमेगं भासज्जात बितियं मोसं तइयं सच्चामोसं चउत्थं असच्चामोसं । जीवाणं भंते ! किं सच्चं भासं भासंति मोसं भासं भासंति सच्चामोसं भासं भासंति असच्चामोसं भासं भासंति ? गोयमा ! जीवा सच्चंपि भा

॥ मूल ॥

यथा-पर्याप्तकाश्च पर्याप्तकाश्च । तत्र ये ऽपर्याप्तका स्ते ऽभाषकाः तत्र ये पर्याप्तका स्ते भाषकास्तत्तेनार्थेन गौतम ! एवमुच्यते-नैरयिका भाषका अप्यभाषका अपि । एवमेकेन्द्रियवर्जं निरन्तरं भणितव्यम् । कियन्ति भदन्त ! भाषाजातानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! चत्वारि भाषाजातानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-सत्यमेकं भाषाजातं द्वितीयं मृषा तृतीयं सत्यामृषाजातं चतुर्थं असत्यामृषाजातं । जीवा भदन्त ! किं सत्यां भाषां भाषंते मिथ्याभाषां भाषंते किं सत्यामृषां भाषां भाषन्ते किं असत्यामृषांभाषां भाषन्ते ? गौतम ! जीवाः सत्यामपि भाषां भाषन्ते

॥ भा० ॥

॥ भाषा ॥

पज्जत्तिए । एवं एगिंदियवज्जं निरंतरं भाणियव्वं । इस एकेंद्रियवर्जीने सघले कहिवा । कतिणं भंते भासज्जाया प० गोयमा चत्तारिभासज्जाया । केतली हे भगवन् भाषकजाति हे गौतम ४ भाषानीजाति । तं० सच्चमेतभासज्जाया बितियं मोसं तत्तियं सच्चामोसं चउत्थं असच्चामोसं । सत्यएक भाषानीजाति दूजी मृषानीजाति तीजी सत्यामृषाजाति चउथी असत्यामृषाजाति । जीवाणं भंते किं सच्चंभासंभासंति मोसंभासंभासंति तं सच्चं मोसं भासं भासंति असच्चं मोसंभासं भासंति । जीव हे भगवन् शुं सत्याभाषाभाषे मृषाभाषे सत्यामृषाभाषे असत्यामृषाभाषे । गोयमा जीवासच्चंपिभासंभासंतिमोसंपि भा० सच्चामोसंपिभा० असच्च मोसंपिभा० । हे गौतम जीवसत्य भाषापिण भाषे मृष पिण भाषे सत्यामृषापिण भाषे असत्य मृषापिण भाषे । नैरइयाणं भंते

द्वित्रिचतुरिन्द्रियेषु सत्यादिभाषात्रयः प्रतिषेध स्तेषां सम्यक्परिज्ञानं परिवञ्चनाद्यभिप्रायासम्भवात्, तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाश्रपि न सम्यक् यथावस्थि

सं नासंति जाव असच्चामोसंपि नासं नासंति । नेरइयाणं भंते ! किं सच्चं नासं नासंति जाव किं असच्चा मोसं नासं नासंति ? गोयमा ! नेरइया सच्चंपि नासं नासंति जाव असच्चामोसंपि नासं नासंति एवं असुरकुमारा जाव थणियकुमारा । बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदियाय नोसच्चं नोमोसं नोसच्चामोसं नासं नासंति, असच्चामोसं नासं नासंति । पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! किं सच्चं नासं नासंति जाव किं असच्चामोसं नासं नासंति ? गोयमा ! पंचिंदियतिरिक्खजोणिया नोसच्चं नासं नासंति नोमोसं नासं नासंति नोसच्चा

यावदसत्यामृषामपि भाषां भाषन्ते, नैरयिका भदन्त ! किं सत्यां भाषां भाषन्ते यावत्किमसत्यामृषां भाषां भाषन्ते ? गौतम ! नैरयिकाः सत्यामपिभाषां भाषन्ते यावदसत्यामृषामपि भाषां भाषन्ते, एवमसुरकुमारा यावत्स्तनितकुमाराः । द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियाश्च नो सत्यां नो मृषां नो सत्यामृषां भाषां भाषन्ते असत्यामृषां भाषां भाषन्ते । पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका भदन्त ! किं सत्यां भाषां भाषन्ते यावत्किमसत्यामृषां भाषां भाषन्ते ? गौतम ! पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिका नो सत्यां भाषां भाषन्ते नोमृषां भाषां भाषन्ते नो सत्यामृषा भा

किं सच्चं भासं भासंति जाव किं असच्चामोसं भासं २ ति । नारको हे भगवन् सत्य भाषा बोले जावत्सत्यभाषाबोले कि । गोयमा नेरइया सच्चंपि भासं २ ति जाव असच्चामोसं पि भासंति । हे गौतम नारकी सत्यभाषापिण बोल जावत्असत्यामृषा पिणबोले । एवं असुरजावथणियकुमार बेंद्रिय तेंद्रियचउरिंद्रिय नो सच्च नो मोसं नो सच्चामोस भासं२ति असच्चामोसभासं२ति । इम असुरकुमारपिण जावत्स्तनितकुमार बेंद्रियतेंद्रियचौरिंद्रिय सत्यभाषा न भाषे मृषा नबोले सत्यमृषा नभाषे असत्यामृषा चौथाभाषाबोले । पंचेंद्रियतिरिक्खजोणीयाणं भंते किं सच्चं जाव किं असच्चामोसं भासं २ ति । पचेंद्रिय तिर्यंच सत्यभाषाभाषे हे भगवन् कुंहे सत्य जावत्असत्यामृषा भाषाभाषे । गोयमा पंचेंद्रियतिरिक्खजोणिया नो सच्चंभासं २ ति नोमो

तवस्तु प्रदिपाटनाभिप्रायेण जानन्तेऽपि परविप्रतारणबुद्ध्या किंतु यदा जानंते तदा कुपिताअपि परं मारयितुकामा अप्येवमेव जानंते ततस्तेषामपि जानंतो असत्यामृषा किं सर्वेषामपि तेषां मसत्यामृषा नेत्याह-नन्नत्येत्यादि ॥ सत्यादिकां जानां न जानंत शिक्षादेरन्यत्र शिक्षापूर्वक पुनः शुकसारिकादयः संस्कारविशेषा स्तथा कुनश्चित्तथाविधक्षयोपशमविशेषा जातिस्मरणरूपां विशिष्टव्यवहारकौशलरूपा वा लब्धिं प्रतीत्य सत्यादिकां चतुर्विधमपि जानां जानन्ते शेषं सुगमं, सम्प्रति जानाद्रव्यग्रहणादिविषयः संशयापनोदार्थमाह-जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गि

मोसं नासं नासंति एगं असच्चामोसं नासं नासंति णणत्थ सिक्खापुव्वगं उत्तरगुणलद्धिं वा पडुच्च सच्चंपि नासं नासंति मोसंपि नासं नासंति सच्चामोसंपि नासं नासंति असच्चामोसंपि नासं नासंति । मणुस्सा जाव वेमाणिया । एते जहा जीवा तहा नाणियव्वा । जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं नासत्ताए गिण्हंति ताइं किं ठियाइं गेण्हइ अठियाइं गिण्हइ ? गोयमा ! ठियाइं गिण्हइ नो अठियाइं गिण्हइ । जाइं भंते ! ठि

षां जानन्ते एकामसत्यामृषां जानां जानते नान्यत्र शिक्षापूर्वकमुत्तरगुणलब्धिं वा प्रतीत्य सत्यामपि जानां जानन्ते मृषामपि जानां जानन्ते सत्यामृषामपि जानां जानन्ते असत्यामृषामपि जानां जानन्ते । मनुष्या यावद्वैमानिका एते यथा जीवास्तथा ज्ञातव्याः । जीवो भदन्त ! यानि द्रव्याणि जानात्वेन गृह्णाति तानि किं स्थितान्यस्थितानि गृह्णाति ? गौतम ! स्थितानि नो अस्थितानि गृह्णाति । यानि भदन्त !

संभा० नो सच्चामोसं भा० एवं असच्चामोसं भासंरति । गौतम पचेंद्रियतिर्यंच योनिया सत्याभाषा नबोलै नहीं मृषाभाषे नहीं सत्यामृषाविण भाषे म असत्यामृषाभाषे । तत्थणं सिक्खापच्चगउरगुणलद्धिंवा पडच्च सच्चंपि भ संत हे गोयमा । तिहां विण कोई तिर्यंच शुकसारिकादि संस्कारविशेष सीखाय थकां ४ प्रकारे भ षाभाषे पूर्वक तथा विध क्षायोपशमिकरी जातिस्मरणे विशिष्ट व्यवहारकौशलपणे करी पूर्वभवश्रुत सत्याभाषा भाषे मृषाभाषा विण भाषे । मणुस्सा जाव वेमाणिया एते जहा तहा भा० । मनुष्य जांलगे वैमानिकतांलगे ४ भाषा कहवी ए सर्वजणना ओलखा पा

॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥ ॥ ष० ॥ ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

रहइ इत्यादि ॥ सुगमं नवरं ॥ ठियाइं ॥ स्थितानि २ न गमनक्रियावंति द्रव्यतश्चिंतायामनन्तप्रदेशिका इति । अनन्तपरमाणुस्कात्मकानि नैकपरमाणुद्व्यात्मकानि तेषां स्वभावत एव जीवानां ग्रहणायोग्यत्वात्, क्षेत्रचिन्तायामसङ्ख्यातप्रदेशावगाढानि एकप्रदेशाद्यवगाढानां तथास्वभावतया ग्रह

॥ मूल ॥

जाइं गिण्हइ ताइं किं दव्वओ गिण्हइ खेत्तओ गिण्हइ कालओ गिण्हइ भावओ गिण्हइ ? गोयमा ! दव्वओवि गिण्हइ खेत्तओवि गिण्हइ कालओवि गिण्हइ भावओवि गिण्हइ । जाइं दव्वओ गिण्हइ ताइं किं एगपएसियाइं गिण्हइ दुपएसियाइं गिण्हइ जाव असंखेज्जपएसियाइं गिण्हइ अणंतपएसियाइं गिण्हइ ? गोयमा ! नो एगपएसियाइं गिण्हइ जाव नो असंखेज्जपएसियाइं गिण्हइ अणंतपएसियाइं गिण्हइ । जाइं खेत्तओ गिण्हइ ताइं किं एग

॥ भ० ॥

स्थितानि गृह्णाति तानि किं द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावतो गृह्णाति ? गौतम ! द्रव्यतोपि क्षेत्रतोपि कालतोपि भावतोपि गृह्णाति । यानि द्रव्यतो गृह्णाति तानि किमेकप्रदेशिकानि गृह्णाति द्विप्रदेशिकानि गृह्णाति यावदनन्तप्रदेशिकानि ? गौतम ! नो एकप्रदेशिकानि यावन्नो ऽसंख्येयप्रदेशिकानि अनन्तप्रदेशिकानि गृह्णाति । यानि क्षेत्रतो गृह्णाति तानि किमेकप्रदेशावगाढानि गृह्णाति द्विप्रदेशावगाढानि गृह्णाति यावदसंख्येयप्रदेशावगाढानि गृह्णाति ? गौतम ! नो एकप्रदेशावगाढानि गृह्णाति यावन्नोसंख्येयप्रदेशावगाढानि असंख्येयप्रदेशावगाढानि गृ

॥ भाषा ॥

लावानोपरें जिम कहिवा । जीवेणं भंते जाइं दव्वाइं भासित्ताए गिण्हति ताइं किं ठियाइं गिण्हति अठियाइं गिण्हति । हिवे भाषा द्रव्यकहिछे जीव ह भगवन् जे द्रव्यभाषा भाषणना यहिछे ते स्युं स्थानाथकीथिरद्रव्यग्रहे स्थानिगमन क्रियावंतछे के अथिरद्रव्यग्रहे छे । गोयमा ठियाइं गिण्हतिनो अठियाइं गिण्हति जइ भंत ठियाइं गिण्हति ताइंकि दव्वतो गिण्हति खेत्ततो गिण्हति कालतो गि० भावतो गि० । हे गौतम थिरद्रव्यग्रहेछे पिण अथिरद्रव्य नग्रहें जे हे भगवन् थिरद्रव्यग्रहें तो ते द्रव्यथो यहे क्षेत्रथोयहे कालथोयहे भावथोग्रहें । गोयमा दव्वओगि० खित्तओगि० कालओगि० भावओगि० जइदव्वओगि० तइकिं एगपएसियाइं गिण्हति दुपएसियाइं जाव अणंतपएसियाइं गिण्हति । हे गौतम द्रव्यथोग्रहें क्षेत्रथोग्रहे कालथोग्रहें भाव

॥ टीका ॥

योग्यत्वात्, कालत श्चिन्तायामेकसमयस्थितिकान्यपि यावदसङ्ख्येयसमयस्थितिकान्यपि गृह्णाति पुद्गलानामसंख्येयमपि कालं यावदवस्थानसंभ

॥ मूल ॥

पदेसोगाढाइं गिण्हइ दुपदेसोगाढाइं गिण्हइ जाव असंखेज्ज० ? गोयमा ! नो एगपदेसोगाढइं गिण्हइ असंखेज्जपदेसोगाढाइं गिण्हइ । जाइं कालओ गिण्हइ ताइं किं एगसमयठिइयाइं गिण्हइ दुसमयठिइयाइं गिण्हइ जाव असंखेज्जसमयठिइयाइं गिण्हइ ? गोयमा ! एगसमयठितीयाइंपि गिण्हइ दुसमयठितीयाइंपि गिण्हइ जाव असंखेज्जसमयठितीयाइं गिण्हइ । जाइं भावओ गिण्हइ ताइं किं वन्तमंताइं गिण्हइं

॥ भ० ॥

ह्णाति । यानि कालतो गृह्णाति तानि किमेकसमयस्थितिकानि द्विसमयस्थितिकानि यावदसंख्येयसमयस्थितिकानि गृह्णाति ? गौतम ! एकसमयस्थितिकान्यपि द्विसमयस्थितिकान्यपि यावदसंख्येयसमयस्थितिकान्यपि गृह्णाति । यानि भावतो गृह्णाति तानिकिं वर्णमन्तीनि गन्धमन्तीनि रसमन्तीनि स्पर्शमन्तीनि गृह्णाति ? गौतम ! वर्णमन्तीनि यावत्स्पर्शमन्ती गृह्णाति । यानि भावतो वर्णमन्तीनि गृह्णाति तानि किमे

॥ भाषा ॥

थीयहैं जे द्रव्यथीग्रहैतो १ प्रदेशोद्रव्यग्रहे कि दोयप्रदेशो जांलगे अनन्तप्रदेशोद्रव्यग्रहैं । गोयमा नो एगपदेसियाइं गिण्हति जाव नो असंखिज्जप० अणंतपदेसियाइं गि० । हे गौतम एकप्रदेशनाद्रव्यग्रहे नही जांलगें संख्याता असंख्याताप्रदेशपिण नग्रहे केवल अनन्तप्रदेशोनेग्रहैं । जइखित्तओगि० त इकिं एगपएसोगाढाइं गि० दुपएसोगाढाइं । जे क्षेत्रथीग्रहे तो स्यं एकप्रदेशावगाढनें दोयप्रदेशावगाढनें । जाव असंखिज्जपएसोगाढाइं गि० गोयमा नो एगपएसोगाढाइं गिण्हति । जांलगें असंख्यातप्रदेशावगाढग्रहैं हे गौतम नही १ प्रदेशावगाढग्रहे । जाव नो संखिज्जपए० असंखिज्जपएसोगाढाइं गिण्हति जइकालतो गि० । जांलगे संख्यातप्रदेशावगाढपिण नग्रहे असंख्यातप्रदेशावगाढग्रहे जो कालथीग्रहे । तइकिं एगसमयठितीयाइं गि० दुसमयठितीयाइं गि० जाव असंखिज्जसमयठितीयाइं गि० । नो एकसमयनी स्थितिनाग्रहेकि दोय समयस्थिति जांलगें असंख्यातसमयनी स्थितिनाग्रहे । गोयमा एगसमयठितीयाइं गि० दुसमयठितीयाइं पिगि० जाव असंखिज्जसमयठितीयाइंपि गि० । हे गौतम एकसमयनीस्थितिनाग्रहे दोसमयेंग्रहे कि

वात्, तथाचोक्तं-व्याख्याप्रज्ञप्तौ-सेजनिरेकपुद्गलावस्थानचिंतायां-अणंतपएसिएणं खंधे केवइकालं सेए ? गोयमा ! जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं आवलियाए असंखेज्जइभागं, निरेए जहन्नेणं एक्कं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं कालं मिति „ तेषांच गृहीतानां ग्रहणानन्तरसमये अवश्यं निसर्गो इति स्वभावे स्थानान्तरसमये ग्रहणं प्रतिपत्तव्यं अन्येतु व्याचक्षते एकसमयस्थितिकान्यपीति आदिग्राहापरिणामापेक्षया द्रष्टव्यं, विचित्रोहि पुद्गलानां परिणामः तत एकप्रयत्नगृहीतमुक्ताअपि ते केचिदेकं समयं भाषात्वेनावतिष्ठंते केचित् द्वौसमयौ यावत्केचिदसंख्येयानपि समयानिति ॥ तथा गहणदव्वाइं इति ॥ गृह्यन्ते इति ग्रहणानिरचितानि द्रव्याणि च ग्रहणद्रव्याणि किमुक्तं भवति यानि ग्रहणयोग्यानि द्रव्याणि तानि कानिचित् वर्णपरिणामेन एकेन वर्णेनोपेतानि कानिचित् द्वाभ्यां कानिचि त्रिभिः कानिचि चतुर्भिः कानिचि त्पंचभिः यदा पुनरेकप्रयत्नगृहीतानामपि द्र

गंधमंताइं गिण्हइ रसमंताइं गिण्हइ फासमंताइं गिण्हइ ? गोयमा ! वन्नमंताइं गिण्हइ जाव फासमंताइं गिण्हइ जाइं भावओ वन्नमंताइं गिण्हइ ताइं किं एगवन्नाइं गिण्हइ जाव पंचवन्नाइं गिण्हइ ? गो



कवर्णानि गृह्णाति यावत्पञ्चवर्णानि गृह्णाति ? गौतम ! ग्रहणद्रव्याणि प्रतीत्य एकवर्णान्यपि यावत्पञ्चवर्णान्यपि गृह्णाति । सर्वग्रहणं प्रतीत्य



इम जांलगें असंख्यातसमयनी स्थितिनापिण गृहैं पुद्गलनो रहिवो असंख्यातकालहवे ते जथिरेजे पुद्गलावस्थानचिंतायां अनन्तपएसिएणबंधे केवलेकाल ए गोजत्तथो एकसमय उक्कोसेणं आवलीयाए असंखिज्जभागंनिरए जहन्नेणं एकसमय उक्कोसेणं असंखिज्जकालमिति एव मुक्त प्रज्ञप्तौ । जइ भावतोगि० तइकिं वन्नमंताइंगि० गंधमंताइं गि० रसमंताइं गि० फासमंताइं गि० । जो भावथो भाषानागृहै तो वर्णनागृहैं कि गन्धनागृहैं रसना द्रव्यकि स्पर्शना द्रव्य । गोयमा वन्नमंताइंपिगि० जाव फासमंताइंपिगि० जइभावतो वन्नमंताइंगि० । हे गौतम वर्णनाद्रव्यगृहै जांलगें स्पर्शनाद्रव्यांपिणगृहै जो भावथी वर्णादिना गृहै । तइकिं एगवन्नाइंगि० जाव एवं सव्ववन्नाइंगि० । तो एकवर्णनागृहै जांलगें इम सर्ववर्णना द्रव्यगृहै । गोयमा गहणदव्वाइं पडुच्च एग वन्नाइंपि गि० जाव पंचवन्नाइंपि गि० । हेगौतम गहणयोग्यद्रव्यादिनेंने १ वर्णना पिणगृहै जाव ५ वर्णनापिण । सव्वमहणं पडुच्च नियमं पंचवन्नाइं

॥ मूल ॥

यमा ! गहणदव्वाइं पप्पुच्च एगवन्नाइंपि गिण्हइ जाव पंचवन्नाइंपि गिण्हइ सव्वगहणं पप्पुच्च नियमा पंच वन्नाइं गिण्हइ तंजहा—कालाइं नीलाइं लोहियाइं हालिद्दाइं सुक्किल्लाइं । जाइं वन्नओ कालाइं गिण्हइ ताइं किं एगगुणकालाइं गिण्हइ जाव अणंतगुणकालाइंगिण्हइ ? गोयमा ! एगगुणकालाइंपि गिण्हइ जाव अणंतगुणकालाइंपि गिण्हइ । एवं जाव सुक्किल्लाइंपि । जाइं भावओ गंधमंताइं गिण्हइ ताइं किं एकगंधाइं गिण्हइ दुगंधाइं गिण्हइ, गहणदव्वाइं पप्पुच्च एगगंधाइंपि गिण्हइ दुगंधाइंपि गिण्हइ, सव्वगहणं पप्पुच्च नि

॥ म० ॥

नियमात्पञ्चवर्णानि गृह्णाति तद्यथा-कृष्णानि नीलानि लोहितानि हारिद्राणि शुक्लानि । यानि वर्णतो कालानि गृह्णाति तानि किमेकगुण कालानि यावदनन्तगुणकालान्यपि गृह्णाति ? गौतम ! एकगुणकालान्यपि यावदनन्तगुणकालान्यपि गृह्णाति । एवं यावच्छुक्लान्यपि । यानि भावतो गन्धमन्तीति तानि किमेकगन्धीनि द्विगन्धीनि गृह्णाति ? ग्रहणद्रव्याणि प्रतीत्यैकगन्धीन्यपि द्विगन्धीन्यपि गृह्णाति, सर्वग्रहणं प्रतीत्य नियमा द्विगन्धीनि । यानि गन्धतः सुरभिगन्धीनि गृह्णाति तानि किमेकगुणसुरभिगन्धीनि यावदनन्तगुणसुरभिगन्धीनि गृह्णाति ? गौतम !

॥ भाषा ॥

गि० । सर्वसमुदायना ग्रहणाश्रि निये पांचेद्रव्यग्रहे । तं काला नीला हालिद्दा लोहिया सुक्किला जइवन्नओकालाइं गि० । ते कहिके काला नीला पीला राता धवला ५ ग्रहे जे वर्णथीकालाद्रव्यग्रहे । ताइं किं । गगुणकालाइं गि० जाव अणंतगुणकालाइं गि० । तो १ गुणकालना पुद्गलग्रहे कि जालगे गुणकालना अनन्तागृहे । गोयमा एगगुणकालाइं गि० जाव अणंतगुणकालाइंपिगि० । हे गौतम १ गुणकालापुद्गलग्रहे यावत् जालगे अनन्त गुणकालना पिणग्रहे । एवं जाव सुक्किलाइंपि जाइं भावतो गंधमंताइं गि०ताइं किं एगगंधाइं गि०दुगंधाइं गि० । इम जालगे धवलावर्णना कहिवा जो भावथी गंधना पुद्गले तो एकगंधनाले दोय गंधनाले । गोयमा गहणदव्वाइं पडुच्च एगगंधाइंपि गि० दुगंधाइंपि गि० । हे गौतम जे ग्रहणयोग्य द्रव्यतेहना पुद्गल एकगंधना पिणले बेगंधपिणले । सर्वग्रहणं पडुच्च नियमा दुगंधाइं गि० जइगंधतो सुब्भिगंधाइं गि० तइकिं एगगुणसुब्भिगंधाइं

व्याणां सर्वेषामपि समुदायो विवक्ष्यते तदा नियमात्पञ्चवर्णानि गृह्णाति, एवं गन्धरसेष्वपि भावनीयं स्पर्शनचिन्तायामेकस्पर्शप्रतिषेध एकस्या



यमा दुगंधाइं। जाइं गंधतो सुब्भिगंधाइं गिण्हइ ताइं किं एगगुणसुब्भिगंधाइं गिण्हइ, जाव अणंतगुणसुब्भि गंधाइं गिण्हइ ? गोयमा ! एगगुणसुब्भिगंधाइंपि जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइंपि गिण्हइ एवं दुब्भिगंधाइं पि गिण्हइ। जाइं भावतो रसमंताइं गिण्हइ, ताइं किं एगरसाइं गिण्हइ जाव किं पंचरसाइं गिण्हइ ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च एगरसाइंपि गिण्हइ जाव पंचरसाइंपि गिण्हइ, सब्भग्गहणं पडुच्च नियमा पंचरसाइं गिण्हइ। जाइं रसतो तित्तरसाइं गिण्हइ ताइं किं एगगुणतित्तरसाइं गिण्हइ जाव अणंतगुण



एकगुणसुरभिगन्धीन्यपि यावदनन्तगुणसुरभिगन्धीन्यपि। एवं दुरभिगन्धीन्यपि। यानि भावतो रसमन्तीनि गृह्णाति तानि किमेकरसानि यावत्किं पञ्चरसानि गृह्णाति ? गौतम ! ग्रहणद्रव्याणि प्रतीत्यैकरसान्यपि यावत्पञ्चरसान्यपि गृह्णाति, सर्वग्रहणं प्रतीत्य नियमात्पञ्चरसानि गृह्णाति। यानि रसतस्तिक्तरसमन्तीनि गृह्णाति तानि किमेकगुणतिक्तरसानि यावदनन्तगुणतिक्तानि गृह्णाति ? गौतम ! एकगुणतिक्तान्यपि



गि०। सर्वसमुदायेन तिन्नारे जो गंधनामगंधना पुद्गलग्रहणो १ सुगंधपिणग्रहे। जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइं गि० गोयमा एगगुणसुब्भगंधाइं प गि० जालगे अनन्तगुण सुगंधग्रहे हे गौतम १ गुणसुगंधपिण ग्रहे। जाव अणंतगुणसुब्भिगंधाइंपि गि० एवं दुब्भिगंधाइंपि गि०। जालगे अनन्तगुणपिण ग्रहे इम दुर्गंधपिणग्रहे। जइभावतो रसमंताइं गि० तइकिं एगरसाइं गि० जाव किं पंचरसाइं गि०। जो भावथो रसना पुद्गलने तो एकरसनाले कि जालगे ५ रसनाले। गोयमा गहणदव्वाइं पडुच्च एगरसाइंपि गि० जाव पंचरसाइंपि गि० सब्भग्गहण पडुच्च नियमा पचरसाइं गि०। हे गौतम ग्रहणयोग्यपुद्गलाश्रो १ रसनाले जालगे ५ नापिण ग्रहे अने सर्वपुद्गलाश्रो ५ रसपिणले। जइरसतो तित्तरसाइं गि० तइकिं एगगुणतित्तरसाइं गि० जाव अणंतगुणतित्तरसाइं गि०। जो सथो तिक्तरसना पुद्गलने १ गुणतिक्तरसनाले कि जालगे अनन्तगुण तिक्तना ले। गोयमा एगगुणतित्ताइं

॥ टीका ॥

पि परमाणोरवश्यं स्पर्शद्वयभावात्' तथाचोक्तं-कारणमेवतदंत्यं सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणुः । एकरसगन्धवर्णो द्विस्पर्शः कार्यलिङ्गश्च ॥१॥ द्वि स्पर्शानि मृदुशीतानि मृदूष्णानीत्यादि ॥ जाव चउफासा इति ॥ यावच्चतुष्करणात्त्रिस्पर्शपरिग्रहः, ततः त्रिस्पर्शान्येवं कानिचिद्द्रव्याणि किल मृ

॥ मूल ॥

तिन्ताइं गिण्हइ ? गोयमा ! एगगुणतित्ताइंपि गिण्हइ जाव अणंतगुणतित्ताइंपि गिण्हइ एवं जाव मधुरो रसो । जाइं भावओ फासमंताइं गिण्हइ ताइं किं एगफासमंताइं गिण्हइ जाव अट्ठफासमंताइं गिण्हइं ? गोयमा ! गहणदव्वाइं पडुच्च णोएगफासाइं गिण्हइ दुफासाइं गिण्हइ जाव चउफासाइं गिण्हइ नो पंच फासाइं गिण्हइ, जाव नो अट्ठफासाइंपि गिण्हइ । सव्वगहणं पडुच्च नियमा चउफासाइं गिण्हइ तंजहा—सीयफासाइं गिण्हइ उसिणफासाइं गिण्हइ णिद्धफासाइं गिण्हइ लुक्खफासाइं गिण्हइ । जाइं फासओ सीताइं

॥ अ० ॥

यावदनन्तगुणतिक्तान्यपि गृह्णाति, एवं यावन्मधुरो रसः । यानि भावतः स्पर्शमन्तीनि गृह्णाति तानि किं एकस्पर्शानि यावदष्टस्पर्शमन्तीति गृह्णाति ? गौतम ! ग्रहणद्रव्याणि प्रतीत्य नैवैकस्पर्शानि द्विस्पर्शानि यावच्चतुःस्पर्शानि गृह्णाति नोपञ्चस्पर्शानि गृह्णाति यावन्नो अष्टस्पर्शा न्यपि गृह्णाति । सर्वग्रहणं प्रतीत्य नियमाच्चतुःस्पर्शानि गृह्णाति तद्यथा-शीतस्पर्शानि उष्णस्पर्शानि स्निग्धस्पर्शानि रूक्षस्पर्शानि गृह्णाति ।

॥ भाष० ॥

पि गि० जाव अणंतगुणतित्ताइंपि गि० । हे गौतम १ गुणतिक्तरसना पुद्गले जहां अनन्तलगें पिण ले । एवं जाव मधररसोता० जेमभावतो फासमं ताइं गि० तहकिं एग फासाइं गि० जाव अट्ठफासाइं गि० । इम मधररसतांइं कहिजो भावथो स्पर्शना पुद्गले तो १ स्पर्शना पुद्गले जांलगे ८ स्प र्शनाले । गोयमा गहणदव्वाइं पडुच्च णो एगफासाइं तं सीतफासाइं गि० उसिणफासाइं गि० । हे गौतम ग्रहणद्रव्यांनो निश्चेस्पर्शना पुद्गलनेग्रहे तेशीत स्पर्शनेले उष्णस्पर्शनेले । निद्धफासाइं गि० लुक्खफासाइं गि० जइफासतोसीताइं गि० । स्निग्धस्पर्शनेल लूक्षस्पर्शनेल जो स्पर्शथो शीतस्पर्शले । तहकिं एग गुणसीताइं गि० जाव अणंतगुणसीताइं गि० । तो १ गुणशीतनेले कि जांलगें अनन्तगुणशीतनेले । गोयमा एगगुणसीताइंपि गि० जाव अणंतगुणसी

॥ टीका ॥

दुशीतस्पर्शानि कानिचित् मृदुस्निग्धस्पर्शानि तत्र मृदुस्पर्शो मृदुस्पर्शएवाक्तभूत इत्येकस्पर्शः शीतस्निग्धरूपौ तु द्वावन्यौ स्पर्शाविति समुदायमधिकृत्य त्रिस्पर्शानि एवं स्पर्शान्तरयोगेपि त्रिस्पर्शानि ज्ञातव्यानि कानिचि च्चतुःस्पर्शानि तत्र चतुःस्पर्शेषु मृदुलघुरूपौ द्विस्पर्शावव्यवस्थितौ सूक्ष्मस्कन्धेषु तयो रवश्यंभावात्, अन्यौतु द्वौ स्पर्शौ स्निग्धोष्णौ स्निग्धशीतौ रूक्षोष्णौ रूक्षशीतौ सर्वसमुदायमुपेत्य नियमा द्वानि चतुःस्पर्शानि गृह्णाति, तत्र यौ द्वौ मृदुलघुरूपौ स्पर्शावव्यवस्थितौ तावव्यवस्थितत्वादेव व्यभिचाराज्ञावान्न गण्यते येत्वन्ये स्निग्धादय श्चत्वार स्ते किल वैकल्पिका इति तानधिकृत्य सूत्रमाह-तजहा-सीयफासाइं गेण्हइ इत्यादि ॥ सुगमं यावत् ॥ जाइंभंते ! अणंतगुणलुक्खाइं गेण्हइ ॥ इह किल चरमं सूत्रमनंतरामिदमुक्तं- अणंतगुणलुक्खाइंपि गेण्हइ ॥ ततः सूत्रसम्बन्धवशादिदमुक्तं-जाइ भंते ! अणंतगुणलुक्खाइं गिण्हइ इति ॥ यावता ॥ जाइं भंते ! एगगुणकालवन्नाइं इत्याद्यपि ॥ दृष्टव्यम् ॥ ताइं भंते ! किं पुट्ठाइं इत्यादि ॥ तानि भदन्त ! किं स्पृष्टान्यात्मप्रदेशसंस्पृष्टानि गृह्णाति उताऽस्पृ

॥ मूल ॥

गिण्हइ ताइं किं एगगुणसीयाइं गिण्हइ जाव अणंतगुणसीयाइं गिण्हइ ? गोयमा ! एगगुणसीयाइंपि गिण्हइ जाव अणंतगुणसीयाइंपि गिण्हइ, एवं उसिणगिद्धलुक्काइं जाव अणंतगुणाइंपि गिण्हइ । जाइं भंते ! जाव अणंतगुणलुक्काइं गिण्हइ ताइं किं पुट्ठाइं गिण्हइ अपुट्ठाइं गिण्हइ ? गोयमा ! पुट्ठाइं गि

॥ अ० ॥

यानि स्पर्शतः शीतानि गृह्णाति तानि किमेकगुणशीतानि यावदनन्तगुणशीतानि गृह्णाति? गौतम ! एकगुणशीतान्यपि यावदनन्तगुणशीतान्यपि गृह्णाति, एवमुष्णस्निग्धरूक्षाणि यावदनन्तगुणान्यपि गृह्णाति । यानि भदन्त ! यावदनन्तगुणरूक्षाणि गृह्णाति तानि किं स्पृष्टानि अ

॥ भाषा ॥

ताइंपि गि० । हे गौतम १ गुणशीतनील जानने अनन्तगुणशीतताईले । एवं जाव अणंतगुणलुक्खाइंपि गि० तहांकि पुट्ठाइं गि० नो अपुट्ठाइं गि० । इम जांलेछेहडे लूखतांई अनन्तगुणालेते आत्मना प्रदेशस्पर्शीछे तेले के अणस्पर्शीपिणले । गोयमा पुट्ठाइं गि० नो अपुट्ठाइं गि० जइणं भंते पुट्ठाइंगि० तहांकिं उगाढाइं गि० अणोगाढाइं गि० । हे गौतम स्पर्शीले नहो अणस्पर्शीपिणले नहो जो स्पर्शीपुद्गलले प्रदेश तो स्युं भगवन् अवगाढ आत्मप्रदेश में

॥ टीका ॥

ष्टानि भगवानाह-गौतम ! स्पृष्टान्यात्मप्रदेशैः सह संस्पर्शमागतानि गृह्णाति नाऽस्पृष्टानि इहात्मप्रदेशैः संस्पर्शनमात्रप्रदेशावगाहक्षेत्राद्बहिरपि सम्भवन्ति, ततः प्रश्नयति-जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं इत्यादि ॥ अवगाढान्यात्मप्रदेशैः सह एकक्षेत्रावस्थितानि गृह्णाति नानवगाढानि ॥ जाइं भंते ! इत्यादि ॥ अनन्तरावगाढानि अव्यवधानेनावस्थितानि गृह्णाति नपरंपरावगाढानि, किमुक्तं भवति येष्वात्मप्रदेशेषु यानि भाषाद्रव्याण्यवगाढानि तैरात्मप्रदेशैः स्तान्येव गृह्णाति नत्वेकद्वित्र्यात्मप्रदेशव्यवहितानि ॥ जाइं भंते ! अणंतरोवगाढाइं इत्यादि ॥ अणून्यपि स्तोकप्रदेशान्यपि गृह्णाति बादराण्यपि प्रभूतप्रदेशोपचितान्यपि, इहाणुत्वबादरत्वे तेषामेव भाषायोग्यानां स्कन्धानां प्रदेशस्तोकबाहुल्यापेक्षया व्याख्याते मूलटीका

॥ मूल ॥

गिण्हइ नो अपुट्ठाइं गिण्हइ । जाइं भंते ! पुट्ठाइं गिण्हइ ताइं किं णगाढाइं गिण्हइ अणोगाढाइं गिण्हइ ? गोयमा ! णगाढाइं गिण्हइ नो अणोगाढाइं गिण्हइ । जाइं भंते ! णगाढाइं गिण्हइ ताइं किं अणंतरोगाढाइं गिण्हइ परंपरोगाढाइं गिण्हइ ? गोयमा ! अणंतरोगाढाइं गिण्हइ नो परंपरोगाढाइं गिण्हइ । जाइं भंते ! अणंतरोगाढाइं गिण्हइ ताइं भंते ! किं अणूइं गिण्हइ बादराइं गिण्हइ ? गो

॥ अ० ॥

स्पृष्टानि गृह्णाति ? गौतम ! स्पृष्टानि नो ऽस्पृष्टानि गृह्णाति । यानि भदन्त ! स्पृष्टानि गृह्णाति तानि किमवगाढानि अनवगाढानि गृह्णाति ? गौतम ! अवगाढानि नो ऽनवगाढानि गृह्णाति । यानि भदन्त ! अवगाढानि तानि किमनन्तरावगाढानि परम्परावगाढानि गृह्णाति ? गौतम ! अनन्तरावगाढानि नोपरम्परावगाढानि गृह्णाति । यानि भदन्त ! अनन्तरावगाढानि तानि भदन्त ! किमणूनि गृह्णाति बादरानि

॥ भाषा ॥

एकेक्षेत्र रह्याछे ते ग्रहे कें अनेकक्षेत्र रह्या ते ग्रहें । गोयमा णगाढाइं गि० णो अणोगाढाइं गि० जइ भंते णगाढाइं गि० । हे गौतम आत्मप्रदेशसुं एकक्षेत्र रह्याछे ते ग्रहे पिण बीजानाय छे ते हे भगवन् अवगाढ कहैंछे । तदकि अणंतरोगाढाइं गि० परंपरोगाढाइं गि० । तो स्युं आंतरेरह्याछे तेहने ग्रहेछे आत्मनाप्रदेशसु जे भाषाद्रव्य अवगाढछे एकवेतोन आत्मप्रदेशसुं छे तेहने ग्रहेछे । गोयमा अणंतरोगाढाइं गि० णो परंपरोगाढाइं गि० जंथि

कारेण व्याख्यानात् ॥ जाइं भंते ! अणूइंपि गेण्हइ इत्यादि ॥ ऊर्ध्वमपि अधोपि तिर्यगपीति, इह जीवस्य यावतिक्षेत्रे ग्रहणयोग्यानि भाषाद्रव्याण्यवस्थितानि तावत्येवक्षेत्रे ऊर्ध्वाधस्तिर्यक्कं द्रष्टव्यं ॥ जाइं भंते ! उड्ढंपि गेण्हइ इत्यादि ॥ यानि भाषाद्रव्याण्यंतर्मुहूर्त्तंयावद् ग्रहणोचितानि तानि ग्रहणोचितकालस्य उत्कर्षतोन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणस्यादावपि प्रथमसमयेपि गृह्णाति मध्येपि द्वितीयादिष्वपि समयेषु गृह्णाति, पर्यवसानेपि पर्यवसानसमयेपि गृह्णाति ॥ जाइं भंते ! आयंपि गेण्हइ इत्यादि ॥ स्वविषयान् स्वगोचरान् स्पृष्टावगाढानन्तरावगाढाख्यान् गृह्णाति नत्वविषयान्

॥ टीका ॥

यमा ! अणूइंपि गिण्हइ बादराइंपि गिण्हइ । जाइं भंते ! अणूइंपि गिण्हइ बायराइंपि गिण्हइ ताइं किं उड्ढं गिण्हइ अहे गिण्हइ तिरियं गिण्हइ ? गोयमा ! उड्ढंपि गिण्हइ अहेवि गिण्हइ तिरियंपि गिण्हइ । जाइं भंते ! उड्ढंपि गिण्हइ जाव तिरियंपि गिण्हइ ताइं किं आदिं गिण्हइ मज्झे गिण्हइ पज्जवसाणे गिण्हइ ? गोयमा ! आदिंपि गिण्हइ मज्झेवि गिण्हइ पज्जवसाणेवि गिण्हइ । जाइं भंते !

॥ मूल ॥

वा गृह्णाति ? गौतम ! अणून्यपि गृह्णाति बादराण्यपि गृह्णाति । यानि भदन्त ! अणून्यपि गृह्णाति तानि किमूर्द्धं गृह्णाति अधोवा तिर्यग्वा गृह्णाति ? गौतम ! ऊर्द्धमपि गृह्णाति अधस्तादपि तिर्यगपि गृह्णाति । यानि भदन्त ! ऊर्द्धमपि गृह्णाति यावत्तिर्यगपि गृह्णाति तानि

॥ अ० ॥

भंते अणंतरोगाढाइं गि० । हे गौतम अनन्तरावगाढने प्रदेशके पिण परंपरावगाढने ग्रहे जे हे भगवन् अनन्तरावगाढग्रहेछे । तेकिं अणूयाइं गि० बायराइं गि० गोयमा अणूयाइंपि गि० बायरायंपि गि० । तोएं अणुथोडाप्रदेशने ग्रहेछे किं बादरप्रदेश ग्रहेछे हे गौतम अनुप्रदेशग्रहे बादरांपण ग्रहे । जंयि भंते अणूयाइं गि० तेकिं उड्ढंगि० अहेगि० तिरियंगि० । जो हे भगवन् अणुवाप्रदेशग्रहेछे तो कांइ ऊर्द्धल अधले तिरछेले । उड्ढंपिगि० अहेपिगि० तिरियंपिगि० जंयि भंते उड्ढंपिगि० अहेविगि० तिरियंविगि० । हे गौतम ऊर्द्धपिणले अधपिणले तिरछेपिणले जो भगवन् ऊर्द्धनाले अधनाले तिरछ ले । तेकिं आदिंगि० मज्झेयंगि० पज्जवसाणेगि० । तो किसूं धरलाप्रदेशले विचलाले छेहलाप्रदेशले । गोयमा आदिविगि० मज्झेविगि० पज्ज

॥ भाषा ॥

स्पृष्टादिव्यतिरिक्तान् ॥ जाइं भंते ! सविसए गिण्हइ इत्यादि ॥ आनुपूर्वीनामग्रहणापेक्षया यथासन्नत्वं तद्विपरीता अनानुपूर्वी तत्रानुपूर्व्या गृह्णाति नत्वनानुपूर्व्या ॥ जाइं भंते ! आणुपुव्विं गेण्हइ इत्यादि ॥ तिदिसिंति ॥ त्रिदिशि गृह्णाति तिसृभ्यो दिग्भ्यं आगतानि गृह्णाति' एवं चतुर्दिशि षट्दिशि च । एवमुक्ते भगवानाह-गौतम ! नियमात् षट्दिशि गृह्णाति षड्भ्यो दिग्भ्य आगतानि गृह्णाति' भाषकोहि नियमा त्रसनाड्या मन्यत्र त्रसकायासंभवात् त्रसनाड्यांच व्यवस्थितस्य नियमात् षट्दिगागतपुद्गलसम्भवात्, एतेषामेवार्थानां सङ्ग्रहणिगाथामाह-पुट्ठोगाढअणंतरमित्यादि ॥ प्रथमतोस्पृष्टविषयंसूत्रं-तदनन्तरमवगाढसूत्रं-ततोऽनन्तरावगाढसूत्रं, ततोऽणुबादरविषयं सूत्रं' तदनन्तरमूर्ध्वाधःप्रवृत्तिविषयं



आदिंपि गिण्हइ मज्झेवि गिण्हइ पज्जवसाणेवि गिण्हइ ताइं किं सविसए गिण्हइ अविसए गिण्हइ ? गोयमा ! सविसए गिण्हइ नो अविसए गिण्हइ । जाइं भंते ! सविसए गिण्हइ ताइं किं आणुपुव्विं गिण्हइ अणाणुपुव्विं गिण्हइ ? गोयमा ! आणुपुव्विं गिण्हइ नो अणाणुपुव्विं गिण्हइ । जाइं भंते ! आणुपु



किमादौ मध्ये पर्यवसानेवा गृह्णाति ? गौतम ! आदावपि मध्येपि पर्यवसानेपि गृह्णाति । यानि भदन्त ! आदौ मध्ये पर्यवसाने गृह्णाति तानि किं सविषयान् गृह्णाति अविषयान्वा गृह्णाति ? गौतम ! सविषयान् गृह्णाति नो अविषयान् गृह्णाति । यानि भदन्त ! सविषयानि गृह्णाति तानि किमानुपूर्व्या अनानुपूर्व्या गृह्णाति ? गौतम ! आनुपूर्व्या गृह्णाति नो ऽनानुपूर्व्या गृह्णाति । यानि भदन्त ! आनुपूर्व्या गृह्णा



वसाणेवि गि० । हे गौतम आदिला विचलाना छेहला प्रदेशले । जइ भंते आदिवि गि० मज्झेवि गि० पज्जवसाणेवि गि० । जो आदिनाग्रहे मध्यना छेहला नाप्रदेशले । तइं किं सविसए गि० अविसए गि० । तो किम् विषेनाग्रहे के अविषेना ग्रहे । गोयमा सविसए गि० नो अविसए गि० जइ भंते सविसए गि० किं आणुपुव्विं गि० अणाणुपुव्विं गि० । हे गौतम सविषेनाग्रहे पिण अविषेना प्रदेश नग्रहे जो सविषेना प्रदेशग्रहे तोसुं अनुक्रमेग्रहेछि अनुक्रमविना ग्रहे गोयमा अणुपुव्विं गि० णो अणाणुपुव्विं गि जइ भंते आणुपुव्विं गि० । हेगौतम अनुक्रमेग्रहे पिण अनुक्रमेविना नग्रहे जो अनुक्रमेग्रहे तो । तइं किं तिदि

सूत्रं, तत॥ आइडति॥ उपलक्षणमेतत्' आदिमध्यावसानसूत्रं, ततोविषयसूत्रं, तदनन्तरमानुपूर्वीसूत्रं, ततो नियमात् षट्दिशीतिसूत्रं-जीवेणं भंते! जाइं दव्वाइं इत्यादि॥ जीवो णमितिवाक्यालंकारे, भदन्त! यानि द्रव्याणि भाषाकत्वेन गृह्णाति तानि किं सान्तरं सव्यवधानं गृह्णाति किं वा निरन्तरं निर्व्यवधानं भगवानाह-सान्तरमपि गृह्णाति' निरन्तरमपि उभयथापि ग्रहणसम्भवात्, तत्र सान्तरनिरन्तरग्रहणयोः प्रत्येकं कालमा



किं गिण्हइ ताइं किं तिदिसिं गिण्हइ जाव छद्दिसिं गिण्हइ ? गोयमा ! नियमा छद्दिसिं गिण्हइ पुट्ठो गाढणंतर णूणयतहबादरेयउड्ढमहे । आदिविसयाणुपुव्विं नियमातहछद्दिसिंचेव ॥ १ ॥ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गिण्हइ ताइं किं संतरं गिण्हइ निरंतरं गिण्हइ ? गोयमा ! सतरंपि गिण्हइ निरं



ति. तानि किं त्रिदिशि गृह्णाति यावत्षड्दिशि गृह्णाति ? गौतम। नियमात्षड्दिशि गृह्णाति। स्पृष्टावगाढमनन्तरावगाढमणुक बादरं तथोर्ध्वमध आदिविषयानुपूर्वी षड्दिक्सूत्र ततो नियमात् ॥ १ ॥ जीवो भदन्त ! यानि द्रव्याणि भाषाकत्वेन गृह्णाति तानि किं सान्तर निरन्तरं वा गृह्णाति ? गौतम ! सान्तरमपि निरन्तरमपि गृह्णाति सान्तरं गृह्णन् जघन्यत एकसमय मुत्कर्षतो ऽसङ्ख्यातसमयांतरं कृत्वा गृह्णाति निरन्तर



सिंगि० जाव छद्दिसिंगि० गोयमा नियमाछद्दिसिंगि० । तो तिदिशिना प्रदेशग्रहे जावत्रे छद्दिशिनाग्रहे गौतम निश्चेछद्दिशिनाग्रहे त्रसकायमणो । पट्ठ गाढ अणंतर अणुयतहबायराय उड्ढमहे आदिविसयाणुपुव्विंनियमा तहछद्दिसिंचेव ॥ १ ॥ प्रथम अवगाढसूत्र अवगाढसूत्र अनन्तरावगाढसूत्र पछे अणुसूत्र पछेबादरसूत्र ऊर्ध्वसूत्र अधसूत्र आदि मध्यावसानसूत्र विषयसूत्र आनुपूर्वीसूत्र पछे निश्चेछद्दिशिनासूत्र ए संग्रहणनो गाथाकहो ॥ १ ॥ जीवाणं भंते जाइंदव्वाइं भासत्ताएगि० ताइंकिं सतरंगि० निरंतरंगि० । जीव हे भगवन् जे द्रव्यभाषापणे ग्रहे तो स्युं सांतरमव्यवधानग्रहे कि निरंतर निर्व्यवधानग्रहे । गोयमा सांतरंपिगि० निरंतरंपिगि० सांतरंगि० सांतरंगि० माणे जहन्नेणं एगंसमयं उ० । गौतम सांतरपिण ग्रहेछे निरंतरपिणग्रहेछे । सांतरग्रहतोथको जघन्ये १ समयनें आंतरेकरीग्रहे । असंखिज्जसमयं अंतरंकट्टु गिण्हतिनिरंतरं गिण्हमाणे जहन्नेणं दोसमयं उ० । असंख्यातसमयेंकरी

नं प्रतिपादयति-सान्तरं गिण्हमाणा इत्यादि ॥ सान्तरं गृह्णन् जघन्यतः एकं समयमंतरं कृत्वा गृह्णाति एतच्च जघन्यत एकं समयमन्तरं सततं भाषा प्रवृत्तस्य भाषमाणस्यावसेयं, तच्चैवं-कश्चिदेकस्मिन् समये भाषापुद्गलान् गृहीत्वा तदनन्तर मोक्षसमये अनुपादानं कृत्वा पुनस्तृतीये समये गृह्ण त्येव न मुञ्चति, द्वितीये समये प्रथमसमयगृहीतान् मुञ्चति अन्यानादत्ते अथान्येन प्रयत्नविशेषेण ग्रहणमन्येन च प्रयत्नविशेषेण च निसर्गः तौच परस्परं विरुद्धौ परस्परविरुद्धकार्यकारणा ततः कथमेकस्मिन् समये तौ स्यातां ? तदयुक्तं-जीवस्यहि तथास्वाभाव्यात्, द्वावुपयोगावेकस्मिन् समय न स्यातां येतु क्रियाविशेषा स्ते बहवोप्येकस्मिन् समये घटते एव तथादर्शना त्तथाह्येकापि नर्त्तकी भ्रमणादिनृत्यं विदधाना एकस्मिन्न पि समये हस्तपादादिगता विचित्रा क्रिया कुर्वती दृश्यते, सर्वस्यापि वस्तुनः प्रत्यकमेकस्मिन् समये उत्पादव्ययावुपजायते एकस्मिन्नेव च समये

॥ टीका ॥

तरंपि गिण्हइ संतरं गिण्हमाणे जहन्नेणं एगं समयं उक्कोसेणं असंखेज्जं समयं अंतरकट्टु गिण्हइ, निरंतरं गिण्हमाणे जहन्नेणं दोसमए उक्कोसेणं असंखेज्जसमए अणुसमयं अविरहियं निरंतरं गिण्हइ। जीवेणं भंते! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं निसिरति ताइं किं संतरं निसरति निरंतरं निसरइ ? गोयमा ! संतरं

॥ मूल ॥

गृह्णन् जघन्येन द्विसमय मुत्कर्षतो ऽसङ्ख्यातसमयं अनुसमय मविरहितं निरन्तरं गृह्णाति। जीवो भदन्त ! यानि द्रव्याणि भाषात्वेन गृहीता नि निसृजति तानि किं सान्तरं निसृजति निरन्तरं निसृजति ? गौतम ! सान्तर निसृजति नो निरन्तरं निसृजति, सान्तरं निसृजन्नेकेन

॥ अ० ॥

गृहे एतलो आंतरोकरीये गृहे आंतराविना भाषाना पुद्गलगृहे तो जघन्ये १ समय । असंखिज्जसमए अणुसमयं अविरहियं निरंतरं गिण्हति । असंख्या तसमयलगे गृहेमूके अणुसमय प्रतिसमय विरहविना निरंतरगृहे । जीवेणं भंते जाइं दव्वाइं भासत्ताएगहियाइं निसरइं ताइं किं सांतरं निसरइ निरंतरं निसरइ । जीवने हे भगवन् जे द्रव्यभाषापणे गृह्या भाषाना पुद्गल नीसरे ते निरंतरनीसरे सांतरे नीसरे । गोयमा सांतरंनिसरति निरंतरं निसरंति सांतरं निसरमाणे एगेणं समएणं गिण्हति । हे गौतम सांतरेनीसरे निरंतरपिण नीसरे सांतरेनीसरेयके इकसमये भाषाना द्रव्यग्रहे । एगेण

॥ भाष ॥

॥ टीका ॥

सङ्घातपरिसाटावपि ततो न कश्चिद्दोषः, आह च भाष्यकृत्-गहणनिसग्गपयत्ता परोप्परविरोहिणोकहंसमए । समयेदोउवयोगा नहोज्जकिरिया णकोदोसो ॥ १ ॥ इति, तृतीय पुनः समये तानेव द्वितीयसमयोपात्तान् पुद्गलान् मुञ्चति नपुनरन्यानादत्ते उत्कर्षणत्वसख्येयान् यावन्निरन्तरं गृ ह्णाति, तथाचाह-उत्कर्षेणासख्येयान् गृह्णातीति योगः । कदाचित्परोऽसंख्येयैः समयै रेकं ग्रहणमन्येन तत आह-अनुसमयं प्रतिसमयं गृह्णाति तदापि कदाचिद्विरहितमपि व्यवहारतोऽनुसमयमित्युच्यते, तत स्तदाशङ्काव्यवच्छेदार्थमाह-अविरहितं एवं निरंतरं गृह्णाति, तत्राद्ये समये ग्रहणमेव न निसर्गः अगृहीतस्य निसर्गाभावात्, पर्यन्तसमये च मोक्षएव भाषाजिप्रायोपरमतो ग्रहणासम्भवात्, शेषेषु द्वितीयादिषु समयेषु ग्र हणनिसर्गौ युगपत्करोति जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं निस्सरइ इत्यादि ॥ प्रश्नसूत्रं सुगमं निर्वचनमाह-सान्तर निसृजति नो निरन्तरमियमत्र भावना इह भावाद्ग्रहणं निरन्तरमुक्तं तथाचानन्तरसूत्र-अणसमयमविरहियं निरंतरंगिण्हइइति ॥ ततो निसर्गोपि प्रथमवर्जे

॥ मूल ॥

निसरति नो निरंतरं निसरति, संतरं निसरमाणे एगेणं समएणं गिण्हइ एगेणं समएणं निसरइ । एतेणं गहणनिसिरणो वाएणं जहन्नेणं दुसमयं उक्कोसेणं असंखेज्जसमइयं अंतोमुहुत्तिगं गहणनिसिरणोवायं क

॥ अ० ॥

समयेन गृह्णाति एकेन समयेन निसृजति' एतेन ग्रहणनिसर्गोपायेन जघन्येन द्विसमयमुत्कर्षतोऽसङ्ख्येयसामयिकमान्तर्मौहूर्तिकं ग्रहणनिस र्गोपायं करोति । जीवो भदन्त ! यानि द्रव्याणि भाषात्वेन गृहीतानि निसृजति तानि किं जिन्नानि निसृजति अजिन्नानि निसृजति ? गौ

॥ भाषा ॥

समएण निस्सरति एवं एएणं निस्सरणोवाएणं । एकेसमये मूकै इस एणे मेलें ग्रहणनिसरवानो उपायेंकरी । जहन्नेणं दुसमइयं उ० असंखिज्जस मइयं । एवं निरंतरग्रह्या अविरहित एवं निरंतरं गृण्हाति पहलुसमये गृहणमेवनिसर्गः अगृहीतस्यनिसर्गाभावात् पर्यंतसमये चमोक्षएव जघन्ये २ समय १ प्रमाण उत्कृष्ट असंख्यातसमये । अंतोमुहुत्तगहणं निस्सरणोवायंकरेति जीवेणं भंते जाइं दव्वाइं भासत्ताइं गिहियाइं निसरति ताइं किंभिन्नाइं निसरति । अंतर्मुहूर्त्तप्रमाणहुवे ग्रहणनिसर्गनो उपायकरे जीवने हे भगवन् जे द्रव्यभाषा पणे भाषानें ग्रह्या नीसरे ते भेदोनें नीसरे ।

॥ टीका ॥

षु शेषेषु समयेषु निरंतरं प्रतिपत्तव्यो गृहीतस्यावश्यमनन्तरसमये निसर्गात्, ततो यदुक्तं-सान्तरं निसृजति नो निरन्तरमिति, तत्र ग्रहणापेक्षया द्रष्टव्यं तथाहि-यस्मिन्समये यानि भाषाद्रव्याणि गृह्णाति नतानि तस्मिन् समये मुञ्चति, यथा प्रथमसमये किंतु पूर्वस्मिन् २ समये गृहीतानि उत्तरस्मिन् २ समये ततोग्रहणपूर्वो निसर्गो गृहीतस्य निसर्गायोगादिति सान्तरनिसर्ग उक्तः-आहच भाष्यकृत्-अणुसमयमणंतरियं गहणंजेसियंजइविमोक्खोवि । जुत्तोनिरंतरोवि य जहाइकइसंतरोजहणं ॥ १ ॥ गहणावेक्खाएतं निरंतरंजंमिजाइंगहियाइं । तइतंमिचेवनिसरइ जह पढमेनिसिरणंनत्थि । निसिरज्जइनागहियं गहणंतरियंतिसन्तरंतेणइति । एतदेवसूत्रकृदपि स्पष्टयति-संतरंनिसरमाणो एगेणं समएणं गेण्हइ एगेणं समएणं निसरइ इति ॥ एकेन पूर्व २ रूपेण समयेन गृह्णाति एकेनोत्तरोत्तररूपेण समयेन निसृजति अथवा ग्रहणापेक्षानिसर्गोऽनाभोगात् एकेनाद्येन समयेन गृह्णात्येव न निसृजत्यगृहीतस्य निसर्गासम्भवात्, तथा एकेन पर्यवसानसमयेन निसृजत्येव न गृह्णाति, भाषानिप्रायोपरमतोग्रहणा

॥ मूल ॥

## रेइ जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गहियाइं निसिरइ ताइं किं भिन्नाइं निसिरइ अभिन्नाइं निस्स

॥ भ० ॥

तम । भिन्नान्यपि निसृजति अभिन्नान्यपि निसृजति, यानि भिन्नानि निसृजन्ति तान्यनन्तगुणपरिवृद्ध्या परिवर्द्धमानानि २ लोकान्तं स्पृशन्ति, यान्यभिन्नानि निसृजन्ति तान्यसङ्ख्येया अवगाहनावर्गणाः गत्वा भेदमापद्यन्ते, सङ्ख्येयानि योजनानि गत्वा विध्वंसमागच्छन्ति । एतेषां भदन्त ! द्रव्याणां कतिविधो भेदः प्रज्ञप्तः ? गौतम ! पञ्चविधो भेदः प्रज्ञप्तस्तद्यथा-खण्डभेदः प्रतरभेदश्चूर्णिकाभेदोऽनुतटिकाभेद उत्कटिका

॥ भाषा ॥

अभिन्नाइंनिसरति तोयमा भिन्नाइंपिनिसरति अभिन्नाइंपिन० । अणुभेदोनें नोसरे हे गौतम भेदोनेंपिणनोसरें अणुभेदोनें नोसरे । जइभिन्नाइं निसरति ताइं अणंतगुणपरिवड्ढीएणं परिवड्ढमाणा लोयंतं फसंति । जे भेदोनें नोसरे तो अनन्तगुणा परिवृद्धिकरोवाधको लोकांतप्रतेंस्पर्शे उक्तंच भिन्नाइ सुहमयाए अनन्तगुणावड्ढियाए लोगतो पावंति पूरयं तियभासाए निरंतरं लोगं । जइ अभिन्नाइ निसरंति ताइं असंखिज्जाओ उग्गाहणवग्गणाओ गताभेयमावज्जंति । जे अणुभेदोनोसरे ते असंख्याता अवगाहनानो वर्गणायें बहुलभेदपणें । संखिज्जाइं जोयणाइं गंता विद्धंसमागच्छंति तेसिणं

समयात्, शेषेषु तु द्वितीयादिषु समयेषु युगपद्ग्रहणनिसर्गौ करोति तौच निरन्तरं जघन्यतो द्वौ समयौ उत्कर्षतोसंख्येयान् समयान् यतदेवाह-एतेण गहणनिसरणोवाएणं जहन्नेणं दुसमयं उक्कोसेणं असंखेज्जसमइयं अन्तोमुहुत्तं गहणनिसिरणं करेइ इति ॥ जीवेणं जाइं दव्वाइं इत्यादि ॥ प्रश्नसूत्रं सुगमं भगवानाह-गौतम ! भिन्नान्यपि निसृजति अभिन्नान्यपि, इयमत्र भावना-इह द्विविधोवक्ता मन्दप्रयत्न स्तीव्रप्रयत्न श्च तत्र यो व्याधिविशेषतो ऽनादरतो मन्दप्रयत्नः स भाषाद्रव्याणि तथाभूतान्येव स्थूलखण्डात्मकानि निसृजति, यस्तु नीरोगतादिगुणयुक्त स्तथाविधादरभाव त स्तीव्रप्रयत्नः स भाषाद्रव्याणि आदाननिसर्गप्रयत्नाभ्यां खण्डशः कृत्वा निसृजति, आहच भाष्यकृत्-कोइमंदपयत्तो निसरइसकलाइंसव्वदव्वाइं । अन्नोतिव्वपयत्तो सोभुज्जइभिंदिउंताइं ॥ १ ॥ तत उक्तं-भिन्नाइंपि निस्सरइ अभिन्नाइंपि निस्सरइ जाइं भिन्नाइ इत्यादि ॥ यानि तीव्रप्रयत्नोव क्ता प्रथमतयव भिन्नानि निसृजति तानि सूक्ष्मत्वा द्बहुत्वाच्च प्रभूतान्यन्यानि द्रव्याणि वासयन्ति तदन्यद्रव्यवासकत्वादेव चानन्तगुणवृद्धया परिव र्द्धमानानि षट्सु दिक्षु लोकांतं स्पृशन्ति, लोकांत प्राप्नुवंतीत्यर्थः, उक्तञ्च-भिन्नाइं सुहुमयाए अणंतगुणवड्ढियाइंलोगंतं । पावंतिपूरयंतिय भासानिरंतरंलोग ॥ १ ॥ यानि पुनर्भेदयत्नो वक्ता यथाभूतान्येव प्राक् भाषाद्रव्याण्यासीरन् तथाभूतान्येव सकलान्यभिन्नानि भाषात्वेन परिणमय्य निसृजति तान्यसंख्येया अवगाहनावर्गणां मत्वा अवगाहना एकैकस्य भाषाद्रव्यस्याधारभूता असङ्ख्येयप्रदेशात्मकक्षेत्रविभागरूपा स्तासा मवगाह



रइ ? गो० ! भिन्नाइंपि निस्सरइ अभिन्नाइंपि निस्सरइ, जाइं भिन्नाइं निस्सिरइ ताइं अणंतगुणपरि



भेदः । अथ कोसौ खण्डभेदः ? खण्डभेदोयदयःखण्डानांवा त्रपुखण्डानां वा ताम्रखण्डानां वा सीसकखण्डानां वा जातरूपखण्डानां वा ख

भेद दव्वाणं कतिविहे भेदे पं० । संखाता योजने गयेभेदे विहंसपामे तेहना हेभगवन् द्रव्यनाकेतला भेद कह्या । गोयमा पंचविहे पं०तं० खंडा भेदे पयरभेद चु अयाभेद अणुतडिया भेद उक्करिया भेद सेकित खंडाभेदे २ । हेगोतम पांचभेदे तेकहैके खंडा भेदलोहखंडादिवत् प्रतरभेद अभ्रकवत् चूर्णिकाभेद पिष्टवत् अनुतडिकाभेद इक्षुवाटिकावत् उत्कारिकाभेद हिवेखंडाभेदकहैके । अयखंडाणवा तउखंडाणवा तंबखंडाणवा सीसखंडाणवा जातरूवखंडाण

नानां वर्गणाः समुदया स्ता असङ्ख्या अतिक्रम्य भेदमापद्यन्ते, विशरारुतामेव विभ्रती त्यर्थः, विशरारुतावं विभ्राणानि च सङ्ख्येयानि योजनानि गत्वा विध्वंसमागच्छंति' शब्दपरिणामं विजहती त्यर्थः, उक्तंच-गतमसंखेज्जाइं अवगाहणाअभिन्नाइं। भिज्जंतिधंसमंतिय संखेज्जाजोयणागंतु ॥ १ ॥ भिन्नान्यपि निसृजंतीत्युक्तं, तत्र कतिविधशब्दद्रव्याणां भेद इति पृच्छति-तेसिणं भंते ! दव्वाणमित्यादि ॥ तत्र खण्डभेदो लोहखण्डादिवत्, प्रतरभेदो ऽभ्रपटलभूर्जपत्रादिवत् चूर्णिकाभेदः चिप्पिटवत् अनुतटिकाभेद इक्षुत्वगादिवत् उत्कटिकाभेदः स्तुत्याघर्षवत् एतान्येव भेदान् व्याख्यातुकामः प्रश्ननिर्वचनसूत्राण्याह-सेकिंतं खण्डभेदे इत्यादि ॥ पाठसिद्धं नवर मनुतटिकाभेद अवटाः कूपाः तडागानि प्रतीतानि हृदाअपि नद्यो गिरिनद्यादयः वाप्य श्चतुरस्राकाराः तास्व वृत्ताकाराः पुष्करिण्यो दीर्घिकाः ऋजवो नद्यः वक्रानद्यो गुञ्जालिकाः बहूनि केवलं केवलानि पुष्पप्रकरवत् विप्रकीर्णानि सरांसि तास्वेव एकैकपंक्त्या व्यवस्थितानि सरःपंक्तयः येषु सरस्सु पंक्त्या व्यवस्थितेषु कूपोदकं प्राणालिकया सञ्चरति

॥ टीका ॥

वुट्ठीए परिवट्टमाणाइं २ लोयंतं फुसंति, जाइं अभिन्नाइं निसिरइ ताइं असंखेज्जाइं ओगाहणसंठाणाइं गता भेदमावज्जंति, संखेज्जाइं जोयणाइं गंता विद्धंसमागच्छंति। एतेसिणं भंते ! दव्वाणं कतिविहे भेदे पन्नत्ते ? गो० ! पंचविहे भेदे पन्नत्ते, तंजहा—खंडाभेदे पयरभेदे चुण्णियाभेदे अणुतडियाभेदे उक्कारिया भेदे। सेकिंतं खंडाभेदे २ जहन्नेणं अयखंडाणवा तउखंडाणवा तंबखंडाणवा सीसाखंडाणवा जातरूवखंडाणवा खंडएण भेदे भवति सेत्तं खंडाभेदे। सेकिंतं पयराभेदे जन्नं वंसाणवा वेत्ताणवा णलाणवा कंदली

॥ मूल ॥

खण्डकभेदो भवति स खण्डभेदः। अथ कोसौ प्रतरभेदः प्रतरभेदो यद्वंशानां वा वेत्राणां वा नडानां वा कदलीस्तम्भानां वा ऽभ्रपटलानां वा प्रत

॥ प० ॥

वा खंडाण भेदे भवतिसे खंडभेदे से कंतं पयराभेदे २ जण्णंवंसाणवा वेत्ताणवा नलाणवा कदलीथंभाणवा। हिवे प्रतरभेदतेणं जे वांसडानांप्रतर वेत्रस नाप्रतर नलांराप्रतर कदलीनाथम। अभ्र डलाणवा पयरभेदे भवंति सेत्तं पयराभेदे से कंतं चुण्णियाभेदे २ जण्णं तिलचुण्णाणवा। अभ्रपटल प्रतरभेदइव

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

सा सरः २ पंक्तिः अप्रतीता भेदा लोकतः प्रत्येतव्याः, अल्पबहुत्वं सूत्रप्रमाण्या तथेति प्रतिपत्तव्यं युक्ते रविषयत्वात्, शेषं सूत्रं सर्वमपि पाठ सिद्धं ॥ जाव कइविहेणं भंते! वयणे पन्नत्ते इति॥ तत्रैकवचन पुरुष इति द्विवचनं पुरुषाविति' बहुवचनं पुरुषा इति' स्त्रीवचनमियं स्त्री, पुरुषवच नमय पुमान्' नपुंसकवचनमिदं कुण्डं, अध्यात्मवचनं यदन्यच्चेतसि निधाय विप्रतारकबुद्ध्यान्यद्विज्ञापयिषुरपि सहसा यच्चेतसि तदेव ब्रूते उपनीतव

॥ मूल ॥

थंभाणवा भुग्गपलाणवा पयरेणं भेदे भवति सेतं पयरभेदे। सेकिंतं चुन्नियाभेदे २ जण्णं तिलचुन्नाणवा मुग्गचुन्नाणवा मासचुन्नाणवा पिप्पलीचुन्नाणवा मरियचुन्नाणवा सिंगवेरचुन्नाणवा चुन्नियाए भेदे भवति सेत्तंचुन्नियाभेदे। सेकिंत भणुतडियाभेदे २ जण्णं भगडाणवा तलागाणवा दहाणवा नदीणवा वावीणवा पुक्खरणीणवा दीहियाणवा गुंजालियाणवा सराणवा सरपंतियाणवा भणुतडियाभेदे भवति सेत्तं भणुतडिया

॥ भ० ॥

रकेन भेदो भवति स प्रतरभेदः। अथ कोसौ चूर्णिकाभेद श्चूर्णिकाभेदो यत्तिलचूर्णानां वा मुद्गचूर्णानांवा माषचूर्णानां वा पिप्पली चूर्णानां वा मरि चचूर्णानांवा शृङ्गवेरचूर्णानांवा चूर्णिकाभेदो भवति सचूर्णिकाभेदः अथ कोसावनुतटिका भेदो ऽनुतटिका भेदो योऽवटानांवा तडागानांवा ह्रदानां वा नदीनांवा वापीनावा पुष्करिणीनांवा दीर्घिकानां वा गुञ्जालिकानांवा सरसां वा सर पङ्क्तीनांवा ऽनुतटिका भेदो भवति सोनुतटिकाभे

॥ भाषा ॥

दे प्रतरभेदकहैके दिवे चूर्णिकाभेदकहैके जे नालचूर्ण विशेष। मगचूर्णाणवा मासचूर्णाणवा पिप्पलीच० मिरीच०सिंगवेरचु० चूर्णाणवा। मुंगचूर्णविशेष मा षचूर्णविशेष पीपलीचूर्ण मरीचचूर्ण शृंगवेरचूर्ण ए चूर्णिकाभेदहुवे। भेदभवति सेत्तंचूर्णियाभेद सेकिंतं अणुतडियाभेद जण्णं अगडाणवा तडागाणवा दहाण वा नदीणवा वावीणवा। एतलेचूर्णभेदकह्या हिवे अनुतटिकाकहैके जे अगडकूप तलाव द्रह नदी वावडी। पुक्करणीणवा दीहियाणवा गुंजालियाणवा सराणवा सरपंतियाणवा सर २ पंतियाणवा। पुष्करणी दीर्घिका लांबीवाव गुंजालिका वाव सरोवरपंक्ति जेकूयानी परे नालपंक्ति ते सरपंक्ति। अणत डिया भेदे भवति सेत्तं अणुतडिया भेदे सेकिंतं उक्का रया भेदे २ जेण सूसयाणवा तिलसिंगाणवा मंडूयाणवा मूगासिंगाणवा मासासिंगाणवा एरंडवि

चनं प्रशंसावचनं यथा रूपवतीयं स्त्री, उपनीतापनीतवचनं यत्प्रशस्य निन्दति यथा रूपवतीयं स्त्री परं दुःशीला' अपनीतोपनीतवचनं यन्निंदित्वा प्रशंसति यथेयं कुरूपा परं सुशीलेति' अतीतवचनमकरोदित्यादि, प्रत्युत्पन्नवचनं वर्त्तमानकालवचनं करोतीत्यादि, अनागतकालवचनं करिष्यतीत्यादि, प्रत्यक्षवचनमयमित्यादि, परोक्षवचनं स इत्यादि, एतानि च षोढशापि वचनानि यथावस्थितवस्तुविषयाणि न काल्पनिकानि



भेदे। सेकिंतं उक्कारियाभेदे २ जण्णं मूसयाणवा तिलसिंगाणवा मंडूमाणवा मुग्गसिंगाणवा मासासिंगाणवा एरंडबीयाणवा फुडिया उक्कारियाए भवति सेत्तं उक्कारियाभेदे। एएसिणं भंते ! दव्वाणं खंडाभेएणं पयराभेएणं चुण्णियाभेएणं अणुतडियाभेएणं उक्कारियाभेएणं भिज्जमाणाणं कयरेकयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गो० ! सव्वत्थोवाइं दव्वाइं उक्कारियाभेदेणं भिज्जमाणाइं अणुतडियाभेदेणं भिज्जमाणाइं अणंतगुणाइं चुण्णियाभेदेणं



दः। अथ कोसावुत्कटिका भेद उत्कटिका भेदो यो मूषकानां वा मसूरकाणां वा तिलशृङ्गानां वा मुद्गशृङ्गानां वा माषशृङ्गानां वा एरण्डबीजानां वोत्कटिका भेदो भवति सोयमुत्कटिका भेदः। एतेषां भदन्त ! द्रव्याणां खण्ड भेदेन प्रतरभेदेन चूर्णिकाभेदेनानुतटिकाभेदेनोत्कटिकाभेदेन भिद्यमानानां कतरे कतरेभ्योऽल्पावा बहुका वा तुल्या वा विशेषाधिका वा ? गौतम ! सर्वस्तोकानि द्रव्याणि उत्कटिकाभेदेन भिद्यमानानि, अनुतटिकाभेदेन भिद्यमानान्यनन्तगुणानि चूर्णिकाभेदेन भिद्यमानान्यनन्तगुणानि, प्रतर भेदेन भिद्यमानान्यनन्तगुणानि, ख



याणवा फुडिया उक्कारियाए भवति सेत्तं उक्कारिया भेदे। ए सर्वे अनुतडिका भेदहवे एतले अनुतडिका भेदकह्या हिवे उत्कारिका भेदकहैछे। एएसिणं भंते दव्वाणं खंडा भेदेणं पयरा भेदेणं चुण्णया भेदेणं। ए सर्वने द्रव्यथी अल्पबहुत्वकहैछे खंडभेद प्रतरभेदे। अणुतडिया भेदेणं उक्कारिया भेदे। यभिज्जमाणाणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४। अनुतटिकाभेदे उत्कारिकाभेदतानै केहां २ थी थोडाघणा। गोयमा सव्वत्थोवाइं दव्वाइं उक्कारिया भेदेणं भिज्जमाणाइं। हे गौतम सर्वथोडा द्रव्यें उत्कारिका भेदभेदता थकाछे। अणुतडिया भेदेणं भिज्जमाणाइं अणं० परयाभेदं भिज्जमाणाइं। तेहथी अनुतटि

॥ मूल ॥

निज्जमाणाइं अणंतगुणाइं, पतरानेदेणं निज्जमाणाइं अणंतगुणाइं, खंडानेदेणं निज्जमाणाइं अणंतगुणाइं । नेरइएणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गिण्हइ ताइं किं ठियाइं गिण्हइ अठियाइं गिण्हइ ? गो० ! एवंचेव जहा जीवे वत्तव्वया भणिया तहा नेरइयस्सवि जाव अप्पाबहुयं । एवं एगिंदियवज्जं दंडगं जाव वेमाणिए । जीवाणं भंते ! जाइं दव्वाइं भासत्ताए गिण्हइ ताइं ठियाइं गिण्हइ अठियाइं गिण्हंति ? गो० !

॥ प० ॥

एकभेदेन निद्यमानान्यनन्तगुणानि । नैरयिको भदन्त ! यानि द्रव्याणि भाषात्वेन गृह्णाति तानि किं स्थिता न्यस्थितानि गृह्णाति ? गौतम ! एवं चैव यथा जीवे वक्तव्यतोक्ता तथा नैरयिकस्यापि यावदल्पबहुत्वम् । एव मेकेन्द्रियवर्जदण्डको यावद्वैमानिकः । जीवा भदन्त ! यानि द्रव्याणि भाषात्वेन गृह्णन्ति तानि स्थितानि अस्थितानि गृह्णन्ति ? गौतम ! एवं चैव पृथक्त्वेनापि ज्ञातव्यम् यावद्वैमानिकाः । जीवा भद

॥ भाषा ॥

कभेद भेदने थकें अनन्तगुणा तेहथी प्रतरभेदो अनन्तगुणा । अथ० खंड,भेदयं निज्जमाणाइं अथ० नेरइयाणं भंते जाइं दव्वाइं भासत्ताइं गिण्हंति । तेहथी खंडप्रमाण भेदने अनन्तगुणा नारकीनें हे भगवन् जे द्रव्यभाषा पणें ग्रहैछे । ताइं किं ठियाइं गि० अठियाइं गि० गोयमा एवं चेव जहा जीवे वत्तव्वया भणिया । तेहथी स्थांतथकीग्रहै अथितथीग्रहै हे गौतम इम जीव जिम जीवनें अलावे वक्तव्यताकही । तहा नेरइयस्सवि जाव अप्पाबहुगं एवं एगिंदियवज्जदंडओ जाव वेमाणीया । तिम नारकीनें वक्तव्यता सर्व कहिये इम एकेंद्रिय वर्जीनें भाषानो दंडकयैमानिकलगें कहिवो । जीवाणं भंते जाइंदव्वाइं भासत्ताए गिण्हंति ताइं किं ठियाइं गि० अठियाइं गि० एवं चेव । जीवनें हे भगवन् जे द्रव्यभाषाथी ग्रहै कि तो स्युं स्थाथका ग्रहै अस्थितग्रहै इम जीव । गोयमा पुहत्तेणवि० जाव वेमाणीया जीवेणं भंते जाइं दव्वाइं भासत्ताए गि० ताइं किं ठियाइं गि० अठियाइं गि० । गौतम पृथक्त्वपणें पिण जहां वैमानिकलगें कहिवो जीवनें हे भगवन् जे द्रव्यसत्यभाषा पणें ग्रहैछे तो स्युं स्थितथकीग्रहै अस्थितपणेंग्रहैं । गोयमा जहाओहिओ दंडओ तहाएसोवि णवरं विगलेंदियाण पुच्छिज्जति । गौतम जिम ओघनो दंडककह्यो तिम कहिवो पिण ए विशेष विकलेंद्रियना

॥ मूल ॥

एवंचेव पुहत्तेणवि नेयव्वं जाव वेमाणिया। जीवेणं भंते! जाइं दव्वाइं सच्चभासत्ताए गिण्हइ ताइं किं ठियाइं गिण्हइ अठियाइं गिण्हइ? गोयमा! जहा नेहियदंडओ तहा एसोवि नवरं विगलिंदिया न पुच्छिज्जंति एवं मोसभासाएवि सच्चामोसभासाएवि असच्चामोसभासाएवि एवंचेव नवरं असच्चामोसभासाएवि। विगलिंदिया पुच्छिज्जंति इमेणं अभिलावेणं 'विगलिंदिएणं भंते! जाइं दव्वाइं असच्चामोसभासत्ताए गिण्हइ ताइं किं ठियाइं गिण्हइ अठियाइं गिण्हइ? गोयमा! जहा नेहियदंडओ एवं एते एगत्तपुहत्तेणं दंडगा

॥ अ० ॥

न्त। यानि द्रव्याणि सत्यभाषात्वेन गृह्णाति तानि किं स्थितान्यस्थितानि गृह्णाति? गौतम! यथौधिकदण्डकस्तथैवैषोपि नवरं विकलेन्द्रिया न प्रष्टव्याः। एवं मृषाभाषात्वेपि' सत्यामृषाभाषात्वेपि, असत्यामृषाभाषात्वेपि, एवं चैव नवरं असत्यामृषाभाषात्वेपि। विकलेन्द्रियाः प्रष्टव्याः एतेनाभिलापेन। विकलेन्द्रियो भदन्त। यानि द्रव्याणि असत्यामृषाभाषात्वेन गृह्णाति तानि किं स्थितानि गृह्णाति अस्थितानि गृह्णाति? गौतम! यथौधिकदण्डक एवमेत एकत्वपृथक्त्वेन दण्डका भणितव्याः। जीवो भदन्त! यानि द्रव्याणि सत्यभाषात्वेन गृह्णाति तानि किं सत्यभाषात्वेन निसृजन्ति मृषाभाषात्वेन निसृजन्ति सत्यामृषाभाषात्वेन निसृजन्ति असत्यामृषाभाषात्वेन निसृजन्ति? गौतम! सत्यभा

॥ भाषा ॥

प्रश्न दिये। एव मोसाभासाएवि सच्चामोसभासाएवि असच्चामोसभासाएवि एवं चेव णवरं। इम मृषाभाषानो प्रश्न इम सत्यामृषानो प्रश्न असत्य, मृषा नो प्रश्न इम होज सर्व जाणवो एतलो विशेष। असच्चामोस भासाएणं विगलेंदिया पुच्छिज्जंति इमेणं अभिलावेणं विगलेंदिएणं भंते जाइं दव्वाइं। असत्यामृषा विगलेंद्रियने भाषाकहिये इम पाछलोपरे कहिवो एणे अलावे विकलेंद्रिय ते भगवन् जे द्रव्य। असच्च मोसाभासाए गिण्हति ताइं किं ठियाइं गि० अठियाइं गि०। असत्या मृषाभाषापणे ग्रहे ते स्थितिपणें ग्रहे कि अस्थितपणे। गोयमा जहाओहिओ दंडओ एवं एगत्तपुहत्तेण दसदंडगा भा० जीवेण भंते जाइं दव्वाइं सच्चभासत्ताएगि०। गौतम जिम ओघनादंडकनो पर इम १ अलावानोपरे पृथक्तपणे १० दंडककहिवा १ वचने जीवनें

॥ मूल ॥

न्नाणियव्वा । जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं सच्चभासत्ताए गिण्हइ ताइं किं सच्चभासत्ताए निसरति मोसभासत्ताए निसरति सच्चामोसभासत्ताए निसरइ असच्चामोसभासत्ताए निसरति ? गोयमा ! सच्चभासत्ताए निसरति नो मोसभासत्ताए निसरति नो सच्चामोसभासत्ताए निसरइ नो असच्चामोसभासत्ताए णिसरइ । एवं एगिंदियविगलिंदियवज्जो दंडओ जाव वेमाणिया । एवं पुहत्तेणवि । जीवेणं भंते ! जाइं दव्वाइं मोसभासत्ताए गिण्हइ ताइं किं सच्चभासत्ताए निसरति मोसभासत्ताए सच्चामोसभासत्ताए असच्चामोसभासत्ताए निसरइ ? गो

॥ भाषा ॥

षात्वेन निसृजन्ति नो मृषाभाषात्वेन नो सत्यामृषात्वेन नो असत्यामृषात्वेन निसृजन्ति । एवमेकेन्द्रियविकलेन्द्रियवर्जो दण्डको यावद्वैमानिकाः । एवं पृथक्त्वेनापि । जीवो भदन्त ! यानि द्रव्याणि मृषाभाषात्वेन गृह्णाति तानि किं सत्यभाषात्वेन निसृजन्ति मृषाभाषात्वेन सत्यामृषाभाषात्वेन असत्यामृषाभाषात्वेन निसृजन्ति ? गौतम ! नो सत्यभाषात्वेन निसृजन्ति मृषाभाषात्वेन निसृजन्ति नो सत्यामृषाभाषात्वेन निसृजन्ति नो असत्यामृषाभाषात्वेन निसृजन्ति । एवं सत्यामृषाभाषात्वेऽपि । एवमसत्यामृषाभाषात्वेऽपि, एवं चैव नवरमसत्यामृषा

हे भगवन् जे द्रव्यसत्यभाषा पणे ग्रहै । ताइं किं सच्चभासत्ताए निसरतिमोसभासत्तानि० सच्चामोसत्ताए नि० असच्चामोसभासत्ताए नि० गोयमा । ते स्युं सत्यपणे नीसरे मृषापणे नीसरे सत्यामृषापणे नीसरे असत्यामृषापणे नीसरे गौतम । सच्चभासत्ताए नि० नो मोसभासत्ताए नि० नो सच्चामोसभासत्ताएनि० नो असच्च मोसभासत्ताए नि० । सत्यपणे नीसरे मृषाभाषापणे न नीसरे सत्यामृषापणे ननीसरे असत्या अमृषापणे ननीसरे । एवं एगिंदिय विगलेंदियवज्जोदंडओ जाव वेमाणिया एवं पुहुत्तेणवि जीवेणं भंते जाइं दव्वाइं मोसत्ताए गिण्हति । इम एकेंद्रिय विकलेंद्रियवर्जी ने आलगे सघल दंडकें कहिवो वैमानिकतांइ इम पृथक्पणे कहिवा जीव्ने भगवन् जे द्रव्य मृषाभाषापणेग्रहै । ताइं सच्चभासत्ताए निसरति मोसभासत्ताए नि० सच्चा मोसभासत्ताए नि० असच्चामोसभासत्ताए नि० गोयमा । ते सत्यपणें नीसरें कि मृषापणे नीसरे कि सत्यामृषापणें नीसरे कि असत्यामृषापणे नीसरे

तत स्तावदेतानि सम्यगुपयुज्य वदति तदा सा भाषा प्रज्ञापनी द्रष्टव्या, तथाचाह-इच्चेयं भंते । एगवयणं दुवयणमित्यादि ॥ भावितार्थमक्षरार्थः प्रतीत एव, सम्प्रति प्रागुक्तमेव सूत्रं सूत्रान्तरसम्बन्धनार्थं भूयः पठति-इइणं भंते! भासज्जाया पन्नत्ता इत्यादि ॥ सुगमं नवरं-आउत्तभासमाणो इति ॥ सम्यक् प्रवचनमालिन्यादिरक्षणपरतया भाषमाणः स्तथाहि-प्रवचनोड्डाहरक्षणादिनिमित्तं गुरुलाघवपर्यालोचनेन मृषाऽनृतं भाषमाणः



जया ! नो सच्चभासत्ताए निसरति मोसभासत्ताए निसरइ नो सच्चामोसभासत्ताए नि० नो असच्चामोसभासत्ताए नि० । एवं सच्चामोसभासत्ताएवि । एवं असच्चामोसभासत्ताएवि एवचेव नवरं असच्चामोसभासत्ताए विगलिंदिया तहेव पुच्छिज्जंति, जाएचेव गिण्हइ ताएचेव निस्सरइ एवं एते एगत्तपुहत्तिय अट्ठदंडगा भाणियव्वा । कतिविहेणं भंते ! वयणे पन्नत्ते ? गोयमा ! सोलसविहे वयणे पन्नत्ते, तंजहा-एगवयणे



भाषत्वेन, विकलेन्द्रिया स्तथैव पृच्छनीयाः यथाचैव गृह्णाति तथा चैव निसृजन्ति एवमेत एकत्वपृथक्त्वदण्डकाष्टकं भावितव्यम् । कतिविधं भदन्त ! वचनं प्रज्ञप्तम् ? गौतम ! षोडशविधं वचनं प्रज्ञप्तम्-तद्यथा-एकवचनम्, द्विवचनम्, बहुवचनम्, स्त्रीवचनम्, पुंवचनम्, नपुंसक

हे गौतम। सच्चभासत्ताए नो नि० मोसभासत्ताए नि० नो सच्चामोसभासत्ताए नि० नो असच्चामोसभासत्ताए नि० । नहीं सत्यपणे नीसरे छि मृषापणे नीसरे छि सत्यामृषापणे ननीसरे असत्यामृषापणे ननीसरे छि । एव सच्चामोसभासत्ताए नि० असच्चामोसभासत्ताएवि एव चेव नवरं असच्चामोसभासत्ताए । इम सत्यामृषा भाषापिण असत्यामृषाभाषा पिण इम हीज पतलो विशेष असत्यो असत्यामृषाभाषापणे ग्रहै नीकले । विकलेंदिया तहेव पुच्छिज्जंति जाएचेव गिण्हति ताएचेव निस्सरति । विकलेंद्रिय पिण तिम हीज पूछवा असत्या मृषाभाषा ग्रहै असत्यामृषापणे नीसरै । एवं एते एगत्तपुहत्तिया अट्ठदंडगा भा० कतिविहेणं भंते वयणे पं० गोयमा । इम एकनें एकत्वपृथक्त्वपणे ८ दंडक कहिवा जेतले भेदें वचनकहीजो गौतम । सोलसविहेवयणे पं० तं० एगवयणे दुवयणे बहुवयणे इत्थीवयणे पुमवयणे । गौतम १६ भेदे कहीजे ते कहैछे एकवचन पुरुष १ द्विवचनेपुरुष २ बहुवचनेपुरुष ३ स्त्रीवचन इत्यादी

॥ मूल ॥

दुवयणे बहुवयणे इत्थीवयणे पुमवयणे नपुंसगवयणे अज्झत्थवयणे उवणीयवयणे अवणीयवयणे उवणीयावणीयवयणे अवणीउवणीयवयणे अतीतवयणे पडुप्पन्नवयणे अणागयवयणे पच्चक्खवयणे परोक्ख वयणे। इच्चेयं भंते! एगवयणं वा जाव परोक्खवयणं वा वदमाणे पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासामोसा ? हंता गोयमा ! इच्चेयं एगवयणं वा जाव परोक्खवयणं वा वयमाणे पन्नवणीणं एसा भासा न एसा भासा मोसा। कतिणं भंते ! भासज्जाया पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि भासज्जाया पण्णत्ता, तंजहा—सच्चमेगं भा

॥ अ० ॥

वचनम्, अध्यात्मवचन मुपनीतवचन मपनीतवचन उपनीतापनीतवचन मपनीतोपनीतवचन मतीतवचनं प्रत्युत्पन्नवचनमनागतवचन प्रत्यक्षवचन परोक्षवचनम्। इत्येव मदन्त ! एकवचनं वा यावत्परोक्षवचनं वा वदमानः प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषेति ? हन्त गौतम ! इत्येवमे कवचनं वा यावत्परोक्षवचनं वा वदमानः प्रज्ञापन्येषा भाषा नैषा भाषा मृषेति। कति मदन्त ! भाषा जातानि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! च

॥ भाषा ॥

पुरुष वचन ते पुमान्। नपुंसकवचने अध्यात्मवचने उपनीतवचने अपनीतवचने उपनीतापनीतवचने निंदकवचने पडुप्पन्नवचने। नपुंसकवचने ते टंकुंड अध्यात्मवचने जे चित्तमें विचारीबोल्या उपनीतवचनप्रशंसा वचनयथा यास्तीक्ष्णपात्र अपनीतवचन जे निंदाकरवो अपनीतोपनीतनिंदाकरीने स्तुति करवो यथा अर्जुनमाल परमश्रोत्तीन नीतिनावचन प्रत्युत्पन्न वर्त्तमानकालवचननोकरीति। अणागयवयणे पच्चक्खवयणे परोक्खवयणे इच्चेयं भंते एगवयणं वा जाव परोक्खवयणं वा वदमाणे पन्नवणीणं एसाभासा एसाभासामोसा हंता गोयमा। अनागतवचनकरसो प्रत्यक्षवचन अन्यो परोक्षवचन इत्यादि एहवा वचन भगवन् एकवचनथी मांडीने जांलगे १६ मोपरोक्षवचन बोलतांथकां प्रज्ञापनीये भाषाबोलते मृषाभाषानहुवे हां गौतम। इच्चेयं एगवयणं जाव परोक्खवयणं वदमाणे पन्नवणीणं एसाभासा एसाभासा मोसा कतिणं भंते भासज्जाया प० गोयमा। इत्यादि एहवा एकवचन जांलगे परोक्षव चनथी मांडीने जांलगे १६ मोपरोक्षवचन बोलतेथकें प्रज्ञापनी ए भाषाबोल मृषानहुवे केतली भाषानी जातिकही भगवन् हे गौतम। चत्तारिभास

सज्जायं वीयंमोसं नासज्जायं तइयं सच्चमोसं नासज्जायं चउत्थं असच्चामोसं नासज्जातं। इच्चेयाइं भंते ! चत्तारि भासज्जायाइं भासमाणे किं आराहए विराहए ? गोयमा ! इच्चेयाइं चत्तारि भासज्जायाइं आउत्तं भासमाणे आराहए नो विराहए तेण परं असंजय अविरय अपडिहय अपच्चक्खायपावकम्मे सच्चं वा भासं भासज्ज मोसं वा सच्चामोसं वा असच्चामोसं वा भासं भासज्ज नो आराहए विराहए। एएसिणं भंते !

॥ मूल ॥

त्वारि भाषा जातानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-सत्यमेकं भाषा जातं, द्वितीयं मृषाभाषाजातं, तृतीयं सत्यामृषाभाषाजातं, चतुर्थमसत्यामृषा भाषा जातमित्येतानि भदन्त ! चत्वारि भाषा जातानि भाषमाणः किमाराधको विराधकः ? गौतम ! इत्येतानि चत्वारि भाषाजातानि आयुक्त"सम्यग्" भाषमाणः आराधको नो विराधकः, ततः परोऽसंयता विरताप्रतिहताप्रत्याख्यात पापकर्मा सत्यां भाषां भाषको मृषा भाषा भाषकोः सत्यामृषां वा ऽसत्यामृषां वा भाषां भाषको नो आराधको विराधकः। एतेषां भदन्त ! जीवानां सत्यभाषकाणां मृषाभाषकाणां

॥ अ० ॥

ज्ञाया पं० त० सच्चं गं भासज्जाया बितीयंभासभा० तातियं सच्चामोसं चउत्थं अन्नच्च मोस भासज्जाया इच्चे याइं भंते चत्तारि भासज्जायाइं भासमाणे किं आराहए विराहए गोयमा भा०। ४ भाषानो जातिओ छे ते कहेछे पहिलो सत्यभाषा दूजोमृषा २ तीजो सत्यामृषा। चौथो असत्यामृषा इत्यादि हे भगवन् ४ भाषानो जाति भाषेयके ते शुं आराधक के विराधक छे गौतम। इच्चेयाइं चत्तारिभासज्जाइं आउत्तभासमाणे आराहए नो विराहए तेणपरं असंजय अविरय अपडिहेय। इत्यादि पहेलो ४ भाषानो जाति यत्नपणे सम्यग् प्रवचनभाषनादि कपण वचनोच्चार करणाथी बोलते साध आराधकछे पिण विराधक नथी तिवारपछे यत्नपणे बोलतो असयतमनोवा कायसंयतविकल सावद्यव्यापारथी नहो निवर्त्यो नहो निवर्त्तन हवा। अपच्चक्खाय पावकम्मे सच्च भासं भासे मोसंवा सच्चामोसंवा असच्चामोसंवा भासं भासमाणे। नहो पच्चक्खो पापकर्म सत्यभाषाप्रतें बोलतो मृषा भाषाप्रतें सत्यामृषा असत्यामृषा भाषा बोलतो थको। नो आराहए विराहए एएसिणं भंते जीवाणं सच्चभासगाणं मोसभासगाणं सच्चामोसभा०। ते

॥ भाष॥ ॥

॥ टीका ॥

साधुराराधक एवेति ॥ तेणपरमित्यादि ॥ तत इदमुक्तं भाषमाणात् परो ऽसंयतो मनोवाक्कायसंयमविकलो ऽविरतो विरमतिस्म विरतो न विरतोऽविरतः सावद्यव्यापारादनिवृत्तमना इत्यर्थः, अतएव न प्रतिहतं मिथ्यादुःकृतदानप्रायश्चित्तप्रतिपत्त्यादिना न नाशितमतीतं तथा न प्रत्याख्यातं भूयोकरणतया निषद्य मनागतं पापकर्म येनासा अप्रतिहताप्रत्याख्यातपापकर्मा शेष पाठसिद्ध, अल्पबहुत्वचिन्तायां सर्वस्तोकाः सत्यभाषकाः, इह यः सम्यगुपयुज्य सर्वज्ञमतानुसारेण वस्तुप्रतिष्ठानबुद्ध्या भाषते स सत्यभाषकः, तेच पृच्छाकाले कतिपयाएव लभ्यन्ते इति सर्वस्तोकाः' तेभ्यो ऽसंख्येयगुणाः सत्यमृषाभाषकाः बहूनां प्रायो यथातथा चासत्यमृषाभाषणसम्भवाल्लोके तथादर्शनात्, तेभ्यः संख्येयगुणाः मृषाभाषकाः क्रोधाभिभूतानां परवञ्चनाद्यभियुक्तानां च प्रभूततराणामुपलम्भा तेषां च मृषाभाषकत्वात्, तेभ्यो ऽसङ्ख्येयगुणा असत्यामृषाभाषकाः द्वीन्द्रियादीना मप्यसत्यामृषाभाषकत्वा तेभ्यो ऽनन्तगुणा अभाषकाः सिद्धानामेकेन्द्रियाणां चानन्तत्वात् ॥ इति श्री मलयगिरिविरचितायां

॥ मूल ॥

जीवाणं सच्चभासगाणं मोसभासगाणं सच्चामोसभासगाणं असच्चामोसभासगाणं अभासगाणय कयरे कयरेहिंतो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा जीवा सच्चभासगा मोसभासगा असंखेज्जगुणा सच्चामोसभासगा अ

॥ ष० ॥

सत्यामृषाभाषकाना मसत्यामृषाभाषकानाम भाषकाना च कतरे कतरेभ्योऽल्पा वा ४ ? गौतम ! सर्वस्तोका जीवाः सत्यभाषका मृषाभाषका असङ्ख्येयगुणाः सत्यामृषाभाषका असंख्येयगुणा असत्यामृषाभाषका असंख्येयगुणा अभाषका अनन्तगुणाः ॥ इति श्री महोपाध्यायरामचन्द्र ग

॥ भाषा ॥

आराधक नहीं विराधक कहिये तिम अल्पबहुत्वकहै छइ इहनें भगवन् जीवनें सत्यभाषनें मृषाभाषकनें सत्यमृषा भाषकनें । असच्चामोसभा० अभासगाणय कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ गौ० । असत्यामृषा भाषकनें अभाषकनें थोडा २ थी थोडा घणा छै गौ० । सर्वथी थोडा सच्चभासगा मोसभासगा असं० रूअ मोसभासगा असं० । सर्वथी थोडा जीव सत्यभाषा बोलणहार तेहथी मृषाभाषाना बोलणहार असंख्यातगुणा ए माटे क्रोधे वेदनायें घणा मृषाभाषना भाषक तेहथी सत्यमृषा भाषना धणी असंख्याता यद्या तथा संलापकरतां घणी बोलायें तिमाटे असंख्यातगुणा । असच्चामोसभासगा असंख्य

प्रज्ञापनाटीकायां भाषाख्यमेकादशं पदं समाप्तम् ॥ ११ ॥ तदेवं व्याख्यातमेकादशं पदमिदानीं द्वादशमारभ्यते-अस्यचायम निसम्बन्धः इहानन्तरपदे जीवानां सत्यादिभाषाविभागोपदर्शनं कृतं भाषाच शरीराधत्ता शरीरप्रबाहाभाषेत्यत्रैव प्रतिपादितत्वात्, अन्यत्राप्यु क्तं-गिण्हइयकायएणं निस्सरइतहवाइएणजोएण । मिति, ततः शरीरप्रविभागप्रदर्शनार्थमिदमारभ्यते-तत्रेदमादिसूत्रं-कइणं भंते ! सरीरा प न्नत्ता इत्यादि ॥ उत्पत्तिसमयादारभ्य प्रतिक्षणं शीर्यंते इति शरीराणि तानि भदन्त ! कति किंसंख्याकानि "किमितिवाक्यालङ्कारे" प्रज्ञप्तानि



संखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा असंखेज्जगुणा अनंतगुणा । भासापदं समत्तं ॥ ११ ॥
कतिणं भंते ! सरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरा पन्नत्ता, तंजहा—उरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए । नेरइयाणं भंते ! कइ सरीरया पन्नत्ता ? गोयमा ! तनु सरीरगा पन्नत्ता, तंजहा—वेउव्विए तेयए



णि शिष्य ऋषिनानकचन्द्र विरचिते प्रज्ञापनानुवादे भाषापदं एकादशं समाप्तम् ॥ ११ ॥ कति भदन्त ! शरीराणि प्र ज्ञप्तानि ? गौतम ! पञ्च शरीराणि प्रज्ञप्तानि' तद्यथा-औदारिकं वैक्रिय माहारकं तैजसम् कार्मणम् । नैरयिकाणां भदन्त ! कति शरी राणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-वैक्रियं तैजसं कार्मणं । एवमसुरकुमाराणामपि याव त्स्तनितकुमाराणाम् ।



अभासगा अणंतगुणा । तेहथी असत्या मृषाभाषानी बोलणहार असंख्यातगुणा जे माटे बेंद्रिय तेंद्रिय चौरिंद्रिय पंचेंद्रियादि घणा बोले तेहथी अभाषक अनन्तगुणा एकेंद्रियादिकने सिद्धनेवाथी । पन्नवणाए भासा पयं समत्तं ॥ इति प्रज्ञापना भगवती सूत्रमांहि भाषापद ११ इग्यारमो समाप्त हुवो ॥ ११ ॥ कतिणं भंते सरीरा पं० गोयमा । हिवै शरीरपद बारमो कहेछे हे भगवन् केतले भेदे शरीरकह्या हे गौतम । पंचसरीरा पं० उ रालिय वेउव्विय आहारए तेयए कम्मए नेरइयाणं भंते कतिसरीरगा प० गोयमा । पांचप्रकारे शरीरकह्या औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तैज स ४ कार्मण ५ भगवन् नारकोनें केतरा शरीरकह्या हेगौतम । तथा सरीरगा पं०तं० वेउव्विय तेयए कम्मए । तीनशरीरकह्या वैक्रिय १ तैजस २ का

जगवानाह-पञ्चशरीराणि प्रज्ञप्तानि तान्येव नामत आह-उरालियएइत्यादि ॥ अमीषां शब्दार्थमात्रं वक्ष्याम स्तथापिस्थानशून्यार्थं किञ्चि दुच्यते-उदारं प्रधानं प्राधान्यं चास्य तीर्थकरगणधरशरीरापेक्षया ततो न्यस्या नुत्तरसुरशरीरस्याप्यनन्तगुणहीनत्वात्, अथवा उरालं नाम विस्तरवत् विस्तरवत्त्वाच्चास्या वस्थितस्वभावस्य सातिरेकयोजनसहस्रमानत्वात्, वैक्रियचैतावदवस्थितप्रमाणं न लभ्यते, उत्कर्षतोप्यवस्थितप्रमाणस्य पञ्च धनुःशतप्रमाणत्वात्, तत्तावत्प्रमाणं सप्तम्यां नान्यत्र यत्तूत्तरवैक्रियं योजनलक्षप्रमाणं तदवस्थितं नाभवधारित्वाभावात् ततो न तदपेक्षा आह च चूर्णिकृत् "उरालंनाम विच्छिन्नं विसालं ति जंजोयणसहस्समवट्ठियप्पमाणमारालियं अन्नमट्ठहमेत्तं नत्थित्ति विउव्वियं होज्जा तंतु अणवट्ठियप्पमाणं अवट्ठियं पुण पंचधणुसयाइं अहे सत्तमाए इमं पुण अवट्ठियप्पमाणं साइरेगं जोयणसहस्सं वनस्पतीनामिति," अथवा उरालं विरलप्रदेशं नतु घनं स्वल्पप्रदेशोपचितत्वा दृष्टत्वाच्च नेरुवत्, यदिवा उरालं समयपरिभाषया मांसास्थिस्नाय्वाद्यवबद्धं सर्वत्र स्वार्थिक इक प्रत्ययः, इह उदारमेव वा औदारिकं पृषोदरादित्वा दिष्टरूपनिष्पत्तिः, प्राकृतत्वात् उरालियमिति, तत्योदारमुदारं उरालंउरालमेवविज्ञेयं। उरालियंतिपढमं पडुच्चतित्थेसरसरीरं ॥ १ ॥ अन्नइयतहोरालं वित्थरवंतंवसस्सयंपप्प पगइएनत्थिअप्पं अट्ठहमेत्तविसालंति ॥ २ ॥ उरलंघवपएसो वचियंतिमहल्लगंजहाजिणगं। मंसट्ठिण्हासबद्धं उरालंसमयपरिभासा ॥ ३ ॥ तथा विविधा विशिष्टावा क्रिया विक्रिया तस्यां भवं

कम्मए, एवं असुरकुमाराणवि जाव थणियकुमाराणं। पुढवीकाइयाणं भंते ! कति सरीरया पन्नत्ता ? गो



पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! त्रीणि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-औदारिकं तैजसं कार्मणम्। एवं वायुकायिकवर्जं यावच्चतुरिन्द्रियाणाम्। वायुकायिकानां पृच्छा, गौतम ! चत्वारि शरीराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-औदारिकं वैक्रियं तैजसं का



मेण ३। एवं असुरकुमाराणंवि जाव थणियकुमाराण पुढवीकाइयाणं कतिसरीरा पं० गोयमा। इम असुरकुमारने पिण जांलगे स्तनितकुमार पृथिवीकाइयानें हे भगवन् शरीरकह्या हे गौतम। तमोसरीरा पं० तं० उरालिए तेयए कम्मए एवं वाउक्कायवज्जं जाव चउरिंदियाणं वाउक्काइयाणं पुच्छा गो

वैक्रियं उक्तंच-विविहाविसिट्ठगावा किरियातीएहजंजवंतमिइ । वेउव्वियंतयंपुण नारगदेवाणयगहेण ॥ १ ॥ अथवा वैकुर्विकमिति शब्दसंस्कारः, तत्र विकुर्व इति सिद्धान्तप्रसिद्धोयं धातु विकुर्विणं विकुर्वविविधाक्रिया इत्यर्थः, तेन निर्वृत्तं वैकुर्विकं तथा चतुर्दशपूर्ववित्कृता कार्योत्पत्तौ योगव लेनाक्रियते इत्याहारक तेजसोविकार स्तैजस कर्मणोजात कार्मणमिति, तत्रौदारिकादीनां शरीराणा मित्थमुपन्यासे किंचिदस्ति प्रयोजन मुत य थाकथंचिदेषः प्रवृत्त इति उच्यते-अस्तीति क्रमः किंविदितिचेद् दुच्यते-परं परप्रदेशे सूक्ष्मं परस्परवर्गणासु प्रदेशबाहुल्यं तथाह्यौदारिकात् वैक्रि यस्य प्रदेशसूक्ष्म्यं वैक्रियादप्याहारकस्य आहारकादपि तैजसस्य तैजसादपि कार्मणस्य तदा औदारिकात् वैक्रियस्य वर्गणासु प्रदेशब हुल्यं वैक्रि यादाहारकस्या हारकादपि तैजसस्य तैजसादपि कार्मणस्येति' यताम्येव शरीराणि नैरयिकादिषु सम्भवतश्चिंतयति-नेरइयाण भंते! कइया स रीरा पन्नत्ता इत्यादि ॥ पाठसिद्धं ॥ शरीराणि च जीवानां द्विविधानि तद्यथा-बद्धानि मुक्तानि च, तत्र यानि चिन्ताकाले जीवैः परिगृहीता

यमा ! तनु सरीरा पन्नत्ता, तंजहा—उरालिए तेयए कम्मए । एवं वाउक्काइयवज्जं जाव चउरिंदियाणं, वाउक्काइयाणं पुच्छा, गोयमा ! चत्तारि सरीरा पन्नत्ता, तंजहा—उरालिए वेउव्विए तेयए कम्मए । एवं पंचिंदियतिरिक्कजोणियाणवि । मणुस्साणं भंते ! कति सरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! पंच सरीरया पन्नत्ता, तं

॥ मूल ॥

मंगम् । एवं पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामपि । मनुष्याणां कति शरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! पञ्च शरीराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-औदारि कं वैक्रिय माहारकं तैजसं कार्मणम् । वानव्यन्तर ज्योतिष्क वैमानिकानां यथा नारकाणाम् । कति भदन्त ! औदारिक शरीराणि प्रज्ञप्तानि ?

॥ अ० ॥

यमा । तीन शरीरकहा ते कहेछ औदारिक १ तेजस २ कार्मण ३ इम वायुकायटालोनैं जालवैं चौरिंद्रियतांई २ शरीर वायुकायने केतला शरीर प्रज्ञ हे गौतम । चत्तारिसरीरा पं० तं० उरालिए वेउव्विय तेयए कम्मए । ४ शरीर औदारिक १ वैक्रिय २ तैजस ३ कार्मण ४ । एवं पंचेंद्रिय तिरिक्कजोणि याणवि मणुस्साणं भंत कतिसरीरा पं० गोयमा । इम पंचेंद्रिय तिर्यंचने ४ शरीर वैक्रिय किवारेहुवे हे भगवन् मनुष्यने केतला शरीरकह्या हे गौतम ।

॥ भाषा ॥

निवर्त्तन्ते तानि बद्धानि यानिच पूर्वजन्मसु परित्यक्तानि तानि मुक्तानि तेषां बद्धानां मुक्तानांच परिमाणमिदानीं द्रव्यक्षेत्रकालैः प्ररूपणीयं, त
त्र द्रव्यैरनन्तादिभिः क्षेत्रेण श्रेणिप्रतरादिना कालेनावलिकादिना तत्रौदारिकशरीरमधिकृत्याह- कवइयाणं भंते ! उरालियसरीरा पन्नत्ता इत्या



जहा—उरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए वाणमंतरजोइसियवेमाणियाणं जहा नेरइयाणं कवतियाणं भंते ! उरालियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—बद्धेल्लयाय मुक्केल्लयाय । तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणी उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तओ असंखेज्जा लोगा । तत्थणं जेते मुक्केल्लया तेणं अणंता अणंताहिं उस्सप्पिणीहिं नसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तओ



गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा-बद्धानि मुक्तानि च । तत्र यानि बद्धानि तानि असङ्ख्येयानि, असङ्ख्याताभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः रप
ह्रियन्ते कालतः, क्षेत्रतो ऽसङ्ख्येया लोकाः (व्याप्यन्त) तत्र यानि मुक्तानि तानि अनन्तानि अनन्ताभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः रपाह्रियन्ते का

पंचसरीरा पं० तं० उरालिए वेउव्विए आहारए तेयए कम्मए वा वाणमंतरजोतिसिय वेमाणियाणं । ५ शरीरकह्या ते कहेके औदारिक १ वैक्रिय २ आ
हारक ३ तैजस ४ कार्मण ५ वाणव्यंतरज्योतिषीने वैमानिकने । जहा नैरइयाणं केवतियाणं भंते उरालियसरीरा पं० गोयमा । जिम नारकीने तिम
कहिवा कीधा छे भगवन् औदारिक १ शरीरकह्या छे गौतम । दुविहा पं० तं० बद्धेलगाय मुक्केलगाय तत्थणं जेते बद्धेलगा तेणं असंखिज्जाहिं । बे
प्रकारे कह्या ते उचितकालें ग्रह्याछे ते बद्धेलगा पूर्वभवेलेइने मूंक्या ते मूकेलगा तिहां जे बद्धेलगा कह्याछे ते असंख्यातके औदारिकशरीर । उसप्पणी
ओसप्पणीहिं अवहीरंति कालतो खेत्ततो असंखिज्जालोगा । उत्सर्पेसी अवसर्पणीकालें मनवें अपहरीये असंख्याताप्रमाण एतला औदारिक शरीरकह्या
कालथी असंख्यात आवली क्षेत्रथी असंख्यात लोकाकाशप्रमाण । तत्थणं जेते मुक्केलया तेणं अणंताहिं उसप्पणीओसप्पणीहिं अवहीरंति कालतो खेत्तो
अणंतालोगा अभवसिद्धीएहिंतो अणंतगुणसिद्धाणं अणंते भागे केवतियाणं भंते वेउव्वियसरीरा पं० गोयमा । तिहां जे मुक्केलगा पूर्वलेइ मूंक्याते अ

दि ॥ इह प्राकृतलक्षणवशादिल्लप्रत्ययः कप्रत्ययश्च स्वार्थे, ततो बद्धिल्लयाइति ॥ बद्धानीत्यर्थः ॥ मुक्किल्लयाइति ॥ मुक्तानीत्यर्थः ' तत्र बद्धान्यसंख्येयानि असंख्येयत्वमेव प्रथमतः कालतो निरूपयति-असंखेज्जाहिं इत्यादि ॥ प्रतिसमयमेकैकशरीरापहारेण असंख्येयाभिरुत्सर्पिणीअवसर्पिणीभि र वयवशोऽपहियंत किमुक्तं भवति-असंख्येयासु उत्सर्पिण्यवसर्पिणीषु यावन्तः समयास्तावत्प्रमाणानि बद्धान्यौदारिकशरीराणि वर्तंते, इद कालतः परिमाणं, क्षेत्रत आह-खेत्तेणं असंखेज्जा लोगा इति ॥ क्षेत्रतः परिसंख्यान मसंख्येया लोकाः ॥ यदुक्तं भवति-सर्वाण्यपि बद्धान्यौदारिकशरीराणि आत्मीयात्मीयावगाहनाभि राकाशप्रदेशेषु परस्पर मपिरुद्धीभावेन क्रमेण स्थाप्यन्ते तदानीं तैरेव भास्वीयमा णै रसंख्येयालोका व्याप्यन्ते, इह य कैकस्मिन्नप्याकाशप्रदेशे एकैकौदारिकशरीरस्थापनाया असंख्यया लोका व्याप्यन्ते परं पूर्वाचार्या आत्मीयावगाहनास्थापनायाः प्ररूपणां कुर्वन्ति ततोऽपसिद्धान्तदोषो मा प्रापदित्यस्माभिरपि तथैव प्ररूपणा क्रियते ' आह चूर्णिकारोऽपि-जइविक्केक्कपएसे सरीरमगठविज्जइतोवि असंखे

---

ज्जा लोगा भवंति किंतु अवसिद्धान्तदोसपरिहरणत्थ मप्पप्पणियाहिं उगाहणाहिं ठविज्जंत इति ,, आह नन्वनन्ता जीवा स्ततः कथमसंख्येयान्यौ दारिकशरीराण्युच्यन्ते-इह द्विविधा जीवाः प्रत्येकशरीरिणोऽनन्तकायिकाश्च, तत्र ये ते प्रत्येकशरीरिण स्तेषां प्रतिजीवमेकैकौदारिकशरीरमन्यथा प्रत्येकशरीरत्वायोगात् ' ये त्वनन्तकायिका स्तेषा मनन्ताना मनन्ताना मेकैकमौदारिकशरीरमतः सर्वाणि असंख्येयान्यौदारिकशरीरा ण्यनन्तानि मु क्तानन्तानि तद्यानन्तत्वं कालक्षेत्रद्रव्यै र्निरूपयति-अणंताहिइत्यादि ॥ कालतः परिमाणं प्रतिसमयमेकैकशरीरापहारे ऽनन्ताभिरुत्सर्पिण्यवस र्पिणीभिः सर्वात्मना पह्रियंते किमुक्तं भवति अनन्तासु उत्सर्पिण्यवसर्पिणीषु यावन्तः समयास्तावत्प्रमाणानीति, क्षेत्रतः परिमाणमनन्ता लोका अनन्तेषु लोकप्रमाणेष्वाकाशखण्डेषु यावन्त आकाशप्रदेशास्तावत्प्रमाणानीत्यर्थः ' द्रव्यतः परिमाणमभवसिद्धिकेभ्यो ऽनन्तगुणानि, यद्येवं तर्हि सिद्धराशिप्रमाणानि भविष्यन्ति तत आह-सिद्धानामनन्तभागे अनन्तभागमात्राणि, ननु द्वयोरपि राश्यो भवसिद्धिकासिद्धरूपयो र्मध्ये

पठ्यन्ते प्रतिपतितसम्यक्दृष्टयः ततः किं तद्राशिप्रमाणानि भवेयुः ? उच्यते-यदि तत्प्रमाणानि स्यु स्तर्हि तथैव निर्देशः क्रियते सुखप्रतिपत्ति कृतप्रतिज्ञाहि भगवन्त आर्यश्यामा स्तत स्तथानिर्देशाभावा दवसीयते न तत स्तद्राशिप्रमाणानि, ननु तर्हि तेषां प्रतिपतितसम्यग्दृष्टीनामध स्ताद्भवेयु रुपरि वा उच्यते-कदाचिदधस्तात् कदाचिदुपरि कदाचित् तुल्यान्यपि अनियतप्रमाणत्वात् ननु सर्वकालं तत्प्रमाणानि आह च चूर्णि कृत्-तो किं परिवडियसम्मद्दिट्ठिरासिप्पमाणाइं होज्जा ते तेसिं दोण्हवि रासीणं मज्झे पाढज्जतिसि कालतो जइ जइ तप्पमाणाइं होंताइं तो तेसिंचेव निद्देसो होंतो तम्हा न तप्पमाणाइं तो किं तेसिं हिट्ठा होज्जा उवरि होज्जा जत्तइं कयाइं हेट्ठा कयाई उवरि होंति कयाइं तुल्लाइं न निच्चकालं तप्पमाणाइं इति, अपरः प्राह-कथं मुक्तानि यथोक्तानन्तसंख्यापरिमाणा न्युपपद्यन्ते ततो यदि तावदौदारिकादिशरीराणि यावद विकलानि तावद् गृह्यन्ते, तत स्तेषा मनन्तं कालमवस्थानाभावादनन्तत्वं न घटते यद्य प्यनन्तमपि कालमवस्थानं भवत् ततो नन्तेन कालेन त

---

त्तच्छरीरगणनादनन्तानि भवेयुः यावता नंतं कालमवस्थानं नास्ति पुद्गलानामुत्कर्षतोप्यसंख्येयकालावस्थानाभिधानात्, अथवा ये पुद्गला जीवैरौ दारिकत्वेन गृहीत्वा मुक्ता अतीताद्धायां तेषां ग्रहणं तर्हि सर्वेपि पुद्गलाः सर्वैरपि जीवैः प्रत्येकमौदारिकत्वेन गृहीत्वा मुक्ता इति सर्वपुद्गलग्र हणमापन्नं तथाच सति यदुक्तं भगवद्भिर्दिकेभ्योऽनन्तगुणानि सिद्धानामनन्तभागमात्राणीति तद्विरुध्यते सर्वजीवेभ्यो ह्यनेनानन्तगुणाकारेणानन्तगु णत्वस्य प्रसक्तत्वा दिति ? उच्यते-इह मुक्तानामौदारिकशरीराणां नाविकलानामेव केवलानां ग्रहणं नाप्यौदारिकत्वेन ये गृहीत्वा मुक्ताः पुद्गला स्तेषामुक्तदोषप्रसंगात्, किंतु यत् शरीरमौदारिकं जीवेन गृहीत्वा मुक्तं तद्विशरारुत्वाद विध्वंसमनन्तभेदभिन्नं भवति ते चानन्ता भेदा भवतो यावत्ते पुद्गला औदारिकपरिणामं न जहति तावत्प्रत्येकमौदारिकशरीरव्यपदेशं लभंते ये पुनरौदारिकपरिणाम त्यक्तवंत स्ते न गण्यन्ते ततएव मेकस्यापि शरीरस्यानन्तानि शरीराणि जातानि एवं सर्वशरीरेष्वपि भावनीयं, तथाच सत्येकैकस्य शरीरस्यानन्तभेदाभिन्नत्वा देकस्मिन्नपि समये

प्रभूतान्यनन्तानि शरीराण्यवाप्यन्ते तेषां चासंख्येयकालमवस्थानं तेनचासंख्येयेन कालेनान्यानि जीवैर्विप्रमुक्तान्यसंख्येयाण्यवाप्यन्ते तान्यपि च प्रत्येकमनन्तभेदभिन्नानि तेषुच मध्ये तावता कालेन यान्यौदारिकशरीरपरिणामं विजहति तानि परित्यज्यंते शेषाणि गण्यंते ततश्च मुक्तानि य थोक्तप्रमाणानन्तसङ्ख्याका यौदारिकशरीरा उपपद्यन्ते इति नचैतत् स्वमनीषिकाविजृंभितं यत आह चूर्णिकृत्-नत्थि अविगलाणमेव केवलाणं ग हणं एयं नय उरालियगहणमुक्काणं सव्वपुग्गलाणं किंतु जंसरीरमोरालिकं जीवेण मुक्कं तंचेव अणतभेयभिन्नं च होइ जाव ते पुग्गला तं जीवनिव

॥ टीका ॥

अणंता लोगा अभवसिद्धिएहिंतो अणंतगुणा सिद्धाणं अणंतभागो । केवतियाणं भंते ! वेउव्वियसरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा–बद्धेल्लयाय मुक्केल्लयाय । तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइभागो । तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेणं अणंता अणंताहिं ओसप्पिणीउस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो

॥ मूल ॥

लतः ' क्षेत्रतो भक्ता लोका अभवसिद्धिकेभ्यो ऽनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तो भागः । कति भदन्त ! वैक्रियशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्वि विधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानि मुक्तानि च । तत्र यानि बद्धानि तान्यसङ्ख्येयानि, असङ्ख्याभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरपह्रियन्ते कालतः, क्षेत्रतो ऽसङ्ख्येयाः श्रेणयः ( तेषां परिमाणं ) प्रतरस्याऽसङ्ख्येयो भागः । तत्र यानि मुक्तानि तान्यनन्तानि अनन्ताभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिर

॥ प० ॥

नन्तोत्सर्पणीकाले समये २ एकैकशरीर अपहरामे एतला कालथीपण औदारिकशरीरकरीमूक्या क्षेत्रथी अनन्तालोकाकाशप्रदेशे एकैकोथापना ए लाके द्रव्यथी प्रमाण अभवसिद्धी अनन्तभागमात्रायेछे हे भगवन् केतला वैक्रियशरीरकह्या हे गौतम । दुविहा पं० तं० बद्धेलगाय तत्थणं जेते बद्धेलगा तेणं असंखिज्जाहिं उसप्पिणिसप्पिहिं अवहीरंति कालतो खेत्तओ । दोयप्रारे बांध्याछे मूक्याछे पूर्वकरीने तिहां जेबांध्याछे ते असंख्याताशरीरछे संख्या तो उत्सर्पणि अवसर्पणी नोसमय एकैकशरीर अपहरिये कालथी क्षेत्रथी । जहा उरालियस्स मुक्केल्लया जहा उरालियस्सवि भा० केवतियाणं भंते आ

॥ भाषा ॥

स्त्रियं उरालियसरीरकायप्पयोगं न मुंचंति न ताव अन्नपरिणामेणं परिणमन्ति ताइं पत्तेयसरीराइं भवंति एवमेक्किक्कस्स उरालियसरीरस्स अणंतजीवनिव्वत्तियाइं अणंताइं चेव उरालियसरीराइं भवन्ति इत्यादि „ आह-कथमेकैकशरीरद्रव्यदेशं शरीरत्वेन व्यपदिश्यते ? उच्यते-लवणदृष्टान्तेन तथाहि-खार्यपि लवणमुच्यते द्रोणोपि लवणमाढकोपि लवणं यावदेकापि शकरा लवणमेव मिलापि सकलमप्यौदारिकशरीरं शरीरमुच्यते तद्द्रव्यमपि तदेकदेशोपि यावदनन्तभागोपि शरीरमिति कोत्राभिप्राय इति चेदुच्यते-इह यथा लवणपरिणामपरिणतः स्तोको बहुर्वा पुद्गलसङ्घातो लवणमुच्यते तथौदारिकशरीरयोग्यपुद्गलसङ्घातोपि औदारिकत्वेन परिणतः स्तोको बहुर्वा औदारिकशरीरव्यपदेशं लभते, अथवा भवति समुदायैकदेशेपि समुदायशब्दोपचारो यथा अङ्गुल्यग्रे स्पृष्टे स्पृष्टो मया देवदत्त इत्यादौ तत उपचारान्न कश्चिद्दोषः, ननु यद्येवं कथं तान्यनन्तलोका



जहा उरालियस्स मुक्केल्लया तहेव वेउव्वियस्सवि भाणियव्वा । केवतियाणं भंते ! आहारसरीरया पन्नत्ता ? गोयमा दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—बद्धेल्लगा मुक्केल्लयाय । तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं सिय अत्थि सिय नत्थि । जइ अत्थि जहन्नेणं एक्को वा दोवा तिन्नि वा उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं । तत्थणं जेते मुक्केल्लया तेणं



पद्यन्ते कालतो यथौदारिकस्य मुक्तानि तथैव वैक्रियस्यापि भणितव्यानि । कियन्ति भदन्त ! आहारक शरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानि च मुक्तानि च । तत्र यानि बद्धानि तानि स्यादस्ति स्यान्नास्ति' यद्यस्ति एकं वा द्वौवा त्रीणि वोत्कृ



हारगसरीरा पं० गोयमा ! जिम औदारिकनाम कह्या जिम औदारिक तिमहीज वैक्रिय भगवन् केतला आहारककह्या हे गौतम ! दुविहा पं० तं० बद्धेलगाय मुक्केलगाय तत्थणं जेते बद्धेलगा तेणं सिय अत्थिसिय नत्थि । दोयभेदकह्या बांध्याछै १ मूंक्याकरीने २ तिहां जे बद्धेलगाछै ते कदाचिदछै कदाचिदनथी जे माटै आंतरो । जइ अत्थि जहन्नेणं एक्कोवा दोवा तिन्निवा उ० सहस्सपुहत्तं । जे जघन्य १ समय दोय समय तीनहुवे उत्कृष्टो तो सहस्र पृथक्त्व जघन्य १ समय उत्कृष्टो ६ मास आंतरो उक्तंच आहाराइक्खए कम्मसे जाव होतिदिविकयाइं उक्कोसेणंविरहो एक्कोसमयं जहन्नेणं १ । तत्थणं

काशप्रदेशप्रमाणान्यौदारिकशरीराण्येकैकस्मिन् लोके कियन्ति ? उच्यते-प्रदीपप्रकाशवत्' तथाहि-यथैकस्यापि प्रदीपस्यार्चींषि सकलजगद्भावना वकाशीनि भवन्ति अन्येषामनेकेषां प्रदीपानामर्चींषि तत्रैवानुविशन्ति परस्परमपि विरोधा तथौदारिकाण्यपि एवं शेषशरीरेष्वपि भावनीयं,



अणंता जहा उरालियस्स मुक्केल्लयाय तहेव भाणियव्वा । केवतियाणं भंते ! तेयगसरीरया पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय । तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं अणंता अणंताहिं उसप्पिणीउस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो अणंता लोगा, दव्वतो सिद्धेहिंतो अणंतगुणा सव्वजीवाणं अणंतभागूणा । तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेणं अणंता अणंताहिं उसप्पिणीउस्सप्पिणीहिं अवहीरंति



र्षतः सङ्ख्येयचक्रम् । तत्र यानि मुक्तानि तान्यनन्तानि यथौदारिकस्य मुक्तानि तथैव भणितव्यानि । कति भदन्त ! तैजसशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानि च मुक्तानि च । तत्र यानि बद्धानि तान्यनन्तान्यनन्ताभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरपह्रियन्ते कालतः, क्षेत्रतोऽनन्ता लोकाः, द्रव्यतः सिद्धेभ्योनन्ताः सर्वजीवानामनन्तभागोनाः । तत्र यानि मुक्तानि तानि अनन्तानि अनन्ताभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरपह्रियन्ते कालतः, क्षेत्रतोऽनन्ता लोकाः, द्रव्यतः सर्वजीवेभ्यो ऽनन्तगुणा जीववर्गस्यानन्तो भागः । एवं कार्मणशरीर



जेते मुक्केल्लगा तेणं अणंता जहा उरालियस्स मुक्केल्लया तहेव भा० केवतियाणं भंते तेयगसरीरा प० गोयमा । तिहां जेते करीमूक्या ते अनन्ता छै किम औदारिकने कह्या तिम मुक्केल्लगा कहिवो केतलै भगवन् तैजस शरीरकह्या हे गौतम । दुविहा प० तं० बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं अणंताहिं उसप्पिणी उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो खेत्ततो । दोय भेदकह्या बद्ध १ अनेमुक्त २ तिहां जे बद्धेलग ते अनन्ती उत्सर्पणीकाल प्रतिभे अपहरे सर्वजीवने तैजस शरीरछै तेमाटै कालथी चेत्रथी । अणतालोगा द्रव्यथी सिद्ध थिंतो अणंतगुणा सव्वजीवाणं अणंतभागं । अनन्तालोकाका शे एकैकेआयके द्रव्यथकीसिद्ध अनन्तगुणा सर्वजीवने तैजस शरीरछवै तेमाटै सर्वजीवथी अनन्तभाग ऊणाछै । तत्थणं जेते मुक्केल्लगातेणं अणंता

ननु द्रव्यक्षेत्रे विहाय किमिति प्रथमतः कालेन प्ररूपणा कृता उच्यते कालान्तरावस्थायितया पुद्गलेषु शरीरोपचारो नान्यथा ततः कालो गरीयानिति प्रथमत स्तेन प्ररूपणा, उक्तान्यौदारिकाणि । सम्प्रति वैक्रियसूत्रमाह-केवइयाणं भंते ! इत्यादि ॥ बद्धान्यसङ्ख्येयानि, तत्र कालतः परिमाणं प्रतिसमयमेकैकशरीरापहारे सामस्त्येनासङ्ख्येयानि उत्सर्पिण्यवसर्पिणीभि रपहृयते, किमुक्तं भवति ऽसङ्ख्ययासु उत्सर्पिण्यवसर्पिणीषु यावन्तः समया स्तावत्प्रमाणानीति, क्षेत्रतो सङ्ख्येयाः श्रेणयः तासांच श्रेणीनां परिमाणं प्रतरस्यासङ्ख्येयो भागः' किमुक्तं भवति प्रतरस्यासंख्येय तमे भागे यावन्त्यः श्रेणयस्तासु च श्रेणिषु यावन्तः आकाशप्रदेशास्तावत्प्रमाणानि बद्धानि वैक्रियशरीराणीति, अथ श्रेणिरिति किमभिधीयते-उच्यते घनीकृतस्य लोकस्य सर्वतः सप्तरज्जुप्रमाणस्या यामतः सप्तरज्जुप्रमाणमुक्तावलिरिवैकैकाकाशप्रदेशपङ्क्तिः कथं पुनर्लोको घनीक्रियते कथं वा सप्तरज्जुप्रमाणो भवति इतिचेदुच्यते-इह लोक ऊर्द्धाध श्चतुर्दशरज्जुप्रमाणो धस्तात् विस्तरतो देशोनसप्तरज्जुप्रमाण एकरज्जुमध्यभागे ब्रह्मलो

---

कप्रदेशे बहुमध्यदेशभागे पञ्चरज्जुरुपर्येका रज्जु र्लोकांते रज्वोश्च परिमाणं स्वयम्भूरमणसमुद्रस्य पूर्ववेदिकान्ता दारभ्या परवेदिकांतं यावत् यवंप्रमाणस्य लोकस्य वैशाखस्थानस्थकटिस्थकरयुग्मपुरुषाकारस्य बुद्ध्या त्रसनाड्या दक्षिणभागवर्त्यधोलोकखण्डमध्ये देशोनत्रिरज्जुविस्तारमतिरिक्तसप्तरज्वुच्छ्रयः परिगृह्य त्रसनाड्या उत्तरपार्श्वऊर्द्धाधोभागविपर्यासेन सङ्घात्यते ऊर्द्धभागो धःक्रियते अधोभागस्तूर्द्धमिति सङ्घात्यते इति, तत ऊर्द्धलोके त्रसनाड्या दक्षिणभागवर्त्तिनौ ये द्वे खंडे कूर्पराकारसंस्थिते प्रत्येकं देशोनार्द्धचतुष्टयरज्वुच्छ्राये ते बुद्ध्या समादाय वैपरीत्येनोत्तरपार्श्वे सङ्घात्य ते एवंच किं जातमधस्तनं लोकार्द्धं देशोनचतूरज्जुविस्तारं सातिरेकं सप्तरज्वुच्छ्रयं उपरितनमर्द्धं त्रिरज्जुविस्तारं देशोनसप्तरज्जूच्छ्रयं तेन उपरितनमर्द्धं बुद्ध्या गृहीत्वाधस्तनस्यार्द्धस्योत्तरपार्श्वे सङ्घात्यते तथाचसति सातिरेकसप्तरज्जूच्छ्रयो देशोनसप्तरज्जुविस्तारो घनो जातः अतः सप्तरज्जूनामुपरि यदधिकं तत्परिगृह्य ऊर्द्धाध आयतमुत्तरपार्श्वे सङ्घात्यते ततो विस्तरतोपि परिपूर्णाः सप्तरज्वो भवन्ति, एवमेष लोको घनीक्रियते घनीकृ

तश्च सप्तरज्जुप्रमाणो भवति यत्र च क्वचन घनत्वेन सप्तरज्जुप्रमाणता न पूर्यते तत्र बुद्ध्या परिपूरणीयमेतच्च पट्टिकादौ लिखित्वा दर्शयितव्यं सिद्धान्ते च यत्र क्वचनापि श्रेणिप्रतरस्य वा ग्रहणं तत्र सर्वत्राप्येवंघनीकृतस्य लोकस्य सप्तरज्जूप्रमाणस्यावसातव्यं, मुक्तान्यौदारिकवद्भावनीयानि ॥ आहारकविषयं सूत्रं-केवइयाणं भंते ! आहारगसरीरगा इत्यादि ॥ बहूनि ॥ सिय अत्थि सिय नत्थि इति ॥ अस्तीतिनिपातो बहुवचनगर्भः कदाचित्सन्ति कदाचिन्न सन्तीत्यर्थः, यस्मादन्तरमाहारकशरीरस्य जघन्यत एकसमयः उत्कर्षतः षण्मासा उक्तंच-आहाराइलोए छम्मासंजाव होंतिविकथाइं । उक्कोसेणंनियमा एक्कसमयंजहन्नेणं ॥ १ ॥ इति यदापि भवन्ति तदापि जघन्यत एकं द्वौवा उत्कर्षतः सहस्रपृथक्त्वं मुक्तान्यौदारिकवत्, तैजसविषयसूत्रमाह-केवइयाणं भंते ! तेयगसरीरा इत्यादि ॥ तत्र बद्धान्यनन्तानि अनन्तत्वं कालक्षेत्रद्रव्यैर्निरूपयति-अणंताहिं इत्यादि ॥ कालतः परिमाणमनंतोत्सर्पिण्यवसर्पिणीसमयप्रमाणानि क्षेत्रतोऽनन्तलोकप्रमाणाकाशखण्डप्रदेशपरिमाणानि द्रव्यतः परिमाणं सिद्धेभ्योऽन

---

न्तगुणानि तैजसंहि शरीरं सर्वसंसारिजीवानां प्रत्येकं संसारिणश्च जीवाः सिद्धेभ्योऽनंतगुणाः ततस्तैजसशरीराण्यपि सिद्धेभ्योनन्तगुणानि भवंति ॥ सर्वजीवाणं अणंतभागूणा इति ॥ सर्वजीवानां योऽनंतमो भाग स्तेनोनानि, इयमत्र भावना-सिद्धानां तैजसशरीरं न विद्यते सर्वशरीरातीतत्वा त्तषां सिद्धाश्च सर्वजीवानामनन्तभाग ततस्तेनोनानि सर्वजीवानामनन्तभागोनानि भवंति मुक्तानि अनन्तानि तदवानन्तत्वं कालक्षेत्रद्रव्यैः प्ररूपयति-अणंताहिं इत्यादि॥ कालक्षेत्रसूत्रे प्राग्वत्, द्रव्यतः परिमाणं सर्वजीवेभ्योनन्तगुणानि कथमितिचदुच्यते-इहैकैकस्य संसारिजीवस्य एकं तैजसशरीरं तानिच जीवैर्विप्रमुक्तानि संति प्रागुक्तयुक्तेरनन्तप्रदेशिनानि भवंति तषांचासंख्येय कालं यावदवस्थानं तावताच कालेन जीवैर्विप्रमुक्तान्यन्यानि तैजसशरीराणि प्रतिजीवमसंख्ययानि वाप्यंते तषामपि प्रत्येक प्रागुक्तयुक्त्या अनन्तप्रदेशिनतेति भवंति सर्वजीवेभ्यो नन्तगुणानि तत्किं जीववर्गप्रमाणानि भवेयुं रतआह-जीववग्गस्स अणंतभागं इति ॥ जीववर्गस्यानन्तभागप्रमाणानि जीववर्गप्रमाणानि कस्मा न्न भव

तीति चेदुच्यते-यदि एकैकस्य जीवस्य सर्वजीवराशिप्रमाणानि किंचित्समधिकानि वा भवेयुः यैर्न सिद्धानन्तभागपूरणं भवति ततो जीववर्गप्रमाणानि भवंति वर्गोहि तेनैव राशिना तस्यराशेर्गुणने भवति यथा चतुष्कश्चतुष्केन गुणने षोडशात्मको वर्गः इति, नचैकैकस्य जीवस्य सर्वजीवप्रमाणानि किंचित्समधिकानि वा तैजसशरीराणि किंत्वतिस्तोकानि तान्यपि असंख्येयकालावस्थायीनि तावता कालेन यान्यप्यन्यानि भवन्ति तान्यपि स्तोकानि कालस्य स्तोकत्वात्, ततोजीववर्गप्रमाणानि न भवंति किंतु जीववर्गस्यानन्तभागमात्राणि अनन्तभागप्रमाणतायां च पूर्वाचार्यप्रदर्शितमिदं निदर्शनम् सर्वजीवा स्तत्ववृत्त्या अनन्ता अपि असत्कल्पनया दशसहस्राणि तेषांच दशसहस्राणां वर्गो दशकोटय स्तैजसशरीराणि च मुक्तान्यसत्कल्पनया दशलक्षाणि ततः सर्वजीवेभ्यः किल शतगुणानीति सर्वजीवेभ्यो ऽनन्तगुणानि मुक्तानि जीववर्गस्य च शततमेऽव भागे वर्त्तते



कालेणं, खेत्तेणं अणंता लोगा, दव्वेणं सव्वजीवेहिंतो अणंतगुणा जीववग्गस्स अणंतभागो । एवं कम्मगसरीराणि भाणियव्वा । नेरइयाणं भंते ! केवइया उरालियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय । तत्थणं जे ते बद्धेल्लया तेणं उरालिया णत्थि, तत्थणं जे ते मुक्केल्लगा तेणं अणंता ज



मपि भणितव्यम् । नैरयिकाणां भदन्त ! कति औदारिकशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानि मुक्तानि च । तत्र यानि बद्धानि तान्यौदारिकाणि नसन्ति' तत्र तानि मुक्तानि तान्यनन्तानि यथौदारिकमुक्तानि तथा भणितव्यानि । नैरयिका



अणंताहि उसप्पिणीओ अवहीरंति कालतो खेत्ततो । किमसंखेणं तेजसशरीरइवेनहो सर्वशरीरमूकि तिवार तिहां जेमकेलगतेपिण अनन्ता अनन्ती उत्सर्पणी प्रतिसमें २ उत्सर्पणी २ छे अपहारिये कालथी छिवे चेत्रथी । अणंतालोगासंखजोवेहिंतो अणंतगुणा जीव वग्गासाणंतभागे एवं कम्मगसरीराणि भा० नेरइयाणं भंते केवतिया उरालियसरीरा प० गोयमा । अनन्तालोकाकाशप्रदेश प्रमाणेछे सिद्धथकी अनन्तगुणा पूर्वकीधा सर्वजीव ने अनन्ते भागें न्यूनकरी मूक्या आसकल्प नारकीनें गिणीयें इम तेजस शरीरनी परें कार्मणशरीर कहिवा नारकीने भगवन् केतला औदारिकशरीर

हा उरालियमुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा। नेरइयाणं भंते ! केवतिया वेउव्वियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता तंजहा—बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय। तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीहिं उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तत असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जभागो, सेणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलं बितियवग्गमूलपडुप्पन्नं अहवणं अंगुलबितियवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीओ

॥ मूल ॥

णां भदन्त ! कति वैक्रियशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानि मुक्तानि च। तत्र यानि बद्धानि तान्यसंख्येयानि, असंख्येयाभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरपह्रियन्ते कालतः, क्षेत्रतोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरस्यासंख्येयो भाग स्तासां श्रेणीनां विष्कम्भसूचिरङ्गुलप्रथमवर्गमूलं द्वितीयवर्गमूलप्रत्युत्पन्नमथवाङ्गुलद्वितीयवर्गमूलघनप्रमाणमात्राः श्रेणयः, तत्र यानि मुक्तानि तानि यथौदारिकस्य

॥ भ० ॥

कह्या हे गौतम। दुविहा प० तं० बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं उरालिया। दोय भेद बद्धेलग १ मुक्केलग २ तिहां ज बद्ध तिहां औदारिक। णत्थि तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेणं अणंता जहा उरालिय मुक्केल्लगा तहा भा० नेरइयाणं भंते केवतिया वेउव्वियसरीरा पं० गोयमा। नथी तिहां जेते मूंक्याछे तेओघनो सूत्रनोपरे जिम औदारिकनें मुक्तकह्या तिम नारकोने कहिवा नारकोने केतलाशरीरकह्या वैक्रिय भगवन् हे गौतम। दुविहा पं० तं० बद्धेल्लगाय मुक्केलगाय तत्थणं जेते बद्धेलगा। दोय भेदकह्या ते कहे बांध्या मूंक्या तिहां ज बद्धेलगछे। तेणं असंखिज्जाहिं उसप्पिणी उस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो खेत्ततो। ते असंख्याताने अपेक्षाये कालथकी असंख्याती उत्सर्पणीअवसर्पणी कालनाप्रतिसमये अपहरिये पतले खोपाय असंख्याती उत्सर्पिणी २ नो जेतला समयने प्रमाण एकालथी कह्यो क्षेत्रथी। असंखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागे तोसेयं सेढीयं विक्खंभसूई अंगुलपढमं वग्गमूलं बितीयमूलपडुप्पन्नं अहवणं अंगुलबितीयवग्गमूलघणप्पमाणमेत्ताओ सेढीओ। असंख्यातीश्रेणि जेतला आकाश प्रदेश तेतला प्रमाणे अथ प्रतरमांहेलो असंख्यातीश्रेणि हुवे प्रतरनो असंख्यातमे भाग विभागे आदि हिवे विशेष निर्धार कहेछे प्रतरनें असंख्यातमे भागजेतली श्रेणि

॥ भाषा ॥

ततो जीववर्गस्यानन्तभागमात्राणि, एवं कार्मणशरीराण्यपि बद्धानि मुक्तानि च भावनीयानि तैजसैःसह समानसंख्येयत्वात्, उक्तान्यौधिकानि पंचापि शरीराणि सम्प्रति नैरयिकादिविशेषणविशेषितानि चिन्त्यन्ते-नेरइयाणंभंते इत्यादि ॥ नैरयिकाणां बद्धान्यौदारिकशरीराणि न सन्ति भवप्रत्ययतः तेषामौदारिकशरीरासम्भवात्, मुक्तान्यौधिकमुक्तौदारिकशरीरवत्, वैक्रियाणि बद्धानि यावन्तो नैरयिका स्तावत्प्रमाणानि तानि च असंख्येयत्वं कालक्षेत्राभ्यां प्ररूपयति-असंखज्जाहिं इत्यादि ॥ कालतः परिमाणं प्रतिसमयमेकैकशरीरापहारे सामस्त्येनासंख्ययाभिरुत्सर्पिण्य वसर्पिणीभि रपहियन्ते, किमुक्तं भवति असंख्ययासूत्सर्पिण्यवसर्पिणीषु यावंतः समया स्तावत्प्रमाणानीति, क्षेत्रतोऽसंख्येयाः श्रेणय असंख्येया सु श्रेणिषु यावंत आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणानीतिभावः, अथ प्रतरेऽपि सकलेऽसंख्ययाः श्रेणयो भवंति प्रतरस्यार्द्धभाग त्रिभागादौ च ततः कियत्संख्याका स्ताः श्रेणय इत्याशङ्कायां विशेषनिर्द्धारणार्थमाह-प्रतरस्याऽसङ्खेयभागः किमुक्तं भवति प्रतस्यासङ्खेयतमे भागे यावत्यः श्रेणय स्ता

---

वत्यः परिगृह्यन्ते इदमन्यद्विशेषतरपरिमाणं-आसेणं सेढीणं विक्खंभसूई इत्यादि ॥ तासां श्रेणीनां विष्कम्भतो विस्तारमधिकृत्य सूचिरेकप्रदेश कीश्रेणि रङ्गुलप्रथमवर्गमूलं द्वितीयवर्गमूलगुणितं-इयमत्र भावना-इह प्रज्ञापनेन घनीकृतः सप्तरज्जूप्रमाणो लोकः पट्टिकादौ स्थापनीयः श्रेणिश्च रेखाकारेण दर्शनीयाः दर्शयित्वा चैकप्रमाणं वक्तव्यं अंगुलप्रमाणमात्रस्य यावान् प्रदेशराशि स्तस्यासङ्खेयानि वर्गमूलानि भवन्ति तद्यथा-प्रथम वर्गमूल तस्यापि यद्वर्गमूलं तद्द्वितीयवर्गमूल तस्यापि यद्वर्गमूलं तत्तृतीयवर्गमूलमेव मसंङ्खेयानि वर्गमूलानि भवन्ति, तत्र प्रथमं यद्वर्गमूलं तद्द्वि तीयेन वर्गमूलेन गुण्यते गुणितंच सति यावन्तः प्रदेशा भवन्ति तावत्प्रदेशात्मिकाः श्रेणिर्बुद्ध्या क्रियते कृत्वा च विष्कम्भतो दक्षिणोत्तरायतत या स्थापनीया तयाच स्थाप्यमानया यावत्यः श्रेणयः स्पृशंते तावत्यः परिगृह्यन्ते तत्रेदं निदर्शनमङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशि स्तत्वतो सद्भातोप्यसत्क ल्पनया षट्पञ्चाशदधिके द्वेशते कल्प्येते ततः प्रथमवर्गमूलं षोडश द्वितीयं चत्वार स्तृतीय द्वौ, तत्र द्वितीयेन वर्गमूलेन चतुष्कलक्षणेन प्रथमं वर्ग

मूलं षोऽशलक्षणं गुण्यते जाता चतुःषष्टिरेतावत्यः श्रेणयः परिगृह्यन्ते, अमुमेवार्थं प्रकारांतरेण कथयति-अहवणमित्यादि ॥ अथवेति प्रकारान्तरेण मितिवाक्यालङ्कारे अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेर्द्वितीयस्य वर्गमूलस्याऽसत्कल्पनया चतुष्फलक्षणस्य यो घन स्तावत्प्रमाणा इह यस्य राशेर्यो वर्गः स तेन राशिना गुण्यते ततो घनो भवति यथा द्विकस्याष्टौ तथाहि-द्विकस्य वर्गश्चत्वार स्ते द्विकेन गुण्यंते जाता अष्टाविति एवमिहापि चतुष्कस्यवर्गः षोऽश ते चतुष्केन गुण्यंते तत श्चतुष्कस्य घनो भवति तत्रापि सैव चतुःषष्टिरिति प्रकारद्वयस्याप्यर्थाज्ञाद ढ्राय गणितधर्मो यद्वद्वु स्तो केन गुण्यते ततः सूत्रकृता प्रकारद्वयमेवोपदर्शित मन्यथा तृतीयोऽपि प्रकारोस्ति ॥ अङ्गुलबिइयवग्गमूलपढमवग्गमूलपडुप्पन्नमिति ॥ अन्यत्वजिद धति अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः स्वप्रथमवर्गमूलेन गुणने यावान् प्रदेशराशि र्भवति तावत्प्रमाणा या श्रूच्या यावत्य स्पृष्टाः श्रेणय स्तावतीषु श्रेणिषु यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणानि नैरयिकाणां बद्धानि वैक्रियशरीराणीति, मुक्तान्यौदारिकवत्' आहारकाणि बद्धानि न संति तेषां तल्लब्धसम्भवात्, मुक्तानि पूर्ववत् तैजसकार्मणानि बद्धानि वैक्रियवत्, असुरकुमाराणामौदारिकशरीराणि नैरयिकवत्, वैक्रियाणि बद्धान्यसङ्ख्येया

---

नि तदेवासंख्येयत्वं कालक्षेत्राभ्यां प्ररूपयति-तत्र कालसूत्रं प्राग्वत्' क्षेत्रतोऽसंख्येयाः श्रेणयः असंख्येयासु श्रेणिषु यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणानीत्यर्थः, ताश्च श्रेणयः प्रतरस्यासंख्येयो भागः प्रतरासङ्ख्येयभागप्रमिता इत्यर्थः, तत्र नारकचिन्तायामपि प्रतरासङ्ख्येयभागप्रमिता उक्ता स्ततो विशेषतर परिमाणमाह-तासिणमित्यादि ॥ तासां श्रेणीनां परिमाणा या विष्कम्भसूचिः सा अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः सम्बन्धिनः प्रथमवर्ग मूलस्यासंख्ययोभागः किमुक्तं भवति अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदशराशेरसत्कल्पनया षट्पञ्चाशदधिकशतद्वयप्रमाणस्य यत्प्रथमवर्गमूलं षोऽशलक्षणं तस्य सङ्ख्येयतमे भागे यावन्त आकाशप्रदेशा असत्कल्पनया पञ्च षट् वा तावत्प्रदेशात्मिका श्रेणिपरिमाणाय विष्कम्भसूचि रवसातव्या एव च नैरयिका यत्तया ऽमीषां विष्कम्भसूचि रसंख्येयगुणहीना स्तथाहि-नैरयिकाणां श्रेणिपरिमाणाय विष्कम्भसूचिरङ्गुलप्रथमवर्गमूलं द्वितीयवर्गमूलप्रत्युत्पन्नं या वद्भवति तावत्प्रदेशात्मिका द्वितीयं च वर्गमूलं तत्वतोऽसङ्घातप्रदेशात्मक ततोऽसंख्ययगुणप्रथमवर्गमूलप्रदेशात्मिका नैरयिकाणां च सूचि रमी

यां स्वङ्गुलप्रथमवर्गमूलसंख्येयप्रदेशात्मिकेति युक्तञ्चैतत् यस्मा न्महादण्डके सर्वेपि भवनपतयो रत्नप्रभानैरयिकेभ्यो ऽसंख्येयगुणहीना उक्तास्ततः सर्वनैरयिकापत्तया ते ऽसुरकुमारास्ततोपि संख्येयगुणहीना भवन्ति' मुक्तान्यौधिकमुक्तवत्, आहारकाणि नैरयिकवत्, तैजसकार्मणानि व



तत्थणं जेते मुक्केल्लगा तेणं जहा उरालियस्स मुक्केल्लगा तहा भाणियव्वा । नेरइयाणं भंते ! केवतिया आहारगसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय । एवं जहा उरालिया बद्धेल्लगा मुक्केल्लगाय एवं जहा भणिया तहेव आहारगावि भाणियव्वा । तेयाकम्मगाइं जहा एतेसिंचेव वेउव्वियाइं दाविताइं । असुरकुमाराणं भंते ! केवतिया उरालियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! जहा नेरइ



मुक्तानि तथा भणितव्यानि । नैरयिकाणा भदन्त ! कियन्ति आहारकशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानि च मुक्तानि चैवं यथौदारिकाणि बद्धानि मुक्तानि च भणितानि तथैवा हारकाण्यपि भणितव्यानि । तैजसकार्मणानि यथैतेषां चैव वैक्रियाणि । असुरकुमाराणां भदन्त ! कति औदारिकशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! यथा नैरयिकाणा मौदारिकाणि भणितानि तथैवै तेषामपि



तेतला बाहिरे तासणं सेढीणं विक्खंभसूई इत्यादि ते अपि ते विष्कंभने विस्तारे आत्मा मूलनो एकप्रदेशनो अपि अंगुलप्रथम वर्गमूले बीजा वर्गमूल बीजा वर्गमूले असंख्यातवर्गमूले हवे ते गुणैश्चैकं जेतले प्रदेशहवे तेतले प्रमाणहवे । तत्थण जेते मक्केलगा तेणं जहा उरालियस्स मुक्केलगा तहा भा० नेरइयाणं भंते केवतिया आहारगसरीरा पं० गोयमा । तिहां जेते मक्केलग ते जिम औदारिकने कह्यो तिम इहां वैक्रियने मुक्तशरीर कहिवो नारकोने हे भगवन् केतला आहारकशरीरकह्या गौतम । दुविहा पं० त० बद्धेलगाय मुक्केलगाय एवं जहा उरालिए बद्धेलगा मुक्केलगा भणिया तहेव आहारगसरीरा भा० । बेय प्रकारे बद्धेलग १ मुक्केलग २ इम जिम औदारिकबंध्या मूक्या कह्या तिमहीज आहारकशरीर पिण कहिवा । तेयाकम्माइं जहा एतेसिंचेव वेउव्वियाइं असुरकुमाराणं भंते केवतिया उरालियसरीरा पं० गोयमा । तैजस कार्मण जिम एहने वैक्रियने पिण जाणिवो असुरकुमार

द्वानि बद्धवैक्रियवत्, मुक्तान्यौधिकमुक्तवत्, यथाचासुरकुमाराणामुक्तं तथा शेषाणामपि भवनपतीनां वाच्यं, यावत्स्तनितकुमाराणां पृथिव्यप् तेजःसूत्रेषु बद्धान्यौदारिकशरीराणि असंख्ययानि, तत्रापि कालतः परिमाणचिन्तायां प्रतिसमयमेकैकशरीरापहारे सामस्त्येनासंख्येयानि उत्स

याणं उरालिया भणिया तहेव एतेसिंपि भाणियव्वा। असुरकुमाराणं भंते! केवतिया वेउव्वियसरीरा पन्नत्ता? गोयमा! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थणं जे ते बद्धेल्लगा तेणं असंखिज्जा असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्तओ असंखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइभागो, तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स संखेज्जइभागो, तत्थणं जे ते मुक्केल्लगा तेणं

भणितव्यानि। असुरकुमाराणां भदन्त! कति वैक्रियशरीराणि प्रज्ञप्तानि? गौतम! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा—बद्धानि च मुक्तानि च। तत्र यानि बद्धानि तानि असंख्येयानि असंख्ययाभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरपह्रियन्ते कालतः, क्षेत्रतोऽसंख्येयाः श्रेणयः प्रतरस्यासंख्येयो भाग स्तासां श्रेणीनां विष्कम्भसूचिरङ्गुलप्रथमवर्गमूलस्य संख्येयो भागः। तत्र यानि मुक्तानि तानि यथौदारिकस्य मुक्तानि तथा भणितव्यानि।

न हे भगवन् केतला औदारिकशरीरकह्या छे गौतम। जेहा नैरइयाणं उरालिया भणिया तहा एतेसिंपि भा० असुरकुमाराणं भंते केवतिया वेउव्विय सरीरा प० गोयमा। जिम नारकोने औदारिकशरीर कह्या तिम एहने पिण कहिवा असुरकुमारने केतला औदारिकशरीर कह्या गौतम। दुविहा पं०तं० बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय तत्थणं जत बद्धेल्लगा तेणं असंखिज्जा असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं। दोयभेद बद्धेलग १ मुक्केलग २ तिहां जे बद्ध लग ते असंख्यात असंख्याता उत्सर्पिणीने समयप्रमाण छे। अवहीरंति कालतो खेत्तओ असंखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागे। कालथी क ह्यो छिवे क्षेत्रथी असंख्याती श्रेणि प्रतर ते असंख्यातमे भागे ते श्रेणिनी। तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखिज्जइभागे। विष्कंभ सूची अंगुलनो प्रथमवर्गमूले असंख्यातमे भागेछे। तत्थणं जे ते मुक्केल्लगा तेणं जहा उरालियस्स मुक्केल्लगा तहा भा० आहारगसरीरगा जहा एतेसिंचेव

॥ मूल ॥

जहा उरालियस्स मुक्केल्लगा तहा नाणियव्वा । आहारगसरीरा जहा एतेसिंचेव उरालिया तहेव दुविहावि नाणियव्वा । तेयाकम्मसरीरगा दुविहावि जहा एतेसिंचेव वेउव्विया । एवं जाव थणियकुमारा । पुढविकाइयाणं भंते ! केवइया उरालियसरीरगा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य । तत्थणं जे ते बद्धेल्लगा तेणं असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीउस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असंखेज्जा लोगा, तत्थणं जे ते मुक्केल्लगा तेणं अणंता अणंताहिं उस्सप्पिणीउस्सप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो,

॥ प० ॥

आहारकशरीराणि यथैतेषां चैवौदारिकाणि तथैव द्विविधानि ज्ञातव्यानि । तैजसकार्मणशरीरे द्वे अपि यथैतेषां चैव वैक्रियाणि । एवं यावत्स्तनितकुमाराः । पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कत्यौदारिकशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा—बद्धानि च मुक्तानि च । तत्र यानि बद्धानि तान्यसंख्येयाभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरपह्रियन्ते कालतः, क्षेत्रतोऽसंख्येया लोकाः' तत्र यानि मुक्तानि तान्यनन्तानि अनन्ताभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरपह्रियन्त कालतः' क्षेत्रतोनन्ता लोकाः, अनन्तवसिद्धिकेभ्योनन्तगुणाः सिद्धानामनन्तभागः ।

॥ भाषा ॥

उरालिया तहेव भा० । तिहां जेते मुकेलग ते जिम औदारिकना मुक्तनोपरे तिमहोज कहिवा आहारकशरीर जिम एहनें औदारिकनो परे तिमहोज बेभेद कह्या । तेयाकम्मसरीरगा दुविहा जहा एतेसिंचेव विउव्विया एवं जाव थणियकुमारा पुढवीकाइयाणं भंते केवतिया उरालियसरीरा प० गोयमा । तैजस कार्मणशरीरना दोभेदजिम एहनें तिमहोज कहिवा इम जांलगे स्तनितकुमार पृथिवीकायनें केतला औदारिकशरीरकह्या गौतम । दुविहा प० तं० बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं असंखिज्जाहिं उसप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो खेत्ततो असंखिज्जालोगा । दोयप्रकारे कह्या बद्धेलग मुकलग तिहां जत बद्धलग ते असख्याताके असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल प्रतिसमयें अपहरेंए कालथी क्षेत्रथी असंख्यातलोकाकाशप्रमाण । तत्थणं जेते मुक्कलगा तेणं अणंता अणंताहिं उसप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंतिकालतो खेत्ततो । तिहां जे मुकेलग ते अनन्ता

खेत्तेणं अणंता लोगा, असंखेज्जइभागो अणंतगुणा सिद्धाणं अणंतभागो। पुढविकाइयाणं भंते! केवइ या वेउव्वियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य। तत्थणं जे ते बद्धे ल्लगा तेणं णत्थि, तत्थणं जे ते मुक्केल्लगा तेणं जहा एतेसिंचेव उरालिया भणिया तहेव भाणियव्वं। एवं आहारगसरीरावि। तेयाकम्मगा जहा एतेसिंचेव उरालिया। एवं आउक्काइया तेउक्काइयावि। वाउका इयाणं भंते ! केवतिया उरालियसरीरा पन्नत्ता ? गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्ल



पृथिवीकायिकानां भदन्त ! कति वैक्रियशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा—बद्धानि च मुक्तानि च। तत्र यानि बद्धानि तानि न सन्ति। तत्र यानि मुक्तानि तानि यथैतेषां चैवौदारिकाणि भणितव्यानि तथैव भणितव्यानि। एव माहारकशरीराण्यपि तैजसकार्मणानि यथैतेषां चैवौदारिकाणि। एवमप्कायिकतेजस्कायिकानामपि। वायुकायिकानां भदन्त ! कत्यौदारिकशरीराणि प्रज्ञप्ता



अनन्तो उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कालप्रति अपहरीये ते कालथी कह्या छेत्रथी। असंखालोगा असंखसिढीएहिंतो असंखगुणा सिद्धाण अणंतभागे पुढवी काइयाण भंते केवतिया वेउव्वियासरीरगा पं० गोयमा। असंखालोकाकाशप्रमाणदृश्य असंखसिढि असंखगुणा असंखालोकाकाशेसिढ असंखमें भागे पृथिवीकायने हे भगवन् केतला वैक्रियशरीरकह्या गौतम। दुविहा पं० तं० बद्धेलगाय मुक्केलगाय तत्थणं जेते बद्धेलगा तेण णत्थि। छोयमेट बद्धेलग १ मुक्केलग २ तिहां जे बद्धेलग ते पृथिवीकायमें नथी। तत्थण जेते मुक्केलगा तेणं जहा एतेसिंचेव उरालिया तहेवभा० एव आहारगसरीरावि तहा क म्मगा जहा एतसिचेव उरालिया। तिहां मुक्केलग ते जिम जिहां औदारिकनोपरें वैक्रियनो भावना करिवो इम आहारकशरीरनें जाणिवो तैजस श रीर कामण जिम एहनें औदारिकनोपरें जाणिवो। एवं आउकाइया तेउकाइयावि वाउकाइयाणं भंते केवतिया उरालियसरीरा पं० गोयमा। इम अप्कायनें इम तेऊनें वाऊनें भगवन् केतला औदारिकशरीरकह्या। दुविहा प० तं० बद्धेलगाय मुक्केलगाय दुहावि जहा पुढवीकाइयाणं उरालि

र्पिण्यवसर्पिणीभि रपह्रियंते, क्षेत्रतः परिमाणचिन्तायामसंख्येया लोकाः आत्मीयावगाहनाभि रसंख्येया लोका व्याप्यंते' मुक्तान्यौधिकमुक्तव त्, तैजसकार्मणानि बद्धानि बद्धौदारिकवत्, मुक्तान्यौधिकमुक्तवत्, वातकायस्याप्यौदारिकशरीराणि पृथिव्यादिवत् ज्ञातव्यानि, वैक्रियाणि ब द्धान्यसंख्ययानि तानिच प्रतिसमयमेकैकशरीरापहारे पल्योपमासंख्येयभागेन निःशेषतो पहियन्ते किमुक्तं भवति पल्योपमासंख्येयतम भागे या वंतः समया स्तावत्प्रमाणानीति न पुनरन्यधिकानि स्युः तथाहि-वायुकायिका श्चतुर्विधा स्तद्यथा-सूक्ष्मा बादरा श्च' एकैक द्विधा पर्याप्ता अप र्याप्ताश्च, तत्र बादरपर्याप्तव्यतिरिक्ताः शेषा स्त्रयोपि प्रत्येकमसंख्येयलोकाकाशप्रमाणाः ये तु बादरपर्याप्ता स्ते प्रतरासंख्येयभागप्रमाणा स्तत्र त्र याणा राशीनां वैक्रियलब्धिरेव नास्ति बादरपर्याप्तानामपि संख्येयभागमात्राणां लब्धि र्न शेषाणा माहच चूर्णिकृत्-तिण्ह ताय रासीणं वेउव्वि यलद्धीचेवनत्थि बायरपज्जत्ताणंपि संखेज्जइभागमेत्ताण लद्धी अत्थित्ति, ततः पल्योपमासंख्येयभागसमयप्रमाणा एव पृच्छासमय वायवो वैक्रियव

---

त्तिनोऽवाप्यंते नाधिका इति, इह केचिदाचक्षते सर्वे वायवो वैक्रियवर्त्तिन एव वैक्रियाणां चेष्टाया एवासम्भवात् तदसमीचीनं वस्तुगतेरपरिज्ञा ना द्वायवोहि स्वनाशाच्चला स्ततोवैक्रिया अपि वांति इतिप्रतिपत्तव्यं वातोद्भ्रामतीतिव्युत्पत्तेः, आहच चूर्णिकृत्-जेण सव्वेसुचेव लोगागासेसु च ला वायवो वायंति तम्हा वेउव्वियावि वाया वायंतीति घित्तव्वमिति, मुक्तानि वैक्रियाण्यौधिकमुक्तवत्, तैजसकार्मणानि बद्धानि बद्धौदारिकव त्' मुक्तान्यौधिकवत्, वनस्पतिकायिकचिन्तायामौदारिकाणि पृथिव्यादिवत्, तैजसकार्मणान्यौधिकतैजसकार्मणवत्, द्वीन्द्रियसूत्रे बद्धान्यौदारि कशरीराणि संख्येयानि तत्र कालतः परिमाणचिन्तायामसंख्ययाभि रुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभि रपह्रियंते असंख्याताभूत्सर्पिण्यवसर्पिणीषु यावंतः स मया स्तावत्प्रमाणानीति भावः, क्षेत्रतो ऽसंख्येयाः श्रेणयो ऽसंख्याताभु श्रेणिषु यावत आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणानीत्यर्थः, तासां च श्रेणीनां प रिमाणविशेषनिर्द्धारणार्थमाह-प्रतरासंख्येयभागप्रतरस्यासंख्येयभागप्रमिता असंख्येयाः श्रेणयः परिगृह्यन्त इति भावः' प्रतरासंख्येयभागो नैरयि

वनस्पतीनामपि प्रतिपादित स्ततो विशेषतरपरिमाणनिरूपणार्थं सूचीमानमाह-तासिणं सेढीणं इत्यादि ॥ तासां श्रेणीनां परिमाणावधारणा

गाय । दुविहावि जहा पुढवीकाइयाणं उरालिया । वेउव्वियाणं पुच्छा, गोयमा ! दुविहा पन्नत्ता, तंजहा—बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय । तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं असंखिज्जा समए २ अवहीरमाणा २ पलिओवम स्स असंखेज्जइभागमेत्तेणं कालेणं अवहीरंति नोचेवणं अवहिया सिया, मुक्केल्लगा जहा पुढवीकाइयाणं । वणस्सइकाइयाणं जहा पुढविकाइयाणं नवरं तेयाकम्मगा जहा ओहिया तेयाकम्मगा । बेइंदियाणं भंते !

नि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानि च मुक्तानि च । द्विविधान्यपि यथा पृथिवीकायिकानां औदारिकाणि । वैक्रियाणां पृच्छा, गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानि च मुक्तानि च । तत्र यानि बद्धानि तान्यसङ्ख्येयानि समयेसमयेऽपहियमानाः २ । पल्योपमस्यासंख्येयभागमात्रेण कालेनापहियन्ते नैवचापहृताः स्युः, मुक्ता यथा पृथिवीकायिकानाम् । वनस्पतिकायिकानां यथा पृथिवी कायिकानां नवरं तैजसकार्मणानि यथौधिकतैजसकार्मणानि । द्वीन्द्रियाणां भदन्त ! कत्यौदारिकशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि

या वेउव्वियाणं सरीरा पुच्छा गोयमा । दोयप्रकारे ते कहीछे बद्धेलग मुक्केलग वेमेटकथा पृथिवीनो परि औदारिक जाणिवा वैक्रियनो प्रश्न उत्तर हे गौतम । दुविहा पं० तं० बद्धेलगाय मुक्केलगाय तत्थण जेते बद्धेलगा तण असंखिज्जासमय २ अवहीरमाणा २ । दोय भेट बद्धेलग १ मुक्केलग २ तिहां जे बद्धेलग ते असंख्याता जाणिवा ते समये अपहरते थकें । पल्योपमनो असंखिज्जइभागमित्तेणं कालेण अवहीरंति नो चेवणं अवहियासिया मुक्केलगा जहा पुढवीकाइयाणं वणस्सइकाइयाणं जहा पुढवीकाइयाणं नवरं तेयकम्मगा । पल्योपमने असंख्यातभागनो माहाबे प्रतिसमय अपहरिये तेमनो संख्याये पणलेखुं पेल्योपमना असंख्यातभागना जेतलासमय तेतलासमयप्रमाणछे पृच्छासमये वैक्रियशरीरवर्गना पामिये तिण अधिकानछी जिम मुक्केलग जिम पृथिवीकायजी तिम कहिवो वनस्पतिकायने सर्व तिम होज पृथिवीनो परि ए विशेष तेजस कार्मण । जहा ओहिया तेयकम्मगा

यथा विष्कम्भसूची सा असंख्येया योजनकोटाकोट्यो असंख्येययोजनकोटाकोटिप्रमाणा इत्यर्थः, अथवेदमन्यद्विशेषतः परिमाणं-असंखेज्जाहिं सेढि

केवइया उरालियसरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता, तंजहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य । तत्थ णं जे ते बद्धेल्लगा ते णं असंखेज्जा असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं अवहीरंति कालतो, खेत्ततो असंखेज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखेज्जइभागो । तासिणं सेढीणं विक्खंभसूया असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ असंखेज्जाइं सेढीवग्गमूलाइं, बेइंदियाणं उरालियसरीरेहिं बद्धेल्लगेहिं पयरे अवहीरंति, असंखेज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं कालतो, खेत्तओ अंगुलपयरस्स आवलियाए असंखेज्जइभागपलिभागेणं । तत्थ णं जे ते मुक्केल्लगा

प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानि च मुक्तानि च । तत्र यानि बद्धानि तान्यसङ्ख्येयानि असंख्येयाभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरपह्रियन्ते कालतः, क्षेत्रतोऽसङ्ख्येयाः श्रेणयः प्रतरस्यासङ्ख्येयभागः। तासां श्रेणीनां विष्कम्भसूची असंख्येया योजनकोटाकोट्यः, असङ्ख्येयानि श्रेणिवर्गमूलानि, द्वीन्द्रियाणामौदारिकशरीरैर्बद्धैः प्रतरमपह्रियते असंख्येयाभिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः कालतः, क्षेत्रतोऽङ्गुलप्रतरस्यावलिकायाश्चासंख्येयभागप्रतिभा

बेइंदियाण भंते केवतिया उरालियसरीरा पं० गोयमा । जिम ओघनोपरे जाणिवो बेंद्रियने हे भगवन् केतला औदारिकशरीर कह्या गौतम । दुविहा पं० तं० बद्धेलगाय मुक्केलगाय तत्थणं जेते बद्धेलगा तेणं असंखिज्जा असंखिज्जाहिं उस्सप्पिणीओसप्पिणीहिं । दोयभेद बद्धेलग मुक्केलग तिहां जे ते बद्धेलग ते असंख्याता असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी । अवहीरंति कालतो खेत्ततो असंखिज्जाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जइभागे तासिणं सेढीणं विक्खंभसूया असंखिज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ । प्रतिसमें अपहरे कालथकी क्षेत्रथी असंख्याती श्रेणिनो प्रतरनो असंख्यातमो भाग ते श्रेणिनैं विष्कंभसूची असंख्याती योजन कोडाकोडी । असंखिज्जाइं सेढीवग्गमूलाइं बेइंदियाणं उरालियसरीरेहिं बद्धेलगेहिं पयरे अवहीरंति । असंख्या तौश्रेणि वर्गमूलनैं बेंद्रियने औदारिकशरीर बद्धेलगे उतरै अपहरियै अपहरे । असंखिज्जाहिंओसप्पिणीउस्सप्पिणीहिं कालतो खेत्ततो अंगुलपयरस्स

वर्गमूलाइं इति ॥ एकस्याः परिपूर्णायाः श्रेण्याः प्रदेशराशि स्तस्य प्रथमं वर्गमूलं द्वितीयं तृतीयं च वर्गमूलं यावदसंख्येयतमं वर्गमूलं एतानि सर्वाण्येकत्र सकल्प्यन्ते तेषु च सकलितेषु यावान् प्रदेशिराशि र्भवति तावत्प्रदेशात्मिका विष्कम्भसूचि रवसेया' अत्र निदर्शनं श्रेणी किल प्रदेशा असंख्याश्च्यसत्कल्पनया पञ्चषष्टिसहस्राणि पञ्चशतानि षट्त्रिंशदधिकानि [६५५३६] तेषां प्रथमवर्गमूलं द्वेशते षट्पञ्चाशदधिके [२५६]



तेजहा नेहियउरालियमुक्केल्लगा वेउव्विगा आहारगाय बद्धेल्लगा नत्थि मुक्केल्लगा जहा ओहिया उरालि जेय मुक्केलगा तेयाकम्मगा जहा एतेसिंचेव ओहिया उरालिया, एवं जाव चउरिंदिया। पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं एवंचेव नवरं वेउव्वियसरीरएसु इमो विसेसो—पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं भंते ! केवतिया वेउ



गेन । तत्र यानि मुक्तानि तान्यौधिकौदारिकमुक्तानि, वैक्रियाणि आहारकाणि च बद्धानि न सन्ति, मुक्तानि यथौधिकौदारिकमुक्तानि, तैजसकार्मणानि यथैतेषां चैवौधिकौदारिकाणि, एवं यावच्चतुरिन्द्रियाः' पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानामेव चैव नवरं वैक्रियशरीरेष्वयंविशेषः-पञ्चेन्द्रियतिर्यग्योनिकानां भदन्त ! कति वैक्रियशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानि च मुक्तानि च ।



आवलियाए । ते असंखाता उत्सर्पिणी अवसर्पिणीहिं अपहीरंति असंखात उत्सर्पिणी काल समयप्रमाण कालथी क्षेत्रथी श्रेणुलप्रतरनो आवलिकादि पाछलोपरें । असंखिज्जाइं भागतिभागेण तत्थणं जेते मुक्केल्लगा ते जहा ओहिया उरालियमुक्केल्लगा तहा भा० । एतलेखो भाव क्षेत्रथी असंख्याता श्रेणि जेतला आकाशप्रदेशनो प्रमाण तिहां जेते मुंक्याछे ते जिम औदारिकने मुक्केल्लगकह्या तिम जाणिवा । वेउव्विया आहारगाय बद्धेल्लगा नत्थि मुक्केल्लया जहा ओहिया उरालिया मुक्केल्लगा तेयाकम्मगा जहा एतेसिंचेव उरालिया । वैक्रियशरीरे आहारकना बद्धेल्लगछेनही भवप्रति मुक्केल्लग जिम औधनो आलाषो तिम औदारिक मुक्केल्लग तिम तैजसकार्मण जिम जाणिवो एहने औधनो जिम । एवं जाव चउरिंदिया पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं एवंचेव नवरं वेउव्वियसरीरएसुइमोविसेसो । इम जाव चौरिंद्रिय तहां लगे कहिवो पंचेंद्रियतिर्यंचने बेंद्रियनोपरें ए विशेष वैक्रियशरीरइवे । पंचेंद्रियति

द्वितीयं षोडश १६ तृतीयं चत्वारः ४ चतुर्थं द्वौ २ एतेषां च संकलने जाते द्वे शते ऽष्टषष्ट्यधिके २७८ एतावता किलासत्कल्पनया प्रदेशानां सूचि रिति, अथैते द्वीन्द्रियाः किं प्रमाणाभिरवगाहनाभि रास्तीर्यमाणाः कियता कालेन सकलं प्रतरमापूरयंति ? उच्यते-अङ्गुलासंख्येयभागप्रमाणा भिरवगाहनाभिः प्रत्यावलिकासंख्येयभागमेकैकावगाहनारचनेनासंख्येयाभिरुत्सर्पिणीभि रापूर्यंते' इयमत्र भावना-एकैकस्मिन्नावलिकाया असं

॥ टीका ॥

ह्मियसरीरया पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य । तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं असंखेज्जा जहा असुरकुमाराणं नवरं तासिणं सेढीणं विक्खंभसूई अंगुलपढमवग्गमूलस्स असंखेज्जइभागो, मुक्केल्लगा तहेव । मणुस्साणं भंते ! केवइया उरालियसरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तंजहा—बद्धेल्लगा य मुक्केल्लगा य । तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेणं सिय संखिज्जा सिय असंखिज्जा, ज

॥ मूल ॥

तत्र यानि बद्धानि तान्यसंख्येयानि यथासुरकुमाराणां । नवरं तासां श्रेणीनां विष्कम्भसूचिरङ्गुलप्रथमवर्गमूलस्यासंख्येयभागः । मुक्तानि तथैव । मनुष्याणां भदन्त ! कत्यौदारिकशरीराणि प्रज्ञप्तानि ? गौतम ! द्विविधानि प्रज्ञप्तानि तद्यथा-बद्धानिच मुक्तानिच । तत्र यानि बद्धानि

॥ प० ॥

विक्खंभोसियाणं भंते केवइया वेउव्वियसरीरा पं० गोयमा । पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनियाने हे भगवन् केतला वैक्रियशरीरकहा हे गौतम । दुविहा पं० तं० बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय तत्थणं जेत बद्धेल्लगा तेणं असंखेज्जा जहा असुरकुमाराणं णवरं तासिणं सढीणं विक्खंभसूचा अंगुलपढमवग्गमूलस्स । शेषंभेट बद्धेल्लग १ मुक्केल्लग २ तिहां जे बद्धेल्लग ते असंख्यातहवे जिम असुरकुमारनीपरे ए विशेष ते श्रेणि विष्कंभसूची अंगुलप्रथमवर्गमूलनें । असंखिज्जइभागी मुक्केल्लगा तहेव मणुस्साणं भंत केवतिया उरालियसरीरा पं० गोयमा । असंख्यातमे भागेछे मुक्केल्लग तिमहीज पाछलोपरे मनुष्यते भगवन् केतला औदारिकशरीर कह्या गौतम । दुविहा पं० तं० बद्धेल्लगाय मुक्केल्लगाय तत्थणं जेते बद्धेल्लगा तेण सिय संखिज्जा सिय । शेषभेट बद्धेल्लग मुक्केल्लग तिहां जे बद्धेल्लगाछे ते किवारे संख्याताए आंकछे ७९ । २२८१६२५४३७८३५४३८५०३३८ । असंखिज्जा । किवारे असंख्याताहवे समूर्च्छिम मांहि मेलीए एकतो सं

॥ भाषा ॥

स्येयतमे भागे एकैका अंगुली असंख्येयभागप्रमाणा अवगाहना रच्यते ततो संख्येयानिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः सकलमपि प्रतरं द्वीन्द्रियशरीरैरापूर्यते एतदेवापहारद्वारेण सूत्रकृदाह-बेइंदियाणमित्यादि ॥ द्वीन्द्रियाणां सम्बन्धिनिरौदारिकशरीरैः बद्धैः प्रतरमसंख्येयानिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः रप्रियते, अत्र प्रतरमिति क्षेत्रतः परिमाणं, उत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिरिति कालतः, किं प्रमाणेन पुनः क्षेत्रेण कालेनवाऽपहरणमतआह-अंगुलपयरस्स आवलियाए य असंखेज्जइभागपलिभागेणंति ॥ अङ्गुलमात्रस्य प्रतरस्य एकप्रादेशिकश्रेणिरूपस्य असंख्येयभागप्रतिभागप्रमाणेन खण्डेन इदं क्षेत्रविषयं परिमाणं, कालपरिमाणमावलिकाया असंख्येयभागप्रतिभागेन असंख्येयतमेन प्रतिभागेन किमुक्तं भवति यदेन द्वीन्द्रियैरसंख्येयभागप्रमाणखण्डमावलिकाया असंख्येयतमेन भागेनापह्रियते द्वितीयेनापि तावत्प्रमाणं खंडं तावता कालेन एव मपह्रियमाणं प्रतरं द्वीन्द्रियैः सर्वैरसंख्येयानिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभिः सकलमपह्रियते इति, मुक्तान्यौधिक मुक्तवत्, तैजसकार्मणानि बद्धानि बद्धौदारिकवत्, वैक्रियाणि पु

---

नर्बद्धानि तेषां न संति' मुक्तान्यौधिकमुक्तवत्, एवं त्रिचतुरिन्द्रियाणामपि, तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणां बद्धानि मुक्तानि चौदारिकाणि द्वीन्द्रियवत्, वैक्रियाणि बद्धानि असंख्येयानि तत्र कालतः परिमाणचिन्तायामसंख्येयानिरुत्सर्पिण्यवसर्पिणीभि रपह्रियंते, क्षेत्रतो संख्येयासु श्रेणिषु यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणानि तासां च श्रेणीनां परिमाणं प्रतरस्यासंख्ययोभागः तथाचाह-जहा असुरकुमाराणमिति ॥ यथा असुरकुमाराणां तथा वक्तव्यं यावद् विष्कम्भसूचिपरिमाणचिन्तायां तत्रांगुलप्रमाणा वर्गमूलस्य संख्येयो भाग उक्त इहत्वसंख्येयो भागो वक्तव्यः किमुक्तं भवति अङ्गुलमात्रक्षेत्रप्रदेशराशेः एतत्प्रथमं वर्गमूलं तस्यासंख्येयतमे भागे यावन्त आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रदेशात्मिका श्रेणिः परिगृह्यते तावत्यां च श्रेण्यां याः श्रेणयः स्पृष्टा स्तासु श्रेणिषु यावंत आकाशप्रदेशा स्तावत्प्रमाणानि तिर्यक्पञ्चेन्द्रियाणां बद्धानि वैक्रियशरीराणि उक्तंच-अंगुलमूलासंखेय भागप्पमाणसेढीउ । उत्तरविउव्वियाणं तिरियाणं संनिपज्जाणं ॥ मुक्तान्यौधिकमुक्तवत्, तैजसकार्मणानि बद्धानि बद्धौदारिकवत्, मुक्ता

न्यौधिकमुक्तवत् मनुष्याणां बहून्यौदारिकशरीराणि स्यात्कदाचित् संख्येयानि कदाचिदसंख्येयानि कोत्रानिप्राय इति चेदुच्यते-इह हये मनुष्या गर्भव्युत्क्रान्तिकाः संमूर्च्छिमाश्च, तत्र गर्भव्युत्क्रान्तिकाः सदावस्थायिनो न स कश्चित्कालोस्ति यो गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्यरहितो भवति संमूर्च्छिमाश्च कदाचिद् विद्यन्ते कदाचिन्न सर्वथा तेषां सत्ताभावो भवति तेषामुत्कर्षतोऽन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणत्वात्, ततो यदा सर्वथा संमूर्च्छिमा मनुष्या न विद्यन्ते किंतु केवला गर्भव्युत्क्रान्तिका एव तिष्ठंति तदा स्यात्संख्येयानामेव गर्भव्युत्क्रान्तिकानां लाभात्, महाशरीरत्वे प्रत्येकशरीरत्वे च सति परिमितक्षेत्रवर्त्तित्वात् यदा संमूर्च्छिमा स्तदाऽसंख्येयाः संमूर्च्छिमानामुत्कर्षतः श्रेण्यसंख्येयभागवर्त्तिनभप्रदेशराशिप्रमाणत्वात् तथाचाह-जहन्नपदे संखेज्जाइत्यादि ॥ जघन्यपदं नाम यत्र सर्वस्तोका मनुष्याः प्राप्यंते आह-किमत्र संमूर्च्छिमाणां ग्रहणमुत गर्भव्युत्क्रान्तिकानां उच्यते-गर्भव्युत्क्रान्तिकानां तेषामेव सदावस्थायितया संमूर्च्छिमविरहे सर्वस्तोकतया प्राप्यमाणत्वात् उत्कृष्टपदेतूभयेषामपि ग्रहणं, यदाह-मूलटीकाकारः-सेत

---

राणां ग्रहणमुत्कृष्टपदे जघन्यपदे गर्भव्युत्क्रान्तिकानामेव केवलानां ग्रहणमिति, अस्मिन् जघन्यपदे संख्येयमनुष्याः तत्र संख्येयकं संख्येयप्रदेशनिष्पन्नमिति न ज्ञायते कियंतः स्युः इति विशेषसंख्यानिर्द्धारयति-संखेया कोटीकोट्यः अथवा इदमन्यत् विशेषतरपरिमाणं-तिजमल पयस्सहस्सवरिं च उजमलपयस्सहेट्ठाइति ॥ इह मनुष्यसंख्याप्रतिपादिकान्येकोनत्रिंशदंकस्थानानि वक्ष्यमाणानि तत्र समयपरिभाषया अष्टानामष्टानामंकस्थानानां यमलपदमिति संज्ञा, चतुर्विंशत्याद्यांकस्थानैः त्रीणि यमलपदानि लब्धानि उपरि पंचांकस्थानानि तिष्ठंति अथच यमलपदमष्टभिरंकस्थानैः स्यात् न चतुर्थं यमलपदं न प्राप्यते तत उक्तंच-त्रयाणां यमलपदानामुपरि पञ्चभिरंकस्थानैः वर्द्धमानत्वात्, चतुर्थस्य च यमलपदस्याधस्तात् त्रिभिरंकस्थानैः हीनत्वात्, अथवा द्वौ २ वर्गौ समुदितौ एकं यमलपदं, चत्वारो वर्गाः समुदिता द्वे यमलपदे, षट्वर्गाः समुदिता त्रीणि यमलपदानि, अष्टौ वर्गाः समुदिता चत्वारि यमलपदानि, तत्र यस्मात् त्रयाणामुपरि वर्त्तते सप्तमस्य वर्गस्याधस्तात् तत उक्तं-त्रियमलपदस्योपरि